IHYAUL ULOOM, JILD-1 (HINDI)

जिल्द : 1

इह़याउल उ़लूम (मुतर्जम)

-: मुसन्निफ़ :-

हुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम

मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عليه رحمة الله الوالي

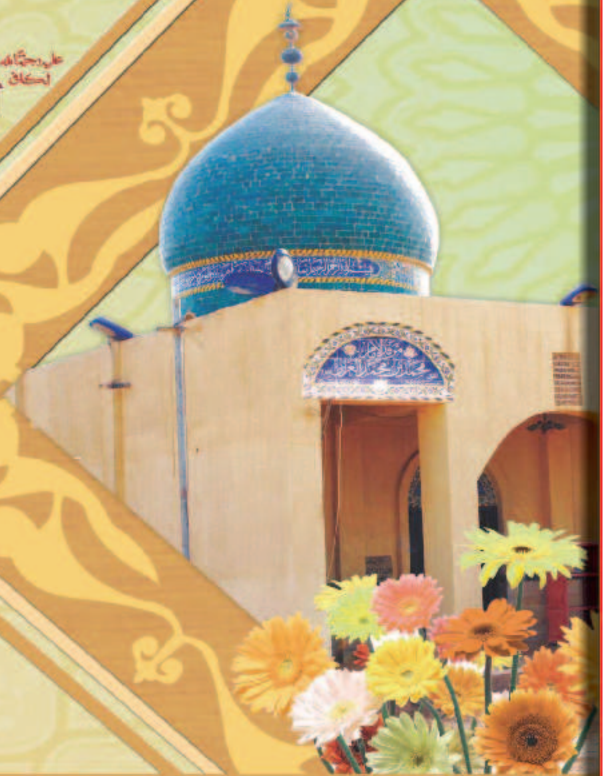

उर्दू मार्केट, मटया मह़ल, जामेअ़ मस्जिद,

देहली -6 (011) 23284560

مکتبۃ المدینہ
(دعوتِ اسلامی)
MC 1286

المدینۃ العلمیۃ
(دعوتِ اسلامی)
शो'बए तराजिम

ٱلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

किताब पढ़ने की दुआ

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَ الله عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा । दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तर्जमा : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़-ज़मत और बुज़ुर्गी वाले ।

(مُستَطرَف ج ١ ص ٤٠ دار الفكر بيروت)

ता़लिबे ग़मे मदीना बक़ीअ़ व मग़फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

(अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये)

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صلّى الله تعالىٰ عليه واٰله وسلّم : सब से ज़ियादा ह़सरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इल्म ह़ासिल करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इल्म ह़ासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़अ़ उठाया लेकिन उस ने न उठाया (या'नी इस इल्म पर अ़मल न किया)

(تاريخ دمشق لابن عَساكِر ج ٥١ ص ١٣٨ دار الفكر بيروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़ह़ात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो मक्तबतुल मदीना से रुजूअ़ फ़रमाइये ।

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा 'वते इस्लामी

ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का एक अहम मक्तूब

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ आज दुन्याए इस्लाम की एक नाबग़ए अ़स्र, अ़ज़ीम और अबक़री शख़्सिय्यत या 'नी मोह़सिने उम्मत हुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِي की याद में मदनी चैनल पर ''मदनी मुकालमे'' का सिलसिला है। मैं इस वक़्त अपने वत़ने अ़ज़ीज़ पाकिस्तान से बाहर हूं, मुझे तअष्सुरात देने का हुक्म मिला तो हुसूले षवाब के लिये चन्द बे रब्त़ कलिमात सिलके तह़रीर में पिरो कर ह़ाज़िर हो गया हूं, यक़ीन मानिये! اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ अ़क़ाइद की पुख़्तगी के मुआ़मले में जहां मेरे आक़ा आ 'ला ह़ज़रत इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن का मुझ पर फ़ैज़ान है वहां बात़िन की इस्लाह़ में हुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِي का मुझ पर बड़ा एह़सान है। सय्यिदुना इमाम ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِي की मिन्हाजुल आ़बिदीन और इह़्याउल उ़लूम वग़ैरा पढ़ते हुए बारहा ऐसा मह़सूस होता है गोया मुझे ही कान पकड़ कर समझा रहे हैं कि ''बड़ा नेक बना फिरता है, ज़रा अपने आप को तो देख! तुझ में तो येह भी ख़राबी है और तेरे अन्दर तो वोह भी बुराई है, नीज़ जब भी पढ़ूं ऐसा लगता है कि रूह़ को नई नई ग़िज़ाएं मिल रही हैं, इन की कुतुब एक आध बार पढ़ कर रख देने वाली नहीं, ज़िन्दगी के आख़िरी सांस तक पढ़े जाने के लाइक़ हैं।'' सरकारे आ 'ला ह़ज़रत और सय्यिदुना इमाम ग़ज़ाली رَحِمَهُمَا اللّٰهُ تَعَالٰی की मुबारक किताबें अगर मुत़ालए़ में न आतीं तो शायद मैं बरबाद हो जाता!!! ख़ुदा की क़सम! हुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِي ने इह़्याउल उ़लूम लिख कर उम्मत पर एह़साने अ़ज़ीम फ़रमाया है, दा 'वते इस्लामी के तमाम जामिआ़तुल मदीना के जुम्ला असातिज़ा, नाज़िमीन व नाज़िमात, त़लबा व त़ालिबात, सभी मुबल्लिग़ीन व मुबल्लिग़ात की ख़िदमात में मेरी ताकीद अशद्द ताकीद है कि बिल ख़ुसूस इह़्याउल उ़लूम की तीसरी जिल्द (जो कि मोहलिकात या 'नी हलाकत में डालने वाले आ 'माल व अफ़्आ़ल पर मुश्तमिल है) का मुत़ालआ़ न किया हो तो पहली फ़ुरसत में कर लें, बल्कि दा 'वते इस्लामी के सारे मदारिसुल मदीना के सब क़ारी साह़िबान, नाज़िमीन, तमाम इस्लामी भाइयों और सभी इस्लामी बहनों नीज़ मदनी चैनल के नाज़िरीन की ख़िदमतों में भी दस्त बस्ता मदनी इल्तिजा है कि जिस जिस ने न किया हो वोह इस का जल्द तर मुत़ालआ़ फ़रमा लें और जहां समझ न आए उ़-लमाए किराम से रहनुमाई ह़ासिल कर लें।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ बग़दादे मुअ़ल्ला में अपने मज़ारे फ़ाइज़ुल अन्वार में आराम फ़रमाने वाले मेरे आक़ा मेरे इमाम हुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِي पर हर आन करोड़ो रह़मतों का नुज़ूल फ़रमाए और इन के त़ुफ़ैल मुझ गुनाहगारों के सरदार को बे ह़िसाब बख़्शे। اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

त़ालिबे ग़मे
मदीना
व बक़ीअ़
व मग़फ़िरत
व बे ह़िसाब जन्नतुल फ़िरदौस में
आक़ा का पड़ोस

10 जुमादिल उख़्रा 1433 हि.
03-04-2012

एक चुप 100 सुख

"हलाल व हराम की पहचान के लिये इह़्याउल उ़लूम इस्लाम की आ'ला तरीन कुतुब में से है"

(फ़रमाने अ़ल्लामा इराक़ी)

"अगर तमाम उ़लूम नापैद हो जाएं तो मैं इह़्याउल उलूम से सब को निकाल लूंगा"

(फ़रमाने इमाम काज़रूनी)

"अगर काफ़िर इह़्याउल उ़लूम की वरक़ गरदानी कर ले तो मुसलमान हो जाए"

(फ़रमाने इमाम सक़्क़ाफ़)

इह़्याउल उ़लूम मुतर्जम (जिल्द : 1)

-: मुसन्निफ़ :-

हुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना

इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِى

(अल मुतवफ़्फ़ा सि. 505 हि.)

पेशकश : मजलिसे अ़ल मदीनतुल इ़ल्मिय्या

(शो'बए तराजिम कुतुब)

-: नाशिर :-

मक्तबतुल मदीना, देहली - 6

الصلوة والسلام عليك يا رسول الله　　وعلى آلك واصحابك يا حبيب الله

जुम्ला हुक़ूक़ ब हक़्क़े नाशिर मह़फ़ूज़ हैं

नाम किताब : इह्याउल उ़लूम मुतर्जम (जिल्द : 1)

मुसन्निफ़ : हुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِى (अल मुतवफ़्फ़ा सि. 505 हि.)

मुतर्जिमीन : मदनी उ़-लमा (शो'बए तराजिम कुतुब)

सिने त़बाअ़त : 12, रबीउ़ल अव्वल, 1435 हि.

-: मक्तबतुल मदीना की मुख़्तलिफ़ शाख़ें :-

- ... **देहली** : 421, उर्दू मार्केट, मटया मह़ल, जामेअ़ मस्जिद, देहली-6 फ़ोन : 011-23284560
- ... **मुम्बई** : 19-20, मुह़म्मद अ़ली रोड, मांडवी पोस्ट ऑफ़िस के सामने, मुम्बई फ़ोन : 022-23454429
- ... **नागपूर** : सैफ़ी नगर रोड, ग़रीब नवाज़ मस्जिद के सामने, मोमिन पूरा, नागपूर फ़ोन : 9326310099
- ... **अजमेर** : 19 / 216 फ़लाहे़ दारैन मस्जिद के क़रीब, नला बाज़ार, स्टेशन रोड, दरगाह, (0145) 2629385
- ... **हुबली** : A.J मुधल कोम्पलेक्स, A.J मुधल रोड, ओल्ड हुबली, कर्नाटक - 08363244860
- ... **है़दराबाद** : मक्तबतुल मदीना, मुग़ल पूरा, पानी की टंकी, है़दराबाद, (040) 2 45 72 786

E.mail : ilmia26@yahoo.com

www.dawateislami.net

किसी और को येह (तख़रीज शुदा) किताब छापने की इजाज़त नहीं

याद दाश्त

दौराने मुत़ालआ़ ज़रूरतन अन्डर लाइन कीजिये, इशारात लिख कर सफ़्ह़ा नम्बर नोट फ़रमा लीजिये।

इल्म में तरक़्क़ी होगी। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ

उ़नवान	सफ़्ह़ा	उ़नवान	सफ़्ह़ा

याद दाश्त

दौराने मुत़ालआ़ ज़रूरतन अन्डर लाइन कीजिये, इशारात लिख कर सफ़ह़ा नम्बर नोट फ़रमा लीजिये।

إن شآء الله عزوجل इल्म में तरक़्क़ी होगी।

उ़नवान	सफ़ह़ा	उ़नवान	सफ़ह़ा

मजलिसे तराजिम (हिन्दी–गुजराती)
दा'वते इस्लामी

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ तबलीगे़ कु़रआनो सुन्नत की आ़लमगीर गै़र सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** की मजलिस **"अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या"** ने येह किताब **"इह्याउल उ़लूम"** उर्दू ज़बान में पेश की है। मजलिसे तराजिम, बरोडा (हिन्दी–गुजराती) ने इस किताब को हिन्द (INDIA) की **राष्ट्रिय भाषा "हिन्दी"** में रस्मुल ख़त़ (लीपियांतर) करने की सआ़दत ह़ासिल की है [**भाषांतर** नहीं बल्कि सिर्फ़ **लीपियांतर** या'नी ज़बान (या'नी बोली) तो उर्दू ही है जब कि लीपि (या'नी लिखाई) हिन्दी रखी है] और **मक्तबतुल मदीना** से **शाएअ़** करवाया है।

इस किताब का **हिन्दी रस्मुल ख़त़** करते हुए दर्जे ज़ैल मुआ़मलात को पेशे नज़र रखने की कोशिश की गई है :–

﴾1﴿ कमो बेश दस(10) मराहि़ल सर अन्जाम दिये गए हैं, जो येह हैं :–

(1) कम्पोज़िंग (2) सेटिंग (3) कम्प्यूटर तक़ाबुल (4) तक़ाबुल बिल किताब (5) सिंगल रीडिंग (6) कम्प्यूटर करेक्शन (7) करेक्शन चेकिंग (8) फ़ाइनल रीडिंग (9) फ़ाइनल करेक्शन (10) फ़ाइनल करेक्शन चेकिंग।

﴾2﴿ क़रीबुस्सौत़ (या'नी मिलती झुलती आवाज़ वाले) ह़ुरूफ़ के आपसी इमतियाज़ (या'नी फ़र्क़) को वाज़ेह़ करने के लिये हिन्दी के चन्द मख़्सूस ह़ुरूफ़ के नीचे डॉट (.) लगाने का खुसूसी एहतिमाम किया गया है जिस की तफ़्सीली मा'लूमात के लिये **तराजिम चार्ट** का बग़ौर मुत़ालआ़ फ़रमाएं।

﴾3﴿ हिन्दी पढ़ने वालों को सह़ीह़ उर्दू तलफ़्फ़ुज़ भी हिन्दी पढ़ने ही में ह़ासिल हो जाएं इस लिये आसान मगर **अस्ल उर्दू लुग़त के तलफ़्फ़ुज़** के ऐ़न मुताबिक़ ही **हिन्दी–जोडणी** रखी गई है और बत़ौरे ज़रूरत ब्रेकेट में उर्दू लफ़्ज़ हिज्जे के साथ ऐ'राब लगा कर रखा गया है। नीज़ उर्दू के मफ़्तूह़ (ज़बर वाले) ह़र्फ़ को वाज़ेह़ करने के लिये हिन्दी के अक्षर (ह़र्फ़) के पहले डेश (–) और साकिन (जज़्म वाले) ह़र्फ़ को वाज़ेह़ करने के लिये हिन्दी के अक्षर के नीचे खोड़ा (्) इस्ति'माल किया गया है। मषलन **उ़–लमा** (عُلَمَاء) में **"–ल"** मफ़्तूह़ और **रह़्म** (رَحْم) में **"ह़्"** साकिन है।

﴾4﴿ उर्दू में लफ़्ज़ के बीच में जहां कहीं ऐ़न साकिन (عْ) आता है उस की जगह पर हिन्दी में सिंगल इन्वर्टेड कोमा (') इस्ति'माल किया गया है। जैसे : **दा'वत** (دَعْوَت)

﴾5﴿ अ़रबी–फ़ारसी मतन के साथ साथ अ़रबी किताबों के ह़वालाजात भी अ़रबी ही रखे गए हैं जब कि "عَزَّوَجَلَّ", "صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم" और "رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ" वग़ैरा को भी अ़रबी ही में रखा गया है।

इस किताब में अगर किसी जगह **कमी–बेशी** या **ग़–लत़ी** पाएं तो **मजलिसे तराजिम** को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, e-mail या sms) **मुत्त़लअ़** फ़रमा कर षवाब कमाइये।

त = ت	फ = پھ	प = پ	भ = بھ	ब = ب	अ = ا	
झ = جھ	ज = ج	ष = ث	ठ = ٹھ	ट = ٹ	थ = تھ	
ढ = ڈھ	ध = دھ	ड = ڈ	द = د	ख़ = خ	ह़ = ح	
ज़ = ژ	ज़ = ز	ढ़ = ڑھ	ड़ = ڑ	र = ر	ज़ = ذ	
अ़ = ع	ज़ = ظ	त़ = ط	ज़ = ض	स = ص	श = ش	स = س
ग = گ	ख = کھ	क = ک	क़ = ق	फ़ = ف	ग़ = غ	' = عْ
य = ی	ह = ھ	व = و	न = ن	म = م	ल = ل	घ = گھ
् = ْ	ु = ُ	ि = ِ	– = َ	ी = ئ	ू = وٗ	ा = آ

उर्दू से हिन्दी तराजिम चार्ट

–: राबित़ा :–
मजलिसे तराजिम, मक्तबतुल मदीना
(दा'वते इस्लामी)
मदनी मर्कज़, क़ासिम हाला मस्जिद, सेकन्ड फ़्लोर,
नागर वाड़ा, मेन रोड, बरोडा, गुजरात, अल हिन्द
Mo. + 91 9327776311
E-mail:translation.baroda@dawateislami.net

ज़िमनी फ़ेहरिस्त

मज़ामीन	सफ़्हा नम्बर	मज़ामीन	सफ़्हा नम्बर
इस किताब को पढ़ने की 23 "निय्यतें"	5	**पहली फ़स्ल :** बा'ज़ उ़लूम के मज़्मूम होने का सबब	119
अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या का ता'रूफ़ (अज़ अमीरे अहले सुन्नत)	6	**दूसरी फ़स्ल :** अल्फ़ाज़े उ़लूम में तब्दीली का बयान	126
पहले इसे पढ़ लीजिये !	8	**तीसरी फ़स्ल :** अच्छे उ़लूम की क़ाबिले ता'रीफ़ मिक़्दार का बयान	148
तआ़रुफ़े मुसन्निफ़	14	**बाब नम्बर 4 :** लोगों के इख़्तिलाफ़ में पड़ने की वजह, मुनाज़रे	
इब्तिदाइय्या	36	की आफ़ात की तफ़्सील और इस के जवाज़ की शराइत़	155
इ़ल्म का बयान	42	**पहली फ़स्ल :** मुनाज़रों को सह़ाबा के मश्वरों और अस्लाफ़	
बाब नम्बर 1: इ़ल्म, ता'लीम और तअ़ल्लुम की		के मुज़ाकरों से मुशाबहत देना धोका है	157
फ़ज़ीलत और इस के अ़क़्ली व नक़्ली दलाइल का बयान	42	**दूसरी फ़स्ल :** मुनाज़रे की आफ़ात और उस से जनम लेने	
पहली फ़स्ल : इ़ल्म की फ़ज़ीलत	42	वाली हलाकत ख़ैज़ आ़दात	164
दूसरी फ़स्ल : इ़ल्म ह़ासिल करने की फ़ज़ीलत	55	**बाब नम्बर 5 :** शागिर्द और उस्ताज़ के आदाब	173
तीसरी फ़स्ल : इ़ल्म सिखाने की फ़ज़ीलत	59	**पहली फ़स्ल :** त़ालिबे इ़ल्म के आदाब	173
चौथी फ़स्ल : इ़ल्म की फ़ज़ीलत पर अ़क़्ली दलाइल	66	**दूसरी फ़स्ल :** राहनुमा उस्ताज़ के फ़राइज़	190
बाब नम्बर 2 : मह़मूद व मज़्मूम उ़लूम और इन की अक़्साम व अह़काम	71	उस्ताज़ के आदाब	191
पहली फ़स्ल : फ़र्ज़े ऐन इ़ल्म का बयान	71	**बाब नम्बर 6 :** इ़ल्म की आफ़ात, उ़-लमाए आख़िरत	
दूसरी फ़स्ल : फ़र्ज़े किफ़ाया इ़ल्म का बयान	78	और उ़-लमाए सू की अ़लामात का बयान	201
तीसरी फ़स्ल : इ़ल्मे त़रीक़े आख़िरत की अक़्साम	87	**पहली फ़स्ल :** उ़-लमाए सू की निशानियां	201
सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ الرَّحْمَة के फ़ज़ाइलो मनाक़िब	100	**दूसरी फ़स्ल :** उ़-लमाए आख़िरत की 12 निशानियां	207
सय्यिदुना इमामे मालिक عَلَيْهِ الرَّحْمَة के फ़ज़ाइलो मनाक़िब	111	**बाब नम्बर 7 :** अ़क़्ल, इस की अ़ज़्मत, ह़क़ीक़त और अक़्साम का बयान	283
सय्यिदुना इमामे आ'ज़म عَلَيْهِ الرَّحْمَة के फ़ज़ाइलो मनाक़िब	115	**पहली फ़स्ल :** अ़क़्ल की अ़ज़्मत	283
मनाक़िबे इमाम अह़मद बिन ह़म्बल और इमाम सौरी	118	**दूसरी फ़स्ल :** अ़क़्ल की ह़क़ीक़त और इस की अक़्साम	289
बाबा नम्बर 3 : उन मज़्मूम उ़लूम का बयान जिन्हें लोग अच्छा समझते हैं	119	**तीसरी फ़स्ल :** अ़क़्ल के ए'तिबार से इन्सानी नुफ़ूस में तफ़ावुत	296

मज़ामीन	सफ़्हा नम्बर	मज़ामीन	सफ़्हा नम्बर
अ़क़ाइद का बयान	301	**बाब नम्बर 3 :** ज़ाहिरी नजासतों से पाकी ह़ासिल करना	431
पहली फ़स्ल : पहले इस्लामी रुक्न कलिमए शहादत		**नमाज़ का बयान**	454
के मुतअ़ल्लिक़ अ़क़ीदए अहले सुन्नत की वज़ाहत	301	**बाब नम्बर 1 :** नमाज़, सुजूद, जमाअ़त और अज़ान वग़ैरा के फ़ज़ाइल	455
कलिमए शहादत के पहले जुज़ अ़क़ीदए तौह़ीद की वज़ाहत	302	**पहली फ़स्ल :** अज़ान की फ़ज़ीलत	455
कलिमए शहादत के दूसरे जुज़ की वज़ाहत	306	**दूसरी फ़स्ल :** फ़र्ज़ नमाज़ की फ़ज़ीलत	457
दूसरी फ़स्ल : मरह़ला वार रहनुमाई करने की वजह		**तीसरी फ़स्ल :** अरकाने नमाज़ पूरा करने की फ़ज़ीलत	460
और ए'तिक़ाद के दर्जात का बयान	310	**चौथी फ़स्ल :** नमाज़े बा जमाअ़त के फ़ज़ाइल	462
इ़ल्मे कलाम और मुतकल्लिमीन के बारे में उ़-लमा की आरा	313	**पांचवीं फ़स्ल :** फ़ज़ाइले सजदा	465
तीसरी फ़स्ल : اَلرِّسَالَةُ الْقُدْسِيَّة فِی قَوَاعِدِ الْعَقَائِد	346	**छटी फ़स्ल :** ख़ुशूअ़ की फ़ज़ीलत	467
ईमान के चार बुन्यादी अरकान	346	**सातवीं फ़स्ल :** मस्जिद और जाए नमाज़ की फ़ज़ीलत	474
चौथी फ़स्ल : ईमान और इस्लाम के माबैन इत्तिसाल व		**बाब नम्बर 2 :** ज़ाहिरी आ'माल की कैफ़िय्यात व आदाब का बयान	477
इन्फ़िसाल, इन के घटने बढ़ने और अस्लाफ़ का इस में		**पहली फ़स्ल :** नमाज़ में ज़ाहिरी आ'माल की कैफ़िय्यत और	
(اِنْ شَآءَ الله के साथ) इस्तिस्ना करने की वजह का बयान	365	तकबीरे तह़रीमा से इब्तिदा करना	477
त़हारत का बयान	396	**दूसरी फ़स्ल :** ममनूआ़ते नमाज़	487
बाब नम्बर 1 : नजासत से त़हारत ह़ासिल करना	405	**तीसरी फ़स्ल :** फ़राइज़ व सुनन में फ़र्क़	491
पहली फ़स्ल : ज़ाइल की जाने वाली नजासत का बयान	405	**बाब नम्बर 3 :** आ'माले क़ल्ब की बात़िनी शराइत़	495
दूसरी फ़स्ल : नजासत ज़ाइल करने वाली चीज़	408	**पहली फ़स्ल :** ख़ुशूअ़, ख़ुज़ूअ़ और हु़ज़ूरिये क़ल्ब की शराइत़	495
तीसरी फ़स्ल : नजासत ज़ाइल करने के त़रीक़े	409	**दूसरी फ़स्ल :** नमाज़ मुकम्मल करने वाले बात़िनी उमूर	501
बाब नम्बर 2 : नजासते हु़क्मी से पाकी ह़ासिल करना	410	**तीसरी फ़स्ल :** हु़ज़ूरे क़ल्ब में नफ़्अ़ बख़्श दवा	507
क़ज़ाए ह़ाजत के आदाब	410	**चौथी फ़स्ल :** नमाज़ में हु़ज़ूरिये क़ल्ब की तफ़्सील	512
वुज़ू का त़रीक़ा	416	नमाज़ की शराइत़ व फ़राइज़	512
ग़ुस्ल का त़रीक़ा	427	**पाचवीं फ़स्ल :** ख़ुशूअ़, ख़ुज़ूअ़ से नमाज़ पढ़ने वालों की ह़िकायात	529
तयम्मुम का बयान	429	**बाब नम्बर 4 :** इमामत का बयान	535

मज़ामीन	सफ़हा नम्बर	मज़ामीन	सफ़हा नम्बर
पहली फ़स्ल : इमाम पर नमाज़ से पहले के नीज़ क़िराअत, अरकान और सलाम के बा'द के लाज़िम उमूर	535	शबे जुमा'रात के नवाफ़िल	612
दूसरी फ़स्ल : क़िराअत में इमाम की ज़िम्मेदारी	542	शबे जुमुआ़ के नवाफ़िल	612
तीसरी फ़स्ल : अरकाने नमाज़ में इमाम व मुक़्तदी की ज़िम्मेदारियां	545	शबे हफ़्ता के नवाफ़िल	613
चौथी फ़स्ल : सलाम फेरने के बा'द इमाम की ज़िम्मेदारी	548	माहे रजबुल मुरज्जब के नवाफ़िल	618
बाब नम्बर 5 : जुमुअ़तुल मुबारक का बयान	550	माहे शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म के नवाफ़िल	619
पहली फ़स्ल : जुमुआ़ की फ़ज़ीलत	550	(1) ग्रहन की नमाज़	620
दूसरी फ़स्ल : जुमुआ़ की शराइत़	554	(2) नमाज़े इस्तिसक़ा	621
तीसरी फ़स्ल : आ़दत की तरतीब के मुत़ाबिक़ आदाबे जुमुआ़ का बयान	557	(3) नमाज़े जनाज़ा	622
चौथी फ़स्ल : जुमुआ़ की सुन्नतें और आदाब	573	(4) तहिय्यतुल मस्जिद	625
बाब नम्बर 6 : मुतफ़र्रिक़ मसाइल का बयान	584	(5) तहिय्यतुल वुज़ू	627
बाब नम्बर 7 : नवाफ़िल का बयान	594	(6) घर में दाख़िल होते और निकलते वक़्त के नवाफ़िल	627
इतवार के नवाफ़िल	605	(7) नमाज़े इस्तिख़ारा	628
पीर के नवाफ़िल	606	(8) नमाज़े ह़ाजत	629
मंगल के नवाफ़िल	607	(9) **सलातुत्तस्बीह़** और इस की फ़ज़ीलत	631
बुध के नवाफ़िल	607	**ज़कात का बयान**	635
जुमा'रात के नवाफ़िल	608	**पहली फ़स्ल :** ज़कात की अक़्साम और इस के वुजूब के अस्बाब	637
जुमुआ़ के नवाफ़िल	608	**दूसरी फ़स्ल :** ज़कात की अदाएगी और इस की ज़ाहिरी व बात़िनी शराइत़	646
हफ़्ते के नवाफ़िल	609	**तीसरी फ़स्ल :** ज़कात लेने वाले, मुस्तह़िक़ होने के अस्बाब और क़ब्ज़े के वज़ाइफ़	672
शबे इतवार के नवाफ़िल	609	**चौथी फ़स्ल :** नफ़्ली सदक़ा के फ़ज़ाइल और लेने देने के आदाब	684
शबे पीर के नवाफ़िल	610	**रोज़ों का बयान**	700
शबे मंगल के नवाफ़िल	610	**पहली फ़स्ल :** रोज़े के वाजिबात, ज़ाहिरी सुन्नतें और रोज़ा तोड़ने वाले लाज़िम उमूर का बयान	705
शबे बुध के नवाफ़िल	611		

मज़ामीन	सफ़्हा नम्बर
दूसरी फ़स्ल : रोज़े के असरार और इस की बातिनी शराइत़	712
तीसरी फ़स्ल : नफ़्ली रोज़े और इन में वज़ाइफ़ की तरतीब	720
ह़ज का बयान	726
बाब नम्बर 1 : फ़ज़ाइले ह़ज का बयान	727
पहली फ़स्ल : ह़ज, बैतुल्लाह, मक्का व मदीना के फ़ज़ाइल और मसाजिद की जानिब सफ़र करने का बयान	727
दूसरी फ़स्ल : वुजूबे ह़ज की शराइत़, अरकान की दुरुस्ती और वाजिबात व ममनूआत का बयान	744
बाब नम्बर 2 : इब्तिदाए सफ़र से वापसी तक के दस आदाब	753
त़वाफ़ का त़रीक़ा	765
बाब नम्बर 3 : ह़ज की बारीकियां और बातिनी आ'माल	793
तिलावते क़ुरआन का बयान	821
बाब नम्बर 1 : क़ुरआन और क़ारिये क़ुरआन की फ़ज़ीलत	823
बाब नम्बर 2 : तिलावत के ज़ाहिरी आदाब	831
बाब नम्बर 3 : तिलावत के बातिनी आदाब	846
बाब नम्बर 4 : फ़हमे क़ुरआन और तफ़्सीर बिर्राए का बयान	875
ज़िक्रुल्लाह और दुआ़ओं का बयान	885
बाब नम्बर 1 : क़ुरआन व ह़दीष और अक़्वाले अस्लाफ़ से ज़िक्रुल्लाह के फ़ज़ाइल व फ़वाइद का बयान	886
पहली फ़स्ल : ज़िक्रुल्लाह की फ़ज़ीलत	886
दूसरी फ़स्ल : मजालिसे ज़िक्र की फ़ज़ीलत	891
तीसरी फ़स्ल : कलिमए तौह़ीद पढ़ने के फ़ज़ाइल	893
चौथी फ़स्ल : سُبْحٰنَ الله, اَلْحَمْدُ لله और दीगर अज़्कार के फ़ज़ाइल	896
पांचवीं फ़स्ल : ह़क़ीक़ते ज़िक्र और उस के फ़वाइद	901

मज़ामीन	सफ़्हा नम्बर
बाब नम्बर 2 : इस्तिग़फ़ार, दुरूद और दुआ़ के फ़ज़ाइल व आदाब	907
पहली फ़स्ल : दुआ़ की फ़ज़ीलत	907
दूसरी फ़स्ल : दुआ़ के दस आदाब	908
क़ह़त़ साली के मुतअ़ल्लिक़ 12 ह़िकायात	919
तीसरी फ़स्ल : दुरूदे पाक की फ़ज़ीलत और अ़ज़मते मुस्तफ़ा	924
चौथी फ़स्ल : इस्तिग़फ़ार की फ़ज़ीलत	929
बाब नम्बर 3 : अम्बियाए किराम व बुज़ुर्गाने दीन से मन्क़ूल 16 दुआ़एं	937
बाब नम्बर 4 : क़ुरआनो ह़दीष में वारिद नमाज़ के बा'द की दुआ़एं	952
बाब नम्बर 5 : मुख़्तलिफ़ मस्नून दुआ़एं	964
अवराद की तरतीब और शब बेदारी की तफ़्सील का बयान	981
बाब नम्बर 1 : अवराद की फ़ज़ीलत और तरतीब व अह़काम का बयान	983
अवराद की तादाद और तरतीब का बयान	989
दिन के वज़ाइफ़ की तफ़्सील	989
रात के वज़ाइफ़ का बयान	1014
अह़वाल बदलने से वज़ाइफ़ का बदल जाना	1034
बाब नम्बर 2 : क़ियामुल्लैल में आसानी पैदा करने वाले अस्बाब, शब बेदारी के लिये मुस्तह़ब रातें, मग़रिब व इशा के दरमियानी वक़्त और शब बेदारी की फ़ज़ीलत और रात के अवक़ात की तक़्सीम का बयान	1045
ह़िकायात की फ़ेहरिस्त	1077
तफ़्सीली फ़ेहरिस्त	1078
माख़ज़ो मराजेअ़	1114
अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या की कुतुब का तआ़रुफ़	1119

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

"फ़ैज़ाने इमाम ग़ज़ाली जारी रहेगा" के 23 हुरूफ़ की निस्बत से इस किताब को पढ़ने की "23 निय्यतें"

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰه تعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : نِیَّةُ الْمُؤْمِنِ خَیْرٌ مِّنْ عَمَلِه या'नी मुसलमान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है। (المعجم الكبير للطبراني،الحديث:٥٩٤٢،ج٦،ص١٨٥)

दो मदनी फूल : (1) बिग़ैर अच्छी निय्यत के किसी भी अ़मले ख़ैर का षवाब नहीं मिलता।
(2) जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा, उतना षवाब भी ज़ियादा।

(1) हर बार ह़म्द व (2) सलात और (3) तअ़व्वुज़ व (4) तस्मिय्या से आग़ाज़ करूंगा। (इसी सफ़ह़ा पर ऊपर दी हुई दो अ़रबी इबारात पढ़ लेने से चारों निय्यतों पर अ़मल हो जाएगा। (5) रिज़ाए इलाही के लिये इस किताब का अव्वल ता आख़िर मुत़ालआ़ करूंगा। (6) ह़त्तल वस्अ़ इस का बा वुज़ू और (7) क़िब्ला रू मुत़ालआ़ करूंगा (8) क़ुरआनी आयात और (9) अह़ादीषे मुबारका की ज़ियारत करूंगा। (10) जहां जहां "अल्लाह" का नामे पाक आएगा वहां عَزَّ وَجَلَّ और (11) जहां जहां "सरकार" का इस्मे मुबारक आएगा वहां صَلَّى اللّٰه تعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم और (12) जहां जहां किसी सह़ाबी या बुज़ुर्ग का नाम आएगा वहां رَضِیَ اللّٰهُ تعَالٰی عَنْهُ और رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَيْه पढ़ूंगा। (13) इस किताब का मुत़ालआ़ शुरूअ़ करने से पहले इस के मुअल्लिफ़ को ईसाले षवाब करूंगा। (14) (अपने ज़ाती नुस्ख़े पर) इन्दज़्ज़रूरत ख़ास ख़ास मक़ामात पर अन्डर लाइन करूंगा। (15) (अपने ज़ाती नुस्ख़े के) "याद दाश्त" वाले सफ़ह़ा पर ज़रूरी निकात लिखूंगा। (16) औलिया की सिफ़ात को अपनाऊंगा। (17) अपनी इस्लाह़ के लिये इस किताब के ज़रीए़ इल्म ह़ासिल करूंगा। (18) दूसरों को येह किताब पढ़ने की तरग़ीब दिलाऊंगा। (19) इस ह़दीषे पाक تَهَادَوْا تَحَابُّوْا या'नी एक दूसरे को तोह़फ़ा दो आपस में मह़ब्बत बढ़ेगी। ﴿موطا امام مالك، الحديث:١٧٣١،ج٢،ص٤٠٧﴾ पर अ़मल की निय्यत से (एक या ह़स्बे तौफ़ीक़) येह किताब ख़रीद कर दूसरों को तोह़फ़तन दूंगा। (20) इस किताब के मुत़ालए़ का षवाब सारी उम्मत को ईषाल करूंगा। (21) अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये रोज़ाना फ़िक्रे मदीना करते हुए मदनी इन्आ़मात का रिसाला पुर किया करूंगा और हर मदनी (इस्लामी) माह की 10 तारीख़ तक अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवा दिया करूंगा और (22) आ़शिक़ाने रसूल के मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र किया करूंगा। (23) किताबत वग़ैरा में शरई ग़लती मिली तो नाशिरीन को तह़रीरी त़ौर पर मुत्तलअ़ करूंगा।

(नाशिरीन वग़ैरा को किताबों की अग़लात़ सिर्फ़ ज़बानी बताना ख़ास मुफ़ीद नहीं होता।)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم ط

अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या

अज़ : *शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल* ***मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार*** *क़ादिरी रज़वी ज़ियाई* دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَلٰى اِحْسَانِهٖ وَبِفَضْلِ رَسُوْلِهٖ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक "**दा'वते इस्लामी**" नेकी की दा'वत, एह़याए सुन्नत और **इशाअ़ते इ़ल्मे शरीअ़त** को दुन्या भर में आ़म करने का अ़ज़्मे मुसम्मम रखती है, इन तमाम उमूर को ब ह़ुस्ने ख़ूबी सर अन्जाम देने के लिये **मुतअ़द्दद मजालिस** का क़ियाम अ़मल में लाया गया है जिन में से एक मजलिस "**अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या**" भी है जो **दा'वते इस्लामी** के **उ़-लमा व मुफ़्तियाने किराम** كَثَّرَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام पर मुश्तमिल है, जिस ने ख़ालिस इ़ल्मी, तह़क़ीक़ी और इशाअ़ती काम का बीड़ा उठाया है। इस के मुन्दरिजए ज़ैल **छे शो'बे** हैं :

﴾1﴿ शो'बए कुतुबे आ'ला ह़ज़रत   ﴾2﴿ शो'बए तराजुमे कुतुब
﴾3﴿ शो'बए दर्सी कुतुब   ﴾4﴿ शो'बए इस्लाह़ी कुतुब
﴾5﴿ शो'बए तफ़्तीशे कुतुब   ﴾6﴿ शो'बए तख़रीज

"**अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या**" की अव्वलीन तरजीह़ सरकारे आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, अ़ज़ीमुल बरकत, अ़ज़ीमुल मर्तबत, परवानए शम्ए़ रिसालत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, ह़ामिये सुन्नत, माह़िये बिदअ़त, आ़लिमे शरीअ़त, पीरे त़रीक़त, बाइ़से ख़ैरो बरकत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अलह़ाज अल ह़ाफ़िज़ अल क़ारी शाह **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن की गिरां मायह तसानीफ़ को अ़सरे ह़ाज़िर के तक़ाज़ों के मुत़ाबिक़ ह़त्तल वस्अ़ सहल उस्लूब में पेश करना है। तमाम **इस्लामी भाई** और इस्लामी बहनें इस इ़ल्मी, तह़क़ीक़ी और इशाअ़ती **मदनी काम** में हर मुमकिन तआ़वुन फ़रमाएं और **मजलिस** की त़रफ़ से शाएअ़ होने वाली कुतुब का ख़ुद भी मुत़ालआ़ फ़रमाएं और दूसरों को भी इस की तरग़ीब दिलाएं।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **"दा'वते इस्लामी"** की तमाम मजालिस ब शुमूल **"अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या"** को **दिन ग्यारहवीं** और **रात बारहवीं** तरक़्क़ी अ़ता फ़रमाए और हमारे हर अ़मले ख़ैर को ज़ेवरे इख़्लास से आरास्ता फ़रमा कर **दोनों जहां की भलाई** का सबब बनाए। हमें ज़ेरे गुम्बदे ख़ज़रा शहादत, जन्नतुल बक़ीअ़ में मदफ़न और **जन्नतुल फ़िरदौस** में **जगह** नसीब फ़रमाए । اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صلّى الله تعالى عليه واٰله وسلّم

रमज़ानुल मुबारक 1425 हि.

तीन पैसे का वबाल

दा'वते इस्लामी *के इशाअ़ती इदारे* ***मक्तबतुल मदीना*** *की मत़बूआ़ 1548 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "**फ़ैज़ाने सुन्नत**" सफ़ह़ा 900 पर शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना* ***अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी*** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه *फ़रमाते हैं : मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह* ***इमाम अह़मद रज़ा ख़ान*** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن *से क़र्ज़ की अदाएगी में सुस्ती और झूटे ह़ियल (ح-ی-ل) व हुज्जत करने वाले शख़्स ज़ैद के बारे में इस्तिफ़सार हुवा तो आप* رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه *ने इरशाद फ़रमाया : "ज़ैद फ़ासिक़ व फ़ाजिर, मुर्तकिबे कबाइर, कज़्ज़ाब, मुस्तह़िक़े अ़ज़ाब है इस से ज़ियादा और क्या अलक़ाब अपने लिये चाहता है ! अगर इस ह़ालत में मर गया और दैन (क़र्ज़) लोगों का इस पर बाक़ी रहा, इस की नेकियां उन (क़र्ज़ ख़्वाहों) के मुत़ालबे में दी जाएंगी। क्यूंकर दी जाएंगी (या'नी किस त़रह़ दी जाएंगी। येह भी सुन लीजिये !) तक़रीबन "**तीन पैसा**" दैन (क़र्ज़) के इवज़ (या'नी बदले)* ***सात सो नमाज़ें बा जमाअ़त*** *(देनी पड़ेगी)। जब इस (क़र्ज़ दबा लेने वाले) के पास नेकियां न रहेगी उन (क़र्ज़ ख़्वाहों) के गुनाह इस (मक़रूज़) के सर पर रखे जाएंगे और आग में फैंक दिया जाएगा।"* *(फ़तावा रज़विय्या, जि. 25 स. 69 मुलख़्ख़सन)*

पहले इसे पढ़ लीजिये !

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आ़लमे दुन्या को वुजूद बख़्शा, इस में क़िस्म क़िस्म की मख़्लूक़ पैदा फ़रमाई। ह़ज़रते इन्सान की तख़्लीक़ फ़रमा कर इसे अशरफ़ुल मख़्लूक़ात बनाया। इसे बे शुमार ने'मतों से नवाज़ा। मौत व ह़यात को पैदा कर के तख़्लीक़े इन्सानी का मक़्सद भी बयान फ़रमा दिया ताकि कोई कम अ़क़्ल येह न समझ बैठे कि इन्सान की पैदाइश का मक़्सद मह़ज़ खाना पीना, सोना, जिन्सी ख़्वाहिशात की तक्मील, फ़त्ह़ व नुस्रत, ग़लबा व इक़्तिदार और दूसरों पर तसल्लुत़ क़ाइम करना है, येह सोच व नज़रिया बिल्कुल फ़ासिद है क्यूंकि येह ऐसी बातें हैं जो जानवरों में भी पाई जाती हैं तो फिर इस में इन्सान की ख़ुसूसिय्यत क्या मा'ना रखती है। इन्सान की बादशाही व सरफ़राज़ी की वजह येह है कि इसे एक ऐसी सिफ़त अ़त़ा की गई है जो इस का बुन्यादी कमाल है और वोह है अ़क़्ल, जिस के ज़रीए़ येह शैत़ान व नफ़्सानी ख़्वाहिशात पर क़ाबू पा कर दीगर मख़्लूक़ात पर रिफ़्अ़त पाता और मा'रिफ़ते इलाही ह़ासिल करता है। येही वजह है कि अ़क़्ल के दुरुस्त इस्ति'माल के सबब बा'ज़ इन्सान बा'ज़ फ़िरिश्तों से अफ़्ज़ल और ग़लत़ इस्ति'माल के बाइ़ष जानवरों से भी बद तर हो जाते हैं। तख़्लीक़े इन्सानी का मक़्सद तो येह था जिसे क़ुरआने ह़कीम ने बयान फ़रमाया :

وَمَا خَلَقْتُ الْجِنَّ وَالْاِنْسَ اِلَّا لِیَعْبُدُوْنِ ﴿۵۶﴾

(پ۲۷،الذّٰریٰت:۵۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और मैं ने जिन्न और आदमी इतने ही लिये बनाए कि मेरी बन्दगी करें।*

चाहिये तो येही था कि अपने मक़्सद को सामने रखते हुए अ़क़्ल का दुरुस्त इस्ति'माल किया जाता लेकिन इन्सान इस मक़्सद से रू गर्दां है। मगर ऐसे माह़ोल में कुछ ख़ुश नसीब वोह भी हैं जो इस मक़्सद को पाने के लिये कोशां हैं और इस के लिये ह़ुसूले इ़ल्म के बा'द शारए़ अ़मल पर गामज़न हैं मगर येह भी ह़क़ीक़त है कि इन में से भी ज़ियादा तर अपने ज़ाहिर को संवारने की काविश में हैं और बात़िन की पाकीज़गी की त़रफ़ ध्यान नहीं देते। येह बात अपनी जगह दुरुस्त है कि इ़ल्मो अ़मल एक दूसरे को लाज़िम व मलज़ूम हैं। जैसा कि **ह़ज़रते सय्यिद अ़ली बिन उ़षमान हजवेरी अल मा'रूफ़ दाता गंज बख़्श** رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया : "अ़मल बिग़ैर इ़ल्म के अ़मल नहीं कहलाता क्यूंकि अ़मल उस वक़्त तक अ़मल नहीं बनता जब तक इसे इ़ल्म की ताईद ह़ासिल न हो और अ़मल का षवाब इ़ल्म ही की वजह से मिलता है, लिहाज़ा अ़मल बिग़ैर इ़ल्म के अ़मल नहीं बल्कि बद अ़मली है और यूं ही अ़मल को इ़ल्म से जुदा समझना जहालत है और येह ख़याल करना कि मह़ज़ इ़ल्म अ़मल से अफ़्ज़ल है, दुरुस्त नहीं क्यूंकि अ़मल के बिग़ैर इ़ल्म, इ़ल्म नहीं कहलाता और इ़ल्म पर अ़मल न हो तो ह़ुसूले इ़ल्म का षवाब नहीं मिलता।"(1)

---

(1) ......كشف المحجوب،باب اثبات العلم،ص ۱۱،ملخصًا۔

मा'लूम हुवा कि इल्मो अ़मल नागुज़ीर हैं मगर फ़क़त़ ज़ाहिरी इ़ल्म और ज़ाहिरी अ़मल ह़क़ीक़ी फ़ाइदा नहीं दे सकता, बात़िन की इस्लाह़ भी ज़रूरी है। जो ज़ाहिर को संवारे लेकिन बात़िन गन्दगियों से आलूदा हो तो इस की मिषाल उस शख़्स की सी है जो बादशाह को दा'वत देने के बा'द सिर्फ़ अपने घर के बैरूनी हिस्से की सफ़ाई व सुथराई पर तवज्जोह दे मगर अन्दरूनी हिस्से में गन्दगियों के ढेर लगे रहने दे। ऐसे शख़्स को कोई भी अ़क़्लमन्द नहीं कहेगा। इसी त़रह़ हुसूले इ़ल्म के बा'द अगर बन्दा सिर्फ़ ज़ाहिर को ख़ूब मुज़य्यन व आरास्ता करे और बात़िन को न संवारे तो वोह भी अ़क़्ल का दुरुस्त इस्ति'माल करने वाला नहीं कहलाएगा। फिर येह कि जिस क़दर बात़िन की इस्लाह़ और त़हारत व सफ़ाई ज़ियादा होती जाएगी इ़ल्म का नफ़्अ़ भी इसी क़दर बढ़ता जाएगा।

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ग़ज़ाली عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللهِ الۡوَالِی फ़रमाते हैं : "त़हारत के चार दर्जे हैं : (1) ज़ाहिर को नापाकियों, नजासतों वग़ैरा से पाक करना (2) आ'ज़ा को जराइम और गुनाह से पाक करना (3) दिल को बुरे अख़्लाक़ और ना पसन्दीदा ख़स्लतों से पाक करना (4) बात़िन को ग़ैरुल्लाह से पाक करना।"

चौथे दर्जे के मुतअ़ल्लिक़ फ़रमाते हैं : "इस से मक़्सूद दिल में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की जलालत व अ़ज़मत का ज़ुहूर और मा'रिफ़ते ख़ुदावन्दी का हुसूल है और बात़िन में मा'रिफ़ते इलाही उस वक़्त तक जा गुज़ीं नहीं हो सकती जब तक इसे ग़ैरे ख़ुदा के ख़याल से पाक न कर लिया जाए। नीज़ बन्दा उस वक़्त तक बात़िन को मज़मूम सिफ़ात से पाक और अच्छी आ़दात से आबाद नहीं कर सकता जब तक दिल को बुरी आ़दत से पाक और अच्छे अख़्लाक़ से मुज़य्यन न कर ले और जो शख़्स आ'ज़ा को ममनूआ़त से बचा कर इ़बादात से मा'मूर न कर ले वोह बुलन्द मक़ाम पर फ़ाइज़ नहीं हो सकता। लिहाज़ा जब मत़लूब क़ाबिले इ़ज़्ज़ो शरफ़ हो तो उस का रास्ता दुश्वार और त़वील होता है और इस में घाटियां ज़ियादा होती हैं और येह मह़ज़ ख़ाम ख़याली है कि बात़िन की पाकीज़गी बा आसानी ह़ासिल हो जाएगी।"(1)

वाज़ेह़ हुवा कि बात़िन की इस्लाह़ व सफ़ाई के लिये मुजाहदात की मशक़्क़त बरदाश्त करना, नफ़्स का मुह़ासबा करना और इस के साथ जिहाद लाज़िम है और येह सब से बड़ा जिहाद है। हुज़ूर रह़मते आ़लम, हादिये बरह़क़, मुस्त़फ़ा जाने रह़मत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने जिहाद बिन्नफ़्स को जिहादे अक्बर फ़रमाया है, जैसा कि एक रिवायत में है कि "हम जिहादे असग़र से जिहादे अक्बर (या'नी जिहाद बिन्नफ़्स) की त़रफ़ लौटे।"(2)

---

(1) ......احیاء علوم الدین، کتاب الطهارت، ج ۱، ص ۱۷۳، ۱۷۴، ملخصًا۔
(2) ......احیاء العلوم، ج ۲، ص ۳۰۴۔

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा सय्यिद मुह़म्मद बिन मुह़म्मद हु़सैनी मुर्तज़ा ज़बैदी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَلِی इस की शर्ह़ में फ़रमाते हैं : "जिहाद बिन्नफ़्स से मुराद येह है कि नफ़्स को रिज़ाए इलाही के लिये इ़बादात पर मजबूर किया जाए और नाफ़रमानी से रोका जाए, इसे जिहादे अक्बर इस लिये फ़रमाया गया कि जो अपने नफ़्स से जिहाद नहीं कर सकता उस के लिये ख़ारिजी दुश्मन से जिहाद करना भी मुमकिन नहीं क्यूंकि जो दुश्मन दो पहलूओं के दरमियान है और ग़ालिब है, जब इस से जिहाद नहीं हो पा रहा तो ख़ारिजी दुश्मन से जिहाद क्यूंकर मुमकिन होगा लिहाज़ा ख़ारिजी के मुक़ाबले में बातिनी दुश्मन से जिहाद जिहादे अक्बर है।"(1)

फिर ह़क़ीक़त तो येह है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसी का अ़मल क़बूल फ़रमाता है जिस का बातिन पाक और तक़्वा व परहेज़गारी से मुज़य्यन व आरास्ता हो। इरशादे बारी तआ़ला है :

لَنْ یَّنَالَ اللّٰهَ لُحُوْمُهَا وَلَا دِمَآؤُهَا وَ لٰكِنْ یَّنَالُهُ التَّقْوٰى مِنْكُمْ (پ۱۷، الحج:۳۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ***अल्लाह*** *को हरगिज़ न उन के गोश्त पहुंचते हैं न उन के ख़ून हां तुम्हारी परहेज़गारी उस तक बारयाब होती है।*

और यूंही इस सिलसिले में येह फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم भी हमारे लिये मश्अ़ले राह है : "اِنَّ اللّٰهَ لَا یَنْظُرُ اِلٰی صُوَرِكُمْ وَلَا اِلٰی اَمْوَالِكُمْ وَلٰكِنْ یَنْظُرُ اِلٰی قُلُوْبِكُمْ وَاَعْمَالِكُمْ" या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ सिर्फ़ तुम्हारी सूरतें और तुम्हारे अमवाल नहीं देखता बल्कि वोह तुम्हारे दिलों और तुम्हारे आ'माल को भी देखता है।" मत़लब येह है कि रब्ब तआ़ला फ़क़त़ सूरत नहीं देखता सीरत भी देखता है।(2)

ज़ेरे नज़र किताब हु़ज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन अह़मद ग़ज़ाली शाफ़ेई عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَلِی (मुतवफ़्फ़ा 505 हि.) की तसव्वुफ़ पर मश्हूर व मा'रूफ़ और मो'र्रकतुल आरा तस्नीफ़ "**احیاء علوم الدین**" ﴿مطبوعہ: دارالکتب العلمیۃ بیروت لبنان، ۲۰۰۸ء﴾ की पहली जिल्द का तर्जमा है। यूं तो आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की हर तस्नीफ़ इ़ल्मो इ़रफ़ान का बेश बहा ख़ज़ाना है मगर इह्याउल उ़लूम ऐसी किताब है जो अपनी मिषाल आप है। इस का गहरा मुत़ालआ़ और फिर बयान कर्दा बातों पर अ़मल तज़्कियए नफ़्स के लिये अकसीर का दर्जा रखता है। इस में रोज़ मर्रा ज़िन्दगी के कमो बेश तमाम ही मुआ़मलात पर सेर ह़ासिल गुफ़्त्गू की गई है और ज़ाहिरी उ़लूम के साथ साथ बातिनी उ़लूम को भी बयान किया गया है। अल ग़रज़ क़ुरआनो सुन्नत की ता'लीमात का निचोड़ और सलफ़े सालेह़ीन की ज़िन्दगियों का मा ह़ासिल येह किताब इन्सान को "कामिल इन्सान" बनाने में बेह़द मुआ़विन है।

---

(1) اتحاف السادۃ المتقین، ج۷، ص۴۱۳۔
(2) مرآۃ المناجیح، ج۷، ص۱۲۸۔

चार जिल्दों पर मुहीत़ येह अ़ज़ीमुश्शान किताब आ'माल की चार अक़्साम पर मुश्तमिल है, हर जिल्द में एक क़िस्म के ज़ाहिरी व बात़िनी अह़काम मज़्कूर हैं। किताब में एक मुक़द्दमा, एक ख़ातिमा और 40 अबवाब हैं।

पहली जिल्द में इ़बादात का ज़िक्र है जिस में दर्जे ज़ैल 10 अबवाब हैं : (1) इ़ल्म का बयान (2) अ़क़ाइद का बयान (3) त़हारत का बयान (4) नमाज़ का बयान (5) ज़कात का बयान (6) रोज़े का बयान (7) ह़ज का बयान (8) आदाबे तिलावते क़ुरआन का बयान (9) दुआ़ व अज़्कार का बयान (10) अवराद की तरतीब और अवक़ात का बयान।

दूसरी जिल्द में आ़दात का ज़िक्र है जो दर्जे ज़ैल 10 अबवाब पर मुश्तमिल है : (1) आदाबे त़आ़म का बयान (2) निकाह़ का बयान (3) रोज़गार के अह़काम का बयान (4) ह़लाल व ह़राम का बयान (5) आदाबे सोह़बत का बयान (6) गोशा नशीनी का बयान (7) आदाबे सफ़र (8) वजदो समाअ़ का बयान (9) اَمْرٌ بِالْمَعْرُوْف وَنَهْىٌ عَنِ الْمُنْكَر का बयान (10) आदाबे ज़िन्दगी का बयान।

तीसरी जिल्द में मोहलिकात (हलाकत में डालने वाली बातों) का बयान है इस में दर्जे ज़ैल 10 अबवाब हैं : (1) अ़जाइबाते क़ल्ब का बयान (2) रियाज़ते नफ़्स का बयान (3) पेट और नफ़्स की ख़्वाहिशात का बयान (4) ज़बान की आफ़त का बयान (5) ग़ुस्सा, कीना, ह़सद और इन के नुक़्सानात का बयान (6) दुन्या की मज़म्मत का बयान (7) माल की मह़ब्बत और बुख़्ल की मज़म्मत का बयान (8) ह़ुब्बे जाह और रियाकारी का बयान (9) तकब्बुर और ख़ुद पसन्दी की मज़म्मत का बयान (10) ग़ुरूर की मज़म्मत का बयान।

चौथी जिल्द में मुनजियात (नजात दिलाने वाले उमूर) का बयान है इस में भी दर्जे ज़ैल 10 अबवाब हैं : (1) तौबा का बयान (2) सब्रो शुक्र का बयान (3) ख़ौफ़ो रजा का बयान (4)फ़क़्रो ज़ोह्द का बयान (5) तौह़ीद व तवक्कुल का बयान (6) शौक़ व मह़ब्बत और उन्स व रिज़ा का बयान (7) निय्यत, इख़्लास और सिद्क़ का बयान (8) मुराक़बा व मुह़ासबा का बयान (9) फ़िक्र व इ़ब्रत का बयान (10) मौत और मा बा'दल मौत का बयान।

इस से क़ब्ल इह़याउल उ़लूम के ख़ुलासे ''लुबाबुल इह़या'' का तर्जमा बनाम ''इह़याउल उ़लूम का ख़ुलासा'' दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे ''मक्तबतुल मदीना'' से त़ब्अ़ हो कर अ़वाम व ख़वास में मक़्बूल हो चुका है। ''**अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश**'' के अ़ज़ीम जज़्बे के तह़त **दा'वते इस्लामी** की ख़ालिस इ़ल्मी, तह़क़ीक़ी और इशाअ़ती मजलिस ''**अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या**'' के **शो'बए तराजुमे कुतुब** (अ़रबी से उर्दू) के मदनी उ़-लमा كَثَّرَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی ने

इस तर्जमे की सआ़दत ह़ासिल की है। येह मदनी उ़-लमा अपनी मुसलसल काविशों से अब तक (रबीउ़ष्षानी 1433 हि.) 27 अ़रबी कुतुब के उर्दू में तराजुम पेश कर चुके हैं जो इन्तिख़ाबे उ़न्वान और हुस्ने सूरी व मा'नवी के ए'तिबार से मुन्फ़रिद व मुमताज़ हैं, इन की फ़ेहरिस्त किताब के आख़िर में मुलाह़ज़ा फ़रमाए। इन तराजुम और पेशे नज़र तर्जमे में जो भी ख़ूबियां हैं यक़ीनन **रब्बे रह़ीम** عَزَّوَجَلَّ और उस के **मह़बूबे करीम** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की अ़त़ाओं, **औलियाए किराम** رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام की इनायतों और शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त़्त़ार क़ादिरी रज़वी** دَامَتْ بَرَکَاتُهُمُ الْعَالِیَه की शफ़्क़तों और पुर ख़ुलूस दुआ़ओं का नतीजा हैं और जो ख़ामियां हैं इन में हमारी लाशुऊ़री कोताह फ़हमी का दख़्ल है।

अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या और इह़याउल उ़लूम

अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या से किसी भी अ़रबी किताब का तर्जमा कमो बेश 16 मराह़िल से गुज़र कर आप के हाथों में पहुंचता है। जिन में तख़्रीज, तर्जमा, तक़ाबुले आयात व तर्जमा, फ़ोरमेटिंग, प्रुफ़ रीडिंग, तफ़्तीशे तख़्रीज, मुफ़ीद व नागुज़ीर ह़वाशी, आयाते क़ुरआनिय्या की पेस्टिंग, शरई तफ़्तीश और मुश्किल अल्फ़ाज़ की तसहील व ए'राब, फ़ाइनल प्रुफ़ रीडिंग वग़ैरा ऐसे कठिन मराह़िल शामिल हैं। पेशे नज़र तर्जमे पर मज़्कूरा मराह़िल के साथ साथ दर्जे ज़ैल उमूर का इल्तिज़ाम किया गया है :

﴾1﴿ आयाते मुबारका का तर्जमा इमामे अहले सुन्नत मुजद्दिदे दीनो मिल्लत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن के तर्जमए क़ुरआन "**कन्ज़ुल ईमान**" से लिया गया है।

﴾2﴿ अह़ादीषे करीमा की तख़्रीज अस्ल माख़ज़ से करने की कोशिश की गई है और बाक़ी ह़वाला जात में जो कुतुब दस्तियाब हो सकीं उन से तख़्रीज की गई है।

﴾3﴿ ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ग़ज़ाली عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِی चूंकि शाफ़ेउ़ल मज़हब हैं इस लिये फ़िक़्ही ए'तिबार से इख़्तिलाफ़ी मसाइल में ह़त्तल मक़्दूर अह़नाफ़ का मौक़िफ़ ह़ाशिये में बयान कर दिया गया है।

﴾4﴿ जिन मक़ामात पर इन्तिहाई पेचीदा व मुश्किल अबह़ाष आई हैं, इन में जहां मुमकिन था वहां आसान अन्दाज़ में बयान कर दिया गया और कहीं इन का ख़ुलासा लिखा गया और जहां मुमकिन न था इन अबह़ाष को ह़ज़्फ़ कर दिया गया है, अहले इ़ल्म अस्ल किताब की त़रफ़ रुजूअ़ फ़रमाएं।

﴾5﴿ जहां कहीं लुग़वी अबह़ाष नफ़िस मज़्मून के लिये लाज़िम व मलज़ूम थीं वहां इन्हें बरक़रार रखा गया है वरना ह़ज़्फ़ कर दी गई हैं। यूंही रिवायात वग़ैरा में जहां कहीं तकरार था वहां ब एतिबारे ज़रूरत बाक़ी रखा गया है वरना ह़ज़्फ़ कर दिया गया है और येह गिनती के चन्द मक़ामात हैं।

﴾6﴿ अहले सुन्नत के अकाबिर मुतरजिमीन شَکَرَاللّٰہُ تَعَالٰی سَعْیَهُمْ के दस्तयाब उर्दू तराजुम से भी मदद ली गई है।

﴾7﴿ इह्याउल उ़लूम की शर्ह़ "इत्तिह़ाफ़ुस्सादतिल मुत्तक़ीन" को बिल इल्तिज़ाम सामने रखा गया है।

﴾8﴿ अह़ादीषे मुबारका का तर्जमा करते वक़्त अकाबिर मुतरजिमीन अहले सुन्नत के उर्दू तराजुम से भी राहनुमाई ली गई है।

﴾9﴿ किताब कमो बेश 2300 ह़वालाजात से मुज़य्यन व आरास्ता है।

﴾10﴿ ह़त्तल इम्कान आसान और आ़म फ़हम अल्फ़ाज़ इस्ति'माल किये गए हैं ताकि ज़ियादा से ज़ियादा इस्लामी भाई मुस्तफ़ीद हो सकें।

﴾11﴿ अगर कहीं मुश्किल और ग़ैर मा'रूफ़ अल्फ़ाज़ ज़रूरी थे तो उन पर ए'राब लगा कर हिलालैन में मआ़नी व मत़ालिब लिख दिये हैं।

﴾12﴿ कोशिश की गई है कि पढ़ने वालों तक वोही कैफ़िय्यत पहुंचे जो अस्ल किताब में जल्वे लुटा रही है।

﴾13﴿ अ़रबी उ़नवानात को सामने रखते हुए मुस्तक़िल उर्दू उ़नवानात क़ाइम किये गए हैं।

﴾14﴿ रिवायत के मज़्मून व मफ़्हूम के पेशे नज़र ज़ैली उ़नवानात का इज़ाफ़ा भी किया गया है।

﴾15﴿ अ़लामाते तरक़ीम (रुमूज़े अवक़ाफ़) का भी ख़याल रखा गया है।

﴾16﴿ बत़ौरे वज़ाह़त मुफ़ीद व ज़रूरी ह़वाशी भी तह़रीर किये गए हैं।

﴾17﴿ माख़ज़ो मराजेअ़ की फेहरिस्त किताब के आख़िर में दी गई है।

﴾18﴿ किताब की तीन फेहरिस्तें बनाई गई हैं : (1) ज़िमनी (2) तफ़्सीली (3) ह़िकायात, ज़िमनी फ़ेहरिस्त आग़ाज़े किताब में और तफ़्सीली व ह़िकायात आख़िर में दी गई है।

बारगाहे रब्बुल इ़ज़्ज़त में दुआ़ है कि हमें इस किताब को पढ़ने, इस पर अ़मल करने और दूसरे इस्लामी भाइयों बिल ख़ुसूस उ़-लमाए किराम کَثَّرَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام को तोह़फ़तन पेश करने की सआ़दत अ़त़ा फ़रमाए। नीज़ हमें "**अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश**" करने के लिये **मदनी इन्आ़मात** पर अ़मल और **मदनी क़ाफ़िलों** में सफ़र करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए और दा'वते इस्लामी की तमाम मजालिस ब शुमूल मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या को दिन पच्चीसवीं रात छब्बीसवीं तरक़्क़ी अ़त़ा फ़रमाए। اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وسلّم

शो'बए तराजिमे कुतुब

(मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या)

तआ़रुफ़े मुसन्निफ़

नाम व नसब और विलादते बा सआ़दत :

आप की कुन्यत अबू ह़ामिद, लक़ब हुज्जतुल इस्लाम और नामे नामी, इस्मे गिरामी मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन अह़मद तूसी ग़ज़ाली शाफ़ेई رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تعَالٰی है। आप 450 हि. में ख़ुरासान के ज़िलअ़ तूस के अ़लाक़े ताबिरान में पैदा हुए।[1] ख़ुरासान ईरान के मशरिक़ में वाक़ेअ़ एक वसीअ़ सूबा था। मौजूदा ख़ुरासान में क़दीम ख़ुरासान का निस्फ़ भी शामिल नहीं, कुछ अफ़ग़ानिस्तान और कुछ दीगर ममालिक में शामिल हो चुका है।[2]

इब्तिदाई ह़ालात :

आप के वालिदे माजिद ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन मुह़म्मद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الصَّمَد शहर ख़ुरासान ही में ऊन कात कर बेचा करते थे या'नी पेशे के लिह़ाज़ से धागे के ताजिर थे, इसी निस्बत से आप का ख़ानदान ''ग़ज़ाली'' कहलाता है। अभी इमाम साहि़ब और आप के भाई ह़ज़रते सय्यिदुना अह़मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِى कम उ़म्र ही थे कि 465 हि. में वालिदे मोह़तरम विसाल फ़रमा गए। इन्तिक़ाल से पहले इन्हों ने अपने एक सूफ़ी दोस्त ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ह़ामिद अह़मद बिन मुह़म्मद राज़कानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِى को वसिय्यत की थी कि ''मेरा तमाम अषाषा मेरे इन दोनों बेटों की ता'लीम व परवरिश पर ख़र्च कर दीजियेगा।'' वसिय्यत के मुत़ाबिक़ इन के वालिदे गिरामी का सरमाया इन की ता'लीम व परवरिश पर सर्फ़ कर दिया गया।[3]

आ़लिम अवलाद की तमन्ना :

ह़ज़रते सय्यिदुना ताजुद्दीन सुबकी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِى के वालिदे माजिद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَاجِد बड़े नेक इन्सान थे। अपने हाथ की कमाई से खाते या'नी ऊन कात कर फ़रोख़्त करते थे। ह़ज़राते फ़ुक़हाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام की मजालिस में ह़ाज़िर होते, उन के साथ अच्छा सुलूक करते ह़त्तल मक़दूर उन पर

1 ......اتحاف السادة المتّقين، مقدمة الكتاب، ج ١، ص ٩۔

2 ......اردو دائرہ معارفِ اسلامیہ، ج٨، ص ٩٠٧۔

3 ......اتحاف السادة المتّقين، مقدمة الكتاب، ج ١، ص ٩۔

ख़र्च करते और उन की मजालिस में ख़ौफ़े ख़ुदा से तज़र्रुअ़ व ज़ारी करते और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से दुआ़ करते कि "मुझे बेटा अ़ता कर और उसे फ़क़ीह (आ़लिम) बना।" नीज़ इसी त़रह मजालिसे वा'ज़ में ह़ाज़िर होते। वहां भी रो रो कर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से दुआ़ करते कि "मुझे बेटा अ़ता कर और उसे वाइ़ज़ बना।" अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इन की येह दोनों दुआ़एं क़बूल फ़रमाईं। (1)

इ़ल्मी ज़िन्दगी

ता'लीम के लिये सफ़र :

इब्तिदाई ता'लीम अपने शहर में ही ह़ासिल की जहां कुतुबे फ़िक़्ह ह़ज़रते सय्यिदुना अह़मद बिन मुह़म्मद राज़कानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّورَانِى से पढ़ीं ..... अभी उ़म्र शरीफ़ 20 साल से कम ही थी कि (ईरान के मशरिक़ी शहर) जुरजान तशरीफ़ ले गए वहां ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू नस्र इस्माईली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَلِى की ख़िदमत में कुछ अ़र्सा रहे। फिर अपने शहर तूस लौट आए .... 473 हि. में (ईरान के क़दीम शहर) नैशापूर में ह़ज़रते सय्यिदुना इमामुल ह़रमैन इमाम अ़ब्दुल मलिक बिन अ़ब्दुल्लाह जुवैनी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَنِى (मुतवफ़्फ़ा 478 हि.) की बारगाह में ज़ानूए तलम्मुज़ तै किया और इन से उसूले दीन, इख़्तिलाफ़ी मसाइल, मुनाज़िरा, मन्ति़क़ और ह़िक्मत वग़ैरा में महारते ताम्मा ह़ासिल की.... 478 हि. में ह़ज़रते सय्यिदुना इमामुल ह़रमैन رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه के विसाल के बा'द उन की जगह आप को इस मन्सबे आ'ला पर फ़ाइज़ किया गया.....484 हि. में वज़ीरे निज़ामुल मुल्क ने मद्रसा निज़ामिया बग़दाद के शैख़ुल जामिआ़ (वाइस चान्सेलर) का ओ़हदा आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه को पेश किया जिसे आप ने क़बूल फ़रमा लिया..... चार साल बग़दाद में तदरीस व तस्नीफ़ में मशग़ुलिय्यत के बा'द ह़ज के इरादे से मक्कए मुअ़ज़्ज़मा रवाना हो गए। बक़ौल अ़ल्लामा इब्ने जौज़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى (मुतवफ़्फ़ा 597 हि.) "बग़दाद में आप की मजलिसे दर्स में बड़े बड़े उ़-लमाए किराम ह़ाज़िर होते जैसे इमामुल ह़नाबिला ह़ज़रते सय्यिदुना अबुल ख़त़्त़ाब मह़फ़ूज़ बिन अह़मद (मुतवफ़्फ़ा 510 हि.) और आ़लिमुल इ़राक़ व शैख़ुल ह़नाबिला अ़ली बिन अ़क़ील बग़दादी (मुतवफ़्फ़ा 513 हि.) رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمَا वग़ैरा। येह ह़ज़रात आप से इक्तिसाबे फ़ैज़ करते और आप के बयान पर ह़ैरत का इज़्हार करते और आप के कलाम को अपनी किताबों में नक़्ल करते।"(2) ......489 हि. में दिमिश्क़ पहुंचे और कुछ दिन वहां

---

1 ......طبقات الشافعية الكبرى، ج٦، ص١٩٤۔

2 ......المنتظم فی تاريخ الملوك والامم، ج٩، ص١٦٨۔

क़ियाम फ़रमाया। एक अ़र्सा बैतुल मुक़द्दस में गुज़ारा। फिर दोबारा दिमिश्क़ तशरीफ़ लाए और जामेअ़ दिमिश्क़ के मग़रिबी मनारे पर ज़िक्रो फ़िक्र और मुराक़बे में मश्ग़ूल हो गए। दिमिश्क़ में ज़ियादा तर वक़्त ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ नस्र मक़्दमी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَلِی की ख़ानक़ाह में गुज़रता था... मुल्के शाम में 10 साल क़ियाम फ़रमाया, इसी दौरान इह्याउल उ़लूम (4 जिल्दें), जवाहिरुल क़ुरआन, तफ़्सीरे याक़ूतुत्तावील (40 जिल्दें) मिश्कातुल अन्वार वग़ैरा मशहूर कुतुब तस्नीफ़ फ़रमाईं। फिर ह़िजाज़, बग़दाद और नैशापूर के दरमियान सफ़र जारी रहा और बिल आख़िर अपने आबाई शहर तूस वापस आ कर इ़बादत व रियाज़त में मसरूफ़ हो गए और ता दमे आख़िर वा'ज़ व नसीह़त, इ़बादत व रियाज़त और तसव्वुफ़ की तदरीस में मश्ग़ूल रहे।[1]

असातिज़ए किराम :

आप के मशहूर असातिज़ए किराम के अस्माए गिरामी येह हैं : **फ़िक़ह** में ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा अह़मद बिन मुह़म्मद राज़कानी...... ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू नस्र इमाईली ...... ह़ज़रते सय्यिदुना इमामुल ह़रमैन अबुल मआ़ली इमाम जुवैनी। **तसव्वुफ़ में** ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अ़ली फ़ज़्ल बिन मुह़म्मद बिन अ़ली फ़ारमज़ी तूसी.... ह़ज़रते सय्यिदुना यूसुफ़ सज्जाज। **ह़दीष में** ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सह्ल मुह़म्मद बिन अह़मद ह़फ़्सी मरवज़ी..... ह़ज़रते सय्यिदुना ह़ाकिम अबुल फ़त्ह़ नस्र बिन अ़ली बिन अह़मद ह़ाकिमी तूसी.... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मुह़म्मद अ़ब्दुल्लाह बिन मुह़म्मद बिन अह़मद ख़ुवारी..... ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन यह़्या सुज्जाई जौज़नी.....ह़ज़रते सय्यिदुना ह़ाफ़िज़ अबू फ़ितयान उ़मर बिन अबुल ह़सन रवासी दहिस्तानी.....और ह़ज़रते सय्यिदुना नस्र बिन इब्राहीम मक़्दसी (رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْهِمْ اَجْمَعِیْن)[2]

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा सय्यिद मुर्तज़ा ज़बैदी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی (मुतवफ़्फ़ा 1205 हि.) "इत्तिह़ाफ़ुस्सादतिल मुत्तक़ीन" के मुक़द्दमे में लिखते हैं : "इ़ल्मे कलाम व जदल में ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِی के मशाइख़ के बारे में इ़ल्म न हो सका और फ़लसफ़ा में आप का कोई उस्ताज़ न था जैसा कि अपनी किताब "اَلْمُنْقِذُ مِنَ الضَّلَال" में आप ने ख़ुद इस की सराह़त फ़रमाई है।"[3]

---

1 ......اتحاف السادة المتّقين، مقدمة الكتاب، ج ١، ص ٩ تا ١١۔

شذرات الذهب، ج ٤، ص ١٤٤ تا ١٤٥۔

2 ......اتحاف السادة المتّقين، مقدمة الكتاب، ج ١، ص ٢٦۔

3 ......اتحاف السادة المتّقين، مقدمة الكتاب، ج ١، ص ٢٦۔

तलामिज़ा :

हुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى के बेशुमार शागिर्द थे जिन में से अकषर मुतबह़्ह़िर आ़लिम, फ़क़ीह, मुह़द्दिष, मुफ़स्सीर और मुसन्निफ़ की ह़ैषिय्यत से मा'रूफ़ हैं। चन्द के अस्माए गिरामी येह हैं :

क़ाज़ी अबू नस्र अह़मद बिन अ़ब्दुल्लाह ख़मक़री (मुतवफ़्फ़ा 554 हि.) ......अबुल फ़त्ह़ अह़मद बिन अ़ली ह़म्बली (मुतवफ़्फ़ा 518 हि.) [मद्रसा निज़ामिया में मुतअ़द्दद उ़लूम के मुदर्रिस थे] ..... अबू मन्सूर मुह़म्मद बिन इस्माईल अ़त्तारी तूसी (मुतवफ़्फ़ा 486 हि.)......अबू सईद मुह़म्मद बिन सा'द नवक़ानी (मुतवफ़्फ़ा 554 हि.).... अबू अ़ब्दुल्लाह मुह़म्मद बिन तूमर्त [इन्हों ने स्पेन में एक अ़ज़ीमुश्शान सल्त़नत की बुन्याद रखी].....अबू ह़ामिद मुह़म्मद बिन अ़ब्दुल मलिक जवज़क़ानी इस्फ़राइनी......अबू अ़ब्दुल्लाह मुह़म्मद बिन अ़ली इराक़ी बग़दादी (मुतवफ़्फ़ा बा'द 540 हि.)....अबू सईद मुह़म्मद बिन अ़ली जावानी कुर्दी......इमाम अबू सईद मुह़म्मद बिन यह़्या नैशापूरी (मुतवफ़्फ़ा 548 हि.).....अबू त़ाहिर इब्राहीम बिन मुत्तह्हर शैबानी (मुतवफ़्फ़ा 513 हि.) [इमाम साह़िब ने एक ख़त़ में लिखा कि मेरे शागिर्दों में सब से मुमताज़ हैं].....अबुल फ़त्ह़ नस्र बिन मुह़म्मद मराग़ी सूफ़ी...... अबू अ़ब्दुल्लाह ह़ुसैन बिन नस्र मौसीली (मुतवफ़्फ़ा 552 हि.) अबुल ह़सन सा'द अल ख़ैर बिन मुह़म्मद अन्सारी (मुतवफ़्फ़ा 541 हि.) [येह अ़ल्लामा इब्ने जौज़ी और इमाम समआ़नी के शैख़ हैं]..... अबू अ़ब्दुल्लाह शाफ़ेअ़ बिन अ़ब्दुर्रशीद जीली (मुतवफ़्फ़ा 541 हि.) [येह इमाम इब्ने समआ़नी के शैख़ हैं].....अबू आ़मिर दग़श बिन अ़ली नईमी (मुतवफ़्फ़ा 542 हि.).....अबू त़ालिब अ़ब्दुल करीम बिन अ़ली राज़ी (मुतवफ़्फ़ा 528 हि.) [येह इह़्याउल उ़लूम के ह़ाफ़िज़ थे].....अबू मन्सूर सईद बिन मुह़म्मद रज़्ज़ाज़ (मुतवफ़्फ़ा 503 हि.) .....अबुल ह़सन अ़ली बिन मुह़म्मद जुवैनी सूफ़ी......अबू मुह़म्मद सालेह़ बिन मुह़म्मद ....अबुल ह़सन अ़ली बिन मुत़ह्हर दीनवरी (मुतवफ़्फ़ा 533 हि.) [येह 80 जिल्दों पर मुश्तमिल किताब **"तारीख़े दिमिश्क़"** के अ़ज़ीम मुसन्निफ़ इमाम इब्ने अ़साकिर के उस्ताज़ व शैख़ हैं].....मरवान बिन अ़ली त़न्ज़ी (मुतवफ़्फ़ा 540 हि.).....जमालुल इस्लाम अबुल ह़सन अ़ली बिन मुस्लिम सुलमी [मुअख़्ख़िरुज़्ज़िक्र दोनों ह़ज़रात भी इमाम इब्ने अ़साकिर के शुयूख़ में से हैं] (رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْهِم)[1]

---

1 ......اتحاف السادۃ المتقین، مقدمۃ الکتاب، ج ۱، ص ۶۰ تا ۶۲۔

रूहानिय्यत की तरफ़ सफ़र

शैखे़ कामिल की बैअ़त :

हज़रते सय्यिदुना इमाम ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى ने दौरे ता़लिबे इल्मी में हज़रते सय्यिदुना शैख़ अबू अ़ली फ़ज़्ल बिन मुह़म्मद बिन अ़ली फ़ारमज़ी तूसी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَلِى (मुतवफ़्फ़ा 477 हि.) के हाथ पर (27 साल की उ़म्र में) बैअ़त की। शैखे़ मौसूफ़ बहुत आ़ली मर्तबत, फ़िक़्हे शाफ़ेई के ज़बरदस्त आ़लिम और मज़ाहिबे सलफ़ से बा ख़बर थे और ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबुल क़ासिम कुशैरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى (मुतवफ़्फ़ा 417 हि.) के जलीलुल क़द्र शागिर्दों में से हैं।[1]

बाति़नी उ़लूम की तलाश :

आप رَحْمَةُاللهِ تعالٰى عَلَيْه 478 हि. ता 484 हि. सरताजे मदारिसे इस्लामिया मद्रसए निज़ामिया नैशापूर में "इमामुल ह़रमैन" फिर 484 हि. ता 488 हि. मर्कज़े उ़लूमे इस्लामिया मद्रसा निज़ामिया बग़दाद में "मुदर्रिसे आ'ला" के मन्सब पर फ़ाइज़ रहे। सुल्ता़ने वक़्त और मुल्क भर के उ़–लमा व फ़ु–ज़ला आप के तबह़्ह़ुरे इल्मी के क़ाइल हो गए और एक वक़्त ऐसा भी आया कि बादशाहे वक़्त से ज़ियादा इमाम साह़िब का सिक्का लोगों के दिलों पर बैठ गया। सल्त़नते सल्जूक़िय्या के वज़ीरे आ'ज़म निज़ामुल मुल्क तूसी तो आप के बड़े मो'तक़िद थे और वोह ब नफ़्से नफ़ीस उमूरे ममलुकत में आप से मश्वरा करते थे। तमाम उ़लूम की तक्मील के बा'द अव्वलन इमामुल ह़रमैन फिर मुदर्रिसे आ'ला जैसे ओ़हदों पर मुतमक्किन रहने के बा वुजूद आप को जिस बाति़नी व रूह़ानी सुकून की तलाश थी वोह ह़ासिल न हो सका। बग़दाद जो उस वक़्त मुख़्तलिफ़ फ़िर्क़ों और बाति़ल मज़ाहिब के बेजा मुनाज़रों और मुजादलों का दंगल बना हुवा था और दारुल ख़िलाफ़ा पर इन्तिशार और फ़ितना फ़साद की कैफ़िय्यत त़ारी थी।[2] उस वक़्त चार फ़िर्के ज़ियादा शोहरत के ह़ामिल थे मुतकल्लिमीन, बाति़निया, फ़लासिफ़ा और सूफ़िया, आप ने इन फ़िर्क़ों के उ़लूम व अ़क़ाइद की तह़क़ीक़ शुरूअ़ की। इस तह़क़ीक़ व जुस्तजू से इज़्तिराब और बढ़ गया मगर जब तसव्वुफ़ पर मौजूद कुतुब का मुता़लआ़ किया तो मा'लूम हुवा कि सिर्फ़ इल्म काफ़ी नहीं बल्कि अ़मल की ज़रूरत। चुनान्चे,

---

1 ......اتحاف السادة المتّقين، مقدمة الكتاب، ج ١، ص ٢٦ـ

2 ...... مقدمه احياء العلوم (مترجم ازعلامه محمدصديق هزاروى مدظله العالى)، ج ١، ص ١٩، ملخصًا ـ

आप अपनी किताब "اَلْمُنْقِذُمِنَ الضَّلَال وَالْمُفْصِحُ عَنِ الْاَحْوَال" में ख़ुद फ़रमाते हैं : "इन वाक़िआ़त से तह़रीक पैदा हुई कि तमाम तअ़ल्लुक़ात को तर्क कर के बग़दाद से निकल जाऊं, नफ़्स किसी त़रह़ भी तर्के तअ़ल्लुक़ात पर आमादा नहीं होता था क्यूंकि इस को शोहरते आ़म्मा और शानो शौकत ह़ासिल थी। रजब 488 हि. में येह ख़याल पैदा हुवा था लेकिन नफ़्स के लिय्यत व लअ़ल (टाल मटोल) के बाइ़ष इस पर अ़मल न कर सका। इस ज़ेह्नी और नफ़्सानी कश्मकश ने मुझे सख़्त बीमार कर दिया और नौबत यहां तक पहुंच गई कि ज़बान को याराए गोयाई न रहा। कुव्वते हज़्म बिल्कुल ख़त्म हो गई। त़बीबों ने भी साफ़ जवाब दे दिया और कहा कि ऐसी ह़ालत में इलाज से कुछ फ़ाइदा नहीं होगा। आख़िरे कार मैं ने सफ़र का क़त़ई इरादा कर लिया। उमराए वक़्त, अरकाने सल्त़नत और उ़-लमाए किराम ने निहायत ख़ुशामद व इकराम से रोका लेकिन मैं ने इन की एक न मानी इस लिये सब को छोड़ छाड़ कर शाम की राह ली (और फिर एक वक़्त आया कि शाम से अपने आबाई वत़न "त़ूस" तशरीफ़ ले गए)।"[1]

अल ग़रज़ रूह़ानी सुकून की ख़ात़िर आप ने मन्सबे तदरीस छोड़ दिया। दुन्या की गूनागूं मसरूफ़िय्यात और रंगा रंगी से बिल्कुल कनारा कशी इख़्तियार कर ली ह़त्ता कि लिबासे फ़ाख़िरा के बजाए एक कम्बल ओढ़ा करते थे और लज़ीज़ ग़िज़ाओं की जगह साग पात पर गुज़र बसर होने लगी। अपने शहर त़ूस पहुंच कर सूफ़िया के लिये एक ख़ानक़ाह और शौक़े इ़ल्म रखने वालों के लिये एक मद्रसा ता'मीर किया और फिर ता दमे ह़यात अवरादो वज़ाइफ़, रियाज़त व इ़बादत, गोशा नशीनी और तदरीसे तसव्वुफ़ में मश्ग़ूल रहे।[2]

पांच सो दीनार के लिबास व सुवारी :

फ़क़ीह इब्ने रज़्ज़ाज़ अबू मन्सूर सईद बिन मुह़म्मद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الصَّمَد (मुतवफ़्फ़ा 539 हि.) बयान फ़रमाते हैं : "जब पहली बार ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِي आ़लिमाना शानो शौकत के साथ बग़दाद में दाख़िल हुए तो हम ने उन के लिबास व सुवारी की क़ीमत लगाई तो वोह 500 दीनार बनी फिर जब आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने ज़ोह्द व तक़्वा इख़्तियार किया और बग़दाद छोड़ दिया, मुख़्तलिफ़ मक़ामात का सफ़र करते रहे और दोबारा जब बग़दाद में दाख़िल हुए तो हम ने उन के लिबास की क़ीमत लगाई तो वोह पन्दरह क़ीरात़ (या'नी चन्द मा'मूली सिक्के) बनी।"[3]

---

1 ...... مقدمہ احیاء العلوم (مترجم ازعلامہ فیض احمداویسی علیہ رحمۃ اللّٰہ القوی)، ج۱، ص ۲۰۔

تعریف الاحیاء بفضائل الاحیاء علی ھامش احیاء علوم الدین، ج۵، ص۳۶۵تا۳۶۸، ملخصًا۔

2 ......مرآۃ الجنان وعبرۃ الیقظان، ج۳، ص ۱۳۷، ملخصًا۔

3 ......المنتظم فی تاریخ الملوک والامم، ج۹، ص ۱۷۰۔

ज़ोह्दो तक़्वा

आप की सादगी और यादे आख़िरत :

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِی एक बार मक्कए मुअ़ज़्ज़मा में तशरीफ़ फ़रमा थे। आप चूंकि ज़ाहिरी शानो शौकत से बे नियाज़ थे। इस लिये आप निहायत सादा और मा'मूली क़िस्म का लिबास पहने हुए थे। ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान तूसी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی ने अ़र्ज़ की : "आप के पास इस के इलावा और कोई कपड़ा नहीं है? आप इमामे वक़्त और पेशवाए क़ौम हैं, हज़ारों लोग आप के मुरीद हैं।" आप ने जवाब दिया : "ऐसे शख़्स का लिबास क्या देखते हो जो इस दुन्या में एक मुसाफ़िर की त़रह़ मुक़ीम हो और जो इस काइनात की रंगीनियों को फ़ानी और वक़्ती तसव्वुर करता है। जब वालिये दो जहां, रह़मते आ़लमियां صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم इस दुन्या में मुसाफ़िर की त़रह़ रहे और कुछ मालो ज़र इकठ्ठा न किया तो मेरी क्या ह़ैसिय्यत और ह़क़ीक़त है।"(1)

शोहरत व नामवरी से दूरी :

एक बार आप जामेए़ उमवी में तशरीफ़ फ़रमा थे। मुफ़्तियाने किराम की एक जमाअ़त सेह़ने मस्जिद में मौजूद थी। एक दीहाती ने आ कर मुफ़्तियाने किराम से कोई सुवाल पुछा मगर किसी ने उस का जवाब नहीं दिया। जब कि ह़ज़रते इमाम साह़िब ख़ामोश थे फिर जब आप ने देखा किसी के पास उस का जवाब नहीं और जवाब न मिलना उस पर शाक़ गुज़रा है तो उस देहाती को अपने पास बुला कर सुवाल का जवाब बताया। मगर वोह देहाती मज़ाक़ उड़ाने लगा कि "जिस सुवाल का जवाब बड़े बड़े मुफ़्तियों ने नहीं दिया येह आ़म फ़क़ीर कैसे दे रहा है।" उस वक़्त मुफ़्तियाने किराम येह मन्ज़र देख रहे थे। देहाती जब आप से बात कर के फ़ारिग़ हुवा तो इन मुफ़्तियाने उ़ज़्ज़ाम ने उसे बुला कर पूछा : "इस आ़म से आदमी ने क्या जवाब दिया?" जब उस ने ह़क़ीक़ते ह़ाल वाज़ेह़ की तो येह ह़ज़रात इमाम साह़िब के पास गए और जब उन से मुतआ़रिफ़ हुए तो उन से दरख़्वास्त की, कि "आप हमारे लिये एक इ़ल्मी निशस्त का इनइ़क़ाद करें।" आप ने अगले दिन का फ़रमा दिया मगर उसी रात वहां से सफ़र कर गए।(2)

ख़ुद पसन्दी का ख़ौफ़ :

एक बार इत्तिफ़ाक़न ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِی दिमिश्क़ के मद्रसे "अमीनिय्या" में तशरीफ़ ले गए तो देखा कि वहां एक उस्ताज़ कह रहे थे : قَالَ الْغَزَالِی या'नी वोह आप के कलाम के साथ तदरीस कर रहे थे। येह सुन कर आप पर ख़ुद पसन्दी (में गिरिफ़्तार होने) का ख़ौफ़ त़ारी हो गया तो आपने दिमिश्क़ छोड़ दिया।(3)

---

1 ......مقدمہ کیمیائے سعادت (مترجم از مولانا محمد سعید احمد نقشبندی) ص ۳۱۔

2 ......طبقات الشافعیة الکبری، ج٦، ص١٩٩۔

3 ......طبقات الشافعیة الکبری، ج٦، ص١٩٩۔

दुन्या से बे रग़बती और आ़जिज़ी :

"श-ज़रातुज़्ज़हब" में "ज़ादुस्सालिकीन" के ह़वाले से मज़्कूर है : ह़ज़रते सय्यिदुना क़ाज़ी अबू बक्र बिन अ़रबी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَلِى बयान करते हैं कि "मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِى को लोगों के दरमियान इस ह़ाल में पाया कि आप के हाथ में लाठी थी, पैवन्ददार लिबास ज़ेबे तन किया हुवा था और कन्धे से पानी का बरतन लटक रहा था और मैं देखा करता था कि बग़दाद में आप की मजलिसे इ़ल्म में 400 के क़रीब ख़ुशह़ाल और बड़े बड़े आ़लिम व फ़ाज़िल लोग ह़ाज़िर होते और आप के इ़ल्म से फ़ैज़याब होते।"(1)

मक़ाम व मर्तबा

बारगाहे रिसालत में मक़्बूलिय्यत :

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा इस्माईल ह़क़्क़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى तफ़्सीरे रूहु़ल बयान, जि. 5 स. 374 सूरए त़ाहा, आयत नम्बर 18 के तह़त नक़्ल फ़रमाते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम राग़िब अस्फ़हानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّورانى ने मुह़ाज़िरात में ज़िक्र फ़रमाया कि साहि़बे ह़िज़्बुल बह़र, आ़रिफ़ बिल्लाह ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शाज़ली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَلِى फ़रमाते हैं : मैं मस्जिदे अक़्सा में मह़्वे ख़्वाब था, मैं ने देखा कि मस्जिदे अक़्सा के सेह़न में एक तख़्त बिछा हुवा है और लोगों का जम्ए़ ग़फ़ीर गुरौह दर गुरौह दाख़िल हो रहा है। मैं ने पूछा : "येह जम्ए़ ग़फ़ीर किन लोगों का है ?" बताया गया : "येह अम्बियाए किराम व रुसुले उ़ज़्ज़ाम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام हैं जो ह़ज़रते सय्यिदुना हु़सैन ह़लाज رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰى عَلَيْه से ज़ाहिर होने वाली एक बात पर इन की सिफ़ारिश के लिये बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर हुए हैं।" फिर मैं ने तख़्त की त़रफ़ देखा तो हु़ज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللّٰه تعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم इस पर जल्वा फ़रमा हैं और दीगर अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام जैसे ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ख़लीलुल्लाह, ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह, ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा रूहु़ल्लाह और ह़ज़रते सय्यिदुना नूह़ عَلٰى نَبِيِّنَا وعَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام सामने तशरीफ़ फ़रमा हैं। मैं इन की ज़ियारत करने और इन का कलाम सुनने लगा। इसी दौरान ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ की : आप का फ़रमान है : "عُلَمَاءُ اُمَّتِي كَاَنْبِيَاءِ بَنِي اِسْرَائِيْل" या'नी मेरी उम्मत के उ़-लमा बनी इस्राईल के अम्बिया की त़रह़ हैं।" लिहाज़ा मुझे इन में से कोई

---

(1) ......شذ رات الذهب، ج٤، ص١٤٦۔

दिखाएं। तो हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّى اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ و اٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَالِی की त़रफ़ इशारा फ़रमाया। ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تعالٰی عَلَیْہ से एक सुवाल किया, आप ने 10 जवाब दिये। तो ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा عَلَیْہِ السَّلَام ने फ़रमाया कि "जवाब सुवाल के मुत़ाबिक़ होना चाहिये, सुवाल एक किया गया और तुम ने 10 जवाब दिये।" तो ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَالِی ने अ़र्ज़ की : जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप से पूछा था : "وَمَا تِلْكَ بِيَمِيْنِكَ يٰمُوْسٰى ﴿۱۷﴾ (پ۱۶، طٰہٰ:۱۷) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और तेरे दाहिने हाथ में क्या है ? ऐ मूसा।" तो इतना अ़र्ज़ कर देना काफ़ी था कि "येह मेरा अ़सा है।" मगर आप ने इस की कई ख़ूबियां बयान फ़रमाईं। (1)

ह़ज़राते उ़-लमाए किराम كَثَّرَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام फ़रमाते हैं कि गोया इमाम ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَالِی ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلَیْہِ السَّلَام की बारगाह में अ़र्ज़ कर रहे हैं कि "जब आप का हम कलाम बारी तआ़ला था तो आप ने वुफ़ूरे मह़ब्बत और ग़लबए शौक़ में अपने कलाम को तूल दिया ताकि ज़ियादा से ज़ियादा हम कलामी का शरफ़ ह़ासिल हो सके और इस वक़्त मुझे आप से हम कलाम होने का मौक़अ़ मिला है और कलीमे ख़ुदा से गुफ़्त्गू का शरफ़ ह़ासिल हुवा है इस लिये मैं ने इस शौक़ व मह़ब्बत से कलाम को त़वालत दी है।"(2)

क़ाबिले फ़ख़्र हस्ती :

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबुल ह़सन शाज़िली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَالِی फ़रमाते हैं : मैं ख़्वाब में ज़ियारते रसूल से मुशर्रफ़ हुवा तो देखा कि हुज़ूर रह़मते आ़लम صَلَّى اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ و اٰلِہٖ وَسَلَّم ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा और ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा علیهما الصلوٰة والسلام के सामने ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَالِی पर फ़ख़्र करते हुए फ़रमा रहे हैं : "क्या तुम्हारी उम्मतों में ग़ज़ाली जैसा आ़लिम है ?" दोनों ने अ़र्ज़ की : "नहीं।"(3)

---

1 ......فتاوٰی رضویه، ج۲۸، ص ۴۱۰، اشارةً۔

2 ......کوثرالخیرات، ص ۴۰۔

3 ......النبراس شرح شرح العقائد، ص۲۴۷۔

اتحاف السادة المتّقین، مقدمة الکتاب، ج ۱، ص ۱۲۔

تعریف الاحیاء بفضائل الاحیاء علی هامش احیاء علوم الدین ، ج۵، ص ۳۶۴۔

इमामुल अम्बिया صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की दस्त बोसी की सआ़दत :

ह़ज़रते सय्यिदुना जमाले ह़रम अबुल फ़त्ह़ आ़मिर बिन नजा رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि मैं एक दिन मस्जिदे ह़राम में दाख़िल हुवा तो मुझे ऊंघ आ गई। इसी ह़ाल में ज़ियारते रसूल صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से मुशर्रफ़ हुवा। आप صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इन्तिहाई ख़ूबसूरत कुर्ता और इमामा ज़ेबे तन किया हुवा था। फिर देखा कि अइम्मए अरबआ़ (ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म, ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे मालिक, ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई और ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अह़मद बिन ह़म्बल رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن) ने **एक एक कर के अपना फ़िक़्ही मज़हब** (या'नी कुरआनो सुन्नत और इजमाअ़ व इजतिहाद से माख़ूज़ नुक्तए नज़र) पेश किया तो आप صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने हर एक की तस्दीक़ फ़रमाई। फिर बद मज़हबों के एक लीडर ने इस मुक़द्दस ह़ल्क़े में दाख़िल होना चाहा तो हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के हुक्म से उसे ज़िल्लत के साथ वहां से दूर कर दिया गया। इस के बा'द मैं ने आगे बढ़ कर अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم मेरे पास येह किताब या'नी इह्याउल उ़लूम है, इस में मेरा और अहले सुन्नत व जमाअ़त का अ़क़ीदा बयान किया गया है। अगर इजाज़त हो तो पेश करूं ?" इजाज़त मिलने पर मैं ने किताब के बाब "**क़वाइदुल अ़क़ाइद**" से पढ़ना शुरूअ़ किया : بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْم ، کِتَابُ قَوَاعِدِالْعَقَائِد وَفِیْہِ اَرْبَعَۃُ فُصُوْل: اَلْفَصْلُ الْاَوَّلُ فِیْ تَرْجَمَۃِ عَقِیْدَۃِ اَھْلِ السُّنَّۃ...... पढ़ते पढ़ते जब मैं इस इबारत पर पहुंचा...... وَاَنَّہٗ تَعَالٰی بَعَثَ النَّبِیَّ الْاُمِّیَّ الْقُرَشِیَّ مُحَمَّدًاصَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم اِلٰی کَافَّۃِ الْعَرَبِ وَالْعَجَمِ، وَالْجِنِّ وَالْاِنْس तो मैं ने हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के चेहरए अक़्दस पर ख़ुशी व मसर्रत के आषार देखे। फिर इरशाद फ़रमाया : "ग़ज़ाली कहां है ?" तो ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَالِی ने उसी वक़्त ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صلی اللہ علیك وسلم ग़ुलाम ह़ाज़िर है।" और आगे बढ़ कर सलाम अ़र्ज़ किया, आप صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने सलाम का जवाब दे कर अपना हाथ मुबारक बढ़ाया तो ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَالِی ने इसे बोसा दिया और इस से बरकत ह़ासिल की। ह़ज़रते जमाले ह़रम عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْاَکْرَم फ़रमाते हैं : "मैं ने उस दिन प्यारे आक़ा, मदीने वाले मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को बहुत ज़ियादा मसरूर पाया।" जब मेरी ऊंघ की कैफ़िय्यत ख़त्म हुई तो मेरी आंखों से ख़ुशी के आंसू रवां थे।

मज़ीद फ़रमाते हैं : "मक्की मदनी सुल्तान صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का ह़ज़राते अइम्मए अरबआ़ رَحِمَھُمُ اللّٰہُ تَعَالٰی के मज़ाहिब की तस्दीक़ फ़रमाना और (इह्याउल उ़लूम में मज़्कूर) इमाम ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَالِی के अ़क़ीदे को पसन्द फ़रमा कर इस की तस्दीक़ करना अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की एक अ़ज़ीम ने'मत और बड़ा एह़सान है। हम अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से सुन्नतों भरी ज़िन्दगी का सुवाल करते और मिल्लते इस्लाम पर ख़ातिमे की दुआ़ मांगते हैं।" आमीन।[1]

1 ......تعریف الاحیاء بفضائل الاحیاء علی ھامش احیاء علوم الدین ، ج۵، ص۳۵۸۔

70 हि़जाबात उ़बूर कर लिये :

ह़ज़रते सय्यिदुना आ़रिफ़ कबीर क़ुत़्बे रब्बानी अह़मद सय्याद यमनी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَنِی फ़रमाते हैं कि मैं ने ख़्वाब में आस्मान के दरवाज़े खुले देखे। आस्मान से फ़िरिश्तों की एक जमाअ़त सब्ज़ हुल्ले (या'नी जन्नती लिबास) और सुवारी लिये उतरी। वोह एक क़ब्र के सिरहाने आ कर खड़े हो गए। उस क़ब्र वाले को बाहर निकाल कर हुल्ला पहनाया, सुवारी पर सुवार किया और एक एक कर के तमाम आस्मानों से गुज़रते गए यहां तक कि उस शख़्स ने 70 हि़जाबात को भी उ़बूर कर लिया। मैं इन हि़जाबात तक तो इन्हें देख सका मगर इन की इन्तिहा कहां तक थी येह न जान सका। पस जब इन के मुतअ़ल्लिक़ पूछा तो बताया गया : "येह इमाम ग़ज़ाली हैं।"(1)

करामात व कमालात

बा'दे विसाल एक करामत :

ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अक्बर मुहृयुद्दीन इब्ने अ़रबी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَلِی (मुतवफ़्फ़ा 638 हि.) अपनी किताब "रुहुलक़ुदुस फ़ी मुना-स-ह़तिन्नुफ़ुस" में ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अ़ब्दुल्लाह इब्ने ज़ैन याबुरी इश्बिली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی के ह़ालात लिखते हुए बयान फ़रमाते हैं : आप का शुमार औलियाउल्लाह में होता है। एक रात ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِی के रद में अबुल क़ासिम बिन ह़मदीन की लिखी हुई किताब पढ़ रहे थे कि बिनाई चली गई। आप ने उसी वक़्त बारगाहे ख़ुदावन्दी में सजदा रेज़ हो कर गिर्या व ज़ारी की और क़सम खाई कि आयन्दा कभी भी इस किताब को न पढूंगा, इसे अपने आप से दूर रखूंगा। उसी वक़्त बिनाई वापस लौट आई। येह ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِی की करामत है जो इन के इन्तिक़ाल के बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अ़ब्दुल्लाह इब्ने ज़ैन याबुरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی के ज़रीए ज़ाहिर हुई।(2)

गुस्ताख़ का अन्जाम :

ह़ज़रते सय्यिदुना ताजुद्दीन अ़ब्दुल वह्हाब बिन अ़ली सुब्की عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی (मुतवफ़्फ़ा 771 हि.) फ़रमाते हैं : एक फ़क़ीह ने मुझे बताया कि एक शख़्स ने फ़िक़्हे शाफ़ेई के दर्स में ह़ज़रते

---

1 ......تعریف الاحیاء بفضائل الاحیاء علی هامش احیاء علوم الدین، ج٥، ص٣٦٤۔
طبقات الشافعية الکبری للسبکی، ج٦، ص٢٥٨۔

2 ......کشف النور عن الاصحاب القبور مع الحدیقة الندیه، ج٢، ص٨۔

सय्यिदुना इमाम ग़ज़ाली عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡوَالِی को बुरा भला कहा तो मैं बड़ा ग़मगीन हुवा, रात इसी ग़म की ह़ालत में नींद आ गई। ख़्वाब में ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ग़ज़ाली عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡوَالِی की ज़ियारत हुई, मैं ने बुरा भला कहने वाले शख़्स का तज़्किरा किया तो फ़रमाया "फ़िक्र न करो वोह कल मर जाएगा।" चुनान्चे, सुब्ह़ जब मैं ह़ल्क़ए दर्स में ह़ाज़िर हुवा तो उस शख़्स को हश्शाश बश्शाश देखा मगर जब वोह वहां से निकला तो घर जाते हुए रास्ते में सुवारी से गिर गया और ज़ख़्मी ह़ालत में घर पहुंचा और सूरज ग़ुरूब होने से पहले ही मर गया।(1)

पांच कोड़ों की सज़ा :

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अ़ब्दुल्लाह बिन अस्अ़द याफ़ेई عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡکَافِی (मुतवफ़्फ़ा 768 हि.) नक़्ल करते हैं कि मश्हूर मग़रिबी फ़क़ीह ह़ज़रते सय्यिदुना अबुल ह़सन अ़ली बिन ह़िर्ज़हम رَحۡمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیۡہ (मुतवफ़्फ़ा 559 हि.) शुरूअ़ में इह़याउल उ़लूम का बहुत रद किया करते थे ह़त्ता कि एक बार इन्हों ने इस किताब के कई नुस्ख़े जम्अ़ कर के जुमुआ़ के दिन जामेअ़ मस्जिद में जला डालने का इरादा किया मगर उसी जुमुआ़ की शब ख़्वाब देखा कि वोह जामेअ़ मस्जिद में दाख़िल हुए। क्या देखते हैं कि ह़ुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم मस्जिद में जलवा फ़रमा हैं और अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ और अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म (رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنۡھُمَا) भी मौजूद हैं और सामने ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ग़ज़ाली عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡوَالِی खड़े हैं। जब येह सामने हुए तो सय्यिदुना इमाम ग़ज़ाली عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡوَالِی ने बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صلی اللہ علیك وسلم येह मुझ से झगड़ते हैं, अगर मुआ़मला ऐसा ही है जैसा येह गुमान करते हैं तो मैं बारगाहे इलाही में तौबा करता हूं और अगर मेरा मौक़िफ़ आप की बरकत और इत्तिबाए़ सुन्नत से ह़ासिल शुदा है और मैं ह़क़ पर हूं तो इन से मेरा ह़क़ दिलाइये।" येह सुन कर आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इह़याउल उ़लूम ली और एक एक सफ़ह़ा कर के मुकम्मल मुलाह़ज़ा फ़रमाई फिर इरशाद फ़रमाया : "ख़ुदा की क़सम ! येह तो बहुत अच्छी है !" फिर अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنۡہُ ने देखी तो फ़रमाया : "जी हां ! उस ज़ात की क़सम जिस ने आप को ह़क़ के साथ मबऊ़ष फ़रमाया ! यक़ीनन येह बहुत अच्छी है !" फिर अमीरुल

---

1 ......اتحاف السادة المتّقين، مقدمة الكتاب، ج١، ص١٤۔
طبقات الشافعية الكبرى للسبكى، ج٦، ص٢١٩۔

मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہُ ने मुलाह़ज़ा की और येही फ़रमाया, पस हु़ज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़क़ीह अ़ली बिन ह़िर्ज़हम عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْاَکْرَم को कोड़े लगाने का हु़क्म दिया, जब पांच कोड़े लग चुके तो अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ ने सिफ़ारिश करते हुए अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صلی اللہ تعالی علیک وسلم ! शायद इन्हों ने अपने गुमान में इस किताब को आप की सुन्नत के ख़िलाफ़ समझा तो ग़लती़ कर गए।" चुनान्चे,

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَالِی इस पर राज़ी हो गए और वोह सिफ़ारिश क़बूल कर ली गई। ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली बिन ह़िर्ज़हम رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ जब बेदार हुए तो कोड़ों का अषर पीठ पर मौजूद था। आप ने येह ख़्वाब अपने अस्ह़ाब को बयान किया और रब्ब तआ़ला की बारगाह में तौबा की और अपने इस अ़मल की मुआ़फ़ी त़लब की मगर त़वील अ़र्से (या'नी एक महीने) तक कोड़ों का दर्द मह़सूस करते रहे। इस दौरान बारगाहे इलाही में गिड़ गिड़ा कर आ़जिज़ी व इन्किसारी के साथ दुआ़ और रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम, शफ़ीए़ मुअ़ज़्ज़म صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से शफ़ाअ़त का सुवाल करते रहते यहां तक कि दोबारा ख़्वाब में ज़ियारते सरकारे आ'ज़म صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से मुशर्रफ़ हुए। आप صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपना दस्ते करीमाना इन की पीठ पर फैरा तो दर्द जाता रहा और इन्हें ब हु़क्मे इलाही मुआ़फ़ी व शफ़ाअ़त मिल गई। इस के बा'द से इन्हों ने इह्याउल उ़लूम के मुत़ालए़ को ख़ुद पर लाज़िम कर लिया तो **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ने इन पर बात़िन के दरवाज़े खोल दिये, इन्हों ने मा'रिफ़ते इलाही से वाफ़िर ह़िस्सा पाया, अकाबिर मशाइख़ की सफ़ में शुमार हुए और ज़ाहिरी व बात़िनी उ़लूम वाले बन गए।[1]

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम जलालुद्दीन अ़ब्दुर्रह़मान सुयूत़ी शाफ़ेई عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْکَافِی (मुतवफ़्फ़ा 911 हि.) नक़्ल करते हैं कि "जिस दिन ह़ज़रते सय्यिदुना अबुल ह़सन अ़ली बिन ह़िर्ज़हम رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ (मुतवफ़्फ़ा 559 हि.)" का इन्तिक़ाल हुवा तो कोड़ों का निशान उन की पीठ पर मौजूद था।[2]

صَلُّوْاعَلَی الْحَبِیْب ...... صَلَّی اللّٰہُ تعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

---

1 ......تعریف الاحیاء بفضائل الاحیاء علی ھامش احیاء علوم الدین، ج۵، ص۳۵۷۔
طبقات الشافعیۃ الکبری للسبکی، ج۶، ص۲۵۸۔

2 ......تشیید الارکان علی ھامش احیاء علوم الدین، ج۵، ص۳۹۴۔

ता'रीफ़ी कलिमात

﴾1﴿ ह़ज़रते सय्यिदुना अबुल ह़सन शाज़िली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَالِی के शागिर्द आ़रिफ़ बिल्लाह अबुल अ़ब्बास मर्सी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَلِی फ़रमाते हैं कि ''ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَالِی सिद्दीक़िय्यते उ़ज़्मा के मक़ाम पर फ़ाइज़ थे।''(1)

﴾2﴿ ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अक्बर मुह़्युद्दीन इब्ने अ़रबी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَلِی (मुतवफ़्फ़ा 638 हि.) फ़रमाते हैं : ''ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَالِی क़ुत़ुब के दर्जे पर फ़ाइज़ थे।''(2)

﴾3﴿ बा'ज़ बुज़ुर्गों से मन्क़ूल है : ''क़ुत़ुब तीन होते हैं :

(1)....उ़लूम के क़ुत़ुब जैसे ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ग़ज़ाली (2)....अह़वाल के क़ुत़ुब जैसे ह़ज़रते सय्यिदुना बा यज़ीद बिस्त़ामी और (3)....मक़ामात के क़ुत़ुब जैसे ह़ज़रते पीराने पीर सय्यिदुना शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी (رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِم)''(3)

﴾4﴿ ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन यह़या नैशापूरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَلِی फ़रमाते हैं : ''मेरे उस्ताज़े मोह़तरम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَالِی के मक़ाम व मर्तबे को सिर्फ़ कामिल अ़क़्ल वाला ही पहचान सकता है।''(4)

﴾5﴿ ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَالِی के उस्ताज़े मोह़तरम इमामुल ह़रमैन अ़ब्दुल मलिक बिन अ़ब्दुल्लाह जुवैनी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْغَنِی ने एक मौक़अ़ पर इरशाद फ़रमाया : ''ग़ज़ाली, इ़ल्म के बह़्रे ज़ख़्ख़ार (या'नी इ़ल्म का मौजें मारता समुन्दर) हैं।''(5)

﴾6﴿ ख़त़ीबे नैशापूर इमाम अबुल ह़सन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल ग़ाफ़िर बिन इस्माई़ल عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَکِیْل (मुतवफ़्फ़ा 529 हि.) फ़रमाते हैं : ''इमाम ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَالِی इस्लाम और मुसलमानों के लिये हु़ज्जत और अइम्मए दीन के पेशवा हैं। फ़साह़त व बलाग़त, अन्दाज़े बयान व तर्ज़े गुफ़्त्गू और तेज़ फ़हमी व ज़हानत में इन जैसा आंखों ने नहीं देखा।''(6)

---

1 ......اتحاف السادۃ المتّقین، مقدمۃ الکتاب، ج۱، ص۱۳۔
طبقات الشافعیۃ الکبری للسبکی، ج۶، ص۲۵۷۔

2 ......اتحاف السادۃ المتّقین، مقدمۃ الکتاب، ج۱، ص۱۳۔

3 ......المرجع السابق۔ 4 ......المرجع السابق۔ 5 ......المرجع السابق۔

6 ......مرآۃ الجنان وعبرۃ الیقظان، ج۳، ص۱۳۷۔

《7》 ह़ज़रते सय्यिदुना अबुल अ़ब्बास अह़मद बिन मुह़म्मद अल मा'रूफ़ इब्ने ख़ल्लिकान عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ الرَّحۡمٰن (मुतवफ़्फ़ा 681 हि.) फ़रमाते हैं : शवाफ़ेअ़ में इन के ज़माने के आख़िर तक इन का कोई मिष्ल नहीं था ।''(1)

《8》 नैशापूर के रईसुश्शाफ़ेइया ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन यह़्या رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ (मुतवफ़्फ़ा 548 हि.) ने फ़रमाया : ''इमाम ग़ज़ाली, इमाम शाफ़ेई رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہِمَا के षानी हैं ।''(2)

《9》 ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़साकिर رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ (मुतवफ़्फ़ा 571 हि.) फ़रमाते हैं : ''ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ग़ज़ाली عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡوَالِی जैसा ज़हीन व फ़त़ीन आंखों ने देखा न कानों ने सुना ।''(3)

《10》 सय्यिदुना ह़ाफ़िज़ अबुल फ़ज़्ल अ़ब्दुर्रह़ीम इराक़ी عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡبَاقِی (मुतवफ़्फ़ा 608 हि.) फ़रमाते हैं : ''उ़-लमाए किराम رَحِمَہُمُ اللّٰہُ السَّلَام के नज़दीक ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ग़ज़ाली عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡوَالِی पांचवीं सदी हिजरी के मुजद्दिद हैं ।''(4)

《11》 मुह़द्दिष सूफ़ी शैख़ अबुल अ़ब्बास अक़लशी عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡقَوِی अश्आ़र में ख़िराजे अ़क़ीदत यूं पेश करते हैं :

اَبَا حَامِدٍ اَنۡتَ الۡمُخَصِّصُ بِالۡحَمۡدِ   وَاَنۡتَ الَّذِیۡ عَلَّمۡتَنَا سُنَنَ الرُّشۡدِ

وَضَعۡتَ لَنَا الۡاِحۡیَاءَ یُحۡیِیۡ نُفُوۡسَنَا   وَیُنۡقِذُنَا مِنۡ طَاعَۃِ الۡمَارِدِ الۡمُرۡدِیۡ

तर्जमा : ऐ इमाम ग़ज़ाली ! आप ता'रीफ़ में मुनफ़रिद व मुमताज़ हैं, आप ने हमें हिदायत के रास्ते बताए । हमारे लिये इह़्याउल उ़लूम लिखी जो हमारी जानों को ज़िन्दगी देती और हमें सरकश व नाफ़रमान की पैरवी से रोकती है ।(5)

《12》 ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबुल ह़सन शाज़िली عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡوَالِی से मन्क़ूल है कि ''जिसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से कोई ह़ाजत हो वोह इमाम ग़ज़ाली عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡوَالِی के वसीले से दुआ़ करे ।''(6)

---

1 ......وفیات الاعیان، ج٤، ص٥٨۔

2 ......طبقات الشافعیة الکبری للسبکی، ج٦، ص٢٠٢۔

3 ......تاریخ مدینة دمشق، ج٥٥، ص٢٠٠۔

4 ......اتحاف السادة المتّقین، مقدمة الکتاب، ج١، ص٣٥۔

5 ......مرآة الجنان وعبرة الیقظان، ج٣، ص١٣٧۔

6 ......مرآة الجنان وعبرة الیقظان، ج٣، ص٢٤٩۔

﴾13﴿ ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ज़हबी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَلِی (मुतवफ़्फ़ा 748 हि.) इन अलक़ाबात से याद फ़रमाते :

الشیخ الامام البحر، حجة الاسلام، أعجوبة الزمان، زین الدین أبوحامد محمد بن محمد بن محمد بن أحمدالطوسی، الشافعی، الغزالی، صاحب التصانیف، والذکاء المفرط۔ [1]

﴾14﴿ ह़ज़रते सय्यिदुना ताजुद्दीन अ़ब्दुल वह्हाब बिन अ़ली सुब्की عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی (मुतवफ़्फ़ा 771 हि.) इन अल्क़ाबात से ज़िक्र फ़रमाते : الامام الجلیل ابوحامد الغزالی حجة الاسلام ومحجة الدین جامع اشتات العلوم۔ [2]

﴾15﴿ ह़ज़रते सय्यिदुना ह़ाफ़िज़ जलालुद्दीन सुयूत़ी शाफ़ेई عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْکَافِی (मुतवफ़्फ़ा 911 हि.) इन अल्फ़ाज़ से तज़किरा फ़रमाते : الامام حجة الاسلام ولی اللّٰہ ابی حامد الغزالی رضی اللّٰہ عنه۔ [3]

﴾16﴿ मुजद्दिदे आ'ज़म, फ़क़ीहे अफ़ख़म, इमामे अहले सुन्नत, सय्यिदुना आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن (मुतवफ़्फ़ा 1340 हि.) आप का क़ौल नक़्ल करते हुए इन अल्फ़ाज़ से याद फ़रमाते हैं : اَلْاِمَامُ حُجَّةُ الْاِسْلَام حَکِیْمُ الْاُمَّة کَاشِفُ الْغُمَّة ابوحامد محمد بن محمد بن محمد الغزالی (رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه)۔ [4]

तस्नीफ़ व तालीफ़

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِی ने कई उ़लूम व फ़ुनून में सेंकड़ों कुतुबो रसाइल तस्नीफ़ किये, जिन के नाम मिल सके वोह दर्जे ज़ैल हैं :

(۱)اِحیاءُ عُلُوْمِ الدِّیْن (۲)اَلْاِمْلَاءُ عَلٰی مُشْکَلِ الْاِحْیَاء[ویسمی ایضًا "اَلْاَجْوِبَةُ الْمُسْکِتَه عَنِ الْاَسْئِلَةِ الْمُبْهَته"] (۳)اَلْاَرْبَعِیْن (۴)اَلْاَسْمَاءُ الْحُسْنٰی (۵)اَلْاِقْتِصَادفِی الْاِعْتِقَاد (۶)اِلْجَامُ الْعَوَامِ عَنْ عِلْمِ الْکَلَام (۷)اَسْرَارُمُعَامَلَاتِ الدِّیْن (۸)اَسْرَارُالْاَنْوَارِالْاِلٰهِیَّه بِالْآیَاتِ الْمَتْلُوَّه (۹)اَخلَاقُ الْاَبْرَارِوَالنَّجَاةُ مِنَ الْاَشْرَار (۱۰)اَسْرَارُ اِتِّبَاعِ السُّنَّه (۱۱)اَسْرَارُالْحُرُوْف وَالْکَلِمَات (۱۲)اَیُّهَاالْوَلَد (۱۳)بِدَایَةُ الْهِدَایَه (۱۴)اَلْبَسِیْط فِی فُرُوْعِ الْمَذْهَب (۱۵)بَیَانُ الْقَوْلَیْنِ لِلشَّافِعِی (۱۶)بَیَانُ فَضَائِحِ الْاِبَاحِیَّه (۱۷)بَدَائِعُ الصَّنِیْع (۱۸) تَنْبِیْهُ الْغَافِلِیْن (۱۹) تَلْبِیْسُ اِبْلِیْس[وَفِی هَدْیَةِ الْعَارِفِیْن:تَدْلِیْسُ اِبْلِیْس] (۲۰)تَهَافُتُ الْفَلَاسِفَه (۲۱)اَلتَّعْلِیْقَه فِیْ فُرُوْعِ الْمَذْهَب (۲۲)تَحْصِیْنُ الْمَآخَذ (۲۳)تَحْصِیْنُ الْاَدِلَّه (۲۴)تَفْسِیْرُالْقُرْآنِ الْعَظِیْم

---

1 ......سیراعلام النبلاء، الرقم٤٦٠٣، ج١٤، ص٣٢٠۔

2 ......اتحاف السادة المتّقین، مقدمة الکتاب، ج١، ص٨۔

3 ......تشیید الارکان علی هامش احیاء علوم الدین، ج٥، ص٣٧١۔

4 ......فتاوی رضویه، ج٤، ص٥٢٨ ۔

(۲۵)اَلتَّفرِقہ بَینَ الْاِیمَان وَالزَّندِقہ[وَفِی ھَدِیَۃِ الْعَارِفِین:التفرقہ بین الْاِسْلام وَالزَّندقہ](۲۶)جَواھِرُالْقُرآن (۲۷)حُجَّۃُ الْحَقّ(۲۸)حَقِیقَۃُ الرُّوح(۲۹)حَقِیقَۃُ الْقَولَین(۳۰)خُلاصَۃُ الرَّسَائِل اِلٰی عِلْمِ الْمَسَائِل (۳۱)رِسَالَۃُ الْاَقْطاب(۳۲)رِسَالَۃُ الطَّیر(۳۳)اَلرَّدُّعَلٰی مَنْ طَعَن(۳۴)اَلرِّسَالَۃُ الْقُدسِیہ بِاَدِلَّتِھَاالْبُرھَانِیہ (۳۵)اَلسِّرُّالْمَصُون(۳۶)شَرحُ دَائِرَۃِ عَلِیِ ابْنِ اَبِیْ طَالِب[اَلْمُسَمَّاہ"نُخبَۃُ الْاَسماء"](۳۷)شِفَاءُالْغَلِیل فِی بَیَانِ مَسْئَلۃِ التَّعْلِیل(۳۸)عَقِیدَۃُ الْمِصبَاح(۳۹)عُنقُودُالْمُختَصر(۴۰)غَایَۃُ الْغَورفِی مَسَائِلِ الدَّور (۴۱)غَورُالدَّور(۴۲)اَلْفَتَاوٰی[مُشتَمِلَۃٌ عَلٰی مِائَۃٍ وَّتِسعِینَ مَسئلہ غَیرمُرَتَّب](۴۳)فَاتِحَۃُ الْعُلُوم(۴۴)فَضَائِحُ الْاِبَاحِیہ(۴۵)فَوَاتِحُ السُّوَر(۴۶)اَلْفَرقُ بَینَ الصَّالِح وَغَیرِالصَّالِح(۴۷)اَلْقَانُونُ الْکُلِّی(۴۸)قَانُونُ الرَّسُول (۴۹)اَلْقُربَۃُ اِلَی اللہ(۵۰)اَلْقِسطَاسُ الْمُستَقِیم(۵۱)قَوَاعِدُالْعَقَائِد(۵۲)اَلْقَولُ الْجَمِیل فِی الرَّدِّ عَلٰی مَنْ غَیَّرَالْاِنْجِیل(۵۳)کِیمِیاءُالسَّعَادہ(۵۴)کَشفُ عُلُومِ الْآخِرہ(۵۵)کَنزُالْعُدَّہ(۵۶)اَللُّبَابُ الْمُنتَخل فِی الْجَدَل(۵۷)اَلْمُستَصفٰی(۵۸)اَلْمَنخُول فِی الْاُصُول(۵۹)اَلْمَآخذفِی الْخِلافِیات (۶۰)اَلْمَبَادِیءُ وَالْغَایَات فِی اَسرَارِ الْحُرُوفِ الْمَکنُونَات(۶۱)اَلْمَجَالِسُ الْغَزَالِیہ[مِائَۃٍ وَّثَلاثَۃٍ وَّثَمَانِینَ مَجلسًا] (۶۲)مَقَاصِدُ الْفَلاسِفہ(۶۳)اَلْمُنقِذمِنَ الضَّلال وَالْمُفصِح عَنِ الْاَحوال(۶۴)مِعیَارُالنَّظر(۶۵)مِعیَارُ الْعِلم فِی الْمَنطِق(۶۶)مِحَکُّ النَّظر[وَفِی سِیرِاَعلامِ النُّبَلاء:مَحَکُّ النَّظر](۶۷)مِشکَاۃُ الْاَنوَارفِی لَطَائِفِ الْاَخیَار (۶۸)اَلْمُستَظھِرِی فِی الرَّدِعَلَی الْبَاطِنِیہ(۶۹)مِیزَانُ الْعَمَل(۷۰)مَوَاھِمُ الْبَاطِنِیہ(۷۱)اَلْمَنھَجُ الْاَعْلٰی (۷۲)مِعرَاجُ السَّالِکِین(۷۳)اَلْمَکنُون فِی الْاُصُول(۷۴)مُسَلَّمُ السَّلاطِین(۷۵)مُفَصَّلُ الْخِلاف فِیْ اُصُولِ الْقِیَاس(۷۶)مِنھَاجُ الْعَابِدِین اِلٰی جَنَّۃِ رَبِّ الْعٰلَمِین(۷۷)نَصِیحَۃُ الْمُلُوک(۷۸)اَلْوَجِیزفِی الْفُرُوع(۷۹)اَلْوَسِیطُ فِیْ فُرُوعِ الْفِقہ(۸۰)یَاقُوتُ التَّاْوِیل فِیْ تَفسِیرِالتَّنزِیل(اربعین مجلدا)[1] (۸۱)اَسرَارُالْمَلَکُوت(۸۲)اَلْاِنتِصَارلِمَا فِی الْاَجنَاسِ مِنَ الْاَسرَار(۸۳)اَلْاَنِیسُ فِی الْوَحدہ(۸۴)اَلْبُدُور فِی اَخبَارِ الْبَعثِ وَالنُّشُور(۸۵)اَلْبَیَان فِی مَسَالِکِ الْاِیمَان(۸۶)تَعلِیقُ الْاُصُول(۸۷)حُجَّۃُ الشَّرع (۸۸)حَقِیقَۃُ الْقَوَانِین(۸۹)حَلُّ الشُّکُوک(۹۰)حَدَائِقُ الدَّقَائِق(۹۱)حَیَاۃُ الْقُلُوب(۹۲)خَزَائِنُ الدِّین

[1]......اتحاف السادۃ المتقین، مقدمۃ الکتاب، ج۱، ص۵۶تا۶۰۔

(٩٣)اَلدُّرُّالْمَنظُوم وَالسِّرُّالْمَكْتُوم(٩٤)خاتَمٌ فِي عِلْمِ الْحُرُوف(٩٥)اَلذَّهَبُ الْاِبْرِيز(٩٦)اَلرِّسَالَةُ اللَّدُنِّيَّه (٩٧)رِسَالَةُ التَّصرِيح(٩٨)رِسَالَةُ الْحُدُود(٩٩)اَلرِّسَالَةُ الْمُسْتَرْشِدِيَّه(١٠٠)رَوضَةُ الطَّالِبِين وَعُمدَةُ السَّالِكِين (١٠١)زادُ الْمُتَعَلِّمِين(١٠٢)زادُالْآخِره(١٠٣)زَجرُالنَّفس(١٠٤)سُبُلُ السَّلام(١٠٥)سِدرَةُالْمُنتَهٰى (١٠٦)سِرُّالْعَالَمِين وَكَشفُ مَا فِي الدَّارَين(١٠٧)صِرَّةُ الْاَنَام(١٠٨)عُنقُودُالْمُختَصَرونُقَاوَةُالْمُفْتَقِر [وَفِي كَشفِ الظُّنُون:عُنقُودُالْمُختَصَرونُقَاوَةُ الْمُعتَصِر](١٠٩)غَايَةُالْفُصُول(١١٠)غَايَةُ الْوَصُول فِي الْاُصُول (١١١)غُرَرُالدُّرَرفِي الْمَوَاعِظ(١١٢)فَرضُ الدِّين(١١٣)فَرضُ الْعَين(١١٤)اَسَاسُ الْقِيَاس(١١٥)كِتَابُ التَّوحِيدواِثبَاتُ الصِّفَات(١١٦)كِتَابُ الْحُدُود(١١٧)مُرشِدُالطَّالِبِين(١١٨)مُرشِدُالسَّالِكِين (١١٩)مَدخَلُ السُّلُوك اِلَى مَنَازِلِ الْمُلُوك(١٢٠)اَلْمَقصِدُالْاَقصٰى(١٢١)يَوَاقِيتُ الْعُلُوم(١٢٢)مَقَامَاتُ الْعُلَمَاء بَينَ يَدَى الْخُلَفَاءِ وَالْاُمَرَاء(١٢٣)مَعرِفَةُ النَّفس[1](١٢٤)اَلْمَقصِدُالْاَسنٰى فِي شَرحِ اَسمَاءِ الْحُسنٰى (١٢٥)مَعَارِجُ الْقُدُس فِي اَحوَالِ النَّفس(١٢٦)اَلْوَقفُ وَالْاِبتِدَاء(١٢٧)اَلْمَعَارِفُ الْعَقلِيَّه(١٢٨)عَقِيدَةُ اَهلِ السُّنَّه[2](١٢٩)اَلْاَدَبُ فِي الدِّين(١٣٠)اَلْقَوَاعِدُالْعَشَره(١٣١)قَانُونُ التَّاوِيل(١٣٢)اَلْمَوَاعِظ فِي الْاَحَادِيثِ الْقُدسِيَّه(١٣٣)اَلْمَضنُونُ بِهٖ عَلٰى غَيرِ اَهلِه[3](١٣٤)مِنهَاجُ الْعَارِفِين(١٣٥)مُكَاشَفَةُالْقُلُوب (١٣٦)عَجَائِبُ صُنعِ اللّٰه۔

कुछ "इह्याउल उ़लूम" के बारे में

इह्याउल उ़लूम उ़-लमा व मशाइख़ की नज़र में :

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِي ने अपने सफ़र बैतुल मुक़द्दस के सिलसिले में "اَلْمُنْقِذُمِنَ الضَّلَال وَالْمُفْصِح عَنِ الْاَحْوَال" में सराह़त की जिस से ज़ाहिर होता है कि आप की इस मुसाफ़रत का बेशतर ह़िस्सा बैतुल मुक़द्दस में बसर हुवा और इस सफ़र का बेहतरीन इ़ल्मी सरमाया और आप की सब से बुलन्द पाया किताब इह़याउल उ़लूम है जिस की मिषाल

1 ...... هدية العارفين، ج٢، ص٨٠تا٨١۔

2 ......الاعلام للزركلى، ج٧، ص٢٢ ۔

3 ......فهرس مجموعة رسائل الامام الغزالى ۔

दुन्या की अख़्लाक़ी किताबों में मिलना मुश्किल है। अख़्लाक़िय्यात के मौज़ूअ़ पर येह एक बे मिषाल किताब है। बा'द के मुसन्निफ़ीन ने अख़्लाक़िय्यात के मौज़ूअ़ पर जो कुछ लिखा है इस का माख़ज़ इह्याउल उ़लूम है। मश्हूर है कि आप ने इस की तसनीफ़ के लिये बैतुल मुक़द्दस में जो जगह मुन्तख़ब की थी वोह क़ुब्बतुस्सख़रह का मशरिक़ी गोशा था और आप इस गोशे में मो'तकिफ़ थे।[1] वैसे तो ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِى की तमाम ही कुतुब इल्म के दुर्रे नायाब अपने दामन में समोए हुए हैं मगर सब से ज़ियादा शोहरत पाने वाली किताब इह्याउल उ़लूम अपनी मिषाल आप है। इस का पूरा नाम ''احیاء علوم الدین'' है मगर मश्हूर इह्याउल उ़लूम के नाम से है। येह किताब हर दौर में मशाइख़ व आ़रिफ़ीन, अक़्त़ाब व औलिया और उ़-लमा व सूफ़िया की तवज्जोह का मर्कज़ रही है और येह मो'तबर हस्तियां इस की क़सीदा ख़्वानी में रत़्बुल्लिसान नज़र आती हैं। हर किसी ने अपने अपने अन्दाज़ में इस की ता'रीफ़ व तौसीफ़ फ़रमाई है, चन्द अक़्वाल मुलाह़ज़ा फ़रमाइये :

﴾1﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना ह़ाफ़िज़ अबुल फ़ज़्ल अ़ब्दुर्रह़ीम इराक़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْبَاقِى (मुतवफ़्फ़ा 608 हि.) फ़रमाते हैं : ''ह़लाल व ह़राम की पहचान के लिये इह्याउल उ़लूम इस्लाम की आ'ला तरीन कुतुब में से है।''[2]

﴾2﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना सय्यिद कबीर अ़ली बिन अबू बक्र सक्क़ाफ़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَفَّار (मुतवफ़्फ़ा 895 हि.) फ़रमाते हैं : ''अगर काफ़िर इह्याउल उ़लूम की वर्क़ गरदानी कर ले तो मुसलमान हो जाए। इस में ऐसा मख़्फ़ी राज़ है जो दिलों को मिक़नात़ीस की त़रह़ खींचता है।''[3]

﴾3﴿ इमामुल मुकाशिफ़ीन ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अक्बर मुह़्युद्दीन इब्ने अ़रबी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَلِى (मुतवफ़्फ़ा 638 हि.) फ़रमाते हैं : मैं इह्याउल उ़लूम को का'बए मुअ़ज़्ज़मा के सामने बैठ कर पढ़ा करता था।[4]

﴾4﴿.....इमामुल ह़रमैन के शागिर्द ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल ग़ाफ़िर बिन इस्माईल फ़ारिसी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَلِى (मुतवफ़्फ़ा 529 हि.) फ़रमाते हैं : ''इह्याउल उ़लूम जैसी किताब पहले किसी ने नहीं लिखी।''[5]

---

1 ......مقدمۂ احیاء العلوم (مترجم ازعلامہ فیض احمداویسی علیہ رحمۃ اللّٰہ القوی)، ج۱، ص۲۱، ملخصًا۔

2 ......تعریف الاحیاء بفضائل الاحیاء علی ھامش احیاء علوم الدین، ج۵، ص۳۵۸۔

3 ......المرجع السابق، ج۵، ص۳۶۱۔

4 ......اتحاف السادۃ المتقین، مقدمۃ الکتاب، ج۱، ص۳۸۔

5 ......تاریخ مدینۃ دمشق، ج۵۵، ص۲۰۱۔

﴾5﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम यह़या बिन शरफ़ नववी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْقَوِی (मुतवफ़्फ़ा 676 हि.) ने फ़रमाया : "इह़याउल उ़लूम क़ुरआने करीम से बहुत क़रीब है।"(1)

﴾6﴿ ताजुल आ़रिफ़ीन क़ुत़्बुल औलिया ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह ऐ़दरूस رَحْمَۃُاللہِ تعالٰی عَلَیْہ को इह़याउल उ़लूम तक़रीबन पूरी ह़िफ़्ज़ थी। आप फ़रमाते हैं : "इह़याउल उ़लूम को लाज़िम पकड़ लो। येह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की नज़रे रह़मत और रिज़ा का ज़रीआ़ है तो जिस ने इस से मह़ब्बत की और इस का मुत़ालआ़ कर के इस पर अ़मल किया उस ने अल्लाह व रसूल عَزَّوَجَلَّ وصَلَّی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلَّم और मलाइका व अम्बिया عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की मह़ब्बत को पा लिया और उस ने शरीअ़त, त़रीक़त और ह़क़ीक़त को दुन्या व आख़िरत में जम्अ़ कर लिया और वोह मुल्क व मल्कूत में आ़लिम हो गया।" नीज़ फ़रमाया : "हमारे लिये क़ुरआनो सुन्नत के इ़लावा कोई रास्ता व मे'यार नहीं और इन की मुकम्मल तशरीह़ व तफ़्सील सय्यिदुल मुसन्निफ़ीन बक़िय्यतुल मुजतहिदीन ह़ुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْوَالِی ने अपनी अ़ज़ीमुश्शान तस्नीफ़ इह़याउल उ़लूम में फ़रमा दी है।"(2)

﴾7﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह ऐ़दरूस رَحْمَۃُاللہِ تعالٰی عَلَیْہ के भाई ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अ़ली رَحْمَۃُاللہِ تَعالٰی عَلَیْہ ने इह़याउल उ़लूम को 25 मरतबा बिल इस्तीआ़ब पढ़ा। आप हर बार ख़त्म कर के फ़ुक़रा व त़लबा की दा'वत करते थे।(3)

﴾8﴿....ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अबू मुह़म्मद काज़रूनी رَحْمَۃُاللہِ تَعالٰی عَلَیْہ का दा'वा था कि "अगर तमाम उ़लूम नापैद हो जाएं तो मैं इह़याउल उ़लूम से सब को निकाल लूंगा।"(4)

इह़याउल उ़लूम की रिवायत करने वाले :

इह़याउल उ़लूम की रिवायत जिन ह़ज़राते आ़लिया ने फ़रमाई उन के अस्माए गिरामी येह हैं : ﴾1﴿ ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल ख़ालिक़ बिन अह़मद बग़दादी ﴾2﴿ ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन षाबित बिन ह़सन ख़ुजन्दी, इन की सनदे रिवायत में अ़ल्लामा इब्ने ह़जर अ़स्क़लानी (मुतवफ़्फ़ा 852 हि.) और ह़ाफ़िज़ शम्सुद्दीन सख़ावी (मुतवफ़्फ़ा 902 हि.) जैसी अ़ज़ीम हस्तियां भी हैं ﴾3﴿ ह़ज़रते सय्यिदुना अबुल फ़ुतूह़ अस्अ़द बिन अह़मद इस्फ़राइनी ﴾4﴿ ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अ़ब्दुल्लाह मुह़म्मद अल मालिकी, इन की सनदे रिवायत में सय्यिदुना अ़ल्लामा जलालुद्दीन सुयूत़ी शाफ़ेई (मुतवफ़्फ़ा 911 हि.) और ह़ाफ़िज़ अ़ब्दुर्रऊफ़ मनावी (मुतवफ़्फ़ा 1003 हि.) जैसी अ़ज़ीम व मो'तबर शख़्सिय्यात भी हैं ﴾5﴿ ह़ज़रते सय्यिदुना क़ाज़ी अबू बक्र

---

1 ......تعریف الاحیاء بفضائل الاحیاء علی ھامش احیاء علوم الدین، ج۵، ص۳۵۹۔

2 ......المرجع السابق۔ 3 ......المرجع السابق، ص۳۶۰۔ 4 ......المرجع السابق، ص۳۵۹۔

मुह़म्मद बिन अ़ब्दुल्लाह अ़रबी ﴾6﴿ ह़ज़रते सय्यिदुना अबुल अ़ब्बास अह़मद बिन मुह़म्मद ﴾7﴿ ह़ज़रते सय्यिदुना ह़ाफ़िज़ अबू त़ाहिर अह़मद बिन मुह़म्मद सलफ़ी और ﴾8﴿ ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद मुह़म्मद बिन अस्अ़द नवक़ानी (رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیۡهِمۡ اَجۡمَعِیۡن)[1]

इह़याउल उ़लूम का ख़ुलासा लिखने वाले :

सब से पहले "لُبَابُ الۡاِحۡیَاء" के नाम से इह़याउल उ़लूम का ख़ुलासा करने वाले ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ग़ज़ाली عَلَیۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡوَالِی के भाई ह़ज़रते सय्यिदुना अह़मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَیۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡوَالِی (मुतवफ़्फ़ा 520 हि.) हैं। दीगर उ़-लमाए किराम ने भी इस का ख़ुलासा फ़रमाया जिन के अस्माए गिरामी येह हैं : ....मुह़म्मद बिन सईद यमनी (मुतवफ़्फ़ा 595 हि.).....यह़्या बिन अबुल ख़ैर....अ़ल्लामा जलालुद्दीन सुयूत़ी (मुतवफ़्फ़ा 911 हि.).... मुह़म्मद बिन उ़मर बलख़ी......अ़ब्दुल वह्हाब बिन अ़ली मराग़ी....मिस्र के शैख़े ख़ानक़ाह मुह़म्मद बिन अ़ली अ़जलूनी (मुतवफ़्फ़ा 812 हि.) (رَحۡمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیۡهِمۡ اَجۡمَعِیۡن)[2]

एक ख़ुलासा ऐ़नुल इ़ल्म के नाम से हुवा जिस की शर्ह़ ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा मौलाना अ़ली बिन सुल्त़ान हरवी ह़नफ़ी अ़ल मा'रूफ़ '**मुल्ला अ़ली क़ारी**' عَلَیۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡبَارِی ने फ़रमाई। इस ख़ुलासे के मुतअ़ल्लिक़ अ़ल्लामा इब्ने ह़जर मक्की عَلَیۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡوَلِی (मुतवफ़्फ़ा 974 हि.) फ़रमाते हैं : येह इह़याउल उ़लूम का बे मिषाल ख़ुलासा है जो किसी हिन्दी आ़लिम ने किया है।[3]

इह़याउल उ़लूम की शर्ह़ करने वाले :

इह़याउल उ़लूम की बेहतरीन शर्ह़ ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा सय्यिद मुर्तज़ा ह़सन ज़बैदी عَلَیۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡقَوِی (मुतवफ़्फ़ा 1205 हि.) ने "اِتِّحَافُ السَّادَةِ الۡمُتَّقِیۡن" के नाम से लिखी है जो 14 ज़ख़ीम जिल्दों पर मुश्तमिल है।

अह़ादीषे इह़या की तख़रीज करने वाले :

इह़याउल उ़लूम में मज़्कूर अह़ादीषे मुबारका की तख़रीज करने वाले उ़-लमा में सरे फ़ेहरिस्त ह़ज़रते सय्यिदुना ह़ाफ़िज़ अबुल फ़ज़्ल अ़ब्दुर्रह़ीम इराक़ी عَلَیۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡبَاقِی (मुतवफ़्फ़ा 608 हि.) हैं जिन्हों ने अह़ादीषे इह़या की तख़रीज में कई जिल्दों पर मुश्तमिल किताब लिखी फिर

---

1 ......اتحاف السادة المتّقین، مقدمة الکتاب، ج۱، ص۶۲تا۶۵۔

2 ......کشف الظنون، ج۱، ص۲۴۔

اتحاف السادة المتّقین، مقدمة الکتاب، ج۱، ص۵۶۔

3 ......الخیرات الحسان فی مناقب الامام الاعظم ابی حنیفة النعمان، المقدمة الاولی، ص۱۱، ملخصًا۔

''اَلْمُغْنِی عَنْ حَمْلِ الْاَسْفَار'' के नाम से इस का इख़्तिसार किया...हाफ़िज़ इराक़ी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْبَاقِی ही के शागिर्द इमाम इब्ने ह़जर अ़स्क़लानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّورانی (मुतवफ़्फ़ा 852 हि.) ने एक जिल्द में इह़याउल उ़लूम की अह़ादीष की तख़रीज की और इस में उन अह़ादीष को बयान किया जिन के मुतअ़ल्लिक़ इन के उस्ताज़े मोह़तरम ने तवक़्क़ुफ़ किया था...... और ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा क़ासिम बिन क़ुत़लूबुग़ा ह़नफ़ी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْغَنِی (मुतवफ़्फ़ा 879 हि.) ने ''تُحْفَۃُ الْاِحْیَاء فِیْ مَا فَاتَ مِنْ تَخْرِیْجِ اَحَادِیْثِ الْاِحْیَاء'' के नाम से तख़रीज की। (1)

सफ़रे आख़िरत :

उ़म्र के आख़िरी ह़िस्से में अगर्चे ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَالِی का ज़ियादा तर वक़्त इ़बादत में गुज़रता और शबो रोज़ मुजाहदात व रियाज़ात में बसर करते थे मगर तस्नीफ़ व तालीफ़ का मश्ग़ला बिल्कुल तर्क न फ़रमाया। उसूले फ़िक़्ह में आप की आ'ला दर्जे की तस्नीफ़ ''اَلْمُسْتَصْفٰی'' 504 हि. की तस्नीफ़ है। इस के एक बरस बा'द आप ने 55 साल की उ़म्र में बरोज़ पीर 14 जमादिल आख़िर 505 हि. में ब मक़ामे त़ाबरान (तूस) में इन्तिक़ाल फ़रमाया और वहीं मदफ़ून हुए। विराषत में इस क़दर माल छोड़ा जो आप के अहलो इ़याल के लिये काफ़ी था ह़ालांकि आप को बहुत ज़ियादा मालो ज़र पेश किया गया मगर आप ने क़बूल न किया और कभी किसी के आगे दस्ते सुवाल दराज़ न किया। अवलाद में सिर्फ़ बेटियां ही सोगवार छोड़ीं।

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम इब्ने जौज़ी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی (मुतवफ़्फ़ा 597 हि.) ने ''اَلثَّبَاتُ عِنْدَالْمَمَات'' में आप के विसाल का वाक़िआ़ ह़ज़रते सय्यिदुना अह़मद ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَالِی (मुतवफ़्फ़ा 520 हि.) की ज़बानी येह लिखा है कि पीर के दिन ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَالِی सुब्ह़ के वक़्त बिस्तर से उठे। वुज़ू कर के नमाज़ पढ़ी फिर कफ़न मंगवाया और आंखों से लगा कर फ़रमाया : ''मेरे रब्ब عَزَّ وَجَلَّ का हुक्म सर आंखों पर।'' इतना कहा और चेहरा क़िब्ला रू कर के पाऊं फैला दिये। लोगों ने देखा तो रूह़ क़फ़से उ़न्सुरी से परवाज़ कर चुकी थी। (2)

***अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ की इन पर रह़मत हो और इन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो।* (اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم)

---

1 ......كشف الظنون، ج ١، ص ٢٤ ـ اتحاف السادة المتّقين، مقدمة الكتاب، ج ١، ص ٥٥ ـ

2 ......الثبات عند الممات، ص ١٧٨ ـ طبقات الشافعية الكبرى للسبكى، ج ٦، ص ٢١١ ـ
اتحاف السادة المتّقين، مقدمة الكتاب، ج ١، ص ١٤ ـ

इब्तिदाइया

सब से पहले मैं अल्लाह جَلَّ شَانُہٗ की बे हि़साब और मुसलसल ह़म्दो षना करता हूं अगर्चे उस की शाने अ़ज़मत के सामने तमाम ह़म्द करने वालों की ह़म्द नाक़िस है। इस के बा'द उस के रसूलों पर हदिय्यए दुरूदो सलाम भेजता हूं जो सय्यिदुल बशर के साथ साथ दूसरे तमाम रसूलों को भी शामिल हो। फिर खु़दा से ख़ैर त़लब करता हूं अपने इस इरादे पर जो मैं ने इह़्याए उ़लूमिद्दीन(या'नी दीनी उ़लूम को ज़िन्दा करने) के बारे में किताब लिखने का किया है। इस के बा'द ऐ दीदा व दानिस्ता इन्कार करने वालों के गुरौह में शामिल शिद्दत से मलामत करने वाले और नादानिस्ता इन्कार करने वालों के त़बक़ात में इन्कार और ला'न त़ा'न में ह़द से बढ़ने वाले ! तेरे तअ़ज्जुब व हैरत का ख़ातिमा करने की कोशिश करूंगा। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मेरी ज़बान से ख़ामोशी की गिरह खोल दी है और कलाम व गुफ़्तगू का हार मेरे गले में डाल दिया है क्यूंकि तूने बात़िल की मदद और जहालत को अच्छा क़रार देने में हट धर्मी इख़्तियार करने के साथ साथ वाज़ेह़ ह़क़ से आंखें बन्द कर रखी हैं और उन लोगों में फ़ितना व फ़साद फैला रखा है जो (बुरी) रस्मों से थोड़ा बहुत निकलना चाहते या उन रस्मों से तअ़ल्लुक़ तोड़ कर इल्म पर अ़मल पैरा होने की कुछ न कुछ ख़्वाहिश रखते हैं। इस उम्मीद पर कि तज़्किय्यए नफ़्स और दिल की इस्लाह़ करने में कामयाब हो जाएं जिस का अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने हुक्म दिया है और तमाम उ़म्र की जाने वाली कोताहियों के तदारुक से नाउम्मीद हो कर ज़िन्दगी की बा'ज़ कोताहियों का तदारुक कर लें और लोगों के उस हुजूम से बच जाएं जिन के बारे में आक़ाए दो आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "क़ियामत के दिन सब से सख़्त अ़ज़ाब उस आ़लिम को होगा जिसे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उस के इल्म से नफ़्अ़ न दिया।"[1]

वजहे तस्नीफ़ :

मेरी ज़िन्दगी की क़सम[2] तेरे तकब्बुर पर अड़ने का सबब इस बीमारी के सिवा कोई नहीं जिस ने बहुत से लोगों को घेर रखा है बल्कि तमाम लोग ही इस में मुलव्विष हैं या'नी

---

1 ......شعب الایمان للبیهقی، باب فی نشر العلم، الحدیث:۱۷۷۸، ج۲، ص۲۸۵۔
المجالسة و جواهر العلم للدینوری، الحدیث:۹۱، ج۱، ص۵۷۔

2 ...... मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْمَنَّان मिरआतुल मनाजीह़, जि 4, स. 337 पर फ़रमाते हैं : لَعَمْرِی (या'नी मेरे उ़म्र की क़सम) क़समे शरई नहीं, वोह तो सिर्फ़ खु़दा के नाम की होती है, बल्कि क़समे लुग़वी है जैसे रब्ब तआ़ला फ़रमाता है : وَالتِّیْنِ وَالزَّیْتُوْنِ ۙ(پ۳۰، التین:۱) इनजीर और ज़ैतून की क़सम। लिहाज़ा येह उस ह़दीष के ख़िलाफ़ नहीं जिस में इरशाद हुवा कि ग़ैरे खु़दा की क़सम न खाओ।

आख़िरत की अ़ज़मत जानने से क़ासिर और इस बात से बे ख़बर हैं कि आख़िरत का मुआ़मला बहुत संगीन और मुसीबत सख़्त है। आख़िरत सामने आ रही और दुन्या पीठ फैरे जा रही है। मौत क़रीब है। सफ़र दूर का और ज़ादे राह मा'मूली है। ख़त़रा बहुत ज़ियादा और रास्ता भी बन्द है और परखने वाले साह़िबे बसीरत के नज़दीक वोह इ़ल्मो अ़मल ना मक़्बूल है जो ख़ालिस रिज़ाए इलाही के लिये न हो। कषीर हलाकतों और मुसीबतों की मौजूदगी में आख़िरत के रास्ते पर बिग़ैर किसी राहनुमा और रफ़ीक़ के चलना बहुत मुश्किल और बाइ़षे थकन है। इस रास्ते के राहनुमा उ़-लमा हैं जो अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के वारिष हैं। लेकिन अब ज़माना इन से ख़ाली और सिर्फ़ रसमी लोग बाक़ी हैं। इन में से अकषर पर शैत़ानियत का ग़लबा है और सरकशी ने इन्हें गुमराह कर रखा है। हर एक फ़ौरी फ़ाइदे के ह़ुसूल की कोशिश में नेकी को बुराई और बुराई को नेकी समझता है यहां तक कि इ़ल्मे दीन नापैद हो गया और ज़मीन से हिदायत के निशानात मिट गए। इन्हों ने लोगों को येह तसव्वुर दिया कि इ़ल्म ह़ुकूमत का फ़तवा है कि जब अह़मक़ों में फ़साद हो जाता है तो क़ाज़ी झगड़ों के फ़ैसलों में इस से मदद त़लब करते हैं। या बह़्षो मुबाह़षा और मुनाज़िरे का नाम इ़ल्म है जिसे फ़ख़्रो बड़ाई का त़ालिब मुख़ालिफ़ पर ग़लबा पाने और उस को साकित व ला जवाब करने के लिये ज़िरह के त़ौर पर इस्ति'माल करता है। या मुक़फ़्फ़ा व मुसज्जअ़ कलाम करने का नाम इ़ल्म है जिस के ज़रीए़ वाइ़ज़ लोगों को धोके में मुब्तला करता है क्यूंकि वोह समझते हैं कि इन तीन के सिवा ह़राम माल और सामाने दुन्या इकठ्ठा करने का कोई जाल नहीं।

राहे आख़िरत का इ़ल्म जिस पर सलफ़े सालेह़ीन चला करते थे, जिसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपनी किताब में फ़िक़्ह, ह़िक्मत, इ़ल्म, रोशनी, चमक और रुशदो हिदायत का नाम दिया है वोह मख़्लूक़ के दरमियान से लपेट दिया गया और उसे बिल्कुल भुला दिया गया है। चूंकि येह बात दीन में मज़बूत़ रख़ना (शिगाफ़) और निहायत तारीक मुसीबत है इस लिये मैं इस किताब को लिखने में मश्ग़ूल हुवा ताकि दीनी उ़लूम को ज़िन्दा करूं और मुतक़द्दिमीन अइम्मा के रास्तों और अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام और सलफ़े सालेह़ीन رَحِمَهُمُ اللهُ الْمُبِيْن के नज़दीक नफ़्अ़मन्द उ़लूम की अ़ज़मत को वाज़ेह़ करूं।

किताब की तरतीब और अबवाब बन्दी :

मैं ने इस किताब को बुन्यादी त़ौर पर चार ह़िस्सों में तक़्सीम किया है :

(1) इ़बादात (2) आ़दात (3) मोहलिकात (या'नी हलाक करने वाले उमूर का बयान) और (4) मुनजियात (या'नी नजात दिलाने वाले उमूर का बयान)। लेकिन इ़ल्म की अहम्मिय्यत के

पेशे नज़र किताब के शुरूअ़ में इ़ल्म का बाब क़ाइम किया है और इस में भी पहले उस इ़ल्म को वाज़ेह़ करूंगा जिसे त़लब करने का अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने अपने प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़बान से हुक्म दिया है। चुनान्चे,

हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : इ़ल्म की तलाश हर मुसलमान पर फ़र्ज़ है।(1)

फिर नफ़्अ़ बख़्श इ़ल्म को नुक़्सान देह इ़ल्म से मुमताज़ करूंगा क्यूंकि हुज़ूरे पुर नूर, शाफेए़ यौमुन्नुशूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "हम ऐसे इ़ल्म से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की पनाह मांगते हैं जो नफ़्अ़ न दे।"(2)

इस के बा'द षाबित करूंगा कि इस ज़माने के लोग सह़ीह़ रास्ते से फिर गए हैं और चमकती रैत को पानी समझ कर धोके का शिकार हैं और उ़लूम के मुआ़मले में मग़्ज़ को छोड़ कर छिलके पर इक्तिफ़ा किये बैठे हैं।

किताब के मशमूलात पर एक नज़र :

इ़बादात का बयान दस अबवाब पर मुश्तमिल है :

(1) इ़ल्म (2) क़वाइ़दे अ़क़ाइद (3) त़हारत के असरार (4) नमाज़ के असरार (5) ज़कात के असरार (6) रोज़े के असरार (7) ह़ज के असरार (8) तिलावते क़ुरआन के आदाब (9) अज़्कार और दुआ़एं (10) अवक़ात के ए'तिबार से वज़ाइफ़ की तरतीब।

आ़दात का बयान भी दस अबवाब पर मुश्तमिल है :

(1) खाने के आदाब (2) निकाह़ के आदाब (3) कमाने के अह़काम (4) ह़लाल व ह़राम (5) मुख़्तलिफ़ क़िस्म के लोगों के साथ सोह़बत और मुआ़शरत के आदाब (6) गोशा नशीनी (7) सफ़र के आदाब (8) समाअ़ और वज्द का बयान (9) नेकी की दा'वत देना और बुराई से मन्अ़ करना (10) आदाबे मईशत और अख़्लाक़े नबुव्वत।

मोहलिकात का बयान भी दस अबवाब पर मुश्तमिल है :

(1) अ़जाइबाते क़ल्ब की शर्ह़ (2) नफ़्स की रियाज़त (3) पेट और शर्मगाह की शहवत की आफ़ात (4) ज़बान की आफ़ात (5) ग़ुस्सा, कीना और ह़सद की आफ़ात (6) दुन्या की मज़म्मत (7) माल और बुख़्ल की मज़म्मत (8) हुब्बे जाह और रिया की मज़म्मत (9) तकब्बुर और ख़ुद पसन्दी की मज़म्मत (10) ग़ुरूर की मज़म्मत।

---

1 ......سنن ابن ماجه، المقدمة، باب فضل العلم والحث......الخ، الحديث:۲۲۴، ج۱، ص۱۴۶۔

2 ......صحيح مسلم، كتاب الذكر والدعاء، باب التعوذ من شرما عمل......الخ، الحديث:۲۷۲۲، ص۱۴۵۷۔

मुनजियात का बयान भी दस अबवाब पर मुश्तमिल है :
(1) तौबा (2) सब्रो शुक्र (3) ख़ौफ़ व रजा (4) फ़क़्र व ज़ोहद (5) तौह़ीद और तवक्कुल (6) मह़ब्बत, शौक़, उन्स और रिज़ा (7) निय्यत, सच्चाई और इख़्लास (8) मुराक़बा और मुह़ासबा (9) तफ़क्कुर (10) मौत को याद करना।

मज़ीद तफ़्सील :

इबादात के बयान में इबादत के पोशीदा आदाब, इस के त़रीक़ो की बारिकियां और इस के मआ़नी के असरार बयान करूंगा जिन की एक बा अ़मल आ़लिम को ज़रूरत होती है बल्कि जो इन्हें नहीं जानता उस का शुमार उ़-लमाए आख़िरत में नहीं होता और इन में अकषर वोह बातें हैं जिन्हें फ़िक़ह की किताबों में ज़िक्र नहीं किया गया।

आ़दात के बयान में लोगों के दरमियान जारी मुआ़मलात के असरार, इन की गहराइयां, इन के त़रीक़ों की बारीकियां और इन के जारी होने के मक़ामात की पोशीदा परहेज़गारी बयान करूंगा जिन की हर दीनदार को ज़रूरत होती है।

मोहलिकात के बयान में हर उस बुरी सिफ़त को बयान करूंगा जिसे क़ुरआने पाक ने मिटाने और नफ़्स और दिल को इस से पाक रखने का हुक्म दिया है। इन में से हर आ़दत की ता'रीफ़ और उस की ह़क़ीक़त बयान करने के बा'द उस सबब का ज़िक्र करूंगा जिस से वोह पैदा होती है। फिर वोह आफ़ात जो इस पर मुरत्तब होती हैं। फिर वोह निशानियां जिन से इस की पहचान होती है। फिर इस से छुटकारा पाने का त़रीक़ा और इस का इलाज बयान करूंगा। इन सब पर आयते मुक़द्दसा, अह़ादीषे मुबारका और आषार से दलाइल नक़्ल करूंगा।

मुनजियात के बयान में हर उस क़ाबिले ता'रीफ़ ख़स्लत को बयान करूंगा जिस में रग़बत की जाती है। या'नी मुक़र्रबीन और सिद्दीक़ीन की आ़दात जिन के ज़रीए बन्दा रब्ब عَزَّ وَجَلَّ का क़ुर्ब ह़ासिल करता है। नीज़ हर ख़स्लत की ता'रीफ़, इस की ह़क़ीक़त, इसे ह़ासिल करने का त़रीक़ा, फिर इस से ह़ासिल होने वाले फ़वाइद, इसे पहचानने की अ़लामत और वोह फ़ज़ीलत जिस की वजह से इस में रग़बत की जाती है नक़्ली व अ़क़्ली दलाइल के साथ बयान करूंगा।

किताब की चन्द ख़ुसूसिय्यात :

मज़्कूरा उमूर में से बा'ज़ पर कुछ लोगों ने किताबें लिखी हैं लेकिन येह किताब उन किताबों से पांच वजह से मुमताज़ है :

﴾1﴿.... जिस चीज़ को उन्हों ने पेचीदा रखा मैं ने उसे ह़ल किया और जिसे उन्हों ने इजमालन बयान किया मैं ने उसे वज़ाह़त के साथ बयान किया है।

﴾2﴿.... जिस चीज़ को उन्हों ने तरतीब से बयान नहीं किया मैं ने उस की तरतीब क़ाइम की और जिसे उन्हों ने अ़लाहि़दा अ़लाहि़दा बयान किया मैं ने उसे यकजा ज़िक्र किया है।

﴾3﴿....जिस चीज़ को उन्हों ने त़वालत से लिखा मैं ने उसे मुख़्तसर बयान किया है।

﴾4﴿....जो बात उन्हों ने बार बार नक़्ल की मैं ने तकरार को ह़ज़्फ़ कर दिया और अस्ल मक़्सूद को बाक़ी रखा है।

﴾5﴿....जिन पेचीदा बातों का समझना दुश्वार है उन्हों ने इन्हें बिल्कुल नहीं छेड़ा अगर्चे उन्हों ने एक ही त़रीक़ा इख़्तियार किया है लेकिन कोई बईद नहीं कि किसी सालिक को कोई ऐसी ख़ास बात पता चल जाए जिस से उस के रुफ़क़ा बे ख़बर हों या वोह बे ख़बर तो न हों मगर उसे लाना भूल गए हों या भूले भी न हों लेकिन किसी मानेअ़ (रुकावट) की वजह से उस से पर्दा न उठाया हो। येह इस किताब की ख़ुसूसिय्यात हैं। मज़ीद येह किताब उन उ़लूम की तफ़्सील पर भी मुश्तमिल है।

किताब चार ह़िस्सों में तक़्सीम करने की वजह :

दो बातों ने मुझे इस किताब को चार ह़िस्सों में तक़्सीम करने की त़रफ़ राग़िब किया :

पहली वजह : ह़क़ीक़त में येही अस्ल वजह है और वोह येह है कि तह़क़ीक़ व तफ़हीम में येह तरतीब इ़ल्मे ज़रूरी की त़रह़ है क्यूंकि जिस इ़ल्म के ज़रीए़ आख़िरत की त़रफ़ तवज्जोह की जाती है उस की दो क़िस्में हैं : (1) इ़ल्मे मुआ़मला और (2) इ़ल्मे मुकाशफ़ा।

इ़ल्मे मुकाशफ़ा व इ़ल्मे मुआ़मला की ता'रीफ़ :

इ़ल्मे मुकाशफ़ा : से मुराद वोह इ़ल्म है जिस में सिर्फ़ मा'लूमात का पता चलता है और **इ़ल्मे मुआ़मला :** से मुराद वोह इ़ल्म है जिस में मा'लूमात जानने के साथ साथ इन पर अ़मल भी किया जाता है। इस किताब का मक़्सूद सिर्फ़ इ़ल्मे मुआ़मला है इ़ल्मे मुकाशफ़ा इस का मौज़ूअ़ नहीं क्यूंकि इसे किताबों में लाने की इजाज़त नहीं अगर्चे येह इ़ल्मे त़ालिबाने ह़क़ का बड़ा मक़्सद और सिद्दीक़ीन का अस्ल मक़्सूद है और इ़ल्मे मुआ़मला उस तक ले जाने वाला एक रास्ता है। लेकिन अम्बियाए किराम عَلَيۡهِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने लोगों के साथ सिर्फ़ इ़ल्मे त़रीक़त व हिदायत में बात की है और इ़ल्मे मुकाशफ़ा में इशारे और मिषाल व इजमाल के त़ौर पर गुफ़्तगू फ़रमाई है क्यूंकि वोह जानते थे कि लोगों की अ़क़्लें इन की मुतह़म्मिल नहीं हो सकेंगी और उ़–लमा तो अम्बिया के वारिष हैं इस लिये उन के लिये इस रास्ते से फिरने की गुन्जाइश नहीं।

इल्मे मुआ़मला की अक़्साम :

इल्मे मुआ़मला की दो क़िस्में हैं : (1).... इल्मे ज़ाहिर या'नी ज़ाहिरी आ'ज़ा के आ'माल का इल्म और (2)....इल्मे बातिन या'नी दिल के आ'माल का इल्म। ज़ाहिरी आ'ज़ा से सादिर होने वाला अ़मल या इ़बादत होगा या आ़दत और दिल जो ह़वास से पर्दे में है इस पर आ़लमे मलकूत से जारी होने वाला अ़मल मह़मूद होगा या मज़मूम। लिहाज़ा इस इल्म की दो क़िस्में हुई ज़ाहिर व बातिन। **ज़ाहिरी** हिस्सा जो आ'ज़ा से मुतअ़ल्लिक़ है इस की दो क़िस्में हैं : (1) इ़बादत (2) आ़दत। **बातिनी** हिस्सा जो दिल के अह़वाल और नफ़्स के अख़्लाक़ से मुतअ़ल्लिक़ है इस की भी दो क़िस्में हैं : (1) मज़मूम (2) मह़मूद। चुनान्चे, मजमूई तौर पर येह चार क़िस्में हुई। इल्मे मुआ़मला में इन अक़्साम को नज़र अन्दाज़ नहीं किया जा सकता।

दूसरी वजह : येह है कि मैं ने त़लबा में उस फ़िक़्ह की सच्ची रग़बत देखी जो इन लोगों के नज़्दीक सह़ीह़ है जो ख़ौफ़े ख़ुदा नहीं रखते। वोह इसे फ़ख़्र करने और मुक़ाबलों में अपना मक़ाम व मर्तबा ज़ाहिर करने के लिये ज़िरह के तौर पर इस्ति'माल करते हैं इस की भी चार क़िस्में हैं। मह़बूब के लिबास में मल्बूस भी मह़बूब होता है इस लिये मैं ने किताब को फ़िक़्ह की तरतीब पर लाने में ज़रा भी कोताही नहीं की ताकि लोगों के दिलों को आहिस्ता आहिस्ता इस की त़रफ़ माइल किया जा सके। येही वजह है कि जिन लोगों ने उमरा के दिलों का त़िब्ब की त़रफ़ मैलान चाहा उन्हों ने अपनी किताबों को सितारों की तक़्वीम की सूरत में जदवलों और हिन्दसों में लिखा और इस का नाम तक़्वीमे सिह़्ह़त रखा ताकि इस जिन्स से उमरा के उन्स के बाइ़ष इन्हें इस के मुत़ालए़ की त़रफ़ मुतवज्जेह करें और वोह इल्म कि जिस में अबदी ज़िन्दगी का फाइदा हो उस की त़रफ़ लोगों के दिलों को खींचने का ह़ीला इस ह़ीले से अहम है जो त़िब्ब की त़रफ़ खींचता है क्यूंकि त़िब्ब तो सिर्फ़ जिस्मानी सिह़्ह़त का फ़ाइदा देती है जब कि इल्म दिलों और रूहों का इलाज है इस के ज़रीए़ इन्सान अबदी ज़िन्दगी तक पहुंच जाता है। लिहाज़ा इस के मुक़ाबले में त़िब्ब की क्या हैषिय्यत कि जिस के ज़रीए़ सिर्फ़ जिस्मानी इलाज होता है और जिस्म तो कुछ ही दिनों में ख़राब हो जाएंगे। हम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से तौफ़ीक़, हिदायत और सिराते़ मुस्तक़ीम पर क़ाइम रहने का सुवाल करते हैं वोही करीम और जव्वाद है।

इ़ल्म का बयान

येह सात अबवाब पर मुश्तमिल है : (1) इ़ल्म, ता'लीम और तअ़ल्लुम की फ़ज़ीलत (2) फ़र्ज़े ऐन और फ़र्ज़े किफ़ाया उ़लूम, इ़ल्मे फ़िक़्ह और इ़ल्मे कलाम के इ़ल्मे दीन होने की ह़द और इ़ल्मे आख़िरत व इ़ल्मे दुन्या का बयान (3) उन मज़्मूम (क़बीह़) उ़लूम का बयान जिन्हें अ़वाम इ़ल्मे दीन समझते हैं नीज़ इस बात का बयान कि कौन सा इ़ल्म कितना मज़्मूम है (4) आफ़ाते मुनाज़रा और लोगों के इख़्तिलाफ़ात और झगड़ों में मश्ग़ूल होने की वुजूहात का बयान (5) उस्ताज़ व शागिर्द के आदाब (6) इ़ल्म और उ़-लमा की आफ़ात और उ़-लमाए दुन्या व उ़-लमाए आख़िरत के दरमियान फ़र्क़ करने वाली अ़लामात का बयान और (7) अ़क़्ल, इस की फ़ज़ीलत, इस की अक़्साम और इस के बारे में वारिद रिवायात का बयान।

बाब नम्बर : 1

इ़ल्म, ता'लीम और तअ़ल्लुम की फ़ज़ीलत और इस के अ़क़्ली व नक़्ली दलाइल का बयान

पहली फ़स्ल : इ़ल्म की फ़ज़ीलत

इ़ल्म की फ़ज़ीलत पर मुश्तमिल 14 फ़रामीने बारी तआ़ला :

﴾1﴿

شَهِدَ اللّٰهُ اَنَّهٗ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۙ وَالْمَلٰٓئِكَةُ وَ اُولُوا الْعِلْمِ قَآئِمًۢا بِالْقِسْطِ ؕ (پ۳، اٰل عمران:۱۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *अल्लाह ने गवाही दी कि उस के सिवा कोई मा'बूद नहीं और फ़िरिश्तों ने और आ़लिमों ने इन्साफ़ से क़ाइम हो कर।*

देखिये ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने किस त़रह़ अपनी पाक ज़ात से आग़ाज़ फ़रमाया फिर मलाइका और फिर इ़ल्म वालों का ज़िक्र फ़रमाया। शरफ़ व फ़ज़ीलत और अ़ज़्मत व कमाल के लिये येही काफ़ी है।

﴾2﴿

يَرْفَعِ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ ۙ وَالَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ دَرَجٰتٍ ؕ (پ۲۸، المجادلة:۱۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *अल्लाह तुम्हारे ईमान वालों के और उन के जिन को इ़ल्म दिया गया दर्जे बुलन्द फ़रमाएगा।*

उ़-लमा की आ़म लोगों पर फ़ज़ीलत : ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने फ़रमाया : "उ़-लमाए किराम आ़म मोअमिनीन से 700 दर्जे बुलन्द होंगे, हर दो दर्जों के दरमियान 500 साल की मसाफ़त है।"(1)

(3)

قُلْ هَلْ يَسْتَوِي الَّذِيْنَ يَعْلَمُوْنَ وَالَّذِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ ؕ (پ۲۳، الزمر:۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *तुम फ़रमाओ क्या बराबर हैं जानने वाले और अन्जान।*

(4)

اِنَّمَا يَخْشَى اللّٰهَ مِنْ عِبَادِهِ الْعُلَمٰٓؤُا ؕ (پ۲۲، فاطر:۲۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *अल्लाह से उस के बन्दों में वोही डरते हैं जो इ़ल्म वाले हैं।*

(5)

قُلْ كَفٰى بِاللّٰهِ شَهِيْدًۢا بَيْنِيْ وَبَيْنَكُمْ ۙ وَمَنْ عِنْدَهٗ عِلْمُ الْكِتٰبِ ۟ (پ۱۳، الرعد:۴۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *तुम फ़रमाओ अल्लाह गवाह काफ़ी है मुझ में और तुम में और वोह जिसे किताब का इ़ल्म है।*

(6)

قَالَ الَّذِيْ عِنْدَهٗ عِلْمٌ مِّنَ الْكِتٰبِ اَنَا اٰتِيْكَ بِهٖ (پ۱۹، النمل:۴۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *उस ने अ़र्ज़ की जिस के पास किताब का इ़ल्म था कि मैं इसे हुज़ूर में ह़ाज़िर कर दूंगा।*

इस में तम्बीह है कि इ़ल्म की त़ाक़त से वोह इस पर क़ादिर हुवा (या'नी ह़ज़रते सय्यिदुना सुलैमान عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के वज़ीर ह़ज़रते सय्यिदुना आसिफ़ बिन बरख़िया رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ इ़ल्म की त़ाक़त से पलक झपकने में तख़्त लाने पर क़ादिर हुए)।

(7)

وَقَالَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ وَيْلَكُمْ ثَوَابُ اللّٰهِ خَيْرٌ لِّمَنْ اٰمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا ۚ (پ۲۰، القصص:۸۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और बोले वोह जिन्हें इ़ल्म दिया गया ख़राबी हो तुम्हारी अल्लाह का षवाब बेहतर है उस के लिये जो ईमान लाए और अच्छे काम करे।*

इस आयते मुबारका में बयान फ़रमाया कि आख़िरत की क़द्रो मन्ज़िलत इ़ल्म के ज़रीए मा'लूम होती है।

---

(1)......قوت القلوب،الفصل الحادی والثلاثون: کتاب العلم وتفضیله، بیان آخرفی فضل العلم......الخ، ج۱ ص۲۴۱۔

﴾8﴿

وَ تِلْكَ الْاَمْثَالُ نَضْرِبُهَا لِلنَّاسِ ۚ وَ مَا یَعْقِلُهَاۤ اِلَّا الْعٰلِمُوْنَ ﴿۴۳﴾ (پ ۲۰، العنکبوت:۴۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और येह मिषालें हम लोगों के लिये बयान फ़रमाते हैं और इन्हें नहीं समझते मगर इ़ल्म वाले ।*

﴾9﴿

وَ لَوْ رَدُّوْهُ اِلَى الرَّسُوْلِ وَ اِلٰۤى اُولِی الْاَمْرِ مِنْهُمْ لَعَلِمَهُ الَّذِیْنَ یَسْتَنْۢبِطُوْنَهٗ مِنْهُمْ ؕ (پ ۵، النساء:۸۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और अगर इस में रसूल और अपने ज़ी इख़्तियार लोगों की त़रफ़ रुजूअ़ लाते तो ज़रूर उन से इस की ह़क़ीक़त जान लेते येह जो बा'द में काविश करते हैं ।*

वाक़िआ़त के फ़ैसले को उ़-लमाए किराम के इजतिहाद की त़रफ़ लौटा कर हुक्मे इलाही के इज़्हार में इन का दर्जा अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के दर्जे से मिलाया ।

﴾10﴿

یٰبَنِیْۤ اٰدَمَ قَدْ اَنْزَلْنَا عَلَیْكُمْ لِبَاسًا یُّوَارِیْ سَوْاٰتِكُمْ وَ رِیْشًا ؕ وَ لِبَاسُ التَّقْوٰىۙ ذٰلِكَ خَیْرٌ ؕ (پ ۸، الاعراف:۲۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *ऐ आदम की अवलाद ! बेशक हम ने तुम्हारी त़रफ़ एक लिबास वोह उतारा कि तुम्हारी शर्म की चीज़ें छुपाए और एक वोह कि तुम्हारी आराइश हो और परहेज़गारी का लिबास वोह सब से भला ।*

एक क़ौल येह है कि इस आयत में لِبَاسًا से इ़ल्म, رِیْشًا से यक़ीन और لِبَاسُ التَّقْوٰى से ह़या मुराद है ।

﴾11﴿

وَ لَقَدْ جِئْنٰهُمْ بِكِتٰبٍ فَصَّلْنٰهُ عَلٰى عِلْمٍ (پ ۸، الاعراف:۵۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और बेशक हम उन के पास एक किताब लाए जिसे हम ने एक बड़े इ़ल्म से मुफ़स्सल किया ।*

﴾12﴿

فَلَنَقُصَّنَّ عَلَیْهِمْ بِعِلْمٍ (پ ۸، الاعراف:۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *तो ज़रूर हम उन को बता देंगे अपने इ़ल्म से ।*

﴾13﴿ بَلْ هُوَ اٰیٰتٌۢ بَیِّنٰتٌ فِیْ صُدُوْرِ الَّذِیْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ ؕ (پ ۲۱، العنکبوت:۴۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *बल्कि वोह रोशन आयतें हैं उन के सीनों में जिन को इ़ल्म दिया गया।*

﴾14﴿ خَلَقَ الْاِنْسَانَ ۙ﴿۳﴾ عَلَّمَهُ الْبَیَانَ ﴿۴﴾ (پ ۲۷، الرحمٰن:۳،۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *इन्सानिय्यत की जान मुह़म्मद को पैदा किया ماکان وما یکون का बयान उन्हें सिखाया।*

इ़ल्म की फ़ज़ीलत पर मुश्तमिल 28 फ़रामीने मुस्त़फ़ा :

﴾1﴿.....**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जिस के साथ भलाई का इरादा फ़रमाता है उसे दीन की समझ बूझ और हिदायत की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाता है।[1]

﴾2﴿.....उ़-लमा अम्बिया के वारिष हैं।[2]

इस से पता चला कि जिस त़रह़ नबुव्वत से बढ़ कर कोई मर्तबा नहीं इसी त़रह़ नबुव्वत की विराषत (या'नी इ़ल्म) से बढ़ कर कोई अ़ज़्मत नहीं।

﴾3﴿.....ज़मीन व आस्मान की तमाम मख़्लूक़ आ़लिम के लिये इस्तिग़फ़ार करती है।[3]

लिहाज़ा उस से बड़ा मर्तबा किस का होगा जिस के लिये ज़मीन व आस्मान के फ़िरिश्ते मग़फ़िरत की दुआ़ करते हों। येह अपनी ज़ात में मश्गूल है और फ़िरिश्ते इस के लिये इस्तिग़फ़ार में मश्गूल हैं।

﴾4﴿.....बेशक हि़क्मत ज़ीमर्तबा के मर्तबे को बढ़ाती और ग़ुलाम को इतनी बुलन्दी अ़त़ा करती है कि वोह बादशाहों के मक़ाम को पा लेता है।[4]

इस ह़दीषे पाक में इ़ल्म के दुन्यवी फ़वाइद बयान किये गए हैं और येह बात यक़ीनी है कि आख़िरत बहुत बेहतर और बाक़ी रहने वाली है।

---

1 ......صحیح مسلم، کتاب الزکاۃ، باب النھی عن المسألۃ، الحدیث:۱۰۳۷، ص۵۱۶۔
الزھد للامام احمد بن حنبل، فی فضل ابی ھریرۃ، الحدیث:۸۸۵، ص۱۸۲۔

2 ......سنن ابن ماجہ، کتاب السنۃ، باب فضل العلم والحث......الخ، الحدیث:۲۲۳، ج۱، ص۱۴۶۔

3 ......سنن ابن ماجہ، کتاب السنۃ، باب فضل العلم والحث......الخ، الحدیث:۲۲۳، ج۱، ص۱۴۶۔

4 ......المجروحین لابن حبان، الرقم:۴۸۸، صالح بن بشیر المری، ج۱، ص۳۷۲۔
جامع بیان العلم وفضلہ، باب قولہ:لاحسد الا فی اثنین، الحدیث:۶۳، ص۳۰،بتغیر۔

﴾5﴿.....दो ख़स्लतें ऐसी हैं जो किसी मुनाफ़िक़ में नहीं होतीं : हुस्ने अख़्लाक़ और दीन की समझ बूझ ।(1)

(ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِي फ़रमाते हैं :) मौजूदा ज़माने के बा'ज़ फ़ुक़हा के निफ़ाक़ की वजह से इस ह़दीष में हरगिज़ शक न करना क्यूंकि इस ह़दीष में फ़िक़्ह से मुराद वोह नहीं जो तुम समझते हो, अ़न क़रीब हम फ़िक़्ह का मा'ना बयान करेंगे और फ़क़ीह का कम से कम दर्जा येह है कि वोह इस बात का यक़ीन रखे कि आख़िरत दुन्या से बेहतर है और अगर उस पर इस बात की मा'रिफ़त सच्ची और ग़ालिब होगी तो इस की बरकत से वोह निफ़ाक़ और रिया से पाक हो जाएगा ।

﴾6﴿.....लोगों में सब से अफ़्ज़ल वोह मोमिने आ़लिम है कि जब उस की ज़रूरत पड़े तो नफ़्अ़ दे और अगर उस से बे परवाही की जाए तो वोह अपने आप को बे नियाज़ रखे ।(2)

﴾7﴿.....ईमान बे लिबास है, इस का **लिबास** परहेज़गारी, ज़ीनत, शर्मो ह़या और षमरा इ़ल्म है ।(3)

﴾8﴿.....लोगों में से उ़-लमा व मुजाहिदीन दर्जए नबुव्वत के सब से ज़ियादा क़रीब हैं । उ़-लमा तो रसूलों की लाई हुई बातों की त़रफ़ लोगों की राहनुमाई करते हैं और मुजाहिदीन रसूलों की लाई हुई शरीअ़त (की ह़िफ़ाज़त) के लिये तलवारों से जिहाद करते हैं ।(4)

﴾9﴿......एक क़बीले की मौत एक आ़लिम की मौत से आसान है ।(5)

﴾10﴿.....लोग सोने चांदी की कानों की त़रह़ मुख़्तलिफ़ कानें हैं इन में से जो ज़मानए जाहिलिय्यत में आ'ला थे वोह इस्लाम में भी आ'ला हैं जब कि दीन की समझ बूझ रखते हों ।(6)

---

1 ......سنن الترمذی، کتاب العلم، باب ماجاء فی فضل الفقه علی العبادة، الحدیث:۲۶۹۳، ج۴، ص۳۱۳۔

2 ......تاریخ دمشق لابن عساکر، عمر بن علی بن ابی طالب، الحدیث:۹۸۸۶، ج۴۵، ص۳۰۳۔

مشکاة المصابیح، کتاب العلم، الحدیث:۲۵۱، ج۱، ص۶۷، بتغیرٍ۔

3 ......الفقیه والمتفقه، ذکر احادیث واخبار شتی......الخ، الحدیث:۱۲۹، ج۱، ص۱۴۶۔

4 ......المرجع السابق، الحدیث:۱۳۲، ص۱۴۸۔

5 ......شعب الایمان للبیهقی،باب فی طلب العلم،فصل فی فضل العلم وشرف مقداره،الحدیث:۱۶۹۹،ج۲، ص۲۶۴۔

6 ......صحیح مسلم، کتاب البروالصلة والآداب، باب الارواح جنود مجنّدة، الحدیث:۲۶۳۸، ص۱۴۱۸۔

﴾11﴿......क़ियामत के दिन उ़-लमा की सियाही शहीदों के ख़ून से तोली जाएगी ।[1]

﴾12﴿......जिस ने मेरी उम्मत के लिये अह़काम की 40 ह़दीषें याद कीं और उन तक पहुंचा दीं मैं क़ियामत के दिन उस का शफ़ीअ़ और गवाह होऊंगा ।[2]

﴾13﴿......मेरा जो उम्मती 40 ह़दीषें याद करेगा वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से आ़लिम और फ़क़ीह हो कर मिलेगा ।[3]

﴾14﴿......जो इ़ल्मे दीन ह़ासिल करेगा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस की मुश्किलात को आसान फ़रमा देगा और उसे वहां से रिज़्क़ अ़त़ा फ़रमाएगा जहां उस का गुमान भी न होगा ।[4]

﴾15﴿......अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने ह़ज़रते इब्राहीम عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की त़रफ़ वह़्य फ़रमाई कि ऐ इब्राहीम ! मैं अ़लीम हूं और हर साह़िबे इ़ल्म को पसन्द करता हूं ।[5]

﴾16﴿......आ़लिम ज़मीन में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का अमीन होता है ।[6]

﴾17﴿.....अगर मेरी उम्मत के दो गुरौह उमरा और उ़-लमा ठीक हो जाएं तो सब लोग ठीक हो जाएंगे और अगर वोह बिगड़ जाएं तो सब लोग बिगड़ जाएंगे ।[7]

﴾18﴿.....जिस दिन मैं ऐसे इ़ल्म में इज़ाफ़ा न कर सकूं जो मुझे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के क़रीब कर दे उस दिन के रोशन होने में मेरे लिये कोई बरकत नहीं ।[8]

---

1 ......جامع بیان العلم وفضلہ، باب تفضیل العلماء علی الشھداء، الحدیث:۱۳۹، ص۴۸۔

2 ......جامع بیان العلم وفضلہ، باب قولہ صلی اللّٰہ علیہ وسلم:من حفظ علی امتی......الخ، الحدیث:۱۸۸، ص۶۳۔

3 ......جامع بیان العلم وفضلہ، الحدیث:۱۸۷، ص۶۲۔

4 ......جامع بیان العلم وفضلہ، باب جامع فی فضل العلم، الحدیث:۱۹۸، ص۶۶۔

5 ......جامع بیان العلم وفضلہ، الحدیث:۲۱۳، ص۷۰۔

6 ......جامع بیان العلم وفضلہ، الحدیث:۲۲۵، ص۷۴۔

7 ......جامع البیان العلم وفضلہ، باب ذم العالم علی مداخلۃ السلطان الظالم، الحدیث:۱۰۷، ص۲۳۱۔
حلیۃ الاولیاء، میمون بن مھران، الحدیث:۴۸۹۸، ج۴، ص۱۰۱۔

8 ......المعجم الاوسط، الحدیث:۶۶۳۶، ج۵، ص۷۹۔

﴾19﴿.....ताजदारे रिसालत, माहे नबुव्वत صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इ़ल्म को इ़बादत और शहादत से अफ़्ज़ल क़रार देते हुए इरशाद फ़रमाया : आ़लिम की फ़ज़ीलत आ़बिद पर ऐसी है जैसे मेरी फ़ज़ीलत मेरे अदना सह़ाबी पर ।(1)

(प्यारे इस्लामी भाइयो !) ग़ौर कीजिये ! मक्की मदनी मुस्तफ़ा صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने किस त़रह़ इ़ल्म को दर्जए नबुव्वत के साथ मिला दिया और कैसे इ़ल्म से ख़ाली अ़मल के मर्तबे को घटा दिया अगर्चे आ़बिद जिस इ़बादत पर मुवाज़बत इख़्तियार किये होता है वोह इ़ल्म से ख़ाली नहीं होती वरना वोह इ़बादत ही नहीं जो इ़ल्म से ख़ाली हो ।

﴾20﴿.....आ़लिम की फ़ज़ीलत आ़बिद पर ऐसी है जैसे चौदहवीं के चांद की तमाम सितारों पर ।(2)

﴾21﴿.....क़ियामत के दिन तीन क़िस्म के लोग शफ़ाअ़त करेंगे : अम्बिया, उ़-लमा और शुहदा ।(3)

लिहाज़ा मा'लूम हुवा कि ज़ियादा अ़ज़मत वाला मर्तबा वोह है जिस का ज़िक्र मर्तबए नबुव्वत के साथ मिला हुवा है और येह मर्तबए शहादत से बढ़ कर है अगर्चे शहादत की फ़ज़ीलत में भी कषीर अह़ादीष मरवी हैं ।

﴾22﴿.....अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की कोई इ़बादत ऐसी नहीं की गई जो दीन की समझ बूझ ह़ासिल करने से अफ़्ज़ल हो और एक फ़क़ीह शैत़ान पर हज़ार आ़बिदों से ज़ियादा भारी है । हर चीज़ का एक सुतून होता है और इस दीन का सुतून फ़िक़्ह है ।(4)

﴾23﴿.....तुम्हारे दीन का अफ़्ज़ल अ़मल वोह है जो आसान तरीन हो और दीन सीखना सब से अफ़्ज़ल इ़बादत है ।(5)

﴾24﴿.....मोमिने आ़लिम मोमिने आ़बिद पर 70 दर्जे ज़ियादा फ़ज़ीलत रखता है ।(6)

1.....سنن الترمذی، کتاب العلم، باب ماجاء فی فضل الفقه علی العبادة، الحدیث:۲۶۹۴، ج۴، ص۳۱۴،بتغیرٍ۔

2.....سنن ابی داود، کتاب العلم، باب الحث علی طلب العلم، الحدیث: ۳۶۴۱، ج۳، ص۴۴۴۔

3.....سنن ابن ماجه، کتاب الزھد، باب ذکرالشفاعة، الحدیث:۴۳۱۳، ج۴، ص۵۲۶۔

4.....المعجم الاوسط، الحدیث:۶۱۶۶، ج۴، ص۳۳۷۔
جامع بیان العلم وفضله، باب تفضیل العلم علی العبادة، الحدیث:۱۱۶، ص۴۲۔

5.....جامع بیان العلم وفضله، باب تفضیل العلم علی العبادة، الحدیث:۸۰، ص۳۴۔

6.....جامع بیان العلم وفضله،الحدیث:۸۴، ص۳۶۔

﴾25﴿.....बेशक तुम ऐसे ज़माने में हो जिस में उ़-लमा ज़ियादा, कुर्रा और खु़त़बा थोड़े हैं। देने वाले ज़ियादा और मांगने वाले कम हैं। अ़न क़रीब लोगों पर एक ऐसा ज़माना भी आएगा जिस में उ़-लमा कम और खु़त़बा ज़ियादा होंगे। देने वाले कम और भिकारी ज़ियादा होंगे। उस ज़माने में इ़ल्म अ़मल से अफ़्ज़ल होगा।(1)

﴾26﴿.....आ़लिम और आ़बिद के दरमियान 100 दर्जे हैं और हर दो दर्जों के दरमियान इतना फ़ासिला है जितनी मसाफ़त सधाया हुवा उ़मदा घोड़ा 70 साल तक दौड़ कर तै करता है।(2)

﴾27﴿.....बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ की गई : या रसूलल्लाह صلی اللہ تعالی علیک وسلم अफ़्ज़ल अ़मल कौन सा है? प्यारे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : اَلْعِلْمُ بِاللّٰہ अ़र्ज़ की गई : या रसूलल्लाह صلی اللہ تعالی علیک وسلم आप कौन सा इ़ल्म मुराद लेते हैं? इरशाद फ़रमाया : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ज़ात का इ़ल्म। अ़र्ज़ की गई : हमारा सुवाल अ़मल के मुतअ़ल्लिक़ है जब कि आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم इ़ल्म का इरशाद फ़रमा रहे हैं? इरशाद फ़रमाया : येह (या'नी ज़ाते बारी तआ़ला का) इ़ल्म हो तो, थोड़ा अ़मल भी फ़ाइदा देता है और अगर येह न हो तो, ज़ियादा अ़मल भी फ़ाइदे से ख़ाली होता है।(3)

﴾28﴿.....**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ क़ियामत के दिन इ़बादत गुज़ारों को उठाएगा फिर उ़-लमा को उठाएगा और उन से फ़रमाएगा : ऐ उ़-लमा के गुरौह! मैं तुम्हें जानता हूं इसी लिये तुम्हें अपनी त़रफ़ से इ़ल्म अ़त़ा किया था और तुम्हें इस लिये इ़ल्म नहीं दिया था कि तुम्हें अ़ज़ाब में मुब्तला करूंगा। जाओ! मैं ने तुम्हें बख़्श दिया।(4)

हम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से हुस्ने ख़ातिमा की दुआ़ करते हैं।

---

(1)......المعجم الکبیر، الحدیث: ۳۱۱۱، ج۳، ص۱۹۷۔
جامع بیان العلم وفضلہ، باب تفضیل العلم علی العبادۃ، الحدیث: ۹۲، ص۳۸۔

(2)......جامع بیان العلم وفضلہ، باب تفضیل العلم علی العبادۃ، الحدیث: ۱۱۸، ص۴۳۔

(3)......جامع بیان العلم وفضلہ، الحدیث: ۱۹۷، ص۶۵، بتغیرٍ۔

(4)......جامع بیان العلم وفضلہ، الحدیث: ۲۱۱، ص۶۹۔
الکامل فی ضعفاء الرجال لابن عدی، طلحۃ بن یزید الرقی، ج۵، ص۱۷۷۔

इ़ल्म की फ़ज़ीलत पर मुश्तमिल 20 अक़्वाले बुज़ुर्गाने दीन :

﴾1﴿.....अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने ह़ज़रते सय्यिदुना कमील बिन ज़ियाद नख़ई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَلِی से फ़रमाया : ऐ कमील ! इ़ल्म माल से बेहतर है कि इ़ल्म तेरी ह़िफ़ाज़त करता है जब कि माल की तुझे ह़िफ़ाज़त करनी पड़ती है। इ़ल्म ह़ाकिम है और माल मह़कूम। माल ख़र्च करने से घटता है जब कि इ़ल्म ख़र्च करने से बढ़ता है।(1)

मज़ीद फ़रमाया : रात भर इ़बादत करने वाले दिन भर रोज़ा रखने वाले मुजाहिद से आ़लिम अफ़्ज़ल है और आ़लिम की मौत से इस्लाम में ऐसा रख़्ना (शिगाफ़) पड़ता है जिसे उस के नाइब के सिवा कोई नहीं भर सकता।(2)

आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने कुछ अश्आ़र पढ़े जिन का मफ़्हूम येह है : फ़ख़्र उ़-लमा ही को लाइक़ है क्यूंकि वोह ख़ुद हिदायत पर हैं और हिदायत के त़लबगारों के लिये राहनुमा हैं। हर शख़्स उसी चीज़ की क़द्र करता है जो उसे अच्छी लगती है और जाहिल उ़-लमा के दुश्मन हैं। इ़ल्म के ज़रीए़ कामयाबी ह़ासिल करो हमेशा की ज़िन्दगी पाओगे। लोग मर जाते हैं जब कि उ़-लमा ज़िन्दा रहते हैं।(3)

﴾2﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अस्वद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الصَّمَد ने फ़रमाया : इ़ल्म से बढ़ कर इ़ज़्ज़त वाली शै कोई नहीं। बादशाह लोगों पर हुकूमत करते हैं जब कि उ़-लमा बादशाहों पर हुकूमत करते हैं।(4)

﴾3﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا ने फ़रमाया : ह़ज़रते सय्यिदुना सुलैमान عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को इ़ल्म, माल और बादशाहत में इख़्तियार दिया गया तो उन्हों ने इ़ल्म को इख़्तियार किया लिहाज़ा इ़ल्म के साथ उन्हें माल और हुकूमत भी अ़त़ा कर दी गई।(5)

---

1 ......الفقیه والمتفقه، ذکر تقسیم علی بن ابی طالب احوال الناس......الخ، الحدیث:۱۷۶، ج۱، ص۱۸۲۔
عیون الاخبار للدینوری، کتاب العلم والبیان، ج۲، ص۱۳۵، ۱۳۶۔

2 ......قوت القلوب، الفصل الحادی والثلاثون، باب ذکر الفرق بین علماء الدنیا......الخ، ج۱، ص۲۴۷۔
الفقیه والمتفقه، باب تعظیم المتفقه الفقیه، الحدیث:۸۵۶، ج۲، ص۱۹۸، بالفاظٍ مختلفةٍ۔

3 ......الفقیه والمتفقه، الحدیث:۷۶۹، ج۲، ص۱۵۰۔

4 ......الحث علی طلب العلم لابی هلال العسکری، ص۵۳۔
جامع بیان العلم وفضله، باب جامع فی فضل العلم، الحدیث:۲۵۳، ص۸۴۔

5 ......تاریخ دمشق لابن عساکر، سلیمان بن داود، الحدیث:۴۹۴۰، ج۲۲، ص۲۷۵۔

﴾4﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक رَحْمَۃُاللہِ تعالٰی عَلَیْہ से पूछा गया कि इन्सान कौन हैं ? फ़रमाया : उ़-लमा । फिर पूछा गया : बादशाह कौन हैं ? फ़रमाया : परहेज़गार । फिर पूछा गया : घटया लोग कौन हैं ? फ़रमाया : जो दीन के बदले दुन्या ह़ासिल करते हैं ।[1]

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक رَحْمَۃُاللہِ تعالٰی عَلَیْہ ने ग़ैरे आ़लिम को इन्सानों में शुमार न किया क्यूंकि इ़ल्म ही वोह ख़ुसूसिय्यत है जिस की वजह से इन्सान तमाम जानवरों से मुमताज़ होते हैं । पस इन्सान उस वस्फ़ के ज़रीए़ इन्सान है जिस के बाइ़ष उसे इ़ज़्ज़त ह़ासिल होती है । वोह जिस्मानी क़ुव्वत की वजह से इन्सान नहीं वरना ऊंट इस से ज़ियादा ताक़तवर है । न जसामत की वजह से इन्सान है वरना हाथी का जिस्म इस से कहीं ज़ियादा बड़ा है । न बहादुरी के सबब वरना दरिन्दे इस से बढ़ कर बहादुर हैं । न इस लिये कि वोह ज़ियादा खाता है क्यूंकि बेल का पेट इस से ज़ियादा बड़ा होता है और न इस वजह से कि वोह जिमाअ़ करता है क्यूंकि इस मुआ़मले में छोटी सी चिड़या इस से बढ़ कर ताक़तवर है बल्कि इन्सान इ़ल्म ही के लिये पैदा किया गया है ।

﴾5﴿....एक आ़लिम का क़ौल है कि काश ! मुझे मा'लूम हो जाए कि जिसे इ़ल्म नहीं मिला उसे क्या मिला और जिसे इ़ल्म मिला उसे क्या नहीं मिला । मुस्त़फ़ा जाने रह़मत صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जिसे क़ुरआन दिया गया और उस ने येह ख़याल किया कि किसी को उस से बेहतर दिया गया है तो उस ने उस चीज़ को ह़क़ीर समझा जिसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अ़ज़ीम किया ।[2]

﴾6﴿....ह़ज़रते सय्यिदुना फ़त्ह़े मौसिली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْقَوِی ने फ़रमाया : अगर मरीज़ को खाने, पीने और दवा से रोक दिया जाए तो क्या वोह मर नहीं जाएगा ? लोगों ने कहा : क्यूं नहीं । फ़रमाया : दिल का भी येही मुआ़मला है कि अगर तीन दिन तक इस से इ़ल्मो ह़िक्मत को दूर रखा जाए तो वोह मुर्दा हो जाता है ।[3]

आप رَحْمَۃُاللہِ تعَالٰی عَلَیْہ ने बिल्कुल सच फ़रमाया क्यूंकि जिस त़रह़ खाना बदन की ग़िज़ा है इसी त़रह़ इ़ल्मो ह़िक्मत दिल की ग़िज़ा है जिन की बदौलत वोह ज़िन्दा रहता है और जिस के पास इ़ल्म नहीं उस का दिल बीमार और उस की मौत लाज़िमी है लेकिन उसे इस बात की

---

1 ......المجالسة و جواھرالعلم للدینوری، الجزء الثانی، الرقم:۳۰۰، ج ا، ص ۱٦۰ ـ
شعب الایمان للبیھقی، باب فی نشرالعلم، الرقم ۱۸۴۷، ج ۲، ص ۲۹۸ ـ

2 ......الزھد لابن المبارک، باب ماجاء فی ذنب التنعم فی الدنیا، الحدی ث:۷۹۹، ص ۲۷۵، بتغیرٍ ـ

3 ......التذکرۃ فی الوعظ لابن الجوزی، المجلس الثالث: فضل العلم و العلماء، ص ۵٦ ـ

ख़बर नहीं होती क्यूंकि दुन्या की मह़ब्बत और इस में मश्ग़ूलिय्यत इस के एह़सास को ख़त्म कर देती है जैसा कि ख़ौफ़ के ग़लबे के वक़्त ज़ख़्म की तक्लीफ़ का एह़सास नहीं रहता अगर्चे तक्लीफ़ मौजूद होती है। फिर जब मौत उस से दुन्या के बोझ उतारती है तब वोह अपनी हलाकत मह़सूस कर के बहुत पछताता है लेकिन फिर येह उस के ह़क़ में बेसूद होता है। येह ऐसे है जैसे मदहोश को नशे और ख़ौफ़ की ह़ालत में लगे ज़ख़्मों का एह़सास उस वक़्त होता है जब उसे ख़ौफ़ और नशे से नजात मिलती है। हम पर्दे खुलने के दिन से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की पनाह मांगते हैं। बेशक लोग सोए हुए हैं जब मरेंगे तो उन की आंखें खुल जाएंगी।

﴾7﴿......ह़जरते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : उ़-लमा की सियाही का शुहदा के ख़ून से वज़्न किया जाएगा तो उ़-लमा की सियाही शुहदा के ख़ून से भारी होगी।[1]

﴾8﴿......ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने फ़रमाया : इ़ल्म सीखो इस से पहले कि उठा लिया जाए।[2] और इ़ल्म का उठाया जाना येह है कि उ़-लमा वफ़ात पा जाएंगे। उस ज़ात की क़सम जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है ! राहे ख़ुदा में मारे जाने वाले शुहदा जब उ़-लमा का मक़ाम देखेंगे तो तमन्ना करेंगे कि काश ! उन्हें भी आ़लिम उठाया जाता। कोई भी आ़लिम पैदा नहीं होता इ़ल्म सीखने से ही आता है। [3]

﴾9﴿......ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا ने फ़रमाया : रात में कुछ देर इ़ल्म की तकरार करना मुझे सारी रात शब बेदारी से ज़ियादा मह़बूब है।[4] इसी त़रह़ ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ और ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अह़मद बिन ह़म्बल عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَوَّل से भी मन्क़ूल है।

﴾10﴿......ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى इस इरशादे बारी तआ़ला :

رَبَّنَآ اٰتِنَا فِى الدُّنْيَا حَسَنَةً وَّفِى الْاٰخِرَةِ حَسَنَةً وَّقِنَا عَذَابَ النَّارِ ﴿۲۰۱﴾ (پ۲، البقرۃ:۲۰۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *ऐ रब हमारे हमें दुन्या में भलाई दे और हमें आख़िरत में भलाई दे और हमें अ़ज़ाबे दोज़ख़ से बचा।*

---

1 ......العلل المتناهية لابن الجوزی، کتاب العلم، باب وزن حبرالعلماء......الخ، الحدی ث:۸۵، ج۱، ص۸۱۔

2 ......سنن ابن ماجه، المقدمة، باب فضل العلماء و الحث......الخ، الحدی ث:۲۲۸، ج۱، ص۱۵۰، عن ابی امامة۔

3 ......الزهد للامام احمد بن حنبل، فی فضل ابی هريرة، الحديث:۸۹۹، ص۱۸۴۔

4 ......جامع معمر بن راشد مع مصنف عبدالرزاق، باب العلم، الحديث:۲۰۶۳۶، ج۱۰، ص۲۳۸۔

की तफ़्सीर में फ़रमाते हैं : दुन्या में حَسَنَةً से मुराद इल्म और इबादत है जब कि आख़िरत में इस से मुराद जन्नत है।[1]

﴾11﴿......किसी दाना से पूछा गया कि कौन सी चीज़ें ज़ख़ीरा करनी चाहिये ? जवाब दिया : वोह चीज़ें कि जब तुम्हारी कश्ती डूब जाए तो वोह तुम्हारे साथ तैरने लगें या'नी इल्म।[2]

बा'ज़ ने कहा : कश्ती के ग़र्क़ होने से मुराद मौत के ज़रीए बदन का हलाक होना है।

﴾12﴿......कहा गया है कि जो ह़िक्मत को लगाम बना लेता है लोग उसे इमाम बना लेते हैं और जो ह़िक्मत को समझ लेता है लोग उसे इ़ज़्ज़त की निगाह से देखते हैं।[3]

﴾13﴿......ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई़ عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْکَافِی ने फ़रमाया : इल्म की अ़ज़मत का अन्दाज़ा इस बात से लगाया जा सकता है कि जिस की त़रफ़ येह मन्सूब हो ख़्वाह छोटी सी बात में, तो वोह ख़ुश होता है और जिस से इसे उठा लिया जाता है वोह रंजीदा होता है।[4]

﴾14﴿.....अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : ऐ लोगो ! तुम पर इल्म ह़ासिल करना लाज़िम है। बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की एक चादरे मह़ब्बत है और जो इल्म का एक बाब ह़ासिल कर लेता है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे वोह चादर पहना देता है। फिर अगर उस से कोई गुनाह हो जाए तो उसे अपनी रिज़ा वाले कामों में लगा देता है ताकि चादरे मह़ब्बत उस से सल्ब न करे अगर्चे येह सिलसिला इतना त़वील हो कि उसे मौत आ जाए।[5]

﴾15﴿......ह़ज़रते सय्यिदुना अह़नफ़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का क़ौल है कि जल्द ही उ़-लमा मालिक बन जाएंगे और हर उस इ़ज़्ज़त का अन्जामे कार ज़िल्लत होता है जिसे इल्म से मज़बूत़ न किया जाए।[6]

---

1. ......سنن الترمذی، کتاب الدعوات، باب ماجاء فی عقدالتسبیح بالید، الحدی ث: ۳۴۹۹، ج۵، ص۲۹۵ ۔
2. ......الحث علی طلب العلم لابی ھلال العسکری، ص۶۷ ۔
   جامع بیان العلم وفضلہ، باب جامع فی فضل العلم، الحدیث: ۲۴۶، ص ۸۰۔
3. ......جامع بیان العلم وفضلہ، باب جامع فی فضل العلم، الحدی ث: ۲۴۶، ص ۸۰۔
4. ......المرجع السابق، الحدیث: ۲۴۷، ص۸۳، بتغیرٍ۔
5. ......المرجع السابق، الحدیث: ۲۵۱۔
6. ......عیون الاخبارللدینوری، کتاب العلم والبیان، ج ۲ ، ص۱۳۷ ۔

«16»......ह़ज़रते सय्यिदुना सालिम बिन अबू जअ़द عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْاَحَد बयान करते हैं कि मुझे मेरे आक़ा ने 300 दिरहम में ख़रीद कर आज़ाद कर दिया तो मैं ने सोचा कि अब कौन सा पेशा इख़्तियार करूं ? बिल आख़िर हुसूले इ़ल्म में मश्ग़ूल हो गया । अभी साल भी नहीं गुज़रा था कि शहर का ह़ाकिम मुझ से मिलने के लिये आया लेकिन मैं ने उसे इजाज़त न दी ।(1)

«17»......ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुबैर बिन अबू बक्र رَحْمَۃُ اللہِ تعالٰی عَلَیْہ बयान करते हैं कि मैं इ़राक़ में था, मेरे वालिद ने मुझे पैग़ाम भेजा कि इ़ल्म को लाज़िम कर लो ! अगर ग़रीब हो तो येह तुम्हारा माल है और अगर ग़नी हो तो तुम्हारा जमाल है ।(2)

«18»......मन्क़ूल है कि ह़ज़रते सय्यिदुना लुक़मान رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अपने बेटे को जो वसिय्यतें फ़रमाईं इन में एक वसिय्यत येह भी थी कि बेटा उ़-लमा की सोह़बत में बैठा करो, अपने ज़ानू उन के ज़ानू से मिला दो क्यूंकि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ नूरे ह़िक्मत से दिलों को ऐसे ज़िन्दा करता है जैसे ज़मीन को मुसलसल बारिश से ।(3)

«19»......किसी दाना का क़ौल है कि आ़लिम की वफ़ात पर पानी में मछलियां और हवा में परन्दे रोते हैं । आ़लिम का चेहरा ओझल हो जाता है लेकिन उस की यादें बाक़ी रहती हैं ।(4)

«20»......ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ज़ोहरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْقَوِی ने फ़रमाया : इ़ल्म नर है और आदमियों में मर्द ही इस से मह़ब्बत करते हैं ।(5)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ...... صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

1 ......فیض القدیر، حرف الحاء، فصل فی المحلی بأل......الخ، تحت الحدیث:۳۸۲۷، ج۳، ص۵۵۲۔

2 ......حدیث ابی نعیم الاصبھانی، الحدیث:۶، ص۷۔

3 ......الموطاالامام مالک، کتاب العلم، باب ماجاء فی طلب العلم، الحدیث:۱۹۱۰، ج۲، ص۴۷۸۔

4 ......فردوس الاخبار، باب العین، الحدیث:۴۰۴۴، ج۲، ص۸۴، باختصارٍ۔

5 ......حلیۃ الاولیاء، الزھری، الرقم:۴۴۸۷، ج۳، ص۴۱۸۔

दूसरी फ़स्ल :

इ़ल्म ह़ासिल करने की फ़ज़ीलत

हुसूले इ़ल्म की फ़ज़ीलत पर मुश्तमिल 2 फ़रामैने बारी तआ़ला

﴾1﴿

فَلَوْلَا نَفَرَ مِنْ كُلِّ فِرْقَةٍ مِّنْهُمْ طَآىِٕفَةٌ لِّیَتَفَقَّهُوْا فِی الدِّیْنِ (پ۱۰، التوبة:۱۲۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *तो क्यूं न हुवा कि उन के हर गुरोह में से एक जमाअ़त निकले कि दीन की समझ ह़ासिल करें।*

﴾2﴿

فَسْـٴَـلُوْۤا اَهْلَ الذِّكْرِ اِنْ كُنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَۙ(۴۳) (پ۱۴، النحل:۴۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *तो ऐ लोगो ! इ़ल्म वालों से पूछो अगर तुम्हें इ़ल्म नहीं।*

हुसूले इ़ल्म की फ़ज़ीलत पर मुश्तमिल 10 फ़रामीने मुस्त़फ़ा :

﴾1﴿......जो इ़ल्म की त़लब में किसी रास्ते पर चलेगा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे जन्नत के रास्ते पर चला देगा।[1]

﴾2﴿......बेशक मलाइका त़ालिबे इ़ल्म के काम से राज़ी हो कर उस के लिये अपने पर बिछा देते हैं।[2]

﴾3﴿......तुम सुब्ह़ के वक़्त जाओ और इ़ल्म का एक बाब ह़ासिल करो तो येह तुम्हारे लिये सो रक्अ़तें पढ़ने से अफ़्ज़ल है।[3]

﴾4﴿......इ़ल्म का एक बाब जिसे आदमी सीखता है उस के लिये दुन्या व माफ़ीहा (या'नी दुन्या और जो कुछ इस में है) से बेहतर है।[4]

﴾5﴿......इ़ल्म की जुस्तजू करो अगर्चे चीन जाना पड़े।[5]

﴾6﴿......इ़ल्म की त़लब हर मुसलमान पर फ़र्ज़ है।[6]

---

1 ......المسند للامام احمد بن حنبل، حديث ابى الدرداء، الحديث:۲۱۷۷۴، ج۸، ص۱۶۷۔

2 ......شعب الايمان للبيهقى، باب فى طلب العلم/فصل فى فضل العلم وشرف مقداره، الحديث:۱۶۹۶، ج۲، ص۲۶۲۔

3 ......جامع بيان العلم وفضله، باب تفضيل العلم على العبادة، الحديث:۱۰۳، ص۴۰۔
سنن ابن ماجه، المقدمة، باب فى فضل من تعلم القرآن وعلمه، الحديث:۲۱۹، ج۱، ص۱۴۲۔

4 ......روضة العقلاء ونزهة الفضلاء لابن حبان، ذكر الحث على لزوم العلم والمداومة على طلبه، ص۴۰، مفهومًا۔

5 ......شعب الايمان للبيهقى، باب فى طلب العلم، الحديث:۱۶۶۳، ج۲، ص۲۵۴۔

6 ......سنن ابن ماجه، كتاب السنة، باب فضل العلماء والحث......الخ، الحديث:۲۲۴، ج۱، ص۱۴۶۔

﴾7﴿......इ़ल्म ख़ज़ाना है और इस की चाबियां सुवाल करना है। ख़बरदार ! तुम सुवाल किया करो क्यूंकि इस में चार को अज्र दिया जाएगा : (1) सुवाल करने वाले को (2) आ़लिम को (3) ग़ौर से सुनने वाले को और (4) इन से मह़ब्बत करने वाले को।[1]

﴾8﴿......जाहिल अपनी जहालत पर और आ़लिम अपने इ़ल्म पर ख़ामोश न रहे।[2]

﴾9﴿......ह़ुज़ूर नबिय्ये पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याह़े अफ़्लाक صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : आ़लिम की मजलिस में ह़ाज़िर होना हज़ार रक्अ़त (नफ़्ल) पढ़ने, हज़ार मरीज़ों की इ़यादत करने और हज़ार नमाज़े जनाज़ा में शिर्कत करने से अफ़्ज़ल है। अ़र्ज़ की गई : या रसूलल्लाह صلی اللہ تعالی علیک وسلم और क़ुरआन की तिलावत से (भी अफ़्ज़ल है) ? इरशाद फ़रमाया : क़ुरआन भी तो इ़ल्म के साथ ही नफ़्अ़ देता है।[3]

﴾10﴿......जिसे इस ह़ालत में मौत आई कि इस्लाम को बाक़ी रखने के लिये इ़ल्म ह़ासिल कर रहा था तो जन्नत में उस के और अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के दरमियान एक दर्जे का फ़र्क़ होगा।[4]

हुसूले इ़ल्म की फ़ज़ीलत पर मुश्तमिल 11 अक़्वाले बुज़ुर्गाने दीन :

﴾1﴿......ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْھُمَا ने फ़रमाया : इ़ल्म त़लब करते वक़्त मेरी इतनी इ़ज़्ज़त नहीं थी लेकिन जब इ़ल्म सिखाने लगा तो लोगों में इ़ज़्ज़त होने लगी।[5]

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अबी मुलैका رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْھُمَا जैसा कोई नहीं देखा। मैं जब उन की ज़ियारत करता हूं तो सब से ज़ियादा ह़सीन नज़र आते हैं, गुफ़्तगू करते हैं तो सब से ज़ियादा फ़सीह़ और फ़तवा देते हैं तो सब से ज़ियादा साह़िबे इ़ल्म होते हैं।[6]

---

1 ......حلیۃ الاولیاء، محمد بن علی الباقر، الحدیث:۳۷۸، ج۳، ص۲۲۴، بتغیرٍ۔

2 ......المعجم الاوسط، الحدیث:۵۳۶۵، ج۲، ص۱۰۶۔

3 ......قوت القلوب، الفصل الحادی والثلاثون، باب ذکرالفرق بین علماء الدنیا......الخ، ج۱، ص۲۵۷۔

4 ......سنن الدارمی، المقدمۃ، باب فی فضل العلم والعالم، الحدیث:۳۵۴، ج۱، ص۱۱۲۔

5 ......عیون الاخبارللدینوری، کتاب العلم والبیان، ج۲، ص۱۳۷۔

6 ......العقد الفرید للاحمد بن محمد الاندلسی، کتاب المجنبۃ فی الاجوبۃ، جواب ابن عباس، ج۲، ص۹۴۔

﴿2﴾......ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक رَحْمَةُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْه ने फ़रमाया : मुझे उस शख़्स पर हैरत होती है जो इ़ल्म ह़ासिल नहीं करता, वोह इ़ज़्ज़त की ख़्वाहिश कैसे करता है ?[1]

﴿3﴾......किसी दाना का क़ौल है कि मुझे दो शख़्सों पर जितना रह़्म आता है इतना किसी पर नहीं आता एक वोह जो इ़ल्म ह़ासिल करता है मगर समझता नहीं और दूसरा वोह जो समझ सकता है लेकिन इ़ल्म ह़ासिल नहीं करता ।[2]

﴿4﴾......ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْهُ ने इरशाद फ़रमाया : एक मस्अला सीखना मुझे रात भर की इ़बादत से ज़ियादा मह़बूब है ।[3]

﴿5﴾......इन्हीं से मन्क़ूल है कि आ़लिम और इ़ल्म सीखने वाला दोनों भलाई में बराबर के शरीक हैं और इन के इ़लावा तमाम लोग बे वुक़ूफ़ हैं इन में कोई ख़ैर नहीं ।[4]

﴿6﴾......नीज़ येह भी इरशाद फ़रमाया कि आ़लिम बन या इ़ल्म ह़ासिल करने वाला या इ़ल्म की बातें सुनने वाला और इन के इ़लावा चौथा न बनना वरना हलाक हो जाएगा ।[5]

﴿7﴾......ह़ज़रते सय्यिदुना अ़त़ा رَحْمَةُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْه ने फ़रमाया : इ़ल्म की एक मजलिस ग़फ़्लत की 70 मजलिसों का कफ़्फ़ारा है ।[6]

﴿8﴾......अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْهُ ने इरशाद फ़रमाया : रातों को इ़बादत करने वाले और दिन में रोज़ा रखने वाले एक हज़ार इ़बादत गुज़ारों की मौत एक आ़लिम की मौत से आसान है जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ह़लाल और ह़राम कर्दा उमूर का इ़ल्म रखता है ।[7]

---

1 ......المجالسة وجواهر العلم، الحديث:٣٠٧، الجزاء الثانی، ج ١، ص١٦٣۔

2 ......جامع بيان العلم وفضله، باب جامع فی الحال التی يسال بها العلم، الحديث:١٢٦١، ص١٤٤۔

3 ......الفقيه و المتفقه، فضل التفقه علی كثير من العبادات، الحديث:٥٥، ج ١، ص١٠٣۔

4 ......الزهد لابن المبارک، باب هوان الدنيا علی اللّٰه، الجزء الرابع، الحديث:٥٤٣، ص١٩٢۔

5 ......سنن الدارمی، باب فی ذهاب العلم، الحديث:٢٤٨، ج ١، ص ٩١۔
صفةالصفوة، ابوالد رداء، ج ١، ص ٣١٩، "كن" بدله "اعذ"، عن عبداللّٰه بن مسعود۔

6 ......قوت القلوب، الفصل الحادی و الثلاثون، باب ذكرالفرق بين العلماء الدنيا......الخ، ج ١، ص٢٥٧، بتغيرٍ۔

7 ......جامع بيان العلم وفضله، باب تفضيل العلم علی العبادة، الرقم:١١٥، ص ٤٢، بتغيرٍ۔

﴾9﴿......ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِى ने फ़रमाया : इ़ल्म की त़लब नफ़्ल नमाज़ से अफ़्ज़ल है ।(1)

﴾10﴿......ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्दुल ह़कम رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰى عَلَيْه बयान करते हैं कि मैं ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْخَالِق के पास इ़ल्म ह़ासिल कर रहा था, ज़ोहर का वक़्त हुवा तो मैं किताबें समेटने लगा ताकि नमाज़ पढ़ूं । आप رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया : अगर निय्यत सह़ीह़ हो तो जिस की त़रफ़ तुम जा रहे हो (या'नी नमाज़) वोह इस से अफ़्ज़ल नहीं जिस (इ़ल्म) में तुम मसरूफ़ थे ।(2)

﴾11﴿......ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं : जो येह समझे कि सुब्ह़ के वक़्त इ़ल्म की त़लब में जाना जिहाद नहीं उस की राए और अ़क़्ल नाक़िस है ।(3)

......फ़ज़ाइले क़ुरआने करीम......

फ़रमाने मुस्त़फ़ा :

"येह क़ुरआने मजीद अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से ज़ियाफ़त है तो तुम अपनी इस्तित़ाअ़त के मुत़ाबिक़ इस की ज़ियाफ़त क़बूल करो । बेशक येह क़ुरआन मजीद, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की मज़बूत़ रस्सी, नूरे मुबीन, नफ़्अ़ बख़्श शिफ़ा, जो इसे इख़्तियार करता है उस के लिये ढाल और जो इस पर अ़मल करे उस के लिये नजात है । येह ह़क़ से नहीं फिरता कि इस के इज़ाले के लिये थकना पड़े और येह टेढ़ी राह नहीं कि इसे सीधा करना पड़े । इस के फ़वाइद ख़त्म नहीं होते और कषरते तिलावत से पुराना नहीं होता (या'नी अपनी ह़ालत पर क़ाइम रहता है) । तो तुम इस की तिलावत किया करो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम्हें हर ह़र्फ़ की तिलावत पर 10 नेकियां अ़त़ा फ़रमाएगा । मैं नहीं कहता कि "الٓمّٓ" एक ह़र्फ़ है बल्कि "ا" एक ह़र्फ़ "ل" एक ह़र्फ़ और "م" एक ह़र्फ़ है ।"

(المستدرک،الحدیث:۲۰۸۴،ج۲،ص۲۵۶)

---

1 ......مسند الشافعی، کتاب الصداق والایلاء، ص ۲۴۹۔

2 ......جامع بیان العلم وفضله، باب تفضیل العلم علی العبادة، الحدیث: ۱۰۵، ص ۴۰۔

3 ......جامع بیان العلم وفضله، باب تفضیل العلماء علی الشهداء، الحدیث: ۱۴۳، ص ۴۹۔

तीसरी फ़स्ल :

इल्म सिखाने की फ़ज़ीलत

इल्म सिखाने की फ़ज़ीलत पर मुश्तमिल 6 फ़रामीने बारी तआला :

﴾1﴿

وَلِيُنۡذِرُوۡا قَوۡمَهُمۡ اِذَا رَجَعُوۡۤا اِلَيۡهِمۡ لَعَلَّهُمۡ يَحۡذَرُوۡنَ ﴿۱۲۲﴾ (پ ۱۱، التوبۃ:۱۲۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और वापस आ कर अपनी क़ौम को डर सुनाएं इस उम्मीद पर कि वोह बचें।*

इस आयते मुबारका में क़ौम को डराने से मुराद उन्हें इल्म सिखाना और उन की राहनुमाई करना है।

﴾2﴿

وَ اِذۡ اَخَذَ اللّٰهُ مِيۡثَاقَ الَّذِيۡنَ اُوۡتُوا الۡكِتٰبَ لَتُبَيِّنُنَّهٗ لِلنَّاسِ وَ لَا تَكۡتُمُوۡنَهٗ

(پ ۴، اٰل عمرٰن:۱۸۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और याद करो जब **अल्लाह** ने अ़हद लिया उन से जिन्हें किताब अ़ता हुई कि तुम ज़रूर इसे लोगों से बयान कर देना और न छुपाना।*

इस आयते मुबारका से इल्म सिखाने का वुजूब षाबित होता है।

﴾3﴿

وَ اِنَّ فَرِيۡقًا مِّنۡهُمۡ لَيَكۡتُمُوۡنَ الۡحَقَّ وَهُمۡ يَعۡلَمُوۡنَ ﴿۱۴۶﴾ (پ ۲، البقرۃ:۱۴۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और बेशक इन में एक गुरोह जान बूझ कर ह़क़ छुपाते हैं।*

इस आयते मुबारका से पता चला कि इल्म छुपाना ह़राम है। जैसा कि शहादत के बारे में इरशादे बारी तआला है :

وَمَنۡ يَّكۡتُمۡهَا فَاِنَّهٗۤ اٰثِمٌ قَلۡبُهٗ

(پ ۳، البقرۃ:۲۸۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और जो गवाही छुपाएगा तो अन्दर से उस का दिल गुनहगार है।*

﴾4﴿

وَمَنۡ اَحۡسَنُ قَوۡلًا مِّمَّنۡ دَعَاۤ اِلَى اللّٰهِ وَعَمِلَ صَالِحًا (پ ۲۴، حٰمٓ السجدۃ:۳۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और उस से ज़ियादा किस की बात अच्छी जो **अल्लाह** की त़रफ़ बुलाए और नेकी करे।*

﴾5﴿

اُدْعُ اِلٰى سَبِیْلِ رَبِّكَ بِالْحِكْمَةِ وَ الْمَوْعِظَةِ الْحَسَنَةِ (پ۱۴، النحل:۱۲۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : अपने रब्ब की राह की तरफ़ बुलाओ पक्की तदबीर और अच्छी नसीहत से।

﴾6﴿

وَ یُعَلِّمُهُمُ الْكِتٰبَ وَ الْحِكْمَةَ (پ۱، البقرة:۱۲۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और उन्हें तेरी किताब और पुख़्ता इल्म सिखाए।

इल्म सिखाने की फ़ज़ीलत पर मुश्तमिल 17 फ़रामीने मुस्तफ़ा :

﴾1﴿......**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने जिसे भी इल्म अ़ता फ़रमाया उस से वोह अ़हद लिया जो अम्बियाए किराम عَلَیْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से लिया कि वोह इसे लोगों से बयान करे और न छुपाए।(1)

﴾2﴿......मक्की मदनी सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ को यमन भेजा तो इरशाद फ़रमाया : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तेरे ज़रीए़ किसी एक को हिदायत दे दे तो येह तेरे लिये दुन्या व माफ़ीहा (या'नी दुन्या और जो कुछ इस में है) से बेहतर है।(2)

﴾3﴿.....जिस ने इ़ल्म का एक बाब इस लिये सीखा कि लोगों को सिखाएगा तो उसे 70 सिद्दीक़ीन का षवाब दिया जाएगा।(3)

ह़ज़रते ईसा रूहुल्लाह عَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से मन्क़ूल है कि जिस ने इ़ल्म ह़ासिल किया, इस पर अ़मल किया और दूसरों को सिखाया तो आस्मानों की सल्त़नत में उसे अ़ज़ीम कहा जाता है।(4)

﴾4﴿.....जब क़ियामत के दिन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आ़बिदों और मुजाहिदों से फ़रमाएगा कि जन्नत में दाख़िल हो जाओ तो उ़-लमा अ़र्ज़ करेंगे : हमारे इ़ल्म के तुफ़ैल वोह आ़बिद और मुजाहिद बने (वोह जन्नत में गए और हम रह गए) ? **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाएगा : तुम मेरे नज़्दीक

---

1 ......قوت القلوب، الفصل الحادی والثلاثون: کتاب العلم وتفضیله، ذکرفضل علم المعرفة......الخ، ج ۱، ص ۲۲۹۔
الفردوس الاخبار، باب المیم، الحدیث: ۶۲۱۹، ج ۲، ص ۳۳۲۔

2 ......الزھد لابن المبارک، باب فضل ذکراللّٰه، الجزء العاشر، استعنت باللّٰه، الحدیث: ۱۳۷۵، ص ۴۸۴۔

3 ......الترغیب والترھیب، کتاب العلم، الترغیب فی العلم......الخ، الحدیث: ۱۱۹، ج ۱، ص ۶۸۔

4 ......الزھد للامام احمد بن حنبل، مواعظ عیسی علیه السلام، الحدیث: ۳۳۰، ص ۹۷۔

मेरे बा'ज़ फ़िरिश्तों की त़रह़ हो, तुम शफ़ाअ़त करो, तुम्हारी शफ़ाअ़त क़बूल होगी। चुनान्चे, वोह शफ़ाअ़त करेंगे फिर वोह जन्नत में दाख़िल होंगे।(1)

येह उस इ़ल्म की बदौलत होगा जो दूसरों को सिखाया होगा, उस के बदले नहीं जो दूसरों तक नहीं पहुंचाया।

﴾5﴿.....अल्लाह عَزَّوَجَلَّ लोगों को इ़ल्म अ़त़ा करने के बा'द वापस नहीं लेगा बल्कि उ़-लमा के उठ जाने से इ़ल्म जाता रहेगा। पस जब कभी कोई आ़लिम दुन्या से जाएगा उस के साथ उस का इ़ल्म भी चला जाएगा यहां तक कि सिर्फ़ जाहिल सरदार रह जाएंगे। अगर उन से मसाइल पूछे जाएं तो बिग़ैर इ़ल्म के फ़तवा देंगे, ख़ुद भी गुमराह होंगे और दूसरों को भी गुमराह करेंगे।(2)

﴾6﴿.....जिस ने इ़ल्म सीख कर छुपाया अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे बरोज़े क़ियामत आग की लगाम डालेगा।(3)

﴾7﴿.....इ़ल्मो ह़िक्मत की बात बेहतरीन हदिय्या व तोह़फ़ा है जिसे सुन कर तू याद कर ले फिर अपने मुसलमान भाई को सिखाए तो येह एक साल की इ़बादत के बराबर है।(4)

﴾8﴿.....दुन्या और जो कुछ इस में है सब मलऊ़न है सिवाए ज़िक्रे इलाही के और उस के जो क़ुर्बे इलाही का सबब बने और इ़ल्म सीखने वाले और सिखाने वाले के।(5)

﴾9﴿.....बेशक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के फ़िरिश्ते और आस्मान व ज़मीन की मख़्लूक़ ह़त्ता कि च्यूंटियां अपने बिलों में और मछलियां समुन्दर में लोगों को भलाई (या'नी इ़ल्मे दीन) सिखाने वाले पर दुरूद भेजते हैं।(6)

---

1 ......اتحاف السادة المتقین، کتاب العلم، الباب الاول، ج ۱، ص ۱۶۲۔

2 ......صحیح مسلم، کتاب العلم، باب رفع العلم......الخ، الحدیث: ۲۶۷۳، ص ۱۴۳۶۔

المسند للامام احمد بن حنبل، مسند عبداللّٰه بن عمرو، الحدیث: ۶۹۱۳، ج ۲، ص ۶۴۸۔

3 ......سنن ابن ماجه، المقدمة، باب من سئل عن علم فکتمه، الحدیث: ۲۶۵/ ۲۶۶، ج ۱، ص ۱۷۲۔

4 ......الزهد لابن المبارک، باب فضل ذکر اللّٰه، الجزء العاشر، الحدیث: ۱۳۸۶، ص ۴۸۷۔

جامع بیان العلم وفضله، باب تفضیل العلم علی العبادة، الحدیث: ۸۷، ص ۳۶۔

5 ......سنن ابن ماجه، کتاب الزهد، باب مثل الدنیا، الحدیث: ۴۱۱۲، ج ۴، ص ۴۲۸۔

شرح السنة، کتاب الرقاق، باب هوان الدنیا علی اللّٰه، الحدیث: ۳۹۲۳، ج ۷، ص ۲۸۰۔

6 ......سنن الترمذی، کتاب العلم، باب ماجاء فی فضل الفقه علی العبادة، الحدیث: ۲۶۹۴، ج ۴، ص ۳۱۴۔

المعجم الکبیر، الحدیث ۷۹۱۲، ج ۸، ص ۲۳۴۔

﴾10﴿.....मुसलमान अपने भाई को इस से ज़ियादा अफ़्ज़ल फ़ाइदा नहीं दे सकता कि उसे कोई अच्छी बात पहुंचे तो वोह अपने भाई को पहुंचा दे।[1]

﴾11﴿.....नेकी की बात जिसे मुसलमान सुने फिर दूसरों को सिखाए और इस पर अ़मल करे उस के लिये साल भर की इ़बादत से बेहतर है।[2]

﴾12﴿.....एक दिन हुज़ूर नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم बाहर तशरीफ़ लाए। देखा कि दो ह़ल्क़े हैं। एक ह़ल्क़े के लोग **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से दुआ़ मांग रहे हैं और उस की त़रफ़ मुतवज्जेह हैं जब कि दूसरे ह़ल्क़े वाले लोगों को इ़ल्म सिखा रहे हैं तो इरशाद फ़रमाया : येह लोग **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से मांग रहे हैं, वोह चाहे तो उन्हें अ़त़ा करे और चाहे तो न करे और येह लोगों को इ़ल्म सिखा रहे हैं और मुझे मुअ़ल्लिम बना कर भेजा गया है।[3] फिर उन की त़रफ़ चल दिये और उन के साथ तशरीफ़ फ़रमा हो गए।

﴾13﴿.....जिस हिदायत व इ़ल्म के साथ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मुझे मबऊ़ष फ़रमाया इस की मिषाल उस बारिश की त़रह़ है जो ज़मीन पर बरसी तो एक ह़िस्से ने उसे जज़्ब कर के घास और बहुत सा चारा उगाया, एक ह़िस्से ने उसे जम्अ़ कर लिया और लोगों ने उस से फ़ाइदा उठाया कि इस में से पिया, पिलाया और खेतों को सैराब किया जब कि एक ह़िस्सा चटियल मैदान था कि जिस में न तो पानी जम्अ़ होता है और न ही घास उगता है।[4]

पहली मिषाल नफ़्अ़ उठाने वाले शख़्स की है, दूसरी जिस ने दूसरों को नफ़्अ़ पहुंचाया और तीसरी मिषाल उस शख़्स की है जो दोनों से मह़रूम रहा (या'नी ख़ुद नफ़्अ़ उठाया न दूसरों को पहुंचाया)।

---

1 ......جامع بیان العلم وفضله، باب دعاء رسول اللّٰه لمستمع العلم وحافظه ومبلغه، الحدی ث:۱۸۵، ص۶۲۔

2 ......الزهد لابن المبارک، باب فضل ذکراللّٰه، الحدیث:۱۳۸۶ ، ص۴۸۷۔

3 ......سنن ابن ماجه، المقدمة، باب فضل العلماء والحث......الخ، الحدیث:۲۲۹ ، ج۱، ص۱۵۰۔
سنن الدارمی، المقدمة، باب فی فضل العلم والعالم، الحدیث:۳۴۹ ، ج۱، ص۱۱۱۔

4 ......صحیح البخاری، کتاب العلم، باب فضل من علم وعلّم، الحدیث :۷۹، ج۱، ص۴۲۔
جامع بیان العلم وفضله، باب طلب العلم فریضة، الحدیث:۳۴، ص۲۴۔

﴾14﴿....जब आदमी मर जाता है तो इस के अ़मल का सिलसिला मुन्क़त़अ़ हो जाता है सिवाए तीन चीज़ों के (इन में से एक) इल्मे नाफ़ेअ़ है।(1)

﴾15﴿.....भलाई की त़रफ़ राहनुमाई करने वाला भलाई करने वाले की त़रह़ है।(2)

﴾16﴿.....दो के इ़लावा किसी पर रश्क जाइज़ नहीं एक वोह शख़्स जिसे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने पुख़्ता इ़ल्म से नवाज़ा वोह इस से फ़ैसले करता और लोगों को सिखाता है और दूसरा वोह शख़्स जिसे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने माल दिया फिर नेकी के कामों में ख़र्च करने की तौफ़ीक़ भी अ़त़ा फ़रमाई।(3)

﴾17﴿.....हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने दुआ़ फ़रमाई कि मेरे नाइबों पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रह़मत हो। किसी ने अ़र्ज़ की : आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के नाइबीन कौन लोग हैं? इरशाद फ़रमाया : वोह जो मेरी सुन्नत से मह़ब्बत करते और इसे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के बन्दों को सिखाते हैं।(4)

इ़ल्म सिखाने की फ़ज़ीलत पर मुश्तमिल 12 अक़्वाले बुज़ुर्गाने दीन :

﴾1﴿.....अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : जिस ने ह़दीष बयान की फिर इस पर अ़मल किया गया तो उस बयान करने वाले को अ़मल करने वालों के बराबर षवाब मिलेगा।(5)

﴾2﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने फ़रमाया : लोगों को इ़ल्मे दीन सिखाने वाले के लिये हर चीज़ ह़त्ता कि समुन्दर में मछलियां भी इस्तिग़फ़ार करती हैं।(6)

---

1 ......صحیح مسلم، کتاب الوصیة، باب ما یلحق الانسان......الخ، الحدیث:۱۶۳۱، ص۸۸۶۔
موسوعة الامام ابن ابی الدنیا، کتاب العیال، باب صلاح الولد، الحدیث:۳۳۰، ج۸، ص۱۰۰۔

2 ......سنن الترمذی، کتاب العلم، باب ماجاء فی ان الدال علی......الخ، الحدیث:۲۶۷۹، ج۴، ص۳۰۵۔

3 ......صحیح البخاری، کتاب العلم، باب الاغتباط فی العلم والحکمة، الحدیث:۷۳، ج۱، ص۴۳۔
المسند للامام احمد بن حنبل، مسند عبداللّٰہ بن مسعود، الحدیث:۳۶۵۱، ج۲، ص۲۹۔

4 ......جامع بیان العلم وفضلہ، باب جامع فی فضل العلم، الحدیث:۲۰۱، ص۶۲۔

5 ......جامع بیان العلم وفضلہ، باب جامع فی فضل العلم، الحدیث:۲۲۹، ص۷۵۔

6 ......سنن الدارمی، المقدمة، باب فی فضل العلم والعالم، الحدیث:۳۴۳، ج۱، ص۱۱۱۔

﴿3﴾.....बा'ज़ उ़-लमाने फ़रमाया : आ़लिम अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस की मख़्लूक़ के दरमियान वासित़ा होता है तो उसे ग़ौर करना चाहिये कि वासित़ा कैसा होना चाहिये ।(1)

﴿4﴾.....ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान षौरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى अ़स्क़लान तशरीफ़ लाए और कुछ अ़र्सा ठहरे रहे लेकिन किसी ने भी आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه से कोई मस्अला दरयाफ़्त नहीं किया तो आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया : मुझे किराया दो ताकि मैं इस शहर से चला जाऊं क्यूंकि यहां इ़ल्म मर चुका है ।(2) येह इस लिये फ़रमाया कि आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه इ़ल्म सिखाने की फ़ज़ीलत ह़ासिल करने और इस के ज़रीए़ बक़ाए इ़ल्म की ह़िर्स रखते थे ।

﴿5﴾.....ह़ज़रते सय्यिदुना अ़त़ा رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया : मैं ह़ज़रते सय्यिदुना सई़द बिन मुसय्यब رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه के पास गया तो वोह रो रहे थे । मैं ने रोने का सबब पूछा तो फ़रमाया : कोई मुझ से मस्अला दरयाफ़्त नहीं करता ।(3)

﴿6﴾.....मन्क़ूल है कि उ़-लमा ज़मानों के चराग़ हैं और हर आ़लिम अपने ज़माने का चराग़ है जिस से इस के अहले ज़माना (इ़ल्म की) रोशनी ह़ासिल करते हैं ।(4)

﴿7﴾.....ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى ने फ़रमाया : अगर उ़-लमा न होते तो लोग चोपायों की मिष्ल होते ।(5) मत़लब येह कि उ़-लमा लोगों को इ़ल्म सिखा कर ह़ैवानिय्यत से निकाल कर इन्सानिय्यत में दाख़िल करते हैं ।

﴿8﴾.....ह़ज़रते सय्यिदुना इ़करमा رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया : बेशक इस इ़ल्म की क़ीमत है । पूछा गया : इस की क़ीमत क्या है ? फ़रमाया : येह कि तुम इसे उस शख़्स तक पहुंचाओ जो इसे अच्छी त़रह़ याद रखे और ज़ाएअ़ न करे ।(6)

﴿9﴾.....ह़ज़रते सय्यिदुना यह़्या बिन मुआ़ज़ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया : उ़-लमा इस उम्मत पर मां बाप से ज़ियादा मेहरबान हैं । पूछा गया : वोह कैसे ? फ़रमाया : इस लिये कि मां बाप दुन्या की आग से मुह़फ़ूज़ रखते हैं जब कि उ़-लमा इन्हें आख़िरत की आग से बचाते हैं ।

---

1 ......الفقیه والمتفقه، باب الزجر عن التسرع الی الفتوی مخافة الزلل، الحدی ث:١٠٨٨ ، ج٢، ص٣٥٤۔
حلیة الاولیاء، محمد بن المنکدر، الحدیث:٣٦١٨ ، ج٣، ص١٧٩ ۔

2 ......جامع بیان العلم وفضله، باب ماروی فی قبض العلم وذھاب العلماء، الحدیث:٦٧٠ ، ص٢١٨۔

3 ......المستطرف فی کل فن مستطرف، الباب الرابع فی العلم والأدب......الخ، ج ١ ، ص ٤١۔

4 ......التذکرة فی الوعظ، فضل العلم والعلماء ، ص٥٦۔

5 ......جامع بیان العلم وفضله، باب آفة العلم وغائلته......الخ، الحدیث :٤٨٨، ص ١٥٢ ۔

6 ......الکامل فی صفعاء الرجال لابن عدی، عکرمة مولی ابن عباس:١٤١ ، ج٦، ص٤٧٦۔

﴾10﴿.....मन्क़ूल है कि इ़ल्म का पहला दर्जा ख़ामोशी है, फिर ग़ौर से सुनना, फिर याद करना, फिर अ़मल करना और फिर इसे फैलाना।(1)

﴾11﴿......मन्क़ूल है कि अपना इ़ल्म उसे सिखाओ जिसे इ़ल्म नहीं और ख़ुद उस से सीखो जो उन बातों को जानता हो जिन्हें तुम नहीं जानते। इस त़रह़ तुम जो नहीं जानते उसे जान लोगे और जो जानते हो उसे याद कर लोगे।(2)

﴾12﴿......ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरफ़ूअ़न रिवायत है कि इ़ल्म सीखो ! क्यूंकि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये इ़ल्म सीखना ख़शिय्यत, इस की जुस्त्जू इ़बादत, उस की तकरार तस्बीह़, इस के मुतअ़ल्लिक़ बह़्ष करना जिहाद, जो नहीं जानता उसे इ़ल्म सिखाना सदक़ा और इसे इस के अहल पर ख़र्च करना नेकी है। इ़ल्म तन्हाई में मूनिस, ख़ल्वत में रफ़ीक़, दीन पर राहनुमा, ख़ुशी व तंगी में सब्र देने वाला, दोस्तों के हां नाइब, अजनबियों के पास रिश्तेदार और राहे जन्नत का रोशन मीनार है। इ़ल्म के ज़रीए़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ क़ौमों को बुलन्दी अ़त़ा फ़रमा कर उन्हें नेकी में मुक़तदा व पेशवा और राहनुमा बना देता है। उन की पैरवी की जाती है। उन्हें नेकी की राह दिखाने वाला बना दिया जाता है। उन के नक़्शे क़दम पर चला जाता है। उन के अफ़्आ़ल को बग़ौर देखा जाता है। फ़िरिश्ते उन की दोस्ती में रग़बत रखते और अपने परों से उन्हें छूते हैं। हर ख़ुश्को तर ह़त्ता कि समुन्दर की मछलियां, कीड़े मकोड़े, ख़ुश्की के दरिन्दे, जानवर, आस्मान और इस के सितारे इ़ल्म सीखने वाले के लिये मग़फ़िरत का सुवाल करते हैं। क्यूंकि इ़ल्म दिलों को अन्धेपन से जिला बख़्शता है। आंखों से अन्धेरे दूर कर के इन्हें रोशनी देता है। बदनों की कमज़ोरी दूर कर के इन्हें त़ाक़तवर बनाता है। इस के ज़रीए़ बन्दा नेक लोगों की मनाज़िल और बुलन्द दर्जात तक पहुंच जाता है। इस में ग़ौरो फ़िक्र करना रोज़ों के बराबर और इस की तकरार रात की इ़बादत के बराबर है। इसी के ज़रीए़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इत़ाअ़त व इ़बादत की जाती है। इसी से ख़ौफ़े ख़ुदा मिलता है। इसी से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बुज़ुर्गी और वह़दानिय्यत का शुऊ़र ह़ासिल होता है। इसी से परहेज़गारी मिलती है। इसी से सिलए रह़्मी का जज़्बा मिलता है। येही ह़लाल व ह़राम की पहचान का ज़रीआ़ है। इ़ल्म इमाम है और अ़मल इस के ताबेअ़। इ़ल्म ख़ुश नसीबों को अ़त़ा होता है जब कि बद बख़्त इस से मह़रूम रहते हैं।(3)

हम अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से हुस्ने तौफ़ीक़ का सुवाल करते हैं।

---

1 ......حلیۃ الاولیاء، سفیان الثوری، الرقم:۹۱۰۰، ج۶، ص۴۰۱۔

2 ......عیون الاخبارللدینوری، کتاب العلم والبیان، العلم، ج۲، ص۱۳۹۔

3 ......جامع بیان العلم وفضلہ، باب جامع فی فضل العلم، الحدیث:۲۴۰، ص۷۷۔

قوت القلوب،الفصل الحادی والثلاثون:کتاب العلم وتفضیلہ،ذکرفضل علم المعرفۃ......الخ،ج۱،ص۲۳۳۔

चौथी फ़स्ल : इ़ल्म की फ़ज़ीलत पर अ़क़्ली दलाइल

याद रहे ! इस बाब का मक़्सूद येह है कि इ़ल्म की फ़ज़ीलत और उ़मदगी मा'लूम हो और दर ह़क़ीक़त फ़ज़ीलत का मफ़हूम और मुराद जाने बिग़ैर येह मा'लूम नहीं किया जा सकता कि फ़ज़ीलत का होना इ़ल्म के लिये या किसी और ख़स्लत के लिये वस्फ़ है। पस वोह शख़्स ज़रूर बहक जाता है जो येह जानना चाहता है कि ज़ैद ह़कीम है या नहीं लेकिन वोह अभी तक ह़िक्मत के मा'ना और इस की ह़क़ीक़त से ना बलद है (इस लिये हम पहले फ़ज़ीलत का मा'ना और मुराद बयान करते हैं।) चुनान्चे,

फ़ज़ीलत का लुग़वी और इस्तिलाह़ी मा'ना :

फ़ज़ीलत फ़ज़्ल से माख़ूज़ है और फ़ज़्ल ज़ियादती को कहते हैं। जब दो चीज़ें किसी बात में मुश्तरक हों और उन में एक किसी इज़ाफ़ी बात से ख़ास हो तो कहा जाता है कि येह उस से अफ़्ज़ल है और इसे उस पर फ़ज़ीलत ह़ासिल है जब कि वोह इज़ाफ़ी बात इस में मौजूद हो जो इस के लिये कमाल की बात हो। जैसा कि कहा जाता है : घोड़ा गधे से अफ़्ज़ल है। क्यूंकि बोझ उठाने की क़ुव्वत में तो घोड़ा गधे का शरीक है लेकिन ह़म्ला करने, दौड़ने, सख़्त ह़म्ला आवर होने की क़ुव्वत और ह़ुस्ने सूरत की ख़ूबियां घोड़े में इज़ाफ़ी हैं। अब अगर बिल फ़र्ज़ गधे को इज़ाफ़ी सामान के साथ ख़ास किया जाए तो येह नहीं कहा जा सकता कि वोह घोड़े से अफ़्ज़ल हो गया क्यूंकि येह जिस्मानी इज़ाफ़ा है जब कि ह़क़ीक़त में कमी जो कि कोई कमाल की बात नहीं, इस लिये कि ह़ैवान में जिस्म नहीं बल्कि मा'नविय्यत (या'नी अस्लिय्यत) और उस की सिफ़ात मक़्सूद होती हैं।

इ़ल्म की अ़क़्ली फ़ज़ीलत :

येह समझने के बा'द तुम पर पोशीदा न रहा कि इ़ल्म की निस्बत अगर दूसरे औसाफ़ की त़रफ़ की जाए तो उस की एक फ़ज़ीलत है जिस त़रह़ दीगर तमाम ह़ैवानों की ब निस्बत घोड़े की एक फ़ज़ीलत है, बल्कि सख़्त ह़म्ला आवर होना घोड़े की (इज़ाफ़ी) फ़ज़ीलत है मुत़लक़ फ़ज़ीलत नहीं जब कि इ़ल्म को अपनी ज़ात के ए'तिबार किसी की त़रफ़ इज़ाफ़त किये बिग़ैर मुत़लक़न फ़ज़ीलत ह़ासिल है क्यूंकि येह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का वस्फ़े कमाल, अम्बियाए किराम और मलाइकए उ़ज़्ज़ाम عَلَيۡهِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام का शरफ़ है बल्कि सधाया हुवा घोड़ा बे सधाए घोड़े से अच्छा है। लिहाज़ा इ़ल्म को बिग़ैर किसी इज़ाफ़त के मुत़लक़न फ़ज़ीलत ह़ासिल है।

मरग़ूब अश्या की अक़्साम और इन की मिषालें :

जान लीजिये ! उ़म्दा और नफ़ीस चीज़ जिस में रग़्बत की जाती है इस की तीन क़िस्में हैं (1)....जिस की त़लब का सबब कोई अम्रे ग़ैर हो (2)....जिस की त़लब का सबब ख़ुद उस की ज़ात हो और (3).....जिस की त़लब ख़ुद उस की ज़ात की वजह से भी हो और किसी दूसरे सबब की वजह से भी। दूसरा पहले से अफ़्ज़ल व अशरफ़ है। **पहले की मिषाल :** दिरहमो दीनार हैं कि येह दर ह़क़ीक़त दो बे फ़ाइदा पथ्थर हैं अगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इन के ज़रीए ह़ाजात की तक्मील को आसान न फ़रमाता तो येह दोनों पथ्थर और कंकर बराबर होते। **दूसरे की मिषाल :** उख़्रवी सआ़दत और दीदारे इलाही की लज़्ज़त है। **तीसरे की मिषाल :** बदन की सलामती है। मषलन पाउं की सलामती इस लिये मत़लूब होती है कि बदन तक्लीफ़ से बचे और इस लिये भी कि इस के ज़रीए चल कर ज़रूरियात तक रसाई हो।

अब इस ए'तिबार से इ़ल्म को देखो तो वोह फ़ी नफ़्सीही (या'नी अपनी ज़ात के ए'तिबार से) लज़ीज़ है लिहाज़ा वोह दूसरी क़िस्म में शामिल है (जो पहली से अफ़्ज़ल है) नीज़ वोह आख़िरत और इस की सआ़दत का वसीला और क़ुर्बे इलाही का ज़रीआ़ है कि बिग़ैर इस के क़ुर्बे इलाही ह़ासिल नहीं होता। आदमी के ह़क़ में सआ़दते अबदी का मर्तबा सब से बुलन्द है और इस का वसीला सब चीज़ों से अफ़्ज़ल है और सआ़दते अबदी बिग़ैर इ़ल्मो अ़मल के ह़ासिल नहीं हो सकती और अ़मल की कैफ़िय्यत का इ़ल्म न हो तो अ़मल तक रसाई नहीं होती। पता चला कि दुन्या व आख़िरत की अस्ल सआ़दत इ़ल्म है इसी लिये येह सब से अफ़्ज़ल है।

इ़ल्म का उख़्रवी फ़ाइदा :

इ़ल्म इस वजह से भी अफ़्ज़ल है कि तुम जानते हो किसी चीज़ का नतीजा जितनी अ़ज़मत व शान वाला होगा वोह शै भी उतनी ही फ़ज़ीलत वाली होगी और तुम जान चुके हो कि इ़ल्म का उख़्रवी फ़ाइदा रब्बुल आ़लमीन عَزَّوَجَلَّ का क़ुर्ब और फ़िरिश्तों और मलाए आ'ला (या'नी आस्मानी मख़्लूक़) से मिल जाना है जब कि दुन्या में इस का फ़ाइदा येह है कि इ़ज़्ज़त व वक़ार में इज़ाफ़ा, बादशाहों पर हुक्म का नफ़ाज़ और त़बीअ़तों में ज़रूरी त़ौर पर एह़तिराम करना पाया जाता है ह़त्ता कि तुर्की के कुन्द ज़ेह्न और अ़रबों के सख़्त मिज़ाज लोग भी त़बीअ़तों के हाथों अपने बड़ों की इ़ज़्ज़त व तौक़ीर करने पर मजबूर हैं इस लिये कि वोह तजरिबे से ह़ासिल होने वाले ज़ियादा इ़ल्म के साथ ख़ास होते हैं बल्कि जानवर भी त़बई तक़ाज़ों की वजह से इन्सान की इ़ज़्ज़त करते हैं क्यूंकि इन्हें इस बात का शुऊ़र है कि इन्सान कमाल की वजह से इन से ज़ियादा दर्जे का ह़ामिल है।

येह मुत़लक़ इल्म की फ़ज़ीलत है। फिर उ़लूम मुख़्तलिफ़ हैं जैसा कि अ़न क़रीब आएगा। लिहाज़ा ज़रूरी है कि इन के फ़ज़ाइल भी मुख़्तलिफ़ हों। इल्म सिखाने और सीखने की (मन्क़ूली) फ़ज़ीलत तो इस से ज़ाहिर है जो हम बयान कर आए। (और अ़क़्ली फ़ज़ीलत येह है कि) जब इल्म अफ़्ज़ल उमूर में से है तो इसे ह़ासिल करना अफ़्ज़ल काम की जुस्तजू करना और सिखाना अफ़्ज़ल काम का फ़ाइदा पहुंचाना ठहरा।

बारगाहे इलाही तक रसाई का ज़रीआ़ :

मख़्लूक़ को दीनी व दुन्यावी दोनों त़रह़ की ह़ाजात दरपेश होती हैं। दुन्या का निज़ाम चले बिग़ैर दीन का निज़ाम नहीं चल सकता क्यूंकि दुन्या आख़िरत की खेती है। जो इसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तक पहुंचाने का ज़रीआ़ और अपनी मन्ज़िल क़रार दे येह उसी के लिये **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तक पहुंचने का ज़रीआ़ है न कि उस के लिये जो इसे अपना मुस्तक़िल ठिकाना और वत़न बना ले। दुन्या का इन्तिज़ाम इन्सानों के आ'माल से ही चलता है और इन्सानों के आ'माल, पेशे और सनअ़तों की तीन क़िस्में हैं :

﴾1﴿.....उसूल जिन के बिग़ैर दुन्या का निज़ाम नहीं चल सकता। येह चार हैं :
(1).....**ज़िराअ़त :** खाने के लिये (2).....**कपड़ा बुनाई :** पहनने के लिये है। (3).....**ता'मीर :** रिहाइश के लिये और (4)....**ह़िक्मते अ़मली व तदबीर :** बाहमी उल्फ़त, इत्तिह़ाद और अस्बाबे मईशत की मज़्बूत़ी पर एक दूसरे के साथ तआ़वुन के लिये बुन्याद है।

﴾2﴿.....वोह उमूर जो इन तमाम सनअ़तों की तय्यारी के काम आते और इन के लिये ख़ादिम की ह़ैषिय्यत रखते हैं : जैसे आहन गरी (या'नी लोहार का पेशा) ज़िराअ़त बल्कि दीगर सनअ़तों के भी काम आता है कि खेती बाड़ी करने के औज़ार इसी से तय्यार होते हैं और जैसे रूई धुनकना और धागे बनाना येह दोनों कपड़ा बुनने की सनअ़त में काम आते हैं कि इस के लिये अश्या तय्यार करते (या'नी सूत वग़ैरा मुहय्या करते) हैं।

﴾3﴿.....वोह उमूर जो उसूल को पूरा करते और इन की आराइश व ज़ैबाइश करते हैं : जैसे आटा और रोटी ज़िराअ़त के लिये और कपड़ों की सफ़ेदकारी और सिलाई का पेशा कपड़े बुनाई के लिये।

इन्सानी आ'ज़ा की अक़्साम :

मज़्कूरा तीन उमूर की निस्बत दुन्या के ज़रूरी इन्तिज़ाम की त़रफ़ ऐसी है जैसी इन्सान के आ'ज़ा की इस के पूरे बदन की त़रफ़। क्यूंकि आ'ज़ाए इन्सानी भी तीन त़रह़ के हैं : (1)....उसूल : जैसे दिल, जिगर, दिमाग़ (2).....जो उसूल के ख़ादिम हैं : जैसे मे'दा, रगें, शिरयानें, पठ्ठे और गर्दन की रगें (3).....इन्हें मुकम्मल करने वाले और इन की ज़ीनत का बाइ़ष बनने वाले : जैसे नाख़ुन, उंगलियां और अब्रू।

इन तीनों में अफ़्ज़ल सनअ़त उसूल (बुन्याद) हैं और उसूल में अफ़्ज़ल ह़िक्मते अ़मली और तदबीर है जिस से लोगों में उन्स व मह़ब्बत पैदा हो और उन की इस्लाह़ हो। इसी लिये जैसा कमाल इस सनअ़त वाले के लिये दरकार होता है दूसरी सनअ़त वालों में मत़लूब नहीं होता नीज़ इस सनअ़त का मालिक दूसरी सनअ़त वालों से ख़िदमत लेता है।

ह़िक्मते अ़मली के मरातिब :

मख़्लूक़ की इस्लाह़ चाहने और दुन्या व आख़िरत में नजात देने वाले सिराते़ मुस्तक़ीम की त़रफ़ राहनुमाई करने वाली ह़िक्मते अ़मली के चार मरातिब हैं :

﴾1﴿.....**अम्बियाए किराम عَلَيۡهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की ह़िक्मते अ़मली और तदबीर :** येह सब से बुलन्द है। इन का हुक्म हर ख़ासो आ़म के ज़ाहिरो बात़िन पर चलता है।

﴾2﴿.....**ख़ुलफ़ा और बादशाहों की ह़िक्मते अ़मली :** इन का हुक्म भी हर आ़म व ख़ास पर जारी होता है लेकिन सिर्फ़ ज़ाहिर पर न कि बात़िन पर।

﴾3﴿.....**ज़ाते बारी तआ़ला और दीने इस्लाम का इल्म रखने वाले वारिषीने अम्बिया की ह़िक्मते अ़मली :** इन का हुक्म सिर्फ़ ख़ास लोगों के बात़िन पर ही चलता है। आ़म लोगों की समझ इन से इस्तिफ़ादा करने तक रसाई नहीं पाती और न ही इन्हें लोगों के ज़ाहिर पर कोई हुक्म नाफ़िज़ करने या किसी चीज़ से मन्अ़ करने या कोई हुक्म जारी करने की क़ुव्वत ह़ासिल है।

﴾4﴿.....**वाइ़ज़ीन की ह़िक्मते अ़मली :** इन का हुक्म सिर्फ़ अ़वाम के बात़िन पर चलता है।

नबुव्वत के बा'द सब से अफ़्ज़ल अ़मल :

इन चारों में से नबुव्वत के बा'द सब से अफ़्ज़ल अ़मल, **इल्म का फ़ाइदा पहुंचाना**, लोगों के दिलों को हलाक कर देने वाली बुरी आ़दतों से पाक करना, अच्छी और बाइ़षे सआ़दत ख़स्लतों की त़रफ़ इन की राहनुमाई करना है। इल्म सिखाने से येही मुराद है। हम ने इसे तमाम सनअ़तों और पेशों से अफ़्ज़ल इस लिये कहा क्यूंकि किसी भी सनअ़त व ह़िरफ़त की अ़ज़मत तीन बातों से पहचानी जाती है : (1).....या तो इस ख़स्लत व फ़ित़रत को देखा जाता है जिस

के ज़रीए इस फ़न की मा'रिफ़त ह़ासिल होती है : जैसे उ़लूमे अ़क़्लिया उ़लूमे लुग़विया से इस लिये अफ़्ज़ल हैं कि ह़िक्मत के ह़ुसूल का ज़रीआ़ अ़क़्ल है जब कि लुग़त समाई चीज़ है (या'नी इस का तअ़ल्लुक़ **कुव्वते ह़िसया** [एह़सास की त़ाक़त] से है) और अ़क़्ल समाअ़त से अफ़्ज़ल है। (2).....या नफ़्अ़ को देखा जाता है कि किस का नफ़्अ़ ज़ियादा है : जैसे ज़िराअ़त ज़रगरी (सुनार के पेशे) की बनिस्बत ज़ियादा फ़ज़ीलत रखती है। (3).....या उस जगह व मह़ल को देखा जाता है जिस में तसर्रुफ़ होता है : जैसे ज़रगरी चमड़ा रंगने के पेशे से अफ़्ज़ल है क्यूंकि ज़रगरी का मह़ल सोना है जब कि चमड़ा रंगने का मह़ल मुर्दार की खाल है। नीज़ येह बात ज़ाहिर है कि उ़लूमे दीनिया जो त़रीक़े आख़िरत को समझने का नाम हैं इन का ह़ुसूल कमाले अ़क़्ल और ज़ेहन की सफ़ाई के ज़रीए होता है और अ़क़्ले इन्सानी सिफ़ात में से सब से अफ़्ज़ल है जैसा कि इस का बयान आगे आएगा और इस की वजह येह है कि इसी के ज़रीए **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की अमानत को क़बूल किया जाता और इसी से क़ुर्बे इलाही तक रसाई होती है। जहां तक नफ़्अ़ आ़म होने का तअ़ल्लुक़ है तो इस में कोई शक नहीं कि इ़ल्म का नफ़्अ़ कसीर है क्यूंकि इस का नफ़्अ़ और नतीजा आख़िरत की सआ़दत है और रहा इस के मह़ल का मुअ़ज़्ज़ज़ होना तो येह बात किस त़रह़ पोशीदा रह सकती है ? क्यूंकि मुअ़ल्लिम (या'नी इ़ल्म सिखाने वाला उस्ताज़) इन्सानों के दिलों और नुफ़ूस में तसर्रुफ़ करता है नीज़ ज़मीन पर मौजूद हर चीज़ से ज़ियादा शरफ़ इन्सान को ह़ासिल है और इस के आ'ज़ा में से सब से अफ़्ज़ल इस का दिल है और मुअ़ल्लिम इस की तक्मील करने, इसे रोशनी पहुंचाने, (गुनाहों की ग़लाज़त से) पाको साफ़ करने और क़ुर्बे ख़ुदावन्दी तक पहुंचाने में मश्ग़ूल रहता है।

इबादते इलाही और ख़िलाफ़ते इलाही :

इ़ल्म सिखाना एक ह़ैसिय्यत से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत और एक ए'तिबार से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ख़िलाफ़त है। बल्कि येह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बहुत बड़ी ख़िलाफ़त है क्यूंकि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आ़लिम के दिल पर अपनी सब से ख़ास सिफ़त (या'नी इ़ल्म) खोल देता है। वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के उ़म्दा ख़ज़ानों का ख़ाज़िन (ख़ज़ानची) है और उसे ख़ज़ानए इ़ल्म को हर मोह़ताजे इ़ल्म पर सर्फ़ करने का ह़ुक्म दिया गया है लिहाज़ा इस से बढ़ कर क्या रुतबा हो सकता है कि बन्दा अपने रब عَزَّوَجَلَّ और उस की मख़्लूक़ के दरमियान वासित़ा बन कर बन्दों को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के क़रीब कर दे और जन्नत की त़रफ़ ले जाए।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अपने फ़ज़्लो करम से हमें भी इन में से कर दे और हर नेक बन्दे पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत हो। (आमीन)

बाब नम्बर : 2

मह़मूद व मज़मूम उ़लूम और इन की अक़्साम व अह़काम

इस बाब में येह बयान किया जाएगा कि कौन सा इल्म फ़र्ज़े ऐन है और कौन सा फ़र्ज़े किफ़ाया ? इल्मे कलाम और इल्मे फ़िक़्ह के इल्मे दीन होने की क्या ह़द है ? नीज़ इल्मे आख़िरत की क्या फ़ज़ीलत है ?

पहली फ़स्ल : फ़र्ज़े ऐन इल्म का बयान

मुअ़ल्लिमे काइनात, शाहे मौजूदात صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया :

"طَلَبُ الْعِلْمِ فَرِیْضَۃٌ عَلٰی کُلِّ مُسْلِم" या'नी इल्म ह़ासिल करना हर मुसलमान पर फ़र्ज़ है ।[1]

एक रिवायत में है : "اُطْلُبُوا الْعِلْمَ وَلَوْ بِالصِّیْن या'नी इल्म की जुस्त्जू करो अगर्चे चीन जाना पड़े ।"[2]

कौन सा इल्म ह़ासिल करना हर मुसलमान पर फ़र्ज़ है ?

इस बात में उ़-लमा का इख़्तिलाफ़ है कि वोह कौन सा इल्म है जिस का ह़ुसूल हर मुसलमान पर फ़र्ज़ है । इस में 20 गुरौह हैं । हम तफ़्सील नक़्ल कर के किताब को त़वील नहीं करना चाहते, अलबत्ता ख़ुलासा येह है कि हर गुरौह ने उसी इल्म को फ़र्ज़ कहा जिस पर वोह ख़ुद कारबन्द है । चुनान्चे,

मुतकल्लिमीन ने कहा : वोह इल्मे कलाम है, क्यूंकि इस के ज़रीए़ अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ की वह़दानियत व यक्ताई का इदराक होता और उस की ज़ात व सिफ़ात की मा'रिफ़त ह़ासिल होती है ।

फ़ुक़हा ने कहा : वोह इल्मे फ़िक़्ह है, क्यूंकि इस के ज़रीए़ इबादात, ह़लाल व ह़राम और जाइज़ व नाजाइज़ मुआ़मलात की पहचान होती है और इस से उन की मुराद वोह मसाइल हैं जिन की ज़रूरत हर एक को पेश आती है न की नौपैद शाज़ोनादर मसाइल ।

मुफ़स्सिरीन व मुह़द्दिषीन ने कहा : इस से क़ुरआनो सुन्नत का इल्म मुराद है, क्यूंकि इन्हीं के ज़रीए़ तमाम उ़लूम तक रसाई होती है ।

---

1 ......سنن ابن ماجه، المقدمة، باب فضل العلماء والحث......الخ، الحدیث:٢٢٤، ج١، ص١٤٦۔

2 ......شعب الایمان للبیهقی، باب فی طلب العلم، الحدیث:١٦٦٣، ج٢، ص٢٥٤۔

सूफ़िया ने कहा : इस से मुराद इल्मे तसव्वुफ़ है। फिर इन में से **बा'ज़ ने कहा :** वोह इल्म येह है कि बन्दा अपने ह़ाल को जाने और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हां अपना मक़ाम व मर्तबा मा'लूम करे।

किसी ने कहा : वोह इख़्लास, नफ़्स की आफ़ात और फ़िरिश्ते के इल्हाम और शैत़ान के वसवसे के दरमियान फ़र्क़ करने का इल्म है। **बा'ज़** ने लफ़्ज़ को इस के उ़मूम से फैरते हुए कहा कि वोह इल्मे बात़िन है और ख़ास क़िस्म के लोगों पर फ़र्ज़ है जो उस के अहल हैं।

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू त़ालिब मक्की عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى **ने फ़रमाया :** इस से मुराद उन चीज़ों का इल्म है जिन्हें वोह ह़दीष शामिल है जिस में इस्लाम की बुन्यादों का ज़िक्र है और वोह येह फ़रमाने मुस्त़फ़ा है कि "इस्लाम की बुन्याद पांच चीज़ों पर है। इस बात की गवाही देना कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई इबादत के लाइक़ नहीं (मुह़म्मद صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم उस के बन्दे और रसूल हैं, नमाज़ क़ाइम करना, ज़कात देना, ह़ज करना और रमज़ान के रोज़े रखना)।"[1]

चूंकि येह पांचों फ़र्ज़ हैं इस लिये इन पर अ़मल की कैफ़िय्यत और फ़र्ज़िय्यत का इल्म भी फ़र्ज़ है।

जिस इल्म के बारे में इल्म ह़ासिल करने वाले पर वाजिब है कि इस में यक़ीन रखे और शक न करे येह वोह है जिसे हम अब बयान करेंगे। जैसा कि हम ने इब्तिदाइया में भी बयान किया कि इस इल्म की दो क़िस्में हैं : (1)....**इल्मे मुआ़मला** और (2).....**इल्मे मुकाशफ़ा :** इस से इल्मे मुआ़मला ही मुराद है। नीज़ आ़क़िल बालिग़ को जिस मुआ़मले पर अ़मल का पाबन्द बनाया गया है वोह तीन हैं : (1) ए'तिक़ाद (2) फ़े'ल (या'नी करना) और (3) तर्क (या'नी न करना)। लिहाज़ा अ़क़्ल मन्द शख़्स अगर चाश्त के वक़्त एह़तिलाम होने या (बुलूग़त की) उ़म्र पूरी होने के सबब बालिग़ हुवा[2] तो इस पर सब से पहले येह वाजिब होगा कि वोह

---

1 ......صحیح البخاری، کتاب الایمان، باب الایمان......الخ، الحدیث:۸، ج ۱، ص ۱۴ ۔

2.....दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 397 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब पर्दे के बारे में सुवाल जवाब के सफ़ह़ा 71-72 पर शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دامت بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه नक़्ल फ़रमाते हैं : **सुवाल :** लड़का कब बालिग़ होता है? **जवाब :** हिजरी सिन के ह़िसाब से 12 और 15 साल की उ़म्र के दौरान जब भी (जिमाअ़ या मुश्तज़नी वग़ैरा के ज़रीए) इन्ज़ाल हो या सोते में एह़तिलाम हुवा या उस के जिमाअ़ से औ़रत ह़ामिला हो गई तो उसी वक़्त बालिग़ हो गया और उस पर ग़ुस्ल फ़र्ज़ हो गया। अगर ऐसा न हुवा तो हिजरी सिन के मुत़ाबिक़ 15 बरस का होते ही बालिग़ हो गया। **सुवाल :** लड़की कब बालिग़ा होती है? **जवाब :** हिजरी सिन के ह़िसाब से 9 और 15 साल की उ़म्र के दौरान एह़तिलाम हो या ह़ैज़ आ जाए या ह़म्ल ठहर जाए तो बालिग़ा हो गई वरना हिजरी सिन के मुत़ाबिक़ 15 साल की होते ही बालिग़ा है। (دُرِّمُختار، ج۹، ص۲۵۹، ملخصًا)

कलिमए शहादत لَآاِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰه सीखे और इस के मा'ना समझे जो येह है : (अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई इबादत के लाइक़ नहीं मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم उस के रसूल हैं) इस पर येह वाजिब नहीं कि इस में ग़ौरो फ़िक्र, बह़ष और दलाइल लिख कर वज़ाह़त चाहे बल्कि इतना काफ़ी है कि इस की तस्दीक़ करे, इस का ए'तिक़ाद रखे और इस के बारे में किसी क़िस्म का शको शुबा न करे और येह बात बिग़ैर बह़ष व दलाइल के मह़ज़ तक़लीद व समाअ़ से ह़ासिल हो जाती है इस लिये कि प्यारे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने अ़रब के कुन्द ज़ेह्नों से तस्दीक़ और इक़रार करवाने पर इकतिफ़ा किया दलील नहीं सिखाई।[1]

लिहाज़ा जब उस ने कलिमए शहादत सीख कर इस के मा'ना समझ लिये तो उस ने इस वक़्त के वाजिब को अदा कर दिया क्यूंकि इस वक़्त उस पर सिर्फ़ दो कलिमों को सीखना और समझना फ़र्ज़े ऐन है कुछ और फ़र्ज़ नहीं। इस दलील की बिना पर कि अगर वोह इस की अदाएगी के बा'द मर गया तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का मुत़ीअ़ व फ़रमांबरदार हो कर मरेगा न कि नाफ़रमान हो कर। कोई दूसरा अम्र उस वक़्त फ़र्ज़ होगा जब अ़वारिज़ (किसी काम के करने या न करने का बाइष बनने वाले उमूर) पाए जाएं और येह हर शख़्स के ह़क़ में ज़रूरी नहीं बल्कि मुमकिन है कि बा'ज़ में येह अ़वारिज़ न पाए जाएं।

अ़वारिज़ की अक़्साम और मिषालें :

अ़वारिज़ की तीन क़िस्में हैं : (1) या तो **फ़े'लिया** होंगे (या'नी इन के करने का हुक्म दिया गया होगा) (2) या तर्किया होंगे (या'नी इन से बचने का हुक्म दिया गया होगा) (3) या **ए'तिक़ादिया** होंगे (कि इन पर यक़ीन रखना ज़रूरी होगा)।

पहले की मिषाल : (वक़्ते चाश्त बालिग़ होने वाला) चाश्त से वक़्ते ज़ोहर तक ज़िन्दा रहा तो वक़्ते ज़ोहर दाख़िल होने से उस पर त़हारत और नमाज़ के ज़रूरी मसाइल सीखना फ़र्ज़ हो जाएंगे फिर अगर वोह तन्दुरुस्त है और ज़वाल के वक़्त तक कुछ न सीखेगा तो वक़्त में सीख कर अ़मल करना मुमकिन नहीं रहेगा बल्कि सीखने में ही वक़्त जाता रहेगा तो येह कहा जा सकता है कि उस का ज़िन्दा रहना ज़ाहिर है इस लिये उस पर फ़र्ज़ है कि (ज़ोहर का) वक़्त शुरूअ़ होने से पहले ही उस के ज़रूरी मसाइल सीख ले यूं भी कहा जा सकता है कि इ़ल्म जो अ़मल की शर्त़ है अ़मल के फ़र्ज़ होने के बा'द ही फ़र्ज़ होगा इस लिये (त़हारत और नमाज़ के ज़रूरी मसाइल) ज़वाले आफ़्ताब से पेशतर सीखना फ़र्ज़ नहीं। इसी त़रह़ बक़िया नमाज़ों में भी होगा।

1 ......صحیح البخاری، کتاب العلم، باب ماجاء فی العلم......الخ، الحدیث:٦٣، ج١، ص٣٩۔

फिर अगर वोह **माहे रमज़ान** तक ज़िन्दा रहा तो सबब पाए जाने की वजह से रोज़े के ज़रूरी मसाइल सीखना फ़र्ज़ हो जाएंगे और वोह येह कि रोज़े का वक़्त सुब्हे सादिक़ से गुरूबे आफ़्ताब तक है। इस वक़्त में बनिय्यते रोज़ा खाने पीने और जिमाअ़ से बाज़ रहना फ़र्ज़ है और इस की मुद्दत ईद का चांद देखने या दो गवाहों की गवाही तक है।

फिर अगर उसे माल ह़ासिल हो या बुलूग़त के वक़्त उस के पास माल था तो येह जानना फ़र्ज़ है कि इस माल पर कितनी ज़कात फ़र्ज़ है लेकिन येह उसी वक़्त फ़र्ज़ नहीं बल्कि इस्लाम लाने के वक़्त से साल पूरा होने पर फ़र्ज़ होगा। अगर वोह सिर्फ़ ऊंटों का मालिक है तो उन्हीं की ज़कात का जानना फ़र्ज़ होगा। इसी त़रह़ माल की दीगर अक़्साम में भी।

फिर **ह़ज** के महीने शुरूअ़ होने पर फ़ौरी इस का इ़ल्म ह़ासिल करना फ़र्ज़ नहीं होगा क्यूंकि ह़ज की अदाएगी अ़लत्तराख़ी (या'नी ताख़ीर से) फ़र्ज़ है[1] लेकिन उ़-लमा को चाहिये कि वोह उसे इस बात से आगाह कर दें कि ह़ज हर उस शख़्स पर अ़लत्तराख़ी फ़र्ज़ है जो ज़ादे राह और सुवारी का मालिक हो और इस पर क़ादिर भी हो क्यूंकि बसा अवक़ात कोई जल्दी करने की मोह़तात़ राए रखता है। बहर ह़ाल जब वोह ह़ज का पुख़्ता इरादा कर लेगा तो उस पर ह़ज के फ़राइज़ व वाजिबात का इ़ल्म ह़ासिल करना फ़र्ज़ हो जाएगा जब कि नवाफ़िल का इ़ल्म ह़ासिल करना ज़रूरी नहीं। अगर ह़ज नफ़्ली हो तो उस का इ़ल्म भी नफ़्ली होगा उस वक़्त उसे सीखना फ़र्ज़े ऐ़न नहीं होगा और येह कहना कि "**अस्ले ह़ज फ़ौरन वाजिब है पर आगाह न करना ह़राम है**" इस में नज़र (या'नी ग़ौरो फ़िक्र की ज़रूरत) है जिस का तअ़ल्लुक़ इ़ल्मे फ़िक़्ह से है। दीगर तमाम फ़र्ज़ अफ़्आ़ल में भी येही त़रीक़ए कार होगा।

दूसरे की मिषाल : ह़ालात की तब्दीली के मुत़ाबिक़ तुरूक (या'नी जिन बातों से बचने का हुक्म है इन) का इ़ल्म सीखना फ़र्ज़ है और येह हर शख़्स की ह़ालत के पेशे नज़र मुख़्तलिफ़ है। चुनान्चे, गूंगे पर ह़राम बातों का इ़ल्म सीखना फ़र्ज़ नहीं और अन्धे पर येह सीखना फ़र्ज़ नहीं कि किन चीज़ों को देखना ह़राम है। जंगल में रहने वाले पर येह सीखना फ़र्ज़ नहीं कि किन किन मजलिसों में बैठना ह़राम है क्यूंकि तुरूक का इ़ल्म भी ह़स्बे ह़ाल ही फ़र्ज़ होता है।

1.....दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़्बूआ़ 1250 सफ़्ह़ात पर मुश्तमिल किताब बहारे शरीअ़त जिल्द अव्वल, सफ़्ह़ा 1036 पर सदरुश्शरीआ़, बदरुत्त़रीक़ा, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى नक़्ल फ़रमाते हैं : "जब ह़ज के लिये जाने पर क़ादिर हो ह़ज फ़ौरन फ़र्ज़ हो गया या'नी उसी साल में और अब ताख़ीर गुनाह है और चन्द साल तक न किया तो फ़ासिक़ है और उस की गवाही मरदुद मगर जब करेगा अदा ही है क़ज़ा नहीं।"

अल ग़रज़ जो चीज़ें ज़रूरियाते दीन से नहीं इन का इ़ल्म सीखना फ़र्ज़ नहीं और जिन के बारे में मा'लूम हो कि बिग़ैर इस के चारा नहीं इस की आगही ह़ासिल करना फ़र्ज़ है। जैसा कि इस्लाम लाते वक़्त किसी ने रेशम पहन रखा था ग़सब शुदा ज़मीन पर बैठा था या ग़ैर मह़रम को देख रहा था तो इस्लाम लाते ही उस पर फ़र्ज़ हो जाएगा कि वोह इन का इ़ल्म ह़ासिल करे और जिन की इसे अभी ज़रूरत नहीं लेकिन अ़न क़रीब ज़रूरत पड़ेगी जैसे खाना पीना तो इन के बारे में भी सीखना फ़र्ज़ होगा। यहां तक कि अगर वोह किसी ऐसे शहर में हो जहां शराब पीने और ख़िन्ज़ीर खाने का रवाज हो तो उस पर (ह़स्बे इस्तित़ाअ़त) फ़र्ज़ है कि लोगों को इस के बारे में बताए और तमबीह करे। बहर ह़ाल हर वोह काम जिस का सिखाना फ़र्ज़ है उस का सीखना भी फ़र्ज़ है।

तीसरे की मिषाल : ए'तिक़ादात और आ'माले क़ल्ब का इ़ल्म भी क़ल्बी ख़यालात के मुत़ाबिक़ फ़र्ज़ होगा। लिहाज़ा अगर किसी के दिल में इन मआ़नी के बारे में शक वाक़ेअ़ हो जिन पर शहादत के कलिमे दलालत करते हैं तो उस पर उन बातों का इ़ल्म ह़ासिल करना फ़र्ज़ होगा जिन के ज़रीए़ शक ज़ाइल हो। अगर किसी को इस बात में शक नहीं हुवा और वोह इस का ए'तिक़ाद रखे बिग़ैर वफ़ात पा गया कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का कलाम क़दीम है, उसे देखा जा सकता है, वोह ह़वादिष (या'नी तग़य्युर पज़ीर उमूर) का मह़ल नहीं वग़ैरा जिन्हें अ़क़ाइद के बाब में ज़िक्र किया जाएगा तो बेशक बिल इत्तिफ़ाक़ उस की मौत इस्लाम पर हुई। ए'तिक़ादात के लिये ज़रूरी क़ल्बी ख़यालात बा'ज़ ऐसे हैं जो त़बीअ़त की वजह से पैदा होते हैं और बा'ज़ शहर के लोगों से सुन कर। अगर कोई ऐसे शहर में हो जहां इ़ल्मे कलाम आ़म हो और लोग बिदअ़तों के बारे में गुफ़्त्गू करते हों तो बालिग़ होते ही सब से पहले उसे ह़क़ की तल्क़ीन कर के (बुरी) बिदअ़तों[1] से बचाना चाहिये क्यूंकि अगर उस के सामने बात़िल को पेश कर दिया गया तो उस

---

❶......दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ किताब 1548 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब फ़ैज़ाने सुन्नत के सफ़ह़ा 1109 पर शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना **अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** دَامَتْ بَرَکَاتُهُمُ الْعَالِيَه बिदअ़त के ह़वाले से चन्द अह़ादीषे मुबारका नक़्ल करने के बा'द लिखते हैं कि "ऐसी नई बात जो सुन्नत से दूर कर के गुमराह करने वाली हो, जिस की अस्ल दीन में न हो वोह बिदअ़ते सय्यिआ या'नी बुरी बिदअ़त है जब कि दीन में ऐसी नई बात जो सुन्नत पर अ़मल करने में मदद करने वाली हो और जिस की अस्ल दीन से षाबित हो वोह बिदअ़ते ह़सना या'नी अच्छी बिदअ़त है।" (नीज़) ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिषे देहलवी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى ह़दीषे पाक "وَكُلُّ ضَلَالَةٍ فِى النَّار" के तह़्त फ़रमाते हैं : जो **बिदअ़त** के उसूल और क़वाइद सुन्नत के मुवाफ़िक़ और उस के मुताबिक़ क़ियास की हुई है (या'नी शरीअ़त व सुन्नत से नहीं टकराती) उस को बिदअ़ते ह़सना कहते हैं और जो इस के ख़िलाफ़ है वोह बिदअ़ते ज़लालत या'नी गुमराही वाली **बिदअ़त** कहलाती है। (اَشِعَّةُ اللَّمعَات،ج اول،ص۱۳۵)

नोट : मज़ीद मा'लूमात के लिये फ़ैज़ाने सुन्नत सफ़ह़ा 1104 ता 1113 का मुत़ालआ़ कीजिये !

के दिल से इसे ज़ाइल करना फ़र्ज़ हो जाएगा और बा'ज़ अवक़ात येह बहुत मुश्किल हो जाता है। जैसा कि अगर येह मुसलमान ताजिर है और शहर में सूद का मुआ़मला बहुत ज़ियादा है तो उस पर सूद से बचने का इ़ल्म ह़ासिल करना फ़र्ज़ है और फ़र्ज़े ऐ़न इ़ल्म में येही ह़क़ है और इस का मत़लब फ़र्ज़ अ़मल के त़रीक़े को जानना है लिहाज़ा जिस ने फ़र्ज़ अ़मल का इ़ल्म और इस का वक़्ते फ़र्ज़िय्यत जान लिया तो बेशक उस ने फ़र्ज़े ऐ़न इ़ल्म ह़ासिल कर लिया।

नीज़ सूफ़िया का येह क़ौल कि "**शैत़ान के वस्वसों और फ़िरिश्तों के इलहाम को समझना भी ज़रूरी है**" येह भी ह़क़ है लेकिन येह उस शख़्स के बारे में है जो सूफ़िया के त़रीक़े पर हो।

आ़म तौ़र पर इन्सान शर के दवाई (या'नी बुराई की त़रफ़ ले जाने वाले उमूर), रिया, ह़सद वग़ैरा से बच नहीं पाता इस लिये उस पर फ़र्ज़ है कि मोहलिकात (या'नी हलाकत में डालने वाली चीज़ों) में से जिस की वोह ज़रूरत मह़सूस करे उस का इ़ल्म ह़ासिल करे और येह क्यूंकर फ़र्ज़ न होगा।

हलाकत में डालने वाले उमूर :

हु़ज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया कि "3 चीज़ें हलाकत का बाइ़ष हैं : ऐसा बुख़्ल जिस की इत़ाअ़त की जाए, ऐसी ख़्वाहिश जिस की पैरवी की जाए और इन्सान का ख़ुद पसन्दी में मुब्तला होना।"[1]

इन से कोई इन्सान बच नहीं सकता। हम अ़न क़रीब दिल के बाक़ी मज़मूम अह़वाल (बुरी ह़ालतें) बयान करेंगे जैसे तकब्बुर, उ़जब और इस की मिष्ल दूसरे अह़वाल जो इन तीन मोहलिकात के ताबेअ़ हैं जिन का इज़ाला फ़र्ज़े ऐ़न है और इन की ता'रीफ़ात, अस्बाब, अ़लामात और इलाज जाने बिग़ैर इन का इज़ाला नहीं किया जा सकता क्यूंकि जो बुराई को नहीं पहचानता वोह इस में मुब्तला हो ही जाता है। इलाज येह है कि हर सबब का इस की ज़िद से मुक़ाबला किया जाए और येह सबब और मुसब्बब की पहचान के बिग़ैर नहीं हो सकता। हम ने मोहलिकात के बयान में अकषर फ़र्ज़े ऐ़न उ़लूम नक़्ल किये हैं जब कि कई लोगों ने "**ला**" या'नी उमूर में मश्ग़ूल हो कर इन्हें नज़र अन्दाज़ कर दिया है।

---

1 ......مسندالبزار، مسند عبداللّٰہ بن ابی اوفی، الحدیث:۳۳۶۶، ج۸، ص۲۹۵۔ المعجم الاوسط، الحدیث:۵۷۵۴، ج۴، ص۲۱۳۔

वोह शख़्स कि जो एक दीन से दूसरे दीन में दाख़िल न हुवा हो (बल्कि कुफ़्र से इस्लाम में आया हो) तो उसे जन्नत, दोज़ख़, ह़श्रो नश्र पर ईमान लाने के बारे में ता'लीम देने में जल्दी करनी चाहिये ताकि वोह इन पर ईमान ले आए और इन की तस्दीक़ करे। येह शहादत के दो कलिमों की तक्मील है। क्यूंकि हुज़ूर सय्यिदे आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को रसूल मान लेने के बा'द रिसालत के मफ़्हूम को समझना ज़रूरी है और वोह येह है कि जिस ने **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की इत़ाअ़त की उस के लिये जन्नत है और जिस ने उन की नाफ़रमानी की उस का ठिकाना जहन्नम है। जब ब तदरीज तुम्हें इन बातों पर आगही ह़ासिल हो गई तो जान लो कि येही मज़्हबे ह़क़ है और येह षाबित हो जाएगा कि दिन और रात के अह़वाल में कोई भी शख़्स इबादात और मुआ़मलात में नए मसाइल से ख़ाली नहीं तो उस पर लाज़िम है कि जो मस्अला वाक़ेअ़ हो उस के बारे में सुवाल करे और अ़न क़रीब वाक़ेअ़ होने वाले मसाइल का इ़ल्म ह़ासिल करने में भी जल्दी करे।

मज़्कूरा तमाम बह़्ष से येह बात वाज़ेह़ हो गई कि रसूले ख़ुदा, मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के इस फ़रमाने आ़लीशान : ''طَلَبُ الْعِلْمِ فَرِیْضَۃٌ عَلٰی کُلِّ مُسْلِمٍ''[1] में اَلْعِلْم से उस अ़मल का इ़ल्म मुराद है जिस के बारे में मशहूर है कि वोह मुसलमानों पर फ़र्ज़ है न कि कुछ और, नीज़ वजहे तदरीज और वक़्ते वुजूब भी ख़ूब रोशन हो गए और **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ बेहतर जानने वाला है।

ता'रीफ़ और सआ़दत

*ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर बैज़ावी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْقَوِی (मुतवफ़्फ़ा 685 हि.) इरशाद फ़रमाते हैं कि "जो शख़्स **अल्लाह** और उस के रसूल عَزَّوَجَلَّ وصَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم की फ़रमा बरदारी करता है दुन्या में उस की ता'रीफ़ें होती हैं और आख़िरत में सआ़दत मन्दी से सरफ़राज़ होगा।"*

(تفسیر البیضاوی، پ۲۲، الاحزاب، تحت الآیۃ:۷۱، ج۴، ص۳۸۸)

---

1 ......سنن ابن ماجہ، المقدمۃ، باب فضل العلماء والحث......الخ، الحدیث:۲۲۴، ج۱، ص۱۴۶۔

दूसरी फ़स्ल : फ़र्ज़े किफ़ाया इ़ल्म का बयान

जान लो ! उ़लूम की अक़्साम ज़िक्र किये बिग़ैर फ़र्ज़ उ़लूम को इन के ग़ैर से मुमताज़ नहीं किया जा सकता और इ़ल्म की निस्बत फ़र्ज़ की त़रफ़ की जाए तो इस की दो क़िस्में बनती हैं : (1) **उ़लूमे शरइय्या** और (2) **उ़लूमे ग़ैर शरइय्या**, शरइय्या से मुराद वोह उ़लूम हैं जो ह़ज़राते अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से ह़ासिल किये गए हैं अ़क़्ल उन की त़रफ़ राहनुमाई नहीं करती जैसा कि ह़िसाब और न तजरिबा इस की जानिब राहनुमाई करता है जैसे त़िब्ब और न ही वोह समाअ़ से ह़ासिल होते हैं जैसे लुग़त।

ग़ैर शरई उ़लूम की अक़्साम :

इस की तीन क़िस्में हैं : मह़मूद, मज़मूम और मुबाह़।

﴾1﴿......**मह़मूद उ़लूम :** वोह हैं जिन से दुन्यवी कामों की मस्लिह़तें वाबस्ता हैं मषलन त़िब्ब और ह़िसाब। इस की भी दो क़िस्में हैं : फ़र्ज़े किफ़ाया और मुस्तह़ब।

(1) **फ़र्ज़े किफ़ाया :** वोह इ़ल्म जिस के बिग़ैर दुन्या के कामों का इन्तिज़ाम न हो सके जैसा कि त़िब्ब क्यूंकि येह बदनों की बक़ा के लिये ज़रूरी है और ह़िसाब क्यूंकि येह मुआ़मलात, वसिय्यतों और तर्के वग़ैरा की तक़्सीम में ज़रूरी है। येह वोह उ़लूम हैं कि अगर पूरे शहर में से किसी एक ने भी इन्हें ह़ासिल न किया तो पूरे शहर वाले गुनहगार होंगे और अगर किसी एक ने सीख लिया तो काफ़ी है दूसरों से फ़र्ज़ साक़ित हो जाएगा और हमारे इस क़ौल से किसी को तअ़ज्जुब नहीं होना चाहिये कि "**त़िब्ब और ह़िसाब फ़र्ज़े किफ़ाया हैं।**" क्यूंकि सनअ़तों के उसूल भी फ़र्ज़े किफ़ाया उ़लूम में से हैं जैसा कि काश्तकारी, कपड़ा बुनाई और ह़िक्मते अ़मली व तदबीर बल्कि पछने लगाना और कपड़ा सिलाई भी। क्यूंकि अगर सारे शहर में कोई भी पछनें लगाने वाला नहीं होगा तो हलाकत उन की त़रफ़ जल्दी करेगी और वोह अपनी जानों को हलाकत में डालने की वजह से गुनहगार होंगे क्यूंकि जिस ने बीमारी नाज़िल की है उस ने इस की दवा भी उतारी है और इसे इस्ति'माल करने की राहनुमाई भी फ़रमाई है और इसे ह़ासिल करने के अस्बाब भी मुहय्या किये हैं इस लिये इन्हें छोड़ कर हलाकत सर लेना जाइज़ नहीं।

(2) **मुस्तह़ब :** ह़िसाब की बारीकियों और त़िब्ब की ह़क़ीक़तों में ग़ौत़ाज़नी करना (या'नी गहराई में जाना) है और इन के इ़लावा वोह चीज़ें जिन की ह़ाजत तो नहीं लेकिन जितनी मिक़्दार की ह़ाजत है उस में इज़ाफ़ी क़ुव्वत के लिये मुफ़ीद हैं उन के बारे में जानना भी मुस्तह़ब है।

﴾2﴿.....**मज़मूम उ़लूम :** जैसे जादू, करिश्मात, शो'बदाबाज़ी और तलबीसात का इ़ल्म।

﴾3﴿.....**मुबाह़ उ़लूम :** जैसे उन अश्आ़र का इ़ल्म जो बे हूदा न हों और तवारीख़ वग़ैरा का इ़ल्म।

उ़लूमे शरइय्या की अक़्साम :

जहां तक उ़लूमे शरइय्या का तअ़ल्लुक़ है और येही हमारे बयान का मक़्सूद हैं येह तमाम के तमाम मह़मूद हैं लेकिन कभी इन में शुबा हो जाता है, लगता है कि वोह उ़लूमे शरइय्या हैं ह़ालांकि वोह मज़्मूम होते हैं। चुनान्चे, इस की भी दो क़िस्में हैं : (1)....मह़मूदा (2)....मज़्मूमा। उ़लूमे शरइय्या मह़मूदा के कुछ उसूल (बुन्याद), फ़ुरूअ़ (जुज़्इयात), मुक़द्दमात (या'नी आलात के क़ाइम मक़ाम अश्या) और मुतम्मिमात हैं (या'नी वोह उ़लूम जो मुकम्मल करने वाले हैं) यूं इस की चार क़िस्में हुईं :

पहली क़िस्म उसूल : येह चार हैं : (1) किताबुल्लाह (2) सुन्नते रसूल (3) इजमाए उम्मत और (4) आषारे सह़ाबा।

इजमाअ़ इस ए'तिबार से अस्ल है कि वोह सुन्नत पर दलालत करता है और वोह तीसरे दर्जे का अस्ल है इसी त़रह़ अषर कि वोह भी सुन्नत पर दलालत करता है। क्यूंकि सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن ने वह़्य व तन्ज़ील के मुशाहिदे किये और अह़वाल के क़राइन से उन बातों को जान लिया जो इन के इ़लावा दूसरों की आंखों से पोशीदा हैं। कभी इ़बारात उन बातों का इह़ात़ा करने से क़ासिर रहती हैं जो क़राइन से मा'लूम की जा सकती हैं। इसी लिये उ़-लमा की राए येह है कि इन की इक़्तिदा की जाए और इन के आषार को मज़्बूत़ी से थामा जाए और जिन्हों ने इन्हें देखा उन के नज़्दीक येह ख़ास शर्त़ के साथ ख़ास सूरत पर हैं लेकिन इस का बयान इस फ़न के लाइक़ नहीं।

दूसरी क़िस्म फ़ुरूअ़ : इस से मुराद वोह हैं जो बयान कर्दा उसूलों से समझे जाएं। उसूलों के अल्फ़ाज़ के तक़ाज़े की वजह से नहीं बल्कि इन मआ़नी की वजह से जिन पर अ़क़्लें आगाह हुईं तो उस के सबब मफ़्हूम वसीअ़ हो गया यहां तक कि बोले गए लफ़्ज़ से वोह बातें भी मा'लूम हो गईं जिन के लिये लफ़्ज़ को नहीं लाया गया जैसा कि इस फ़रमाने मुस्त़फ़ा कि "क़ाज़ी ग़ुस्से की ह़ालत में फ़ैसला न करे।"[1] से समझा गया है कि वोह ख़ौफ़ ज़दा होने या भूका होने या किसी मरज़ में मुब्तला होने की ह़ालत में फ़ैसला न करे। इस की दो क़िस्में हैं : एक का तअ़ल्लुक़ दुन्यवी मनाफ़ेअ़ से है। कुतुबे फ़िक़्ह इस पर मुश्तमिल और फ़ुक़हा इस के ज़िम्मेदार हैं और वोह उ़-लमाए दुन्या हैं। दूसरी का तअ़ल्लुक़ आख़िरत के मनाफ़ेअ़ से है और

1 ......سنن ابن ماجه، كتاب الاحكام، باب لايحكم الحاكم وهوغضبان، الحديث:٢٣١٦، ج٣، ص٩٣۔

येह क़ल्बी अह़वाल, अच्छे बुरे अख़्लाक़ और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक पसन्दीदा और ना पसन्दीदा उमूर का इ़ल्म। "इह़याउल उ़लूमिद्दीन" का निस्फ़े अख़ीर इसी पर मुश्तमिल है जब कि निस्फ़े अव्वल उन उमूर के इ़ल्म पर मुश्तमिल है जो इ़बादात और आ़दात में दिल से आ'ज़ा पर ज़ाहिर होते हैं।

तीसरी क़िस्म मुक़द्दमात : येह वोह हैं जो आलात के क़ाइम मक़ाम होते हैं। जैसा कि इ़ल्मे लुग़त व नह़्व कि ये दोनों किताबुल्लाह और सुन्नते रसूल के इ़ल्म के लिये आला हैं। लुग़त और नह़्व बज़ाते खुद शरई उ़लूम में से नहीं, अलबत्ता इन में ग़ौरो ख़ौज़ सबबे शरई की वजह से लाज़िम है क्यूंकि शरीअ़त लुग़ते अ़रब पर उतरी है और कोई भी शरीअ़त लुग़त के बिग़ैर ज़ाहिर नहीं होती इस लिये लुग़त को सीखना आला बन गया। लिखने का इ़ल्म भी आलात की क़िस्म में से है मगर इस का सीखना ज़रूरी नहीं क्यूंकि रसूले ख़ुदा صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم उम्मी थे (या'नी आप ने दुन्या में किसी से पढ़ा, लिखा नहीं येह आप का अ़ज़ीम मो'जिज़ा है)[1] और अगर मुस्तक़िल तौ़र पर जो सुना जाए उसे ज़बानी याद कर लेना मुमकिन होता तो लिखने की ह़ाजत न पड़ती लेकिन बिदाहतन ग़ालिब अकषरिय्यत इस से आ़जिज़ है।

चौथी क़िस्म मुतम्मिमात : येह इ़ल्मे क़ुरआन से मुतअ़ल्लिक़ है। इस की तीन क़िस्में हैं :

(1).....वोह जिस का तअ़ल्लुक़ अल्फ़ाज़ से है जैसा कि क़िराअतें और मख़ारिजे ह़ुरूफ़ सीखना।

(2).....वोह जिस का तअ़ल्लुक़ मआ़नी से है जैसा कि तफ़्सीर। इस में भी नक़्ल ही पर ए'तिमाद किया जाता है क्यूंकि मह़ज़ लुग़त तफ़्सीर बताने में मुस्तक़िल नहीं।

(3).....वोह जिस का तअ़ल्लुक़ अह़कामे क़ुरआन से है जैसा कि नासिख़ व मन्सूख़, आ़म व ख़ास और नस्स व ज़ाहिर की पहचान नीज़ इन में से बा'ज़ को बा'ज़ के साथ इस्ति'माल करने का त़रीक़ा। येही वोह इ़ल्म है जिसे उसूले फ़िक़्ह कहा जाता है और येह सुन्नत को भी शामिल है।

आषार व अख़्बार में मुतम्मिमात इ़ल्मे रिजाल है या'नी रावियों के बारे में जानना, इन के नाम, इन के नसब, सह़ाबए किराम رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُم के नाम, इन का तआ़रुफ़, रावियों में अ़दालत और इन के अह़वाल का इ़ल्म ताकि ज़ईफ़ को क़वी से मुमताज़ किया जा सके, इन की उ़म्रों का इ़ल्म ताकि मुरसल व मुसनद में फ़र्क़ किया जा सके और इसी त़रह़ वोह उ़लूम जिन का तअ़ल्लुक़ इस के साथ है। येह उ़लूमे शरइय्या हैं और तमाम के तमाम मह़मूद हैं बल्कि सब के सब फ़र्ज़े किफ़ाया उ़लूम में से हैं।

---

1 ......سنن ابی داود، کتاب الصلاۃ، باب الصلاۃ علی النبی بعد التشھد، الحدیث: ۹۸۱، ج ۱، ص ۳۶۹۔

المسند للامام احمد بن حنبل، مسند عبداللّٰہ بن عمرو، الحدیث: ۶۶۱۷، ج ۲، ص ۵۸۱۔

एक सुवाल और इस का जवाब :

अगर तुम कहो कि तुम ने फ़िक़्ह को इल्मे दुन्या और फ़ुक़हा को उ़-लमाए दुन्या के साथ क्यूं मिला दिया ? तो जान लो ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने ह़ज़रते सय्यिदुना आदम عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को मिट्टी से पैदा फ़रमाया और आप की अवलाद को चुनी हुई मिट्टी और उछलते पानी से निकाला फिर पुश्तों (बापों की पीठों) से (माओं के) रह़मों में, रह़मों से दुन्या में, दुन्या से क़ब्र में, क़ब्र से मेह़शर में फिर मेह़शर से जन्नत या दोज़ख़ की त़रफ़ भेजेगा। येह है उन की इब्तिदा व इन्तिहा और मन्ज़िलें। दुन्या को आख़िरत की तय्यारी के लिये पैदा फ़रमाया ताकि दुन्या से वोह लिया जाए जो सफ़रे आख़िरत के लिये ज़ादे राह बन सके। लिहाज़ा अगर लोग अ़दलो इन्साफ़ के साथ दुन्या से लेते तो न झगड़ों की नौबत आती और न ही फ़ुक़हा की ज़रूरत पेश आती लेकिन इन्हों ने ख़्वाहिशात के मुत़ाबिक़ लिया जिस से झगड़ों ने जनम लिया तो बादशाह की ज़रूरत पड़ी जो इन के मुआ़मलात संभाले और बादशाह को क़ानून की ज़रूरत पड़ी जिस के मुत़ाबिक़ वोह लोगों का इन्तिज़ाम करे पस फ़क़ीह क़ानूने सियासत का आ़लिम और लोगों के दरमियान वासित़ा है। जब लोगों में ख़्वाहिशात की वजह से झगड़े हो जाते हैं तो फ़क़ीह बादशाह को लोगों के मुआ़मलात को संभालने और कन्ट्रोल करने के त़रीक़े बताता है ताकि वोह उन के दुन्यवी मुआ़मलात का सह़ीह़ इन्तिज़ाम कर सके।

मेरी ज़िन्दगी की क़सम ! इस का तअ़ल्लुक़ भी दीन से है लेकिन फ़ी नफ़्सिही (या'नी अपनी ज़ात के ए'तिबार से) नहीं बल्कि दुन्या के वासित़े से। क्यूंकि दुन्या आख़िरत की खेती है और दीन दुन्या ही से मुकम्मल होता है, सल्त़नत और दीन एक ही हैं। दीन अस्ल है और बादशाह निगहबान। जिस की अस्ल न हो वोह गिर जाता है और जिस का कोई मुह़ाफ़िज़ न हो वोह ज़ाएअ़ हो जाता है। नीज़ मुल्क और इस का इन्तिज़ाम सुल्त़ान के बिग़ैर नहीं चल सकता और झगड़ों के फ़ैसलों में कन्ट्रोल का त़रीक़ा फ़िक़्ह से आता है। जिस त़रह़ सल्त़नत के ज़रीए़ लोगों की इस्लाह़ व बेहतरी के त़रीक़े जानने का हुक्म है जो पहले दर्जे का इल्मे दीन नहीं बल्कि येह इस पर मुईन व मददगार है जिस के बिग़ैर दीन मुकम्मल नहीं होता इसी त़रह़ सियासत के त़रीक़े जानने का हुक्म है।

इल्मे फ़िक़्ह का ह़ासिल :

चूंकि येह बात मा'लूम है कि अगर रास्ते में अ़रब के (राहज़नों से बचाव के लिये) मुह़ाफ़िज़ीन न हों तो ह़ज मुकम्मल नहीं हो सकता लेकिन ह़ज और शै है और इस के लिये रास्ता त़ै करना दूसरी शै और जिन ह़िफ़ाज़ती इक़दामात के बिग़ैर ह़ज मुकम्मल नहीं होता

इन का क़ियाम तीसरी शै है और ह़िफ़ाज़त के त़रीक़ों, तबदीरों और क़वानीन का जानना चौथी शै है। तो फ़न्ने फ़िक़्ह का ह़ासिल येह है कि सियासत और ह़िफ़ाज़त के त़रीक़े जाने जाएं। इस पर वोह ह़दीष दलालत करती है जो मुस्नदन मरवी है कि लोगों को फ़तवे नहीं देते मगर तीन त़रह़ के लोग : अमीर, मामूर या मुतकल्लिफ़।(1)

अमीर से मुराद ह़ाकिम है और येही फ़तवा देते थे और मामूर से मुराद उस का नाइब है और मुतकल्लिफ़ इन दोनों के इ़लावा है और येह वोह है जो बिला ज़रूरत इस ओ़हदे की ख़्वाहिश करता है हांलाकि सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْهِمْ اَجْمَعِیْن फ़तवा देने से बचते थे यहां तक कि इन में से हर एक अपने साथ वाले की त़रफ़ फैर देता और जब इन से राहे आख़िरत या इल्मे क़ुरआन के बारे में पूछा जाता तो एह़तिराज़ नहीं करते थे। एक रिवायत में अल मुतकल्लिफ़ के बजाए अल मराई (या'नी रियाकार) है क्यूंकि जो फ़तवे के ख़त़रे को सर लेता है जब कि वोह इस के लिये ख़ास भी नहीं तो ला मह़ाला फ़तवा देने से इस का मक़्सूद हुब्बे जाह व माल ही है।

एक सुवाल और इस का जवाब :

अगर तुम येह कहो कि तुम्हारी येह तक़रीर ज़ख़्मों, हुदूद और तावान के अह़काम और झगड़ों के फ़ैसलों में तो दुरुस्त हो सकती है लेकिन इ़बादात या'नी नमाज़, रोज़े और आ़दात व मुआ़मलात या'नी ह़लाल व ह़राम के अह़काम के बयान में दुरुस्त नहीं। तो जान लो ! फ़क़ीह जिन आ'माल के बारे में कलाम करता है इन में आ'माले आख़िरत के सब से ज़ियादा क़रीब तीन आ'माल हैं। (1) इस्लाम (2) नमाज़ व ज़कात और (3) ह़लाल व ह़राम। जब तुम इन आ'माल में फ़क़ीह की इन्तिहाई नज़र को मुलाह़ज़ा करोगे तो येह बात जान लोगे कि फ़क़ीह दुन्या की हुदूद से आख़िरत की त़रफ़ नहीं बढ़ता और जब तुम ने इन तीन आ'माल में इस बात को जान लिया तो इन के इ़लावा आ'माल में तो येह ज़ियादा ज़ाहिर है।

इस्लाम में फ़क़ीह सिर्फ़ इस बारे में कलाम करता है कि किस का इस्लाम दुरुस्त है और किस का नहीं ? और इस्लाम की शर्त़ क्या हैं और इस में वोह सिर्फ़ ज़बान की त़रफ़ मुतवज्जेह होता है दिल तो उस के इख़्तियार में नहीं क्यूंकि मक्की मदनी सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने तलवार और सल्त़नत वालों को इस से अलग कर दिया है जैसा कि जब जंग के दौरान एक शख़्स ने कलिमा पढ़ा तो सह़ाबी ने इस बिना पर उसे क़त्ल कर डाला कि उस ने येह कलिमा तलवार

---

(1)......المسند للامام احمد بن حنبل، حدیث عوف بن مالک،الحدیث:۲۴۰۲۷،ج۹،ص۲۵۳۔
قوت القلوب، الفصل الحادی والثلاثون: کتاب العلم وتفضیله، ذکرفضل علم المعرفة......الخ،ج۱،ص۲۲۸۔

के ख़ौफ़ से पढ़ा है। जब दरबारे रिसालत में येह बात पहुंची तो इरशाद फ़रमाया : هَلَّا شَقَقْتَ عَنْ قَلْبِهٖ या'नी क्या तूने उस का दिल चीर कर देखा था ?[1] बल्कि फ़क़ीह तलवारों के साए में भी इस्लाम के सह़ीह़ होने का हुक्म देगा ह़ालांकि वोह जानता है कि तलवार न तो उस की निय्यत को ज़ाहिर करती है और न ही उस के दिल से जहालत व तरद्दुद का पर्दा हटाती है। अलबत्ता वोह तलवार वाले को इशारा देता है क्यूंकि तलवार उस की गर्दन की त़रफ़ और हाथ उस के माल की त़रफ़ बढ़े होते हैं और ज़बान से येह कलिमा कह देना उस की गर्दन और माल को बचा लेता है जब तक उस की गर्दन और माल रहते हैं और येह सिर्फ़ दुन्या में है। इसी लिये हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : मुझे हुक्म दिया गया है कि लोगों से उस वक़्त तक क़िताल करूं जब तक वोह لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ न कहें। जब वोह कलिमा कह लेंगे तो मुझ से अपने ख़ून और अम्वाल बचा लेंगे।[2] लिहाज़ा आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इस का अषर ख़ून और माल में रखा जब कि आख़िरत में अमवाल नहीं बल्कि दिलों के अनवारो अस्रार और इख़्लास नफ़्अ़ देंगे और इन चीज़ो का तअ़ल्लुक़ फ़िक़ह से नहीं। अगर फ़क़ीह इस में ग़ौरो फ़िक्र करेगा तो ऐसा होगा जैसे वोह इल्मे कलाम और त़िब्ब में ग़ौरो ख़ौज़ करता है और अपने फ़न से निकल जाएगा।

नमाज़ के मुआ़मले में भी फ़क़ीह सह़ीह होने का हुक्म देगा जब तक नमाज़ पढ़ने वाला उसे ज़ाहिरी शराइत़ के साथ आ'माल की सूरत में अदा करेगा अगर्चे तकबीरे तह़रीमा के इलावा अज़ अव्वल ता आख़िर पूरी नमाज़ में ग़ाफ़िल रहे और बाज़ार के मुआ़मलात में ग़ौरो फ़िक्र करता रहे। ह़ालांकि आख़िरत में ऐसी नमाज़ का कोई फ़ाइदा नहीं होगा जैसा कि इस्लाम में सिर्फ़ ज़बानी क़ौल नफ़्अ़ नहीं देता। अलबत्ता फ़क़ीह़ सह़ीह़ होने का ही हुक्म देगा या'नी जो अ़मल उस ने किया उस से हुक्म पर अ़मल हो गया और उस से क़त्ल और ता'ज़ीर का हुक्म साक़ित़ हो जाएगा। रहा ख़ुशूअ़ व ख़ुज़ूअ़ का मुआ़मला तो येह उख़रवी अ़मल है। ज़ाहिरी अ़मल का फ़ाइदा इसी के साथ होता है, फ़क़ीह को इस से ग़रज़ नहीं होती और अगर वोह इस के दरपे होगा तो अपने फ़न से निकलने वाला कहलाएगा।

यूंही ज़कात के मुआ़मले में फ़क़ीह येह देखेगा कि उस शख़्स से ह़ाकिम का मुत़ालबा कैसे ख़त्म होगा यहां तक कि अगर किसी ने ज़कात अदा न की और ह़ाकिम ने ज़बरदस्ती ज़कात वुसूल कर ली तो फ़क़ीह उसे ज़कात से बरियुज़्ज़िम्मा होने का हुक्म देगा।

---

1 ......السنن الکبری للنسائی، کتاب السیر، باب قول المشرک لا اله الا اللّٰه، الحدیث:۸۵۹۴، ج۵، ص۱۷۶۔
صحیح مسلم، کتاب الایمان، باب تحریم قتل الکافر بعد قوله لا اله الا اللّٰه، الحدیث:۹۶، ص۶۳۔

2 ......سنن النسائی، کتاب تحریم الدم، الحدیث:۳۹۷۷، ص۶۵۰۔

तक़्वा के मरातिब :

और जहां तक **ह़लाल व ह़राम** की बात है तो ह़राम से बच कर तक़्वा इख़्तियार करना दीन से है लेकिन इस वरअ़ व तक़्वा के 4 दर्जे हैं :

﴾1﴿.....**ज़ाहिरी ह़राम से बचना :** येह वोह तक़्वा है जो अ़दालत व शहादत में शर्त़ है इसे तर्क करने के सबब इन्सान क़ज़ा व शहादत और विलायत की अहलिय्यत से निकल जाता है।

﴾2﴿.....**सालेह़ीन का तक़्वा :** येह उन शुबहात से बचने का नाम है जिन में एह़तिमालात होते हैं। जैसा कि हु़ज़ूर नबिय्ये पाक, साहि़बे लौलाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जो तुम्हें शक में डाले उसे छोड़ कर जो शक में न डाले उसे इख़्तियार करो।"(1)

एक रिवायत में है : "गुनाह दिलों में खटकता है।"(2)

﴾3﴿.....**परहेज़गारों का तक़्वा :** येह ख़ालिस ह़लाल को तर्क कर देने का नाम है जिस के बारे में ख़ौफ़ हो कि वोह ह़राम की त़रफ़ ले जाएगा। जैसा कि हु़ज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "आदमी उस वक़्त तक परहेज़गारों में शामिल नहीं हो सकता जब तक उस चीज़ को न छोड़ दे जिस में कोई ह़रज नहीं इस ख़ौफ़ से कि कहीं उस में मुब्तला न हो जाए जिस में ह़रज है।"(3)

इस की मिषाल : लोगों के अह़वाल के बारे में इस लिये गुफ़्तगू करने से गुरेज़ करे कि कहीं इस की वजह से ग़ीबत में न पड़ जाए और ख़्वाहिशात के मुत़ाबिक़ खाने से इस ख़ौफ़ से बाज़ रहे कि कहीं त़बीअ़त में तकब्बुर व नशात़ न आ जाए और वोह ममनूआ़त में न जा पड़े।

﴾4﴿.....**सिद्दीक़ीन का तक़्वा :** येह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा हर चीज़ से कनारा कश हो जाने का नाम है इस ख़ौफ़ से कि कहीं ज़िन्दगी का कोई लम्ह़ा ऐसा न गुज़रे जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के क़ुर्ब में इज़ाफ़े का फ़ाइदा न दे। अगर्चे वोह जानता है कि येह उसे ह़राम की त़रफ़ नहीं ले जाएगा।

---

1 ......سنن الترمذی، کتاب صفة القیامة، الحدیث:۲۵۲۶، ج۴، ص۲۳۲۔

2 ......المعجم الکبیر، الحدیث:۸۷۴۸، ج۹، ص۱۴۹۔
شعب الایمان للبیهقی، باب فی تحرم الفروح، الحدیث:۵۴۳۴، ج۴، ص۳۶۷۔

3 ......سنن ابن ماجه، کتاب الزهد، باب الورع والتقوی، الحدیث:۴۲۱۵، ج۴، ص۴۷۵۔

पहले दर्जे के इलावा बक़िया तीनों फ़क़ीह की नज़रो फ़िक्र से ख़ारिज होते हैं। पहला दर्जा वोह है जो शहादत व क़ज़ा का तक़्वा है जो अ़दालत और इस के क़ियाम में ऐ़ब है। येह आख़िरत में गुनाह होने के मनाफ़ी नहीं।

सरकारे मदीना, राहते क़ल्बो सीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना वाबसा رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ से इरशाद फ़रमाया : "अपने दिल से फ़तवा त़लब करो अगर्चे लोग तुम्हें (कुछ) फ़तवा दें, अगर्चे लोग तुम्हें (कुछ) फ़तवा दें, अगर्चे लोग तुम्हें (कुछ) फ़तवा दें।"[1]

और फ़क़ीह ख़त़राते क़ल्ब और इन पर अ़मल की कैफ़िय्यत के बारे में गुफ़्त्गू नहीं करता बल्कि फ़क़त़ उस चीज़ के बारे में कलाम करता है जो अ़दालत में ऐ़ब हो। मुख़्तसर येह कि फ़क़ीह की नज़र दुन्या के मुआ़मलात से वाबस्ता होती है जिस से राहे आख़िरत बेहतर हो और अगर वोह दिल की सिफ़ात और अह़कामे आख़िरत में कुछ कलाम करे तो येह ज़िमनन उस के कलाम में दाख़िल होगा जिस त़रह़ उस की गुफ़्त्गू में त़िब्ब, ह़िसाब, नुजूम और इ़ल्मे कलाम दाख़िल हो जाते हैं और जिस त़रह़ नह़्व शे'र में ह़िक्मत दाख़िल हो जाती है।

ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान सौरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : इ़ल्मे ह़दीस[2] की त़लब ज़ादे आख़िरत से नहीं।"[3]

और येह हो भी कैसे सकता है जब कि तमाम उ़-लमा का इस बात पर इत्तिफ़ाक़ है कि फ़ज़ीलत उसी इ़ल्म की है जिस पर अ़मल किया जाए तो फिर क्यूं कर येह गुमान किया जाता है कि वोह ज़िहार, लिआ़न, सलम, इजारा, और सर्फ़ का इ़ल्म है और जिस ने इन उमूर को इस निय्यत से सीखा कि इन के ज़रीए़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का क़ुर्ब ह़ासिल कर लेगा तो वोह पागल है। इ़बादात में अ़मल का तअ़ल्लुक़ तो सिर्फ़ दिल और आ'ज़ा से ही है और फ़ज़ीलत भी इन्ही आ'माल की है।

---

1 ......المسند للامام احمد بن حنبل، حدیث وابصة بن معبد، الحدیث: ۱۸۰۲۸، ج۶، ص۲۹۳۔

2 ...क्यूंकि ऐसे शख़्स के दिल पर अस्नाद की मह़ब्बत और कसरते रिवायत ग़ालिब आ जाती है ह़त्ता कि वोह ज़ईफ़ और ग़ैर मुस्तनद रावियों से भी रिवायत करता है। (اتحاف السادة المتقین، کتاب العلم، الباب الثانی، ج۱، ص۲۵۱)

3 ......قوت القلوب، الفصل الحادی الثلاثون: کتاب العلم وتفضیلہ، ذکر فضل علم المعرفة......الخ، ج۱، ص۲۳۳۔

एक सुवाल और इस का जवाब :

अगर तुम येह कहो कि फ़िक़ह और तिब्ब को बराबर क्यूं कर दिया जब कि तिब्ब का तअ़ल्लुक़ भी दुन्या से है और इस से आदमी के बदन की तन्दुरुस्ती है और बदन की तन्दुरुस्ती से भी दीन की बेहतरी का तअ़ल्लुक़ है और येह बराबरी मुसलमानों के इजमाअ़ के ख़िलाफ़ है ? तो इस का जवाब येह है कि इन में बराबरी लाज़िम नहीं आती बल्कि इन के दरमियान फ़र्क़ है ।

फ़िक़ह की तिब्ब पर फ़ज़ीलत :

फ़िक़ह तीन वजह से तिब्ब से अफ़्ज़ल है :

﴿1﴾.....फ़िक़ह इल्मे शरई है क्यूंकि येह अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से ह़ासिल होता है जब कि तिब्ब इल्मे शरई नहीं ।

﴿2﴾.....राहे आख़िरत के सालिकीन में से कोई भी इल्मे फ़िक़ह से बे नियाज़ नहीं हो सकता न मरीज़ और न ही तन्दुरुस्त जब कि इल्मे तिब्ब की ह़ाजत सिर्फ़ बीमारों को होती है और वोह बहुत थोड़े होते हैं ।

﴿3﴾.....इल्मे फ़िक़ह इल्मे त़रीक़े आख़िरत के मुशाबेह है क्यूंकि इस में आ'ज़ा से सादिर होने वाले आ'माल में ग़ौरो फ़िक्र किया जाता है और आ'ज़ा से सादिर होने वाले आ'माल की बुन्याद और मक़्सद सिफ़ाते क़ल्ब हैं । लिहाज़ा उ़म्दा आ'माल वोह हैं जो आख़िरत में नजात दिलाने वाली अच्छी सिफ़ात से सादिर हों और बुरे वोह जो बुरी सिफ़ात से सादिर हों और येह बात मख़्फ़ी नहीं है कि आ'ज़ा का तअ़ल्लुक़ दिल के साथ होता है । बहर ह़ाल तन्दुरुस्ती और बीमारी का मन्शा त़बीअ़त का निखार और ख़ल्त़-मल्त़ हो जाना है और येह बदन के औसाफ़ हैं न कि दिल के । लिहाज़ा जब फ़िक़ह की निस्बत तिब्ब की त़रफ़ की जाए तो फ़िक़ह की फ़ज़ीलत इयां होती है और जब इल्मे त़रीक़े आख़िरत की निस्बत फ़िक़ह की त़रफ़ की जाए तो इल्मे त़रीक़े आख़िरत की फ़ज़ीलत ज़ाहिर हो जाती ।

अब अगर तुम कहो कि इल्मे त़रीक़े आख़िरत की ऐसी तफ़्सील बयान कर दीजिये कि इस के उ़न्वानात की त़रफ़ इशारा हो जाए अगर्चे इस की मुकम्मल तफ़्सील बयान नहीं की जा सकती ।

तो जान लो कि इल्मे त़रीक़े आख़िरत की दो क़िस्में हैं :

(1).....इल्मे मुकाशफ़ा (2).....इल्मे मुआ़मला

तीसरी फ़स्ल : इ़ल्मे त़रीके़ आख़िरत की अक़साम

पहली क़िस्म : इ़ल्मे मुकाशफ़ा है और येह इ़ल्मे बात़िन है जो तमाम उ़लूम की इन्तिहा है। चुनान्चे, एक आ़रिफ़ बिल्लाह का क़ौल है कि "जिसे इस इ़ल्म से हि़स्सा नहीं मिला मुझे उस के बुरे ख़ातिमे का ख़ौफ़ है और इस का कम से कम हि़स्सा येह है कि इसे सच्चा जाने और इस के अहल को तस्लीम करे।"(1)

एक और आ़रिफ़ का क़ौल है कि "जिस में दो (बुरी) ख़स्लतें बिदअ़त और तकब्बुर होंगी उसे इस इ़ल्म से कुछ ह़ासिल नहीं होगा।"(2)

मन्क़ूल है कि जो दुन्या से मह़ब्बत या ख़्वाहिश पर इसरार करेगा वोह इस इ़ल्म की ह़क़ीक़त नहीं पा सकेगा (3) अगर्चे बाक़ी तमाम उ़लूम में महारत ह़ासिल कर ले और इस का इन्कार करने वाले की कम से कम सज़ा येह होगी कि वोह इस में से कुछ न चख पाएगा। इसी पर येह शे'र कहा गया है :

وَارْضِ لِمَنْ غَابَ عَنْكَ غَيْبَتَه   فَذَاكَ ذَنْبٌ عِقَابُهُ فِيْه

तर्जमा : जो तुझ से पोशीदा है उस के पोशीदा रहने पर राज़ी रह तो येह एक ऐसा गुनाह है जिस की सज़ा उसी में है।

इ़ल्मे मुकाशफ़ा का नूर जब दिल में ज़ाहिर होता है तो !

इ़ल्मे मुकाशफ़ा सिद्दीक़ीन और मुक़र्रबीन का इ़ल्म है जो उस नूर का नाम है जो दिल में उस वक़्त ज़ाहिर होता है जब उसे तमाम बुरी सिफ़ात से पाक व साफ़ कर लिया जाए और इस से कसीर उमूर ज़ाहिर होते हैं कि वोह पहले उन के नाम सुना करता था फिर उन के लिये ग़ैर वाज़ेह़ और मुख़्तसर मआ़नी का तसव्वुर क़ाइम करता था और (इस नूर के दिल में ज़ाहिर होने के बा'द) उसे **अल्लाह** तआ़ला उस की बाक़ी रहने वाली कामिल सिफ़ात, उस के अफ़आ़ल की मा'रिफ़त ह़ासिल होती और दुन्या व आख़िरत को पैदा करने में उस की ह़िक्मत मा'लूम होती है। नीज़ येह भी मा'लूम होता है कि ख़ालिके़ काइनात ने आख़िरत को दुन्या पर क्यूं मुरत्तब किया है। नबुव्वत और नबी, वह़्य और शैत़ान, लफ़्ज़े मलाइका और शयात़ीन के मआ़नी मा'लूम होते हैं। शयात़ीन इन्सानों से किस त़रह़ दुश्मनी करते हैं। फ़िरिश्ते नबियों के सामने कैसे ज़ाहिर होते हैं। अम्बिया पर वह़्य कैसे नाज़िल होती है।

---

1 ......قوت القلوب، الفصل الحادی والثلاثون، باب ذکر الفرق بین علماء الدنیا......الخ، ج ۱، ص ۲۹۴۔

2 ......المرجع السابق۔ 3 ......المرجع السابق۔

आस्मानों और ज़मीन के अ़जाइबात, दिल की मा'रिफ़त, फ़िरिश्तों के लश्कर और शैतानों के गुरौह दिल के मुआ़मले में कैसे झगड़ते हैं। फ़िरिश्ते के इल्हाम और शैतान के वस्वसे में क्या फ़र्क़ है। आख़िरत, जन्नत व दोज़ख़, अ़ज़ाबे क़ब्र, पुल सिरात़, मीज़ान और ह़िसाब की मा'रिफ़त ह़ासिल होती है और अल्लाह रब्बुल आ़लमीन के इन इरशादात का मफ़्हूम वाज़ेह़ हो जाता है। (चुनान्चे, इरशादे बारी तआ़ला है :)

اِقْرَاْ كِتٰبَكَ ؕ كَفٰى بِنَفْسِكَ الْيَوْمَ عَلَيْكَ حَسِيْبًا ﴿١٤﴾ (پ۱۵، بنی اسرائیل:۱۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *फ़रमाया जाएगा कि अपना नामा (आ'माल) पढ़ आज तू खुद ही अपना ह़िसाब करने को बहुत है।*

इरशादे बारी तआ़ला है :

وَ اِنَّ الدَّارَ الْاٰخِرَةَ لَهِیَ الْحَیَوَانُ ۘ لَوْ كَانُوْا یَعْلَمُوْنَ ﴿٦٤﴾ (پ۲۱، العنکبوت:۶۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और बेशक आख़िरत का घर ज़रूर वोही सच्ची ज़िन्दगी है क्या अच्छा था अगर जानते।*

और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से मुलाक़ात, दीदारे इलाही, उस का क़ुर्ब पाने और उस के जवारे रह़मत में आने, मुक़र्रब फ़िरिश्तों की रफ़ाक़त और अम्बिया व मलाइका से मुलाक़ात की सआ़दत मिलने और जन्नतियों के दर्जात में तफ़ावत का मफ़्हूम वाज़ेह़ हो जाता है यहां तक कि बा'ज़ जन्नती बा'ज़ को ऐसे देखेंगे जैसे आस्मान के बीच में चमकता सितारा दिखाई देता है इन के इलावा और बे शुमार मा'लूमात जिन की बड़ी तफ़्सील है क्यूंकि इन उमूर के उसूल की तस्दीक़ के बा'द इन्हें समझने में लोगों की ह़ालतें मुख़्तलिफ़ हैं। चुनान्चे, बा'ज़ का ख़याल है कि "येह तमाम मिषालें हैं और जो इन्आ़मात अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने अपने नेक बन्दों के लिये तय्यार फ़रमाए हैं उन्हें न किसी आंख ने देखा, न किसी कान ने सुना और न किसी इन्सान के दिल पर इन का ख़याल गुज़रा। मख़्लूक़ के लिये सिवाए सिफ़ात और नामों के जन्नत में से कुछ नहीं है।" बा'ज़ का ए'तिक़ाद है कि "इन में से कुछ तो मिषालें हैं और कुछ अल्फ़ाज़ से समझे जाने वाले ह़क़ाइक़ के मुवाफ़िक़ हैं।" बा'ज़ का येह गुमान है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की मा'रिफ़त की ह़द येह है कि "उस की मा'रिफ़त से आ़जिज़ होने का इक़रार कर लिया जाए।" बा'ज़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की मा'रिफ़त में बड़ी बड़ी बातों का दा'वा करते हैं। बा'ज़ ने कहा कि "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की मा'रिफ़त की इन्तिहा वोह है जहां तमाम अ़वाम के ए'तिक़ाद की इन्तिहा हो जाती है और वोह येह कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मौजूद है। आ़लिम है। क़ादिर है। सुनता, देखता और कलाम फ़रमाता है।"(1)

(1) ......شعب الایمان للبیهقی، باب فی الایمان باللّٰہ، الحدیث:۱۲۰، ج۱، ص۱۳۶۔

इल्मे मुकाशफ़ा से मक़्सूद :

इल्मे मुकाशफ़ा से हमारी मुराद येह है कि पर्दा उठ जाए और इन उमूर में ह़क़ खुल कर ऐसा वाज़ेह़ हो जाए गोया आंखों से देख रहे हैं और किसी शक व शुबा की गुन्जाइश बाक़ी न रहे और अगर आईनए दिल दुन्या की गन्दगियों के हुजूम से नापाक और ज़ंग आलूद न हो तो येह चीज़ इन्सान के जोहर (या'नी ज़ात) में मुमकिन है और इल्मे त़रीक़े आख़िरत से हमारी मुराद येही है कि ऐसा त़रीक़ा जाना जाए जिस से दिल का आईना इन तमाम ख़बाषतों से पाक व साफ़ हो कर चमक उठे जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ज़ात व सिफ़ात और अफ़्आ़ल की मा'रिफ़त में ह़िजाब हैं।

आईनए दिल की पाकीज़गी और सफ़ाई का ज़रीआ़ :

आईनए दिल की पाकीज़गी और सफ़ाई का ज़रीआ़ येह है कि बन्दा ख़्वाहिशात से रुक जाए और अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के तमाम अह़वाल में उन की पैरवी करे। जिस क़दर दिल की सफ़ाई होती जाएगी और इस में ह़क़ का ह़िस्सा आता जाएगा उसी क़दर इस में ह़क़ाइक़ चमक उठेंगे और येह उस रियाज़त के बिग़ैर नहीं हो सकता जिस की तफ़्सील अपने मक़ाम पर आएगी। इल्मो ता'लीम भी इस का ज़रीआ़ हैं। येह उ़लूम किताबों में नहीं लिखे जाते और जिस पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इन उ़लूम में से कुछ इन्आ़म फ़रमाया हो वोह उन्ही लोगों को बयान करता है जो इस के अहल होते हैं और वोह गुफ़्तगू के ज़रीए़ और राज़दार बन कर इस में शरीक होता है और येही वोह मख़्फ़ी इल्म है जो सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के इस फ़रमान से मुराद है कि "बेशक कुछ उ़लूम छुपे ख़ज़ानों की त़रह़ हैं जिन्हें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की मा'रिफ़त रखने वालों के सिवा कोई नहीं जानता और जब वोह इन उ़लूम की बातें करते हैं तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से धोके में रहने वाले ही इस का इन्कार करते हैं। लिहाज़ा तुम ऐसे किसी आ़लिम को ह़क़ीर न जानो जिसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इन उ़लूम में से कुछ अ़त़ा फ़रमाया हो क्यूंकि जिसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ येह इल्म अ़त़ा फ़रमाता है उसे ह़क़ीर नहीं रहने देता।"[1]

बुरे अफ़्आ़ल की बुन्यादें और नेक आ'माल का सर चश्मा :

(इल्मे त़रीक़े आख़िरत की) **दूसरी क़िस्म :** इल्मे मुआ़मला है और येह दिल के अह़वाल का इल्म है। इन अह़वाल में जो अच्छे हैं : जैसे सब्र, शुक्र, ख़ौफ़, रजा, रिज़ा, ज़ोहद, तक़्वा,

1 ......قوتِ القلوب، الفصل الحادی و الثلاثون، باب ذكر الفرق بين علماء الدنيا......الخ، ج ۱، ص ۲۹۶۔

क़नाअ़त, सख़ावत, हर ह़ाल में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के एह़सानात को पहचानना, एह़सान, हुस्ने ज़न, हुस्ने अख़्लाक़, हुस्ने मुआ़शरत, सच्चाई, इख़्लास, उन अह़वाल की ह़क़ीक़तों की मा'रिफ़त, ता'रीफ़ात और जिन अस्बाब से येह ह़ासिल होते हैं, इन का नतीजा, अ़लामत, इन में जो कमज़ोर हो उस का इ़लाज कि जिस से वोह क़वी हो जाए और जो ख़त्म हो चुके वोह ह़ासिल हो जाएं इन तमाम बातों की मा'रिफ़त इ़ल्मे आख़िरत में से है। उन अह़वाल में जो बुरे हैं : ग़ुर्बत का डर, जो मुक़द्दर में है उस पर ना ख़ुश होना, कीना, बुग़्ज़, ह़सद, धोका, बुलन्दी की ख़्वाहिश, ता'रीफ़ चाहना, दुन्या से लुत्फ़ अन्दोज़ होने के लिये ज़ियादा अ़र्सा ज़िन्दा रहने की ख़्वाहिश, तकब्बुर, रिया, ग़ुस्सा, नफ़रत, अ़दावत, दुश्मनी, लालच, बुख़्ल, ख़्वाहिश, इतराना, इन्तिहाई शरीर होना, सुस्त होना, मालदारों की ता'ज़ीम करना, ग़रीबों को ह़क़ीर जानना, फ़ख़्र करना, ख़ुद पसन्दी, आगे बढ़ने की ख़्वाहिश, हुस्नो जमाल में मुक़ाबला करना, इ़नाद व तकब्बुर की वजह से ह़क़ को न मानना, फ़ुज़ूलियात में ग़ौरो ख़ौज़ करना, ज़ियादा बातें पसन्द करना, शैख़ी मारना, लोगों के लिये ज़ीनत इख़्तियार करना, चापलूसी करना, ग़ुरूर करना, लोगों के ऐ़बों के पीछे पड़ना और अपने एबों को भूल जाना, दिल से रंजो ग़म मिट जाना और ख़ौफ़े ख़ुदा निकल जाना, नफ़्स को जब ज़िल्लत पहुंचे तो उस के लिये शिद्दत से मुक़ाबला करना और ह़क़ की मदद में कमज़ोर रहना, बज़ाहिर दोस्त बना कर दिल में दुश्मनी रखना, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ख़ुफ़्या तदबीर से इस बारे में बे ख़ौफ़ रहना कि जो उस ने अ़ता फ़रमाया वोह सल्ब न कर ले, इ़बादत में सुस्ती करना, फ़रैब, ख़ियानत, धोके बाज़ी और लम्बी उम्मीदें, दिल की सख़्ती, भूंडापन, दुन्या मिलने पर ख़ुश होना और छिन जाने पर अफ़्सोस करना, लोगों के साथ रहने से मानूस होना और इन के जुदा होने से वह़शत व घबराहट मह़सूस करना, बद ख़ुल्क़ व तुन्द मिज़ाज होना, ग़ुस्सा, जल्द बाज़ी, बे शर्मी व बे ह़याई और संगदिली व बे रह़्मी। येह और इस त़रह़ की दीगर मज़्मूम क़लबी सिफ़ात बे ह़याइयों और ह़राम व ममनूअ़ अफ़्आ़ल की बुन्यादें हैं और इन के मुक़ाबिल जो अच्छे अख़्लाक़ हैं वोह त़ाअ़तों और नेकियों का सरचश्मा हैं। इन उमूर की ता'रीफ़ात, ह़क़ीक़तों, अस्बाब, नताइज और इ़लाज का इ़ल्म इ़ल्मे आख़िरत है और उ़-लमाए आख़िरत के फ़तवे के मुत़ाबिक़ फ़र्ज़े ऐ़न है। इन से ए'राज़ करने वाला आख़िरत में क़हरे इलाही से हलाक होगा जैसा कि उ़-लमाए दुन्या के फ़तवे के मुत़ाबिक़ ज़ाहिरी आ'माल से ए'राज़ करने वाला दुन्यवी बादशाहों की तलवारों से हलाक होता है।

फ़र्ज़े ऐन में फ़ुक़हा की नज़र दुन्यवी मफ़ाद की निस्बत से होती है जब कि येह इ़ल्मे आख़िरत की बेहतरी के लिये है। अगर किसी फ़क़ीह से इन सिफ़ात में से किसी का मा'ना पूछा जाए ह़त्ता कि अगर मिषाल के त़ौर पर इख़्लास या तवक्कुल या रियाकारी से बचने की सूरत ही के मुतअ़ल्लिक़ पूछ लिया जाए तो वोह बताने में ज़रूर तवक़्क़ुफ़ करेगा ह़ालांकि येह उस पर फ़र्ज़े ऐन है और इस से ग़फ़्लत बरतने में आख़िरत में उस की हलाकत व बरबादी है। अगर इस से लिआ़न, ज़िहार, घोड़ दौड़ और तीर अन्दाज़ी के बारे में पूछा जाए तो वोह इस की बारीक व दक़ीक़ कई जुज़्इय्यात बयान कर दे कि कई ज़माने गुज़र जाएं मगर इन की ज़रूरत न पड़े और अगर ज़रूरत पड़े भी तो शहर इन के जानने वालों से ख़ाली न होगा और वोह इसे मशक़्क़त से बचा लेगा तो येह इन जुज़इय्यात में रात दिन मशक़्क़त उठाता रहेगा और इन्हें याद करने और पढ़ने में मश्ग़ूल हो कर उस से ग़ाफ़िल हो जाएगा जो दीन के मुआ़मले में उस के लिये अहम है। अगर इस बारे में इस से रुजूअ़ किया जाए तो कहेगा कि मैं इस में इस लिये मश्ग़ूल हुवा हूं कि येह इ़ल्मे दीन और फ़र्ज़े किफ़ाया है। इस त़रह़ येह ख़ुद को और दूसरों को इस के सीखने में धोका देता है। ह़ालांकि आ़क़िल जानता है कि अगर इस से उस का मक़सद फ़र्ज़े किफ़ाया में अपना ह़क़ अदा करना होता तो वोह ज़रूर फ़र्ज़े ऐन को इस पर मुक़द्दम करता। बल्कि वोह तो कई फ़र्ज़े किफ़ाया पर इसे मुक़द्दम किये हुए होता है कि कितने ही शहर ऐसे हैं कि जिन में ज़िम्मी कुफ़्फ़ार के सिवा कोई मुस्लिम त़बीब नहीं ह़ालांकि अत़िब्बा के मुतअ़ल्लिक़ जो फ़िक़्ही अह़काम हैं इन में कुफ़्फ़ार की गवाही क़बूल नहीं फिर भी हम देखते हैं कि कोई भी इसे सीखने में मश्ग़ूल नहीं होता और इ़ल्मे फ़िक़्ह बिलख़ुसूस इख़्तिलाफ़ी और निज़ाई मसाइल में बड़ी दिलचस्पी लेते हैं ह़ालांकि शहर ऐसे फ़ुक़हा से भरे पड़े हैं जो फ़तवा देने और नौपैद मसाइल का ह़ल बताने में मसरूफ़ हैं। काश ! मैं जान लूं कि उ़-लमाए दीन इस फ़र्ज़े किफ़ाया को सीखने की कैसे इजाज़त देते हैं जिसे एक गुरोह क़ाइम रखे हुए है और उसे छोड़ने की कैसे रुख़्सत देते हैं जिसे क़ाइम करने वाला कोई एक भी नहीं ? इस का सबब इस के सिवा कोई नहीं कि त़िब्ब के ज़रीए अवक़ाफ़ व वसिय्यतों का मुतवल्ली होना, यतीमों के माल का मुह़ाफ़िज़ बनना, क़ाज़ी व ह़ाकिम बनना और इस के ज़रीए अपने हम ज़माना लोगों से आगे बढ़ना और दुश्मनों पर ग़लबा पाना मुयस्सर नहीं।

हाए अफ़्सोस ! उ़-लमाए सू (या'नी बुरे उ़-लमा) के धोके की वजह से इ़ल्मे दीन नापैद हो गया। हम अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ही से मदद त़लब करते हैं और उसी से इल्तिजा करते हैं कि हमें उस धोके से पनाह में रखे जिस में रह़मान عَزَّوَجَلَّ की नाराज़ी और शैत़ान की ख़ुशी है।

मुत्तक़ीन उ़-लमाए ज़ाहिर की आ़जिज़ी :

उ़-लमाए ज़ाहिर में से अहले तक़्वा उ़-लमाए बात़िन और दिल वालों की फ़ज़ीलत के मो'तरिफ़ थे। चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना **इमाम शाफ़ेई** عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْکَافِی शैबान राई के सामने इस त़रह़ बैठते जिस त़रह़ त़ालिबे इल्म मक्तब में बैठता है और पूछते कि "इस इस मुआ़मले का हुक्म क्या है ?" किसी ने आप رَحْمَۃُاللہِ تعَالٰی عَلَیْہ से अ़र्ज़ की : "हुज़ूर ! आप जैसा अ़ज़ीम शख़्स इस बदवी से पूछता है ?" फ़रमाया : "बेशक इसे उस चीज़ की तौफ़ीक़ मिली है जिस से हम ग़ाफ़िल हैं।"(1)

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अह़मद बिन ह़म्बल عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْاَوَّل और ह़ज़रते सय्यिदुना यह़्या बिन मईन عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْمُبِیْن ह़ज़रते सय्यिदुना **मा'रूफ़ करख़ी** عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْقَوِی के पास आते जाते और उन से मसाइल पूछते थे ह़ालांकि वोह इल्मे ज़ाहिर में इन दोनों के हम मर्तबा नहीं थे और ऐसा क्यूंकर न हो कि जब आक़ाए दो आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में अ़र्ज़ की गई कि अगर हमें कोई ऐसा मुआ़मला दरपेश हो जिस का हुक्म किताब व सुन्नत में न पाएं तो क्या करें ?" आप صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "नेक लोगों से पूछ लिया करो और उन से मश्वरा किया करो।"(2)

इसी वजह से कहा गया है कि उ़-लमाए ज़ाहिर ज़मीन और मुल्क की ज़ीनत हैं जब कि उ़-लमाए बात़िन आस्मानों और मलकूत की ज़ीनत हैं।(3)

इल्मे ह़दीष के बा'द इल्मे तसव्वुफ़ ह़ासिल करो :

ह़ज़रते सय्यिदुना जुनैद बग़दादी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْھَادِی फ़रमाते हैं : एक दिन मुझ से मेरे शैख़ ह़ज़रते सय्यिदुना सीरी सक़त़ी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْقَوِی ने इस्तिफ़सार फ़रमाया कि "जब तुम मेरे पास से जाते हो तो किस की मजलिस इख़्तियार करते हो ?" मैं ने अ़र्ज़ की : "मुह़ासिबी की।" फ़रमाया : "ठीक है, उन से इल्मो अदब सीखना और वोह इल्मे कलाम और मुतकल्लिमीन का जो रद करें उसे छोड़ देना। जब मैं लौटने लगा तो इन्हें फ़रमाते सुना कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुझे

---

1 ......قوت القلوب، الفصل الحادی والثلاثون، باب ذکرالفرق بین علماء الدنیا......الخ، ج ۱، ص ۲۷۰۔

2 ......جامع بیان العلم وفضلہ، باب اجتھادالرأی علی الاصول، الحدیث:۱۶۹۱، ص ۳۲۱۔

قوت القلوب الفصل الحادی والثلاثون، باب ذکرالفرق بین علماء الدنیا......الخ، ج ۱، ص ۲۷۱۔

3 ......قوت القلوب، الفصل الحادی والثلاثون، باب ذکرالفرق بین علماء الدنیا......الخ، ج ۱، ص ۲۷۰۔

ह़दीष वाला सूफ़ी बनाए और ऐसा सूफ़ी न बनाए जो (बा'द में इ़ल्म) ह़दीष ह़ासिल करे।"(1)

इस में इस बात की त़रफ़ इशारा है कि जो ह़दीष और इ़ल्म ह़ासिल करने के बा'द सूफ़ी बना वोह कामयाब है और जो इ़ल्म ह़ासिल करने से पहले ही सूफ़ी बन बैठा उस ने अपने आप को ख़त़रे में डाल दिया।

एक सुवाल और इस का जवाब :

अगर तुम कहो कि इ़ल्मे कलाम और फ़लसफ़ा को उ़लूम की अक़्साम में क्यूं बयान नहीं किया और इस बात की वज़ाह़त क्यूं नहीं की, कि येह दोनों अच्छे हैं या बुरे ? तो इस का जवाब येह है कि इ़ल्मे कलाम जिन मुफ़ीद दलाइल पर मुश्तमिल होता है उन का ह़ासिल कु़रआने पाक और अह़ादीषे मुबारका में मौजूद होता है और जो इन दोनों से ख़ारिज है वोह या तो बुरा झगड़ा है और वोह बिदअ़तें हैं जिन्हें अ़न क़रीब बयान किया जाएगा या मुख़्तलिफ़ फ़िर्क़ों के इख़्तिलाफ़ात से मुतअ़ल्लिक़ लड़ाई झगड़े की बातें हैं और इन मक़ालात को नक़्ल करना (बिला वजह) किताब को तूल देना है कि येह अकषर उन लग़्वियात और बेहूदा बातों पर मुश्तमिल होते हैं जिन्हें त़बीअ़तें ह़क़ीर समझती और कान इन से बेज़ार हैं। बा'ज़ इन में से वोह हैं कि जिन में ग़ौरो ख़ौज़ करने का दीन से कोई वासित़ा नहीं और न ही वोह सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن के ज़माने में थीं नीज़ इन में ग़ौरो ख़ौज़ करना मुकम्मल त़ौर पर बिदअ़त था लेकिन अब इन का हुक्म बदल चुका है क्यूंकि कु़रआन व ह़दीष के तक़ाज़ो से फैरने वाली बिदअ़तें पैदा हो चुकी हैं और एक गुरौह ऐसा ज़ाहिर हुवा है कि जिस ने बिदअ़त में झूट घड़ लिये और इस में कलाम मुरत्तब कर लिये जिस की वजह से इस ममनूअ़ काम की ज़रूरत की बिना पर इजाज़त दी गई बल्कि येह फ़र्ज़े किफ़ाया है लेकिन इतनी मिक़्दार में कि जब बिदअ़ती बिदअ़त की त़रफ़ माइल करे तो उस का मुक़ाबला किया जा सके और इस की एक ख़ास ह़द है जिसे اِنْ شَآءَ الله عَزَّوَجَلَّ हम आयन्दा बाब में बयान करेंगे।

फ़लसफ़ा और इस की अक़्साम :

जहां तक फ़लसफ़े का मुआ़मला है तो येह मुस्तक़िल इ़ल्म नहीं बल्कि इस के चार ह़िस्से हैं :

﴾1﴿......**हिन्दसा और ह़िसाब :** येह दोनों जाइज़ हैं जैसा कि गुज़र चुका है, इन से सिर्फ़ उसी

---

1 ......قوت القلوب، الفصل الحادی والثلاثون، باب ذکر الفرق بین علماء الدنیا......الخ، ج ۱، ص ۲۷۱۔
تاریخ دمشق لابن عساکر، علی بن ابراھیم بن یوسف:۴۸۰۳، ج ۴۱، ص ۲۵۲۔

को रोका जाएगा जिस के बारे में डर हो कि वोह इन से बुरे उ़लूम की त़रफ़ चला जाएगा क्यूंकि इन में महारत रखने वाले अकषर लोग इन से निकल कर बिदअ़तों की त़रफ़ चले गए, इस लिये जो कमज़ोर (ईमान वाला) है उसे हिन्दसा और ह़िसाब से रोका जाएगा इस लिये नहीं कि येह उ़लूम बुरे हैं बल्कि जिस त़रह़ बच्चे को नह्र में गिर जाने के ख़ौफ़ से नह्र के कनारे खड़ा होने से रोका जाता है और नौ मुस्लिम को कुफ़्फ़ार की सोह़बत से मह़ज़ डर की वजह से रोका जाता है और जो मज़बूत़ (ईमान वाला) है वोह ख़ुद ही इन से मिलना अच्छा नहीं समझता।

﴾2﴿......**मन्त़िक़ :** इस में दलील व ता'रीफ़ और इन की शराइत़ से बह़ष की जाती है और येह दोनों बातें इ़ल्मे कलाम में दाख़िल हैं।

﴾3﴿......**इलाहियात :** इस में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ज़ात व सिफ़ात के मुतअ़ल्लिक़ बह़ष की जाती है और येह भी इ़ल्मे कलाम में दाख़िल है। फ़लासफ़ा ने इस के लिये इ़ल्म की अ़लाहिदा क़िस्म नहीं बनाई बल्कि इन के मज़हब अलग अलग हैं इन में से कुछ तो अहले कुफ़्र हैं और कुछ बिदअ़ती। जिस त़रह़ ए'तिज़ाल एक मुस्तक़िल इ़ल्म नहीं बल्कि मो'तज़लीन व मुतकल्लिमीन ही का एक गुरोह है और बह़ष व नज़र वालों ने अलग बात़िल मज़ाहिब बना लिये हैं इसी त़रह़ फ़लासफ़ा का मुआ़मला है।

﴾4﴿......**त़बइय्यात :** इस की बा'ज़ क़िस्में शरीअ़त और दीने ह़क़ के ख़िलाफ़ हैं जिस की वजह से वोह इ़ल्म नहीं बल्कि जहालत है। लिहाज़ा उन्हें उ़लूम की अक़्साम में बयान नहीं किया जा सकता। त़बइय्यात की बा'ज़ अक़्साम में जिस्मों की सिफ़ात, इन के ख़वास और इन के तग़य्युर व तबद्दुल की कैफ़िय्यत के बारे में बह़ष होती है और येह ऐसी है जैसे अत़िब्बा ग़ौरो फ़िक्र करते हैं मगर येह की त़बीब ख़ास बदने इन्सानी को बीमारी व सिह़ह़त की जहत से देखता है जब कि त़बइय्यात वाले तमाम अजसाम को इन के तग़य्युर व तबद्दुल के ए'तिबार से देखते हैं। लेकिन इ़ल्मे त़िब्ब त़बइय्यात से अफ़्ज़ल है क्यूंकि इस की ज़रूरत पड़ती है जब कि त़बइय्यात के उ़लूम की ज़रूरत नहीं होती।

इ़ल्मे कलाम की ह़ैषिय्यत :

इस तमाम गुफ़्तगू से पता चला कि इ़ल्मे कलाम उन पेशों में से है जो फ़र्ज़े किफ़ाया हैं ताकि अ़वाम के दिलों को बिदअ़तियों के तख़य्युलात से मह़फ़ूज़ रखा जा सके और येह इ़ल्म बिदअ़तों के ज़ुहूर की वजह से ज़ाहिर हुवा जैसा कि राहे ह़ज में अहले अ़रब के ज़ुल्म व ज़ियादती

और लूट मार की वजह से मुहा़फ़िज़ को किराए पर लेने की ज़रूरत पड़ी और अगर अ़रब ज़ुल्म व ज़ियादती छोड़ दें तो राहे ह़ज में मुहा़फ़िज़ को किराए पर लेना शर्त़ न रहेगा। इसी त़रह़ अगर बिदअ़ती अपनी बकवास तर्क कर दे तो इस से ज़ियादा इ़ल्म की ज़रूरत न रहेगी जितना सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہِمۡ اَجۡمَعِیۡن के ज़माने में था। लिहाज़ा इ़ल्मे कलाम वाले को जान लेना चाहिये कि इस इ़ल्म के दीन होने की येही ह़द है और इस की हैषिय्यत वोही है जो राहे ह़ज में मुहा़फ़िज़ की है तो जिस त़रह़ मुहा़फ़िज़ मह़ज़ ह़िफ़ाज़त कर के ह़ाजी नहीं बन जाएगा इसी त़रह़ इ़ल्मे कलाम वाला अगर सिर्फ़ मुनाज़िरे और लोगों का बचाव ही करता रहा, न राहे आख़िरत तै़ किया और न ही दिल की ह़िफ़ाज़त व इस्लाह़ की तो हरगिज़ वोह आ़लिमे दीन नहीं बन सकेगा। दीन में से उस के पास सिर्फ़ अ़क़ीदा ही है जो आ़म लोगों के पास भी है येह तो दिल और ज़बान के ज़ाहिरी आ'माल में से है। इस में और आ़म लोगों में फ़र्क़ सिर्फ़ येही है कि येह हिफ़ाज़त कर सकता और मुख़ालिफ़ से बह़षो मुबाह़षा कर सकता है और रहा मुआ़मला अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ज़ात व सिफ़ात और अफ़्आ़ल की मा'रिफ़त और उन तमाम बातों का जिन्हें हम ने इ़ल्मे मुकाशफ़ा में बयान किया तो येह इ़ल्मे कलाम से ह़ासिल नहीं होतीं बल्कि येह इस में ह़िजाब और रूकावट का बाइ़ष बन सकती हैं इन तक रसाई तो मुजाहदे के ज़रीए़ हो सकती है जिसे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने हिदायत के लिये पेश ख़ैमा क़रार दिया है। चुनान्चे, इरशादे बारी तआ़ला है :

وَالَّذِيْنَ جَاهَدُوْا فِيْنَا لَنَهْدِيَنَّهُمْ سُبُلَنَا ؕ وَاِنَّ اللّٰهَ لَمَعَ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٦٩﴾

(پ ۲۱، العنکبوت:۶۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और जिन्हों ने हमारी राह में कोशिश की ज़रूर हम उन्हें अपने रास्ते दिखा देंगे और बेशक अल्लाह नेकों के साथ है।*

एक सुवाल और इस का जवाब :

अगर तुम कहो कि तुम ने मुतकल्लिम की ता'रीफ़ येह की, कि मुतकल्लिम वोह होता है जो अ़वाम के अ़क़ीदे को बिदअ़तियों के उलझाव से बचाता है जिस त़रह़ मुहा़फ़िज़ की ता'रीफ़ येह है कि वोह ह़ुज्जाज की सफ़र व ह़ज़र की ज़रूरियात को अ़रब की लूट मार से बचाता है और फ़क़ीह की ता'रीफ़ येह की, कि फ़क़ीह वोह होता है जो उस क़ानून का ह़ाफ़िज़ होता है जिस के ज़रीए़ बादशाह लोगों से ज़ालिमों के ज़ुल्म को रोकता है और येह दोनों मर्तबे इ़ल्मे दीन के मर्तबे से कम हैं जब कि उम्मत के उ़-लमा जो फ़ज़ीलत में मश्हूर हैं वोह फ़ुक़हा और मुतकल्लिमीन ही हैं और वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के हां लोगों में सब से अफ़्ज़ल हैं फिर इन का मर्तबा इ़ल्मे दीन

के मुक़ाबले में क्यूंकर कम हो सकता है ? इस का जवाब येह है कि जो ह़क़ की पहचान बन्दों के ज़रीए करता है वोह गुमराही के जंगलों में भटकता है। इस लिये अगर तू राहे ह़क़ का मुसाफ़िर है तो ह़क़ को पहचान, अहले ह़क़ को भी पहचान जाएगा और अगर तू तक़लीद व पैरवी पर क़नाअ़त करता और लोगों के दरमियान फ़ज़ीलत के मश्हूर दर्जात को देखता है तो ह़ज़राते सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھُم के बुलन्द मरातिब से बे ख़बर न रह। जिन लोगों (या'नी फ़ुक़हा व मुतकल्लिमीन) का तुम ने ज़िक्र किया है वोह सब इस बात पर मुत्तफ़िक़ हैं कि ह़ज़राते सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھُم का मक़ाम व मर्तबा सब से बढ़ कर है और दीन में कोई इन के मर्तबे को तो क्या इन की गर्दे राह को भी नहीं पा सकता।

सह़ाबए किराम عَلَیۡھِمُ الرِّضۡوَان की अफ़्ज़लिय्यत का एक सबब :

सह़ाबए किराम رِضۡوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡھِمۡ اَجۡمَعِیۡن को बुलन्द मक़ाम व मर्तबा इ़ल्मे कलाम या इ़ल्मे फ़िक़्ह की वजह से नहीं बल्कि इ़ल्मे आख़िरत और त़रीक़े आख़िरत पर चलने की वजह से ह़ासिल हुवा है। अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ तमाम लोगों पर न तो कषरते सोमो सलात या कषरते रिवायत की वजह से अफ़्ज़ल हुए और न ही फ़तवा देने या इ़ल्मे कलाम की वजह से बल्कि उस चीज़ की वजह से अफ़्ज़ल हैं जो उन के सीने में रासिख़ थी जैसा कि ख़ुद सरवरे काइनात, शाहे मौजूदात صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इस बात की शहादत दी।[1]

लिहाज़ा तुम्हें उस राज़ की तलाश व जुस्तजू में ह़रीस होना चाहिये क्यूंकि वोह उ़म्दा जौहर और छुपा हुवा मोती है और उस चीज़ को ख़ुद से दूर कर दो जिसे अकषर लोग मुत्तफ़िक़ा त़ौर पर कुछ ऐसे अस्बाब और वुजूहात की बिना पर अफ़्ज़ल व अ़ज़ीम समझते हैं जिन की लम्बी तफ़्सील है। बेशक **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के विसाले ज़ाहिरी के वक़्त हज़ारों सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھُم थे जो तमाम के तमाम ज़ाते बारी तआ़ला की मा'रिफ़त रखने वाले थे। इन में से कोई एक भी इ़ल्मे कलाम का माहिर न था और न ही सिवाए दस से कुछ ज़ाइद सह़ाबए किराम عَلَیۡھِمُ الرِّضۡوَان के किसी ने अपने आप को फ़तवा देने के लिये मुक़र्रर कर रखा था यहां तक कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھُمَا से जब कोई मस्अला पूछा जाता तो फ़रमाते : "फ़ुलां ह़ाकिम के पास जाओ जिस ने लोगों के मुआ़मलात का ज़िम्मा ले रखा है। येह बोझ उसी की गर्दन पर डालो।"[2] इस में इस बात की त़रफ़ इशारा है कि क़ज़ा या और अह़काम में फ़तवा देने उमूरे सल्त़नत और उमूरे ह़ाकिमिय्यत में से है।

---

1 ......المقاصد الحسنة، حرف الميم، الحديث: ٩٧٠، ص ٣٧٦، باختصار۔

2 ......قوت القلوب، الفصل الحادی و الثلاثون: كتاب العلم و تفضيله، باب ذكر فضل علم المعرفة، ج ١، ص ٢٢٨۔

इल्म के दस हि़स्सों में से नव हि़स्से उठ गए :

जब अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہُ का विसाल हुवा तो ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : ''इ़ल्म के दस हि़स्सों में से नव हि़स्से उठ गए।'' किसी ने अ़र्ज़ की : ''हुज़ूर ! येह आप क्या फ़रमा रहे हैं। हमारे दरमियान जलीलुल क़द्र सहा़बा मौजूद हैं ?'' तो आप رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : ''मैं फ़तवा और अह़काम के इ़ल्म की बात नहीं कर रहा बल्कि मेरी मुराद मा'रिफ़ते इलाही है।''(1)

तुम्हारा क्या ख़याल है कि क्या इन्हों ने इ़ल्मे कलाम व जदल मुराद लिया था ? (नहीं) तो फिर तुम्हें क्या हुवा कि तुम उस इ़ल्म को जानने के ह़रीस क्यूं नहीं बनते जिस के दस में से नव हि़स्से विसाले उ़मर के साथ रुख़्सत हो गए और अमीरुल मोअमिनीन رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہُ ने तो इ़ल्मे कलाम व जदल का दरवाज़ा बन्द कर दिया था और जब ह़ज़रते ज़बीअ़ ने आप رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہُ से कुरआने पाक की दो आयतों में तआ़रुज़ के बारे में सुवाल किया तो आप ने उन्हें कोड़े से मारा और उन से कलाम करना बन्द कर दिया बल्कि लोगों को भी इस का हुक्म दिया।

बहर ह़ाल तुम्हारा येह कहना कि उ़-लमाए उम्मत में से मशहूर फुक़हा और मुतकल्लिमीन हैं तो येह बात याद रखो कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में अफ़्ज़ल होना और बात है और लोगों के दरमियान मश्हूर होना और बात।

शैख़ैने करीमैन رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہُمَا की शोहरत व फ़ज़ीलत :

अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہُ मश्हूर तो ख़िलाफ़त की वजह से हुए लेकिन अफ़्ज़ल उस राज़ की वजह से हुए जो इन के दिल में रासिख़ था और अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہُ की शोहरत तो हुकूमत की वजह से है मगर फ़ज़ीलत उस इ़ल्म की वजह से है जिस के दस में से नव हि़स्से इन की वफ़ात के साथ उठ गए। नीज़ हुकूमत और लोगों पर अ़द्ल व शफ़्क़त करने से आप رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہُ का मक़्सूद कुर्बे इलाही का ह़ुसूल था और येह एक बात़िनी मुआ़मला है जो आप के दिल में था। इस वस्फ़ के इलावा आप رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہُ के बाक़ी अफ़्आ़ल इ़ज़्ज़त व नाम और शोहरत चाहने वालों से भी सादिर हो सकते हैं।

---

1 ......المعجم الكبير، الحديث: ٨٨١٠، ج٩، ص١٦٣، باختصارٍ۔

शोहरत और फ़ज़ीलत में फ़र्क़ :

शोहरत उस में होती है जो हलाकत व बरबादी का सबब होता है और फ़ज़ीलत उस की वजह से होती है जो एक राज़ होता है जिस की किसी को ख़बर नहीं होती।

फ़ुक़हा और मुतकल्लिमीन की अक़्साम :

फ़ुक़हा और मुतकल्लिमीन बादशाहों, क़ाज़ियों और उ़-लमा की मिष्ल हैं और इन की कई अक़्साम हैं। बा'ज़ का अपने इ़ल्म व फ़तवे से मक़्सूद **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा व ख़ुश्नूदी ह़ासिल करना और हु़ज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नत की ह़िफ़ाज़त करना होता है वोह न रियाकारी करते हैं और न ही शोहरत की ख़्वाहिश रखते हैं। इन्हीं से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ राज़ी होता है और येह बारगाहे इलाही में इस वजह से मक़्बूल होते हैं कि अपने इ़ल्म के मुत़ाबिक़ अ़मल करते हैं और फ़तवा व दलील से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ज़ियादा ख़ुश्नूदी चाहते हैं।

अ़मल का दारोमदार निय्यत पर है :

हर इ़ल्म अ़मल है क्यूंकि इ़ल्म एक फ़े'ल है जिसे ह़ासिल किया जाता है लेकिन हर अ़मल इ़ल्म नहीं। त़बीब अगर रिज़ाए इलाही की ख़ात़िर काम करे तो अपने इ़ल्म से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का क़ुर्ब ह़ासिल कर सकता है और इस पर उसे षवाब भी मिलेगा। बादशाह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की मख़्लूक़ के दरमियान वासित़ा होता है वोह भी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का पसन्दीदा बन्दा बन सकता और उस की बारगाह से अज्रो षवाब ह़ासिल कर सकता है इस वजह से नहीं कि वोह इ़ल्मे दीन का ज़िम्मेदार है बल्कि इस वजह से कि वोह अपने इ़ल्म के मुत़ाबिक़ ऐसा अ़मल करे जिस से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का क़ुर्ब मक़्सूद हो।

जिन आ'माल से क़ुर्बे इलाही ह़ासिल होता है :

जिन आ'माल से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का क़ुर्ब ह़ासिल होता है वोह तीन क़िस्म के हैं : (1)....**मह़ज़ इ़ल्म :** और येह इ़ल्मे मुकाशफ़ा है (2).....**मह़ज़ अ़मल :** इस की मिषाल बादशाह का अ़द्ल व इन्साफ़ के साथ लोगों के मुआ़मलात का इन्तिज़ाम करना है। (3).....**इ़ल्मो अ़मल का मुरक्कब :** इस से मुराद इ़ल्मे त़रीक़े आख़िरत है क्यूंकि ऐसा शख़्स आ़लिम भी होता है और आ़मिल भी। अब तुम अपने बारे में ग़ौर कर लो कि तुम क़ियामत के दिन मह़ज़ उ़-लमा के गुरौह में शामिल होना चाहते हो या आ़मिलीन के गुरौह में या दोनों के। पस तुम इन में से हर एक के साथ अपना ह़िस्सा तक़्सीम कर लो येह तुम्हारे लिये मह़ज़ शोहरत के लिये पैरवी करने से ज़ियादा अहम है।

जैसा कि किसी ने क्या खूब कहा है :

خُذْ مَا تَرَاهُ وَدَعْ شَيْئًا سَمِعْتَ بِهٖ　　فِيْ طَلْعَةِ الشَّمْسِ مَا يُغْنِيْكَ عَنْ زُحَلٍ

तर्जमा : जिसे तुम देखते हो उसे इख़्तियार करो और जो सुनते हो उसे छोड़ दो सूरज तुलूअ़ है तो ज़ुह़ल (सय्यारे) की क्या ह़ाजत है।

अब मैं फ़ुक़हाए सलफ़ की सीरत के चन्द वोह गोशे बयान करूंगा जिन से तुम्हें मा'लूम हो जाएगा कि जिन लोगों ने खुद को उन के मज़हब की त़रफ़ ग़लत़ मन्सूब कर रखा है उन्हों ने इन पर ज़ुल्म किया है और बरोज़े क़ियामत येह उन के सख़्त मुख़ालिफ़ होंगे क्यूंकि इल्म से इन का मक़्सूद मह़ज़ रिज़ाए इलाही का ह़ुसूल था और इन के जो अह़वाल मा'लूम हुए हैं वोह हैं जो उ़-लमाए आख़िरत की अ़लामात में से हैं जैसा कि उ़-लमाए आख़िरत की अ़लामत के बाब में बयान होगा। उन्हों ने अपने आप को मह़ज़ इल्मे फ़िक़्ह में नहीं लगा रखा था बल्कि वोह इल्मे कुलूब में भी मश्ग़ूल थे और इन की निगरानी करते थे लेकिन इन्हें इस इल्म की तदरीस व तस्नीफ़ से उस चीज़ ने रोक रखा था जिस ने सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن को फ़िक़्हा से बाज़ रखा था ह़ालांकि वोह इल्मे फ़तवा में कामिल फ़ुक़हा थे। मवानेअ़ व बवाइष यक़ीनन होते हैं उन्हें बयान करने की ज़रूरत नहीं।

अब मैं फ़ुक़हाए इस्लाम के वोह अह़वाल बयान करूंगा जिन से तुम्हें मा'लूम होगा कि हमारा बयान कर्दा कलाम इन पर नहीं बल्कि उन लोगों पर ता'न है जिन्हों ने अपने आप को इन की पैरवी में मश्हूर कर रखा और इन के मज़हब व मस्लक की त़रफ़ मनसूब कर रखा है ह़ालांकि वोह आ'माल व सीरत में इन से यकसर मुख़्तलिफ़ नज़र आते हैं।

मुक़्तदा व पेशवा फ़ुक़हा :

वोह फ़ुक़हाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام जो फ़िक़्ह के इमाम और मख़्लूक़ के मुक़्तदा व पेशवा हैं या'नी जिन के मज़ाहिब के पैरूकार कषीर हैं, पांच हैं : (1) .... ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन इदरीस शाफ़ेई (2) .... ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक (3) .... ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अह़मद बिन ह़म्बल (4) .... ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा और (5) .... ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान षौरी (رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن)

इन में से हर एक आ़बिदो ज़ाहिद, उ़लूमे आख़िरत का आ़लिम, लोगों के दुन्यवी मनाफ़ेअ़ का फ़क़ीह और अपनी फ़िक़्ह से रिज़ाए इलाही चाहने वाला था और मौजूदा ज़माने के फ़ुक़हा ने इन पांच ख़स्लतों में से सिर्फ़ एक ख़स्लत या'नी फ़िक़्ह की जुज़इय्यात में मेह़नत व मुबालग़ा में इन की पैरवी की है। क्यूंकि बाक़ी चार ख़स्लतें सिर्फ़ आख़िरत के लिये नफ़्अ़ मन्द हैं और येह एक ख़स्लत आख़िरत के साथ साथ दुन्या के लिये भी नफ़्अ़ मन्द है। अगर इस से आख़िरत की निय्यत की जाए तो दुन्यवी नफ़्अ़ कम हो जाता है। मौजूदा ज़माने के फ़ुक़हा ने इस ख़स्लत के लिये ख़ूब कोशिश की और इस के सबब उन अइम्माए दीन के मुशाबेह होने का दा'वा किया। हाए अफ़्सोस ! मलाइका को लोहारों पर क़ियास किया गया। अब मज़कूरा पांचों फ़ुक़हा के वोह अह़वाल बयान किये जाते हैं जो चार ख़स्लतों पर दलालत करते और फ़िक़्ह में इन का मक़ाम व मर्तबा सब को मा'लूम है।

सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِى के फ़ज़ाइल व मनाक़िब

﴾1﴿.....इबादत व रियाज़त :

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِى ने रात को तीन हिस्सों में तक़्सीम कर रखा था : एक तिहाई इल्म के लिये, एक तिहाई इबादत के लिये और एक तिहाई आराम के लिये।(1)

ह़ज़रते सय्यिदुना रबीअ़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَدِيْع फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِى माहे रमज़ान में 60 कुरआने पाक ख़त्म करते थे और सब नमाज़ में ख़त्म करते।(2) आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के एक शागिर्द बुवैती़ माहे रमज़ान में हर दिन एक कुरआने पाक पढ़ा करते थे।(3)

तमाम मुसलमानों के लिये रह़मत व नजात की दुआ़ :

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन कराबीसी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَلِى बयान करते हैं कि मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِى के साथ कई रातें गुज़ारी हैं। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه तक़रीबन एक तिहाई रात नमाज़ पढ़ते थे और मैं ने इन्हें 50 से ज़ियादा आयात पढ़ते नहीं देखा, अगर ज़ियादा पढ़ते तो 100 पढ़ लेते और किसी भी आयते रह़मत पर पहुंचते तो बारगाहे इलाही

---

1 ......حلیۃ الاولیاء، الامام الشافعی، الحدیث: ۱۳۳۳۱، ج۹، ص ۱۴۳۔

2 ......حلیۃ الاولیاء، الامام الشافعی، الحدیث: ۱۳۳۲۶، ج۹، ص ۱۴۲۔

3 ......تاریخ دمشق لابن عساکر، محمد بن ادریس الشافعی: ۲۰۷۱، ج ۵۱، ص ۳۹۳۔

में अपने लिये और तमाम मुसलमानों के लिये रह़मत की दुआ़ मांगते और जब भी कोई अ़ज़ाब (के तज़्किरे) वाली आयत पढ़ते तो इस से पनाह मांगते फिर अपने और तमाम मुसलमानों के लिये इस से नजात मांगते थे[1] गोया इन के लिये ख़ौफ़ व रजा को इकठ्ठा कर दिया गया था। पस तुम देखो कि 50 आयात पर इक्तिसार करना ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْكَافِى के कुरआने अ़ज़ीम के असरार पर गहरी नज़र और इस में ग़ौरो फ़िक्र करने पर दलील है।

शिकम सैरी की आफ़ात :

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْكَافِى फ़रमाते हैं : "मैं ने 16 साल से सैर हो कर खाना नहीं खाया क्यूंकि शिकम सैरी बदन को भारी और दिल को सख़्त कर देती, अ़क़्ल को ज़ाइल करती, नींद लाती और इ़बादत में कमज़ोरी का बाइ़ष है।[2] [3]

तुम ग़ौर करो कि आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने कैसी ह़िक्मत के साथ शिकम सैरी की आफ़ात बयान फ़रमाई। फिर इ़बादत में इन की कोशिश को देखो कि इ़बादत की वजह से शिकम सैरी से कनारा कश हो गए क्यूंकि इ़बादत की बुन्याद कम खाने पर है।

अ़ज़मते इलाही :

मज़ीद फ़रमाते हैं कि "मैं ने कभी भी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम नहीं खाई, न सच्ची न झूटी।"[4]

येह क़ौल आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه के **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ह़द दरजा ता'ज़ीम व तौक़ीर बजा लाने पर दलालत करता है। नीज़ इस बात पर दलील है कि आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه अ़ज़मते इलाही का इ़ल्म रखते थे।

---

1 ......معرفة السنن والاثار، مقدمة المؤلف، باب مایستدل به علی اجتهاده فی طاعة ربه، ج ۱، ص ۱۱۵۔
تاریخ بغداد، محمد بن ادریس الشافعی: ۴۵۴، ج ۲، ص ۲۱۔

2 ......حلیة الاولیاء، الامام الشافعی، الحدیث: ۱۳۳۸۲، ج ۹، ص ۱۳۵۔
تاریخ دمشق لابن عساکر، محمد بن ادریس الشافعی: ۲۰۷۱، ج ۵۱، ص ۳۹۴۔

3 ....शिकम सैरी की आफ़ात और भूक के फ़ज़ाइल की तफ़्सीली मा'लूमात के लिये दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 1548 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब "**फ़ैज़ाने सुन्नत**" जिल्द अव्वल के बाब "पेट का कुफ़्ले मदीना" का मुत़ालआ़ कीजिये।

4 ......حلیة الاولیاء، الامام الشافعی، الحدیث: ۱۳۳۹۱، ج ۹، ص ۱۳۶۔

ज़बान की ह़िफ़ाज़त :

एक बार ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْكَافِى से कुछ पूछा गया तो ख़ामोश रहे। किसी ने अ़र्ज़ की : "ह़ुज़ूर ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आप पर रह़्म फ़रमाए ! आप जवाब क्यूं नहीं देते ?" फ़रमाया : "पहले मैं येह जान लूं कि मेरे जवाब देने में फ़ज़ीलत है या ख़ामोश रहने में।"(1)

देखो ! आप رَحْمَةُاللّٰهِ تعالٰى عَلَيْه ज़बान की कैसी निगहबानी फ़रमाते थे। ह़ालांकि फ़ुक़हा पर ज़बान का तसल्लुत़ तमाम आ'ज़ा से ज़ियादा होता है और येह सब से ज़ियादा बे क़ाबू और नाफ़रमान होती है। इस से येह भी वाज़ेह़ हुवा कि आप رَحْمَةُاللّٰهِ تعالٰى عَلَيْه फ़ज़्लो षवाब के ह़ुसूल के लिये ही कलाम करते थे।

कानों और ज़बान का क़ुफ़्ले मदीना : (2)

ह़ज़रते सय्यिदुना अह़मद बिन यह़्या बिन वज़ीर عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَدِيْر बयान करते हैं कि एक दिन ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْكَافِى क़िन्दीलों के बाज़ार से गुज़रे, हम भी पीछे हो लिये, अचानक देखा कि एक शख़्स किसी आ़लिम से बेहूदा बातें कर रहा है, आप رَحْمَةُاللّٰهِ تعالٰى عَلَيْه ने हमारी त़रफ़ मुतवज्जेह हो कर फ़रमाया : "जिस त़रह़ अपनी ज़बानों को फ़ोह़श गोई से बचाते हो इसी त़रह़ कानों को भी फ़ोह़श बातें सुनने से बचाओ क्यूंकि सुनने वाला कहने वाले के साथ शरीक होता है। बे वुक़ूफ़ जब अपने बरतन में कोई बदतरीन चीज़ देखता है तो उसे तुम्हारे बरतनों में डालना चाहता है, अगर उस की बात को लौटा दिया जाए तो लौटाने वाला ख़ुश बख़्त है जैसे वोह बात कहने वाला बद बख़्त है।"(3)

---

1 ......حاشية اعانة الطالبين، خطبة المؤلف، ج ١، ص ٢٨۔

2 ......"क़ुफ़्ले मदीना" दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल में बोली जाने वाली एक इस्तिलाह़ है किसी भी उ़ज़्व को गुनाहों और फ़ुज़ूलियात से बचाने को क़ुफ़्ले मदीना लगाना कहते हैं। मषलन फ़ुज़ूल गोई से जो परहेज़ करता है और ख़ामोशी की आ़दत डालने के लिये ह़स्बे ज़रूरत इशारों से या लिख कर गुफ़्त्गू करता है उस के बारे में कहा जाएगा कि उस ने ज़बान का क़ुफ़्ले मदीना लगाया है।

दोज़ख़ की कहां ताब है कमज़ोर बदन में   हर उ़ज़्व का अ़त्तार लगा क़ुफ़्ले मदीना

3 ......حلية الاولياء، الامام الشافعى، الحديث:١٣٣٦٣، ج ٩، ص ١٣٠۔
تاريخ دمشق لابن عساكر، محمد بن ابراهيم بن احمد بن اسحاق:٢٠٢٥، ج ٥١، ص ١٨٣۔

आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि एक दाना (अक़्ल मन्द) ने किसी दाना को लिखा कि तुम्हें इ़ल्म दिया गया है तो अपने इ़ल्म को गुनाहों की ज़ुल्मत से आलूदा न करना वरना तुम उस दिन अन्धेरे में खड़े रहोगे जिस दिन साहि़बे इ़ल्म अपने इ़ल्म के नूर में चलते होंगे।(1)

﴾2﴿.......ज़ोह्दो तक़्वा :

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْکَافِی फ़रमाते हैं : ''जो येह दा'वा करे कि इस ने अपने दिल में दुन्या और ख़ालिक़े दुन्या की मह़ब्बत को जम्अ़ कर लिया है बेशक वोह झूटा है।''(2)

आप رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ की सख़ावत :

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़मीदी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَلِی बयान करते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْکَافِی बा'ज़ हुक्काम के साथ यमन तशरीफ़ ले गए फिर वहां से 10 हज़ार दिरहम लिये मक्का की त़रफ़ रवाना हुए, मक्कए मुकर्रमा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعْظِیْمًا से बाहर ही एक मक़ाम पर उन के लिये एक ख़ैमा लगा दिया गया। लोग मुलाक़ात के लिये आने लगे। आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ उस वक़्त तक अपनी जगह से न हटे जब तक वोह तमाम दराहिम तक़्सीम न कर दिये।(3) एक मरतबा ह़म्माम से निकले तो उस के मालिक को कषीर माल अ़ता फ़रमाया।(4) एक बार आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ का कोड़ा गिर गया, एक शख़्स ने उठा कर दिया तो उसे इस के बदले में 50 दीनार अ़ता फ़रमा दिये।(5)

ज़ोह्द की ह़क़ीक़त व बुन्याद :

आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ की सख़ावत बहुत मश्हूर है बयान करने की ह़ाजत नहीं और ज़ोह्द की बुन्याद सख़ावत है इस लिये कि जो जिस चीज़ से मह़ब्बत रखता है उसे रोक लेता है और माल को वोही जुदा करता है जिस की नज़र में दुन्या की कोई अहम्मिय्यत न हो। येही ज़ोह्द की ह़क़ीक़त है।

---

1 ......حلیۃ الاولیاء، الامام الشافعی، الحدیث:۱۳۳۹۲، ج۹، ص۱۵۵۔

2 ......فیض القدیر،حرف الدال، فصل فی المحلی بأل......الخ، تحت الحدیث:۴۲۶۹، ج۳، ص۷۲۷۔

3 ......شعب الایمان للبیہقی، باب فی الجود والسخاء، الحدیث:۱۰۹۶۰، ج۷، ص۴۵۲۔
حلیۃ الاولیاء، الامام الشافعی، الحدیث:۱۳۳۰۶، ج۹، ص۱۳۸۔

4 ......تاریخ دمشق لابن عساکر، محمد بن ادریس الشافعی:۶۰۷۱، ج۵۱، ص۴۰۱۔

5 ......شعب الایمان للبیہقی،باب فی الجودوالسخاء،الرقم:۱۰۹۶۱، ج۷، ص۴۵۲،بتغیرٍ"تسعۃ دنانیراوسبعۃ"۔
تاریخ دمشق لابن عساکر، محمد بن ادریس الشافعی:۶۰۷۱، ج۵۱، ص۳۹۹۔

ज़माने का अफ़्ज़ल शख़्स :

आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تعالٰی عَلَیْہ ज़ोहद में कितने मज़्बूत़ थे, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का किस क़दर ख़ौफ़ रखते थे और आख़िरत की तय्यारी में किस त़रह़ मश्ग़ूल रहते थे इस का अन्दाज़ा इस बात से लगाया जा सकता है कि एक मरतबा ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान बिन उ़यैना رَحْمَۃُاللّٰہِ تعالٰی عَلَیْہ ने रिक़्क़ते क़ल्बी के मुतअ़ल्लिक़ एक ह़दीष बयान की तो आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تعالٰی عَلَیْہ बेहोश हो गए। किसी ने कहा : "वफ़ात पा गए हैं।" तो ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान बिन उ़यैना رَحْمَۃُاللّٰہِ تعالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया : "अगर वफ़ात पा गए हैं तो इस ज़माने के अफ़्ज़ल शख़्स का विसाल हो गया।"(1)

कामिलुल ईमान होने की अ़लामत :

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मुह़म्मद बेलवी رَحْمَۃُاللّٰہِ تعالٰی عَلَیْہ बयान करते हैं कि मैं और उ़मर बिन नबाता आ़बिदीन व ज़ाहिदीन का तज़्किरा कर रहे थे कि उ़मर ने कहा : मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन इदरीस शाफ़ेई عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْکَافِی से बड़ा फ़सीह़ और परहेज़गार शख़्स नहीं देखा क्यूंकि एक बार मैं, ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْکَافِی और ह़ारिष बिन लुबैद सफ़ा (पहाड़ी) की त़रफ़ गए। ह़ारिष सालेह़ मुर्री के शागिर्द थे। ख़ुश कुन आवाज़ के मालिक थे। इन्हों ने कुरआने पाक की तिलावत शुरूअ़ की जब येह आयाते मुबारका तिलावत कीं :

هٰذَا یَوْمُ لَا یَنْطِقُوْنَ ﴿۳۵﴾ وَ لَا یُؤْذَنُ لَهُمْ فَیَعْتَذِرُوْنَ ﴿۳۶﴾ (پ۲۹، المرسلٰت:۳۵،۳۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *येह दिन है कि वोह बोल न सकेंगे, और न उन्हें इजाज़त मिले कि उ़ज़्र करें।*

तो मैं ने देखा कि ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْکَافِی का रंग तब्दील हो गया, बदन कांपने लगा, शदीद बे क़रार हो गए और बेहोश हो कर गिर गए। होश आने पर दुआ़ फ़रमाने लगे कि "ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मैं झूटों के मक़ाम और ग़ाफ़िलों के ए'राज़ से तेरी पनाह मांगता हूं। ऐ परवर दगार عَزَّوَجَلَّ अहले मा'रिफ़त के दिल तेरी बारगाह में झुक गए, तेरे आगे त़ालिबीन की गर्दनें ख़म हो गईं। ऐ मेरे रब्ब عَزَّوَجَلَّ मुझे अपना जूदो करम अ़त़ा फ़रमा, अपनी शाने सत्तारी

---

1 ......معرفة السنن والآثار، مقدمة المؤلف، باب شهادة الائمة للشافعی، ج ۱، ص ۱۱۶۔
حلیة الاولیاء، الامام الشافعی، الرقم: ۱۳۲۲۲، ج ۹، ص ۱۰۲۔

से मुझे अ़ज़मत अ़ता फ़रमा और अपने करम से मेरे गुनाह मुआ़फ़ फ़रमा।"(1)

फिर आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ तशरीफ़ ले गए और हम भी चले गए। जब मैं बग़दाद आया उस वक़्त आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ इराक़ में थे। मैं एक मरतबा दरिया के कनारे बैठा वुज़ू कर रहा था कि क़रीब से गुज़रते हुए एक शख़्स ने कहा : "बेटा ! वुज़ू अच्छे त़रीक़े से करो ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ दुन्या व आख़िरत में तुम्हारे साथ अच्छा मुआ़मला फ़रमाएगा।" मैं ने उस त़रफ़ तवज्जोह की तो वोह एक बा रो'ब शख़्स था जिस के पीछे कई लोग थे। मैं जल्दी से वुज़ू कर के उन के पीछे चल दिया। उन्हों ने मेरी त़रफ़ मुतवज्जेह हो कर फ़रमाया : "क्या तुम्हें कोई काम है ?" मैं ने कहा : जी हां ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने जो कुछ आप को सिखाया है इस में से मुझे भी कुछ सिखा दीजिये। तो उन्हों ने फ़रमाया : "जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की तस्दीक़ करेगा वोह नजात पा जाएगा, जो अपने दीन के मुआ़मले में ख़ौफ़ ज़दा रहेगा हलाकत व बरबादी से मह़फ़ूज़ रहेगा और जो दुन्या से बे रग़बती इख़्तियार करेगा कल बरोज़े क़ियामत उस की आंखें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से मिलने वाले अज्रो षवाब को देख कर ठंडी होंगी।" फिर फ़रमाया : "क्या मैं तुम्हें मज़ीद न बताऊं ?" मैं ने कहा : "जी हां बताइये !" फ़रमाया : "जिस में तीन ख़स्लतें पाई गईं उस ने अपना ईमान मुकम्मल कर लिया : (1).....नेकी का हुक्म देना और इस पर अ़मल करना (2).....बुराई से मन्अ़ करना और खुद भी बाज़ रहना और (3).....अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की हुदूद की मुह़ाफ़ज़त करना।" फिर फ़रमाया : "क्या मैं तुम्हें मज़ीद कुछ बताऊं ?" मैं ने कहा : "क्यूं नहीं।" फ़रमाया : "दुन्या से बे रग़बती इख़्तियार करो, आख़िरत में रग़बत रखो और हर ह़ाल में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ को सच्चा जानो, नजात पाने वालों में हो जाओगे।" येह कह कर वोह तशरीफ़ ले गए। मैं ने पूछा : "येह कौन थे ?" तो लोगों ने बताया कि "येह ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِی थे।"(2) तुम इन के बेहोश हो कर गिरने पर ग़ौर करो फिर इन के वा'ज़ के बारे में सोचो कि किस त़रह़ येह चीज़ इन के ज़ोहद और ख़ौफ़े खुदा रखने पर दलालत करती है। ख़ौफ़े खुदा और ज़ोहद मा'रिफ़ते इलाही के बिग़ैर ह़ासिल नहीं होते। क्यूंकि कुरआने पाक में इरशादे रब्बुल इबाद है।

اِنَّمَا یَخْشَی اللّٰهَ مِنْ عِبَادِهِ الْعُلَمٰٓؤُا ؕ

(پ۲۲، فاطر:۲۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : अल्लाह से उस के बन्दों में वोही डरते हैं जो इ़ल्म वाले हैं।

---

1 ......تاریخ دمشق لابن عساکر، محمد بن ادریس الشافعی: ۱۰۷۱، ج ۵۱، ص ۳۳۶۔

2 ......تهذیب الاسماء واللغات، الامام الشافعی، ج ۱، ص ۷۶۔۷۷، باختصارٍ۔

हज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَیْہِ رَحْمَةُ اللہِ الْکَافِی ने येह ख़ौफ़े ख़ुदा और ज़ोहदो तक़्वा, बीअ़, सलम और इजारा के मसाइल या इस के सिवा दूसरे अब्वाबे फ़िक़्ह के मसाइल से ह़ासिल नहीं किया था बल्कि येह सब कुछ उ़लूमे आख़िरत से ह़ासिल किया था और उ़लूमे आख़िरत क़ुरआनो सुन्नत से मुस्तफ़ाद होते हैं क्यूंकि तमाम अगलों पिछलों की ह़िक्मतें क़ुरआनो सुन्नत में मौजूद हैं।

﴾3﴿......अस्रारे क़ल्ब और उ़लूमे आख़िरत के आ़लिम :

हज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَیْہِ رَحْمَةُ اللہِ الْکَافِی के ह़िक्मत भरे इरशादात व मल्फ़ूज़ात से वाज़ेह़ होता है कि आप अस्रारे क़ल्ब और उ़लूमे आख़िरत के कैसे ज़बरदस्त आ़लिम थे। चुनान्चे, मन्क़ूल है कि ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَیْہِ رَحْمَةُ اللہِ الْکَافِی से रिया के बारे में पूछा गया तो बिला तवक़्क़ुफ़ जवाब दिया कि "रिया एक फ़ितना है जिसे ख़्वाहिशे नफ़्स ने उ़-लमा के दिलों की आंखों के सामने बांध दिया उन्हों ने बुराई पसन्द नफ़्स के साथ इस में दिलचस्पी ली तो उन के आ'माल अकारत हो गए।"[1]

ख़ुद पसन्दी में मुब्तला को नसीह़त :

मज़ीद फ़रमाते हैं कि "जब तुझे अपने अ़मल में ख़ुद पसन्दी का ख़ौफ़ हो तो इस बात को पेशे नज़र रख कि तू किस की रिज़ा का त़ालिब है, किस षवाब की ख़्वाहिश रखता है, किस सज़ा व अ़ज़ाब से डरता है, किस ने'मत पर शुक्र करता है और कौन सी मुसीबत को याद करता है। जब तू इन में से किसी एक ख़स्लत में ग़ौरो फ़िक्र करेगा तो तुझे अपना अ़मल छोटा लगेगा।"[2]

ग़ौर करो कि आप رَحْمَةُ اللہِ تعَالٰی عَلَیْہ ने किस अन्दाज़ से रिया की ह़क़ीक़त और ख़ुद पसन्दी के इलाज को आशकार किया और येह दोनों दिल की बहुत बड़ी आफ़तें हैं।

इ़ल्म किसे नफ़्अ़ नहीं देता ?

हज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَیْہِ رَحْمَةُ اللہِ الْکَافِی फ़रमाते हैं कि "जो अपने नफ़्स की निगहबानी नहीं करता उस का इ़ल्म उसे नफ़्अ़ नहीं देता।[3] जो इ़ल्म के मुत़ाबिक़ अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ

---

1 ......تاریخ دمشق لابن عساکر، محمد بن ادریس الشافعی، ج ۵۱، ص ۳۳۴۔

2 ......تاریخ دمشق لابن عساکر، محمد بن ادریس الشافعی: ۶۰۷۱، ج ۵۱، ص ۴۱۳۔

3 ......الفقیہ والمتفقہ، ذکر احادیث واخبار شتی......الخ، الجزء الاوّل، الرقم: ۱۳۹، ج ۱، ص ۱۵۱۔

की इताअ़त करेगा उस का पोशीदा इल्म उसे नफ़्अ़ देगा। हर एक का कोई न कोई दोस्त और दुश्मन होता है और जब मुआ़मला ऐसा हो तो फिर तुम अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के फ़रमां बरदारों के साथ रहो।"[1]

मन्कूल है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल क़ाहिर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْعَزِيْز नेक और परहेज़गार शख़्स थे। ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِى से तक़्वा के बारे में मसाइल पूछा करते थे और आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه भी इन की परहेज़गारी की वजह से उन पर ख़ास तवज्जोह फ़रमाते थे। एक दिन इन्हों ने पूछा कि "इमतिह़ान, सब्र और तमकीन (मर्तबा व इ़ज़्ज़त) में से क्या अफ़्ज़ल है?" तो ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِى ने जवाब दिया कि "तमकीन अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का दर्जा है लेकिन तमकीन से पहले इमतिह़ान होता है, इमतिह़ान पर सब्र हो तो फिर तमकीन का दर्जा ह़ासिल होता है। तुम ने देखा नहीं कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने पहले ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम, ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा और ह़ज़रते सय्यिदुना अय्यूब عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का इमतिह़ान लिया फिर इन्हें तमकीन से नवाज़ा, ह़ज़रते सय्यिदुना सुलैमान عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का इमतिह़ान लिया फिर इन्हें तमकीन अ़ता फ़रमाई और सल्त़नत से नवाज़ा।"[2] तमकीन तमाम दर्जों में अफ़्ज़ल दर्जा है। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया :

وَكَذٰلِكَ مَكَّنَّا لِيُوْسُفَ فِى الْاَرْضِ ۚ

(پ ۱۳، یوسف:۵۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और यूंही हम ने यूसुफ़ को इस मुल्क पर क़ुदरत बख़्शी।*

और ह़ज़रते सय्यिदुना अय्यूब عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को बड़े इमतिह़ान के बा'द तमकीन (मर्तबा व इ़ज़्ज़त) से नवाज़ा। चुनान्चे, अल्लाह रब्बुल इबाद عَزَّوَجَلَّ का इरशाद है :

وَاٰتَيْنٰهُ اَهْلَهٗ وَمِثْلَهُمْ مَّعَهُمْ

(پ ۱۷، الانبیاء:۸۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और हम ने उसे उस के घर वाले और उन के साथ इतने ही और अ़ता किये।*

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِى का येह कलाम इस बात पर दलालत करता है कि क़ुरआने पाक के अस्रार में आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की गहरी नज़र थी और आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तक पहुंचने वाले अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام और औलियाए उ़ज़्ज़ाम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام के मक़ामात व मरातिब का इल्म था। इन सब बातों का तअ़ल्लुक़ इल्मे आख़िरत से है।

---

1 ......حلیۃ الاولیاء، الامام الشافعی، الحدیث:۱۳۳۳۴، ج ۹، ص ۱۲۴۔

2 ......ذم الھوی لابن الجوزی، الباب التاسع والاربعون فی ذکر ادویۃ العشق، الرقم:۱۲۶۱، ص ۴۳۳، باختصارٍ۔

आदमी आ़लिम कब बनता है ?

हज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْکَافِی से पूछा गया कि आदमी आ़लिम कब बनता है ? फ़रमाया : जब वोह इ़ल्मे दीन अच्छे त़रीके़ से ह़ासिल कर के दूसरों को सिखाए फिर दूसरे उ़लूम की त़रफ़ मुतवज्जेह हो और जो इ़ल्म उस के पास नहीं उस में ग़ौरो फ़िक्र करे तब वोह आ़लिम होगा। ह़कीम जालीनूस[1] से किसी ने पूछा कि "तुम एक बीमारी के लिये ज़ियादा दवाएं क्यूं तजवीज़ करते हो ?" तो ह़कीम साहि़ब ने जवाब दिया : "इन में से मक़्सूद एक ही है लेकिन इस एक के साथ दूसरी दवाएं इस की ह़रारत को ख़त्म करने के लिये होती हैं क्यूंकि अगर एक ही दवाई दे दी जाए तो वोह हलाक कर देगी।"

येह और इस त़रह़ के बे शुमार ह़िक्मत भरे अक़्वाल इस बात पर दलील हैं कि उ़लूमे आख़िरत और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की मा'रिफ़त में ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْکَافِی का मक़ाम व मर्तबा बहुत बुलन्द था।

﴾4﴿......इ़ल्मे फ़िक़्ह से मक़्सूद :

ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे शाफ़ेई عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْکَافِی फ़िक़्ह और मुनाज़िरे में रिज़ाए इलाही के ही त़ालिब थे। इस पर कई रिवायात दलालत करती हैं। चुनान्चे, मरवी है कि आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تعالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया : "मैं चाहता हूं कि लोग इस इ़ल्म से नफ़्अ़ उठाएं लेकिन इस में से मेरी त़रफ़ कुछ मन्सूब न करें।"[2]

पस तुम ग़ौर करो कि आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تعالٰی عَلَیْہ को इ़ल्म और इ़ल्म के सबब नामवरी की आफ़त पर कैसी आगाही थी। इन का दिल इस त़रफ़ तवज्जोह करने से कैसा पाक था। मह़ज़ रिज़ाए इलाही इन के पेशे नज़र होती थी।

आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تعالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि "मैं ने जब भी किसी से मुनाज़िरा किया तो येह पसन्द नहीं किया कि वोह ग़लत़ी करे[3] बल्कि जब भी किसी से कलाम किया तो येह पसन्द

❶...जालीनूस का अस्ली नाम ग्लोडीसिन गेलन था। येह हमारे प्यारे आक़ा की बिअ़सत से भी पहले गुज़रा है। सि. 131 ई में पैदा हुवा। सि. 201 ई में फ़ौत हुवा। क़दीम यूनान का निहायत ही माहिर त़बीब था और फ़न्ने त़िब्ब में तमाम अत़िब्बाए यूनान को इस ने पीछे छोड़ दिया। यूनान की त़बाबत शोहरए आफ़ाक़ है। येह शख़्स इतना माहिर त़बीब माना जाता था कि आज अठ्ठारह सो साल के बा'द भी इस का दुन्या में नाम है। (फ़ैज़ाने सुन्नत, जि.1 स. 582)

❷......حلیۃ الاولیاء، الامام الشافعی، الحدیث:۱۳۳۴۲، ج۹، ص۱۲۶۔

تاریخ مدینۃ دمشق لابن عساکر، محمد بن ادریس الشافعی:۲۰۷۱ ،ج ۵۱، ص۳۶۵۔

❸......صحیح ابن حبان، کتاب الصلاۃ، باب فرض متابعۃ الامام، تحت الحدیث: ۲۱۲۲، ج۳، ص ۲۸۴۔

किया कि उसे समझने की तौफ़ीक़ मिले और सीधे रास्ते पर रहने के लिये इस की मदद हो। नीज़ मैं ने कभी भी किसी से गुफ़्त्गू करते वक़्त इस बात की परवाह नहीं की, कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मेरी ज़बान से ह़क़ ज़ाहिर करे या उस की ज़बान से।(1) जब मैं किसी के सामने दलील के साथ ह़क़ बयान करता हूं और वोह क़बूल कर लेता है तो मैं उस से ख़ुश होता और उस से मह़ब्बत करता हूं और जो मेरे सामने ह़क़ से इन्कार कर दे और दलील को न माने तो वोह मेरी नज़रों से गिर जाता है और मैं उसे छोड़ देता हूं।(2)

येह अ़लामात इस बात को वाज़ेह़ करती हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِى फ़िक़्ह और मुनाज़िरा मे रिज़ाए इलाही के त़ालिब थे। अब तुम देखो कि इन पांच ख़स्लतों में से लोग सिर्फ़ इस एक ख़स्लत में इन की मताबेअ़त व पैरवी के दा'वेदार हैं फिर इस में भी वोह इन से कितने मुख़्तलिफ़ हैं। इसी लिये ह़ज़रते सय्यिदुना अबू षौर رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَیْه ने कहा कि "मैं ने और देखने वालों ने ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِى की मिष्ल किसी को नहीं देखा।"(3)

ह़ज़रते सय्यिदुना **इमाम अह़मद बिन ह़म्बल** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَوَّل ने फ़रमाया कि "40 साल से मैं ने जो भी नमाज़ पढ़ी उस में ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِى के लिये ज़रूर दुआ़ की।"(4)

पस तुम दुआ़ करने वाले के इन्साफ़ और ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِى के दर्जे को मुलाह़ज़ा करो फिर इस ज़माने के उ़-लमा को देखो कि इन में किस त़रह़ बुग़्ज़ व इनाद पाया जाता है ताकि तुम जान जाओ कि येह लोग उन बुज़ुर्गों की इक़्तिदा व पैरवी करने के दा'वे में झूटे हैं।

---

1 ......الفقیہ و المتفقہ، باب ادب الجدال، الجزء السابع، الرقم: ۷۱۲، ج۲، ص ۴۹۔

2 ......حلیۃ الاولیاء، الامام الشافعی، الرقم:۱۳۳۳۷، ج۹، ص ۱۲۵۔
تاریخ دمشق لابن عساکر، محمد بن ادریس الشافعی: ۶۰۷۱، ج۵۱، ص ۳۸۳۔

3 ......تاریخ دمشق لابن عساکر، محمد بن ادریس الشافعی: ۶۰۷۱، ج۵۱، ص ۳۳۴۔

4 ......تاریخ دمشق لابن عساکر، محمد بن ادریس الشافعی: ۶۰۷۱، ج۵۱، ص ۳۴۶۔

दुन्या के लिये आफ़्ताब और लोगों के लिये आ़फ़िय्यत :

हज़रते सय्यिदुना इमाम अह़मद बिन ह़म्बल عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَوَّل के साहिबज़ादे ने इन से पूछा : "येह शाफ़ेई कौन हैं जिन के लिये आप इतनी ज़ियादा दुआ़एं मांगते हैं ?" तो इन्हों ने फ़रमाया : "ऐ मेरे बेटे ! हज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِى दुन्या के लिये आफ़्ताब की मानिन्द और लोगों के लिये आ़फ़िय्यत हैं। पस तुम देखो कि कौन इन दो बातों में इन का नाइब है।(1)"

हज़रते सय्यिदुना **इमाम अह़मद बिन ह़म्बल** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَوَّل फ़रमाया करते थे कि "जिस ने भी दवात को हाथ लगाया उस पर हज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِى का एह़सान है।"(2)

हज़रते सय्यिदुना **यह़्या बिन सईद क़त्तान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं कि "40 साल से मैं ने जो भी नमाज़ पढ़ी उस में हज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِى के लिये ज़रूर दुआ़ मांगी क्यूंकि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उन पर इ़ल्म के दरवाज़े खोल दिये थे और उन्हें इ़ल्म में पुख़्तगी की तौफ़ीक़ मरह़मत फ़रमाई थी।"(3)

हम हज़रते सय्यिदुना इमामे शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِى के इन्हीं अह़वाल को बयान करने पर इक्तिफ़ा करते हैं वरना आप के अह़वाल तो बेशुमार हैं। यहां ज़िक्र कर्दा बेशतर मनाक़िब व फ़ज़ाइल हम ने हज़रते सय्यिदुना शैख़ नस्र बिन इब्राहीम मक़्दसी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَلِى की किताब से नक़्ल किये हैं जो इन्हों ने हज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِى के फ़ज़ाइल व मनाक़िब में तस्नीफ़ फ़रमाई है।

....इ़ल्म सीखने से आता है....

फ़रमाने मुस्त़फ़ा : *"इ़ल्म सीखने से ही आता है और फ़िक़्ह ग़ौरो फ़िक्र से ह़ासिल होती है और* ***अल्लाह*** *عَزَّوَجَلَّ जिस के साथ भलाई का इरादा फ़रमाता है उसे दीन में समझ बूझ अ़त़ा फ़रमाता है और* ***अल्लाह*** *عَزَّوَجَلَّ से उस के बन्दों में वोही डरते हैं जो इ़ल्म वाले हैं।"*

(المعجم الكبير،الحديث ٧٣١٢،ج١٩،ص٥١١)

---

1 ......تاریخ دمشق لابن عساکر، محمد بن ادریس الشافعی: ۶۰۷۱، ج ۵۱، ص ۳۴۸۔

2 ......تاریخ دمشق لابن عساکر، محمد بن ادریس الشافعی: ۶۰۷۱، ج ۵۱، ص ۳۴۹۔

3 ......تاریخ دمشق لابن عساکر، محمد بن ادریس الشافعی: ۶۰۷۱، ج ۵۱، ص ۳۲۵۔

सय्यिदुना इमामे मालिक عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْخَالِق के फ़ज़ाइल व मनाक़िब

हज़रते सय्यिदुना इमामे मालिक عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْخَالِق भी इन पांच अवसाफ़ से मुत्तसिफ़ थे। चुनान्चे, किसी ने इन से अ़र्ज़ की : "ऐ मालिक ! आप त़लबे इ़ल्म के बारे में क्या कहते हैं ?" फ़रमाया : "येह बड़ी अच्छी बात है लेकिन तुम उस पर ग़ौर करो जो सुब्ह़ से शाम तक तुम्हारे लिये ज़रूरी है और उसे लाज़िम पकड़ लो।"(1)

ह़दीषे रसूल की ता'ज़ीम :

आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ इ़ल्मे दीन की बहुत ज़ियादा ता'ज़ीम किया करते थे यहां तक कि जब ह़दीष बयान करने का इरादा करते तो पहले वुज़ू करते, चटाई बिछाते, अपनी दाढ़ी संवारते, ख़ुश्बू लगाते फिर इ़ज़्ज़त व वक़ार के साथ बैठ कर ह़दीष बयान करते।(2) किसी ने इस की वजह पूछी तो इरशाद फ़रमाया : "मैं पसन्द करता हूं कि ह़दीषे रसूल की ता'ज़ीम करूं।"(3) आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का क़ौल है कि "इ़ल्म ज़ियादा रिवायतें बयान करने का नाम नहीं बल्कि इ़ल्म तो नूर है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जिसे चाहता है अ़त़ा फ़रमाता है।"(4)

ह़दीषे रसूल का येह अदबो एह़तिराम इस बात पर दलालत करता है कि आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के जलाल की मा'रिफ़त में कितने मज़बूत़ थे।

ह़ुसूले इ़ल्मे दीन से मक़्सूद :

इ़ल्मे दीन ह़ासिल करने से ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे मालिक عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْخَالِق का मक़्सद मह़ज़ रिज़ाए इलाही हुवा करता था। इस पर इन का येह फ़रमान दलालत करता है कि "दीन में झगड़ा कोई हैषिय्यत नहीं रखता।"(5)

---

1 ......حلیۃ الاولیاء، مالک بن انس، الحدیث:۸۸۷۰، ج۶، ص۳۴۹۔

2 ......حلیۃ الاولیاء، مالک بن انس، الحدیث:۸۸۵۸، ج۶، ص۳۴۷۔

جامع الاصول فی احادیث الرسول لابن اثیر، الباب الرابع فی ذکر الائمۃ، الامام مالک، ج۱، ص۱۲۰۔

3 ......حلیۃ الاولیاء، مالک بن انس، الحدیث:۸۸۵۸، ج۶، ص۳۴۷۔

4 ......حلیۃ الاولیاء، مالک بن انس، الحدیث:۸۸۶۷، ج۶، ص۳۴۸۔

5 ......شعب الایمان للبیھقی، باب فی حسن الخلق، فصل فی الحلم والتؤدۃ، الحدیث:۸۴۸۰، ج۶، ص۳۵۴۔

आ़लिम की शान :

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْكَافِى का येह फ़रमान भी इस पर दलालत करता है कि मेरी मौजूदगी में ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे मालिक عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْخَالِق से 48 मसाइल पूछे गए जिन में से 32 के बारे में आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया : "मैं नहीं जानता।"[1] और इ़ल्म से जिस का मक़सद रिज़ाए इलाही के इ़लावा कुछ और हो तो उस का नफ़्स उसे इजाज़त नहीं देता कि वोह अपने बारे में इस बात का इक़रार करे कि वोह नहीं जानता।

चमकते सितारे :

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْكَافِى जब उ़-लमा का तज़किरा करते तो फ़रमाते : "ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْخَالِق ख़ूब चमकते सितारे हैं और मुझ पर इन से ज़ियादा किसी का एह़सान नहीं।"[2]

कोड़े खा कर भी ह़दीष बयान की :

मन्क़ूल है कि अबू जा'फ़र मन्सूर ने ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे मालिक عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْخَالِق को मकरह (या'नी मजबूर किये जाने वाले) की त़लाक़ के बारे में ह़दीष बयान करने से मन्अ़ किया फिर खुफ़्या त़ौर पर किसी को भेजा कि इन से येही सुवाल करे तो आप ने लोगों के मजमअ़ में बयान कर दिया कि जिसे मजबूर किया जाए उस की त़लाक़ वाक़ेअ़ नहीं होती[3] तो अबू जा'फ़र मन्सूर ने आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه को कोड़े लगवाए लेकिन आप ने ह़दीष बयान करना न छोड़ी।[4]

आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया : "जो शख़्स भी ह़दीष बयान करने में सच्चा होगा और झूट नहीं बोलेगा उस की अ़क़्ल सलामत रहेगी कि बुढ़ापे में न तो उसे कोई आफ़त पहुंचेगी और न ही उस की अ़क़्ल में किसी क़िस्म का फ़ुतूर आएगा।"[5]

---

1 ......سير اعلام النبلاء للذهبى، مالک الامام:١١٨٠، ج٧، ص ٤٠١۔

2 ......جامع الاصول فى احاديث الرسول لابن اثير، الباب الرابع فى ذكر الائمة، الامام مالک، ج١، ص ١٢١۔

3 ....अह़नाफ़ के नज़्दीक त़लाक़ वाक़ेअ़ हो जाएगी। (माख़ूज़ अज़ : बहारे शरीअ़त, जि. 3 स. 194)

4 ......جامع الاصول فى احاديث الرسول لابن اثير، الباب الرابع فى ذكر الائمة، الامام مالک، ج١، ص ١٢١۔

5 ......طبقات المحدثين لابن الشيخ الاصبهانى، الطبقة التاسعة، بقية الطبقة التاسعة، الرقم:٢٤٠، ج٣، ص ٥١۔

الجامع لاخلاق الراوى وآداب السامع، باب تحرى المحدث الصدق فى مقابله، الرقم:١٠١٥، ج٣، ص ١٧١۔

ज़ोह्दो तक़्वा :

आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ के ज़ोह्द पर येह रिवायत दलालत करती है कि ख़लीफ़ा महदी ने आप से पूछा : "क्या आप का कोई घर है ?" फ़रमाया : "नहीं, लेकिन मैं तुम्हें एक ह़दीष बयान करता हूं कि मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना रबीआ़ बिन अबी अ़ब्दुर्रह़मान رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ को फ़रमाते सुना कि आदमी का नसब ही उस का घर है ।"

मैं छोड़ कर मदीना नहीं जाता, नहीं जाता :

ख़लीफ़ा हारूनुर्रशीद ने आप से पूछा : "क्या आप का कोई घर है ?" फ़रमाया : नहीं । तो उस ने आप की ख़िदमत में 3 हज़ार दीनार पेश करते हुए कहा कि "इन से घर ख़रीद लीजिये !" आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ ने दीनार ले कर रख लिये और उन्हें ख़र्च न किया । जब ख़लीफ़ा हारूनुर्रशीद मदीनए मुनव्वरा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعْظِیْمًا से जाने लगा तो उस ने आप की ख़िदमत में अ़र्ज़ की, कि "आप को हमारे साथ चलना होगा क्यूंकि मैं ने अ़ज़्म किया है कि लोगों को मुअत्ता पर जम्अ़ करूं जिस त़रह़ अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़षमान बिन अ़फ़्फ़ान رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ ने लोगों को एक कुरआन पर जम्अ़ किया था ।" आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया : लोगों को सिर्फ़ मुअत्ता पर इकठ्ठा करने का तो कोई जवाज़ नहीं क्यूंकि अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ के मह़बूब, दानाए गुयूब صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के विसाले ज़ाहिरी के बा'द सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْھِمْ اَجْمَعِیْن मुख़्तलिफ़ शहरों में चले गए वहां उन्हों ने अह़ादीष बयान फ़रमाईं जिस की वजह से अब मिस्र के हर शख़्स के पास अह़ादीष का इ़ल्म है और मुस्त़फ़ा जाने रह़मत صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने भी इरशाद फ़रमाया है कि "मेरी उम्मत का इख़्तिलाफ़ रह़मत है ।"(1) और रहा (मदीना छोड़ कर) तुम्हारे साथ जाना तो इस की भी कोई सूरत नहीं क्यूंकि फ़रमाने मुस्त़फ़ा है कि "मदीना उन के लिये बेहतर है अगर वोह समझें ।"(2) एक रिवायत में है : "मदीना (गुनाहों के) मेल को ऐसे छुड़ाता है जैसे भट्टी लोहे का ज़ंग दूर करती है ।"(3) फिर आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ ने ख़लीफ़ा हारूनुर्रशीद से फ़रमाया : "येह रहे तुम्हारे दीनार चाहो तो इन्हें ले

---

1 ......جامع الاصول فی احادیث الرسول لابن اثیر، الباب الرابع فی ذکر الائمة، الامام مالک، ج ۱، ص ۱۲۱ ۔

2 ......صحیح مسلم، کتاب الحج، باب فضل المدینة، الحدیث: ۱۳۶۳، ص ۷۱۰ ۔

3 ......صحیح مسلم، کتاب الحج، باب المدینة تنفی شرارھا، الحدیث: ۱۳۸۱، ص ۷۱۲ ۔
حلیة الاولیاء، مالک بن انس، الحدیث: ۸۹۴۲، ج ۶، ص ۳۶۱ ۔

लो और चाहो तो छोड़ दो।'' या'नी तुम मुझे इसी वजह से मदीना छोड़ने पर पाबन्द करते हो कि तुम ने मेरे साथ अच्छा सुलूक किया है तो (सुनो !) मैं मदीनए मुनव्वरा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّتَعْظِيْمًا पर दुन्या को तरजीह़ नहीं देता।

येह थी ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे मालिक عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْخَالِق की दुन्या से बे रग़बती। जब आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه के इ़ल्म और शागिर्दों के दूर दराज़ अ़लाक़ों में फैल जाने की वजह से मुख़्तलिफ़ शहरों से आप के पास कषीर माल आने लगा तो आप उसे नेकी के मुख़्तलिफ़ कामों में ख़र्च कर देते। येह चीज़ आप के ज़ोह्द और दुन्या से मह़ब्बत न होने की दलील है। माल न होने को ज़ोह्द नहीं कहते बल्कि ज़ोह्द येह है कि दिल में माल की रग़बत न हो।

मदीने की मिट्टी का अदबो एह़तिराम :

ह़ज़रते सय्यिदुना सुलैमान عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام अपनी बादशाहत में ज़ाहिद थे। ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे मालिक عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْخَالِق दुन्या को कितना ह़क़ीर समझते थे इसे इस रिवायत से समझिये कि ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْكَافِى फ़रमाते हैं : मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे मालिक عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْخَالِق के दरवाज़े पर ख़ुरासान और एक क़ौल के मुत़ाबिक़ मिस्र के उ़म्दा घोड़े देखे, इन से ख़ूब सूरत घोड़े मैं ने कभी नहीं देखे थे तो मैं ने अ़र्ज़ की : ''येह कितने उ़म्दा हैं।'' तो उन्हों ने फ़रमाया : ''ऐ अबू अ़ब्दुल्लाह !'' येह मेरी त़रफ़ से आप को हदिय्या हैं। मैं ने अ़र्ज़ की : ''इन में से कोई आप अपनी सुवारी के लिये भी रख लें।'' आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया : ''मुझे अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ से ह़या आती है कि मैं उस ज़मीन को जानवर के पाऊं से रौंदूं जिस में अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ के मह़बूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तशरीफ़ फ़रमा हैं।''(1)

ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे मालिक عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْخَالِق की सख़ावत देखो कि एक ही बार में सारा माल हिबा कर दिया और मदीने की मिट्टी का कितना अदबो एह़तिराम करते थे !

प्यासा कुंवें के पास जाता है न कि कुंवां :

आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه इ़ल्म से मह़ज़ अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ की रिज़ा व ख़ुश्नूदी के त़ालिब थे और दुन्या को ह़क़ीर जानते थे। इस पर येह रिवायत दलालत करती है, आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه

(1) الشفاء، الباب الثالث، ج ۲، ص ۵۷۔

جامع الاصول فی احادیث الرسول لابن اثیر، الباب الرابع فی ذکر الائمة، الامام مالک، ج ۱، ص ۱۲۱۔

फ़रमाते हैं कि मैं ख़लीफ़ा हारूनुर्रशीद के पास गया तो उस ने मुझे कहा : "ऐ अबू अ़ब्दुल्लाह ! आप हमारे पास आया करें ताकि हमारे बच्चे आप से मुवत्ता पढ़ें ।" मैं ने कहा : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अमीर को इ़ज़्ज़त दे ! येह इ़ल्म आप लोगों से निकला है । अगर आप इसे इ़ज़्ज़त देंगे तो अ़ज़ीज़ होगा और रुस्वा करेंगे तो ज़लील होगा और (हां) इ़ल्म किसी के पास नहीं आता बल्कि इ़ल्म ह़ासिल करने जाते हैं ।" ख़लीफ़ा ने कहा : "आप ने सच फ़रमाया :" फिर अपने बच्चों से कहा कि "मस्जिद में जा कर दीगर लोगों के साथ बैठ कर मुवत्ता सुना करो ।"(1)

सय्यिदुना इमामे आ'ज़म عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَکْرَم के फ़ज़ाइलो मनाक़िब

ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَیْه भी आ़बिदो ज़ाहिद, आ़रिफ़ बिल्लाह, ख़ौफ़े ख़ुदा रखने वाले और अपने इ़ल्म से रिज़ाए इलाही चाहने वाले थे । आप की इ़बादत व रियाज़त का अन्दाज़ा इस रिवायत से लगाया जा सकता है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : "ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَکْرَم साहिबे मुरव्वत और कषरत से इ़बादत करने वाले थे ।"(2)

सारी रात इ़बादत :

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़म्माद बिन अबू सुलैमान عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْحَنَّان से मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَکْرَم सारी रात इ़बादत किया करते थे ।

मरवी है कि आप رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَیْه पहले आधी रात इ़बादत किया करते थे । एक दिन रास्ते से गुज़र रहे थे कि किसी को येह कहते सुना कि येह सारी रात इ़बादत में गुज़ारते हैं । पस इस के बा'द से पूरी रात इ़बादत करने लगे और फ़रमाते : "मुझे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से ह़या आती है कि मेरे बारे में उस की इ़बादत के मुतअ़ल्लिक़ ऐसी बात कही जाए जो मुझ में न हो ।"(3)

---

1 ......آداب العلماء والمتعلمین، آداب العالم فی علمه، ص ۱ ۔
مرقاة المفاتیح، شرح مقدمة المشکاة، ج ۱، ص ۶۲ ۔
2 ......تاریخ بغداد، النعمان بن ثابت: ۷۲۹۷، ج ۱۳، ص ۳۵۲ ۔
3 ......تاریخ بغداد، النعمان بن ثابت: ۷۲۹۷، ج ۱۳، ص ۳۵۳، ۳۵۴ ۔

ज़ोह्दो तक़्वा :

ह़ज़रते सय्यिदुना रबीअ़ बिन आ़सिम عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْحَاکِم बयान करते हैं कि "मुझे यज़ीद बिन उ़मर बिन हुबैरा ने ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْاَکْرَم को बुलाने के लिये भेजा तो मैं उन्हें बुला लाया, उस ने आप को बैतुल माल का ह़ाकिम बनाना चाहा। आप رَحْمَۃُ اللہِ تعالٰی عَلَیْہ के इन्कार पर उस ने आप को 20 कोड़े लगवाए।"(1)

पस तुम ग़ौर करो कि ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْاَکْرَم ने अज़िय्यत तो बरदाश्त कर ली लेकिन ओ़हदा क़बूल न किया।

आख़िरत की सज़ा पर दुन्यावी सज़ा को तरजीह़ :

ह़कम बिन हिश्शाम षक़फ़ी का बयान है कि मुझे मुल्के शाम में ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा رَحْمَۃُ اللہِ تعالٰی عَلَیْہ के बारे में बताया गया कि आप लोगों में सब से बड़े अमानतदार थे। ह़ाकिमे वक़्त ने चाहा कि आप उस के ख़ज़ानों की कुंजियों के ज़िम्मेदार बन जाएं वरना आप को कोड़े लगवाए जाएंगे लेकिन आप رَحْمَۃُ اللہِ تعالٰی عَلَیْہ ने अ़ज़ाबे इलाही के मुक़ाबले में दुन्यावी सज़ा को इख़्तियार कर लिया।(2)

मन्क़ूल है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक رَحْمَۃُ اللہِ تعالٰی عَلَیْہ के पास ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْاَکْرَم का तज़किरा हुवा तो उन्हों ने फ़रमाया : "तुम ऐसे शख़्स का तज़किरा करते हो जिस पर दुन्या तमाम माल व अस्बाब के साथ पेश की गई लेकिन उस ने फिर भी इसे क़बूल न किया।"(3)

10 हज़ार दिरहम क़बूल न किये :

ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन शजाअ़ رَحْمَۃُ اللہِ تعالٰی عَلَیْہ से मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा رَحْمَۃُ اللہِ تعالٰی عَلَیْہ के एक शागिर्द ने बताया कि किसी ने उस्ताज़ साह़िब से कहा : "ख़लीफ़ा अबू जा'फ़र मन्सूर ने आप के लिये 10 हज़ार दिरहम का हुक्म दिया है।"

---

1 ......تاریخ بغداد، النعمان بن ثابت:۷۲۹۷، ج۱۳،ص۳۲۸۔
الانتقاء فی فضائل الثلاثۃ الائمۃ الفقھاء لابن عبدالبر، ص۱۷۰۔

2 ......تاریخ بغداد، النعمان بن ثابت:۷۲۹۷، ج۱۳، ص۳۵۰۔

3 ......مرقاۃ المفاتیح، شرح مقدمۃ المشکاۃ:ترجمۃ الامام ابی حنفیۃ ومناقبہ، ج۱، ص۷۷۔

रावी का बयान है कि इस पर आप ने नापसन्दीदगी का इज़्हार फ़रमाया। फिर जब वोह दिन आया जिस में माल दिया जाना था तो आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने नमाज़े फ़ज्र अदा की फिर कपड़े से मुंह छुपा लिया और कोई बात न की। ह़सन बिन क़ह़्त़बा का क़ासिद माल ले कर ह़ाज़िर हुवा तो आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने उस से भी कोई बात न की। ह़ाज़िरीन में से किसी ने कहा : "येह हम से भी ऐसे ही बात करते हैं या'नी येह इन की आ़दत है।" फिर आप ने माल लाने वाले से फ़रमाया : "माल की थैली घर के एक कोने में रख दो।" इस के बा'द आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने अपने घर के सामान की वसिय्यत फ़रमाई और बेटे से फ़रमाया : "जब मेरा इन्तिक़ाल हो जाए और मुझे दफ़्न कर चुको तो येह थैली ह़सन बिन क़ह़्त़बा को दे आना और कहना कि येह तुम्हारी अमानत है जो तुम ने अबू ह़नीफ़ा के पास रखी थी।" आप के साहिबज़ादे बयान करते हैं कि "मैं ने ऐसा ही किया।" ह़सन बिन क़ह़्त़बा ने कहा : "तुम्हारे वालिद पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रह़मत हो, बेशक वोह अपने दीन के मुआ़मले में बड़े ह़रीस थे।"(1)

मन्सब व ओ़हदा क़बूल न किया :

मन्क़ूल है कि जब आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को ओ़हदए क़ज़ा की ज़िम्मेदारी सोंपी गई तो फ़रमाया : "मैं इस के लाइक़ नहीं।" वजह पूछी गई तो फ़रमाया : "अगर मैं सच्चा हूं तो वाक़ेई इस ओ़हदे के लाइक़ नहीं और अगर झूटा हूं तो झूटा शख़्स क़ाज़ी बनने के वैसे ही लाइक़ नहीं होता।"(2)

त़रीक़े आख़िरत के आ़लिम :

ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْاَکْرَم त़रीक़े आख़िरत और उमूरे दीन का इ़ल्म भी रखते थे। मा'रिफ़ते इलाही भी ह़ासिल थी। इस पर आप का ख़ौफ़े ख़ुदा और दुन्या से बे रग़बती दलालत करते हैं। चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने जुरैज رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का बयान है कि "मुझे ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْاَکْرَم के बारे में येह बात पहुंची है कि आप अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का बहुत ज़ियादा ख़ौफ़ रखते हैं।"(3)

---

1 ......الانتقاء فی فضائل الثلاثۃ الائمۃ الفقہاء لابن عبدالبر، ذکر طرف من فطنۃ ابی حنیفۃ، ص ١٦٩۔

2 ......السنن الکبری للبیہقی، کتاب آداب القاضی، باب کراہیۃ الامارۃ......الخ، الرقم:٢٠٢٣٧، ج ١٠، ص ١٦٨۔

3 ......الانتقاء فی فضائل الثلاثۃ الائمۃ الفقہاء لابن عبد البر، قول الشافعی فیہ، ص ١٣٥۔

हमेशा फ़िक्रे आख़िरत में मगन :

हज़रते सय्यिदुना शरीक नख़ई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى बयान करते हैं कि "हज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَكْرَم अकसर ख़ामोश रहते, हमेशा फ़िक्रे आख़िरत में मगन रहते और लोगों से बात चीत कम करते थे।"(1)

येह आप رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰى عَلَيْه के इल्मे बातिन और दीन के अहम उमूर में मश्गूल रहने पर वाज़ेह दलाइल हैं क्यूंकि जिसे ख़ामोशी और ज़ोहद अ़ता किया गया बेशक उसे सारा इल्म अ़ता कर दिया गया। तीनों अइम्मा के येह मुख़्तसर अह्वाल हैं।

मनाक़िबे इमाम अह्मद बिन ह़म्बल और इमाम षौरी :

हज़रते सय्यिदुना इमाम अह्मद बिन ह़म्बल और हज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान षौरी رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمَا के मुत्तबेईन मज़्कूरा तीनों अइम्मा के मुक़ल्लिदीन से बहुत कम हैं और हज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान षौरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى के मुक़ल्लिदीन हज़रते सय्यिदुना इमाम अह्मद बिन ह़म्बल عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَوَّل के मुक़ल्लिदीन से भी कम हैं लेकिन इन दोनों का ज़ोहदो तक़्वा मश्हूर है और येह किताब इन्हीं के अक़्वाल व अफ़्आ़ल की ह़िकायात से मुज़य्यन है, मज़ीद तफ़्सील की ह़ाजत नहीं। अब आप इन तीनों अइम्मए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام की सीरतों में ग़ौर कीजिये और सोचिये कि क्या दुन्या से कनारा कशी करने के येह अह्वाल, अक़्वाल, अफ़्आ़ल और अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ के लिये हर चीज़ से बेगाना हो जाना फ़िक़्ह की जुज़्इय्यात या'नी बैए़ सलम, इजारा, ज़िहार, ईला और लिआ़न का जानने से ह़ासिल होते हैं या येह किसी और इल्म का नतीजा हैं जो इस से अफ़्ज़ल व आ'ला है। फिर उन्हें देखो जो इन की इक़्तिदा व पैरवी का दा'वा करते हैं वोह अपने दा'वे में सच्चे हैं या झूटे ?

---

(1) ......الانتقاء فی فضائل الثلاثة الفقهاء لابن عبد البر، یحیی بن سعید القطان، ص ۱۳۱۔

बाब नम्बर 3 : उन मज़मूम उ़लूम का बयान जिन्हें लोग अच्छा समझते हैं

इस बाब में बयान होगा कि बा'ज़ उ़लूम बुरे क्यूं हैं ? और येह कि बा'ज़ उ़लूम मषलन फ़िक़्ह, इल्म, तौह़ीद, तज़्कीर और ह़िक्मत के नाम तब्दील हो गए हैं और उ़लूमे शरइय्या किस क़दर अच्छे हैं और किस क़दर बुरे ?

पहली फ़स्ल : बा'ज़ उ़लूम के मज़मूम होने का सबब

शायद तुम कहो कि इल्म किसी चीज़ को इस त़रह़ जान लेने का नाम है जैसी वोह है और इल्म अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की सिफ़ात में से भी है फिर येह क्यूं कर हो सकता है कि एक चीज़ इल्म भी हो और बुरी भी ? याद रखो इल्म को इल्म होने की वजह से बुरा नहीं कहा जाता बल्कि बन्दों के ह़क़ में तीन में से एक वजह से बुरा होता है।

पहली वजह : येह है कि इल्म जिस के पास होता है वोह इस के लिये या इस के सिवा किसी दूसरे के लिये नुक़्सान देह होता है जैसा कि जादू और तिलिस्मात की बुराई बयान की जाती है हालांकि येह ह़क़ है क्यूंकि क़ुरआने ह़कीम ने इस की गवाही दी है और येह मियां बीवी में जुदाई डालने का ज़रीआ़ है। रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم पर भी जादू किया गया था जिस के सबब आप बीमार हो गए थे यहां तक कि ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام ने इस की ख़बर दी तो कुंवें में पथ्थर के नीचे से जादूई अश्या को निकाला गया।(1)

जादू के बुरा होने का सबब :

जादू इल्म ही की एक क़िस्म है जो जवाहिर के ख़्वास और सितारों के तुलूअ़ होने की जगहों में ह़िसाबी उमूर से ह़ासिल होता है। इन जवाहिर से उस शख़्स की शक्लो सूरत पर उस का पुतला बनाया जाता है जिस पर जादू करना होता है फिर सितारों के तुलूअ़ के ख़ास वक़्त का इन्तिज़ार किया जाता है और वक़्त आने पर इस पुतले पर कुफ़्रिय्यात और ख़िलाफ़े शरअ़ बे ह़याई के कलिमात पढ़े जाते हैं और इस के ज़रीए शैत़ानों से मदद मांगी जाती है। येह सब करने के बा'द अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की आ़दते जारिया के ह़ुक्म से जिस शख़्स पर जादू किया जाए उस पर

(1) صحیح البخاری، کتاب الطب، باب السحر، الحدیث:۵۷۶۶، ج۴، ص۴۰۔

अ़जीबो ग़रीब अह़वाल ज़ाहिर होते हैं। इन अस्बाब को जानना ब हैषिय्यत इ़ल्म होने के बुरा नहीं लेकिन चूंकि येह इ़ल्म लोगों को नुक़्सान देने और बुराई पहुंचाने ही का ज़रीआ़ है और बुराई तक पहुंचाने वाली शै ख़ुद बुरी होती है। लिहाज़ा येह जादू के बुरा इ़ल्म होने का सबब है।

झूट बोलना कैसा ? :[1]

यूंही जो शख़्स किसी वली को शहीद करने के दरपै हो और वली किसी जगह छुप जाए फिर ज़ालिम किसी से इस के मुतअ़ल्लिक़ पूछे तो उसे इस के बारे में न बताना जाइज़ है बल्कि इस मौक़अ़ पर ख़िलाफ़े वाक़ेअ़ बात बोलना वाजिब है ह़ालांकि उस जगह का बता देना राह दिखाना और किसी चीज़ का पता बताना है लेकिन चूंकी येह नुक़्सान का ज़रीआ़ है इस लिये बुरा है।

दूसरी वजह : बा'ज़ अवक़ात इ़ल्म अपने साह़िब को अकषर नुक़्सान देता है जैसा कि इ़ल्मे नुजूम, फ़ी नफ़्सिही (या'नी अपनी ज़ात की वजह से) बुरा नहीं क्यूंकि इस की दो क़िस्में हैं :

﴾1﴿.....**ह़िसाब :** इसे कुरआने पाक ने भी बयान किया है कि सूरज चांद का चलना ह़िसाब से है। चुनान्चे, इरशादे बारी तआ़ला है :

اَلشَّمْسُ وَالْقَمَرُ بِحُسْبَانٍ ۙ﴿۵﴾ (پ۲۷، الرحمٰن:۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *सूरज और चांद ह़िसाब से हैं।*

एक और मक़ाम पर फ़रमाया :

وَالْقَمَرَ قَدَّرْنٰهُ مَنَازِلَ حَتّٰی عَادَ كَالْعُرْجُوْنِ الْقَدِيْمِ ﴿۳۹﴾ (پ۲۳، یٰسٓ:۳۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और चांद के लिये हम ने मन्ज़िलें मुक़र्रर कीं यहां तक कि फिर हो गया जैसे खजूर की पुरानी डाल (टहनी)।*

---

❶..... दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़्बूआ़ 1197 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब बहारे शरीअ़त जिल्द 3 सफ़ह़ा 517 पर सदरुश्शरीआ़, बदरुत्तरीक़ा ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं कि ''तीन सूरतों में झूट बोलना जाइज़ है या'नी इस में गुनाह नहीं। **एक जंग की सूरत में** कि यहां अपने मुक़ाबिल को धोका देना जाइज़ है, जब ज़ालिम ज़ुल्म करना चाहता हो उस के ज़ुल्म से बचने के लिये भी (झूट बोलना) जाइज़ है। **दूसरी सूरत** येह है कि दो मुसलमानों में इख़्तिलाफ़ है और येह इन दोनों में सुल्ह़ कराना चाहता है, मषलन एक के सामने येह कह दे कि वोह तुम्हें अच्छा जानता है, तुम्हारी ता'रीफ़ करता था या उस ने तुम्हें सलाम कहला भेजा है और दूसरे के पास भी इसी क़िस्म की बातें करे ताकि दोनों में अ़दावत कम हो जाए और सुल्ह़ हो जाए। **तीसरी सूरत** येह है कि बीबी (बीवी) को ख़ुश करने के लिये कोई बात ख़िलाफ़े वाक़ेअ़ कह दे।

﴾2﴿......**अह़काम :** इ़ल्मे नुजूम का ह़ासिल, अस्बाब को देख कर वाक़िआ़त का अन्दाज़ा लगाना है और येह ऐसे ही है जैसे त़बीब नब्ज़ देख कर अ़न क़रीब पैदा होने वाले मरज़ के बारे में अन्दाज़ा लगाता है और येह इस बात की मा'रिफ़त ह़ासिल करने का ज़रीआ़ है कि मख़्लूक़ के बारे में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की आ़दत और सुन्नते जारिया क्या है लेकिन इस के बा वुजूद शरीअ़त ने इस की मज़म्मत बयान की। चुनान्चे, सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जब तक़दीर की बात हो तो ख़ामोश हो जाओ और जब सितारों का ज़िक्र हो तो ख़ामोश रहो और जब मेरे सह़ाबा के बारे में गुफ़्तगू हो तब भी चुप रहो।"(1)

एक रिवायत में है कि "मुझे अपने बा'द उम्मत पर तीन चीज़ों का ख़ौफ़ है : (1) अइम्मा के ज़ुल्म (2) सितारों पर ईमान लाने और (3) तक़दीर के झुटलाए जाने का।"(2)

अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "सितारों का सिर्फ़ इतना इ़ल्म ह़ासिल करो जिस से ख़ुश्की और तरी में राह पा सको।"(3)

इ़ल्मे नुजूम से मुमानअ़त की वुजूहात :

इ़ल्मे नुजूम से मन्अ़ करने की तीन वुजूहात हैं :

﴾1﴿......येह अकषर लोगों के लिये नुक़्सान देह होता है यूं कि जब उन्हें बताया जाता है कि सितारों की गर्दिश के नतीजे में येह ह़ालात पैदा होते हैं तो उन के दिलों में येह बात बैठ जाती है कि सितारे ही मुअष्षर हैं येही मा'बूद हैं जो काइनात का निज़ाम चलाते हैं क्यूंकि येह मुअ़ज़्ज़ज़ आस्मानी जवाहिर हैं, इन की ता'ज़ीम दिल में बैठ जाती है फिर दिल इन्ही की त़रफ़ मुतवज्जेह रहता और ख़ैरो शर के आने या न आने को इन्ही की जानिब से तसव्वुर करता है। फिर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र दिल से मिट जाता है क्यूंकि कमज़ोर ईमान वाले की नज़र अस्बाब व वसाइल पर ही होती है जब कि मज़बूत़ ईमान वाला आ़लिम जानता है कि सूरज, चांद और सितारे हुक्मे

---

1 ......المعجم الکبیر، الحدیث:۱۴۲۷، ج۲، ص۹۶۔
جامع بیان العلم وفضلہ، باب العبارۃ عن حدود علم الدیانات، الحدیث:۸۳۳، ص۲۹۷۔

2 ......جامع بیان العلم وفضلہ، باب العبادۃ عن حدود علم الدیانات، الحدیث:۸۳۴، ص۲۹۸۔
معرفۃ الصحابۃ لابی نعیم الاصبھانی، الحدیث:۲۰۵۷، ج۵، ص۳۲۔

3 ......جامع بیان العلم وفضلہ، باب العبارۃ عن حدود علم الدیانات، الحدیث:۸۲۸، ص۲۹۶۔
المصنف لابن ابی شیبۃ، کتاب الادب، فی تعلیم النجوم ما قالوا فیھا، الحدیث:۴، ج۶، ص۱۲۹۔

इलाही ही के ताबेअ़ हैं। कमज़ोर ईमान वाले की मिषाल कि तुलूए़ आफ़्ताब के वक़्त जिस की नज़र रोशनी का हुसूल हो च्यूंटी की मानिन्द है कि अगर उसे अ़क़्ल दी जाए और वोह सफ़्हे पर हो और इस पर मुरत्तब होने वाली ख़त़ की सियाही को देख रही हो तो वोह येह ए'तिक़ाद रखेगी कि येह क़लम का फ़े'ल है, उस की नज़र उंगलियों को नहीं देख सकेगी फिर उंगलियों से हाथ फिर उस से हाथ को ह़रकत देने के इरादे फिर इरादे से कुदरत व इरादे के मालिक कातिब फिर कातिब से हाथ, कुदरत और इरादे को पैदा करने वाले की त़रफ़ भी नहीं पहुंचेगी क्यूंकि अकषर लोगों की नज़र क़रीबी और नीचे के अस्बाब पर ठहर जाती है और मुसब्बिबुल अस्बाब तक रसाई नहीं पाती। येह इल्मे नुजूम से मन्अ़ करने का एक सबब है।

﴾2﴿......इल्मे नुजूम के अह़काम मह़ज़ तख़्मीनी (या'नी क़ियास पर मब्नी) होते हैं। किसी ख़ास शख़्स के बारे में न यक़ीनी हुक्म मा'लूम होता है न ज़न्नी। लिहाज़ा इस की वजह से हुक्म लगाना जहालत से हुक्म लगाना है। इस सूरत में इल्मे नुजूम की मज़म्मत व बुराई जहालत होने के ए'तिबार से है न कि इस ए'तिबार से कि वोह इल्म है। ह़ालांकि येह ह़ज़रते सय्यिदुना इदरीस عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام का मो'जिज़ा है जैसा कि मन्क़ूल है। लेकिन अब येह इल्म मिट गया और ना पैद हो गया है। नुजूमी की बात अगर कभी दुरुस्त होती भी है तो वोह नादर और इत्तिफ़ाक़ी है क्यूंकि नुजूम बसा अवक़ात एक सबब पर मुत्तलअ़ होता है लेकिन इस सबब के बा'द मुसब्बब नहीं पाया जाता जब तक कषीर शराइत़ न पाई जाएं और वोह शराइत़ ऐसी हैं कि जिन की ह़क़ीक़तों से आगही इन्सानी त़ाक़त से बाहिर है। लिहाज़ा अगर इत्तिफ़ाक़न **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ क़ादिरे मुत़लक़ दूसरे अस्बाब को भी मुक़द्दर फ़रमा दे तो नुजूमी की बात दुरुस्त होती है और अगर मुक़द्दर न फ़रमाए तो ग़लत़ और येह ऐसा ही है जैसे इन्सान जब देखता है कि बादल इकठ्ठे हो रहे और पहाड़ों से उठ रहे हैं तो वोह अन्दाज़ा लगा कर कहता है कि आज बारिश होगी लेकिन अकषर सूरज निकल आता है और बादल ग़ाइब हो जाते हैं और कभी इस के बर अ़क्स भी हो जाता है। अल ग़रज़ ! सिर्फ़ बादलों का होना बारिश बरसने के लिये काफ़ी नहीं जब तक दूसरे अस्बाब मा'लूम न हों। इसी त़रह़ मल्लाह़ (किश्ती बान) हवाओं के मुतअ़ल्लिक़ अन्दाज़ा लगा कर बत़ौरे आ़दत कह देता है कि किश्ती सलामत रहेगी ह़ालांकि इन हवाओं के कुछ मख़्फ़ी अस्बाब भी हैं जिन की उसे ख़बर नहीं जिस की वजह से कभी उस का अन्दाज़ा ठीक होता है और कभी ग़लत़। इसी वजह से मज़बूत़ और क़वी (ईमान वाले) शख़्स को भी इल्मे नुजूम सीखने से रोका गया है।

﴾3﴿.....इल्मे नुजूम का कोई फ़ाइदा नहीं, इस की कम अज़ कम ह़ालत येह है कि येह एक फ़ुज़ूल और बे मक़्सद बात में ग़ौरो ख़ौज़ करना है और इन्सान के सब से क़ीमती सरमाये या'नी उ़म्र को एक ऐसे काम में ज़ाएअ़ करना है जिस में कोई फ़ाइदा नहीं बल्कि सरासर नुक़्सान है।

बे फ़ाइदा इल्म :

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब, ह़बीबे लबीब صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم एक ऐसे शख़्स के पास से गुज़रे जिस के आस पास लोग जम्अ़ थे। इस्तिफ़्सार फ़रमाया : "येह क्या ?" लोगों ने बताया : "बहुत बड़ा आ़लिम है।" इरशाद फ़रमाया : "किस चीज़ का ?" अ़र्ज़ की : "शे'र और अ़रबों के नसब का।" इरशाद फ़रमाया : "येह ऐसा इल्म है जिस का फ़ाइदा नहीं और ऐसी जहालत है जिस का नुक़्सान नहीं।"(1)

एक रिवायत में है कि "इल्म तो पुख़्ता आयत, सुन्नते क़ाइमा या अ़द्लो इन्साफ़ पर मबनी फ़रीज़ा है।"(2)

लिहाज़ा पता चला कि इल्मे नुजूम और इस जैसे दीगर उ़लूम में ग़ौरो ख़ौज़ करना ख़त़रा मौल लेना और बे फ़ाइदा जहालत में ग़ौरो फ़िक्र करना है क्यूंकि जो तक़दीर में लिखा है वोह हो कर रहेगा इस से बचना मुमकिन नहीं। लेकिन इल्मे त़िब्ब का मुआ़मला इस के बर अ़क्स है इस लिये कि इस की ज़रूरत पड़ती है और इस के अकषर दलाइल पर इत्तिलाअ़ मिल जाती है। इसी त़रह़ ता'बीर का मुआ़मला भी इल्मे नुजूम के बर अ़क्स है। अगर्चे येह भी तख़्मीनी (क़ियासी) है लेकिन येह नबुव्वत का छियालीसवां ह़िस्सा है। लिहाज़ा इस में कोई ख़त़रा नहीं।

तीसरी वजह : ऐसे इल्म में ग़ौरो ख़ौज़ करना जिस में ग़ौरो ख़ौज़ करने वाले को कोई इल्मी फ़ाइदा ह़ासिल न हो, येह उसी के ह़क़ में बुरा है। जैसे उ़लूम की वाज़ेह़ और आ़म फ़हम बातें सीखने से पहले इस की बारीकियों और पोशीदा बातों को सीखना और अस्रारे इलाहिया में बह़्ष करना क्यूंकि फ़लासिफ़ा और इल्मे कलाम वालों ने इन को जानने की कोशिश की मगर वोह इन तक रसाई नहीं पा सके और अम्बियाए किराम व औलियाए उ़ज़्ज़ाम के सिवा कोई भी इन तक रसाई नहीं पा सकता और न इन के बा'ज़ त़रीक़ों को जान सकता है। इस लिये लोगों पर वाजिब है कि लोग इन के बारे में बह़्षो मुबाह़िषा करने से बाज़ रहें और जो शरीअ़त ने बयान

1 ......جامع بیان العلم وفضلہ، باب معرفۃ اصول العلم و حقیقتہ، الحدیث:۷۷۲، ص۲۷۷۔

2 ......سنن ابی داود، کتاب الفرائض، باب ماجاء فی تعلیم الفرائض، الحدیث:۲۸۸۵، ج۳، ص۱۶۴۔

किया उस की त़रफ़ रुजूअ़ करें। तौफ़ीक़ याफ़्ता के लिये इतना ही काफ़ी है। कितने लोगों ने उ़लूम में ग़ौरो ख़ौज़ किया मगर उन्हें नुक़्सान हुवा, अगर वोह इन में ग़ौरो फ़िक्र न करते तो दीन में इस से अच्छी ह़ालत पर होते। नीज़ इस बात का इन्कार भी नहीं किया जा सकता कि इल्म बा'ज़ लोगों के लिये नुक़्सान देह होता है जिस त़रह़ परन्दे का गोश्त और ख़ुशगवार ह़ल्वे की बा'ज़ अक़्साम दूध पीते बच्चे को नुक़्सान देती हैं। बल्कि कुछ लोगों का बा'ज़ बातों से जाहिल रहना ही उन के लिये फ़ाइदा मन्द होता है।

ह़िकायत : मोटापे का नुक़्सान :

चुनान्चे, मन्क़ूल है कि एक शख़्स ने किसी ह़कीम को शिकायत की, कि उस की बीवी बांझ है अवलाद नहीं होती। ह़कीम ने औ़रत की नब्ज़ देख कर कहा : "तुझे अब बच्चा पैदा करने के लिये दवा की ज़रूरत नहीं क्यूंकि नब्ज़ देखने से पता चला है कि तू 40 दिन के अन्दर मर जाएगी।" वोह औ़रत बहुत ख़ौफ़ज़दा हुई, उस की ज़िन्दगी तल्ख़ हो गई, उस ने अपने अमवाल निकाल कर तक़्सीम कर दिये, वसिय्यत की और खाना पीना भी छोड़ दिया यहां तक कि 40 रोज़ की मुद्दत गुज़र गई लेकिन उसे मौत न आई, उस का शोहर ह़कीम के पास गया और कहा : "वोह मरी नहीं।" ह़कीम ने कहा : "मुझे पता है, अब तुम उस से जिमाअ़ करो वोह बच्चा जनेगी।" उस ने पूछा : "वोह कैसे?" ह़कीम ने कहा : "मैं ने देखा कि वोह मोटी थी और उस के रह़म (बच्चा दानी) के मुंह पर चर्बी चढ़ गई थी (जो विलादत से मानेअ़ थी) तो मैं ने जाना कि येह सिर्फ़ मौत के ख़ौफ़ से कमज़ोर हो सकती है।" इस लिये मैं ने उसे मौत से डराया यहां तक कि अब वोह कमज़ोर हो चुकी है और विलादत की रुकावट ख़त्म हो गई है। इस ह़िकायत से मा'लूम हो गया कि बा'ज़ उ़लूम ह़ासिल करने में ख़त़रा होता है नीज़ इस फ़रमाने मुस्त़फ़ा का मा'ना भी समझ में आ गया कि "हम ऐसे इल्म से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की पनाह मांगते हैं जो नफ़्अ़ न दे।"

इत्तिबाए सुन्नत में सलामती है :

इस ह़िकायत से इब्रत ह़ासिल करो और उन उ़लूम के मुतअ़ल्लिक़ बह़्ष न करो जिन्हें शरीअ़त ने मज़मूम क़रार दिया और उन से मन्अ़ किया है। सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن की पैरवी को लाज़िम पकड़ लो और इत्तिबाए सुन्नत पर इक्तिफ़ा करो क्यूंकि इत्तिबाअ़ में सलामती है जब कि अश्या के बारे में बह़्ष व तह़क़ीक़ करने में ख़त़रा है। अपनी राय, अ़क़्ल, दलील और बुरहान के ज़रीए ज़ियादा झगड़ा न करो और तुम्हारा येह गुमान कि मैं अश्या की माहिय्यत व ह़क़ीक़त जानने के लिये इन के मुतअ़ल्लिक़ बह़्ष करता हूं तो इल्म में ग़ौरो तफ़क्कुर का क्या नुक़्सान है? तो सुनो! इस का जो नुक़्सान तुम्हें पहुंचेगा वोह बहुत ज़ियादा है और

कितनी चीज़ें ऐसी हैं कि जिन पर मुत्तलअ़ होना तुम्हें ऐसा नुक़्सान पहुंचाएगा जो तुम्हें आख़िरत में तबाहो बरबाद कर डालेगा मगर येह कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम्हें अपनी रह़मत से नवाज़ दे और जान लो ! जिस त़रह़ माहिर त़बीब मुआ़लजात के अस्रार पर मुत्तलअ़ होता है और जो इन अस्रार से बे ख़बर हो वोह इन्हें बईद समझता है इसी त़रह़ अम्बियाए किराम عَلَيۡهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام दिलों के त़बीब और ह़याते उख़रविया के अस्बाब से बा ख़बर हैं इस लिये तुम अपनी अ़क़्ल को इन के त़रीक़ों पर तरजीह़ न दो वरना हलाक हो जाओगे।

कितने लोग ऐसे हैं कि जब उन की उंगली में कोई आ़रिज़ा लाहि़क़ होता है तो उन की अ़क़्ल फ़ैसला करती है कि उंगली पर लेप कर दिया जाए जब कि त़बीबे ह़ाज़िक़ उन्हें बताता है कि इस का इलाज येह है कि उंगली की दूसरी जानिब लेप किया जाए तो वोह इसे बहुत ज़ियादा बईद समझते हैं क्यूंकि वोह पुठ्ठों के फूटने और निकलने की कैफ़िय्यत और इन के बदन पर फैलने की सूरत से नावाक़िफ़ होते हैं। इसी त़रह़ त़रीक़े आख़िरत, शरीअ़त के त़रीक़ों और आदाब की बारीकियों का मुआ़मला है और जो अ़क़ीदे लोगों के लिये मुक़र्रर हैं इन में ऐसे अस्रार और बारीकियां हैं कि इन का इह़ात़ा अ़क़्ले इन्सानी की क़ुव्वत व वुस्अ़त से बाहर है। जैसा कि पथ्थरों के ख़वास में बा'ज़ ऐसी अ़जीब बातें होती हैं जो अहले फ़न को भी मा'लूम नहीं होतीं। यहां तक कि कोई येह नहीं जान सका कि मिक़्नात़ीस लोहे को क्यूं खींचता है।

अ़क़ाइद व आ'माल के अ़जाइब व ग़राइब और फ़वाइद दवाओं और जड़ी बूटियों के फ़वाइद से ज़ियादा और अ़ज़ीम हैं। येह दिलों की सफ़ाई, पाकीज़गी और त़हारत व तज़किया का फ़ाइदा देते हैं। इन्हें संवारने से क़ुर्बे ख़ुदावन्दी में तरक़्क़ी होती और फ़ज़्ले इलाही की ख़ुश्बूएं ह़ासिल होती हैं। जिस त़रह़ अ़क़्लें अदवियात के फ़वाइद का इदराक नहीं कर सकतीं ह़ालांकि इन का तजरिबा भी हो सकता है तो फिर उन अ़क़ाइदो आ'माल का इदराक करने से भी क़ासिर हैं जो उख़रवी जिन्दगी में नफ़्अ़ देंगे जब कि इन का तजरिबा भी नहीं किया जा सकता और इन का तजरिबा मह़ज़ यूं हो सकता है कि कोई मुर्दा हमारे पास आ कर हमें बता दे की येह आ'माल मक़्बूल, नफ़्अ़ मन्द और क़ुर्बे इलाही का ज़रीआ़ हैं और येह आ'माल रह़मते इलाही से दूरी का बाइ़ष हैं। इसी त़रह़ अ़क़ाइद के बारे में भी बता दे लेकिन इस की उम्मीद नहीं की जा सकती इस लिये तुम्हें अ़क़्ल का इतना फ़ाइदा काफ़ी है कि वोह तुम्हें रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को सच्चा जानने की हिदायत दे और उन के इशारों के मक़ासिद समझाए। बस इस के बा'द अ़क़्ल का अ़मल तर्क कर दो और इत्तिबाअ़ को लाज़िम कर लो। इसी इत्तिबाअ़ और तस्लीम करने में तुम्हारी सलामती है। इसी लिये मदीने के ताजदार, बिइज़्ने परवर दगार, दो आ़लम के मालिको

मुख़्तार صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ''बा'ज़ इल्म जहालत होते हैं और बा'ज़ बातें थकावट (का बाइ़ष) होती हैं।''(1)

ज़ाहिर है कि इल्म जहालत नहीं होता लेकिन नुक़्सान देने में वोह जहालत जैसा अषर करता है। नीज़ आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने येह भी इरशाद फ़रमाया कि ''थोड़ी तौफ़ीक़ ज़ियादा इल्म से बेहतर है।''(2)

उ़लूम दरख़्तों और फलों की मानिन्द हैं :

ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने इरशाद फ़रमाया : ''दरख़्त कितने ज़ियादा हैं लेकिन सब फल नहीं देते और न ही सब फल उ़म्दा होते हैं इसी त़रह़ उ़लूम कितने ज़ियादा हैं लेकिन सब नफ़्अ़ नहीं देते।''(3)

दूसरी फ़स्ल : अल्फ़ाज़े उ़लूम में तब्दीली का बयान

जान लो ! बुरे उ़लूम उ़लूमे शरइय्या के साथ इस लिये मिल गए हैं कि लोगों ने अग़राज़े फ़ासिदा की वजह से अच्छे नामों में तह़रीफ़ कर के इन्हें बदल दिया और सलफ़े सालिह़ीन व क़रने अव्वल वाले इन के जो मआ़नी मुराद लेते थे उन्हें इन के इ़लावा दूसरे मआ़नी की त़रफ़ मुन्तक़िल कर लिया। ऐसे पांच अल्फ़ाज़ कि जिन्हें लोगों ने बुरे मआ़नी की त़रफ़ फैर लिया : (1) फ़िक़ह (2) इल्म (3) तौह़ीद (4) तज़्कीर (वा'ज़ो नसीह़त) और (5) ह़िक्मत। येह नाम अच्छे हैं और इन से मुत्तसिफ़ लोगों का दीन में बड़ा मक़ाम है लेकिन अब इन्हें बुरे मआ़नी में मुन्तक़िल कर लिया गया है और चूंकि येह नाम उन लोगों पर बोले जाते थे इस लिये अब जो लोग उन से मुत्तसिफ़ हैं इन की मज़म्मत से दिल नफ़रत करते हैं।

तफ़्सील :

﴿1﴾......**फ़िक़ह :** इसे दूसरे मा'ना की त़रफ़ मुन्तक़िल करने की तह़रीफ़ तो नहीं की लेकिन इसे उस के साथ ख़ास कर लिया जो फ़तवा की नादिर जुज़इयात को जाने, इन की इ़ल्लतों की बारीकियों पर मुत्तलअ़ हो, इस में बहुत ज़ियादा कलाम करता और इस के मुतअ़ल्लिक़ मक़ाले याद करता हो। जो इन में बहुत ज़ियादा ग़ौरो फ़िक्र करता और ज़ियादा मश्ग़ूल रहता है उसे बड़ा फ़क़ीह कहा जाता है। ह़ालांकि पहले ज़माने में मुत़लक़न इल्मे त़रीक़े आख़िरत, आफ़ाते नफ़्स

---

1 ......سنن ابی داود، کتاب الادب، باب ماجاء فی الشعر، الحدیث:۵۰۱۲، ج۴، ص۳۹۴۔

2 ......کشف الخفاء، حرف القاف، الحدیث:۱۸۸۰، ج۲، ص۹۱۔

3 ......تاریخ مدینۃ دمشق لابن عساکر، حواریو عیسی ابن مریم علیہ السلام:۸۹۹۶، ج۶۸، ص۶۲۔
ربیع الابرار، باب العلم و الحکمۃ......الخ، ص۳۱۷۔

की बारीकियों की मा'रिफ़त, मुफ़्सिदाते आ'माल, दुन्या की ह़क़ारत का पूरा इह़ात़ा करने, आख़िरत की ने'मतों के अच्छी त़रह़ वाक़िफ़ होने और दिल पर ख़ौफ़ के ग़ालिब रहने का नाम फ़िक़्ह था । इस की दलील अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का येह इरशाद है :

لِيَتَفَقَّهُوْا فِي الدِّيْنِ وَلِيُنْذِرُوْا قَوْمَهُمْ اِذَا رَجَعُوْۤا اِلَيْهِمْ (پ ۱۱، التوبۃ:۱۲۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : कि दीन की समझ ह़ासिल करें और वापस आ कर अपनी क़ौम को डर सुनाएं ।

लिहाज़ा जिस फ़िक़्ह से डराना और ख़ौफ़ दिलाना ह़ासिल होता है वोह येही है न कि त़लाक़, इताक़, लिआ़न, सलम और इजारा के मसाइल क्यूंकि इन से डराना और ख़ौफ़ दिलाना ह़ासिल नहीं होता बल्कि हमेशा इसी में लगे रहने से दिल सख़्त होता और दिल से ख़ौफ़े ख़ुदा निकल जाता है । जैसा कि अब हम उन लोगों का ह़ाल देखते हैं जो सिर्फ़ इसी के हो कर रह गए और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

لَهُمْ قُلُوْبٌ لَّا يَفْقَهُوْنَ بِهَا (پ ۹، الاعراف:۱۷۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : वोह दिल रखते हैं जिन में समझ नहीं ।

इस में ईमान के मआ़नी न समझना मुराद है, फ़तावा को न समझना मुराद नहीं । मेरी ज़िन्दगी की क़सम ! लुग़त में फ़िक़्ह और फ़हम दोनों एक ही मा'ना में इस्ति'माल होते हैं और पहले और अब भी आ़दतन इन का इस्ति'माल इसी मा'ना में होता है ।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया :

لَاَنْتُمْ اَشَدُّ رَهْبَةً فِيْ صُدُوْرِهِمْ مِّنَ اللّٰهِ ؕ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا يَفْقَهُوْنَ ﴿۱۳﴾ (پ ۲۸، الحشر:۱۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक उन के दिलों में अल्लाह से ज़ियादा तुम्हारा डर है येह इस लिये कि वोह ना समझ लोग हैं ।

इस आयत में उन के अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से कम डरने और लोगों के दब दबे को ज़ियादा जानने की वजह इन की क़िल्लते फ़िक़्ह बताया । लिहाज़ा तुम ग़ौर करो कि येह फ़तवा की तफ़रीआ़त याद न करने का नतीजा है या जो उ़लूम हम ने बयान किये इन के न होने का । सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में जो लोग वफ़्द की सूरत में ह़ाज़िर होते थे उन के लिये इरशाद फ़रमाया : "येह अहले इल्म, दाना और समझदार हैं ।"(1)

1 الفقیہ والمتفقہ، ذکر تقسیم امیر المؤمنین علی بن ابی طالب......الخ، الرقم:۱۷۸/۱۷۹، ج۱، ص۱۸۵۔
سنن دارمی، المقدمۃ، باب فی فضل العلم والعالم، الرقم:۳۲۹/۳۳۰، ج۱، ص۱۰۷۔

सब से बड़ा फ़क़ीह :

हज़रते सय्यिदुना सा'द बिन इब्राहीम ज़ोहरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی से पूछा गया कि "अहले मदीना में बड़ा फ़क़ीह कौन है ?" फ़रमाया : "वोह जो इन में से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से ज़ियादा डरता है ।"(1)

इस में गोया फ़िक़्ह के नतीजे की त़रफ़ इशारा है और तक़्वा इल्मे बात़िन का षमरा है न कि फ़तवा और क़ज़ाया का। चुनान्चे, रसूलों के सालार, मह़बूबे परवर दगार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "क्या मैं तुम्हें कामिल फ़क़ीह के बारे में न बताऊं ?" अ़र्ज़ की गई : "क्यूं नहीं ।" इरशाद फ़रमाया : "वोह जो लोगों को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रह़मत से मायूस न करे, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की खुफ़्या तदबीर से बे ख़ौफ़ न करे, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के फ़ैज़ाने रह़मत से ना उम्मीद न करे और कुरआने पाक से किसी और चीज़ की त़रफ़ रग़बत न करे ।"(2)

ग़ुलाम आज़ाद करने से ज़ियादा पसन्दीदा अ़मल :

हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि ताजदारे अम्बिया, मह़बूबे किब्रिया صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र करने वालों के साथ सुब्ह़ से तुलूए़ आफ़्ताब तक बैठना मुझे चार ग़ुलाम आज़ाद करने से ज़ियादा पसन्द है।"(3)

रावी फ़रमाते हैं : येह ह़दीष बयान करने के बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ ने यज़ीद रक्क़ाशी और ज़ियाद नमीरी की त़रफ़ मुतवज्जेह हो कर फ़रमाया : "उस वक़्त ज़िक्र की मह़ाफ़िल तुम्हारी मह़फ़िलों जैसी न थीं। तुम्हारी मह़ाफ़िल तो ऐसी हैं कि तुम में से कोई एक अपने रुफ़क़ा को वा'ज़ करता है और बहुत तेज़ बोलता है जब कि हम अपनी मह़फ़िलों में बैठ कर ईमान का तज़्किरा करते, कुरआने ह़कीम में ग़ौरो फ़िक्र करते, दीन समझते और दीन की समझ के लिये खुद पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ने'मतों को शुमार करते थे ।"(4)

---

❶......سنن الدارمی، المقدمۃ، باب من قال:العلم، الخشیۃ، وتقوی اللّٰہ، الرقم:۲۹۵، ج ۱، ص ۱۰۱۔

❷......جامع بیان العلم وفضلہ، باب من یستحق أن یسمی فقیھا اوعالماً، الحدیث: ۸۵۸، ص ۳۰۴۔

❸......سنن ابی داود، کتاب العلم، باب فی القصص، الحدیث:۳۶۶۷، ج۳، ص ۴۵۲۔

کتاب الدعاء للطبرانی، باب فضل ذکراللّٰہ من صلاۃ الصبح الی......الخ، الحدیث:۱۸۷۸، ص ۵۲۴۔

❹......قوت القلوب، الفصل الحادی والثلاثون، باب ذکرالفرق بین علماء الدنیا......الخ، ج ۱، ص ۲۵۹۔

आप رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہُ ने क़ुरआने पाक में ग़ौरो फ़िक्र करने और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ने'मतें शुमार करने को **फ़िक़्ह** का नाम दिया।

सरदारे मक्कए मुकर्रमा, सुल्ताने मदीनए मुनव्वरा صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "बन्दा उस वक़्त तक कामिल फ़क़ीह नहीं बन सकता जब तक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा की ख़ातिर लोगों को नाराज़ न कर ले और क़ुरआने पाक के लिये कई वुजूह का ए'तिक़ाद न रखे।"(1)

येह ह़दीषे पाक ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہُ से भी मौक़ूफ़न मरवी है और इस में इतना ज़ाइद है कि "फिर अपने नफ़्स की त़रफ़ मुतवज्जेह हो तो इस से बहुत ज़ियादा नाराज़ हो।"(2)

कामिल फ़क़ीह की अ़लामत :

ह़ज़रते सय्यिदुना फ़रक़द सनजी عَلَیْہِ رَحْمَةُ اللّٰہِ الْوَلِی ने ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَیْہِ رَحْمَةُ اللّٰہِ الْقَوِی से किसी चीज़ के बारे में पूछा, आप ने इस का जवाब दिया तो उन्हों ने अ़र्ज़ की : "फ़ुक़हा तो इस के बारे में येह फ़रमाते हैं।" तो ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَیْہِ رَحْمَةُ اللّٰہِ الْقَوِی ने फ़रमाया : "ऐ फ़ुरैक़द ! (येह फ़रक़द की तसग़ीर है) तुझे तेरी मां रोए ! क्या तू ने अपनी आंखों से किसी फ़क़ीह को देखा है ?" फ़क़ीह तो वोह होता है जो दुन्या से बे रग़बती और आख़िरत में रग़बत रखता हो, अपने दीन की समझ रखता हो, परवर दगार عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत पर हमेशगी इख़्तियार करता हो, परहेज़गार हो, मुसलमानों की इ़ज़्ज़तों के दरपै होने से ख़ुद को बचाता हो, उन के मालों पर नज़र न रखे और आ़म मुसलमानों का ख़ैर ख़्वाह हो।"(3)

आप رَحْمَةُ اللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ ने येह नहीं फ़रमाया कि फ़तवा की फ़रोआ़त का ह़ाफ़िज़ हो, मैं नहीं कहता कि लफ़्ज़े फ़िक़्ह ज़ाहिरी अह़काम के फ़तवा को शामिल नहीं बल्कि ब त़रीक़े उ़मूम व शुमूल और बित्तबअ़ इन्हें भी शामिल है लेकिन अस्लाफ़ इस का इत़लाक़ अकषर इ़ल्मे आख़िरत पर करते थे। इस तख़्सीस से उन लोगों का फ़रेब ज़ाहिर हो गया जो दिल के अह़काम और इ़ल्मे आख़िरत से ग़ाफ़िल हो कर मह़ज़ इसी के हो कर रह गए और उन्हों ने इस पर सिर्फ़ त़बीअ़त

---

1 ......جامع بیان العلم وفضلہ، باب من یستحق ان یسمی فقیھا اوعالماً، الحدیث:۸۵۹، ص۳۰۵۔

2 ......جامع معمر بن راشد مع مصنف عبدالرزاق، باب العلم، الرقم:۲۰۶۴۰، ج۱۰، ص۲۳۹۔

تاریخ دمشق لابن عساکر، عویمر بن زید ابو الدرداء:۵۴۶۴، ج۴۷، ص۱۷۳۔

3 ......سنن الدارمی، المقدمة، باب من قال:العلم، خشیة وتقوی اللّٰہ ،الرقم:۲۹۴، ج۱، ص۱۰۱۔

قوت القلوب، الفصل الحادی والثلاثون، باب ذکرالفرق بین علماء الدنیا......الخ، ج۱، ص۲۶۳۔

को मुआ़विन पाया क्यूंकि इ़ल्मे बाति़न गहरा, इस पर अ़मल करना मुश्किल और इस के ज़रीए़ हुकूमत, ओ़हदए क़ज़ा और इ़ज़्ज़त व माल का हु़सूल दुश्वार होता है। इस वजह से शैता़न ने इस (या'नी ज़ाहिरी फ़िक़्ह) को लोगों के दिलों मे उ़मदा बनाने का मौक़अ़ पाया वोह यूं कि फ़िक़्ह जो शरअ़ में एक पसन्दीदा नाम है इसे ख़ास कर दिया।

﴾2﴿....**इ़ल्म :** येह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ज़ात, उस की निशानियों और बन्दों के बारे में उस के अफ़्आ़ल (की हि़क्मतों) को जानने पर बोला जाता था यहां तक कि अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ के विसाले पुर मलाल पर ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने फ़रमाया : ''इ़ल्म के दस में से नव हि़स्से चले गए।''[1] इन्हों ने लफ़्ज़े इ़ल्म को अलिफ़ लाम के साथ मा'रुफ़ा ज़िक्र किया फिर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ज़ात के इ़ल्म के साथ इस की वज़ाह़त की। लोगों ने तसर्रुफ़ कर के इस में भी तख़्सीस कर दी वोह यूं कि उन्हों ने इस लफ़्ज़ को उस के साथ मश्हूर कर दिया है जो फ़िक़्ही मसाइल में मद्दे मुक़ाबिल से मुनाज़िरा करने में मश्ग़ूल हो। चुनान्चे, (मुनाज़िर के बारे में) कहा जाता है कि ह़क़ीक़त में आ़लिम तो वोह है। वोह इ़ल्म में मर्द है और इस के बर अ़क्स जो इस फ़न में महारत नहीं रखता और न इस में मश्ग़ूल होता है उसे कमज़ोरों में शुमार किया जाता है, अहले इ़ल्म के ज़ुमरे में शुमार नहीं किया जाता। येह भी तख़्सीस के ज़रीए़ तसर्रुफ़ है लेकिन इ़ल्म और उ़-लमा के मुतअ़ल्लिक़ मरवी फ़ज़ाइल अकषर उन के बारे में हैं जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ज़ात, उस के अह़काम व अफ़्आ़ल और सिफ़ात का इ़ल्म रखते हैं। लेकिन अब मुत़लक़न इस का इत़लाक़ उन पर किया जाता है जिन्हें शरई उ़लूम में से किसी में भी महारत ह़ासिल न हो बल्कि सिर्फ़ इख़्तिलाफ़ी मसाइल में झगड़ने के त़रीक़े जानता हो, उस का शुमार बड़े बड़े उ़-लमा में किया जाता है ह़ालांकि वोह तफ़्सीर, अह़ादीष और इ़ल्मे मज़हब वग़ैरा से जाहिल होता है और कषीर त़लबए इ़ल्म की हलाकत व बरबादी का सबब येही चीज़ है।

﴾3﴿....**तौह़ीद :** अब ह़ालत येह है कि इ़ल्मे कलाम और मुनाज़िरा करने के त़रीक़ों को जानने, मुख़ालिफ़ के ए'तिराज़ात तोड़ने के त़रीक़ों का इह़ात़ा करने, कषरते सुवाल के लिये ब तकल्लुफ़ फ़साह़त का इज़्हार करने, शुबहात डालने और इलज़ाम तराशी करने का नाम तौह़ीद रख दिया गया। ह़त्ता कि बा'ज़ गुरौहों ने अपना लक़ब अहले अ़द्ल और अहले तौह़ीद रख लिया है और मुतकल्लिमीन को उ़-लमाए तौह़ीद कहा जाने लगा है ह़ालांकि पहले ज़माने में इ़ल्मे कलाम की

---

1 ......المعجم الكبير، الحديث: ٨٨١، ج ٩، ص ١٦٣ ۔

ख़ास बातों में से किसी चीज़ को नहीं पहचाना जाता था बल्कि वोह लोग इख़्तिलाफ़ात और झगड़ों का दरवाज़ा खोलने वाले को सख़्त नापसन्द करते थे। बहर ह़ाल जिन ज़ाहिरी दलाइल पर कुरआने पाक मुश्तमिल है और पहली समाअ़त पर ही जिन्हें क़बूल करने में ज़ेहन जल्दी करते हैं, वोह सब को मा'लूम थे और कुरआने पाक का इ़ल्म ही तमाम इ़ल्म था। उन के नज़्दीक तौह़ीद किसी और चीज़ का नाम था जिसे अकषर इ़ल्मे कलाम वाले नहीं समझते और अगर समझें तो इस से मुत्तसिफ़ नहीं होते।

ह़क़ीक़ी तौह़ीद :

तमाम उमूर के अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से होने का ऐसा ए'तिक़ाद रखा जाए कि अस्बाब व वसाइल की त़रफ़ बिल्कुल तवज्जोह न रहे। हर ख़ैरो शर को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की जानिब से जाना जाए। येह एक मुअ़ज़्ज़ज़ मक़ाम व मर्तबा है। इस के नताइज व फ़वाइद में से एक तवक्कुल भी है जिस का बयान ''کتابُ التَّوَکُّل'' में आएगा।

तौह़ीद के फ़वाइद व षमरात :

तौह़ीद के षमरात में से एक येह भी है कि मख़्लूक़ की शिकायत न की जाए, उन पर गुस्सा न किया जाए, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के हुक्म और फ़ैसले को तस्लीम करते हुए इस पर रिज़ामन्दी का इज़्हार किया जाए, इसी के षमरात में से अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہُ का येह क़ौल है कि जब बीमारी में आप से अ़र्ज़ की गई : ''क्या हम आप के लिये त़बीब को ले आएं?'' तो आप رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : ''त़बीब ही ने तो मुझे बीमार किया है।''(1) नीज़ येह भी मन्क़ूल है कि जब आप बीमार हुए और पूछा गया कि ''त़बीब ने आप رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہُ के मरज़ के बारे में क्या कहा है?'' तो फ़रमाया : ''त़बीब ने कहा है कि मैं जो चाहता हूं करता हूं।''(2)

अ़न क़रीब ''کتابُ التَّوَکُّل'' और ''کتابُ التَّوْحِید'' में इस के दलाइल बयान होंगे।

तौह़ीद एक नफ़ीस जौहर है और उस के दो पोस्त (छिलके) हैं एक दूसरे की ब निस्बत मग़्ज़ से ज़ियादा दूर है। लोगों ने लफ़्ज़े तौह़ीद को पोस्त (छिलके) और इस की ह़िफ़ाज़त के काम के साथ ख़ास कर दिया है और मग़्ज़ को (जो कि ख़ालिस तौह़ीद है इसे) बिल्कुल छोड़ दिया है।

---

1 ......الزهد للامام احمد بن حنبل، زهد ابی بکرالصدیق، الرقم:۵۸۷، ص ۱۴۲۔

2 ......المصنف لابن ابی شیبة، کتاب الزهد، کلام ابی بکر الصدیق، الحدیث:۱۰، ج۸، ص۱۴۶۔

तौह़ीद का पहला पोस्त तो येह है कि तू अपनी ज़बान से कहे : لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई इबादत के लाइक़ नहीं। इस तौह़ीद को तषलीष (या'नी ख़ुदा तीन हैं बाप, बेटा और रूहुल क़ुदुस। نَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ ذَالِك) के ख़िलाफ़ तौह़ीद कहा जाता है जिस के नसारा क़ाइल हैं लेकिन कभी उस मुनाफ़िक़ से भी इस तौह़ीद का सुदुर हो जाता है जिस का बातिन उस के ज़ाहिर के ख़िलाफ़ होता है। **तौह़ीद का दूसरा पोस्त** येह है कि दिल में इस क़ौल की मुख़ालफ़त और इस का इन्कार न हो बल्कि ज़ाहिर दिल भी इस के ए'तिक़ाद और तस्दीक़ को शामिल हो और येह आ़म लोगों की तौह़ीद है। इल्मे कलाम वाले इसी पोस्त को अहले बिदअ़त की गड़ बड़ से बचाते हैं जैसा कि पीछे गुज़रा। **तीसरी चीज़** मग़्ज़े तौह़ीद है और वोह येह है कि तमाम उमूर के **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से होने का ऐसा ए'तिक़ाद रखा जाए कि अस्बाब व वसाइल की त़रफ़ बिल्कुल तवज्जोह न रहे। सिर्फ़ एक ख़ुदा की इबादत की जाए, उस के ग़ैर की इबादत न की जाए।

ह़क़ीक़ी तौह़ीद से ख़ारिज उमूर :

(1) इस तौह़ीद से ख़्वाहिशे नफ़्स की पैरवी ख़ारिज है और हर वोह शख़्स जिस ने ख़्वाहिशे नफ़्स की पैरवी की उस ने ख़्वाहिशे नफ़्स को अपना मा'बूद बना लिया। **अल्लाह** रब्बुल इबाद عَزَّوَجَلَّ का इरशादे ह़क़ीक़त बुन्याद है।

اَفَرَءَیْتَ مَنِ اتَّخَذَ اِلٰهَهٗ هَوٰىهُ (پ۲۵، الجاثیة:۲۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *भला देखो तो वोह जिस ने अपनी ख़्वाहिश को अपना ख़ुदा ठहरा लिया।*

ताजदारे अम्बिया, मह़बूबे किब्रिया صَلَّی اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक सब से ज़ियादा नापसन्दीदा मा'बूद ज़मीन पर जिस की परस्तिश की जाए वोह ख़्वाहिशे नफ़्स है।[1]

मिषाल : तह़क़ीक़ येह है कि जो ग़ौर करेगा वोह जान लेगा कि बुत की पूजा करने वाला दर ह़क़ीक़त बुत को नहीं बल्कि अपनी ख़्वाहिशे नफ़्स को पूजता है क्यूंकि उस का नफ़्स उस के आबा व अजदाद के दीन की त़रफ़ माइल होता है और वोह इस मैलान की इत्तिबाअ़ करता है और नफ़्स का अपनी पसन्दीदा बातों की त़रफ़ माइल होना उन्ही मआ़नी में से एक है जिन्हें ख़्वाहिशाते नफ़्सानिया से ता'बीर किया जाता है।

---

1 ......المعجم الکبیر، الحدیث:۷۵۰۲، ج۸، ص۱۰۳۔
الکامل فی ضعفاء الرجال لابن عدی، خُصَیب بن جَحْدَر البصری:۲۱۸، ج۳، ص۵۲۲۔

(2) लोगों से नाराज़ होना और उन की त़रफ़ मुतवज्जेह होना भी इस तौह़ीद से ख़ारिज है क्यूंकि जो तमाम उमूर को मिन जानिबिल्लाह जानेगा वोह किसी से नाराज़ क्यूं होगा। ह़क़ीक़ी तौह़ीद इसी मक़ाम का नाम है और येह सिद्दीक़ीन का मक़ाम है।

पस तुम ग़ौर करो कि इसे किस मा'ना की त़रफ़ बदल दिया गया और इस के किस पोस्त पर क़नाअ़त कर ली गई। किस त़रह़ लोगों ने अपनी ता'रीफ़ और फ़ख़्र में उस नाम से इस्तिदलाल किया जो मह़मूद है लेकिन उस मा'ना से ख़ाली है जिस की वजह से ह़क़ीक़ी ता'रीफ़ का इस्तिह़क़ाक़ है। येह उस इफ़्लास (गुर्बत) की त़रह़ है कि कोई सुब्ह़ सवेरे उठे और क़िब्ला की त़रफ़ मुतवज्जेह हो कर कहे :

اِنِّیْ وَجَّهْتُ وَجْهِیَ لِلَّذِیْ فَطَرَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ حَنِیْفًا (پ۷، الانعام:۷۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *मैं ने अपना मुंह उस की त़रफ़ किया जिस ने आस्मान और ज़मीन बनाए एक उसी का हो कर।* (1)

अब अगर उस का दिल ख़ास **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ मुतवज्जेह नहीं तो वोह हर दिन का आग़ाज़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से झूट बोल कर करता है। क्यूंकि अगर मुंह से उस की मुराद ज़ाहिरी चेहरा है तो वोह तो का'बा शरीफ़ की त़रफ़ है कि उसे इस ने बाक़ी तमाम जहतों से फैर दिया लेकिन का'बा उस की जहत नहीं जिस ने आस्मान व ज़मीन बनाए कि उस की सम्त तवज्जोह करने से वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ मुतवज्जेह होने वाला कहलाए, वोह तो इस से पाक और बुलन्द है कि सम्तों और कनारों से उस का तअ़य्युन किया जाए और अगर उस की मुराद क़ल्बी तवज्जोह है जो इ़बादत में अस्ल मत़लूब है तो फिर इस ह़ालत में उस के क़ौल की तस्दीक़ कैसे की जा सकती है जब कि उस का दिल दुन्यवी अग़राज़ व ह़ाजात में लगा हो और मालो जाह और कषरते अस्बाब को जम्अ़ करने के ह़ीलों की तलाश में मसरूफ़ हो और मुकम्मल त़ौर पर उन्हीं की त़रफ़ मुतवज्जेह हो तो फिर कब उस ने अपनी तवज्जोह इस की त़रफ़ की जिस ने आस्मान व ज़मीन बनाए। येह आयत तौह़ीद की ह़क़ीक़त का बयान है।

तौह़ीद का मर्कज़ व सर चश्मा :

पस मवह़्ह़िद वोह है जिस की नज़र सिर्फ़ एक ख़ुदाए बुज़ुर्ग व बरतर की त़रफ़ हो और वोह अपनी तवज्जोह उसी की जानिब लगाए रखे और येह इस इरशादे बारी तआ़ला की ता'मील है :

قُلِ اللّٰهُ ۙ ثُمَّ ذَرْهُمْ فِیْ خَوْضِهِمْ یَلْعَبُوْنَ ﴿۹۱﴾ (پ۷، الانعام:۹۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *अल्लाह कहो फिर उन्हें छोड़ दो उन की बेहूदगी में खेलता।*

---

(1)......صحیح مسلم، کتاب صلاۃ المسافرین، باب الدعاء فی صلاۃ اللیل وقیامہ، الحدیث: ۷۷۱، ص ۳۹۰۔

इस से मुराद महज़ ज़बान से कह देना नहीं क्यूंकि ज़बान तो दिल की तर्जमान होती है कभी सच बोलती है तो कभी झूट और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की नज़र का मक़ाम तो वोह है जिस की तर्जमानी ज़बान करती है और वोह दिल है और येही तौह़ीद का मर्कज़ और सर चश्मा है।

﴾4﴿......**ज़िक्रो तज़्कीर :** अल्लाह रब्बुल इबाद عَزَّوَجَلَّ का इरशाद है :

وَذَكِّرْ فَإِنَّ الذِّكْرٰى تَنْفَعُ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿۵۵﴾

(پ۲۷، الذّٰریٰت:۵۵)

***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और समझाओ कि समझाना मुसलमानों को फ़ाइदा देता है।*

महाफ़िले ज़िक्र की फ़ज़ीलत :

ज़िक्र की महाफ़िल की फ़ज़ीलत में कषीर अह़ादीष मरवी हैं। चुनान्चे, हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जब तुम जन्नत की क्यारियों से गुज़रो तो कुछ न कुछ चुन लिया करो।" अ़र्ज़ की गई : "जन्नत की क्यारियां कया हैं ?" इरशाद फ़रमाया : "ज़िक्र के ह़ल्क़े।"(1)

सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : मख़्लूक़ के फ़िरिश्तों के इलावा भी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के कुछ फ़िरिश्ते हैं जो दुन्या में सय्याह़त (सेर) करते हैं, जब वोह ज़िक्र की मह़फ़िलें देखते हैं तो उन में से बा'ज़, बा'ज़ को पुकारते हैं और कहते हैं : आओ ! अपने मक़्सूद की त़रफ़। वोह वहां आते हैं, ज़िक्र करने वालों को घेर लेते हैं और ग़ौर से सुनते हैं। सुनो ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र किया करो और अपने आप को नसीह़त किया करो।(2)

इस लफ़्ज़ को इस के ह़क़ीक़ी मा'ना से बदल दिया गया है कि अब इस का इत़्लाक़ उस पर किया जाता है जिसे अकषर वाइज़ीन हमेशा बयान करते हैं और वोह क़िस्से, अश्आ़र, शत़ह़ और त़ामात हैं (मुअख़्ख़िरुज़्ज़िक्र दोनों की वज़ाह़त आगे आ रही है)। क़िस्से बिदअ़त हैं और अस्लाफ़ ने क़िस्सा गो के पास बैठने से मन्अ़ फ़रमाया है। इस लिये कि क़िस्से न तो ज़मानए रिसालत में थे और न ही शैख़ैन या'नी अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ और अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ (رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُمَا) के ज़माने में यहां तक कि फ़ितना पैदा हुवा और क़िस्सा गो ज़ाहिर हुए।(3)

1 ......سنن الترمذی، کتاب الدعوات، باب:۸۷، الحدیث:۳۵۲۱، ج۵، ص۳۰۴۔

2 ......سنن الترمذی، باب ماجاء ان اللّٰہ ملائکۃ سیاحین فی الارض، الحدیث:۳۶۱۱، ج۵، ص۳۴۴۔

3 ......سنن ابن ماجہ، کتاب الادب، باب القصص، الحدیث:۳۷۵۴، ج۴، ص۲۲۷۔

المصنف لابن ابی شیبۃ، کتاب الادب، من کرہ القصص وضرب فیہ، الحدیث:۱، ج۶، ص۱۹۲۔

क़िस्सा गो वाइज़ीन की मज़म्मत :

मरवी है कि एक मरतबा ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُمَا (अचानक) मस्जिद से बाहर तशरीफ़ ले आए और फ़रमाया : "मैं क़िस्सा गो की वजह से बाहर निकला हूं, अगर वोह न होता तो मैं बाहर न आता।"(1)

ह़ज़रते सय्यिदुना ज़मरा رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْه बयान करते हैं कि मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान षौरी عَلَیْہِ رَحْمَةُ اللّٰہِ الْقَوِی से पूछा : "क्या हम क़िस्सा गो की त़रफ़ मुंह कर सकते हैं ?" तो उन्हों ने फ़रमाया : "बिदअ़तियों से अपनी पीठें फैर लो।"(2)

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने औ़न رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْه बयान करते हैं कि मैं ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम इब्ने सिरीन عَلَیْہِ رَحْمَةُ اللّٰہِ الْمُبِیْن की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवा तो उन्हों ने पूछा : "आज की क्या ख़बर है ?" मैं ने अ़र्ज़ की : "ह़ाकिम ने क़िस्सा गो लोगों को क़िस्से बयान करने से रोक दिया है।" तो आप رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْه ने फ़रमाया : "ह़ाकिम को दुरुस्त बात की तौफ़ीक़ नसीब हुई है।"(3)

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम आ'मश رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْه बसरा की जामेअ़ मस्जिद में दाख़िल हुए तो एक क़िस्सा गो को क़िस्सा बयान करते हुए देखा वोह कह रहा था कि "हमें ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम आ'मश رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْه ने बयान किया।" आप رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْه ह़ल्क़े के बीच में जा बैठे और बग़ल के बाल उखेड़ने लगे। क़िस्सागो ने कहा : "ऐ शैख़ ! क्या तुम्हें ह़या नहीं आती ?" फ़रमाया : "किस वजह से, मैं तो सुन्नत पर अ़मल कर रहा हूं जब कि तुम झूट बोल रहे हो, मैं आ'मश हूं और मैं ने तो तुम से कोई ह़दीष बयान नहीं की।"

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अह़मद बिन ह़म्बल عَلَیْہِ رَحْمَةُ اللّٰہِ الْاَوَّل ने फ़रमाया : "लोगों में सब से ज़ियादा झूट बोलने वाले क़िस्सा गो और भिकारी हैं।"(4)

अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِیْم ने बसरा की जामेअ़ मस्जिद से क़िस्सा गो लोगों को निकाल दिया। जब ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَیْہِ رَحْمَةُ اللّٰہِ الْقَوِی का कलाम सुना तो उन्हें न निकाला क्यूंकि आप رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْه इ़ल्मे आख़िरत,

---

1 ......قوت القلوب، الفصل الحادی و الثلاثون، باب ذکرالفرق بین علماء الدنیا......الخ، ج ۱، ص ۲۶۰۔

2 ......المرجع السابق۔ 3 ......المرجع السابق، بدون:وفق للصواب۔

4 ......قوت القلوب، الفصل الحادی و الثلاثون، باب ذکرالفرق بین علماء الدنیا......الخ، ج ۱، ص ۲۶۰۔

मौत को याद दिलाने, नफ़्स के ऐ़बों पर आगाह करने, आ'माल की आफ़ात, शैत़ानी वस्वसों और इन से बचने के त़रीक़े बयान कर रहे थे। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ने'मतों को याद दिलाने और उस का शुक्र करने में बन्दे के कोताह होने के बारे में कलाम कर रहे थे। दुन्या की ह़क़ारत, इस के उ़यूब, इस की हलाकतों और इस के बे वफ़ा होने की पहचान करवा रहे थे। आख़िरत के ख़त़रात और इस की होलनाकियां बयान कर रहे थे। येह अन्दाज़े नसीह़त शरीअ़त को पसन्द है और ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी ह़दीष में इस की तरग़ीब भी मौजूद है। चुनान्चे,

ज़िक्र की मह़फ़िल में ह़ाज़िर होने की फ़ज़ीलत :

मरवी है कि ज़िक्र की मजलिस में ह़ाज़िर होना हज़ार रक्अ़त नमाज़ पढ़ने से अफ़्ज़ल है और इ़ल्म की मजलिस में ह़ाज़िर होना हज़ार मरीज़ों की इ़यादत करने और हज़ार जनाज़ों में शिर्कत करने से अफ़्ज़ल है। अ़र्ज़ की गई : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم क़ुरआने पाक की तिलावत से भी अफ़्ज़ल है ?" इरशाद फ़रमाया : "क्या तिलावते क़ुरआन इ़ल्म के बिग़ैर नफ़्अ़ मन्द है ?"(1)

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़त़ा رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया : "ज़िक्र की मजलिस ग़फ़्लत की 70 मजलिसों का कफ़्फ़ारा है।"(2)

चिकनी चुपड़ी बातें करने वालों ने इन अह़ादीष को अपने नफ़्सों की पाकीज़गी व सफ़ाई पर हुज्जत बना लिया और लफ़्ज़े तज़्कीर को अपनी ख़ुराफ़ात की त़रफ़ फैर लिया और शरअ़न पसन्दीदा ज़िक्र के रास्ते से हट कर उन क़िस्सों में मश्ग़ूल हो गए जिन में इख़्तिलाफ़ात और कमी बेशी है। क़ुरआने मजीद में बयान कर्दा वाक़िआ़त इन क़िस्सों से ख़ारिज और ज़ाइद हैं क्यूंकि बा'ज़ क़िस्से सुनने से फ़ाइदा होता है और बा'ज़ का सुनना नुक़्सान का बाइ़ष है अगर्चे वोह सच्चे ही क्यूं न हों। जो ख़ुद पर येह दरवाज़ा खोलता है उस पर सच और झूट, नफ़्अ़ बख़्श और नुक़्सान देह ख़ल्त़-मल्त़ हो जाता है। इसी वजह से इस से मन्अ़ किया गया है और येही सबब है कि ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अह़मद बिन ह़म्बल عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَوَّل ने फ़रमाया : "लोगों को सच्चे वाक़िआ़त बयान करने वाले की कितनी ज़रूरत है।"(3)

अगर क़िस्सा अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के दीनी उमूर से मुतअ़ल्लिक़ हो और क़िस्सा बयान करने वाला भी सच्चा और सह़ीह़ रावी हो तो मैं उसे बयान करने में कोई मुज़ाइक़ा

---

1 ……قوت القلوب، الفصل الحادی والثلاثون، باب ذکر الفرق بین علماء الدنیا……الخ، ج ۱، ص ۲۵۷۔

2 ……المرجع السابق۔　3 ……المرجع السابق، ص ۲۶۰۔

नहीं समझता। उसे चाहिये कि झूट से बचे और उन अह्वाल को बयान न करे जिन में लग्ज़िशों या सुस्तियों की त़रफ़ इशारा हो या अ़वाम जिन के मत़ालिब न समझ सकें या येह न समझ सकें कि वोह लग्ज़िश नादिर थी और इस के बा'द इस के कफ़्फ़ारे में कई नेकियों के ज़रीए इसे ढांप दिया गया क्यूंकि आ़म शख़्स अपनी लग्ज़िशों और सुस्तियों में इस का सहारा लेगा और इस में अपने लिये बहाने तलाश करेगा और इस से दलील पकड़ेगा कि बयान किया गया है कि बा'ज़ बुज़ुर्गाने दीन और बा'ज़ अकाबिरीन से फ़ुलां फ़ुलां ख़त़ाएं हुई हैं, हम सब गुनाहों की राह पर हैं इस लिये अगर मुझ से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की नाफ़रमानी हो गई है तो क्या तअ़ज्जुब है जब कि जो मुझ से बड़े हैं उन से भी नाफ़रमानियां हुई हैं और येह चीज़ ग़ैर शऊ़री त़ौर पर उसे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की नाफ़रमानी पर दिलैर कर देगी अगर इन दो ममनूअ़ बातों से बचा जाए तो इस में कोई मुज़ाइक़ा नहीं और उस वक़्त येह अच्छे वाक़िआ़त और कुरआने पाक और अह़ादीषे मुबारका की सह़ीह़ कुतुब में बयान कर्दा क़िस्सों की त़रफ़ मराजिअ़त करेगा। बा'ज़ लोगों ने त़ाआ़त की रग़बत दिलाने वाली ह़िकायात वज़अ़ करने (घड़ने) की इजाज़त दी है। उन का गुमान है कि ऐसी ह़िकायात वज़अ़ करने का मक़्सद लोगों को ह़क़ की त़रफ़ बुलाना है, लेकिन येह शैत़ानी वस्वसों में से है क्यूंकि सच में झूट से बचने की बहुत गुनजाइश है। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने नसीह़त के लिये जो बयान फ़रमा दिया वोही काफ़ी है, वज़अ़ करने और घड़ने की कोई ह़ाजत नहीं। नीज़ इस की इजाज़त क्यूंकर हो सकती है जब कि मुक़फ़्फ़ा व मुसज्जअ़ कलाम करने का तकल्लुफ़ भी नापसन्दीदा है और इसे तसन्नुअ़ (बनावट) शुमार किया गया है। चुनान्चे,

तकल्लुफ़ से कलाम करने की मुमानअ़त :

ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने अपने बेटे उ़मर को मुसज्जअ़ कलाम करते सुना तो फ़रमाया : "इसी चीज़ ने तुझे मेरी नज़र में नापसन्दीदा बना दिया है, मैं उस वक़्त तक हरगिज़ तेरी कोई ह़ाजत पूरी नहीं करूंगा जब तक तू इस से तौबा न कर ले।" ह़ालांकि उस वक़्त वोह आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ के पास किसी काम से आए थे।

ह़ुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन रवाह़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ से तीन मुसज्जअ़ कलिमात सुने तो फ़रमाया : "ऐ इब्ने रवाह़ा मुसज्जअ़ कलाम से बचो।"(1)

---

1 ......قوت القلوب، الفصل الحادی والثلاثون، باب ذکرالفرق بین علماء الدنیا......الخ، ج ۱، ص ۲۸۶۔

مسندابی یعلی الموصلی، مسند عائشه، الحدیث: ۴۴۵۸، ج ۴، ص ۸۸۔

सजअ् (क़ाफ़ियादार) वोह मन्अ् है जिस में तकल्लुफ़ हो और वोह कलाम दो कलिमों से ज़ियादा पर मब्नी हो। इसी वजह से जब किसी शख़्स ने जनीन (या'नी पेट के बच्चे) की दैत के बारे में (मुसज्जअ् कलाम करते हुए) कहा : ''كَيْفَ نَدِي مَنْ لَاشَرِبَ وَلَا اَكَلَ وَلَاصَاحَ وَلَااسْتَهَلَّ وَمِثْلُ ذٰلِكَ يَطُلُّ'' या'नी : हम इस की दैत क्यूं अदा करें जिस ने खाया न पिया, चीखा न बोला, और इस जैसे का खून तो मुआफ़ होता है। तो प्यारे मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने उस से इरशाद फ़रमाया : ''देहातियों की तरह मुसज्जअ् कलाम करता है।''(1)

जहां तक अश्आर का तअल्लुक़ है तो वा'ज़ व नसीहत में इन की कषरत मज़मूम है। इरशादे बारी तआला है :

وَالشُّعَرَآءُ يَتَّبِعُهُمُ الْغَاوٗنَ ﴿۲۲۴﴾ اَلَمْ تَرَ اَنَّهُمْ فِيْ كُلِّ وَادٍ يَّهِيْمُوْنَ ﴿۲۲۵﴾ (پ ۱۹، الشعراء:۲۲۴،۲۲۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और शाइरों की पैरवी गुमराह करते हैं क्या तुम ने न देखा कि वोह हर नाले में सर गर्दां फिरते हैं।*

एक और मक़ाम पर इरशाद फ़रमाया :

وَمَا عَلَّمْنٰهُ الشِّعْرَ وَمَا يَنْۢبَغِيْ لَهٗ ؕ (پ ۲۳، یٰس:۶۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और हम ने उन को शे'र कहना न सिखाया और न वोह उन की शान के लाइक़ है।*

वाइज़ीन को अकषर वोह अश्आर ज़ियादा पढ़ने की आदत है जिन में इश्क़, मा'शूक़ के हुस्नो जमाल, विसाले यार की राहत और फ़िराक़ की तक्लीफ़ का बयान होता है और मजलिस जाहिल अवाम से भरी होती है। उन के बातिन ख़्वाहिशात से लबरेज़ होते हैं। उन के दिल ख़ूबसूरत चेहरों की तरफ़ मुतवज्जेह हुए बिग़ैर नहीं रह सकते और इस तरह के अश्आर उन में छुपी शहवत को भड़काते हैं। उन में ख़्वाहिशात की आग जल उठती है फिर वोह चीखते और वज्द में आ जाते हैं। इन में अकषर या तमाम शे'र फ़साद पर मबनी होते हैं। इस लिये दलील पकड़ने या लोगों की बोरियत का ख़ातिमा करने के लिये हिक्मत या नसीहत पर मुश्तमिल शे'र ही इस्ति'माल किया जाए। (इसी वजह से) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ''बा'ज़ शे'र ज़रूर हिक्मत हैं।''(2)

---

1 ......صحیح مسلم، کتاب القسامۃ والمحاربین......الخ، باب دیۃ الجنین، الحدیث:۱۶۸۲، ص ۹۲۴۔

2 ......صحیح البخاری، کتاب الادب، باب مایجوز من الشعر......الخ، الحدیث:۶۱۴۵، ج۴، ص ۱۳۹۔

अगर मजलिस में ख़ास लोग हों जिन के बारे में मा'लूम हो कि उन के दिल अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की मह़ब्बत में मुसतग़रक़ हैं, उन के साथ उन के इलावा कोई दूसरा न हो तो ऐसे लोगों की मौजूदगी में वोह शे'र कहना नुक़्सान देह नहीं जिस के ज़ाहिर में मख़्लूक़ की त़रफ़ इशारा है क्यूंकि सुनने वाला जो कुछ सुनता है इसे उस मफ़्हूम पर ढाल लेता है जो उस के दिल पर ग़ालिब हो। जैसा कि इस की तह़क़ीक़ "كِتَابُ السَّمَاع" में आएगी।

मेरे रुफ़क़ा तो ख़ास लोग हैं :

ह़ज़रते सय्यिदुना जुनैद बग़दादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِى दस से कुछ ज़ाइद लोगों के सामने वा'ज़ फ़रमाते, अगर इस से ज़ियादा हो जाते तो वा'ज़ न करते। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की मजलिस में कभी बीस शख़्स पूरे न हुए। एक बार इब्ने सालिम के घर के दरवाज़े पर एक जमाअ़त ह़ाज़िर हुई, किसी ने अ़र्ज़ की : "ह़ुज़ूर ! आप के रुफ़क़ा ह़ाज़िर हैं उन्हें वा'ज़ फ़रमाइये।" फ़रमाया : "नहीं, येह मेरे रुफ़क़ा नहीं येह तो मजलिस वाले हैं। मेरे रुफ़क़ा तो ख़ास लोग हैं।"

शत़ह़ से क्या मुराद है ?

शत़ह़ से मुराद दो क़िस्म का कलाम है जो बा'ज़ सूफ़िया की ईजाद है : (1).....अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की मह़ब्बत और विसाल के लम्बे चोड़े दा'वे, जिस की वजह से उन्हें ज़ाहिरी आ'माल की ह़ाजत नहीं रहती यहां तक कि बा'ज़ लोगों ने तो इत्तिह़ाद का दा'वा कर दिया और कहा कि ह़िजाब उठ गया, वोह अपनी आंखों से रब्ब عَزَّوَجَلَّ को देखते हैं और उन्हें बराहे रास्त ख़ित़ाब होता है। वोह कहते हैं हमें येह कहा गया है और हम ने यूं कहा। वोह इस में ह़ज़रते सय्यिदुना ह़ुसैन बिन मन्सूर ह़ल्लाज عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الرَّزَّاق की मुशाबहत इख़्तियार करते हैं जिन्हें इस क़िस्म के कलिमात कहने की वजह से सूली चढ़ाया गया और उन के क़ौल[1] اَنَاالْحَق से दलील पकड़ते

1....अ़वाम में मश्हूर है कि ह़ज़रते सय्यिदुना ह़ुसैन बिन मन्सूर ह़ल्लाज عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الرَّزَّاق ने اَنَاالْحَق (या'नी मैं ह़क़ हूं) कहा था इस का रद्द करते हुए आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़तावा रज़विय्या शरीफ़ में तह़रीर फ़रमाते हैं : ह़ज़रते सय्यिदी ह़ुसैन बिन मन्सूर ह़ल्लाज قُدِّسَ سِرُّهٗ जिन को अ़वाम मन्सूर कहते हैं, मन्सूर इन के वालिद का नाम था, और इन का इस्मे गिरामी ह़ुसैन। (आप) अकाबिरे अहले ह़ाल से थे, इन की एक बहन इन से बदरजहा मर्तबए विलायत व मा'रिफ़त में ज़ाइद थीं। वोह आख़िर शब को जंगल तशरीफ़ ले जातीं और यादे इलाही में मसरूफ़ होतीं। एक दिन इन की आंख खुली, बहन को न पाया, घर में हर जगह तलाश किया, पता न चला, इन को वस्वसा गुज़रा, दूसरी शब में क़स्दन सोते में जान डाल कर जागते रहे। वोह अपने वक़्त पर उठ कर चलीं, येह आहिस्ता आहिस्ता पीछे हो लिये, देखते रहे। आस्मान से सोने की ज़न्जीर में याक़ूत का जाम उतरा और उन के दहन मुबारक (या'नी मुंह शरीफ़) के बराबर आ लगा, उन्हों ने पीना शुरूअ़ किया, इन से सब्र न हो सका कि येह जन्नत की ने'मत न मिले। बे इख़्तियार कह उठे कि बहन ! तुम्हें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम कि थोड़ा....

हैं और इसे दलील बनाते हैं जो अबू यज़ीद बिस्तामी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّورانی के बारे में मन्कूल है कि इन्हों ने (1) سُبْحَانِي سُبْحَانِي कहा था। इल्मे कलाम के इस फ़न से अ़वाम को बहुत नुक़्सान पहुंचा यहां तक कि किसानों की एक जमाअ़त ने काश्तकारी छोड़ कर इस त़रह़ के दा'वे करने शुरूअ़ कर

.....मेरे लिये छोड़ दो, उन्हों ने एक जुरआ़ (या'नी एक घूंट) छोड़ दिया, इन्हों ने पीया, इस के पीते ही हर जड़ी बूटी, हर दरो दीवार से इन को येह आवाज़ आने लगी कि कौन इस का ज़ियादा मुस्तह़िक़ है कि हमारी राह में क़त्ल किया जाए। इन्हों ने कहना शुरूअ़ किया "اَنَاالْحَق" बेशक मैं सब से ज़ियादा इस का सज़ावार (या'नी ह़क़दार) हूं। लोगों के सुनने में आया اَنَاالْحَق (या'नी मैं ह़क़ हूं।) वोह (लोग) दा'वए ख़ुदाई समझे और येह (या'नी ख़ुदाई का दा'वा) कुफ़्र है और मुसलमान हो कर जो कुफ़्र करे मुर्तद है और मुर्तद की सज़ा क़त्ल है।

(पर है कि) रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم (صحیح البخاری، کتاب استتابة المرتدین والمعاندین وقتالھم، ج۴، ص۳۷۸، حدیث:۶۹۲۲) फ़रमाते हैं : مَنْ بَدَّلَ دِيْنَهٗ فَاقْتُلُوْهُ **तर्जमा :** जो अपना दीन बदल दे उसे क़त्ल करो। (फ़तावा रज़विय्या, जि. 26, स. 400)

❶....मुजद्दिदे आ'ज़म, सय्यिदुना आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن (मुतवफ़्फ़ा सि. 1340 हि) इस के मुतअ़ल्लिक़ एक सुवाल के जवाब में इरशाद फ़रमाते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना बायज़ीद बिस्तामी और इन के इमषाल व नज़ाइर (या'नी उन जैसे दीगर औलिया) رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُم वक़्त ब विर्दे तजल्लिये ख़ास (या'नी ख़ास तजल्ली वारिद होने के वक़्त) शजरए मूसा होते हैं। सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ و التسليم को दरख़्त में से सुनाई दिया : يٰمُوْسٰۤى اِنِّيْۤ اَنَا اللّٰهُ رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ (या'नी) ऐ मूसा ! बेशक मैं **अल्लाह** हूं रब्ब सारे जहां का। क्या येह हर पेड़ (या'नी दरख़्त) ने कहा था ? حَاشَ لِلّٰه (या'नी हरगिज़ नहीं) बल्कि वाह़िदे क़ह्हार (**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ) ने जिस दरख़्त पर तजल्ली फ़रमाई और वोह बात दरख़्त से सुनने में आई। क्या रब्बुल इ़ज़्ज़त एक दरख़्त पर तजल्ली फ़रमा सकता है और अपने मह़बूब बायज़ीद पर नहीं ? नहीं नहीं ! वोह ज़रूर तजल्लिये रब्बानी थी कलाम बायज़ीद की ज़बान से सुना जाता था जैसे दरख़्त से सुना गया और मुतकल्लिम (या'नी कलाम फ़रमाने वाला) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ था, उसी ने वहां फ़रमाया : يٰمُوْسٰۤى اِنِّيْۤ اَنَا اللّٰهُ رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ (**तर्जमा :** ऐ मूसा ! मैं **अल्लाह** हूं रब्ब सारे जहां का) उसी ने यहां भी फ़रमाया سُبْحَانِي مَا اَعْظَمُ شَانِي (तर्जमा : मैं पाक हूं और मेरी शान बुलन्द है)

सय्यिदी आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيه मज़ीद इरशाद फ़रमाते हैं : ह़ज़रते मौलवी قُدِّسَ سِرُّهُ الْمَعْنَوِی ने मषनवी शरीफ़ में इस मक़ाम की ख़ूब तफ़्सील फ़रमाई है और तसल्लुते जिन्न से इस की तौज़ीह़ की है कि इन्सान पर एक जिन्न मुसल्लत़ हो कर इस की ज़बान से कलाम करे और रब्ब عَزَّوَجَلَّ इस पर क़ादिर नहीं कि अपने बन्दे पर तजल्ली फ़रमा कर कलाम फ़रमाए जो उस की ज़बान से सुनने में आए, बिलाशुबा **अल्लाह** क़ादिर है और मो'तरिज़ का ए'तिराज़ बात़िल। इस का फ़ैसला ख़ुद ह़ज़रते बायज़ीद बिस्तामी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ के ज़माने में हो चुका ज़ाहिर बीनों बेख़बरों ने इन से शिकायत की, कि आप سُبْحَانِي مَا اَعْظَمُ شَانِي कहा करते हैं। फ़रमाया : حَاشَا (या'नी हरगिज़) मैं नहीं कहता। कहा : आप ज़रूर कहते हैं हम सब सुनते हैं। फ़रमाया : जो ऐसा कहे वाजिबुल क़त्ल (या'नी उसे क़त्ल करना वाजिब) है। मैं बख़ुशी तुम्हें इजाज़त देता हूं जब मुझे ऐसा कहते सुनो बे दरैग़ ख़न्जर मार दो। वोह सब ख़न्जर ले कर मुन्तज़िरे वक़्त रहे। यहां तक कि ह़ज़रत पर तजल्ली वारिद हुई और वोही सुनने में आया : سُبْحَانِي مَا اَعْظَمُ شَانِي (या'नी) **मुझे सब ऐबों से पाकी है मेरी शान क्या ही बड़ी है।** वोह लोग चार त़रफ़ से ख़न्जर ले कर दौड़े और ह़ज़रत पर वार किये जिस ने जिस जगह ख़न्जर मारा था ख़ुद उस के उसी जगह लगा और ह़ज़रत पर ख़त़ (या'नी ख़राश) भी न आया। जब इफ़ाक़ा हुवा देखा लोग ज़ख़्मी पड़े हैं। फ़रमाया : मैं न कहता था कि मैं नहीं कहता, वोह फ़रमाता है जिसे फ़रमाना बजा। وَاللهُ اَعْلَم (फ़तावा रज़विय्या, जि.14 स. 665-666)

दिये। क्यूंकि इस क़िस्म के कलाम से तबीअ़तें लुत्फ़ अन्दोज़ होती हैं कि इस में मक़ामात और अह़वाल के हुसूल के लिये आ'माल और तज़्कियए नफ़्स की ह़ाजत नहीं होती। तो फिर ग़ैबी लोग अपने लिये इस का दा'वा करने से क्यूं बाज़ रहें और मनघड़त व मोहमल बातें क्यूं न कहें और जब उन पर कोई ए'तिराज़ करे तो फ़ौरन कह देते है कि इस ए'तिराज़ का सबब इ़ल्म और मुनाज़िरा है। इ़ल्म तो ह़िजाब है और मुनाज़िरा नफ़्स का अ़मल है और येह बातें तो नूरे ह़क़ के मुशाहदे के साथ बातिन से उठती हैं। पस येह और इस क़िस्म की बातों का शर शहरों में आ़म हो गया इस से अ़वाम को बहुत नुक़्सान पहुंचा यहां तक कि जो इस क़िस्म की कोई बात कहे तो दीने इस्लाम में उसे क़त्ल कर देना दस को ज़िन्दा रखने से अफ़्ज़ल है और ह़ज़रते सय्यिदुना अबू यज़ीद बिस्त़ामी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّورانی के बारे में जो मन्क़ूल है वोह सह़ीह़ नहीं और अगर आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعالٰی عَلَیْہ से येह बात सुनी भी गई है तो वोह गोया आप अपने दिल में जो कलाम बार बार कहते उस की ह़िकायत करते हुए आप ने कहा है जैसा कि कोई आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعالٰی عَلَیْہ को येह कहते हुए सुने :

اِنَّنِیْۤ اَنَا اللّٰهُ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّاۤ اَنَا فَاعْبُدْنِیْ ۙ
(پ۱۶، طٰہٰ:۱۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *बेशक मैं ही हूं **अल्लाह** कि मेरे सिवा कोई मा'बूद नहीं तो मेरी बन्दगी कर।*

तो ज़रूरी है कि इसे बत़ौरे ह़िकायत ही समझा जाए।

﴾2﴿......शत़्ह़ की दूसरी क़िस्म वोह अल्फ़ाज़ हैं जो समझ में न आएं, इन के ज़ाहिर तो अच्छे हों लेकिन इन के मआ़नी होलनाक हों और इन में कोई फ़ाइदा न हो नीज़ वोह कलिमात ऐसे ना क़ाबिले फ़हम हों, कि या तो इन के कहने वाले को समझ में न आते हों बल्कि अ़क़्ल की ख़राबी और ख़याल की परेशानी के बाइ़स उस से सादिर होते हों, येह इस वजह से होता है कि जो कलाम उस की समाअ़त से टकराता है वोह उस के मा'ना का इह़ात़ा नहीं करता और येह बहुत ज़ियादा होता है। या फिर वोह अल्फ़ाज़ ऐसे हों कि खुद कहने वाले को तो समझ में आएं लेकिन दूसरों को समझा न पाए और مَافِی الضَّمِیْر बयान करने के लिये कोई इ़बारत न ला पाए। इस की वजह येह होती है कि उसे इ़ल्म से शग़फ़ नहीं होता और न उस ने मआ़नी को उ़म्दा अल्फ़ाज़ से ता'बीर करने का त़रीक़ा सीखा होता है। इस त़रह़ के कलाम का कोई फ़ाइदा नहीं बल्कि ऐसा कलाम दिलों को परेशान और अ़क़्लों और ज़ेह्नों को ह़ैरान कर देता है। या ऐसे कलाम का मोह़मल येह होता है कि इस से वोह मआ़नी समझ लिये जाएं जो मक़्सूद नहीं और हर एक अपनी ख़्वाहिश और तबीअ़त के मुत़ाबिक़ समझ ले।

लोगों के लिये फ़ित्ना :

मरवी है कि मक्की मदनी सरकार, बिइज़्ने परवर दगार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "तुम में से कोई लोगों के सामने ऐसी बात बयान करे जिसे वोह समझ न पाएं तो वोह उन के लिये फ़ित्ना है।"(1)

एक रिवायत में है कि "लोगों से वोही बातें बयान करो जिन्हें वोह मान लें और वोह बातें बयान न करो जिन का वोह इन्कार करें। क्या तुम चाहते हो कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की तकज़ीब हो ?"(2)

येह इरशाद उन बातों के बारे में है जिन्हें खुद कहने वाला समझता हो मगर सुनने वाले की अ़क्ल की वहां तक रसाई न हो तो फिर उन बातों को बयान करने का क्या ह़ाल होगा जिन्हें खुद कहने वाला ही न समझे। अगर कहने वाला समझता हो और सुनने वाला न समझे तो ऐसी बात बयान करना जाइज़ नहीं।

जाहिल और ज़ालिम :

ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने इरशाद फ़रमाया : "किसी ना अहल को ह़िक्मत सिखाना ज़ुल्म और अहल से इसे रोके रखना भी ज़ुल्म है। तुम उस त़बीब की त़रह़ बन जाओ जो बीमारी के मुत़ाबिक़ दवा तजवीज़ करता है।"(3)

एक रिवायत में है कि "जो किसी ना अहल को ह़िक्मत सिखाए वोह जाहिल है और जो अहल से इसे रोके वोह ज़ालिम है। बेशक ह़िक्मत का एक ह़क़ है और कुछ लोग इस के अहल हैं लिहाज़ा हर ह़क़दार को इस का ह़क़ दो।"(4)

त़ामात क्या हैं ?

त़ामात में वोह सब बातें दाख़िल हैं जो हम ने शत़ह़ के बयान में ज़िक्र कीं और मज़ीद इस में ख़ास बात येह है कि शरई अल्फ़ाज़ को इन के ज़ाहिरी मफ़हूम से बात़िनी उमूर की त़रफ़

---

1 ......صحيح مسلم، المقدمة، باب النهى عن الحديث بكل ماسمع، الحديث:۵، ص ۹۔
كتاب الضعفاء للعقيلى، الرقم:۱۲۰۲، عثمان بن داود، ج۳، ص۹۳۷۔

2 ......صحيح البخارى، كتاب العلم، باب من خص بالعلم قوما دون قوم كراهية ان لايفهموا، ج۱، ص۶۷۔
الجامع لاخلاق الراوى وآداب السامع، ذكر مايستحب فى الاملاء......الخ، الحديث:۱۸۰، ج۲، ص۱۰۸۔

3 ......قوت القلوب، الفصل الحادى والثلاثون، باب ذكرالفرق بين علماء الدنيا......الخ، ج۱، ص۲۶۷۔

4 ......قوت القلوب، الفصل الحادى والثلاثون، باب ذكرالفرق بين علماء الدنيا......الخ، ج۱، ص۲۶۷۔

फैर देना जिन का कोई फ़ाइदा समझ में नहीं आता जैसे फ़िर्क़ए बाति़निय्या[1] की आ़दत है कि वोह तावीलें करते हैं, येह भी ह़राम है और इस का नुक़्सान बहुत ज़ियादा है। क्यूंकि जब अल्फ़ाज़ को किसी नक़्ली शरई दलील और ज़रूरत के बिग़ैर इन के ज़ाहिरी मआ़नी से फैर दिया जाएगा तो इस की वजह से अल्फ़ाज़ से ए'तिमाद जाता रहेगा और **अल्लाह** व रसूल عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللهُ تعالٰی علیہ والہٖ وسلّم के कलाम का नफ़्अ़ ख़त्म हो जाएगा इस लिये कि ज़ाहिर से जो समझ में आया इस का ए'तिमाद न रहा और बाति़न सब का यक्सां नहीं बल्कि इस में ख़यालात एक दूसरे से मुख़्तलिफ़ होते हैं और मुख़्तलिफ़ सूरतों पर अल्फ़ाज़ को ढाला जा सकता है। येह भी आ़म बिदअ़तों में से एक है जिस का नुक़्सान बहुत ज़ियादा है और त़ामात वालों का मक़्सद अ़जीबो ग़रीब बातें हैं क्यूंकि नफ़्स इन की त़रफ़ माइल होते और इन से लज़्ज़त पाते हैं इस त़रीके़ से फ़िर्क़ए बाति़निय्या अल्फ़ाज़ के ज़ाहिरी मफ़ाहीम में तावीलात कर के अपनी राए के मुत़ाबिक़ इन के मफ़ाहीम बना कर सारी शरीअ़त को ख़त्म करने के दरपै है। जैसा कि हम ने बाति़निय्या के रद्द में जो किताब المستظهری तस्नीफ़ की इस में इन के मज़ाहिब बयान किये हैं।

अहले त़ामात की तावीलात की मिषालें :

बा'ज़ इस आयत में तावील करते हैं :

اِذْهَبْ اِلٰى فِرْعَوْنَ اِنَّهٗ طَغٰى ﴿۱۷﴾ (پ۳۰،النّٰزعٰت:۱۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *फ़िरऔ़न के पास जा उस ने सर उठाया।*

कहते हैं : "इस में दिल की त़रफ़ इशारा है और फ़िरऔ़न से दिल मुराद है, वोही हर इन्सान पर सरकशी करता है।"

इस आयत में भी तावील करते हैं :

وَاَنْ اَلْقِ عَصَاكَ ؕ (پ۲۰، القصص:۳۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और येह कि डाल दे अपना अ़सा।*

कहते हैं : "इस में अ़सा से मुराद **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा हर वोह चीज़ है जिस पर बन्दा ए'तिमाद करता और उस का सहारा लेता है उसे चाहिये कि ऐसी चीज़ों को छोड़ दे।"

1....अहले तशीअ़ का एक फ़िर्क़ा जिस का लीडर ह़सन बिन सबाह़ था, उस के ए'तिक़ाद में हर शरई उमूर के एक ज़ाहिरी मा'ना होते हैं और दूसरे बाति़नी। येह लोग अपने मुख़ालिफ़ीन को फ़रेब से क़त्ल कर दिया करते थे और इन को ह़शीशीन भी कहा जाता है क्यूंकि येह भंग पिया करते थे।

इस फ़रमाने मुस्त़फ़ा ''تَسَحَّرُوْافَاِنَّ فِی السُّحُوْرِ بَرَکَۃً'' या'नी सह़री खाया करो क्यूंकि सह़री में बरकत है।''[1] में भी तावील करते हैं। कहते हैं : ''इस में تَسَحَّرُوْا से सह़री के अवक़ात में इस्तिग़फ़ार करना मुराद है।''

इस त़रह़ की और भी मिषालें हैं यहां तक कि इन्हों ने शुरूअ़ से आख़िर तक पूरे क़ुरआने मजीद को इस के ज़ाहिरी मआ़नी से फैर दिया है और उस तफ़्सीर से भी फैर दिया जो ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا और दीगर उ़-लमा से मन्क़ूल है।

मज़्कूरा तावीलों का बुत़लान :

इन में से बा'ज़ तावीलों का बात़िल होना तो क़त़ई त़ौर पर मा'लूम है जैसा कि फ़िरऔ़न से दिल मुराद लेना क्यूंकि फ़िरऔ़न एक मह़सूस शख़्स है। उस के मौजूद होने और ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیۡہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के उस को दा'वत देने की ख़बरें तवातिर से हम तक पहुंची हैं। जैसा कि अबू जहल और अबू लहब वग़ैरा कुफ़्फ़ार की अख़्बार। नीज़ येह शयात़ीन या मलाइका की जिन्स से नहीं कि इन्हें मह़सूस न किया जा सके ह़त्ता कि इन अल्फ़ाज़ में तावील की ज़रूरत पेश आए। इसी त़रह़ सह़री को इस्तिग़फ़ार पर मह़मूल करना भी बात़िल है क्यूंकि आक़ाए दो आ़लम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم खाना तनावुल फ़रमाते थे और फ़रमाया करते थे : ''सह़री खाओ और इस मुबारक खाने की त़रफ़ आओ।''[2]

येह वोह तावीलात हैं कि ख़बर मुतवातिर और ह़िस्स से इन का बात़िल होना वाज़ेह़ है और बा'ज़ वोह हैं कि जिन का बुत़लान ज़न्ने ग़ालिब के त़ौर पर मा'लूम है और येह तावीलात उन उमूर में होती हैं जिन को मह़सूस नहीं किया जा सकता। अलग़रज़ सब की सब ह़राम, गुमराही और लोगों के सामने दीन को बिगाड़ना है। इन में से कोई बात सह़ाबए किराम और ताबेई़ने उ़ज़्ज़ाम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہِمۡ اَجْمَعِیۡن से मन्क़ूल नहीं और न ही ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ह़सन बसरी عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡقَوِی से मन्क़ूल है ह़ालांकि आप رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ लोगों को वा'ज़ व नसीह़त करने के बड़े ह़रीस थे। इस फ़रमाने मुस्त़फ़ा कि ''जिस ने अपनी राए से क़ुरआने पाक की तफ़्सीर की वोह अपना ठिकाना जहन्नम में बना ले।''[3] का मा'ना व मफ़्हूम येही है। वोह यूं कि इस का मक़्सद और राए किसी चीज़ को षाबित करना हो और इस पर क़ुरआन से दलील

---

1 ......صحیح البخاری، کتاب الصوم، باب برکۃ السحور من غیر ایجاب، الحدیث:۱۹۲۳، ج۱، ص۶۳۳۔

2 ......المسند للامام احمد بن حنبل، حدیث العرباض بن ساریۃ، الحدیث:۱۷۱۵۲، ج۶، ص۸۵۔

3 ......سنن الترمذی، کتاب تفسیرالقرآن، باب ماجاء فی الذی یفسرالقرآن برایه، الحدیث:۲۹۶۰، ج۴، ص۴۳۹۔

लाए और इसे उस चीज़ पर मह़मूल करे ह़ालांकि इस मा'ना पर मह़मूल करने की लफ़्ज़ी या'नी लुग़वी या नक़्ली दलील न हो। इस ह़दीष से येह न समझा जाए कि क़ुरआने पाक की तफ़्सीर इजतिहाद और ग़ौरो फ़िक्र से न करना वाजिब है क्यूंकि सह़ाबए किराम और मुफ़स्सिरीने इ़ज़ाम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْھِمْ اَجْمَعِیْن से बा'ज़ आयात के पांच पांच, छे छे और सात सात मआ़नी मन्क़ूल हैं और येह बात मा'लूम है कि वोह तमाम मआ़नी इन्हों ने ह़ुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से नहीं सुने क्यूंकि बा'ज़ अवक़ात वोह मआ़नी एक दूसरे से टकराते हैं और इन में तत़्बीक़ नहीं हो सकती। लिहाज़ा येह उ़म्दा फ़हम और त़वील ग़ौरो फ़िक्र से अख़्ज़ किये गए हैं। इसी लिये ह़ुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْھُمَا के लिये दुआ़ फ़रमाई कि "ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इब्ने अ़ब्बास को दीन की समझ और तावील का इ़ल्म अ़त़ा फ़रमा।"[1]

अहले त़ामात में से जो इस त़रह़ की तावीलात को येह जानते हुए भी जाइज़ क़रार देता है कि वोह अल्फ़ाज़ की मुराद नहीं और येह गुमान करता है कि उस का मक़्सद लोगों को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ बुलाना है तो वोह उस शख़्स की त़रह़ है जो अस्दक़ुस्सादिक़ीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की त़रफ़ झूट और मनघड़त बात मन्सूब करने को जाइज़ क़रार देता है ह़ालांकि वोह बात फ़ी नफ़्सिही दुरुस्त होती है लेकिन शरअ़ ने उसे बयान नहीं किया, जैसे वोह शख़्स जो हर मस्अले में जिसे वोह ह़क़ जानता है, रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم कि त़रफ़ मन्सूब कर के ह़दीष घड़ता है तो येह ज़ुल्म, गुमराही और उस वई़द में दाख़िल है जो इस फ़रमाने आ़ली से मफ़्हूम होती है कि "जिस ने मुझ पर जान बूझ कर झूट बांधा वोह अपना ठिकाना जहन्नम में बना ले।"[2]

बल्कि इन अल्फ़ाज़ की तावील का शर उस से भी ज़ियादा है क्यूंकि इस से अल्फ़ाज़ पर ए'तिमाद उठ जाता और क़ुरआने ह़कीम समझने और इस से फ़ाइदा ह़ासिल करने का रास्ता बिल्कुल ही कट जाता है। अब तुम ने जान लिया कि शैत़ान ने किस त़रह़ लोगों के इरादों को अच्छे उ़लूम से बुरे उ़लूम की त़रफ़ फेर दिया। येह सब उ़-लमाए सू (बुरे उ़-लमा) की त़रफ़ से नामों के बदलने की वहज से हुवा और अगर तुम मश्हूर नाम पर ए'तिमाद करते हुए उन लोगों के पीछे चलोगे और पहले ज़माने में जो मा'रूफ़ था उस की त़रफ़ तवज्जोह नहीं करोगे तो तुम उस की त़रह़ होंगे जो ह़िक्मत के शरफ़ को उस की पैरवी में तलाश करता है जिसे ह़कीम कहा जाता है क्यूंकि इस ज़माने में ह़कीम का इत़लाक़ त़बीब, शाइ़र और नुजूमी पर होता है और येह अल्फ़ाज़ की तब्दीली से ग़फ़्लत का नतीजा है।

---

1 ......المسند للامام احمد بن حنبل، مسند عبداللہ بن العباس، الحدیث:۳۰۳۳، ج ۱، ص ۷۰۳۔

2 ......صحیح البخاری، کتاب العلم، باب اثم من کذب علی النبی، الحدیث:۱۱۰، ج ۱، ص ۵۷۔

﴾5﴿......**हिक्मत :** पांचवां लफ़्ज़ हिक्मत है। चुनान्चे, ह़कीम का नाम अब त़बीब, शाइ़र, नुजूमी यहां तक कि उस शख़्स पर भी बोला जाता है जो रास्तों में बैठ कर लोगों के हाथों पर कुरआ़ डालता है ह़ालांकि हिक्मत तो वोह है जिस की ता'रीफ़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने फ़रमाई है। चुनान्चे, इरशादे बारी तआ़ला है :

يُّؤۡتِى الۡحِكۡمَةَ مَنۡ يَّشَآءُ‌ ۚ وَمَنۡ يُّؤۡتَ الۡحِكۡمَةَ فَقَدۡ اُوۡتِىَ خَيۡرًا كَثِيۡرًا‌ ؕ (پ۳،البقرۃ:۲۶۹)

*तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : **अल्लाह** हिक्मत देता है जिसे चाहे और जिसे हिक्मत मिली उसे बहुत भलाई मिली।*

ह़दीषे मुबारका में है कि "हिक्मत की बात जिसे आदमी सीखे वोह उस के लिये दुन्या और जो कुछ इस में है इस से बेहतर है।"(1)

पस तुम ग़ौर करो कि हिक्मत किस चीज़ का नाम था और अब इसे किस मा'ना में मुन्तक़िल कर लिया गया है। इसी पर दूसरे अल्फ़ाज़ को क़ियास कर लो और उ़-लमाए सू के धोके व फ़रैब से बचो क्यूंकि दीन के मुआ़मले में उन का शर शयात़ीन के शर से बढ़ कर है इस लिये कि शयत़ान इन्ही के वासित़े से आहिस्ता आहिस्ता लोगों के दिलों से ईमान निकालता है।

बदतरीन मख़्लूक़ :

जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब, ह़बीबे लबीब صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से बद तरीन मख़्लूक़ के बारे में पूछा गया तो आप صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने ख़ामोशी इख़्तियार फ़रमाई और येह दुआ़ फ़रमाई कि ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ बख़्श दे। जब बार बार पूछा गया तो इरशाद फ़रमाया : "बद तरीन मख़्लूक़ बुरे उ़-लमा हैं।"(2)

जब तुम अच्छे बुरे इ़ल्म को जान चुके और उन के गड़मड़ होने की वजह भी मा'लूम कर चुके तो अब तुम्हें इख़्तियार है कि अपने नफ़्स का लिह़ाज़ करते हुए अस्लाफ़ की पैरवी करो या पिछले लोगों की त़रह़ धोके की रस्सी से लटके रहो। अस्लाफ़ के पसन्दीदा तमाम उ़लूम मिट गए और लोग जिन उ़लूम में मश्ग़ूल हैं उन में से अकषर बिदअ़त और नौपैद हैं।

---

1 ......الزھد للامام احمد بن حنبل، اخبار الحسن بن ابی الحسن، الرقم:۱۴۶۷، ص ۲۷۱، عن الحسن بن ابی الحسن۔
المدخل، فصل فی العالم و کیفیۃ نیتہ......الخ، ج ۱، ص ۵۱۔

2 ......مسند البزار، مسند معاذ بن جبل، الحدیث:۲۶۴۹، ج۷، ص ۹۳۔

ग़ुरबा कौन हैं ?

अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुकर्रम है कि "इस्लाम ग़रीबुल वत़नी में शुरूअ़ हुवा और जैसे शुरूअ़ हुवा वैसे ही (ग़रीबुल वत़नी की ह़ालत में) लौट जाएगा तो ग़ुरबा के लिये ख़ुशख़बरी है।" किसी ने अ़र्ज़ की : "ग़ुरबा कौन हैं ?" इरशाद फ़रमाया : "वोह लोग जो मेरी सुन्नत की इस्लाह़ करेंगे जब लोग इसे बिगाड़ देंगे और वोह जो मेरी फ़ौत शुदा सुन्नत को ज़िन्दा करेंगे।"(1)

एक रिवायत में है कि "ग़ुरबा वोह है जो उस चीज़ को मज़बूती से थामेंगे जिस पर आज तुम लोग क़ाइम हो।"(2)

एक मुक़ाम पर फ़रमाया : "ग़ुरबा कषीर लोगों में क़लील सालेह़ लोग हैं। उन से नफ़रत करने वाले उन के चाहने वालों से ज़ियादा होंगे।"(3)

ह़क़ीक़ी आ़लिम की एक अ़लामत :

येह उ़लूम ग़रीब हो गए यूं कि जो इन्हें याद करता है लोग उस के दुश्मन हो जाते हैं। इसी वजह से ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान षौरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْقَوِی ने फ़रमाया : "जब तुम देखो कि किसी आ़लिम के दोस्त ज़ियादा हैं तो जान लो कि वोह ह़क़ को बात़िल के साथ मिलाता है क्यूंकि अगर वोह ख़ालिसतन ह़क़ ही बयान करता तो लोग उस के दुश्मन बन जाते।"(4)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ...... صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

1 ......صحیح مسلم، کتاب الایمان، باب بیان ان الاسلام بدا غریبا......الخ، الحدیث:۱۴۵، ص۸۸۔
سنن الترمذی، کتاب الایمان، باب ماجاء ان الاسلام بدا غریبا......الخ، الحدیث:۲۶۳۹، ج۴، ص۲۸۶۔
قوت القلوب، الفصل الحادی و الثلاثون، باب ذکرالفرق بین علماء الدنیا......الخ، ج۱، ص۲۴۸۔
2 ......قوت القلوب، الفصل الحادی و الثلاثون، باب ذکرالفرق بین علماء الدنیا......الخ، ج۱، ص۲۴۸۔
3 ......المسند للامام احمد بن حنبل، مسند عبداللّٰہ بن عمرو بن العاص، الحدیث: ۷۰۹۴، ج۲، ص۶۸۸۔
4 ......قوت القلوب، الفصل الحادی و الثلاثون، باب ذکرالفرق بین علماء الدنیا......الخ، ج۱، ص۲۴۸۔

तीसरी फ़स्ल : अच्छे उ़लूम की क़ाबिले ता'रीफ़ मिक़्दार का बयान

जान लो ! इस ए'तिबार से इ़ल्म की तीन क़िस्में हैं : (1)....वोह इ़ल्म जो बुरा है कम हो या ज़ियादा (2).... वोह इ़ल्म जो क़लील हो या कषीर अच्छा है और जब भी वोह ज़ियादा होता है बेहतर व अफ़्ज़ल होता है और (3)....वोह इ़ल्म जो ब क़दरे किफ़ायत अच्छा है और ज़रूरत से ज़ाइद अच्छा नहीं नीज़ इस में बह्‌ष व तह्क़ीक़ करना भी अच्छा नहीं और येह बदन के अह्‌वाल की त़रह़ है। इन में बा'ज़ क़लील हों या कषीर अच्छे हैं जैसे तन्दुरुस्ती और ख़ूब सूरती और बा'ज़ वोह हैं कि कम हों या ज़ियादा बुरे हैं जैसे बद सूरती और बद अख़्लाक़ी और बा'ज़ अह्‌वाल में मियाना रवी अच्छी है जैसे माल ख़र्च करना कि इस में ज़ियादा ख़र्च करना अच्छा नहीं ह़ालांकि वोह भी ख़र्च ही है और जैसा कि शुजाअ़त कि इस में हलाक कर देना अच्छा नहीं अगर्चे हलाक करना भी शुजाअ़त ही से है। इसी त़रह़ इ़ल्म का मुआ़मला है।

मज़्मूम इ़ल्म : वोह इ़ल्म जो बुरा है ख़्वाह कम हो या ज़ियादा, येह वोह है जिस का न तो कोई दुन्यवी फ़ाइदा है और न ही दीनी क्यूंकि इस का ज़रर इस के नफ़्ए़ पर ग़ालिब है जैसे जादू, त़िलिस्मात और इ़ल्मे नुजूम कि इन में से किसी का तो बिल्कुल ही फ़ाइदा नहीं और इस के लिये उ़म्र सर्फ़ करना इन्सान का अपने सब से क़ीमती सरमाए को ज़ाएअ़ करना है और क़ीमती चीज़ को ज़ाएअ़ करना बुरा है और बा'ज़ वोह हैं कि इन का ज़रर दुन्या में किसी मक़्सद के पूरा होने की उम्मीद से बढ़ कर है। पस इन से ह़ासिल होने वाले ज़रर की ब निस्बत येह फ़ाइदा क़ाबिले शुमार नहीं।

मह़मूद इ़ल्म : जो इ़ल्म सारे का सारा अच्छा है, वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ज़ात व सिफ़ात, अफ़्आ़ल, मख़्लूक़ के बारे में उस की आ़दते जारिया और आख़िरत को दुन्या पर मुरत्तब करने की ह़िक्मत का इ़ल्म है। येह इ़ल्म अपनी ज़ात की वजह से भी मत़्लूब है और इस वजह से भी कि येह उख़रवी सआ़दत का ज़रीआ़ है। इस के ह़ुसूल में जितनी भी कोशिश कर ली जाए ह़द्दे वाजिब से कम है क्यूंकि येह एक ऐसा समन्दर है जिस की गहराई तक रसाई नहीं और घूमने वाले इस के साह़िलों और कनारों पर ही ब क़दरे सहूलत घूमते हैं। इस में अम्बियाए किराम عَلَيۡهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام औलियाए उ़ज़्ज़ाम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام और मज़्बूत़ उ़-लमा ही ग़ोत़ा लगाते हैं। अलबत्ता इन के दर्जात इन की कुव्वतों के इख़्तिलाफ़ के ए'तिबार से और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इन के ह़क़ में जो मुक़द्दर फ़रमा दिया इस के तफ़ावत के ए'तिबार से मुख़्तलिफ़ हैं। येही वोह पोशीदा

इ़ल्म है जो किताबों में नहीं लिखा जाता। इस पर आगही ह़ासिल करने के लिये इ़ल्म सीखना और उ़-लमाए आख़िरत के अह़वाल का मुशाहदा करना मुफ़ीद है जैसा कि अ़न क़रीब उ़-लमाए आख़िरत की अ़लामात बयान की जाएंगी। येह इब्तिदा में है और आख़िर में मुजाहदा व रियाज़त, तसफ़ीए क़ल्ब और अ़लाइके़ दुन्या से दिल को फ़ारिग़ करना और इस में अम्बियाए किराम और औलियाए उ़ज़्ज़ाम से मुशाबहत इख़्तियार करना इस इ़ल्म के ह़ुसूल के लिये मुफ़ीद है। इस त़रह़ जो भी इस इ़ल्म को पाने की कोशिश करेगा वोह जितनी कोशिश करेगा उतना नहीं बल्कि अपने नसीब के मुत़ाबिक़ इसे पा लेगा। अलबत्ता उस के लिये मुजाहिदा ज़रूरी है क्यूंकि मुजाहिदा ही हिदायत की चाबी है, इस के सिवा हिदायत की कोई चाबी नहीं।

मख़्सूस मिक़दार में मह़मूद उ़लूम : जो उ़लूम एक ख़ास मिक़दार में अच्छे हैं वोह हैं जिन को हम ने फ़र्ज़े किफ़ाया उ़लूम में नक़्ल किया है।

इ़ल्म के दर्जात :

हर इ़ल्म के तीन दर्जे हैं : (1)....बक़द्रे ज़रूरत। येह अदना दर्जा है (2)....मियाना रवी। येह दरमियाना दर्जा है और (3)....दरमियानी मिक़दार से ज़ियादा आ'ला दर्जा येह है कि आख़िर उ़म्र तक ह़ासिल किया जाए तो तुम दो शख़्सों में से एक बनो या अपनी इस्लाह़ में मश्ग़ूल रहो या अपनी इस्लाह़ से फ़राग़त पा कर दूसरों की इस्लाह़ करो लेकिन अपनी इस्लाह़ से क़ब्ल दूसरों की इस्लाह़ में मश्ग़ूल मत होना। अगर तुम अपनी इस्लाह़ में मश्ग़ूल हो तो सिर्फ़ उसी इ़ल्म को सीखो जो तुम्हारे ह़ाल के मुत़ाबिक़ तुम पर फ़र्ज़ है और ज़ाहिरी आ'माल से मुतअ़ल्लिक़ा उ़लूम में से नमाज़, त़हारत, रोज़े के मसाइल सीखो और सब से अहम दिल की सिफ़ात का इ़ल्म है जिसे सब ने छोड़ दिया है और येह कि दिल की कौन सी सिफ़ात अच्छी हैं और कौन सी बुरी ? क्यूंकि बुरी सिफ़ात हर इन्सान में होती हैं जैसे ह़िर्स, ह़सद, रिया, तकब्बुर और ख़ुद पसन्दी वग़ैरा येह सब हलाक कर देने वाली सिफ़ात हैं, इन से बचना वाजिबात में से है और इस के साथ ज़ाहिरी आ'माल में मश्ग़ूल होना ऐसा है जैसे ख़ारिश और फोड़ों की तक्लीफ़ में ज़ाहिरी बदन पर लेप करना मगर पंछे या सींगी के ज़रीए़ फ़ासिद मवाद बदन से निकालने में ग़फ़्लत बरतना।

नाम निहाद उ़-लमा और उ़-लमाए आख़िरत :

जैसे रास्तों में बैठे त़बीब ज़ाहिरी बदन को लेप करने का कहते हैं ऐसे ही नाम निहाद उ़-लमा ज़ाहिरी आ'माल का मश्वरा देते हैं जब कि उ़-लमाए आख़िरत बात़िन की सफ़ाई का मश्वरा देते और फ़ासिद मवाद को निकाल कर दिल से ख़राबियों को जड़ से उखाड़ देने का ह़ुक्म देते हैं।

बातिनी के बजाए ज़ाहिरी आ'माल इख़्तियार करने की वजह :

अकषर लोग दिलों की सफ़ाई करने के बजाए ज़ाहिरी आ'माल की त़रफ़ इस लिये भागते हैं कि ज़ाहिरी आ'माल आसान हैं और दिल के आ'माल मुश्किल जैसे कड़वी दवाई पीने से घबराने वाला ज़ाहिरी लेप को इख़्तियार करता है, वोह लेप करने में थकता रहता और मवाद बढ़ता रहता है जिस की वजह से बीमारियां दुगनी हो जाती हैं। लिहाज़ा अगर तुम आख़िरत के त़ालिब और नजात के ख़्वाहिश मन्द हो और हमेशा की बरबादी से बचना चाहते हो तो बातिनी बीमारियों और इन के इ़लाज का इ़ल्म सीखने में मश्ग़ूल हो जाओ। हम ने मुहलिकात के बाब में इन्हें तफ़्सील से बयान किया है। येह इ़ल्म ज़रूर तुम्हें उन पसन्दीदा मक़ामात तक ले जाएगा जो मुनजियात के बाब में ज़िक्र किये गए हैं क्यूंकि जब दिल बुरी सिफ़ात से ख़ाली होगा तो अच्छी सिफ़ात से भर जाएगा जैसा कि ज़मीन को जब घास से साफ़ किया जाए तो इस में त़रह़ त़रह़ की फ़स्लें और फूल उगते हैं और अगर साफ़ न किया जाए तो येह चीज़ें पैदा नहीं होतीं।

सब से बड़ा अह़मक़ :

तुम फ़र्ज़े किफ़ाया उ़लूम को सीखने में मश्ग़ूल न हो बिलख़ुसूस इन्हें क़ाइम करने वाला लोगों में कोई मौजूद हो क्यूंकि दूसरे की इस्लाह़ करने में ख़ुद को हलाक करने वाला बे वुक़ूफ़ है। इस से बड़ा अह़मक़ कौन होगा कि जिस के कपड़ों में सांप और बिच्छू घुस गए हों और इसे मार डालने के दरपै हों मगर वोह पंखा ढूंडने में मसरूफ़ हो ताकि इस के ज़रीए़ दूसरों से मख्खियां दूर करे जब कि जिस्म से चिपके हुए सांप बिच्छू इस के दरपै हों और वोह लोग इस के काम आएं न इसे इन से बचाएं। अगर तुम अपने नफ़्स को पाक करने से फ़राग़त पाओ और ज़ाहिरी व बातिनी गुनाहों को तर्क करने पर क़ादिर हो जाओ, येह तुम्हारी दाइमी आ़दत बन जाए, तुम्हारे लिये ऐसा करना आसान हो जाए और येह बात कुछ बई़द भी नहीं तो फिर तुम फ़र्ज़े किफ़ाया उ़लूम के ह़ुसूल में मश्ग़ूल हो जाओ लेकिन इस में दर्जाबन्दी का लिह़ाज़ रखो। किताबुल्लाह से शुरूअ़ करो फिर ह़दीषे नबवी फिर इ़ल्मे तफ़्सीर और बाक़ी क़ुरआने पाक के उ़लूम जैसे नासिख़ व मन्सूख़, मुफ़स्सल व मौसूल, मह़कुम व मुतशाबेह का इ़ल्म सीखो। इसी त़रह़ ह़दीष में भी येही तरतीब है। इस के बा'द फ़ुरूअ़ सीखो या'नी इ़ल्मे फ़िक़्ह से मज़ाहिब

का इ़ल्म, न कि इख़्तिलाफ़ी मसाइल का इ़ल्म फिर उसूले फ़िक़्ह सीखो। इसी त़रह़ बक़िय्या उ़लूम ह़ासिल करते रहो जहां तक उ़म्र में गुन्जाइश हो और वक़्त साथ दे, मगर किसी एक फ़न में महारत ह़ासिल करने के लिये सारी उ़म्र मत लगाओ क्यूंकि उ़लूम ज़ियादा हैं और उ़म्र कम और येह उ़लूम आलातो मुक़द्दमात हैं, अपनी ज़ात की वजह से नहीं बल्कि ग़ैर की वजह से मत़लूब हैं और हर वोह चीज़ जो ग़ैर की वजह से मत़लूब हो इस में अस्ल मक़्सूद को भूल जाना और आलात की कषरत करना मुनासिब नहीं। लिहाज़ा मुरव्वजा इ़ल्मे लुग़त से इतना सीख लो कि अ़रबी समझ और बोल सको और लुग़ते नादिरा में से सिर्फ़ क़ुरआने ह़कीम और अह़ादीष के ग़रीब अल्फ़ाज़ जान लो फिर उस की ज़ियादा गहराई में मत जाओ। इ़ल्मे नह़्व से बस इतना सीखो जितने का तअ़ल्लुक़ क़ुरआनो ह़दीष से है। याद रखो ! हर इ़ल्म के तीन दर्जे हैं : बक़दरे ज़रूरत, मुतवस्सित़ और दर्जए कमाल। हम ह़दीष व तफ़्सीर, फ़िक़्ह और कलाम में इन तीनों दर्जों को बयान कर देते हैं ताकि दूसरे उ़लूम को तुम इसी पर क़ियास कर लो। चुनान्चे,

तफ़्सीर में ब क़दरे किफ़ायत, मुतवस्सित़ और आ'ला :

तफ़्सीर में **ब क़दरे किफ़ायत** मिक़दार येह है कि क़ुरआने पाक से दुगनी हो जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अ़ली वाह़िदी नैशापूरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى की तस्नीफ़ "الوجيز" **मुतवस्सित़** दर्जा येह है कि इस से तीन गुना हो जैसा कि तफ़्सीर "الوسيط" और **दर्जए कमाल** इस से ज़ाइद है। इस की ह़ाजत नहीं और न ही सारी उ़म्र इस की कोई ह़द होगी।

ह़दीष में ब क़दरे किफ़ायत, मुतवस्सित़ और आ'ला :

ह़दीष में **ब क़दरे किफ़ायत** येह है कि सह़ीह़ैन (या'नी बुख़ारी व मुस्लिम) के मज़ामीन मतने ह़दीष से बा ख़बर शख़्स से नुस्ख़े की तस्ह़ीह़ के साथ पढ़ लो। रावियों के नाम याद करने की ज़रूरत नहीं क्यूंकि येह काम तुम से पहले लोग कर चुके हैं तुम्हें इन की कुतुब पर ए'तिमाद करना चाहिये, बुख़ारी व मुस्लिम का मतन ज़बानी याद करना भी ज़रूरी नहीं बल्कि इन के मुतवन इतने सीख लो की ह़ाजत पड़े तो ज़रूरत की बात इन से तलाश कर सको। **मुतवस्सित़** दर्जा येह है कि सह़ीह़ैन के इलावा दीगर कुतुबे ह़दीष में मौजूद सह़ीह़ अह़ादीष को भी सीखो और **दर्जए कमाल** येह है कि हर ज़ईफ़, क़वी, सह़ीह़ और मुअ़ल्लल ह़दीष को सीखो, नक़्ले ह़दीष के तर्क़े कषीरा (या'नी कई असनाद), रावियों के ह़ालात, इन के नाम और अवसाफ़ की पहचान ह़ासिल करो।

फ़िक़्ह में ब क़दरे किफ़ायत, मुतवस्सित़ और आ'ला :

फ़िक़्ह में **ब क़दरे किफ़ायत** इतनी है जिस पर "مختصر مزنی" मुश्तमिल है और इसे हम ने खुलासतुल मुख़्तसर में मुरत्तब किया है। **मुतवस्सित़** दर्जा येह है कि इस किताब से तीन गुना ज़ाइद हो या'नी इतनी मिक़दार जितनी हम ने "اَلْوَسِيْط" में लिखी है और **दर्जए कमाल** वोह है जिसे हम ने "البسيط" में लिखा है और इस के इ़लावा बड़ी बड़ी किताबें।

इ़ल्मे कलाम का मक़्सूद :

इ़ल्मे कलाम का मक़्सद सिर्फ़ सलफ़े सालेह़ीन से मन्क़ूल अ़क़ाइदे अहले सुन्नत की ह़िफ़ाज़त है इस के इ़लावा कुछ नहीं और इस के इ़लावा जो कुछ है वोह उमूर के ह़क़ाइक़ का कश्फ़ है लेकिन येह त़रीक़ा कश्फ़ के बिग़ैर है। सुन्नत की ह़िफ़ाज़त ब त़रीक़े इख़्तिसार अ़क़ाइद की मुख़्तसर सी किताब से हो सकती है और येह मिक़दार वोह है जिसे हम ने इसी किताब में "قواعد العقائد" के तह़्त बयान किया है। मुतवस्सित़ दर्जा 100 वरक़ की मिक़दार है, इसे हम ने अपनी किताब "الاقتصاد فی الاعتقاد" में बयान किया है। इस इ़ल्म की ह़ाजत इस लिये है कि बिदअ़ती से मुनाज़रा किया जाए और ऐसी बातों से इस की बिदअ़त का मुक़ाबला किया जाए जो बिदअ़त को तोड़ दें और आ़म आदमी के दिल से इसे निकाल दें येह बात सिर्फ़ अ़वाम को नफ़्अ़ बख़्श है जब कि वोह तअ़स्सुब में शिद्दत को न पहुंचे हों और बिदअ़ती जब मुनाज़रा सीख लेता है अगर्चे कम हो तो उसे इ़ल्मे कलाम बहुत कम नफ़्अ़ देता है, अगर तुम इसे साकित व लाजवाब भी कर दो फिर भी वोह अपना मज़हब नहीं छोड़ेगा क्यूंकि वोह इसे अपना क़ुसूर ठेहराएगा और फ़र्ज़ करेगा कि किसी दूसरे के पास इस का जवाब है जिस से वोह आ़जिज़ आ गया है और तुम ने क़ुव्वते मुनाज़रा से उस को मुग़ालत़ा मे डाल दिया है। जब कि आ़म आदमी को अगर इस त़रह़ के मुनाज़रे के ज़रीए ह़क़ से फैर दिया जाए तो उसी की मिष्ल मुनाज़रे से इसे वापस लाया जा सकता है जब तक कि वोह तअ़स्सुब में मुतशद्दिद न हो और अगर उन का तअ़स्सुब ह़द से बढ़ जाए तो फिर उन से नाउम्मीदी हो जाती है क्यूंकि तअ़स्सुब की वजह से अ़क़ाइद दिलों में पुख़्ता हो जाते हैं और येह बुरे उ़-लमा की आफ़ात में से है क्यूं कि वोह ह़क़ के लिये सख़्त तअ़स्सुब से काम लेते और मुख़ालिफ़ीन को ह़क़ारत की निगाह से देखते हैं जिस की वजह से इन में मुक़ाबले और जवाबी कार रवाई का जज़्बा जोश मारता है और वोह बात़िल की मदद करने पर ज़ियादा आमादा हो जाते हैं और उन की त़रफ़ जो मन्सूब किया जाता है वोह उस पर क़ाइम रहने में ज़ियादा मज़बूत़ हो जाते हैं।

उ़-लमा ने तअ़स्सुब को आ़दत व आलाकार बना लिया :

अगर उ़-लमा तअ़स्सुब से बाला तर हो कर ह़क़ारत की नज़र फैर कर तन्हाई में प्यार व मह़ब्बत और ख़ैर ख़्वाही करते हुए उन्हें समझाते तो ज़रूर कामयाबी पाते। लेकिन चूंकि लोगों की पैरवी के बिग़ैर मक़ाम व मर्तबा नहीं मिलता और जब तक मुख़ालिफ़ पर ला'न त़ा'न न की जाए, उसे बुरा भला न कहा जाए तब तक लोग पैरवी करने पर आमादा नहीं होते इस लिये उन्हों ने तअ़स्सुब को अपनी आ़दत और आलाकार बना लिया और इस का नाम दीन की ह़िफ़ाज़त और मुसलमानों की ह़िमायत रख दिया ह़ालांकि दर ह़क़ीक़त येह लोगों की बरबादी और दिलों में बिदअ़त की मज़बूत़ी का ज़रीआ़ है। बहर ह़ाल जो इख़्तिलाफ़ात इन आख़िरी ज़मानों में पैदा हो गए हैं और उन में ऐसी तह़रीरात, तस्नीफ़ात और मुनाज़रे निकले हैं जिन की मिषाल अस्लाफ़ में नहीं मिलती तुम उन के गिर्द घूमने से बचो और उन से ऐसे बचो जैसे ज़हरे क़ातिल से बचते हैं क्यूंकि येह ला इलाज मरज़ है और इसी ने फ़िक़्ह को एक दूसरे से मुक़ाबला करने और बाहम फ़ख़्र करने पर लगा दिया है जैसा कि अ़न क़रीब इस की हलाकतों और आफ़तों का बयान आएगा। अल मुख़्तसर येह कि दानिश मन्दों के नज़्दीक पसन्दीदा बात येह है कि तुम समझो दुन्या में तुम्हारा नफ़्स सिर्फ़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये है। तुम्हारे सामने मौत, रब्ब عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में ह़ाज़िरी, ह़िसाब व किताब और जन्नत व दोज़ख़ हैं फिर ग़ौर करो और सोचो कि तुम्हारे सामने जो चीज़ें हैं इन में से कौन सी तुम्हारे लिये मददगार है, इस के इलावा सब छोड़ दो तो तुम सलामती पर हो।

सिर्फ़ दो रक्अ़त ने फ़ाइदा दिया :

किसी बुज़ुर्ग ने एक आ़लिम को ख़्वाब में देख कर पूछा : "जिन उ़लूम में तुम झगड़े और मुनाज़रे करते थे उन का क्या हुवा ?" उन्हों ने अपना हाथ फैलाया, उस पर फूंक मारी और कहा : "सब कुछ ख़ाक हो कर उड़ गया और मुझे सिर्फ़ उन दो रक्अ़तों से फ़ाइदा हुवा जो मैं ने रात की तन्हाई में पढ़ी थीं।"(1)

ह़दीषे मुबारका में है : "कोई भी क़ौम हिदायत के बा'द गुमराह नहीं होती मगर झगड़ने वाले।"(2)

फिर येह आयाते मुक़द्दसा तिलावत कीं :

---

1 ......قوت القلوب، الفصل الحادی والثلاثون: کتاب العلم وتفضیله، ذکرفضل علم المعرفة......الخ، ج ۱، ص ۲۲۹۔

2 ......سنن الترمذی، کتاب التفسیر، باب ومن سورة الزخرف، الحدیث: ۳۲۶۴، ج۵، ص ۱۷۰۔

مَاضَرَبُوْهُ لَكَ اِلَّا جَدَلًا ؕ بَلْ هُمْ قَوْمٌ خَصِمُوْنَ ﴿۵۸﴾ (پ۲۵،الزخرف:۵۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *उन्हों ने तुम से येह न कही मगर नाहक़ झगड़े को बल्कि वोह हैं ही झगड़ा लू लोग।*

इरशादे बारी तआ़ला है :

فَاَمَّا الَّذِیْنَ فِیْ قُلُوْبِهِمْ زَیْغٌ ـــ الاٰیة (پ۳،اٰل عمرٰن:۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *वोह जिन के दिलों में कजी है।*

ह़दीषे मुबारका में है कि मज़्कूरा आयत में मुनाज़रा बाज़ों (या'नी झगड़ने वालों) का ज़िक्र है। उन के मुतअ़ल्लिक़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने फ़रमाया : (پ۲۸،المنفقون:۴) فَاحْذَرْهُمْ ؕ तो इन से बचते रहो।[1]

बाज़ बुज़ुर्गों ने फ़रमाया : "आख़िरी ज़माने में ऐसे लोग होंगे जिन पर अ़मल का दरवाज़ा बन्द हो जाएगा और झगड़े का दरवाज़ा खुल जाएगा।"[2]

बा'ज़ रिवायतों में है : "बेशक तुम उस ज़माने में हो कि जिस में तुम्हें अ़मल का शौक़ नसीब हुवा अ़न क़रीब ऐसे लोग आएंगे जिन के दिलों में झगड़े का शौक़ डाल दिया जाएगा।"[3]

मश्हूर ह़दीष में है कि "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक लोगों में सब से ज़ियादा नापसन्दीदा वोह शख़्स है जो बहुत झगड़ा लू है।"[4]

येह भी ह़दीषे मुबारका है कि "जिस क़ौम को बोलने की क़ुव्वत दी गई वोह अ़मल से रोक दी गई।"[5] وَاللّٰهُ اَعْلَمُ

---

1 ......صحیح البخاری، کتاب التفسیر، سورۃ آل عمران، الحدیث:۴۵۴۷، ج۳، ص ۱۸۹۔
قوت القلوب،الفصل الحادی و الثلاثون: کتاب العلم و تفضیله،ذکربیان تفضیل علوم الصمت......الخ، ج ۱، ص ۲۳۹۔

2 ......قوت القلوب، الفصل الحادی و الثلاثون: کتاب العلم و تفضیله، ذکربیان تفضیل علوم الصمت......الخ، ج ۱، ص ۲۳۹۔

3 ......قوت القلوب، الفصل الحادی و الثلاثون: کتاب العلم و تفضیله، ذکربیان تفضیل علوم الصمت......الخ، ج ۱، ص ۲۳۹۔

4 ......صحیح مسلم، کتاب العلم، باب فی الألدالخصم، الحدیث:۲۶۶۸، ص ۱۴۳۳۔

5 ......قوت القلوب، الفصل الحادی و الثلاثون: کتاب العلم و تفضیله، ذکربیان تفضیل علوم الصمت......الخ، ج ۱، ص ۲۳۹۔

बाब नम्बर 4 :

लोगों के इख़्तिलाफ़ में पड़ने की वजह, मुनाज़रे की आफ़ात की तफ़्सील और इस के जवाज़ की शराइत़

मुक़द्दमा : लोग इख़्तिलाफ़ात की त़रफ़ क्यूं माइल हुए ?

जान लीजिये ! हुज़ूर नबिय्ये अकरम, रसूले मोह़्तशम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के बा'द ख़िलाफ़त का सहरा ख़ुलफ़ाए राशिदीन महदिय्यीन के सर सजा। येह ह़ज़रात عَالِم بِاللّٰه थे। अह़कामाते इलाहिय्या को समझते थे। मुक़द्दमात के फ़ैसलों में फ़तवा के माहिर थे। फ़ुक़हा से कम ही मदद लेते थे सिवाए इन वाक़िआ़त के जिन में मश्वरे के बिग़ैर चारा न होता। इस लिये उ़-लमा इल्मे आख़िरत के लिये फ़ारिग़ होते और मह़ज़ इस में मश्ग़ूल रहते थे। येह ह़ज़रात फ़तावा और लोगों के दुन्यवी अह़काम को दूसरों की त़रफ़ टाल देते और मुकम्मल त़ौर पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ मुतवज्जेह रहते जैसा कि इन की सीरतों में मन्क़ूल है। फिर इन के बा'द जब हुकूमत ना अहल लोगों के हाथों में आई जो फ़तवा और अह़काम में ग़ैर मुस्तक़िल थे तो वोह फ़ुक़हा से मदद लेने और अह़कामात जारी करने में उन से फ़तवे लेने के लिये हर वक़्त इन को अपने साथ रखने पर मजबूर हो गए। उस वक़्त कुछ ताबेई उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام मौजूद थे जो पहले के त़ौर त़रीक़ो पर कारबन्द थे, ख़ालिस दीन से वाबस्ता थे, हमेशा उ़-लमाए सलफ़ के नक़्शे क़दम पर चलते थे। जब उन्हें त़लब किया जाता तो भाग जाते और रुख़ फैर लेते जिस की वजह से हुक्मरानों की मजबूरी बन गई कि वोह उन्हें त़लब करें और क़ज़ा व दीगर हुकूमती ओ़हदों के लिये इस्रार करें। जब उस ज़माने के लोगों ने देखा कि उ़-लमा का इस क़दर मक़ाम व मर्तबा है और हुक्मरानों का त़बक़ा उन की त़रफ़ मुतवज्जेह है ह़ालांकि वोह उन से ए'तिराज़ करते हैं तो वोह हुकमरानों की त़रफ़ से इ़ज़्ज़त और मक़ाम व मर्तबा पाने के लिये त़लबे इ़ल्म में मश्ग़ूल हो गए। इ़ल्मे फ़तवा में मुनहमिक हो गए और अपने आप को हुक्मरानों के सामने पेश कर के उन्हें अपना तआ़रुफ़ करवाया और उन से इन्आ़मात और ओ़हदों के मुत़ालबात किये। चुनान्चे,

त़ालिब मत़लूब और मुअ़ज़्ज़ज़ ज़लील हो गए :

इन में से कई तो मह़रूम रहे और कई कामयाब हो गए लेकिन जो कामयाब हुए वोह भी मांगने और तुफ़ैली होने की ज़िल्लत व रुस्वाई से दामन न बचा सके। बस फिर फ़ुक़हा जो पहले मत़लूब थे, अब त़ालिब बन गए। पहले हुक्मरानों से मुंह मोड़ कर मुअ़ज़्ज़ज़ थे अब इन की त़रफ़ मुतवज्जेह हो कर ज़लील हो गए। मगर येह कि हर ज़माने में ऐसे उ़-लमाए दीन हुए हैं जिन्हें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने बचने की तौफ़ीक़ मरह़मत फ़रमाई है।

इख़्तिलाफ़ी मसाइल व मुनाज़रों में मश्ग़ूल होने की वजह :

अल ग़रज़ इस ज़माने में लोगों की ज़ियादा तर तवज्जोह फ़तावा और मुक़द्दमात के फ़ैसलों के इ़ल्म की त़रफ़ रही क्यूंकि हुक्मरानों को इस की सख़्त ह़ाजत थी फिर इन के बा'द कुछ उमरा और रईस ऐसे ज़ाहिर हुए जो अ़क़ाइद के क़वाइ़द में लोगों की गुफ़्त्गू सुनते। उन के दिल अ़क़ाइद के दलाइल सुनने की त़रफ़ माइल हुए और इ़ल्मे कलाम में मुनाज़रा व मुजादला की त़रफ़ उन की रग़बत ग़ालिब हो गई तो लोग इ़ल्मे कलाम में मुनहमिक हो गए। इस में कषीर किताबें लिख डालीं, मुनाज़रे के त़रीक़े मुरत्तब कर दिये और गुफ़्त्गू में मुख़ालिफ़ की बात तोड़ने के गुर निकाले और गुमान येह किया कि उन का मक़्सद अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के दीन की ह़िमायत, सुन्नत की ह़िफ़ाज़त और बिदअ़त की बेख़कनी है जैसा कि इन से पहलों का गुमान था कि हमारा फ़तवा में मश्ग़ूल होने और अह़कामे मुस्लिमीन का कफ़ील होने का मक़्सद लोगों की ख़ैर ख़्वाही करना और उन पर शफ़्क़त करना है। फिर इन के बा'द वोह लोग ज़ाहिर हुए जिन्हों ने इ़ल्मे कलाम में ग़ौरो ख़ौज़ करने और इस में मुनाज़रे का दरवाज़ा खोलने को दुरुस्त न समझा क्यूंकि इस के सबब लोगों में सख़्त तअ़स्सुब और झगड़ों की फ़ज़ा क़ाइम हो गई थी और नौबत ख़ूं रेज़ी और शहरों की बरबादी तक पहुंची थी, इस लिये उन के दिल फ़िक़्ह में मुनाज़रा करने और ख़ास त़ौर पर फ़िक़्हे शाफ़ेई व फ़िक़्हे ह़नफ़ी में किस की बात औला है, उसे बयान करने की त़रफ़ माइल हो गए तो लोग इ़ल्मे कलाम और फ़ुनूने इ़ल्म को छोड़ कर बिल ख़ुसूस ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई और ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْهِمَا के माबैन इख़्तिलाफ़ी मसाइल पर तवज्जोह देने लगे और ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे मालिक, ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान षौरी, ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अह़मद बिन ह़म्बल رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْهِمْ اَجْمَعِیْن वग़ैरा अइम्मा के दरमियान इख़्तिलाफ़ी मसाइल को नज़र अन्दाज़ कर दिया और दा'वा येह किया कि इन का मक़्सद शरीअ़त की बारीकियों का इस्तिम्बात़, मज़हब की इ़ल्लतों को षाबित करना और फ़तावा के उसूल तय्यार

करना है । इस सिलसिले में इन्हों ने कषीर किताबें लिखीं, इजतिहादात किये और मुनाज़रे की अक़्साम व तसानीफ़ को मुरत्तब किया, वोह अब (या'नी इमाम ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِي के दौर) तक इसी ह़ालत पर हैं और हमें नहीं मा'लूम कि हमारे बा'द के ज़मानों में क्या ह़ालात होंगे । इख़्तिलाफ़ी मसाइल और मुनाज़रों में लोगों के मश्ग़ूल होने की येही वजह है इस के सिवा कोई नहीं और अगर दुन्यादारों के दिल किसी दूसरे इमाम के साथ इख़्तिलाफ़ या किसी दूसरे इ़ल्म की त़रफ़ माइल होते हैं तो लोग भी इन के साथ इसी की त़रफ़ माइल हो जाते हैं और येह बहाना करने से बाज़ नहीं आते कि जिस में वोह मश्ग़ूल हैं वोह इ़ल्मे दीन है और उन का मक़्सद सिर्फ़ **अल्लाह** रब्बुल आ़लमीन عَزَّوَجَلَّ का क़ुर्ब ह़ासिल करना है ।

पहली फ़स्ल : मुनाज़रों को सह़ाबा के मश्वरों और अस्लाफ़ के मुज़ाकरों से मुशाबहत देना धोका है

जान लो ! येह लोग अ़वाम को रफ़्ता रफ़्ता इस त़रफ़ ले जाना चाहते हैं कि मुनाज़रों से हमारा मक़्सद ह़क़ के बारे में बह़्ष व मुबाह़षा करना है ताकि वोह वाज़ेह़ हो क्यूंकि ह़क़ मत़लूब है और इ़ल्म में ग़ौरो फ़िक्र करने पर एक दूसरे की मदद करना नीज़ कईआरा का मुत्तफ़िक़ हो जाना मुफ़ीद है । मश्वरों में सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن की आ़दत भी येही थी जैसा कि दादा की मौजूदगी में भाइयों के (विराषत से) मह़रूम होने, शराब पीने की ह़द, ह़ाकिम अगर ख़त़ा करे तो उस पर तावान वाजिब होने, अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ के ख़ौफ़ से एक औ़रत का ह़म्ल ज़ाएअ़ हो जाने और विराषत के मसाइल में सह़ाबा के बाहम मश्वरे मन्क़ूल हैं । नीज़ जिस त़रह़ ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई, ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अह़मद बिन ह़म्बल, ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन ह़सन, ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे मालिक और ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू यूसुफ़ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن वग़ैरा उ़-लमा से मन्क़ूल है ।

त़लबे ह़क़ के लिये मुनाज़रे की शराइत़ व अ़लामात :

जो मैं बयान करूंगा उस से तुम्हें इस धोके की ख़बर हो जाएगी और वोह येह है कि त़लबे ह़क़ पर तआ़वुन करना दीनी काम है मगर इस की आठ शराइत़ व अ़लामात हैं :

﴾1﴿.....मुनाज़रा चूंकि फ़र्ज़े किफ़ाया है इस लिये जो फ़र्ज़े ऐन उ़लूम को ह़ासिल न कर चुका हो वोह इस में मश्ग़ूल न हो और जिस के ज़िम्मे फ़र्ज़े ऐन हों और वोह फ़र्ज़े किफ़ाया में मश्ग़ूल हो जाए और येह दा'वा करे कि उस का मक़्सद त़लबे ह़क़ है तो वोह बड़ा झूटा है। इस की मिषाल उस शख़्स की सी है जो ख़ुद नमाज़ को तर्क कर के कपड़ों को ह़ासिल करने और बुनने में लगा हो और कहे कि मेरा मक़्सद येह है कि मैं उस शख़्स के सतर को ढांपूं जिस के पास लिबास नहीं और वोह बरहना नमाज़ पढ़ता है क्यूंकि कभी ऐसा इत्तिफ़ाक़ हो जाता है और इस का वुक़ूअ़ मुमकिन है जैसा कि फ़क़ीह समझता है कि उन नवादिरात का वुक़ूअ़ मुमकिन है जिन के इख़्तिलाफ़ में वोह बह़्ष करता है। मुनाज़रे में मश्ग़ूल होने वाले उन उमूर को छोड़ देते हैं जो बिल इत्तिफ़ाक़ फ़र्ज़े ऐन हैं और जिस शख़्स पर फ़ौरन अमानत लौटाना वाजिब हो और वोह नमाज़ शुरूअ़ करदे जो उ़म्दा इ़बादात में से है तो उस ने अपने रब्ब عَزَّوَجَلَّ की नाफ़रमानी की। लिहाज़ा मा'लूम हुवा कि आदमी के मुत़ीअ़ व फ़रमांबरदार होने के लिये येह काफ़ी नहीं कि जो अ़मल वोह करे वोह इ़बादत व त़ाअ़त हो जब तक कि वोह उस में वक़्त, शराइत़ और तरतीब का लिह़ाज़ न करे।

﴾2﴿.....उस के सामने मुनाज़रे से अहम कोई दूसरा फ़र्ज़े किफ़ाया न हो क्यूंकि जो अहम काम के होते हुए इस के इ़लावा कोई काम करेगा वोह अपने इस अ़मल में गुनहगार होगा। इस की मिषाल उस शख़्स की त़रह़ है जो प्यासे लोगों का एक गुरोह देखे कि प्यास की वजह से मरने के क़रीब हैं और लोगों ने उन्हें नज़र अन्दाज़ कर दिया है जब कि येह उन्हें पानी पिला कर उन की ज़िन्दगी बचाने पर क़ादिर है मगर पछने लगाने का त़रीक़ा सीखने में मश्ग़ूल हो जाए और कहे कि येह फ़र्ज़े किफ़ाया में से है अगर शहर में कोई भी पछने लगाने वाला नहीं होगा तो लोग हलाक हो जाएंगे और अगर इस से कहा जाए कि शहर में पछने लगाने वालों का एक गुरोह मौजूद है और वोह काफ़ी हैं तो वोह कहे कि इस बात से इस फ़े'ल का फ़र्ज़े किफ़ाया होना ख़त्म तो नहीं हो गया।

अल ग़रज़ जो इस काम को करे और मुसलमानों के प्यासे गुरोह को पानी पिलाने जैसे अहम काम को छोड़ दे तो उस का ह़ाल उस शख़्स की त़रह़ है जो मुनाज़रे में मश्ग़ूल होता है ह़ालांकि शहर में कई फ़र्ज़े किफ़ाया ऐसे हैं जिन्हें छोड़ दिया गया है और इन्हें कोई क़ाइम करने वाला नहीं। मिषाल के त़ौर पर फ़तवा जिसे एक जमाअ़त क़ाइम किये हुए है और शहर में कई ऐसे फ़र्ज़े किफ़ाया हैं जिन्हें नज़र अन्दाज़ कर दिया गया है लेकिन फ़ुक़हा उन की त़रफ़ मुतवज्जेह नहीं होते। इन में से ज़ियादा क़रीब त़िब्ब है कि अकषर शहरों में मुसलमान त़बीब मौजूद नहीं कि त़िब्बी उमूर में जिन की गवाही शरअ़न मक़्बूल हो और कोई भी फ़क़ीह इस में मश्ग़ूल होने

को तय्यार नहीं इस त़रह़ اَمۡرٌ بِالۡمَعۡرُوۡفِ وَنَهۡیٌ عَنِ الۡمُنۡکَر (या'नी नेकी की दा'वत देना और बुराई से मन्अ़ करना) भी फ़र्ज़े किफ़ाया है जब कि मुनाज़िर बा'ज़ अवक़ात अपनी मजलिसे मुनाज़रा में किसी को रेशम पहने या रेशमी बिछौने पर बैठे देखता है मगर ख़ामोश रहता है और इस मस्अले में मुनाज़रा करता है जिस के कभी भी वाक़ेअ़ होने का इत्तिफ़ाक़ न हो और अगर वोह वाक़ेअ़ हो भी सही तो फ़ुक़हा की एक जमाअ़त उस के लिये मौजूद हो। इस के बा वुजूद वोह समझता है कि फ़र्ज़े किफ़ाया से, उस का मक़्सद **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का क़ुर्ब ह़ासिल करना है जब कि ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنۡهُ से मरवी है कि किसी ने बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صلی الله علیك وسلم اَمۡرٌ بِالۡمَعۡرُوۡفِ وَنَهۡیٌ عَنِ الۡمُنۡکَر को कब छोड़ दिया जाएगा?" इरशाद फ़रमाया : "जब तुम्हारे नेक लोगों में मदाहनत (ख़ुशामद) का ज़ुहूर होगा और बदों में बे ह़याई पाई जाएगी और ह़ुकूमत तुम्हारे छोटों के पास चली जाएगी जब कि फ़िक़्ह ज़लील लोगों के सिपुर्द हो जाएगी।"(1)

﴾3﴿.....मुनाज़िर मुजतहिद हो जो अपनी राए से फ़तवा दे मज़हबे शाफ़ेई या मज़हबे ह़नफ़ी वग़ैरा फ़तवा न दे ह़त्ता कि अगर उसे ह़क़ मज़हबे ह़नफ़ी में मा'लूम हो तो मज़हबे शाफ़ेई के मुवाफ़िक़ राए को तर्क कर दे और जो उस पर ज़ाहिर हो उस के मुत़ाबिक़ फ़तवा दे जिस त़रह़ सह़ाबए किराम और अइम्मए दीन رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیۡهِمۡ اَجۡمَعِیۡن किया करते थे।

﴾4﴿.....मुनाज़रा उसी मस्अले में करे जो वाक़ेअ़ हो चुका हो या ग़ालिब गुमान हो कि अ़न क़रीब वाक़ेअ़ होगा क्यूंकि सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیۡهِمۡ اَجۡمَعِیۡن नए मसाइल ही में मश्वरा करते थे या उन में जो अकषर वाक़ेअ़ होते जैसे विराषत के मसाइल और आप देखोगे कि अब मुनाज़िरीन इन मसाइल में तह़क़ीक़ का एहतिमाम नहीं करते जिन में अ़वाम मुब्तला हो और फ़तवे की ह़ाजत हो बल्कि ऐसे मसाइल ढूंडते हैं जिन में किसी त़रह़ बह़्ष मुबाह़षे की गुन्जाइश ज़ियादा हो और बा'ज़ अवक़ात ब कषरत वाक़ेअ़ होने वाले मसाइल को छोड़ देते हैं और कहते हैं कि इस मस्अले का तअ़ल्लुक़ ह़दीष से है या कहते हैं कि येह मस्अला मुत्तफ़िक़ा है, इख़्तिलाफ़ी मसाइल में से नहीं तो कितने तअ़ज्जुब की बात है कि मक़्सूद त़लबे ह़क़ है तो वोह मस्अले को येह कह कर क्यूं छोड़ देते हैं कि येह ह़दीष से मुतअ़ल्लिक़ है ह़ालांकि ह़क़ अह़ादीष ही से ह़ासिल होता है या इस लिये छोड़ देते हैं कि येह मस्अला इख़्तिलाफ़ी नहीं कि हम इस में त़वील कलाम करें ह़ालांकि त़लबे ह़क़ में मक़्सूद येह होता है कि मुख़्तसर कलाम कर के जल्द मक़्सद को पहुंचा जाए, लम्बा कलाम न किया जाए।

---

(1)......سنن ابن ماجه،کتاب الفتن،باب قوله تعالیٰ: یاایها الذین آمنوا علیکم انفسکم، الحدیث:۴۰۱۵، ج۴، ص ۳۶۵۔

﴾5﴿......वोह तन्हाई में मुनाज़रा करने को, मह़फ़िल में, उमरा और बादशाहों के सामने मुनाज़रा करने से ज़ियादा पसन्द और अहम जाने क्यूंकि तन्हाई में ज़ेह्न मुज्तमअ़ होता, ज़ेह्न व फ़िक्र की सफ़ाई जल्द हो जाती और ह़क़ को जल्द पाया जा सकता है जब कि मजमअ़ में रियाकारी के अस्बाब मुतह़र्रिक होते हैं और हर एक अपनी बरतरी का ह़रीस होता है ह़क़ पर हो चाहे बात़िल पर और आप जानते हैं कि मह़फ़िलों और मजमओं में उन की ख़्वाहिश रिज़ाए इलाही नहीं होती और येह कि उन में से कोई एक त़वील मुद्दत तक अपने रफ़ीक़ के साथ तन्हा होता है मगर इस से बात नहीं करता। कभी उस से सुवाल किया जाता है तो जवाब नहीं देता। जब किसी ओ़हदे दार के सामने हो या लोगों का इजतिमाअ़ हो तो वोह तक़रीर में अपनी इनफ़िरादिय्यत मनवाने में ज़रा कोताही नहीं करता।

﴾6﴿.....त़लबे ह़क़ में मुनाज़िर का ह़ाल उस शख़्स की त़रह़ हो जो गुमशुदा चीज़ को तलाश कर रहा हो, वोह इस में फ़र्क़ नहीं करता कि गुमशुदा चीज़ बराहे रास्त उसे मिले या उस के मुआ़विन व मददगार के ज़रीए़ मिले। वोह अपने रफ़ीक़ (या'नी मद्दे मुक़ाबिल) को मददगार समझता है मुख़ालिफ़ नहीं और अगर उस का रफ़ीक़ उसे उस की ग़लत़ी बताए और उस के सामने ह़क़ को वाज़ेह़ करे तो वोह उस का शुक्रिया अदा करता है जैसा कि अगर वोह अपनी गुमशुदा चीज़ की तलाश में एक रास्ते को इख़्तियार करे तो उस का रफ़ीक़ उसे बताए कि उस की गुमशुदा चीज़ दूसरे रास्ते में है तो वोह उस का शुक्रिया अदा करता है, उस की बुराई नहीं करता बल्कि उस की इ़ज़्ज़त करता और उस से खुश होता है। सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن की मुशावरतें ऐसी ही थी जैसा कि,

त़ालिबे ह़क़ ऐसा होता है :

एक मरतबा **अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म** رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ लोगों के मजमअ़ में खुत़बा दे रहे थे कि एक औ़रत ने आप की किसी बात का इन्कार किया और ह़क़ बात पर आगाह किया तो आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने फ़रमाया : "औ़रत ने दुरुस्त कहा और मर्द से ख़त़ा हो गई।"(1)

एक शख़्स ने **अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा** كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم से सुवाल किया, आप ने जवाब दिया तो उस ने अ़र्ज़ की : "या अमीरल मोअमिनीन رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ यूं नहीं बल्कि इस त़रह़ है। तो आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने फ़रमाया :

(1)......جامع بیان العلم وفضله، باب جامع فی آداب العالم والمتعلم، فصل فی الانصاف فی العلم، الحدیث:٥٨٨، ص١٧٩۔

"तुम ने ठीक कहा और मैं ने ग़लती की और हर इ़ल्म वाले से ऊपर एक इ़ल्म वाला है।"(1)

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने **ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा अश्अ़री** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ को वोह बात बताई जो उन से रह गई थी तो उन्हों ने फ़रमाया : "जब तुम में येह बड़े आ़लिम मौजूद हों तो मुझ से न पूछा करो।"(2)

वाक़िआ़ यूं है कि एक मरतबा ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से उस शख़्स के बारे में पूछा गया जो राहे ख़ुदा में जिहाद करते हुए मारा जाए तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने जवाब दिया : "वोह जन्नती है।" उस वक़्त आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ कूफ़ा के अमीर थे। ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने खड़े हो कर फ़रमाया : "दोबारा पूछो, शायद मेरा सुवाल नहीं समझे।" लोगों ने दोबारा पूछा मगर अमीरे कूफ़ा ने वोही जवाब दिया तो ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने कहा : "मैं कहता हूं, अगर वोह मारा गया और ह़क़ को पहुंचा तो जन्नती है।" अमीरे कूफ़ा ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने फ़रमाया : "ह़क़ वोह है जो इन्हों ने कहा।"(3)

त़ालिबे ह़क़ का इन्साफ़ ऐसा होता है। अगर इस ज़माने में किसी अदना फ़क़ीह को भी इस त़रह़ कहा जाए तो वोह इस का इन्कार करेगा और इसे बईद समझेगा और कहेगा कि "येह कहने की ह़ाजत नहीं कि अगर वोह ह़क़ को पहुंचा" क्यूंकि येह तो सब को मा'लूम है। पस तुम आज कल के मुनाज़िरीन का ह़ाल देखो कि अगर ह़क़ किसी मुख़ालिफ़ की ज़बान से ज़ाहिर हो जाए तो किस त़रह़ उस का चेहरा सियाह हो जाता और कैसे वोह इस की वजह से शर्मिन्दा होता है। वोह इस का इन्कार करने की मुकम्मल कोशिश करता है और त़वील अ़र्से तक इस की बुराई करता है फिर ह़क़ पर ग़ौरो फ़िक्र करने पर मदद करने में अपने आप को सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہِمۡ اَجۡمَعِیۡن के साथ तशबी देने में ह़या भी नहीं करता।

﴾7﴿......वोह मुनाज़रे में शरीक दूसरे शख़्स को एक दलील से दूसरी दलील और एक ए'तिराज़ से दूसरे ए'तिराज़ की त़रफ़ जाने से मन्अ़ न करे। अस्लाफ़ के मुनाज़रे ऐसे ही होते थे। अपनी गुफ़्तगू से झगड़े की तमाम नई बारीकियों को ख़ारिज कर दे ख़्वाह वोह उस के ह़क़ में हों या उस के ख़िलाफ़। मषलन उस का येह कहना कि "इसे बयान करना मुझ पर लाज़िम नहीं, येह बात

---

❶......جامع بیان العلم وفضلہ، باب جامع فی آداب العالم والمتعلم، الحدیث:۵۸۹، ص۱۶۹۔

❷......الموطا للامام مالک، کتاب الرضاع، باب ماجاء فی الرضاعۃ بعد الکبر، الحدیث:۱۳۲۶، ج۲، ص۱۰۷۔

❸......قوت القلوب، الفصل الحادی والثلاثون، باب ذکر الفرق بین علماء الدنیا......الخ، ج۱، ص۲۵۵تا۲۵۶۔

तुम्हारी पहली बात के ख़िलाफ़ है लिहाज़ा क़बूल नहीं की जाएगी" क्यूंकि ह़क़ की त़रफ़ रुजूअ़ करना बाति़ल को तोड़ देता है और उसे क़बूल करना वाजिब है जब कि आप देखते हैं कि तमाम मजलिसें झगड़ों और एक दूसरे का रद्द करने में ख़त्म हो जाती हैं यहां तक कि जब कोई दलील देने वाला किसी अस्ल की एक इ़ल्लत ठहरा कर कलाम करता है तो उस से कहा जाता है कि "तुम्हारे पास इस की क्या दलील है कि इस हुक्म की अस्ल में इ़ल्लत येही है ?" वोह कहता है : "मुझे तो येही मा'लूम हुई है अगर तुम्हें इस से ज़ियादा वाज़ेह़ और बेहतर इ़ल्लत मा'लूम है तो वोह बयान करो ताकि मैं इस में ग़ौरो फ़िक्र करूं ।" तो मो'तरिज़ मुसिर रहता है और कहता है कि "जो तुम ने बयान किया इस के इ़लावा इस के कई मआ़नी हैं जो मैं जानता हूं लेकिन मैं वोह बयान नहीं करूंगा क्यूंकि मुझ पर उन्हें बयान करना लाज़िम नहीं ।" दलील देने वाला कहता है : "इस के इ़लावा जिस इ़ल्लत का तुम दा'वा करते हो उसे बयान करो ।" लेकिन फिर भी वोह अपने मौक़िफ़ पर बज़िद रहता है और कहता है कि "मुझ पर बयान करना लाज़िम नहीं ।" इस त़रह़ के सुवालात से मुनाज़रे की मजालिस शोर शराबे की नज़्र हो जाती हैं और येह बेचारा नहीं जानता कि इस का येह कहना कि "मैं जानता हूं मगर बयान नहीं करूंगा क्यूंकि मुझ पर लाज़िम नहीं ।" शरीअ़त पर झूट है कि अगर वोह इस के मआ़नी नहीं जानता और मह़ज़ मुख़ालिफ़ को आ़जिज़ करने के लिये कहता है तो वोह फ़ासिक़, कज़्ज़ाब है, उस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की नाफ़रमानी की और ऐसी बात का दा'वा कर के जो उसे मा'लूम नहीं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की नाराज़ी को दा'वत दी और अगर सच्चा है तो शरीअ़त की बात जिसे वोह जानता है छुपाने की वजह से फ़ासिक़ हो गया जब कि उस के मुसलमान भाई ने उस से पूछा ताकि वोह उसे समझे और उस में ग़ौरो फ़िक्र करे, अगर वोह क़वी है तो उस की त़रफ़ रुजूअ़ करे और अगर ज़ईफ़ है तो उस के सामने उस का ज़ो'फ़ बयान कर के उसे जहालत के अन्धेरे से निकाल कर इ़ल्म की रौशनी दे ।"

इस में कोई इख़्तिलाफ़ नहीं कि दीन की जो बात वोह जानता है जब उस से पूछी जाए तो उस पर बताना वाजिब है तो फिर उस की इस बात कि "**मुझ पर लाज़िम नहीं**" का मत़लब येह हुवा कि झगड़े की शरीअ़त, जिसे हम ने ख़्वाहिशात और ह़ीला साज़ी और कलाम के ज़रीए़ नीचा दिखाने के त़रीक़ों में रग़बत की वजह से निकाला है इस के मुत़ाबिक़ लाज़िम नहीं वरना शरई त़ौर पर येह लाज़िम है क्यूंकि इसे बयान करने से रुकने के सबब वोह काज़िब है या फ़ासिक़ । पस तुम सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡھِمۡ اَجۡمَعِیۡن की मुशावरतों और अस्लाफ़ के मुज़ाकरों के

मुतअ़ल्लिक़ तह़क़ीक़ कर लो क्या वोह ऐसे थे ? क्या उन में से किसी ने एक दलील से दूसरी दलील की त़रफ़, क़ियास से अषर की त़रफ़ या ह़दीष से आयत की त़रफ़ जाने से मन्अ़ किया ? (नहीं) बल्कि उन के तमाम मुनाज़रे इसी क़िस्म के थे कि जो कुछ उन के दिल में आता वोह सब कुछ ज़िक्र कर देते और सब उस में ग़ौरो फ़िक्र करते।

﴾8﴿.....मुनाज़रा उस शख़्स से किया जाए जो इ़ल्म सीखने में मश्ग़ूल हो और उस से फ़ाइदा ह़ासिल होने की उम्मीद हो लेकिन अब मुनाज़िरीन ग़ालिबन बड़े बड़े उ़-लमा के साथ मुनाज़रा करने से इजतिनाब करते हैं इस डर से कि उन की ज़बानों पर ह़क़ जारी हो जाएगा और उन से मुनाज़रा करना पसन्द करते हैं जो इ़ल्म में कमतर हों ताकि उन पर बात़िल को रवाज दें।

शैत़ान का खिलौना :

इन के इ़लावा भी बहुत सी बारीक शराइत़ हैं लेकिन इन आठ शराइत़ में जो बयान हुवा इस से तुम्हें मा'लूम हो जाएगा कि कौन रिज़ाए इलाही के लिये मुनाज़रा करता है और कौन इस के सिवा किसी और मक़्सद के लिये। मुख़्तसर येह कि याद रखो जो शैत़ान से मुनाज़रा नहीं करता ह़ालांकि वोह उस के दिल पर मुसल्लत़ और उस का सब से बड़ा दुश्मन और उसे हलाकत की त़रफ़ बुलाता रहता है, वोह इस के इ़लावा लोगों से उन मसाइल में मुनाज़रा करता है जिन में मुज्तहिद राहे रास्त पर होता है या अज्रो षवाब में दुरुस्त राह पाने वाले के साथ शरीक होता है। ऐसा शख़्स शैत़ान के लिये खिलौना और मुख़्लिस लोगों के लिये इ़ब्रत है। इसी लिये शैत़ान उस पर ख़ुश होता है कि इस ने उसे उन आफ़ात के अन्धेरों में ग़ौत़ा दे रखा है जिन्हें हम ज़िक्र करेंगे और इन की तफ़्सील बयान करेंगे। हम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से अच्छी मदद व तौफ़ीक़ का सुवाल करते हैं।

﴾.....हलाकत में डालने वाले आ'माल.....﴿

फ़रमाने मुस्त़फ़ा :

*"हलाकत में डालने वाले सात गुनाहों से बचते रहो, वोह येह है : (1) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का शरीक ठहराना (2) जादू करना (3) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ह़राम कर्दा जान को ना ह़क़ क़त्ल करना (4) यतीम का माल खाना (5) सूद खाना (6) मैदाने जिहाद से फ़रार होना और (7) सीधी सादी, पाक दामन, मोमिना औ़रतों पर ज़िना की तोहमत लगाना।"* (صحيح البخارى،الحديث٢٧٦٦،ص٢٢٢)

दूसरी फ़स्ल : मुनाज़रे की आफ़ात और इस से जनम लेने वाली हलाकत खेज़ आदात

जान लीजिये और यक़ीन कर लीजिये कि जो मुनाज़रा ग़ालिब आने, सामने वाले को ख़ामोश व लाजवाब करने, अपनी फ़ज़ीलत व इ़ज़्ज़त ज़ाहिर करने, लोगों के सामने मुंह खोल कर बातें करने, फ़ख़्र व ग़ुरूर, हुज्जत बाज़ी और लोगों की तवज्जोह ह़ासिल करने की निय्यत से हो वोह उन तमाम मज़्मूम सिफ़ात की बुन्याद है जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक बुरी और दुश्मने ख़ुदा "**इब्लीस**" को अच्छी लगती हैं। इस की निस्बत तकब्बुर, ख़ुद पसन्दी, ह़सद, बुग़्ज़, पाक बाज़ बनने और हुब्बे जाह वग़ैरा बातिनी बुराइयों की त़रफ़ ऐसी है जैसे शराब पीने की निस्बत ज़ाहिरी बुराइयों या'नी ज़िना, तोहमत, क़त्ल और चोरी की त़रफ़ और जैसे वोह शख़्स कि जिसे शराब पीने और दूसरी बुराइयों के दरमियान इख़्तियार दिया जाए तो वोह शराब को मा'मूली समझ कर पी बैठे फिर शराब के नशे में बक़िय्या गुनाहों का भी इर्तिकाब कर बैठे। इस त़रह़ जिस पर दूसरों को ख़ामोश व लाजवाब करने, मुनाज़रे में ग़लबा पाने, हुब्बे जाह, फ़ख़्र व ग़ुरूर की ख़्वाहिश ग़ालिब हो तो येह चीज़ उसे दिल की तमाम बातिनी बुराइयों की त़रफ़ ले जाएगी और उस के नफ़्स में तमाम बुरी सिफ़ात की ख़्वाहिश जोश मारेगी। **मोहलिकात** के बयान में क़ुरआनो ह़दीष से उन सिफ़ात की बुराई के दलाइल आएंगे लेकिन फ़िलह़ाल हम उन तमाम बुरी सिफ़ात की त़रफ़ इशारा करेंगे जो मुनाज़रे के सबब वुजूद में आती हैं। चुनान्चे,

मुनाज़रे के बाइ़ष पैदा होने वाली बुरी सिफ़ात :

﴾1﴿......**ह़सद :** सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "ह़सद नेकियों को इस त़रह़ खा जाता है जिस त़रह़ आग लकड़ियों को खा जाती है।"(1)

मुनाज़िर ह़सद से नहीं बच सकता क्यूंकि कभी वोह ग़ालिब आता है और कभी मग़लूब हो जाता है। कभी उस के कलाम की ता'रीफ़ की जाती है और कभी दूसरे के कलाम को अच्छा कहा जाता है। पस जब तक दुन्या में एक शख़्स भी ऐसा ज़िन्दा रहेगा जिस के क़ुव्वते इ़ल्म और क़ुव्वते इजतिहाद का ज़िक्र किया जाएगा या उस के ख़याल में उस का कलाम अच्छा और फ़िक्र मज़बूत़ होगी तो वोह ज़रूर उस से ह़सद करेगा और उस से ज़वाले ने'मत की तमन्ना करेगा और

---

(1) سنن ابن ماجه، كتاب الزهد، باب الحسد، الحديث: ۴۲۱۰، ج۴، ص۴۷۳۔

पसन्द करेगा कि लोगों के दिल उस की त़रफ़ से फिर कर मेरी त़रफ़ माइल हो जाएं। ह़सद एक जलाने वाली आग है पस जो इस में मुब्तला हुवा वोह दुन्या में भी अ़ज़ाब में गिरिफ़्तार हुवा और आख़िरत का अ़ज़ाब तो ज़ियादा सख़्त और बड़ा है। इसी लिये ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھُمَا ने फ़रमाया : "इ़ल्म को जहां पाओ ले लो लेकिन फ़ुक़हा के वोह अक़्वाल क़बूल न करो जो एक दूसरे के ख़िलाफ़ हों क्यूंकि वोह एक दूसरे के ऐसे ही दुश्मन हैं जैसे बाड़े में बकरे एक दूसरे के दुश्मन होते हैं।"[1]

﴾2﴿.....**तकब्बुर और ख़ुद को लोगों से बुलन्द समझना :** सरदारे मक्कए मुकर्रमा, सुल्त़ाने मदीनए मुनव्वरा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जो तकब्बुर करता है अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे पस्त कर देता है और जो आ़जिज़ी व इन्किसारी अपनाता है अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे बुलन्दी अ़त़ा फ़रमाता है।"[2]

नीज़ ह़दीसे क़ुदसी है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया : "अ़ज़मत मेरा इज़ार है और किब्रियाई मेरी चादर तो जो इन में मुझ से झगड़ेगा मैं उसे तबाहो बरबाद कर दूंगा।"[3]

मुनाज़िर अपने हम अ़स्रों और हम मिस्ल लोगों पर तकब्बुर करने और अपनी हैसिय्यत से बढ़ कर मर्तबा चाहने से नहीं बच सकता ह़त्ता कि वोह मजालिस में बैठने की जगह पर झगड़ते हैं, बुलन्द व पस्त जगह, मक़ामे सदारत से क़ुर्बो दूरी और रास्ते तंग होने की सूरत में पहले दाख़िल होने पर मुक़ाबला करते हैं। कभी इन में से ग़बी, मक्कार, धोकेबाज़ बहाना करता है कि वोह तो इ़ल्म की ह़िफ़ाज़त चाहता है और "मोमिन को अपने नफ़्स की तज़्लील से मन्अ़ किया गया है।"[4]

पस वोह तवाज़ोअ़ जिसे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और तमाम अम्बियाए किराम عَلَیۡہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने क़ाबिले ता'रीफ़ क़रार दिया उसे ज़िल्लत से ता'बीर करता है और तकब्बुर जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक बुरा है उसे दीन की इ़ज़्ज़त बताता है। नामों में तह़रीफ़ करता है ताकि इस के ज़रीए लोगों को गुमराह करे जिस त़रह़ ह़िक्मत और इ़ल्म वग़ैरा नामों में तह़रीफ़ की गई।

---

1 ......جامع بیان العلم وفضلہ، باب حکم قول العلماء بعضھم فی بعض، الحدیث:۱۱۸۳، ص۴۳۵۔

2 ......سنن ابن ماجہ، کتاب الزھد، باب البراءۃ من الکبر والتواضع، الحدیث:۴۱۷۶، ج۴، ص۴۵۸۔
موسوعۃ الامام ابن ابی الدنیا، کتاب التواضع والخمول، الحدیث:۷۷، ج۳، ص۵۵۲۔

3 ......سنن ابن ماجہ، کتاب الزھد، باب البراءۃ من الکبر والتواضع، الحدیث:۴۱۷۴، ج۴، ص۴۵۷۔
المستدرک، کتاب الایمان، باب اھل الجنۃ، المغلوبون الضعفاء......الخ، الحدیث:۲۰۹، ج۱، ص۲۳۵۔

4 ......سنن الترمذی، کتاب الفتن، باب۶۷، الحدیث:۲۲۶۱، ج۴، ص۱۱۲۔

﴾3﴿.....**कीना :** मुनाज़िर इस से भी मह़फ़ूज़ नहीं रह सकता ह़ालांकि मक्की मदनी सरकार, मह़बूबे परवर दगार صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ''मुसलमान कीना परवर नहीं होता।''(1)

कीने की मज़म्मत व बुराई में जो कुछ मरवी है वोह किसी पर मख़्फ़ी नहीं और तुम किसी मुनाज़िर को इस पर क़ादिर न देखोगे कि वोह उस शख़्स से कीने को छुपाए जो उस के मुख़ालिफ़ का कलाम सुन कर सर हिलाता है और उस का कलाम सुन कर न सर हिलाता है और न अच्छे त़रीके़ से सुनता है बल्कि जब मुनाज़िर उसे देखेगा तो कीने को छुपाने और दिल ही दिल में इसे बढ़ाने पर मजबूर हो जाएगा और ज़ियादा से ज़ियादा येह कर सकेगा कि निफ़ाक़ के त़ौर पर कीने को छुपा लेगा लेकिन आ़म त़ौर पर वोह ज़ाहिर हो ही जाता है।

नीज़ मुनाज़िर कीने से क्यूंकर बच सकता है जब कि तमाम सुनने वालों का मुत्तफ़िक़ा त़ौर पर उस के कलाम को तरजीह़ देना मुतसव्विर नहीं और न येह मुमकिन है कि हर ह़ालत में वोह उस के ए'तिराज़ात व जवाबात को अच्छा बताएं बल्कि उस के मुख़ालिफ़ से अगर कोई छोटी सी बात भी ऐसी सादिर हो गई जिस से उस के कलाम की त़रफ़ तवज्जोह कम हो गई तो ज़िन्दगी भर उस के दिल में मुख़ालिफ़ का कीना जम जाएगा।

﴾4﴿......**ग़ीबत :** अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने ग़ीबत को मुर्दार खाने से तशबीह दी है। मुनाज़िर हमेशा मुर्दार खाता रहता है क्यूंकि वोह मुख़ालिफ़ का कलाम नक़्ल करने और उस की मज़म्मत करने से बाज़ नहीं रह सकता। वोह ज़ियादा से ज़ियादा येह एह़तियात़ कर लेगा कि मुख़ालिफ़ की जो बात नक़्ल करेगा उस में सच बोलेगा, झूट से काम नहीं लेगा, अलबत्ता ऐसी बातें ज़रूर नक़्ल करेगा जो उस के कलाम के ऐ़ब, इ़ज्ज़ और उस की फ़ज़ीलत की कमी पर दलालत करें और येही ग़ीबत है, अगर उस के बारे में झूट नक़्ल करेगा तो बोहतान होगा। इसी त़रह़ मुनाज़िर उस शख़्स की इ़ज़्ज़त के दरपै होने से भी अपनी ज़बान को क़ाबू में नहीं रख सकता जो उस के कलाम से ए'राज़ करे और उस के मुख़ालिफ़ का कलाम तवज्जोह से सुने ह़त्ता कि वोह ऐसे शख़्स को जाहिल, अह़मक़, नासमझ और बे वुक़ूफ़ बताएगा।

﴾5﴿......**ख़ुद पसन्दी का शिकार होना :** मुनाज़िरे से जनम लेने वाली बुराइयों में से एक अपने नफ़्स की ता'रीफ़ करना भी है। इरशादे बारी तआ़ला है :

---

1 ......الزواجر عن اقتراف الكبائر، الباب الاول، الكبيرة الثالثة، ج ۱، ص ۱۲۴۔
المعجم الاوسط، الحديث: ۴۲۵۳، ج ۳، ص ۳۰۱۔

فَلَا تُزَكُّوْۤا اَنْفُسَكُمْ ؕ هُوَ اَعْلَمُ بِمَنِ اتَّقٰى ۝۳۲ (پ۲۷، النجم: ۳۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *तो आप अपनी जानों को सुथरा न बताओ वोह ख़ूब जानता है जो परहेज़गार हैं।*

किसी दाना से पूछा गया : "बुरा सच क्या है ?" जवाब दिया : "आदमी का अपने मुंह मियां मिठ्ठू बनना।"

मुनाज़िर क़ुव्वत व ग़लबा और हम अ़स्रों पर फ़ौक़िय्यत के साथ अपनी ता'रीफ़ करने से नहीं रह सकता और मुनाज़रे के दौरान येह भी ज़रूर कहता है कि मैं उन लोगों में से नहीं जिन पर इस जैसी बातें पोशीदा होती हैं। मैं मुख़्तलिफ़ उ़लूम का माहिर, उसूल व अह़ादीष याद करने में मुन्फ़रिद हूं। इस के इलावा वोह बातें जिन से अपनी ता'रीफ़ की जाती है कभी तो शैख़ी मारने के त़ौर पर कहता है और कभी ज़रूरत की वजह से ताकि इस का कलाम मश्हूर हो। येह बात मा'लूम है कि शैख़ी मारना और खुद पसन्दी का शिकार होना दोनों शरई त़ौर पर भी बुरे हैं और अ़क़्ली त़ौर पर भी।

﴾6﴿......तजस्सुस और लोगों के छुपे उ़यूब तलाश करना :

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने अ़ज़ीम है :

وَلَا تَجَسَّسُوْا (پ۲۶، الحجرٰت: ۱۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और ऐ़ब न ढूंढो।*

मुनाज़िर अपने हम अ़स्रों की ख़त़ाएं और मुख़ालिफ़ के उ़यूब तलाश करने से बाज़ नहीं रह सकता यहां तक कि अगर उसे ख़बर मिले कि उस के शहर में कोई मुनाज़िर आ रहा है तो वोह ऐसे शख़्स को तलाश करता है जो उस के पोशीदा ह़ालात उसे बताए। सुवाल कर कर के उस की बुराइयां निकालता और ज़रूरत के वक़्त उसे ज़लील व रुस्वा और शर्मिन्दा करने के लिये ज़ख़ीरा करता है। उस के बचपन के ह़ालात और बदन के उ़यूब तक पूछता है कि शायद उस की कोई लग़्ज़िश या उस का कोई ऐ़ब मषलन गंजा होना वग़ैरा मा'लूम हो जाए। फिर जब उस का मा'मूली ग़लबा मह़सूस करे तो अगर वोह सन्जीदा हो तो किनायतन उस का ऐ़ब बयान करता है और इस बात को अच्छा समझा जाता और नुक्ता व बारीक बीनी शुमार किया जाता है और अगर वोह बे ह़याई और मज़ाक़ मस्ख़री से खुश होता हो तो उस की बुराई खुल कर बयान करता है। जैसा कि मो'तबर मुनाज़िरीन के बारे में मन्क़ूल है जो बड़े पाए के मुनाज़िर शुमार किये जाते हैं।

﴾7﴿.....लोगों की बुराइयों पर ख़ुश होना और ख़ुशी पर रन्जीदा होना : जो अपने भाई के लिये वोह चीज़ पसन्द नहीं करता जो अपने लिये पसन्द करता है तो वोह मुसलमानों के अख़्लाक़ से दूर है। पस हर वोह शख़्स जो अपनी फ़ज़ीलत ज़ाहिर कर के फ़ख़्र करना चाहता

है उसे वोह बात ज़रूर ख़ुश करती है जो उस के हम अ़स्रों और फ़ज़ीलत में उस के हम पल्ला लोगों को तक्लीफ़ पहुंचाती है। इन में ऐसी दुश्मनी होती है जैसी सोंकनों में होती है। जिस त़रह़ एक सोकन जब दूसरी को दूर से देखती है तो घबरा कर लरज़ जाती और उस का रंग पीला पड़ जाता है इसी त़रह़ तुम मुनाज़िर को देखोगे कि जब वोह किसी दूसरे मुनाज़िर को देख लेता है तो इस का रंग बदल जाता और वोह घबरा जाता है जैसे उस ने कोई सरकश जिन्न या शिकारी दरन्दा देख लिया हो। तो कहां है वोह मह़ब्बत व प्यार जो उ़-लमा के दरमियान बाहम मुलाक़ात के वक़्त होता है और कहां है वोह जो उ़-लमा के बारे में भाईचारा, एक दूसरे की मदद करना और ख़ुशी ग़मी में एक दूसरे के साथ शरीक होना मन्क़ूल है।

मरबूत़ रिश्ता :

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْکَافِی ने फ़रमाया : "इ़ल्म अहले फ़ज़्ल व अ़क़्ल के दरमियान मरबूत़ रिश्ता है।"

लिहाज़ा जिन लोगों के दरमियान क़त़ई दुश्मनी है वोह ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْکَافِی के मज़्हब की इक़्तिदा का दा'वा कैसे करते हैं? ग़लबा व फ़ख़्र की ख़्वाहिश होते हुए इन में मह़ब्बत की फ़ज़ा हरगिज़ हरगिज़ क़ाइम नहीं हो सकती। तुम्हें मुनाज़रे की इतनी बुराई काफ़ी है कि मुनाफ़िक़ीन के अख़्लाक़ तुम्हारी आ़दात बन जाएं और तुम मोअमिनीन व मुत्तक़ीन के अख़्लाक़ से मह़रूम हो जाओ।

﴾8﴿......**मुनाफ़क़त :** इस की मज़म्मत में दलाइल देने की ह़ाजत नहीं, मुनाज़िरीन इस पर मजबूर होते हैं, क्यूंकि वोह अपने मुख़ालिफ़ीन और उन के मुह़िब्बीन व मुत्तबेईन से मिलते हैं तो ज़बान से इन की मह़ब्बत और इन के मक़ाम व मर्तबे के शौक़ का इज़्हार करने के सिवा उन्हें कोई चारा नहीं होता ह़ालांकि मुतकल्लिम व मुख़ात़ब और तमाम सुनने वाले जानते हैं कि येह झूट, मुनाफ़क़त और फ़ुजूर है क्यूंकि वोह ज़बान से तो मह़ब्बत का इज़्हार करते हैं लेकिन दिलों में एक दूसरे से नफ़रत रखते हैं। हम उन से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की पनाह मांगते हैं।

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ह़सन बसरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی से मरवी है कि हु़ज़ूर नबिय्ये पाक, साह़िबे लौलाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जब लोग इ़ल्म सीखें और अ़मल छोड़ दें, ज़बानों से इज़्हारे मह़ब्बत करें और दिलों में बुग़्ज़ व अ़दावत रखें और रिश्ते काटें उस वक़्त इन पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ला'नत होगी और वोह इन्हें अन्धा और बहरा कर देगा।"(1) इस रिवायत की सिह़्ह़त इस ह़ालत के मुशाहदे से षाबित है।

---

(1)......الزھد للامام احمد بن حنبل، فضل ابی ھریرۃ، الحدیث:۸۳۶، ص۱۶۷۔
العقوبات لابن ابی الدنیا، اسباب العقوبات وانواعھا، الحدیث:۱۰، ص۲۴۔

﴾9﴿......ह़क़ से तकब्बुर करना, इसे बुरा जानना और इस में झगड़ने को पसन्द करना :

मुनाज़रे से जनम लेने वाली बुराइयों में से एक बुराई ह़क़ से तकब्बुर करना, इसे बुरा जानना और इस में झगड़ने को पसन्द करना भी है। यहां तक कि मुनाज़िर के लिये येह बात सब से ज़ियादा क़ाबिले नफ़रत होती है कि उस के मुख़ालिफ़ की ज़बान पर ह़क़ ज़ाहिर हो। अगर ज़ाहिर हो जाए तो इस का इन्कार करने की भरपूर कोशिश करता है और इसे रद करने के लिये धोका, मक्र व फ़रैब और ह़ीला करने की हर मुमकिन कोशिश करता है। ह़त्ता कि उस में झगड़ा करने की त़बई आ़दत बन जाती है। फिर वोह जो भी कलाम सुनता है उस की त़बीअ़त इस पर ए'तिराज़ करने की त़रफ़ रागिब होती है और मुआ़मला यहां तक पहुंच जाता है कि कुरआने ह़कीम के दलाइल और शरीअ़त के अल्फ़ाज़ के बारे में भी ए'तिराज़ की आ़दत उस के दिल पर ग़ालिब आ जाती है। फिर वोह बा'ज़ अल्फ़ाज़ को बा'ज़ के मुक़ाबले में लाता है ह़ालांकि बात़िल के मुक़ाबले में भी झगड़ा करना ममनूअ़ है क्यूं कि हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़क़ के साथ बात़िल के ख़िलाफ़ झगड़ा तर्क करने की तरग़ीब दिलाई है। चुनान्चे,

ताजदारे दो आ़लम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जो बात़िल पर हो और झगड़ा छोड़ दे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के लिये जन्नत के एक कोने में घर बनाएगा और जो ह़क़ पर हो और झगड़ा न करे तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के लिये जन्नत के ऊपर वाले दर्जे में घर बनाएगा।"(1)

नीज़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने ह़क़ को झुटलाने और ज़ाते इलाही पर झूट बांधने वालों को यक्सां क़रार दिया है। चुनान्चे, इरशादे बारी तआ़ला है :

وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰی عَلَی اللّٰهِ كَذِبًا اَوْ كَذَّبَ بِالْحَقِّ لَمَّا جَآءَهٗ ؕ (پ ۲۱، العنكبوت:۶۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और उस से बढ़ कर ज़ालिम कौन जो अल्लाह पर झूट बांधे या ह़क़ को झुटलाए जब वोह उस के पास आए।*

एक जगह इरशाद फ़रमाया :

فَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنْ كَذَبَ عَلَی اللّٰهِ وَ كَذَّبَ بِالصِّدْقِ اِذْ جَآءَهٗ ؕ (پ ۲۴، الزمر:۳۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *तो उस से बढ़ कर ज़ालिम कौन जो अल्लाह पर झूट बांधे या ह़क़ को झुटलाए जब वोह उस के पास आए।*

---

1 ......سنن الترمذی، کتاب البر والصلة، باب ماجاء فی المراء، الحدیث:۲۰۰۰، ج۳، ص۴۰۰۔
سنن ابی داود، کتاب الادب، باب فی حسن الخلق، الحدیث:۴۸۰۰، ج۴، ص ۳۳۲، بتغیر۔

﴾10﴿......**रियाकारी और लोगों पर निगाह रखना :** रियाकारी, लोगों पर निगाह रखना, उन के दिलों को अपनी त़रफ़ मुतवज्जेह करने और उन के चेहरों को अपनी त़रफ़ फैरने की कोशिश करना भी मुनाज़रे की बुराइयों में से एक बुराई है। रियाकारी एक लाइलाज बीमारी है, जो बड़े बड़े गुनाहों की त़रफ़ ले जाती है। जैसा कि "كتاب الريا" में आएगा। मुनाज़िर का मक़्सद येही होता है कि वोह लोगों के सामने ज़ाहिर हो और लोग उस की ता'रीफ़ करें।

मज़्कूरा 10 बुराइयां बड़ी बड़ी बात़िनी बुराइयों में से हैं और वोह आ़दात जो ग़ैर सन्जीदा मुनाज़िरीन में पाई जाती हैं इन के इ़लावा हैं जैसे ऐसा झगड़ा जिस में मार धाड़, थप्पड़ रसीद करना, चेहरे पर मारना, कपड़े फाड़ना, दाढ़ी पकड़ना, वालिदैन को गालियां देना, असातिज़ा को बुरा भला कहना और खुल्लम खुल्ला तोहमत लगाना और इलज़ाम तराशी करना है। बिला शुबा ऐसे लोगों का शुमार समझदार लोगों में नहीं होता। इन में से जो अकाबिर और अहले अ़क़्ल होते हैं वोह भी इन 10 ख़स्लतों में मुब्तला होते ही हैं। अलबत्ता कुछ लोग, बा'ज़ ख़स्लतों से मह़फ़ूज़ रहते हैं जब कि मद्दे मुक़ाबिल मुनाज़िर इस से कम मर्तबा हो या ज़ियादा मर्तबे वाला हो या इस के शहर और अस्बाबे मई़शत से दूर का हो और अगर दोनों हम पल्ला हों तो फिर इन ख़स्लतों से नहीं बच सकते। फिर इन 10 ख़स्लतों में से हर एक ख़स्लत से मज़ीद 10 बेहूदा ह़रकात जनम लेती हैं हम इन में से हर एक की तफ़्सील बयान कर के, गुफ़्त्गू त़वील नहीं करेंगे, जैसा कि नाक चढ़ाना, ग़ुस्सा करना, दुश्मनी रखना, लालच करना, ग़लबा पाने और फ़ख़्र करने की क़ुदरत ह़ासिल करने के लिये त़लबे माल व इ़ज़्ज़त की मह़ब्बत, ग़ुरूर, इतराना, मालदारों और बादशाहों की ता'ज़ीम करना, इन के दरबारों में आना जाना, इन के ह़राम माल ह़ासिल करना, घोड़ों, सुवारियों और ममनूअ़ कपड़ों से ज़ीनत इख़्तियार करना, फ़ख़्र व ग़ुरूर में मुब्तला हो कर लोगों को ह़क़ीर समझना, फ़ुज़ूल कामों में ग़ौरो ख़ौज़ करना, ज़ियादा बातें करना, दिल से ख़ौफ़े ख़शिय्यत और नर्मी निकल जाना, दिल पर ग़फ़्लत त़ारी हो जाना कि इन में से जब कोई नमाज़ पढ़े तो उसे येह मा'लूम न हो कि उस ने कौन सी नमाज़ पढ़ी ? कहां से क़िरअत की ? और किस की बारगाह में मुनाजात कर रहा है ? मुनाज़रे में मददगार उ़लूम में तमाम उ़म्र मश्ग़ूल रहने के बा वुजूद वोह अपने दिल में ख़ुशूअ़ मह़सूस नहीं करता और येह उ़लूम या'नी उ़म्दा गुफ़्त्गू, مُقَفّٰی ومُسَجَّع अल्फ़ाज़ और नादिर व नायाब बातों को याद कर लेना और इन के इ़लावा बेशुमार उमूर हैं जो आख़िरत में नफ़्अ़ भी नहीं देंगे। जब कि मुनाज़िरीन अपने दर्जात के मुत़ाबिक़ इन में मुख़्तलिफ़ हैं। इन के मुख़्तलिफ़ दर्जात हैं जो इन में से दीन में बड़ा और अ़क़्ल व दानाई में ज़ियादा हो वोह भी इन ख़साइल से नहीं बच सकता। बहुत ज़ियादा कोशिश कर के इतना कर

लेगा कि अपने नफ़्स पर क़ाबू पा कर इन्हें छुपा लेगा। याद रखो ! येह घटिया अख़्लाक़ उस में भी ज़रूर पाए जाते हैं जो वा'ज़ व नसीह़त में मश्ग़ूल हो जब कि उस का मक़्सद लोगों में मक़्बूलिय्यत पाना, अपना मर्तबा क़ाइम करना और माल व इ़ज़्ज़त ह़ासिल करना हो। उस में भी ज़रूर पाए जाते हैं जो इ़ल्मे मज़्हब व फ़तावा में मश्ग़ूल हो जब कि उस का मक़्सद क़ाज़ी बनना, अवक़ाफ़ का मुतवल्ली बनना और अपने हम अ़स्रों से आगे बढ़ना हो।

हमेशा की हलाकत व बरबादी या ह़याते जाविदानी :

मुख़्तसर येह कि येह बुरी ख़स्लतें हर उस शख़्स में लाज़िमी पाई जाती हैं जो आख़िरत में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह से ह़ुसूले षवाब के इ़लावा मक़्सद के लिये इ़ल्म ह़ासिल करता है, क्यूंकि इ़ल्म आ़लिम को ऐसे नहीं छोड़ता बल्कि उसे हमेशा की हलाकत व बरबादी का निशाना बना देता या ह़याते जाविदानी बख़्श देता है इसी लिये सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ''बरोज़े क़ियामत लोगों में सब से सख़्त अ़ज़ाब उस आ़लिम को होगा जिसे उस के इ़ल्म ने नफ़्अ़ न दिया होगा।''[1]

बेशक यहां इ़ल्म ने नुक़्सान दिया नफ़्अ़ नहीं दिया। काश ! वोह बराबर बराबर ही नजात पा लेता। ख़बरदार ! ख़बरदार ! इ़ल्म का ख़त़रा बहुत बड़ा है और इस का त़ालिब दाइमी बादशाही और हमेशा की ने'मतों का त़ालिब होता है। पस वोह बादशाह बन कर या हलाक हो कर ही रहता है। वोह दुन्यवी बादशाही के त़ालिब की त़रह़ है कि अगर वोह माल ह़ासिल करने में कामयाब न हो तो ज़िल्लत से बचने की उम्मीद भी नहीं होती बल्कि उस के लिये सख़्त रुस्वा कुन ह़ालात ज़रूरी हो जाते हैं।

एक सुवाल और इस का जवाब :

अगर तुम कहो कि मुनाज़रे की इजाज़त देने में फ़ाइदा है कि इस से लोगों को त़लबे इ़ल्म की तरग़ीब मिलती है, अगर ह़ुकूमत की मह़ब्बत न हो तो उ़लूम मिट जाएंगे ? तो इस का जवाब येह है कि जो तुम ने कहा एक ए'तिबार से सच है, लेकिन इस का फ़ाइदा नहीं क्यूंकि अगर बच्चे को गेंद बल्ले, और चिड़ियों से खेलने की लालच न दी जाए तो वोह मद्रसे में दिलचस्पी नहीं लेता लेकिन इस का येह मत़लब नहीं कि खेल कूद का शौक़ अच्छा है। इसी त़रह़ अगर ह़ुकूमत की मह़ब्बत न हो तो उ़लूम मिट जाएंगे। लेकिन इस से येह षाबित नहीं होता कि ह़ुकूमत का

---

1 ......شعب الایمان للبیهقی، باب فی نشرالعلم، الحدیث:۱۷۷۸، ج۲، ص۲۸۵۔
المجالسة و جواهرالعلم للدینوری، الحدیث:۹۱، ج۱، ص۵۷۔

त़ालिब नजात पाएगा बल्कि वोह उन लोगों में से है जिन के बारे में हु़ज़ूर صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "बेशक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इस दीन की मदद उन लोगों से भी लेता है जिन का दीन में कोई हि़स्सा नहीं।"(1)

एक रिवायत में है कि "बेशक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़ासिक़ व फ़ाजिर शख़्स से भी इस दीन की मदद ले लेता है।"(2)

आग और शम्अ़ की मिष्ल :

पस त़ालिबे हु़कूमत खुद हलाक हो रहा होता है। अलबत्ता उस के सबब कभी दूसरों की इस्लाह़ हो जाती है जब कि वोह तर्के दुन्या की त़रफ़ बुलाए और येह उस शख़्स में होता है जिस का ज़ाहिरी ह़ाल उ़-लमाए सलफ़ के ज़ाहिर जैसा हो। अगर वोह दिल में मक़ाम व मर्तबे की ख़्वाहिश छुपाए हुए हो तो उस की मिषाल उस शम्अ़ जैसी है जो खुद तो जलती है मगर दूसरे इस से रोशनी ह़ासिल करते हैं। उस की हलाकत में दूसरों की इस्लाह़ है और अगर वोह त़लबे दुन्या की त़रफ़ बुलाए तो उस की मिषाल आग जैसी है जो खुद भी जलती है और दूसरों को भी जलाती है।

उ़-लमा की अक़्साम :

उ़-लमा की 3 क़िस्में हैं : (1) जो खुद को भी और दूसरों को भी हलाक करने वाले हैं और येह वोह हैं जो अ़लानिय्या दुन्या की तरग़ीब दिलाते और इस की त़रफ़ मुतवज्जेह रहते हैं। (2) जो खुद भी सआ़दत मन्द होते हैं और दूसरों की भी खुश बख़्ती का ज़रीआ़ बनते हैं और येह वोह हैं जो ज़ाहिर व बात़िन में लोगों को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ बुलाते हैं। (3) जो खुद हलाक होते हैं मगर दूसरों की सआ़दत मन्दी का ज़रीआ़ बनते हैं और येह वोह हैं जो आख़िरत की त़रफ़ बुलाते हैं। येह ब ज़ाहिर तो दुन्या छोड़ चुके होते हैं लेकिन दिल में लोगों में मक़्बूलिय्यत और जाहो ह़श्मत की तमन्ना रखते हैं। पस तुम ग़ौर करो कि तुम किस क़िस्म में दाख़िल हो और किस की तय्यारी में मगन हो? और हरगिज़ येह न समझना कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ऐसे इल्मो अ़मल को क़बूल फ़रमा लेगा जो ख़ालिसतन उस की रिज़ा के लिये नहीं। अ़न क़रीब "كتاب الريا" बल्कि तमाम **मोहलिकात** में ऐसी गुफ़्तगू आएगी जो तुम्हारे शक व शुबा को ख़त्म कर देगी। اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ

---

(1) السنن الکبری للنسائی، کتاب السیر، باب الاستعانة بالفجار فی الحرب، الحدیث:۸۸۸۵، ج۵، ص۲۷۹۔

(2) صحیح البخاری، کتاب الجهاد والسیر، باب ان اللہ یؤید......الخ، الحدیث:۳۰۶۲، ج۲، ص۳۲۹۔

बाब नम्बर 5 : शागिर्द और उस्ताज़ के आदाब

पहली फ़स्ल : त़ालिबे इ़ल्म के आदाब

शागिर्द के ज़ाहिरी आदाब तो बहुत ज़ियादा हैं लेकिन इन्हें 10 जुम्लों की लड़ी में पिरो दिया गया है।

﴾1﴿..... **दिल को बुरे अख़्लाक़ और बुरी सिफ़ात से पाक करना :** सब से पहले त़ालिबे इ़ल्म अपने दिल को बुरे अख़्लाक़ और बुरी सिफ़ात से पाक करे क्यूंकि इ़ल्म दिल की इ़बादत, राज़ की नमाज़ और बात़िन में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के कु़र्ब का नाम है। जिस त़रह़ वोह नमाज़ जो ज़ाहिरी आ'ज़ा का अ़मल है, बदन को नजासतों और नापाकियों से पाक किये बिग़ैर दुरुस्त नहीं होती इसी त़रह़ बात़िन की इ़बादत और इ़ल्म से दिल की आबादकारी इसे गन्दे अख़्लाक़ और नापाक अवसाफ़ से पाक किये बिग़ैर दुरुस्त नहीं हो सकती। चुनान्चे, ख़ल्क़ के रहबर, शफ़ीए़ मेह़शर, मह़बूबे दावर صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : بُنِيَ الدِّيْنُ عَلَى النَّظَافَة या'नी दीन की बुन्याद पाकी पर है।[1]

पाकी ज़ाहिरी भी होती है और बात़िनी भी। चुनान्चे, इरशादे बारी तआ़ला है :

اِنَّمَا الْمُشْرِكُوْنَ نَجَسٌ (پ۱۰، التوبة:۲۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : मुशरिक निरे (बिल्कुल) नापाक हैं।

इस में अ़क्ल वालों को तम्बीह है कि त़हारत व नजासत सिर्फ़ ज़ाहिर के साथ ख़ास नहीं। देखो ! मुशरिक ने कभी साफ़ सुथरे कपड़े पहने होते और ग़ुस्ल भी किया होता है इस के बा वुजूद वोह अस्लन नापाक है या'नी उस का बात़िन नापाकियों से आलूदा है। नजासत उस चीज़ का नाम है जिस से इजतिनाब किया जाए और दूरी इख़्तियार की जाए और बात़िनी नापाक सिफ़ात से बचना ज़ियादा ज़रूरी है क्यूंकि वोह फ़िलह़ाल नापाक और बिल आख़िर हलाक करने वाली हैं। इसी लिये सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़्मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जिस घर में कुत्ता हो उस में फ़िरिश्ते दाख़िल नहीं होते।"[2]

---

1 ......جمع الجوامع، حرف التاء، التاء مع النون، الحديث:۱۰۶۲۴، ج۴، ص۱۱۵۔

2 ......صحيح البخاری، كتاب اللباس، باب التصاوير، الحديث:۵۹۴۹، ج۴، ص۸۷۔

भौंकने वाले कुत्ते :

दिल घर है, जाए नुज़ूले मलाइका, इन के अषरात और इन के ठहरने की जगह है और घटया आ़दात मषलन गुस्सा, शहवत, बुग़्ज़ व कीना, ह़सद, तकब्बुर, ख़ुद पसन्दी वग़ैरा भौंकने वाले कुत्ते हैं तो फ़िरिश्ते उस दिल में कैसे दाख़िल होंगे जो इन कुत्तों से भरा हो। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इ़ल्म का नूर फ़िरिश्तों के ज़रीए़ ही दिलों में दाख़िल फ़रमाता है। चुनान्चे, इरशादे बारी तआ़ला है :

وَمَا كَانَ لِبَشَرٍ اَنْ يُّكَلِّمَهُ اللّٰهُ اِلَّا وَحْيًا اَوْ مِنْ وَّرَآئِ حِجَابٍ اَوْ يُرْسِلَ رَسُوْلًا فَيُوْحِيَ بِاِذْنِهٖ مَا يَشَآءُ ؕ (پ۲۵، الشورٰی:۵۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और किसी आदमी को नहीं पहुंचता कि* ***अल्लाह*** *उस से कलाम फ़रमाए मगर वह़्य के त़ौर पर या यूं कि वोह बशर पर्दए अ़ज़मत के उधर हो या कोई फ़िरिश्ता भेजे कि वोह उस के हुक्म से वह़्य करे जो वोह चाहे।*

इसी त़रह़ दिलों में भेजी जाने वाली उ़लूम की रह़मत इस पर मुक़र्रर फ़िरिश्तों के ज़रीए़ ही आती है और वोह फ़िरिश्ते पाक हैं। बुरी सिफ़ात से मह़फ़ूज़ हैं। इस लिये वोह पाक ही को देखते हैं और उन के पास जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत के ख़ज़ाने हैं वोह उन से पाक लोगों को ही मा'मूर फ़रमाते हैं।

एक शुबे का इज़ाला :

मैं येह नहीं कहता कि लफ़्ज़े बैत (या'नी घर) से मुराद दिल और कल्ब (या'नी कुत्ते) से मुराद गुस्सा और दीगर बुरी सिफ़ात हैं बल्कि मैं कहता हूं कि येह इस बात पर आगाह करना और ज़ाहिरी मा'ना को बर क़रार रखते हुए ज़ाहिर से बात़िनी मा'ना मुराद लेना है। पस इसी क़ज़िय्ये से हमारे और फ़िर्क़ए बात़िनिया वालों के दरमियान फ़र्क़ हो गया। येही इ़ब्रत ह़ासिल करने का त़रीक़ा और अइम्मए अबरार (नेक अइम्मा) का मस्लक है और इ़ब्रत ह़ासिल करने का मा'ना येह है कि उस से नसीह़त पकड़ो जो किसी दूसरे के लिये बयान किया जाए और उसे उस के साथ ख़ास न समझो। जैसा कि अ़क़्ल मन्द शख़्स किसी को मुसीबत में मुब्तला देखता है तो वोह इस से इ़ब्रत पकड़ता है कि येह मुसीबत उसे भी लाह़िक़ हो सकती है क्यूंकि दुन्या तो जाए इन्क़िलाब है। पस उस का दूसरे के ह़ालात से ख़ुद इ़ब्रत पकड़ना और अपनी ह़ालत से दुन्या की ह़क़ीक़त पर इ़ब्रत पकड़ना अच्छा है। इस लिये तुम भी लोगों के बनाए हुए घर से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के बनाए हुए घर या'नी दिल का अन्दाज़ा लगाओ और वोह कुत्ता जिस की बुराई उस की बुरी ख़स्लत की वजह से की जाती है न की सूरत की वजह से, वोह उस में मौजूद नापाकी और दरन्दगी है इस से रूह़ का अन्दाज़ा लगाओ जिस में दरन्दगी पाई जाती है।

शिकारी कुत्ता, ज़ालिम भेड़िया, चीता और शेर :

याद रखो ! जो दिल गुस्से और दुन्या की ह़िर्स से लबरेज़ हो, इस पर लड़ता हो और लोगों की इ़ज़्ज़तों को पामाल करने का ह़रीस हो वोह मा'नवी त़ौर पर कुत्ता है । अलबत्ता ! सूरत में दिल है पस नूरे बसीरत मआ़नी को देखता है सूरतों को नहीं, दुन्या में सूरतें मआ़नी पर ग़ालिब हैं और मआ़नी इन में पोशीदा हैं । जब कि आख़िरत में सूरतें मआ़नी के पीछे चलेंगी और मआ़नी ग़ालिब होंगे । इसी वजह से हर शख़्स को उस की मा'नवी सूरत पर उठाया जाएगा । लिहाज़ा लोगों की इ़ज़्ज़तों को पाश पाश करने वाला शिकारी कुत्ते की शक्ल में (1) लोगों के अम्वाल का ह़रीस ज़ालिम भेड़िये की शक्ल में, तकब्बुर करने वाला चीते की सूरत में और हुकूमत का त़ालिब शेर की शक्ल में उठाया जाएगा । इस मज़्मून की अह़ादीष वारिद हैं और अहले बसीरत व अहले बिसारत के नज़्दीक इ़ब्रत इस पर गवाह है ।

एक सुवाल और इस का जवाब :

अगर तुम कहो कि कितने घटिया अख़्लाक़ के त़लबा ऐसे हैं जिन्हों ने उ़लूम ह़ासिल कर लिये (तो इस का जवाब येह है कि) अफ़्सोस ! वोह ह़क़ीक़ी इ़ल्म से कितने मह़रूम हैं जो आख़िरत में नफ़्अ़ बख़्श और सआ़दत व ख़ुश बख़्ती का ज़रीआ़ है क्यूंकि इ़ल्म के आग़ाज़ में से येह बात है कि त़ालिबे इ़ल्म पर ज़ाहिर हो जाए कि गुनाह ज़हरे क़ातिल हैं और क्या तुम ने कभी ऐसा शख़्स देखा है जो येह जानते हुए ज़हर खाए कि येह बाइ़षे हलाकत है ? और जो तुम ने रस्मी लोगों से सुना है वोह तो एक बात है जैसे वोह एक बार अपनी ज़बानों से बना संवार कर कहते हैं और दूसरी बार उन के दिल इस बात का रद्द कर देते हैं, इस का इ़ल्म से कोई तअ़ल्लुक़ नहीं ।

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : इ़ल्म कषरते रिवायत का नाम नहीं बल्कि इ़ल्म तो एक नूर है जो दिल में रखा जाता है ।

बा'ज़ उ़-लमा ने फ़रमाया : इ़ल्म ख़शिय्यते इलाही (का नाम) है । क्यूंकि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया :

اِنَّمَا یَخْشَی اللّٰهَ مِنْ عِبَادِهِ الْعُلَمٰٓؤُا ؕ
(پ۲۲، فاطر:۲۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ***अल्लाह*** *से उस के बन्दों में वोही डरते हैं जो इ़ल्म वाले हैं ।*

गोया इस में इ़ल्म के नताइज की त़रफ़ इशारा है इसी वजह से बा'ज़ मुह़क़्क़िक़ीन ने उ़-लमा के इस क़ौल "हम ने इ़ल्म को ग़ैरे ख़ुदा के लिये ह़ासिल किया तो इ़ल्म ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा किसी के लिये ह़ासिल होने से इन्कार कर दिया" का मफ़्हूम येह बयान

---

1 ......فیض القدیر، حرف اللام، تحت الحدیث: ۷۴۳۱، ج۵، ص۳۸۰۔

किया कि इ़ल्म ने इन्कार कर दिया और हम से कनारा कशी इख़्तियार कर ली पस हम पर इ़ल्म की ह़क़ीक़त आश्कार न हुई हमें सिर्फ़ इस के अल्फ़ाज़ ह़ासिल हुए।

एक सुवाल और इस का जवाब :

अगर तुम कहो कि मैं ने मुह़क़्क़िक़ीन उ़-लमा व फ़ुक़हा की एक जमाअ़त देखी जिन्हों ने फ़ुरूअ़ व उसूल में नुमायां मक़ाम ह़ासिल किया और वोह अकाबिरीन में शुमार किये जाते हैं ह़ालांकि वोह बुरे अख़्लाक़ के ह़ामिल हैं, इतने इ़ल्म से भी वोह पाक न हो सके? तो इस का जवाब येह है कि जब तुम मरातिबे इ़ल्म और इ़ल्मे आख़िरत को पहचान जाओगे तो तुम पर येह बात वाज़ेह़ हो जाएगी कि जिस चीज़ में वोह मश्ग़ूल हैं उस का इ़ल्म होने की ह़ैषिय्यत से फ़ाइदा कम है बल्कि उस का फ़ाइदा तो रिज़ाए इलाही के लिये अ़मल होने के ए'तिबार से है जब कि इस से मक़्सूद क़ुर्बे इलाही का ह़ुसूल हो। इस की त़रफ़ पहले इशारा गुज़र चुका है और اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ अ़न क़रीब इस की मज़ीद वज़ाह़त आएगी।

﴾2﴿......**दुन्यवी मश्ग़ूलियात से ह़त्तल मक़दूर बचने की कोशिश करना :** त़ालिबे इ़ल्म अपनी दुन्यवी मश्ग़ूलियात को कम करे, अपने घर वालों और वत़न से दूर रहे क्यूंकि येह तअ़ल्लुक़ात उसे मश्ग़ूल रखते और त़लबे इ़ल्म से फेर देते हैं।

इरशादे बारी तआ़ला है :

مَاجَعَلَ اللّٰهُ لِرَجُلٍ مِّنْ قَلْبَيْنِ فِيْ جَوْفِهٖ ۚ (پ ٢١، الاحزاب:٤)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : अल्लाह ने किसी आदमी के अन्दर दो दिल न रखे।

और जब ख़यालात मुन्तशिर हो जाएं तो ह़क़ाइक़ जानने में कमी आ जाती है इसी लिये कहा गया है कि इ़ल्म तुम्हें अपना बा'ज़ उस वक़्त तक न देगा जब तक तुम इसे अपना सब कुछ न दे दोगे और जब तुम अपना सब कुछ इसे दे दोगे तो तुम्हें इस का बा'ज़ मिल जाएगा लेकिन इस में भी ख़त़रा होगा (कि वोह मुफ़ीद है या नुक़्सान देह) और मुख़्तलिफ़ कामों में बटी हुई सोच उस नाले की त़रह़ है जिस का पानी बिखर जाए, फिर इस में से कुछ ज़मीन ख़ुश्क कर दे, कुछ हवा में मिल जाए और इतना न बचे जो जम्अ़ हो कर खेत तक पहुंचे।

﴾3﴿.....**इ़ल्म पर तकब्बुर न करना :** त़ालिबे इ़ल्म, इ़ल्म पर तकब्बुर न करे, उस्ताज़ पर ह़ुक्म न चलाए बल्कि अपने तमाम मुआ़मलात की लगाम मुकम्मल त़ौर पर उस्ताज़ के हाथ में दे दे और उस की नसीह़त को ऐसे क़बूल करे जैसे जाहिल बीमार, शफ़ीक़ व माहिर त़बीब की नसीह़त को मानता है और उसे चाहिये कि अपने उस्ताज़ से आ़जिज़ी व इन्किसारी के साथ पेश आए और उस की ख़िदमत कर के षवाब व फ़ज़ीलत का त़ालिब हो।

उ़-लमा व अकाबिरीन और अहले बैत का मक़ाम व मर्तबा :

हज़रते सय्यिदुना इमाम शअ़बी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی बयान करते हैं कि एक मरतबा हज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन षाबित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ एक शख़्स की नमाज़े जनाज़ा से फ़ारिग़ हुए और उन का ख़च्चर क़रीब लाया गया ताकि उस पर सुवार हों, इतने में हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا तशरीफ़ लाए और ख़च्चर की रिकाब थाम ली। हज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन षाबित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने कहा : "ऐ रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के चचाज़ाद भाई ! आप ज़ह़मत न फ़रमाइये !" हज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने फ़रमाया : "हमें उ़-लमा व अकाबिरीन के साथ ऐसा ही करने का हुक्म दिया गया है।" फिर हज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन षाबित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने आप के हाथों को बोसा दिया और कहा : "हमें अहले बैते रसूल के साथ इसी त़रह़ पेश आने का हुक्म दिया गया है।"(1)

हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "ख़ुशामद मुसलमान की सिफ़ात में से नहीं मगर त़लबे इ़ल्म में।"(2)

त़ालिबे इ़ल्म को उस्ताज़ के सामने तकब्बुर नहीं करना चाहिये और येह भी तकब्बुर है कि वोह मश्हूर व मा'रूफ़ उ़-लमा के इ़लावा से इ़ल्म ह़ासिल करने को नापसन्द करे और येह ऐन ह़माक़त है क्यूंकि इ़ल्म नजात और सआ़दत का ज़रीआ़ है और जो शख़्स चीर फाड़ देने वाले दरन्दे से भागना चाहता है वोह इस में फ़र्क़ नहीं करेगा कि भागने की राह कोई मश्हूर शख़्स बताए या गुमनाम और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से बे ख़बर लोगों के लिये आग की दरन्दगी का नुक़्सान तमाम दरन्दों के नुक़्सान से ज़ियादा है। ह़िक्मत मोमिन की गुमशुदा चीज़ है जहां पाए ग़नीमत जाने और जिस ने इस की त़रफ़ राहनुमाई की उस का एह़सान माने वोह जो भी हो, इसी लिये कहा गया है।

اَلْعِلْمُ حَرْبٌ لِلْفَتَى الْمُتَعَالِي   كَالسَّيْلِ حَرْبٌ لِلْمَكَانِ الْعَالِي

तर्जमा : इ़ल्म को मुतकब्बिर शख़्स से अ़दावत होती है जैसे सैलाब को बुलन्द जगह से अ़दावत होती है।

---

1 ......جامع بیان العلم وفضله، باب جامع فی آداب العالم والمتعلم، الحديث:٥٧٦، ص ١٧٤۔
عیون الاخبار للدنیوری، کتاب السؤدد، التواضع، ج ١، ص ٣٨٠ تا ٣٨١۔

2 ......جامع بیان العلم وفضله، باب جامع فی آداب العالم والمتعلم، الحديث:٥٨٧، ص ١٧٨۔

पस इ़ल्म तवाज़ोअ़ और तवज्जोह के साथ सुने बिग़ैर ह़ासिल नहीं होता। इरशादे बारी तआ़ला है :

اِنَّ فِیْ ذٰلِكَ لَذِكْرٰى لِمَنْ كَانَ لَهٗ قَلْبٌ اَوْ اَلْقَى السَّمْعَ وَ هُوَ شَهِیْدٌ ﴿۳۷﴾ (پ۲۶، ق:۳۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *बेशक इस में नसीह़त है उस के लिये जो दिल रखता हो या कान लगाए और मुतवज्जेह हो।*

दिल रखने वाले से मुराद येह है कि वोह इ़ल्म को समझ सकता हो फिर समझने की कुदरत उसे फ़ाइदा न देगी जब तक कि वोह तवज्जोह के साथ कान लगा कर न सुनेगा ताकि जो कुछ उसे बताया जाए अच्छी तवज्जोह, इन्किसारी, शुक्रिया, ख़ुशी और एह़सान मानने के साथ इसे क़बूल कर ले। शागिर्द को उस्ताज़ के सामने नर्म ज़मीन की त़रह़ होना चाहिये जो मुस्ला धार बारिश को जज़्ब कर के उसे मुकम्मल त़ौर पर क़बूल कर लेती है और जब उस्ताज़ उसे इ़ल्म सीखने का कोई त़रीक़ा बताए तो उसे चाहिये कि अपनी राए को छोड़ कर उस्ताज़ के बताए हुए त़रीक़े को इख़्तियार करे क्यूंकि उस के राहनुमा की ख़त़ा उस के लिये अपनी दुरुस्ती से ज़ियादा मुफ़ीद है। इस लिये कि तजरीबा ऐसी बारीकियों पर मुत्तलअ़ करता है जिन को सुनने से तअ़ज्जुब होता है ह़ालांकि इन का नफ़्अ़ बहुत ज़ियादा होता है। कितने गर्म मीज़ाज मरीज़ ऐसे हैं कि त़बीब उन का इ़लाज गर्म दवाओं के साथ करता है ताकि उन की ह़रारत इस ह़द तक ज़ियादा हो जाए कि वोह इ़लाज का सदमा बर्दाश्त कर सके, इस से उस शख़्स को तअ़ज्जुब होता है जो फ़न्ने त़िब्ब से नाबलद होता है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने ह़ज़रते सय्यिदुना ख़िज़्र और ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के वाक़िए़ में इस पर तम्बीह फ़रमाई है, जब ह़ज़रते सय्यिदुना ख़िज़्र عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने कहा :

اِنَّكَ لَنْ تَسْتَطِیْعَ مَعِیَ صَبْرًا ﴿۶۷﴾ وَ كَیْفَ تَصْبِرُ عَلٰى مَا لَمْ تُحِطْ بِهٖ خُبْرًا ﴿۶۸﴾
(پ۱۵، الكهف:۶۷،۶۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *आप मेरे साथ हरगिज़ न ठहर सकेंगे, और इस बात पर क्यूंकर सब्र करेंगे जिसे आप का इ़ल्म मुह़ीत़ नहीं।*

फिर उन्हों ने ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام पर चुप चाप मान लेने की पाबन्दी लगा दी और कहा :

فَاِنِ اتَّبَعْتَنِیْ فَلَا تَسْــٴَـلْنِیْ عَنْ شَیْءٍ حَتّٰۤى اُحْدِثَ لَكَ مِنْهُ ذِكْرًا ﴿۷۰﴾ (پ۱۵، الكهف:۷۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *तो अगर आप मेरे साथ रहते हैं तो मुझ से किसी बात को न पूछना जब तक मैं ख़ुद उस का ज़िक्र न करूं।*

फिर ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام सब्र न कर सके और बार बार उन्हें टोकते रहे यहां तक कि येह बात उन के दरमियान जुदाई का सबब बन गई। मुख़्तसर येह कि जो शागिर्द उस्ताज़ के सामने अपनी राए को तरजीह़ देता है उस पर मह़रूमी और ख़सारे का फ़ैसला कर दिया जाता है।

एक सुवाल और इस का जवाब :

अगर तुम कहो कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का इरशाद है :

فَسۡـَٔلُوۡۤا اَهۡلَ الذِّكۡرِ اِنۡ كُنۡتُمۡ لَا تَعۡلَمُوۡنَ ﴿۴۳﴾

(پ۱۴، النحل:۴۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *तो ऐ लोगो ! इल्म वालों से पूछो अगर तुम्हें इल्म नहीं।*

यहां तो सुवाल करने का हुक्म है ! याद रखो कि बात ऐसी ही है लेकिन उस चीज़ के बारे में सुवाल करे जिस के मुतअ़ल्लिक़ सुवाल करने की उस्ताज़ इजाज़त दे क्यूंकि जो चीज़ तुम्हारी समझ में न आ सके उस के बारे में पूछना मज़्मूम है। इसी लिये ह़ज़रते सय्यिदुना ख़िज़्र عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को पूछने से मन्अ़ कर दिया था या'नी उस के वक़्त से पहले मत पूछो। उस्ताज़ ज़ियादा जानता है कि तुम किस के अहल हो और उस बात को ज़ाहिर करने का कौन सा वक़्त है ? और बुलन्द दर्जात में से हर दर्जे में जिस चीज़ को बयान करने का वक़्त नहीं आया उस के बारे में पूछने का वक़्त भी नहीं आया।

आ़लिम के हुक़ूक़ :

अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم ने फ़रमाया : "आ़लिम के हुक़ूक़ में से है कि तुम उस से ज़ियादा सुवाल न करो, जवाब में उस पर सख़्ती न करो, वोह थक जाए तो इसरार न करो, जब वोह उठने लगे तो उस के कपड़े न पकड़ो, उस के भेद न खोलो, उस के सामने किसी की ग़ीबत न करो, उस के ऐ़ब न ढूंडो, अगर लग़ज़िश करे तो उस का उ़ज़्र क़बूल करो, जब तक वोह दीन की ह़िफ़ाज़त करे तब तक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये तुम पर उस की ता'ज़ीम व तौक़ीर वाजिब है, उस के आगे न बैठो और जब उसे कोई ह़ाजत हो तो सब से पहले उस की ख़िदमत करो।"(1)

---

1 ......جامع بیان العلم وفضلہ، باب جامع فی آداب العالم والمتعلم، الحدیث:۵۸۵، ص۱۷۵۔

﴾4﴿.....**इबतिदाअन लोगों के इख़्तिलाफ़ात पर ध्यान न देना :** त़ालिबे इ़ल्म इब्तिदा में लोगों के इख़्तिलाफ़ात पर ध्यान न दे ख़्वाह वोह दुन्यवी उ़लूम हों या उख़्रवी, क्यूंकि येह बात उस की अ़क़्ल को परेशान, जेह्न को ह़ैरान, उस की राए को सुस्त और मसाइल को जानने समझने से मायूस कर देगी बल्कि उसे चाहिये कि पहले एक अच्छे और मुनफ़रिद त़रीक़े का यक़ीन करे जो उस के उस्ताज़ को भी पसन्द हो फिर इस के बा'द दूसरे मज़ाहिब और शुबहात की त़रफ़ तवज्जोह दे। अगर उस्ताज़ एक राए को इख़्तियार करने में पुख़्ता न हो बल्कि उस की आ़दत हो कि वोह मह़ज़ मज़ाहिब और इन की अबह़ाष को नक़्ल करता हो तो इस से बचे क्यूंकि इस की गुमराही राहनुमाई से ज़ियादा होगी कि अन्धा अन्धों की क़ियादत व राहनुमाई नहीं कर सकता। जिस शख़्स की येह ह़ालत हो वोह ख़ुद जहालत व ह़ैरत के जंगल में भटकता रहता है। इब्तिदाई त़ालिबे इ़ल्म को शुब्हात से रोकना ऐसा है जैसे नौमुस्लिम को कुफ़्फ़ार के साथ मेल जोल से मन्अ़ करना और क़वी को इख़्तिलाफ़ात में नज़र करने की तरग़ीब दिलाना ऐसा है जैसे क़वी को कुफ़्फ़ार से मेल जोल की रग़बत दिलाना। इसी वजह से बुज़दिल को लश्करे कुफ़्फ़ार पर ह़म्ला करने से मन्अ़ किया जाता है और बहादुर को इस की रग़बत दिलाई जाती है। बा'ज़ ज़ईफ़ लोगों ने इस बारीक नुक्ते से ग़ाफ़िल होने की वजह से येह गुमान किया कि त़ाक़तवर लोगों से जो कमज़ोरियां मन्क़ूल हैं इन में उन की पैरवी जाइज़ है और येह न जाना कि उन के मुआ़मलात कमज़ोर लोगों के मुआ़मलात से जुदागाना हैं। इसी के बारे में बा'ज़ बुज़ुर्गों ने फ़रमाया : "जिस ने मुझे इब्तिदा में देखा वोह सिद्दीक़ हो गया और जिस ने मुझे इन्तिहा में देखा वोह ज़िन्दीक़ हो गया।" क्यूंकि इन्तिहा में आ'माले बात़िन की त़रफ़ लौट जाते हैं और ज़ाहिरी आ'ज़ा फ़राइज़ के इ़लावा आ'माल से रुक जाते हैं तो देखने वाले समझते हैं कि येह सुस्ती और बेकारी है ह़ालांकि ऐसा नहीं बल्कि येह तो ऐ़न ह़ुज़ूरी में दिल की निगरानी और हमेशा ज़िक्र को इख़्तियार करना है जो सब आ'माल से अफ़्ज़ल है।

समन्दर में जो ख़ास़िय्यत है वोह कूज़े में नहीं :

त़ाक़त वर के ज़ाहिर ह़ाल को देख कर इसे लग़्ज़िश समझने वाला कमज़ोर शख़्स उस शख़्स की त़रह़ उ़ज़्र पेश करता है जो पानी के कूज़े में मा'मूली सी नजासत डालता है और कहता है कि इस नजासत से कई गुना ज़ियादा समन्दर में डाली जाती है और समन्दर कूज़े से बहुत बड़ा है पस जो समन्दर के लिये जाइज़ है वोह कूज़े के लिये बदरजए औला जाइज़ होगा। वोह बेचारा येह नहीं जानता कि समन्दर अपनी कुव्वत व त़ाक़त से नजासत को पानी में तब्दील कर देता है तो नजासत का ऐ़न पानी के ग़लबे की वजह से उस की सिफ़त से बदल जाता है और क़लील

नजासत कूजे़ पर ग़ालिब आ जाती है और इस में मौजूद पानी को अपनी सिफ़त पर ले आती है इसी वजह से हु़ज़ूर नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के लिये वोह बातें जाइज़ थीं जो दूसरों के लिये जाइज़ न थीं यहां तक कि आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को (बयक वक़्त) नौ अज़्वाज (बीवियां) रखने की इजाज़त थी।[1] क्यूंकि आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को ऐसी कु़व्वत ह़ासिल थी जिस से औ़रतों में अ़द्लो इन्साफ़ फ़रमाते अगर्चे वोह बहुत सारी हों जब कि कोई दूसरा कुछ अ़द्ल पर क़ादिर नहीं बल्कि औ़रतों के दरमियान का नुक़्सान उसे पहुंच जाता है यहां तक कि वोह औ़रतों की रिज़ा जोई में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की नाफ़रमानी में मुब्तला हो जाता है। लिहाज़ा फ़िरिश्तों को लोहारों पर क़ियास करने वाला कैसे फ़लाह़ पा सकता है।

﴾5﴿...... **उ़म्दा इ़ल्म के हर फ़न और हर क़िस्म को जानने की कोशिश करना :** त़ालिबे इ़ल्म अच्छे उ़लूम का कोई फ़न और इस की कोई क़िस्म न छोड़े, इस में इस क़दर ग़ौरो फ़िक्र करे कि इस की ग़रज़ व ग़ायत मा'लूम हो जाए फिर अगर ज़िन्दगी वफ़ा करे तो इस में महारत ह़ासिल करे वरना इस से ज़ियादा अहम में मश्ग़ूल हो कर इसे पूरा करे और बक़िया उ़लूम में से थोड़ा थोड़ा ह़ासिल कर ले क्यूंकि उ़लूम एक दूसरे के मददगार और एक दूसरे से मरबूत़ (जुड़े हुए) हैं। फ़िलह़ाल इ़ल्म से अ़लाह़िदगी इख़्तियार करने वाला जहालत के बाइ़स इस इ़ल्म से अ़दावत रखता है, क्यूंकि लोग जिस से जाहिल होते हैं उस के दुश्मन होते हैं। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

وَ اِذْ لَمْ یَهْتَدُوْا بِهٖ فَسَیَقُوْلُوْنَ هٰذَاۤ اِفْكٌ قَدِیْمٌ ﴿۱۱﴾ (پ۲۶،الاحقاف:۱۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और जब उन्हें इस की हिदायत न हुई तो अब कहेंगे कि येह पुराना बोहतान है।*

शाइ़र कहता है :

وَمَنْ یَكُ ذَا فَمٍ مَرِیْضٍ ... یَجِدْ مُرًّا بِهِ الْمَاءَ الزُّلَالَا

तर्जमा : कड़वे मुंह वाला मरीज़ मीठे पानी को भी कड़वा समझता है।

उ़लूम के मुख़्तलिफ़ दर्जात हैं या तो वोह बन्दे को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ ले जाते हैं या इस में किसी न किसी क़िस्म की इआ़नत करते हैं और मक़्सूद से क़रीबी व दूरी में हर इ़ल्म का एक मुक़र्रर मक़ाम है। इन उ़लूम को क़ाइम करने वाले इन के मुह़ाफ़िज़ हैं जिस त़रह़ जिहाद

---

1 ......صحیح البخاری، کتاب النکاح، باب کثرۃ النساء، الحدیث:۵۰۶۸، ج۳، ص۴۲۳۔

में इस्लामी सरह़दों के मुह़ाफ़िज़ होते हैं और हर एक के लिये एक मर्तबा है और इसी मर्तबे के ए'तिबार से आख़िरत में उस के लिये अज्र है जब कि इस से मक़्सूद रिज़ाए इलाही हो।

﴾6﴿......तरतीबे उ़लूम का लिहाज़ रखना और सब से पहले अहम को शुरूअ़ करना : ता़लिबे इ़ल्म दफ़्अ़तन इ़ल्म के फ़ुनून में से किसी फ़न में मश्ग़ूल न हो बल्कि तरतीब का लिह़ाज़ रखे और सब से पहले अहम को शुरूअ़ करे क्यूंकि आ़म तौ़र पर ज़िन्दगी तमाम उ़लूम सीखने का मौक़अ़ नहीं देती। लिहाज़ा एह़तियात़ येही है कि हर फ़न में से उ़म्दा को ह़ासिल कर ले और इस में से थोड़े पर इक्तिफ़ा करे और इस से ह़ासिल होने वाली तमाम कुव्वत उस इ़ल्म की तक्मील में सर्फ़ करे जो सब से अफ़्ज़ल है और वोह इ़ल्मे आख़िरत या'नी इस की दोनों अक़्साम : **इ़ल्मे मुआ़मला** और **इ़ल्मे मुकाशफ़ा** है। इ़ल्मे मुआ़मला की इन्तिहा मुकाशफ़ा है और इ़ल्मे मुकाशफ़ा की इन्तिहा मा'रिफ़ते इलाही है। इस से मेरी मुराद वोह ए'तिक़ाद नहीं जिसे अ़वाम बाप दादाओं से सुनते आए हों या ज़बानी याद कर लिया हो और न ही तह़रीरे कलाम का त़रीक़ा और मुजादला मुराद है जिस के ज़रीए़ वोह अपने कलाम को मुख़ालिफ़ की धोका बाज़ियों से बचाता है जैसा कि इ़ल्मे कलाम वाले की येह ग़रज़ होती है बल्कि मुकाशफ़ा तो यक़ीन की एक क़िस्म है जो उस नूर का षमरा है जिसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस बन्दे के दिल में डालता है जो मुजाहदे के ज़रीए़ बात़िन को ख़बाषतों से पाक कर लेता है यहां तक कि वोह अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के ईमान के मर्तबे को पहुंच जाता है। वोह ईमान कि अगर सारी काइनात के ईमान से तोला जाए तो भी वज़्नी रहे। जैसा कि ताजदारे रिसालत, माहे नबुव्वत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इस बात की गावाही दी है।[1]

और अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ तमाम सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن से इस राज़ की वजह से अफ़्ज़ल हैं जो उन के सीने में रासिख़ था। लिहाज़ा तुम उस राज़ की मा'रिफ़त के ह़रीस बन जाओ जो फ़ुक़हा और मुतकल्लिमीन की हिम्मत से ख़ारिज है और उसे तलाश करने की तुम्हारी ह़िर्स ही इस की त़रफ़ तुम्हारी राहनुमाई करेगी। बहर ह़ाल तमाम उ़लूम से अफ़्ज़ल और तमाम उ़लूम की ग़रज़ व ग़ायत **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की मा'रिफ़त है और मा'रिफ़ते इलाही ऐसा समन्दर है जिस की गहराई तक नहीं पहुंचा जा सकता इस में बन्दों के दर्जात में सब से अफ़्ज़ल दर्जा अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام का है फिर औलियाए उ़ज़्ज़ाम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام का फिर इन से मुत्तसिल लोगों का।

1......الکامل فی ضعفاء الرجال لابن عدی، عبداللّٰہ بن عبدالعزیز:۱۰۱۲، ج۵، ص۳۳۵۔

पुर हिक्मत तह़रीर :

मन्क़ूल है कि पहले के दानाओं में से दो की तस्वीर इन की इ़बादत गाह में देखी गई, इन में से एक के हाथ में मौजूद वरक़ पर लिखा था कि अगर तुम हर चीज़ को अच्छे त़रीक़े से सीख लो तो येह न समझो कि तुम ने किसी चीज़ को अच्छे त़रीक़े से जान लिया है जब तक कि तुम अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की मा'रिफ़त ह़ासिल न कर लो और येह यक़ीन न कर लो कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ مُسَبِّبُ الْاَسْبَاب और तमाम चीज़ों का मूजिद है और दूसरे दाना के हाथ में मौजूद वरक़ पर लिखा था कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की मा'रिफ़त ह़ासिल करने से पहले मैं पानी पीने के बा वुजूद प्यासा रहता था और मा'रिफ़त के ह़ुसूल के बा'द मैं बिग़ैर पिये सैराब रहता हूं।

﴾7﴿.....**एक फ़न की तक्मील के बा'द दूसरे फ़न की त़रफ़ मुतवज्जेह होना :** त़ालिबे इ़ल्म उस वक़्त तक दूसरे फ़न में मश्ग़ूल न हो जब तक पहले को मुकम्मल न कर ले क्यूंकि उ़लूम तरतीबे ज़रूरी पर मुरत्तब हैं और इन में से बा'ज़ बा'ज़ का ज़रीआ़ हैं और तौफ़ीक़ याफ़्ता वोह है जो इस तरतीब और दर्जाबन्दी की रिआ़यत करे। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का इरशाद है :

اَلَّذِیْنَ اٰتَیْنٰهُمُ الْكِتٰبَ یَتْلُوْنَهٗ حَقَّ تِلَاوَتِهٖؕ (پ۱،البقرۃ:۱۲۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : जिन्हें हम ने किताब दी है वोह जैसी चाहिये इस की तिलावत करते हैं।

या'नी वोह एक फ़न से उस वक़्त तक आगे नहीं बढ़ते जब तक इ़ल्मो अ़मल के लिह़ाज़ से इसे पुख़्ता न कर लें। त़ालिबे इ़ल्म को चाहिये कि वोह जिस इ़ल्म के ह़ुसूल का इरादा करे इस से उस का मक़्सद इस से आ'ला इ़ल्म की त़रफ़ तरक़्क़ी करना हो और किसी इ़ल्म के बारे में इस इ़ल्म के जानने वालों में इख़्तिलाफ़ वाक़ेअ़ होने या इस में किसी एक या चन्द एक से ग़लत़ी हो जाने या लोगों के अपने इ़ल्म के मुत़ाबिक़ अ़मल न करने की वजह से इस इ़ल्म के फ़साद का ह़ुक्म न लगाए। तुम देखते हो कि एक जमाअ़त ने अ़क़्लियात व फ़िक़्हियात में ग़ौरो फ़िक्र करना छोड़ दिया और वजह येह बताते हैं कि अगर इन की कोई अस्ल होती तो इन के जानने वाले इसे ज़रूर पाते। इस ए'तिराज़ का जवाब मे'यारुल इ़ल्म के बयान में गुज़र चुका है और तुम देखते हो कि एक गुरोह त़बीब की ग़लत़ी को देख कर त़िब्ब के बात़िल होने का ए'तिक़ाद रखता है और एक गुरोह किसी नुजूमी की इत्तिफ़ाक़िया दुरुस्त बात को देख कर इ़ल्मे नुजूम को सह़ीह़ गरदानता है और कोई गुरोह किसी दूसरे नुजूमी की इत्तिफ़ाक़ी ग़लत़ी की वजह से उसे बात़िल बताता है ह़ालांकि येह सब ग़लत़ी है बल्कि चाहिये तो येह कि फ़ी नफ़्सिही शै को जाना जाए क्यूंकि हर शख़्स हर इ़ल्म का माहिर नहीं होता इसी लिये अमीरुल मोअमिनीन

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने इरशाद फ़रमाया : "ह़क़ को अफ़राद से न पहचानो बल्कि फ़ी नफ़्सिही ह़क़ की पहचान ह़ासिल करो अफ़राद को ख़ुद ही पहचान जाओगे।"(1)

﴾8﴿....**अफ़्ज़ल इल्म तक पहुंचाने वाले सबब की मा'रिफ़त ह़ासिल करना :** त़ालिबे इ़ल्म उस सबब को पहचाने जिस के ज़रीए़ वोह तमाम उ़लूम से अफ़्ज़ल इ़ल्म को ह़ासिल कर सके और किसी इ़ल्म का शरफ़ दो चीज़ों से होता है : (1).....अन्जाम की फ़ज़ीलत (2)....दलील की मज़्बूत़ी व क़ुव्वत से। इस की मिषाल इ़ल्मे दीन और इ़ल्मे त़िब्ब है कि इन में से एक का नतीजा ह़याते सरमदी और दूसरे का ह़याते फ़ानी है। लिहाज़ा इ़ल्मे दीन अफ़्ज़ल हुवा (कि इस का नतीजा ह़याते सरमदी है)। एक मिषाल इ़ल्मे ह़िसाब और इ़ल्मे नुजूम की है कि इ़ल्मे ह़िसाब दलाइल की मज़्बूत़ी और क़ुव्वत की वजह से अफ़्ज़ल है, अगर ह़िसाब की निस्बत त़िब्ब की त़रफ़ की जाए तो नतीजे के ए'तिबार से त़िब्ब अफ़्ज़ल है जब कि दलाइल के ए'तिबार से ह़िसाब अफ़्ज़ल है लेकिन नतीजे का ए'तिबार करना ज़ियादा बेहतर है इस लिये त़िब्ब अफ़्ज़ल है अगर्चे इस का अकषर ह़िस्सा ज़न्नी है। इस से वाज़ेह़ हुवा कि तमाम उ़लूम में अफ़्ज़ल इ़ल्म **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ज़ात, उस के फ़िरिश्तों, उस की किताबों और उस के रसूलों का इ़ल्म और उन उ़लूम तक पहुंचाने वाले रास्ते का इ़ल्म है। इस लिये तुम्हें इसी में दिलचस्पी लेनी चाहिये और इसी का ह़रीस होना चाहिये।

﴾9﴿....**बात़िन की सफ़ाई :** त़ालिबे इ़ल्म का मक़्सूद येह हो कि वोह पहले अपने बात़िन की सफ़ाई करेगा और इसे फ़ज़ीलत से आरास्ता करेगा और आख़िरत में **अल्लाह** سبحانہ وتعالٰی का क़ुर्ब ह़ासिल करेगा और मलाइका व मुक़र्रबीन की बारगाह के क़ुर्ब तक रसाई पाएगा। येह निय्यत न करे कि इ़ल्म से ह़ुकूमत, मालो दौलत, मक़ाम व मर्तबा, बेवुक़ूफ़ों से झगड़ा और हम अ़स्रों पर फ़ख़्र करेगा। अगर अच्छी निय्यत से इ़ल्म ह़ासिल किया तो अपने मक़्सूद से क़रीब तर या'नी इ़ल्मे आख़िरत को ज़रूर त़लब करेगा लेकिन इस के बा वुजूद वोह बाक़ी उ़लूम को ब नज़रे ह़क़ारत न देखे या'नी इ़ल्मे फ़तावा, इ़ल्मे नुजूम व इ़ल्मे लुग़त जो क़ुरआनो ह़दीष से मुतअ़ल्लिक़ हो और इस के इ़लावा दीगर फ़र्ज़े किफ़ाया उ़लूम जिन्हें हम ने मुक़द्दमात और मुतम्ममात में बयान किया है।

इ़ल्मे आख़िरत के मुक़ाबले में दीगर उ़लूम की ह़ैषिय्यत :

इ़ल्मे आख़िरत की ता'रीफ़ में हमारे मुबालग़ा करने से तुम येह हरगिज़ न समझना कि बाक़ी उ़लूम मज़मूम हैं। इन उ़लूम के ह़ामिल सरह़दों की ह़िफ़ाज़त करने और राहे ख़ुदा में जिहाद करने वाले ग़ाज़ियों की त़रह़ हैं। इन में से कुछ लड़ते हैं तो कुछ ह़म्लों को रोकते हैं। बा'ज़

1 ......صید الخاطر لابن الجوزی، فصل ولاتنس نصیبک من الدنیا، ص ۲۱۔

मुजाहिदीन को पानी पिलाते हैं तो बा'ज़ इन की सुवारियों की हि़फ़ाज़त करते और इन की देख भाल करते हैं। इन में से कोई भी अज्रो षवाब से मह़रूम न होगा बशर्तेकि उस की निय्यत ए'लाए कलिमए ह़क़ की हो न की ग़नीमतें इकठ्ठी करने की। उ़-लमा के भी मुख़्तलिफ़ दर्जात हैं। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ कुरआने मजीद में इरशाद फ़रमाता है :

يَرْفَعِ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ ۙ وَالَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ دَرَجٰتٍ ؕ (پ۲۸، المجادلة:۱۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : अल्लाह तुम्हारे ईमान वालों के और इन के जिन को इल्म दिया गया दर्जे बुलन्द फ़रमाएगा।

एक जगह इरशाद फ़रमाया :

هُمْ دَرَجٰتٌ عِنْدَ اللّٰهِ ؕ (پ۴، ال عمرٰن:۱۶۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : वोह अल्लाह के यहां दर्जे दर्जे हैं।

फ़ज़ीलत एक इज़ाफ़ी चीज़ है। हमारा सराफ़ों को बादशाहों की निस्बत कम तर समझना येह षाबित नहीं करता कि वोह भंगियों की ब निस्बत भी ह़क़ीर हैं इस लिये तुम येह गुमान न करो कि जो सब से बुलन्द मर्तबे से कम दर्जा है उस का कोई मर्तबा नहीं बल्कि सब से बुलन्द मर्तबा अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का है फिर औलियाए उ़ज़्ज़ाम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام का फिर पुख़्ता इल्म वाले उ़-लमा का फिर सालेह़ीन का इन के दर्जात के ए'तिबार से है। मुख़्तसर येह कि,

فَمَنْ يَّعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ خَيْرًا يَّرَهٗ ؕ ۝۷ وَمَنْ يَّعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ شَرًّا يَّرَهٗ ۝۸ (پ۳۰، الزلزال:۷،۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : जो एक ज़र्रा भर भलाई करे उसे देखेगा और जो एक ज़र्रा भर बुराई करे उसे देखेगा।

और जो शख़्स इल्म से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की मा'रिफ़त ह़ासिल करने का क़स्द करेगा वोह इल्म ख़्वाह कोई सा भी हो उसे ज़रूर नफ़्अ़ मिलेगा और बुलन्दी नसीब होगी।

﴾10﴿......**मक़्सद की जानिब इल्म की निस्बत को जानने की कोशिश करना :** त़ालिबे इल्म इल्म की त़रफ़ मक़्सद की जो निस्बत है उसे जाने ताकि क़रीब और आ'ला को बई़द और अदना पर और अहम (या'नी मक़्सूद बिज़्ज़ात) को ग़ैरे मक़्सूद पर तरजीह़ दे सके। यहां **मुहिम्म** (अहम) से मुराद वोह है "जो तुझे फ़िक्र मन्द करे" और तुझे सिर्फ़ दुन्या व आख़िरत का मुआ़मला ही फ़िक्र मन्द करता है और जब दुन्या की लज़्ज़तों और आख़िरत की ने'मतों को इकठ्ठा करना मुमकिन नहीं जैसा कि कुरआने ह़कीम ने इस बात को बयान किया और नूरे बसीरत जो मुशाहदे के क़ाइम मक़ाम है वोह भी इस पर गवाह है तो ह़क़ीक़त में अहम वोह है जिस का नफ़्अ़ हमेशा बाक़ी रहे।

मन्ज़िल, सुवारी और मक़्सदे ह़क़ीक़ी :

दुन्या गोया एक मन्ज़िल है (जहां कुछ देर क़ियाम किया जाता है) और येह बदन एक सुवारी है (जिस पर सुवार हो कर मुराद तक पहुंचा जाता है) और इस से सादिर होने वाले आ'माल मक़्सद की त़रफ़ दौड़ है और मक़्सदे ह़क़ीक़ी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की मुलाक़ात है इसी में तमाम ने'मतें हैं अगर्चे दुन्या में बहुत थोड़े लोग इस इल्म की क़द्र जानते हैं।

मरातिबे इ़ल्म मिषाल के आईने में :

लिक़ाए इलाही और बिला ह़िजाब दीदारे इलाही की सआ़दत की त़रफ़ निस्बत के ए'तिबार से इ़ल्म के तीन दर्जे हैं। दीदार से मुराद वोह है जिस के त़ालिब अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام और वोह इसे समझते हैं। वोह दीदार मुराद नहीं जिस की त़रफ़ अ़वाम और मुतकल्लिमीन का ज़ेह्न जाता है। इन तीन दर्जात को इस मिषाल से समझा जा सकता है कि किसी ग़ुलाम को कहा जाए कि अगर तुम मुकम्मल ह़ज कर लो तो तुम्हें ग़ुलामी से आज़ादी का परवाना भी मिलेगा और बादशाही भी अ़त़ा की जाएगी और अगर ह़ज के रास्ते पर चलना शुरूअ़ कर दिया और वहां तक पहुंचने की कोशिश भी की मगर कोई सख़्त रुकावट आड़े आ गई और ह़ज न कर सका तो सिर्फ़ ग़ुलामी की शक़ावत से रिहाई मिलेगी, बादशाही की सआ़दत नसीब न होगी तो इस पर तीन क़िस्म के काम लाज़िम होंगे। पहला येह कि अस्बाब तय्यार करे मषलन ऊंटनी ख़रीदे, मशक सिये, ज़ादे राह और कजावा तय्यार करे। दूसरा येह कि वत़न को छोड़ कर का'बा शरीफ़ की त़रफ़ मन्ज़िल ब मन्ज़िल चले। तीसरा येह कि अफ़्आ़ले ह़ज में मश्ग़ूल हो कर एक एक रुक्न अदा करे फिर अरकाने ह़ज की अदाएगी से फ़राग़त के बा'द और ह़ालते एह़राम और त़वाफ़े वदाअ़ से निकलने के बा'द वोह (ग़ुलामी से रिहाई और) बादशाही का मुस्तह़िक़ हो जाएगा। उस के लिये इन मक़ामात में से हर मक़ाम पर मन्ज़िलें हैं। अस्बाब की तय्यारी के शुरूअ़ से ले कर इस के आख़िर तक। जंगलों का सफ़र शुरूअ़ करने से ख़त्म करने तक। अरकाने ह़ज के शुरूअ़ से आख़िर तक और अरकाने ह़ज शुरूअ़ करने वाला शख़्स सआ़दत के जितना क़रीब है उतना क़रीब वोह नहीं जो अभी ज़ादे राह और कजावा की तय्यारी में मश्ग़ूल है और न ही वोह जिस ने सफ़र शुरूअ़ कर दिया बल्कि अरकाने ह़ज शुरूअ़ करने वाला इन दोनों से ज़ियादा सआ़दत के क़रीब है।

इसी त़रह़ उ़लूम की भी तीन अक़्साम हैं : **एक क़िस्म :** ज़ादे राह जम्अ़ करने, कजावा तय्यार करने और ऊंटनी ख़रीदने के क़ाइम मक़ाम है और वोह इ़ल्मे त़िब्ब, इ़ल्मे फ़िक़्ह और दुन्या में मुसालेह़ बदन से मुतअ़ल्लिक़ उ़लूम हैं। **दूसरी क़िस्म :** जंगलों में चलने और घाटियां

तै़ करने की त़रह़ है और वोह येह है कि बाति़न को बुरी सिफ़ात से पाको साफ़ करना और उन ऊंची घाटियों पर चढ़ना जिन पर चढ़ने से तौफ़ीक़ याफ़्ता लोगों के इ़लावा तमाम अव्वलीन व आख़िरीन आ़जिज़ हैं । इस रास्ते पर चलना और इस का इ़ल्म ह़ासिल करना ऐसे है जैसे रास्ते की सम्तों और उस की मन्ज़िलों का इ़ल्म ह़ासिल करना और जिस त़रह़ मन्ज़िलों और जंगली रास्तों का इ़ल्म उस वक़्त तक नफ़्अ़ मन्द नहीं जब तक उन पर चला न जाए इसी त़रह़ अच्छे अख़्लाक़ का इ़ल्म इन्हें अपनाए बिग़ैर मुफ़ीद नहीं लेकिन उ़म्दा अख़्लाक़ से ख़ुद को आरास्ता करना इन का इ़ल्म ह़ासिल किये बिग़ैर मुमकिन नहीं । **तीसरी क़िस्म** नफ़्स, ह़ज और इस के अरकान के क़ाइम मक़ाम है और येह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ज़ात व सिफ़ात, उस के फ़िरिश्तों और उस के अफ़्आ़ल नीज़ उन तमाम बातों का इ़ल्म है जो हम ने इ़ल्मे मुकाशफ़ा के ज़िम्न में बयान कीं । येह इ़ल्म हलाकत से नजात और सआ़दत के हुसूल में कामयाबी का ज़रीआ़ है और नजात हर सालिक को ह़ासिल होती है जब कि उस का मक़्सद ह़क़ हो और सआ़दत के हुसूल में कामयाबी सिर्फ़ अहले मा'रिफ़त को नसीब होती है । येह वोह लोग हैं जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मुक़र्रब बन्दे हैं उस के हुज़ूर रूह़ व रैह़ान और जन्नती ने'मतों से सरफ़राज़ होते हैं और वोह लोग जो दर्जए कमाल तक नहीं पहुंच पाते उन्हें अ़ज़ाब से नजात और सलामती ही ह़ासिल होती है। जैसा कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आ़लिशान है :

فَاَمَّاۤ اِنْ كَانَ مِنَ الْمُقَرَّبِیْنَۙ(۸۸) فَرَوْحٌ وَّ رَیْحَانٌ ۙ وَّ جَنَّتُ نَعِیْمٍ(۸۹) وَ اَمَّاۤ اِنْ كَانَ مِنْ اَصْحٰبِ الْیَمِیْنِۙ(۹۰) فَسَلٰمٌ لَّكَ مِنْ اَصْحٰبِ الْیَمِیْنِؕ(۹۱) (پ۲۷، الواقعۃ:۸۸تا۹۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *फिर वोह मरने वाला अगर मुक़र्रबों से है, तो राह़त है और फूल और चैन के बाग़, और अगर दहनी त़रफ़ वालों से हो, तो ऐ मह़बूब तुम पर सलाम दहनी त़रफ़ वालों से ।*

और हर वोह शख़्स जो मक़्सद की त़रफ़ तवज्जोह न करे, उसे पाने की कोशिश न करे या उस की त़रफ़ मुतवज्जेह हो लेकिन हुक्मे इलाही की बजा आवरी और इ़बादत की निय्यत से नहीं बल्कि किसी दुन्यवी ग़रज़ से तो वोह बाएं त़रफ़ वालों और गुमराहों में से है। खौलते पानी से उस की मेहमानी होगी और उसे जहन्नम की आग में धंसा दिया जाएगा ।

पस सआ़दत इ़ल्मे मुकाशफ़ा के बा'द ह़ासिल होती है और इ़ल्मे मुकाशफ़ा इ़ल्मे मुआ़मला के बा'द ह़ासिल होता है और इ़ल्मे मुआ़मला राहे आख़िरत पर चलने का नाम है । सिफ़ात की घाटियों को पार करना और बुरे अख़्लाक़ के ख़ातिमे की राह पर चलना सिफ़ात का

इ़ल्म सीखने के बा'द होता है। त़रीक़ए इ़लाज और इसे इख़्तियार करने की कैफ़िय्यत का इ़ल्म बदन की सलामती के इ़ल्म और अस्बाबे तन्दुरुस्ती की तय्यारी के बा'द ह़ासिल होता है और बदन की सलामती इकठ्ठे रहने और एक दूसरे के साथ तआ़वुन करने से ह़ासिल होती है और बाहमी तआ़वुन के ज़रीए अश्याए ख़ुर्दो नोश, कपड़े और रिहाइश के इन्तिज़ामात होते हैं और इस काम का तअ़ल्लुक़ बादशाह के साथ है और अ़द्ल व ह़िक्मत के साथ लोगों को मुन्ज़बत़ रखने का क़ानून फ़क़ीह से मुतअ़ल्लिक़ है और रहे अस्बाबे सिह़्ह़त तो वोह त़बीब की ज़िम्मेदारी है और जिस ने कहा कि इ़ल्म दो हैं : **इ़ल्मुल अबदान** और इ़ल्मुल अदयान और इस से फ़िक़्ह की त़रफ़ इशारा किया तो उस ने इस से मुरव्वजा ज़ाहिरी उ़लूम मुराद लिये बात़िनी नादिर उ़लूम मुराद नहीं लिये।

एक सुवाल और इस का जवाब :

अगर तुम येह कहो कि इ़ल्मे त़िब्ब और इ़ल्मे फ़िक़्ह को ज़ादे राह और कुजावा की तय्यारी के साथ क्यूं तशबीह दी तो इस का जवाब येह है कि मा'रिफ़ते इलाही के लिये दिल कोशिश करता है ताकि उस का क़ुर्ब ह़ासिल हो बक़िया बदन इस की कोशिश नहीं करता और दिल से मेरी मुराद मह़सूस होने वाला गोश्त नहीं बल्कि वोह तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के राज़ों में से एक राज़ है जिस का इदराक करने से ह़िस्स क़ासिर है और उस के लत़ाइफ़ में से एक लत़ीफ़ा है जिसे कभी रूह़ से और कभी नफ़्से मुत़मइन्ना से ता'बीर किया जाता है जब कि शरीअ़त में इसे दिल से ता'बीर किया जाता है।

ह़ासिले कलाम :

हर वोह इ़ल्म जिस का मक़्सद बदन की मस्लेह़त हो वोह सुवारी के मसालेह़ में से है और ज़ाहिर है कि त़िब्ब का भी येही मुआ़मला है क्यूंकि सिह़्ह़ते बदन की ह़िफ़ाज़त के लिये इस की ज़रूरत पड़ती है और अगर बिलफ़र्ज़ एक ही इन्सान होता तो उसे भी इस की ज़रूर ह़ाजत होती जब कि फ़िक़्ह का मुआ़मला इस से जुदा है कि अगर बिलफ़र्ज़ सिर्फ़ एक इन्सान होता तो कभी उसे फ़िक़्ह की ज़रूरत न भी होती। लेकिन इन्सान की पेदाईश इस अन्दाज़ पर की गई है कि वोह अकेला ज़िन्दगी नहीं गुज़ार सकता क्यूंकि खेती बाड़ी करने, रोटी पकाने, आटा गूंधने, लिबास और रिहाइश ह़ासिल करने और इस के तमाम आलात तय्यार करने के लिये तन्हा इन्सान नाकाफ़ी है वोह मिल कर रहने और तआ़वुन ह़ासिल करने पर मजबूर है और जब लोग इकठ्ठे

रहते और उन की ख़्वाहिशात जोश मारती हैं तो वोह अपनी ख़्वाहिशात व अस्बाब को एक दूसरे से खींचते हैं, लड़ते झगड़ते हैं और इस वजह से हलाक हो जाते हैं। येह हलाकत का ज़ाहिरी सबब है जिस त़रह़ बात़िनी अख़्लात़ के इख़्तिलाफ़ की वजह से वोह हलाक होते हैं। त़िब्ब के ज़रीए़ एक दूसरे की मुख़ालिफ़ इन बात़िनी अख़्लात़ में ए'तेदाल पैदा किया जाता है जब कि ह़िक्मते अ़मली और अ़द्लो इन्साफ़ के ज़रीए़ ख़ारिजी झगड़ों में ए'तिदाल की फ़ज़ा क़ाइम की जाती है। लिहाज़ा अन्दरूनी अख़्लात़ में ए'तिदाल का त़रीक़ा जानना इ़ल्मे त़िब्ब और मुआ़मलात व अफ़्आ़ल में लोगों को राहे ए'तिदाल पर रखने का इ़ल्म इ़ल्मे फ़िक़्ह कहलाता है। येह दोनों उ़लूम बदन की ह़िफ़ाज़त करते हैं जो सुवारी है।

पस जो इ़ल्मे फ़िक़्ह और इ़ल्मे त़िब्ब के ह़ुसूल ही में कोशां रहता है, मुजाहदा कर के अपने नफ़्स की इस्लाह़ नहीं करता वोह उस शख़्स की त़रह़ है जो ऊंटनी ख़रीदता है, इस के लिये घास ख़रीदता है और मश्कीज़ा ख़रीद कर तय्यार करता है लेकिन ह़ज के रास्ते पर नहीं चलता और फ़िक़्ही झगड़ों में जारी होने वाले दक़ीक़ कलिमात के सीखने में ज़िन्दगी बसर करने वाला उस शख़्स की त़रह़ है जो ज़िन्दगी भर उन अस्बाब की तय्यारी में मसरूफ़ रहता है जिन के ज़रीए़ सफ़रे ह़ज में ले जाने वाले मश्कीज़े को सीने के लिये धागा मज़बूत़ किया जाता है।

इन फ़ुक़हाए किराम को उन लोगों से जो इस्लाहे़ क़ल्ब के उस रास्ते के राही हैं जिस की मन्ज़िल इ़ल्मे मुकाशफ़ा है वोह निस्बत है जो मश्कीज़ा दुरुस्त करने वालों को ह़ज के रास्ते पर चलने वालों या इस के अरकान की अदाएगी करने वालों से है। तो पहले इस बात पर गौर करो और उस शख़्स की त़रफ़ से मुफ़्त नसीह़त क़बूल करो जो इस काम में अकषर वक़्त गुज़ार चुका और सख़्त मेह़नत के बा'द इस तक पहुंचा है और उस ने आ़म व ख़ास लोगों में इम्तियाज़ के लिये बड़ी जुरअत से काम लिया और उन की तकलीद से गुरेज़ करते हुए अपनी ख़्वाहिश को कुचल दिया। मुतअ़ल्लिम (त़ालिबे इ़ल्म) के आदाब के सिलसिले में इतनी ही बात काफ़ी है।

تُوْبُوْا اِلَی اللّٰہ ...... اَسْتَغْفِرُاللّٰہ

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ...... صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

दूसरी फ़स्ल :

राहनुमा उस्ताज़ के फ़राइज़

याद रखो ! जिस त़रह़ माल ह़ासिल करने और जम्अ़ करने के ए'तिबार से इन्सान की चार ह़ालतें हैं इसी त़रह़ इल्म के ए'तिबार से भी इन्सान की चार ह़ालतें हैं। चुनान्चे,

माल के ए'तिबार से इन्सान की ह़ालतें :

माल के ए'तिबार से इन्सान की चार ह़ालतें हैं : (1)....**कमाने की ह़ालत :** इस ह़ालत में वोह मुक्तसिब होता है। (2)....**कमाया हुवा माल जम्अ़ करने की ह़ालत :** इस ह़ालत में वोह मांगने से बे नियाज़ हो जाता है। (3)......**ख़ुद पर ख़र्च करने की ह़ालत :** इस में वोह मुन्तफ़ेअ़ (फ़ाइदा उठाने वाला) कहलाता है। (4).....**अपना माल दूसरों पर ख़र्च करने की ह़ालत :** ऐसी सूरत में वोह सख़ी फ़ज़ीलत वाला शुमार होता है और येह सब से अफ़्ज़ल ह़ालत है।

इल्म के ए'तिबार से इन्सान की ह़ालतें :

जिस त़रह़ माल जम्अ़ किया जाता है उसी त़रह़ इल्म भी ह़ासिल किया जाता है। लिहाज़ा इल्म के ए'तिबार से भी इन्सान की चार ह़ालतें हैं : (1)....**त़लबे इल्म और ह़ुसूले इल्म की ह़ालत।** (2)......**दूसरों से बे परवाह होने की ह़ालत :** यूं कि इल्म ह़ासिल कर लेने के बा'द उसे दूसरों से पूछने की ज़रूरत नहीं रहती। (3).....**ग़ौरो फ़िक्र की ह़ालत :** यूं कि ह़ासिल किये हुए इल्म में ग़ौरो फ़िक्र करना और इस से फ़ाइदा उठाना। (4).....**दूसरों तक इल्म पहुंचाने की ह़ालत :** और येह तमाम ह़ालतों से अफ़्ज़ल है।

इल्म पर अ़मल करने और न करने वाले की मिषाल :

लिहाज़ा जिस ने इल्म ह़ासिल किया, इस पर अ़मल किया और दूसरों तक पहुंचाया तो वोह शख़्स आस्मानों में अ़ज़ीम शुमार किया जाता है। बेशक वोह आफ़्ताब की मानिन्द है जो ख़ुद भी रोशन होता है और दूसरों को भी रोशनी पहुंचाता है और कस्तूरी की त़रह़ है जो ख़ुद मुअ़त्त़र होती और दूसरों को भी मुअ़त्त़र करती है और वोह शख़्स जो इल्म सीखता है मगर इस पर अ़मल नहीं करता वोह उस रजिस्टर की मिष्ल है जो दूसरों को फ़ाइदा देता है मगर ख़ुद इल्म से ख़ाली होता है। उस सान (या'नी धारदार आले) की मानिन्द है जो दूसरे औज़ारों को तो तेज़ करता है मगर ख़ुद नहीं काटता। उस सूई की त़रह़ है जो दूसरों के लिये लिबास तय्यार करती है मगर ख़ुद बरहना रहती है और चराग़ की बत्ती की मिष्ल है जो ख़ुद जल कर औरों को रोशनी मुहय्या करती है। जैसा कि (बे अ़मल आ़लिम के बारे में) कहा गया है :

مَا هُوَ اِلَّا ذُبَالَةٌ وَقَدَتْ تُضِيءُ لِلنَّاسِ وَهِيَ تَحْتَرِقُ

तर्जमा : वोह तो मह्ज़ एक बत्ती है जो लोगों को रोशनी देती और ख़ुद जलती है।

जब वोह इल्म सिखाने में मश्ग़ूल होता है तो बहुत बड़ी ज़िम्मेदारी अपने सर लेता है। इस लिये चाहिये कि इस के आदाब और ज़िम्मेदारियों का लिहाज़ रखे।

उस्ताज़ के आदाब

﴾1﴿.....**उस्ताज़** शागिर्दों पर शफ़्क़त करे और उन्हें अपने बेटों जैसा समझे। हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक صَلَّى اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "मैं तुम्हारे लिये ऐसा हूं जैसे वालिद अपनी अवलाद के लिये होता है।"(1)

उस्ताज़ का मक्सूद येह हो कि वोह शागिर्दों को आख़िरत के अ़ज़ाब से बचाएगा। येह मक्सद वालिदैन के अपनी अवलाद को दुन्या की आग से बचाने से ज़ियादा अहम है। इसी वजह से उस्ताज़ का ह़क़ मां-बाप के ह़क़ से ज़ियादा है। क्यूंकि वालिद इस के मौजूदा वुजूद और फ़ानी ज़िन्दगी का ज़रीआ़ होता है जब कि उस्ताज़ बाक़ी रहने वाली ज़िन्दगी का सबब होता है। अगर उस्ताज़ न हो तो बाप के ज़रीए़ ह़ासिल होने वाली चीज़ उसे दाइमी हलाकत की त़रफ़ ले जाए। जो उस्ताज़ आख़िरत की दाइमी ज़िन्दगी के लिये मुफ़ीद है, इस से वोह उस्ताज़ मुराद है जो उ़लूमे आख़िरत सिखाता है या वोह मुराद है जो उ़लूमे दुन्या आख़िरत की निय्यत से सिखाता है न की दुन्यावी मक्सद से क्यूंकि जहां तक दुन्या की निय्यत से इल्म सिखाने का मुआ़मला है तो इस में ख़ुद भी हलाक होना है और दूसरों को भी हलाकत में मुब्तला करना है। हम इस से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की पनाह मांगते हैं। जिस त़रह़ एक बाप की अवलाद का फ़र्ज़ बनता है कि बाहम एक दूसरे से मह़ब्बत करें और तमाम मक़ासिद में एक दूसरे से तआ़वुन करें ऐसे ही एक उस्ताज़ के शागिर्दों का ह़क़ बनता है कि आपस में प्यार व मह़ब्बत क़ाइम रखें और येह इसी सूरत में हो सकता है जब कि इन का मक्सद आख़िरत हो, अगर इन का मक्सद दुन्या का ह़ुसूल होगा तो इन्हें आपस में बुग़्ज़ व ह़सद के सिवा कुछ ह़ासिल न होगा। क्यूंकि उ़-लमा और आख़िरत के त़लबगार दुन्या के रास्ते से गुज़रते हुए बारगाहे इलाही की त़रफ़ सफ़र पर गामज़न हैं और दुन्या के साल और महीने इस रास्ते की मनाज़िल हैं। जब आ़म शहरों की त़रफ़ जाने वाले मुसाफ़िरों के दरमियान

---

1 ......سنن ابن ماجه، كتاب الطهارة و سننها، باب الاستنجاء بالحجارة......الخ، الحديث:٣١٣، ج ١، ص ١٩٩ـ

नर्मी एक दूसरे से मह़ब्बत व दोस्ती का ज़रीआ़ है तो फिर फ़िरदौसे आ'ला की त़रफ़ सफ़र और इस के रास्ते में कैसी नर्मी होनी चाहिये, सआ़दते आख़िरत तंग नहीं इसी लिये इस के त़लबगारों में झगड़ा नहीं होता और दुन्या की कामयाबियों में वुस्अ़त नहीं जिस की वजह से दुन्यादार हुजूम की तंगी से मह़फ़ूज़ नहीं रह सकते। जो लोग उ़लूम के ज़रीए़ हुकूमत के त़ालिब होते हैं वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के इस इरशाद के मिस्दाक़ नहीं बन सकते :

اِنَّمَا الْمُؤْمِنُوْنَ اِخْوَةٌ (پ۲۶، الحجرٰت:۱۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *मुसलमान मुसलमान भाई हैं।*

बल्कि वोह इस फ़रमान के मिस्दाक़ होंगे :

اَلْاَخِلَّآءُ یَوْمَىٕذٍۭ بَعْضُهُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ اِلَّا الْمُتَّقِیْنَ ﴿۶۷﴾ (پ۲۵، الزخرف:۶۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *गहरे दोस्त उस दिन एक दूसरे के दुश्मन होंगे मगर परहेज़गार।*

उस्ताज़ का मक़्सूद सिर्फ़ रिज़ाए इलाही हो :

﴾2﴿......उस्ताज़ हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की पैरवी करे और इ़ल्म पर उजरत त़लब न करे न इस से किसी सिले या ता'रीफ़ व शुक्रिया का क़स्द करे बल्कि ख़ालिसतन अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा व खुशनूदी और उस का क़ुर्ब ह़ासिल करने के लिये इ़ल्म सिखाए, शागिर्दों पर अपना कोई एह़सान न समझे अगर्चे उन पर इस का एह़सान ज़रूर है बल्कि उन की फ़ज़ीलत व एह़सान तसव्वुर करे कि उन्हों ने अपने दिलों को तय्यार किया ताकि इन में उ़लूम के बीज बो कर इन्हें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के क़रीब किया जाए जैसे कोई शख़्स तुम्हें अपनी ज़मीन उधार दे ताकि तुम इस में अपने लिये खेती बाड़ी करो तो तुम्हारा नफ़्अ़ मालिके ज़मीन से ज़ियादा होगा। तो शागिर्द पर कैसे एह़सान क़रार दिया जा सकता है जब कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के हां तुम्हारा षवाब इस से ज़ियादा है। अगर त़ालिबे इ़ल्म न होता तो तुम इस षवाब को न पा सकते थे। लिहाज़ा सिर्फ़ खुदा عَزَّوَجَلَّ से अपना अज्र त़लब करो। जैसा कि इरशाद होता है :

وَیٰقَوْمِ لَاۤ اَسْــٴَـلُكُمْ عَلَیْهِ مَالًاؕ اِنْ اَجْرِیَ اِلَّا عَلَى اللّٰهِ (پ۱۲، هود:۲۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और ऐ क़ौम ! मैं तुम से कुछ इस पर माल नहीं मांगता मेरा अज्र तो अल्लाह ही पर है।*

मालो दौलत ख़ादिम जब कि इ़ल्म मख़्दूम है :

माल और जो कुछ दुन्या में है वोह सब बदन के ख़ादिम हैं और बदन नफ़्स की सुवारी है जब कि मख़्दूम इ़ल्म है कि इसी की बदौलत नफ़्स को फ़ज़ीलत ह़ासिल होती है तो जिस ने इ़ल्म के ज़रीए़ माल त़लब किया वोह उस शख़्स की त़रह़ है जो अपने जूते के तल्वे को चेहरे से साफ़ करता है तो उस ने मख़्दूम (चेहरे) को ख़ादिम और ख़ादिम (जूते) को मख़्दूम बना दिया और येह कामिल दर्जे की तब्दीली है। लिहाज़ा ऐसा शख़्स क़ियामत के दिन उन मुजरिमों (या'नी कुफ़्फ़ार व मुशरिकीन) के साथ खड़ा होगा जो अपने रब्ब के पास (अपने अफ़्आ़ल व किरदार से नादिम व शर्मसार हो कर) सर नीचे किये होंगे।

बहर ह़ाल फ़ज़ीलत व एह़सान उस्ताज़ के लिये है। पस तुम देखो कि दीन का मुआ़मला किस त़रह़ उन लोगों के पास चला गया जिन्हें इ़ल्मे फ़िक़ह, इ़ल्मे कलाम या इन के इ़लावा दूसरे उ़लूम की तदरीस ह़ासिल है और वोह समझते हैं कि इस से उन का मक़्सूद क़ुर्बे इलाही का ह़ुसूल है ह़ालांकि वोह जागीरें ह़ासिल करने के लिये बादशाहों की ख़िदमत में माल और इ़ज़्ज़त ख़र्च कर के त़रह़ त़रह़ की ज़िल्लते उठाते हैं। अगर वोह येह छोड़ दें तो उन्हें नज़र अन्दाज़ कर दिया जाए और कोई भी उन के पास न जाए। फिर उस्ताज़ शागिर्द से तवक़्क़ोअ़ रखता है कि वोह हर मुसीबत में उस के काम आए, उस के दोस्त की मदद करे और दुश्मन से अ़दावत रखे, उस की ज़रूरियात को पूरा करने के लिये तय्यार रहे और उस के मक़ासिद में उस के ताबेअ़ रहे। अगर शागिर्द इस में कोताही करे तो उस्ताज़ उस के ख़िलाफ़ हो जाता और उस का दुश्मन बन जाता है, तो ऐसा आ़लिम कितना कमीना है जो अपने लिये इस मक़ाम को पसन्द करता है फिर इस पर ख़ुश होता है और येह कहते हुए उसे ह़या नहीं आती कि तदरीस से मेरा मक़्सद **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का क़ुर्ब ह़ासिल करने के लिये इ़ल्म को फैलाना और उस के दीन की मदद करना है। पस तुम उन निशानियों को देख लो ताकि त़रह़ त़रह़ की धोके बाज़ियों पर तुम्हारी नज़र रहे।

﴾3﴿.....**उस्ताज़** त़ालिबे इ़ल्म को नसीह़त करने में कोई कसर न छोड़े, यूं कि किसी मर्तबे के इस्तिह़क़ाक़ से क़ब्ल उसे ह़ासिल करने की ख़्वाहिश से मन्अ़ करे और ज़ाहिरी उ़लूम से फ़राग़त से पहले पोशीदा उ़लूम में मश्ग़ूल होने से रोके। फिर उसे तम्बीह करे कि उ़लूम ह़ासिल करने का मक़्सद **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का क़ुर्ब है ह़ुकूमत, फ़ख़्र और झगड़े करना नहीं और जिस क़दर मुमकिन हो पहले ही उस के दिल में उस चीज़ की ख़राबी का तसव्वुर पुख़्ता कर दे क्यूंकि बद

अ़मल आ़लिम का फ़साद उस की इस्लाह़ से ज़ियादा होता है। फिर अगर उस्ताज़ को त़ालिबे इ़ल्म की बात़िनी ह़ालत मा'मूल हो जाए कि वोह दुन्या के लिये इ़ल्म ह़ासिल कर रहा है तो उस इ़ल्म को देखे जिसे वोह ह़ासिल कर रहा है अगर वोह फ़िक़्ही इख़्तिलाफ़ात, इ़ल्मे कलाम के झगड़ों या मुक़द्दमात में फ़ैसलों और फ़तवों का इ़ल्म हो तो उसे इन उ़लूम के ह़ासिल करने से रोक दे क्यूंकि येह उ़लूम, उ़लूमे आख़िरत में से नहीं और न ही उन उ़लूम में से हैं जिन के बारे में कहा गया है कि "हम ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के इ़लावा के लिये इ़ल्म सीखना चाहा मगर उस ने रिज़ाए इलाही के इ़लावा किसी और मक़्सद के लिये ह़ासिल होने से इन्कार कर दिया" बल्कि येह तो इ़ल्मे तफ़्सीर, इ़ल्मे ह़दीष और इ़ल्मे आख़िरत है जिस में अस्लाफ़ मश्ग़ूल होते थे नीज़ येह नफ़्स के अख़्लाक़ और इन को अपनाने के त़रीक़े की मा'रिफ़त का इ़ल्म है।

लिहाज़ा अगर त़ालिबे इ़ल्म दुन्यवी मक़्सद के लिये इ़ल्म ह़ासिल करे तो उस्ताज़ को चाहिये कि उसे छोड़ दे क्यूंकि उस से वा'ज़ और लोगों की पैरवी की ख़्वाहिश जनम लेती है। अलबत्ता कभी ऐसा होता है कि तह़सीले इ़ल्म के दौरान या आख़िर में वोह ख़बरदार हो जाता है क्यूंकि इस में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का ख़ौफ़ पैदा करने, दुन्या की ह़क़ारत बताने और आख़िरत की अ़ज़्मत बयान करने वाले उ़लूम भी हैं इस लिये मुमकिन है कि वोह आख़िरे कार राहे रास्त पर आ जाए और दूसरों को जो वा'ज़ करता है उस से खुद भी नसीह़त ह़ासिल करे। लोगों में मक़्बूलिय्यत और मक़ाम व मन्ज़िलत की ख़्वाहिश उस दाने की त़रह़ है जिसे जाल के इर्द गिर्द फैंका जाता है ताकि इस के ज़रीए परन्दे का शिकार किया जाए। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने भी बन्दों के साथ ऐसा ही मुआ़मला फ़रमाया कि शहवत को पैदा फ़रमाया ताकि इस के ज़रीए इन्सानों की नस्ल बाक़ी रहे और हुब्बे जाह की तख़्लीक़ फ़रमाई ताकि उ़लूम की ज़िन्दगी का सबब बने और येह बात उन उ़लूम में मुतवक़्क़ेअ़ है। अलबत्ता मह़ज़ इख़्तिलाफ़ी मसाइल, इ़ल्मे कलाम के झगड़े और नादर फ़िरोई मसाइल को जानने में मश्ग़ूल रहने और दीगर उ़लूम की त़रफ़ तवज्जोह न देने से दिल सख़्त होता, बन्दा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से ग़ाफ़िल हो जाता, गुमराही में बढ़ जाता और मक़ाम व मर्तबे का त़ालिब बन जाता है मगर वोह कि जिसे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अपनी रह़मत से बचा ले या वोह जो इस के साथ दूसरे दीनी उ़लूम को मिला ले। इस पर तजरिबे और मुशाहिदे जैसी कोई दलील नहीं पस तुम देखो और इ़ब्रत ह़ासिल करो और निगाहे बसीरत से बन्दों और शहरों में इस की तह़क़ीक़ मा'लूम करो और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ही से मदद मांगी जाती है।

हमें लोगों ने तिजारत गाह बना लिया :

हज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान षौरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی को ग़मगीन देख कर किसी ने वजह पूछी तो फ़रमाया : "हम दुन्या दारों के लिये तिजारत गाह बन गए कोई दुन्यादार हमारे पास आता है यहां तक कि जब वोह इ़ल्म सीख लेता है तो क़ाज़ी, गवर्नर या मुन्शी बना दिया जाता है।"(1)

﴾4﴿.....**उस्ताज़** की येह ज़िम्मेदारी फ़न्ने ता'लीम की बारीकियों में से है और वोह येह कि जिस क़दर मुमकिन हो इशारों किनायों में शागिर्द को बुरे अख़्लाक़ से मन्अ़ करे, सराह़तन न रोके, प्यार व मह़ब्बत से मन्अ़ करे, झिड़क कर मलामत करते हुए न रोके। क्यूंकि वाज़ेह़ लफ़्ज़ों में किसी को मलामत करने से हैबत का पर्दा चाक हो जाता और मुख़ालफ़त की जुरअत पैदा होती है और वोह मन्अ़ कर्दा बात पर इस्रार करने का ह़रीस बन जाता है। हर मुअ़ल्लिम के रहबर व रहनुमा ह़ुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "अगर लोगों को मेंगनी तोड़ने से रोका जाए तो वोह इसे तोड़ेंगे और कहेंगे कि हमें इस से मन्अ़ किया गया ज़रूर इस में कोई बात है।"(2)

हज़रते सय्यिदुना आदम सफ़िय्युल्लाह और हज़रते सय्यिदतुना ह़व्वा علیهما الصلوٰة و السلام का वाक़िआ़ और जिस से इन्हें रोका गया था तुम्हें इस पर ख़बरदार करता है। मैं ने तुम से इस वाक़िए़ का तज़्किरा कहानी की ग़रज़ से नहीं किया बल्कि इस लिये कि तुम इस के ज़रीए़ इ़ब्रत ह़ासिल करते हुए आगाह हो जाओ और इशारों कनायों में समझाने से उ़म्दा नुफ़ूस और ज़ह़ीन व फ़त़ीन अज़्हान इस के मआ़नी के इस्तिम्बात़ की त़रफ़ माइल होते हैं और मुख़्तलिफ़ मआ़नी निकालने की ख़ुशी इन के इ़ल्म में राग़िब होने का ज़रीआ़ बनती है ताकि मा'लूम हो कि येह उन बातों से है जो इस की समझ से पोशीदा नहीं।

असातिज़ा की बुरी आ़दात :

﴾5﴿ .....किसी इ़ल्म के ज़िम्मेदार उस्ताज़ को चाहिये कि वोह त़ालिबे इ़ल्म के दिल में इस के इ़लावा दीगर उ़लूम की बुराई न डाले जैसा कि लुग़त के उस्ताज़ की आ़दत होती है कि वोह इ़ल्मे फ़िक़्ह की बुराई करता है और फ़िक़्ह पढ़ाने वाला इ़ल्मे ह़दीष और इ़ल्मे तफ़्सीर को बुरा कहता है कि येह तो मह़ज़ नक़्ली और समाई बातें हैं और येह बुढ्ढी औ़रतों का काम है, इस में अ़क़्ल को कोई दख़्ल नहीं। इ़ल्मे कलाम का उस्ताज़ फ़िक़्ह से नफ़रत दिलाते हुए कहता है कि येह फ़ुरूई मसाइल हैं, औ़रतों के ह़ैज़ की बातें हैं इस को इ़ल्मे कलाम से क्या निस्बत ? इ़ल्मे कलाम में तो

---

1 ......قوت القلوب، الفصل الحادی و الثلاثون: کتاب العلم و تفضیله، ذکر فضل علم المعرفة، ج ۱، ص ۲۳۱۔

2 ......عیون الاخبار للدنیوری، کتاب الطبائع و الاخلاق المذمومة، ج ۲، ص ۴۔

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की सिफ़ात का बयान होता है। येह असातिज़ा की बुरी आ़दात हैं, उन्हें इन से इजतिनाब करना चाहिये बल्कि किसी इ़ल्म के ज़िम्मेदार उस्ताज़ को चाहिये कि वोह त़ालिबे इ़ल्म पर दूसरे इ़ल्म सीखने के रास्ते खोले और अगर उस के पास कई उ़लूम की ज़िम्मेदारी है तो इस बात का लिह़ाज़ करे कि त़ालिबे इ़ल्म बित्तदरीज (आहिस्ता आहिस्ता) एक दर्जे से दूसरे दर्जे की त़रफ़ बढ़ता चला जाए।

﴾6﴿......**उस्ताज़** त़ालिबे इ़ल्म को वोही बातें बताए जिन्हें वोह समझ सके, जो बात उस की समझ व अ़क़्ल से बाला तर हो वोह न बताए वरना उसे इ़ल्म के मशग़ले से नफ़रत हो जाएगी या वोह परेशान हो जाएगा। इस सिलसिले में उस्ताज़, मुअ़ल्लिमे काइनात, शाहे मौजूदात صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की इक़्तिदा व पैरवी करे।

लोगों की अ़क़्लों के मुत़ाबिक़ कलाम करो :

आप صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "हम गुरौहे अम्बिया को हुक्म है कि लोगों को उन के मरातिब पर रखें और उन से उन की अ़क़्लों के मुत़ाबिक़ कलाम करें।"(1)

पस उस्ताज़ भी त़ालिबे इ़ल्म के सामने कोई ह़क़ीक़त उस वक़्त ज़ाहिर करे जब जानता हो कि वोह इसे समझ लेगा। आक़ाए दो आ़लम, नूरे मजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "कोई शख़्स लोगों से ऐसी बात करता है जो उन की अ़क़्लों में नहीं आती तो वोह इन में से बा'ज़ के लिये फ़ितने का बाइ़ष होती है।"(2)

अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰہُ تعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم ने अपने सीने की त़रफ़ इशारा करते हुए फ़रमाया : "यहां बहुत से उ़लूम हैं अगर कोई इन्हें समझने वाला हो।"(3)

नीज़ आप رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ ने सच फ़रमाया कि "قُلُوْبُ الْاَبْرَارِ قُبُوْرُ الْاَسْرَار" या'नी नेकूकारों के दिल भेदों के दफ़ीने होते हैं।

---

(1)......كتاب الضعفاء للعقيلی، يحيی بن مالک بن انس:۲۰۵۷، ج۴، ص ۱۵۳۴۔
صحيح مسلم، المقدمة، ص۵۔
سنن ابی داود، كتاب الادب، باب فی تنزيل الناس منازلهم، الحديث:۴۸۴۲، ج۴، ص۳۴۳۔

(2)......صحيح مسلم، المقدمة، باب النهی عن الحديث بكل ماسمع، الحديث:۵، ص۹۔
كتاب الضعفاء للعقيلی، الرقم:۱۲۰۲، عثمان بن داود، ج۳، ص۹۳۷۔

(3)......قوت القلوب،الفصل الحادی و الثلاثون: كتاب العلم و تفضيله، ذكربيان تفضيل علوم الصمت......الخ، ج۱، ص۲۳۲۔

लिहाज़ा उस्ताज़ को चाहिये कि जो वोह जानता है हर एक को न बताए। येह उस वक़्त है जब कि त़ालिबे इ़ल्म इसे समझता तो हो मगर इस से नफ़्अ़ उठाने का अहल न हो तो फिर उन बातों का क्या होगा जिन्हें वोह समझता ही न हो।

ख़िन्ज़ीर के गले में मोतियों का हार :

ह़ज़रते सय्यिदुना ई़सा रूहु़ल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने इरशाद फ़रमाया : "मोतियों के हार ख़िन्ज़ीरों के गले में न डालो क्यूंकि इ़ल्म मोती से बेहतर है और जो इ़ल्म को नापसन्द करे वोह ख़िन्ज़ीरों से बदतर है।"(1)

इसी लिये किसी ने कहा : "हर शख़्स को उस की अ़क़्ल के मे'यार पर नापो और उस की समझ के मीज़ान में तोलो ताकि तुम उस से मह़फ़ूज़ रहो और वोह तुम से नफ़्अ़ ह़ासिल कर सके वरना मे'यार के मुख़्तलिफ़ होने की वजह से वोह इन्कार कर देगा।"(2)

एक आ़लिम से किसी ने कोई बात पूछी तो उन्हों ने जवाब न दिया। साइल ने कहा : क्या आप ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का येह फ़रमान नहीं सुना कि "जिस ने इ़ल्मे नाफ़ेअ़ को छुपाया वोह बरोज़े क़ियामत इस ह़ाल में आएगा कि उसे आग की लगाम डाली गई होगी।"(3) आ़लिम साहि़ब ने कहा : "लगाम छोड़ो और जाओ ! अगर मेरे पास कोई समझदार आए और मैं उस से इ़ल्म को छुपाऊं तो मुझे लगाम डाली जाएगी।"

इरशादे बारी तआ़ला है :

وَلَا تُؤْتُوا السُّفَهَآءَ اَمْوَالَكُمُ (پ۴، النساء:۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और बे अ़क़्लों को उन के माल न दो।*

मज़्कूरा आयते मुबारका में इस बात पर तम्बीह है कि जो इ़ल्म नुक़्सान पहुंचाए इस से इ़ल्म को बचाना ज़ियादा बेहतर है। ना अहल को इ़ल्म सिखाने का ज़ुल्म, इ़ल्म को उस के अहल से रोकने के ज़ुल्म से कम नहीं।

शाइ़र कहता है :

---

1 ......قوت القلوب، الفصل الحادی والثلاثون، باب ذکر الفرق بین علماء الدنیا......الخ، ج ۱، ص ۲۶۷۔

2 ......قوت القلوب، الفصل الحادی والثلاثون، باب ذکر الفرق بین علماء الدنیا......الخ، ج ۱، ص ۲۶۷۔

3 ......المعجم الاوسط، من اسمہ عبدالصمد، الحدیث: ۴۸۱۵، ج ۳، ص ۳۵۰۔

أَأَنْثُرُ دُرًّا بَيْنَ سَارِحَةِ النَّعَمِ ۔۔۔ فَأُصْبِحَ مَخْزُوْنًا بِرَاعِيَةِ الْغَنَمِ

لِأَنَّهُمْ أَمْسَوْا بِجَهْلٍ لِقَدْرِهٖ ۔۔۔ فَلَا أَنَا أُضْحِيْ أَنْ أُطَوِّقَهُ الْبُهْمِ

فَإِنْ لَطَفَ اللّٰهُ اللَّطِيْفُ بِلُطْفِهٖ ۔۔۔ وَصَادَفَ أَهْلًا لِلْعُلُوْمِ وَلِلْحِكَمِ

نَشَرْتُ مُفِيْدًا اِسْتَفَدْتُ مَوَدَّةً ۔۔۔ وَإِلَّا فَمَخْزُوْنٌ لَدَيَّ وَمُكْتَتَمْ

فَمَنْ مَنَحَ الْجُهَّالَ عِلْمًا أَضَاعَهٗ ۔۔۔ وَمَنْ مَنَعَ الْمُسْتَوْجِبِيْنَ فَقَدْ ظَلَمْ

तर्जमा : (1) क्या मैं जानवर चराने वाले के आगे मोती फैला दूं कि बकरियां चराने वाले के पास इस का ख़ज़ाना जम्अ़ हो जाए !

(2) क्यूंकि वोह इल्म की क़द्रो क़ीमत से बे ख़बर होने की वजह से अन्धेरे में चले गए तो मैं जानवरों को इस (इ़ल्म) का हार पहना कर रोशन नहीं कर सकता।

(3) अगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मुझ पर अपना लुत्फ़ो करम फ़रमाए और मुझे उ़लूम व ह़िक्मत के अहल लोगों से मिला दे।

(4) तो मैं इ़ल्म को आ़म करूंगा और लोगों की मह़ब्बत ह़ासिल करूंगा वरना वोह इ़ल्म की दौलत मेरे पास जम्अ़ रहेगी और छुपी रहेगी।

(5) लिहाज़ा जिस ने जाहिलों (या'नी ना अहलों) को इ़ल्म दिया उस ने इसे ज़ाएअ़ कर दिया और जिस ने ह़क़दारों (या'नी अहलों) से इसे रोके रखा उस ने ज़ुल्म किया।

﴾7﴿.....अगर त़ालिबे इ़ल्म कोताह फ़ह्म हो तो उस्ताज़ उसे वाज़ेह़ बात बताए जिसे वोह आसानी से समझ सके और येह न बताए कि इस के इ़लावा बारीक बातें भी हैं जो उस से रोक रखी हैं। क्यूंकि इस त़रह़ वाज़ेह़ बातों में भी उस की रग़बत कम होगी, उस का दिल तशवीश में मुब्तला हो जाएगा और इसे येह वहम लाह़िक़ होगा कि उस्ताज़ ने उसे सिखाने में बुख़्ल से काम लिया है, इस लिये कि हर एक येही समझता है कि वोह हर बारीक इ़ल्म का अहल है। हर एक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से इस बात पर राज़ी है कि उस ने उसे कामिल अ़क़्ल अ़त़ा फ़रमाई है और जो लोगों में ज़ियादा बे वुकूफ़ और ज़ियादा कमज़ोर अ़क़्ल वाला होता है वोह भी अपनी अ़क़्ल को कामिल समझ कर ज़ियादा ख़ुश होता है।

इस से मा'लूम हुवा कि अ़वाम में से जो शख़्स शरीअ़त का पाबन्द हो और उस के दिल में अस्लाफ़ से मन्क़ूल अ़क़ाइद बिग़ैर किसी तशबीह व तावील के रासिख़ हों, साथ साथ उस की सीरत भी अच्छी हो और उस की अ़क़्ल उस से ज़ियादा की मुतह़म्मिल न हो सकती हो तो ऐसे शख़्स को उस के ए'तिक़ाद के बारे में तशवीश में न डाला जाए बल्कि उसे उस के काम में मश्ग़ूल छोड़ दिया जाए क्यूंकि अगर उसे ज़ाहिरी तावीलें बताई जाएंगी तो वोह अ़वाम के ज़ुमरे से निकल जाएगा और इस के लिये ख़्वास में शामिल होना आसान न होगा जिस की वजह से उस के और गुनाहों के दरमियान ह़ाइल दीवार हट जाएगी और वोह सरकश शैत़ान बन कर ख़ुद को भी हलाक करेगा और दूसरों को भी। बल्कि अ़वाम के साथ बारीक उ़लूम के ह़क़ाइक़ के बारे में गुफ़्तगू नहीं करनी चाहिये, उन्हें सिर्फ़ इबादात सिखानी चाहियें और जिन मुआ़मलात में वोह मश्ग़ूल हों उन में अमानत दारी की ता'लीम देनी चाहिये, जन्नत की रग़बत और दोज़ख़ की हैबत से इन के दिलों को भर देना चाहिये जैसा कि क़ुरआने ह़कीम ने बयान किया है और उन के सामने किसी शुबे को ह़रकत न दी जाए, क्यूंकि कभी वोह शुबा आ़म आदमी के दिल को पकड़ लेता है फिर उस का ह़ल उसे दुश्वार होता है नतीजतन वोह बद बख़्त व हलाक हो जाता है।

मुख़्तसर येह कि अ़वाम के सामने बह़्ष व मुबाह़षा का दरवाज़ा न खोला जाए वरना इन के वोह मुआ़मलात मुअ़त़्तल हो कर रह जाएंगे जिन से लोगों के निज़ाम और ख़्वास की ज़िन्दगी की बक़ा है।

उस्ताज़ और शागिर्दों की मिषाल :

﴾8﴿.....**उस्ताज़** अपने इ़ल्म पर अ़मल करता हो ताकि उस के क़ौल व फ़े'ल में यक्सानिय्यत हो, इस लिये कि इ़ल्म बात़िनी निगाहों से जब कि अ़मल ज़ाहिरी आंखों से देखा जाता है और ज़ाहिरी आंख वालों की कषरत है लिहाज़ा अगर उस का अ़मल इ़ल्म के ख़िलाफ़ होगा तो हिदायत में रुकावट आएगी और हर वोह शख़्स जो कोई चीज़ खा कर लोगों से कहता है कि इसे मत खाना येह ज़ेहरे क़ातिल है, तो लोग उस का मज़ाक़ उड़ाते और उस पर तोहमत लगाते हैं और जिस चीज़ से लोगों को मन्अ़ किया जाए उस की ह़िर्स उन्हें ज़ियादा हो जाती है और वोह कहते हैं कि अगर येह चीज़ अच्छी और लज़ीज़ न होती तो वोह ख़ुद उसे इख़्तियार न करता। हिदायत देने वाले उस्ताज़ और शागिर्दों की मिषाल ऐसी है जैसे नक़्श और मिट्टी, लकड़ी और साए की, कि उस चीज़ से मिट्टी में कैसे नक़्श बनेगा कि जिस में ख़ुद नक़्श नहीं और जब लकड़ी ही टेढ़ी होगी तो उस का साया क्यूं कर सीधा होगा।

इसी मुज़्मून को शे'र में यूं बयान किया गया है :

لَا تَنْهَ عَنْ خُلُقٍ وَتَأْتِيَ مِثْلَهُ ۔ عَارٌ عَلَيْكَ اِذْ فَعَلْتَ عَظِيْمٌ

तर्जमा : लोगों को ऐसी बात से मन्अ़ न कर जिसे तू ख़ुद करता है अगर तू ऐसा करे तो येह तेरे लिये बड़ी शर्म की बात है।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

اَتَاْمُرُوْنَ النَّاسَ بِالْبِرِّ وَتَنْسَوْنَ اَنْفُسَكُمْ (پ ۱، البقرۃ:۴۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *क्या लोगों को भलाई का हुक्म देते हो और अपनी जानों को भूलते हो।*

इसी वजह से आ़लिम के गुनाहों का बोझ जाहिल के गुनाहों के बोझ से ज़ियादा होता है क्यूंकि आ़लिम के फिसलने से ख़ल्क़े कसीर फिसल जाती है और लोग उस की पैरवी करते हैं।

ह़दीसे मुबारका में है कि "जिस ने कोई बुरा त़रीक़ा जारी किया तो उस पर उस बुरे त़रीक़े का गुनाह भी है और उस पर अ़मल करने वालों का गुनाह भी।"

आ़लिम और जाहिल का धोका :

अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने फ़रमाया : "दो शख़्सों ने मेरी कमर तोड़ डाली है एक **बे इ़ज़्ज़त आ़लिम** और दूसरा **जाहिल इ़बादत गुज़ार**। पस जाहिल इ़बादत गुज़ार बन कर लोगों को धोका देता है और आ़लिम अपनी रुस्वाई से लोगों को धोके में मुब्तला करता है।"(1) وَاللّٰهُ اَعْلَمُ

.....मदनी क़ाफ़िलों और फ़िक्रे मदीना की बरकतें.....

*"**दा'वते इस्लामी**" के सुन्नतों की तर्बिय्यत के "**मदनी क़ाफ़िलों**" में सफ़र और रोज़ाना "**फ़िक्रे मदीना**" के ज़रीए "**मदनी इन्आ़मात**" का रिसाला पुर कर के हर मदनी (इस्लामी) माह के इब्तिदाई 10 दिन के अन्दर अन्दर अपने यहां के (दा'वते इस्लामी के) ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये। اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस की बरकत से "**पाबन्दे सुन्नत**" बनने, **गुनाहों से नफ़रत**" करने और "**ईमान की ह़िफ़ाज़त**" के लिये कुढ़ने का ज़ेहन बनेगा।*

1 ......فیض القدیر للمناوی، حرف النون، تحت الحدیث: ۹۲۲۴، ج ۶، ص ۳۷۸۔

बाब नम्बर 6 : इ़ल्म की आफ़ात, उ़लमाए आख़िरत और उ़-लमाए सू की अ़लामात का बयान

पहली फ़स्ल : उ़-लमाए सू की निशानियां

इ़ल्म और उ़-लमा के जो फ़ज़ाइल मरवी हैं हम उन्हें बयान कर चुके हैं। अब येह बयान करेंगे कि उ़-लमाए सूअ के बारे में बहुत सख़्त सज़ाएं मरवी हैं जिन से वाज़ेह़ होता है कि बरोज़े क़ियामत लोगों में सब से सख़्त अ़ज़ाब बुरे उ़-लमा को होगा। इस लिये उ़-लमाए दुन्या और उ़-लमाए आख़िरत के दरमियान फ़र्क़ करने वाली अ़लामात की पहचान अहम उमूर में से है। उ़-लमाए दुन्या से मुराद बुरे उ़-लमा हैं जिन का मक़्सद इ़ल्म से दुन्या की ने'मतों और दुन्यादारों की नज़र में मक़ाम व मर्तबा ह़ासिल करना है।

आफ़ाते इ़ल्म के मुतअ़ल्लिक़ आठ फ़रामीने मुस्त़फ़ा

﴾1﴿.....बेशक बरोज़े क़ियामत लोगों में से ज़ियादा सख़्त अ़ज़ाब उस आ़लिम को होगा जिसे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उस के इ़ल्म से नफ़्अ़ न दिया।[1]

﴾2﴿.....आदमी उस वक़्त तक आ़लिम नहीं हो सकता जब तक अपने इ़ल्म पर अ़मल न करे।[2]

﴾3﴿.....इ़ल्म दो हैं : एक वोह जो ज़बान पर होता है, येह मख़्लूक़ के ख़िलाफ़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की हुज्जत है और दूसरा वोह जो दिल में होता है, येह इ़ल्म नफ़्अ़बख़्श है।[3]

﴾4﴿.....आख़िरी ज़माने में जाहिल आ़बिद और फ़ासिक़ उ़-लमा होंगे।[4]

﴾5﴿.....इ़ल्म इस लिये ह़ासिल न करो कि इस के ज़रीए उ़-लमा पर फ़ख़्र करोगे, जाहिलों से झगड़ा करोगे और लोगों को अपनी त़रफ़ माइल करोगे, जो ऐसा करेगा वोह आग में जाएगा।[5]

---

❶......شعب الایمان للبیہقی، باب فی نشر العلم، الحدیث:۱۷۷۸، ج۲، ص۲۸۵۔

❷......فیض القدیرللمناوی، حرف العین، تحت الحدیث:۵۶۵۹، ج۴، ص۴۸۹۔

❸......تاریخ بغداد، احمد بن الفضل:۲۴۹۵، ج۵، ص۱۰۸۔

❹......المستدرک، کتاب الرقاق، باب اربع اذا کان فیک......الخ، الحدیث:۷۹۵۳، ج۵، ص۴۴۹۔

❺......سنن ابن ماجہ،المقدمۃ، باب الانتفاع بالعلم والعمل بہ، الحدیث:۲۵۳۔۲۵۴، ج۱، ص۱۶۵۔

﴾6﴿.....जो इ़ल्म को छुपाएगा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे आग की लगाम डालेगा ।[1]

﴾7﴿.....प्यारे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "मुझे तुम पर दज्जाल से ज़ियादा दूसरी चीज़ का ख़ौफ़ है ।" अ़र्ज़ की गई : "वोह क्या है ?" इरशाद फ़रमाया : "गुमराह कुन अइम्मा ।"[2]

﴾8﴿.....जिस के इ़ल्म में तो इज़ाफ़ा होता है लेकिन हिदायत नहीं बढ़ती उस की अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से दूरी ही बढ़ती है ।[3]

ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा रूहु़ल्लाह عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने इरशाद फ़रमाया : "कब तक तुम रात में चलने वालों के लिये रास्ते साफ़ करते रहोगे और ख़ुद ह़ैरत ज़दा लोगों के साथ खड़े रहोगे ।"[4]

मज़्कूरा अह़ादीष से षाबित होता है कि इ़ल्म का ख़त़रा बहुत ज़ियादा है, क्यूंकि आ़लिम या तो दाइमी हलाकत में मुब्तला हो जाता है या दाइमी सआ़दत पा जाता है और इ़ल्म में ग़ौरो ख़ौज़ करने से अगर वोह सआ़दत न पाए तो सलामत भी नहीं रहता ।

आफ़ाते इ़ल्म के मुतअ़ल्लिक़ नव अक़्वाले बुज़ुर्गाने दीन

﴾1﴿.....अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने फ़रमाया : "मुझे इस उम्मत पर सब से ज़ियादा ख़ौफ़ साह़िबे इ़ल्म मुनाफ़िक़ का है ।" लोगों ने अ़र्ज़ की : "साह़िबे इ़ल्म मुनाफ़िक़ कैसे हो सकता है ?" फ़रमाया : "ज़बान का आ़लिम होगा जब कि दिल और अ़मल का जाहिल ।"[5]

﴾2﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى ने फ़रमाया : "उन लोगों में से न होना जिन्हों ने उ़–लमा से इ़ल्म और ह़ुकमा से नर्म इशारों वाली गुफ़्तगू को तो ह़ासिल कर लिया मगर अ़मल में जाहिलों की त़रह़ रहे ।"

---

1 ......سنن ابن ماجه، المقدمة، باب من سئل عن علم فکتمه، الحديث:۲۶۵، ج۱، ص۱۷۲۔

العلل المتناهية لابن الجوزی، کتاب العلم، باب اثم من سئل عن علم، الحديث:۱۴۰، ج۱، ص۱۰۴۔

2 ......المسند للامام احمد بن حنبل، مسند الانصار، حديث ابی ذر الغفاری، الحديث:۲۱۳۵۵۔۲۱۳۵۴، ج۸، ص۶۷۔

3 ......المقاصد الحسنة، حرف الميم، الحديث:۱۰۷۸، ص۴۰۷۔

المجالسة وجواهر العلم، الجزء العاشر، الحديث:۱۲۸۷، ج۲، ص۴۶۔

4 ......صفة الصفوة، محمد بن صبيح بن السماک:۴۵۵، ج۳، ص۱۱۵۔

5 ......الاحاديث المختارة، ابوعثمان عبدالرحمن عن عمر رضی الله عنه، الحديث:۲۳۶، ج۱، ص۳۴۴۔

المسند للامام احمد بن حنبل، مسند عمر بن الخطاب، الحديث:۳۱۰، ج۱، ص۱۰۱۔

﴾3﴿.....एक शख़्स ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ की ख़िदमत में अ़र्ज़ की : "मैं इ़ल्म ह़ासिल करना चाहता हूं लेकिन डरता हूं कि इसे ज़ाएअ़ कर बैठूंगा।" आप رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : "इ़ल्म को ज़ाएअ़ करने के लिये इसे छोड़ देना ही काफ़ी है।"(1)

﴾4﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन उ़तबा رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से किसी ने पूछा : "लोगों में सब से ज़ियादा नदामत व शर्मिन्दगी किसे होगी ?" फ़रमाया : "दुन्या में उसे जो किसी नाशुक्रे से भलाई करता है और मौत के वक़्त गुनहगार आ़लिम को।"(2)

﴾5﴿.....नह़्व और लुग़त के इमाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ख़लील बिन अह़मद عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الصَّمَد ने फ़रमाया : "आदमी चार क़िस्म के होते हैं :

(1)....जो इ़ल्म रखता है और जानता है कि उसे इ़ल्म है, वोह आ़लिम है उस की इत्तिबाअ़ करो।

(2)....जो इ़ल्म रखता है मगर येह नहीं जानता कि उसे इ़ल्म है ऐसा शख़्स सो रहा है उसे जगा दो।

(3)....जिसे इ़ल्म नहीं और वोह जानता है कि उस के पास इ़ल्म नहीं, ऐसा शख़्स हिदायत का त़ालिब है उसे हिदायत दो।

(4)....वोह शख़्स जिस के पास इ़ल्म नहीं और उसे मा'लूम भी नहीं कि उस के पास इ़ल्म नहीं, ऐसा शख़्स जाहिल है उसे छोड़ दो।"(3)

﴾6﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान सौरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی ने फ़रमाया : "इ़ल्म अ़मल को पुकारता है वोह सुन ले तो ठीक वरना इ़ल्म चला जाता है।"(4)

﴾7﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया : "बन्दा उस वक़्त तक आ़लिम रहता है जब तक इ़ल्म ह़ासिल करता है और जब येह समझ ले कि वोह आ़लिम बन चुका है तो वोह जाहिल होता है।"(5)

﴾8﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ुज़ैल बिन अ़याज़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया : "मुझे तीन त़रह़ के लोगों पर रह़म आता है :

---

1 ......تاریخ مدینة دمشق لابن عساکر، ابوھریرة الدوسی ۸۸۹۵، ج۶۷، ص ۳۶۸۔

2 ......المستطرف فی کل فن مستظرف، الباب الرابع فی العلم والادب......الخ، ج ۱، ص ۴۱۔

3 ......عیون الاخبارللدینوری، کتاب العلم والبیان، ج ۲، ص ۱۴۳۔

4 ......جامع بیان العلم وفضله، باب جامع القول فی العمل بالعلم، ص ۲۵۸۔

5 ......المجالسة و جواھر العلم، الجزء الثانی، الحدیث:۳۰۷، ج ۱، ص ۱۶۳۔

(1)....किसी क़ौम का मुअ़ज़्ज़ज़ शख़्स जो ज़लील हो जाए।

(2)....किसी क़ौम का मालदार शख़्स जो मोहृताज हो।

(3)....उस आ़लिम पर जिस के साथ दुन्या खेलती है।''(1)

﴾9﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى ने फ़रमाया : ''उ़-लमा की सज़ा दिल का मुर्दा हो जाना है और दिल का मुर्दा होना येह है कि आख़िरत के अ़मल के बदले दुन्या त़लब की जाए।''(2)

फिर आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने येह अश्आ़र पढ़े :

عَجِبْتُ لِمُبْتَاعِ الضَّلَالَةِ بِالْهُدٰى   وَمَنْ يَشْتَرِى دُنْيَاهُ بِالدِّيْنِ اَعْجَبُ

وَاَعْجَبُ مِنْ هٰذَيْنِ مَنْ بَاعَ دِيْنَهُ   بِدُنْيَا سِوَاهُ فَهُوَ مِنْ ذَيْنِ اَعْجَبُ

तर्जमा : (1) मुझे तअ़ज्जुब है उस शख़्स पर जो हिदायत के बदले गुमराही ख़रीदता है और जो दीन के बदले दुन्या ख़रीदता है वोह उस से भी ज़ियादा अ़जीब है।

(2) और उन दोनों से ज़ियादा तअ़ज्जुब उस पर है जो किसी और की दुन्या संवारने के लिये अपना दीन बेचता है, वोह इन दोनों से ज़ियादा अ़जीब है।

बे अ़मल आ़लिम का अन्जाम :

हुज़ूर नबिय्ये करीम, रउफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ''आ़लिम को सख़्त अ़ज़ाब दिया जाएगा, इस के अ़ज़ाब की शिद्दत को बड़ा समझते हुए जहन्नमी इस के पास आएंगे।''(3)

इस से बद अ़मल आ़लिम मुराद है।

ह़ज़रते सय्यिदुना उसामा बिन ज़ैद رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ बयान करते हैं कि मैं ने हुज़ूर सय्यिदे आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को इरशाद फ़रमाते सुना कि क़ियामत के दिन आ़लिम को लाया जाएगा और उसे आग में डाला जाएगा जिस से उस की आंतें बाहर आ जाएंगी वोह इन के गिर्द ऐसे चक्कर लगाएगा जैसे गधा चक्की के गिर्द चक्कर लगाता है, जहन्नमी उस

---

1 ......المقاصد الحسنة، حرف الهمزة، الحديث:٨٩، ص٧٠۔

2 ......شعب الايمان للبيهقى، باب فى نشر العلم، الحديث:١٨٣٧، ج٢، ص٢٩٦۔

3 ......صحيح مسلم، كتاب الزهد والرقائق، باب عقوبة من يأمر بالمعروف......الخ، الحديث:٢٩٨٩، ص١٥٩٥۔

के पास आएंगे और पूछेंगे : "तुझे क्या हुवा ?" वोह कहेगा : "मैं नेकी का हुक्म देता था मगर खुद अ़मल नहीं करता था, बुराई से मन्अ़ करता था मगर खुद इस का इर्तिकाब करता था।"(1)

आ़लिम की नाफ़रमानी पर उसे दुगना अ़ज़ाब मह़ज़ इस वजह से दिया जाएगा कि वोह इल्म होने के बा वुजूद मा'सिय्यत में मुब्तला हुवा। इसी वजह से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया :

اِنَّ الْمُنٰفِقِیْنَ فِی الدَّرْكِ الْاَسْفَلِ مِنَ النَّارِ ۚ (پ۵،النساء:۱۴۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक मुनाफ़िक़ दोज़ख़ के सब से नीचे त़बक़े में हैं।

इस लिये कि इन्हों ने जानने के बा'द इन्कार किया और यहूदियों को ईसाइयों से बद तर क़रार दिया ह़ालांकि (अकषर) यहूद ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये अवलाद षाबित नहीं की और न उन्हों ने येह कहा कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तीन खुदाओं में से तीसरा है लेकिन इन को बदतरीन क़रार देने की वजह सिर्फ़ येह है कि वोह जानने के बा'द मुन्किर हुए।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

یَعْرِفُوْنَهٗ كَمَا یَعْرِفُوْنَ اَبْنَآءَهُمْ ؕ (پ۲،البقرة:۱۴۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : वोह इस नबी को ऐसा पहचानते हैं जैसे आदमी अपने बेटों को पहचानता है।

एक मक़ाम पर फ़रमाया :

فَلَمَّا جَآءَهُمْ مَّا عَرَفُوْا كَفَرُوْا بِهٖ ۫ فَلَعْنَةُ اللّٰهِ عَلَى الْكٰفِرِیْنَ ﴿۸۹﴾ (پ۱،البقرة:۸۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तो जब तशरीफ़ लाया उन के पास वोह जाना पहचाना उस से मुन्किर हो बैठे तो अल्लाह की ला'नत मुन्किरों पर।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने बलअ़म बिन बाऊ़रा का वाक़िआ़ बयान करते हुए इरशाद फ़रमाया :

وَاتْلُ عَلَیْهِمْ نَبَاَ الَّذِیْۤ اٰتَیْنٰهُ اٰیٰتِنَا فَانْسَلَخَ مِنْهَا فَاَتْبَعَهُ الشَّیْطٰنُ فَكَانَ مِنَ الْغٰوِیْنَ ﴿۱۷۵﴾ (پ۹،الاعراف:۱۷۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और ऐ मह़बूब ! उन्हें उस का अह़वाल सुनाओ जिसे हम ने अपनी आयतें दीं तो वोह इन से साफ़ निकल गया तो शैत़ान उस के पीछे लगा तो गुमराहों में हो गया।

---

1 ……صحیح مسلم، کتاب الزھد والرقائق، باب عقوبة من یأمر بالمعروف……الخ، الحدیث: ۲۹۸۹، ص ۱۵۹۵۔

यहां तक कि फ़रमाया :

فَمَثَلُهٗ كَمَثَلِ الْكَلْبِ ۚ اِنْ تَحْمِلْ عَلَيْهِ يَلْهَثْ اَوْ تَتْرُكْهُ يَلْهَثْ ؕ (پ ۹، الاعراف:۱۷۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तो उस का ह़ाल कुत्ते की त़रह़ है तू उस पर ह़म्ला करे तो ज़बान निकाले और छोड़ दे तो ज़बान निकाले ।

येही ह़ाल बद अ़मल आ़लिम का है। बलअ़म को किताबुल्लाह का इ़ल्म दिया गया तो वोह ख़्वाहिशात की त़रफ़ माइल हो गया। चुनान्चे, उसे कुत्ते से तशबीह दी गई या'नी उसे हि़क्मत मिले या न मिले वोह ख़्वाहिशात की त़रफ़ हांपता है।

बुरे उ़-लमा की मिषाल :

ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने इरशाद फ़रमाया : "बुरे उ़-लमा की मिषाल उस चट्टान की त़रह़ है जो नहर के कनारे वाक़ेअ़ हो न ख़ुद पानी पिये और न पानी को खेती तक जाने दे। बुरे उ़-लमा की मिषाल बैतुल ख़ला की उस नाली की त़रह़ है जिस के ज़ाहिर पर तो चूना किया हुवा हो जब कि बात़िन गन्दा और नापाक हो और बुरे उ़-लमा की मिषाल क़ब्रों की त़रह़ है जिन का ज़ाहिर तो पुख़्ता हो मगर अन्दर मुर्दों की हड्डियां हों।"(1)

इन अह़ादीष और आषार से येह बात वाज़ेह़ होती है कि क़ियामत के दिन दुन्यादार आ़लिम का ह़ाल दूसरे लोगों से घटिया होगा और उसे जाहिल से भी सख़्त अ़ज़ाब होगा जब कि कामयाब व मुक़र्रब लोग उ़-लमाए आख़िरत हैं। इन की कुछ निशानियां हैं जो दर्जे ज़ेल हैं।

....अहले बैत से हुस्ने सुलूक....

अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم *से मरवी है कि हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहि़बे लौलाक, सय्याहे़ अफ़्लाक* صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم *ने इरशाद फ़रमाया : "जो मेरे अहले बैत में से किसी के साथ अच्छा सुलूक करेगा मैं रोज़े क़ियामत इस का सिला उसे अ़त़ा फ़रमाऊंगा।"* (الجامع الصغیر للسیوطی، الحدیث:۸۸۲، ص۵۳۳)

---

1 ......قوت القلوب، الفصل الحادی والثلاثون، باب ذکر الفرق بین علماء الدنیا......الخ، ج ۱، ص ۲۴۴۔
فیض القدیر للمناوی، حرف الشین، تحت الحدیث:۴۸۶۴، ج ۴، ص ۲۰۶۔

दूसरी फ़स्ल : उ़-लमाए आख़िरत की 12 निशानियां

﴾1﴿.....उ़-लमाए आख़िरत की निशानियों में से एक येह है कि आ़लिम अपने इ़ल्म से दुन्या त़लब न करे क्यूंकि आ़लिम का सब से कम दर्जा येह है कि वोह दुन्या को ह़क़ीर, घटिया, गदला और नापाएदार होने को जाने नीज़ आख़िरत के अ़ज़ीम होने, हमेशा रहने, इस की ने'मतों के ख़ालिस होने और आख़िरत की सलत़नत के बड़ा होने का इ़ल्म रखता हो और येह जानता हो कि दुन्या और आख़िरत एक दूसरे की ज़िद हैं।

दुन्या व आख़िरत की मिषाल :

येह दोनों **दो सोकनों** की त़रह़ हैं अगर एक को राज़ी रखोगे तो दूसरी को नाराज़ कर बैठोगे। **तराज़ू के दो पलड़ों** की मानिन्द हैं, एक पलड़ा भारी होगा तो दूसरा हलका होगा। **मशरिक़ व मग़रिब** की मिष्ल हैं एक से जितना क़रीब होगे दूसरी से उतना दूर हो जाओगे। **दो प्यालों** की त़रह़ है जिन में से एक भरा हुवा है और दूसरा ख़ाली, भरे हुए प्याले से जिस क़दर दूसरे में डालते जाओगे इसी क़दर भरा हुवा ख़ाली होता जाएगा यहां तक कि जब ख़ाली प्याला भर जाएगा तो भरा हुवा ख़ाली हो जाएगा।

पस जो शख़्स दुन्या के ह़क़ीर होने, गदला होने और इस की लज़्ज़तों के इस की तक्लीफ़ों के साथ मिले होने को न जाने और उसे येह मा'लूम न हो कि दुन्या की ख़ालिस ने'मतें जल्द ख़त्म हो जाती हैं तो उस की अ़क़्ल ख़राब है क्यूंकि मुशाहदा और तजरिबा उस की त़रफ़ रहनुमाई करता है। लिहाज़ा वोह शख़्स उ़-लमा में कैसे शुमार हो सकता है जिसे अ़क़्ल नहीं ? और जो आख़िरत के मुआ़मले की अ़ज़मत और इस के दवाम का इ़ल्म नहीं रखता वोह तो काफ़िर है। उस का ईमान छीन लिया गया है। लिहाज़ा जिस के पास ईमान ही नहीं वोह उ़-लमा में से कैसे हो सकता है ? और जो शख़्स येह नहीं जानता कि दुन्या आख़िरत की ज़िद है इन्हें जम्अ़ करना एक ऐसी लालच है जिस का कोई फ़ाइदा नहीं वोह तमाम अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की शरीअ़तों से नावाक़िफ़ है बल्कि वोह तो पूरे क़ुरआन का मुन्किर है। उस का शुमार गुरौहे उ़-लमा में कैसे हो सकता है ? और जो येह सब कुछ जानते हुए आख़िरत को दुन्या पर तरजीह़ न दे वोह शैत़ान का क़ैदी है। उस की ख़्वाहिश ने उसे बरबाद कर दिया और उस पर उस की बद बख़्ती ग़ालिब आ गई। लिहाज़ा इस दर्जे का आदमी उ़-लमा के ज़ुमरे में कैसे आ सकता है ?

दुन्यादार आ़लिम की कम से कम सज़ा :

ह़ज़रते सय्यिदुना दावूद عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के वाक़िआत में है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया : ''जो आ़लिम मेरी मह़ब्बत पर अपनी ख़्वाहिश को तरजीह़ देता है मैं उसे कम से कम सज़ा येह देता हूं कि उसे अपनी मुनाजात की लज़्ज़त से मह़रूम कर देता हूं। ऐ दावूद ! मेरे मुतअ़ल्लिक़ किसी ऐसे आ़लिम से न पूछना जिसे दुन्या ने नशे में डाल दिया हो, वोह तुम्हें मेरी मह़ब्बत के रास्ते से रोक देगा, येह लोग मेरे बन्दों का रास्ता काटने वाले हैं। ऐ दावूद ! जब तुम मेरे किसी त़ालिब को देखो तो उस के ख़ादिम बन जाओ। ऐ दावूद ! जो किसी भागे हुए को मेरी बारगाह में ले कर आता है मैं उसे बा ख़बर लिख देता हूं और जिसे मैं बा ख़बर लिख दूं उसे कभी अ़ज़ाब न दूंगा।''(1)

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی ने फ़रमाया : ''उ़-लमा की सज़ा दिल का मुर्दा हो जाना है और दिल का मुर्दा होना येह है कि आख़िरत के अ़मल के बदले दुन्या त़लब की जाए।'' (2)

ह़ज़रते सय्यिदुना यह़्या बिन मुआ़ज़ राज़ी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْھَادِی ने फ़रमाया : इ़ल्मो ह़िक्मत का नूर उसी वक़्त रुख़्सत होता है जब इन्हें त़लबे दुन्या का ज़रीआ़ बनाया जाए।''(3)

ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन मुसय्यब رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया : ''जब तुम किसी आ़लिम को मालदारों के पास आता जाता देखो तो जान लो कि वोह चोर है।''(4)

अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : ''जब तुम किसी आ़लिम को दुन्या से मह़ब्बत करने वाला पाओ तो उसे अपने दीन के मुआ़मले में मश्कूक जानो क्यूंकि हर मह़ब्बत करने वाला उस चीज़ में ग़ौरो फ़िक्र करता है जिस से वोह मह़ब्बत करता है।''(5)

---

1 ......قوت القلوب، الفصل الحادی و الثلاثون، باب ذکر الفرق بین علماء الدنیا......الخ، ج ۱، ص ۲۴۴۔

2 ......شعب الایمان للبیھقی،باب فی نشر العلم، الحدیث:۱۸۳۷، ج۲، ص۲۹۶۔

3 ......موسوعۃ الامام ابن ابی الدنیا، کتاب ذمّ الدنیا، الحدیث:۴۷۶، ج۵، ص ۱۹۳۔

4 ......مختصر منھاج القاصدین، الربع الاوّل، ج ۱، ص ۲۱۔

5 ......جامع بیان العلم وفضلہ، باب ذمّ الفاجر من العلماء......الخ، ص ۲۴۲۔

ह़ज़रते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْغَفَّار ने फ़रमाया : मैं ने एक साबिक़ा किताब में पढ़ा कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है : "जो आ़लिम दुन्या से मह़ब्बत करता है मैं उसे सब से कम सज़ा येह देता हूं कि उस के दिल से अपनी मुनाजात की लज़्ज़त निकाल देता हूं।"(1)

इ़ल्म नूर और गुनाह तारीकी है :

एक शख़्स ने अपने भाई को लिखा कि "बेशक तुम्हें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से इ़ल्म अ़त़ा किया गया है। लिहाज़ा गुनाहों की तारीकी से इ़ल्म के नूर को बुझा न देना कि उस दिन अन्धेरे में रह जाओ जिस दिन इ़ल्म वाले अपने इ़ल्म के नूर में दौड़ेंगे।"(2)

ऐ अस्ह़ाबे इ़ल्म ! शरीअ़ते मुह़म्मदिया कहां है ?

ह़ज़रते सय्यिदुना यह़्या बिन मुआ़ज़ राज़ी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْھَادِی उ़-लमाए दुन्या से फ़रमाया करते थे : "ऐ अस्ह़ाबे इ़ल्म ! तुम्हारे मह़ल्लाते क़ैसरा (या'नी शाहे रूम क़ैसर के मह़ल्लात की त़रह़) हैं। तुम्हारे घर कस्रा (या'नी शाहे ईरान) के घरों जैसे हैं, तुम्हारे कपड़े त़ाहिरी (या'नी अ़ब्दुल्लाह बिन त़ाहिर वज़ीर के कपड़ो की मिष्ल) हैं, तुम्हारे मोज़े जालूती (या'नी जाबिर बादशाह जालूत के मोज़ों की मानिन्द), सुवारियां क़ारूनी (या'नी क़ारून की सुवारियों जैसी) और बरतन फ़िरऔ़नी (या'नी फ़िरऔ़न के बरतनों जैसे) हैं, तुम्हारे गुनाह दौरे जाहिलिय्यत के अफ़्आ़ल जैसे और तुम्हारे मज़ाहिब शैत़ानी हैं तो फिर **शरीअ़ते मुह़म्मदिया** कहां है ?"(3)

किसी शाइ़र ने क्या ख़ूब कहा :

وَرَاعِی الشَّاۃِ یَحْمِی الذِّئْبَ عَنْھَا　　فَکَیْفَ اِذَا الرُّعَاۃُ لَھَا ذِئَابُ

तर्जमा : बकरियों का चरवाहा भैड़िये से बकरियों की हिफ़ाज़त करता है तो उस वक़्त क्या ह़ाल होगा जब चरवाहे ख़ुद ही भैड़िये बन जाएंगे।

एक दूसरे शाइ़र ने कहा :

یَا مَعْشَرَ الْعُلَمَاءِ! یَا مِلْحَ الْبَلَدِ!　　مَا یَصْلُحُ الْمِلْحُ اِذَا الْمِلْحُ فَسَدَ

तर्जमा : ऐ उ़-लमा के गुरोह ! ऐ शहरों के नमक ! जब नमक ख़ुद ही ख़राब हो जाएगा तो वोह किसी को कैसे ठीक करेगा।

---

1 ......مرقاۃ المفاتیح، کتاب الدعوات، تحت الحدیث:۲۲۸۸، ج۵، ص۸۷۔

2 ......فیض القدیر، حرف الھمزۃ، تحت الحدیث:۱۱۳، ج۱، ص۱۵۵۔

3 ......حیاۃ الحیوان الکبری، باب الذال العجمۃ، الذئب، ج۱، ص۵۰۴، بتغیرٍ۔

मा'रिफ़ते इलाही से मह़रूमी का सबब :

एक आ़रिफ़ से पूछा गया कि "जिस की आखों की ठन्डक गुनाह हों क्या वोह मा'रिफ़ते इलाही ह़ासिल नहीं कर सकता ?" फ़रमाया : "मुझे इस बात में कोई शक नहीं है कि जो दुन्या को आखि़रत पर तरजीह़ देता है वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की मा'रिफ़त नहीं रखता जब कि येह उस शख़्स से (कि जिस की आखों की ठन्डक गुनाह हों) बहुत कम है।"

येह मत समझना कि उ़-लमाए आखि़रत के साथ मिलने के लिये सिर्फ़ तर्के माल काफ़ी है बल्कि मक़ामो मर्तबा माल से ज़ियादा नुक़्सान देह है। येही वजह है कि ह़ज़रते सय्यिदुना बिशर ह़ाफ़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْكَافِى ने फ़रमाया : ह़द्दषना दुन्या के दरवाज़ों में से एक दरवाज़ा है। लिहाज़ा जब तुम किसी शख़्स को **ह़द्दषना** कहते सुनो तो जान लो कि वोह कहता है : "मुझे जगह दो।"(1)

ह़ज़रते सय्यिदुना बिशर ह़ाफ़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْكَافِى ने 10 से ज़ियादा किताबों के बस्ते और टोकरे दफ़्न कर दिये थे और फ़रमाते थे : "मुझे ख़्वाहिश है कि मैं ह़दीष बयान करूं और जब मुझे ह़दीष बयान करने की ख़्वाहिश न रहेगी तो मैं ज़रूर ह़दीष बयान करूंगा।"(2)

आप और आप के इ़लावा दूसरे बुज़ुर्गों का फ़रमान है कि "जब तुझे ह़दीष बयान करने की ख़्वाहिश हो तो ख़ामोश रह और जब ख़्वाहिश न रहे तब ह़दीष बयान कर।"(3)

येह इस लिये कि फ़ाइदा पहुंचाने और ता'लीम के मन्सब की लज़्ज़त दुन्या की हर लज़्ज़त से बढ़ कर है तो जिस ने इस मुआ़मले में अपनी ख़्वाहिश को पूरा किया वोह दुन्या के त़लबगारों में से है। इसी लिये ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान षौरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى ने फ़रमाया : "ह़दीष बयान करने का फ़ितना माल और बाल बच्चों के फ़ितने से सख़्त तर है।"(4)

और इस फ़ितने का ख़ौफ़ क्यूं न किया जाए जब कि सय्यिदुल मुरसलीन, ख़ातमुन्नबिय्यीन, रह़्मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को फ़रमाया गया :

---

1 ......قوت القلوب، الفصل الحادى والثلاثون: كتاب العلم وتفضيله، ذكرفضل علم المعرفة......الخ، ج ١، ص ٢٣٣ـ

2 ......المرجع السابق،ص ٢٦٨ـ
3 ......المرجع السابق، بتغيرٍ ـ

4 ......قوت القلوب، الفصل الحادى والثلاثون: كتاب العلم وتفضيله، ذكرفضل علم المعرفة......الخ، ج ١،ص ٢٦٨،بتغيرٍ ـ
حلية الاولياء، عبدالرحمن بن مهدى، الحديث:١٢٨٥٧، ج ٩، ص ٦، قول عبدالرحمن بن مهدى، بتغيرٍ ـ

وَلَوْلَآ اَنْ ثَبَّتْنٰكَ لَقَدْ كِدْتَّ تَرْكَنُ اِلَيْهِمْ شَيْـًٔا قَلِيْلًا ﴿۷۴﴾ (پ ۱۵، بنی اسرائیل: ۷۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और अगर हम तुम्हें षाबित क़दम न रखते तो क़रीब था कि तुम उन की त़रफ़ कुछ थोड़ा सा झुकते ।*

इ़ल्म दुन्या और अ़मल आख़िरत है :

ह़ज़रते सय्यिदुना सहल बिन अ़ब्दुल्लाह तुस्तरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَلِى ने फ़रमाया :"इ़ल्म सारे का सारा दुन्या है और इस पर अ़मल आख़िरत है और इख़्लास के बिग़ैर तमाम आ'माल बेकार हैं ।"(1)

नीज़ येह भी फ़रमाया कि "तमाम लोग मुर्दा हैं सिवाए उ़-लमा के और उ़-लमा सब नशे में हैं सिवाए अ़मल करने वालों के और अ़मल करने वाले सब धोके में हैं सिवाए इख़्लास वालों के और जो मुख़्लिस हैं उन्हें ख़ौफ़ लाह़िक़ है कि न मा'लूम उन का ख़ातिमा कैसा होगा ।"(2)

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सुलैमान दारानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِى ने फ़रमाया : "जब आदमी ह़दीष त़लब करता है या शादी करता है या त़लबे मुआ़श के लिये सफ़र करता है तो वोह दुन्या की त़रफ़ माइल हो जाता है ।"(3)

इस से आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की मुराद आ़ली सनदें हैं या वोह ह़दीष त़लब करना जिस की त़लब आख़िरत में ज़रूरत नहीं ।

वोह आ़लिम नहीं :

ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने इरशाद फ़रमाया : "वोह शख़्स अहले इ़ल्म में से कैसे हो सकता है जिस का सफ़र आख़िरत की त़रफ़ हो जब कि वोह दुन्या के रास्तों की त़रफ़ मुतवज्जेह हो और उस का शुमार उ़-लमा में कैसे हो सकता है जो इस लिये इ़ल्म नहीं सीखता कि इस पर अ़मल करे बल्कि दूसरों को बताने के लिये इ़ल्म ह़ासिल करता है ।"(4)

---

1 ......قوت القلوب ، الفصل الحادی و الثلاثون، باب ذکر الفرق بین علماء الدنیا......الخ، ج ۱، ص ۲۷۱، بتغیرٍ قلیلٍ۔

2 ......شعب الایمان للبیهقی، باب فی اخلاص العمل......الخ، الحدیث: ۶۸۶۸، ج ۵، ص ۳۴۵۔

3 ......قوت القلوب، الفصل الحادی و الثلاثون، باب ذکر الفرق بین علماء الدنیا......الخ، ج ۱، ص ۲۶۹، بتغیرٍ۔

4 ......شعب الایمان للبیهقی، باب فی نشر العلم، الحدیث: ۱۹۱۷، ج ۲، ص ۳۱۴، بتغیرٍ قلیلٍ۔

قوت القلوب، الفصل الحادی و الثلاثون: کتاب العلم و تفضیله، ذکر بیان تفضیل علوم......الخ، ج ۱، ص ۲۳۹۔

ह़ज़रते सय्यिदुना सालेह़ बिन कैसान बसरी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : "मैं ऐसे कई मशाइख़े किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام से मिला जो बदकार आ़लिमे ह़दीष से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की पनाह मांगते थे ।"(1)

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है कि सरदारे मक्कए मुकर्रमा, सुल्त़ाने मदीनए मुनव्वरा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जो उस इ़ल्म को ह़ासिल करे जिस के ज़रीए़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा तलाश की जाती है और उस का मक़्सद दुन्या का माल ह़ासिल करना हो तो वोह क़ियामत के दिन जन्नत की ख़ुश्बू नहीं पाएगा ।"(2)

उ़-लमाए दुन्या और उ़-लमाए आख़िरत के अवसाफ़

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने बुरे उ़-लमा का येह वस्फ़ बयान किया कि वोह इ़ल्म के बदले दुन्या कमाते हैं जब कि उ़-लमाए आख़िरत को वस्फ़े ख़ुशूअ़ व ज़ोह्द से मुत्तसिफ़ फ़रमाया । चुनान्चे, उ़-लमाए दुन्या के बारे में इरशाद फ़रमाया :

وَ اِذْ اَخَذَ اللّٰهُ مِیْثَاقَ الَّذِیْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ لَتُبَیِّنُنَّهٗ لِلنَّاسِ وَ لَا تَكْتُمُوْنَهٗ٘ فَنَبَذُوْهُ وَرَآءَ ظُهُوْرِهِمْ وَ اشْتَرَوْا بِهٖ ثَمَنًا قَلِیْلًا ؕ (پ۴،اٰل عمرٰن:۱۸۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और याद करो जब अल्लाह ने अ़हद लिया उन से जिन्हें किताब अ़ता फ़रमाई कि तुम ज़रूर इसे लोगों से बयान कर देना और न छुपाना तो उन्हों ने इसे अपनी पीठ के पीछे फैंक दिया और इस के बदले ज़लील दाम ह़ासिल किये ।

उ़-लमाए आख़िरत के बारे में इरशाद फ़रमाया :

وَ اِنَّ مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ لَمَنْ یُّؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَ مَاۤ اُنْزِلَ اِلَیْكُمْ وَ مَاۤ اُنْزِلَ اِلَیْهِمْ خٰشِعِیْنَ لِلّٰهِ ۙ لَا یَشْتَرُوْنَ بِاٰیٰتِ اللّٰهِ ثَمَنًا قَلِیْلًا ؕ اُولٰٓىٕكَ لَهُمْ اَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ ؕ (پ۴،اٰل عمرٰن:۱۹۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और बेशक कुछ किताबी ऐसे हैं कि अल्लाह पर ईमान लाते हैं और उस पर जो तुम्हारी त़रफ़ उतरा और जो उन की त़रफ़ उतरा उन के दिल अल्लाह के हुज़ूर झुके हुए अल्लाह की आयतों के बदले ज़लील दाम नहीं लेते येह वोह हैं, जिन का षवाब उन के रब्ब के पास है ।

---

1 ......قوت القلوب، الفصل الحادی والثلاثون، باب ذکر الفرق بین علماء الدنیا......الخ، ج ۱، ص ۲۴۳۔

2 ......سنن ابی داود، کتاب العلم، باب فی طلب العلم لغیراللّٰه، الحدیث:۳۶۶۴، ج ۳، ص ۴۵۱، بتغیرٍ۔

बा'ज़ बुज़ुर्गों ने फ़रमाया : उ़-लमा (बरोज़े क़ियामत) अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के गुरोह में उठाए जाएंगे और क़ाज़ी बादशाहों के ज़ुमरे में।"(1) और हर वोह फ़क़ीह क़ाज़ी के मा'ना में शामिल है जो अपने इल्म से त़लबे दुन्या का इरादा करता है।

दुन्या की ख़ात़िर इल्मे दीन सीखने वालों का अन्जाम :

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब, ह़बीबे लबीब صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने एक नबी की त़रफ़ वह़्य फ़रमाई कि जो लोग दीन के इ़लावा (किसी और मक़्सद) के लिये फ़िक़्ह सीखते हैं, अ़मल के इ़लावा के लिये इ़ल्म ह़ासिल करते हैं, अ़मले आख़िरत के बदले दुन्या त़लब करते हैं, लोगों को दिखाने के लिये ऊनी लिबास पहनते हैं, उन के दिल भेड़ियों के दिलों जैसे हैं, उन की ज़बानें शहद से ज़ियादा मिठी और दिल ऐलवे से ज़ियादा कड़वे हैं, वोह मुझे धोका देना चाहते और मुझ से इस्तिहज़ा करते हैं, उन से फ़रमा दो कि मैं ज़रूर उन्हें ऐसे फ़ितने में डालूंगा जो बुर्दबार को भी परेशान कर छोड़े।"(2)

आ़लिम दो त़रह़ के हैं :

ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ह़्ह़ाक عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الرَّزَّاق ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत करते हैं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : इस उम्मत के उ़-लमा दो क़िस्म के हैं **एक** वोह जिसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इ़ल्म अ़त़ा किया तो उस ने इसे लोगों पर ख़र्च किया और इस पर कोई उजरत ली न ही इस के बदले कोई क़ीमत ली, येही वोह ख़ुश नसीब है जिस के लिये आस्मान के परन्दे, पानी की मछलियां, ज़मीन के चौपाए और लिखने वाले मुअ़ज़्ज़ज़ फ़िरिश्ते दुआ़ए रह़मत करते हैं, वोह क़ियामत के दिन बारगाहे इलाही में एक मुअ़ज़्ज़ज़ सरदार हो कर आएगा यहां तक कि मुरसलीन की रफ़ाक़त इख़्तियार करेगा और **दूसरा** वोह है कि जिसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने दुन्या में इ़ल्म से नवाज़ा तो उस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के बन्दों के सामने इस इ़ल्म को बयान करने में बुख़्ल से काम लिया, इस पर लालच की और इस के बदले क़ीमत वुसूल

(1) ......كشف الخفاء، حرف الياء التحتانية، الحديث:٣٢٢٨، ج٢، ص٣٦٠۔

(2) ......المدخل، فصل فی العالم و کیفیة نیته......الخ، ج١، ص٥٠، "لاافتحن" بدله "لاتيحن"۔

الفقيه و المتفقه، ماجاء فی ورع المفتی وتحفظه، الحديث:١٠٦٨، ج٢، ص٣٤٢، بتغيرٍقليلٍ۔

की, येह शख़्स क़ियामत के दिन इस ह़ाल में आएगा कि इसे आग की लगाम डाली गई होगी। फिर सारी मख़्लूक़ के सामने एक पुकारने वाला पुकारेगा : "येह फुलां इब्ने फुलां है। इसे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने दुन्या में इ़ल्म अ़त़ा फ़रमाया था लेकिन इस ने बन्दों पर उस इ़ल्म को बयान करने में बुख़्ल किया, उस पर लालच की और उस के बदले क़ीमत वुसूल की।" फिर उसे अ़ज़ाब दिया जाएगा यहां तक कि सब लोगों का ह़िसाब ख़त्म हो जाए।(1)

दीन के बदले दुन्या त़लब करने का अन्जाम :

इस से ज़ियादा सख़्त येह रिवायत है कि एक शख़्स ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की ख़िदमत किया करता था उस ने येह कहना शुरूअ़ कर दिया कि मुझे ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा सफ़िय्युल्लाह عَلَیْہِ السَّلَام ने बयान किया। मुझे ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा नजिय्युल्लाह عَلَیْہِ السَّلَام ने बताया। मुझे ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلَیْہِ السَّلَام ने ख़बर दी। यहां तक कि वोह मालदार हो गया और उस के पास काफ़ी माल आ गया। जब ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने उसे न पाया तो उस के बारे में पूछने लगे लेकिन उस की कोई ख़बर न मिली ह़त्ता कि एक दिन आप عَلَیْہِ السَّلَام की ख़िदमत में एक शख़्स ह़ाज़िर हुवा उस के हाथ में एक ख़िन्ज़ीर था जिस के गले में सियाह रस्सी थी। ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने उस से दरयाफ़्त फ़रमाया : "क्या तुम फुलां को जानते हो ?" उस ने कहा : "जी हां ! येह ख़िन्ज़ीर वोही शख़्स है।" आप عَلَیْہِ السَّلَام ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में अ़र्ज़ की "इसे इस की साबिक़ा ह़ालत पर लौटा दे ताकि मैं इस से इस ह़ालत का सबब पूछूं।" अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप عَلَیْہِ السَّلَام की त़रफ़ वह़्य फ़रमाई कि "अगर तुम मुझ से उन कलिमात के साथ दुआ़ करो जिन के साथ आदम और दूसरे अम्बिया ने की थी जब भी क़बूल न करूंगा लेकिन येह बता देता हूं कि इस के साथ येह मुआ़मला क्यूं किया ? इस लिये कि येह दीन के बदले दुन्या कमाता था।"(2)

उ़-लमा और जहन्नम के त़बक़ात :

इस से भी ज़ियादा सख़्त येह रिवायत है जो ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मौक़ूफ़न और मरफ़ूअ़न दोनों त़रह़ मरवी है कि ह़ुज़ूर नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "आ़लिम के फ़ितने में से

(1) المعجم الاوسط، من اسمه محمد، الحدیث:۷۱۸۷، ج۵، ص۲۳۷، بتغیر۔

(2) المدخل، فصل فی العالم و کیفیۃ نیتہ......الخ، ج ۱، ص ۶۲۔

है कि उसे तक़रीर सुनने से तक़रीर करना ज़ियादा पसन्द हो ह़ालांकि तक़रीर करने में बनावट और मुबालग़ा हो जाता है और तक़रीर करने वाला ग़लती से मह़फ़ूज़ नहीं जब कि ख़ामोशी में सलामती और इ़ल्म है। बा'ज़ उ़लमा अपने इ़ल्म को जम्अ़ रखते हैं वोह नहीं चाहते कि इ़ल्म दूसरों के पास पाया जाए ऐसे लोग जहन्नम के **पहले त़बक़े** में होंगे। बा'ज़ उ़लमा वोह हैं जो अपने इ़ल्म में बादशाह की त़रह़ हैं कि अगर उन के इ़ल्म में से किसी चीज़ के मुतअ़ल्लिक़ उन पर ए'तिराज़ किया जाए या उन के ह़क़ में कमी की जाए तो वोह ग़ुस्से में आ जाते हैं ऐसे उ़लमा जहन्नम के **दूसरे त़बक़े** में होंगे। कुछ आ़लिम ऐसे होते हैं जो अपना इ़ल्म और उ़म्दा गुफ़्तगू मुअ़ज़्ज़ज़ और मालदार लोगों को ही पेश करते हैं और ज़रूरत मन्दों को इस का अहल नहीं समझते ऐसे उ़लमा जहन्नम के **तीसरे त़बक़े** में होंगे। बा'ज़ उ़लमा अपने आप को फ़तवा देने के लिये मुक़र्रर कर लेते हैं और ग़लत़ फ़तवा देते हैं, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तकल्लुफ़ करने वालों को नापसन्द फ़रमाता है ऐसे उ़लमा जहन्नम के **चौथे त़बक़े** में होंगे बा'ज़ उ़लमा दूसरों के सामने यहूदो नसारा का कलाम बयान करते हैं ताकि इस वजह से उन के इ़ल्म की क़द्र हो ऐसे उ़लमा जहन्नम के **पांचवें त़बक़े** में होंगे। कुछ उ़लमा अपने इ़ल्म को लोगों में शोहरत, फ़ज़ीलत और मुरुव्वत का ज़रीआ़ बनाते हैं वोह जहन्नम के **छटे त़बक़े** में जाएंगे और बा'ज़ उ़लमा ऐसे हैं कि जिन पर ख़ुद पसन्दी और तकब्बुर की कैफ़िय्यत त़ारी रहती है, अगर वा'ज़ करें तो सख़्ती करते हैं मगर जब उन्हें नसीह़त की जाए तो नाक चढ़ाते हैं, वोह जहन्नम **के सातवें त़बक़े** में होंगे। लिहाज़ा ऐ भाई ! ख़ामोशी को लाज़िम कर लो इस के ज़रीए़ शैत़ान पर ग़ालिब आ जाओगे, बिग़ैर तअ़ज्जुब के मत हंसो और बिग़ैर ज़रूरत के मत चलो।"(1)

एक रिवायत में है कि "किसी बन्दे की ता'रीफ़ इतनी आ़म होती है कि मशरिक़ व मग़रिब के दरमियान को भर देती है जब कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हां उस की ह़ैषिय्यत मच्छर के पर बराबर भी नहीं होती।"(2)

मरवी है कि एक मरतबा ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى मजलिस (वा'ज़) से फ़ारिग़ हुए तो एक ख़ुरासानी शख़्स ने एक थैला आप की ख़िदमत में पेश किया जिस

---

1 ......جامع بیان العلم وفضله، باب جامع فی آداب العلم والمتعلم، فصل فی فضل الصمت وحمده، الحدیث:۲۰۶، ص ۱۹۱۔
تنزیه الشریعة، کتاب العلم، الفصل الثانی، الحدیث:۵۰، ج ۱، ص ۲۶۹۔
اللآلی المصنوعة، کتاب العلم، ج ۱، ص ۲۰۴، [قال فیه: باطل مسنداً وموقوفاً]۔

2 ......قوت القلوب، الفصل الحادی والثلاثون، باب ذکر الفرق بین علماء الدنیا......الخ، ج ۱، ص ۲۴۹۔
تذکرة الموضوعات، باب الاخلاق المحمود......الخ، ص ۱۸۹، (قال فیه: لم یوجد لاکن فی الصحیحین معناه)۔

में 5 हज़ार दिरहम और 10 बारीक कपड़े थे और अ़र्ज़ की : "ऐ अबू सईद عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْمَجِیْد येह दिरहम ख़र्च के लिये और कपड़े पहनने के लिये हैं।" आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تعالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुझे आ़फ़िय्यत दे ! येह उठा लो और अपने पास रखो हमे इन की ह़ाजत नहीं और जो मेरी इस मजलिस जैसी मजलिस क़ाइम करेगा फिर लोगों से इस त़रह़ का नज़राना लेगा वोह क़ियामत के दिन अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से इस ह़ाल में मिलेगा कि उस का (आख़िरत में) कोई ह़िस्सा नहीं होगा।"(1)

किस आ़लिम की सोह़बत इख़्तियार की जाए ?

ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मौक़ूफ़न और मरफ़ूअ़न मरवी है कि सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "हर आ़लिम के पास न बैठो सिर्फ़ उसी आ़लिम के पास बैठो जो तुम्हें पांच ख़स्लतों से पांच की त़रफ़ बुलाए : (1) शक से यक़ीन की त़रफ़ (2) रियाकारी से इख़्लास की त़रफ़ (3) दुन्या की रग़बत से बे रग़बती की त़रफ़ (4) तकब्बुर से आ़जिज़ी की त़रफ़ और (5) अ़दावत से ख़ैरख़्वाही की त़रफ़।"(2)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

فَخَرَجَ عَلٰى قَوْمِهٖ فِیْ زِیْنَتِهٖؕ قَالَ الَّذِیْنَ یُرِیْدُوْنَ الْحَیٰوةَ الدُّنْیَا یٰلَیْتَ لَنَا مِثْلَ مَاۤ اُوْتِیَ قَارُوْنُۙ اِنَّهٗ لَذُوْ حَظٍّ عَظِیْمٍ (۷۹) وَ قَالَ الَّذِیْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ وَیْلَكُمْ ثَوَابُ اللّٰهِ خَیْرٌ لِّمَنْ اٰمَنَ وَ عَمِلَ صَالِحًاۚ

(پ۲۰،القصص:۷۹،۸۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *तो अपनी क़ौम पर निकला अपनी आराइश में बोले वोह जो दुन्या की ज़िन्दगी चाहते हैं किसी त़रह़ हम को भी ऐसा मिलता जैसा क़ारून को मिला बेशक उस का बड़ा नसीब है और बोले वोह जिन्हें इ़ल्म दिया गया ख़राबी हो तुम्हारी अल्लाह का षवाब बेहतर है उस के लिये जो ईमान लाए और अच्छे काम करे।*

पस अहले इ़ल्म ने जान लिया कि आख़िरत को दुन्या पर तरजीह़ देनी चाहिये।

﴾2﴿.....उ़-लमाए आख़िरत की निशानियों में से एक निशानी येह है कि आ़लिम का फ़े'ल उस के क़ौल की मुख़ालफ़त न करे बल्कि वोह उस वक़्त तक किसी चीज़ का हुक्म न दे जब तक पहले ख़ुद इस पर अ़मल न कर ले।

---

1 ......قوت القلوب، الفصل الحادی و الثلاثون، باب ذکر الفرق بین علماء الدنیا......الخ، ج ۱، ص ۲۴۹، بتغیرٍ۔

2 ......حلیۃ الاولیاء، شقیق البلخی:۳۹۵، الحدیث:۱۱۴۱۷، ج۸، ص ۷۵۔

चन्द फ़रामीने बारी तआला मुलाहज़ा हों :

﴾1﴿

اَتَاْمُرُوْنَ النَّاسَ بِالْبِرِّ وَتَنْسَوْنَ اَنْفُسَكُمْ (پ ١، البقرة:٤٤)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *क्या लोगों को भलाई का हुक्म देते हो और अपनी जानों को भूलते हो।*

﴾2﴿

كَبُرَ مَقْتًا عِنْدَ اللّٰهِ اَنْ تَقُوْلُوْا مَا لَا تَفْعَلُوْنَ ﴿٣﴾ (پ٢٨، الصف:٣)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *कितनी सख़्त नापसन्द है अल्लाह को वोह बात कि वोह कहो जो न करो।*

﴾3﴿ हज़रते सय्यिदुना शोऐब عَلَيْهِ السَّلَام का क़िस्सा बयान करते हुए इरशाद फ़रमाया :

وَمَاۤ اُرِيْدُ اَنْ اُخَالِفَكُمْ اِلٰى مَاۤ اَنْهٰكُمْ عَنْهُ ؕ (پ ١٢، هود:٨٨)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और मैं नहीं चाहता हूं कि जिस बात से तुम्हें मन्अ करता हूं आप उस का ख़िलाफ़ करने लगों।*

﴾4﴿

وَاتَّقُوا اللّٰهَ ؕ وَ يُعَلِّمُكُمُ اللّٰهُ ؕ (پ٣، البقرة:٢٨٢)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और अल्लाह से डरो और अल्लाह तुम्हें सिखाता है।*

﴾5﴿

وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاعْلَمُوْۤا (پ٢، البقرة:١٩٤)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और अल्लाह से डरते रहो और जान रखो।*

﴾6﴿

وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاسْمَعُوْا ؕ (پ٧، المائدة:١٠٨)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और अल्लाह से डरो और हुक्म सुनो।*

अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ ने हज़रते सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को इरशाद फ़रमाया : "ऐ इब्ने मरयम ! पहले अपने नफ़्स को नसीहत करो अगर वोह मान जाए तो फिर दूसरों को नसीहत करो वरना मुझ से हया करो।"(1)

अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : मे'राज की रात मेरा गुज़र ऐसे लोगों पर हुवा जिन के होंट आग की कैंचियों से काटे जा रहे थे। मैं ने उन से पूछा "तुम कौन हो ?" उन्हों ने जवाब दिया :"हम नेकी का

(1)......الزهد للامام احمد بن حنبل، من مواعظ عيسى عليه السلام، الحديث:٣٠٠، ص ٩٣۔

हुक्म देते थे लेकिन खुद इस पर अ़मल नहीं करते थे। बुराई से रोकते थे लेकिन खुद इस का इर्तिकाब करते थे।"[1]

एक रिवायत में है कि "मेरी उम्मत की हलाकत बदकार आ़लिम और जाहिल आ़बिद की वजह से होगी, बद तरीन लोग बुरे उ़-लमा और बेहतरीन लोग अच्छे उ़-लमा हैं।"[2]

क़ब्रों की शिकायत :

हज़रते सय्यिदुना इमाम अवज़ाई رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه बयान करते हैं कि क़ब्रों ने बारगाहे इलाही में कुफ़्फ़ार के मुर्दा अजसाम की बदबू की शिकायत की तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उन्हें फ़रमाया कि "बुरे उ़-लमा के बातिन तुम्हारे अन्दर मौजूद बदबू से ज़ियादा बदबूदार हैं।"[3]

हज़रते सय्यिदुना फुज़ैल बिन अ़याज़ رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : "मुझे येह बात पहुंची है कि क़ियामत के दिन फ़ासिक़ उ़-लमा का ह़िसाब बुत परस्तों से भी पहले होगा।"[4]

सात बार हलाकत :

हज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया : "जो इ़ल्म नहीं रखता उस के लिये एक बार हलाकत है और जो इ़ल्म रखता है मगर अ़मल नहीं करता उस के लिये सात बार हलाकत है।"[5]

तुम्हें क्या चीज़ जहन्नम में ले गई :

हज़रते सय्यिदुना इमाम शा'बी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی ने फ़रमाया : क़ियामत के दिन कुछ जन्नती बा'ज़ जहन्नमियों को देख कर पूछेंगे : "तुम्हें किस चीज़ ने जहन्नम में डाला ह़ालांकि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने हमें तुम्हारे ही अदब सिखाने और ता'लीम देने के तुफ़ैल जन्नत में दाखि़ल किया है।" वोह कहेंगे :"हम नेकी का हुक्म करते थे लेकिन खुद अ़मल नहीं करत थे। बुराई से रोकते थे लेकिन खुद इस का इर्तिकाब करते थे।"[6]

---

1 ......الاحسان بترتيب صحيح ابن حبان، ذكر وصف الخطباء الذين......الخ، الحديث:٥٣، ج ١، ص ١٣٥، مفهومًا۔

2 ......جامع بيان العلم وفضله، باب ذمّ الفاجر من العلماء......الخ، الحديث:٧٤٤، ص ٢٤١۔

3 ......المرجع السابق۔ 4 ......المرجع السابق، بتغيرٍ۔

5 ......حلية الاولياء، ابو الدرداء، الحديث:٦٨٣، ج ١، ص ٢٧٠، بتغيرٍ قليلٍ۔

6 ......الزهد لابن المبارك، باب من طلب العلم لعرض فى الدنيا، الحديث:٦٤، ص ٢١، باختصارٍ۔

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़ातिमे असम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم ने फ़रमाया : "क़ियामत के दिन सब से ज़ियादा ह़सरत उस शख़्स़ को होगी जिस ने लोगों को इ़ल्म सिखाया और लोगों ने उस के इ़ल्म पर अ़मल किया लेकिन उस ने खुद इस पर अ़मल न किया, लोग तो अ़मल के सबब नजात पा गए लेकिन वोह हलाक हो गया।"(1)

ह़ज़रते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَفَّار ने फ़रमाया : "जब आ़लिम अपने इ़ल्म पर अ़मल न करे तो उस की नसीह़त लोगों के दिलों से ऐसे फिसलती है जैसे साफ़ पथ्थर से पानी का क़त़रा फिसल जाता है।"(2)

शाइ़र कहता है :

يَا وَاعِظَ النَّاسِ قَدْ اَصْبَحْتَ مُتَّهَمًا ۔۔۔ اِذْ عِبْتَ مِنْهُمْ اُمُوْرًا اَنْتَ تَاْتِيْهَا

اَصْبَحْتَ تَنْصَحُهُمْ بِالْوَعْظِ مُجْتَهِدًا ۔۔۔ فَالْمُوْبِقَاتُ لَعَمْرِىْ اَنْتَ جَانِيْهَا

تَعِيْبُ دُنْيَا وَنَاسًا رَاغِبِيْنَ لَهَا ۔۔۔ وَاَنْتَ اَكْثَرُ مِنْهُمْ رَغْبَةً فِيْهَا

तर्जमा : (1) ऐ लोगों को वा'ज़ करने वाले ! तुम तोहमत ज़दा हो क्यूंकि जिन बातों को उन में ऐ़ब बताते हो उन्हें खुद करते हो।

(2) तुम उन्हें वा'ज़ व नसीह़त करने में बड़ी कोशिश करते हो और मुझे मेरी ज़िन्दगी की क़सम ! हलाक करने वाली चीज़ें तुम्हारी त़रफ़ आ रही हैं।

(3) तुम दुन्या और इस में रग़बत रखने वालों को ऐ़ब लगाते हो ह़ालांकि खुद इन से ज़ियादा दुन्या में रग़बत रखते हो।

एक और शाइ़र कहता है :

لَا تَنْهَ عَنْ خُلُقٍ وَتَاْتِىَ مِثْلَهُ ۔۔۔ عَارٌ عَلَيْكَ اِذْ فَعَلْتَ عَظِيْمٌ

तर्जमा : लोगों को ऐसी बात से मन्अ़ न कर जिसे तू खुद करता है अगर तू ऐसा करे तो येह तेरे लिये बड़ी शर्म की बात है।

नसीह़त आमोज़ इ़बारत :

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم बयान करते हैं कि मक्कए मुकर्रमा में मेरा गुज़र एक पथ्थर के क़रीब से हुवा उस पर लिखा था : "मुझे पलट कर देखो और इ़ब्रत ह़ासिल करो।" मैं ने उसे पलट कर देखा तो उस पर लिखा था कि "जिस का तुझे इ़ल्म

(1)......تحفة الحبيب على شرح الخطيب، مبحث امّابعد، ج ۱، ص ۷۱۔

(2)......الزهد للامام احمد بن حنبل، زهد محمد بن سيرين، الحديث: ۱۸۸۴، ص ۳۲۵۔

है उस पर तू अ़मल नहीं करता फिर जिस का इ़ल्म नहीं उसे जानने की त़लब क्यूं करता है।"[1]

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने सम्माक عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الرَّزَّاق ने फ़रमाया : "दूसरों को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की याद दिलाने वाले कितने ही लोग ऐसे हैं जो खुद उसे भूल जाते हैं। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से डराने वाले कितने ही ऐसे हैं जो खुद उस पर जुरअत करते हैं। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के क़रीब करने वाले कितने ही ऐसे हैं जो खुद उस से दूर हैं। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ बुलाने वाले कितने ही ऐसे हैं जो खुद उस से भागते हैं और कुरआने पाक की तिलावत करने वाले कितने ही लोग ऐसे हैं जो उस की आयात से अलग रहते हैं।"[2]

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم ने फ़रमाया : "हम ने अपनी गुफ़्तगू को फ़सीह़ किया तो इस में ग़लती न की और अपने आ'माल में ग़लती की तो इन्हें दुरुस्त न किया।"[3]

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अवज़ाई رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने फ़रमाया : "जब फ़साह़त व बलाग़त आ जाती है तो खुशूअ़ व खुज़ूअ़ रुख़्सत हो जाता है।"[4]

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन ग़नम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه बयान करते हैं कि मुझे दस सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْهِمْ اَجْمَعِیْن ने ख़बर दी कि हम मस्जिदे कुबा में इ़ल्म ह़ासिल करने में मश्ग़ूल थे कि प्यारे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم हमारे पास तशरीफ़ लाए और इरशाद फ़रमाया : "जो सीखना चाहते हो सीख लो लेकिन येह याद रखो कि जब तक अ़मल नहीं करोगे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम्हें अज्र नहीं देगा।"[5]

इ़ल्म पर अ़मल न करने वाले की मिषाल :

ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा रुहुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने इरशाद फ़रमाया : "जो इ़ल्म सीखता है और इस पर अ़मल नहीं करता उस की मिषाल उस औ़रत की त़रह़ है जो छुप कर

---

1 ......جامع بیان العلم وفضله، باب جامع القول فی العمل بالعلم، ص ۲۵۳۔

2 ......شعب الایمان للبیهقی، باب فی نشر العلم، الحدیث:۱۹۱۶، ج۲، ص۳۱۳۔۳۱۴،مختصراً۔

التفسیر الکبیر للرازی، سورة البقرة، تحت الآیة: ۳۱، ج ۱، ص ۴۰۲۔

3 ......المجالسة و جواهرالعلم، الجزء السادس، الحدیث: ۸۵۱، ج ۱، ص ۳۳۳۔

4 ......قوت القلوب، الفصل الحادی و الثلاثون، باب ذکرالفرق بین علماء الدنیا......الخ، ج ۱، ص ۲۸۲، بتغیرِ الفاظٍ۔

5 ......جامع بیان العلم وفضله، باب جامع القول فی العمل بالعلم، الحدیث:۷۲۳، ص ۳۵۳۔

ज़िना करती है और ह़ामिला हो जाती है फिर उस का ह़म्ल ज़ाहिर होता है तो वोह ज़लील व रुस्वा होती है येही ह़ाल उस का होगा जो अपने इ़ल्म पर अ़मल नहीं करता, अल्लाह जब्बार व क़ह्हार عَزَّوَجَلَّ उसे क़ियामत के दिन सब लोगों के सामने रुस्वा करेगा।"(1)

आ़लिम की लग़ज़िश बाइ़षे हलाकत है :

ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने फ़रमाया : "आ़लिम की लग़ज़िश से डरो क्यूंकि लोगों में उस की बड़ी क़द्र होती है जिस की वजह से वोह लग़ज़िश में भी उस की पैरवी करते हैं।"(2)

अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने फ़रमाया : "जब आ़लिम फिसलता है तो उस के फिसलने से एक जहान फिसल जाता है।"(3)

इन्ही का फ़रमान है कि अहले ज़माना तीन बातों की वजह से हलाक होते हैं इन में से एक आ़लिम की लग़ज़िश है।(4)

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने फ़रमाया : "अ़न क़रीब लोगों पर एक ज़माना ऐसा आएगा कि दिलों की शीरीनी खारी हो जाएगी तो उस वक़्त न आ़लिम के इ़ल्म से कुछ फ़ाइदा होगा और न त़ालिबे इ़ल्म को कुछ नफ़्अ़ होगा। उन के उ़-लमा के दिल उस बन्जर ज़मीन की त़रह़ हो जाएंगे जिस पर बारीश बरसती है लेकिन फिर भी उस में मिठास नहीं पाई जाती।" और येह उस वक़्त होगा जब उ़-लमा के दिल दुन्या की मह़ब्बत और इसे आख़िरत पर तरजीह़ देने की त़रफ़ माइल हो जाएंगे। उस वक़्त अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उन के दिलों से ह़िक्मत के चश्मे निकाल लेगा और हिदायत के चराग़ बुझा देगा। जब तुम उन के किसी आ़लिम से मिलोगे तो वोह ज़बान से तुम्हें कहेगा कि मैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से डरता हूं मगर उस के आ'माल में बदकारी ज़ाहिर होगी। उस वक़्त ज़बानें बड़ी शीरीं होंगी मगर दिल ख़ुश्क होंगे। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम जिस के सिवा कोई इ़बादत के लाइक़ नहीं ! येह इस लिये होगा कि असातिज़ा ने ग़ैरे ख़ुदा के लिये इ़ल्म सिखाया और शागिर्दों ने ग़ैरे ख़ुदा के लिये इ़ल्म

---

1 ......فیض القدیرللمناوی، حرف الھمزۃ، تحت الحدیث:۲۲۲۶، ج۲، ص۵۴۹۔

2 ......جامع بیان العلم وفضلہ، باب جامع بیان مایلزم الناظر، الحدیث:۹۶۵، ص۳۵۲، باختصارٍ۔

3 ......الزھد لابن المبارک، الحدیث:۱۴۷۴، ص۵۲۰، (قول عیسٰی علیہ السلام)۔

4 ......الزھد لابن المبارک، الحدیث:۱۴۷۵، ص۵۲۰، مفھومًا۔

सीखा होगा। तौरात और इन्जिल में लिखा है कि "जब तक अपने इ़ल्म पर अ़मल न कर लो उस वक़्त तक उस इ़ल्म को त़लब न करो जो तुम्हें ह़ासिल नहीं।"(1)

ह़ज़रते सय्यिदुना हु़ज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : "तुम ऐसे ज़माने में हो कि इस में जिस ने अपने इ़ल्म के दसवें ह़िस्से पर अ़मल करना छोड़ दिया वोह हलाक हो गया और अ़न क़रीब एक ऐसा ज़माना आएगा कि उस में जिस ने अपने इ़ल्म के दसवें ह़िस्से पर अ़मल कर लिया वोह नजात पा लेगा और येह झूटों की कषरत की वजह से होगा।"(2)

आ़लिम और क़ाज़ी :

याद रखो ! आ़लिम की मिषाल क़ाज़ी जैसी है और मुस्त़फ़ा जाने रह़मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "क़ाज़ी तीन क़िस्म के हैं **एक** वोह जो इ़ल्म रखता और ह़क़ फ़ैसला करता है वोह जन्नती है। **दूसरा** वोह जो नाह़क़ फ़ैसला करता है वोह जहन्नम में जाएगा चाहे उसे इ़ल्म हो या न हो और **तीसरा** वोह जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के हुक्म के ख़िलाफ़ फ़ैसला करता है वोह भी जहन्नम में जाएगा।"(3)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के दुश्मन :

ह़ज़रते सय्यिदुना का'बुल अह़बार عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْغَفَّار बयान करते हैं कि आख़िरी ज़माने में ऐसे उ़-लमा होंगे जो लोगों को दुन्या से बे रग़बती का कहेंगे लेकिन ख़ुद इस में रग़बत रखेंगे। लोगों को ख़ौफ़ दिलाएंगे लेकिन ख़ुद नहीं डरेंगे। उन्हें हुक्मरानों के पास जाने से रोकेंगे लेकिन ख़ुद उन के पास जाएंगे। दुन्या को आख़िरत पर तरजीह़ देंगे लेकिन अपनी ज़बानों की कमाई खाएंगे। मालदारों के क़रीब रहेंगे लेकिन ग़रीबों से दूर। इ़ल्म पर ऐसे झगड़ेंगे जिस त़रह़ औ़रतें मर्दों पर झगड़ती हैं। इन का कोई हम नशीन अगर दूसरे की मजलिस में बैठेगा तो उस से नाराज़ हो जाएंगे। येह लोग मुतकब्बिरीन और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के दुश्मन होंगे।(4)

---

1 ......جامع بیان العلم وفضله، باب جامع القول فی العمل بالعلم، ص ۲۵۱۔

2 ......قوت القلوب، الفصل الحادی والثلاثون: کتاب العلم وتفضیله، ج ۱، ص ۲۳۸، بتغیرٍ۔
سنن الترمذی، کتاب الفتن، بَاب مَا جَاءَ فِي النَّهْيِ عَنْ سَبِّ الرِّيَاحِ، الحدیث: ۲۲۷۴، ج ۴، ص ۱۱۸، مفهومًا۔

3 ......سنن الترمذی، کتاب الاحکام، باب ماجاء عن رسول اللّٰه......الخ، الحدیث: ۱۳۲۷، ج ۳، ص ۶۰، مفهومًا۔

4 ......المجاسة وجواهرالعلم، الجزء الثانی والعشرون، الحدیث: ۳۰۹۱، ج ۳، ص ۱۲۷، باختصارٍ۔
قوت القلوب، الفصل الحادی والثلاثون، ج ۱، ص ۲۴۳، دون قوله: اولئک الجبارون اعداء الرحمن۔

सरवरे काइनात, शाहे मौजूदात صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "शैत़ान अकषर तुम्हें इ़ल्म के ज़रीए सुस्त बना देता है।" किसी ने अ़र्ज़ की : "वोह कैसे ?" इरशाद फ़रमाया : "वोह कहता है इ़ल्म ह़ासिल कर और जब तक इ़ल्म मुकम्मल न कर ले अ़मल मत करना फिर वोह इ़ल्म त़लब करने का कहता रहता है और अ़मल में सुस्ती दिलाता रहता है यहां तक कि इ़ल्म पर अ़मल किये बिग़ैर उस की मौत वाक़ेअ़ हो जाती है।"(1)

इ़ल्म की ह़िफ़ाज़त का नुस्ख़ए कीमिया :

ह़ज़रते सय्यिदुना सिरी सक़्ती عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی ने फ़रमाया : एक शख़्स जिस को ज़ाहिरी उ़लूम ह़ासिल करने का बड़ा शौक़ था अचानक उस ने इ़बादत के लिये लोगों से अ़लाह़िदगी इख़्तियार कर ली। मैं ने इस की वजह पूछी तो उस ने बताया कि मैं ने ख़्वाब में देखा कि कोई मुझे कह रहा है : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम्हें बरबाद करे तुम कब तक इ़ल्म को ज़ाएअ़ करते रहोगे !" तो मैं ने कहा : "मैं तो इ़ल्म को मह़फ़ूज़ कर रहा हूं।" उस ने कहा : "इ़ल्म की ह़िफ़ाज़त उस पर अ़मल करने से होती है।" बस फिर मैं त़लबे इ़ल्म को छोड़ कर अ़मल करने की त़रफ़ मुतवज्जेह हो गया।(2)

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : "इ़ल्म कषरते रिवायत का नहीं बल्कि ख़शिय्यते इलाही का नाम है।"(3)

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی ने फ़रमाया : "जितना चाहो इ़ल्म ह़ासिल कर लो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! जब तक अ़मल नहीं करोगे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम्हें अज्र नहीं देगा। बे वुक़ूफ़ों का मक़्सद इ़ल्म की रिवायत है जब कि उ़-लमा का मक़्सद इ़ल्म की ह़िफ़ाज़त।"(4)

ह़ज़रते सय्यिदुना मालिक बिन अनस رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया : "इ़ल्म त़लब करना और इसे फैलाना अच्छा अ़मल है जब कि निय्यत दुरुस्त हो लेकिन देखा करो कि जो चीज़ सुब्ह़ से शाम तक तुम्हारे साथ रहती है उस पर किसी दूसरी चीज़ को तरजीह़ न दो।"(5)

---

1 ......قوت القلوب، الفصل الحادی والثلاثون، کتاب العلم وتفضیلہ، ج ۱، ص ۲۲۸، بتغیرٍ۔

2 ......فیض القدیرللمناوی، حرف الھمزۃ، تحت الحدیث:۳۰۱۷، ج۳، ص ۲۰۹، بتغیرِ الفاظٍ۔

قوت القلوب، الفصل الحادی والثلاثون: کتاب العلم وتفضیلہ، ج ۱، ص ۲۳۰، بتغیرِالفاظٍ۔

3 ......الزھد للامام احمد بن حنبل، فی فضل ابی ھریرۃ، الحدیث:۸۶۷، ص ۱۸۰۔

4 ......جامع بیان العلم وفضلہ، باب جامع القول فی العمل بالعلم، الحدیث:۷۲۵، ص ۲۵۳۔(قول انس بن مالک)

قوت القلوب، الفصل الحادی والثلاثون: کتاب العلم وتفضیلہ، ذکرفضل علم المعرفۃ......الخ، ج ۱، ص ۲۳۰۔

5 ......قوت القلوب، الفصل الحادی والثلاثون: کتاب العلم وتفضیلہ، ذکرفضل علم المعرفۃ......الخ، ج ۱، ص ۲۳۳۔

नुज़ूले क़ुरआन का मक़्सद :

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عَنۡہُ ने फ़रमाया : "क़ुरआने ह़कीम इस लिये नाज़िल हुवा है कि इस पर अ़मल किया जाए, तुम ने इस के पढ़ने पढ़ाने को भी अ़मल बना लिया, अ़न क़रीब ऐसे लोग आएंगे जो इस को नेज़े की त़रह़ सीधा करेंगे वोह तुम में बेहतर लोग नहीं होंगे और जो आ़लिम अ़मल नहीं करता उस मरीज़ की त़रह़ है जो दवाई की ता'रीफ़ करता है और उस भूके की त़रह़ है जो लज़ीज़ खानों की ता'रीफ़ करता है लेकिन इन को पाता नहीं।"(1)

इस जैसे शख़्स के बारे में इरशादे ख़ुदावन्दी है :

وَلَكُمُ الْوَيْلُ مِمَّا تَصِفُوْنَ ﴿١٨﴾
(پ ١٧، الانبیاء: ١٨)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और तुम्हारी ख़राबी है उन बातों से जो बनाते हो।*

नीज़ ह़दीषे मुबारका में है कि "मुझे अपनी उम्मत पर आ़लिम की लग़्ज़िश और मुनाफ़िक़ के क़ुरआन में झगड़ने का डर है।"(2)

﴾3﴿......उ़-लमाए आख़िरत की अ़लामतों में से एक अ़लामत येह है कि ऐसे आ़लिम का मक़्सद आख़िरत में नफ़्अ़ देने वाले और इत़ाअ़त में रग़बत दिलाने वाले इ़ल्म का ह़ुसूल हो, उन उ़लूम से बचे जिन का नफ़्अ़ कम, झगड़ा और बह़्षो मुबाह़षा ज़ियादा हो पस उस शख़्स की मिषाल जो आ'माल के इ़ल्म से ग़ाफ़िल हो कर जिदाल (झगड़ों वग़ैरा) में मश्ग़ूल हो जाए उस मरीज़ की सी है जो कई बीमारियों में मुब्तला हो वोह किसी माहिर त़बीब को तंग वक़्त में मिले कि उस के चले जाने का ख़ौफ़ हो लेकिन वोह जड़ी बूटियों और अदवियात की खुसूसिय्यात और तिब्ब की अ़जीबो ग़रीब बातें पूछना शुरूअ़ कर दे और उस अहम बात के बारे में न पूछे जिस में वोह मुब्तला है, वोह निरा बे वुक़ूफ़ है।

मरवी है कि एक शख़्स ने बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ की : "मुझे इ़ल्म की अ़जीबो ग़रीब बातें बताइयें !" आप صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस से पूछा : "तुम ने बुन्यादी इ़ल्म के बारे में क्या सीखा ?" उस ने अ़र्ज़ की : "बुन्यादी इ़ल्म क्या है ?" फ़रमाया : "क्या तुम ने रब्ब عَزَّوَجَلَّ को पहचाना ?" उस ने अ़र्ज़ की : "जी हां !" इरशाद फ़रमाया : "तुम ने उस के

---

1 ......قوت القلوب، الفصل الحادی و الثلاثون، باب ذکر الفرق بین علماء الدنیا......الخ، ج ۱، ص ۲۵۰۔

2 ......المعجم الکبیر، الحدیث: ۲۸۲، ج ۲۰، ص ۱۳۹، مفهومًا۔

قوت القلوب، الفصل الحادی و الثلاثون، باب ذکر الفرق بین علماء الدنیا......الخ، ج ۱، ص ۲۹۵۔

हक़ की अदाएगी में क्या अ़मल किया ?" अ़र्ज़ की : "जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने चाहा।" इरशाद फ़रमाया : "क्या तुम ने मौत को जाना ?" अ़र्ज़ की : "जी हां !" इरशाद फ़रमाया : "उस के लिये क्या तय्यारी की ?" अ़र्ज़ की : "जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने चाहा।" इरशाद फ़रमाया : "जाओ ! पहले इस में पुख़्ता हो जाओ फिर हमारे पास आना हम तुम्हें इल्म के ग़राइब में से कुछ सिखा देंगे।"(1)

8 अनमोल हीरे :

एक तालिबे इल्म को ऐसा होना चाहिये जैसा ह़ज़रते सय्यिदुना शक़ीक़ बल्ख़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى के शागिर्दे रशीद ह़ज़रते सय्यिदुना हातिमे असम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم के बारे में मन्क़ूल है कि उन के उस्ताज़ ह़ज़रते सय्यिदुना शक़ीक़ बल्ख़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى ने उन से पूछा : "तुम कितने अ़र्से से मेरी सोहबत में हो ?" अ़र्ज़ की : "33 साल से।" पूछा : "इस मुद्दत में मुझ से क्या सीखा ?" अ़र्ज़ की : "आठ बातें।"

ह़ज़रते सय्यिदुना शक़ीक़ बल्ख़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى ने अफ़्सोस करते हुए येह आयते मुबारका पढ़ी : اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّاۤ اِلَيْهِ رٰجِعُوْنَ (پ۲،البقرة:۱۵۶) ***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :*** *हम अल्लाह के माल हैं और हम को उसी की तरफ़ फिरना।*

और कहा :"मेरी ज़िन्दगी का एक अ़र्सा तुम्हारे साथ गुज़र गया और तुम ने सिर्फ़ आठ बातें सीखी हैं ?" ह़ज़रते सय्यिदुना हातिमे असम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم ने अ़र्ज़ की : "उस्ताज़े मुह़तरम ! मैं ने इन के इ़लावा कुछ नहीं सीखा और मुझे झूट बोलना पसन्द नहीं।" उस्ताज़ साहिब ने फ़रमाया : "वोह आठ बातें बयान करो कि मैं सुनूं।"

﴾1﴿....**अ़र्ज़ की :** मैं ने लोगों की तरफ़ नज़र की तो देखा कि हर शख़्स एक मह़बूब से मह़ब्बत करता है और (मह़बूब के मरने पर) उस के साथ क़ब्र तक जाता है फिर उस से जुदा हो जाता है तो मैं ने अच्छे आ'माल को अपना मह़बूब बना लिया कि जब मैं क़ब्र में दाख़िल होऊं तो मेरा मह़बूब भी मेरे साथ दाख़िल हो।

ह़ज़रते सय्यिदुना शक़ीक़ बल्ख़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى ने फ़रमाया : "ऐ हातिम ! बहुत अच्छा।"

﴾2﴿....**अ़र्ज़ कि :** मैं ने इस फ़रमाने बारी तआ़ला में ग़ौरो फ़िक्र किया :

---

(1)......حلية الاولياء، مقدمة المصنّف، الحديث:۵۳، ج۱، ص۵۶۔

وَاَمَّا مَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهٖ وَنَهَى النَّفْسَ عَنِ الْهَوٰىۙ۝۴۰ فَاِنَّ الْجَنَّةَ هِیَ الْمَاْوٰىؕ۝۴۱

(پ۳۰،النّٰزعٰت:۴۰،۴۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और वोह जो अपने रब्ब के हुज़ूर खड़े होने से डरा और नफ़्स को ख़्वाहिश से रोका । तो बेशक जन्नत ही ठिकाना है ।*

तो मैं ने जान लिया कि अल्लाह तबारक व तआ़ला का फ़रमान ह़क़ है फिर मैं ख़्वाहिश को दूर करने के लिये अपने नफ़्स को तय्यार करता रहा यहां तक कि वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की फ़रमां बरदारी पर पुख़्ता हो गया ।

﴾3﴿......**अ़र्ज़ की :** मैं ने लोगों को ग़ौर से देखा तो पता चला कि हर वोह शख़्स जिस के पास कोई क़द्रो क़ीमत वाली चीज़ है वोह उसे बुलन्द करता और उस की ह़िफ़ाज़त करता है फिर मैं ने इस फ़रमाने इलाही में ग़ौर किया :

مَا عِنْدَكُمْ یَنْفَدُ وَمَا عِنْدَ اللّٰهِ بَاقٍؕ

(پ۱۴،النحل:۹۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *जो तुम्हारे पास है हो चुकेगा और जो अल्लाह के पास है हमेशा रहने वाला है ।*

अब जब भी मेरे पास कोई क़द्रो क़ीमत वाली चीज़ आती है तो उसे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ फैर देता हूं ताकि मह़फ़ूज़ रहे ।

﴾4﴿.....**अ़र्ज़ की :** लोगों की त़रफ़ नज़र की तो देखा कि हर एक की तवज्जोह माल, ह़सब व नसब और शरफ़ की त़रफ़ है । मैं ने इन चीज़ों के बारे में ग़ौर किया तो इन की कोई ह़ैषिय्यत मा'लूम न हुई फिर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के इस फ़रमान में ग़ौर किया :

اِنَّ اَكْرَمَكُمْ عِنْدَ اللّٰهِ اَتْقٰىكُمْؕ

(پ۲۶،الحجرٰت:۱۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *बेशक अल्लाह के यहां तुम में ज़ियादा इ़ज़्ज़त वाला वोह जो तुम में ज़ियादा परहेज़गार है ।*

तो मैं ने तक़्वा इख़्तियार करने की कोशिश की ताकि बारगाहे इलाही में इ़ज़्ज़त वाला हो जाऊं ।

﴾5﴿.....**अ़र्ज की :** मैं ने ह़सद के सबब लोगों को एक दूसरे को ला'न ता'न करते देखा फिर इस आयते मुक़द्दसा में ग़ौरो ख़ौज़ किया :

نَحْنُ قَسَمْنَا بَیْنَهُمْ مَّعِیْشَتَهُمْ فِی الْحَیٰوةِ الدُّنْیَا

(پ۲۵،الزخرف:۳۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *हम ने उन में उन की ज़ीस्त (ज़िन्दगी गुज़ारने) का सामान दुन्या की ज़िन्दगी में बांटा ।*

तो मैं ह़सद को तर्क कर के मख़्लूक़ से अलग हो गया और मैं ने जान लिया कि तक़्सीम तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से है इस लिये मैं ने लोगों से अ़दावत तर्क कर दी ।

﴾6﴿.....**अ़र्ज़ की :** मैं ने लोगों को एक दूसरे पर ज़ियादती और आपस में लड़ते झगड़ते देखा फिर इस फ़रमाने बारी तआ़ला की त़रफ़ नज़र की :

اِنَّ الشَّیْطٰنَ لَكُمْ عَدُوٌّ فَاتَّخِذُوْهُ عَدُوًّا ؕ

(پ۲۲، فاطر:٦)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *बेशक शैत़ान तुम्हारा दुश्मन है तो तुम भी इसे दुश्मन समझो ।*

तो मैं ने सिर्फ़ शैत़ान से दुश्मनी की और उस से बचने की कोशिश की क्यूंकि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने गवाही दी है कि वोह मेरा दुश्मन है इस लिये मैं ने उस के इ़लावा किसी से दुश्मनी नहीं की ।

﴾7﴿.....**अ़र्ज़ की :** मैं ने लोगों को देखा कि इन में से हर एक रोटी के टुकड़े की त़लब में अपने नफ़्स को ज़लील करता और उस चीज़ में मश्ग़ूल होता है जिस में मश्ग़ूल होना उस के लिये जाइज़ नहीं फिर मैं ने इस आयते मुबारका में ग़ौर किया :

وَ مَا مِنْ دَآبَّةٍ فِی الْاَرْضِ اِلَّا عَلَى اللّٰهِ رِزْقُهَا

(پ۱۲، هود:٦)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और ज़मीन पर चलने वाला कोई ऐसा नहीं जिस का रिज़्क़ **अल्लाह** के ज़िम्मए करम पर न हो ।*

तो इस नतीजे पर पहुंचा कि मैं भी उन चलने वालों में से एक हूं जिन का रिज़्क़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ज़िम्मए करम पर है, फिर मैं उस काम में मश्ग़ूल हो गया जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से मुझ पर लाज़िम है और उसे छोड़ दिया जो मेरे लिये **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के पास है ।

﴾8﴿.....**अ़र्ज़ की :** मैं ने लोगों को देखा सब मख़्लूक़ पर भरोसा किये हुए हैं, कोई अपनी ज़मीन पर, कोई अपने कारोबार पर, कोई अपने फ़न पर, कोई अपनी सिह़्ह़त पर अल ग़रज़ हर मख़्लूक़ अपनी मिष्ल मख़्लूक़ पर तवक्कुल किये हुए है तो मैं ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के इस फ़रमान की त़रफ़ तवज्जोह की :

وَ مَنْ يَّتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ فَهُوَ حَسْبُهٗ ؕ

(پ۲۸، الطلاق:۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और जो **अल्लाह** पर भरोसा करे तो वोह उसे काफ़ी है ।*

लिहाज़ा मैं ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर तवक्कुल कर लिया और वोही मुझे काफ़ी है ।"

ह़ज़रते सय्यिदुना शक़ीक़ बल्ख़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى ने फ़रमाया : "ऐ ह़ातिम ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम्हें तौफ़ीक़ दे ! बेशक मैं ने तोरैत, इन्जिल, ज़बूर और क़ुरआने ह़कीम में ग़ौरो फ़िक्र किया तो भलाई और दियानत की तमाम अक़्साम को इस त़रह़ पाया कि वोह तमाम इन्ही आठ बातों के गिर्द घूमती हैं । जो इन पर अ़मल कर लेगा वोह चारों (आस्मानी) किताबों पर आ़मिल हो जाएगा ।"

अल ग़रज़ ! उ़-लमाए आख़िरत ही इस त़रह़ का इ़ल्म ह़ासिल करने और इसे समझने का एहतिमाम करते हैं जब कि उ़-लमाए दुन्या तो उस चीज़ में मश्ग़ूल होते हैं जिस से माल व जाह का हुसूल आसान हो और उन जैसे उ़लूम को छोड़ देते हैं जिन के ज़रीए अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने तमाम अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को मबऊ़ष फ़रमाया। ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ह्ह़ाक बिन मुज़ाह़िम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْحَاكِم बयान करते हैं कि "मैं ने सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن का ज़माना पाया है वोह एक दूसरे से तक़्वा के इ़लावा कुछ नहीं सीखते थे और अब लोग इ़ल्मे कलाम के सिवा कुछ नहीं सीखते।"(1)

﴾4﴿.....उ़-लमाए आख़िरत की एक अ़लामत येह है कि ऐसा आ़लिम खाने पीने की अश्या में आसूदगी, लिबास में ज़ैबाइश, घरेलू सामान और रिहाइश के मकान में ख़ूब सूरती की त़रफ़ माइल न हो बल्कि इन तमाम चीज़ों में मियाना रवी अपनाए, इस में सलफ़े सालेह़ीन की मुशाबहत इख़्तियार करे और कम से कम पर क़नाअ़त का ज़ेह्न रखे। पस जब उस की तवज्जोह कमी की जानिब बढ़ेगी तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ उस का कुर्ब भी जियादा होगा और उ़-लमाए आख़िरत में उस का मक़ाम बुलन्द होगा।

सय्यिदुना ह़ातिम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْحَاكِم का अन्दाज़े नसीह़त :

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़ातिमे असम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم के शागिर्द ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अ़ब्दुल्लाह ख़वास عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الرَّزَّاق से मन्क़ूल येह हिकायत इस की गवाह है। फ़रमाते हैं : मैं ह़ज़रते सय्यिदुना ह़ातिमे असम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم के साथ (ख़ुरासान के बड़े शहर) रै की त़रफ़ गया। हमारे साथ 320 आदमी थे। हम ह़ज का इरादा रखते थे। सब ने ऊनी कम्बल ओढ़े हुए थे। किसी के पास भी तौशादान और खाना नहीं था। "रै" मक़ाम पर पहुंच कर हम एक ताजिर के पास गए जो तंगदस्त था लेकिन मिस्कीनों को दोस्त रखता था। उस रात उस ने हमारी ज़ियाफ़त की। अगले दिन उस ने ह़ज़रते सय्यिदुना ह़ातिमे असम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم से कहा कि "अगर आप को कोई ह़ाजत हो तो फ़रमाइये क्यूंकि एक फ़क़ीह बीमार हैं मैं ने उन की इ़यादत को जाना है।" आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया : "मरीज़ की इ़यादत तो षवाब का काम है और फ़क़ीह की ज़ियारत करना भी इ़बादत है। चलो, मैं भी तुम्हारे साथ चलता हूं।" वोह बीमार फ़क़ीह रै का क़ाज़ी मुह़म्मद बिन मक़ातिल राज़ी था। जब हम उस के दरवाज़े पर पहुंचे तो बुलन्द और ख़ूब सूरत मह़ल देख कर ह़ज़रते सय्यिदुना ह़ातिमे असम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم मुतअ़ज्जिब हो कर फ़रमाने लगे : "आ़लिम का

(1) ......قوت القلوب، الفصل الحادی والثلاثون: کتاب العلم وتفضیله، ج ۱، ص ۲۳۹۔

दरवाज़ा और इस त़रह़ का ?'' इजाज़त मिली, अन्दर गए तो देखा कि एक वसीअ़ व अ़रीज़ और उ़म्दा व ख़ूब सूरत घर है। उस में पर्दे लटक रहे हैं। आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تعالٰی عَلَیْہ सोच में पड़ गए। फिर क़ाज़ी की मजलिस में पहुंचे तो देखा कि क़ाज़ी एक नर्म बिछौने पर आराम फ़रमा है और सर की जानिब एक ग़ुलाम हाथ में पंखा लिये मौजूद है। ज़ियारत की ग़रज़ से आने वाले ताजिर ने सर के पास बैठ कर ह़ालत दरयाफ़्त की जब कि ह़ज़रते सय्यिदुना ह़ातिमे असम عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْاَکْرَم खड़े रहे। इब्ने मक़ातिल ने आप को बैठने का इशारा किया लेकिन आप न बैठे। उस ने कहा : ''शायद आप को कोई ह़ाजत है ?'' आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تعالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया : ''हां !'' पूछा : ''क्या ह़ाजत है ?'' फ़रमाया : ''एक मस्अला पूछना चाहता हूं।'' कहा :''पूछिये।'' फ़रमाया : ''पहले सीधे हो कर बैठ जाएं फिर पूछूंगा।''

चुनान्चे, क़ाज़ी सीधा हो कर बैठ गया। आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تعالٰی عَلَیْہ ने पूछा : ''तुम ने इ़ल्म किस से ह़ासिल किया है ?'' जवाब दिया : ''मो'तबर उ़-लमा से।'' पूछा : ''उन्हों ने किस से सीखा ?'' जवाब दिया : सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تعالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن से।'' पूछा : ''उन्हों ने किस से सिखा ?'' कहा : रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से।'' पूछा : ''ह़ुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने किस से ?'' जवाब दिया : ''ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्राईल عَلَیْہِ السَّلَام के वासित़े से ख़ुदाए बुज़ुर्ग व बरतर से।'' ह़ज़रते सय्यिदुना ह़ातिमे असम عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْاَکْرَم ने फ़रमाया : ''जो इ़ल्म ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्राईल عَلَیْہِ السَّلَام ने ख़ालिक़े काइनात عَزَّوَجَلَّ से ले कर मुअ़ल्लिमे काइनात صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم तक पहुंचाया, आप صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपने सह़ाबा को अ़त़ा फ़रमाया, सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تعالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن ने मो'तबर उ़-लमा को बताया और मो'तबर उ़-लमा ने तुम्हें सिखाया क्या तुम ने उस में येह सुना है कि जिस के घर की बुलन्दी और वुस्अ़त ज़ियादा होगी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हां उस का मर्तबा ज़ियादा होगा ?'' उस ने कहा : ''नहीं, मैं ने ऐसा नहीं सुना।'' आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تعالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया : ''फिर कैसा सुना है ?'' जवाब दिया : ''मैं ने सुना है कि जो दुन्या से बे रग़बती और आख़िरत में रग़बत रखते हुए मिस्कीनों से मह़ब्बत और आख़िरत की तय्यारी करेगा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हां उस का मर्तबा बुलन्द होगा।'' ह़ज़रते सय्यिदुना ह़ातिमे असम عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْاَکْرَم ने पूछा : ''फिर तुम ने किस की पैरवी की, मह़बूबे ख़ुदा صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم और सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تعالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن की या फ़िरऔ़न और नमरूद की जिन्हों ने सब से पहले चूने और ईंट से पक्का मकान बनाया। ऐ उ़-लमाए सू ! तुम जैसों को देख कर दुन्या से रग़बत रखने वाला जाहिल ह़रीस कहता है कि जब आ़लिम

की येह ह़ालत है तो मैं इस से बुरा क्यूं न बनूं ।" येह कह कर आप رَحْمَةُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ वहां से तशरीफ़ ले गए और इब्ने मक़ातिल का मरज़ और बढ़ गया। वहां के लोगों को इन के दरमियान होने वाली गुफ़्तगू का पता चला तो उन्हों ने ह़ज़रते सय्यिदुना ह़ातिमे असम عَلَیْہِ رَحْمَةُ اللّٰہِ الْاَکْرَم से अ़र्ज़ की : "क़ज़्वीन में त़नाफ़िसी इन से बड़ा मालदार है ।"

नसीह़त का अनोखा अन्दाज़ :

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़ातिमे असम عَلَیْہِ رَحْمَةُ اللّٰہِ الْاَکْرَم क़स्दन वहां चले गए। त़नाफ़िसी के पास पहुंचे तो कहा : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम पर रह़्म फ़रमाए ! मैं एक अ़जमी शख़्स हूं, चाहता हूं कि तुम मुझे मेरे दीन की इब्तिदा और नमाज़ की चाबी सिखाओ या'नी मैं नमाज़ के लिये वुज़ू किस त़रह़ करूं ?" त़नाफ़िसी ने कहा : "अच्छा, बहुत बेहतर।" फिर ग़ुलाम से बरतन में पानी लाने को कहा, पानी पेश किया गया तो त़नाफ़िसी ने बैठ कर वुज़ू किया और तीन तीन मरतबा आ'ज़ा धोए फिर कहा : "इस त़रह़ वुज़ू किया करो । ह़ज़रते सय्यिदुना ह़ातिमे असम عَلَیْہِ رَحْمَةُ اللّٰہِ الْاَکْرَم ने कहा : "तुम अपनी जगह ठहरो ताकि मैं तुम्हारे सामने वुज़ू करूं और मेरा मक़्सद पूरा हो जाए।" वोह ठहर गया। आप رَحْمَةُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ ने बैठ कर वुज़ू शुरूअ़ किया और अपने बाज़ूओं को चार-चार मरतबा धोया। त़नाफ़िसी ने कहा : "ऐ शख़्स ! तुम ने इसराफ़ किया है ।" पूछा : "किस चीज़ में ?" कहा : "तुम ने अपने बाज़ू चार मरतबा धोए हैं ।" ह़ज़रते सय्यिदुना ह़ातिमे असम عَلَیْہِ رَحْمَةُ اللّٰہِ الْاَکْرَم ने कहा ! سُبْحَانَ اللّٰہِ الْعَظِیْم मैं पानी के एक चुल्लू में इसराफ़ का मुर्तकिब हो गया और तुम ने येह जो इतना कुछ जम्अ़ कर रखा है, येह इसराफ़ नहीं ?" त़नाफ़िसी समझ गया कि इन का मक़्सद सीखना नहीं बल्कि येही बताना था। फिर वोह अपने घर में दाख़िल हो गया और 40 दिन तक लोगों के सामने न आया।

तीन ख़स्लतें :

जब ह़ज़रते सय्यिदुना ह़ातिमे असम عَلَیْہِ رَحْمَةُ اللّٰہِ الْاَکْرَم बग़दाद तशरीफ़ लाए तो वहां के लोग आप के पास जम्अ़ हो कर कहने लगे : "ऐ अबू अ़ब्दुर्रह़मान عَلَیْہِ رَحْمَةُالرَّحْمٰن आप एक अ़जमी शख़्स है और रुक रुक कर बात करते हैं लेकिन इस के बा वुजूद जिस से भी बात करते हैं उसे ला जवाब कर देते हैं।" आप رَحْمَةُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया : "मेरी तीन ख़स्लतें हैं जिन्हें मैं अपने मुक़ाबले पर ज़ाहिर करता हूं : (1).....जब मेरा मुक़ाबिल दुरुस्त हो तो मैं ख़ुश होता हूं। (2).....ग़लती करे तो ग़मगीन होता हूं (3).....अपने आप को उस से मह़फ़ूज़ रखता हूं कि उसे अपनी जहालत दिखाऊं ।"

दुन्या से बचने का त़रीक़ा :

जब येह बात ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अह़मद बिन ह़म्बल عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَوَّل को पहुंची तो उन्हों ने फ़रमाया : "वाह ! कितने समझदार हैं। हमें भी उन के पास ले चलो।" उन के हां पहुंच कर पूछा : "ऐ अ़ब्दुर्रह़मान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن दुन्या से कैसे बचा जा सकता है ?" ह़ज़रते सय्यिदुना ह़ातिमे असम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم ने जवाब दिया : "ऐ अबू अ़ब्दुल्लाह ! तुम्हें चार ख़स्लतें ह़ासिल हो जाएं तो तुम दुन्या से मह़फ़ूज़ रह सकते हो : (1)....लोगों की जहालत को मुआ़फ़ कर दो (2).....अपनी जहालत को उन से रोक लो (3).....अपनी चीज़ उन पर ख़र्च करो और (4).....उन की चीज़ों से मायूस हो जाओ। जब ऐसे हो जाओगे, तो दुन्या से बच जाओगे।"

येह तो फ़िरऔ़न का शहर है :

फिर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه सूए मदीना चल दिये। वहां पहुंचे तो अहले मदीना ने पुर जोश इस्तिक़्बाल किया। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने पूछा : "ऐ लोगो ! येह कौन सा शहर है ?" लोगों ने अ़र्ज़ की : "येह मदीनतुर्रसूल है।" पूछा : "तो रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का मह़ल कहां है, ताकि मैं उस में नमाज़ पढ़ूं ?" लोगों ने अ़र्ज़ की : "ह़ुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का मह़ल नहीं था बल्कि एक घर था जो ज़मीन से मिला हुवा था।" फिर फ़रमाया : "तो सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن के मह़ल्लात कहां हैं ?" अ़र्ज़ की : "उन के मह़ल्लात नहीं थे वोह तो ज़मीन से मिले हुए घरों में रहते थे।" ह़ज़रते सय्यिदुना ह़ातिमे असम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم ने फ़रमाया : "येह तो फ़िरऔ़न का शहर है !" लोगों ने आप को पकड़ कर ह़ाकिमे वक़्त के सामने पेश कर दिया और कहा कि "येह अ़जमी शख़्स कहता है कि येह फ़िरऔ़न का शहर है।" ह़ाकिम ने आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه से वजह पूछी तो आप ने जवाब दिया : "मुझ पर जल्दी न करो, मैं एक अ़जमी मुसाफ़िर शख़्स हूं, शहर में दाख़िल हुवा तो मैं ने पूछा : येह कौन सा शहर है।" तो लोगों ने कहा : येह "मदीनतुर्रसूल है।" फिर पूछा : "इन का मह़ल कहा है।" यूं आख़िर तक पूरा वाक़िआ़ बयान कर के कहा : **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِيْ رَسُوْلِ اللّٰهِ اُسْوَةٌ حَسَنَةٌ

(پ ۲۱، الاحزاب: ۲۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *बेशक तुम्हें रसूलुल्लाह की पैरवी बेहतर है।*

लिहाज़ा बताओ ! तुम ने किस की पैरवी की, रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की या फ़िरऔ़न की जिस ने सब से पहले चूने और ईंट का पक्का घर बनाया। फिर लोग आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه को तन्हा छोड़ कर चले गए।

येह ह़ज़रते सय्यिदुना ह़ातिमे असम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم की ह़िकायत है। नीज़ ख़स्ता ह़ाली और ज़ैबो ज़ीनत को तर्क करने पर मुश्तमिल अस्लाफ़ की मुबारक ज़िन्दगियों के कुछ गोशों का बयान उन के मक़ाम पर आएगा जो उ़-लमाए आख़िरत की इस निशानी की ताईद करता है।

इस में तह़क़ीक़ येह है कि मुबाह़ चीज़ों के साथ ज़ीनत इख़्तियार करना ह़राम नहीं लेकिन इस में ज़ियादा दिलचस्पी इस से मानूस होने का सबब है जिस की वजह से इसे छोड़ना दुश्वार हो जाता है। फिर येह कि मुसलसल ज़ीनत इख़्तियार किये रहने के लिये अस्बाब का ह़ुसूल ज़रूरी है और आ़म तौ़र पर इन के ह़ुसूल के लिये कई गुनाहों का इर्तिकाब करना पड़ता है। मषलन चापलूसी, जाइज़ व ना जाइज़ हर काम में लोगों की रिआ़यत, दिखलावा और दीगर कई ममनूअ़ काम करने पड़ते हैं इस लिये एह़तियात़ इसी में है कि ज़ैबो ज़ीनत से इजतिनाब किया जाए क्यूं कि जो दुन्या में मश्ग़ूल हो जाता है वोह इस से बिल्कुल मह़फ़ूज़ नहीं रह सकता और अगर इस में ज़ियादा मश्ग़ूलिय्यत के बा वुजूद भी इस से बचना मुमकिन होता तो अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ के प्यारे ह़बीब, ह़बीबे लबीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم तर्के दुन्या में इतना मुबालग़ा न फ़रमाते ह़त्ता कि आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने नक़्शो निगार वाली क़मीस उतार दी नीज़ दौराने ख़ुत़बा सोने की अंगूठी उतार दी इस क़िस्म के और भी वाक़िआ़त हैं जिन का बयान आगे आएगा।

सय्यिदुना यह़्या बिन यज़ीद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمَجِيْد का ख़त़ :

मन्क़ूल है कि ह़ज़रते सय्यिदुना यह़्या बिन यज़ीद नौफ़िली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى ने ह़ज़रते सय्यिदुना मालिक बिन अनस رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه को ख़त़ लिखा (मज़मून कुछ यूं था) :

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ وَصَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى رَسُوْلِهٖ مُحَمَّدٍ فِى الْاَوَّلِيْنَ وَالْاٰخِرِيْنَ،

यह़्या बिन यज़ीद बिन अ़ब्दुल मलिक की त़रफ़ से मालिक बिन अनस के नाम ख़त़

اَمَّا بَعْدُ! मुझे ख़बर पहुंची है कि आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه बारीक कपड़े पहनते, चपाती खाते, नर्म निशस्त पर बैठते और अपने दरवाज़े पर दरबान बिठाते हैं ह़ालांकि आप इ़ल्म की मजलिस क़ाइम करते हैं। लोग सफ़र कर के आप के पास आते हैं। आप को अपना पेशवा मानते और आप की बात को पसन्द करते हैं। लिहाज़ा ऐ मालिक ! अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ से डरें और आ़जिज़ी इख़्तियार करें। मैं ने आप की त़रफ़ नसीह़त भरा ख़त़ लिखा है जिस का इ़ल्म अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ के सिवा किसी को नहीं।

सय्यिदुना इमाम मालिक عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْخَالِق का जवाब :

आप رَحْمَةُاللهِ تعالٰى عَلَيه ने जवाब में लिखा :

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ وَصَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّدٍ وَاٰلِهٖ وَصَحْبِهٖ وَسَلَّم

मालिक बिन अनस की त़रफ़ से यह़्या बिन यज़ीद को اَلسَّلَامُ عَلَيْكُم

आप का ख़त़ मौसूल हुवा, इस में मेरे लिये नसीह़त, शफ़्क़त और अदब है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आप को तक़्वा पर इस्तिक़ामत अ़त़ा फ़रमाए और इस नसीह़त का बेहतरीन सिला दे। मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से तौफ़ीक़ का सुवाल करता हूं कि नेकी करने की क़ुव्वत और गुनाहों से बचने की त़ाक़त, अ़ज़्मत व बुलन्दी वाले परवर दगार عَزَّوَجَلَّ ही की मदद से है। आप ने मेरी जिन बातों का तज़्किरा किया कि मैं बारीक कपड़े पहनता, चपाती खाता, दरबान बिठाता और नर्म निशस्त पर बैठता हूं येह सब मैं करता हूं और मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से मुआ़फ़ी मांगता हूं। बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया है :

قُلْ مَنْ حَرَّمَ زِيْنَةَ اللّٰهِ الَّتِیْٓ اَخْرَجَ لِعِبَادِهٖ وَالطَّيِّبٰتِ مِنَ الرِّزْقِ ؕ (پ۸،الاعراف:۳۲)

*तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तुम फ़रमाओ ! किस ने ह़राम की **अल्लाह** की वोह ज़ीनत जो उस ने अपने बन्दों के लिये निकाली और पाक रिज़्क़।*

बेशक मैं जानता हूं कि इसे तर्क करना इख़्तियार करने से बेहतर है। आप हमें ख़त़ लिखना न छोड़ियेगा हम भी आप को ख़त़ लिखते रहेंगे। وَالسَّلَام

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْخَالِق का इन्साफ़ तो देखिये कि इस बात का ए'तिराफ़ भी किया कि इसे तर्क करना इख़्तियार करने से बेहतर है और इस के जवाज़ का फ़तवा भी दिया। आप رَحْمَةُاللهِ تعالٰى عَلَيه दोनों बातों में सच्चे थे। ऐसे अ़ज़ीमुल मन्सब शख़्स ने इस त़रह़ नसीह़त क़बूल करने और ए'तिराफ़ करने में इन्साफ़ से काम लिया और अपने नफ़्स को जाइज़ कामों की ह़ुदूद जानने पर भी पक्का कर लिया ताकि वोह उन्हें चापलूसी, दिखलावे और दूसरी नापसन्दीदा बातों की त़रफ़ तजावुज़ की राह पर न ले जाए जब कि कोई दूसरा इस त़रह़ नहीं कर सकता। पस मुबाह़ चीज़ों से लुत़्फ़ अन्दोज़ होने की त़रफ़ माइल होने में बड़ा ख़त़रा है और येह चीज़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ख़ौफ़ व ख़शिय्यत से दूर है जब कि रब्बानी उ़-लमा की ख़ासिय्यत ख़शिय्यते इलाही है और ख़शिय्यत की ख़ासिय्यत है कि ख़त़रे व अन्देशे वाली जगहों से दूर रहा जाए।

﴾5﴿.....उ़-लमाए आख़िरत की एक अ़लामत येह है कि आ़लिम हुक्मरानों से दूर रहे, जब तक उन से भागने की राह मिले हरगिज़ उन के पास न जाए, बल्कि उन की मुलाक़ात से भी एह़तिराज़ करे अगर्चे वोह इस के पास आएं क्यूंकि दुन्या मिठी और तरो ताज़ा है और इस की लगाम हुक्मरानों के

हाथ में है। उन से मिलने वाला उन की रिज़ा व ख़ुश्नूदी पाने और उन के दिल अपनी त़रफ़ माइल करने के लिये तकल्लुफ़ात से नहीं बच सकता बा वुजूद येह कि वोह ज़ालिम होते हैं। हर दीनदार के लिये ज़रूरी है कि उन पर ए'तिराज़ करे, उन के मज़ालिम और बुरे अफ़्आ़ल ज़ाहिर कर के उन के दिल तंग करे क्यूंकि उन के पास जाने वाला या तो उन की ज़ैबो ज़ीनत को देख कर ख़ुद पर अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ के एह़सानात को ह़क़ीर समझता है या उन पर ए'तिराज़ करने से ख़ामोश रह कर मुनाफ़क़त इख़्तियार करता है या उन की ख़ुश्नूदी की ख़ात़िर अपनी गुफ़्तगू में तकल्लुफ़ करता और इन की ह़ालत को अच्छा बताता है ह़ालांकि येह खुला झूट है या उन की दुन्या से कुछ मिल जाने की तम्अ़ करता है और येह ह़राम है। ह़लाल व ह़राम के बयान में इस बात का ज़िक्र आएगा कि हुक्मरानों के अम्वाल से कौन कौन से अ़तिय्यात व इन्आ़मात लेना जाइज़ हैं और कौन से नाजाइज़ ? मुख़्तसर येह कि उन से मैल जोल कई बुराइयों की चाबी है और उ़-लमाए आख़िरत का रास्ता एह़तियात़ है।

आक़ाए दो जहां, मह़बूबे रह़मान صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जो बनबासी हुवा (देहात में रिहाइश इख़्तियार की) वोह सख़्त दिल हो गया। जो शिकार के पीछे रहा वोह ग़ाफ़िल हो गया और जो बादशाह के पास पहुंचा वोह फ़ितने में पड़ा।"(1)(2)

---

1 ......المسند للامام احمد بن حنبل، مسند ابی هريرة، الحديث: ٩٦٨٩، ج٣، ص ٤٤٣۔

2 ....मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْمَنَّان मिरआतुल मनाजीह़, जि. 5 स. 360 पर इस के तह़्त फ़रमाते हैं : "देहात के बाशिन्दे अकषर सख़्त दिल होते हैं रब्ब तआ़ला फ़रमाता है : اَلْاَعْرَابُ اَشَدُّ كُفْرًا وَّ نِفَاقًا وَّ اَجْدَرُ اَلَّا يَعْلَمُوْا (پ ١١، التوبة: ٩٧) क्यूंकि इन्हें इल्म की रोशनी उ़-लमा की सोह़बत नहीं नसीब होती, लिहाज़ा ख़ुद आ़लिमे दीन जो देहात में रहें और वोह देहात वाले जो उ़-लमा से तअ़ल्लुक़ रखें और शहर में आते जाते रहें वोह इस हुक्म से ख़ारिज हैं (और) जो शिकार का शग़ल अपना वत़ीरा बना ले कि मह़ज़ शोक़िया शिकार खेलता रहे वोह अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ के ज़िक्र नमाज़ व जमाअ़ते जुमुआ़, रिक़्क़ते क़ल्ब से मह़रूम रहता है हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने कभी शिकार न किया (اشعہ) बा'ज़ सह़ाबा ने शिकार किया है मगर शिकार करना और है और शिकार का मशग़ला वोह भी मह़ज़ शोक़िया कुछ और। शिकार का ज़िक्र तो क़ुरआने करीम में है यहां मशग़ले शोक़िया का ज़िक्र है लिहाज़ा येह ह़दीष हुक्मे क़ुरआन के ख़िलाफ़ नहीं (और) जो इ़ज़्ज़त व दौलत कमाने के लिये ज़ालिम बादशाह का दरबारी और ह़ाज़िर बाश बना वोह अपना दीन या दुन्या तबाह कर लेगा क्यूंकि अगर वोह उस के ज़ुल्म की ह़िमायत करेगा तो अपना दीन बरबाद कर लेगा, और अगर उस की मुख़ालफ़त करेगा तो अपनी दुन्या बरबाद कर लेगा, लिहाज़ा जो कोई आ़दिल बादशाह का मुसाह़िब बने उस के अ़द्ल की ह़िमायत करने तक में दीन का रवाज देने को और उसे अच्छे मश्वरे दे तो वोह आ'ला दर्जे का मुजाहिद है, यूं ही ज़ालिम बादशाह की इस्लाह़ के लिये उस के साथ रहे तो वोह ग़ाज़ी है मगर ऐसा बहुत मुश्किल है लिहाज़ा (अमीरुल मोअमिनीन) ह़ज़रते अ़ली (كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم) को ख़ुलफ़ाए राशिदीन का मुसाह़िब बनना और ह़ज़रते इमाम अबू यूसुफ़ (رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه) का सुल्तान हारून रशीद का क़ाज़ियुल क़ुज़्ज़ा बनना गुनाह न था षवाब था, इमाम अबू यूसुफ़ की येह क़ज़ा हनफ़ी मज़हब की इशाअ़त का ज़रीआ़ बनी।"

एक रिवायत में है कि “अ़न क़रीब तुम पर ऐसे हुक्मरान होंगे जिन में अच्छी बातें भी होंगी और बुरी भी। पस जिस ने (उन का) इन्कार किया वोह बरी हो गया और जिस ने नापसन्द किया वोह भी बच गया लेकिन जो (उन से) राज़ी रहा और पैरवी की उसे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अपनी रह़मत से दूर कर देगा।” अ़र्ज़ की गई : “क्या हम उन से लड़ाई न करें ?” इरशाद फ़रमाया : “नहीं, जब तक वोह नमाज़ पढ़ते रहें।”(1)

ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान सौरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى ने फ़रमाया : जहन्नम में एक वादी है जिस में सिर्फ़ वोह उ़-लमा रहेंगे जो बादशाहों की मुलाक़ात को जाते हैं।(2)

फ़ित्नों की जगहें :

ह़ज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने फ़रमाया : “फ़ित्ने की जगहों से बचो।” किसी ने पूछा : “वोह कौन सी जगहें हैं ?” फ़रमाया : “हुक्मरानों के दरवाज़े, तुम में से कोई शख़्स ह़ाकिम के पास जाता है तो उस के झूट को सच बताता है और उस की शान में वोह बातें कहता है जो उस में नहीं होतीं।”(3)

उ़-लमा बन्दों पर रसूलों के अमीन हैं :

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से मरवी है कि नबियों के सुल्त़ान, रह़मते आ़लमिय्यान صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : “उ़-लमा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के बन्दों पर रसूलों के अमीन होते हैं जब तक वोह हुक्मरानों से मैल जोल न रखें और जब वोह ऐसा करेंगे तो वोह रसूलों के साथ ख़ियानत के मुर्तकिब होंगे। पस तुम उन (के शर) से डरो और उन से अ़लाहि़दा रहो।”(4)

---

1 ......سنن الترمذی، کتاب الفتن، باب۷۸، الحدیث:۲۲۷۲، ج۴، ص۱۱۷، دون قوله:ابعد اللّٰه۔
جامع بیان العلم وفضله، باب ذم العالم علی مداخلة السلطان الظالم، الحدیث:۷۰۲، ص۲۲۶۔

2 ......تفسیر النسفی، سورة هود، تحت الآیة:۱۱۳، ص۵۱۵۔

3 ......المصنف لعبدالرزاق، کتاب الجامع، باب ابواب السلطان، الحدیث:۲۰۸۰۹، ج۱۰، ص۲۸۰۔

4 ......جمع الجوامع، قسم الاقوال، حرف العین، الحدیث:۱۴۵۲۹، ج۵، ص۲۰۱۔
تفسیرروح البیان، سورة هود، تحت الآیة:۱۱۳، ج۴، ص۱۹۶۔

किसी ने ह़ज़रते सय्यिदुना आ'मश رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से अ़र्ज़ की : “हुज़ूर ! आप ने अपने कसीर शागिर्दों के ज़रीए़ इ़ल्म को ज़िन्दा कर दिया है।” फ़रमाया : “जल्दी न करो, इन में से एक तिहाई तो इ़ल्म के फ़वाइद ह़ासिल होने से पहले ही मर जाते हैं, एक तिहाई हुक्मरानों के दरवाज़ों से चिमट जाते हैं, वोह लोगों में बद तरीन हैं और बाक़ी एक तिहाई में से कम ही हैं जो फ़लाह़ पाते हैं।”(1)

ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन मुसय्यब رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया : “जब तुम आ़लिम को उमरा के पास आते जाते देखो तो उस से एह़तिराज़ करो क्यूंकि वोह चोर है।”(2)

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अवज़ाई رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नज़दीक उस आ़लिम से ज़ियादा नापसन्द कोई चीज़ नहीं जो हुक्काम के किसी कारन्दे से मुलाक़ात करता है।”(3)

बद तरीन उ़-लमा और बेहतरीन उमरा :

हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : “बदतरीन उ़-लमा वोह हैं जो उमरा के पास जाते हैं और बेहतरीन उमरा वोह हैं जो उ़-लमा के पास जाते हैं।”(4)

आग के समन्दर में ग़ौते लगाने वाला :

ह़ज़रते सय्यिदुना मकहूल दिमिश्क़ी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَلِی ने फ़रमाया : “जिस ने क़ुरआन सीखा और दीन का इ़ल्म ह़ासिल किया फिर ह़ाकिम का मुसाह़िब बन गया, उस की ख़ुशामद की, उस के माल की त़म्अ़ रखी तो वोह अपने गुनाहों की ता'दाद के बराबर जहन्नम की आग के समन्दर में ग़ौते लगाएगा।”(5)

---

1 ......جامع بیان العلم وفضلہ، باب ذم العالم علی مداخلۃ السلطان الظالم، ص ۲۳۲۔

2 ......الاداب الشرعیۃ الکبری للمقدسی، فصل انقباض العلماء المتقین......الخ، ج۴، ص ۱۷۴۔
فردوس الاخبار للدیلمی، باب الالف، الحدیث: ۱۰۸۳، ج ۱، ص ۱۶۴، بتغیرٍ،عن ابی ہریرۃ۔

3 ......تفسیر النسفی، سورۃ ہود، تحت الآیۃ: ۱۱۳، ص ۵۱۵۔
الکامل فی ضعفاء الرجال، الرقم: ۲۷۶ بکیر بن شہاب، ج ۲، ص ۲۰۴، عن ابی ہریرۃ قال قال رسول اللّٰہ۔

4 ......طبقات الشافعیۃ الکبری، الطبقۃ الخامسۃ، من اصحاب الامام المطلبی، ج ۶، ص ۲۹۰۔

5 ......فردوس الاخبار للدیلمی، باب الالف، الحدیث ۱۱۴۱، ج ۱، ص ۱۷۱، بتغیرٍ،عن عباد بن جبل۔

उ़-लमाए बनी इस्राईल से ज़ियादा बुरे :

ह़ज़रते सय्यिदुना समनून رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : "वोह आ़लिम कितना बुरा है कि उस के पास कोई जाए तो उसे न पाए और जब उस के बारे में पूछा जाए तो बताया जाए कि वोह ह़ाकिम के पास है।"(1)

मज़ीद फ़रमाते हैं : "मैं येह कहते हुए सुना करता था कि जब तुम ऐसे आ़लिम को देखो जो दुन्या से मह़ब्बत करता है तो उसे अपने दीन के मुआ़मले में मशकूक जानो ह़त्ता कि मुझे इस का तजरिबा हो गया कि मैं जब कभी भी ह़ाकिम के पास गया और वहां से निकलने के बा'द अपने नफ़्स का मुह़ासबा किया तो मैं ने इस में बहुत दूरी पाई ह़ालांकि मैं जिस सख़्ती और दुरुस्ती से उस के साथ पेश आता हूं और उस की ख़्वाहिश की मुख़ालफ़त करता हूं वोह तुम्हारे सामने है और मैं पसन्द करता हूं कि ह़ाकिम के पास जाने से बच जाऊं ह़ालांकि न मैं उस से कोई चीज़ लेता हूं और न पानी का कोई घूंट पीता हूं।"

फिर फ़रमाया : "हमारे ज़माने के उ़-लमा बनी इस्राईल के उ़-लमा से ज़ियादा बुरे हैं कि ह़ाकिम को रुख़्सतें और वोह बातें बताते हैं जो उन की ख़्वाहिश के मुवाफ़िक़ हों और अगर वोह उन्हें ऐसी बातें बताएं जो उन के ख़िलाफ़ हों और इन में उन की नजात हो तो हुक्मरान उन्हें बोझ जानें और उन का अपने पास आना नापसन्द करें ह़ालांकि येह बात उन के रब्ब عَزَّوَجَلَّ के हां उन के लिये नजात का ज़रीआ़ है।"

हुक्मरानों की सोह़बत मुनाफ़क़त का बाइ़स है :

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَیْهِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی ने फ़रमाया : तुम से पहले लोगों में एक साह़िब थे जो इस्लाम में सबक़त रखते थे और सह़ाबिये रसूल थे। ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : इस से ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْهُ मुराद हैं। फ़रमाया : वोह हुक्मरानों के पास नहीं जाते थे और उन से दूर रहते थे। उन के बेटों ने उन से अ़र्ज़ की : "येह लोग जो सह़ाबिय्यत और इस्लाम में मुक़द्दम होने के ए'तिबार से आप की मिष्ल नहीं हैं वोह हुक्मरानों के पास जाते हैं अगर आप भी जाएं तो क्या ह़रज है?" उन्हों ने फ़रमाया : "ऐ मेरे बेटो! क्या मैं उस मुर्दार दुन्या के पास जाऊं जिसे लोगों ने घेर रखा है। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़िसम! अगर मुझ से हो सका तो मैं इस में उन के साथ

---

1 ......جامع بیان العلم وفضله، باب ذم العالم علی مداخلة السلطان الظالم، تحت الحدیث:۲۱۷، ص۲۳۳۔

शरीक नहीं होऊंगा।" बेटों ने अ़र्ज़ की : "अब्बा जान ! इस त़रह़ तो हम फ़क़्रो इफ़्लास की ह़ालत में हलाक हो जाएंगे।" आप رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "ऐ मेरे बेटो ! मैं ईमान की ह़ालत में ग़रीब व कमज़ोर हो कर मर जाऊं येह मुझे ह़ालते मुनाफ़क़त में मोटा हो कर मरने से ज़ियादा पसन्द है।" ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! वोह अपने बेटों पर ग़ालिब आ गए क्यूंकि उन्हों ने जान लिया कि क़ब्र की मिट्टी गोश्त और मोटापे को तो फ़ना कर देती है मगर ईमान मह़फ़ूज़ रहता है।"(1)

इस में उस बात की त़रफ़ इशारा है कि ह़ाकिम के पास जाने वाला निफ़ाक़ से हरगिज़ नहीं बच सकता और निफ़ाक़ ईमान की ज़िद है।

ह़ज़रते सय्यिदुना जुन्दब बिन जुनादा अबू ज़र गिफ़ारी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْبَارِی ने ह़ज़रते सय्यिदुना सलमा बिन अ़म्र बिन अक्वअ़ अस्लमी رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہ से फ़रमाया : "ऐ सलमा ! बादशाहों के दरवाज़ो पर न जाया करो क्यूंकि तुम उन की दुन्या से उस वक़्त तक कुछ नहीं ले सकते जब तक वोह तुम्हारे दीन में से इस से अफ़्ज़ल न ले लें।"(2)

येह उ़-लमा के लिये बहुत बड़ा फ़ित्ना और शैत़ान के लिये उन पर ग़ालिब आने का ज़बरदस्त ज़रीआ़ है बिल ख़ुसूस जिन का अन्दाज़ मक़्बूल और कलाम शीरीं हो क्यूंकि शैत़ान उन के दिल में येह बात डालता रहता है कि तुम्हारे उन के पास जाने और उन्हें वा'ज़ करने से वोह ज़ुल्म से बा'ज़ रहेंगे और इस्लामी अह़काम जारी करेंगे ह़त्ता कि वोह समझता है कि उन के पास जाना भी दीनी काम है फिर जब वोह उन के पास जाता है तो जल्द ही उस के कलाम में नर्मी आ जाती है, वोह चापलूसी करता और बादशाह की ता'रीफ़ में मश्ग़ूल हो कर इस में मुबालग़ा करता है, इस में दीन की बरबादी है।

कहा जाता था कि "उ़-लमा जब इ़ल्म ह़ासिल करते हैं तो अ़मल में लग जाते हैं, जब अ़मल करते हैं तो मसरूफ़ हो जाते हैं, जब मसरूफ़ होते हैं तो गुमनाम हो जाते हैं, गुमनाम होते हैं तो उन्हें त़लब किया जाता है और जब उन्हें त़लब किया जाए तो भाग जाते हैं।"(3)

1 ......موسوعۃ الامام ابن ابی الدنیا، کتاب العزلۃ والانفراد، الحدیث: ۲۰۲، ج۲، ص ۵۴۴۔

2 ......المصنف لابن ابی شیبیۃ، کتاب الفتن، ماذکر فی عثمان، الحدیث: ۷۹، ج۸، ص ۶۹۸۔

3 ......المجالسۃ وجواھر العلم، الحدیث: ۳۵۳، ج۱، ص ۱۸۱۔

अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْعَزِیْز ने ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی को लिखा : मुझे उन लोगों के बारे में बताओ जिन से मैं **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के दीन पर मदद ह़ासिल करूं। ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی ने जवाब में लिखा कि दीनदार तो आप के पास आना पसन्द नहीं करेंगे और दुन्यादारों को आप पसन्द नहीं करेंगे। अलबत्ता आप मुअ़ज़्ज़ज़ लोगों को अपने साथ रखें क्यूंकि वोह अपनी इ़ज़्ज़त व शराफ़त को ख़ियानत के साथ मैला होने से बचाते हैं।"(1)

येह है अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْعَزِیْز की सीरत जो अपने ज़माने के सब से बड़े ज़ाहिद थे। जब दीनदारों के लिये इन से भी दूर रहना शर्त़ है तो फिर इन के अ़लावा किसी और की त़लब और उस के साथ रहना क्यूंकर दुरुस्त हो सकता है। अस्लाफ़े उ़-लमाए किराम मषलन ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी, ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान षौरी, ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक, ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ुज़ैल बिन अ़याज़, ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम, ह़ज़रते सय्यिदुना यूसुफ़ बिन अस्बात़ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْهِمْ اَجْمَعِیْن अहले मक्का व शाम वग़ैरा के उ़-लमाए दुन्या को इस लिये ऐ़ब लगाते हैं कि वोह दुन्या की त़रफ़ माइल होते या हुक्मरानों से मैल जोल रखते थे।

﴾6﴿.....उ़-लमाए आख़िरत की एक निशानी येह है कि ऐसा आ़लिम फ़तवा देने में जल्दी न करे बल्कि तवक़्क़ुफ़ करे और जब तक हो सके अपने आप को फ़तवा देने से बचाए। नीज़ अगर उस से ऐसी चीज़ के बारे में पूछा जाए जिसे वोह नस्से कु़रआनी या नस्से ह़दीष या इजमाअ़ या क़ियासे जली की दलील से यक़ीनी त़ौर पर जानता है तो उस के बारे में फ़तवा दे और अगर ऐसी बात पूछी जाए जिस में उसे शक है तो कह दे कि मैं नहीं जानता। अगर ऐसा मस्अला दरयाफ़्त किया जाए जिसे वोह इजतिहाद व अन्दाज़े से समझ सकता है तो भी एह़तियात़ करे, अपने आप को बचाए और अगर कोई दूसरा बताने वाला हो तो उस की त़रफ़ फैर दे, इसी में बचत है क्यूंकि इजतिहाद का ख़त़रा सर लेना बड़ी बात है।

ह़दीषे मुबारका में है कि इ़ल्म तीन हैं : "कु़रआने पाक, सुन्नते क़ाइमा और ला अदरी (या'नी मैं नहीं जानता)।"(2)

---

1 ......قوت القلوب، الفصل الحادی والثلاثون: کتاب العلم وتفضیله، ذکرفضل علم المعرفة......الخ، ج ۱، ص ۲۳۳۔

2 ......المعجم الاوسط، الحدیث: ۱۰۰۱، ج ۱، ص ۲۸۴۔

قوت القلوب، الفصل الحادی والثلاثون، کتاب العلم وتفضیله، المقام الثالث من الیقین، ج ۱، ص ۲۳۶۔

आधा इल्म :

हज़रते सय्यिदुना इमाम शा'बी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَلِى ने फ़रमाया : ला अदरी (या'नी मैं नहीं जानता), आधा इल्म है और मा'लूम न होने की सूरत में जवाब न देने वाला अज्रो षवाब में जवाब देने वाले से कम नहीं क्यूंकि ला इल्मी का ए'तिराफ़ नफ़्स पर बहुत गिरां है।"(1) नीज़ सहाबए किराम और अस्लाफ़े किराम رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن की येही आदत थी। चुनान्चे,

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन उमर رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا से जब किसी मुआमले का शरई हुक्म पूछा जाता तो वोह फ़रमाते : "उस हाकिम के पास जाओ जिस ने लोगों के मुआमलात का ज़िम्मा उठा रखा है, इसे भी उस की गर्दन में डालो।"(2)

आलिम की ढाल :

हज़रते सय्यिदुना इब्ने मसऊद رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने फ़रमाया : जो लोगों के हर सुवाल का जवाब देता है वोह मजनूं है।(3) और ला अदरी (या'नी मैं नहीं जानता) आलिम की ढाल है। क्यूंकि अगर उस ने ग़लत मस्अला बता दिया तो हलाकत में मुब्तला होगा।(4)

आलिम की ख़ामोशी शैतान की बेहोशी :

हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم ने फ़रमाया : शैतान पर उस आलिम से सख़्त कोई चीज़ नहीं जो बा'ज़ इल्म बयान करता है और बा'ज़ में ख़ामोश रहता है। वोह कहता है : इस की तरफ़ देखो ! इस की ख़ामोशी मुझ पर इस के बोलने से ज़ियादा सख़्त है।(5)

---

1 ......سنن الدارمی، المقدمة، باب فی الذی یفتی الناس فی کل مایستفتی، الحدیث:۱۸۰، ج ۱، ص ۷۴۔
قوت القلوب، الفصل الحادی و الثلاثون: کتاب اعلم و تفضیله، المقام الثالث من الیقین، ج ۱، ص ۲۳۶، باختصارٍ۔

2 ......قوت القلوب، الفصل الحادی و الثلاثون، کتاب العلم و تفضیله، ذکر فضل علم المعرفة......الخ، ج ۱، ص ۲۲۸۔

3 ......سنن الدارمی، المقدمة، باب فی الذی یفتی الناس فی کل مایستفتی،الحدیث: ۱۷۱، ج ۱، ص ۷۳۔
المعجم الکبیر، الحدیث:۸۹۲۳، ج ۹، ص ۱۸۸۔

4 ......الأمالی فی آثارالصحابة لعبد الرزاق الصنعانی، الحدیث: ۱۶۲، ص ۱۰۴۔
تاریخ دمشق لابن عساکر، الرقم:۷۰۴ اسماعیل بن ابان، ج ۸، ص ۳۶۳، عن مالک بن انس۔

5 ......جامع بیان العلم وفضله، باب جامع فی آداب العالم و المتعلم،الحدیث: ۵۶۳، ص ۱۷۱، بتغیرٍ۔
قوت القلوب، الفصل السابع و العشرون، کتاب اساس المریدین، ج ۱، ص ۱۷۲۔

बा'ज़ उ़-लमा ने अबदाल का ता'रूफ़ करवाते हुए कहा : उन का खाना फ़ाक़ा (के वक़्त), उन की नींद ग़लबा (के वक़्त) और उन का कलाम ज़रूरत (के वक़्त) होता है।[1] या'नी जब तक उन से पूछा न जाए वोह ख़ामोश रहते हैं और जब पूछा जाए और उन्हें कोई दूसरा जवाब देने वाला मिल जाए तो भी बात नहीं करते और जब मजबूर हों तब जवाब देते हैं और वोह सुवाल से पहले बोलना शरूअ़ कर देने को कलाम की खुफ़्या शहवत शुमार करते हैं।

अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم और ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا एक शख़्स के पास से गुज़रे जो लोगों को वा'ज़ कर रहा था। दोनों ने फ़रमाया : "येह कहता है मुझे पहचानो।"[2]

बा'ज़ बुज़ुर्गों ने फ़रमाया : "आ़लिम तो वोह है कि जब उस से कोई मस्अला पूछा जाए तो उसे ऐसा लगे जैसे उस की दाढ़ निकाली जा रही है।"[3]

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا फ़रमाया करते थे : "तुम लोग हमें पुल बना कर इस से गुज़र कर जहन्नम की त़रफ़ जाना चाहते हो।"[4]

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ह़फ़्स नैशापूरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی ने फ़रमाया : "आ़लिम वोही है कि जब उस से सुवाल किया जाए तो वोह ख़ौफ़ज़दा हो कि बरोज़े क़ियामत उस से कहा जाएगा कि तुम ने कहां से जवाब दिया।"[5]

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम तमीमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَنِی से जब कोई मस्अला पूछा जाता तो रोने लगते और फ़रमाते : "तुम्हें मेरे इ़लावा कोई और नहीं मिला जो तुम्हें मेरी ज़रूरत पड़ गई।"

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू आ़लिय्या रियाह़ी, ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम और ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान षौरी (رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی) दो तीन या चन्द लोगों के सामने गुफ़्त्गू करते थे और जब लोग ज़ियादा हो जाते तो वापस चले जाते थे।

ज़मीन का बेह तरीन और बद तरीन ह़िस्सा :

मुअ़ल्लिमे काइनात, शाहे मौजूदात صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "मुझे नहीं मा'लूम कि उ़ज़ैर नबी थे या नहीं ? मैं (अपने इ़ल्म से) नहीं जानता कि तब्बअ़ ला'नती

---

1 ......قوت القلوب، الفصل الرابع عشر، فی ذکر تقسیم قیام اللیل......الخ، ج ۱، ص ۷۴۔

2 ......قوت القلوب، الفصل الحادی و الثلاثون، باب ذکر الفرق بین علماء الدنیا......الخ، ج ۱، ص ۲۶۲۔

3 ......المرجع السابق۔　4 ......المرجع السابق۔　5 ......المرجع السابق۔

है या नहीं ? और मैं (अपने इ़ल्म से) नहीं जानता कि ज़ुलक़रनैन नबी थे या नहीं ?''[1] और जब आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم से ज़मीन के सब से बेहतर और बदतर ह़िस्से के बारे में पूछा गया तो फ़रमाया : ''मैं (अपने इ़ल्म से) नहीं जानता।'' यहां तक कि ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام ह़ाज़िरे ख़िदमत हुए तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन से पूछा उन्हों ने अ़र्ज़ की : मैं नहीं जानता : यहां तक कि अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ ने आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को ख़बर दी कि ज़मीन का बेह तरीन ह़िस्सा मसाजिद और बद तरीन ह़िस्सा बाज़ार हैं।''[2]

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا से दस मसाइल पूछे जाते तो आप एक का जवाब देते और नव के बारे में ख़ामोशी इख़्तियार फ़रमाते।[3]

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا नव का जवाब देते और एक के बारे में सुकूत फ़रमाते।[4]

नीज़ ऐसे फ़ुक़हा भी हैं जो अदरी (या'नी मैं जानता हूं) से ज़ियादा ला अदरी (या'नी मैं नहीं जानता) कहा करते थे।

ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान षौरी, ह़ज़रते सय्यिदुना मालिक बिन अनस, ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अह़मद बिन ह़म्बल, ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ुज़ैल बिन अ़याज़ और ह़ज़रते सय्यिदुना बिशर बिन ह़ारिष ह़ाफ़ी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن भी इन्ही में से हैं।

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन अबी लैला رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه कहते हैं : ''मैं ने इस मस्जिद में 120 सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن को पाया जब इन में से कोई किसी से ह़दीष या मस्अला पूछता तो वोह पसन्द करते कि उन का भाई इस में किफ़ायत करे।''[5] दूसरी रिवायत के अल्फ़ाज़ यूं हैं कि ''जब इन में से किसी के सामने कोई मस्अला पेश किया जाता तो वोह इसे दूसरे की त़रफ़ भेज देते, वोह आगे दूसरे की त़रफ़ यहां तक कि वोह फिर पहले के पास आ जाता।''[6]

---

1 ......سنن ابی داود، کتاب السنة، باب فی التخییر بین الانبیاء، الحدیث:۴۶۷۴، ج۴، ص۲۸۸۔
جامع بیان العلم وفضله، باب مایلزم العالم اذاسئل عمالایدریه من وجوه العلم، الحدیث:۸۸۴۔۸۸۵، ص۳۱۱۔

2 ......جامع بیان العلم وفضله، باب مایلزم العالم اذاسئل عمالایدریه من وجوه العلم، الحدیث:۸۸۲، ص۳۱۰۔
المستدرک، کتاب العلم، باب خیرالبقاع المساجد وشرالبقاع الاسواق، الحدیث:۳۱۳، ج۱، ص۲۷۹۔

3 ......قوت القلوب، الفصل الحادی والثلاثون: کتاب العلم وتفضیله، ذکرفضل علم المعرفة......الخ، ج۱، ص۲۲۸۔

4 ......قوت القلوب، الفصل الحادی والثلاثون: کتاب العلم وتفضیله، ذکرفضل علم المعرفة......الخ، ج۱، ص۲۲۸۔

5 ......المرجع السابق۔ 6 ......المرجع السابق۔

ईषारे सह़ाबा :

मरवी है कि "अस्ह़ाबे सुफ़्फ़ा में से किसी को भुना हुवा सर पेश किया गया तो सख़्त फ़ाक़ा से होने के बावुजूद दूसरे को हदिय्या कर दिया और उन्हों ने आगे हदिय्या कर दिया यूं वोह उन के दरमियान घूमता रहा यहां तक कि फिर पहले के पास आ गया।"

लिहाज़ा तुम देखो कि अब उ़-लमा का मुआ़मला कैसे उलट हो गया है कि जिस से भागना चाहिये उसे त़लब किया जाता है और जिसे त़लब करना चाहिये उस से भागा जाता है। फ़तवा देने से एह़तिराज़ करना अच्छा है इस पर येह मुस्नद रिवायत शाहिद है। चुनान्चे,

हु़ज़ूरे अकरम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "तीन क़िस्म के लोग ही फ़तवा देते हैं (1)....ह़ाकिम (2)....या उस का नाइब (3).....या तकल्लुफ़ करने वाला।"[1]

सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن चार चीज़ों से बचा करते थे : "(1)....हुक्मरानी से (2).....वसी बनने से (3)....अमानत रखने से और (4).....फ़तवा देने से।"[2]

बा'ज़ अकाबिरीन ने कहा कि "वोह शख़्स फ़तवा देने में ज़ियादा जल्दी करता है जिस के पास इ़ल्म कम होता है और इस से बचने की ज़ियादा कोशिश वोह करता है जो ज़ियादा परहेज़गार होता है।"[3]

सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان के पसन्दीदा काम :

सह़ाबए किराम व ताबेई़ने उ़ज़्ज़ाम رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن पांच चीज़ों में मश्ग़ूल रहते थे : "(1)....तिलावते क़ुरआन (2).....मसाजिद की आबादकारी (3)....ज़िक्रुल्लाह (4)....नेकी की दा'वत देना और (5).....बुराई से मन्अ़ करना।"[4] और इस की वजह येह थी कि इन्हों ने फ़रमाने मुस्त़फ़ा सुन रखा था कि "इब्ने आदम का हर कलाम उस के लिये नुक़्सान देह होता है सिवाए तीन के (1)....नेकी की दा'वत देना (2).....बुराई से मन्अ़ करना और (3)....ज़िक्रुल्लाह करना।"[5]

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ क़ुरआने मजीद में इरशाद फ़रमाता है :

---

1 ......قوت القلوب، الفصل الحادی والثلاثون: کتاب العلم وتفضیله، ذکر فضل علم المعرفة......الخ، ج ۱، ص ۲۲۸۔

2 ......المرجع السابق، ص ۲۲۹، بتغیر۔ 3 ......المرجع السابق، ص ۲۲۹۔ 4 ......المرجع السابق، ص ۲۲۹۔

5 ......سنن الترمذی، کتاب الزهد، باب ماجاء فی حفظ اللسان، الحدیث: ۲۴۲۰، ج ۴، ص ۱۸۵۔

قوت القلوب، الفصل الحادی، والثلاثون: کتاب العلم وتفضیله، ذکر فضل علم المعرفة......الخ، ج ۱، ص ۲۲۹۔

لَا خَيْرَ فِىْ كَثِيْرٍ مِّنْ نَّجْوٰىهُمْ اِلَّا مَنْ اَمَرَ بِصَدَقَةٍ اَوْ مَعْرُوْفٍ اَوْ اِصْلَاحٍۭ بَيْنَ النَّاسِ
(پ۵،النساء:۱۱۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : उन के अकषर मश्वरों में कुछ भलाई नहीं मगर जो हुक्म दे ख़ैरात या अच्छी बात या लोगों में सुल्ह़ करने का ।

एक आ़लिम साहि़ब ने कूफ़ा के एक मुजतहिद को ख़्वाब में देख कर पूछा : "तुम जो फ़तवा देते और राए से काम लेते थे इस के बारे में क्या देखा ?" उन्हों ने नापसन्दीदगी का इज़्हार करते हुए रुख़ फेर लिया और बताया कि "हम ने इसे कुछ भी नहीं पाया और इस का अन्जाम अच्छा नहीं पाया ।"(1)

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ह़सीन رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : "मौजूदा उ़-लमा में से कोई ऐसे मस्अले के बारे में फ़तवा देता है कि अगर वोह मस्अला अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ की बारगाह में पेश किया जाता तो आप उस के लिये तमाम अहले बद्र को जम्अ़ फ़रमाते ।"(2)

बहर ह़ाल बिग़ैर ज़रूरत के न बोलना हमेशा से उ़-लमा की आ़दत रही है और ह़दीषे पाक में है कि "जब तुम किसी को देखो कि उसे ख़ामोशी और दुन्या से बे रग़बती अ़ता हुई है तो उस के क़रीब जाओ क्यूंकि उसे ह़िक्मत सिखाई गई है ।"(3)

आ़म व ख़ास आ़लिम में फ़र्क़ :

मन्क़ूल है कि आ़लिम या तो आ़म आ़लिम होता है और येह मुफ़्ती है येह लोग हुक्मरानों के मुसाहि़ब होते हैं या फिर वोह ख़ास आ़लिम होता है येह वोह है जो आ'माले क़ल्ब और तौह़ीद का आ़लिम होता है येह लोगों से अलग थलग और तन्हा रहते हैं ।(4)

दरयाए दिजला और मीठे कुंवें की मानिन्द :

कहा जाता था कि ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अह़मद बिन ह़म्बल عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَوَّل की

1 ......قوت القلوب، الفصل الحادی والثلاثون: کتاب العلم وتفضیله، ذکرفضل علم المعرفة......الخ، ج ۱، ص ۲۲۹۔
2 ......المرجع السابق، ص ۲۳۰۔ تاریخ دمشق لابن عساکر، الرقم:۴۶۰۷، عثمان بن عاصم بن حصین، ج۳۸، ص ۴۱۱۔
3 ......سنن ابن ماجه، کتاب الزهد، باب الزهد فی الدنیا، الحدیث: ۴۱۰۱، ج۴، ص ۴۲۲۔
قوت القلوب، الفصل الحادی والثلاثون: کتاب العلم وتفضیله، ذکرفضل علم المعرفة......الخ، ج ۱، ص ۲۳۱۔
4 ......قوت القلوب، الفصل الحادی والثلا ثون، باب ذکرالفرق بین علماء الدنیا......الخ، ج ۱، ص ۲۴۵۔

मिषाल दरियाए दिजला जैसी है जिस से हर एक चुल्लू भर लेता है।[1] और ह़ज़रते सय्यिदुना बिशर बिन ह़ारिष ह़ाफ़ी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْکَافِی की मिषाल मीठे कुंवें जैसी है जो ढका हुवा हो लोग उस की त़रफ़ एक एक कर के जाते हैं।[2]

लोग कहा करते थे कि फ़ुलां आ़लिम है, फ़ुलां मुतकल्लिम है, फ़ुलां ज़ियादा कलाम करता है और फ़ुलां ज़ियादा इ़ल्म वाला है।[3]

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सुलैमान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن कहते हैं कि मा'रिफ़त कलाम से ज़ियादा सुकूत के क़रीब है।[4]

मन्क़ूल है कि जब इ़ल्म ज़ियादा होता है तो गुफ़्तगू कम हो जाती है और जब गुफ़्तगू ज़ियादा होती है तो इ़ल्म कम हो जाता है।[5]

सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को नसीह़त :

ह़ज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को ख़त़ लिखा और येह दोनों उन में से हैं जिन के दरमियान ह़ुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने भाई चारा क़ाइम फ़रमाया था।[6] (ख़त़ का मज़्मून कुछ इस त़रह़ है :) ऐ मेरे भाई ! मैं ने सुना है कि आप त़बीब बन कर मरीज़ों का इ़लाज करते हैं, ग़ौर कर लें अगर आप वाक़ेई त़बीब हैं तो इस के मुतअ़ल्लिक़ कलाम करें, आप के कलाम में शिफ़ा होगी और अगर ब तकल्लुफ़ त़बीब बने हैं तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डरें कि कहीं किसी मुसलमान की जान न ले लें।[7] इस के बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से कुछ पूछा जाता तो तवक्कुफ़ फ़रमाते।

फ़ुलां से पूछो :

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से कुछ पूछा जाता तो फ़रमाते : "हमारे आज़ाद कर्दा गुलाम ह़सन बसरी से पूछो।"[8]

---

1 ......قوت القلوب، الفصل الحادی والثلا ثون، باب ذکر الفرق بین علماء الدنیا......الخ، ج ۱، ص ۲۴۵۔

2 ......المرجع السابق۔ 3 ......المرجع السابق۔ 4 ......المرجع السابق۔ 5 ......المرجع السابق، مختصراً۔

قوت القلوب، الفصل السابع والعشرون، کتاب اساس المریدین، ج ۱، ص ۱۷۲، "العلم" بدلہ "العقل"۔

6 ......صحیح البخاری، کتاب الادب، باب صنع الطعام والتکلف للضیف، الحدیث: ۶۱۳۹، ج ۱، ص ۱۳۷۔

7 ......قوت القلوب، الفصل الحادی والثلا ثون، باب ذکر الفرق بین علماء الدنیا......الخ، ج ۱، ص ۲۵۴۔

8 ......المصنف لابن ابی شیبۃ، کتاب الزھد، باب ما قالوا فی البکاء من خشیۃ اللّٰہ، الحدیث: ۷۴، ج ۸، ص ۳۰۶۔

الطبقات الکبری لابن سعد، الرقم: ۳۰۵۵ الحسن بن ابی الحسن، ج ۷، ص ۱۳۰۔

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُمَا से कुछ पूछा जाता तो फ़रमाते : "ह़ारिषा बिन ज़ैद से पूछो ।"(1)

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से कुछ पूछा जाता तो फ़रमाते : सईद बिन मुसय्यब से पूछो ।(2)

मन्क़ूल है कि ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی की मौजूदगी में एक सह़ाबी رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ ने 20 अह़ादीष बयान फ़रमाईं । उन से इस की शर्ह़ पूछी गई तो फ़रमाया : "मेरे पास वोही था जो मैं ने बयान कर दिया है ।" फिर ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی ने एक एक ह़दीष की शर्ह़ बयान की तो लोग इन की उ़म्दा शर्ह़ और इन के ह़ाफ़िज़े से ह़ैरान हो गए । तो सह़ाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने मुठ्ठी में कंकरिया ले कर लोगों को मारीं और फ़रमाया : "तुम मुझ से इ़ल्म के बारे में पूछते हो ह़ालांकि तुम्हारे दरमियान येह बड़े आ़लिम मौजूद हैं ।"(3)

﴿7﴾.....उ़-लमाए आख़िरत की अ़लामात में से एक अ़लामत येह है कि ऐसा आ़लिम इ़ल्मे बातिन, दिल की निगरानी, राहे आख़िरत और इस पर चलने की कैफ़िय्यत को जानने की ज़ियादा कोशिश करे । मुजाहदा व मुराक़बा के ज़रीए़ इस के इन्किशाफ़ की सच्ची उम्मीद रखे क्यूंकि मुजाहदे के ज़रीए़ मुशाहदा नसीब होता है और उ़लूमे क़ल्ब की बारीकियों से दिल से ह़िक्मत के चश्मे फूटते हैं । किताबें और ता'लीम इस में काम नहीं आतीं बल्कि ह़िक्मत तो शुमार से बाहर है जो मह़ज़ मुजाहदे और मुराक़बे, ज़ाहिरी व बातिनी आ'माल बजा लाने और तन्हाई में ह़ुज़ूरे क़ल्ब और साफ़ फ़िक्रो सोच के साथ मासिवल्लाह से बे तअ़ल्लुक़ हो कर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ह़ुज़ूर ह़ाज़िर होने से ह़ासिल होती है । येह इल्हाम की चाबी और क़श्फ़ का मम्बअ़ है । कितने ही त़ालिबे इ़ल्म ऐसे हैं जो अ़र्सए दराज़ तक इ़ल्म सीखते रहे मगर सुने हुए एक कलिमे से आगे बढ़ने की क़ुदरत नहीं रखते और कितने ऐसे हैं कि इ़ल्म सीखने में कोताह हैं लेकिन इ़ल्म और मुराक़बा बहुत ज़ियादा करते हैं जिस की वजह से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उन के लिये ह़िक्मत के ऐसे असरार खोल देता है कि अ़क़्लमन्दों की अ़क़्लें ह़ैरान रह जाती हैं । इसी लिये सरदारे मक्कए मुकर्रमा, सुल्त़ाने मदीनए मुनव्वरा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जो अपने इ़ल्म पर अ़मल करता है अल्लाह (عَزَّوَجَلَّ) उसे वोह इ़ल्म भी अ़त़ा फ़रमा देता है जो उसे ह़ासिल न हो ।"(4)

---

1 ......قوت القلوب، الفصل الحادی والثلا ثون، ج ۱، ص ۲۵۴، "حارثۃ بن زید" بدلہ "جابر بن زید"۔

2 ......قوت القلوب، الفصل الحادی والثلا ثون، باب ذکر الفرق بین علماء الدنیا......الخ، ج ۱، ص ۲۵۴۔

3 ......المرجع السابق، ص ۲۵۴۔۲۵۵۔

4 ......حلیۃ الاولیاء، احمد بن ابی الحواری، الحدیث: ۱۴۳۲۲، ج ۱۰، ص ۱۳۔

इ़ल्म तो तुम्हारे दिलों में है :

बा'ज़ साबिक़ा कुतुब में लिखा है कि "ऐ बनी इसराईल ! येह न कहो कि इ़ल्म आस्मान पर है इसे कौन ज़मीन पर उतारेगा, न येह कहो कि इ़ल्म ज़मीन की तह में है इसे ऊपर कौन लाएगा, न येह कहो कि समुन्दर के उस पार है समुन्दर उ़बूर कर के इसे कौन लाएगा बल्कि इ़ल्म तुम्हारे दिलों में रखा गया है। मेरे सामने रूह़ानी आदाब सीखो और सालेह़ीन के अख़्लाक़ अपनाओ मैं तुम्हारे दिलों में इतना इ़ल्म डाल दूंगा जो तुम्हें ढांप लेगा।"(1)

ह़ज़रते सय्यिदुना सहल बिन अ़ब्दुल्लाह तुस्तरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : उ़-लमा, आ़बिदीन और ज़ाहिदीन दुन्या से चले गए और उन के दिलों पर ताले पड़े हैं, सिर्फ़ सिद्दीक़ीन और शुहदा के दिल खुले हैं।(2)

फिर येह आयते मुबारका तिलावत फ़रमाई :

وَعِنْدَهٗ مَفَاتِحُ الْغَيْبِ لَا يَعْلَمُهَآ اِلَّا هُوَ (پ۷، الانعام:۵۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और उसी के पास हैं कुन्जियां ग़ैब की इन्हें वोही जानता है।*

और अगर अहले कुलूब के दिलों का इदराक बात़िनी नूर के साथ इ़ल्मे ज़ाहिर पर ह़ाकिम न होता तो रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم येह न फ़रमाते कि "अपने दिल से फ़तवा लो अगर्चे लोग तुम्हें कुछ भी फ़तवा दें, अगर्चे लोग तुम्हें कुछ भी फ़तवा दें, अगर्चे लोग तुम्हें कुछ भी फ़तवा दें।"(3)

क़ुर्बे इलाही के जल्वे :

नीज़ हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है कि "बन्दा नवाफ़िल के ज़रीए मेरा क़ुर्ब ह़ासिल करता रहता है यहां तक कि मैं उसे अपना मह़बूब बना लेता हूं और जब मैं उसे मह़बूब बना लेता हूं तो उस के कान बन जाता हूं जिन से वोह सुनता है उस की आंखें बन जाता हूं जिन से वोह देखता है उस के हाथ बन जाता

---

1 ......قوت القلوب، الفصل الحادی والثلاثون: کتاب العلم وتفضیله، ج۱، ص۲۳۸، بتغیرٍ قلیلٍ۔

2 ......قوت القلوب، الفصل الحادی والثلاثون، باب ذکر الفرق بین علماء الدنیا......الخ، ج۱، ص۲۶۲۔

3 ......المسند للامام احمد بن حنبل، حدیث وابصة بن معبد، الحدیث:۱۸۰۲۸، ج۶، ص۲۹۳۔

قوت القلوب، الفصل الحادی والثلاثون، باب ذکر الفرق بین علماء الدنیا......الخ، ج۱، ص۲۶۲۔

हूं जिन से वोह पकड़ता है उस के पाउं बन जाता हूं जिन से वोह चलता है। अगर वोह मुझ से मांगे तो मैं उसे ज़रूर देता हूं अगर वोह मुझ से पनाह त़लब करे तो मैं उसे पनाह देता हूं और मुझे किसी काम में तरद्दुद नहीं होता जिसे मैं करता हूं। मैं किसी काम के करने में कभी इस त़रह़ तरद्दुद नहीं करता जिस त़रह़ जाने मोमिन क़ब्ज़ करते वक़्त तरद्दुद करता हूं कि वोह मौत को नापसन्द करता है और मैं उस के मकरूह समझने को बुरा जानता हूं।[(1) (2)]''

---

1 ......صحیح البخاری، کتاب الرقاق، باب التواضع، الحدیث: ۶۵۰۲، ج۴، ص۲۴۸۔

2 ....वलिय्युल्लाह वोह बन्दा है जिस का **अल्लाह** तआ़ला वारिष हो गया कि उसे एक आन के लिये भी उस के नफ़्स के ह़वाले नहीं करता बल्कि खुद उस से नेक काम लेता है, रब्ब तआ़ला फ़रमाता है : وَهُوَيَتَوَلَّى الصّٰلِحِيْنَ (پ۹،الاعراف:۱۹۶) और वोह बन्दा है जो खुद रब्ब तआ़ला की इ़बादत का मुतवल्ली हो जाए, पहली क़िस्म के वली का नाम मजज़ूब या मुराद है और दूसरे का नाम सालिक या मुरीद है वहां हर मुराद मुरीद है और हर मुरीद मुराद। फ़र्क़ सिर्फ़ इब्तिदा में है येह मक़ाम क़ाल से वरा है ह़ाल से मा'लूम हो सकता है। जो मेरे एक वली का दुश्मन है वोह मुझ से जंग करने को तय्यार हो जाए। खुदा की पनाह, येह कलिमा इन्तिहाई ग़ज़ब का है सिर्फ़ दो गुनाहों पर बन्दे को रब्ब तआ़ला की त़रफ़ से ए'लाने जंग दिया गया है, एक सूद ख़ोर, दूसरे दुश्मने औलिया, रब्ब तआ़ला फ़रमाता है : فَأْذَنُوْا بِحَرْبٍ مِّنَ اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ (پ۳،البقرۃ: ۲۷۹) उ़-लमा फ़रमाते हैं कि वली का दुश्मन काफ़िर है और उस के कुफ़्र पर मरने का अन्देशा है। (मिरक़ात) ख़याल रहे कि एक है वलिय्युल्लाह से इस लिये अ़दावत व इ़नाद कि वलिय्युल्लाह है येह तो कुफ़्र है इसी का यहां ज़िक्र है और एक है किसी वली से इख़्तिलाफ़े राए येह न कुफ़्र है न फ़िस्क़ लिहाज़ा इस ह़दीष की बिना पर यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام के भाई और वोह सह़ाबा जिन की आपस में लड़ाइयां रहीं उन को बुरा नहीं कहा जा सकता कि वहां इख़्तिलाफ़े राए था इ़नाद न था, इ़नाद व इख़्तिलाफ़ में बड़ा फ़र्क़ है, इस के लिये हमारी किताब अमीरे मुआ़विय्या देखिये ह़त्ता कि ह़ज़रते सारा को इस बिना पर बुरा नहीं कहा जा सकता कि इन्हों ने ह़ज़रते हाजिरा व इस्माईल علیھما السلام की मुख़ालिफ़त की, इस लिये यहां **عادی** फ़रमाया **خالف** न फ़रमाया और لی ولیا फ़रमाया ولی اللہ न फ़रमाया। मुझ तक पहुंचने के बहुत ज़रीए़ हैं, मगर उन तमाम ज़राएअ़ से ज़ियादा मह़बूब ज़रीआ़ अदाए फ़राइज़ है इसी लिये सूफ़िया फ़रमाते हैं कि फ़राइज़ के बिग़ैर नवाफ़िल क़बूल नहीं होते उन की माख़ुज़ येह ह़दीष है। अफ़्सोस उन लोगों पर जो फ़र्ज़ इ़बादात में सुस्ती करें और नवाफ़िल पर ज़ोर दें और हज़ार अफ़्सोस उन पर जो भंग, चरस, ह़राम गाने बजाने को खुदारसी का ज़रीआ़ समझें, नमाज़ रोज़े के क़रीब न जाएं। बन्दा मुसलमान फ़र्ज़ इ़बादात के साथ नवाफ़िल भी अदा करता रहता है ह़त्ता कि वोह मेरा प्यारा हो जाता है क्यूंकि वोह फ़राइज़ व नवाफ़िल का जामेअ़ होता है (मिरक़ात) इस का मत़लब येह नहीं कि फ़राइज़ छोड़ कर नवाफ़िल अदा करे, मह़ब्बत से मुराद कामिल मह़ब्बत है। इस इ़बारत का येह मत़लब नहीं कि खुदा तआ़ला वली में ह़ुलूल कर जाता है जैसे कोइले में आग या फूल में रंग व बू, कि खुदा तआ़ला ह़ुलूल से पाक है और येह अ़क़ीदा कुफ़्र है बल्कि इस के चन्द मत़लब हैं एक येह कि वलिय्युल्लाह के येह आ'ज़ा गुनाह के लाइक़ नहीं रहते हमेशा इन से नेक काम ही सरज़द होते हैं इस पर इ़बादात आसान होती हैं गोया सारी इ़बादतें उस से मैं करा रहा हूं या येह कि फिर वोह बन्दा इन आ'ज़ा को दुन्या के लिये इस्ति'माल नहीं करता, सिर्फ़ मेरे लिये इस्ति'माल करता है हर चीज़.....

कु़रआने ह़कीम के असरार में से कितने ही दक़ीक़ मआ़नी ऐसे हैं जो उन लोगों के दिलों पर ज़ाहिर होते हैं जो ज़िक्रो फ़िक्र के लिये अपने आप को अ़लाहि़दा कर लेते हैं, कुतुबे तफ़्सीर इन मआ़नी से ख़ाली हैं और बड़े दर्जे के मुफ़स्सिरीन भी इन पर मुत्तलअ़ नहीं होते। जब किसी मुराक़बा करने वाले सालिक पर येह मआ़नी मुन्कशिफ़ हुए और येह मआ़नी उस ने मुफ़स्सिरीन को पेश किये तो उन्हों ने इस की तह़सीन की और जान लिया कि येह पाकीज़ा दिल वालों और बुलन्द हिम्मत लोगों पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का लुत्फ़ो करम है जो इस की त़रफ़ मुतवज्जेह है। इसी त़रह़ उ़लूमे मुकाशफ़ा, उ़लूमे मुआ़मला के असरार और दिलों पर गुज़रने वाले ख़त़रात की बारीकियों का मुआ़मला है। क्यूंकि इन उ़लूम में से हर इ़ल्म एक समन्दर है जिस की गहराई को

...... में मुझे देखता है हर आवाज़ में मेरी आवाज़ सुनता है, या येह कि वोह बन्दा फ़नाफ़िल्लाह हो जाता है जिस से खुदाई त़ाक़तें उस के आ'ज़ा में काम करती हैं और वोह वैसे काम कर लेता है जो अ़क़्ल से रवा हैं ह़ज़रते या'क़ूब عَلَيْهِ السَّلَام ने किनआ़न में बैठे हुए मिस्र से चली हुई क़मीसे यूसुफ़ी की ख़ुश्बू सूंघ ली, ह़ज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام ने तीन मील के फ़ासिले से च्यूंटी की आवाज़ सुन ली ह़ज़रते आसिफ़ बरख़िया ने पलक झपकने से पहले यमन से तख़्ते बिल्क़ीस ला कर शाम में ह़ाज़िर कर दिया। ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने मदीनए मुनव्वरा से ख़ुत़्बा पढ़ते हुए नहावन्द तक अपनी आवाज़ पहुंचा दी। ह़ुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने क़ियामत तक के वाक़िआ़त ब चश्म मुलाह़ज़ा फ़रमा लिये। येह सब इसी त़ाक़त के करिश्मे हैं। आज नार की त़ाक़त से रेडियो तार, वायरलेस टेलीविज़न अ़जीब करिश्मे दिखा रहे हैं तो नूर की त़ाक़त का क्या पूछना। इस ह़दीष से वोह लोग इ़ब्रत पकड़ें जो त़ाक़ते औलिया के मुन्किर है, बा'ज़ सूफ़िया जोश में سبحانی مااعظم شانی कह गए। वोह बन्दा मक़्बूलुदुआ़ बन जाता है कि मुझ से ख़ैर मांगे या शर से पनाह, मैं उस की ज़रूर सुनता हूं। मा'लूम हुवा कि औलिया रब्ब तआ़ला की पनाह में रहते हैं तो जो शख़्स इन से दुआ़ कराए उस की क़बूल होगी और जो इन की पनाह में आए वोह रब्ब की पनाह में आ जाएगा। سُبْحٰنَ اللّٰہ क्या नाज़ो अन्दाज़ वाला कलाम है या'नी मैं रब्ब हूं और अपने किसी फ़ैसले में कभी न तवक़्क़ुफ़ करता हूं न तअम्मुल, जो चाहूं हुक्म करूं, मगर एक मौक़अ़ पर हम तवक़्क़ुफ़ व तअम्मुल फ़रमाते हैं वोह येह कि किसी वली का वक़्ते मौत आ जाए और वोह वली अभी मरना न चाहे तो हम उसे फ़ौरन नहीं मार देते बल्कि उसे अव्वलन मौत की त़रफ़ माइल कर देते हैं जन्नत और वहां की ने'मतें उसे दिखा देते हैं और बीमारियां परेशानियां उस पर नाज़िल कर देते हैं जिस से उस का दिल दुन्या से मुतनफ़्फ़िर हो जाता है और आख़िरत का मुश्ताक़ फिर वोह खुद आना चाहता है और खुश खुश हंसता हुवा हमारे पास आता है, यहां तरद्दुद के मा'ने ह़ैरानी परेशानी नहीं कि वोह बे इ़ल्मी से होती है रब्ब तआ़ला इस से पाक है बल्कि मत़लब वोह है जो फ़क़ीर ने अ़र्ज़ किया मूसा عَلَيْهِ السَّلَام की वफ़ात का वाक़िआ़ इस ह़दीष की तफ़्सीर है। ह़ुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं कि अम्बियाए किराम को मौत व ज़िन्दगी का इख़्तियार दिया जाता है वोह ह़ज़रात अपने इख़्तियार से खुशी खुशी मौत क़बूल करते हैं और यारे ख़न्दां रवद बजानिबे यार का ज़ुहूर होता है। ग़रज़ येह कि हमारी मौत तो छूटने का दिन है और औलिया अम्बिया की वफ़ात प्यारों से मिलने का दिन इसी लिये इन की मौत के दिन को उ़र्स या'नी शादी का दिन कहा जाता है इस ह़दीष से मा'लूम हुवा कि अल्लाह तआ़ला के इरादे मशिय्यत, रिज़ा कराहत में बहुत फ़र्क़ है बा'ज़ चीज़ें रब्ब तआ़ला को ना पसन्द हैं मगर उन का इरादा है बा'ज़ चीज़ें पसन्द हैं मगर उन का इरादा नहीं। (मिरआतुल मनाजीह़, जि. 3 स. 308 ता 31, मुलख़्ख़सन)

नहीं पहुंचा जा सकता। इस में हर त़ालिब इतना ही ग़ौत़ा ज़न होता है जितना उस के मुक़द्दर में होता और जिस क़दर उसे हुस्ने अ़मल की तौफ़ीक़ होती है।

उ़-लमा ज़िन्दा रहते हैं :

उ़-लमा के बारे में अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने एक त़वील ह़दीषे पाक में फ़रमाया कि "दिल बरतनों की मानिन्द हैं और उन में बेहतरीन वोह हैं जिन में ज़ियादा भलाई जम्अ़ है। लोग तीन क़िस्म के हैं : (1) आ़लिमे रब्बानी (2) राहे नजात पर चलने वाला त़ालिबे इ़ल्म और (3) बे वुक़ूफ़ और मा'मूली दर्जे के लोग जो हर पुकारने वाले के पीछे चल पड़ते हैं, हवा के हर झोंके के साथ झुक जाते हैं, नूरे इ़ल्म से रोशनी ह़ासिल नहीं करते और न ही मज़बूत़ सहारा लेते हैं। इ़ल्म माल से बेहतर है क्यूंकि इ़ल्म तुम्हारी ह़िफ़ाज़त करता है जब कि माल की तुम ह़िफ़ाज़त करते हो। इ़ल्म ख़र्च करने से बढ़ता है जब कि माल ख़र्च करने से घटता है। इ़ल्म, दीन है इसे इख़्तियार किया जाता है। इस के ज़रीए़ ज़िन्दगी में इत़ाअ़त की जाती और बा'दे विसाल येह ज़िक्रे ख़ैर का ज़रीआ़ है। इ़ल्म ह़ाकिम है जब कि माल मह़कूम। माल ख़त्म होने से इस की मन्फ़अ़त भी ख़त्म हो जाती है। माल जम्अ़ करने वाले मर जाते हैं जब कि उ़-लमा का ज़िक्र ज़िन्दा रहता है जब तक ज़माना बाक़ी है।"[1]

फिर आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने लम्बा सांस लिया और सीने की त़रफ़ इशारा कर के फ़रमाया : "यहां बहुत इ़ल्म है। काश ! मुझे कोई ऐसा मिल जाता जो इसे उठा सकता, मैं ऐसा त़ालिब पाता हूं जो बा ए'तिमाद नहीं, वोह दीन को दुन्या कमाने का ज़रीआ़ बनाता है, वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ने'मतों की वजह से उस के औलिया पर ज़बाने ता'न दराज़ करता और उस की मख़्लूक़ पर हुज्जत बाज़ी कर के ग़ालिब आता है या अहले ह़क़ पर तन्क़ीद करता है लेकिन उस के दिल में पहला शुबा वारिद होते ही शक जम जाता है। उसे कोई बसीरत ह़ासिल नहीं होती न येह न वोह या वोह लज़्ज़ात का ग़ुलाम और ख़्वाहिशात की क़ैद में बन्द है। या अम्वाल जम्अ़ करने और ज़ख़ीरा करने से धोका खाने वाला और अपनी ख़्वाहिश की पैरवी करने वाला है और इन दोनों कामों में वोह चरने वाले जानवरों के मुशाबेह है। इसी त़रह़ जब इ़ल्म के मुह़ाफ़िज़ फ़ौत हो जाते हैं तो क्या यूंही इ़लम फ़ौत हो जाता है, नहीं बल्कि ज़मीन ऐसे लोगों से ख़ाली नहीं होती जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये हुज्जत क़ाइम करें बल्कि या तो वोह ज़ाहिर मश्हूर होते हैं या पोशीदा और छुपे हुए ताकि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की हुज्जतें और दलाइल बात़िल न हों। वोह लोग कितने

---

1 ......حلیة الاولیاء، علی بن ابی طالب، الرقم:٢٤٣، ج١، ص١٢١، بتغیرٍقلیلٍ۔

हैं और कहां हैं ? वोह ता'दाद के ए'तिबार से कम हैं लेकिन उन का मक़ाम बहुत बुलन्द है वोह ज़ाहिरी तौर पर मफ़्क़ूद होते हैं मगर इन की मिषालें दिलों में मौजूद होती हैं। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इन के ज़रीए अपने दलाइल की हिफ़ाज़त फ़रमाता है ताकि वोह इन दलाइल को अपने बा'द वालों के हवाले करें और उन के दिलों में इन्हें महफ़ूज़ और पुख़्ता करें। इल्म ने इन्हें मुआमले की हक़ीक़त तक पहुंचा दिया तो येह यक़ीन की रूह से जा मिले और इन्हों ने उन उमूर को नर्म पाया जिन्हें ख़ुश हाल लोग सख़्त पाते और ग़ाफ़िल लोग वह्शत खाते हैं। येह इस से मानूस हो गए और उन हस्तियों की अरवाह के साथ मिल कर दुन्या की मुसाह़बत इख़्तियार की जो कि आ'ला मक़ाम पर फ़ाइज़ हैं। मख़्लूक़ में से येही लोग **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के औलिया हैं, उस के अमीन, ज़मीन में उस के आ'माल और उस के दीन की त़रफ़ दा'वत देने वाले हैं।" येह फ़रमाने के बा'द आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ रोने लगे फिर फ़रमाया : "इन लोगों को देखने का कितना शौक़ है।"(1)

आख़िर में ज़िक्र की गई निशानी उ-लमाए आख़िरत की अ़लामत है और येह वोही इल्म है जिस का अकषर अ़मल और मुजाहदा पर हमेशगी इख़्तियार करने से ह़ासिल होता है।

यक़ीन की अहम्मिय्यत व फ़ज़ीलत :

हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "यक़ीन मुकम्मल ईमान है।"(2)

लिहाज़ा इल्मे यक़ीन की इब्तिदाई बातों का सीखना ज़रूरी है फिर दिल के लिये इस का रास्ता खुल जाएगा।

इसी वजह से प्यारे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "تَعَلَّمُوا الْيَقِيْن या'नी इल्मे यक़ीन ह़ासिल करो।"(3)

इस ह़दीषे पाक से मुराद येह है कि यक़ीन वालों के पास बैठो और उन से इल्मे यक़ीन की समाअ़त और उन की इक़्तिदा पर हमेशगी इख़्तियार करो ताकि तुम्हारा यक़ीन भी इसी त़रह क़वी हो जाए जिस त़रह उन का यक़ीन क़वी है और थोड़ा यक़ीन ज़ियादा अ़मल से बेहतर है।

---

1 ......قوت القلوب، الفصل الحادى والثلاثون: كتاب العلم وتفضيله، ذكرفضل علم المعرفة، ج ١، ص ٢٣٢ـ
حلية الاولياء، على بن ابى طالب، الرقم:٢٢٣، ج ١، ص ١٢١، بتغيرٍقليلٍـ

2 ......شعب الايمان للبيهقى، باب فى الصبر على المصائب، الحديث:٩٧١٦، ج٧، ص ١٢٣ـ

3 ......حلية الاولياء، ثوربن يزيد، الحديث:٧٩٥٥، ج٦، ص ٩٩ـ
موسوعة الامام ابن ابى الدنيا، كتاب اليقين، الحديث:٧، ج ١، ص ٢٢ـ

येही वजह है कि जब हुज़ूर नबिय्ये रह्मत, शफ़ीए उम्मत صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में अ़र्ज़ की गई कि "एक शख़्स का यक़ीन अच्छा है मगर वोह गुनाह ब कषरत करता है और एक शख़्स इ़बादत में कोशिश बहुत करता है लेकिन उस का यक़ीन थोड़ा है।" तो आप صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "(अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के इ़लावा) हर शख़्स के कुछ गुनाह होते हैं।"(1)

लेकिन अ़क़्ल जिस की कुव्वत और आ़दत जिस का यक़ीन हो उसे गुनाह नुक़्सान नहीं पहुंचाते क्यूंकि जब कभी उस से कोई गुनाह सरज़द हो जाता है तो वोह तौबा व इस्तिग़फ़ार करता और शर्मिन्दा होता है जिस की वजह से उस के गुनाह मिटा दिये जाते हैं और तौबा व इस्तिग़फ़ार से उस का कुछ हिस्सा बच जाता है जिस के बदले उसे जन्नत में दाख़िल कर दिया जाएगा।

इसी लिये सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जो कुछ तुम्हें दिया गया है उस का क़लील तरीन यक़ीन और सब्र पर पुख़्तगी है और जिसे इन दोनों में से कुछ हिस्सा मिला उसे रात के क़ियाम और दिन के रोज़ों के फ़ौत होने की कोई परवाह नहीं।"(2)

हज़रते सय्यिदुना लुक़्मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अपने बेटे को वसिय्यत करते हुए फ़रमाया : "ऐ बेटे ! अ़मल की इस्तित़ाअ़त यक़ीन से ह़ासिल होती है और आदमी अपने यक़ीन के मुत़ाबिक़ ही अ़मल करता है और अ़मल में कमी उस वक़्त करता है जब उस का यक़ीन नाक़िस हो जाता है।"(3)

नूरे तौह़ीद और शिर्क की आग :

हज़रते सय्यिदुना यह्या बिन मुआ़ज़ राज़ी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْہَادِی फ़रमाते हैं : "बेशक तौह़ीद के लिये एक नूर और शिर्क के लिये एक आग है। नूरे तौह़ीद मोअमिनीन के गुनाहों को उस से ज़ियादा जलाता है जितना शिर्क की आग मुशरिकीन की नेकियों को जलाती है।"(4)

नूरे तौह़ीद से आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ की मुराद यक़ीन है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने कुरआने मजीद में अहले यक़ीन का ज़िक्र कषीर मक़ामात पर फ़रमाया है जो इस बात की दलील है कि यक़ीन भलाइयों और सआ़दतों के दरमियान राबित़ा है।

---

1 ......قوت القلوب، الفصل الحادی والثلا ثون: کتاب العلم و تفضیلہ، المقام الثالث من الیقین، ج ۱، ص ۲۳۵۔

2 ......المرجع السابق۔ 3 ......المرجع السابق، بتغیرٍ۔ 4 ......المرجع السابق۔

एक सुवाल और इस का जवाब :

अगर तुम कहो कि यक़ीन और इस के क़वी व ज़ईफ़ होने का मत़लब क्या है तो इस का जवाब येह है कि याद रखो पहले यक़ीन को समझना फिर इसे त़लब करना और सीखना ज़रूरी है क्यूंकि जिस चीज़ का पता न हो उसे त़लब करना मुमकिन नहीं। लिहाज़ा जान लो कि यक़ीन एक लफ़्ज़े मुश्तरक है जिसे दोनों फ़रीक़ (या'नी फ़ुक़हा व मुतकल्लिमीन) दो मुख़्तलिफ़ मआ़नी के लिये बोलते हैं।

यक़ीन के मुतअ़ल्लिक़ मुतकल्लिमीन की इस्तिलाह़ :

मुनाज़िरीन और मुतकल्लिमीन यक़ीन को अ़दमे शक से ता'बीर करते हैं इस लिये किसी शै की तस्दीक़ की त़रफ़ नफ़्स के मैलान के चार अह़वाल हैं :

﴾1﴿.....तस्दीक़ और तक्ज़ीब का बराबर होना है। इस ह़ालत को शक से ता'बीर किया जाता है। **मिषाल :** जब तुम से किसी शख़्से मुअ़य्यन के बारे में सुवाल किया जाए कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस शख़्स को अ़ज़ाब देगा या नहीं और तुम्हें उस का ह़ाल मा'लूम न हो तो तुम्हारा नफ़्स उस के बारे में इषबात या नफ़ी का हुक्म लगाने की त़रफ़ माइल न होगा बल्कि तुम्हारे नज़्दीक दोनों बातों का इम्कान बराबर होगा इसी का नाम **शक** है।

﴾2﴿.....तुम्हारा नफ़्स दो बातों में से एक की त़रफ़ माइल हो ह़ालांकि उस की नक़ीज़ (ख़िलाफ़) के मुमकिन होने का शुऊ़र रखता हो लेकिन येह इम्कान पहली बात के इम्कान की तरजीह़ को मानेअ़ न हो। **मिषाल :** तुम से ऐसे शख़्स के बारे में पूछा जाए जिस की नेक नामी और परहेज़गारी तुम ख़ास त़ौर पर जानते हो कि अगर वोह इसी ह़ालत पर मर जाए तो क्या उसे अ़ज़ाब होगा तो तुम्हारा नफ़्स उसे अ़ज़ाब होने से ज़ियादा इस बात की त़रफ़ माइल होगा कि उसे अ़ज़ाब नहीं होगा और येह अ़लामाते नेकी के ज़ाहिर होने की वजह से है। इस के बावुजूद तुम इस बात को मुमकिन मानते हो कि हो सकता है इस का कोई बात़िनी मुआ़मला ऐसा हो जिस की वजह से उसे अ़ज़ाब में गिरिफ़्तार होना पड़े। येह इमकान नफ़्स के इस मैलान के मसावी है ताहम पहले इमकान की त़रफ़ रुजह़ान को दफ़्अ़ नहीं करता। इसी ह़ालत का नाम **ज़न** रखा जाता है।

﴾3﴿.....तुम्हारा नफ़्स किसी शै की तस्दीक़ की त़रफ़ इस त़रह़ माइल हो कि वोह नफ़्स पर ग़ालिब आ जाए और दिल में उस के ग़ैर का ख़याल तक न गुज़रे और अगर ख़याल आए भी तो नफ़्स उसे क़बूल करने से इन्कार कर दे लेकिन येह तस्दीक़ मा'रिफ़ते ह़क़ीक़ी के साथ नहीं

होती क्यूंकि अगर इस ह़ालत से दो चार शख़्स अच्छी त़रह़ ग़ौरो फ़िक्र करे और तश्कीक व तजवीज़ (शक व जवाज़) की त़रफ़ तवज्जोह करे तो उस के नफ़्स में तजवीज़ (जवाज़) की गुन्जाइश निकल आएगी। इस ह़ालत को यक़ीन के क़रीब **ए'तिक़ाद** का नाम दिया जाता है और येह अ़वाम का तमाम शरई मसाइल में ए'तिक़ाद है क्यूंकि येह ए'तिक़ाद उन के दिलों में मह़ज़ सुनने से ही रासिख़ हो गया यहां तक कि हर फ़िर्क़ा अपने मज़हब के सह़ीह़ होने, अपने इमाम और मतबूअ़ (पेशवा) के दुरुस्त होने पर वुषूक़ (यक़ीन) रखता है और अगर इन में से किसी के पास उस के इमाम की ग़लती का इमकान ज़िक्र किया जाए तो वोह इसे तस्लीम नहीं करता।

﴾4﴿.....मा'रिफ़ते ह़क़ीक़िय्या जो ऐसी दलील से ह़ासिल हो जिस में कोई शक बल्कि शक का तसव्वुर भी न हो और जब शक का पाया जाना और उस का इमकान मुमतिनअ़ हो तो मुतकल्लिमीन उसे यक़ीन का नाम देते हैं। **मिषाल :** जब किसी अ़क़्ल मन्द से पूछा जाए कि क्या कोई ऐसी चीज़ पाई जाती है जो क़दीम हो? तो उस के लिये फ़ौरी त़ौर पर उस की तस्दीक़ करना मुमकिन नहीं इस लिये कि क़दीम को मह़सूस नहीं किया जा सकता कि वोह चांद सूरज की त़रह़ नहीं क्यूंकि इन दोनों के पाए जाने की तस्दीक़ ह़िस्स के ज़रीए़ होती है। किसी क़दीम शै के वुजूद का इ़ल्म अज़ली और बदीही नहीं जैसे इस बात का इ़ल्म कि दो एक से ज़ियादा है और उस इ़ल्म की त़रह़ भी नहीं कि किसी ह़ादिष का बिग़ैर सबब के पैदा होना मुह़ाल है कि येह भी बद येही है। लिहाज़ा अ़क़्ले सलीम का तक़ाज़ा है कि वोह क़दीम के वुजूद की तस्दीक़ को ग़ौरो फ़िक्र के त़रीक़े पर मौक़ूफ़ करे। फिर लोगों में कोई वोह है जो इस बात को सुनता है और सुन कर तस्दीक़ कर देता और इसी पर क़ाइम रहता है येह ए'तिक़ाद है और येह तमाम अ़वाम का ह़ाल है। कोई वोह है जो उस की दलील के साथ तस्दीक़ करता है और वोह येह कि उस से कहा जाए कि अगर वुजूद में कोई क़दीम नहीं तो तमाम मौजूदात ह़ादिष होंगी और अगर तमाम मौजूदात ह़ादिष हैं तो फिर वोह तमाम या उन में से बा'ज़ बिग़ैर किसी सबब के ह़ादिष हैं, येह मुह़ाल है और मुह़ाल तक पहुंचाने वाला भी मुह़ाल होता है। पस अ़क़्ली त़ौर पर ज़रूरतन किसी क़दीम शै के वुजूद की तस्दीक़ लाज़िम हुई इस लिये कि मौजूदात की तीन क़िस्में हैं : (1)....तमाम मौजूदात क़दीम हैं (2)....तमाम ह़ादिष (3)....कुछ क़दीम और कुछ ह़ादिष हैं। अगर तमाम मौजूदात क़दीम हों तो मत़लूब ह़ासिल हो जाएगा इस लिये कि इस त़रह़ क़दीम का वुजूद षाबित होगा और अगर तमाम ह़ादिष हों तो येह मुह़ाल है क्यूंकि येह बिग़ैर सबब के ह़ुदूष की त़रफ़ ले जाता है। लिहाज़ा तीसरी या पहली क़िस्म षाबित होगी और वोह तमाम उ़लूम जो इस त़रह़ ह़ासिल हों उन्हें मुतकल्लिमीन यक़ीन का नाम देते हैं ख़्वाह वोह **नज़र व फ़िक्र** से ह़ासिल हों जैसा कि हम इस के मुतअ़ल्लिक़ ज़िक्र कर आए या **ह़िस्स** से ह़ासिल हों या **अ़क़्ले सलीम** से जैसा कि इस बात का इ़ल्म कि ह़ादिष का बिग़ैर किसी सबब

के होना मुहाल है या **तवातुर** के ज़रीए हासिल हो जैसे शहरे मक्कए मुकर्रमा के वुजूद का इल्म या **तजरिबे** से हासिल हो जैसा कि इस बात का इल्म कि पका हुवा सक्मूनिया दस्त आवर है या दलील से हासिल हो जैसा कि हम ज़िक्र कर चुके हैं।

खुलासा : मुतकल्लिमीन के नज़दीक लफ़्ज़े यक़ीन का इत़लाक़ अ़दमे शक के वक़्त होता है। लिहाज़ा हर वोह इल्म जिस में शक न हो मुतकल्लिमीन के नज़्दीक वोह यक़ीन है इस बुन्याद पर यक़ीन ज़ईफ़ के साथ मुत्तसिफ़ नहीं होता क्यूंकि शक की नफ़ी में तफ़ावुत नहीं।

यक़ीन के मुतअ़ल्लिक़ फुक़हा व सूफ़िया की इस्तिलाह़ :

फुक़हाए किराम, सूफ़ियाए उ़ज़्ज़ाम और अक्षर उ़-लमाए दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِين की मुराद येह है कि यक़ीन में तजवीज़ और शक के ए'तिबार करने की त़रफ़ बिल्कुल तवज्जोह न दी जाए बल्कि अ़क़्ल पर इन के इस्तिलाह़ और ग़लबे की त़रफ़ ध्यान दिया जाए यहां तक कि कहा जाता है कि "फुलां शख़्स का मौत पर यक़ीन कम्ज़ोर है ह़ालांकि इस में कोई शक नहीं।" नीज़ कहा जाता है कि "फुलां शख़्स को रिज़्क़ मिलने पर बड़ा यक़ीन है ह़ालांकि इस बात का भी इमकान है कि कभी उसे रिज़्क़ न मिले।"

खुलासा : तो जब कभी दिल किसी शै की तस्दीक़ की त़रफ़ माइल हो और येह मैलान इस के दिल पर इतना ग़ालिब आ जाए और दिल को इतना घेर ले कि येह नफ़्स में किसी चीज़ के इम्कान व मन्अ़ (या'नी होने या न होने) का हुक्म लगाने वाला और तसर्रुफ़ करने वाला हो जाए तो इसे यक़ीन का नाम दिया जाता है। इस में कोई शक नहीं कि सब लोग मौत के यक़ीनी होने और इस में शक के न होने में बराबर हैं इस के बा वुजूद उन में ऐसे भी होते हैं जो इस की त़रफ़ ध्यान नहीं देते और न मौत की तय्यारी करते हैं गोया उन्हें मौत का यक़ीन नहीं है और कुछ ऐसे हैं कि जिन के दिल पर मौत की फ़िक्र क़ाबिज़ होती है यहां तक कि उन की सारी हिम्मत मौत की तय्यारी ही में सर्फ़ होती है और मौत की तय्यारी में वोह अपने ग़ैर के लिये कुछ गुन्जाइश नहीं छोड़ते। इस ह़ालत को कुव्वते यक़ीन से ता'बीर किया जाता है इसी वजह से बा'ज़ ने कहा कि "जिस यक़ीन में तू शक को न पाए वोह उस शक की मिष्ल है जिस में यक़ीन न हो जैसे मौत।"(1)

इस इस्तिलाह़ की बुन्याद पर यक़ीन ज़ो'फ़ और कुव्वत से मुत्तसिफ़ हो सकता है और हमारे इस क़ौल कि "**उ़-लमाए आख़िरत की शान येह है कि वोह अपनी कुव्वत, यक़ीन पुख़्ता करने में सर्फ़ करते हैं।**" से दोनों मा'ना मुराद हैं और वोह येह कि शक की नफ़ी फिर

---

(1) ......موسوعة الامام ابن ابی الدنیا، کتاب الیقین، الحدیث:٣٢، ج١، ص٣٠۔
حلیة الاولیاء، سلمة بن دینار، الرقم:٣٩٢١، ج٣، ص٢٦٩، بتغیرٍ قلیلٍ۔

यक़ीन को नफ़्स पर मुसल्लत़ करना यहां तक कि वोह उस पर ग़ालिब आ जाए और नफ़्स पर हुक्म लगाने वाला और इस में तसर्रुफ़ करने वाला हो जाए।

यक़ीन की अक़्साम :

अगर तुम येह समझ गए हो तो फिर येह भी जान गए होंगे कि हमारे क़ौल का मत़लब येह है कि यक़ीन तीन क़िस्मों की त़रफ़ मुन्क़सिम होता है :

(1)....क़ुव्वत व ज़ो'फ़ (2)....ज़ुहूर व ख़फ़ा और (3)....कषरत व क़िल्लत।

क़ुव्वत व ज़ो'फ़ के ए'तिबार से इस की तक़्सीम इस्तिलाहे़ षानी (फ़ुक़हा की इस्तिलाह़) के मुत़ाबिक़ है और इस्तिलाहे़ षानी दिल पर ग़ालिब आने के ए'तिबार से है और क़ुव्वत व ज़ो'फ़ में यक़ीन के मआ़नी के दर्जात बे इन्तिहा हैं। इन मआ़नी के ए'तिबार से यक़ीन के तफ़ावुत के मुत़ाबिक़ मख़्लूक़ मौत की तय्यारी में भी मुख़्तलिफ़ है। **ज़ुहूर व ख़फ़ा** के ए'तिबार से यक़ीन में तफ़ावुत पहली (या'नी मुतकल्लिमीन की) इस्तिलाह़ के मुत़ाबिक़ है। यक़ीन का **क़लील और कषीर** होना इस के मुतअ़ल्लिक़ात के कषीर होने की वजह से है। जैसे कहा जाता है कि फ़ुलां शख़्स फ़ुलां से ज़ियादा आ़लिम है या'नी इस की मा'लूमात उस से ज़ियादा है। इसी वजह से कोई आ़लिम तमाम शरई मसाइल में क़वी यक़ीन वाला होता है और कोई बा'ज़ मसाइल में क़वी यक़ीन रखता है।

एक सुवाल और इस का जवाब :

अगर तुम कहो कि मैं यक़ीन, इस के क़वी व ज़ईफ़, कषीर व क़लील, ज़ाहिर व ख़फ़ी होने को शक की नफ़ी या दिल पर इस के ग़लबा पाने के मा'ना से समझ गया हूं अब मुझे येह बताएं कि यक़ीन के मुतअ़ल्लिक़ात और इस के जारी होने का मा'ना क्या है और किस में यक़ीन मत़लूब है ? क्यूंकि मैं इस बात को जाने बिग़ैर कि यक़ीन किन बातों में मत़लूब है, इसे त़लब करने पर क़ादिर नहीं हो सकता। तो इस का जवाब येह है कि जान लो अम्बियाए किराम عَلَيۡهِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام जो भी अह़काम ले कर तशरीफ़ लाए इन तमाम पर यक़ीन रखना ज़रूरी है इस लिये कि यक़ीन ख़ास मा'रिफ़त का नाम है जो इन मा'लूमात से मुतअ़ल्लिक़ है जो शरीअ़त में वारिद हुई हैं, इन्हें शुमार नहीं किया जा सकता ताहम मैं इन में से बा'ज़ की त़रफ़ इशारा करूंगा जो इन तमाम की अस्ल हैं।

(1)....**तौह़ीद :** और वोह येह है कि सब चीज़ें मुसब्बिबल अस्बाब (या'नी अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ) की त़रफ़ से जानी जाएं और अस्बाब की त़रफ़ ध्यान न दिया जाए बल्कि अस्बाब के बारे में येह नज़रिया रखा जाए कि वोह तो ख़ुद मुसख़्ख़र हैं, उन का अपना कोई हुक्म नहीं। पस इस बात

की तस्दीक़ करने वाला साहि़बे यक़ीन है। जब येह बात षाबित शुदा है कि सूरज, चांद, सितारे, जमादात, नबातात, हैवानात और सारी मख़्लूक़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हुक्म के इस त़रह़ ताबेअ़ है जिस त़रह़ क़लम कातिब के हाथ में और येह कि क़ुदरते अज़लिया ही तमाम मख़्लूक़ के सादिर होने का ज़रीआ़ है तो उस के दिल पर तवक्कुल, रिज़ा और तस्लीम का ग़लबा होगा और वोह ऐसा यक़ीन वाला होगा जो ग़ज़ब, बुग़्ज़ व कीना, ह़सद और बुरे अख़्लाक़ से बरी होगा। येह यक़ीन के दरवाज़ों में से एक दरवाज़ा है।

(2).....**रिज़्क़ का ज़ामिन अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **है :** इस पर यक़ीन हो कि सब के रिज़्क़ का ज़ामिन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ है। चुनान्चे, इरशादे बारी तआ़ला है :

وَمَا مِنْ دَآبَّةٍ فِي الْاَرْضِ اِلَّا عَلَى اللّٰهِ رِزْقُهَا (پ۱۲، ھود:٦)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और ज़मीन पर चलने वाला कोई ऐसा नहीं जिस का रिज़्क़ **अल्लाह** के ज़िम्मए करम पर न हो।*

और इस बात का यक़ीन कि उस का रिज़्क़ उसे मिल कर ही रहेगा और जो कुछ उस के मुक़द्दर में है वोह उस तक ज़रूर पहुंचाया जाएगा। जब येह यक़ीन उस के दिल पर ग़ालिब आ जाएगा तो वोह त़लब में शिद्दत नहीं करेगा, न तो उस की ह़िर्स व ख़्वाहिश बढ़ेगी और न ही रिज़्क़ के फ़ौत होने पर उसे अफ़्सोस होगा। इस यक़ीन के नतीजे में तमाम नेकियां और उ़म्दा अख़्लाक़ ह़ासिल होते हैं।

(3)....**इस बात का यक़ीन रखना कि जो ज़र्रा भर भलाई करेगा उसे देखेगा और ज़र्रा भर बुराई करेगा उसे देखेगा :** इस से षवाब व अ़ज़ाब का यक़ीन मुराद है ह़त्ता कि वोह षवाब की त़रफ़ त़ाआ़त की ऐसी ही निस्बत जाने जैसे रोटी की निस्बत शिकम सैरी की त़रफ़ है और गुनाहों की निस्बत अ़ज़ाब की त़रफ़ ऐसे ख़याल करे जैसे ज़हर और सांपों की निस्बत हलाकत की त़रफ़ है। चुनान्चे, जिस त़रह़ वोह शिकम सैरी के लिये रोटी ह़ासिल करने पर ह़रीस है और इस की कमी व ज़ियादती का ख़याल रखता है इसी त़रह़ तमाम नेकियों पर भी ह़रीस हो थोड़ी हों या ज़ियादा और जिस त़रह़ ज़हर से इजतिनाब करता है थोड़ा हो या ज़ियादा इसी त़रह़ गुनाहों से भी इजतिनाब करे चाहे कम हो या ज़ियादा, छोटे हों या बड़े। यक़ीन पहले मा'ना के ए'तिबार से आ़म ईमान वालों में भी पाया जाता है और दूसरे मा'ना के ए'तिबार से मुक़र्रबीन के साथ ख़ास है। इस यक़ीन का फ़ाइदा येह होता है कि इन्सान अपनी ह़रकात व सकनात और ख़त़रात को

अच्छी त़रह़ देखता रहता है, तक़्वा में मुबालग़ा करता और हर क़िस्म की बुराई से बचता है। जब यक़ीन ग़ाबिल हो जाता है तो वोह गुनाहों से बहुत ज़ियादा बचता और हर वक़्त फ़रमां बरदारी के लिये तय्यार रहता है।

(4).....**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **हर ह़ाल में मुत्तलअ़ है :** इस बात का यक़ीन कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हर ह़ाल में तुझ पर मुत्तलअ़ है, तेरे दिल के वसवसों, पोशीदा ख़त़रों और फ़िक्रों को देख रहा है और मा'नए अव्वल जो कि **"अ़दमे शक है"** के ए'तिबार से हर मोमिन इस बात का यक़ीन रखता है। बहर ह़ाल मा'नए षानी जो कि मक़्सूद भी है और क़लील भी येह सिर्फ़ सिद्दीक़ीन के साथ ख़ास है और इस का ह़ासिल येह है कि इन्सान तन्हाई में भी अपने तमाम मुआ़मलात में अदब को उस शख़्स की त़रह़ मलहूज़े ख़ात़िर रखे जो बहुत बड़े बादशाह के सामने बैठा हो और बादशाह उसे देख रहा हो तो वोह गरदन झुकाए अपने तमाम मुआ़मलात में बा अदब रहता और ख़िलाफ़े अदब हर बात से बचता है। इसी त़रह़ जब वोह यक़ीन कर ले कि **अल्लाह** अ़लीमो ख़बीर عَزَّوَجَلَّ उस की ख़ुफ़्या बातों पर इस त़रह़ मुत्तलअ़ है जैसे मख़्लूक़ उस की ज़ाहिरी बातों पर तो वोह अपने बात़िनी मुआ़मलात में भी इस त़रह़ फ़िक्र मन्द होगा जिस त़रह़ अपने ज़ाहिरी मुआ़मलात में फ़िक्र मन्द होता है बल्कि बात़िन को संवारने, इसे पाकीज़ा रखने और मुज़य्यन करने में इस से ज़ियादा मुबालग़ा करेगा जितना अपने ज़ाहिर को लोगों के लिये मुज़य्यन करने में मुबालग़ा करता है। इस मर्तबे का यक़ीन ह़या, ख़ौफ़, इन्किसारी, आ़जिज़ी, मसकनत, ख़ुज़ूअ़ और तमाम अच्छे अख़्लाक़ पैदा करता है जो बुलन्द तरीन त़ाअ़तों का सबब हैं। लिहाज़ा यक़ीन उन तमाम उमूर में से हर अम्र में एक दरख़्त की मिष्ल है और येह अख़्लाक़ दिल में उन शाख़ो की मिष्ल हैं जो यक़ीन के दरख़्त से निकली हों और अख़्लाक़ से सादिर होने वाले आ'माल और त़ाआ़त उन फूलों और शिगूफ़ों की त़रह़ हैं जो टहनियों से निकलते हैं। पस यक़ीन अस्ल और बुन्याद है इस के जारी होने के कई अबवाब हैं जो हमारी ज़िक्र कर्दा तफ़्सील से बहुत ज़ियादा है। अ़न क़रीब इन का ज़िक्र اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ मुन्जियात (या'नी नजात देने वाले उमूर) के बयान में आएगा। इस वक़्त यक़ीन के बारे में इतनी तफ़्सील ही काफ़ी है।

﴾9﴿....उ़-लमाए आख़िरत की निशानियों में से एक येह है कि ऐसा आ़लिम ग़मगीन हो कर इन्किसारी से सर झुकाए ख़ामोश रहे और ख़शिय्यत का अषर उस की सीरत व सूरत, लिबास, ह़रकात व सकनात, बोलने और ख़ामोश रहने से ज़ाहिर हो, देखने वाला जब उसे देखे तो उसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ याद आ जाए, उस की सूरत उस के अ़मल पर दलील हो और उस का ज़ाहिर उस के बात़िन का आईना हो। नीज़ उ़-लमाए आख़िरत सुकून, आ़जिज़ी और तवाज़ोअ़ में

अपनी पेशानियों से पहचाने जाते हैं। मन्क़ूल है कि "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ बन्दे को वक़ार के साथ आ़जिज़ी से ज़ियादा ख़ूबसूरत लिबास नहीं पहनाता और येही अम्बियाए किराम عَلَيۡهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का लिबास है और सालेह़ीन व सादिक़ीन को भी इस लिबास से ख़ास किया जाता है।"(1) जब कि ज़ियादा गुफ़्त्गू करना, हर वक़्त हंसी मज़ाक़ करना, ह़रकत व गुफ़्त्गू में तेज़ी दिखाना, येह तमाम तकब्बुर की अ़लामात हैं। बे ख़ौफ़ी और ग़फ़्लत अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के अ़ज़ाबो में से एक बड़ा अ़ज़ाब और उस की सख़्त नाराज़ी का बाईष है। येह मा'रिफ़ते इलाही रखने वालों का त़रीक़ा नहीं बल्कि दुन्यादारों का त़रीक़ा है जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से ग़ाफ़िल होते हैं।

उ़-लमा की अक़्साम :

ह़ज़रते सय्यिदुना सह्ल बिन अ़ब्दुल्लाह तुस्तरी عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡقَوِی फ़रमाते हैं कि उ़-लमा की तीन अक़्साम हैं :

(1)....वोह उ़-लमा जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के अवामिर से वाक़िफ़ हैं लेकिन इस के अय्याम को नहीं जानते। येह ह़लाल व ह़राम का फ़तवा देने वाले मुफ़्ती हैं और येह ऐसा इ़ल्म है जिस से ख़ौफ़े ख़ुदा पैदा नहीं होता।

(2)....वोह उ़-लमा जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ पर ईमान तो रखते हैं मगर न तो उस के अवामिर को जानते हैं और न ही अय्याम से वाक़िफ़ होते हैं, येह आ़म मोअमिनीन हैं।

(3)....वोह उ़-लमा जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ पर ईमान लाने के साथ साथ उस के अवामिर और अय्याम का इ़ल्म भी रखते हैं। येह सिद्दीक़ीन हैं, इन पर ख़शिय्यत व ख़ुशूअ़ का ग़लबा रहता है।(2)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के अय्याम से मुराद उस की पोशीदा सज़ाएं और बात़िनी ने'मतें हैं जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने गुज़रे हुए लोगों पर उतारीं। लिहाज़ा जिस शख़्स का इ़ल्म इस का इह़ात़ा कर लेगा इस के ख़ौफ़े ख़ुदा में इज़ाफ़ा और ख़ुशूअ़ व ख़ुज़ूअ़ ज़ाहिर होगा।

अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنۡهُ ने फ़रमाया : "इ़ल्म सीखो और इ़ल्म के लिये सकीना, वक़ार और ह़िल्म सीखो, जिस से इ़ल्म सीखते हो उस के सामने आ़जिज़ी इख़्तियार करो और जो तुम से इ़ल्म सीखे वोह तुम्हारे सामने आ़जिज़ी और तवाज़ोअ़ इख़्तियार करे। तकब्बुर करने वाले उ़-लमा में से न होना ताकि तुम्हारा इ़ल्म तुम्हारी जहालत की त़रह़ न हो जाए।"(3)

---

1 ......قوت القلوب، الفصل الحادی والثلاثون، ج ۱، ص ۲۴۲۔

2 ......المرجع السابق۔

3 ......الزھد للامام احمد بن حنبل، زھد عمر بن الخطاب، الحدیث: ۶۳۰، ص ۱۴۸۔

شعب الایمان للبیھقی، باب فی نشر العلم، الحدیث: ۱۷۸۹، ج ۲، ص ۲۸۷۔

मुत्तक़ीन का इमाम :

मन्क़ूल है कि "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ जिस बन्दे को इ़ल्म अ़त़ा फ़रमाता है उसे ह़िल्म, आ़जिज़ी, अच्छे अख़्लाक़ और नर्मी भी अ़त़ा फ़रमाता है और येही इ़ल्मे नाफ़ेअ़ है।" एक रिवायत में है कि "जिस बन्दे को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इ़ल्म, ज़ोह्द, आ़जिज़ी और अच्छे अख़्लाक़ अ़त़ा फ़रमाए वोह मुत्तक़ीन का इमाम है।"(1)

ह़ुज़ूरे अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "मेरी उम्मत के बेहतरीन लोगों में से कुछ ऐसे हैं जो ब ज़ाहिर रह़्मते इलाही की वुस्अ़त के सबब ख़ुश होते हैं लेकिन बात़िनी त़ौर पर अ़ज़ाबे इलाही के ख़ौफ़ से गिर्या कुनां रहते हैं। उन के बदन तो ज़मीन पर होते हैं लेकिन दिल आस्मान पर, उन की रूहें दुन्या में मगर अ़क़्लें आख़िरत में (नजात के ह़ुसूल में मगन) होती हैं। इत़्मीनान और पुर सुकून अन्दाज़ से चलते और वसीले के ज़रीए़ क़ुर्ब ह़ासिल करते हैं।"(2)

इ़ल्म का वज़ीर, बाप और लिबास :

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : "ह़िल्म इ़ल्म का वज़ीर, नर्मी उस का बाप और तवाज़ोअ़ उस का लिबास है।"(3)

ह़ज़रते सय्यिदुना बिशर बिन ह़ारिष ह़ाफ़ी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْکَافِی फ़रमाते हैं : "जिस ने इ़ल्म के ज़रीए़ सरदारी चाही वोह बारगाहे इलाही में ऐसे ह़ाज़िर होगा कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस से नाराज़ होगा और वोह ज़मीन व आस्मान में मबग़ूज़ होगा।"(4)

जिस अ़मल में रिज़ाए इलाही मक़्सूद न हो वोह मर्दूद है :

इसराईली मरविय्यात में है कि एक ह़कीम ने ह़िक्मत पर 360 किताबें लिखीं यहां तक कि ह़कीम के नाम से मशहूर हो गया। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उस क़ौम के नबी عَلَیْہِ السَّلَام की त़रफ़ वह़्य कि "फ़ुलां शख़्स से कह दो तूने ज़मीन को कषरते कलाम से भर दिया लेकिन इस से मेरी

---

1 ......قوت القلوب، الفصل الحادی و الثلا ثون، باب ذکر الفرق بین علماء الدنیا......الخ، ج ۱، ص ۲۴۴۔

2 ......المستدرک، کتاب الھجرۃ، باب وصف اھل الصفۃ مفصلاً، الحدیث: ۴۳۵۰، ج ۳، ص ۵۵۴۔
حلیۃ الاولیاء، مقدمۃ المصنف، الحدیث: ۲۸، ج ۱، ص ۴۸۔

3 ......قوت القلوب، الفصل الحادی و الثلا ثون، باب ذکر الفرق بین علماء الدنیا......الخ، ج ۱، ص ۲۴۴۔

4 ......قوت القلوب، الفصل الحادی و الثلا ثون، باب ذکر الفرق بین علماء الدنیا......الخ، ج ۱، ص ۲۴۵۔

रिज़ा का इरादा नहीं किया, मैं तेरे कषीर कलाम में से कुछ भी क़बूल नहीं करूंगा।" फिर उस शख़्स ने शर्मिन्दा हो कर येह काम छोड़ दिया और आ़म लोगों के साथ मिल जुल कर बाज़ारों में चलना फिरना शुरूअ़ कर दिया, बनी इसराईल के साथ खाना पीना इख़्तियार कर लिया और आ़जिज़ी व इन्किसारी का पैकर बन गया तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उस दौर के नबी عَلَیْہِ السَّلَام की त़रफ़ वह्य फ़रमाई कि "उस से कह दो अब तुझे मेरी रिज़ा की तौफ़ीक़ ह़ासिल हुई है।"(1)

सिपाही से ज़ियादा बुरे :

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अवज़ाई رَحْمَۃُ اللّٰہِ تعالٰی عَلَیْہ ह़ज़रते सय्यिदुना बिलाल बिन सा'द عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الصَّمَد के ह़वाले से बयान करते हैं वोह फ़रमाया करते थे कि "तुम में से कोई सिपाही को देखता है तो उस से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की पनाह मांगता है और उ़–लमाए दुन्या को देखता है जो मख़्लूक़ और हुकूमत के शौक़ में बनावट इख़्तियार किये होते हैं तो उन को बुरा नहीं समझता ह़ालांकि वोह उस सिपाही से ज़ियादा बुरे समझे जाने के ह़क़दार हैं।"(2)

सब से बुरे लोग :

मरवी है कि बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ की गई : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم अफ़्ज़ल अ़मल कौन सा है ?" इरशाद फ़रमाया : "मह़रमात से बचना और हर वक़्त ज़िक्रुल्लाह से अपनी ज़बान को तर रखना।" फिर अ़र्ज़ की गई : "अच्छा दोस्त कौन है ?" इरशाद फ़रमाया : "ऐसा दोस्त कि अगर तू अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र करे तो वोह तेरी मदद करे और अगर तू अपने रब्ब عَزَّوَجَلَّ के ज़िक्र को भूल जाए तो वोह तुझे याद दिलाए।" फिर अ़र्ज़ की गई : "बुरा दोस्त कौन है ?" इरशाद फ़रमाया : "बुरा दोस्त वोह है कि अगर तू अपने रब्ब عَزَّوَجَلَّ को भूल जाए तो वोह तुझे याद न दिलाए और अगर तू अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र करे तो वोह तेरी मदद न करे। फिर अ़र्ज़ की गई : "लोगों में बड़ा आ़लिम कौन है ?" इरशाद फ़रमाया : "लोगों में से सब से ज़ियादा ख़ौफ़े ख़ुदा रखने वाला। अ़र्ज़ की गई : "हमें हमारे अच्छे लोगों के बारे में ख़बर दीजिये ताकि हम उन के साथ बैठा करें। आप صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जिन्हें देखने से ख़ुदा याद आ जाए।" अ़र्ज़ की गई : "लोगों में से बुरे कौन हैं ?" इरशाद फ़रमाया : "ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मग़फ़िरत फ़रमा।" लोगों ने फिर अ़र्ज़ की :

---

1 ......قوت القلوب، الفصل الحادی و الثلا ثون، باب ذکر الفرق بین علماء الدنیا......الخ، ج ۱، ص ۲۴۶۔

2 ......المرجع السابق، ص ۲۴۵۔

"या रसूलल्लाह صلى الله تعالى عليك وسلم हमें उन के बारे में ख़बर दीजिये !" इरशाद फ़रमाया : "उ़-लमा, जब फ़साद बरपा करें ।"(1)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब, ह़बीबे लबीब صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "बरोज़े क़ियामत लोगों में से सब से ज़ियादा अम्न में वोह लोग होंगे जो दुन्या में सब से ज़ियादा फ़िक्र में रहे होंगे, आख़िरत में लोगों में से सब से ज़ियादा वोह लोग हंसेंगे जो दुन्या में सब से ज़ियादा रोए होंगे और आख़िरत में लोगों में से सब से ज़ियादा ख़ुश वोह लोग होंगे जो दुन्या में बहुत ज़ियादा ग़मगीन रहे होंगे ।"

सब से बड़ा जाहिल :

अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने अपने एक ख़ुत़बे में इरशाद फ़रमाया : "मेरा ज़िम्मा रहन है और मैं इस का ज़ामिन हूं कि तक़्वा पर किसी क़ौम की खेती नहीं सूखेगी (या'नी जो रिज़ाए इलाही के लिये अ़मल करेगा उस का अ़मल बात़िल नहीं होगा) और हिदायत पर होते हुए उस की जड़ को प्यास नहीं लगेगी । लोगों में से सब से बड़ा जाहिल वोह शख़्स है जो अपनी क़द्र नहीं पहचानता और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में मख़्लूक़ में से सब से ज़ियादा नापसन्दीदा वोह है जो इ़ल्म जम्अ़ करता और इस के ज़रीए फ़ितने के अंधेरों में ग़ोते खाता है, उस जैसे और ज़लील तरीन लोग उसे आ़लिम कहते हैं ह़ालांकि वोह पूरा एक दिन भी इ़ल्म में नहीं गुज़ारता, सुब्ह़ सवेरे उस चीज़ की कषरत करता है जिस का थोड़ा उस के ज़ियादा से बेहतर है ह़त्ता कि जब वोह बदबूदार पानी से सैराब होता और बेकार कामों में ज़ियादती करता है तो लोगों का उस्ताज़ बन बैठता है ताकि उन कामों से ख़लासी दिलाए जो दूसरों पर मुश्तबा हो गए हैं और मुबहिमात में से कोई चीज़ उस के सामने पेश हो तो उस के लिये अपनी राए से ग़लत़ क़ियास क़ाइम कर लेता है । वोह शख़्स शुब्हात को ख़त्म करने में मकड़ी के जाले की मिष्ल है । वोह नहीं जानता कि वोह राहे रास्त पर है या ग़लत़ी पर । बहुत सी जहालतों का पलन्दा और बिग़ैर सूझ बूझ के बेढंगी बातें करने वाला है । जिस बात का इ़ल्म नहीं उस के बताने से उ़ज़्र नहीं करता कि बच जाए और न ही इ़ल्म पर मज़बूत़ी ह़ासिल करता है कि ग़नीमत पाए । उस की वजह से ख़ून बहते हैं । उस के फ़ैसलों से ज़िना ह़लाल होते हैं । जो सुवाल उस से किया जाए उस का जवाब नहीं दे सकता और जो उस के ह़वाले किया जाए उस की अहलिय्यत नहीं रखता । येही वोह लोग हैं जो सज़ाओं के ह़क़दार हैं । इन पर उ़म्र भर रोना और नौह़ा करना चाहिये ।"(2)

---

1 ......قوت القلوب، ص ٢٤٦ـ

2 ......المرجع السابق، ص ٢٤٦، بتغيرقليلٍ ـ

मज़ीद फ़रमाते हैं कि "जब इ़ल्म की बात सुनों तो ख़ामोश रहो और इसे बेहूदा बातों से न मिलाओ वरना दिल इस की त़रफ़ मुतवज्जेह नहीं होता।"[1]

बा'ज़ अस्लाफ़े किराम رَحِمَهُمُ اللّٰہُ السَّلَام ने फ़रमाया : "आ़लिम जब एक मरतबा हंसता है तो इ़ल्म का एक लुक़्मा निकाल फैंकता है।"[2]

उस्ताज़ व शागिर्द की तीन उ़म्दा ख़स्लतें :

मन्क़ूल है कि "अगर उस्ताज़ में तीन बातें हों तो इस के सबब शागिर्द पर ने'मतें मुकम्मल हो जाती है : (1)....सब्र (2)....आ़जिज़ी और (3)....अच्छे अख़्लाक़ और अगर शागिर्द में तीन बातें हों तो इस के सबब उस्ताज़ पर ने'मत कामिल हो जाती है : (1)....अ़क़्ल (2)....अदब और (3)....अच्छी समझ।"[3]

अल मुख़्तसर उ़-लमाए आख़िरत कुरआने ह़कीम में बयान कर्दा अख़्लाक़ से कभी भी जुदा नहीं होते इस लिये कि वोह अ़मल के लिये कुरआने मजीद सीखते हैं न कि हुकूमत के हुसूल के लिये।

कु़रआन से पहले ईमान :

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं : "हम ने एक ज़माना गुज़ारा है कि हम में से हर एक को ईमान कुरआन से पहले दिया गया जब कोई सूरत नाज़िल होती तो वोह उस के ह़लाल व ह़राम, अवामिर व नवाही को सीख लेता और जहां तवक़्क़ुफ़ करना मुनासिब होता वहां तवक़्क़ुफ़ करता और मैं ने ऐसे लोगों को भी देखा जिन में से किसी को ईमान से पहले कुरआन दिया गया वोह सूरए फ़ातिह़ा से ले कर आख़िर तक सारा कुरआने पाक पढ़ लेता है लेकिन उस के अवामिर व नवाही को नहीं जानता और न येह जानता है कि कहां तवक़्क़ुफ़ करना मुनासिब है। वोह उसे रद्दी खजूरों की त़रह़ बिखेरता चला जाता है।"[4]

एक रिवायत में इस त़रह़ मफ़हूम है कि "हमें (या'नी सह़ाबए किराम को) कुरआन से पहले ईमान अ़त़ा हुवा और अ़न क़रीब ऐसे लोग आएंगे जिन्हें ईमान से पहले कुरआन मिलेगा। वोह इस के हुरूफ़ को तो दुरुस्त करेंगे लेकिन इस की हुदूद और इस के हुक़ूक़ ज़ाएअ़ करेंगे। वोह कहेंगे कि हम ने कुरआने पाक पढ़ा है हम से बड़ा क़ारी कौन है? हम ने सीखा है, हम से बड़ा आ़लिम कौन है? पस इन का ह़िस्सा येही है।"

---

1 ......قوت القلوب، ص ۲۵۰۔ 2 ......المرجع السابق، ص ۲۵۱۔ 3 ......المرجع السابق، ص ۲۵۱۔

4 ......السنن الکبری للبیهقی، کتاب الصلاة، باب البیان انه انما قیل......الخ، الحدیث: ۵۲۹۰، ج۳، ص ۱۷۱۔

एक रिवायत में इतना ज़ाइद है कि ''वोह इस उम्मत के बुरे लोग हैं।''[1]

पांच अच्छे अख़्लाक़ :

मन्क़ूल है कि ''किताबुल्लाह की पांच आयात में, से जो पांच अख़्लाक़ समझे गए हैं वोही उ़-लमाए आख़िरत की अ़लामात हैं : (1) ख़ौफ़ (2) ख़ुशूअ़ (3) आ़जिज़ी (4) हुस्ने अख़्लाक़ और (5) आख़िरत को दुन्या पर तरजीह़ देना या'नी ज़ोह्द इख़्तियार करना।''

ख़शिय्यत : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के इस फ़रमान से षाबित है :

اِنَّمَا یَخْشَى اللّٰهَ مِنْ عِبَادِهِ الْعُلَمٰٓؤُاؕ
(پ۲۲، فاطر:۲۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : अल्लाह से उस के बन्दों में वोही डरते हैं जो इ़ल्म वाले हैं।

ख़ुशूअ़ : इस आयते मुबारका से षाबित है :

خٰشِعِیْنَ لِلّٰهِ ۙ لَا یَشْتَرُوْنَ بِاٰیٰتِ اللّٰهِ ثَمَنًا قَلِیْلًاؕ
(پ۴، اٰل عمرٰن:۱۹۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : उन के दिल अल्लाह के हुज़ूर झुके हुए, अल्लाह की आयतों के बदले ज़लील दाम नहीं लेते।

तवाज़ोअ़ : का ज़िक्र इस आयते मुक़द्दसा में है :

وَاخْفِضْ جَنَاحَكَ لِلْمُؤْمِنِیْنَ ﴿۸۸﴾ (پ:۱۴، الحجر:۸۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और मुसलमानों को अपनी रह़मत के परों में ले लो।

हुस्ने अख़्लाक़ : का षुबूत इस फ़रमाने बारी तआ़ला से है :

فَبِمَا رَحْمَةٍ مِّنَ اللّٰهِ لِنْتَ لَهُمْ ۚ
(پ۴، اٰل عمرٰن:۱۵۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तो कैसी कुछ अल्लाह की मेहरबानी है कि ऐ मह़बूब ! तुम उन के लिये नर्म दिल हुए।

ज़ोह्द : का बयान इस आयते त़य्यिबा में है :

وَقَالَ الَّذِیْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ وَیْلَكُمْ ثَوَابُ اللّٰهِ خَیْرٌ لِّمَنْ اٰمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا ۚ
(پ۲۰، القصص:۸۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और बोले वोह जिन्हें इ़ल्म दिया गया ख़राबी हो तुम्हारी अल्लाह का षवाब बेहतर है उस के लिये जो ईमान लाए और अच्छे काम करे।

---

1 ......قوت القلوب، الفصل الحادی والثلاثون، باب ذکر الفرق بین علماء الدنیا......الخ، ج ۱، ص ۲۵۰-۲۵۱-

‘‘یَّشۡرَحۡ صَدۡرَہٗ’’ से मुराद :

आक़ाए दो आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने जब येह आयते मुबारका तिलावत फ़रमाई :

فَمَنۡ یُّرِدِ اللّٰہُ اَنۡ یَّھۡدِیَہٗ یَشۡرَحۡ صَدۡرَہٗ لِلۡاِسۡلَامِ ۚ (پ۸،الانعام:۱۲۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और जिसे अल्लाह राह दिखाना चाहे उस का सीना इस्लाम के लिये खोल देता है।*

तो अ़र्ज़ की गई : ‘‘شرح’’ से क्या मुराद है ? आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ‘‘जब नूर दिल में डाला जाता है तो इस के लिये सीना खुल जाता और कुशादा हो जाता है।’’ फिर अ़र्ज़ की गई : ‘‘क्या इस की कोई अ़लामत भी है ? इरशाद फ़रमाया : ‘‘हां ! धोके के घर (या’नी दुन्या) से दूर रहना और दाइमी घर (या’नी आख़िरत) की त़रफ़ रुजूअ़ करना और मौत से पहले उस के लिये तय्यार रहना।’’[1]

﴾11﴿.....उ़-लमाए आख़िरत की अ़लामात में से येह है कि उन की गुफ़्त्गू अकषर आ’माल के इ़ल्म और उन उमूर के मुतअ़ल्लिक़ होती है जो फ़साद आ’माल का बाइ़ष बनते, दिलों को तश्वीश में मुब्तला करते, वस्वसे पैदा करते और शर को फैलाते हैं। क्यूंकि दीन की अस्ल, बुराई से बचना है। इसी लिये किसी ने क्या ख़ूब कहा है :

عَرَفۡتُ الشَّرَّ لَا لِلشَّرِّ لٰکِنۡ لِتَوَقِّیۡہِ   وَمَنۡ لَا یَعۡرِفِ الشَّرَّ مِنَ النَّاسِ یَقَعۡ فِیۡہِ

तर्जमा : मैं शर को सिर्फ़ शर होने की वजह से नहीं पहचानता बल्कि इस से बचने के लिये भी पहचानता हूं। लोगों में से जो भी शर को नहीं पहचानता वोह इस में पड़ ही जाता है।

और इस की वजह येह भी है कि जो आ’माल फ़े’ली (या’नी ज़ाहिरी आ’ज़ा से किये जाते) हैं वोह आसान हैं और इन से भी बुलन्द तर और अ़ज़ीम अ़मल ज़बान और दिल से हमेशा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र करते रहना है और शान तो उन चीज़ों के जानने में है जो फ़सादे आ’माल और दिली तश्वीश का बाइ़ष बनती हैं। इस के शो’बाजात बहुत ज़ियादा और तफ़रीआ़त बहुत लम्बी हैं। राहे आख़िरत पर चलने के लिये इन तमाम की ह़ाजत पड़ती है जब कि आ़म लोग इस में मुब्तला हैं।

जहां तक उ़-लमाए दुन्या की बात है तो वोह हुकूमत और फ़ैस्लों में नादिर तफ़रीआ़त की पैरवी करते हैं और ऐसी सूरतें वज़अ़ करते नहीं थकते जो ज़मानों तक कभी वाक़ेअ़ न हो

1 ......شعب الایمان للبیہقی، باب فی الزھد وقصر الامل، الحدیث:۱۰۵۵۲، ج۷، ص۳۵۲۔

और अगर कभी वाके़अ़ हों भी तो उन का वुकू़अ़ किसी ख़ास ज़माने में किसी और के लिये हो नीज़ जब उन का वुकू़अ़ हो तो उन के बताने वाले कई लोग मौजूद हों और जिस चीज़ से हर वक़्त उन का वासित़ा पड़ता है और रात दिन उन के दिलों, वस्वसों और आ'माल में उस की तकरार होती है उसे छोड़ बैठे हैं।

वाज़ेह़ नुक़्सान :

वोह शख़्स सआ़दत मन्दी से कितना दूर है जो अपने लिये ज़रूरी चीज़ को किसी नादिर ज़रूरत के बदले फ़रोख़्त कर देता और इस त़रह़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के कुर्ब के बदले मख़्लूक़ के कुर्ब और क़बूलिय्यत को इख़्तियार कर लेता है और उस का शर इस में है कि दुन्या के बात़िल परस्त लोग इसे फ़ाज़िल, मुहक़्क़िक़, उ़लूमे अ़क़्लिय्या और पेचीदा इबारात व मसाइल का आ़लिम जानें। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से उस बन्दे की जज़ा येह है कि उसे दुन्या में लोगों में मक़्बूलिय्यत ह़ासिल नहीं होती बल्कि उस पर ज़माने के मसाइब उंडेल दिये जाते हैं फिर वोह क़ियामत के दिन मुफ़्लिसी की ह़ालत में आएगा और अ़मल करने वालों का नफ़्अ़ और मुक़र्रबीन की कामयाबी देख कर ह़सरत करेगा और येही वाज़ेह़ (खुला) नुक़्सान है।

कलामे अम्बिया के मुशाबेह कलाम :

बेशक ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَیۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡقَوِی का कलाम अम्बियाए किराम عَلَیۡهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के कलाम के ज़ियादा मुशाबेह था और ब ए'तिबारे हिदायत लोगों में सब से ज़ियादा आप رَحۡمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیۡه सह़ाबए किराम رِضۡوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیۡهِمۡ اَجۡمَعِیۡن के क़रीब थे। उन के ह़क़ में इस बात पर इत्तिफ़ाक़ है।

नीज़ उन का अकषर कलाम दिलों के ख़त़रात, आ'माल के फ़साद, नफ़्स और दिल के वस्वसों और नफ़्स की पोशीदा ख़्वाहिशात के बारे में होता था। एक बार उन से पूछा गया : "ऐ अबू सई़द عَلَیۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡمَجِیۡد आप ऐसा कलाम फ़रमाते हैं जो आप के सिवा हम किसी से नहीं सुनते। आप इसे कहां से ह़ासिल करते हैं ?" फ़रमाया : "ह़ज़रते सय्यिदुना हुजै़फ़ा बिन यमान رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنۡهُ से।"[1]

ह़ज़रते सय्यिदुना हुजै़फ़ा बिन यमान رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنۡهُ की ख़िदमत में अ़र्ज़ की गई : "हम आप को इस ह़ाल में देखते हैं कि आप ऐसा कलाम करते हैं जो दीगर सह़ाबए

1 ......قوت القلوب، الفصل الحادی والثلا ثون، باب ذکرالفرق بین علماء الدنیا......الخ، ج ۱، ص۲۵۸، بتغیر۔

किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْھِمْ اَجْمَعِیْن से नहीं सुना जाता । आप ने इसे कहां से ह़ासिल किया ?'' आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : ''रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझे इस कलाम से ख़ास फ़रमाया कि लोग आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से ख़ैर के बारे में पूछते थे जब कि मैं शर के बारे में सुवाल करता था इस ख़ौफ़ से कि कहीं बुराई में मुब्तला न हो जाऊं और मैं येह बात जानता था कि भलाई का इ़ल्म मुझ से आगे नहीं बढ़ सकता ।'' एक मरतबा यूं फ़रमाया : ''मैं जानता था कि जो बुराई को नहीं जानता वोह भलाई को भी नहीं जानता ।''

एक रिवायत में इस त़रह़ है कि सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْھِمْ اَجْمَعِیْن अ़र्ज़ किया करते : ''या रसूलल्लाह صلی اللہ تعالی علیك وسلم जो कोई फुलां फुलां नेक काम करे उस का अज्र क्या है ?'' वोह आ'माल के फ़ज़ाइल के मुतअ़ल्लिक़ पूछते थे जब कि मैं अ़र्ज़ करता : ''या रसूलल्लाह صلی اللہ تعالی علیك وسلم फुलां फुलां अ़मल के फ़साद का बाइ़ष कौन सी चीज़ है ? जब आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने देखा कि मैं आ'माल की आफ़ात के बारे में सुवाल करता हूं तो मुझे इस इ़ल्म के साथ ख़ास फ़रमाया ।''(1)

राज़दार सह़ाबी :

ह़ज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को मुनाफ़िक़ीन के बारे में खुसूसी इ़ल्म था । इ़ल्मे निफ़ाक़, इस के अस्बाब और फ़ित्नों की पेचीदगियों की मा'रिफ़त में आप को इनफ़िरादी ह़ैषिय्यत ह़ासिल थी । अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म, अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़षमाने ग़नी और बड़े बड़े सह़ाबए किराम عَلَیْھِمُ الرِّضْوَان ह़ज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से आ़म व ख़ास फ़ित्नों और मुनाफ़िक़ीन के बारे में पूछा करते तो आप उन्हें जवाब देते कि इतने मुनाफ़िक़ीन बाक़ी रह गए हैं लेकिन उन के नाम न बताते । अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ जब अपने बारे में पूछते कि क्या मुझ में भी निफ़ाक़ पाया जाता है तो आप उन्हें इस से बरी क़रार देते । अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को जब किसी का जनाज़ा पढ़ाने के लिये कहा जाता तो देखते अगर ह़ज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ मौजूद होते तो पढ़ाते वरना नहीं । ह़ज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को साह़िबे सिर (या'नी राज़दान) कहा जाता था ।(2)

---

1 ......صحیح البخاری، کتاب المناقب، باب علامات النبوۃ فی الاسلام، الحدیث:۳۶۰۶، ج۲، ص۵۰۲۔

قوت القلوب، الفصل الحادی والثلاثون، باب ذکر الفرق بین علماء الدنیا......الخ، ج۱، ص۲۵۸۔

2 ......قوت القلوب، الفصل الحادی والثلاثون، باب ذکر الفرق بین علماء الدنیا......الخ، ج۱، ص۲۵۸۔

उ़-लमाए आख़िरत के त़रीक़ों में से एक त़रीक़ा दिल के मक़ामात और इस के अह़वाल पर नज़र रखना भी है। क्यूंकि दिल ही तो है जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के क़ुर्ब की त़रफ़ सअ़्य करता है लेकिन अब येह फ़न नादिर हो गया है और जब कोई आ़लिम इस में से किसी चीज़ को ह़ासिल करने की कोशिश करता है तो लोग उस पर तअ़ज्जुब करते और उसे बईद जानते हैं और कहा जाता है कि येह तो वाइज़ीन का अपने कलाम को मुज़य्यन करना है तह़क़ीक़ कहां है और तह़क़ीक़ को मह़ज़ झगड़ा ख़याल करते हैं। किसी ने सच कहा है :

اَلطُّرُقُ شَتّٰی وَطُرُقُ الْحَقِّ مُفْرَدَةٌ وَالسَّالِكُوْنَ طَرِيْقَ الْحَقِّ اَفْرَادُ

لَا يُعْرَفُوْنَ وَلَا تُدْرٰى مَقَاصِدُهُمْ فَهُمْ عَلٰى مَهْلٍ يَمْشُوْنَ قُصَّادُ

وَالنَّاسُ فِىْ غَفْلَةٍ عَمَّا يُرَادُ بِهِمْ فَجُلُّهُمْ عَنْ سَبِيْلِ الْحَقِّ رُقَّادُ

तर्जमा : (1) रास्ते तो मुख़्तलिफ़ हैं मगर ह़क़ का रास्ता एक ही है और ह़क़ के रास्ते पर चलने वाले भी मुन्फ़रिद होते हैं।

(2) न उन्हें कोई पहचानता है और न उन के मक़ासिद मा'लूम होते हैं पस वोह राहे ह़क़ का इरादा कर के चलते हैं।

(3) और लोग उन के मक़ासिद से ग़ाफ़िल हैं क्यूंकि कषीर लोग ह़क़ के रास्ते से ग़ाफ़िल हैं।

इ़ल्मे यक़ीन, अह़वाले क़ल्ब और बात़िनी सिफ़ात के आ़लिम :

ख़ुलासा : येह कि अकषर लोग आसान और त़बीअ़त के मुवाफ़िक़ चीज़ की त़रफ़ माइल होते हैं इस लिये कि ह़क़ कड़वा है इस पर क़ाइम रहना मुश्किल, इसे ह़ासिल करना दुश्वार और इस का रास्ता पेचीदा है। ख़ुसूसन दिल की सिफ़ात को जानना और इसे मज़मूम अख़्लाक़ से पाक करना इस लिये कि येह हमेशा जांकनी की ह़ालत होती है और ऐसा शख़्स दवा पीने वाले की त़रह़ होता है जो शिफ़ा की उम्मीद रखते हुए दवा की कड़वाहट पर सब्र करता है और उस शख़्स की त़रह़ होता है जो तमाम उ़म्र रोज़ों में गुज़ारता और मसाइब को बरदाश्त करता है ताकि मौत के वक़्त उस की ईद हो, ऐसे त़रीक़े में रग़बत की कषरत कैसे हो सकती है। इसी वजह से कहा गया है कि शहरे बसरा में 120 ह़ज़रात वा'ज़ व नसीह़त करते थे लेकिन सिवाए तीन के इ़ल्मे यक़ीन, दिलों के अह़वाल और बात़िन की सिफ़ात के बारे में कलाम करने वाला कोई नहीं था इन में एक ह़ज़रते सय्यिदुना सह्ल बिन अ़ब्दुल्लाह तुस्तरी, दूसरे ह़ज़रते सय्यिदुना सबीह़ी और तीसरे ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़ीम رَحِمَهُمُ اللهُ الْمُبِيْن थे। दूसरों की सोह़बत में कषीर लोग बैठते थे जिन का शुमार नहीं जब कि इन के पास बहुत कम लोग होते थे कभी कभार 10 से ज़ियादा

हो जाते थे और इस की वजह येह है कि नफ़ीस और उ़म्दा के क़ाबिल ख़ास लोग ही होते हैं जब कि अ़वाम के पास जो कुछ होता है वोह आसान होता है।

﴾11﴿....उ़-लमाए आख़िरत की निशानियों में से एक निशानी येह है कि वोह दिल की सफ़ाई के साथ साथ अपने उ़लूम में बसीरत और इस के इदराक पर ए'तिमाद करते हैं, न कि किताबों पर और न उस चीज़ की तक़लीद पर जो किसी ग़ैर से सुनी हो और बिलाशुबा तक़लीद सिर्फ़ साहिबे शरीअ़त की है [1] हर उस चीज़ में जिस का आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने हुक्म या उस के बारे में कुछ इरशाद फ़रमाया हो और सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْھِمْ اَجْمَعِیْن की तक़लीद भी इस हैषिय्यत से की जाए कि यक़ीनन इन के अफ़्आ़ल रसूलुल्लाह صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से सुनने पर दलालत करते हैं।

फिर जब वोह हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के अक़्वाल व अफ़्आ़ल को क़बूल कर के आप की तक़लीद कर ले तो चाहिये कि अब आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के असरार को समझने पर ह़रीस हो जाए क्यूंकि तक़लीद करने वाला येह काम इस लिये करता है कि साहि़बे शरीअ़त ने ऐसा किया और इन के ऐसा करने में ज़रूर कोई राज़ होगा। लिहाज़ा आ'माल और अक़्वाल के असरार ख़ूब त़लाश कर ले इस लिये कि अगर वोह सुनी हुई बात को याद करने पर ही इक्तिफ़ा करेगा तो गोया वोह इ़ल्म का एक बरतन हो कर ही रह जाएगा आ़लिम नहीं होगा।

वोह इ़ल्म का बरतन है न कि आ़लिम :

कहा जाता था कि फ़ुलां शख़्स इ़ल्म के बरतनों में से एक बरतन है उसे आ़लिम नहीं कहा जाता था क्यूंकि वोह हि़क्मतों और राज़ों पर मुत्त़लअ़ हुए बिग़ैर सिर्फ़ ह़ाफ़िज़ हो कर रह जाता था और जो शख़्स अपने दिल से पर्दों को दूर करता और हिदायत के नूर से रोशन हो जाता है उस की पैरवी और तक़लीद की जाती है उस वक़्त उसे किसी दूसरे की तक़लीद नहीं करनी चाहिये इसी वजह से ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللہ تَعَالٰی عَنْھُمَا ने फ़रमाया : "रसूलुल्लाह صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के सिवा हर एक के इ़ल्म से कुछ लिया जाता और कुछ छोड़ दिया जाता है।"[2]

---

1 ....यहां तक़लीद से इत्तिबाअ़ मुराद है न कि वोह जो फ़िक़्ह में अइम्माए किराम رَحِمَھُمُ اللہُ السَّلَام की होती है। तक़लीद के बारे में तफ़्सीली मा'लूमात ह़ासिल करने के लिये मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْمَنَّان की माया नाज़ तस्नीफ़ "**जाअल ह़क़**" हि़स्सा अव्वल (मत़बूआ़ क़ादिरी पब्लिशर्ज़ लाहोर) सफ़्ह़ा 20 ता 38 का मुत़ालआ़ कीजिये। इ़ल्मिय्या

2 ......المعجم الكبير، الحديث: ١١٩٤١، ج ١١، ص ٢٦٩، بتغير۔

सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُمَا के उस्ताज़ :

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُمَا फ़िक़्ह में ह़ज़रते ज़ैद बिन षाबित رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ के और क़िराअत में ह़ज़रते सय्यिदुना अबी बिन का'ब رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ के शागिर्द थे। फिर फ़िक़्ह और क़िराअत में इन दोनों से इख़्तिलाफ़ भी किया।(1)

बा'ज़ बुज़ुर्गों ने फ़रमाया : रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की जानिब से हमारे पास जो कुछ आया हम ने उस तमाम को सर और आंखों से क़बूल किया और सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن की त़रफ़ से जो कुछ आया उस में से हम ने कुछ ले लिया और कुछ छोड़ दिया और ताबेईन की जानिब से जो कुछ मिला तो वोह भी इन्सान थे और हम भी इन्सान हैं।''(2)

सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن को फ़ज़ीलत देने की वजह :

सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن को इस लिये फ़ज़ीलत दी गई कि उन्हों ने प्यारे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के अह़वाले मुबारका के क़राइन का मुशाहदा किया, उन के दिल उन उमूर से मुतअ़ल्लिक़ थे जो क़राइन से मा'लूम हुए और येही बात उन की दुरुस्ती की वजह है क्यूंकि रिवायत और इबारत में मुशाहदे का दख़्ल नहीं होता उन पर नूरे नबुव्वत का इतना फ़ैज़ान था कि वोह अकषर ख़त़ा से मह़फ़ूज़ रहते थे। लिहाज़ा जब किसी से सुनी सुनाई बात पर भी ए'तिमाद करना एक नापसन्दीदा तक़लीद है तो फिर किताबों पर ए'तिमाद करना तो इस से भी बईद है।

तस्नीफ़ व तालीफ़ की इब्तिदा कब से हुई :

किताबें बा'द में लिखी गई हैं ज़मानए सह़ाबा व ताबेईन के इब्तिदाई दौर में इन का वुजूद तक नहीं था येह हिजरत के 120 बरस बा'द तमाम सह़ाबए किराम और ताबेईने उ़ज़्ज़ाम मषलन ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन मुसय्यब, ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी और दीगर अकाबिर ताबेईने उ़ज़्ज़ाम رِضْوَانُ اللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن के विसाल के बा'द तालीफ़ हुई। बल्कि सह़ाबए किराम और ताबेईने उ़ज़्ज़ाम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان तो अह़ादीष लिखना और किताबें तस्नीफ़ करना नापसन्द जानते थे इस वजह से कि कहीं लोग अह़ादीष को ज़बानी याद करने, क़ुरआने पाक में तदब्बुर करने और इस के समझने से ग़ाफ़िल हो कर इन किताबों ही में मश्ग़ूल न हो जाएं। येह ह़ज़रात फ़रमाया करते थे कि जिस त़रह़ हम याद करते थे तुम भी इस त़रह़ याद करो।

---

1 ......قوت القلوب، الفصل الحادی والثلاثون، باب ذکرالفرق بین علماء الدنیا......الخ، ج ۱، ص ۲۷۴۔

2 ......قوت القلوب، الفصل الحادی والثلاثون، باب ذکرالفرق بین علماء الدنیا......الخ، ج ۱، ص ۲۷۴۔

क़ुरआने पाक किताबी सूरत में :

येही वजह थी कि अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर और दीगर सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡھِمۡ اَجْمَعِیۡن की एक जमाअ़त ने क़ुरआने पाक को मुस्ह़फ़ में जम्अ़ करने को नापसन्द जाना और फ़रमाया कि हम वोह काम क्यूं करें जो हमारे प्यारे आक़ा मदीने वाले मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने नहीं किया और इस बात से डरते थे कि कहीं लोग मुस्ह़फ़ ही पर ए'तिमाद न कर बैठें इस लिये उन्हों ने फ़रमाया : "हम क़ुरआने पाक को इस त़रह़ रहने देते हैं कि लोग एक दूसरे को पढ़ाएं सिखाएं ताकि उन का शग़्ल और मक़्सूद येही रहे।" यहां तक कि अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ और बा'ज़ दीगर सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡھِمۡ اَجْمَعِیۡن ने इस अन्देशे के बाइ़ष क़ुरआने पाक की किताबत का मश्वरा दिया कि कहीं लोग सुस्ती का शिकार हो कर इसे छोड़ न बैठें और इस ख़ौफ़ से कि कहीं ऐसा न हो कि इस में झगड़ा हो और कोई अस्ल नुस्ख़ा न मिले जिस की मदद से किसी मुतशाबेह कलिमे या क़िराअत में दुरुस्ती की जा सके फिर अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ का सीना भी खुल गया। चुनान्चे, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने क़ुरआने पाक को मुस्ह़फ़ में जम्अ़ फ़रमा दिया।

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अह़मद बिन ह़म्बल عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡاَوَّل मुवत्त़ा इमामे मालिक की तस्नीफ़ के बारे में ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡخَالِق पर ए'तिराज़ करते और फ़रमाते कि "इन्हों ने वोह काम किया जो सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡھِمۡ اَجْمَعِیۡن ने नहीं किया।"

इस्लाम में तस्नीफ़ की जाने वाली इब्तिदाई कुतुब :

मन्क़ूल है कि इस्लाम में सब से पहले इब्ने जुरैज की किताब तस्नीफ़ हुई जिस में आषार और ह़ज़रते अ़त़ा, मुजाहिद और इब्ने अ़ब्बास के दीगर शागिर्दों से मन्क़ूल तफ़ासीर हैं येह किताब मक्कए मुकर्रमा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعۡظِیۡمًا में तस्नीफ़ हुई। फिर यमन में ह़ज़रते सय्यिदुना मा'मर बिन राशिद सनआ़नी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّوۡرَانِی की किताब तस्नीफ़ हुई जिस में ह़ुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से मरवी अह़ादीष हैं। फिर मदीनए तय्यिबा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَکۡرِیۡمًا में ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे मालिक عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡخَالِق की "मुवत्त़ा"। फिर ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान षौरी عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡقَوِی की किताब "जामेअ़" तस्नीफ़ हुई। फिर चौथी सदी में इ़ल्मे कलाम में किताबें लिखी गईं और जंगो जदल और मक़ालात को बात़िल करने में ग़ौरो ख़ौज़ होने लगा। इस के बा'द

लोग इस की त़रफ़ (क़िस्सा गोई और वा'ज़ की त़रफ़) माइल हुए। उस ज़माने में इल्मे यक़ीन मिटने लगा, इस के बा'द इल्मे कुलूब, सिफ़ाते नफ़्स और शैत़ान के मक्रो फ़रैब के बारे में दरयाफ़्त करना एक अ़जीब बात हो गई सिवाए चन्द लोगों के बाक़ी सब ने इस से मुंह फैर लिया और झगड़ा करने वाला मुतकल्लिम आ़लिम कहलाने लगा, मुसज्जअ़ इबारत से अपना कलाम मुज़य्यन करने वाला क़िस्सा गो भी आ़लिम शुमार होने लगा क्यूंकि उन्हें अ़वाम ही सुनते हैं जिन्हें ह़क़ीक़ते इल्म और इस के ग़ैर में फ़र्क़ मा'लूम नहीं होता और न ही सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہِمۡ اَجۡمَعِیۡن के अह़वाल उन के पैशे नज़र होते कि वोह फ़र्क़ मा'लूम करते। पस ऐसे लोगों को उ़-लमा का नाम दिया जाने लगा और पहलों से बा'द वालों तक येह नाम चलता आया। इल्मे आख़िरत लपैट दिया गया। इल्म और कलाम के दरमियान फ़र्क़ चन्द मख़्सूस लोगों के सिवा सब के नज़्दीक मख़्फ़ी हो कर रह गया जब उन से पूछा जाता कि "फ़ुलां के पास ज़ियादा इल्म है या फ़ुलां के पास?" तो वोह कहते : "फ़ुलां के पास इल्म ज़ियादा है और फ़ुलां कलाम में इस पर फ़ाइक़ है।" ख़्वास इल्म और कलाम पर क़ुदरत के दरमियान फ़र्क़ जानते थे। पिछली सदियों में दीन इतना कमज़ोर हो गया था तो इस ज़माने के बारे में तुम्हारा क्या ख़याल है? अब तो मुआ़मला यहां तक पहुंच गया है कि कलाम वग़ैरा का इन्कार करने वाले को पागल कहा जाता है। इस लिये बेहतर येही है कि इन्सान अपनी इस्लाह़ में मश्ग़ूल हो जाए और ख़ामोश रहे।

﴾12﴿....उ़-लमाए आख़िरत की अ़लामात में से एक येह है कि ऐसा आ़लिम बिदअ़तों से बहुत ज़ियादा बचे अगर्चे सब लोग इन में मुलव्विष हों। सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہِمۡ اَجۡمَعِیۡن के बा'द पैदा होने वाली बिदअ़तों[1] (या'नी ख़िलाफ़े शरअ़ कामों) पर लोगों के मुत्तफ़िक़ होने से

1....मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ الۡمَنَّان मिरआतुल मनाजीह़, जि 1, स. 146 पर एक ह़दीष शरीफ़ के इस जुज़ "**और बद तरीन चीज़ दीन की बिदअ़तें हैं और हर बिदअ़त गुमराही है**" के तह़त फ़रमाते हैं : **مُحْدَث** के मा'ने हैं जदीद और नोपैद चीज़, यहां वोह अ़क़ाइद या बुरे आ'माल मुराद हैं जो हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की वफ़ात के बा'द दीन में पैदा किये जाएं, बिदअ़त के लुग़वी मा'ना हैं नई चीज़, रब्ब عَزَّ وَجَلَّ फ़रमाता है : بَدِیۡعُ السَّمٰوٰتِ وَ الۡاَرۡضِ (پ ١، البقرۃ:١١٧) ***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :*** *नया पैदा करने वाला आस्मानों और ज़मीन का)* इस्तिलाह़ में इस के तीन मा'ना हैं (1) नए अ़क़ीदे इसे बिदअ़ते ए'तिक़ादी कहते हैं। (2) वोह नए आ'माल जो क़ुरआनो ह़दीष के ख़िलाफ़ हों और हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के बा'द ईजाद हों (3) हर नया अ़मल जो हुज़ूर के बा'द ईजाद हुवा। पहले दो मा'ना से हर बिदअ़त बुरी है कोई अच्छी नहीं, तीसरे मा'ना के लिहाज़ से बा'ज़ बिदअ़तें अच्छी हैं बा'ज़ बुरी, यहां बिदअ़त के पहले मा'ना मुराद हैं या'नी बुरे अ़क़ीदे क्यूंकि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इसे ज़लालत या'नी गुमराही फ़रमाया। गुमराही अ़क़ीदे से होती है अ़मल से नहीं, बे नमाज़ गुनाहगार है गुमराह नहीं और रब्ब عَزَّ وَجَلَّ को झूटा या हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को अपनी मिष्ल बशर समझना बद अ़क़ीदगी और....

धोके में न पड़े बल्कि सहाबए किराम عَلَيۡهِمُ الرِّضۡوَان के अह्वाल व आ'माल और उन की सीरत को दरयाफ़्त करने में ह़रीस हो और येह जाने कि वोह किन उमूर में ज़ियादा कोशिश करते थे। क्या वोह तदरीस, तस्नीफ़, मुनाज़िरा, क़ज़ा, हुक्मरानी, अवक़ाफ़ और वसिय्यतों की तौलिय्यत (या'नी निगरानी करने), यतीमों के अम्वाल (नाह़क़) खाने और हुक्मरानों से मैल जोल रखने में मसरूफ़ रहते थे या ख़ौफ़े ख़ुदा, ग़म, तफ़क्कुर, मुजाहदा व रियाज़त, ज़ाहिर व बात़िन की निगरानी, सग़ीरा और कबीरा गुनाहों से इजतिनाब, नफ़्स की खुफ़्या ख़्वाहिशात और शैत़ान के मक्रो फ़रैब की जांच वग़ैरा उ़लूमे बात़िन में मसरूफ़ रहते थे।

ह़क़ के ज़ियादा क़रीब कौन ?

इस बात का यक़ीन कर लो कि इस ज़माने में जो शख़्स सहाबए किराम رِضۡوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيۡهِمۡ اَجۡمَعِيۡن के ज़ियादा मुशाबेह और अस्लाफ़े किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام के रास्ते से ज़ियादा वाक़िफ़ है वोही ज़ियादा इ़ल्म वाला और ह़क़ के ज़ियादा क़रीब है क्यूंकि दीन इन्ही लोगों से लिया गया है। येही वजह है कि जब अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجۡهَهُ الۡكَرِيۡم से अ़र्ज़ की गई कि आप ने फ़ुलां की मुख़ालफ़त की है तो उन्हों ने फ़रमाया : "हम में बेहतर वोह है जो इस दीन की ज़ियादा पैरवी करता है।" ग़रज़ येह कि तुम सहाबए किराम عَلَيۡهِمُ الرِّضۡوَان की मुवाफ़क़त में मौजूदा ज़माने के लोगों की मुख़ालफ़त की परवाह न करो क्यूंकि लोगों ने

..... गुमराही है, और अगर दूसरे मा'ना मुराद हों तब भी येह ह़दीष अपने इत़लाक़ पर है किसी क़ैद लगाने की ज़रूरत नहीं और अगर तीसरे मा'ना मुराद हों या'नी नया काम तो येह ह़दीष आ़म मख़्सूस अल बा'ज़ है क्यूंकि येह बिदअ़त दो क़िस्म की है बिदअ़ते ह़सना और सय्यिआ। यहां बिदअ़ते सय्यिआ मुराद है बिदअ़ते ह़सना के लिये किताबुल इ़ल्म की वोह ह़दीष है जो आगे आ रही है : "مَنۡ سَنَّ فِی الۡاِسۡلَام سُنَّةً حَسَنَةً" (الحديث) या'नी जो इस्लाम में अच्छा त़रीक़ा ईजाद करे वोह बड़े षवाब का मुस्तह़िक़ है। बिदअ़ते ह़सना कभी जाइज़ कभी वाजिब कभी फ़र्ज़ होती है इस की निहायत नफ़ीस तह़क़ीक़ इसी जगह **मिरक़ात** और **अश्अ़तुल लमआ़त** में देखो नीज़ शामी और हमारी किताब **जाअल ह़क़** में भी मुलाह़ज़ा करो, बा'ज़ लोग इस के मा'ना येह करते हैं कि जो काम हुज़ूर صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के बा'द ईजाद हो वोह बिदअ़त है, और हर बिदअ़त गुमराही, मगर येह मा'ना बिल्कुल फ़ासिद हैं क्यूंकि तमाम दीनी चीज़ें छे कलिमे, क़ुरआन शरीफ़ के 30 पारे, इ़ल्मे ह़दीष और ह़दीष की अक़्साम और कुतुब, शरीअ़त व त़रीक़त के चार सिलसिले (ह़नफ़ी, शाफ़ेई या क़ादिरी चिश्ती वग़ैरा) ज़बान से नमाज़ की निय्यत, हवाई जहाज़ के ज़रीए ह़ज का सफ़र और जदीद साइन्सी हथयारों से जिहाद वग़ैरा और दुन्या की तमाम चीज़ें पुलाव, ज़र्दे, डाक ख़ाने, रेल्वे वग़ैरा सब बिदअ़तें हैं जो हुज़ूर صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के बा'द ईजाद हुई ह़राम होनी चाहिये ह़ालांकि इन्हें कोई ह़राम नहीं कहता।

सहा़बए किराम عَلَیۡھِمُ الرِّضۡوَان के मुआ़मलात के बारे में अपनी त़बीअ़तों के मैलान के मुता़बिक़ एक राए क़ाइम कर रखी है और उन का नफ़्स येह तस्लीम करने को तय्यार नहीं कि येह त़रीक़ा जन्नत से मह़रूमी का बाइ़ष है। वोह दा'वा करते हैं कि इस के सिवा जन्नत का कोई दूसरा रास्ता नहीं।

बुरी राए वाला और दुन्या का पुजारी :

इसी लिये ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللہِ الۡقَوِی ने फ़रमाया : "इस्लाम में दो नए आदमी पैदा होंगे एक बुरी राए का मालिक होगा जो येह ख़याल करेगा कि जन्नत उसी को नसीब होगी जिस की राए इस के मुवाफ़िक़ होगी और दूसरा वोह मालदार होगा जो दुन्या का पुजारी होगा, दुन्या ही की वजह से गुस्सा करेगा, इसी के लिये राज़ी होगा और इसी को त़लब करेगा, इन दोनों को जहन्नम की त़रफ़ छोड़ दो। एक आदमी इस दुन्या में दो ऐसे आदमियों के दरमियान होगा कि इन में से एक मालदार होगा जो उसे अपनी दुन्या की त़रफ़ बुलाएगा और दूसरा ख़्वाहिश का पुजारी होगा जो उसे अपनी ख़्वाहिश की त़रफ़ रागि़ब करेगा और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे इन दोनों से मह़फ़ूज़ रखेगा। वोह अस्लाफ़े किराम رَحِمَھُمُ اللہُ السَّلَام का मुश्ताक़ होगा। इन के अफ़आ़ल के बारे में पूछता, इन की पैरवी करता और अज्रे अ़ज़ीम का त़लबगार होगा। लिहाज़ा तुम भी ऐसे बनो।"(1)

कलाम और सीरत :

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से मरवी है कि "दो ही चीज़ें हैं कलाम और सीरत। बेहतरीन कलाम अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का है और बेहतरीन सीरत रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की है। ख़बरदार! बिदअ़तों (या'नी ख़िलाफ़े शरअ़ कामों) से दूर रहो कि बद तरीन उमूर बिदआ़त हैं। हर नया काम बिदअ़त है और हर बिदअ़त (जो शरीअ़त के ख़िलाफ़ हो) गुमराही है। ख़बरदार! लम्बी उ़म्र का ख़याल दिल में मत आने देना वरना तुम्हारे दिल सख़्त हो जाएंगे। ख़बरदार! जो वक़्त आने वाला है वोह क़रीब है और दूर वोह है जो आने वाला नहीं।"(2)

ख़ुश बख़्त कौन ?

हु़ज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रही़म صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के ख़ुत़बए मुबारका में है : "उस के लिये ख़ुश ख़बरी है जिसे उस के ऐ़बों ने दूसरों के ऐ़ब तलाश करने से रोक दिया, अपने

---

1 ......قوت القلوب، الفصل الحادی و الثلاثون، باب ذکر الفرق بین علماء الدنیا......الخ، ج ۱، ص ۲۷۵۔

2 ......سنن ابن ماجه، المقدمة، الحدیث: ۴۶، ج ۱، ص ۳۴۔

पाकीज़ा माल में से राहे खुदा में ख़र्च किया, उ़-लमा की सोह़बत में बैठता रहा, ख़त़ा कारों और नाफ़रमानों की सोह़बत से दूर रहा। ख़ुश ख़बरी है उस के लिये जो आ़जिज़ी इख़्तियार करता, उस के अख़्लाक़ अच्छे, बात़िन सालेह़ और वोह लोगों को अपने शर से बचाता है। ख़ुश ख़बरी है उस के लिये जिस ने अपने इ़ल्म पर अ़मल किया, ज़रूरत से ज़ाइद माल (राहे खुदा में) ख़र्च किया और फ़ुज़ूल बातों से बचा, सुन्नत ने उसे अपने दामन में ले कर बिदअ़त तक जाने से रोक दिया।(1)

अच्छे शख़्स की पहचान :

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाया करते थे कि "आख़िरी ज़माने में अच्छा किरदार आ'माल की कषरत से बेहतर होगा। तुम जिस ज़माने में हो उस में तुम में से अच्छा वोह है जो आ'माले सालेह़ा में जल्दी करता है। अ़न क़रीब ऐसा ज़माना आएगा कि लोगों में से अच्छा आदमी कषरते शुब्हात की वजह से तवक्क़ुफ़ करेगा।"(2)

बेशक आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने सच फ़रमाया क्यूंकि इस ज़माने में तवक्क़ुफ़ न करने वाला, आ़म लोगों की मुवाफ़क़त करने वाला और इन उमूर में मश्ग़ूल होने वाला जिन में वोह मश्ग़ूल हैं इसी त़रह़ हलाक व बरबाद होगा जिस त़रह़ वोह तबाह व बरबाद होंगे।

आज के दौर की नेकी गुज़श्ता ज़माने की बुराई :

ह़ज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने इरशाद फ़रमाया : "इस बात पर ज़ियादा तअ़ज्जुब है कि तुम्हारे दौर की नेकी गुज़श्ता ज़माने की बुराई थी और तुम्हारे ज़माने की बुराई आने वाले ज़माने में नेकी बन जाएगी, जब तक तुम ह़क़ की पहचान रखोगे भलाई पर रहोगे और तुम्हारे दौर का आ़लिम ह़क़ नहीं छुपाता।"(3)

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने सच फ़रमाया बेशक इस ज़माने की अकषर नेकियां सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن के ज़माने में बुराइयां समझी जाती थीं। हमारे ज़माने में मसाजिद को सजाना, इन्हें आरास्ता करना और इमारतों की बारीकियों में बहुत ज़ियादा माल ख़र्च करना और इन में क़ीमती बिछौने (मषलन कारपेट, क़ालीन वग़ैरा) बिछाना नेकी समझा जाता है ह़ालांकि सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن के ज़माने में मस्जिद में चटाई बिछाना भी बिदअ़त शुमार होता था।

---

1 ......شعب الایمان للبیہقی، باب فی الزھد وقصرالامل، الحدیث:۱۰۵۶۳، ج۷، ص۳۵۵، بتغیرقلیل۔

2 ......قوت القلوب، الفصل الحادی والثلاثون، باب ذکرالفرق بین علماء الدنیا......الخ، ج۱، ص۲۷۶۔

3 ......قوت القلوب، الفصل الحادی والثلاثون، باب ذکرالفرق بین علماء الدنیا......الخ، ج۱، ص۲۷۶۔

मसाजिद में चटाई बिछाना किस की ईजाद ?

मन्कूल है कि मसाजिद में चटाई बिछाना ह़ज्जाज बिन यूसुफ़ षक़फ़ी की बिदआ़त में से है। पहले के लोग अपने और मिट्टी के दरमियान बहुत कम रुकावट डालते थे। इसी त़रह़ दक़ीक़ मसाइल पर झगड़ना और मुनाज़िरे करना इस ज़माने के बड़े बड़े उ़लूम में शुमार होता है और इन लोगों का ख़याल है कि येह क़ुर्बे ख़ुदावन्दी का बहुत बड़ा ज़रीआ़ और अ़ज़ीम इ़बादत है ह़ालांकि पहले ज़माने में येह मुन्किरात में शुमार होता था। तिलावते क़ुरआन और अज़ान में लह़्न करना भी इन्ही बिदआ़त से है। पाकीज़गी में मुबालग़ा और त़हारत में वस्वसे भी बिदअ़त है। कपड़ों की नजासत के बारे में अस्बाबे बईदा फ़र्ज़ किये जाते हैं जब कि ख़ूराक के ह़लाल व ह़राम होने के सिलसिले में तसाहिल बरता जाता है। इस क़िस्म की और भी कई मिषालें हैं।

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने बिल्कुल सच फ़रमाया कि "तुम इस ज़माने में हो जिस में ख़्वाहिश, इ़ल्म के ताबेअ़ है और अ़न क़रीब वोह दौर आएगा कि इ़ल्म, ख़्वाहिश के ताबेअ़ हो जाएगा।"(1)

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अह़मद बिन ह़म्बल عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْاَوَّل फ़रमाया करते थे : "लोग इ़ल्म तर्क कर के नादिर व अ़जीब बातों में मश्ग़ूल हो गए हैं। उन का इ़ल्म कितना कम है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही मददगार है।"(2)

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक बिन अनस رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : "गुज़श्ता ज़माने के लोग इन उमूर के बारे में ऐसे नहीं पूछते थे जैसा कि आज कल लोग पूछते हैं और उ़-लमाए किराम رَحِمَھُمُ اللّٰہُ السَّلَام भी येह नहीं कहते थे कि येह ह़राम है, येह ह़लाल है। बल्कि मैं ने उन्हें यूं कहते सुना कि येह मुस्तह़ब है येह मकरूह है।"(3)

मत़लब येह कि वोह कराहत और इस्तिह़बाब की बारीकियों को देखते थे क्यूंकि ह़राम की बुराई तो वाज़ेह़ है।

---

1 ......قوت القلوب، الفصل الحادی والثلاثون، باب ذکرالفرق بین علماء الدنیا......الخ، ج ۱، ص ۲۸۴۔
2 ......المرجع السابق، ص ۲۸۴، بتغیرٍقلیلٍ۔ 3 ......المرجع السابق، ص ۲۸۴۔

लोगों से बिदअ़त के बारे में न पूछो !

ह़ज़रते सय्यिदुना हाशिम बिन उ़रवा رَحْمَةُاللّٰهِ تعالٰی عَلَیْه फ़रमाया करते थे : "आज के दौर में लोगों से उन की ईजाद कर्दा बिदआ़त के बारे में न पूछो क्यूंकि उन्हों ने इस का जवाब तय्यार कर रखा है उन से सुन्नत के बारे में पूछो इस लिये कि येह इसे जानते ही नहीं।"(1)

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सुलैमान दारानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِی फ़रमाया करते थे : "जिस के दिल में कोई अच्छी बात डाली गई वोह इस पर उस वक़्त तक अ़मल न करे जब तक कि इस के बारे में कोई ह़दीष न सुन ले। फिर अगर वोह ह़दीष इस के दिल में पैदा होने वाली बात के मुवाफ़िक़ हो तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का शुक्र अदा करे।"(2)

येह बात आप رَحْمَةُاللّٰهِ تعالٰی عَلَیْه ने इस लिये फ़रमाई कि जो नई आरा आती हैं वोह कानों को खट-खटाती और दिलों से मुअ़ल्लक़ हो जाती हैं और बा'ज़ अवक़ात दिल की सफ़ाई मश्कूक होती है जिस की वजह से वोह बात़िल को ह़क़ समझने लगता है। लिहाज़ा एह़तियात़ का तक़ाज़ा येही है कि रिवायत की शहादत से इसे ज़ाहिर किया जाए।

मिम्बर रखना बिदअ़त नहीं :

जब मरवान ने नमाज़े ईद के मौक़अ़ पर ईदगाह में मिम्बर रखा तो ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰهُ تعالٰی عَنْهُ ने खड़े हो कर फ़रमाया : "ऐ मरवान ! ये क्या बिदअ़त है ?" उस ने कहा : "येह बिदअ़त नहीं बल्कि येह तुम्हारी मा'लूमात के मुक़ाबले में बेहतर है क्यूंकि लोग ज़ियादा हो गए हैं और मैं चाहता हूं कि उन सब तक आवाज़ पहुंचे।" ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰهُ تعالٰی عَنْهُ ने फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मेरे इल्म के मुत़ाबिक़ तुम कभी भी अच्छा काम नहीं करोगे। ब ख़ुदा ! मैं तुम्हारे पीछे नमाज़ नहीं पढ़ूंगा।"

आप رَضِیَ اللّٰهُ تعالٰی عَنْهُ ने येह ए'तिराज़ इस लिये किया क्यूंकि हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّى اللّٰه تعالٰی عَلَیْهِ و اٰلِهٖ وَسَلَّم ईद और नमाज़े इस्तिस्क़ा के ख़ुत़्बे में कमान या लाठी पर टेक लगाते थे न कि मिम्बर पर।(3)

---

1 ......قوت القلوب، الفصل الحادی و الثلا ثون، باب ذکرالفرق بین علماء الدنیا......الخ، ج ۱، ص ۲۸۵۔

2 ......قوت القلوب، الفصل الحادی و الثلا ثون، باب ذکرالفرق بین علماء الدنیا......الخ، ج ۱، ص ۲۸۵۔

3 ......المعجم الصغیر،من اسمه یحیٰی،الحدیث: ۱۱۷۱، ج ۲،ص ۱۴۳،بتغیر۔ قوت القلوب،ج ۱،ص ۲۸۶۔

हर नया काम जो दीन से न हो मर्दूद है :

मश्हूर ह़दीष में है कि सय्यिदे आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जिस ने हमारे दीन में ऐसा काम जारी किया जो दीन से नहीं तो वोह काम मर्दूद है।"(1)

एक रिवायत में है कि "जिस ने मेरी उम्मत से धोका किया उस पर अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ, फ़िरिश्तों और तमाम लोगों की ला'नत।" अ़र्ज़ की गई : "या रसूलल्लाह صلی اللہ تعالی علیك وسلم आप की उम्मत के साथ धोका क्या है?" इरशाद फ़रमाया : "कोई बिदअ़त जारी कर के लोगों को इस की तरग़ीब देना।"(2)

शफ़ाअ़त से मह़रूमी का सबब :

सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ का एक फ़िरिश्ता हर रोज़ पुकारता है : "जिस ने अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ के रसूल की सुन्नत की मुख़ालफ़त की उसे हुज़ूर की शफ़ाअ़त से ह़िस्सा नहीं मिलेगा।"(3)

ख़िलाफ़े सुन्नत बिदअ़त जारी करने वाले की मिषाल :

दीन में सुन्नत की मुख़ालिफ़ बिदअ़त जारी करने वाला शख़्स, गुनाह करने वाले के मुक़ाबले में इस त़रह़ है जैसे किसी बादशाह की ह़ुकूमत को बदलने में उस की नाफ़रमानी करने वाले के मुक़ाबले में वोह शख़्स जो किसी मुक़र्ररा ख़िदमत में उस की नाफ़रमानी करता है। क्यूंकि उस (या'नी मुक़र्ररा ख़िदमत में नाफ़रमानी करने वाले) की मुआ़फ़ी हो सकती है लेकिन ह़ुकूमत बदलने की कोशिश करने वाले के लिये मुआ़फ़ी नहीं।

बा'ज़ उ़-लमा फ़रमाते हैं : "जिस मस्अले में अस्लाफ़ ने गुफ़्तगू की है उस में ख़ामोशी इख़्तियार करना ज़ुल्म है और जिस में इन्हों ने ख़ामोशी इख़्तियार की उस में गुफ़्तगू करना तकल्लुफ़ है।"(4)

एक आ़लिम साह़िब का क़ौल है : "ह़क़ बात गुरौह है जिस ने इस से तजावुज़ किया वोह ज़ालिम है, जिस ने इस में कोताही की वोह आ़जिज़ है और जिस ने इस पर तवक़्क़ुफ़ किया वोह किफ़ायत करने वाला है।"(5)

---

1 ......صحیح البخاری، کتاب الصلح، باب اذا اصطلحوا علی صلح......الخ، الحدیث:۲۶۹۷، ج۲، ص ۲۱۱۔

2 ......جامع الاحادیث، حرف المیم، الحدیث:۲۲۴۹۸، ج۷، ص۲۸۷۔

3 ......قوت القلوب، الفصل الحادی والثلاثون، باب ذکر الفرق بین علماء الدنیا......الخ، ج ۱، ص۲۹۵۔

4 ......المرجع السابق، ص ۲۹۶۔ 5 ......المرجع السابق، ص ۲۹۶۔

हुज़ूरे अकरम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "इस दरमियाने रास्ते को लाज़िम पकड़ो जिस की त़रफ़ बुलन्दी पर जाने वाला लौट आए और पीछे रहने वाला इस की त़रफ़ बुलन्दी इख़्तियार करे ।"(1)

हज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْھُما ने फ़रमाया : गुमराह लोग अपने दिलों में गुमराही की ह़लावत मह़सूस करते हैं । अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

وَذَرِ الَّذِیْنَ اتَّخَذُوْا دِیْنَهُمْ لَعِبًا وَّ لَهْوًا

(پ۷، الانعام:۷۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और छोड़ दे उन को जिन्हों ने अपना दीन हंसी खेल बना लिया ।

इरशादे ख़ुदावन्दी है :

اَفَمَنْ زُیِّنَ لَهٗ سُوْٓءُ عَمَلِهٖ فَرَاٰهُ حَسَنًاؕ

(پ۲۲، فاطر:۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तो क्या वोह जिस की निगाह में उस का बुरा काम आरास्ता किया गया कि उस ने इसे भला समझा ।

लिहाज़ा हर वोह ज़रूरत से ज़ाइद काम जो सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْهِمْ اَجْمَعِیْن के बा'द शुरूअ़ हुवा वोह लह्वो ला'ब है ।(2)

शैत़ान का लश्कर और गुरौहे सह़ाबा व ताबेईन :

इब्लीसे लईन के बारे में ह़िकायत है कि सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْهِمْ اَجْمَعِیْن के ज़माने में उस ने अपने लश्कर को इधर उधर फैलाया जब वोह परेशान ह़ाल थके मान्दे वापस आए तो उस ने पूछा : "तुम्हें क्या हुवा ?" उन्हों ने कहा : "हम ने किसी को इन (या'नी सह़ाबा) की त़रह़ नहीं देखा हमें इन से सिवाए थकावट के कुछ भी ह़ासिल नहीं होगा ।" उस ने कहा : "तुम इन पर क़ाबू नहीं पा सकते, इन्हों ने अपने नबी की सोह़बत इख़्तियार की है और अपने रब्ब की त़रफ़ से नुज़ूल (वह्य) का मुशाहदा किया है । अलबत्ता इन के बा'द कुछ लोग आएंगे जिन से तुम्हारी ह़ाजत पूरी होगी ।" जब ताबेईन का ज़माना आया तो उस ने अपने लश्कर को इधर उधर भेजा वोह शिकस्ता ह़ाल वापस आए और कहा कि हम ने इन से ज़ियादा तअ़ज्जुब ख़ेज़ लोग नहीं देखे ताहम इन के गुनाहों के सबब हम कुछ न कुछ ह़िस्सा ज़रूर ह़ासिल कर लेंगे । जब शाम का वक़्त हुवा तो ताबेईन ने मुआ़फ़ी त़लब करना शुरूअ़ कर दी तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उन की बुराइयां नेकियों से बदल दीं । शैत़ान ने कहा : "तुम इन से भी कुछ ह़ासिल नहीं कर सकते क्यूंकि इन का अ़क़ीदए तौह़ीद सह़ीह़ है और येह अपने नबी की सुन्नत पर अ़मल पैरा हैं । अलबत्ता

1 ......تفسیر القرطبی، سورة البقرة تحت الآیة:۱۴۳، ج۲، ص۱۱۷، موقوفاً عن علی رضی اللّٰہ عنہ۔

2 ......قوت القلوب، الفصل الحادی والثلاثون، باب ذکر الفرق بین علماء الدنیا......الخ، ج۱، ص۲۹۷، باختصارٍ۔

इन के बा'द कुछ लोग आएंगे उन से तुम्हारी आंखों को ठंडक ह़ासिल होगी तुम उन के साथ जैसे चाहे खेलना, उन की ख़्वाहिशात की लगाम पकड़ कर जहां चाहो ले जाना वोह बख़्शिश त़लब करेंगे तो उन की बख़्शिश न होगी और वोह तौबा भी नहीं करेंगे कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन की बुराइयों को नेकियों में बदल दे।"

रावी फ़रमाते हैं : "पहली सदी के बा'द एक क़ौम आई तो शैत़ान ने उन में ख़्वाहिशात फैला दीं और बिदआ़त को उन के लिये मुज़य्यन कर दिया। चुनान्चे, उन्हों ने इन्हें ह़लाल समझा और दीन बना लिया न तो वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से मग़्फ़िरत त़लब करते हैं और न ही तौबा करते हैं। लिहाज़ा उन पर दुश्मन (या'नी शैत़ान) ग़ालिब हो गए अब वोह जहां चाहते हैं उन्हें ले जाते हैं।"

एक सुवाल और इस का जवाब :

अगर तुम कहो कि इस क़ाइल को कहां से मा'लूम हुवा कि इब्लीस ने येह बात कही है ह़ालांकि इस ने न तो इब्लीस को देखा है और न ही इस से गुफ़्त्गू की ? तो जान लो कि अहले दिल पर मलकूत (या'नी आ़लमे मलाइका) के राज़ मुन्कशिफ़ होते रहते हैं कभी ब त़ौरे इल्हाम इन के दिल में डाले जाते हैं और इन्हें मा'लूम तक नहीं होता, कभी सच्चे ख़्वाब के ज़रीए़ और कभी बेदारी में इन के मा'नी मिषालों के मुशाहदे के ज़रीए़ वाज़ेह़ किये जाते हैं जैसा कि ख़्वाब में होता है और येह सब से आ'ला दर्जा है और येह नबुव्वत का बुलन्द दर्जा है जैसे सच्चा ख़्वाब नबुव्वत का छियालीसवां हि़स्सा है तो तुम्हें इस इल्म के इन्कार से बचना चाहिये जो तुम्हारी नाक़िस अ़क़्ल की ह़द से पार हो गया इस सिलसिले में महारत का दा'वा करने वाले उ़-लमा भी हलाक हो गए जिन का ख़याल था कि उन्हों ने अ़क़्ली उ़लूम का इह़ात़ा कर लिया है। इस अ़क़्ल से जहालत बेहतर है जो औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰہُ السَّلَام के बारे में ऐसे उ़लूम का इन्कार करे और जो शख़्स औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰہُ السَّلَام के बारे में ऐसी बातों का इन्कार करता है उस पर अम्बियाए किराम عَلَيۡهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का इन्कार लाज़िम आता है और वोह दीन से मुकम्मल त़ौर पर निकल जाता है।

बा'ज़ आ़रिफ़ीन ने फ़रमाया : "अब्दाल, लोगों से क़त़्ए़ तअ़ल्लुक़ी कर के ज़मीन के मुख़्तलिफ़ कोनों में जा बसे हैं और वोह जमहूर की आंखों से ओझल हो चुके हैं। क्यूंकि उन में आज के दौर के उ़-लमा को देखने की हिम्मत नहीं है इस लिये कि उन के नज़्दीक येह उ़-लमा असरारे इलाहिय्या से वाक़िफ़ नहीं मगर येह लोग ख़ुद को आ़लिम समझते हैं और जाहिल भी इन्हें ऐसा ही समझते हैं। पस येह (झूटे उ़-लमा और इन्हें उ़-लमा समझने वाले) सब लोग जाहिल हैं।"(1)

1 ......قوت القلوب، الفصل الحادی والثلاثون، باب ذکرالفرق بین علماء الدنیا......الخ، ج ۱، ص ۲۹۸۔

सब से बड़ी मा'सिय्यत :

ह़ज़रते सय्यिदुना सहल तुस्तरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَلِی ने इरशाद फ़रमाया : "सब से बड़ी मा'सिय्यत जहालत से नावाक़िफ़ होना, आ़म लोगों की त़रफ़ देखना और ग़ाफ़िल लोगों का कलाम सुनना है। जो आ़लिम दुन्या में मश्ग़ूल रहता है उस की बात सुनना मुनासिब नहीं बल्कि उस की हर बात पर उसे तोहमत ज़दा जानना चाहिये क्यूंकि हर शख़्स अपनी पसन्दीदा चीज़ में मश्ग़ूल रहता है और जो कुछ उस के मह़बूब के मुवाफ़िक़ न हो उसे रद्द कर देता है।"[1]

इरशादे बारी तआ़ला है :

وَلَا تُطِعْ مَنْ اَغْفَلْنَا قَلْبَهٗ عَنْ ذِكْرِنَا وَاتَّبَعَ هَوٰىهُ وَكَانَ اَمْرُهٗ فُرُطًا ﴿۲۸﴾ (پ ۱۵، الکھف: ۲۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और उस का कहा न मानों जिस का दिल हम ने अपनी याद से ग़ाफ़िल कर दिया और वोह अपनी ख़्वाहिश के पीछे चला और उस का काम ह़द से गुज़र गया।*

आ़म गुनहगार उन लोगों से ज़ियादा ख़ुश बख़्त है जो दीन के रास्ते से बे ख़बर हैं ह़ालांकि उन का दा'वा है कि वोह उ़-लमा में शुमार होते हैं क्यूंकि आ़म गुनहगार शख़्स अपनी कोताही का इक़रार कर के बख़्शिश त़लब करता और तौबा करता है जब कि जाहिल इ़ल्म का मुद्दई है और येह उन उ़लूम में मश्ग़ूल है जो त़रीक़े दीन के बजाए ह़ुसूले दुन्या का वसीला हैं लिहाज़ा न तो येह तौबा करता है और न ही मग़फ़िरत त़लब करता है बल्कि मरते दम तक इसी ह़ालत पर रहता है। लिहाज़ा जिन्हें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मह़फ़ूज़ फ़रमाया उन के इ़लावा जब येह बात अकसर लोगों पर ग़ालिब है और इन की इस्लाह़ की कोई उम्मीद भी नहीं रही तो दीनदार मोह़तात़ शख़्स के लिये सलामती इसी में है कि वोह इन से अलग थलग रहे जैसा कि "كِتَابُ الْعُزْلَه" (या'नी गोशा नशीनी के बयान) में आएगा। اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ

लोगों से ज़ियादा मैल जोल बाइ़से हलाकत है :

ह़ज़रते सय्यिदुना यूसुफ़ बिन अस्बात़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना ह़ुज़ैफ़ा मरअ़शी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی को ख़त़ लिख कर दरयाफ़्त किया कि "आप की उस शख़्स के बारे में क्या राए है जिसे गुनहगार के इ़लावा कोई ऐसा शख़्स नहीं मिलता जो उस के साथ मिल कर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र करे या फिर कोई ऐसा शख़्स तो मिल जाता है मगर उस के साथ ज़िक्र करना गुनाह

---

1 ......قوت القلوب، الفصل الحادی والثلاثون، باب ذکر الفرق بین علماء الدنیا......الخ، ج ۱، ص ۲۹۸، باختصارٍ۔

का ज़रीआ़ बनता है।" येह बात आप رَحْمَةُاللهِ تعَالٰی عَلَيْه ने इस लिये दरयाफ़्त फ़रमाई कि आप किसी को इस का अहल नहीं पाते थे। वाक़ेई आप ने सच फ़रमाया क्यूंकि लोगों से मैल जोल रखना ग़ीबत करने, सुनने या बुराई पर ख़ामोश रहने से ख़ाली नहीं होता।

इन्सान की बेहतरीन ह़ालत :

इन्सान की बेहतरीन ह़ालत येह है कि वोह इ़ल्म से दूसरों को फ़ाइदा पहुंचाए या खुद फ़ाइदा ह़ासिल करे। अगर येह मिस्कीन ग़ौर करता और इस बात को जानता कि इस का फ़ाइदा पहुंचाना रियाकारी के शाइबे, मालो दौलत और रियासत ह़ासिल करने की त़लब से ख़ाली नहीं तो इसे मा'लूम हो जाता कि फ़ाइदा ह़ासिल करने वाला भी इसे त़लबे दुन्या के लिये आला और बुराई के लिये वसीला बना रहा है। लिहाज़ा इस मुआ़मले में वोह इस का मददगार है और इस के लिये अस्बाब मुहय्या करता और डाकूओं को तल्वार बेचने वाले की त़रह़ है। इ़ल्म तल्वार की मानिन्द है भलाई के लिये इसे बेहतर बनाना ऐसे है जैसे जिहाद के लिये तल्वार को दुरुस्त करना इसी लिये किसी ऐसे शख़्स को तल्वार बेचना जाइज़ नहीं जिस के बारे में अ़लामात व क़राइन से मा'लूम हो कि वोह डाकूओं की मदद करना चाहता है।

उ़-लमाए आख़िरत की अ़लामात में से येह 12 अ़लामतें हैं। इन में से हर एक अस्लाफ़ उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام के अख़्लाक़ को जामेअ़ है। पस तुम दो शख़्सों में से एक हो जाओ या'नी या तो इन सिफ़ात को अपना लो या अपनी कोताही तस्लीम कर लो, तीसरे न बनना वरना तुम पर मुआ़मला मुश्तबा हो जाएगा और तुम दुन्या के आला को दीन समझने लगोगे और झूटों की आ़दात को उ़-लमाए रासिख़ीन की सीरत ख़याल करोगे और यूं अपनी जहालत और इन्कार की वजह से तबाहो बरबाद और मायूस लोगों के गुरौह में शामिल हो जाओगे।

दुआ़ :

हम शैत़ाने लईन के मक्रो फ़रैब से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की पनाह त़लब करते हैं कि इस की वजह से कई लोग हलाक हुए। हम **अल्लाह** मुजीबुद्दा'वात से इल्तिजा करते हैं कि वोह हमें उन खुश नसीबों में से बना दे जिन्हें दुन्यवी ज़िन्दगी धोका नहीं देती और न ही शैत़ान उन्हें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ह़िल्म पर धोका देता है।

बाब नम्बर : 7

अ़क्ल, इस की अ़ज़मत, ह़क़ीक़त और अक़्साम का बयान

पहली फ़स्ल :

अ़क्ल की अ़ज़मत

याद रखिये ! अ़क्ल की अ़ज़मत को बयान करने में तकल्लुफ़ की ज़रूरत नहीं बिल खुसूस जब कि इल्म की फ़ज़ीलत अ़क्ल की वजह से ज़ाहिर है और अ़क्ल इल्म का मम्बअ़, मत्लअ़ और बुन्याद है। इल्म की निस्बत अ़क्ल से ऐसी है जैसे फल की दरख़्त से, रोशनी की सूरज से और देखने की आंख से तो वोह चीज़ अ़ज़मत वाली क्यूं न हो जो दुन्या व आख़िरत में सआ़दत का ज़रीआ़ है। नीज़ इस में कैसे शक किया जा सकता है जब कि जानवर अपने सूझ बूझ की कमी के सबब अ़क्ल से शर्माता है यहां तक कि सब से बड़े जिस्म वाला, सब से ज़ियादा नुक़्सान देने वाला और सब से ज़ियादा ख़ौफ़नाक जानवर भी जब इन्सान को देख लेता है तो घबरा कर भाग जाता है क्यूंकि वोह जानता है कि इन्सान उस पर ग़लबा पा लेगा और इस की वजह येह है कि इन्सान की ख़ासिय्यत है कि वोह ह़ीलों को जानता है।

बुढ़े शख़्स को फ़ज़ीलत क्यूं ह़ासिल है ?

हुज़ूरे अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "बुढ़ा शख़्स अपनी क़ौम में ऐसे होता है जैसे नबी अपनी उम्मत में।"(1)

और येह इस वजह से नहीं कि उस के पास माल की कषरत होती है। वोह उ़म्र रसीदा होता है या इस को क़ुव्वत ज़ियादा ह़ासिल होती है बल्कि इस लिये कि उस का तजरिबा ज़ियादा होता है जो अ़क्ल का नतीजा है। इसी लिये तुम देखते हो कि तुर्की, कुर्दी और अ़रब के बेवुक़ूफ़ बल्कि तमाम वोह लोग भी जो जानवर समझे जाते हैं फ़ित़्री त़ौर पर बुढ़ों की इ़ज़्ज़त करते हैं। येही वजह है कि कई दुश्मन, रसूले खुदा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को शहीद करने के इरादे से आए लेकिन जब चेहरए नूर बार का दीदार किया तो ता'ज़ीम व तकरीम बजा लाए और मुबारक पेशानी पर नूरे नबुव्वत दरख़्शां देखा अगर्चे वोह हुज़ूर सरापा नूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के दिल में पोशीदा था जैसे अ़क्ल पोशीदा होती है। अल ग़रज़ ! अ़क्ल की अ़ज़मत व फ़ज़ीलत एक बदीही चीज़ है और हम मह़ज़ इस की फ़ज़ीलत व अ़ज़मत में वारिद शुदा आयात व अह़ादीष को ज़िक्र करना चाहते हैं।

1 ......المقاصد الحسنة، حرف الشين المعجمة، الحديث:٦٠٩، ص ٢٦٤۔

﴾अ़क़्ल की फ़ज़ीलत व अ़ज़मत में वारिद 4 फ़रामीने बारी तआ़ला﴿

अल्लाह रब्बुल आ़लमीन عَزَّوَجَلَّ ने अ़क़्ल का नाम नूर रखा है। चुनान्चे, इरशाद फ़रमाया :

﴾1﴿ اَللّٰهُ نُوْرُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ مَثَلُ نُوْرِهٖ كَمِشْكٰوةٍ فِیْهَا مِصْبَاحٌ ؕ (پ:۱۸، النور:۳۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ***अल्लाह*** *नूर है ज़मीनो आस्मान का उस के नूर की मिषाल ऐसी जैसे एक ताक़।*

इ़ल्म जो अ़क़्ल से ह़ासिल होता है इसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने रूह़, वह़्य और ह़यात क़रार दिया। चुनान्चे, इरशादे बारी तआ़ला है :

﴾2﴿ وَكَذٰلِكَ اَوْحَیْنَاۤ اِلَیْكَ رُوْحًا مِّنْ اَمْرِنَا ؕ (پ۲۵، الشوریٰ:۵۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और यूंही हम ने तुम्हें वह़्य भेजी एक जांफ़िज़ा चीज़ अपने हुक्म से।*

एक जगह फ़रमाया :

﴾3﴿ اَوَمَنْ كَانَ مَیْتًا فَاَحْیَیْنٰهُ وَجَعَلْنَا لَهٗ نُوْرًا یَّمْشِیْ بِهٖ فِی النَّاسِ (پ۸، الانعام:۱۲۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और क्या वोह कि मुर्दा था हम ने उसे ज़िन्दा किया और उस के लिये एक नूर कर दिया जिस से लोगों में चलता है।*

नूर व ज़ुल्मत के ज़िक्र से मुराद इ़ल्म और जहालत है। जैसा कि फ़रमाने इलाही है :

﴾4﴿ یُخْرِجُهُمْ مِّنَ الظُّلُمٰتِ اِلَی النُّوْرِ ۬ (پ۳، البقرة:۲۵۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *उन्हें अन्धेरियों से नूर की त़रफ़ निकालता है।*

﴾अ़क़्ल की फ़ज़ीलत व अ़ज़मत में वारिद 14 फ़रामीने मुस्त़फ़ा﴿

﴾1﴿....अपने रब्ब عَزَّوَجَلَّ के अह़कामात को समझो और एक दूसरे को समझने की तल्क़ीन करो यूं जिन के करने का हुक्म दिया गया और जिन से मन्अ़ किया गया उन्हें जान जाओगे। याद रखो ! अ़क़्ल तुम्हारे रब्ब عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक तुम्हारे दर्जात बुलन्द करती है और जान लो ! अ़क़्ल मन्द वोह है जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इत़ाअ़त करे अगर्चे सूरत में अच्छा न हो, कमतर हो, उस की कोई क़द्रो मन्ज़िलत न हो और परागन्दा ह़ाल हो जब कि जाहिल वोह है जो रब्ब عَزَّوَجَلَّ की नाफ़रमानी करे अगर्चे ख़ूब सूरत हो, बड़ी शानो शौकत का मालिक हो, अच्छी ह़ालत और क़द्रो मन्ज़िलत रखता और फ़सीह़ गुफ़्तगू करता हो। पस **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक बन्दर और ख़िन्ज़ीर उस के नाफ़रमान से ज़ियादा अ़क़्ल मन्द हैं, इस बात से धोका न खाना कि दुन्यादार

उस की ता'ज़ीम करते हैं क्यूंकि वोह तो खुद ख़सारा पाने वालों में से हैं।(1)

﴾2﴿.....अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने सब से पहले अ़क़्ल को पैदा फ़रमाया फिर उस से फ़रमाया : "आगे आ" तो वोह आगे हो गई। फिर फ़रमाया : "पीछे जा" तो वोह पीछे चली गई। फिर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया : "मुझे अपनी इ़ज़्ज़त व जलाल की क़सम ! मैं ने कोई मख़्लूक़ ऐसी पैदा नहीं की जो मेरे नज़्दीक तुझ से ज़ियादा मुअ़ज़्ज़ज़ हो, मैं तेरे ही सबब से पकड करूंगा और तेरे ही सबब अ़ता करूंगा, तेरी ही वजह से षवाब दूंगा और तेरे ही सबब अ़ज़ाब दूंगा।"(2)

एक सुवाल और इस का जवाब :

अगर अ़क़्ल अ़र्ज़ है तो उसी अजसाम से पहले कैसे पैदा किया गया और अगर जोहर है तो फिर येह कैसे हो सकता है कि जोहर क़ाईम ब नफ़्सिही हो और किसी जगह को घेरे हुए न हो ? इस का जवाब येह है कि इस बात का तअ़ल्लुक़ इ़ल्मे मुकाशफ़ा से है और इ़ल्मे मुआ़मला में इसे ज़िक्र करना मुनासिब नहीं और इस वक़्त हमारा मक़्सद इ़ल्मे मुआ़मला को बयान करना है।

﴾3﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : कुछ लोगों ने बारगाहे रिसालत में एक शख़्स की बहुत ज़ियादा ता'रीफ़ की तो रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने पूछा : "उस की अ़क़्ल कैसी है ?" लोगों ने अ़र्ज़ की : "हम आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के सामने इ़बादत में उस की कोशिश और उस की मुख़्तलिफ़ नेकियों का तज़्किरा कर रहे हैं और आप हम से उस की अ़क़्ल के बारे में इस्तिफ़्सार फ़रमा रहे हैं ?" इरशाद फ़रमाया : "बेवुक़ूफ़ अपनी जहालत की वजह से बदकार से ज़ियादा बुराई कर लेता है और कल बरोज़े क़ियामत बारगाहे रब्बुल उ़ला में कुर्ब के दर्जात पर लोग अपनी अ़क़्लों के मुत़ाबिक़ फ़ाइज़ होंगे।"(3)

﴾4﴿....अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहि़बे लौलाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "बन्दा अ़क़्ल की फ़ज़ीलत की मिष्ल नहीं कमाता, अ़क़्ल साहि़बे अ़क़्ल को हिदायत देती और हलाकत से बचाती

1......المطالب العالیة، کتاب العقل لداود بن المحبر، الحدیث:۲۷۹۰، ج۷، ص۳۱۱۔

2......اللآلئ المصنوعة فی الاحادیث الموضوعة، کتاب المبتدأ، ج۱، ص۱۲۰، بتغیرٍقلیلٍ۔

فردوس الاخبار، باب الالف، الحدیث:۴، ج۱، ص۲۹۔

3......المطالب العالیة، من کتاب العقل لداود بن المحبر......الخ، الحدیث:۲۸۰۵، ج۷، ص۳۱۹۔

है। जब तक आदमी की अ़क़्ल कामिल न हो तब तक न तो उस का ईमान कामिल होता है और न ही उस का दीन दुरुस्त होता है।"[1]

﴾5﴿.....इन्सान अपने अच्छे अख़्लाक़ की वजह से रात में क़ियाम करने वाले और दिन में रोज़ा रखने वाले के दर्जे को पा लेता है और किसी भी आदमी के अच्छे अख़्लाक़ उस वक़्त तक मुकम्मल नहीं होते जब तक उस की अ़क़्ल कामिल न हो और जब उस की अ़क़्ल कामिल हो जाती है तो उस का ईमान कामिल हो जाता है। फिर अपने रब्ब عَزَّوَجَلَّ की इत़ाअ़त करता और अपने दुश्मन शैत़ान की नाफ़रमानी करता है।[2]

﴾6﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब, ह़बीबे लबीब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : हर चीज़ का एक सुतून होता है और मुसलमान का सुतून उस की अ़क़्ल है। इस की इ़बादत इस की अ़क़्ल के मुत़ाबिक़ ही होती है। क्या तुम ने नहीं सुना कि फ़ुस्साक़ व फ़ुज्जार जहन्नम में कहेंगे :

لَوْ كُنَّا نَسْمَعُ اَوْ نَعْقِلُ مَا كُنَّا فِیْۤ اَصْحٰبِ السَّعِیْرِ ⑩ (پ۲۹، الملك:۱۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *अगर हम सुनते या समझते तो दोज़ख़ वालों में से न होते।*[3]

﴾7﴿....मन्क़ूल है कि अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना तमीम दारी رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہ से पूछा : "तुम में सरदारी किस की है?" अ़र्ज़ की : "अ़क़्ल की।" तो अमीरुल मोअमिनीन رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "तुम ने सच कहा, मैं ने ह़ुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से भी पूछा था जैसे तुम से पूछा तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने वोही फ़रमाया जो तुम ने जवाब दिया और ह़ुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया था कि मैं ने ह़ज़रते जिब्राईल عَلَیْہِ السَّلَام से पूछा : "सरदारी किस की है?" तो उन्हों ने भी येही जवाब दिया : "अ़क़्ल की।"[4]

---

1 ......المطالب العالية، من كتاب العقل لداود بن المحبر......الخ، الحديث:۲۸۰۷، ج۷، ص۳۲۲۔

2 ......المطالب العالية، من كتاب العقل لداود بن المحبر......الخ، الحديث:۲۷۸۵، ج۷، ص۳۰۹۔
مسند الحارث، باب ماجاء في العقل، الحديث:۸۲۳، ج۳، ص۳۴۱۔
المسند للامام احمد بن حنبل، مسند السيدة عائشة، الحديث:۲۵۵۹۴، ج۹، ص۵۵۵، باختصارٍ۔

3 ......المطالب العالية، من كتاب العقل لداود بن المحبر......الخ، الحديث:۲۷۹۶، ج۷، ص۳۱۴۔

4 ......المطالب العالية، من كتاب العقل لداود بن المحبر......الخ، الحديث:۲۷۹۵، ج۷، ص۳۱۴۔

﴾8﴿....हज़रते सय्यिदुना बरा बिन आज़िब رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنۡہُ बयान करते हैं कि एक दिन हुज़ूर नबिय्ये रहमत, शफ़ीए उम्मत صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से कसीर सुवालात किये गए तो आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "ऐ लोगो ! हर चीज़ की एक सुवारी होती है और आदमी की सुवारी अक़्ल है और तुम में से रहनुमाई और हुज्जत की पहचान में सब से उ़म्दा वोह है जो ब ए'तिबारे अक़्ल तुम में सब से अफ़्ज़ल है।"(1)

﴾9﴿....हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنۡہُ फ़रमाते हैं कि जब रसूले अन्वर, शाफ़ेए मेहशर صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم गज़्वए उहुद से वापस तशरीफ़ लाए तो लोगों को कहते सुना कि फ़ुलां फ़ुलां से ज़ियादा बहादुर है और फ़ुलां ज़ियादा तजरिबाकार है जब तक फ़ुलां तजरिबाकार न हो जाए तो आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "तुम्हें इस बात का इल्म नहीं।" लोगों ने अ़र्ज़ की : "तो फिर कैसा है ?" इरशाद फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उन के लिये जो अक़्ल मुक़द्दर फ़रमाई उन्हों ने इस के मुताबिक़ जिहाद किया, उन की मदद व नुस्रत और उन की निय्यत उन की अक़्लों के मुताबिक़ थी, इन में से बा'ज़ को मुख़्तलिफ़ मर्तबे हासिल हुए। बरोज़े क़ियामत वोह अपनी निय्यतों और अक़्लों के मुताबिक़ मरातिब पाएंगे।"(2)

﴾10﴿....हज़रते सय्यिदुना बरा बिन आज़िब رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنۡہُ बयान करते हैं कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "फ़िरिश्तों ने अक़्ल के मुताबिक़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इताअ़त में जिद्दो जहद की और बनी आदम में मुसलमानों ने अपनी अक़्लों के मुताबिक़ कोशिश की तो इन में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का ज़ियादा मुतीअ़ व फ़रमां बरदार वोह होगा जो इन में ज़ियादा अक़्ल वाला होगा।"(3)

﴾11﴿....उम्मुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنۡہَا फ़रमाती हैं कि मैं ने बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صلی اللہ تعالی علیک وسلم दुन्या में लोग एक दूसरे से किस वजह से अफ़्ज़ल होते हैं ?" तो आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "अक़्ल की वजह से।" मैं ने अ़र्ज़ की : "और आख़िरत में ?" इरशाद फ़रमाया : "अक़्ल के सबब।" मैं ने अ़र्ज़ की : "क्या इन्हें इन के आ'माल ही का बदला नहीं दिया जाएगा ?" इरशाद फ़रमाया : ऐ आइशा ! लोग उस अक़्ल के मुताबिक़ ही तो अ़मल करते हैं जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ

---

1. ......المطالب العالية، من كتاب العقل لداود بن المحبر......الخ، الحديث:٢٨٠٣، ج٧، ص٣١٨، بتغيرٍقليلٍ۔
2. ......المطالب العالية، من كتاب العقل لداود بن المحبر......الخ، الحديث:٢٨٠٤۔ ج٧، ص٣١٨۔
3. ......المطالب العالية، من كتاب العقل لداود بن المحبر......الخ، الحديث:٢٧٩٢، ج٧،ص٣١٢۔

ने इन्हें अ़त़ा फ़रमाई तो इन के आ'माल इन की अ़क़्लों के मुत़ाबिक़ ही होते हैं और इन्हें इन के आ'माल ही का बदला दिया जाएगा।''[1]

﴾12﴿....ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْھُمَا से मरवी है कि आक़ाए दो जहां, मह़बूबे रह़मान صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ''हर चीज़ का एक आला होता है और मोमिन का आला अ़क़्ल है। हर चीज़ की एक सुवारी होती है और आदमी की सुवारी अ़क़्ल है। हर चीज़ का एक सुतून होता है और दीन का सुतून अ़क़्ल है। हर क़ौम की एक ग़ायत होती है और आ़बिदों की ग़ायत अ़क़्ल है। हर क़ौम का एक दाई होता है और इ़बादत गुज़ारों का दाई अ़क़्ल है। हर ताजिर का एक सरमाया होता है और मुज्तहिदीन का सरमाया अ़क़्ल है। तमाम घर वालों का एक मुन्तज़िम होता है और सिद्दीक़ीन के घर की मुन्तज़िम अ़क़्ल है। हर वीरानी की आबादी होती है और आख़िरत की आबादी अ़क़्ल है। हर शख़्स का एक जानशीन होता है जिस की त़रफ़ उस की निस्बत की जाती और इस की वजह से उसे याद किया जाता है और सिद्दीक़ीन की जानशीन अ़क़्ल है जिस की त़रफ़ उन की निस्बत की जाती और इसी की वजह से उन्हें याद किया जाता है और हर सफ़र का एक ख़ैमा होता है और मुसलमानों का ख़ैमा अ़क़्ल है।''[2]

﴾13﴿....मुसलमानों में से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को सब से ज़ियादा मह़बूब वोह है जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इत़ाअ़त के लिये तय्यार रहे, उस के बन्दों की ख़ैर ख़्वाही करे, उस की अ़क़्ल कामिल हो, अपने नफ़्स को नसीह़त करे, उस की निगरानी करे और वोह अ़क़्ल के ज़रीए़ अपनी ज़िन्दगी में अ़मल कर के फ़लाह़ व कामयाबी पाता है।[3]

﴾14﴿.....तुम में से अ़क़्ल के ए'तिबार से सब से ज़ियादा कामिल वोह है जो सब से ज़ियादा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डरता और अवामिर व नवाही को सब से ज़ियादा जानता हो अगर्चे नवाफ़िल में तुम में सब से कमतर हो।[4]

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ...... صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

---

1 ......المطالب العالية، من كتاب العقل لداود بن المحبر......الخ، الحديث: ٢٧٨٧، ج٧، ص ٣١٠۔

2 ......المطالب العالية، من كتاب العقل لداود بن المحبر......الخ، الحديث: ٢٧٨٨، ج٧، ص ٣١٠، بتغيرٍ قليلٍ۔

3 ......تنزيه الشريعة المرفوعة، كتاب المبتدأ، الحديث: ١٢٨، ج١، ص ٢٢١، باختصارٍ۔

4 ......المطالب العالية، من كتاب العقل لداود بن المحبر......الخ، الحديث: ٢٧٩٣، ج٧، ص ٣١٣۔

दूसरी फ़स्ल : अ़क्ल की ह़क़ीक़त और इस की अक़्साम

याद रखो ! अ़क्ल की ता'रीफ़ और इस की ह़क़ीक़त में लोगों का इख़्तिलाफ़ है और अकषर लोग इस बात से बे ख़बर हैं कि अ़क्ल का नाम मुख़्तलिफ़ मआ़नी पर बोला जाता है। येही बात उन के इख़्तिलाफ़ का सबब बनी और इस में ख़फ़ा को ज़ाइल करने वाली ह़क़ बात येह है कि अ़क्ल का इत़्लाक़ मुश्तरका त़ौर पर चार मआ़नी पर होता है जिस त़रह़ लफ़्ज़ ऐन चन्द मआ़नी पर बोला जाता है और वोह अलफ़ाज़ जो इस की मिष्ल हैं इस लिये येह मुनासिब नहीं कि इस की तमाम अक़्साम के लिये एक ता'रीफ़ तलाश की जाए बल्कि हर क़िस्म की अलग अलग वज़ाह़त की जाएगी। चुनान्चे,

अ़क्ल के चार मआ़नी :

﴾1﴿....''अ़क्ल एक ऐसा वस्फ़ है जिस के ज़रीए़ इन्सान तमाम जानवरों से मुमताज़ होता है।'' इसी के ज़रीए़ उस में उ़लूमे नज़रिय्या क़बूल करने और छुपी हुई फ़िक्री सन्अ़तों की तदबीर करने की सलाहिय्यत पैदा होती है। ह़ज़रते सय्यिदुना ह़ारिष बिन असद मुह़ासिबी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَلِى ने अ़क्ल की जो ता'रीफ़ बयान की है इस से उन की मुराद येही है। उन्हों ने अ़क्ल की ता'रीफ़ इस त़रह़ बयान फ़रमाई : ''येह एक फ़ित़री क़ुव्वत है जिस के ज़रीए़ उ़लूमे नज़रिय्या का इदराक किया जाता है गोया येह एक नूर है जो दिल में डाला जाता है जिस की वजह से वोह अश्या के इदराक के लिये तय्यार होता है।''(1) जो इस बात का इन्कार करता और अ़क्ल को सिर्फ़ ज़रूरी और बदीही उ़लूम की त़रफ़ फैरता है वोह इन्साफ़ नहीं करता क्यूंकि उ़लूम से ग़ाफ़िल और सोए हुए शख़्स को चूंकि येह क़ुव्वत ह़ासिल होती है इसी लिये इसे अ़क़्लमन्द कहा जाता है ह़ालांकि उ़लूमे ज़रूरिया इस वक़्त मौजूद नहीं होते। जिस त़रह़ ज़िन्दगी एक क़ुव्वत है जिस के ज़रीए़ जिस्म इख़्तियारी ह़रकात और ह़िस्सी इदराकात के लिये तय्यार होता है इसी त़रह़ अ़क्ल भी एक फ़ित़री क़ुव्वत है जिस के ज़रीए़ बा'ज़ ह़ैवानात नज़री उ़लूम के क़ाबिल हो जाते हैं। अगर इस फ़ित़री क़ुव्वत और ह़िस्सी इदराकात में इन्सान और गधे के दरमियान मसावात (बराबरी) मान कर कहा जाए कि ''इन दोनों के दरमियान कोई फ़र्क़ नहीं सिर्फ़ येह कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अपनी आ़दते मुबारका के मुत़ाबिक़ इन्सान में उ़लूम को पैदा करता है जब कि गधे और दूसरे जानवरों में पैदा नहीं करता।'' तो येह कहना भी जाइज़ होगा कि ''गधे और जमादात (पथ्थर वग़ैरा) की ज़िन्दगी बराबर है।'' और येह भी कहा जाएगा कि ''इन के दरमियान कोई फ़र्क़ नहीं अलबत्ता

---

1 ......ذمّ الھوی، الباب الاوّل فی ذکرالعقل......الخ، ص ۱۹، بتغیرٍقلیلٍ۔

येह कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अपनी आ़दते मुबारका के मुताबिक़ गधे में मख़्सूस ह़रकात पैदा करता है।" अगर गधे को बे जान पथ्थर तसव्वुर किया जाए तो येह कहना लाज़िमी होगा कि "इस से जो ह़रकत नज़र आती है अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे नज़र आने वाली तरतीब से पैदा करने पर क़ादिर है।" तो जैसे येह कहना ज़रूरी है कि गधे का ह़रकात में जमादात से मुमताज़ होना इस ख़ास कुव्वत की बुन्याद पर है जिस का नाम ज़िन्दगी है तो उसी त़रह़ इन्सान भी उ़लूमे नज़रिय्या में हैवानात से एक ख़ास कुव्वत के ज़रीए़ मुमताज़ होता है और वोह अ़क़्ल है। येह उस शीशे की मानिन्द है जो सूरतों और रंगों को दिखाने में एक ख़ास सिफ़त के ज़रीए़ दूसरे अजसाम से जुदा है और वोह सिफ़त उस का साफ़ शफ़्फ़ाफ़ और रोशन होना है। इसी त़रह़ आंख अपनी सिफ़ात और शक्ल के ए'तिबार से जो उसे देखने के क़ाबिल करती हैं पेशानी से मुमताज़ है। लिहाज़ा इस कुव्वत (या'नी अ़क़्ल) की उ़लूम की त़रफ़ निस्बत ऐसे ही है जैसे आंख की देखने की त़रफ़ और उ़लूम की वज़ाह़त के सिलसिले में कुरआन व शरीअ़त की इस कुव्वत की त़रफ़ निस्बत इस त़रह़ है जैसे सूरज की रोशनी को आंखों के नूर से। लिहाज़ा इस कुव्वत को इसी त़रह़ समझना चाहिये।

﴾2﴿....अ़क़्ल से मुराद वोह उ़लूम हैं जो समझदार बच्चे की ज़ात में पाए जाते हैं कि वोह जाइज़ चीज़ों को जाइज़ और मुह़ाल चीज़ों को मुह़ाल समझता है। मषलन वोह जानता है दो एक से ज़ियादा होते हैं और एक शख़्स एक ही वक़्त दो जगहों में नहीं हो सकता। बा'ज़ मुतकल्लिमीन ने अ़क़्ल की ता'रीफ़ करते हुए जो मुन्दरजए ज़ैल बात कही है इस से उन का मत़लब भी वोही है। वोह फ़रमाते हैं : अ़क़्ल बा'ज़ बदीही उ़लूम हैं जैसे जाइज़ चीज़ों के जवाज़ और मुह़ाल अश्या के मुह़ाल होने का इ़ल्म।[1] येह भी फ़ी नफ़्सिही सह़ीह़ ता'रीफ़ है क्यूंकि येह उ़लूम मौजूद हैं और उन्हें अ़क़्ल कहना भी ज़ाहिर है अलबत्ता इस कुव्वत का इन्कार करना और यूं कहना कि सिर्फ़ उ़लूमे बदीही मौजूद हैं, फ़ासिद ख़याल है।

﴾3﴿....वोह उ़लूम जो ह़ालात की तब्दीली से तजरिबे की बुन्याद पर ह़ासिल हों। क्यूंकि जिस शख़्स को तजरिबात समझदार और मज़ाहिबे मुहज़्ज़ब बना दें उस के बारे में कहा जाता है कि वोह आ़दत में अ़क़्ल मन्द है और जो इस से मौसूफ़ न हो उस के बारे में कहा जाता है कि येह शख़्स कुन्द ज़ेह्न, ना तजरिबाकार और जाहिल है तो येह उ़लूम की एक और क़िस्म है जिसे अ़क़्ल कहा जाता है।

﴾4﴿...."येह कुव्वत इस ह़द तक पहुंच जाए कि मुआ़मलात के अन्जाम की पहचान ह़ासिल हो जाए और लज़्ज़त की त़रफ़ बुलाने वाली शहवत को नेस्तो नाबूद कर दे।" जब किसी को येह

---

1 ......البحر المحيط فى اصول الفقه، مقدمات اصول الفقه، ج ۱، ص ۶۲۔

क़ुव्वत ह़ासिल हो जाए तो उसे अ़क़्ल मन्द कहा जाता है क्यूंकि उस का किसी चीज़ की त़रफ़ बढ़ना और इस से रुकना अन्जाम पर नज़र के मुत़ाबिक़ होता है फ़ौरी शहवत की वजह से नहीं। येह भी इन्सान के उन ख़्वास में से है जिन की वजह से वोह तमाम ह़ैवानात से मुमताज़ होता है।

पहला मा'ना बुन्याद और मम्बअ़ है, दूसरा मा'ना इस की फ़ुरुअ़ है जो इस के ज़ियादा क़रीब है, तीसरा मा'ना पहले और दूसरे की फ़ुरुअ़ है क्यूंकि फ़ित़री क़ुव्वत और उ़लूमे ज़रूरिय्या की बुन्याद पर तजरिबाती उ़लूम ह़ासिल होते हैं और चौथा मा'ना आख़िरी नतीजा है और येही मक़्सूद है। पहले दो फ़ित़री और त़बई त़ौर पर ह़ासिल होते हैं जब कि दूसरे दो अ़मल और इक्तिसाब से ह़ासिल होते हैं इसी लिये अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने फ़रमाया :

رَاَيْتُ الْعَقْلَ عَقْلَيْنِ فَمَطْبُوْعٌ وَمَسْمُوْعٌ
وَلَا يَنْفَعُ مَسْمُوْعٌ اِذَا لَمْ يَكُ مَطْبُوْعٌ
كَمَا لَا تَنْفَعُ الشَّمْسُ وَضَوْءُ الْعَيْنِ مَمْنُوْعٌ

तर्जमा : (1) मैं ने अ़क़्ल को दो सूरतों में देखा एक फ़ित़री और दूसरी सुनी हुई।
(2) और सुनी हुई उस वक़्त तक फ़ाइदा नहीं देती जब तक फ़ित़री अ़क़्ल मौजूद न हो।
(3) जैसे सूरज की रोशनी उस वक़्त तक फ़ाइदा नहीं देती जब तक आंखों की रोशनी न हो।

नबियों के सुल्त़ान, रह़मते आ़लमिय्यान صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के इस इरशादे गिरामी कि "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने कोई ऐसी मख़्लूक़ पैदा नहीं फ़रमाई जो उस के नज़दीक अ़क़्ल से ज़ियादा मुअ़ज़्ज़ज़ हो।"[1] से अ़क़्ल की पहली क़िस्म मुराद है।

और इस इरशादे गिरामी कि "जब लोग मुख़्तलिफ़ क़िस्म की नेकियों और आ'माले सालेह़ा के ज़रीए़ क़ुर्बे इलाही ह़ासिल करें तो तुम अपनी अ़क़्ल के ज़रीए़ क़ुर्ब ह़ासिल करो।"[2] से आख़िरी क़िस्म मुराद है।

अ़क़्ल मन्द की पहचान :

ह़ुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ से जो कुछ फ़रमाया इस से भी येही मुराद है। चुनान्चे, इरशाद फ़रमाया : "ऐ अबू दरदा ! अपनी

1 ......مفردات الفاظ القرآن للراغب، کتاب العین، ص۵۷۸۔
2 ......حلیۃ الاولیاء، مقدمۃ المصنف، الحدیث:۳۲، ج۱، ص۵۰، بتغیرٍقلیلٍ۔

अ़क़्ल में इज़ाफ़ा करो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के हां ज़ियादा मुक़र्रब बन जाओगे।'' उन्हों ने अ़र्ज़ की : ''आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم पर मेरे मां बाप कुरबान ! मैं ऐसा किस त़रह़ कर सकता हूं ?'' इरशाद फ़रमाया : ''अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ह़राम कर्दा कामों से इजतिनाब और फ़राइज़ को पाबन्दी से अदा करते रहो अ़क़्ल मन्द हो जाओगे। अच्छे आ'माल इख़्तियार करो दुन्या में तुम्हें बुलन्द रुत्बा मिलेगा और इ़ज़्ज़त में इज़ाफ़ा होगा जब कि आख़िरत में रब्ब عَزَّوَجَلَّ का कुर्ब नसीब होगा और इ़ज़्ज़त ह़ासिल होगी।''(1)

ह़ज़रते सय्यिदुना सई़द बिन मुसय्यब رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ बयान करते हैं कि अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़, ह़ज़रते सय्यिदुना उबय्य बिन का'ब और ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा (رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْھُم) बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ गुज़ार हुए : ''या रसूलल्लाह صلی اللہ تعالی علیك وسلم लोगों में से ज़ियादा इ़ल्म वाला कौन है ?'' आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ''जो अ़क़्ल मन्द है।'' अ़र्ज़ की : ''ज़ियादा इ़बादत गुज़ार कौन है ?'' इरशाद फ़रमाया : ''जो अ़क़्ल मन्द है।'' अ़र्ज़ की : ''सब से ज़ियादा फ़ज़ीलत वाला कौन है ?'' इरशाद फ़रमाया : ''जो अ़क़्ल मन्द है।'' अ़र्ज़ की : ''क्या अ़क़्ल मन्द वोह है जिस की बात़िनी सिफ़ात मुकम्मल हों, फ़साह़त ज़ाहिर, हाथ सख़ी और मक़ामे अ़ज़ीम का मालिक हो ?'' तो हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ''येह जो कुछ है जीती दुन्या ही के अस्बाब हैं और आख़िरत तुम्हारे रब्ब के पास परहेज़गारों के लिये है।'' फिर फ़रमाया : ''अ़क़्लमन्द वोह है जो मुत्तक़ी है अगर्चे दुन्या में बज़ाहिर ज़लीलो रुस्वा हो।''(2)

एक रिवायत में है कि ''बेशक अ़क़्ल मन्द वोह है जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ पर ईमान लाया, उस के रसूलों की तस्दीक़ और उस की फ़रमांबरदारी की।''(3)

ख़ुलासा : मुनासिब येह है कि इस कुव्वत का अस्ल नाम लुग़त और इस्ति'माल के ए'तिबार से हो और उ़लूम पर इस का इत़्लाक़ इस वजह से हो कि वोह उस के षमरात व नताइज हैं जैसे किसी चीज़ की पहचान इस के (नतीजे और) षमरे से होती है। कहा जाता है इ़ल्म ख़शिय्यते इलाही का नाम है और आ़लिम वोह है जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से डरता है क्यूंकि ख़शिय्यत इ़ल्म का नतीजा है तो इस (अ़क़्ली) कुव्वत के ग़ैर पर अ़क़्ल का इत़्लाक़ मजाज़न होगा लेकिन लुग़त से बह़्ष करना मक़्सूद नहीं बल्कि मक़्सूद येह है कि येह चारों अक़्साम मौजूद हैं और येह नाम (या'नी अ़क़्ल) इन सब पर बोला जाता है। पहली क़िस्म के इ़लावा किसी के

1......اتحاف الخیرۃ المھرۃ، باب ماجاء فی العقل، الحدیث:۷۰۷۰، ج۷، ص۳۷۵۔

2......المرجع السابق، الحدیث:۷۰۳۶، ص۳۶۵۔ 3......المرجع السابق، الحدیث:۷۰۵۸، ص۳۷۱۔

वुजूद में कोई इख़्तिलाफ़ नहीं और सहीह़ येह है कि तमाम अक़्साम पाई जाती हैं और येही अस्ल है। जब कि येह उ़लूम गोया फ़ित़्रतन इस क़ुव्वते अ़क़्लिय्या में ज़िमनन पाए जाते हैं लेकिन वुजूद में उस वक़्त पाए जाते हैं जब कोई ऐसा सबब जारी हो जो इन्हें वुजूद का जामा पहनाए। येह उ़लूम कोई ऐसी चीज़ नहीं जो बाहर से वारिद हुई है गोया वोह इस क़ुव्वते अ़क़्लिय्या में मौजूद थे अब ज़ाहिर हो गए। **इस की मिषाल** ज़मीन में पानी का मौजूद होना है जो कुंवां खोदने से ज़ाहिर और जम्अ़ होता और क़ुव्वते ह़िस्सिया के ज़रीए़ मुमताज़ हो जाता है येह बात नहीं कि इस की त़रफ़ किसी नई चीज़ को लाया गया है। इसी त़रह़ बादाम में रोग़न और गुलाब में अ़र्क़ होता है। इसी सिलसिले में इरशादे ख़ुदावन्दी है :

وَ اِذْ اَخَذَ رَبُّكَ مِنْۢ بَنِیْۤ اٰدَمَ مِنْ ظُهُوْرِهِمْ ذُرِّیَّتَهُمْ وَ اَشْهَدَهُمْ عَلٰۤى اَنْفُسِهِمْ ۚ اَلَسْتُ بِرَبِّكُمْ ؕ قَالُوْا بَلٰى ۛۚ (پ۹، الاعراف:۱۷۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और ऐ मह़बूब ! याद करो जब तुम्हारे रब्ब ने अवलादे आदम की पुश्त से उन की नस्ल निकाली और उन्हें ख़ुद उन पर गवाह किया, क्या मैं तुम्हारा रब्ब नहीं ? सब बोले क्यूं नहीं।*

फ़ाइदा : इस से मुराद इन के नुफ़ूस का इक़रार है न कि ज़बानों का क्यूंकि ज़बानों के इक़रार के ए'तिबार से इक़रार करने वाले और मुन्किरीन में इन की तक़्सीम उस वक़्त हुई जब इन की ज़बानों और अश्ख़ास को पैदा किया गया। येही वजह है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया :

وَلَئِنْ سَاَلْتَهُمْ مَّنْ خَلَقَهُمْ لَیَقُوْلُنَّ اللّٰهُ (پ۲۵، الزخرف:۸۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और अगर तुम उन से पूछो कि इन्हें किस ने पैदा किया तो ज़रूर कहेंगे अल्लाह ने।*

इस का मत़्लब येह है कि अगर इन के अह़वाल का ए'तिबार किया जाए तो इन पर इन के नुफ़ूस और बात़िन गवाही देंगे।

इरशादे ख़ुदावन्दी है :

فِطْرَتَ اللّٰهِ الَّتِیْ فَطَرَ النَّاسَ عَلَیْهَا ؕ (پ۲۱، الروم:۳۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *अल्लाह की डाली हुई बिना जिस पर लोगों को पैदा किया।*

फ़ाइदा : या'नी हर शख़्स को ईमान बिल्लाह पर पैदा किया गया है बल्कि हर चीज़ को माहिय्यत की मा'रिफ़त पर पैदा किया गया है। मत़्लब येह है कि गोया इस के अन्दर येह मा'रिफ़त रखी गई है क्यूंकि इस की इस्ति'दाद इदराक के क़रीब है। फिर जब फ़ित़्रतन नुफ़ूस में ईमान को रखा गया है तो इस ए'तिबार से लोगों की दो अक़्साम हैं :

(1)....वोह जिस ने मुंह फैरा और (अल्लाह عَزَّوَجَلَّ को) भुला दिया वोह काफ़िर है। (2)....वोह जिस ने अपने ख़याल को दौड़ाया तो याद आ गया। येह उस शख़्स की त़रह़ है जो गवाह बना फिर ग़फ़्लत की वजह से भूल गया लेकिन बा'द में उसे याद आ गया। इसी लिये अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया :

لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُوْنَ ﴿۲۲۱﴾ (پ۲، البقرۃ:۲۲۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *कि कहीं वोह नसीह़त मानें।*

एक जगह इरशाद फ़रमाया :

وَلِيَتَذَكَّرَ اُولُوا الْاَلْبَابِ ﴿۲۹﴾ (پ۲۳، ص:۲۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और अ़क़्ल मन्द नसीह़त मानें।*

एक मक़ाम पर इरशाद फ़रमाया :

وَاذْكُرُوْا نِعْمَةَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَمِيْثَاقَهُ الَّذِیْ وَاثَقَكُمْ بِهٖۤ (پ۶، المائدۃ:۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और याद करो अल्लाह का एह़सान अपने ऊपर और वोह अ़हद जो उस ने तुम से लिया।*

इरशादे बारी तआ़ला है :

وَلَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْاٰنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِنْ مُّدَّكِرٍ ﴿۱۷﴾ (پ۲۷، القمر:۱۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और बेशक हम ने कुरआन याद करने के लिये आसान फ़रमा दिया तो है कोई याद करने वाला।*

और इस त़रीक़े को तज़क्कुर (या'नी याद करना) कहना कोई तअ़ज्जुब ख़ेज़ बात नहीं। गोया याद आने की दो सूरतें हैं :

(1)....वोह उस सूरत को याद करे जिस का वुजूद उस के दिल में ह़ाज़िर था लेकिन पाए जाने के बा'द ग़ाइब हो गया और

(2)....वोह उस सूरत को याद करे जो फ़ित़रत के ज़िम्न में वहां पाई जाती है और येह ह़क़ाइक़ देखने वाले को नूरे बसीरत से नज़र आते हैं लेकिन उस शख़्स पर भारी होते हैं जिस का तकिया तक़लीद और समाअ़त हो, कश्फ़ और मुशाहदा करना न हो इसी लिये तुम देखोगे कि वोह इस क़िस्म की आयात में दीवाना पन इख़्तियार करता है और तज़क्कुर और नुफ़ूस के इक़रार के सिलसिले में दूर अज़्कार तावीलात निकालता है नीज़ अह़ादीष और आयात के सिलसिले में इस के ज़ेह्न में इस त़रह़ के ख़यालात पैदा होते हैं कि येह एक दूसरे के ख़िलाफ़ हैं बल्कि बा'ज़ अवक़ात येह बात उस पर ग़ालिब आ जाती है तो वोह उन की त़रफ़ ह़क़ारत की नज़र से देखता और उन में तज़ाद समझता है। **इस की मिषाल :** नाबीना शख़्स जैसी है।

दिल का अन्धापन ज़ियादा नुक़्सान देह है :

नाबीना शख़्स जब घर में दाख़िल होता और घर में तरतीब से रखे हुए बरतनों की वजह से गिर जाता है तो कहता है क्या वजह है कि "बरतनों को तरतीब से एक जगह क्यूं नहीं रखा जाता ।" तो उसे कहा जाता है : "येह अपनी जगह पर हैं ख़राबी तो तुम्हारी आंखों में है ।" बसीरत की ख़राबी भी इस की त़रह़ होती है बल्कि इस से ज़ियादा बड़ी होती है क्यूंकि नफ़्स सूवारी की त़रह़ और जिस्म सुवारी की मानिन्द है और सुवार का अन्धा होना सुवारी के अन्धे पन से ज़ियादा नुक़्सान देह है इस वजह से कि बात़िनी बसीरत ज़ाहिरी बसीरत के मुशाबेह है ।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया :

مَا كَذَبَ الْفُؤَادُ مَا رَاٰى ﴿۱۱﴾ (پ:۲۷، النجم:۱۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *दिल ने झूट न कहा जो देखा ।*

एक मक़ाम पर इरशाद फ़रमाया :

وَكَذٰلِكَ نُرِیْۤ اِبْرٰهِیْمَ مَلَكُوْتَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ (پ۷، الانعام:۷۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और इसी त़रह़ हम इब्राहीम को दिखाते हैं सारी बादशाही आस्मानों और ज़मीन की ।*

और इस की ज़िद को अन्धापन क़रार दिया । चुनान्चे, इरशाद फ़रमाया :

فَاِنَّهَا لَا تَعْمَى الْاَبْصَارُ وَلٰكِنْ تَعْمَى الْقُلُوْبُ الَّتِیْ فِی الصُّدُوْرِ ﴿۴۶﴾ (پ۱۷، الحج:۴۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *तो येह कि आंखें अन्धी नहीं होतीं बल्कि वोह दिल अन्धे होते हैं जो सीनों में हैं ।*

एक जगह इरशाद फ़रमाया :

وَمَنْ كَانَ فِیْ هٰذِهٖۤ اَعْمٰى فَهُوَ فِی الْاٰخِرَةِ اَعْمٰى وَاَضَلُّ سَبِیْلًا ﴿۷۲﴾ (پ۱۵، بنی اسرآءیل:۷۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और जो इस ज़िन्दगी में अन्धा हो वोह आख़िरत में अन्धा है और और भी ज़ियादा गुमराह ।*

येह उमूर अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के लिये वाज़ेह़ किये गए । इन में से बा'ज़ का तअ़ल्लुक़ ज़ाहिरी बसीरत से और बा'ज़ का बात़िनी बसीरत से है और इन सब को रुवियत (देखना) कहा गया है ।

ख़ुलासए कलाम येह है कि जिस शख़्स की बात़िनी निगाह कामिल न हो उसे दीन से सिर्फ़ छिलके और मिषालें ह़ासिल होती हैं दीन का मग़ज़ और ह़क़ाइक़ ह़ासिल नही होतीं । येह वोह अक़्साम हैं जिन पर लफ़्ज़े अ़क़्ल का इत़्लाक़ किया जाता है ।

तीसरी फ़स्ल : अ़क़्ल के ए'तिबार से इन्सानी नुफ़ूस में तफ़ावुत

अ़क़्ल में फ़र्क़ के बारे में भी लोगों की आरा मुख़्तलिफ़ हैं लेकिन कम इल्मों का कलाम नक़्ल करने का क्या फ़ाइदा बल्कि सब से बेहतर और अहम बात वाज़ेह़ ह़क़ की त़रफ़ जल्दी करना है इस सिलसिले में वाज़ेह़ ह़क़ येह है कि दूसरी क़िस्म "**जो जाइज़ चीज़ों के जवाज़ और मुह़ालात के मुह़ाल होने से तअ़ल्लुक़ ज़रूरी इल्म है**" के इलावा अ़क़्ल की तमाम अक़्साम में फ़र्क़ है क्यूंकि जो येह जानता है कि दो एक से ज़ियादा होते हैं यक़ीनन येह बात भी उस के इ़ल्म में है कि एक जिस्म एक ही वक़्त में दो जगहों पर मौजूद नहीं हो सकता इसी त़रह़ येह भी नहीं हो सकता कि एक ही चीज़ क़दीम भी हो और ह़ादिष भी। इस त़रह़ दीगर मिषालें और वोह उमूर भी हैं जिन का इदराक किसी शक के बिग़ैर ठीक ठीक होता है लेकिन तीन अक़्साम में फ़र्क़ पाया जाता है।

चौथी क़िस्म जो येह है कि "**ख़्वाहिशात को ख़त्म करने के लिये कुव्वत का ह़ासिल होना**" इस में लोगों के दरमियान तफ़ावत पोशीदा नहीं बल्कि इस में एक शख़्स की मुख़्तलिफ़ ह़ालतों में भी फ़र्क़ होता है और येह फ़र्क़ कभी ख़्वाहिश में फ़र्क़ के बाइ़ष होता है क्यूंकि अ़क़्ल मन्द शख़्स बा'ज़ ख़्वाहिशात को छोड़ने पर क़ादिर होता है और बा'ज़ को नहीं लेकिन इन का छोड़ना मुश्किल नहीं होता। नौजवान कभी ज़िना को छोड़ने से आ़जिज़ होता है लेकिन जब बड़ा हो जाता और उस की अ़क़्ल कामिल हो जाती है तो वोह इस पर क़ादिर हो जाता है जब कि रियाकारी और इक़्तिदार की ख़्वाहिश बुढ़ापे की वजह से कम नहीं होती बल्कि बढ़ जाती है। कभी इस का सबब उस इ़ल्म का तफ़ावुत होता है जो शहवत की ख़राबी से रूशनास कराता है।

अ़क़्ल का लश्कर और सामाने जिहाद :

इसी लिये त़बीब बा'ज़ नुक़्सान देह खानों से बचने पर क़ादिर होता है लेकिन बा'ज़ अवक़ात ग़ैरे त़बीब अ़क़्ल में इस त़बीब के बराबर होने के बा वुजूद इस पर क़ादिर नहीं होता अगर्चे वोह यक़ीन रखता है कि येह नुक़्सान देह है लेकिन चूंकि त़बीब ब ए'तिबार इ़ल्म ज़ियादा कामिल होता है इस लिये उस का ख़ौफ़ भी ज़ियादा होता है। लिहाज़ा ख़ौफ़ ख़्वाहिशात का क़ल्अ़ क़म्अ़ करने के लिये अ़क़्ल का लश्कर और सामाने जिहाद है। यूंही आ़लिम गुनाहों को छोड़ने पर जाहिल से ज़ियादा क़ादिर होता है क्यूंकि वोह गुनाहों के नुक़्सानात का ज़ियादा इ़ल्म रखता है इस से मुराद ह़क़ीक़ी आ़लिम है। उ़-लमाए दुन्या और बेहूदा गुफ़्तगू करने वाले मुराद नहीं और अगर ख़्वाहिश के ए'तिबार से तफ़ावुत हो तो वोह अ़क़्ल का तफ़ावुत नहीं और अगर वोह

इ़ल्म की वजह से है तो हम ने इस क़िस्म के इ़ल्म का नाम अ़क़्ल भी रखा है क्यूंकि वोह क़ुव्वते अ़क़्लिय्या को मज़बूत़ करता है। फ़र्क़ उस चीज़ में होता है जिस की त़रफ़ येह नाम लौटता है और बा'ज़ अवक़ात सिर्फ़ क़ुव्वते अ़क़्लिय्या में फ़र्क़ की वजह से तफ़ावुत होता है जब येह क़ुव्वत मज़बूत़ होगी तो यक़ीनन शहवत को ज़ियादा ख़त्म करने वाली होगी।

तीसरी क़िस्म जो तजरिबाती उ़लूम से मुतअ़ल्लिक़ है इस में लोगों का मुख़्तलिफ़ होना नाक़ाबिले इन्कार है क्यूंकि वोह बात तक ज़ियादा पहुंचने और इसे जल्द अज़ जल्द पाने के ए'तिबार से मुख़्तलिफ़ हैं और इस का सबब या तो अ़क़्ली क़ुव्वत में फ़र्क़ होता है या तजरिबे में फ़र्क़ इस का बाइ़ष बनता है।

पहली क़िस्म या'नी क़ुव्वते अ़क़्लिय्या और येही अस्ल है। इस ए'तिबार से भी इन्सानों में तफ़ावुत का इन्कार नहीं हो सकता क्यूंकि वोह एक नूर की मिष्ल है जो नफ़्स पर चमकता है और इस की सुब्ह़ त़ुलूअ़ होती है और इस के चमकने का आग़ाज़ उस वक़्त होता है जब वोह (या'नी बच्चा अश्या में) तमीज़ करने की उ़म्र को पहुंच जाता है फिर वोह मुसलसल परवरिश पाता और इस की नश्व व नुमा में इज़ाफ़ा होता रहता है और वोह ख़ुफ़्या त़ौर पर तदरीजन बढ़ता है यहां तक कि येह (नूर) 40 साल की उ़म्र के क़रीब कामिल हो जाता है और येह सुब्ह़ की रोशनी की मानिन्द होता है क्यूंकि वोह शुरूअ़ में इस क़दर मख़्फ़ी होती है कि इस का इदराक मुश्किल होता है फिर तदरीजन बढ़ती है यहां तक कि सूरज की टिकिया के त़ुलूअ़ होने के साथ मुकम्मल हो जाती है।

नूरे बसीरत में फ़र्क़ आंखों की रोशनी में फ़र्क़ की त़रह़ है कमज़ोर बीनाई और तेज़ बीनाई वाले के दरमियान फ़र्क़ मह़सूस होता है और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मख़्लूक़ को तदरीजन पैदा करने का त़रीक़ा जारी फ़रमाया है ह़त्ता की शहवानी क़ुव्वत बच्चे के बालिग़ होते ही उस में अचानक और यकदम ज़ाहिर नहीं होती बल्कि तदरीजन थोड़ी थोड़ी ज़ाहिर होती है इसी त़रह़ तमाम क़ुव्वतें और सिफ़ात तदरीजन ज़ाहिर होती हैं और जो शख़्स इस क़ुव्वत में लोगों के दरमियान तफ़ावुत का इन्कार करता है गोया वोह अ़क़्ली क़ुव्वत से ख़ाली है और जो येह ख़याल करे कि ह़ुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की अ़क़्ल मुबारक किसी देहाती और जंगलों में रहने वाले गंवारों की अ़क़्ल की त़रह़ है तो वो तो किसी देहाती से भी ज़ियादा ख़सीस है वोह क़ुव्वते अ़क़्लिय्या में तफ़ावुत का कैसे इन्कार कर सकता है क्यूंकि अगर येह फ़र्क़ न होता तो उ़लूम के समझने में लोगों के मुख़्तलिफ़ दर्जात न होते और कुन्द ज़ेह्न, ज़हीन और कामिल में इन की तक़्सीम न होती।

कुन्द ज़ेह्न : वोह होता है जो समझाने से भी नहीं समझता ह़त्ता कि असातेज़ा को उस पर बहुत ज़ियादा मेह़नत करनी पड़ती है।

ज़हीन : वोह होता है जो अदना इशारे से समझता है।

कामिल : वोह होता है कि ता'लीम दिये बिग़ैर भी उस से ह़क़ाइक़े उमूर का ज़ुहूर हो जाता है। जैसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया :

يَكَادُ زَيْتُهَا يُضِيٓءُ وَلَوْ لَمْ تَمْسَسْهُ نَارٌ ؕ نُوْرٌ عَلٰى نُوْرٍ ؕ (پ۱۸، النور:۳۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *क़रीब है कि उस का तेल भड़क उठे अगर्चे उसे आग न छूए, नूर पर नूर है।*

और येह अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की सिफ़त है क्यूंकि सीखने और सुनने के बिग़ैर भी उन के बात़िन में निहायत बारीक और पोशीदा उमूर रोशन हो जाते हैं और इसे इल्हाम कहा जाता है।

हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहि़बे लौलाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपने इस इरशादे गिरामी में येही बात बयान फ़रमाई कि ह़ज़रते जिब्रईल عَلَيْهِ السَّلَام ने मेरे दिल में येह बात डाली कि "जिस से मह़ब्बत करना चाहते हैं मह़ब्बत करें बेशक आप इस से जुदा होने वाले हैं और जब तक चाहते हैं ज़िन्दा रहें बिल आख़िर आप इन्तिक़ाल फ़रमाने वाले हैं और जो चाहें अ़मल करें आप को इसी का बदला दिया जाएगा।"(1)

और फ़िरिश्तों की त़रफ़ से नबियों को इस त़रह़ की ख़बर देना वह़्ये सरीह़ के ख़िलाफ़ है जो कान के ज़रीए सुनी जाती और आंखों से फ़िरिश्ते को देखा जाता है इसी लिये आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इसे दिल में डालने (इल्हाम) से ता'बीर फ़रमाया। वह़्य के दर्जात बहुत ज़ियादा हैं और इन में बह़्ष करना इल्मे मुआ़मला के लाइक़ नहीं बल्कि इस का तअ़ल्लुक़ इल्मे मुकाशफ़ा से है और तुम्हें येह ख़याल नहीं करना चाहिये कि वह़्य के दर्जात, मन्सबे वह़्य को दा'वत देते हैं क्यूंकि मुमकिन है कि त़बीब बीमार को सिह़्ह़त के दर्जात सिखा दे और आ़लिम किसी फ़ासिक़ को अ़दालत के दर्जात की ता'लीम दे अगर्चे फ़ासिक़ इन दर्जात से नावाक़िफ़ हो। लिहाज़ा इल्म कुछ और चीज़ है और किसी मा'लूम चीज़ का वुजूद कुछ और। पस हर वोह शख़्स जो नबुव्वत और विलायत की पहचान रखता हो नबी या वली नहीं हो सकता और न ही तक़्वा व परहेज़गारी और इन की बारीकियों को जानने वाला मुत्तक़ी हो सकता है।

ख़ुलासा : लोगों की तक़्सीम यूं है कि एक वोह शख़्स है जो ज़ाती त़ौर पर आगाह होता और समझता है। दूसरा वोह है कि जो किसी के आगाह करने और सिखाने के बिग़ैर नहीं समझता और तीसरा वोह है कि जिसे ता'लीमो तम्बीह भी फ़ाइदा नहीं देती जिस त़रह़ ज़मीन की मुख़्तलिफ़ सूरतें

(1)......شعب الایمان للبیهقی، باب فی الزهد وقصرالامل، الحدیث:۱۰۵۴۳، ج۷، ص ۳۴۹، بتغیرٍقلیلٍ۔

है कि बा'ज़ जगह पानी जम्अ़ होता और इस क़दर ताक़तवर होता है कि ख़ुद बख़ुद चश्मों की सूरत में फूट निकलता है, बा'ज़ मक़ामात पर कुंवां खोदने की ज़रूरत पेश आती है ताकि वोह नालियों की त़रफ़ निकले जब कि बा'ज़ जगहें ऐसी हैं कि जहां खुदाई का भी कुछ फ़ाइदा नहीं होता और वोह ख़ुश्क जगह होती है और येह इस लिये है कि सिफ़ात के ए'तिबार से ज़मीन के जवाहिर मुख़्तलिफ़ हैं। इसी त़रह़ कुव्वते अ़क़्लिय्या के ए'तिबार से इन्सानी नुफ़ूस भी मुख़्तलिफ़ हैं **नक़्ली दलाइल** के ए'तिबार से अ़क़्ल के मुख़्तलिफ़ होने पर येह ह़दीष दलालत करती है। चुनान्चे,

अ़र्श से बढ़ कर अ़ज़मत वाली चीज़ :

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ से त़वील ह़दीष मरवी है। इस के आख़िर में अ़र्श की अ़ज़मत इन अल्फ़ाज़ में बयान की गई है कि फ़िरिश्तों ने बारगाहे इलाही में अ़र्ज़ की : "ऐ हमारे रब्ब عَزَّوَجَلَّ क्या तूने अ़र्श से बड़ी चीज़ भी कोई पैदा की है?" तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया : "हां! वोह अ़क़्ल है।" उन्हों ने अ़र्ज़ की : "इस की क़द्रो मन्ज़िलत क्या है?" इरशाद फ़रमाया : "रहने दो, इस के इ़ल्म का इह़ात़ा नहीं किया जा सकता, क्या तुम्हें रैत (के ज़र्रात) की ता'दाद का इ़ल्म है?" उन्हों ने अ़र्ज़ की : "नहीं।" **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया : "मैं ने रैत (के ज़र्रात) की ता'दाद की मिष्ल अ़क़्ल को मुख़्तलिफ़ क़िस्मों में पैदा किया है। बा'ज़ लोगों को एक ज़र्रा दिया गया, बा'ज़ को दो, बा'ज़ को तीन और चार, बा'ज़ को एक फ़र्क़ (एक पैमाना जिस में आठ सैर ग़ल्ला आता है), बा'ज़ को वस्क़ (60 साअ़ ग़ल्ला) और बा'ज़ को इस से भी ज़ियादा दिया गया।"[1]

एक सुवाल और इस का जवाब :

अगर तुम पूछो कि उन लोगों का क्या ह़ाल है जो सूफ़ी बने बैठे और अ़क़्ल व मा'क़ूल की बुराई बयान करते हैं? तो याद रखिये! इस की वजह येह है कि लोगों ने मुजादला व मुनाज़रा करते हुए एक दूसरे पर ए'तिराज़ात और इल्ज़ामात लगाने का नाम अ़क़्ल रख लिया है और येह फ़न कलाम के सबब है और लोग इस पर क़ादिर नहीं कि इन्हें बताएं कि तुम ने नाम रखने में ख़त़ा की है क्यूंकि येह नाम इन की ज़बानों पर जारी और दिलों में यूं रासिख़ हो गया कि अब इन के दिलों से निकल नहीं सकता लिहाज़ा इन्हों ने अ़क़्ल व मा'क़ूल की बुराई बयान करना शुरूअ़ कर दी और इन के नज़दीक येही अ़क़्ल है।

1 ......اتحاف الخیرۃ المھرۃ، باب ماجاء فی العقل، الحدیث:۷۰۶۲، ج۷، ص ۳۷۴، بتغیرٍقلیلٍ۔

रहा नूरे बसीरत कि जिस के ज़रीए़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की मा'रिफ़त और उस के रसूलों की सदाक़त नसीब होती है तो इस की बुराई व मज़म्मत का तसव्वुर कैसे मुमकिन है ह़ालांकि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इस की ता'रीफ़ फ़रमाई है अगर इस की मज़म्मत की जाए तो फिर किस चीज़ की ता'रीफ़ की जाएगी ? जब शरीअ़त क़ाबिले ता'रीफ़ है तो शरीअ़त की सिह़्ह़त का इ़ल्म कैसे ह़ासिल होगा ? अगर शरीअ़त की सिह़्ह़त का इ़ल्म अ़क़्ल के ज़रीए़ हो जो ख़ुद मज़मूम है और इस पर यक़ीन नहीं है तो शरीअ़त भी मज़मूम होगी। नीज़ जो कहता है कि इस (या'नी शरीअ़त) का इदराक यक़ीन की आंख और नूरे ईमान से होता है न कि अ़क़्ल के ज़रीए़ तो उस की त़रफ़ तवज्जोह न की जाए क्यूंकि हमारे नज़्दीक भी अ़क़्ल, ऐ़नुल यक़ीन और नूरे ईमान की मुराद एक ही है और वोह बात़िनी सिफ़त है जिस के ज़रीए़ इन्सान जानवरों से मुमताज़ होता है यहां तक कि इस के ज़रीए़ वोह हर चीज़ की ह़क़ीक़त को पा लेता है।

इस क़िस्म के अकषर मुग़ालते़ उन लोगों की जहालत की वजह से पैदा होते हैं जो ह़क़ाइक़ को अल्फ़ाज़ से तलाश करते हैं जिस के नतीजे में वोह मुग़ालते़ में पड़ते जाते हैं क्यूंकि अल्फ़ाज़ में लोगों की इस्तिलाह़ात मुग़ालतों का शिकार हैं। अ़क़्ल के बयान में इतना ही काफ़ी है और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ख़ूब जानता है।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ह़म्द और उस के फ़ज़्ल से इ़ल्म का बयान मुकम्मल हुवा। हमारे सरदार ह़ज़रत मुह़म्मद صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم पर और ज़मीनो आस्मान के हर मुन्तख़ब बन्दे पर रह़मत हो।

وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَحْدَهٗ اَوَّلًا وَّ اٰخِرًا

تُوبُوا اِلَى الله ...... اَسْتَغْفِرُ الله

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ...... صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

अ़क़ाइद का बयान

क़वाइदे अ़क़ाइद का बयान चार फ़स्लों पर मुश्तमिल है :

पहली फ़स्ल : पहले इस्लामी रुक्न कलिमए शहादत के मुतअ़ल्लिक़ अ़क़ीदए अहले सुन्नत की वज़ाह़त

इस फ़स्ल में अ़क़ाइदे अहले सुन्नत में से इस अ़क़ीदे या'नी कलिमए शहादत के मुतअ़ल्लिक़ वज़ाह़त की गई है कि जिस का इक़रार व तस्दीक़ पहला इस्लामी रुक्न है।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की अ़त़ा कर्दा तौफ़ीक़ से मैं कहता हूं कि सब ख़ूबियां **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं जो पैदा करने वाला, दोबारा ज़िन्दा करने वाला, जो चाहे करने वाला, अ़र्श का मालिक इ़ज़्ज़त वाला, सख़्त गिरिफ़्त फ़रमाने वाला, अपने पसन्दीदा बन्दों को सिरात़े मुस्तक़ीम और दुरुस्त त़र्ज़े अ़मल की त़रफ़ हिदायत देने वाला, शक व तरद्दुद की अन्धेरियों से अपने अ़क़ाइद को बचा कर इक़रारे तौह़ीद पर जम जाने वालों पर इन्आ़म फ़रमाने वाला, अपने फ़ज़्लो करम से अपने पसन्दीदा बन्दों को मुह़म्मदे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नत और मुअ़ज़्ज़ज़ व मुशर्रफ़ सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن के नक़्शे क़दम पर चलने की तौफ़ीक़ बख़्शने वाला है। अपने पसन्दीदा बन्दों पर अपनी ज़ात व अफ़्आ़ल को इन उ़म्दा अवसाफ़ के ज़रीए रोशन फ़रमाता है कि जिन का इदराक वोही कर सकता है जो उस की त़रफ़ मुतवज्जेह होता और बारगाह में ह़ाज़िर रहता है और वोह उन्हें अपनी ज़ात की मा'रिफ़त भी अ़त़ा फ़रमाता है कि वोह एक है उस का कोई शरीक नहीं, यक्ता है उस की कोई नज़ीर नहीं, बे नियाज़ है कोई उस के जोड़ का नहीं, तन्हा है कोई उस का हम रुत्बा नहीं, वाह़िद व क़दीम है कि उस से पहले किसी चीज़ का वुजूद न था, हमेशा से है और हमेशा रहेगा न उस की इब्तिदा है और न ही इन्तिहा, बज़ाते ख़ुद क़ाइम और औरों का क़ाइम रखने वाला है। उस का कोई इख़्तिताम नहीं, वोह बाक़ी और ग़ैरे फ़ानी है। उस के लिये अन्जाम व ज़वाल नहीं। उस की ज़ात बुज़ुर्गी पर दलालत करने वाली सिफ़ात से मुत्तसिफ़ है। ज़माने गुज़रते और दिन रात ख़त्म होते जाएंगे लेकिन उस की ज़ात न ख़त्म होने वाली है, न टूटने वाली बल्कि उस की शान येह है :

هُوَالْاَوَّلُ وَالْاٰخِرُ وَالظَّاهِرُ وَالْبَاطِنُ ۚ وَهُوَ بِكُلِّ شَیْءٍ عَلِیْمٌ ۝۳ (پ۲۷، الحدید:۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *वोही अव्वल वोही आख़िर वोही ज़ाहिर वोही बात़िन और वोही सब कुछ जानता है।*

कलिमए शहादत के पहले जुज़ अ़क़ीदए तौह़ीद की वज़ाह़त

हर ऐब व नुक़्स से पाक ज़ात :

अल्लाह سُبْحٰنَهٗ وَتَعَالٰی जिस्म व जिस्मानियत से पाक है। वोह मुतनाही और क़िस्मत के ताबेए़ जोहर नहीं। वोह जिस्म की मिष्ल नहीं क्यूंकि अज्साम तो एक ह़द में मह़दूद और क़ाबिले तक़्सीम होते हैं। न तो वोह **जोहर** है न **अ़र्ज़**[1] और न ही जवाहिर व अ़वारिज़ उस में हुलूल किये हुए हैं। न तो वोह किसी मौजूद के मुशाबेह है और न ही कोई मौजूद उस के मुशाबेह। (बल्कि कुरआने मजीद में है :)

لَيْسَ كَمِثْلِهٖ شَيْءٌ (پ۲۵،الشوریٰ:۱۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *उस जैसा कोई नहीं।*

और न ही वोह किसी जैसा है। वोह मिक़्दारों में शुमार होने और कनारों व सम्तों में इह़ात़ा किये जाने से यूं पाक है कि ज़मीन व अस्मान भी उस का इह़ात़ा नहीं कर सकते। वोह अपनी शायाने शान और अपने फ़रमान व इरादे के मुत़ाबिक़ अ़र्शे अ़ज़ीम पर इस्तिवा फ़रमाए हुए है। उस का इस्तिवा छूने, जाए गीर होने, जाए पज़ीर होने, किसी चीज़ में हुलूल करने और मुन्तक़िल होने से मुनज़्ज़ाह है। अ़र्श उसे नहीं उठाता बल्कि अ़र्श व ह़ामिलीने अ़र्श का क़ियाम उस की कुदरत व लुत़्फ़ का मोह़ताज और इन सब का निज़ाम उस के क़ब्ज़ए कुदरत में है। वोह तह़्तुष्षरा की गहराइयों, आस्मान की वुस्अ़तों और अ़र्श की बुलन्दियों से बुलन्द तर है। उस की इस बुलन्दी का येह मत़लब नहीं कि वो ज़मीन व तह़्तुष्षरा से दूर और उन की निस्बत अ़र्श व आस्मान से क़रीब है बल्कि वोह ज़मीन व तह़्तुष्षरा से जिस त़रह़ बुलन्द व अ़ज़मत वाला है इसी त़रह़ अ़र्श व आस्मान से भी अ़ज़ीम तर है। लेकिन इन तमाम तर बुलन्दियों और अ़ज़मतों के बा वुजूद वोह हर मौजूद शै के क़रीब और इन्सान की शह रग से भी ज़ियादा क़रीब है।

وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيْدٌ ﴿۴۷﴾ (پ۲۲،السبا:۴۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और वोह हर चीज़ पर गवाह है।*

जिस त़रह़ उस की ज़ात अज्साम की मानिन्द नहीं, इसी त़रह़ उस का कुर्ब भी आ़म त़ौर पर एक जिस्म के दूसरे जिस्म के क़रीब होने की त़रह़ नहीं। न वोह किसी शै में हुलूल[2] किये हुए है और न ही कोई शै उस में हुलूल किये हुए है। जिस त़रह़ कोई ज़माना उसे नहीं घेर सकता

1....अहले सुन्नत के नज़दीक : **जोहर** से मुराद वोह जुज़ है जो तक़्सीम न हो सके और **अ़र्ज़** वोह है जो बज़ाते खुद क़ाइम न रह सकता हो बल्कि किसी मह़ल का मोह़ताज हो। (الحدیقة الندیة، ج۱،ص۲۴۷)

2....हुलूल या'नी एक चीज़ का दूसरी चीज़ में इस त़रह़ दाख़िल हो जाना कि दोनों में तमीज़ न हो सके।

(कुफ़्रिया कलिमात के बारे में सुवाल जवाब, स. 131)

इसी त़रह़ वोह किसी मकान में भी नहीं समा सकता बल्कि वोह मकान व ज़मान की तख़्लीक़ से भी पहले का मौजूद है और अब भी पहले की त़रह़ ही है। अपनी जमीअ़ सिफ़ात समेत मख़्लूक़ से मुमताज़ है। न तो उस की ज़ात में कोई दूसरा है और न ही वोह किसी दूसरे की ज़ात में है। वोह बदलने, मुन्तक़िल होने और ह़वादिष व अ़वारिज़ के लाह़िक़ होने से मुनज़्ज़ह व मुबर्रा है। वोह अपनी बुज़ुर्ग व बरतर सिफ़ात के साथ दाइमी त़ौर पर मुत्तसिफ़ और फ़ना से पाक है। उस की सिफ़ाते कमालिया मज़ीद कमाल पाने से मुस्तग़्नी हैं। ज़ाते बारी तआ़ला का वुजूद अ़क़्ल से भी जाना जा सकता है। नेक लोग उस के फ़ज़्लो करम से जन्नत में उस के दीदार से मुशर्रफ़ होंगे और दीदारे इलाही से ही उस की अ़त़ा कर्दा ने'मतें पायए तक्मील को पहुंचेंगी।

सिफ़ाते बारी तआ़ला

ह़यात व क़ुदरत :

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ज़िन्दा क़ादिरे मुत़लक़, ग़ालिब और अ़ज़मत वाला है। कोताही व आ़जिज़ी से वरा है। उसे न ऊंघ आए न नींद। उस के लिये फ़ना है न मौत। मलकूतो मुल्क और इ़ज़्ज़त व अ़ज़मत का मालिक है। ह़क़ीक़ी बादशाहत व इक़्तिदार वाला है। पैदा करना और ह़ुक्म देना सब उसी के इख़्तियार में है। तमाम आस्मान और जमीअ़ मख़्लूक़ उसी के तह़्ते क़ुदरत है। वोह तख़्लीक़ व ईजाद और बे मिष्ल अश्या पैदा करने में यक्ता व ला शरीक है। मख़्लूक़, इस के आ'माल की तख़्लीक़ और इन के लिये रिज़्क़ व मौत की तअ़य्युन फ़रमाने वाला है। किसी भी शै का वुजूद और मुआ़मलात में तसर्रुफ़ात उस के इख़्तियार से बाहर नहीं नीज़ उस के तह़्ते क़ुदरत अश्या का शुमार और उन की मा'लूमात का इह़ात़ा नहीं किया जा सकता।

इ़ल्मे इलाही :

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तमाम मा'लूमात का आ़लिम है। ज़मीन की गहराइयों से ले कर आस्मान की बुलन्दियों तक होने वाले तमाम मुआ़मलात उस के इह़ात़े में हैं। वोह ऐसा आ़लिम है कि ज़मीन व आस्मान की ज़र्रा भर चीज़ भी उस से पिन्हां नहीं बल्कि अन्धेरी रात में साफ़ चट्टान पर सियाह च्यूंटी के चलने की आवाज़ और फ़ज़ा में बिखरे ज़र्रात की ह़रकात को भी जानता है। उसे ज़ाहिर व पोशीदा हर चीज़ का इ़ल्म है। अपनी क़दीम अज़ली और हमेशा से हमेशा रहने वाली सिफ़ते इ़ल्म से दिल में उभरने वाले ख़त़रों, वस्वसों और पोशीदा बातों से बाख़बर है। उस का इ़ल्म ऐसा नहीं कि उस की ज़ात में ह़ुलूल व इन्तिक़ाल से नौपैद हो।

इरादए ख़ुदावन्दी :

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ही तख़्लीके़ काइनात का इरादा फ़रमाने वाला और नौपैद चीज़ों की तदबीर फ़रमाने वाला है। आ़लमे बाला हो या आ़लमे दुन्या उस का हर थोड़ा और ज़ियादा, छोटा व बड़ा, अच्छा व बुरा, नफ़्अ़ व नुक़्सान, कुफ़्र व ईमान, इ़ल्म व जहालत, कामयाबी व नाकामी, कमी व बेशी और ताअ़त व मा'सिय्यत ज़ाते बारी तआ़ला ही की क़ज़ा व क़ुदरत और हिक्मत व मशिय्यत से है। उस ने जो चाहा वोह हुवा जो न चाहा न हुवा। ह़त्ता कि पलक की झपक और दिल की खटक तक मशिय्यते इलाही से ख़ारिज नहीं बल्कि वोही नए सिरे से पैदा करने वाला, दोबारा ज़िन्दा करने वाला और जब जो चाहे करने वाला है। कोई भी ऐसा नहीं जो उस के अम्र में रुकावट बने या उस के फ़ैस्ले को टाल सके। बन्दे का उस की नाफ़रमानी से बचना या उस की इ़बादत पर कमरबस्ता होना उस की तौफ़ीक़ व रह़मत और उस के इरादे व मशिय्यत से ही मुमकिन है। अगर तमाम जिन्न व इन्स और मलाइका व शयात़ीन मिल कर मशिय्यते ख़ुदावन्दी के बिग़ैर काइनात के मह़ज़ एक ज़र्रे को ही ह़रकत देना या ठहराना चाहें तो ऐसा नहीं कर सकते। उस का इरादा तमाम सिफ़ात समेत उस की ज़ात से क़ाइम और हमेशा से इन औसाफ़ के साथ मुत्तसिफ़ है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने जिन अश्या को जिन अवक़ात में पैदा करने का अज़ल में इरादा फ़रमाया, वोह सब चीज़ें अज़ली इरादए ख़ुदावन्दी के ऐ़न मुत़ाबिक़ बिग़ैर किसी तक़्दीम व ताख़ीर और बिला किसी तग़य्युर व तबद्दुल के अपने मुक़र्ररा वक़्त व ह़ालात में वुजूद में आ गईं। उस के कामों की तदबीर सोच बिचार और वक़्त का इन्तिज़ार करने से मुनज़्ज़ा है येही वजह है कि एक काम उसे दूसरे काम से ग़ाफ़िल नहीं करता।

समीअ़ व बसीर :

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ समीअ़ व बसीर है। वोह सुनता देखता है। कोई भी सुनी जाने वाली चीज़ कैसी ही मख़्फ़ी हो और कोई भी चीज़ ख़्वाह कितनी ही बारीक हो उस की समाअ़त व बसारत से ग़ाइब व मख़्फ़ी नहीं हो सकती। दूरी व तारीकी उस की समाअ़त व बसारत में ख़लल नहीं डाल सकती। जिस त़रह़ वोह इ़ल्म के लिये दिल का, गिरिफ़्त के लिये उ़ज़्व का और तख़्लीक़ के लिये आलाजात का मोह़ताज नहीं बिल्कुल इसी त़रह़ देखने और सुनने के लिये आंखों और कानों का मोह़ताज नहीं क्यूंकि जिस त़रह़ उस की ज़ात मख़्लूक़ के मुशाबेह नहीं इसी त़रह़ उस की सिफ़ात भी मख़्लूक़ की सिफ़ात की मिष्ल नहीं।

कलामे इलाही :

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ कलाम फ़रमाने वाला, हुक्म देने वाला, मन्अ़ करने वाला और वा'दा व वई़द फ़रमाने वाला है। कलाम, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के साथ क़ाइम अज़ली व क़दीम सिफ़ात में से एक सिफ़त है। उस का कलाम, मख़्लूक़ के कलाम के मुशाबेह नहीं। उस का कलाम हवा के अन्दर से या अज्साम की रगड़ से पैदा होने वाली आवाज़ नहीं नीज़ उस का कलाम करना होंटों के मिलने और ज़बान के ह़रकत करने का भी मोह़ताज नहीं। क़ुरआन, तौरैत, ज़बूर और इन्जील उस के रसूलों पर नाज़िल होने वाली उस की किताबें हैं। क़ुरआने पाक ज़बानों से पढ़ा जाता, अवराक़ पर लिखा जाता और दिलों में मह़फ़ूज़ किया जाता है। इस के बा वुजूद येह कलामे पाक क़दीम और ज़ाते इलाही के साथ क़ाइम है। उसे अवराक़ पर लिखने या दिलों में मह़फ़ूज़ करने से ऐसा नहीं कि येह ज़ाते इलाही से जुदा या अलग हो गया। ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा कलिमुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का कलाम बिग़ैर आवाज़ और हुरूफ़ के समाअ़त फ़रमाया। यूं ही नेकूकारों को जन्नत में अल्लाह तबारक व तआ़ला का दीदार भी इस त़रह़ होगा कि वोह न जोहर होगा न अ़र्ज़।

वोह इन सिफ़ात से मुत्तसिफ़ है तो मह़ज़ ज़ात की वजह से नहीं बल्कि ह़यात, क़ुदरत, इ़ल्म, इरादा, समाअ़त, बसारत और कलाम की वजह से जिन्दा, आ़लिम, क़ादिर, इरादा करने वाला, सुनने और देखने वाला और कलाम फ़रमाने वाला है।

अफ़्आ़ले इलाहिय्या :

सिवाए ज़ाते बारी तआ़ला के हर शै का वुजूद उसी के फ़े'ल और उसी के फ़ैज़ाने अ़द्ल से है। वोह सब चीज़ों का वुक़ूअ़ निहायत अच्छे, कामिल, मुकम्मल और मुनासिब त़रीक़े पर फ़रमाता है। उस के तमाम अफ़्आ़ल व अह़काम ह़िक्मत व अ़द्ल पर मुश्तमिल होते हैं। उस के अ़द्लो इन्साफ़ को बन्दों के अ़द्लो इन्साफ़ पर क़ियास नहीं किया जाएगा क्यूंकि बन्दे से ज़ुल्म हो सकता है इस त़रह़ कि जब वोह ग़ैर की मिल्क में तसर्रुफ़ करेगा तो ज़ालिम कहलाएगा जब कि मालिके दो जहां عَزَّوَجَلَّ से ज़ुल्म होना मुतसव्वर ही नहीं क्यूंकि उस के सिवा किसी की मिल्क है ही नहीं चे जाइका उस में तसर्रुफ़ या ज़ुल्म किया जाए। सिवाए उस की ज़ात के जो भी है जिन्न व इन्सान, फ़िरिश्ते व शैत़ान, ज़मीन व आस्मान, हैवान व बे जान, सब्ज़ा, जोहर व अ़र्ज़, समझी और मह़सूस की जाने वाली तमाम की तमाम मा'दूम अश्या को उस ने अपनी क़ुदरते कामिला से वुजूद बख़्शा और नेस्त (या'नी ग़ैर मौजूद) को हस्त (या'नी मौजूद) फ़रमाया। वोह

अज़ल में मौजूद था उस के साथ कोई भी न था। फिर उस ने अपने इरादे को षाबित करने और अपनी कुदरत को ज़ाहिर करने के लिये काइनात की तख़्लीक़ फ़रमाई इस वजह से कि वोह अज़ल में उस की तख़्लीक़ का इरादा फ़रमा चुका था, येह वजह नहीं कि उसे इस की कोई ज़रूरत व ह़ाजत थी।

वोह मख़्लूक़ को पैदा करे, बनाए और इन्हें मुकल्लफ़ ठहराए तो येह मह़्ज़ उस का फ़ज़्ल है, उस पर ज़रूरी व लाज़िम नहीं। इसी त़रह़ वोह अपनी मख़्लूक़ को इन्आ़मात से नवाज़े और इन की इस्लाह़ करे तो येह उस की मेह़रबानी है, उस पर लाज़िम नहीं। वोही फ़ज़्ल व एह़सान और इन्आ़म व इकराम फ़रमाने वाला है। वोह बन्दों को त़रह़ त़रह़ के अ़ज़ाबात में मुब्तला करने और इन्हें मुख़्तलिफ़ मसाइब व आलाम से दो चार करने पर क़ादिर है। अगर वोह ऐसा करे भी तो येह उस की त़रफ़ से बुराई या ज़ुल्म नहीं बल्कि अ़द्ल ही अ़द्ल है। अपने मोमिन बन्दों को नेकियों का अच्छा सिला देना मह़्ज़ उस के करम व वा'दे के मुत़ाबिक़ है वरना न तो बन्दे उस के मुस्तह़िक़ हैं और न ही उस पर ऐसा करना लाज़िम है क्यूंकि किसी की वजह से कोई फ़े'ल करना उस पर वाजिब नहीं और किसी का उस पर कुछ ह़क़ भी नहीं और ज़ुल्म की निस्बत तो उस की त़रफ़ कर ही नहीं सकते।

उस ने अम्बियाए किराम عَلَيۡهِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के वासित़े से बन्दों पर अपना ह़क़ बसूरते त़ाअ़त लाज़िम किया। मह़्ज़ अ़क़्ल की वजह से नहीं बल्कि अपने रसूलों को मबऊ़ष फ़रमाया फिर इन में सिद्क़ को ज़ाहिर व बाहिर मो'जिज़ात के ज़रीए़ षाबित किया और अम्बियाए किराम عَلَيۡهِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने रब्बुल अनाम के अह़काम, उस की मन्अ़ कर्दा चीज़ों और उस के वा'दा व वई़द का पैग़ाम ख़ल्क़ तक पहुंचाया। अब बन्दों पर लाज़िम है कि वोह इन नुफ़ूसे कुदसिय्या के लाए हुए पैग़ाम को सच्चा जानें।

कलिमए शहादत के दूसरे जुज़ की वज़ाह़त

इस का मत़लब येह है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की रिसालत की गवाही देना और येह ए'तिक़ाद रखना कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने ग़ैब की ख़बरें देने वाले, किसी आदमी से न पढ़ने वाले और क़बीलए कुरैश से तअ़ल्लुक़ रखने वाले ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को अ़रबो अ़जम के तमाम अ़लाक़ाजात और जिन्न व इन्स में से हर एक की जानिब पैग़ामे रिसालत दे कर मबऊ़ष फ़रमाया। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने सिवाए उन बातों के जिन्हें बाक़ी रखना मक़्सूद था साबिक़ा तमाम शरई अह़काम शरीअ़ते मुह़म्मदी ला कर मन्सूख़ फ़रमा दिये। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को तमाम अम्बियाए

किराम عَلَیۡهِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام पर फ़ज़ीलत दे कर बनी आदम का सरदार बनाया और لَآ اِلٰهَ اِلَّا الله पर ए'तिक़ाद रखने को उस वक़्त तक क़बूल न फ़रमाया जब तक कि इस के साथ मुह़म्मदुर्रसूलुल्लाह पर ईमान लाने को न मिलाया जाए। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मख़्लूक़ पर लाज़िम कर दिया कि वोह हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की उमूरे दुन्या व आख़िरत के मुतअ़ल्लिक़ दी हुई ख़बरों को सच्चा जानें नीज़ आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने मौत के बा'द पेश आने वाले अह़वाल की जो ख़बरें दीं जब तक बन्दा उन पर ईमान न लाएगा मोमिन नहीं कहलाएगा।

मुन्कर नकीर के सुवालात :

इन अह़वाल में से एक मुन्कर नकीर का सुवाल करना है।[1] येह दोनों डरावनी और हैबत नाक इन्सानी शक्ल में तशरीफ़ लाते और बन्दे को क़ब्र में सीधा बिठा देते हैं। उस वक़्त बन्दा जिस्म व रूह़ दोनों के साथ होता है। फिर वोह बन्दे से तौह़ीद व रिसालत के बारे में सुवाल करते हैं और पूछते हैं कि तेरा रब्ब कौन है? तेरा दीन क्या है? और तेरा नबी कौन है? येह दोनों फ़िरिश्ते क़ब्र की आज़माइश हैं[2] और बन्दे के लिये बा'दे मौत पहली आज़माइश मुन्कर नकीर के सुवालात का सामना करना है। बन्दे पर लाज़िम है कि वोह अ़ज़ाबे क़ब्र को ह़क़ जाने और इस पर यक़ीन रखे[3] और जिस्म व रूह़ दोनों पर **अल्लाह** रब्बुल इ़ज़्ज़त का अपनी मशिय्यत के मुत़ाबिक़ नाफ़िज़ करना अ़द्ल पर मब्नी है।

मीज़ाने अ़मल :

बन्दे पर यक़ीन रखना ज़रूरी है कि मीज़ान ह़क़ है। "इस के दो पलड़े और एक ज़बान है।"[4] इस के एक पलड़े की वुस्अ़त ज़मीन व आस्मान के त़बक़ात जितनी है। इस में क़ुदरते इलाही से लोगों के आ'माल तोले जाएंगे। उस दिन राई के दानों और ज़र्रों तक को बाट बना कर कमाले अ़द्ल व इन्साफ़ का मुज़ाहरा किया जाएगा। नेक आ'माल को अच्छी सूरत अ़त़ा कर के मीज़ान के नूरानी पलड़े में रखा जाएगा और वोह पलड़ा ब फ़ज़्ले इलाही इन आ'माल पर मुक़र्रर कर्दा दर्जों के मुत़ाबिक़ भारी हो जाएगा और बुरे आ'माल क़बीह़ सूरत में मीज़ान के काले पलड़े में फैंके जाएंगे और वोह पलड़ा रब्बे लम यज़ल के अ़द्ल के सबब हलका पड़ जाएगा।

1 ......سنن الترمذی، کتاب الجنائز، باب ماجاء فی عذاب القبر، الحدیث:۱۰۷۳، ج۲، ص۳۳۷۔
2 ......المسند للامام احمد بن حنبل، مسند عبداللّٰہ بن عمرو بن العاص، الحدیث:۶۶۱۴، ج۲، ص۵۸۱۔
3 ......السنن الکبری للنسائی، کتاب صفۃ الصلاۃ، الحدیث:۱۲۳۱، ج۱، ص۳۸۹۔
4 ......المسند للامام احمد بن حنبل، مسند عبداللّٰہ بن العباس، الحدیث:۲۹۲۷، ج۱، ص۶۸۳، باختصارٍ۔

पुल सिरात् :

पुल सिरात् के ह़क़ होने का यक़ीन रखना भी ज़रूरी है [1] जो जहन्नम की पुश्त पर बनाया गया है। बाल से ज़ियादा बारीक और तल्वार से ज़ियादा तेज़ है। इसे पार करते हुए कुफ़्फ़ार के क़दम ब हुक्मे ख़ुदावन्दी फिसलेंगे और वोह जहन्नम में जा गिरेंगे जब कि मुसलमान रह़मते ख़ुदावन्दी के सबब इसे षाबित क़दमी से पार कर के जन्नत में दाख़िल हो जाएंगे।

ह़ौज़े कौषर :

इस ह़ौज़ पर भी ईमान लाना ज़रूरी है जहां मुसलमान आएंगे। येह ह़ौज़ ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को अ़त़ा हुवा है। मुसलमानों को पुल सिरात़ पार करने के बा'द और दुख़ूले जन्नत से पहले इस ह़ौज़ का मश्रूब पीना नसीब होगा। जिसे इस का एक घूंट भी पीने को मिल गया वोह कभी प्यासा न होगा। इस ह़ौज़ की चौड़ाई एक महीने की मसाफ़त है। इस का पानी दूध से ज़ियादा सफ़ेद और शहद से ज़ियादा मीठा है। इस के कनारों पर सितारों की ता'दाद से भी ज़ियादा कूज़े रखे हुए हैं। जन्नती चश्मए कौषर से दो परनाले इस ह़ौज़ में आते हैं।[2]

ह़िसाब व किताब :

ह़िसाबो किताब पर ईमान लाना और येह जानना भी ज़रूरी है कि मुख़्तलिफ़ लोगों से मुख़्तलिफ़ त़रीक़े से ह़िसाबो किताब होगा, किसी का ह़िसाब सख़्ती से और किसी का नर्मी से होगा जब कि मुक़र्रबीने बारगाहे इलाही तो बिला ह़िसाबो किताब दाख़िले जन्नत होंगे।[3] **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام में से जिस से चाहेगा फ़रीज़ए रिसालत सर अन्जाम देने के मुतअ़ल्लिक़ और कुफ़्फ़ार में से जिस से चाहेगा रुसुले उ़ज़्ज़ाम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को झुटलाने की बाबत पूछगछ फ़रमाएगा।[4] (ख़िलाफ़े शरअ़ काम करने वाले) बिदअ़ती सुन्नत छोड़ने की वजह से जवाब देह होंगे[5] और मुसलमानों से उन्हीं के आ'माल के मुतअ़ल्लिक़ पूछा जाएगा।[6]

---

1 ......صحیح مسلم، کتاب الایمان، باب معرفة طریق الرؤیة، الحدیث:١٨٢، ص ١١١۔

2 ......صحیح مسلم، کتاب الفضائل، باب اثبات حوض نبینا......الخ، الحدیث:٢٢٩٩، ٢٣٠٠، ٢٣٠١، ص١٢٥٩، ١٢٦٠، بتغیرٍ۔

3 ......صحیح مسلم، کتاب الایمان، باب الدلیل علی دخول طوائف......الخ، الحدیث:٢١٨، ص ١٣٦، باختصارٍ۔

4 ......صحیح البخاری، کتاب التفسیر، باب و کذلک جعلناکم امّة وسطا......الخ، الحدیث:٤٤٨٧، ج٣، ص ١٦٩۔

5 ......سنن ابن ماجه، المقدمة، الحدیث:٨٤، ج ١، ص ٢٥، بتغیرٍ۔

6 ......سنن ابی داود، کتاب الصلاة، باب قول النبی......الخ، الحدیث:٨٦٤، ج ١، ص ٣٢٩۔

मोमिन हमेशा जहन्नम में नहीं रहेगा :

इस बात पर ईमान लाना भी ज़रूरी है कि जहन्नम में दाख़िल होने वाले मुसलमानों को उन के किये की सज़ा देने के बा'द वहां से निकाल लिया जाएगा क्यूंकि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के फ़ज़्ल से कोई भी साहि़बे ईमान हमेशा जहन्नम में न रहेगा।(1)

अ़क़ीदए शफ़ाअ़त :

शफ़ाअ़त पर ईमान रखना भी ज़रूरी है कि इस का इज़्न सब से पहले अम्बियाए किराम عَلَيۡهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को दिया जाएगा, फिर उ़-लमा, फिर शुहदा और फिर आ़म मोअमिनीन को उन के मक़ाम व मर्तबे के ए'तिबार से इज़्ने शफ़ाअ़त ह़ासिल होगा।(2) फिर वोह मोअमिनीन कि जिन्हें किसी की शफ़ाअ़त न मिली, उन्हें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अपने फ़ज़्लो करम से जहन्नम से निकालेगा बल्कि जिस के दिल में ज़र्रा भर भी ईमान होगा उसे भी दोज़ख़ से छुटकारा अ़त़ा फ़रमा देगा इस लिये कि मोमिन हमेशा जहन्नम में न रहेगा।

सह़ाबए किराम عَلَيۡهِمُ الرِّضۡوَان और उन का मक़ाम व मर्तबा :

हर बन्दे को सह़ाबए किराम رِضۡوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيۡهِمۡ اَجۡمَعِيۡن और इन की बित्तरतीब फ़ज़ीलत का भी ए'तिक़ाद रखना ज़रूरी है और येह कि हुज़ूर नबिय्ये पाक साहि़बे लौलाक, सय्याहे़ अफ़्लाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के बा'द लोगों में से अफ़्ज़ल तरीन अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़, फिर अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म, फिर अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़षमाने ग़नी, फिर अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنۡهُمۡ हैं (3) नीज़ तमाम सह़ाबए किराम عَلَيۡهِمُ الرِّضۡوَان के बारे में हुस्ने ज़न रखना लाज़िम है और इन नुफ़ूसे क़ुदसिया की ता'रीफ़ व तौसीफ़ उसी त़रह़ बयान करे जिस त़रह़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इन की ता'रीफ़ फ़रमाई है।(4)

---

1 ......صحیح مسلم، کتاب الایمان، باب معرفۃ طریق الرؤیۃ، الحدیث:۱۸۲، ص ۱۱۱۔

2 ......سنن ابن ماجه، کتاب الزھد، باب ذکر الشفاعۃ، الحدیث:۴۳۱۳، ج۴، ص ۵۲۶۔
صحیح مسلم، کتاب الایمان، باب معرفۃ طریق الرؤیۃ، الحدیث:۱۸۳، ص ۱۱۴۔

3 ......صحیح البخاری، کتاب فضائل اصحاب النبی، الحدیث:۳۶۵۵، ج۲، ص۵۱۸۔
فتح الباری، کتاب فضائل اصحاب النبی، تحت الحدیث:۳۶۵۵، ج۸، ص ۱۴۔۱۵۔

4 ......صحیح البخاری، کتاب فضائل اصحاب النبی، الحدیث:۳۶۷۳، ج۲، ص ۵۲۲۔

अहले सुन्नत की पहचान :

ज़िक्र कर्दा तमाम अ़क़ाइद अह़ादीषे मुबारका में बयान किये गए हैं और अक़्वाले सह़ाबा भी इन पर शाहिद हैं। लिहाज़ा जिस शख़्स का इन सब अ़क़ाइद पर यक़ीनी ए'तिक़ाद है, वोह अहले ह़क़ व अहले सुन्नत में से है, गुमराहों और बिदअ़तियों से बे तअ़ल्लुक़ है। हम बारगाहे रब्बुल इ़ज़्ज़त में अपनी ज़ात बल्कि हर मुसलमान के लिये मुल्तजी हैं कि वोह अपनी रह़मते कामिला से हम सब को यक़ीने कामिल की दौलत और दीने इस्लाम पर षाबित क़दमी नसीब फ़रमाए। बेशक वोही सब से बढ़ कर रह़्म फ़रमाने वाला है। हमारे आक़ा व मौला मुह़म्मदे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم और हर पसन्दीदा बन्दे पर अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ की रह़मतें नाज़िल हों।

दूसरी फ़स्ल : मरह़ला वार रहनुमाई करने की वजह और ए'तिक़ाद के दर्जात का बयान

जान लीजिये ! अ़क़ीदे के बाब में ज़िक्र कर्दा बातें बच्चे को शुरूअ़ से ही सिखा दी जाएं ताकि वोह इन्हें अच्छी त़रह़ ज़ेह्न नशीन कर ले और बड़ा होने तक ब तदरीज इन के मआ़नी व मत़ालिब पर मुत्तृलअ़ होता रहे। क्यूंकि इन चीज़ों को अव्वलन याद करना और समझना होता है इस के बा'द इन पर यक़ीन करने, ईमान लाने और इन्हें सच जानने का मरह़ला आता है। बच्चे का अ़क़ाइद को याद करने से सच जानने तक का इर्तिक़ाई (तरक़्क़ी पज़ीर) सफ़र बिला दलील व हुज्जत के त़ै हो जाता है और अल्लाह तबारक व तआ़ला का येह बहुत बड़ा फ़ज़्ल है कि वोह क़ल्बे इन्सानी को तर्बिय्यत के इब्तिदाई मराह़िल में बिग़ैर दलील व हुज्जत के क़बूले ईमान की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाता है। नीज़ इस बात का इन्कार कैसे किया जा सकता है जब कि अ़वाम के तमाम अ़क़ाइद की इब्तिदा मह़ज़ तल्क़ीन व तक़्लीद है। हां ! वोह ए'तिक़ादी मसाइल जिन का ह़ुसूल मह़ज़ तक़्लीद से होता है, इब्तिदाअन इन में कुछ ज़ो'फ़ मह़सूस होता है वोह इस त़रह़ कि अगर इस अ़क़ीदे के ख़िलाफ़ कोई बात आ जाए तो ऐन मुमकिन है कि बन्दा अपने साबिक़ा अ़क़ीदे से दूर हो जाए, जब कि ज़रूरत इस बात की है कि नौ उ़म्र और आ़म अफ़राद का ज़ेह्न अ़क़ाइदे अहले सुन्नत के ह़वाले से इस त़रह़ पुख़्ता और मज़बूत़ बना दिया जाए कि वोह फिर कभी भी न डगमगाए और बच्चे व आ़म आदमी के ज़ेह्न में अ़क़ाइद को पुख़्ता और षाबित करने के लिये फ़न्ने मुनाज़रा और इ़ल्मे कलाम सीखना ज़रूरी नहीं बल्कि क़ुरआन, तफ़्सीर, ह़दीष

शरूह़ात का मुत़ालअ़ा और इ़बादात की पाबन्दी की ज़ियादा से ज़ियादा कोशिश करनी चाहिये। क्यूंकि जब दलाइल व बराहीने क़ुरआनिय्या इस की समाअ़तों को छूएंगे, अह़ादीषे करीमा से अ़क़ाइदे अहले सुन्नत की ताईदात व षुबूत मिलेंगे और इस के साथ साथ इ़बादत पर हमेशगी का नूर अपने जल्वे दिखाएगा तो उस के क़ल्ब व ज़ेह्न में अ़क़ाइदे अहले सुन्नत रासिख़ होते चले जाएंगे। इसी त़रह़ नेक लोगों की ज़ियारत व सोह़बत, उन के मल्फ़ूज़ात और इन की लिल्लाहिय्यत पर मब्नी ज़ाहिरी व बात़िनी यक्सां पाकीज़गी व आ़जिज़ी की बरकत से भी अ़क़ाइदे अहले सुन्नत पर इस्तिक़ामत नसीब होती है। लिहाज़ा इब्तिदा में समझाना गोया सीने की खेती में अ़क़ीदे का बीज बोने और मज़्कूरा अस्बाब (या'नी क़ुरआन व ह़दीष का मुत़ालअ़ा और नेकी और नेकों से लगाव) इस खेती की सैराबी और देखभाल के मुतरादिफ़ हैं। ह़त्ता कि येह बीज नश्व व नूमा और तक़विय्यत पा कर एक ऐसे मज़्बूत, बुलन्द और पाकीज़ा दरख़्त की सी ह़ैषिय्यत इख़्तियार कर जाता है जिस की जड़ें मज़्बूत़ और शाख़ें आस्मान तक बुलन्द होती हैं।

एक एह़तियात़ :

यहां तक एह़तियात़ की ज़रूरत का एह़सास होता है कि बच्चे को इब्तिदाई तर्बिय्यत के मराह़िल में मुनाज़राना गुफ़्त्गू और इ़ल्मे कलाम की पेचीदा अबह़ाष से बिल्कुल दूर रखा जाए क्यूंकि नौ उ़म्र के लिये मुनाज़राना गुफ़्त्गू में तर्बिय्यत व इस्लाह़ जैसे फ़वाइद कम और फ़साद व इज़्त़िराब जैसे नुक़्सान के इमकानात ज़ियादा होते हैं। बल्कि बच्चे की तर्बिय्यत मुनाज़रे के ज़रीए़ करना ऐसा ही है जैसे दरख़्त को मज़्बूत़ करने की उम्मीद पर लौहे के हथोड़े से कूटना, इस अ़मल के तसलसुल से दरख़्त मज़्बूत़ तो क्या ? उलटा टूट फूट जाएगा। इस त़रह़ के कामों का उ़मूमन येही नतीजा निकलता है। अब मज़ीद वज़ाह़त व दलाइल की ज़रूरत मह़सूस नहीं होती येह उ़मूमन मुशाहदा ही बात समझने के लिये काफ़ी है।

आ़म नेक लोगों के और मुनाज़िरीन व मुतकल्लिमीन के अ़क़ीदे में फ़र्क़ :

अगर आ़म नेक व मुत्तक़ी लोगों के अ़क़ीदे की पुख़्तगी का तक़ाबुल मुनाज़िरीन व मुतकल्लिमीन के अ़क़ीदे की पुख़्तगी से किया जाए तो अ़क़ीदे के ए'तिबार से आ़म आदमी बुलन्द व मज़्बूत़ पहाड़ की मानिन्द मुस्तक़िल नज़र आएगा जैसे आफ़ात और बिजलियां अपनी जगह से नहीं हिला सकतें जब कि अ़क़्ली दलाइल और मुनाज़रों के जरीए़ अपने अ़क़ीदे की ह़िफ़ाज़त करने वाले इ़ल्मे कलाम के माहिर शख़्स का अ़क़ीदा फ़ज़ा में लटके हुए धागे की त़रह़ होता है जिसे हवा के झोंके कभी इधर करते हैं कभी उधर। मगर इन से अ़क़ीदे की दलील सुनने

वाला दलील को तक़्लीद के त़ौर पर इसी त़रह़ मानता है जिस त़रह़ नफ़्स ए'तिक़ाद को क्यूंकि तक़्लीद ख़्वाह दलील सीखने में हो या मदलूल सीखने में, दोनों बराबर हैं। पस दलील बताना अलग चीज़ है और दलील से मसाइल षाबित करना दूसरी बात जो इस से बहुत दूर है।

फिर अगर बच्चा अ़क़ाइदे अहले सुन्नत पर कारबन्द रहते हुए ज़िन्दगी गुज़ारे और इस ह़वाले से मज़ीद कुछ सीखने के बजाए दुन्यावी कामों में मश्ग़ूल हो जाए तो अगर्चे कई बन्द अ़क़ीदे उस पर नहीं खुले होंगे, लेकिन बरोज़े क़ियामत वोह इन अ़क़ाइदे ह़क़्क़ा की बरकत से सलामत रहेगा क्यूंकि शरीअ़ते इस्लामिय्या ने अ़रब के कुन्द ज़ेह्न लोगों को अ़क़ाइदे ह़क़्क़ा के ज़बानी इक़रार और क़ल्बी तस्दीक़ से ज़ियादा का मुकल्लफ़ नहीं बनाया। नीज़ उन्हें बह़्ष व तह़क़ीक़ और दलाइल जम्अ़ करने का पाबन्द हरगिज़ नहीं बनाया गया।

हां ! येह बात ज़रूर है कि अगर कोई शख़्स राहे आख़िरत इख़्तियार करना चाहे और रह़मते इलाही भी उस के शामिले ह़ाल हो और वोह ख़्वाहिशाते नफ़्सानिय्या को तर्क करने के साथ साथ आ'माले सालेह़ा, तक़्वा और रियाज़त व मुजाहदे की पाबन्दी करे तो इस मुजाहदे की बरकत से उस का दिल नूरे इलाही से मुनव्वर होगा जिस की रोशनी में अ़क़ाइदे अहले सुन्नत की ह़क़ाइक़ इस पर वाज़ेह़ होते चले जाएंगे। क्यूंकि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का वा'दा है :

وَ الَّذِيْنَ جَاهَدُوْا فِيْنَا لَنَهْدِيَنَّهُمْ سُبُلَنَا ؕ وَ اِنَّ اللّٰهَ لَمَعَ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿۶۹﴾

(پ ۲۱، العنکبوت:۶۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और जिन्हों ने हमारी राह में कोशिश की ज़रूर हम उन्हें अपने रास्ते दिखा देंगे और बेशक* ***अल्लाह*** *नेकों के साथ है।*

बुलन्द दर्जात के ह़ुसूल का सबब :

येही नूर वोह नफ़ीस जौहर है जो सिद्दीक़ीन व मुक़र्रबीन के ईमान की इन्तिहा है और येही वोह राज़ है कि जब येह अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के सीने में वदीअ़त किया गया जो आप अम्बिया के बा'द तमाम मख़्लूक़ से अफ़्ज़ल हो गए। बेहतरीन मक़ाम के ह़ामिल राज़ों बल्कि तमाम असरार के कई दर्जात हैं। मुजाहदात की जितनी ज़ियादा कषरत होगी और दिल जिस क़दर ग़ैरे ख़ुदा से ख़ाली और नूरे यक़ीन से मुनव्वर होगा बुलन्द मक़ाम भी इसी तफ़ावुत के ए'तिबार से कम या ज़ियादा ह़ासिल होगा। इस मक़ाम में दर्जात का फ़र्क़ भी बिल्कुल इ़ल्मे तिब्ब व फ़िक़्ह और बक़िय्या दीगर उ़लूम में फ़र्क़ की त़रह़ होता है। क्यूंकि लोगों में रियाज़त और ज़हानत व फ़त़ानत का एक फ़ित़्री तफ़ावुत पाया जाता है और इ़ल्मी दर्जात की त़रह़ इन असरार के भी कई दर्जात हैं।

इल्मे कलाम सीखना कैसा ?

सुवाल : क्या फ़न्ने मुनाज़रा और इल्मे कलाम का सीखना भी इल्मे नुजूम की त़रह़ मज़्मूम या मुबाह़ या मुस्तह़ब है ?

जवाब : इल्मे कलाम व फ़न्ने मुनाज़रा सीखने या न सीखने के ह़वाले से दो मौक़िफ़ हैं और दोनों सख़्त हैं :

﴾1﴿....मन्अ़ करने वाले इस पर बिदअ़त व ह़राम का हुक्म लगाते हैं और कहते हैं कि शिर्क के इलावा हर गुनाह से आलूदा हो कर बारगाहे ख़ुदावन्दी में ह़ाज़िर होने वाला शख़्स इल्मे कलाम सीखने वाले से बेहतर है।

﴾2﴿....जवाज़ का हुक्म देने वाले इसे वाजिब, फ़र्ज़े ऐन या फ़र्ज़े किफ़ाया मानते हैं। इन के नज़दीक येह अफ़्ज़ल अ़मल और ज़ियादा षवाब का बाइ़ष है क्यूंकि इस इल्म से इल्मे तौह़ीद का इष्बात और दीने इस्लाम का दफ़्अ़ किया जाता है।

मन्अ़ व हुरमत के क़ाइलीन में ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई, ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे मालिक, ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अह़मद बिन ह़म्बल, ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान बिन षौरी और मुतक़द्दिमीन मुह़द्दिषीने किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام शामिल हैं।

इल्मे कलाम और मुतकल्लिमीन के बारे में उ़-लमा की आरा

सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْكَافِی का नज़रिया :

❁....ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन इदरीस शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْكَافِی के शागिर्द ह़ज़रते सय्यिदुना यूनुस बिन अ़ब्दुल उ़ला عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعُلٰى का बयान है कि जिस दिन इल्मे कलाम जानने वाले मो'तज़िली **ह़फ़्स फ़र्द** नामी शख़्स से ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْكَافِی का मुनाज़रा हुवा तो मैं ने आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تعالٰی عَلَيْه को फ़रमाते सुना कि सिवाए शिर्क के हर गुनाह कर के दरबारे इलाही में ह़ाज़िर होने वाला उस से बेहतर है जो इल्मे कलाम में से कुछ सीख कर बारगाहे ख़ुदावन्दी में पेश हो। मैं ने **ह़फ़्स** से एक ऐसी बात भी सुनी है जिसे बयान करना मुझे गिरां मह़सूस होता है।(1)

❁....मुझे मुतकल्लिमीन की ऐसी ऐसी बातों का पता चला है जिन के बारे में, मैं कभी सोच भी नहीं सकता था। इल्मे कलाम की त़रफ़ माइल होने वाला शिर्क के इलावा हर गुनाह में मुब्तला होने वाले से बुरा है। (2)

---

1 ......جامع بيان العلم وفضله، باب ماتكره فيه المناظرة......الخ، الحديث:٩٨٧، ص٣٦٦۔

2 ......المرجع السابق۔

❁....हज़रते सय्यिदुना हुसैन बिन अ़ली कराबीसी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى कहते हैं कि हज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِى से इल्मे कलाम का कोई मस्अला पूछा गया तो आप जलाल में आ गए और फ़रमाने लगे : "जाओ ! इस मस्अले का हल **ह़फ़्स फ़र्द** और उस के साथियों से पूछो । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इन्हें रुस्वा करे ।"[1]

❁....जब हज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِى बीमार हुए तो **ह़फ़्स फ़र्द** इन के पास आ कर पूछने लगा कि "मेरे बारे में आप की क्या राए है ? फ़रमाया : "तू **ह़फ़्स फ़र्द** है । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तेरी ह़िफ़ाज़त करे न तुझे रिआ़यत दे, जब तक इस से तौबा न कर ले जिस में तू मुब्तला है ।"

❁....अगर लोग इल्मे कलाम की दरपर्दा बुराइयां जान लें तो इस से ऐसे ही भागें जैसे शेर से भागते हैं ।[2]

❁....जब तुम किसी शख़्स को येह कहते सुनो कि इस्म ही मुसम्मा[3] है या येह कि इस्म मुसम्मा का ग़ैर है तो जान लो कि ऐसी बातें करने वाला इल्मे कलाम में पड़ा हुवा और बे दीन है ।[4]

❁....हज़रते सय्यिदुना ह़सन बिन मुह़म्मद ज़ा'फ़रानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِى बयान करते हैं कि हज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِى फ़रमाते हैं : "मैं चाहता हूं कि इल्मे कलाम वालों पर डंडे बरसाए जाएं, फिर उन्हें हर क़बीले और ख़ानदान में फिरा कर ए'लान किया जाए कि जो क़ुरआन व ह़दीष छोड़ कर इल्मे कलाम सीखने में लग जाएं उन की सज़ा येह है ।"[5]

सय्यिदुना इमाम अह़मद बिन ह़म्बल عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَوَّل का नज़रिय्या :

★....इल्मे कलाम सीखने वाला कभी कामयाब नहीं हो सकता और अच्छी त़रह़ जान लो कि जो इल्मे कलाम की त़रफ़ माइल होगा उस के दिल में ज़रूर फ़साद छुपा होगा ।[6]

★....हज़रते सय्यिदुना इमाम अह़मद बिन ह़म्बल عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَوَّل ने इल्मे कलाम की मज़म्मत में इस क़दर मुबालग़ा फ़रमाया कि हज़रते सय्यिदुना ह़ारिष बिन अ़ब्दुल्लाह मुह़ासिबी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى

---

1 ......جامع بیان العلم وفضله، باب ماتكره فيه المناظرة......الخ، الحديث:۹۸۷، ص۳٦۷۔

2 ......المرجع السابق، ص۳٦۷۔

3.... मुसम्मा या'नी नामज़द चीज़ । जिस चीज़ पर दलालत करने के लिये इस्म वज़्अ़ किया जाए ।

4 ......جامع بیان العلم وفضله، باب ماتكره فيه المناظرة......الخ، الحديث:۹۸۷، ص۳٦۷۔

5 ......المرجع السابق، ص۳٦۷۔ 6 ......المرجع السابق، ص۳٦۷۔

जैसे बहुत बड़े आ़बिदो ज़ाहिद से भी सिर्फ़ इस वजह से क़त्ए़ तअ़ल्लुक़ी फ़रमा ली कि इन्हों ने बिदअ़तों के रद्द में एक किताब लिखी थी। किताब देख कर आप رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَیْه ने इन से फ़रमाया "जनाब ! क्या आप ने किताब लिखते हुए पहले बिदअ़तों की बिदआ़त तह़रीर कर के इस का रद्द नहीं किया ? क्या आप ने इस अन्दाज़े तह़रीर से अ़वामुन्नास को बिदअ़तों का मुत़ालआ़ करने और फिर शुकूक व शुब्हात में पड़ने का दा'वत नामा फ़राहम नहीं किया जिस की वजह से वोह दीनी व ए'तिक़ादी मसाइल में इज़्तिराब व उलझाव का शिकार हों ?"

★....उ़-लमाए मुतकल्लिमीन ज़िन्दीक़ हैं।[1]

सय्यिदुना इमामे मालिक عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْخَالِق का नज़रिय्या :

❁....अगर मुतकल्लिमीन का अपने से ज़ियादा इस फ़न के माहिर शख़्स से वासित़ा पड़े तो वोह इस की सुन कर अपना ए'तिक़ाद बदल देगा और यूं हर रोज़ वोह अपना दीन बदलता फिरेगा[2] क्यूंकि मुजादला व मुनाज़रा करने वालों के अक़्वाल व आरा मुख़्तलिफ़ होते हैं।

❁....बिदअ़तों और अहल हवा (ख़्वाहिशात के पैरूकार) की गवाही ना मक़्बूल है।[3]

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अह़मद बिन ह़म्बल عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَوَّل के बा'ज़ शागिर्दों ने कहा कि "अहल हवा से इमाम साहि़ब की मुराद मुतकल्लिमीन हैं ख़्वाह किसी भी मज़हब के पैरूकार हों।"

सय्यिदुना इमाम अबू यूसुफ़ رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَیْه का नज़रिय्या :

❁....जो इ़ल्मे कलाम की त़लब में मश्ग़ूल हुवा वोह गुमराह हुवा।[4]

सय्यिदुना इमाम ह़सन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی का नज़रिय्या :

❁....न तो बिदअ़तियों से मुनाज़रा करो, न इन की मह़फ़िल में बैठो और न ही इन की कोई बात सुनो।[5]

---

1 ......حیاۃ الحیوان، باب الھمزۃ، ج ۱، ص ۲۳۔

2 ......جامع بیان العلم وفضلہ، باب ماتکرہ فیہ المناظرۃ......الخ، ص ۳۶۷۔

3 ......جامع بیان العلم وفضلہ، باب ماتکرہ فیہ المناظرۃ......الخ، ص ۳۶۸۔

4 ......الکامل فی ضعفاء الرجال، الباب السادس والعشرون، ج ۱، ص ۱۱۱، بتغیرٍ۔

5 ......جامع بیان العلم وفضلہ، باب ماتکرہ فیہ المناظرۃ......الخ، ص ۳۶۹۔

मुतअख़्ख़िरीन मुहद्दिषीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِين का नज़रिय्या :

मुतअख़्ख़िरीन मुहद्दिषीन इल्मे कलाम के मज़्मूम होने पर मुत्तफ़िक़ हैं। इस की मज़म्मत में इन के सख़्त और बे शुमार अक़्वाल मन्क़ूल हैं। चुनान्चे,

❁....इस इल्म की त़रफ़ सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْهِمْ اَجْمَعِیْن माइल नहीं हुए ह़ालांकि येह ह़ज़रात ह़क़ाइक़ की मा'रिफ़त और तरतीबे अल्फ़ाज़ में बा'द वाले लोगों से ज़ियादा फ़सीह़ थे। इसी वजह से सरकारे आ़ली वक़ार, शहनशाहे अबरार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने तीन बार इरशाद फ़रमाया : "बाल की खाल उतारने वाले हलाक हो गए।"[1] या'नी ला या'नी बह़्ष और बे फ़ाइदा तह़क़ीक़ करने वाले (हलाक हो गए)।

❁....अपने मौक़िफ़ को मज़ीद पुख़्ता करते हुए फ़रमाते हैं कि इल्मे कलाम अगर कोई दीनी काम होता तो ह़ुज़ूर नबिय्ये पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याह़े अफ़्लाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ज़रूर इस का हुक्म देते, इसे ह़ासिल करने का त़रीक़ा इरशाद फ़रमाते, इस की और इसे ह़ासिल करने वालों की ता'रीफ़ व तौसीफ़ फ़रमाते (लेकिन ऐसा नहीं हुवा) बल्कि आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْهِمْ اَجْمَعِیْن को इस्तिनजा करने का त़रीक़ा बताया,[2] इन्हें इल्मे मीराष सीखने की रग़बत दिलाई और इन की ता'रीफ़ फ़रमाई[3] लेकिन क़ज़ा व क़दर में बह़्ष करने से अपने इस इरशाद के ज़रीए मन्अ़ फ़रमा दिया कि "तक़्दीर के मुआ़मले में ख़ामोश रहो।"[4] सह़ाबए किराम عَلَیْهِمُ الرِّضْوَان इस हुक्म पर कारबन्द रहे। येह नुफ़ूसे क़ुदसिय्या हमारे उस्ताज़ व रहनुमा और हम इन के शागिर्द व पैरूकार हैं और शागिर्द की उस्ताज़ पर पेश क़दमी ज़ुल्म और सरकशी कहलाती है।

मुअ़व्वीदीन इल्मे कलाम के दलाइल :

❁....इल्मे कलाम की मुख़ालफ़त अगर इस में इस्ति'माल होने वाले अल्फ़ाज़ की वजह से है जैसे जोहर, अ़र्ज़ और दौरे सह़ाबा में न बोली जाने वाली नई नई इस्तिलाह़ात तब तो मुआ़मला आसान है क्यूंकि हर इल्म की तफ़्हीम व ता'लीम के लिये इस्तिलाह़ात वज़्अ़ की गईं मषलन

---

1 ......صحيح مسلم، كتاب العلم، باب هلك المتنطعون، الحديث: ٢٦٧٠، ص ١٤٣٣ـ

2 ......صحيح مسلم، كتاب الطهارة، باب الاستطابة، الحديث: ٢٦٢، ص ١٥٥ـ

3 ......سنن ابن ماجه، كتاب الفرائض، باب الحث على تعليم الفرائض، الحديث: ٢٧١٩، ج٣، ص ٣١٦ـ

4 ......المعجم الكبير، الحديث: ١٠٤٤٨، ج ١٠، ص ١٩٨ـ

इ़ल्मे ह़दीष, तफ़्सीर, फ़िक़्ह वग़ैरा, जैसे क़ियासी इस्तिलाह़ात नक़्ज़, कस्र, तरकीब, ता'दिया और फ़सादे वज़्अ़ अगर इन्हें सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیۡهِمۡ اَجۡمَعِیۡن पर पेश किया जाता तो वोह इन्हें न समझते। लिहाज़ा किसी मक़्सदे सह़ीह़ को बयान करने की ख़ातिर नए नए अल्फ़ाज़ का चुनाव भी ऐसे ही दुरुस्त है जैसे जाइज़ इस्ति'माल के लिये नई त़र्ज़ का बरतन बनाना।

❀....अगर मुख़ालफ़त किसी मा'नवी ख़राबी की वजह से की जाती है तो याद रखिये ! इस इ़ल्म से हमारा मक़्सूद सिर्फ़ येह होता है कि आ़लम के ह़ादिष होने और अल्लाह तआ़ला की वह़्दानिय्यत और सिफ़ात को शरीअ़त की रोशनी में दलाइल से जाना जाए। लिहाज़ा दलील के ज़रीए़ मा'रिफ़ते ख़ुदावन्दी को ह़राम तो नहीं कहा जा सकता।

❀....अगर ममनूअ़ कहने की वजह येह है कि इस की बिना पर (बह़्ष व मुनाज़रा करते हुए आख़िरे कार) झगड़ा, अ़दावत और बुग़्ज़ व कीना जैसे अमराज़ जनम लेते हैं तो येह चीज़ें वाक़ेई ह़राम और क़ाबिले इजतिनाब हैं बिल्कुल ऐसे ही कि अगर इ़ल्मे ह़दीष, तफ़्सीर और फ़िक़्ह सीखने पर तकब्बुर, ख़ुद पसन्दी और जाह त़लबी पैदा हो जाए तो येह चीज़ें ह़राम होंगी और इन से बचना भी ज़रूरी होगा। लेकिन इन अमराज़ को दलील बना कर मज़्कूरा उ़लूम की ता'लीम से नहीं रोका जाएगा तो फिर इ़ल्मे कलाम के ज़रीए़ दलील पेश करना, दलील का मुत़ालबा करना और इस में बह़्ष करना कैसे ममनूअ़ हो सकता है ? ह़ालांकि इन सब उमूर का षुबूत अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के पाक कलाम में मौजूद है। चुनान्चे,

मुदल्लल और मुनाज़राना अन्दाज़े गुफ़्तगू के मुतअ़ल्लिक़ क़ुरआनी दलाइल :

﴾1﴿

قُلۡ هَاتُوۡا بُرۡهَانَكُمۡ (پ۱، البقرۃ:۱۱۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *तुम फ़रमाओ लाओ अपनी दलील।*

﴾2﴿

لِّیَهۡلِكَ مَنۡ هَلَكَ عَنۡۢ بَیِّنَةٍ وَّیَحۡیٰی مَنۡ حَیَّ عَنۡۢ بَیِّنَةٍ ؕ (پ۱۰، الانفال:۴۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *कि जो हलाक हो दलील से हलाक हो और जो जिये दलील से जिये।*

﴾3﴿

اِنۡ عِنۡدَكُمۡ مِّنۡ سُلۡطٰنٍۭ بِهٰذَا ؕ (پ۱۱، یونس:۶۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *तुम्हारे पास इस की कोई भी सनद नहीं।*

इस आयत में सुल्त़ान से मुराद सनद व दलील है।

﴾4﴿

قُلْ فَلِلّٰهِ الْحُجَّةُ الْبَالِغَةُ (پ۸،الانعام:۱۴۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तुम फ़रमाओ तो **अल्लाह** ही की हुज्जत पूरी है।

﴾5﴿

اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِیْ حَآجَّ اِبْرٰهٖمَ فِیْ رَبِّهٖۤ اَنْ اٰتٰىهُ اللّٰهُ الْمُلْكَۘ اِذْ قَالَ اِبْرٰهٖمُ رَبِّیَ الَّذِیْ یُحْیٖ وَ یُمِیْتُۙ قَالَ اَنَا اُحْیٖ وَ اُمِیْتُؕ قَالَ اِبْرٰهٖمُ فَاِنَّ اللّٰهَ یَاْتِیْ بِالشَّمْسِ مِنَ الْمَشْرِقِ فَاْتِ بِهَا مِنَ الْمَغْرِبِ فَبُهِتَ الَّذِیْ كَفَرَؕ (پ۳،البقرة:۲۵۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ मह़बूब ! क्या तुम ने न देखा था उसे जो इब्राहीम से झगड़ा उस के रब्ब के बारे में इस पर कि **अल्लाह** ने उसे बादशाही दी जब कि इब्राहीम ने कहा कि मेरा रब्ब वोह है कि जिलाता और मारता है बोला मैं जिलाता और मारता हूं इब्राहीम ने फ़रमाया तो **अल्लाह** सूरज को लाता है पूरब (मशरिक़) से तू उस को पच्छिम (मग़रिब) से ले आ तो होश उड़ गए काफ़िर के।

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के दलील पेश करने, दलील त़लब करने, मुनाज़रा करने और इस त़रीक़े पर मुख़ालिफ़ को ला जवाब कर देने की **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने ता'रीफ़ फ़रमाई।

﴾6﴿

وَ تِلْكَ حُجَّتُنَاۤ اٰتَیْنٰهَاۤ اِبْرٰهِیْمَ عَلٰى قَوْمِهٖؕ (پ۷،الانعام:۸۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और येह हमारी दलील है कि हम ने इब्राहीम को उस की क़ौम पर अ़त़ा फ़रमाई।

﴾7﴿

قَالُوْا یٰنُوْحُ قَدْ جٰدَلْتَنَا فَاَكْثَرْتَ جِدَالَنَا (پ۱۲،هود:۳۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बोले ऐ नूह़ ! तुम हम से झगड़े और बहुत ही झगड़े।

﴾8﴿ ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام और फ़िरऔ़न के मुकालमे को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने यूं बयान फ़रमाया :

مَا رَبُّ الْعٰلَمِیْنَؕ(۲۳) قَالَ رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ وَ مَا بَیْنَهُمَاؕ اِنْ كُنْتُمْ مُّوْقِنِیْنَ(۲۴) قَالَ لِمَنْ حَوْلَهٗۤ اَلَا تَسْتَمِعُوْنَ(۲۵) قَالَ رَبُّكُمْ

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : सारे जहान का रब्ब क्या है। मूसा ने फ़रमाया रब्ब आस्मानों और ज़मीन का और जो कुछ इन के दरमियान है अगर तुम्हें यक़ीन

وَرَبُّ اٰبَآىِٕكُمُ الْاَوَّلِیْنَ(۲۶) قَالَ اِنَّ رَسُوْلَكُمُ
الَّذِیْۤ اُرْسِلَ اِلَیْكُمْ لَمَجْنُوْنٌ(۲۷) قَالَ رَبُّ
الْمَشْرِقِ وَ الْمَغْرِبِ وَ مَا بَیْنَهُمَاؕ اِنْ كُنْتُمْ
تَعْقِلُوْنَ(۲۸) قَالَ لَىٕنِ اتَّخَذْتَ اِلٰهًا غَیْرِیْ
لَاَجْعَلَنَّكَ مِنَ الْمَسْجُوْنِیْنَ(۲۹) قَالَ اَوَ لَوْ
جِئْتُكَ بِشَیْءٍ مُّبِیْنٍۚ(۳۰) (پ۱۹، الشعراء:۲۳تا۳۰)

हो। अपने आस पास वालों से बोला क्या तुम ग़ौर से सुनते नहीं। मूसा ने फ़रमाया रब्ब तुम्हारा और तुम्हारे अगले बाप दादाओं का बोला : तुम्हारे येह रसूल जो तुम्हारी तरफ़ भेजे गए हैं ज़रूर अक़्ल नहीं रखते। मूसा ने फ़रमाया रब्ब पूरब (मशरिक़) और पच्छिम (मग़रिब) का और जो कुछ इन के दरमियान है अगर तुम्हें अक़्ल हो। बोला अगर तुम ने मेरे सिवा किसी और को ख़ुदा ठहराया तो मैं ज़रूर तुम्हें क़ैद कर दूंगा फ़रमाया क्या अगर्चे मैं तेरे पास कोई रोशन चीज़ लाऊं।

अल ग़रज़ कुरआने पाक अज़ अव्वल ता आख़िर कुफ़्फ़ार के ख़िलाफ़ दलाइल से मा'मूर है।

तौह़ीद, नबूव्वत और बिअ़षत के मुतअ़ल्लिक़ क़ुरआनी दलाइल :

तौह़ीदे बारी तआ़ला के षुबूत पर मुतकल्लिमीन की बेहतरीन दलील येह आयते तृय्यिबा है :

لَوْ كَانَ فِیْهِمَاۤ اٰلِهَةٌ اِلَّا اللّٰهُ لَفَسَدَتَاۚ
(پ۱۷، الانبیاء:۲۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *अगर आस्मान व ज़मीन में **अल्लाह** के सिवा और ख़ुदा होते तो ज़रूर वोह तबाह हो जाते।*

नबुव्वत की दलील येह आयते मुक़द्दसा है :

وَ اِنْ كُنْتُمْ فِیْ رَیْبٍ مِّمَّا نَزَّلْنَا عَلٰى عَبْدِنَا
فَاْتُوْا بِسُوْرَةٍ مِّنْ مِّثْلِهٖ۪ (پ۱، البقرۃ:۲۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और अगर तुम्हें कुछ शक हो उस में जो हम ने अपने इन ख़ास बन्दे पर उतारा तो इस जैसी एक सूरत तो ले आओ।*

मर कर दोबारा जी उठने पर येह आयते मुबारका दलील है :

قُلْ یُحْیِیْهَا الَّذِیْۤ اَنْشَاَهَاۤ اَوَّلَ مَرَّةٍؕ
(پ۲۳، یٰسٓ:۷۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *तुम फ़रमाओ इन्हें वोह ज़िन्दा करेगा जिस ने पहली बार इन्हें बनाया।*

मज़्कूरा उमूर की ताईद व तौषीक़ पर मज़ीद आयात व दलाइल भी मौजूद हैं और रुसुल عَلَیْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام भी कुफ़्फ़ार को दलाइल देते और उन से मुनाज़राना तृर्ज़ पर गुफ़्तगू फ़रमाते रहे।

फ़रमाने बारी तआ़ला है :

وَجَادِلْهُمْ بِالَّتِیْ هِیَ اَحْسَنُ ؕ (پ۱۴،النحل:۱۲۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और उन से इस त़रीके़ पर बह़ष करो जो सब से बेहतर हो ।*

नीज़ सहाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْهِمْ اَجْمَعِیْن ने भी ब वक़्ते ज़रूरत मुनकिरीन के ख़िलाफ़ दलाइल पेश किये और उन से मुनाज़रे किये अगर्चे उन्हें ऐसे मवाके़अ़ बहुत कम पेश आए ।

सहा़बा व ताबेईन عَلَیْهِمُ الرِّضْوَان के मुनाज़रों की चन्द मिषालें :

﴾1﴿......इज़्हारे ह़क़ की ख़ाति़र मुनाज़रे की रीत सब से पहले अमीरुल मोअमिनीन **ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा** كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِیْم ने डाली कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا को ख़ारिजी फ़िर्क़े से मुनाज़रे के लिये भेजा । चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا ने ख़ारिजियों से पूछा : "तुम्हें अपने ख़लीफ़ा अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِیْم की किस बात पर ए'तिराज़ है ?" कहा : "उन्हों ने जंग[1] की, लेकिन माले ग़नीमत इकठ्ठा किया न क़ैदी बनाए ।" आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने फ़रमाया : "इन सब चीज़ों के हुसूल का जवाज़ कुफ़्फ़ार से जंग करने पर होता है । तुम खुद ही बताओ अगर जंगे जमल[2] में उम्मुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا जंगी क़ैदी बन कर तुम में से किसी के हि़स्से में आतीं तो क्या तुम उन से लौंडियों वाला सुलूक करते ? हांलाकि आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا ब नस्से कुरआनी (या'नी साफ़ व सरीह़ आयत के मुता़बिक़) उम्मुल मोअमिनीन हैं ।" उन्हों ने इस का जवाब नफ़ी में दिया[3] और इस मुनाज़रे में ला जवाब हो कर दो हज़ार अफ़राद तौबा कर के ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِیْم की बैअ़त में आ गए ।

---

❶....येह वाक़िआ़ जंगे सिफ़्फ़ीन (जो ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِیْم और ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ के माबैन सफ़र 37 हिजरी को हुई थी) से वापसी पर पेश आया । जब कुछ लोग ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِیْم से अलग हो कर ख़ारिजी फ़िर्क़े से मन्सूब हुए और अहले ह़क़ से जंग व जिदाल और लूट मार में मसरूफ़ हो गए । येह वाक़िआ़त 37 हिजरी में पेश आए । (مستفاداز تاریخ الخلفاء،ص۱۱۲)

❷....जंगे जमल जमादिल आख़िर 36 हिजरी अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِیْم के दौरे ख़िलाफ़त में लड़ी गई । इस में एक त़रफ़ अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِیْم और दूसरी जानिब ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुबैर, ह़ज़रते सय्यिदुना त़लह़ा व उम्मुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْهِمْ اَجْمَعِیْن थे । वजहे नज़ाअ़ ख़ूने उषमान का मुता़लबा था । (مستفاداز تاریخ الخلفاء،ص۱۱۲)

❸......المستدرک،کتاب قتال اهل البغیی، مناظرة ابن عباس مع الحروریة، الحدیث:۲۷۰۳، ج۲، ص۴۹۵۔۴۹۶۔

﴾2﴿.....**मश्हूर ताबई बुज़ुर्ग ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى का एक मुन्किरे तक़दीर से मुनाज़रा हुवा, बिल आख़िर वोह अपनी बद मज़हबी से ताइब हो गया।

﴾3﴿....**अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा** كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने भी एक मुन्किरे तक़दीर से मुनाज़रा किया।

﴾4﴿....**ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द** رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ का ह़ज़रते सय्यिदुना यज़ीद बिन उ़मैरा رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه से ईमान के मुतअ़ल्लिक़ मुनाज़रा हुवा। ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ का मौक़िफ़ येह था कि अगर तुम कहो कि "मैं मोमिन हूं तो लाज़िमन येह भी कहो कि मैं जन्नती हूं।" इस के जवाब में ह़ज़रते सय्यिदुना यज़ीद बिन उ़मैरा رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने कहा : "ऐ सह़ाबिये रसूल ! इस मस्अले में आप से सह्व हुवा है। ईमान तो उस चीज़ का नाम है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ, उस के रसूलों, फ़िरिश्तों और उस की किताबों को माना जाए, मरने के बा'द दोबारा उठने और मीज़ाने अ़मल क़ाइम होने को तस्लीम किया जाए, नमाज़, रोज़ा और ज़कात जैसे अह़काम की ता'मील की जाए, हम गुनाहगार हैं अगर मा'लूम हो जाए कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमारे गुनाह बख़्श देगा तो हम जन्नती हैं। येही वजह है कि हम अपने आप को सिर्फ़ मोमिन कहते हैं, जन्नती नहीं।" येह जवाब सुन कर ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने मसऊ़द رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने फ़रमाया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! आप दुरुस्ती पर हैं, ग़लत़ फ़हमी मुझे हुई थी।"(1)

मुनाज़राना अन्दाज़ में अस्लाफ़ का तर्ज़े अ़मल :

येह कहना दुरुस्त है कि सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن मुनाज़रा व मुजादला की त़रफ़ बहुत कम और मुख़्तसर वक़्त के लिये ज़रूरतन तवज्जोह देते, इस में ज़ियादा पड़ना, इसे ज़ियादा वक़्त देना या इस के लिये बाक़ाइदा तस्नीफ़ व तदरीस का एहतिमाम करना और इसे मश्ग़ले के त़ौर पर लेना इन की आ़दत में शामिल नहीं था। कम तवज्जोह की वजह कम ज़रूरत थी कि उस दौर में बिदअ़तों का ज़ुहूर नहीं हुवा था। बह़ष में इख़्तिसार की वजह येह थी कि बह़ष से अस्ल मक़्सूद मद्दे मुक़ाबिल को ख़ामोश कराना, अपनी बात मनवाना, ह़क़ को वाज़ेह़ और शुकूक व शुब्हात को ज़ाइल करना होता है। अगर मद्दे मुक़ाबिल का ए'तिराज़ या असरार तूल पकड़ता तो बिज़्ज़रूर इन ह़ज़रात के कलाम व जवाब में भी त़वालत होती। येह नुफ़ूसे क़ुदसिय्या अपना कलाम शुरूअ़ फ़रमाने के बा'द इस की ज़रूरत का अन्दाज़ा किसी तराज़ू या पैमाने से नहीं लगाते थे और जहां तक येह बात है कि इन ह़ज़रात ने इ़ल्मे कलाम की तस्नीफ़ व तदरीस को लाइक़े तवज्जोह न जाना तो जवाबन अ़र्ज़ है कि इ़ल्मे ह़दीष, तफ़्सीर और फ़िक़्ह की तस्नीफ़ व तदरीस की त़रफ़ भी इन का मैलान नहीं था।

---

(1)......تاریخ دمشق لابن عساکر، یزید بن عمیرة الزبیدی، ج۶۵، ص۳۳۸۔۳۳۹، بتغیرٍ۔

मुजादला व मुनाज़रा के तरीक़े वज़्अ़ करने का मक़्सद :

अगर फ़िक़्ह की तस्नीफ़ और क़लील अल वुक़ूअ़ नादिर जुज़्इय्यात वज़्अ़ करने का जवाज़ इस तौर पर हो कि जब कभी ऐसी सूरत का वुक़ूअ़ हो अगर्चे नादिर ही हो तो येह फ़िक़्ही ज़ख़ीरा काम आए या फिर ज़कावते ज़ेह्नी (ज़हानत व तेज़ फ़हमी) पेशे नज़र हो तो हमारा मुजादले के तरीक़े वज़्अ़ करने से भी येही मक़्सूद होता है कि जब शुकूक व शुब्हात सर उठाएं और बिदअ़ती मुक़ाबिल आएं या ज़कावते ज़ेह्नी और दलाइल का ज़ख़ीरा जम्अ़ करना मक़्सूद हो तो ऐसे मवाक़ेअ़ पर ग़ौरो फ़िक्र करने की ज़रूरत न पड़े बल्कि फ़ौरी जवाब पेश किया जा सके। येह सब ऐसा ही है जैसे कोई शख़्स जंग से पहले जंग के लिये कार आमद अस्लहा तय्यार रखे। येह वोह बातें हैं जो इल्मे कलाम की ताईद करने वालों और रद्द करने वालों की जानिब से हत्तल इमकान बयान कर दी गईं।

एक सुवाल और इस का जवाब :

अगर आप कहें कि इल्मे कलाम के मुतअ़ल्लिक़ आप का क्या मौक़िफ़ है? तो इस का जवाब येह है कि इल्मे कलाम को न तो बिल्कुल ग़लत़ क़रार दिया जा सकता है और न ही बिल्कुल दुरुस्त बल्कि इस पर हुक्म लगाने में कुछ तफ़्सील दरकार होगी। पहले येह बात जान लीजिये कि **बा'ज़ चीज़ों की हुरमत ज़ाती होती है :** जैसे शराब और मुर्दार। यहां "**ज़ाती**" इस लिये कहा कि वजहे हुरमत इन ह़राम चीज़ों की ज़ात में मौजूद है और वोह शराब का नशा आवर होना और मुर्दार का (बिग़ैर ज़ब्हे शरई के) मरना है। लिहाज़ा अगर कोई शख़्स शराब व मुर्दार का हुक्म मा'लूम करेगा तो मुत़लक़न ह़राम का हुक्म दिया जाएगा और येह शर्क़ें बयान नहीं की जाएंगी कि बह़ालते मजबूरी मुर्दार खाना जाइज़ है और अगर लुक़्मा ह़लक़ में फंसा हो और सिवाए शराब के कोई मश्रूब न मिले तो उस वक़्त शराब का घूंट ह़लाल है। **बा'ज़ चीज़ें किसी ख़ारिजी अम्र की वजह से ह़राम होती हैं :** जैसे मुसलमान के सौदे पर अय्यामे ख़य्यार में सौदा करना, अज़ाने जुमुआ़ के वक़्त कारोबार करना और मिट्टी खाना। मिट्टी खाना इस लिये ह़राम है कि इस में इन्सानी सिह्ह़त का नुक़्सान है। इस की दो सूरतें हैं : (1)....मिट्टी खाना कम हो या ज़ियादा दोनों सूरतों में अगर नुक़्सान देह हो तो मुत़लक़न ह़राम कहा जाएगा जिस त़रह़ ज़ह्र क़लील हो या कसीर, हलाकत खे़ज़ है। (2)....अगर मिट्टी की कसीर मिक़्दार ही फ़सादे सिह्ह़त का सबब बने तो ऐसी सूरत में मुत़लक़न जवाज़ का क़ौल इख़्तियार किया जाएगा जैसे शहद (कि इस का खाना अगर्चे ह़लाल है) लेकिन इस की कसीर मिक़्दार गर्म मिज़ाज अफ़राद के लिये बाइ़से नुक़्सान है, येही हुक्म मिट्टी ख़ोरी का है। लिहाज़ा मिट्टी ख़ोरी और शराब नोशी को मुत़लक़न ह़राम कहना

और शहद को मुत़्लक़न ह़लाल कहना अकषर ह़ालात की बिना पर है। (इस क़दर तफ़्सील बयान करने से मक़्सूद येह समझाना था) कि अगर किसी चीज़ में ह़ालात मुख़्तलिफ़ हों तो सब से बेहतर और शुकूक व शुब्हात से बाला तर येही है कि उसे बित्तफ़्सील बयान किया जाए। अब हम दोबारा अपनी गुफ़्त्गू को इल्मे कलाम की त़रफ़ लाते हुए अपना मौक़िफ़ वाज़ेह़ करते हैं।

इल्मे कलाम के मुतअ़ल्लिक़ मुसन्निफ़ का नज़रिय्या :

इस इल्म का फ़ाइदा भी है और नुक़्सान भी। जब येह इल्म फ़वाइद का मूजिब बने तो इन फ़वाइद के पेशे नज़र और ह़ालात के मुत़ाबिक़ इसे जाइज़ या मुस्तह़ब या वाजिब कहा जाएगा और जब नुक़्सान रसां षाबित हो तो ह़राम का हुक्म दिया जाएगा।

इल्मे कलाम के नुक़्सानात :

﴾1﴿....इस इल्म की वजह से शुकूक व शुब्हात जनम लेते हैं। यक़ीन और पुख़्तगी रुख़्सत और अ़क़ाइद मुतज़लज़िल हो जाते हैं और येह वोह नुक़्सानात हैं जिन का सुदूर इस इल्म की इब्तिदा ही में हो जाता है और दलील पा कर दोबारा अ़क़ाइद की पुख़्तगी पा लेना भी यक़ीनी नहीं होता। नीज़ लोगों की ह़ालत भी एक जैसी नहीं होती। लिहाज़ा इस इल्म का एक नुक़्सान अ़क़ाइदे ह़क़्क़ा (या'नी दुरुस्त अ़क़ाइद) में ख़लल डालना है।

﴾2﴿....अहले बिदअ़त अपने बिदअ़ती अ़क़ीदों पर जम जाते हैं और बिदअ़त इन के सीनों में यूं क़रार पकड़ लेती है कि वोह इसी के हो कर रह जाते और इसी पर मुसिर रहते हैं। लेकिन इल्मे कलाम की वजह से पेश आने वाला येह नुक़्सान उस तअ़स्सुब का नतीजा होता है जो जदल व मुनाज़रा से पैदा होता है। येही वजह है कि एक आ़म बिदअ़ती को उस की बद अ़क़ीदगी से तौबा कराना आसान और जल्द मुमकिन होता है। हां ! अगर उस की नश्व व नुमा जदल और तअ़स्सुब ज़दा अ़लाक़े में हो तो फिर ख़्वाह अगले पिछले सब लोग जम्अ़ हो कर उस के सीने को बिदअ़त से पाक करना चाहें तो न कर पाएं बल्कि ख़्वाहिशे नफ़्स, तअ़स्सुब और मुनाज़िरीन व मुख़ालिफ़ीन की मुख़ालफ़त उस के दिल को अपने क़ब्ज़े में ले लेती और उसे क़बूले ह़क़ से रोक देती है। यहां तक कि अगर इस बिदअ़ती के लिये येह भी मुमकिन हो जाए कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से उस की आंखों से पर्दे हटा कर उस पर ह़क़ वाज़ेह़ कर दिया जाए और उसे बता दिया जाए कि दूसरी जानिब वाले ही अहले ह़क़ हैं, तो फिर भी वोह ना ख़ुश ही होगा क्यूंकि अब इसे येह डर रहेगा कि इस बात से उस का मुख़ालिफ़ ख़ुश हो जाएगा। येह है फ़साद की एक क़िस्म और भयानक बीमारी जो मुतअ़स्सिब मनाज़िरीन की वजह से शहरों और लोगों में फैलती जा रही है। येह भी इल्मे कलाम का एक नुक़्सान है।

इल्मे कलाम के फ़वाइद :

﴾1﴿....(येह गुमान किया जाता है कि) इस के ज़रीए ह़क़ाइक़ की वज़ाह़त और माहिय्यत की मा'रिफ़त ह़ासिल होती है मगर अफ़्सोस कि येह अ़ज़ीम मक़्सद इस से ह़ासिल नहीं होता बल्कि वज़ाह़त व मा'रिफ़त के बजाए दीवानगी व गुमराही में इज़ाफ़ा हो जाता है। इल्मे कलाम की मज़म्मत अगर कोई मुह़द्दिष करे या कोई बे इ़ल्म शख़्स इस के ख़िलाफ़ बोले तो वस्वसा आ सकता है कि लोग जिस चीज़ का इ़ल्म नहीं रखते उस के मुख़ालिफ़ हो जाते हैं। तो सुनिये ! येह मज़म्मत वोह शख़्स कर रहा है (इमाम ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَلِى अपनी त़रफ़ इशारा कर रहे हैं) जिस ने इल्मे कलाम और इस के मुतअ़ल्लिक़ात को ख़ूब अच्छी त़रह़ परखा और चोटी के माहिरीन इल्मे कलाम के दर्जों तक पहुंचा लेकिन नतीजा येही मा'लूम हुवा कि इस त़रफ़ से आने वालों के लिये ह़क़ाइक़ के दरवाज़े बन्द हैं।

﴾2﴿....मेरी उ़म्र की क़सम ! इल्मे कलाम का एक फ़ाइदा येह है कि इस के ज़रीए़ बा'ज़ उमूर मुन्कशिफ़, वाज़ेह़ और मा'रूफ़ हो जाते हैं लेकिन इस का वुक़ूअ़ बहुत कम और उन ज़ाहिरी उमूर तक मह़दूद है जिन की तौज़ीह़ इल्मे कलाम में ग़ौरो फ़िक्र के बिग़ैर भी मुमकिन है।

﴾3﴿....इस से अ़वाम के लिये हमारे बयान कर्दा अ़क़ाइद की ह़िफ़ाज़त होती और बिदअ़तियों के मुनाज़रों से पैदा होने वाले शुकूक व शुब्हात से भी बचा जा सकता है। क्यूंकि एक आ़म आदमी कमज़ोर होता है और वोह बिदअ़ती की मुनाज़राना गुफ़्त्गू का मह़ज़ ज़बानी कलामी जवाब देने के लिये पुर जोश होता है अगर्चे येह फ़ासिद रविय्या है और फ़ासिद रविय्ये से ही फ़ासिद का मुक़ाबला इसे दूर कर सकता है। नीज़ आ़म लोग हमारे बयान कर्दा अ़क़ाइद को ही अपनाते हैं इस लिये कि शरीअ़त ने इन्ही अ़क़ाइद को बयान किया और सलफ़े सालेह़ीन رَحِمَهُمُ اللهُ الْمُبِيْن ने भी येही अ़क़ाइद अपनाए क्यूंकि इन्ही अ़क़ाइद में सब के दीनो दुन्या की भलाई है।

उ़-लमाए किराम की ज़िम्मेदारी :

जिस त़रह़ ह़ाकिमे वक़्त इस अम्र का ज़िम्मेदार है कि अपनी रिआ़या के अम्वाल पर ज़ालिमों और ग़ासिबों को हाथ न डालने दे इसी त़रह़ उ़-लमाए किराम की ज़िम्मेदारी है कि वोह आ़म्मतुल मुस्लिमीन को बिदअ़तों की फ़रैब कारियों से बचाएं।

इल्मे कलाम के इस्ति'माल के त़रीक़े :

इल्मे कलाम के फ़वाइद व नुक़्सानात से बा ख़बर होने के बा'द उ़-लमाए किराम को चाहिये कि जिस त़रह़ एक माहिर त़बीब नुक़्सान देह अदवियात को सिर्फ़ मक़ामे ज़रूरत पर तजवीज़ करता है, इसी त़रह़ वोह भी इल्मे कलाम को बक़दरे ज़रूरत और ब वक़्ते ह़ाजत ही इस्ति'माल में लाएं।

﴾1﴿....दुन्यावी कामों और कारोबार में मसरूफ़ आ़म मुसलमानों के अ़क़ाइद अगर मज़्कूरा अ़क़ाइदे अहले सुन्नत के मुता़बिक़ हों तो ज़रूरी है कि इसी पर इक्तिफ़ा किया जाए। इस लिये कि अ़वाम के ह़क़ में इ़ल्मे कलाम की ता'लीम बाइ़षे नुक़्सान है। क्यूंकि वोह बा'ज़ अवक़ात शुकूक व शुब्हात में पड़ कर अपने अ़क़ाइद की पुख़्तगी खो बैठते हैं और फिर उन की इस्लाह़ के आषार मा'दूम हो जाते हैं और बिदअ़ती अ़क़ाइद इख़्तियार करने वाले आ़म शख़्स को सख़्ती से नहीं बल्कि ख़ुश अख़्लाक़ी और ऐसी नर्म गुफ़्त्गू से राहे ह़क़ पर चलने की दा'वत दी जाए जो कु़रआन व ह़दीष के दलाइल से मुज़य्यन और नसीह़त व ख़ौफ़े ख़ुदा के तअष्षुरात से भरपूर हो जिस की बिना पर नफ़्स मुत़मइन हो और दिल खींच जाए। येह वोह त़रीक़ा है जो शराइते़ मुतकल्लिमीन के मुता़बिक़ मुनाज़राना गुफ़्त्गू से कहीं ज़ियादा बेहतर है। क्यूंकि एक आ़म आदमी से बह़षो मुबाह़षा के तनाज़ुर में गुफ़्त्गू कर के उसे अगर ला जवाब भी कर दिया जाए तो वोह येही समझेगा कि येह मह़ज़ मुनाज़राना अन्दाज़ से अपना हम अ़क़ीदा बनाने की कोशिश है और मेरा हम मज़्हब मुनाज़रा भी इसे ला जवाब करने में कामयाब हो सकता है। लिहाज़ा बिदअ़ती अ़क़ाइद के ह़ामिल और शुकूक व शुब्हात में गिरिफ़्तार आ़म आदमी से मुनाज़रा करना ह़राम है। बल्कि ज़रूरी है कि मुन्तशिरुज़्ज़ेह्न (या'नी ह़ैरान व परेशान) अफ़राद के शुब्हात का नर्मी, वा'ज़ व नसीह़त और ऐसे दलाइल से इज़ाला किया जाए जो इ़ल्मे कलाम की मुश्किल अब्ह़ाष से पाक और मा'कूल व मक़्बूल त़र्ज़ पर हों।

﴾2﴿.....इ़ल्मे कलाम के इन्तिहाई दर्जों को छूना एक सूरत में मुफ़ीद है वोह येह कि बिलफ़र्ज़ एक आ़म शख़्स किसी मुनाज़रे से मुतअष्षिर हो कर बिदअ़ती अ़क़ाइद इख़्तियार कर बैठा तो ऐसे शख़्स के सामने इसी त़रह़ की मुनाज़राना गुफ़्त्गू उसे वापस राहे रास्त पर ला सकती है। लेकिन येह भी उसी सूरत में है जब येह मा'लूम हो जाए कि शख़्से मज़्कूर मुनाज़रा ही चाहता है, वा'ज़ व नसीह़त और डराने वाले उ़मूमी दलाइल पर इक्तिफ़ा नहीं करता। येह बद अ़क़ीदगी की वोह ख़राब ह़ालत है जिस का इ़लाज मुनाज़रे की दवा से करने की इजाज़त है।

﴾3﴿....वोह अ़लाक़ाजात जहां बिदअ़तीं और मज़्हबी इख़्तिलाफ़ात कम हैं, वहां मज़्कूरा अ़क़ाइद ही को बयान करने पर इक्तिफ़ा किया जाए और उस वक़्त तक दलाइल को न छेड़ा जाए जब तक शुब्हात सर न उठाएं। जब शुब्हात पड़ना शुरूअ़ हों तो बक़दरे ह़ाजत दलाइल बयान कर दिये जाएं। अगर बद मज़्हबी का फ़ितना ज़ोरों पर हो और येह अन्देशा हो कि बच्चे इस फ़ितने

की ज़द में आ सकते हैं तो इन्हें ''رسالۂ قدسیہ'' में हमारे ज़िक्र कर्दा दलाइल सिखा दिये जाएं ताकि अगर बद मज़्हब मुनाज़रों के रास्ते अपना तअष्षुर क़ाइम करना चाहें तो येह दलाइल इसे बे अषर बना दें। येह दलाइल मुख़्तसर हैं इसी वजह से हम ने उन्हें इस रिसाले में ज़िक्र किया है।

﴾4﴿....अगर मुब्तदी (इब्तिदाई त़ालिबे इ़ल्म) ज़हीन हो और ज़हानत की बिना पर मक़ामे सुवाल से बा ख़बर हो जाता हो या उस के दिल में शुबा पैदा हो जाए तो जान लेना चाहिये कि क़ाबिले इजतिनाब इ़ल्लत व बीमारी सामने आ चुकी। ऐसी सूरते ह़ाल के ह़ल के लिये उ़-लमा इस क़दर आगे बढ़ सकते हैं जो हम ने 50 अवराक़ पर मुश्तमिल रिसाले اَلْاِقْتِصَادفِی الْاِعْتِقَاد में बयान किया है। इस में उ़-लमाए मुतकल्लिमीन की दीगर अबह़ाष से सर्फ़े नज़र करते हुए, सर्फ़ अ़क़ाइद के उसूल व क़वाइ़द बयान किये गये हैं। अगर इसी को काफ़ी समझे तो मज़ीद कुछ सिखाने बताने की ज़रूरत नहीं और अगर फिर भी मुत़मइन न हो तो समझ लें कि बीमारी पुरानी हो गई और ग़ालिब आ चुकी है और मरज़ जिस्म में सरायत कर चुका है। पस त़बीब ब क़दरे इम्कान इ़लाज करे और इन्तिज़ाम करे कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अपने हुक्म से उस के लिये वज़ाह़ते ह़क़ का कोई सबब पैदा फ़रमा दे या फिर जब तक उस के मुक़द्दर में है शुकूक व शुब्हात में पड़ा रहे। पस ''اَلْاِقْتِصَادفِی الْاِعْتِقَاد'' जैसी किताबों में जो कुछ मज़्कूर है इस से नफ़्अ़ की उम्मीद की जा सकती है।

बे फ़ाइदा इ़ल्मे कलाम की अक़्साम :

किताब ''رسالۂ قدسیہ'' और ''اَلْاِقْتِصَادفِی الْاِعْتِقَاد'' में मज़्कूर इ़ल्मे कलाम के इ़लावा जो है वोह ग़ैर मुफ़ीद है और इस की दो क़िस्में हैं :

﴾1﴿....फ़वाइदे अ़क़ाइद के इ़लावा उमूर को ज़ेरे बह़ष लाना, मषलन ए'तिमादात (या'नी अस्बाब व इ़लल), मौजूदात और अश्या की नफ़ी व इषबात में बह़ष करना और इस बात में ग़ौर करना कि क्या रुविय्यत (या'नी देखने) की ज़िद रुकावट कहलाएगी या नाबीनाई ? और दिखाई न देने वाली सब अश्या के लिये एक ही रुकावट है या क़ाबिले रुविय्यत अश्या की ता'दाद के बराबर रुकावटें हैं ? वग़ैरा वग़ैरा जैसी बात़िल व गुमराह कुन बातें।

﴾2﴿....बयान कर्दा क़वाइ़दे अ़क़ाइद के इ़लावा इन दलाइल को ज़ियादा बयान करना और बहुत ज़ियादा सुवाल व जवाब करना है। येह अ़मल भी एक ऐसी इन्तिहा है जो हमारे दलाइल से ग़ैर मुत़मइन शख़्स की गुमराही और जहालत में इज़ाफ़े का बाइ़ष बनती है। क्यूंकि कई कलाम ऐसे हैं जिन को तूल देना और लम्बी तक़रीर करना दिक़्क़त व अबहाम (या'नी दुश्वारी व पोशीदगी) का सबब बनता है।

एक सुवाल और इस का जवाब :

अश्या की नफ़ी व इषबात और अ़लल व अस्बाब की ह़िक्मतों से बह़्ष करना दिल की तेज़ी का सबब है और दिल दीन का आला है जैसे तल्वार जिहाद का आला है। तो दिल की तेज़ी पैदा करने में क्या ह़रज है? **जवाब :** येह दलील तो ऐसी ही बे तुकी है जैसे कोई कहे कि शत़रंज खेलने से दिल को तेज़ी मिलती है लिहाज़ा शत़रंज खेलना भी एक दीनी काम हुवा। ह़ालांकि येह ख़्वाहिश परवरी के सिवा कुछ नहीं, क्यूंकि दिल तमाम उ़लूमे शरइय्या से तेज़ होता है जिन में कोई ख़त़रे की बात भी नहीं होती। इ़ल्मे कलाम कितनी मिक़्दार में, किस वक़्त और किस के लिये मुफ़ीद व लाइक़े ता'रीफ़ है और किस के लिये नहीं येह सब बयान हो चुका।

इ़ल्मे कलाम दवा और इ़ल्मे फ़िक़्ह गि़ज़ा की मिष्ल है :

चूंकि गुज़श्ता सफ़ह़ात में बद मज़्हबों की तरदीद के लिये इ़ल्मे कलाम की ज़रूरत को आप तस्लीम कर चुके और अब जब कि लोगों में बद मज़्हबी फैलती जा रही है तो इ़ल्मे कलाम की ज़रूरत मुतह़क़्क़िक़ (षाबित) हो गई लिहाज़ा इस का ह़ुसूल फ़र्ज़े किफ़ाया होना चाहिये। जिस त़रह़ अम्वाल और दीगर ह़ुक़ूक़ की ह़िफ़ाज़त के लिये क़ज़ा व विलायत वग़ैरा ज़रूरी हैं और जब तक उ़-लमाए किराम इस इ़ल्म को फैलाने, पढ़ाने और इस की तह़क़ीक़ की ज़िम्मेदारी नहीं संभालेंगे उस वक़्त तक इसे दवाम ह़ासिल नहीं होगा। इस इ़ल्म से बिल्कुल बे रुख़ी बरतना इसे मिटाने के मुतरादिफ़ है और इसे सीखे बिग़ैर मह़ज़ त़बई सलाह़िय्यतों के बल बूते पर बद मज़्हबों की तरदीद करना एक मुश्किल अम्र है। लिहाज़ा इस इ़ल्म की तदरीस व तह़क़ीक़ को फ़र्ज़े किफ़ाया का दर्जा ह़ासिल होना चाहिये और जहां तक ज़मानए सह़ाबा की बात है तो उस वक़्त इस इ़ल्म की ज़रूरत ही न थी।

जवाब : होना तो येही चाहिये कि हर शहर में इस इ़ल्म का माहिर हो जो उस शहर में बद मज़्हबों के उठने वाले ए'तिराज़ात का जवाब दे और येह ता'लीम के ज़रीए़ ही मुमकिन है। लेकिन इस की तदरीस तफ़्सीर व फ़िक़्ह की तदरीस की त़रह़ आ़म न हो। इसे यूं समझये कि इ़ल्मे कलाम दवा की मिष्ल है और इ़ल्मे फ़िक़्ह गि़ज़ा की मिष्ल। गि़ज़ा के ज़रर का कोई डर नहीं लेकिन दवा के नुक़्सान से ज़रूर बचना होगा और इस के नुक़्सानात हम बयान कर चुके हैं।

इ़ल्मे कलाम किसे सिखाया जाए?

माहिरे इ़ल्मे कलाम सिर्फ़ तीन अवसाफ़ के ह़ामिल शख़्स को येह इ़ल्म सिखाए :

﴾1﴿....इस इ़ल्म का त़ालिब, इसी लिये वक़्फ़ और इसी का ख़्वाहिश मन्द हो क्यूंकि दीगर मशाग़िल की त़रफ़ तवज्जोह इस इ़ल्म की तक्मील और वारिद होने वाले ए'तिराज़ात के जवाबात देने की राह में रुकावट षाबित होगी।

﴾2﴿....त़ालिबे इ़ल्म ज़हीन व फ़त़ीन और फ़सीहुल्लिसान (या'नी बोलने का माहिर) हो क्यूंकि कुन्द ज़ेह्न इस इ़ल्म से फ़ाइदा न उठा सकेगा और कम फ़हम शख़्स के लिये भी इस के दलाइल फ़ाइदा मन्द षाबित न होंगे। लिहाज़ा ऐसे शख़्स के ह़क़ में इ़ल्मे कलाम से नफ़्अ़ की उम्मीद कम जब कि नुक़्सान का ख़ौफ़ ज़ियादा है।

﴾3﴿....त़ालिबे इ़ल्म की त़बीअ़त नफ़्सानी ख़्वाहिशात से दूर और इस्लाह़, दियानत दारी और तक़्वा व परहेज़गारी जैसी क़ाबिले क़द्र ख़ूबियों से मा'मूर हो क्यूंकि फ़ासिक़ को छोटा सा शुबा भी दीन से दूर कर देता और इस के और ख़्वाहिशाते नफ़्सानिय्या के दरमियान पर्दे को उठा देता है। फिर वोह शख़्स शुबहात को दूर करने के बजाए इन्हें दीन और दीनी ज़िम्मेदारियों को छोड़ने के लिये बहाने के त़ौर पर इस्ति'माल करता है। लिहाज़ा ऐसे त़ालिबे इ़ल्म से भी फ़वाइद के बजाए नुक़्सानात की तवक़्क़ोआ़त ज़ियादा हैं।

जब आप इ़ल्मे कलाम की तक़्सीमात जान चुके तो मैं येह बात भी वाज़ेह़ करता चलूं कि इस इ़ल्म में बेहतरीन दलील उसे तसव्वुर किया जाता है जो दलाइले क़ुरआनिय्या जैसी हो या'नी कलिमात नर्म, दिल नशीन और इत़्मीनान कुन हों। दरमियान में ऐसी अक़्साम और दक़ीक़ अबहा़ष न लाई जाएं जो अकषर लोगों की समझ से बाला तर हों और अगर समझ भी लें तो येही तअष्षुर पैदा हो कि येह उस की शो'बदा बाज़ी और फ़न कारी है जिसे लोगों की धोका देही के लिये इस्ति'माल करता है इस फ़न में उस जैसा माहिर इस का मुक़ाबला कर सकता है।

बा'ज़ अह़काम में तब्दीली का एक सबब :

आप जानते हैं कि इ़ल्मे कलाम के बयान कर्दा नुक़्सानात के पेशे नज़र ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन इदरीस शाफ़ेई़ عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْکَافِی और दीगर कई बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِيْن ने इस इ़ल्म के लिये वक़्फ़ हो जाने और इस में बहुत ज़ियादा ग़ौरो ख़ौज़ करने से मन्अ़ फ़रमाया है। रही बात उस मुनाज़रे की जो ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا का ख़ारिजियों से और अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم का मुन्किरे तक़्दीर से हुवा और इस त़रह़ के दीगर मुनाज़रे तो वोह वाज़ेह़ और ज़ाहिर कलाम के साथ ब वक़्ते ज़रूरत मुनअ़क़िद हुए थे। इस लिये इन्हें अच्छा ही जानें और मानेंगे। हां ! येह बात है कि किसी दौर में इस इ़ल्म की ज़रूरत ज़ियादा मह़सूस होगी और किसी में कम तो इसी ह़िसाब से इस इ़ल्म के हुक्म का बदलते रहना कुछ अ़जीब नहीं।

इल्मी वुस्अ़तें पाने का नुस्ख़ा :

इल्मे कलाम का मज़्कूरा हुक्म, दिफ़ाअ़ और ह़िफ़ाज़त का त़रीक़ए कार उन अ़क़ाइद के लिये बयान किया गया है जिन्हें आ़म्मतुल मुस्लिमीन अपनाते हैं। इस के इ़लावा शुबहात दूर करने, ह़क़ाइक़ से बा ख़बर होने, अश्या का वुजूद जिस त़ौर पर है इसे पहचानने और बयान कर्दा अ़क़ाइद के लिये इस्ति'माल होने वाले ज़ाहिरी अलफ़ाज़ के असरार और रुमूज़ को जानने के लिये जिस चीज़ की ज़रूरत है वोह त़ाअ़ाते इलाहिया बजा लाना। नफ़्सानी ख़्वाहिशात तर्क करना, बारगाहे इलाही की त़रफ़ मुकम्मल मुतवज्जेह रहना और हमेशा अपने ज़ेह्न को झगड़ों के मरज़ से पाक रखना है। येह तमाम उमूर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत हैं। तौफ़ीक़े इलाही के शामिले ह़ाल होते हुए जो शख़्स इन उमूर की ख़ुश्बूएं पाने की जिस क़दर कोशिश करता और जितनी क़ल्बी सफ़ाई व सलाह़िय्यत रखता है इसी तनासुब से इन्हें पा लेता है। येह इतना वसीअ़ समन्दर है जिस की गहराइयों और कनारों तक पहुंचना किसी के बस की बात नहीं।

एक सुवाल और इस का जवाब :

मज़्कूरा वज़ाह़त से मा'लूम होता है कि इन उ़लूम की कुछ बातें ज़ाहिर हैं और कुछ पोशीदा, बा'ज़ इब्तिदाअन ही वाज़ेह़ हो जाती हैं और बा'ज़ मख़्फ़ी रहती हैं जिन की वज़ाह़त के लिये इ़बादत व रियाज़त, अन्थक कोशिश व सलाह़ियत, फ़िक्री पाकीज़गी और तमाम ग़ैर ज़रूरी दुन्यावी अफ़्कार से क़ल्बी सफ़ाई ज़रूरी है। जब कि येह बात ख़िलाफ़े शरअ़ मा'लूम होती है क्यूंकि शरीअ़त ज़ाहिर व बात़िन और पोशीदा व अ़लानिय्या जैसी तक़्सीमात में बटी हुई नहीं बल्कि इस में ज़ाहिर व बात़िन और अ़लानिय्या व पोशीदा एक ही हैं

जवाब : उ़लूम दो क़िस्मों पर मुश्तमिल होते हैं : (1) ज़ाहिरी (2) बात़िनी।

इस बात से अहले इ़ल्म तो इन्कार नहीं करते बल्कि उन्हीं कम इ़ल्मों को इन्कार होता है जो नौ उ़म्री के ज़माने में जो कुछ सीखते हैं उसी पर जम जाते हैं। इ़ल्मी तरक़्क़ी और दर्जाते औलिया उ़-लमा की त़रफ़ पेश क़दमी उन के नसीब में नहीं होती। वगर्ना उ़लूम की मज़्कूरा तक़्सीम पर दलाइले शरइय्या मौजूद हैं।

उ़लूम की तक़्सीम पर दलाइले शरइय्या :

﴾1﴿....हु़ज़ूर नबिय्ये पाक, साह़िबे लौलाक صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मा'रिफ़त निशान है :

"اِنَّ لِلْقُرْاٰنِ ظَاهِرًا وَبَاطِنًا وَحَدًّا وَمَطَّلَعًا

या'नी बेशक कुरआन का ज़ाहिर भी है और बाति़न भी, इस की एक ह़द है और एक मत़्लअ़।"(1)

﴾2﴿.....अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने अपने सीनए मुबारका की त़रफ़ इशारा करते हुए फ़रमाया : "यहां बहुत से उ़लूम मौजूद हैं। काश ! मुझे इन्हें ह़ासिल करने वाला कोई मिल जाए।"(2)

﴾3﴿....हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफुर्रहीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बा कमाल है : "हम गुरौहे अम्बिया को हुक्म है कि अ़वाम से उन की अ़क़्लों के मुत़ाबिक़ कलाम करें।"(3)

﴾4﴿....सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने हिदायत निशान है कि "लोगों की अ़क़्लों से मावरा गुफ़्तगू करने वाला उन के लिये फ़ितने का बाइ़ष है।"(4)

﴾5﴿....अल्लाह तबारक व तआ़ला का फ़रमाने आ़लीशान है :

وَتِلْكَ الْاَمْثَالُ نَضْرِبُهَا لِلنَّاسِ ۚ وَمَا يَعْقِلُهَاۤ اِلَّا الْعٰلِمُوْنَ ﴿۴۳﴾ (پ۲۰، العنکبوت:۴۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और येह मिषालें हम लोगों के लिये बयान फ़रमाते हैं और इन्हें नहीं समझते मगर इ़ल्म वाले।

﴾6﴿....सरवरे काइनात, शाहे मौजूदात صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का इरशादे नूरबार है कि "बा'ज़ उ़लूम पोशीदा ख़ज़ानों की त़रह़ मख़्फ़ी हैं जिन्हें मा'रिफ़ते ख़ुदावन्दी रखने वाले ही जानते हैं।"(5)

﴾7﴿....हुज़ूर नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है कि "अगर तुम वोह जानते जो मैं जानता हूं तो कम हंसते और ज़ियादा रोते।"(6)

ग़ौर फ़रमाइये कि अगर येह ऐसा राज़ न होता जिसे अ़वाम की समझ से बाला तर होने या किसी और वजह की बिना पर ज़ाहिर करने से मन्अ़ फ़रमा दिया गया तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने सहाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن पर क्यूं ज़ाहिर न फ़रमाया ? ह़ालांकि इस बात में तो कोई शक नहीं कि अगर हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم येह राज़ सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان के सामने बयान फ़रमाते तो वोह ज़रूर इस की तस्दीक़ करते।

---

(1)......الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان، ذکر العلة الّتی من اجلها......الخ، الحدیث:۷۵، ج۱، ص۱۴۶، باختصارٍ۔

(2)......التذکرة الحمدونية، الباب الاوّل، ج۱، ص۱۰۔

(3)......المقاصد الحسنة، حرف الهمزة، الحدیث:۱۸۰، ص۱۰۲۔۱۰۳۔

(4)......صحیح مسلم، المقدمة، الحدیث:۵، ص۹، بتغیرقلیلٍ۔

(5)......فردوس الاخبار، باب الالف، الحدیث:۷۹۹، ج۱، ص۱۲۶۔

(6)......صحیح مسلم، کتاب صلاة الاستسقاء، الحدیث:۹۰۱، ص۴۴۸۔

《8》.....ह़िबरुल उम्माह ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने इस आयते त़य्यिबा :

اَللّٰهُ الَّذِیْ خَلَقَ سَبْعَ سَمٰوٰتٍ وَّ مِنَ الْاَرْضِ مِثْلَهُنَّؕ یَتَنَزَّلُ الْاَمْرُ بَیْنَهُنَّ

(پ۲۸،الطلاق:۱۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : अल्लाह है जिस ने सात आस्मान बनाए और इन्हीं के बराबर ज़मीनें, हुक्म इन के दरमियान उतरता है।

के मुतअ़ल्लिक़ इरशाद फ़रमाया कि "अगर मैं इस की तफ़्सीर बयान करता तो तुम मुझे संगसार (या'नी पथ्थर मार कर हलाक) कर देते।" एक रिवायत में है कि "अगर मैं इस की तफ़्सीर बयान करता तो तुम मुझे काफ़िर क़रार देते।"(1)

《9》.....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि "बारगाहे रिसालत से मुझे दो त़रह़ के इ़ल्म अ़त़ा हुए एक को तो मैं ने ज़ाहिर कर दिया अगर दूसरा भी ज़ाहिर कर दूं तो मेरी गर्दन काट दी जाए।"(2)

《10》....ह़ुज़ूर नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "अबू बक्र सिद्दीक़ की तुम पर फ़ज़ीलत की वजह नमाज़ व रोज़े की कषरत नहीं बल्कि वोह राज़ है जो इन के सीने में वदीअ़त किया गया है।"(3)

बिला शुबा वोह राज़ दीनी उसूलों के मुतअ़ल्लिक़ ही था इस से ख़ारिज न था और दीनी उसूलों के मुतअ़ल्लिक़ उमूर अपने ज़ाहिरी मा'ना के ए'तिबार से दीगर सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن पर मख़्फ़ी न थे।

《11》....ह़ज़रते सय्यिदुना सह्ल तुस्तरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं कि "ह़क़ीक़ी आ़लिम को तीन क़िस्म के उ़लूम नसीब होते हैं : (1)....इ़ल्मे ज़ाहिर जिसे वोह सिर्फ़ अहले ज़ाहिर पर ज़ाहिर करता है। (2)....इ़ल्मे बात़िन जिसे वोह सिर्फ़ अहले बात़िन पर ज़ाहिर करता है। (3)....वोह इ़ल्म जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस आ़लिम के दरमियान राज़ है, जिसे न तो वोह अहले ज़ाहिर पर ज़ाहिर करता है और न ही अहले बात़िन को इस पर आगाह करता है।"(4)

《12》....बा'ज़ आ़रिफ़ीन का क़ौल है कि रबूबिय्यत के राज़ों को ज़ाहिर करना कुफ़्र है।

---

1 ......قوت القلوب، الفصل الثانی والثلاثون فیه شرح مقامات الیقین، ج ۱، ص ۴۲۱۔

2 ......صحیح البخاری، کتاب العلم، باب حفظ العلم، الحدیث:۱۲۰، ج ۱، ص ۶۳۔

3 ......المقاصد الحسنة، حرف المیم، الحدیث:۹۷۰، ص ۳۷۶۔

4 ......قوت القلوب، الفصل الثالث والثلاثون فی ذکردعائم الاسلام......الخ، ج ۲، ص ۱۴۸۔

﴾13﴿....एक आ़रिफ़ फ़रमाते हैं : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का एक राज़ ऐसा भी है कि अगर ज़ाहिर हो जाए तो नबुव्वत ही बाति़ल हो जाए और नबुव्वत का एक राज़ ऐसा है कि अगर वोह खुल जाए तो इ़ल्म बाति़ल हो जाए और उ़-लमाए रब्बानिय्यीन का एक राज़ ऐसा है कि अगर वोह इसे ज़ाहिर कर दें तो अह़कामे शरअ़ बाति़ल हो जाएं।"(1)

मोमिने कामिल :

इस क़ौल के क़ाइल बुज़ुर्ग की अगर येह मुराद न हो कि कमज़ोर लोग अ़क़्ल व फ़हम की कमी के सबब नबुव्वत के अहल नहीं होते तो जो कुछ उन्हों ने ज़िक्र किया वोह सह़ीह़ नहीं बल्कि सह़ीह़ येह है कि इस में तनाक़ुज़ नहीं कि मोमिने कामिल वोह है जिस की मा'रिफ़त का नूर, उस की परहेज़गारी के नूर को न बुझाए और परहेज़गारी की अस्ल नबुव्वत है।

एक सुवाल और इस का जवाब :

मज़्कूरा आयात व अह़ादीष में तावील होगी। लिहाज़ा हमारे सामने वाज़ेह़ करो कि उ़लूम के ज़ाहिर व बाति़न के इख़्तिलाफ़ से क्या मुराद है? अगर येह हो कि बाति़न ज़ाहिर के मुख़ालिफ़ है तो येह शरीअ़त को बाति़ल करने और उन लोगों की ताईद करने के मुतरादिफ़ है जो कहते हैं कि ह़क़ीक़त शरीअ़त के ख़िलाफ़ है। ह़ालांकि येह क़ौल कुफ़्र है क्यूंकि ज़ाहिरी अह़काम को शरीअ़त और बाति़नी अह़काम को ह़क़ीक़त कहते हैं और अगर येह कहा जाए कि बाति़न ज़ाहिर के मुख़ालिफ़ व मुतज़ाद नहीं तो फिर उ़लूम का ज़ाहिर व बाति़न एक ही हुवा और इस की ज़ाहिरी व बाति़नी तक़्सीम बे मा'ना हो जाएगी। नीज़ शरीअ़त का कोई राज़ ऐसा न रहेगा जिसे ज़ाहिर न किया जा सके बल्कि पोशीदा और ज़ाहिर एक ही होगा।

येह सुवाल एक बड़े अम्र को ह़रकत देने, इ़ल्मे मुकाशफ़ा की त़रफ़ ले जाने और अस्ल मक़्सूद या'नी इ़ल्मे मुआ़मला से हटाने वाला है जिसे इस किताब में बयान करने का इरादा है। हमारे ज़िक्र कर्दा अ़क़ाइद का तअ़ल्लुक़ दिल के आ'माल से है जिन्हें क़बूल करना और सच्चे दिल से इन की तस्दीक़ करना हम पर लाज़िम है। येह लाज़िम नहीं कि इन की ह़क़ीक़तों तक रसाई पाएं क्यूंकि अ़वामुन्नास को इस अम्र का मुकल्लफ़ नहीं बनाया गया। अगर अ़क़ाइद का तअ़ल्लुक़ आ'माल से न होता तो इन्हें इस किताब में बयान न किया जाता और अगर इन का तअ़ल्लुक़

(1) قوت القلوب، الفصل الثالث والثلاثون في ذكر دعائم الاسلام……الخ، ج٢، ص١٤٧۔

ज़ाहिर दिल से न होता बल्कि बातिन से होता तो इन्हें इस किताब के पहले हिस्से में ज़िक्र न किया जाता। क्यूंकि ह़क़ीक़त का खुल जाना तो दिल और इस के बातिन के राज़ की सिफ़त है। लेकिन जब कलाम से येह शुबा पैदा हुवा कि ज़ाहिर बातिन के ख़िलाफ़ है तो इस शुबे के इज़ाले के लिये मुख़्तसर वज़ाहत की ज़रूरत पेश आई। लिहाज़ा जो कहे कि ह़क़ीक़त शरीअ़त के ख़िलाफ़ या ज़ाहिर बातिन के मुतज़ाद है तो वोह शख़्स ईमान की ब निस्बत कुफ़्र के ज़ियादा क़रीब है।

ख़वास के असरार की अक़्साम :

जिन असरार का इदराक सिर्फ़ मुक़र्रबीन के लिये ख़ास है, दीगर उ़-लमा इन के साथ शरीक नहीं और इन्हें इन राज़ों को फ़ाश करने की भी इजाज़त नहीं। ऐसे असरार की पांच अक़्साम हैं :

﴾1﴿.....कोई शै ज़ाती तौर पर बहुत बारीक और अ़वाम की समझ से बाला तर हो, जिसे सिर्फ़ ख़वास ही समझ सकते हैं और इन ख़वास पर भी लाज़िम आता है कि ना अहल पर इस शै के राज़ को फ़ाश न करें। वरना वोह कम अ़क़्ली और ना समझी की बिना पर फ़ितने में मुब्तला हो सकते है। इसी त़रह़ "रूह़ के राज़ को भी छुपाया जाएगा जिसे ज़ाहिर करना रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को भी मन्अ़ था।"[1] क्यूंकि ह़क़ीक़ते रूह़ के इदराक व तसव्वुर तक अ़वाम की समझ और ख़याल को रसाई नहीं। किसी को वस्वसा न आए कि हुज़ूर नबिय्ये ग़ैब दान صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को ह़क़ीक़ते रूह़ का इ़ल्म न था (बल्कि ब अ़त़ाए रब्बुल इ़ज़्ज़त आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ह़क़ीक़ते रूह़ का भी इ़ल्म रखते हैं) क्यूंकि जिसे ह़क़ीक़ते रूह़ का इ़ल्म नहीं उसे अपने नफ़्स की मा'रिफ़त भी ह़ासिल नहीं और जिसे अपने नफ़्स की मा'रिफ़त नहीं वोह मा'रिफ़ते रब्ब कैसे पा सकता है? और येह भी हो सकता है कि इन असरार से बा'ज़ औलिया व उ़-लमा को भी ह़िस्सा मिल जाए अगर्चे वोह नबी नहीं होते लेकिन आदाबे शरीअ़त का पास रखते हैं और जिस मस्अले में शरीअ़त ख़ामोश है वोह भी इस में ख़ामोश रहते हैं। बल्कि सिफ़ाते बारी तआ़ला में कुछ बातें मख़्फ़ी हैं जहां अकषर लोगों की अ़क़्ल नहीं पहुंच सकती। प्यारे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इन सिफ़ात मषलन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का इ़ल्म व क़ुदरत वग़ैरा के सिर्फ़ ज़ाहिरी मा'ना बयान फ़रमाए। जिसे लोगों ने एक मुनासिब त़रीक़े पर समझा और ख़ुद को ह़ासिल इ़ल्म व क़ुदरत जैसी सिफ़ात के मुशाबेह जाना क्यूंकि मख़्लूक़ को भी कुछ सिफ़ात की अ़त़ा है जिन्हें इ़ल्म व क़ुदरत का नाम दिया जाता है। इस पर क़ियास कर के इ़ल्म व क़ुदरते इलाही को ख़याल किया।

---

[1]......صحیح مسلم، کتاب صفۃ القیامۃ......الخ، باب سوال الیہود النبی......الخ، الحدیث:۲۷۹۴، ص۱۵۰۱۔

अगर आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ऐसी सिफ़ाते इलाहिया को बयान फ़रमाते जिन के मुशाबेह सिफ़ात मख़्लूक़ के पास न होतीं तो वोह सिफ़ाते बारी तआ़ला को न समझ पाते। मिषाल के तौ़र पर किसी बच्चे या इ़न्नीन के सामने जिमाअ़ की लज़्ज़त बयान की जाए तो वोह इस की ह़क़ीक़त से ना बलद रहेगा और इसे किसी खाने के ज़ाइक़े की त़रह़ समझेगा।

अल्लाह عَزَّ وَجَلّ और मख़्लूक़ के इ़ल्म में फ़र्क़ :

याद रहे ! अल्लाह عَزَّ وَجَلّ के इ़ल्मे क़ुदरत और मख़्लूक़ के इ़ल्म व क़ुदरत के दरमियान फ़र्क़, खाने और जिमाअ़ की लज़्ज़त के दरमियान फ़र्क़ से कहीं ज़ियादा है। बहर ह़ाल ! इन्सान अव्वलन अपनी ज़ात और अपनी मौजूदा या साबिक़ा सिफ़ात को समझता है फिर इस पर क़ियास कर के मज़ीद अश्या की जान पहचान ह़ासिल करता है फिर इस बात की तस्दीक़ करता है कि सिफ़ाते रब्ब और सिफ़ाते अ़ब्द में शर्फ़ो कमाल के ए'तिबार से बहुत फ़र्क़ है। बशरी त़ाक़त सिर्फ़ इतनी है कि वोह अपनी ज़ात में षाबित शुदा फ़े'ल और इ़ल्म व क़ुदरत वग़ैरा जैसी सिफ़ात को अल्लाह عَزَّ وَجَلّ के लिये इस फ़र्क़ व यक़ीन के साथ षाबित माने कि वोह इन सिफ़ात में बुज़ुर्ग व बरतर और अक्मल तरीन है जब कि इन्सान की इन्तिहाई रसाई अपनी ज़ात तक ही मह़दूद होती है, रब्ब तआ़ला के लिये मुख़्तस बुज़ुर्गी तक रसाई बन्दे को ह़ासिल नहीं। इसी वजह से सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "لَا اُحْصِی ثَنَاءً عَلَیْكَ كَمَا اَثْنَیْتَ عَلٰی نَفْسِكَ" या'नी (या अल्लाह عَزَّ وَجَلّ) मैं तेरी ऐसी ह़म्दो षना नहीं कर सकता जैसी ह़म्दो षना तू अपने लिये करता है।"[1]

इस रिवायत का येह मत़लब नहीं कि जो कुछ मैं जानता हूं इसे बयान नहीं कर सकता बल्कि येह कि जलालत व अ़ज़मते इलाही को कामिल तौ़र पर न जानने का मो'तरिफ़ हूं। इसी बिना पर बा'ज़ आ़रिफ़ीन कहते हैं कि "अल्लाह عَزَّ وَجَلّ की ह़क़ीक़त को वोह ख़ुद ही जानता है और कोई नहीं जानता।"[2]

अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं कि "तमाम ता'रीफ़ें उस ख़ुदा के लिये हैं जिस ने अपनी मा'रिफ़त की त़रफ़ मख़्लूक़ को राह नहीं दी बल्कि उन्हें इस से आ़जिज़ रखा।"[3]

अब हम अपनी गुफ़्तगू को मक़्सूद की त़रफ़ लाते हैं कि असरार व रुमूज़ की एक क़िस्म वोह है जिस का इदराक अ़वामुन्नास के बस से बाहर है। रूह़ और सिफ़ाते बारी तआ़ला के

---

1 صحیح مسلم، کتاب الصلاۃ، باب مایقال فی الرکوع والسجود، الحدیث:۴۸۶، ص ۲۵۲۔

2 روح البیان، الجزء الخامس والعشرون، سورۃ الشوری، ج۸، ص ۲۹۴۔

3 الرسالۃ القشیریۃ، باب التوحید، ص ۳۳۲، "سبحان" بدلہ "الحمدللّٰہ"۔

असरार इसी क़िस्म से मुतअ़ल्लिक़ हैं और येह ह़दीषे पाक भी शायद इसी त़रफ़ मुशीर (इशारा करती) है कि "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नूर के 70 ह़िजाबात हैं अगर वोह इन्हें हटा दे तो इस की तजल्लियात ताह़द्दे निगाह सब कुछ जला दें।"(1)

बे दीनी का बाइ़ष :

﴾1﴿....(मुक़र्रबीन के साथ ख़ास असरार में से दूसरी क़िस्म) वोह पोशीदा उमूर जो बज़ाते खुद क़ाबिले फ़हम हैं। अ़क़्ल की उन तक रसाई है लेकिन अम्बिया व औलिया को इन उमूर के बयान की इजाज़त नहीं होती क्यूंकि अकषर लोग इन उमूर का बयान सुन कर नुक़्सान उठाते हैं लेकिन अम्बिया व औलिया इस नुक़्सान से मह़फ़ूज़ रहते हैं जैसे मस्अलए तक़्दीर का राज़, अहले इल्म ह़ज़रात को इस राज़ का इफ़्शा (ज़ाहिर करना) मन्अ़ है। क्यूंकि आ़म मुशाहदा है कि बा'ज़ ह़क़ीक़तों का बयान बा'ज़ लोगों के लिये बाइ़षे नुक़्सान है जैसे गोबर के कीड़े को गुलाब की ख़ुश्बू और चमगादड़ की आंखों को सूरज की रोशनी ज़रर देती है। नीज़ येह क़ौल बिल्कुल ह़क़ है कि कुफ़्र, ज़िना गुनाह और दीगर तमाम बुराइयां अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के हुक्म, इरादा और मशिय्यत से हैं मगर इस से बा'ज़ लोग फ़ितने में पड़ेंगे और गुमान करेंगे कि येह बात ख़िलाफ़े ह़िक्मत, बे वुक़ूफ़ी की अ़लामत और बुराई व ज़ुल्म पर रिज़ामन्दी की निशानी है। इब्ने रावन्दी और दीगर ज़लील लोगों की बे दीनी का सबब इसी त़रह़ की बातें बनीं।

इसी त़रह़ राज़े तक़्दीर का इफ़्शा कई लोगों को इस शुबे में डाल सकता है कि अल्लाह तआ़ला आ़जिज़ है (مَعَاذَ الله) क्यूंकि अ़वाम उन बातों को समझने से क़ासिर है जिन से इस शुबे का इज़ाला किया जा सके। क़ियामत के मुतअ़ल्लिक़ अगर कोई शख़्स कहे कि वोह एक हज़ार साल या इस से कुछ अ़र्से पहले या बा'द वाक़ेअ़ होगी तो इस की बात बिल्कुल मा'क़ूल है, लेकिन बन्दों की मस्लेह़त और अन्देशए ज़रर के पेशे नज़र इस मुद्दत को बयान नहीं किया गया क्यूंकि क़ियामत आने में अगर ज़ियादा अ़र्सा बाक़ी होता तो लोग अ़ज़ाब में ताख़ीर को दलील बना कर ग़फ़्लत शिआ़र हो जाते और अगर इल्मे इलाही में क़ियामत का वुक़ूअ़ जल्दी होता और लोगों को येह बात बता दी जाती तो वोह ज़ियादा ख़ौफ़ में मुब्तला और आ'माल से रू गर्दां हो जाते और निज़ामे दुन्या ख़राब हो जाता। मज़्कूरा बयान अगर सह़ीह़ और दुरुस्त सम्त पर हो तो दूसरी क़िस्म की मिषाल बन सकता है।

﴾3﴿.....(मुक़र्रबीन के साथ ख़ास असरार में से तीसरी क़िस्म) किसी चीज़ का सराह़तन ज़िक्र अगर्चे अन्देशए ज़रर से ख़ाली और क़ाबिले फ़हम हो, इस के बा वुजूद उसे इशारों कनायों में

---

1 ......صحیح مسلم، کتاب الایمان، باب فی قوله علیه السلام......الخ، الحدیث:۱۷۹، ص ۱۰۹، باختصارٍ۔

बयान करना ताकि वोह चीज़ सामेअ़ के दिल में ज़ियादा अषर करे और येही मस्लेह़त वाज़ेह़ भी हो। मषलन कोई कहे : "मैं ने फुलां शख़्स को ख़िन्ज़ीरों के गले में मोतियों के हार डालते देखा" और इस क़ौल से येह बताना चाहे कि "फुलां शख़्स इल्मो ह़िक्मत के मोती ना अहलों को लुटा रहा है" येह क़ौल सुनने वाला आ़म शख़्स इस का ज़ाहिरी मा'ना मुराद ले सकता है लेकिन ज़ीरक शख़्स जब उस शख़्स के मुतअ़ल्लिक़ सुने और देखेगा कि उस के पास मोती हैं न ख़िन्ज़ीर तो वोह इस क़ौल के बात़िनी मा'ना और राज़ को पा लेगा। ऐसे मआ़नी और असरार को समझने के सिलसिले में लोगों की ह़ालत मुख़्तलिफ़ होती है।

दरज़ी और जुलाहा :

इसी मफ़्हूम को शाइ़र ने यूं बयान किया है :

رَجُلَانِ خَيَّـــاطٌ وَآخَــرُ حَــائِكُ   مُتَقَـابِلَانِ عَلَـى السَّمَـاكِ الْاَعْـزَلِ

لَا زَالَ يَـنْسُـجُ ذَاكَ خِـرْقَـةَ مُـدْبِـرٍ   وَيَـخِيْـطُ صَـاحِبُـهٗ ثِيَـابَ الْـمُقْبِـلِ

तर्जमा : दो आदमी जिन में से एक दरज़ी और दूसरा जुलाहा है दोनों आस्माने बाला पर एक दूसरे के मुक़ाबिल हैं। एक हमेशा बद बख़्तों के लिबास बुनता और दूसरा नेकूकारों के लिबास सीता है।

शाइ़र ने सआ़दत व शक़ावत जैसे आस्मानी अस्बाब को दो कारीगरों से ता'बीर किया। येह है वोह क़िस्म जिस में बात को इस अन्दाज़ से बयान किया जाए कि इस में वोही मा'ना या उस जैसा मफ़्हूम पाया जाए।

"मस्जिद सुकड़ती है" से मुराद :

ऐसा ही मफ़्हूम इस ह़दीषे पाक में भी है : "اِنَّ الْمَسْجِدَ لَيَنْزَوِى مِنَ النُّخَامَةِ كَمَا تَنْزَوِى الْجِلْدَةُ عَلَى النَّارِ" या'नी रींठ से मस्जिद ऐसे सुकड़ती है जैसे आग से चमड़ा।"[1]

ह़ालांकि ज़ाहिर में ऐसा नहीं होता कि रींठ की वजह से सेह़ने मस्जिद सुकड़ता हो बल्कि इस फ़रमान का मफ़्हूम येह है कि रूह़े मस्जिद क़ाबिले ता'ज़ीम है, यहां रींठ डालना तौहीन और मा'नए मस्जिदिय्यत के ख़िलाफ़ है जिस त़रह़ आग चमड़े के अज्ज़ा के ख़िलाफ़ है।

गधे जैसा मुंह :

एक और ह़दीषे पाक में है : "क्या इमाम से पहले सर उठाने वाला इस बात से नहीं डरता कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के सर को गधे के सर जैसा बना दे।"[2]

---

1 ......المصنف لابن ابی شیبة، کتاب صلاة التطوع والامامة، الحدیث:۹، ج۲، ص۲۶۰۔

2 ......صحیح البخاری، کتاب الاذان، باب اثم من رفع راسه قبل الامام، الحدیث: ۶۹۱، ج۱، ص۲۴۹۔

(रुकूअ़ व सुजूद में इमाम से आगे बढ़ने वाले मुक़्तदी के साथ) इस ह़दीष के ज़ाहिरी मा'ना के मुत़ाबिक़ सूरते ह़ाल कभी पेश न आई।[1]

हां ! मा'नवी ए'तिबार से मुमकिन है या'नी उस आदमी का सर रंग व शक्ल के ए'तिबार से गधे के सर जैसा नहीं होता बल्कि ख़ासिय्यत या'नी बे वुक़ूफ़ी व कम अ़क़्ली में गधे जैसा हो जाता है। पस जो मुक़्तदी (रुकूअ़ व सुजूद में) इमाम से पहले सर उठाए तो उस का सर बे वुक़ूफ़ी और कम अ़क़्ली में गधे के सर जैसा है। ह़दीष शरीफ़ की मुराद येही है ह़क़ीक़तन गधे की सूरत मुराद नहीं जो अल्फ़ाज़ का ज़ाहिरी मा'ना है और दो मुतज़ाद चीज़ों को यक्जा करना मुक़्तदी की बहुत बड़ी बे वुक़ूफ़ी है कि इक़्तिदा भी करे और इमाम से आगे भी बढ़े।

मुरादी मा'ना की पहचान का त़रीक़ा :

असरार की इस क़िस्म में ज़ाहिरी मा'ना मुराद नहीं इस की पहचान के दो त़रीक़े हैं : (1) दलीले अ़क़्ली (2) दलीले शरई।

(1).....**दलीले अ़क़्ली :** यूं कि उन अल्फ़ाज़ की ज़ाहिरी मुराद पर अ़मल ना मुमकिन हो। जैसा कि इस ह़दीषे मुबारका में है : ''قَلْبُ الْمُؤْمِنِ بَيْنَ اِصْبَعَيْنِ مِنْ اَصَابِعِ الرَّحْمٰن या'नी : मोमिन का दिल रह़मान की उंगलियों में से दो उंगलियों के दरमियान है।[2]''[3] लिहाज़ा अगर क़ल्बे मोमिन को देखा जाए

1.....मुमकिन है कि ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَلِى के ज़माने तक ऐसा कोई वाक़िआ़ रूनुमा न हुवा हो इसी लिये आप ने येह फ़रमाया मगर इसे ह़क़ीक़ी मा'ना पर मह़मूल करना भी मुमकिन है चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा अ़ली बिन सुल्त़ान मुह़म्मद अल क़ारी अल मा'रूफ़ मुल्ला अ़ली क़ारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى मज़्कूरा ह़दीषे मुबारका के तह़त फ़रमाते हैं : ह़क़ीक़ी मा'ना का एह़तिमाल इस दलील की बिना पर है कि इस उम्मत में भी सूरतों का मस्ख़ होना मुमकिन है जैसा कि अ़लामाते क़ियामत के मुतअ़ल्लिक़ मरवी रिवायात में मज़्कूर है। नीज़ ऐसा षाबित भी है कि सर गधे के सर की त़रह़ हो गया। चुनान्चे, मन्क़ूल है कि ''एक मुह़द्दिष ह़दीष लेने के लिये एक बड़े मश्हूर शख़्स के पास दिमश्क़ में गए और उन के पास बहुत कुछ पढ़ा, मगर वोह पर्दा डाल कर पढ़ाते, मुद्दतों तक उन के पास बहुत कुछ पढ़ा, मगर उन का मुंह न देखा, जब ज़मानए दराज़ गुज़रा और उन्हों ने देखा कि इन को ह़दीष की बहुत ख़्वाहिश है तो एक रोज़ पर्दा हटा दिया, देखते क्या हैं कि उन का मुंह गधे का सा है, उन्हों ने कहा : ''साह़िब ज़ादे ! इमाम पर सब्क़त करने से डरो कि येह ह़दीष जब मुझ को पहुंची मैं ने इसे मुस्तबअ़द (या'नी बा'ज़ रावियों की अ़दमे सिह़्ह़त के बाइ़ष दर अज़ क़ियास) जाना और मैं ने इमाम पर क़स्दन सब्क़त की, तो मेरा मुंह ऐसा हो गया जो तुम देख रहे हो।''

(مرقاۃ المفاتیح، کتاب الصلوۃ،تحت الحدیث:۱۱۴۱، ج۳، ص۲۲۱)

2.....صحیح مسلم، کتاب القدر، باب تصریف اللّٰہ تعالی القلوب......الخ، الحدیث:۲۶۵۴، ص۱۴۲۷۔

3....मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْمَنَّان मिरआतुल मनाजीह़, जि 1, स. 99 पर इस के तह़त फ़रमाते हैं कि ''येह इबारत मुतशाबिहात में से है क्यूंकि रब्ब तआ़ला उंगलियों हाथों वग़ैरा आ'ज़ा से पाक है, मक़्सद येह है कि तमाम के दिल अल्लाह के क़ब्ज़े में हैं कि निहायत आसानी से फेर देता है, जैसे कहा जाता है तुम्हारा काम मेरी उंगलियों में है या मैं सुवालात का जवाब चुटकियों से दे सकता हूं।''

तो वहां उंगलियां नहीं मिलेंगी, जिस से मा'लूम हुवा कि उंगलियों से इशारतन कुदरत मुराद है। येह कुदरत उंगलियों का राज़ और इन की मख़्फ़ी रूह़ है। उंगलियों से कुदरत क्यूं मुराद ली ? इस लिये कि इस अन्दाज़ से इक़्तिदारे आ'ला ब ख़ूबी समझाया जा सकता है।(1) इसी त़रह़ इस आयते मुक़द्दसा में भी कुदरते इलाहिय्या को इशारतन बयान किया गया है। चुनान्चे, फ़रमाने बारी तआ़ला है :

اِنَّمَا قَوْلُنَا لِشَیْءٍ اِذَاۤ اَرَدْنٰهُ اَنْ نَّقُوْلَ لَهٗ كُنْ فَیَكُوْنُ۠ (پ۱۴، النحل:۴۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *जो चीज़ हम चाहें इस से हमारा फ़रमाना येही होता है कि हम कहें होजा वोह फ़ौरन हो जाती है।*

इस आयत से ज़ाहिरी मा'ना मुराद लेना ना मुमकिन है क्यूंकि अगर किसी शै को वुजूद से पहले लफ़्ज़े "कुन" से मुख़ात़ब किया जाए तो येह मुह़ाल है कि मा'दूम शै ख़ित़ाब कैसे समझेगी ? और अगर येह ख़ित़ाब मौजूद को है तो इसे वुजूद में लाने का क्या मत़लब ? मगर इस त़रह़ का किनाया चूंकि इन्तिहाई दर्जे की कुदरत समझाने की सलाहि़य्यत रखता है लिहाज़ा इसे इस्ति'माल में लाया गया।

(2).....**दलीले शरई :** किसी राज़ के अगर्चे ज़ाहिरी मा'ना मुराद मुमकिन हो लेकिन रिवायात बताती हों कि यहां ज़ाहिरी मा'ना मुराद नहीं।

जैसा कि इस फ़रमाने इलाही की तफ़्सीर में है :

اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَسَالَتْ اَوْدِیَةٌۢ بِقَدَرِهَا (پ۱۳، الرعد:۱۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *उस ने आस्मान से पानी उतारा तो नाले अपने अपने लाइक़ बह निकले।*

इस आयते मुबारका में पानी से मुराद कुरआने पाक और वादियों से मुराद दिल हैं। बा'ज़ दिल कुरआन का फ़ैज़ान ज़ियादा पाते हैं, बा'ज़ कम और बा'ज़ बिल्कुल ही नहीं। झाग(2)

1....मषलन चुटकियों में काम करना, उंगलियों पर नचाना जैसे मुहावरों का इस्ति'माल।

2...यहां से मज़्कूरा आयते मुबारका के अगले कुछ हिस्से की तफ़्सीर बयान की जा रही है। मुकम्मल आयते त़य्यिबा येह है :

اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَسَالَتْ اَوْدِیَةٌۢ بِقَدَرِهَا فَاحْتَمَلَ السَّیْلُ زَبَدًا رَّابِیًاؕ وَ مِمَّا یُوْقِدُوْنَ عَلَیْهِ فِی النَّارِ ابْتِغَآءَ حِلْیَةٍ اَوْ مَتَاعٍ زَبَدٌ مِّثْلُهٗؕ كَذٰلِكَ یَضْرِبُ اللّٰهُ الْحَقَّ وَ الْبَاطِلَ۬ؕ فَاَمَّا الزَّبَدُ فَیَذْهَبُ جُفَآءًۚ وَ اَمَّا مَا یَنْفَعُ النَّاسَ فَیَمْكُثُ فِی الْاَرْضِؕ كَذٰلِكَ یَضْرِبُ اللّٰهُ الْاَمْثَالَؕ (پ۱۳، الرعد:۱۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : उस ने आस्मान से पानी उतारा तो नाले अपने अपने लाइक़ बह निकले तो पानी की रौ (धार) इस पर उभरे हुए झाग उठा लाई और जिस पर आग दहकाते हैं गहना (ज़ेवर) या और अस्बाब बनाने को इस से भी वैसे ही झाग उठते हैं **अल्लाह** बताता है कि ह़क़ व बात़िल की येही मिषाल है तो झाग तो फुक कर दूर हो जाता है और वोह जो लोगों के काम आए ज़मीन में रहता है **अल्लाह** यूं ही मिषालें बयान फ़रमाता है।

से मुराद कुफ़्रो निफ़ाक़ है, क्यूंकि येह अगर्चे सत़्हे आब पर उभरा होता है लेकिन बाक़ी नहीं रह पाता जब कि हिदायत लोगों के लिये मुफ़ीद भी है और इसे बक़ा भी ह़ासिल है।

असरार की इस तीसरी क़िस्म में बा'ज़ लोगों ने मुआ़मलाते आख़िरत जैसे मीज़ाने अ़मल और पुल सिरात़ वग़ैरा में तावीलात बयान कीं, जो कि बिदअ़त हैं क्यूंकि इन तावीलात का न तो रिवायात से षुबूत मिलता है और न ही इन मुआ़मलात के ज़ाहिरी मा'ना मुराद लेना नामुमकिन है, लिहाज़ा इन्हें ज़ाहिरी मा'ना पर ही मह़्मूल किया जाएगा।

﴾4﴿.....(मुक़र्रबीन के साथ ख़ास असरार में से चौथी क़िस्म) इब्तिदाअन आदमी किसी चीज़ को इजमालन (मुख़्तसरन) जाने फिर दलील व तजरीबे से इस की तफ़्सीलात ह़ासिल करे ह़त्ता कि वोह चीज़ उस का ह़ाल बन जाए और इसे लाज़िम हो जाए। इन दोनों त़रीक़ों (या'नी मुख़्तसर और तफ़्सीली) में फ़र्क़ होगा। पहला छिलके की मिष्ल है दूसरा मग़्ज़ की त़रह़। पहला ज़ाहिर की मानिन्द है दूसरा बात़िन की मिष्ल। मिषाल के त़ौर पर कोई शख़्स अन्धेरे में या दूर से किसी को देखे तो उसे एक त़रह़ का इ़ल्म ह़ासिल हो जाता है, जब दूरी या अन्धेरा ख़त्म होता है तो पहले और दूसरे इ़ल्म में फ़र्क़ पाता है। लेकिन येह दूसरा इ़ल्म पहले से मुतज़ाद नहीं बल्कि इसे मुकम्मल करने वाला है। इ़ल्म, ईमान और तस्दीक़ भी इसी त़रह़ हैं। यूं ही इ़श्क़, बीमारी और मौत में मुब्तला होने से पहले भी इन्सान इन की ह़क़ीक़त पर यक़ीन रखता है मगर जब इन में मुब्तला होता है तो इस यक़ीन में पहले से ज़ियादा पुख़्तगी आ जाती है। बल्कि इन्सान को अपने तमाम अह़वाल ब शुमूल शहवत व इ़श्क़ की तीन मुख़्तलिफ़ ह़ालतों और तीन जुदा जुदा फ़हमों से वासित़ा पड़ता है। इस ह़ालत के वाक़ेअ़ होने से पहले, वाक़ेअ़ होते वक़्त और वाक़ेअ़ होने के बा'द इस की तस्दीक़ करना। जैसे भूक का फ़हम भूक ख़त्म होने के बा'द वैसा नहीं होता जैसा भूक की ह़ालत में था। इसी त़रह़ उ़लूमे दीनिय्या में से कोई इ़ल्म ह़ासिल किया जाए तो वोह मुकम्मल हो कर पहले की ब निस्बत बात़िन की त़रह़ हो जाता है। इसी त़रह़ सिह़्ह़त के मुतअ़ल्लिक़ जो फ़हम व इदराक मरीज़ को होता है वोह तन्दुरुस्त को नहीं होता।

असरार की इन चार अक़्साम में लोगों की समझ बूझ की क़ुव्वत आपस में मुख़्तलिफ़ होती है। लेकिन इन में कोई ऐसा बात़िन नहीं जो ज़ाहिर के ख़िलाफ़ हो बल्कि वोह ज़ाहिर को इसी त़रह़ पूरा और मुकम्मल करता है जिस त़रह़ गुदा छिलके को। इन बातों के मानने वालों को सलाम।

ज़बाने ह़ाल और ज़बाने क़ाल में फ़र्क़ और इन की मिषालें :

﴾5﴿.....(मुक़र्रबीन के साथ ख़ास असरार में से पांचवीं क़िस्म) जब ज़बाने ह़ाल को ज़बाने क़ाल से बयान किया जाता है (1) तो कम अ़क़्ल शख़्स इस बात के सिर्फ़ ज़ाहिर पर वाक़िफ़िय्यत पाता और इसे ज़ाहिरी ज़बान से बोलना ख़याल करता है जब कि ह़क़ीक़त से आशना बात की तह तक पहुंच जाता है। मषलन कोई बयान करे कि दीवार ने मीख़ से कहा : तू मुझे क्यूं चीरती है? जवाब दिया : मुझ से नहीं उस से पूछ जिस ने मुझे भी नहीं छोड़ा और मुझे भी कूट रहा है और इस पथ्थर को भी देख जो मेरे पीछे है। येह है ज़बाने ह़ाल को ज़बाने क़ाल से ता'बीर करना। क़ुरआने पाक में भी इस की मिषाल मौजूद है। चुनान्चे, इरशादे बारी तआ़ला है :

ثُمَّ اسْتَوٰۤى اِلَى السَّمَآءِ وَ هِیَ دُخَانٌ فَقَالَ لَهَا وَ لِلْاَرْضِ ائْتِیَا طَوْعًا اَوْ كَرْهًاؕ قَالَتَاۤ اَتَیْنَا طَآىٕعِیْنَ ﴿۱۱﴾ (پ۲۴،حٰم السجدۃ:۱۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : फिर आस्मान की त़रफ़ क़स्द फ़रमाया और वोह धूवां था तो उस से और ज़मीन से फ़रमाया कि दोनों ह़ाज़िर हो ख़ुशी से चाहे ना ख़ुशी से दोनों ने अ़र्ज़ की, कि हम रग़बत के साथ ह़ाज़िर हुए।

कम अ़क़्ल शख़्स मज़्कूरा आयते मुबारका से येह समझेगा कि ज़मीन व आस्मान ज़िन्दगी पाते, अ़क़्ल रखते और आवाज़ व अल्फ़ाज़ के मजमूए़ पर मुश्तमिल बात को सुनते और समझते हैं और आवाज़ व अल्फ़ाज़ के साथ ही यूं जवाब देते हैं :

اَتَیْنَا طَآىٕعِیْنَ ﴿۱۱﴾ (پ۲۴،حٰم السجدۃ:۱۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : हम रग़बत के साथ ह़ाज़िर हुए।

जब कि साह़िबे बसीरत जान लेगा कि यहां ज़बाने ह़ाल का इस्ति'माल है और इस बात से बा ख़बर किया जा रहा है कि ज़मीन व आस्मान लाज़िमन मुसख़्ख़र और मजबूर हैं। क़ुरआने पाक से इसी क़िस्म की एक और मिषाल मुलाह़ज़ा हो :

وَ اِنْ مِّنْ شَیْءٍ اِلَّا یُسَبِّحُ بِحَمْدِهٖ (پ۱۵،بنی اسراءیل:۴۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और कोई चीज़ नहीं जो उसे सराहती (ता'रीफ़ करती) हुई उस की पाकी न बोले।

इस आयत से कम फ़हम शख़्स येह समझेगा कि जामद अश्या (पथ्थर वग़ैरा) ज़िन्दा, आ़क़िल और आवाज़ व अल्फ़ाज़ के साथ बोलने पर क़ादिर हैं और तस्बीह़ पढ़ने के लिये سُبْحٰنَ اللّٰه कहती हैं। जब कि अ़क़्ल मन्द जान लेगा कि यहां (बयाने तस्बीह़ के लिये) ज़बान से

1.....या'नी बे कहे ह़ालत से ज़ाहिर होने वाले अम्र को ज़बान से कह कर बयान करना।

बोलना मुराद नहीं है बल्कि येह अश्या अपने वुजूद और ज़बाने हाल से तस्बीह करती, अपनी ज़ात से रब्ब तआला की पाकी बोलती और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की वहदानिय्यत की गवाही देती हैं। जैसा कि कहा जाता है :

وَفِىْ كُلِّ شَىْءٍ لَـهٗ اٰيَـةٌ   تَـدُلُّ عَـلٰى اَنَّـهُ الْـوَاحِـدُ

तर्जमा : हर चीज़ में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की निशानी है जो उस की वहदानिय्यत पर दलालत करती है।

इस तरह भी कहा जाता है कि "येह कारीगरी अपने बनाने वाले के हुस्ने तदबीर और कमाले इल्म की गवाही देती है।" मुराद येह नहीं कि वोह चीज़ अपनी ज़बान से गवाही देती है बल्कि इस का वुजूद और हालत गवाह बनते हैं। इसी तरह हर चीज़ ज़ाती तौर पर ऐसी हस्ती की मोहताज है जो उसे बनाए, फिर उसे और उस के अवसाफ़ को बाक़ी रखे और उसे मुख़्तलिफ़ हालतों से गुज़ारे तो वोह चीज़ें अपनी हाजत के तहत अपने ख़ालिक़ की पाकी बयान करती हैं जिसे सिर्फ़ अहले बसीरत समझ सकते हैं, न कि ज़ाहिर बीनी पर अड़े हुए लोग। इसी लिये अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया :

وَلٰكِنْ لَّا تَفْقَهُوْنَ تَسْبِيْحَهُمْ ؕ

(پ۱۵، بنی اسراءیل:۴۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *हां ! तुम इन की तस्बीह नहीं समझते।*

ज़ाहिरबीन और अहले बसीरत के इल्मी मक़ाम में फ़र्क़ :

बहर हाल कम अक़्ल बिल्कुल समझ ही नहीं सकते, जब कि मुक़र्रबीने बारगाह और जय्यिद उ-लमा अपनी अपनी अक़्ल व बसीरत के मुताबिक़ जान सकते हैं, पूरी गहराई तक इन की भी रसाई नहीं क्यूंकि हर चीज़ में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की तक़्दीस व तस्बीह पर बहुत सी शहादतें हैं जिन की ता'दाद इल्मे मुआमला बयान नहीं कर सकता। अल ग़रज़ ! येह फ़न भी उन फ़ुनून में से है जिन में ज़ाहिर बीन और अहले बसीरत के इल्मी मक़ाम में फ़र्क़ पाया जाता है और इस से वाज़ेह होता है कि ज़ाहिर व बातिन दो जुदा जुदा चीज़ें हैं। इस मक़ाम पर अहले इल्म के लिये हद से बढ़ने का रास्ता भी है और मियानारवी इख़्तियार करने का भी।

हद से बढ़ने वालों के दो गुरौह हैं :

(1)....बा'ज़ ने तावीलात करने में ग़ुलू किया (2)....बा'ज़ ने ख़त्म करने में ग़ुलू किया

हद से बढ़ने वाले :

पहला गुरौह : येह तो इस क़दर हद से बढ़ गए कि इन्हों ने तमाम या अकषर ज़ाहिरी अल्फ़ाज़ और दलाइल में तावीलात कर दीं हत्ता कि इन आयाते क़ुरआनिय्या में भी :

﴾1﴿

وَتُكَلِّمُنَآ اَيْدِيْهِمْ وَتَشْهَدُ اَرْجُلُهُمْ بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ﴿۶۵﴾ (پ۲۳، یٰس:۶۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और उन के हाथ हम से बात करेंगे और उन के पाउं उन के किये की गवाही देंगे।*

﴾2﴿

وَقَالُوْا لِجُلُوْدِهِمْ لِمَ شَهِدْتُّمْ عَلَيْنَا ؕ قَالُوْۤا اَنْطَقَنَا اللّٰهُ الَّذِيْۤ اَنْطَقَ كُلَّ شَيْءٍ (پ۲۴، حٰمٓ السجدۃ:۲۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और वोह अपनी खालो से कहेंगे तुम ने हम पर क्यूं गवाही दी वोह कहेंगी हमें **अल्लाह** ने बुलवाया जिस ने हर चीज़ को गोयाई बख़्शी।*

इसी त़रह़ मुन्कर नकीर के सुवालात मीज़ाने अ़मल पुल सिरात़ और ह़िसाबो किताब और अहले बिहिश्त व अहले नार के दरमियान होने वाली दर्जे ज़ैल गुफ़्तुगू में ज़बाने ह़ाल मुराद ली :

اَفِيْضُوْا عَلَيْنَا مِنَ الْمَآءِ اَوْ مِمَّا رَزَقَكُمُ اللّٰهُ ؕ (پ۸، الاعراف:۵۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *(दोज़ख़ी बहिश्तियों से कहेंगे) हमें अपने पानी का कुछ फ़ैज़ दो या उस खाने का जो **अल्लाह** ने तुम्हें दिया।*

दूसरा गुरोह : जिन ह़ज़रात ने तावीलात न करने में ग़ुलु किया इन में से एक ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अह़मद बिन ह़म्बल عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَوَّل भी हैं। येह इस आयते कुरआनी में भी तावील नहीं करते :

كُنْ فَيَكُوْنُ﴿۴۰﴾ (پ۱۴، النحل:۴۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *हो जा वोह फ़ौरन हो जाती है।*

इन का ख़याल है कि येह ख़ित़ाब हर लम्ह़ा ह़ुरूफ़ और आवाज़ के साथ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से अश्या की ता'दाद के मुत़ाबिक़ होता रहता है ह़त्ता कि ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अह़मद बिन ह़म्बल عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَوَّل के बा'ज़ शागिर्दों से येह भी सुना गया है कि तावील सिर्फ़ अह़ादीषे मुबारका के इन तीन जुम्लों में होगी :

(1)....اَلْحَجَرُ الْاَسْوَدُ يَمِيْنُ اللّٰهِ فِيْ اَرْضِهٖ या'नी : ह़जरे अस्वद **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ज़मीन में उस का दायां हाथ है। [1]

---

1 ......الکامل فی ضعفاء الرجال، اسحاق بن بشر:۱۷۲، ج۱، ص۵۵۷۔
المصنف لعبد الرزاق، باب الرکن من الجنۃ، الحدیث:۸۹۵۵، ج۵، ص۲۸، بدون لفظ "الاسود"۔

(2)....قَلْبُ الْمُؤْمِنِ بَيْنَ اِصْبَعَيْنِ مِنْ اَصَابِعِ الرَّحْمٰن या'नी : मोमिन का दिल रह़मान की उंगलियों में से दो उंगलियों के दरमियान है।[1]

(3)....اِنِّیْ لَاَجِدُ نَفَسَ الرَّحْمٰنِ مِنْ جَانِبِ الْیَمَن या'नी मुझे यमन से ख़ुश्बूए रह़मान आती है।[2]

इसी त़रह़ अस्ह़ाबे ज़वाहिर भी तावीलात के ह़क़ में नहीं।

तावील करने से रोकने की वजह :

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अह़मद बिन ह़म्बल عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَوَّل के मुतअ़ल्लिक़ हमारा हुस्ने ज़न है कि वोह इस बात को अच्छी त़रह़ जानते थे कि इस्तवा से मुराद क़रार पकड़ना और नुज़ूल से मुराद जिस्मानी त़ौर पर उतरना नहीं है। आप ने मख़्लूक़ की इस्लाह़ और तावीलात के दरवाज़े को बन्द करने के लिये तावील से मन्अ़ फ़रमाया क्यूंकि अगर तावीलात की खुली छूट दे दी जाए तो मुआ़मला गहरा हो जाएगा, हाथ से निकल जाएगा और ह़द से बढ़ जाएगा क्यूंकि जो मुआ़मला ह़द्दे ए'तिदाल से निकल जाए उसे संभालना मुश्किल हो जाता है। लिहाज़ा आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه के इस तर्ज़े अ़मल में कोई मुज़ायक़ा नहीं, इस पर दीगर अस्लाफ़े किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام की ह़िमायत भी ह़ासिल है। वोह फ़रमाते थे कि लफ़्ज़ों को इसी त़रह़ रहने दो जिस त़रह़ वोह वारिद हुए हैं।

लफ़्ज़े "इस्तवा" के मुतअ़ल्लिक़ अ़क़ीदा :

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْخَالِق से किसी ने "**इस्तवा**"[3] का मफ़्हूम दरयाफ़्त किया तो फ़रमाया : लफ़्ज़े इस्तवा का मा'ना मा'लूम है, लेकिन येह इस्तवा किस त़रह़ का है? इस की हमें ख़बर नहीं, बहर ह़ाल इस पर ईमान लाना ज़रूरी है और इस के मुतअ़ल्लिक़ पूछना बिदअ़त है।"[4]

---

1 ....صحیح مسلم، کتاب القدر، باب تصریف اللّٰہ تعالٰی القلوب......الخ، الحدیث:۲۶۵۴، ص۱۴۲۷۔

2 ....المسند للامام احمد بن حنبل، مسند ابی ہریرۃ، الحدیث:۱۰۹۷۸، ج۳، ص۶۲۹، بتغیرِالفاظٍ۔

3 .... (پ۸، الاعراف:۵۴) ثُمَّ اسْتَوٰی عَلَی الْعَرْشِ और (پ۱۶ طٰہٰ:۵) اَلرَّحْمٰنُ عَلَی الْعَرْشِ اسْتَوٰی में वारिद लफ़्ज़ "इस्तवा" के मुतअ़ल्लिक़ सुवाल था।

4 ....تذکرۃ الحفاظ للذہبی، الطبقۃ الخامسۃ، ج۱، ص۱۵۵

मियानारवी इख़्तियार करने वाला गुरौह :

अशाइरा : ने राहे ए'तिदाल इख़्तियार की यूं कि इन्हों ने सिफ़ाते ख़ुदावन्दी से मुतअ़ल्लिक़ हर अम्र में तावीलात को रवा (जाइज़) जाना और उमूरे आख़िरत के मुतअ़ल्लिक़ात को इन के ज़ाहिरी मा'ना पर रखा और इन में तावील करने से मन्अ़ किया।

तावीलात के मुतअ़ल्लिक़ मो'तज़िला और फ़लासिफ़ा का नज़रिय्या :

मो'तज़िला : मज़कूरा सब गुरौहों से आगे बढ़ गए, उन्हों ने सिफ़ाते इलाहिय्या में से रुविय्यत और उस के समीअ़ बसीर होने में तावील की, वोह मे'राजे रसूल में भी तावील करते हैं और कहते हैं : मे'राज जिस्मानी नहीं थी। अ़ज़ाबे क़ब्र, मीज़ाने अ़मल, पुल सिरात़ और तमाम उख़रवी उमूर में तावील करते हैं। हां ! इस बात का इक़रार करते हैं कि मरने के बा'द उठना है और जन्नत एक ह़क़ीक़त है, जहां खाना पीना, निकाह़ करना और लुत़्फ़ उठाना है। वोह जहन्नम की ह़क़ीक़त को भी तस्लीम करते और मानते हैं कि इस का एक मह़सूस वुजूद है जिस में खालों को जलाने और चरबियों को पिघलाने की सलाहिय्यत मौजूद है।

फ़लासिफ़ा तो **मो'तज़िला** से भी आगे निकल गए। उन्हों ने हर उस बात में तावील की जिस का तअ़ल्लुक़ रोज़े आख़िरत से है। उन का अ़क़ीदा है कि तकालीफ़ व लज़्ज़ात मह़ज़ अ़क़्ली और रूह़ानी हैं। वोह मरने के बा'द दोबारा ज़िन्दा होने के मुन्किर हैं। उन का नज़रिय्या है कि नफ़्स बाक़ी रहेंगे और इन्हें मिलने वाली जज़ा या सज़ा आ'ज़ा को मह़सूस न होगी।

क़ौले फ़ैसल :

बहर ह़ाल येह सब फ़िर्क़े ह़द से बढ़े हुए हैं। इन फ़िर्क़ों के ह़द से बढ़ने और ह़नाबिला के तावील को बिल्कुल छोड़ देने के बीच एक मो'तदल और मख़्फ़ी रास्ता है जिस पर सिर्फ़ वोही मुत्तलअ़ हो सकते हैं जिन्हें मह़ज़ सुन कर नहीं बल्कि नूरे इलाही से उमूर के इदराक की तौफ़ीक़ ह़ासिल होती है। इन ह़ज़रात पर जब उमूर के असरार की ह़क़ीक़त मुनकशिफ़ होती है तो वोह सुनी हुई बातों और इस बारे में वारिद होने वाले अल्फ़ाज़ की त़रफ़ तवज्जोह करते हैं। पस जो इन ह़ज़रात के मुशाहदे किये हुए नूरे यक़ीन के मुवाफ़िक़ हो उसे बर क़रार रखते हैं और जो इस के ख़िलाफ़ हो उस में तावील करते हैं और जो ह़ज़रात इन उमूर पर मह़ज़ सुनने के वासित़े से मुत्तलअ़ होते हैं वोह न तो षाबित क़दम होते हैं और न अपने मौक़िफ़ से मुत़मइन। मह़ज़ सुनने पर इक्तिफ़ा करने वाले ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अह़मद बिन ह़म्बल عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَوَّل के मक़ाम के लाइक़ हैं।

मज़्कूरा तमाम बहूष का मक़्सूद :

अब चूंकि इन उमूर में ह़द्दे ए'तिदाल की मज़ीद वज़ाह़त इल्मे मुकाशफ़ा में दाखि़ल और त़वील कलाम की मोह़ताज है। लिहाज़ा हम इस की गहराई में नहीं जाते। हमारा मक़्सूद सिर्फ़ ये षाबित करना था कि ज़ाहिर व बात़िन आपस में मुत़ाबक़त रखते हैं मुखा़लफ़त नहीं। तो मज़्कूरा (मुक़र्रबीन के साथ ख़ास, असरार की) पांच अक़्साम के बयान ने बहुत से उमूर मुन्कशिफ़ कर दिये। अ़क़ाइद का जिस क़दर बयान हम तह़रीर कर चुके, हमारे ख़याल में अ़वाम के लिये इतना काफ़ी है कि अव्वलन इस से ज़ियादा का हुक्म नहीं दिया जाता। हां ! जब बद मज़्हबिय्यत फैलने का अन्देशा हो तो फिर अ़क़ाइद के अगले दर्जे की त़रफ़ बढ़ने की ज़रूरत होगी जिस में मुख़्तसर और रोशन दलीलें हों, ज़ियादा गहराई न हो।

हम इस किताब में वोह रोशन दलाइल लिखते और सिर्फ़ इसी पर इक्तिफ़ा करते हैं जो हम ने अहले क़ुद्स के लिये अपने रिसाले ''اَلرِّسَالَةُ الْقُدْسِيَّةُ فِي قَوَاعِدِ الْعَقَائِد'' में लिखा है। येह रिसाला इस किताब की तीसरी फ़स्ल में मज़्कूर है।

....दो दिन और दो रातें....

__दा'वते इस्लामी__ के इशाअ़ती इदारे __मक्तबतुल मदीना__ की मत़बूआ़ 84 सफ़्ह़ात पर मुश्तमिल किताब, __''दुन्या से बे रग़बती और उम्मीदों की कमी''__ सफ़्ह़ा 76 पर है : ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہُ इरशाद फ़रमाते हैं : ''क्या मैं तुम्हें उन दो दिनों और दो रातों के बारे में न बताऊं जिन की मिष्ल मख़्लूक़ ने नहीं सुनी : (1)....एक दिन वोह है कि जब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से आने वाला तेरे पास रिज़ाए इलाही का मुज़्दा ले कर आएगा या उस की नाराज़ी का पैग़ाम। (2).....दूसरा दिन वोह है कि जब तू अपना नामए आ'माल लेने के लिये बारगाहे इलाही में ह़ाज़िर होगा और वोह नामए आ'माल तेरे दाएं हाथ में दिया जाएगा या बाएं में। (और दो रातों में से) : (1)....एक रात वोह है जो मय्यित अपनी क़ब्र में गुज़ारेगी और इस से पहले इस ने ऐसी रात कभी नहीं गुज़ारी होगी। (2)....दूसरी रात वोह है जिस की सुब्ह़ को क़ियामत का दिन होगा और फिर उस के बा'द कोई रात नहीं आएगी।''

तीसरी फ़स्ल : اَلرِّسَالَۃُ الْقُدْسِیَّۃُ فِی قَوَاعِدِ الْعَقَائِد

येह रिसाला कुद्स वालों के लिये मुरत्तब किया गया है जो अ़क़ाइदे अहले सुन्नत के रोशन दलाइल पर मुश्तमिल है।

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْم

सब ख़ूबियां **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये जिस ने अहले सुन्नत व जमाअ़त को अन्वारे यक़ीन दे कर सब से मुमताज़ कर दिया। अहले ह़क़ को अरकाने दीन की त़रफ़ दा'वत देने के लिये मुन्तख़ब फ़रमाया। इन्हें बद मज़्हबों की बदमज़्हबी और गुमराहों की गुमराही से बचा कर रसूलों के सरदार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم और सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْھِمْ اَجْمَعِیْن की इत्तिबाअ़ व इत़ाअ़त करने की तौफ़ीक़ बख़्शी और उन के लिये बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَھُمُ اللّٰہُ الْمُبِیْن के त़रीक़ए कार पर चलना आसान कर दिया ह़त्ता कि इन्हों ने अ़क़्ली तक़ाज़ों को मज़्बूत़ रस्सी से थाम लिया और अस्लाफ़े किराम رَحِمَھُمُ اللّٰہُ السَّلَام के अ़क़ाइद व आ'माल को वाज़ेह़ रास्ते के ज़रीए इख़्तियार किया। फिर अ़क़्ली नताइज और मन्क़ूल शरई अह़काम सब को क़बूल किया और षाबित किया कि कलिमए त़य्यिबा لَآاِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰہ जिसे पढ़ना अगर्चे ज़रूरी है लेकिन येह पढ़ना उस वक़्त तक बे फ़ाइदा और ला ह़ासिल है जब तक उन उसूल व अरकान को न जान लिया जाए जिन पर येह कलिमा मुन्ह़सिर है। अहले ह़क़ इस बात से अच्छी त़रह़ वाक़िफ़ हैं कि कलिमए तौह़ीद व रिसालत अगर्चे अल्फ़ाज़ में मुख़्तसर है लेकिन इस के मआ़नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ज़ात व सिफ़ात व अफ़्आ़ल और रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की सदाक़त को षाबित करते हैं। नीज़ इन्हें इस बात का भी इ़ल्म है कि ईमान के चार बुन्यादी रुक्न हैं और हर रुक्न दस उसूलों पर मुश्तमिल है।

ईमान के चार बुन्यादी अरकान

﴾1﴿....**ज़ाते बारी तआ़ला की मा'रिफ़त :** येह दस उसूलों पर मुश्तमिल है, या'नी इस बात पर ईमान लाना कि (1) **अल्लाह** तआ़ला मौजूद है (2) क़दीम है (3) बाक़ी है (4) न तो वोह जोहर है (5) न जिस्म और (6) न ही अ़र्ज़ (7) कोई जिहत व सम्त उस के लिये मुख़्तस नहीं (8) वोह किसी मकान पर ठहरा हुवा नहीं (9) आख़िरत में उस का दीदार होगा और (10) वोह एक है।

﴾2﴿.....**सिफ़ाते बारी तआ़ला की मा'रिफ़त :** येह भी दस उसूलों पर मुश्तमिल है, या'नी इस बात का यक़ीन रखना कि (1) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ज़िन्दा (2) आ़लमे मौजूदात (3) क़ादिरे मुत़लक़ (4) सुनता (5) देखता और (6) कलाम फ़रमाता है (7) उसे ह़ादिषात लाह़िक़ नहीं हो सकते (8-9-10) उस का इ़ल्म, इरादा और कलाम अज़ली व क़दीम है।

﴾3﴿....**अफ़्आ़ले इलाहिय्या की मा'रिफ़त :** येह भी दस उसूलों पर मुश्तमिल है, या'नी इस बात का ए'तिक़ाद रखना कि (1) बन्दों के अफ़्आ़ल का ख़ालिक़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही है (2) बन्दे मह़ज़ कोशिश करते हैं (3) येह अफ़्आ़ल **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की मरज़ी से ही सर अन्जाम पाते हैं (4) वोही पैदा करने और बनाने की फ़ज़ीलत से मुत्तसिफ़ है (5) उसे जाइज़ है कि वोह किसी पर नाक़ाबिले बरदाश्त बोझ डाले और (6) बे गुनाह को सज़ा दे (7) नेकूकारों को रिआ़यत देना उस पर वाजिब नहीं (8) हम पर वाजिब उमूर का सबब शरीअ़त है न अ़क़्ल (9) उस का अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को मबऊ़ष फ़रमाना ह़क़ है और (10) हमारे प्यारे नबी ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की नबुव्वत बिल्कुल षाबित है जिसे मो'जिज़ात की ताईद ह़ासिल है।

﴾4﴿.....**मन्क़ूल रिवायात को ह़क़ व सच जानना :** येह भी दस उसूलों पर मुश्तमिल है (1) मर कर दोबारा उठने (2) क़ियामत क़ाइम होने (3) मुन्कर नकीर के सुवालात (4) अ़ज़ाबे क़ब्र (5) मीज़ाने अ़मल और (6) पुल सिरात़ को ह़क़ जानना (7) इस बात पर ईमान लाना कि जन्नत व दोज़ख़ की तख़्लीक़ हो चुकी है (8) इमामत व ख़िलाफ़त के अह़काम (9) इन की शराइत़ मानना और (10) दर्जों के मुत़ाबिक़ सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की फ़ज़ीलत तस्लीम करना।

पहले रुक्न की तफ़्सील

अरकाने ईमान में से पहला रुक्न ज़ाते बारी तआ़ला की मा'रिफ़त ह़ासिल करना और उस की वह़दानिय्यत को तस्लीम करना है। इस रुक्न के दस उसूल हैं।

﴾1﴿.....**वुजूदे बारी तआ़ला की मा'रिफ़त :** पहली चीज़ जिस के ज़रीए़ अन्वार की रोशनी और मो'तबर रास्ते की हिदायत नसीब होती है वोह क़ुरआने पाक की राहनुमाई है क्यूंकि ख़ुदा तआ़ला के कलाम से बढ़ कर किसी का कलाम नहीं।

वुजूदे बारी तआ़ला पर क़ुरआनी दलाइल :

﴾1﴿

اَلَمْ نَجْعَلِ الْاَرْضَ مِهٰدًا ﴿۶﴾ وَّ الْجِبَالَ اَوْتَادًا ﴿۷﴾ وَّ خَلَقْنٰكُمْ اَزْوَاجًا ﴿۸﴾ وَّ جَعَلْنَا نَوْمَكُمْ سُبَاتًا ﴿۹﴾ وَّ جَعَلْنَا الَّيْلَ لِبَاسًا ﴿۱۰﴾ وَّ جَعَلْنَا

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : क्या हम ने ज़मीन को बिछौना न किया और पहाड़ो को मैखें और तुम्हें जोड़े बनाया और तुम्हारी नींद को आराम किया और रात को पर्दा पोश किया और दिन को रोज़गार

النَّهَارَ مَعَاشًا ﴿۱۱﴾ وَّبَنَيْنَا فَوْقَكُمْ سَبْعًا شِدَادًا ﴿۱۲﴾ وَّجَعَلْنَا سِرَاجًا وَّهَّاجًا ﴿۱۳﴾ وَّاَنْزَلْنَا مِنَ الْمُعْصِرٰتِ مَآءً ثَجَّاجًا ﴿۱۴﴾ لِّنُخْرِجَ بِهٖ حَبًّا وَّنَبَاتًا ﴿۱۵﴾ وَّجَنّٰتٍ اَلْفَافًا ﴿۱۶﴾ (پ۳۰، النبا: ۱۶ تا ۱۶)

के लिये बनाया और तुम्हारे ऊपर सात मज़बूत़ चुनाइयां चुनीं (ता'मीर कीं) और उन में एक निहायत चमकता चराग़ रखा और भरी बदलियों से ज़ोर का पानी उतारा कि इस से पैदा फ़रमाएं अनाज और सब्ज़ा और घने बाग़।

﴿2﴾

اِنَّ فِیْ خَلْقِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَاخْتِلَافِ الَّیْلِ وَالنَّهَارِ وَالْفُلْكِ الَّتِیْ تَجْرِیْ فِی الْبَحْرِ بِمَا یَنْفَعُ النَّاسَ وَمَاۤ اَنْزَلَ اللّٰهُ مِنَ السَّمَآءِ مِنْ مَّآءٍ فَاَحْیَا بِهِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا وَبَثَّ فِیْهَا مِنْ كُلِّ دَآبَّةٍ۪ وَّتَصْرِیْفِ الرِّیٰحِ وَالسَّحَابِ الْمُسَخَّرِ بَیْنَ السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ لَاٰیٰتٍ لِّقَوْمٍ یَّعْقِلُوْنَ ﴿۱۶۴﴾ (پ۲، البقرۃ: ۱۶۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक आस्मानों और ज़मीन की पैदाइश और रात व दिन का बदलते आना और किश्ती कि दरया में लोगों के फ़ाइदे ले कर चलती है और वोह जो **अल्लाह** ने आस्मान से पानी उतार कर मुर्दा ज़मीन को इस से जिला दिया और ज़मीन में हर क़िस्म के जानवर फैलाए और हवाओं की गर्दिश और वोह बादल कि आस्मान व ज़मीन के बीच में हुक्म का बांधा है इन सब में अ़क़्लमन्दों के लिये ज़रूर निशानियां हैं।

﴿3﴾

اَلَمْ تَرَوْا كَیْفَ خَلَقَ اللّٰهُ سَبْعَ سَمٰوٰتٍ طِبَاقًا ﴿۱۵﴾ وَّجَعَلَ الْقَمَرَ فِیْهِنَّ نُوْرًا وَّجَعَلَ الشَّمْسَ سِرَاجًا ﴿۱۶﴾ وَاللّٰهُ اَنْۢبَتَكُمْ مِّنَ الْاَرْضِ نَبَاتًا ﴿۱۷﴾ ثُمَّ یُعِیْدُكُمْ فِیْهَا وَ یُخْرِجُكُمْ اِخْرَاجًا ﴿۱۸﴾ (پ۲۹، نوح: ۱۵ تا ۱۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : क्या तुम नहीं देखते **अल्लाह** ने क्यूंकर सात आस्मान बनाए एक पर एक और उन में चांद को रोशनी किया और सूरज को चराग़ और **अल्लाह** ने तुम्हें सब्ज़े की त़रह़ ज़मीन से उगाया। फिर तुम्हें इसी में ले जाएगा और दोबारा निकालेगा।

﴿4﴾

اَفَرَءَیْتُمْ مَّا تُمْنُوْنَ ﴿۵۸﴾ ءَاَنْتُمْ تَخْلُقُوْنَهٗۤ اَمْ نَحْنُ الْخٰلِقُوْنَ ﴿۵۹﴾ نَحْنُ قَدَّرْنَا بَیْنَكُمْ

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तो भला देखो तो वोह मनी जो गिराते हो। क्या तुम इस का आदमी बनाते हो या हम बनाने वाले हैं। हम ने तुम में मरना

الْمَوْتَ وَمَا نَحْنُ بِمَسْبُوْقِیْنَ ﴿۶۰﴾ عَلٰۤى اَنْ
نُّبَدِّلَ اَمْثَالَكُمْ وَنُنْشِئَكُمْ فِیْ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿۶۱﴾
وَلَقَدْ عَلِمْتُمُ النَّشْاَةَ الْاُوْلٰى فَلَوْلَا تَذَكَّرُوْنَ ﴿۶۲﴾
اَفَرَءَیْتُمْ مَّا تَحْرُثُوْنَ ﴿۶۳﴾ ءَاَنْتُمْ تَزْرَعُوْنَهٗۤ
اَمْ نَحْنُ الزّٰرِعُوْنَ ﴿۶۴﴾ لَوْ نَشَآءُ لَجَعَلْنٰهُ حُطَامًا
فَظَلْتُمْ تَفَكَّهُوْنَ ﴿۶۵﴾ اِنَّا لَمُغْرَمُوْنَ ﴿۶۶﴾ بَلْ
نَحْنُ مَحْرُوْمُوْنَ ﴿۶۷﴾ اَفَرَءَیْتُمُ الْمَآءَ الَّذِیْ
تَشْرَبُوْنَ ﴿۶۸﴾ ءَاَنْتُمْ اَنْزَلْتُمُوْهُ مِنَ الْمُزْنِ اَمْ
نَحْنُ الْمُنْزِلُوْنَ ﴿۶۹﴾ لَوْ نَشَآءُ جَعَلْنٰهُ اُجَاجًا
فَلَوْلَا تَشْكُرُوْنَ ﴿۷۰﴾ اَفَرَءَیْتُمُ النَّارَ الَّتِیْ
تُوْرُوْنَ ﴿۷۱﴾ ءَاَنْتُمْ اَنْشَاْتُمْ شَجَرَتَهَاۤ اَمْ
نَحْنُ الْمُنْشِئُوْنَ ﴿۷۲﴾ نَحْنُ جَعَلْنٰهَا تَذْكِرَةً وَّ
مَتَاعًا لِّلْمُقْوِیْنَ ﴿۷۳﴾ (پ۲۷، الواقعۃ: ۵۸تا۷۳)

ठहराया, और हम इस से हारे नहीं। कि तुम जैसे और बदल दें और तुम्हारी सूरतें वोह कर दें जिस की तुम्हें ख़बर नहीं और बेशक तुम जान चुके हो पहली उठान फिर क्यूं नहीं सोचते। तो भला बताओ तो जो बोते हो। क्या तुम इस की खेती बनाते हो या हम बनाने वाले हैं। हम चाहें तो इसे रोन्दन कर दें फिर तुम बातें बनाते रह जाओ कि हम पर चट्टी (तावान) पड़ी। बल्कि हम बे नसीब रहे। तो भला बताओ तो वोह पानी जो पीते हो। क्या तुम ने इसे बादल से उतारा या हम हैं उतारने वाले। हम चाहें तो इसे खारी कर दें फिर क्यूं नहीं शुक्र करते। तो भला बताओ तो वोह आग जो तुम रोशन करते हो। क्या तुम ने इस का पेड़ पैदा किया या हम हैं पैदा करने वाले। हम ने इसे जहन्नम की यादगार बनाया और जंगल में मुसाफ़िरों का फ़ाइदा।

ज़रा सी अ़क़्ल रखने वाला शख़्स भी अगर इन आयात के मज़ामीन में थोड़ा सा ग़ौर करे और ज़मीन व आस्मान की रंगा रंग मख़्लूक़ और हैवानात व नबातात की अनोखी पैदाइश की त़रफ़ नज़र करे, तो येह बात उस पर मख़्फ़ी न रहेगी कि इस तअ़ज्जुब खेज़ मुआमले और मज़बूत़ तरकीब का ज़रूर कोई बनाने वाला है जो इन्हें मुनज़्ज़म रखता है और लाज़िमन कोई ऐसा है जो इन्हें मज़बूत़ करता और इन का मुक़द्दर बनाता है। बल्कि ऐन मुमकिन है कि मख़्लूक़ की अस्ल व पैदाइश इस बात की गवाही दे कि येह तमाम अश्या उस ज़ात के ताबेअ़ रहने पर मजबूर और उस की मशिय्यत के मुत़ाबिक़ बदलती हैं।

वुजूदे बारी तआ़ला पर अ़क़्ली दलाइल :

इन्सानी फ़ित़रत और कुरआनी दलाइल बयान करने के बा'द मज़ीद दलाइल की ज़रूरत तो बाक़ी नहीं रहती मगर अपने मौक़िफ़ को मज़ीद मुदल्लल करने और मुनाज़िर उ़-लमा की पैरवी करने की कोशिश में कुछ अ़क़्ली दलाइल पेश किये जाते हैं। चुनान्चे, येह बात अ़क़्लन

बिल्कुल ज़ाहिर व बाहिर है कि कोई भी ह़ादिष चीज़ पैदा होने के लिये किसी पैदा करने वाले सबब से बे नियाज़ नहीं और आ़लमे ह़ादिष है तो लाज़िमन येह भी अपने वुजूद के लिये किसी सबब का मोह़ताज है। लिहाज़ा हमारा क़ौल कि **"ह़ादिष अपनी पैदाइश के लिये किसी सबब से बे नियाज़ नहीं"** वाज़ेह़ है। क्यूंकि हर ह़ादिष के लिये एक ख़ास वक़्त है और अ़क़्ल इस बात को मुमकिन जानती है कि ह़ादिष शै अपने मख़्सूस वक़्त से पहले या बा'द में ज़ुहूर पज़ीर हो तो उस का एक मुअ़य्यन वक़्त में होना इस से पहले या बा'द में न होना वक़्त की तख़्सीस करने वाले के वुजूद का तक़ाज़ा करता है और हमारे क़ौल **"आ़लमे ह़ादिष है"** की दलील येह है कि अज्साम ह़रकत व सुकून की ह़ालत से बाहर नहीं हो सकते और येह दोनों ह़ालतें ह़ादिष हैं और जिस चीज़ को ह़वादिष लाह़िक़ होते हैं वोह भी ह़ादिष होती है।

﴾2﴿....इस बात पर ईमान लाना कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ क़दीम, अज़ली और हमेशा से है। हर ज़िन्दा व बे जान चीज़ से पहले उस ज़ात का वुजूद है उस से पहले कुछ भी नहीं।

﴾3﴿.....इस बात पर यक़ीन रखना कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अज़ली व अबदी है (या'नी हमेशा से है और हमेशा रहेगा), वोही अव्वल, वोही आख़िर, वोही ज़ाहिर, वोही बात़िन। उस के वुजूद का कोई इख़्तिताम व अन्जाम नहीं क्यूंकि क़दीम मा'दूम नहीं हो सकता।

﴾4﴿....इस पर ईमान लाना कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जोहर भी नहीं और उस की ज़ात किसी जगह में समाई हुई भी नहीं बल्कि वोह मकान की निस्बतों से बुलन्द व बरतर है। इस पर दलील येह है कि हर जोहर किसी जगह में घिरा हुवा और उस जगह के साथ ख़ास होता है जिस की दो सूरतें बनती हैं : (1)....उसी जगह साकिन होगा या (2)....वहां से ह़रकत करता होगा। या'नी वोह इन दोनों ह़ालतों में से किसी एक में होगा और येह दोनों ह़ादिष हैं और जिस ज़ात को ह़वादिष लाह़िक़ हों वोह भी ह़ादिष होती है।

﴾5﴿.....येह अ़क़ीदा रखना कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये कोई जिस्म नहीं जो जवाहिर से मुरक्कब हो इस लिये कि जवाहिर से मुरक्कब चीज़ का नाम जिस्म है और जब उस ज़ात का किसी मकान में समाया हुवा जोहर होना मुह़ाल है तो उस का जिस्म होना भी बात़िल है क्यूंकि हर जिस्म किसी मकान के साथ मुख़्तस और जोहर से मुरक्कब होता है और जोहर का सुकून व ह़रकत, शक्ल व मिक़दार और जुदा व जम्अ़ होने जैसी अ़लामाते हुदूष से ख़ाली होना मुह़ाल है।

﴾6﴿....येह ए'तिक़ाद रखना कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ज़ात अ़र्ज़ नहीं जो किसी जिस्म के साथ क़ाइम या किसी जगह में दाख़िल हो क्यूंकि अ़र्ज़ वोह होता है जो किसी जिस्म के साथ क़ाइम

हो और हर जिस्म यक़ीनन ह़ादिष है और इस का ख़ालिक़ इस जिस्म से पहले मौजूद था। तो येह कैसे मुमकिन है कि ख़ालिक़े बारी तआ़ला किसी जिस्म में आ जाए? ह़ालांकि अज़ल में सिर्फ़ वोही था, इस के इ़लावा कुछ भी न था। अजसाम व आ'राज़ सब उस ने बा'द में पैदा फ़रमाए।

इन मज़्कूरा छे उसूलों की रोशनी में वाज़ेह़ हो गया कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मौजूद और बज़ाते ख़ुद क़ाइम है। वोह जोहर व अ़र्ज़ और जिस्म नहीं इस के इ़लावा तमाम का तमाम आ़लम जोहर, अ़र्ज़ और जिस्म है। इस का नतीजा येह निकला कि न वोह किसी के मुशाबेह है और न कोई उस के मुशाबेह। वोह ज़िन्दा और दूसरों को क़ाइम रखने वाला है। कोई शै उस की मिष्ल नहीं और ऐसा क्यूंकर हो सकता है कि मख़्लूक़ ख़ालिक़ के, मातह़त ह़ाकिम के और तस्वीर मुसव्विर के मुशाबेह हो। अजसाम व आ'राज़ सब के सब उसी की तख़्लीक़ व ईजाद है। लिहाज़ा इन चीज़ों का उस ज़ात के मुशाबेह व मुमाषिल होना क़त्अ़न ना मुमकिन है।

﴾7﴿....इस बात पर ईमान लाना कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ सम्त व जिहत की तख़्सीस से पाक है। (इस पर तीन दलीलें :) (1)....सम्त ऊपर, नीचे, दाएं, बाएं, आगे पीछे को कहते हैं, इन सब सम्तों को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने ख़ल्क़ते इन्सानी के वासित़े से पैदा फ़रमाया। (2).....बिल फ़र्ज़ इस के लिये कोई सम्त हो तो वोह जवाहिर की त़रह़ किसी मकान में समाया होगा या अ़र्ज़ की त़रह़ जोहर के साथ ख़ास होगा, जब उस का जोहर व अ़र्ज़ होना मुह़ाल षाबित किया जा चुका तो उस का किसी सम्त के साथ मुख़्तस होना भी मुह़ाल है। (3)....अगर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आ़लम के ऊपर होता तो उस के मह़ाज़ी या'नी मुक़ाबिल भी होता और किसी जिस्म की मह़ाज़ी चीज़ उस की मिष्ल होगी या छोटी बड़ी। येह तीनों सूरतें मिक़्दार की मोह़ताज हैं।

एक सुवाल और इस का जवाब :

फिर दुआ़ मांगते हुए आस्मान की त़रफ़ हाथ क्यूं उठाए जाते हैं? जवाब, दुआ़ का क़िब्ला आस्मान है और इस में उस बात की त़रफ़ इशारा है कि दुआ़ओं को सुनने वाला आ़ली सिफ़ात का मालिक और बुज़ुर्ग व बरतर है चूंकि ऊपर वाली जहत बुलन्दी पर दलालत करती है और वोह ज़ात क़ुव्वत व ग़लबे में सब से बुलन्द है।

﴾8﴿.....इस बात पर ईमान रखना कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अपनी शायाने शान अ़र्श पर इसी त़रह़ इस्तवा फ़रमाए हुए है जो इस्तवा से उस ने मुराद लिया है। (मुतशाबेह आयात में) अहले ह़क़ तावील करने पर मजबूर हुए जैसा कि अहले बात़िल इस आयत में तावील करने पर मजबूर हुए।

चुनान्चे, इरशादे बारी तआ़ला है :

وَهُوَ مَعَكُمْ اَيْنَ مَا كُنْتُمْ ط (پ۲۷،الحدید:۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और वोह (अल्लाह) तुम्हारे साथ है, तुम कहीं हो।*

इस आयते मुबारका में बिल इत्तिफ़ाक़ मईय्यत से इह़ात़ा और इल्म (या'नी हर चीज़ को घेरे में लेना और सब को जानना) मुराद लिया गया है।

नीज़ इन फ़रामीने मुस्त़फ़ा (में भी तावील की गई) है : (1) قَلْبُ الْمُؤْمِنِ بَيْنَ اِصْبَعَيْنِ مِنْ اَصَابِعِ الرَّحْمٰن इस में उंगलियों से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़ुदरत व ग़लबा मुराद लिया गया है और (2) اَلْحَجَرُ الْاَسْوَدُ يَمِيْنُ اللّٰهِ فِي اَرْضِه इस में दाएं हाथ से इ़ज़्ज़त व बुज़ुर्गी मुराद ली गई है। अगर येह तावीलात न की जातीं तो मुह़ाल लाज़िम आता। इसी त़रह़ इस्तवा के ज़ाहिरी मा'ना ठहरना और क़रार पकड़ना मुराद लिये जाते तो येह भी मानना पड़ता कि ठहरने और क़रार पकड़ने वाला एक जिस्म है जो अ़र्श से मस हो रहा है और येह भी कि वोह जिस्म अ़र्श के बराबर है या इस से छोटा बड़ा हालांकि येह सब चीज़ें मुह़ाल हैं और मुह़ाल की त़रफ़ ले जाने वाली चीज़ भी मुह़ाल होती है।

﴾9﴿.....येह ए'तिक़ाद रखना कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ शक्ल व मिक़्दार और जिहात व अत़राफ़ से पाक है लेकिन जन्नती जन्नत में सर की आंखों से उस का दीदार करेंगे। जैसा कि क़ुरआने पाक में है :

وُجُوْهٌ يَّوْمَئِذٍ نَّاضِرَةٌ ﴿۲۲﴾ اِلٰى رَبِّهَا نَاظِرَةٌ ﴿۲۳﴾ (پ۲۹،القیامۃ:۲۲،۲۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *कुछ मुंह उस दिन तरोताज़ा होंगे। अपने रब्ब को देखते।*

हां ! दुन्या में (बह़ालते बेदारी) उस का दीदार मुमकिन नहीं। इस की तस्दीक़ इस आयते क़ुरआनिय्या से होती है :

لَا تُدْرِكُهُ الْاَبْصَارُ وَهُوَ يُدْرِكُ الْاَبْصَارَ ج (پ۷،الانعام:۱۰۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *आंखें उसे इह़ात़ा नहीं करतीं और सब आंखें उस के इह़ाते में हैं।*

﴾10﴿....येह अ़क़ीदा रखना कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ एक है। उस का कोई शरीक नहीं। वोह यक्ता है। कोई उस की मिस्ल नहीं। वोह तख़्लीक़ करने और अ़दम को वुजूद देने में मुन्फ़रिद और ईजादात और अ़जाइब व ग़राइब पैदा करने में ख़ुद मुख़्तार है। उस का कोई मिस्ल नहीं जो उस का हमसर बन सके और न कोई मुक़ाबिल है जो उस से मुनाज़अ़त व अ़दावत करे। इस की

1 ......صحیح مسلم، کتاب القدر، باب تصریف اللّٰہ تعالٰی القلوب......الخ، الحدیث:۲۶۵۴، ص۱۴۲۷۔

2 ......الکامل فی ضعفاء الرجال، اسحاق بن بشر:۱۷۲، ج۱، ص۵۵۷۔

المصنف لعبد الرزاق، باب الرکن من الجنۃ، الحدیث:۸۹۵۵، ج۵، ص۲۸۔

दलील येह आयते कुरआनी है :

لَوْ كَانَ فِيهِمَآ اٰلِهَةٌ اِلَّا اللّٰهُ لَفَسَدَتَا ۚ (پ۱۷، الانبیاء:۲۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : अगर आस्मान व ज़मीन में अल्लाह के सिवा और खुदा होते तो ज़रूर वोह तबाह हो जाते ।

दूसरे रुक्न की तफ़्सील

ईमान के बुन्यादी अरकान में से दूसरा रुक्न सिफ़ाते बारी तआ़ला के मुतअ़ल्लिक़ मा'लूमात ह़ासिल करना है इस के भी दस उसूल हैं ।

﴾1﴿.....येह ए'तिक़ाद रखना कि ख़ालिके़ आ़लम क़ादिरे मुत़लक़ है और उस का येह फ़रमान बरह़क़ है :

وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرُ ۙ (پ۲۹، الملك:۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और वोह हर चीज़ पर क़ादिर है ।

क्यूंकि आ़लम अपनी बनावट व पैदाइश के ए'तिबार से मज़बूत़ व मुनज़्ज़म है । अगर कोई शख़्स सन्अ़त में उ़म्दा और नक़्शो निगार से खूब आरास्ता रेशमी कपड़ा देख कर कहे कि येह किसी बे कुव्वत मुर्दे या बे इख़्तियार इन्सान की कारीगरी है, तो ऐसा कहने वाला वोही होगा जो अ़क़्ल से पैदल और ज़ुमरए जोहला में शामिल हो ।

﴾2﴿....येह अ़क़ीदा रखना कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तमाम मौजूदात का इ़ल्म रखने वाला और तमाम मख़्लूक़ात पर ह़ावी है । चुनान्चे, फ़रमाने बारी तआ़ला है :

وَمَا يَعْزُبُ عَنْ رَّبِّكَ مِنْ مِّثْقَالِ ذَرَّةٍ فِي الْاَرْضِ وَلَا فِي السَّمَآءِ (پ۱۱، یونس:۶۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और तुम्हारे रब्ब से ज़र्रा भर कोई चीज़ ग़ाइब नहीं ज़मीन में न आस्मान में ।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का येह फ़रमान भी बिल्कुल ह़क़ और सच है :

وَهُوَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ﴿۲۹﴾ (پ۱، البقرة:۲۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और वोह सब कुछ जानता है ।

﴾3﴿....इस बात पर ईमान लाना कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ज़िन्दा है क्यूंकि जिस ज़ात के लिये इ़ल्म व कुदरत षाबित हो उस के लिये यक़ीनन ह़यात भी षाबित होगी ।

﴾4﴿.....इस बात का यक़ीन रखना कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अपने कामों का इरादा फ़रमाने वाला है । हर मौजूद का वुजूद उस की मशिय्यत से और हर चीज़ का सुदूर उस के इरादे से है । किसी भी चीज़ को पहली दफ़्अ़ तख़्लीक़ करने वाला और दूसरी दफ़्अ़ वुजूद देने वाला वोही है । जो चाहता है करता है ।

﴾5﴿....येह ए'तिक़ाद रखना कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ समीअ़ व बसीर (या'नी सुनता देखता) है। पोशीदा ख़यालात और मख़्फ़ी वसाविस व अफ़्कार कुछ भी उस से पोशीदा नहीं है। अन्धेरी रात में साफ़ चट्टान पर चलने वाली सियाह च्यूंटी के चलने की आवाज़ भी उस की समाअ़त से बाहर नहीं। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ सुनने देखने वाला क्यूं न हो ? कि समाअ़त व बसारत यक़ीनन कमाल है नक़्स नहीं, तो येह कैसे हो सकता है कि मख़्लूक़ ख़ालिक़ से कमाल में ज़ियादा और अपने बनाने वाले से अरफ़अ़ व आ'ला हो ?

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ख़लीलुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने अपने बुत परस्त चचा आज़र को इन अल्फ़ाज़ से दलील दी :

اِذْ قَالَ لِاَبِیْهِ یٰۤاَبَتِ لِمَ تَعْبُدُ مَا لَا یَسْمَعُ وَ لَا یُبْصِرُ وَ لَا یُغْنِیْ عَنْكَ شَیْــٴًـا(۴۲)
(پ۱۶، مریم:۴۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : जब अपने बाप से बोला[1] ऐ मेरे बाप ! क्यूं ऐसे को पूजता है जो न सुने न देखे और न कुछ तेरे काम आए।

﴾6﴿....उस पर ईमान लाना कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ सिफ़ते कलाम के साथ मुत्तसिफ़ है। उस का येह वस्फ़ उस की ज़ात के साथ क़ाइम और हुरूफ़ व आवाज़ से मुनज़्ज़ा (पाक) है। बल्कि जिस त़रह़ उस का वुजूद किसी दूसरे के वुजूद के मुशाबेह नहीं, इसी त़रह़ उस का कलाम भी किसी और के कलाम की मिष्ल नहीं और दर ह़क़ीक़त कलाम, कलामे नफ़्सी है। आवाज़ तो मह़ज़ बयाने मक़्सूद के लिये अदाएगिये हुरूफ़ का काम देती है।

﴾7﴿.....येह अ़क़ीदा रखना कि सिफ़ते कलाम ज़ाते ख़ुदा के साथ क़ाइम और क़दीम है बल्कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की तमाम सिफ़ात क़दीम हैं। क्यूंकि उस की ज़ात को ह़वादिष का लाह़िक़ होना मुह़ाल है कि ह़वादिष तो बदलते रहते हैं। इसी त़रह़ उस की सिफ़ात का भी क़दीम होना ज़रूरी है, ताकि उस पर न तग़य्युरात त़ारी हों और न ही ह़वादिष लाह़िक़ हो। वोह उ़म्दा सिफ़ात के साथ अज़ल से मुत्तसिफ़ है और अबद तक मुत्तसिफ़ रहेगा। वोह ह़ालात के तग़य्युर से पाक है।

---

❶....मफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْمَنَّان अपनी तफ़्सीर **"नूरुल इरफ़ान"** में इस आयत के तह़त फ़रमाते हैं : "यहां बाप से मुराद चचा आज़र है न की ह़क़ीक़ी वालिद या'नी तारुख़ और चचा को उ़र्फ़ में बाप कहा जाता है क्यूंकि ह़ज़रते आदम (عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام) से ले कर ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) तक हुज़ूर के आबा व उम्महात में कोई मुशरिक नहीं हुवा। रब्ब عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है : وَتَقَلُّبَكَ فِی السّٰجِدِیْنَ(۲۱۹) (پ۱۹، الشعراء:۲۱۹) हम आप के नूर की गर्दिश को पाक पुश्तों और पाक शिकमों में देख रहे हैं।"

﴾8﴿.....इस बात का यक़ीन रखना कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का इल्म क़दीम है वोह अज़ल से अपनी ज़ात व सिफ़ात और मख़्लूक़ में पेश आने वाले अह़वाल को जानता है। मख़्लूक़ में से जब भी किसी को वुजूद मिलता है तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को उस वुजूद का उस वक़्त कोई नया इल्म ह़ासिल नहीं होता बल्कि येह सब कुछ वोह अपने इल्मे अज़ली से जानता है।

﴾9﴿.....उस पर ईमान लाना कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का इरादा क़दीम है और ह़वादिषात को उन के मख़्सूस और मुनासिब वक़्त में वुजूद में लाने के लिये इल्मे अज़ली के मुत़ाबिक़, अज़ल से ही उन के मुतअ़ल्लिक़ हो गया है।

﴾10﴿.....**अल्लाह** तआ़ला सिफ़ते इल्म के साथ आ़लिम, ह़यात के साथ ज़िन्दा, क़ुदरत के साथ क़ादिर, इरादे के साथ मुरीद (या'नी इरादा करने वाला), कलाम के साथ मुतकल्लिम (या'नी कलाम करने वाला), समाअ़त के साथ सुनने वाला और बसारत के साथ देखने वाला है। उस की येह सिफ़ात भी सिफ़ाते क़दीमा हैं।

तीसरे रुक्न की तफ़्सील

अफ़्आ़ले इलाहिय्या की मा'रिफ़त ह़ासिल करना येह भी दस उसूलों पर मुश्तमिल है।

﴾1﴿.....येह अ़क़ीदा रखना कि आ़लम में होने वाला हर वाक़िआ़ उसी का फ़े'ल, उसी की तख़्लीक़ और उसी की ईजाद है। इन सब चीज़ों का ख़ालिक़ व मूजिद सिर्फ़ वोही है। उस ने मख़्लूक़ और इन के रिज़्क़ को पैदा फ़रमाया और इन के लिये क़ुदरत व ह़रकत ईजाद फ़रमाई। बन्दों के तमाम अफ़्आ़ल **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की मख़्लूक़ और उस के ज़ेरे क़ुदरत हैं। इस पर दर्जे ज़ैल क़ुरआनी आयात शाहिद हैं। चुनान्चे, फ़रमाने बारी तआ़ला है :

اَللّٰهُ خَالِقُ كُلِّ شَیْءٍ٘ (پ۲۴،الزمر:۶۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *अल्लाह हर चीज़ का पैदा करने वाला है।*

एक मक़ाम पर इरशाद फ़रमाया :

وَاللّٰهُ خَلَقَكُمْ وَمَا تَعْمَلُوْنَ ﴿۹۶﴾ (پ۲۳،الصّٰفّٰت:۹۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और अल्लाह ने तुम्हें पैदा किया और तुम्हारे आ'माल को।*

﴾2﴿.....बन्दों की ह़रकात का ख़ालिक़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही है लेकिन इस का येह मत़लब नहीं कि बन्दा जब कोशिश करे तो ह़रकात पर इस का कोई इख़्तियार ही न हो। बल्कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने बन्दे के लिये त़ाक़त भी पैदा फ़रमाई और तक़्दीर भी। इख़्तियार भी पैदा किया और मुख़्तार

भी बनाया। बहर ह़ाल इख़्तियार बन्दे का वस्फ़ और रब्ब की मख़्लूक़ है, इस का कसब नहीं। जब कि ह़रकत रब्ब तआ़ला की मख़्लूक़, बन्दे का वस्फ़ और उस का कसब है। ह़रकत पर बन्दे को क़ुदरत अ़त़ा की गई जो उस का वस्फ़ है और ह़रकत को दूसरी सिफ़त की त़रफ़ मन्सूब किया जाता है जिसे क़ुदरत कहते हैं और इस निस्बत के ए'तिबार से ह़रकत को कसब का नाम दिया जाता है। ह़रकत बन्दे के लिये मह़ज़ जब्र नहीं हो सकती, क्यूंकि बन्दा इख़्तियार व इज़्त़िरार में ज़रूर फ़र्क़ कर सकता है।

﴾3﴿....बन्दे का फ़े'ल उस का कसब होने के बा वुजूद मशिय्यते इलाही से बाहर नहीं हो सकता। ज़मीन व आस्मान में पलक की झपक, क़ल्बी मैलान और आंख की तवज्जोह येह सब कुछ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़ज़ा व क़ुदरत और उस के इरादे व मशिय्यत से ही होता है। नीज़ अच्छा बुरा, नफ़अ़ नुक़्सान, कुफ़्र व ईमान, इन्कार व मा'रिफ़त, कामयाबी व नाकामी, हिदायत व गुमराही, इत़ाअ़त व नाफ़रमानी, शिर्क व तौह़ीद उसी की त़रफ़ से है, उस के फ़ैस्लों को रद्द करने वाला और उस के अह़काम को टालने वाला कोई नहीं। जिसे चाहे गुमराह कर दे और जिसे चाहे हिदायत अ़त़ा फ़रमा दे। ख़ुद इरशाद फ़रमाता है :

لَا يُسْـَٔلُ عَمَّا يَفْعَلُ وَهُمْ يُسْـَٔلُوْنَ ﴿۲۳﴾
(پ ۱۷، الانبیاء: ۲۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *उस से नहीं पूछा जाता जो वोह करे और इन सब से सुवाल होगा।*

मशिय्यते इलाही का षुबूत नक़्ली दलाइल से :

उम्मते मुस्लिमा के इस मुत्तफ़िक़ा क़ौल से भी इस बात पर दलालत होती है : مَا شَآءَ كَانَ وَمَا لَمْ يَشَأْ لَمْ يَكُنْ या'नी : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने जो चाहा वोह हुवा जो न चाहा नहीं हुवा।

﴾4﴿.....तख़्लीक़ व ईजाद और बन्दों को शरीअ़त का पाबन्द बनाना **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का फ़ज़्ल व एह़सान है उस पर लाज़िम नहीं।

मो'तज़िला का अ़क़ीदा : येह सब उमूर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर लाज़िम है कि इस में बन्दों की बेहतरी है।

जवाब : मो'तज़िला का येह क़ौल बात़िल है। क्यूंकि वाजिब करना, हुक्म देना और मन्अ़ करना तो उस की शान है, ख़ुद उस पर कोई अम्र लाज़िम व वाजिब कैसे हो सकता है ?

﴾5﴿.....**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये जाइज़ है कि बन्दों पर उस काम को लाज़िम कर दे जिस की वोह त़ाक़त न रखते हों। इस मौक़िफ़ में भी मो'तज़िला, हम अहले सुन्नत से इख़्तिलाफ़ रखते हैं। हमारी दलील येह है कि अगर येह अम्र मुमकिन न होता तो उस से पनाह मांगने का सुवाल मुह़ाल होता। ह़ालांकि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से येह सुवाल किया जाता है, जैसा कि क़ुरआने पाक में है :

رَبَّنَا وَلَا تُحَمِّلْنَا مَا لَا طَاقَةَ لَنَا بِهٖ ۚ (پ٣،البقرة:٢٨٦)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ रब्ब हमारे ! और हम पर वोह बोझ न डाल जिस की हमें सहार (त़ाक़त) न हो।

﴾6﴿.....**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मख़्लूक़ को इन के किसी साबिक़ा जुर्म और षवाबे आयन्दा के बिग़ैर भी अ़ज़ाब व तक्लीफ़ में मुब्तला कर सकता है। जब कि मो'तज़िला इस मस्अले में मुख़ालिफ़ हैं। हम अहले सुन्नत की दलील येह है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपनी मिल्क में तसर्रुफ़ करता है और उस के मुतअ़ल्लिक़ येह तसव्वुर ग़लत़ है कि उस का तसर्रुफ़ उस की मिल्क से बढ़ सकता है और मालिक की इजाज़त के बिग़ैर उस की मिल्क में तसर्रुफ़ को ज़ुल्म कहते हैं जो कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये मुह़ाल है क्यूंकि इस के इ़लावा वोह किसी की मिल्क है ही नहीं कि उस में तसर्रुफ़ ज़ुल्म क़रार पाए। हमारे मौक़िफ़ की दलील येह अ़मल भी है कि जानवरों को ज़ब्ह़ किया जाता है, उन्हें तक्लीफ़ दी जाती है और आदमी उन्हें त़रह़ त़रह़ की सख़्तियों में मुब्तला करता है। जानवरों के साथ येह सुलूक उन के किसी साबिक़ा जुर्म की बिना पर तो नहीं होता !

﴾7﴿.....**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपने बन्दों के साथ जो चाहे सुलूक करे। बन्दों के लिये बेहतरी की रिआ़यत उस पर वाजिब नहीं है। जैसा कि पहले बयान हो चुका है कि उस पर कुछ भी वाजिब नहीं है बल्कि अ़क़्ल भी इस से इन्कारी है कि इस पर कोई चीज़ वाजिब हो। ख़ुद इरशाद फ़रमाता है :

لَا يُسْـَٔلُ عَمَّا يَفْعَلُ وَهُمْ يُسْـَٔلُوْنَ ﴿۲۳﴾ (پ١٧،الانبياء:٢٣)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : उस से नहीं पूछा जाता जो वोह करे और इन सब से सुवाल होगा।

मो'तज़िला ने जो क़ौल इख़्तियार किया कि बन्दों के लिये बेहतरी की रिआ़यत **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर वाजिब है तो वोह इस का जवाब दें।

सुवाल : फ़र्ज़ करें दो ऐसे मुसलमान जिन में से एक बालिग़ हो कर और दूसरा ना बालिग़ी में फ़ौत हुवा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ बरोज़े मेह़शर बालिग़ को ना बालिग़ पर फ़ज़ीलत देता और उसे ज़ियादा दर्जात अ़त़ा फ़रमाता है क्यूंकि उस ने बा'दे बुलूग़ ईमान व इत़ाअ़त की मशक़्क़त बरदाश्त की है और मो'तज़िला के अ़क़ीदे के मुत़ाबिक़ इस त़रह़ करना **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर वाजिब है। अगर ना बालिग़ बारगाहे इलाहा में येह गुज़ारिश करे कि ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ बालिग़ का दर्जा मुझ से ज़ियादा क्यूं ? तो जवाब अ़त़ा हो : इस लिये कि वोह बालिग़ हुवा और त़ाअ़त पर कोशिश की। बच्चा फिर अ़र्ज़ करे : या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तूने मुझे कम उ़म्री में मौत दी, तुझ

पर वाजिब था कि मुझे लम्बी उ़म्र देता ताकि बालिग़ हो कर त़ाअ़त बजा लाता, लेकिन तू ने सिर्फ़ इसे लम्बी उ़म्र दी और अब इसे ज़ियादा फ़ज़ीलत अ़त़ा की येह इन्साफ़ तो न हुवा।

जवाब : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़रमाए : तुझे नाबालिग़ी में मौत देने की वजह येह थी कि मैं जानता था कि तू बड़ा हो कर सरकश या मुशरिक हो जाएगा। तो तेरे लिये बचपन की मौत बेहतर थी। अल्लाह तव्वाब عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से मो'तज़िला येह जवाब बयान करते हैं लेकिन उन के इस जवाब पर भी ए'तिराज़ है।

मो'तज़िला पर ए'तिराज़ : इस जवाब पर अगर जहन्नम की गहराइयों से कुफ़्फ़ार इस त़रह़ अ़र्ज़ गुज़ार हों कि या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तू जानता था कि हम बड़े हो कर कुफ़्र व शिर्क में मुब्तला होंगे तो तू ने हमें बचपन में ही मौत क्यूं न दे दी? हम तो इस मुसलमान बच्चे को मिलने वाले मक़ाम से भी कमतर पर राज़ी हो जाते।

जी ! अब क्या जवाब देंगे मो'तज़िला ? ऐसी सूरत में येही कहा जाएगा कि उमूरे इलाहिय्या की शान व जलालत ऐसी नहीं कि मो'तज़िला इसे अपने तराज़ू में तोलते फिरें।

﴾8﴿....अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ की मा'रिफ़त व त़ाअ़त उस के और शरीअ़त के वाजिब करने की वजह से वाजिब है, अ़क़्ल की वजह से नहीं। इस में भी मो'तज़िला का इख़्तिलाफ़ है। नीज़ किसी चीज़ के वाजिब होने का मत़लब येह है कि उस फ़े'ल के तर्क पर नुक़्सान हो और शरीअ़त के वुजूब का मत़लब है कि वोह मुतवक़्क़ेअ़ नुक़्सान की पहचान कराती है। क्यूंकि अ़क़्ल तो इस बात से क़ासिर है कि वोह इस नुक़्सान की पहचान कराए जो मौत के बा'द शहवात की पैरवी के बाइ़ष पेश आ सकता है। येह है शरअ़न व अ़क़्लन वुजूब का मा'ना और वुजूब में इन के मुअष्षिर होने का मफ़हूम। अगर अह़कामे शरअ़ के तर्क पर ख़ौफ़े अ़ज़ाब न होता तो वाजिब भी षाबित न होता क्यूंकि वाजिब उसी चीज़ को कहते हैं जिस का तर्क नुक़्साने आख़िरत का बाइ़ष बने।

बिअ़्षते अम्बिया :

﴾9﴿.....बिअ़्षते अम्बिया मुह़ाल नहीं है। बर ख़िलाफ़ फ़िर्क़ए बराहिमा[1] के। वोह कहते हैं कि "बिअ़्षते अम्बिया बे फ़ाइदा है और दलील येह देते हैं कि अ़क़्ल की मौजूदगी में इस की कोई ज़रूरत नहीं रहती।" हम कहते हैं कि "अ़क़्ल जिस त़रह़ सिह़्ह़त के लिये मुफ़ीद

---

❶....अपने आप को दीने इब्राहीमी का पैरूकार समझने वाला हिन्द के ह़कीमों का एक गुरौह। (اتحاف السادة المتقين، ج٢، ص ٣١١)

अदविय्यात की पहचान कराने से क़ासिर है इसी त़रह़ बरोज़े क़ियामत मग़फ़िरत का सबब बनने वाले उमूर तक रहनुमाई करने से भी क़ासिर है। लिहाज़ा मख़्लूक़ को त़बीब की त़रह़ अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की भी ज़रूरत है। लेकिन त़बीब का सिद्क़ तजरीबे से और नबी का सिद्क़ मो'जिज़े से मा'लूम होता है।"

ख़ातमुन्नबिय्यीन :

﴿10﴾.....बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को आख़िरी नबी और मा क़ब्ल यहूदो नसारा की शरीअ़तों को मन्सूख़ और मज़हबे मजूस को ख़त्म करने वाला बना कर भेजा। चांद के शक़ होने, कंकरियों के तस्बीह़ पढ़ने, जानवरों के कलाम करने, उंगलियों से चश्मे फूटने[1] जैसे रोशन मो'जिज़ात और वाज़ेह़ अ़लामात के ज़रीए़ आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ताईद फ़रमाई। क़ुरआने पाक आप के बुलन्द तरीन मो'जिज़ात में से एक है। जिस के ज़रीए़ पूरे अ़रब को चेलेन्ज किया गया। नीज़ वोह बा वुजूद फ़सीह़ व बलीग़ होने के आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को क़ैद करने, लूटने, जान से मारने और शहर बदर करने जैसे मज़ालिम ढाने पर तो उतर आए लेकिन क़ुरआने पाक की नज़ीर पेश करने का चेलेन्ज क़बूल न कर सके जैसा की आयाते क़ुरआनिय्या से षाबित होता है। क्यूंकि क़ुरआने मजीद जैसी ख़ुश बयानी और हुस्ने तरतीब त़ाक़ते बशरी से बाहर है। इलावा अज़ीं इस में उममे साबिक़ा की ख़बरें भी हैं। ह़ालांकि आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم न किसी मख़्लूक़ से पढ़े और न ही कुतुब का मुत़ालआ़ किया फिर भी ग़ैब की ख़बरें दीं जो मुस्तक़्बिल में सच षाबित हुईं।

जैसा कि फ़रामीने बारी तआ़ला इस पर शाहिद हैं। चुनान्चे, इरशाद होता है :

لَتَدْخُلُنَّ الْمَسْجِدَ الْحَرَامَ اِنْ شَآءَ اللّٰهُ اٰمِنِیْنَۙ مُحَلِّقِیْنَ رُءُوْسَكُمْ وَ مُقَصِّرِیْنَۙ

(پ۲۶، الفتح:۲۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *बेशक तुम ज़रूर मस्जिदे ह़राम में दाख़िल होंगे अगर **अल्लाह** चाहे अम्न व अमान से अपने सरों के बाल मुन्डाते या तरश्वाते।*

---

1 ......صحیح البخاری، کتاب المناقب، باب سوال المشرکین ان یریھم النبی......الخ، الحدیث:۳۶۳۶، ج۲، ص ۵۱۱۔
دلائل النبوۃ للبیہقی، باب ماجاء فی تسبیح الحصبات......الخ، ج۶، ص ۶۴۔۶۵۔
دلائل النبوۃ للبیہقی، باب ذکر البعیر الذی سجد للنبی......الخ، ج۶، ص ۲۸۔۳۰۔
صحیح البخاری، کتاب المغازی، باب غزوۃ الحدیبیۃ، الحدیث:۴۱۵۲، ج۳، ص ۶۹۔

एक जगह इरशाद फ़रमाया :

الٓمّٓ ۚ﴿۱﴾ غُلِبَتِ الرُّوۡمُ ۙ﴿۲﴾ فِیۡۤ اَدۡنَی الۡاَرۡضِ وَ ہُمۡ مِّنۡۢ بَعۡدِ غَلَبِہِمۡ سَیَغۡلِبُوۡنَ ۙ﴿۳﴾ فِیۡ بِضۡعِ سِنِیۡنَ ۬ؕ (پ ۲۱، الروم: ۱ تا ۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *रूमी मग़्लूब हुए पास की ज़मीन में और अपनी मग़्लूबी के बा'द अन क़रीब ग़ालिब होंगे, चन्द बरस में ।*

और मो'जिज़ा तस्दीके रिसालत पर इस लिये दलालत करता है कि हर वोह काम जो इन्सान के बस से बाहर हो वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का होता है । तो जब भी हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ऐसे फे'ल को अपनी सदाक़त पर वाज़ेह दलील बनाएं तो इस का मत़्लब येह होगा कि गोया **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमा रहा है : "मेरे रसूल ने सच कहा ।" इस की मिषाल यूं समझिये ! जैसे कोई आदमी बादशाह के सामने उस की रिआ़या की मौजूदगी में दा'वा करे कि मैं तुम्हारे लिये उस बादशाह का क़ासिद हूं । फिर वोह शख़्स बादशाह से अ़र्ज़ गुज़ार हो कि अगर मैं अपने दा'वे में सच्चा हूं तो आप अपनी मसनद पर ख़िलाफ़े मा'मूल तीन बार उठिये बैठिये, अगर बादशाह इसी त़रह़ कर दे तो रिआ़या को यक़ीन हो जाएगा कि बादशाह ने क़ासिद का दा'वा सच्च षाबित कर दिया ।

चौथे रुक्न की तफ़्सील

येह रुक्न सुनी सुनाई बातों और रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से मन्क़ूल रिवायात को सच जानने के मुतअ़ल्लिक़ है । येह भी दस उसूलों पर मुश्तमिल है ।

﴾1﴿.....**ह़श्र व नश्र :** के मुतअ़ल्लिक़ शरीअ़ते इस्लामिय्या ने जो कुछ बयान किया वोह बरहक़ है और इस पर ईमान लाना वाजिब है । क्यूंकि ऐसा होना अ़क़्लन मुमकिन है और ह़श्र व नश्र का मत़्लब है मौत के बा'द दोबारा जी उठना । इस अम्र पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ क़ादिर है जिस त़रह़ वोह अ़दम को वुजूद देने पर क़ादिर है । जैसा कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आ़लीशान है :

قَالَ مَنۡ یُّحۡیِ الۡعِظَامَ وَ ہِیَ رَمِیۡمٌ ﴿۷۸﴾ قُلۡ یُحۡیِیۡہَا الَّذِیۡۤ اَنۡشَاَہَاۤ اَوَّلَ مَرَّۃٍ ؕ (پ ۲۳، یٰس: ۷۸، ۷۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *बोला ऐसा कौन है कि हड्डियों को ज़िन्दा करे जब वोह बिल्कुल गल गईं ? तुम फ़रमाओ ! इन्हें वोह ज़िन्दा करेगा जिस ने पहली बार इन्हें बनाया ।*

﴾2﴿....**मुन्कर नकीर :** सुवालाते मुन्कर नकीर की तस्दीक़ करना भी वाजिब है क्यूंकि इस बारे में अह़ादीष मरवी हैं । नकीरैन का सुवालात करना मुमकिन है । इस मुआ़मले का तक़ाज़ा सिवाए इस के और कुछ नहीं कि ज़िन्दगी को किसी ऐसी जुज़ की त़रफ़ लौटा दिया जाए जिस के ज़रीए ख़िताब को समझा जाता है और ऐसा होना फ़ी नफ़्सीही मुमकिन है ।

एक सुवाल और इस के दो जवाब :

मय्यित के अजज़ा तो ह़ालते सुकून में होते हैं और सुवालाते नकीरैन भी (हम ज़िन्दों को) सुनाई नहीं देते (तो फिर नकीरैन का सुवाल करना और मय्यित का जवाब देना कैसे षाबित हुवा) ? इस के दो जवाब हैं : (1)....मह़्वे ख़्वाब शख़्स भी बज़ाहिर हर सुकून में नज़र आता है, लेकिन इसे बातिनी तौर पर दुख सुख का एह़सास हो रहा होता है जिस का अषर बेदारी के बा'द भी रहता है। (2)....बारगाहे रिसालत में ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्राईल عَلَیْہِ السَّلَام जब हाज़िर होते तो "आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم उन्हें मुलाह़ज़ा भी फ़रमा रहे होते और उन का कलाम भी सुन रहे होते जब कि शुरकाए बारगाहे रिसालत ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्राईल عَلَیْہِ السَّلَام को न देख रहे होते और न सुन रहे होते और इन्हें सिर्फ़ इसी क़दर इल्म हासिल होता जितना अल्लाह عَزَّوَجَلَّ चाहता।"[1] चूंकि (दुन्यावी हयात में) अ़वामुन्नास को फ़िरिश्तों की ज़ियारत और उन के कलाम की समाअ़त पर क़ुदरत नहीं दी गई इस लिये वोह ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्रईल عَلَیْہِ السَّلَام को नहीं देख सकते थे।

﴾3﴿....**अ़ज़ाबे क़ब्र :** शरीअ़ते मुत़ह्हरा में इस के मुतअ़ल्लिक़ भी रिवायात मन्क़ूल हैं। अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है :

اَلنَّارُ یُعْرَضُوْنَ عَلَیْهَا غُدُوًّا وَّ عَشِیًّا ۚ وَ یَوْمَ تَقُوْمُ السَّاعَةُ ۫ اَدْخِلُوْۤا اٰلَ فِرْعَوْنَ اَشَدَّ الْعَذَابِ ۝٤٦ (پ۲۴، المؤمن:۴۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *आग जिस पर सुब्ह़ो शाम पेश किये जाते हैं और जिस दिन क़ियामत क़ाइम होगी हुक्म होगा फ़िरऔ़न वालों को सख़्त तर अ़ज़ाब में दाख़िल करो।*

नीज़ आक़ाए दो आ़लम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم और बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللهُ الْمُبِيْن का अ़ज़ाबे क़ब्र से पनाह मांगना मन्क़ूल है।[2] अ़क़्लन भी इस का वुक़ूअ़ मुमकिन है। लिहाज़ा इस पर ईमान लाना वाजिब है।

एक सुवाल और इस का जवाब :

जिसे मुख़्तलिफ़ दरिन्दों ने खा लिया हो या मुख़्तलिफ़ परन्दों ने नौच लिया हो। उस पर अ़ज़ाबे क़ब्र कैसे होगा ? **जवाब :** अज्ज़ाए मय्यित का दरिन्दों के पेटों या परन्दों के पोटों में मुतफ़र्रिक़ होना अ़ज़ाबे क़ब्र को मानने में रुकावट नहीं बन सकता, क्यूंकि अ़ज़ाब की तक्लीफ़ का एह़सास हैवान के मख़्सूस अज्ज़ा को होता है और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इस पर क़ादिर है कि वोह इन अज्ज़ा को फिर से क़ाबिले एह़सास बना दे।

---

1 ......صحیح البخاری، کتاب بدء الخلق، باب ذکر الملائکۃ، الحدیث:۳۲۱۷، ج۲، ص۳۸۳۔

2 ......صحیح مسلم، کتاب المساجد و مواضع الصلاۃ، باب ما یستعاذ منہ فی الصلاۃ، الحدیث: ۵۸۸، ص۲۹۶۔

﴾4﴿....**मीज़ाने अ़मल :** के ह़क़ होने पर ईमान लाना भी ज़रूरी है। चुनान्चे,

फ़रमाने बारी तआ़ला है :

وَنَضَعُ الْمَوَازِيْنَ الْقِسْطَ لِيَوْمِ الْقِيٰمَةِ

(پ۱۷،الانبیاء:۴۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और हम अ़द्ल की तराज़ूएं रखेंगे क़ियामत के दीन।*

एक मक़ाम पर इरशाद होता है :

فَمَنْ ثَقُلَتْ مَوَازِيْنُهٗ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ۝۸ وَمَنْ خَفَّتْ مَوَازِيْنُهٗ فَاُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ خَسِرُوْٓا اَنْفُسَهُمْ بِمَا كَانُوْا بِاٰيٰتِنَا يَظْلِمُوْنَ ۝۹

(پ۸،الاعراف:۸،۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *तो जिन के पल्ले भारी हुए वोही मुराद को पहुंचे और जिन के पल्ले हलके हुए वोही हैं जिन्हों ने अपनी जान घाटे में डाली उन ज़ियादतियों का बदला जो हमारी आयतों पर करते थे।*

मीज़ाने अ़मल क़ाइम होने की वजह येह है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आ'माल के सह़ीफ़ों में, आ'माल के उन दर्जों के मुत़ाबिक़ जो उस के हां हैं वज़्न पैदा फ़रमा देगा ताकि बन्दों को अपने आ'माल की मिक़्दार मा'लूम हो जाए और अ़ज़ाब की सूरत में अ़द्ले इलाही और षवाब के इज़ाफ़े व अ़फ़्व की सूरत में फ़ज़्ले इलाही वाज़ेह़ हो जाए।

﴾5﴿....**पुल सिरात़ :** येह जहन्नम की पुश्त पर बनाया गया है। बाल से ज़ियादा बारीक और तल्वार से ज़ियादा तेज़ है।

इरशादे बारी तआ़ला है :

فَاهْدُوْهُمْ اِلٰى صِرَاطِ الْجَحِيْمِ ۝۲۳ وَقِفُوْهُمْ اِنَّهُمْ مَّسْـُٔوْلُوْنَ ۝۲۴

(پ۲۳،الصّٰفّٰت:۲۳،۲۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *उन सब को हांको राहे दोज़ख़ की त़रफ़ और उन्हें ठहराओ उन से पूछना है।*

इस पुल का होना भी मुमकिन है। लिहाज़ा इस पर ईमान लाना भी वाजिब है। नीज़ जो ज़ाते बारी तआ़ला परन्दे को हवा में उड़ाने पर क़ादिर है, उसे इन्सान को पुल सिरात़ पर चलाने की भी क़ुदरत है।

﴾6﴿....**जन्नत व जहन्नम :** तख़्लीक़ हो चुकी है। चुनान्चे, अल्लाह तबारक व तआ़ला का फ़रमाने आ़लीशान है :

وَسَارِعُوْۤا اِلٰى مَغْفِرَةٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَجَنَّةٍ عَرْضُهَا السَّمٰوٰتُ وَالْاَرْضُ ۙ اُعِدَّتْ لِلْمُتَّقِيْنَ ۙ﴿۱۳۳﴾ (پ۴،اٰل عمرٰن:۱۳۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और दौड़ो अपने रब्ब की बख़्शिश और ऐसी जन्नत की त़रफ़ जिस की चौड़ान में सब आस्मान व ज़मीन आ जाएं परहेज़गारों के लिये तय्यार रखी है।*

मज़्कूरा आयत में लफ़्ज़ (اُعِدَّتْ ब मा'ना तय्यार रखना) इस बात पर दलालत करता है कि जन्नत व जहन्नम पैदा की जा चुकीं हैं। इन अल्फ़ाज़ के ज़ाहिरी मा'ना मुराद लेने में कोई मुह़ाल लाज़िम नहीं आता, लिहाज़ा इस के ज़ाहिर पर अ़मल करना वाजिब है।

﴾7﴿....**ख़िलाफ़त का बयान :** ख़िलाफ़त पर किसी को फ़ाइज़ करने के मुतअ़ल्लिक़ मुस्त़फ़ा जाने रह़मत صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से कोई वाज़ेह़ और यक़ीनी रिवायत मन्क़ूल नहीं, वरना मुआ़मलए ख़िलाफ़त आप صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के मुख़्तलिफ़ शहरों और लश्करों पर मुक़र्रर कर्दा गवर्नर व उमरा के मुआ़मलात जो किसी पर पोशीदा नहीं हैं, से भी ज़ियादा वाज़ेह़ होता, लिहाज़ा इस का मख़्फ़ी रहना कैसे मुमकिन हुवा? और अगर मस्अलए ख़िलाफ़त ज़ाहिर था तो छुपा कैसे कि हमें मा'लूम तक न हो सका।

जहां तक अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللہُ تعَالٰی عَنْہُ के ख़लीफ़ा बनने का मुआ़मला है तो आप رَضِیَ اللہُ تعَالٰی عَنْہُ सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللہِ تعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن के इन्तिख़ाब और बैअ़त से इस मसनद पर फ़ाइज़ हुए। अगर कोई जरी किसी और सह़ाबी رَضِیَ اللہُ تعَالٰی عَنْہُ के लिये ख़िलाफ़त की नस्से घड़ने की कोशिश करता है तो वोह इजमाए़ सह़ाबा का मुख़ालिफ़ और इन तमाम (इन्तिख़ाब व बैअ़त करने वाले) सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان पर शाहे ख़ैरुल अनाम صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की मुख़ालफ़त का इल्ज़ाम लगाने वाला है और ऐसी जुरअते बद रवाफ़िज़ के इलावा और कोई नहीं कर सकता।

अहले सुन्नत का अ़क़ीदा है कि तमाम सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللہِ تعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن मक़ामे तक़्वा की बुलन्दियों पर फ़ाइज़ और उस ता'रीफ़ के मुस्तह़िक़ हैं जो ख़ुदा और रसूल عَزَّوَجَلَّ وصَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم ने उन के ह़क़ में बयान फ़रमाई।

﴾8﴿....**फ़ज़ीलते सह़ाबा, ब तरतीबे ख़िलाफ़त :** इन नुफ़ूसे क़ुदसिय्या की फ़ज़ीलत और इस में भी तरतीब की बारिकियां वोही ह़ज़रात जानते थे जिन्हों ने वह़्य और नुज़ूले क़ुरआन का मुशाहदा किया और अह़वाल की मुनासबत से फ़ज़ीलत की बारीकियों को पा लिया। अगर येह ह़ज़रात इस तरतीब व फ़ज़ीलत की समझ न पाते तो कभी भी ह़क़्क़े ख़िलाफ़त की मज़्कूरा तरतीब क़ाइम न करते क्यूंकि इन नुफ़ूसे क़ुदसिय्या को उमूरे दीनिय्या में किसी मलामत करने वाले की मलामत की परवाह नहीं होती और न ही इन्हें कोई राहे ह़क़ से हटा सकता है।

《9》....**ह़क़्क़े ख़िलाफ़त की पांच शराइत़ :** मुसलमान और मुकल्लफ़ (आ़क़िल, बालिग़, आज़ाद) होने के बा'द ह़क़्क़े ख़िलाफ़त की पांच शराइत़ हैं : (1) मर्द होना (2) मुत्तक़ी होना (3) आ़लिम होना (4) उमूरे ख़िलाफ़त सर अन्जाम देने की अहलिय्यत रखना और (5) क़ुरैशी होना [1] जैसा कि सुल्त़ाने मक्कए मुकर्रमा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : اَلْاَئِمَّۃُ مِنْ قُرَیْشٍ या'नी : ख़ुलफ़ा क़ुरैश से होंगे।[2] अगर इन सिफ़ात से मुत्तसिफ़ लोग एक से ज़ियादा हों तो फिर ख़िलाफ़त का मुस्तह़िक़ वोह होगा जिस की बैअ़त ज़ियादा लोग करें।

《10》.....**फ़ासिक़ व फ़ाजिर शख़्स को ख़लीफ़ा तस्लीम करना :** तक़्वा और इ़ल्म की शराइत़ से ख़ाली शख़्स अगर मसनदे ख़िलाफ़त पर क़ब्ज़ा रखना चाहता है और उसे हटाने में नाक़ाबिले बरदाश्त फ़ितना पैदा होने का अन्देशा है, तो उसी को ख़लीफ़ा तस्लीम करने का हुक्म दिया जाएगा।

येह हैं चालीस उसूलों पर मुश्तमिल चार अरकान जो अ़क़ाइद के क़वाइद हैं। इन के मुत़ाबिक़ अ़क़ीदा रखने वाला अहले सुन्नत व जमाअ़त में शामिल और बद मज़हबों से दूर है।

दुआ़ :

अल्लाह तआ़ला हमें सीधे रास्ते पर चलने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए और अपने बुलन्द पाया फ़ज़्लो करम और जूदो अ़त़ा के सदक़े हमें राहे ह़क़ की सच्चाई षाबित करने और इस पर अ़मल पैरा रहने की सआ़दत नसीब फ़रमाए। **अल्लाह** रब्बुल इ़ज़्ज़त की रह़मतें हों हमारे सरदार ह़ज़रते मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم पर और उन की आल और हर बरगुज़ीदा बन्दे पर।

1...अह़नाफ़ के नज़्दीक इमाम व ख़लीफ़ा की शराइत़ व तफ़्सील। इमामत दो क़िस्म है : (1)....सुग़रा (2)....कुब्रा।

इमामते सुग़रा इमामते नमाज़ है। **इमामते कुब्रा** नबी صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की नियाबते मुत़लक़ा, कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की नियाबत से मुसलमानों के तमाम उमूरे दीनी व दुन्यावी में ह़स्बे शरअ़ तसर्रुफ़े आ़म का इख़्तियार रखे और ग़ैरे मा'सिय्यत में इस की इत़ाअ़त, तमाम जहान के मुसलमानों पर फ़र्ज़ हो इस इमाम के लिये मुसलमान, आज़ाद, आ़क़िल, बालिग़, क़ादिर, क़ुरैशी होना शर्त़ है। हाशिमी, अ़लवी, मा'सूम होना इस की शर्त़ नहीं। इन का शर्त़ करना रवाफ़िज़ का मज़हब है, जिस से उन का येह मक़्सद है कि बरह़क़ उमराए मोअमिनीन ख़ुलफ़ाए षलाषा अबू बक्र सिद्दीक़ व उ़मरे फ़ारूक़ व उ़षमाने ग़नी (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھُم) को ख़िलाफ़त से जुदा करें, ह़ालांकि इन की ख़िलाफ़तों पर तमाम सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھُم का इजमाअ़ है। मौला अ़ली کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجۡھَہُ الۡکَرِیۡم व ह़ज़राते ह़सनैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھُمَا ने इन की ख़िलाफ़तें तस्लीम कीं और अ़लविय्यत की शर्त़ ने तो मौला अ़ली को भी ख़लीफ़ा होने से ख़ारिज कर दिया, मौला अ़ली, अ़लवी कैसे हो सकते हैं ! रही इ़स्मत, येह अम्बिया व मलाइका का ख़ास्सा है, जिस को हम पहले बयान कर आए, इमाम का मा'सूम होना रवाफ़िज़ का मज़हब है। (बहारे शरीअ़त, जि.1 स. 237)

2......السنن الکبری للنسائی، کتاب القضاء، الأئمة من قریش، الحدیث:٥٩٤٢، ج٣، ص٤٦٧۔

चौथी फ़स्ल :

ईमान और इस्लाम के माबैन इत्तिसाल व इन्फ़िसाल, इन के घटने बढ़ने और अस्लाफ़ का इस में (اِنۡ شَآءَاللہ के साथ) इस्तिषना करने की वजह का बयान

मस्अला 1 : इमान व इस्लाम दो चीज़ें हैं या एक ?

इस में इख़्तिलाफ़ पाया जाता है कि इस्लाम ही ईमान है या इस से जुदा है ? और अगर जुदा है तो क्या ईमान के बिग़ैर भी इस का वुजूद मुमकिन है या इस के साथ वाबस्ता व लाज़िम है ? इस के जवाब में कई अक़्वाल हैं :

﴾1﴿....इस्लाम व ईमान एक ही चीज़ के दो नाम हैं।

﴾2﴿....येह दो अलग अलग और जुदा जुदा चीज़ें हैं।

﴾3﴿....येह दो अलग अलग चीज़ें हैं लेकिन आपस में एक दूसरे से वाबस्ता हैं।

मुसन्निफ़ का मौक़िफ़ :

शैख़ अबू तालिब मक्की عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡقَوِی ने इस मस्अले पर बहुत गन्जलक और तवील कलाम फ़रमाया है। लेकिन हम ला हासिल गुफ़्तगू से सिर्फ़ नज़र करते हुए अम्रे हक़ को वज़ाहत व सराहत के साथ बयान करेंगे। हमारे इख़्तियार कर्दा मौक़िफ़ के मुताबिक़ इस मस्अले की तीन अब्हास हैं :

(1)....इन दोनों का लुग़वी मा'ना क्या है।

(2).....शरई तौर पर इन से क्या मुराद है।

(3).....इन का दुन्यवी व उख़रवी हुक्म क्या है ? पहली बहष को लुग़वी, दूसरी को तफ़्सीरी और तीसरी को फ़िक़ही शरई कहेंगे।

पहली बहष : लुग़वी मा'ना का बयान

ईमान दर अस्ल, तस्दीक़ का नाम है। जैसा कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया :

وَمَاۤ اَنۡتَ بِمُؤۡمِنٍ لَّنَا (پ ۱۲، یوسف:۱۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और आप किसी तरह हमारा यक़ीन न करेंगे।*

इस आयते मुबारका में मोमिन ब मा'ना मुसद्दिक़ (या'नी तस्दीक़ करने वाला) इस्ति'माल हुवा है।

और इस्लाम का मा'ना है : मानना और दिल से क़बूल व इत़ाअ़त पर सरे तस्लीम ख़म करना। नीज़ सरकशी, इन्कार और मुख़ालफ़त को तर्क करना। तस्दीक़ का मक़ाम दिल से है और ज़बान इस की तर्जमान। जब कि मानना आ़म है दिल, ज़बान और दीगर आ'ज़ा सब के साथ होता है। हर तस्दीक़े क़ल्बी, मानना और इन्कार व सरकशी को तर्क करना है, इसी त़रह़ ज़बान से इक़रार करना और दीगर आ'ज़ा से त़ाअ़त व फ़रमां बरदारी करना भी। लिहाज़ा लुग़वी ए'तिबार से इस्लाम आ़म और ईमान ख़ास हुवा और इस्लाम के अज्ज़ा में से बेहतरीन जुज़ का नाम ईमान है। इस से मा'लूम हुवा कि हर तस्दीक़, तस्लीम तो है लेकिन हर तस्लीम, तस्दीक़ नहीं।

दूसरी बह़्ष :

मा'नए शरई का बयान

दर ह़क़ीक़त शरीअ़त में येह अल्फ़ाज़ (या'नी ईमान व इस्लाम) तीन त़रह़ इस्ति'माल हुए हैं : (1)....दोनों हम मा'ना (2).....अलग अलग मा'ना में और (3)....एक के मा'ना में दूसरे का मा'ना शामिल है।

दोनों के हम मा'ना होने की मिषालें :

﴾1﴿ فَاَخْرَجْنَا مَنْ كَانَ فِيْهَا مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿۳۵﴾ فَمَا وَجَدْنَا فِيْهَا غَيْرَ بَيْتٍ مِّنَ الْمُسْلِمِيْنَ ﴿۳۶﴾ (پ۲۷،الذّٰریٰت:۳۵،۳۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *तो हम ने उस शहर में जो ईमान वाले थे निकाल लिये तो हम ने वहां एक ही घर मुसलमान पाया।*

और येह बात बिल इत्तिफ़ाक़ षाबित है कि वहां (मोअमिनीन व मुस्लिमीन का) एक ही घर था।

﴾2﴿ يٰقَوْمِ اِنْ كُنْتُمْ اٰمَنْتُمْ بِاللّٰهِ فَعَلَيْهِ تَوَكَّلُوْۤا اِنْ كُنْتُمْ مُّسْلِمِيْنَ ﴿۸۴﴾ (پ۱۱،یونس:۸۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *ऐ मेरी क़ौम ! अगर तुम अल्लाह पर ईमान लाए तो उसी पर भरोसा करो अगर इस्लाम रखते हो।*

﴾3﴿.....फ़रमाने मुस्त़फ़ा है : "بُنِيَ الْاِسْلَامُ عَلٰى خَمْسٍ या'नी इस्लाम की बुन्याद पांच चीज़ों पर है।"(1)(2)

---

❶....قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بُنِيَ الْاِسْلَامُ عَلٰى خَمْسٍ شَهَادَةِ اَنْ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ اللّٰهِ وَاِقَامِ الصَّلٰوةِ وَاِيْتَاءِ الزَّكٰوةِ وَالْحَجِّ وَصَوْمِ رَمَضَانَ

या'नी : ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि मुबल्लिग़े आ'ज़म, ताजदारे उमम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुअ़ज़्ज़म है : पांच चीज़ें इस्लाम की बुन्याद हैं : इस बात की गवाही देना कि अल्लाह के सिवा कोई मा'बूद नहीं और मुह़म्मद अल्लाह के रसूल हैं, नमाज़ क़ाइम करना, ज़कात अदा करना, ह़ज करना और रमज़ान के रोज़े रखना। (صحیح البخاری،کتاب الایمان،باب دعاؤکم ایمانکم،الحدیث:۸،ج۱،ص۱۴)

❷....صحیح مسلم، کتاب الایمان، باب بیان ارکان الاسلام......الخ،الحدیث:۱۶، ص۲۷۔

एक दफ़्आ़ हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से ईमान के मुतअ़ल्लिक़ सुवाल किया गया तो इस के जवाब में भी येही पांच चीजे़ं इरशाद फ़रमाईं।"(1) (2)

दोनों के जुदा जुदा मा'ना में इस्ति'माल होने की मिषालें :

قَالَتِ الۡاَعۡرَابُ اٰمَنَّا ؕ قُلۡ لَّمۡ تُؤۡمِنُوۡا وَ لٰكِنۡ قُوۡلُوۡۤا اَسۡلَمۡنَا (پ۲۶،الحجرٰت:۱۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *गंवार बोले हम ईमान लाए तुम फ़रमाओ तुम ईमान तो न लाए। हां ! यूं कहो कि हम मुतीअ़ हुए।*

या'नी यूं कहो कि हम ज़ाहिरन दीने इस्लाम की त़ाअ़त क़बूल करते हैं। मज़्कूरा आयते करीमा में ईमान से फ़क़त़ तस्दीक़े क़ल्बी मुराद है और इस्लाम से मुराद ज़ाहिरी त़ौर पर ज़बान और दीगर आ'ज़ा से त़ाअ़त क़बूल करना है।

﴾2﴿....**ह़दीषे जिब्रील :** जब ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्रील عَلَیۡہِ السَّلَام ने ईमान के बारे में सुवाल किया तो रह़मते आ़लमिय्यान, सरवरे कौनो मकान صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया :

"اَنۡ تُؤۡمِنَ بِاللّٰهِ وَمَلَائِكَتِهٖ وَكُتُبِهٖ وَرُسُلِهٖ وَالۡيَوۡمِ الۡاٰخِرِ وَالۡبَعۡثِ بَعۡدَ الۡمَوۡتِ وَبِالۡحِسَابِ وَبِالۡقَدۡرِ خَيۡرِهٖ وَشَرِّهٖ"

या'नी : ईमान येह है कि तू **अल्लाह** तआ़ला, उस के फ़िरिश्तों, उस की किताबों, उस के रसूलों, यौमे आख़िरत, मरने के बा'द दोबारा जी उठने, ह़िसाब व किताब और इस बात पर ईमान लाए कि अच्छी बुरी तक़्दीर उसी (या'नी **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ) की त़रफ़ से है।"(3)

फिर इन्हों ने इस्लाम के मुतअ़ल्लिक़ पूछा तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने पांच चीज़ों का ज़िक्र फ़रमाया और ज़ाहिरी क़ौल व अ़मल के साथ मानने को इस्लाम का नाम दिया।

﴾3﴿....ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से मरवी है कि एक बार मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने एक शख़्स को कोई चीज़ इनायत फ़रमाई और दूसरे

1.. قَالَ عَبۡدُ اللّٰهِ ابۡنُ عُمَرَ رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنۡہُمَا اِنَّ الۡاِیۡمَانَ بُنِیَ عَلٰی خَمۡسٍ: تَعۡبُدُ اللّٰهَ، وَتُقِيۡمُ الصَّلَاةَ، وَتُؤۡتِی الزَّكَاةَ، وَتَحُجُّ، وَتَصُوۡمُ رَمَضَانَ۔ كَذٰلِكَ قَالَ لَنَا رَسُوۡلُ اللّٰهِ صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَسَلَّم

या'नी : (ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنۡہُمَا फ़रमाते हैं :) बिला शुबा ईमान की बुन्याद पांच चीज़ों पर है : **अल्लाह** की इ़बादत करना, नमाज़ क़ाइम करना, ज़कात अदा करना, ह़ज करना और रमज़ान के रोजे़ रखना। इसी त़रह़ रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने हमें इरशाद फ़रमाया :

(مصنَّف ابن ابی شیبه، کتاب الجهاد، باب ماقالوافی الغزوواجب هو،الحديث:۸، ج۴،ص۲۰۰)

2......السنن الكبرى للبيهقى، كتاب الصيام، باب فرض صوم شهر رمضان، الحديث:۷۸۹۳، ج۴، ص۳۳۵۔

3......صحيح مسلم، كتاب الايمان، باب بيان الايمان والاسلام......الخ، الحديث:۸، ص۲۲۔

المسند للامام احمد بن حنبل، مسند عبدالله بن العباس......الخ، الحديث:۲۹۲۷، ج۱، ص۲۸۳۔

को अ़ता न फ़रमाई तो मैं ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم आप ने फ़ुलां शख़्स को छोड़ दिया उसे न दिया ह़ालांकि वोह भी मोमिन है ?" तो आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "या मुसलमान।" मैं ने दोबारा येही अ़र्ज़ की और आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फिर वोही इरशाद फ़रमाया : "या मुसलमान।"(1) (2)

दोनों के एक दूसरे के मा'ना को शामिल होने की मिषालें :

बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ की गई कि "कौन सा अ़मल अफ़्ज़ल है ?" तो आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "इस्लाम।" फिर अ़र्ज़ की गई : "कौन सा इस्लाम अफ़्ज़ल है ?" इरशाद फ़रमाया : "ईमान।"(3)

मज़्कूरा रिवायत से षाबित हुवा कि इस्लाम व ईमान मा'ना में मुख़्तलिफ़ भी हैं और एक दूसरे में शामिल भी और येह इस्ति'माल लुग़त के ए'तिबार से बहुत अच्छा है। क्यूंकि ईमान एक अ़मल बल्कि अफ़्ज़ल अ़मल है और इस्लाम तस्लीम करने का नाम है ख़्वाह दिल से हो या ज़बान से या दीगर आ'ज़ा से और इस तस्लीम में से बेहतर दिल की तस्लीम है जिसे तस्दीक़ और ईमान का नाम दिया जाता है।

तीसरी बह़्ष : हुक्मे शरई का बयान

इस्लाम और ईमान के दो हुक्म हैं : (1)....उख़रवी (2)......दुन्यवी।

उख़रवी हुक्म : जहन्नम से निकालना और इस में हमेशा रहने से बचाना। जैसा कि फ़रमाने मुस्त़फ़ा है : "जहन्नम से हर उस शख़्स को निकाल लिया जाएगा जिस के दिल में राई बराबर भी ईमान हो।"(4)

1....मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْمَنَّان मिरआतुल मनाजीह़, जि. 5 स. 600 पर फ़रमाते हैं : "इस फ़रमाने आ़ली में इन साहि़ब के ईमान की नफ़ी नहीं बल्कि ह़ज़रते सा'द को ता'लीम है कि किसी के मुतअ़ल्लिक़ उस के ईमान की गवाही क़त़ई न दो कि ईमान दिली तस्दीक़ का नाम है जिस पर अल्लाह तआ़ला ही ख़बरदार है। इस्लाम ज़ाहिर का नाम है, तुम उस की गवाही दे सकते हो ख़याल रहे कि कभी ईमान व इस्लाम हम मा'ना आते हैं और कभी इन में फ़र्क़ किया जाता है कि दिली अ़क़ीदों का नाम ईमान होता है और ज़ाहिरी इत़ाअ़त का नाम इस्लाम यहां दूसरे मा'ना मुराद हैं।

2......صحيح مسلم، كتاب الايمان، باب تألف قلب من يخاف......الخ، الحديث: ١٥٠، ص ٨٩ـ

3......المسندللامام احمد بن حنبل،مسند الشاميين،حديث زيد بن خالدالجهنى،الحديث: ١٧٠٢٣،ج٦،ص٥٨، باختصارٍ۔

4......صحيح البخارى، كتاب الايمان، باب زيادة الايمان و نقصانه، الحديث: ٤٤، ج ١، ص ٢٨ـ

हां ! इस बारे में इख़्तिलाफ़ है कि मज़्कूरा हुक्मे उख़रवी किस पर मुरत्तब होगा या'नी इस ईमान की क्या ता'रीफ़ है ? (जो जहन्नम से निकालने और इस में हमेशा रहने से बचाने का काम देगा)

﴾1﴿....किसी ने कहा : ईमान मह़ज़ तस्दीक़े क़ल्बी का नाम है।

﴾2﴿....किसी ने कहा : दिल से तस्दीक़ और ज़बान से इक़रार करने का नाम है।

﴾3﴿....किसी ने तीसरी चीज़ या'नी आ'ज़ा के साथ अ़मल करने का भी इज़ाफ़ा किया।

पहला दर्जा : हम अस्ल बात को वाज़ेह़ करते हुए कहते हैं कि जो शख़्स इन तीनों बातों (तस्दीक़, इक़रार और आ'माले सालेह़ा) पर कारबन्द हो, वोह बिला इख़्तिलाफ़ जन्नती है। येह एक दर्जा हुवा।

दूसरा दर्जा : दो बातें मौजूद हों और तीसरी का कुछ ह़िस्सा हो या'नी तस्दीक़ व इक़रार और कुछ आ'माले सालेह़ा हों और उस शख़्स से एक या एक से ज़ियादा कबीरा गुनाह भी सरज़द हुए हों तो उस के बारे में मो'तज़िला कहते हैं कि येह शख़्स फ़ासिक़, दाइरए इस्लाम से ख़ारिज और हमेशा का जहन्नमी है लेकिन काफ़िर नहीं। इस का एक तीसरा मक़ाम है (या'नी न मोमिन है न काफ़िर) मो'तज़िला का येह क़ौल बातिल है, हम अ़न क़रीब इस की वज़ाह़त करेंगे।

तीसरा दर्जा : तस्दीक़े क़ल्बी और शहादते लिसानी पाई जाए लेकिन आ'ज़ा से आ'माल का वुजूद न हो तो ऐसे शख़्स के हुक्म में इख़्तिलाफ़ है।

आ'माले सालेह़ा जुज़्वे ईमान नहीं :

ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अबू त़ालिब मक्की عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं कि "आ'माले सालेह़ा जुज़्वे ईमान हैं, इन के बिग़ैर ईमान मुकम्मल नहीं होता।" आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने अपने इस मौक़िफ़ पर इजमाअ़ का दा'वा किया है और ऐसे दलाइल पेश किये हैं जो इन्ही के मौक़िफ़ के ख़िलाफ़ जाते हैं। जैसे इन का इस दलीले क़ुरआनी को पेश करना :

وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ ۚ (پ۱، البقرة:۸۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और जो ईमान लाए और अच्छे काम किये वोह जन्नत वाले हैं।

इस आयत से तो येह पता चलता है कि आ'माले सालेह़ा का दर्जा ईमान के बा'द है, वोह नफ़्से ईमान में शामिल नहीं, वगर्ना आ'माल का दोबारा से ज़िक्र तकरार के हुक्म में होगा और ह़ैरत है कि शैख़ अबू त़ालिब मक्की عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى अपने मौक़िफ़ को इजमाई भी क़रार देते हैं

और येह ह़दीषे पाक भी ज़िक्र करते हैं : ''لَا یَکْفُرُ اَحَدٌ اِلَّا بَعْدَ جُحُوْدِہٖ لِمَا اَقَرَّ بِہٖ'' या'नी कोई भी मुसलमान उस वक़्त तक काफ़िर नहीं होगा जब तक वोह इक़रार की हुई चीज़ का इन्कार न करे।''[1]

शैख़ अबू त़ालिब मक्की عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی मो'तज़िला के इस अ़क़ीदे ''कबीरा गुनाहों का मुर्तकिब हमेशा जहन्नम में रहेगा'' का रद्द करते हैं ह़ालांकि आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के मौक़िफ़ का क़ाइल मज़्हबे मो'तज़िला का क़ाइल है। क्यूंकि अगर आप के मज़्हब के क़ाइल से पूछा जाए कि ''जो शख़्स दिल से तस्दीक़ और ज़बान से इक़रार करते ही (बिग़ैर कोई अ़मल किये) फ़ौत हो जाए तो क्या वोह जन्नती है ?'' तो इस का जवाब लाज़िमन इष्बात में होगा। इस से षाबित हो गया कि ईमान बिग़ैर अ़मल के पाया जाता है।

हम अपने सुवाल को तूल देते हुए कहते हैं कि उस शख़्स को इस क़दर मज़ीद ज़िन्दगी मिल जाए कि वोह एक नमाज़ का वक़्त पा ले लेकिन क़ज़ा कर दे, या ज़िना का मुर्तकिब हो और फिर मर जाए तो क्या वोह हमेशा जहन्नम में रहेगा ? अगर इस का जवाब ''हां'' में है तो मो'तज़िला का भी येही अ़क़ीदा है और ''ना'' की सूरत में षाबित हो गया कि आ'माले सालेह़ा नफ़्से ईमान के लिये न रुक्न हैं न इस के वुजूद के लिये शर्त़ और न ही जन्नत का इस्तिह़क़ाक़ इन पर मौक़ूफ़। अगर जवाब देने वाला कहे कि मेरी मुराद येह है कि अगर वोह शख़्स त़वील मुद्दत तक ज़िन्दा रहे, न नमाज़ पढ़े और न दीगर शरई अह़काम की पैरवी करे (तब उस पर हमेशा के लिये जहन्नमी होने का हुक्म लगेगा) तो इस के जवाब में हम कहते हैं कि वोह मुद्दत कितनी होगी ? कितनी मिक़्दार में त़ाआ़त का तर्क और किस क़दर कबीरा गुनाहों का इर्तिकाब ईमान को बात़िल कर देता है ? येह ता'दाद न मुतअ़य्यन हो सकती है और न ही इस की त़रफ़ किसी ने रुजूअ़ किया।

चौथा दर्जा : किसी शख़्स ने दिल से तस्दीक़ की लेकिन ज़बानी शहादत अदा करने और आ'माले सालेह़ा बजा लाने से पहले ही उसे मौत आ गई तो क्या वोह बारगाहे ख़ुदावन्दी में मोमिन शुमार होगा ? इस में इख़्तिलाफ़ है। ज़बानी इक़रार को तक्मीले ईमान के लिये शर्त़ क़रार देने वाले ह़ज़रात कहते हैं : ''उस शख़्स को ईमान से पहले मौत आई है।'' लेकिन उन का येह क़ौल ग़लत़ है क्यूंकि नबियों के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ''जहन्नम से हर उस शख़्स को निकाल लिया जाएगा जिस के दिल में राई बराबर भी ईमान हो।''[2] उस शख़्स का दिल तो ईमान से लबरेज़ है तो फिर वोह अबदी जहन्नमी कैसे ?

---

1 ......المعجم الاوسط، من اسمه عبدالله، الحدیث: ۴۴۳۳، ج۳، ص ۲۳۲ ۔

2 ......صحیح البخاری، کتاب الایمان، باب زیادۃ الایمان ونقصانه، الحدیث: ۴۴، ج ۱، ص ۲۸ ۔

नीज़ ह़दीषे जिब्रील में ईमान के लिये अल्लाह عَزَّوَجَلَّ, उस के फ़िरिश्तों, किताबों और रोज़े आख़िरत की तस्दीक़ के सिवा कोई शर्त़ नहीं रखी गई। जैसा कि पहले बयान किया जा चुका।

पांचवां दर्जा : किसी शख़्स ने दिल से तस्दीक़ की, फिर उसे ज़बान से कलिमाते शहादत अदा करने का मौक़अ़ भी मिला और उसे इस के वुजूब का भी इ़ल्म था लेकिन अदा न किया। तो मुमकिन है उस ने इस की अदाएगी से उसी त़रह़ ग़फ़्लत बरती हो जिस त़रह़ नमाज़ से ग़फ़्लत बरतता है। लिहाज़ा हम उसे मोमिन और जहन्नम में हमेशा न रहने वाला कहेंगे। क्यूंकि ईमान मह़ज़ तस्दीक़े क़ल्बी का नाम है, जब कि ज़बान ईमान की तर्जमान है। इस बिना पर लाज़िम है कि ईमान ज़बान की अदाएगी से क़ब्ल ही ताम माना जाए ताकि ज़बान इस की तर्जमानी कर सके। येही मौक़िफ़ सब से ज़ियादा ज़ाहिर है। क्यूंकि हमारे पास अल्फ़ाज़े ह़दीष के मआ़नी की इत्तिबाअ़ के सिवा हुक्म बयान करने की कोई सनद नहीं। लुग़वी ए'तिबार से भी ईमान तस्दीक़े क़ल्बी का नाम है और हुज़ूरे पुरनूर, शाफ़ेए यौमुन्नुशूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जहन्नम से हर उस शख़्स को निकाल लिया जाएगा जिस के दिल में राई बराबर भी ईमान हो।"(1)

जिस त़रह़ दीगर वाजिबात के तर्क से ईमान ख़त्म नहीं होता इसी त़रह़ ईमान के बारे में ज़बानी शहादत का वुजूब तर्क कर देने से दिल ईमान से ख़ाली नहीं हो जाता। बा'ज़ ने कहा : ज़बान से इक़रार करना ईमान का रुक्न है क्यूंकि कलिमाते शहादत दिल की ख़बर नहीं देते, बल्कि वोह दूसरे मुआ़मले की इन्शा और शहादत व इल्तिज़ाम की इब्तिदा हैं। लेकिन पहला क़ौल (या'नी हमारा मौक़िफ़) ही सब से ज़ियादा वाज़ेह़ है।

इस मस्अले में मरजिआ फ़िर्क़े ने तो ह़दें ही पार कर दीं और येह मौक़िफ़ इख़्तियार किया कि येह शख़्स जहन्नम में जा ही नहीं सकता। वोह कहते हैं : मोमिन चाहे गुनाहगार ही क्यूं न हो, जहन्नम में नहीं जाएगा। हम अ़न क़रीब इन के मौक़िफ़ का रद्द पेश करेंगे।

छटा दर्जा : कोई शख़्स ज़बान से तो لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰہ कहे लेकिन दिल से इस की तस्दीक़ न करे तो ऐसा शख़्स उख़रवी हुक्म के ए'तिबार से बिला शको शुबा काफ़िर और हमेशा के लिये जहन्नमी है। इस में भी कोई शक नहीं कि येह शख़्स उमरा व ख़ुलफ़ा से तअ़ल्लुक़ रखने वाले दुन्यावी अह़काम में मुसलमान ही समझा जाएगा। क्यूंकि उस की क़ल्बी कैफ़िय्यत पर आगाह नहीं हुवा जा सकता। लिहाज़ा हमारे लिये येही हुक्म है कि हम उस की क़ल्बी ह़ालत को भी वैसा ही जानें जैसा वोह अपनी ज़बान से इक़रार कर रहा है।

---

(1) ......صحیح البخاری، کتاب الایمان، باب زیادۃ الایمان ونقصانه، الحدیث:۴۴، ج۱، ص۲۸۔

ग़ौर त़लब मसाइल :

तीसरे अम्र में हमें शक है या'नी वोह दुन्यवी हुक्म जो उस बन्दे और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के दरमियान है जैसे इसी ह़ालत (या'नी सिर्फ़ ज़बानी क़बूले इस्लाम है क़ल्बी नहीं) में इस का कोई क़रीबी मुसलमान रिश्तेदार फ़ौत हो जाए, फिर वोह दिल से ईमान ले आए और अपने बारे में फ़तवा लेते हुए कहे कि ''मैं अपने रिश्तेदार की फ़ौतगी के वक़्त दिल से मोमिन नहीं था और अब विराषत मेरे क़ब्ज़े में है, तो क्या इन्दल्लाह येह विरषा मेरे लिये ह़लाल है ?'' या वोह शख़्स किसी मुसलमान औ़रत से निकाह़ करने के बा'द दिल से मोमिन होता है तो क्या उस निकाह़ का इआ़दा करना होगा ? येह मसाइल ग़ौर त़लब हैं। मुमकिन है इन मसाइल का जवाब यूं दिया जाए : दुन्यावी अह़काम के ज़ाहिर व बात़िन का दारोमदार ज़ाहिर पर है। या येह जवाब दिया जाए कि ज़ाहिर का हुक्म दूसरों के लिये है क्यूंकि वोह उस की क़ल्बी कैफ़िय्यत पर मुत्त़लअ़ नहीं हो सकते और खुद उस के लिये और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये उस का बात़िन, ज़ाहिर है। ह़क़ीक़ी इ़ल्म तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के पास है और हमारे नज़्दीक ज़ाहिर येही है कि येह माले विराषत उस शख़्स के लिये ह़लाल नहीं और उस पर निकाह़ का इआ़दा लाज़िम है। इसी बिना पर ह़ज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा बिन यमान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ मुनाफ़िक़ीन का जनाज़ा नहीं पढ़ते थे और अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ भी इस चीज़ का ख़याल रखते और जिस जनाज़े में ह़ज़रते हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ शिर्कत न करते आप भी न जाते और नमाज़ दुन्या में एक ज़ाहिरी अ़मल है अगर्चे इ़बादात में से है और ह़राम से इजतिनाब भी उन उमूर में से है जो नमाज़ की त़रह़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के वाजिब कर्दा हैं। जैसा कि,

हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहि़बे लौलाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ''طَلَبُ الْحَلَالِ فَرِيْضَةٌ بَعْدَ الْفَرِيْضَةِ'' या'नी रिज़्क़े ह़लाल की तलाश एक फ़र्ज़ के बा'द दूसरा फ़र्ज़ है।''(1)

और हमारा येह कहना इस क़ौल के ख़िलाफ़ नहीं है कि विराषत इस्लाम का हुक्म है और इस्लाम, तस्लीम का नाम है। बल्कि मुकम्मल तस्लीम तो वोह है जो ज़ाहिर व बात़िन दोनों को शामिल हो। येह अबह़ाष फ़िक़्ही और ज़न्नी होती हैं, इन का दारोमदार ज़ाहिरी अल्फ़ाज़, उ़मूमी अबह़ाष और क़ियासात पर होता है। लिहाज़ा कम इ़ल्म इस ख़याल में न रहे कि यहा क़त़ई हुक्म तक रसाई मत़लूब है जैसे इ़ल्मे कलाम में क़त़इय्यत त़लब करने का रवाज है। तो जो शख़्स उ़लूम में रुसूम व आ़दात की त़रफ़ नज़र करता है फ़लाह़ नहीं पाता।

(1) شعب الایمان للبیهقی، باب فی حقوق الاولاد والاهلین، الحدیث: ۸۷۴۱، ج۶، ص ۴۲۰۔

सुवाल : मो'तज़िला और मरजिआ फ़िर्क़ों का शुबा क्या है? और उन का मौक़िफ़ बाति़ल होने की क्या दलील है? **जवाब :** येह फ़िर्क़े कुरआन के उ़मूमी हुक्म से शुबे में पड़ गए। जैसे

फ़िर्क़ए मरजिआ का शुबा और इन के दलाइल :

कोई भी मोमिन जहन्नम में नहीं जाएगा, अगर्चे कितना ही गुनहगार क्यूं न हो।

﴾1﴿

فَمَنْ يُّؤْمِنْ بِرَبِّهٖ فَلَا يَخَافُ بَخْسًا وَّلَا رَهَقًا ﴿۱۳﴾ (پ۲۹، الجن:۱۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *तो जो अपने रब्ब पर ईमान लाए उसे न किसी कमी का ख़ौफ़ न ज़ियादती का।*

﴾2﴿

وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَرُسُلِهٖۤ اُولٰٓىٕكَ هُمُ الصِّدِّيْقُوْنَ (پ۲۷، الحديد:۱۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और वोह जो अल्लाह और उस के सब रसूलों पर ईमान लाए वोही हैं कामिल सच्चे।*

﴾3﴿

كُلَّمَاۤ اُلْقِيَ فِيْهَا فَوْجٌ سَاَلَهُمْ خَزَنَتُهَاۤ اَلَمْ يَاْتِكُمْ نَذِيْرٌ ﴿۸﴾ قَالُوْا بَلٰى قَدْ جَآءَنَا نَذِيْرٌ ۙ۬ فَكَذَّبْنَا وَقُلْنَا مَا نَزَّلَ اللّٰهُ مِنْ شَيْءٍ (پ۲۹، الملك:۸،۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *जब कभी कोई गुरोह इस में डाला जाएगा इस के दारोग़ा उन से पूछेंगे क्या तुम्हारे पास कोई डर सुनाने वाला न आया था कहेंगे क्यूं नहीं बेशक हमारे पास डर सुनाने वाले तशरीफ़ लाए, फिर हम ने झुटलाया और कहा अल्लाह ने कुछ नहीं उतारा।*

मज़्कूरा आयते मुबारका में (كُلَّمَاۤ اُلْقِيَ فِيْهَا فَوْجٌ) के अल्फ़ाज़ में उ़मूम है, इस से मा'लूम होता है कि जहन्नम में हर फेंका जाने वाला शख़्स वोही हो जो झुटलाता हो।

﴾4﴿

لَا يَصْلٰىهَاۤ اِلَّا الْاَشْقَى ﴿۱۵﴾ الَّذِيْ كَذَّبَ وَتَوَلّٰى ﴿۱۶﴾ (پ۳۰، الليل:۱۵،۱۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *न जाएगा उस में मगर बड़ा बद बख़्त, जिस ने झुटलाया और मुंह फेरा।*

इस आयते मुक़द्दसा में ह़स्र, इषबात और नफ़ी है।

﴾5﴾

مَنْ جَآءَ بِالْحَسَنَةِ فَلَهٗ خَيْرٌ مِّنْهَا ۚ وَهُمْ مِّنْ فَزَعٍ يَّوْمَئِذٍ اٰمِنُوْنَ ﴿۸۹﴾ (پ۲۰،النمل:۸۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *जो नेकी लाए उस के लिये इस से बेहतर सिला है और उन को उस दिन की घबराहट से अमान है।*

ईमान तो तमाम नेकियों की बुन्याद है और फ़रमाने बारी तआ़ला है :

﴾6﴾

وَاللّٰهُ يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿۱۳۴﴾ۚ (پ۴،اٰل عمران:۱۳۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और नेक लोग* **अल्लाह** *के मह़बूब हैं।*

﴾7﴾

اِنَّا لَا نُضِيْعُ اَجْرَ مَنْ اَحْسَنَ عَمَلًا ﴿۳۰﴾ۚ

(پ۱۵،الكهف:۳۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *हम उन के नेग (अज्र) ज़ाएअ़ नहीं करते जिन के काम अच्छे हों।*

मज़्कूरा दलाइल के जवाबात :

इन आयात से उन का मौक़िफ़ षाबित नहीं होता। क्यूंकि मज़्कूरा आयात में जहां ईमान का ज़िक्र है वहां (मह़ज़ ईमान नहीं बल्कि) ईमान बमअ़ अ़मल मुराद है। जैसा कि हम वज़ाह़त कर चुके हैं कि लफ़्ज़े ईमान कभी इस्लाम के मा'ना में इस्ति'माल होता है और वोह दिल, ज़बान और आ'माल की मुवाफ़क़त का नाम है और इस तावील पर वोह बहुत सारी रिवायात दलील हैं जिन में गुनाहगारों का अन्जाम और अ़ज़ाब की मिक़्दार का बयान है। नीज़ येह ह़दीषे पाक कि "जहन्नम से हर उस शख़्स को निकाल लिया जाएगा जिस के दिल में राई बराबर भी ईमान हो।"(1) अगर दाख़िल ही न हुवा तो निकाले जाने का क्या मत़लब ?

﴾1﴾

اِنَّ اللّٰهَ لَا يَغْفِرُ اَنْ يُّشْرَكَ بِهٖ وَيَغْفِرُ مَا دُوْنَ ذٰلِكَ لِمَنْ يَّشَآءُ ۚ (پ۵،النسآء:۴۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *बेशक* **अल्लाह** *उसे नहीं बख़्शता कि उस के साथ कुफ़्र किया जाए और कुफ़्र से नीचे जो कुछ है जिसे चाहे मुआ़फ़ फ़रमा देता है।*

कुरआने पाक के इन अल्फ़ाज़ "जिसे चाहे मुआ़फ़ फ़रमा दे" से मा'लूम होता है कि जिसे न चाहेगा न बख़्शेगा।

---

1 ......صحيح البخاری، كتاب الايمان، باب زيادة الايمان ونقصانه، الحديث:۴۴، ج۱، ص۲۸۔

﴾2﴿

وَمَنْ يَّعْصِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ فَاِنَّ لَهٗ نَارَ جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ؕ﴿۲۳﴾ (پ۲۹،الجن:۲۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और जो अल्लाह और उस के रसूल का हुक्म न माने, तो बेशक उन के लिये जहन्नम की आग है जिस में हमेशा हमेशा रहें।*

इस आयते मुबारका को कुफ़्फ़ार के साथ ख़ास करना हटधर्मी है।

﴾3﴿

اَلَآ اِنَّ الظّٰلِمِيْنَ فِيْ عَذَابٍ مُّقِيْمٍ ﴿۴۵﴾ (پ۲۵،الشوریٰ:۴۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *सुनते हो ! बेशक ज़ालिम हमेशा के अ़ज़ाब में हैं।*

﴾4﴿

وَمَنْ جَآءَ بِالسَّيِّئَةِ فَكُبَّتْ وُجُوْهُهُمْ فِي النَّارِ ؕ (پ۲۰،النمل:۹۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और जो बदी लाए तो उन के मुंह औंधाए गए आग में।*

उ़मूमी हुक्म पर मुश्तमिल इन आयात में उन दलाइल के जवाबात हैं जिन से फ़िर्क़ए मरजिआ ने उ़मूम षाबित किया। इन दोनों त़रफ़ के दलाइल में तावील व तख़्सीस की ज़रूरत है। क्यूंकि "रिवायात में गुनाहगारों के अ़ज़ाब में मुब्तला होने की सराह़त है।"(1) बल्कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने इब्रत निशान है :

وَاِنْ مِّنْكُمْ اِلَّا وَارِدُهَا ۚ (پ۱۶،مریم:۷۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और तुम में कोई ऐसा नहीं जिस का गुज़र दोज़ख़ पर न हो।*

मज़्कूरा फ़रमाने बारी तआ़ला में सराह़त है कि येह हुक्म सब के लिये है क्यूंकि (सिवाए ख़ास लोगों के) कोई भी मोमिन तमाम गुनाहों से नहीं बच सकता।

फ़रमाने बारी तआ़ला है :

لَا يَصْلٰىهَآ اِلَّا الْاَشْقَى ﴿۱۵﴾ۙ الَّذِيْ كَذَّبَ وَتَوَلّٰى ؕ﴿۱۶﴾ (پ۳۰،اللیل:۱۵،۱۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *न जाएगा उस में मगर बड़ा बद बख़्त, जिस ने झुटलाया और मुंह फेरा।*

इस आयते करीमा में मख़्सूस गुरौह या एक मुअ़य्यन बद बख़्त शख़्स मुराद है।

---

1 ......صحیح البخاری، کتاب التوحید، باب ماجاء فی قول اللّٰہ تعالٰی انّ رحمۃ اللّٰہ......الخ،الحدیث:۷۴۵۰، ج۴، ص ۵۵۹۔

كُلَّمَاۤ اُلۡقِیَ فِیۡهَا فَوۡجٌ سَاَلَهُمۡ خَزَنَتُهَاۤ (پ ۲۹، الملک:۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *जब कभी कोई गुरौह उस में डाला जाएगा उस के दारोग़ा उन से पूछेंगे ।*

यहां फ़ौज से कुफ़्फ़ार की फ़ौज मुराद है और आ़म को ख़ास़ करना जाइज़ है । इस आयते मुक़द्दसा को दलील बना कर ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबुल ह़सन अश्अ़री عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡقَوِی और कुछ मुतकल्लिमीन ने अल्फ़ाज़ के उमूम का इन्कार कर दिया और कहा : "ऐसे अल्फ़ाज़ में उस वक़्त तक तवक़्क़ुफ़ इख़्तियार किया जाए जब तक इन के मा'ना पर दलालत करने वाला कोई क़रीना न पाया जाए ।"

मो'तज़िला का शुबा और इन के दलाइल :

इन के नज़्दीक गुनाहे कबीरा का मुर्तकिब दाइरए इस्लाम से ख़ारिज और हमेशा जहन्नम में रहेगा लेकिन काफ़िर नहीं है । दर्जए ज़ैल आयाते त़य्यिबात बत़ौरे दलील पेश करते हैं :

﴾1﴿

وَاِنِّیۡ لَغَفَّارٌ لِّمَنۡ تَابَ وَاٰمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا ثُمَّ اهۡتَدٰی ﴿۸۲﴾ (پ ۱٦، طٰہٰ:۸۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और बेशक मैं बहुत बख़्शने वाला हूं उसे जिस ने तौबा की और ईमान लाया और अच्छा काम किया फिर हिदायत पर रहा ।*

﴾2﴿

وَالۡعَصۡرِ ﴿۱﴾ اِنَّ الۡاِنۡسَانَ لَفِیۡ خُسۡرٍ ﴿۲﴾ اِلَّا الَّذِیۡنَ اٰمَنُوۡا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ (پ ۳۰، العصر:۱ تا ۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *उस ज़मानए मह़बूब की क़सम बेशक आदमी ज़रूर नुक़्सान में है, मगर जो ईमान लाए और अच्छे काम किये ।*

﴾3﴿

وَاِنۡ مِّنۡكُمۡ اِلَّا وَارِدُهَا ۚ كَانَ عَلٰی رَبِّكَ حَتۡمًا مَّقۡضِیًّا ﴿ۚ۷۱﴾ (پ ۱٦، مریم:۷۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और तुम में कोई ऐसा नहीं जिस का गुज़र दोज़ख़ पर न हो, तुम्हारे रब्ब के ज़िम्मे पर येह ज़रूर ठहरी हुई बात है ।*

﴾4﴿

ثُمَّ نُنَجِّی الَّذِیۡنَ اتَّقَوۡا (پ ۱٦، مریم:۷۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *फिर हम डर वालों को बचा लेंगे ।*

«5»

وَمَنۡ یَّعۡصِ اللّٰهَ وَ رَسُوۡلَهٗ فَاِنَّ لَهٗ نَارَ جَهَنَّمَ (پ۲۹، الجن:۲۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और जो **अल्लाह** और उस के रसूल का हुक्म न माने, तो बेशक उन के लिये जहन्नम की आग है।

मज़्कूरा आयाते बय्यिनात में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने ईमान के साथ अ़मले सालेह़ का भी ज़िक्र फ़रमाया।

«6»

وَمَنۡ یَّقۡتُلۡ مُؤۡمِنًا مُّتَعَمِّدًا فَجَزَآؤُهٗ جَهَنَّمُ خٰلِدًا فِیۡهَا (پ۵، النساء:۹۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और जो कोई मुसलमान को जान बूझ कर क़त्ल करे तो उस का बदला जहन्नम है कि मुद्दतों इस में रहे।

मज़्कूरा दलाइल के जवाबात :

मज़्कूरा दलाइले क़ुरआनिय्या के उ़मूम में भी ज़ैल की आयात के सबब तख़्सीस है।

«1»

وَیَغۡفِرُ مَا دُوۡنَ ذٰلِكَ لِمَنۡ یَّشَآءُ ۚ (پ۵، النساء:۴۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और कुफ़्र से नीचे जो कुछ है जिसे चाहे मुआ़फ़ फ़रमा देता है।

इस आयत की रू से कुफ़्र व शिर्क के इलावा गुनाहों की मग़्फ़िरत मशिय्यते इलाही पर मुन्ह़सिर है।

«2» इसी त़रह़ सरकारे दो आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फरमाने आ़लीशान है : "जहन्नम से हर उस शख़्स को निकाल लिया जाएगा जिस के दिल में राई बराबर भी ईमान हो।"(1)

«3»

اِنَّا لَا نُضِیۡعُ اَجۡرَ مَنۡ اَحۡسَنَ عَمَلًا ۚ﴿۳۰﴾ (پ۱۵، الکھف:۳۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : हम उन के नेग (अज्र) ज़ाएअ़ नहीं करते जिन के काम अच्छे हों।

«4»

اِنَّ اللّٰهَ لَا یُضِیۡعُ اَجۡرَ الۡمُحۡسِنِیۡنَ ۙ﴿۱۲۰﴾ (پ۱۱، التوبہ:۱۲۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक **अल्लाह** नेकों का नेग (अज्रो इन्आ़म) ज़ाएअ़ नहीं करता।

अब बताइये ! एक गुनाह के सबब अस्ल ईमान और तमाम इबादात का अज्र कैसे ज़ाएअ़ कर दिया जाएगा ? और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का फ़रमान है :

---

(1)......صحیح البخاری، کتاب الایمان، باب زیادۃ الایمان ونقصانه، الحدیث:۴۴، ج۱، ص۲۸۔

وَمَنۡ یَّقۡتُلۡ مُؤۡمِنًا مُّتَعَمِّدًا (پ۵،النساء:۹۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और जो कोई मुसलमान को जान बूझ कर क़त्ल करे ।*

(हमेशा के लिये जहन्नमी वोह क़ातिल होगा जो किसी मोमिन को) मोमिन होने के नाते क़त्ल करे । इस आयते मुबारका का शाने नुज़ूल भी येही है ।

एक सुवाल और इस का जवाब :

इस तमाम बह़्ष से येह समझ में आता है कि ईमान में अ़मल का दख़्ल नहीं, ह़ालांकि अकाबिरीने मिल्लत से मन्क़ूल ईमान की येह ता'रीफ़ मश्हूर है कि "ईमान तस्दीक़े क़ल्बी, इक़रारे लिसानी और आ'माले सालेह़ा का नाम है ।" फिर इस का क्या मत़लब हुवा ? जवाब : आ'माले सालेह़ा को ईमान में शामिल किया जा सकता है क्यूंकि येह ईमान को मुकम्मल और तमाम करने वाले हैं । जैसे कहा जाता है : "सर और दोनों हाथ इन्सान से हैं ।" येह तो सब जानते हैं कि अगर सर नहीं तो इन्सान भी नहीं । लेकिन अगर हाथ न हों तो वोह इन्सान होने से ख़ारिज नहीं हो जाता । इसी त़रह़ येह भी कहा जाता है कि "तक्बीराते इन्तिक़ालात और तस्बीह़ात नमाज़ से हैं अगर्चे इन का तर्क नमाज़ को बात़िल नहीं करता ।" तस्दीक़ बिलक़ल्ब ईमान में इस त़रह़ है जिस त़रह़ वुजूदे इन्सानी के लिये सर कि अगर तस्दीक़ नहीं तो ईमान भी नहीं और बक़िय्या ताआ़त दीगर आ'ज़ाए जिस्मानी की त़रह़ हैं । जिन में से बा'ज़ को बा'ज़ पर फ़ज़ीलत है ।

नीज़ हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "لَایَزۡنِی الزَّانِی حِیۡنَ یَزۡنِی وَهُوَ مُؤۡمِن" या'नी : ज़ानी ज़िना करते वक़्त मोमिन नहीं होता ।"[1]

सह़ाबए किराम رِضۡوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیۡهِمۡ اَجۡمَعِیۡن मो'तज़िला की त़रह़ ज़ानी को काफ़िर नहीं समझते थे । बल्कि इस ह़दीष का मत़लब येह है कि वोह कामिल, पूरा और ह़क़ीक़ी मोमिन नहीं । जैसे कटे हुए आ'ज़ा वाले मजबूर शख़्स को कहा जाए : "येह इन्सान नहीं ।" या'नी ह़क़ीक़ते इन्सानिय्यत के बा'द इसे इन्सानी कमाल का दर्जा ह़ासिल नहीं ।

---

1 ......صحیح مسلم، کتاب الایمان باب بیان نقصان الایمان......الخ، الحدیث:۵۷، ص۴۸۔

मस्अला 2 : ईमान घटता बढ़ता है या नहीं

सुवाल : अस्लाफ़े किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام का येह मुत्तफ़िक़ा क़ौल है कि ईमान की कमी ज़ियादती होती है। इबादात से बढ़ता और गुनाहों से घटता है। जब तस्दीक़े क़ल्बी ही ईमान है तो फिर इस में कमी बेशी कैसी ?

जवाब : अस्लाफ़े किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام आदिल और हमारे लिये दलीले राह हैं। इन के फ़रामीन ह़क़ पर मब्नी हैं। जिन से रू गर्दानी किसी भी मुसलमान को रवा नहीं। ज़रूरत इन की बात समझने की है। इन का फ़रमान इस बात पर दलील है कि अ़मल ईमान का जुज़ या इस का रुक्न नहीं बल्कि एक इज़ाफ़ी चीज़ है, जिस से ईमान बढ़ जाता है। ईमान में कमी बेशी करने वाले अफ़्आ़ल मौजूद हैं। याद रहे कि किसी भी चीज़ की ज़ात में इज़ाफ़ा नहीं होता। लिहाज़ा येह नहीं कहा जाएगा कि इन्सान सर से बढ़ता है बल्कि यूं कहा जाएगा कि इन्सान दाढ़ी और मोटापे में बढ़ता है। इसी त़रह़ येह भी नहीं कहा जाएगा कि नमाज़ रुकूअ़ व सुजूद से बढ़ती है बल्कि कहा जाएगा कि इस में सुन्नतों और आदाब से इज़ाफ़ा होता है। लिहाज़ा अस्लाफ़े किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام के क़ौल से इस बात की सराह़त होती है कि ईमान का एक वुजूद है, फिर वुजूद के बा'द कमी बेशी से इस का ह़ाल मुख़्तलिफ़ होता है।

सुवाल : ए'तिराज़ अभी भी बाक़ी है कि तस्दीक़े क़ल्बी एक ख़स्लत है, इस में कमी बेशी का इम्कान कैसे ?

जवाब : अगर दोग़ले पन को छोड़ कर और फ़सादियों के शोरो शग़ब से बे परवाह हो कर ह़क़ीक़त से पर्दा उठाया जाए तो ए'तिराज़ दूर हो सकता है। सुनिये ! लफ़्ज़े इमान इस्मे मुश्तरक है (या'नी वोह इस्म जिस के कई मआ़नी हों), येह तीन मा'ना में इस्ति'माल होता है।

पहला मा'ना : उस तस्दीक़े क़ल्बी को ईमान कहा जाता है जो अ़क़ीदे और तक़्लीद के तौर पर हो, इस में असरारो रुमूज़ पर मुत्त़लअ़ होना और ईमान के मुतअ़ल्लिक़ गहराई से जानना शामिल नहीं होता। ईमान का येह दर्जा अ़वाम बल्कि हर मख़्लूक़ को ह़ासिल होता है। ख़्वास इस से ऊपर हैं। इस दर्जे का ए'तिक़ाद दिल पर धागे की गिरह की त़रह़ एक गिरह है जो कभी सख़्त व मज़बूत़ हो जाती है और कभी नर्म व कमज़ोर पड़ जाती है और ऐसा होना मुमकिन है। जैसे अपने अ़क़ाइद में मुतशद्दिद यहूदी, ईसाई या बद मज़्हब की मिषाल ले लीजिये जिसे उस के मज़्हब से हटाने के लिये कोई धमकी कारगर नहीं होती। वसाविस, तह़क़ीक़ व दलील और वा'ज़ व नसीह़त उस के लिये बे अषर होते हैं। लेकिन बा'ज़ ऐसे लोग भी होते हैं जो मुख़्तसर सी गुफ़्तगू से भी शक में पड़ जाते हैं। ज़रा सी धमकी या लचकदार कलाम के सबब वोह अपने

अ़क़ाइद को छोड़ने पर तय्यार हो जाते हैं। हा़लांकि उन्हें अपने अ़क़ाइद में शक नहीं होता जिस त़रह़ पहली क़िस्म वाले लोगों को नहीं होता लेकिन इन दोनों क़िस्म के लोगों में अ़क़ीदे की पुख़्तगी का फ़र्क़ होता है। पुख़्तगी और शिद्दत का येह फ़र्क़ हमारे सच्चे अ़क़ीदे के हा़मिल लोगों में भी पाया जाता है। अ़क़ीदे की पुख़्तगी और बढ़ोतरी में अ़मल की वोही अहमिय्यत है जो दरख़्त की नश्व व नुमा में पानी की है। इसी लिये **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया :

فَزَادَتْهُمْ اِيْمَانًا (پ۱۱،التوبہ:۱۲۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *इन के ईमान को उस ने तरक़्क़ी दी।*

एक और मक़ाम पर फ़रमाया :

لِيَزْدَادُوْۤا اِيْمَانًا مَّعَ اِيْمَانِهِمْ (پ۲۶،الفتح:۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *ताकि इन्हें यक़ीन पर यक़ीन बढ़े।*

बा'ज़ अह़ादीष़ में येह फ़रमान भी मौजूद है कि "اَلْاِيْمَانُ يَزِيْدُ وَيَنْقُصُ या'नी : ईमान घटता बढ़ता है।"[1] और येह घटना बढ़ना दिल में इ़बादत की तासीर के ए'तिबार से होता है।

ईमान घटने बढ़ने की कैफ़िय्यत जानने वाला :

इसे सिर्फ़ वोही शख़्स मा'लूम कर सकता है जो हु़ज़ूरे क़ल्ब के साथ की जाने वाली इ़बादत के अवक़ात और इन के इ़लावा अवक़ात का आपस में मुवाज़ना करे, तो वोह जान लेगा कि वक़्ते इ़बादत ईमान इस क़दर मज़बूत़ होता है कि किसी वस्वसा डालने वाले का वस्वसा उस को अपनी गिरिफ़्त में नहीं ले सकता। इसी त़रह़ यतीम पर शफ़्क़त का ए'तिक़ाद रखने वाला शख़्स अपने ए'तिक़ाद पर अ़मल करते हुए यतीम के सर पर दस्ते शफ़्क़त फेरे और उस के साथ हुस्ने सुलूक से पेश आए तो वोह अपने इस अ़मल के सबब दिल में ए'तिक़ादे शफ़्क़त को मज़ीद मज़बूत़ होता मह़सूस करेगा। यूंही आ़जिज़ी का ख़ूगर जब आ़जिज़ी वाला अ़मल करेगा या दूसरे के सामने आ़जिज़ी व इन्किसारी करेगा तो उसे अपने इस अ़मल की बिना पर दिल में आ़जिज़ी की ज़ियादती मह़सूस होगी।

आ़लमे ज़ाहिर और आ़लमे ग़ैब :

येही ह़ाल तमाम क़ल्बी सिफ़ात का है। इन सिफ़ात के ज़ेरे अष़र आ'ज़ा अ़मल करते हैं फिर आ'माल का अष़र उन सिफ़ात पर पड़ता है जो उन्हें मज़बूत़ और ज़ियादा करता है। इस का मज़ीद बयान नजात देने वाले आ'माल और हलाक करने वाले आ'माल के बाब में आएगा जहां बात़िन के ज़ाहिर के साथ और आ'माल के अ़क़ाइद व क़ुलूब के साथ वाबस्ता होने की वजह

---

1 ......الکامل فی ضعفاء الرجال، احمد بن محمد بن حرب، الرقم:۴۲،ج۱، ص ۳۳۰۔

भी बयान की जाएगी क्यूंकि येह आ़लमे ज़ाहिर के आ़लमे ग़ैब के साथ तअ़ल्लुक़ की जिन्स से हैं। मुल्क से मुराद आ़लमे ज़ाहिर है जिस का ह़वास से इल्म होता है और मलकूत से मुराद आ़लमे ग़ैब है जिसे नूरे बसीरत से जाना जा सकता है। **दिल आ़लमे ग़ैब से और आ'ज़ा व आ'माल आ़लमे ज़ाहिर** से हैं। इन दोनों आ़लमों में इस क़दर लत़ीफ़ तअ़ल्लुक़ है कि बा'ज़ ने इन दोनों को एक ही समझा और बा'ज़ ने कहा कि ''आ़लमे ज़ाहिर जो अज्सामे मह़सूसा पर मुश्तमिल है'' के इ़लावा और कोई आ़लम नहीं। जिस शख़्स ने इन दोनों आ़लमों के वुजूद और इन के अलग अलग होने को जाना और आपस में इन की वाबस्तगी को समझा उस ने अपने ख़यालात का इज़्हार इस त़रह़ किया :

رَقَّ الزُّجَاجُ وَرَقَّتِ الْخَمْرُ وَتَشَابَهَا فَتَشَاكَلَ الْاَمْرُ

فَكَاَنَّمَا خَمْرٌ وَلَا قَدَحٌ وَكَاَنَّمَا قَدَحٌ وَلَا خَمْرٌ

तर्जमा : रिक़्क़त के ए'तिबार से शीशा और शराब एक दूसरे के मुशाबेह हो गए, गोया शराब है प्याला नहीं या प्याला है शराब नहीं।

अब हम दोबारा अस्ल मक़्सूद की त़रफ़ आते हैं क्यूंकि मज़्कूरा बह़्ष का इल्मे मुआ़मला से कोई तअ़ल्लुक़ नहीं लेकिन इन दोनों उ़लूमों (या'नी इल्मे मुआ़मला व इल्मे मुकाशफ़ा) के दरमियान भी तअ़ल्लुक़ व वाबस्तगी है, इसी वजह से तुम्हें उ़लूमे मुकाशफ़ा हर दम उ़लूमे मुआ़मला की त़रफ़ माइल होते नज़र आएंगे। ह़त्ता कि तकल्लुफ़ के साथ इन का इन्किशाफ़ भी हो जाता है। पस ईमान का येह वोह मा'ना है जिस की बिना पर त़ाअ़त को ज़ियादतिये ईमान का सबब जाना जा सकता है।

चमकता निशान और सियाह नुक्ता :

अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم इरशाद फ़रमाते हैं कि ''ईमान एक चमकते निशान की त़रह़ ज़ाहिर होता है। बन्दे के नेक आ'माल इस की चमक बढ़ाते और ज़ियादा कर देते हैं जिस से सारा दिल रोशन हो जाता है और मुनाफ़क़त एक सियाह नुक्ते की त़रह़ ज़ाहिर होती है, बन्दा जब ह़राम का मुर्तकिब होता है तो वोह नुक्ता बढ़ कर ज़ियादा हो जाता है, आख़िरे कार उस के पूरे दिल पर सियाही छा जाती है और उस पर मुहर लग जाती है। येही ख़त्म (या'नी मोहर) है।'' फिर आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने येह आयते त़य्यिबा तिलावत फ़रमाई :

كَلَّا بَلْ ۜ رَانَ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ (پ٣٠، المطففين:١٤)

***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** कोई नहीं, बल्कि उन के दिलों पर ज़ंग चढ़ा दिया है।*

दूसरा मा'ना : ईमान से तस्दीक़ और अ़मल दोनों मुराद लिये जाएं। जैसा कि रसूले करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "اَلْاِيْمَانُ بِضْعٌ وَّسَبْعُوْنَ بَابًا" या'नी : ईमान के 70 से ज़ाइद शो'बे हैं।"(1)

एक रिवायत में है : "لَا يَزْنِي الزَّانِي حِيْنَ يَزْنِي وَهُوَ مُؤْمِن" या'नी ज़ानी ज़िना करते वक़्त मोमिन नहीं होता।"(2)

जब ईमान के मा'ना में अ़मल भी शामिल हो तो अ़मल की कमी बेशी का ख़ौफ़ नहीं होता। अस्ल ईमान या'नी तस्दीक़े क़ल्बी पर भी कमी बेशी का अषर होता है या नहीं? येह ग़ौर त़लब अम्र है और हम ने इशारा कर दिया कि येह भी इस अषर को क़बूल करता है।

तीसरा मा'ना : ईमान से मुराद वोह यक़ीनी तस्दीक़ हो जो कश्फ़, शर्हे सद्र (सीने के खुलने) और नूरे बसीरत के साथ मुशाहदा करने से ह़ासिल होती है। येह क़िस्म ज़ियादती क़बूल करने से दूर है। लेकिन मैं कहता हूं कि शको शुबा से ख़ाली यक़ीनी अम्र में भी इत़्मीनाने क़ल्ब एक जैसा नहीं होता जैसे दो एक से ज़ियादा होता है और आ़लम बनाया हुवा और ह़ादिष है इन दोनों बातों में अगर्चे कोई शक नहीं लेकिन इन में यक़ीन की कैफ़िय्यत एक जैसी नहीं। तमाम यक़ीनी उमूर वज़ाहत और इतमीनाने क़ल्ब के दर्जात में मुख़्तलिफ़ होते हैं।

ईमान के इन तीनों मआ़नी से षाबित हुवा कि अस्लाफ़े किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام का ईमान के मुतअ़ल्लिक़ कमी बेशी का क़ौल करना बिल्कुल दुरुस्त है और क्यूं दुरुस्त न हो जब कि ह़दीषे पाक में भी आ चुका है कि "जहन्नम से हर उस शख़्स को निकाल लिया जाएगा जिस के दिल में राई बराबर भी ईमान हो।"(3)

बा'ज़ रिवायात में "दीनार बराबर" के अल्फ़ाज़ भी वारिद हुए हैं।(4) अगर क़ल्बी तस्दीक़ में तफ़ावुत न हो तो इन मुख़्तलिफ़ मिक़्दारों के बयान का क्या मत़लब?

(1) ......صحیح مسلم، کتاب الایمان، باب بیان عدد شعب الایمان......الخ، الحدیث:۳۵، ص ۳۹، "شعبةً" بدله "بابًا"۔

(2) ......صحیح مسلم، کتاب الایمان، باب بیان نقصان الایمان......الخ، الحدیث:۵۷، ص ۴۸۔

(3) ......صحیح البخاری، کتاب الایمان، باب زیادة الایمان و نقصانه، الحدیث:۴۴، ج ۱، ص ۲۸۔

(4) ......صحیح البخاری، کتاب التوحید، باب قول اللّٰه تعالٰی وجوه یومئذٍ ناضرة......الخ، الحدیث:۷۴۳۹، ج ۴، ص ۵۵۴۔

मस्अला 3 : "اِنْ شَآءَاللّٰه" के साथ अपने मोमिन होने का इक़रार करना

सुवाल : अस्लाफ़े किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام के इस क़ौल का क्या मत़लब है कि "मैं मोमिन हूं اِنْ شَآءَاللّٰه ?" हालांकि इस्तिषना शक होता है और ईमान में शक कुफ़्र है। येह सब ह़ज़रात अपने मोमिन होने का जवाब क़त़इय्यत के साथ नहीं देते थे और इस से इजतिनाब करते थे। जैसे,

ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान षौरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं जो कहे : "मैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के हां मोमिन हूं वोह बड़ा झूटा है।" और जो कहे : "मैं ह़क़ीक़ी मोमिन हूं वोह बिदअ़ती है।" जो ह़क़ीक़त में अपने आप को मोमिन समझता है वोह झुटा कैसे और ह़क़ीक़त में अपने आप को मोमिन समझने वाला अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के हां भी मोमिन है। जैसे अगर कोई ह़क़ीक़त में लम्बा या सख़ी है और वोह इस बात को जानता है तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के हां भी ऐसा ही होगा। इसी त़रह़ ख़ुश या ग़मगीन या देखने सुनने वाला भी है। अगर किसी इन्सान से पूछा जाए "क्या तुम जानदार हो ?" तो वोह येह जवाब देना मुनासिब नहीं समझेगा कि "मैं जानदार हूं اِنْ شَآءَاللّٰه"[1]

ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान षौरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى ने जब येह बात कही तो उन से पूछा गया कि "हम क्या कहें ?" तो फ़रमाया : "तुम यूं कहो ! हम ईमान लाए अल्लाह पर और उस पर जो हमारी त़रफ़ उतरा" [2]

येह क़ौल कि "हम ईमान लाए अल्लाह पर और उस पर जो हमारी त़रफ़ उतरा" और "मैं मोमिन हूं" इन दोनों जुम्लों में क्या फ़र्क़ है ?

ऐ ह़सन ! तू झूटा है :

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى से पूछा गया : "क्या आप मोमिन हैं ?" जवाब दिया : "اِنْ شَآءَاللّٰه।" फिर कहा गया : "ऐ अबू सईद ! अपने ईमान का इक़रार اِنْ شَآءَاللّٰه के साथ करने की क्या वजह है ?" फ़रमाया : "मुझे डर है कि मैं "हां" कहूं और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़रमाए : **"ऐ ह़सन ! तूने झूट बोला"** और मुझ पर कलिमए इलाही (या'नी अ़ज़ाबे ख़ुदावन्दी) लाज़िम हो जाए।"

आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تعالٰی عَلَيْه फ़रमाया करते थे : "मुझे इस बात का खटका लगा रहता है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मेरे कुछ नापसन्दीदा आ'माल देखे और मुझ से नाराज़ हो कर फ़रमा दे : **"जा ! मैं तेरा कोई अ़मल क़बूल नहीं करता"** और मैं बे फ़ाइदा अ़मल करता रहूं।"[3]

---

1 ……قوت القلوب، الفصل الخامس والثلاثون فيه ذكر اتصال الايمان……الخ، ج ٢، ص ٢٣٠۔

2 ……المرجع السابق۔ 3 ……المرجع السابق۔

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَكْرَم फ़रमाते हैं : जब तुम से पूछा जाए कि क्या तुम मोमिन हो ? तो तुम जवाब दो : لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰه । एक रिवायत में है यूं कह दो : मुझे अपने ईमान में शक नहीं और तेरा मुझ से सुवाल करना बिदअ़त है ।(1)

ह़ज़रते सय्यिदुना अल्क़मा बिन क़ैस नख़ई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَلِى से पूछा गया : "क्या आप मोमिन हैं ?" तो फ़रमाया اِنْ شَآءَ اللّٰه मुझे येही उम्मीद है ।(2)

ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान षौरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى (अपना मोमिन होना यूं बयान) फ़रमाते हैं : "हम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ, उस के फ़िरिश्तों उस की किताबों और उस के रसूलों पर ईमान लाए । हमें येह मा'लूम नहीं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में हम क्या हैं ?"(3) तो इस तरह इस्तिषना के साथ अपने ईमान को बयान करने का क्या मत़लब है ?

जवाब : येह इस्तिषना बिल्कुल दुरुस्त है । इस की चार वुजूहात हैं । दो का तअ़ल्लुक़ शक से है लेकिन यहां शक अस्ले ईमान में नहीं बल्कि ख़ातिमए ईमान और कमाले ईमान में है और दो का शक से कोई तअ़ल्लुक़ नहीं ।

जिन दो का शक से तअ़ल्लुक़ नहीं :

पहली वजह : जिस का शक से कोई तअ़ल्लुक़ नहीं बल्कि इस ख़ौफ़ की बिना पर ह़तमी जवाब देने से इजतिनाब किया जाता है कि कहीं अपने नफ़्स की पाकीज़गी व बड़ाई खुद बयान करना लाज़िम न आए (कि येह मज़्मूम है) ।

जैसा कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मुबारक इरशादात हैं :

﴿1﴾ فَلَا تُزَكُّوْۤا اَنْفُسَكُمْ ؕ (پ۲۷، النجم:۳۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तो आप अपनी जानों को सुथरा न बताओ ।

﴿2﴾ اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ يُزَكُّوْنَ اَنْفُسَهُمْ ؕ (پ۵، النساء:۴۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : क्या तुम ने उन्हें न देखा जो खुद अपनी सुथराई बयान करते हैं ।

﴿3﴾ اُنْظُرْ كَيْفَ يَفْتَرُوْنَ عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ ؕ (پ۵، النساء:۵۰)

*तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : देखो ! कैसा **अल्लाह** पर झूट बांध रहे हैं ।*

---

1 ......قوت القلوب، الفصل الخامس والثلاثون فيه ذكر اتصال الايمان......الخ، ج۲، ص۲۳۰۔

2 ......المرجع السابق۔ 3 ......المرجع السابق۔

बुरा सच :

किसी दाना से पूछा गया : "किस सच्चाई में बुराई है?" फ़रमाया : "आदमी का खुद पसन्दी में मुब्तला होना।" ईमान तो बुज़ुर्ग सिफ़ात में से एक अ़ज़ीम सिफ़त है और इस सिफ़त का ह़तमी इक़रार मुत़लक़न खुद सताई है और इस्तिषना (या'नी اِنْ شَآءَ اللّٰہ) के अल्फ़ाज़ गोया अपनी बड़ाई बयान करने से बचने के लिये हैं। जैसे किसी शख़्स से पूछा जाए कि "क्या आप ह़कीम हैं या मुफ़्ती या मुफ़स्सिर?" वोह जवाब दे : "जी हां! اِنْ شَآءَ اللّٰہ" इस त़रह़ का जवाब शक पर मब्नी नहीं बल्कि अपनी ता'रीफ़ खुद करने से बचने का ह़ीला है। जिस से नफ़्से ख़बर में ज़ो'फ़ और तरद्दुद आ जाता है। इस का मत़लब येह है कि ख़बर से लाज़िम आने वाली चीज़ को कमज़ोर करना मक़्सूद है और वोह चीज़ खुद सताई है।

इस तावील को मद्दे नज़र रखते हुए येह ज़ेह्न नशीन रहे कि अगर किसी से मज़्मूम सिफ़त के मुतअ़ल्लिक़ पूछा जाए तो उस के जवाब में اِنْ شَآءَ اللّٰہ नहीं कहा जाएगा।(1)

दूसीर वजह : इस कलिमे(اِنْ شَآءَ اللّٰہ) से मक़्सूद हर ह़ाल में यादे इलाही और हर मुआ़मला मशिय्यते खुदावन्दी के सिपुर्द करना है। जैसे रब्बे करीम عَزَّوَجَلَّ ने अपने प्यारे नबी ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को ता'लीम फ़रमाई। चुनान्चे, इरशादे बारी तआ़ला है :

وَلَا تَقُوْلَنَّ لِشَایْءٍ اِنِّیْ فَاعِلٌ ذٰلِكَ غَدًا ﴿۲۳﴾ اِلَّاۤ اَنْ یَّشَآءَ اللّٰهُ (پ۱۵، الکھف:۲۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और हरगिज़ किसी बात को न कहना कि मैं कल येह कर दूंगा मगर येह कि अल्लाह चाहे।*

फिर इस बात को सिर्फ़ शक वाले कामों तक ही मह़दूद नहीं रखा बल्कि इरशाद फ़रमाया :

لَتَدْخُلُنَّ الْمَسْجِدَ الْحَرَامَ اِنْ شَآءَ اللّٰهُ اٰمِنِیْنَ مُحَلِّقِیْنَ رُءُوْسَكُمْ وَمُقَصِّرِیْنَ (پ۲٦، الفتح:۲۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *बेशक तुम ज़रूर मस्जिदे ह़राम में दाख़िल होगे अगर अल्लाह चाहे अम्न व अमान से अपने सरों के बाल मुंडाते या तरशवाते।*

ह़ालांकि अल्लाह तबारक व तआ़ला को बख़ूबी मा'लूम था कि मुसलमान लाज़िमी त़ौर पर मक्का में दाख़िल होंगे, येही उस की मशिय्यत भी थी, लेकिन इस अन्दाज़े बयान से मक़्सूद अपने प्यारे नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को ता'लीम देना था।

(1).....जैसे पूछा जाए कि "क्या तुम चोर हो?" तो इस का जवाब اِنْ شَآءَ اللّٰہ से देना मन्अ़ है।

क़ब्रिस्तान में सलाम करने का त़रीक़ा :

हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का मा'मूल था कि जिस अम्र की भी ख़बर देना चाहते ख़्वाह वोह ज़न्नी होता या यक़ीनी اِنْ شَآءَ اللہ कहते। यहां तक कि जब क़ब्रिस्तान से गुज़र होता तो फ़रमाते : ''اَلسَّلَامُ عَلَیْکُمْ دَارَ قَوْمٍ مُّؤْمِنِیْنَ وَاِنَّا اِنْ شَآءَ اللہُ بِکُمْ لَاحِقُوْن या'नी : ऐ मोमिन क़ौम की जमाअ़त ! तुम पर सलाम हो اِنْ شَآءَ اللہ हम भी तुम से मिलने वाले हैं।''(1)

ह़ालांकि मोमिनों के साथ मिलना (या'नी वफ़ात पाना) एक यक़ीनी अम्र है। लेकिन अदब का तक़ाज़ा येह है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र किया जाए और हर अम्र का तअ़ल्लुक़ उस की मशिय्यत से जोड़ा जाए और येह अल्फ़ाज़ (اِنْ شَآءَ اللہ) इसी मा'ना को अदा करते हैं। ह़त्ता कि अ़वामुन्नास में इन अल्फ़ाज़ को शौक़ व तमन्ना के इज़्हार के लिये भी इस्ति'माल किया जाता है। जैसा कि अगर आप को बताया जाए कि फ़ुलां शख़्स जल्द ही मरने वाला है और आप कहें : اِنْ شَآءَ اللہ तो इस बात से येह अन्दाज़ा नहीं होगा कि आप को उस की मौत में शक है बल्कि येह कि आप को उस की मौत में रग़बत है और जब आप को बताया जाए कि फ़ुलां शख़्स अ़न क़रीब बीमारी से शिफ़ा पाने वाला है और आप कहें : اِنْ شَآءَ اللہ तो इस का मत़लब रग़बत लिया जाएगा। पस मुआ़मला ख़्वाह कोई भी हो इन अल्फ़ाज़ (اِنْ شَآءَ اللہ) को शक वाले मा'ना से रग़बत वाले मा'ना और ज़िक्रुल्लाह की त़रफ़ फैरा गया है।

जिन दो का शक से तअ़ल्लुक़ है :

तीसरी वजह : जिस का तअ़ल्लुक़ शक से है। इस का मत़लब है मैं सच्चा मोमिन हूं اِنْ شَآءَ اللہ क्यूंकि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मख़्सूस लोगों की शान में इरशाद फ़रमाया :

اُولٰٓئِکَ هُمُ الْمُؤْمِنُوْنَ حَقًّا ؕ (پ ۹، الانفال: ۴) ***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : यही सच्चे मुसलमान हैं।***

इस आयत से षाबित हुवा कि मोमिनों की दो अक़्साम हैं (कामिल, ग़ैरे कामिल) चुनान्चे, शक कमाले ईमान में है न कि अस्ले ईमान में और कमाले ईमान में तो हर एक को शक हो सकता है, जो कि कुफ़्र नहीं। दो वजह से कमाले ईमान में शक दुरुस्त है : (1)....मुनाफ़क़त कमाले ईमान को दूर कर देती है और निफ़ाक़ एक मख़्फ़ी अम्र है जिस से नजात यक़ीनी त़ौर पर मा'लूम नहीं होती। (2)....आ'माले सालेह़ा से ईमान कामिल होता है और आदमी कामिल त़ौर पर आ'माल के वुजूद का इ़ल्म नहीं रखता।

---

1 ......صحیح مسلم، کتاب الطہارۃ، باب استحباب اطالۃ الغرۃ......الخ، الحدیث: ۲۴۹، ص ۱۵۱۔

अ़मल के मुतअ़ल्लिक़ 5 फ़रामीने बारी तआ़ला :

﴿1﴾

اِنَّمَا الۡمُؤۡمِنُوۡنَ الَّذِیۡنَ اٰمَنُوۡا بِاللّٰہِ وَ رَسُوۡلِہٖ ثُمَّ لَمۡ یَرۡتَابُوۡا وَ جٰہَدُوۡا بِاَمۡوَالِہِمۡ وَ اَنۡفُسِہِمۡ فِیۡ سَبِیۡلِ اللّٰہِ ؕ اُولٰٓئِکَ ہُمُ الصّٰدِقُوۡنَ ﴿۱۵﴾

(پ۲۶،الحجرات:۱۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *ईमान वाले तो वोही हैं जो* ***अल्लाह*** *और उस के रसूल पर ईमान लाए फिर शक न किया और अपनी जान और माल से* ***अल्लाह*** *की राह में जिहाद किया वोही सच्चे हैं ।*

शक उस सिद्क़ में होता है (जो कामिल मुसलमानों का वस्फ़ है, न कि अस्ले ईमान में) ।

﴿2﴾

وَ لٰکِنَّ الۡبِرَّ مَنۡ اٰمَنَ بِاللّٰہِ وَ الۡیَوۡمِ الۡاٰخِرِ وَ الۡمَلٰٓئِکَۃِ وَ الۡکِتٰبِ وَ النَّبِیّٖنَ ۚ (پ۲،البقرۃ:۱۷۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *हां ! अस्ली नेकी येह कि ईमान लाए* ***अल्लाह*** *और क़ियामत और फ़िरिश्तों और किताब और पैग़म्बरों पर ।*

इस आयते मुबारका में मुसलमानों के 20 औसाफ़ बयान किये गए हैं । जैसे वा'दा वफ़ाई और मसाइब पर सब्र करना । फिर इरशाद फ़रमाया :

اُولٰٓئِکَ الَّذِیۡنَ صَدَقُوۡا ؕ (پ۲،البقرۃ:۱۷۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *येही हैं जिन्हों ने अपनी बात सच्ची की ।*

﴿3﴾

یَرۡفَعِ اللّٰہُ الَّذِیۡنَ اٰمَنُوۡا مِنۡکُمۡ ۙ وَ الَّذِیۡنَ اُوۡتُوا الۡعِلۡمَ دَرَجٰتٍ ؕ (پ۲۸،المجادلۃ:۱۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ***अल्लाह*** *तुम्हारे ईमान वालों के और उन के जिन को इल्म दिया गया दर्जे बुलन्द फ़रमाएगा ।*

﴿4﴾

لَا یَسۡتَوِیۡ مِنۡکُمۡ مَّنۡ اَنۡفَقَ مِنۡ قَبۡلِ الۡفَتۡحِ وَ قٰتَلَ ؕ (پ۲۷،الحدید:۱۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *तुम में बराबर नहीं वोह जिन्हों ने फ़त्ह़े मक्का से क़ब्ल ख़र्च और जिहाद किया ।*

﴿5﴾

ہُمۡ دَرَجٰتٌ عِنۡدَ اللّٰہِ ؕ (پ۴،ال عمرٰن:۱۶۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *वोह* ***अल्लाह*** *के यहां दर्जा दर्जा हैं ।*

अ़मल के मुतअ़ल्लिक़ 2 फ़रामैने मुस्त़फ़ा :

﴾1﴿.....اَلْاِیْمَانُ عُرْیَانٌ وَلِبَاسُہُ التَّقْوٰی या'नी ईमान बे लिबास है इस का लिबास तक़्वा है।[1]

﴾2﴿.....اَلْاِیْمَانُ بِضْعٌ وَّسَبْعُوْنَ بَابًا اَدْنَاھَا اِمَاطَۃُ الْاَذٰی عَنِ الطَّرِیْقِ या'नी ईमान के 70 से ज़ाइद दर्जे हैं जिन में से कमतर, रास्ते से तक्लीफ़ देह चीज़ दूर करना है।[2]

इन आयात व रिवायात से मा'लूम होता है कि कमाले ईमान आ'माले सालेह़ा के सबब ह़ासिल होता है।

(अब वोह रिवायात मुलाह़ज़ा फ़रमाइये, जिन से मा'लूम होता है कि) मुनाफ़क़त और शिर्के ख़फ़ी (या'नी रियाकारी) से दूरी, ईमान को कमाल बख़्शती है। चुनान्चे,

निफ़ाक़ की मज़म्मत में वारिद 19 रिवायात व अक़्वाल

﴾1﴿... اَرْبَعٌ مَّنْ كُنَّ فِيهِ فَهُوَ مُنَافِقٌ خَالِصٌ وَّاِنْ صَامَ وَصَلّٰى وَزَعَمَ اَنَّهٗ مُؤْمِنٌ مَنْ اِذَا حَدَّثَ كَذَبَ وَاِذَا وَعَدَ اَخْلَفَ وَاِذَا ائْتُمِنَ خَانَ وَاِذَا خَاصَمَ فَجَرَ

या'नी : जिस में येह चार ख़स्लतें हों वोह पक्का मुनाफ़िक़ है ख़्वाह वोह नमाज़ रोज़े का पाबन्द हो और खुद को मोमिन ख़याल करता हो :

(1)....जब बात करे तो झूट बोले (2)....जब वा'दा करे तो पूरा न करे (3)....जब उस के पास अमानत रखी जाए तो ख़ियानत करे और (4)....जब झगड़ा करे तो गालियां बके।[3]

बा'ज़ रिवायत में "اِذَا عَاھَدَ غَدَرَ या'नी जब वा'दा करे तो वफ़ा न करे।" के अल्फ़ाज़ हैं।[4]

﴾2﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद खुदरी رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि "दिल चार क़िस्म के हैं : (1)....इन्तिहाई साफ़ जिस में चराग़ रोशन है येह मोमिन का दिल है। (2)....दो रुख़ा दिल, जिस में ईमान भी है और मुनाफ़क़त भी। इस में ईमान की मिषाल सब्ज़ी की त़रह़ है, जो मीठे पानी से नश्व व नुमा पाती है और मुनाफ़क़त की मिषाल उस नासूर की सी है जिसे पीप और गन्दा ख़ून मज़ीद बढ़ाते हैं। तो इन दो में से जो ज़ियादा बढ़ा उसी का हुक्म लगेगा।"[5]

(एक दिल वोह है जिस पर ग़िलाफ़ चढ़ा है और वोह अपने ग़िलाफ़ पर बन्धा है येह काफ़िर का दिल है। एक दिल वोह है जो औंधा पड़ा है येह मुनाफ़िक़ का दिल है।)

---

1 ......الفقيه والمتفقه، ذكر احاديث واخبار شتى، الحديث:١٢٩، ج١، ص١٤٦۔

2 ......صحيح مسلم، كتاب الايمان، باب بيان عدد شعب الايمان......الخ، الحديث:٣٥، ص٣٩۔٤٠۔

3 ......المرجع السابق، الحديث:٥٨، ٥٩، ص٥٠، ٥١۔ 4 ......المرجع السابق، الحديث:٥٨، ص٥٠۔

5 ......المسند للامام احمد بن حنبل، مسند ابى سعيد الخدرى، الحديث:١١١٢٩، ج٤، ص٣٦۔

एक रिवायत में है : غُلِبَتْ عَلَيْهِ ذَهَبَتْ بِهٖ या'नी जो माद्दा ग़ालिब आया वोह इसे ले जाएगा।

﴾3﴿.....اَكْثَرُ مُنَافِقِيْ هٰذِهِ الْاُمَّةِ قُرَّاؤُهَا या'नी इस उम्मत के अकषर क़ारी मुनाफ़िक़ होंगे।[1]

﴾4﴿.....اَلشِّرْكُ اَخْفٰى فِيْ اُمَّتِيْ مِنْ دَبِيْبِ النَّمْلِ عَلَى الصَّفَا या'नी मेरी उम्मत में शिर्क सख़्त पथ्थर पर रैंगने वाली च्यूंटी से भी ज़ियादा मख़्फ़ी है।[2]

﴾5﴿.....हज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा बिन यमान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि "ज़मानए रिसालत में कोई शख़्स एक (ग़ैर मुनासिब) कलिमा कहता तो वोह ता वफ़ात मुनाफ़िक़ शुमार होता और अब मैं तुम से ऐसे कलिमात दिन में 10 बार सुनता हूं।"[3]

﴾6﴿.....बा'ज़ उ-लमा फ़रमाते हैं : "اَقْرَبُ النَّاسِ مِنَ النِّفَاقِ مَنْ يَرٰى اَنَّهٗ بَرِيْءٌ مِنَ النِّفَاقِ या'नी जो अपने आप को मुनाफ़क़त से दूर शुमार करे वोह मुनाफ़क़त के ज़ियादा क़रीब है।"

﴾7﴿.....हज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाया करते थे कि "ज़मानए रिसालत की ब निस्बत आज मुनाफ़िक़ीन की ता'दाद ज़ियादा है। उस दौर में वोह अपना निफ़ाक़ छुपाते थे और आज ज़ाहिर करते हैं।"[4]

मुनाफ़क़त सच्चे और कामिल ईमान की ज़िद है। येह एक मख़्फ़ी अम्र है। इस से ज़ियादा दूर वोही है जो इस से ख़ाइफ़ रहता है और जो अपने आप को इस से नजात याफ़्ता समझता है वोह इस के ज़ियादा क़रीब है।

﴾8﴿.....हज़रते सय्यिदुना इमाम हसन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی के सामने बयान किया गया कि बा'ज़ लोग कहते हैं : "इस दौर में मुनाफ़क़त ख़त्म हो गई है।" आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया : "भाई ! अगर मुनाफ़िक़ हलाक हो जाएं तो (रास्तों में चलने वालों की कमी के बाइष)" तुम्हें रास्तों से वहशत होने लगे।"

﴾9﴿.....इन्ही से या किसी और से मरवी है कि "अगर मुनाफ़िक़ीन की दुमें हों तो (इन की कषरत के बाइष) हमारा ज़मीन पर पाउं रखना मुश्किल हो जाए।"

---

1 ......المسند للامام احمد بن حنبل، مسند الشاميين، حديث عقبة بن عامر الجهنى، الحديث:١٧٣٧٢، ج٦، ص١٣٣۔

2 ......فردوس الاخبارللديلمى، باب الشين، الحديث:٣٤٩٠، ج٢، ص١٤۔

3 ......المسند للامام احمد بن حنبل، حديث حذيفة بن اليمان، الحديث:٢٣٣٣٧، ج٩، ص٨٠۔

4 ......صحيح البخارى، كتاب الفتن، باب اذا قال عند قوم شيئاً......الخ، الحديث:٧١١٢، ج٤، ص٤٤٧، بتغيرٍقليلٍ۔

﴾10﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عَنْھُمَا की मौजूदगी में एक शख़्स इशारों किनायों में ह़ज्जाज बिन यूसुफ़ की बुराई करने लगा तो आप رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : "क्या तुम उस की मौजूदगी में भी येह बात कर सकते हो ?" उस ने अ़र्ज़ की : "नहीं !" आप رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : "ज़मानए रिसालत में हम इस चीज़ को मुनाफ़क़त में शुमार करते थे।"(1)

﴾11﴿.....सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : "مَنْ کَانَ ذَا لِسَانَیْنِ فِی الدُّنْیَا جَعَلَہُ اللّٰہُ ذَا لِسَانَیْنِ فِی الْاٰخِرَۃ" या'नी : जो दुन्या में दो ज़बानों वाला (या'नी दो रुख़ा) होगा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आख़िरत में भी उसे दो ज़बानों वाला बना देगा।"(2)

﴾12﴿.....एक रिवायत में है : "شَرُّ النَّاسِ ذُو الْوَجْہَیْنِ الَّذِیْ یَاْتِیْ ھٰؤُلَاءِ بِوَجْہٍ وَّیَاْتِیْ ھٰؤُلَاءِ بِوَجْہٍ" या'नी लोगों में से बदतरीन दो रुख़ा शख़्स है जो इधर एक रुख़ के साथ आए और उधर दूसरे रुख़ के साथ।"(3)

﴾13﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ह़सन बसरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی से उन लोगों की बाबत पूछा गया जो कहते हैं कि हमें अपनी ज़ात पर मुनाफ़क़त का कोई ख़त़रा नहीं तो आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تعالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! अगर मुझे अपना निफ़ाक़ से बरी होना मा'लूम हो जाए तो येह मेरे नज़दीक ज़मीन भर सोना मिलने से ज़ियादा पसन्दीदा है।"(4)

﴾14﴿.....आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تعالٰی عَلَیْہ मज़ीद फ़रमाते हैं : "मुनाफ़क़त की पहचान येह है कि बन्दा दिल व ज़बान, ज़ाहिरो बात़िन और अन्दरूनी व बैरूनी मुआ़मलात में मुख़्तलिफ़ हो।"(5)

﴾15﴿.....एक शख़्स ह़ज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عَنْہُ से अ़र्ज़ गुज़ार हुवा कि मुझे निफ़ाक़ से बहुत डर लगता है। आप رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : "अगर तू मुनाफ़िक़ होता तो तू इस

---

(1) المسند للامام احمد بن حنبل، مسند عبداللّٰہ بن عمر، الحدیث:۵۸۳۳، ج۲، ص۴۳۳، مفھومًا، لیس فیہ ذکر الحجاج۔
قوت القلوب، الفصل الخامس والثلاثون فیہ ذکر اتصال الایمان......الخ، ج۲، ص۲۲۹۔

(2) المعجم الاوسط، من اسمہ مقدام، الحدیث:۸۸۸۵، ج۷، ص۳۱۳۔

(3) قوت القلوب، الفصل الخامس والثلاثون فیہ ذکر اتصال الایمان......الخ، ج۲، ص۲۲۹۔
صحیح مسلم، کتاب البر والصلۃ والآداب، باب ذم ذی الوجھین، الحدیث:۲۵۲۶، ص۱۴۰۳۔

(4) قوت القلوب، الفصل الخامس والثلاثون فیہ ذکر اتصال الایمان......الخ، ج۲، ص۲۲۹۔

(5) قوت القلوب، الفصل الخامس والثلاثون فیہ ذکر اتصال الایمان......الخ، ج۲، ص۲۲۹۔

से बे ख़ौफ़ होता क्यूंकि मुनाफ़िक़ मुनाफ़क़त से बे ख़ौफ़ होता है।"(1)

﴾16﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अबी मुलैका رَحْمَۃُاللہِ تعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : "मैं ने 130, एक रिवायत के मुत़ाबिक़ 150 सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللہِ تعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن से मुलाक़ात की, येह तमाम नुफ़ूसे क़ुदसिय्या निफ़ाक़ से ख़ौफ़ ज़दा रहते थे।"(2)

﴾17﴿.....एक मरतबा हुज़ूर नबिय्ये पाक, साह़िबे लौलाक صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان رِضْوَانُ اللہِ تعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن के झुरमुट में तशरीफ़ फ़रमा थे, इस दौरान सह़ाबए किराम ने एक शख़्स का तज़्किरा किया और उस की बहुत ज़ियादा ता'रीफ़ की। इसी अषना में वोह शख़्स जूते हाथ में उठाए पहुंच गया, वुज़ू का अषर उस के चेहरे पर ज़ाहिर था पानी के क़त़रे टपक रहे थे और पेशानी पर सजदों का निशान था। सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم येही वोह शख़्स है जिस की हम ता'रीफ़ कर रहे थे।" तो आप صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "मुझे इस के चेहरे पर शैत़ानी कालक नज़र आ रही है।" उस शख़्स ने आ कर सलाम अ़र्ज़ किया और सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللہِ تعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن के साथ बैठ गया। रसूलुल्लाह صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस से फ़रमाया : "तुझे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! बता क्या जब तू यहां आया तो तेरे दिल में येह ख़याल पैदा नहीं हुवा कि इन में से कोई भी तुझ से बेहतर नहीं है ?" उस ने अ़र्ज़ की : "जी हां !"(3)

हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इन अल्फ़ाज़ के साथ दुआ़ मांगी : "اَللّٰھُمَّ اِنِّیْ اَسْتَغْفِرُكَ لِمَا عَلِمْتُ وَلِمَا لَمْ اَعْلَمْ" या'नी : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मैं तुझ से बख़्शिश चाहता हूं उस चीज़ की जिसे मैं जानता हूं और उस की भी जिसे मैं नहीं जानता।" अ़र्ज़ की गई : "क्या आप صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم भी ख़ौफ़ मह़सूस करते हैं ?" इरशाद फ़रमाया : "मैं कैसे बे ख़ौफ़ हो जाऊं, जब कि दिल रह़मान عَزَّوَجَلَّ की उंगलियों में से दो उंगलियों के दरमियान है जैसे चाहे बदल दे।"(4)

---

1 ......قوت القلوب، الفصل الخامس والثلاثون فيه ذكر اتصال الايمان......الخ، ج ٢، ص ٢٢٩ ـ

2 ......قوت القلوب، الفصل الخامس والثلاثون فيه ذكر اتصال الايمان......الخ، ج ٢، ص ٢٣٠ ـ

3 ......مسند ابی يعلى، مسند ابی بكر الصديق، الحديث: ٨٥، ج ١، ص ٥٩ ـ

4 ......قوت القلوب، الفصل الخامس والثلاثون فيه ذكر اتصال الايمان......الخ، ج ٢، ص ٢٣٢ ـ

صحيح مسلم، كتاب القدر، باب تصرف الله تعالٰى القلوب كيف شاء، الحديث: ٢٦٥٤، ص ١٤٢٧ ـ

《18》.....फ़रमाने बारी तआ़ला है :

وَبَدَا لَهُمْ مِّنَ اللّٰهِ مَا لَمْ يَكُوْنُوْا يَحْتَسِبُوْنَ ﴿۴۷﴾

(پ۲۴، الزمر: ۴۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और उन्हें अल्लाह की तरफ़ से वोह बात ज़ाहिर हुई जो उन के ख़याल में न थी ।

इस आयत की तफ़्सीर में बयान किया गया है कि ''बा'ज़ आ'माल, लोग नेकियां समझ कर करते रहेंगे लेकिन बरोज़े क़ियामत वोह गुनाहों के पलड़े में होंगे ।''

《19》.....ह़ज़रते सय्यिदुना सिरी सक़ती عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : अगर कोई शख़्स बाग़ में जाए जहां हर क़िस्म के दरख़्त हों, उन पर हर क़िस्म के परन्दे हों और हर परन्दा जुदा ज़बान में उस शख़्स से कलाम करे और कहे : ''اَلسَّلَامُ عَلَیْكَ یَا وَلِیَّ اللّٰه'' या'नी : ऐ अल्लाह के वली ! तुम पर सलामती हो ।'' येह सुन कर अगर उस का नफ़्स राहत महसूस करे तो वोह उन परन्दों का असीर (क़ैदी) है ।

फ़ारूक़ी व दारानी तक़्वा :

मज़्कूरा रिवायात व अक़्वाल से मा'लूम होता है कि निफ़ाक़ की बारीकियों और शिर्के ख़फ़ी की वजह से मुआ़मला ख़त़रनाक है । इस से बे ख़ौफ़ नहीं रहा जा सकता । ह़त्ता कि अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ह़ज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा बिन यमान رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से अपने बारे में पूछा करते थे कि ''कहीं मेरा शुमार मुनाफ़िक़ीन में तो नहीं हुवा ?''

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सुलैमान दारानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِی फ़रमाते हैं : ''मैं ने बा'ज़ हुक्काम से कोई (ख़िलाफ़े शरअ़)'' बात सुनी, तो उस का रद्द करने का इरादा किया (लेकिन ख़ामोश रहा) कि कहीं मेरे क़त्ल का हुक्म सादिर न कर दिया जाए और ऐसा मैं ने मौत के डर की वजह से नहीं बल्कि इस वजह से किया कि मौत के वक़्त कहीं मेरे दिल में मख़्लूक़ के सामने फ़ख़्र पैदा न हो जाए ।''

बहर ह़ाल येह निफ़ाक़ अस्ले ईमान के नहीं बल्कि कामिल, ह़क़ीक़ी और खरे ईमान के ख़िलाफ़ होता है ।

निफ़ाक़ की अक़्साम :

निफ़ाक़ की दो क़िस्में हैं : (1)....वोह निफ़ाक़ जो दाइरए इस्लाम से ख़ारिज और मिल्लते कुफ़्फ़ार में दाख़िल कर दे और हमेशा हमेशा जहन्नम में रहने वालों में शामिल कर दे ।

(2)....वोह निफ़ाक़ जो बन्दे को एक मख़्सूस मुद्दत के लिये जहन्नमी बना दे, या बुलन्द दर्जात में कमी कर के सिद्दीक़ीन के मर्तबे से नीचे गिरा दे। इस क़िस्म में शक होता है इस लिये यहां اِنْ شَآءَاللہ कहना बेहतर है। मुनाफ़क़त की इस क़िस्म का सबब ज़ाहिर व बातिन का यक्सां न होना है। सिर्फ़ सिद्दीक़ीन ही **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ख़ुफ़्या तदबीर से मह़फ़ूज़ और ख़ुद पसन्दी वग़ैरा जैसे उमूर से दूर होते हैं।

या रब्ब عَزَّوَجَلَّ वक़्ते मौत सलामतिये ईमान नसीब फ़रमा !

चौथी वजह : जो शक की त़रफ़ मन्सूब है। इस का तअ़ल्लुक़ बुरे ख़ातिमे के ख़ौफ़ के साथ होता है क्यूंकि बन्दा नहीं जानता कि मौत के वक़्त उसे सलामतिये ईमान नसीब होगी या नहीं? अगर ख़ातिमा कुफ़्र पर हुवा तो पूरी ज़िन्दगी के आ'माल ज़ाएअ़ हो जाएंगे कि आ'माल के अज्रो षवाब का दारोमदार ब वक़्ते आख़िर सलामतिये ईमान पर मौक़ूफ़ है। मषलन किसी रोज़ादार से दोपहर के वक़्त उस के रोज़े के सह़ीह़ होने के मुतअ़ल्लिक़ पूछा जाए और वोह कहे : वाक़ेई ! मैं रोज़ादार हूं, इस के बाद दिन ही में वोह शख़्स इफ़्त़ार कर दे तो उस का झूट वाज़ेह़ हो जाएगा। क्यूंकि रोज़ा तभी सह़ीह़ माना जाएगा जब कि उसे पूरा दिन ग़ुरूबे आफ़्ताब तक क़ाइम रखा जाए। पस जिस त़रह़ रोज़े की सिह़ह़त पूरे दिन पर मौक़ूफ़ है इसी त़रह़ ईमान की सिह़ह़त पूरी ज़िन्दगी पर मौक़ूफ़ है और इसे आख़िरी वक़्त से क़ब्ल साबिक़ा ह़ालत की बुन्याद पर सलामत कहा जाता है। जिस में शक और बुरे अन्जाम का ख़ौफ़ बाक़ी है। इसी वजह से ख़ौफ़े ख़ुदा रखने वाले अकषर बुज़ुर्ग गिर्या व ज़ारी करते हैं क्यूंकि हुस्ने ख़ातिमा गुज़श्ता का अन्जाम है और मशिय्यते अज़ली उसी वक़्त ज़ाहिर होगी जब फ़ैसला त़लब चीज़ का ज़ुहूर होगा और इस का किसी भी बशर को इल्म नहीं होता और बुरे ख़ातिमे का ख़ौफ़ अज़ली फ़ैसले के ज़ुहूर के ख़ौफ़ की त़रह़ है। अकषर अवक़ात ऐसा अज़ली फ़ैसला मौजूदा ह़ालत के ख़िलाफ़ होता है। तो कैसे मा'लूम कि वोह उन लोगों में से हो जिन के मुक़द्दर में भलाई लिख दी गई है?

फ़रमाने बारी तआ़ला है :

وَجَآءَتْ سَكْرَةُ الْمَوْتِ بِالْحَقِّ (پ۲۶، قٓ:۱۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और आई मौत की सख़्ती ह़क़ के साथ*

इस आयते मुक़द्दसा में "ह़क़" से मुराद फ़ैसलए अज़ली है जिस का ज़ुहूर मौत के वक़्त होता है।

बा'ज़ बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِيْن का फ़रमान है : "मीज़ाने अ़मल पर वोही अ़मल लाए जाएंगे जिन पर ख़ातिमा हुवा है।"(1)

(1)......تفسیر عبدالرزاق، سورۃ الانبیاء، الحدیث:۱۸۶۷، ج۲، ص۳۸۷۔

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाया करते थे कि "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! जिसे अपने बुरे ख़ातिमे का ख़ौफ़ नहीं होता उस का ख़ातिमा बुरा होता है।"(1)

येह भी मन्क़ूल है कि "बा'ज़ गुनाहों की सज़ा बुरा ख़ातिमा है।" हम इन से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की पनाह मांगते हैं।

कहा जाता है कि "वोह गुनाह (जो बुरे ख़ातिमे का सबब बनते हैं)" विलायत व करामत का झूटा दा'वा करना है।"

ईमान पर मिलने वाली मौत को शहादत पर तरजीह :

किसी आ़रिफ़ बिल्लाह का क़ौल है कि "अगर मुझे अपने कमरए ख़ास के दरवाज़े पर **ईमान पर मौत** मिल रही हो और **शहादत** इमारत के सद्र दरवाज़े (MAIN ENTRANCE) पर मुन्तज़िर हो तो (शहादत अगर्चे आ'ला दर्जे की सआ़दत है मगर) मैं कमरे के दरवाज़े पर मिलने वाली ईमान पर मौत को फ़ौरन क़बूल कर लूंगा कि क्या मा'लूम इमारत के सद्र दरवाज़े तक पहुंचते पहुंचते मेरा दिल बदल जाए।"

एक बुज़ुर्ग फ़रमाते हैं कि "अगर मैं किसी को 50 साल तक मुसलमान जानूं, फिर मेरे और उस के दरमियान एक सुतून ह़ाइल हो जाए और इसी दौरान वोह मर जाए तो मैं ह़तमी तौर पर येह नहीं कहूंगा कि इसे दीने इस्लाम पर मौत आई है।"

ह़दीषे पाक में है : जो कहे : "मैं मोमिन हूं" वोह काफ़िर है और जो कहे : "मैं आ़लिम हूं" वोह जाहिल है।(2)

फ़रमाने बारी तआ़ला है :

وَتَمَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ صِدْقًا وَّعَدْلًا ؕ

(پ۸، الانعام: ۱۱۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और पूरी है तेरे रब्ब की बात सच और इन्साफ़ में।*

इस आयते मुबारका की तफ़्सीर में कहा गया है कि जिस का ख़ातिमा ईमान पर हुवा उस के लिये सिद्क़ और जिस का ख़ातिमा शिर्क पर हुवा उस के लिये अ़द्ल है।

---

1 ......قوت القلوب، الفصل الخامس والثلاثون فيه ذكر اتصال الايمان......الخ، ج۲، ص۲۲۸۔

2 ......تفسیر ابن کثیر، سورة النساء: ۴۹، ج۲، ص۲۹۲۔

المعجم الاوسط، من اسمه محمد، الحدیث: ۶۸۴۶، ج۵، ص۱۳۹۔

फ़रमाने बारी तआ़ला :

وَلِلّٰهِ عَاقِبَةُ الْاُمُوْرِ ﴿۴۱﴾ (پ ۱۷، الحج: ۴۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और अल्लाह ही के लिये सब कामों का अन्जाम ।

लिहाज़ा जब (सलामतिये ईमान में) इस क़दर शक हो तो اِنْ شَآءَاللّٰه कहना ज़रूरी हुवा। क्यूंकि ईमान वोही है जिस के नतीजे में जन्नत मिले । जैसे रोज़ादार उसे ही कहेंगे जो बरियुज़्ज़िम्मा कर दे। जो रोज़ा ग़ुरूबे आफ़्ताब से पहले फ़ासिद हो जाए, वोह बरियुज़्ज़िम्मा नहीं करता लिहाज़ा जिस त़रह़ वोह रोज़ा रोज़ा नहीं कहलाएगा इसी त़रह़ ईमान का भी मुआ़मला है, बल्कि होना तो येह चाहिये कि अगर कोई आप से गुज़श्ता रखे हुए रोज़े के बारे में पूछे कि क्या कल आप रोज़े से थे ? तो जवाब में اِنْ شَآءَاللّٰه कहना चाहिये क्यूंकि अस्ल रोज़ा तो वोही कहलाएगा जो बारगाहे ख़ुदावन्दी में दर्जए क़बूलिय्यत पा ले और क़बूलिय्यत पोशीदा उमूर में से है जिस का इ़ल्म सिर्फ़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के पास है। इसी वजह से बेहतर है कि हर अ़मले ख़ैर के साथ اِنْ شَآءَاللّٰه कहा जाए और येह क़बूले अ़मल में शक की बुन्याद पर कहा जाएगा। क्यूंकि अ़मले सालेह़ के सह़ीह़ होने की ज़ाहिरी शराइत़ पूरी करने के बा'द कुछ पोशीदा उमूर क़बूले अ़मल में रुकावट बन जाते हैं जिन का इ़ल्म रब्बुल आ़लमीन جَلَّ جَلَالُهٗ को ही होता है। लिहाज़ा उस शक को अच्छा क़रार दिया जाएगा।

येह वोह वुजूहात हैं जिन की बिना पर अपने ईमान का इक़रार اِنْ شَآءَاللّٰه के साथ किया जाता है। येह वोह आख़िरी बह़ष है जिस पर हम अपने बाब "قواعدُ العقائد" को नुक़्त़ए इख़्तिताम की त़रफ़ लाए हैं।

اَلْحَمْدُ لِلّٰه येह बाब इख़्तिताम को पहुंचा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मतें हों हमारे सरदार ह़ज़रत मुह़म्मद صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم पर और हर बरगुज़ीदा बन्दे पर।

تُوْبُوْا اِلَى اللّٰه اَسْتَغْفِرُ اللّٰه

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

त़हारत का बयान

सब ख़ूबियां **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये जिस ने अपने बन्दों पर लुत़्फ़ो करम फ़रमाते हुए उन्हें पाकीज़गी का हुक्म फ़रमाया और उन के बात़िन को पाक करने के लिये उन पर मेहरबानियों का फ़ैज़ान जारी किया उन के ज़ाहिर को पाक करने के लिये रक़ीक़ और बहने वाला पानी बनाया और ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत हो जिन का नूरे हिदायत काइनात के गोशे गोशे को मुह़ीत़ है और आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की पाकीज़ा आल पर ऐसी रह़मत हो जिस की बरकात मह़शर के दिन हमें नजात दिलाएं नीज़ हमारे और हर मुसीबत के दरमियान ढाल का काम दें।

त़हारत के मुतअ़ल्लिक़ हु़ज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के चन्द फ़रामीन मुलाह़ज़ा फ़रमाइये :

त़हारत के मुतअ़ल्लिक़ तीन फ़रामीने मुस्त़फ़ा

﴾1﴿.....بُنِيَ الدِّيْنُ عَلَى النَّظَافَة या'नी दीन की बुन्याद पाकीज़गी पर है।[1]

﴾2﴿.....مِفْتَاحُ الصَّلٰوةِ الطُّهُوْر या'नी नमाज़ की कुन्जी त़हारत है।[2]

(पाकीज़गी ह़ासिल करने वालों की फ़ज़ीलत में) इरशादे बारी तआ़ला है :

فِيْهِ رِجَالٌ يُّحِبُّوْنَ اَنْ يَّتَطَهَّرُوْا ؕ وَ اللّٰهُ يُحِبُّ الْمُطَّهِّرِيْنَ ۝۱۰۸ (پ ۱۱، التوبۃ:۱۰۸)

*तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : उस में वोह लोग हैं कि ख़ूब सुथरा होना चाहते हैं और सुथरे **अल्लाह** को प्यारे हैं।*

﴾3﴿.....اَلطُّهُوْرُ نِصْفُ الْاِيْمَان या'नी पाकीज़गी आधा ईमान है।"[3]

कुरआने पाक में इरशाद होता है :

مَا يُرِيْدُ اللّٰهُ لِيَجْعَلَ عَلَيْكُمْ مِّنْ حَرَجٍ وَّ لٰكِنْ يُّرِيْدُ لِيُطَهِّرَكُمْ (پ ۶، المائدۃ: ۶)

*तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : **अल्लाह** नहीं चाहता कि तुम पर कुछ तंगी रखे हां येह चाहता है कि तुम्हें ख़ूब सुथरा कर दे।*

---

❶.....الشفاء بتعریف حقوق المصطفی،الباب الثانی فی تکمیل محاسنہ،فصل و امّانظافۃ جسمہ......الخ، ج ۱، ص ۶۱۔

❷.....سنن ابی داود، کتاب الطہارۃ، باب فرض الوضوء، الحدیث: ۶۱، ج ۱، ص ۵۶۔

❸.....سنن الترمذی، کتاب الدعوات، الحدیث: ۳۵۳۰، ج ۵، ص ۳۰۸۔

इन रिवायात के ज़ाहिर से अहले बसीरत ने जान लिया कि सब से ज़ियादा अहम्मिय्यत बात़िन की सफ़ाई की है क्यूंकि हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के इस फ़रमान कि **"सफ़ाई निस्फ़ ईमान है"** का येह मफ़हूम हरगिज़ नहीं हो सकता कि ज़ाहिर को तो पानी बहा कर पाक कर लिया जाए मगर बात़िन को गन्दगियों से पाक न किया जाए।

त़हारत के दर्जात :

त़हारत के चार दर्जात हैं : (1) ज़ाहिर को नापाकियों, नजासतों और पाख़ाने वग़ैरा से पाक करना (2) आ'ज़ा को जराइम और गुनाहों से पाक करना (3) दिल को बुरे अख़्लाक़ और नापसन्दीदा ख़स्लतों से पाक करना (4) बात़िन को ग़ैरुल्लाह से पाक करना।

आख़िरी दर्जे की त़हारत अम्बिया व सिद्दीक़ीन की त़हारत है। हर रुत्बे में त़हारत उस अ़मल का निस्फ़ है जिस में वोह पाई जाती है। मषलन बात़ीनी अ़मल (या'नी चौथे दर्जे) में मक़्सूद येह है कि इस के लिये अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की जलालत व अ़ज़्मत ज़ाहिर हो जाए और मा'रिफ़ते इलाही बात़िन में उस वक़्त तक जागुज़ीं नहीं हो सकती जब तक कि ग़ैरे ख़ुदा का ख़याल दिल से न निकल जाए। इसी लिये अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया :

قُلِ اللّٰهُ ۙ ثُمَّ ذَرْهُمْ فِیْ خَوْضِهِمْ یَلْعَبُوْنَ ﴿۹۱﴾

(پ۷،الانعام:۹۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : अल्लाह कहो फिर उन्हें छोड़ दो उन की बेहुदगी में खेलता।

क्यूंकि येह दोनों चीज़ें एक दिल में जम्अ़ नहीं हो सकतीं (और किसी के दो दिल हो नहीं सकते। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :)

مَا جَعَلَ اللّٰهُ لِرَجُلٍ مِّنْ قَلْبَیْنِ فِیْ جَوْفِهٖ ۚ

(پ۲۱،الاحزاب:۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : अल्लाह ने किसी आदमी के अन्दर दो दिल न रखे।

और जहां तक दिल की पाकीज़गी (या'नी तीसरे दर्जे) का मुआ़मला है तो इस में अस्ल मक़्सूद दिल की त़हारत है और इस के दो दर्जे हैं : (1) दिल को अच्छे अख़्लाक़ और शरई अ़क़ाइद से आबाद करना और (2) बुरे अ़क़ाइद और नापसन्दीदा ख़स्लतों से पाक रखना इन में से एक दर्जा दूसरे के लिये शर्त़ है। इस मा'ना के ए'तिबार से पाकीज़गी निस्फ़ ईमान है। दिल की त़रह़ आ'ज़ा की त़हारत के भी दो दर्जे हैं : (1) इन्हें ममनूआ़त से पाक रखना और (2) त़ाआ़त से मुज़य्यन करना। इस में पहला दर्जा दूसरे के लिये शर्त़ है। येह ईमान के दर्जात हैं और हर दर्जे के लिये एक त़बक़ा है। बन्दा उस वक़्त तक बुलन्द दर्जे तक रसाई नहीं पा सकता जब तक निचले दर्जे से ऊपर न चला जाए।

बुलन्द मक़ाम पर फ़ाइज़ होने से मानेअ़ अ़मल :

बन्दा उस वक़्त तक बाति़न को मज़्मूम सिफ़ात से पाक और अच्छी आ़दात से आबाद नहीं कर सकता जब तक कि दिल को बुरी आ़दत से पाक और अच्छे अख़्लाक़ से मुज़य्यन न कर ले और जो शख़्स आ'ज़ा को ममनूआ़त (नापसन्दीदा उमूर) से पाक और इ़बादत से मा'मूर न कर ले वोह बुलन्द मक़ाम पर फ़ाइज़ नहीं हो सकता। पस जब मत़लूब क़ाबिले इ़ज़्ज़ो शरफ़ हो तो उस का रास्ता दुश्वार और त़वील होता है और घाटियां ज़ियादा होती हैं। लिहाज़ा येह ख़याल न किया जाए कि येह चीज़ बा आसानी ह़ासिल हो जाएगी। अलबत्ता ! जो शख़्स इन दर्जात में फ़र्क़ को नहीं समझ सकता वोह त़हारत का आख़िरी दर्जा ही समझ सकता है (या'नी ज़ाहिर को गन्दगियों और नजासतों से पाक करना) जो कि मत़लूबा मग़्ज़ के ए'तिबार से आख़िरी ज़ाहिरी छिलका है वोह इस में बहुत ग़ौरो ख़ौज़ करता और इस के त़रीक़ों में मुबालग़ा करता है। नीज़ अपने तमाम अवक़ात इस्तिन्जा करने, कपड़े धोने, ज़ाहिर की सफ़ाई करने और बहने वाले वाफ़िर पानी की त़लब में गुज़ार देता है क्यूंकि वोह अपने वस्वसे और अ़क़्ली गुमान में येही समझता है कि त़हारत जो मत़लूब है वोह येही है। ऐसा शख़्स अस्लाफ़ की सीरत से ना वाक़िफ़ है और नहीं जानता कि अस्लाफ़ तो ज़ाहिरी उमूर के मुक़ाबले में अपनी तमाम फ़िक्र व हिम्मत और कोशिश दिल की सफ़ाई में लगा देते थे। चुनान्चे,

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ और दीगर अहले सुफ़्फ़ा फ़रमाते हैं कि "हम भुना हुवा गोश्त खाते फिर नमाज़ का वक़्त हो जाता तो हम अपनी उंगलियां कंकरियों में डाल कर मिट्टी से पौंछ लेते और तक्बीर कहते।"(1)

अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि "ज़मानए रिसालत में हम अश्नान (एक क़िस्म की बोटी जो साबुन की मिष्ल सफ़ाई का काम देती है)" के मुतअ़ल्लिक़ नहीं जानते थे। हमारे रूमाल हमारे पाउं के तल्वे ही होते थे। जब हम चिकनाई वाली चीज़ खाते तो हाथों को तल्वों ही से साफ़ कर लेते थे।(2)

सब से पहली बिदअ़तें :

मन्क़ूल है कि प्यारे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के बा'द सब से पहले चार बिदअ़तें ज़ाहिर हुईं : (1)....छलनी (2)....अश्नान (3)....टेबल और (4)....पेट भर कर खाना।

---

1 ......سنن ابن ماجه، کتاب الاطعمة، باب الشواء، الحدیث: ۳۳۱۱، ج۴، ص ۳۱۔

2 ......قوت القلوب، الفصل السادس والثلاثون فی فضائل اهل السنة......الخ، ج۲، ص ۲۳۹۔

जूते पहन कर नमाज़ पढ़ना कैसा ?[1]

अल ग़रज़ अस्लाफ़े किराम رَحِمَهُمُ اللّٰہُ السَّلَام की तमाम तर तवज्जोह बाति़न की सफ़ाई की त़रफ़ हुवा करती थी यहां तक कि बा'ज़ का क़ौल है कि "जूते पहन कर नमाज़ पढ़ना अफ़्ज़ल है क्यूंकि ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام ने आक़ाए दो आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को तवज्जोह दिलाई कि ना'लैने पाक में कुछ लग गया है तो आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने जूते उतार दिये, सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن ने भी जूते उतार दिये तो आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इस्तिफ़्सार फ़रमाया : "तुम ने जूते क्यूं उतारे ?"[2] [3]

1.....मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْمَنَّان मिरआतुल मनाजीह़, जि. 1, स. 469 पर इस ह़दीषे पाक कि "यहूद की मुख़ालफ़त करो वोह न जूतों में नमाज़ पढ़ते हैं न मौज़ों में" के तह़त फ़रमाते हैं : या'नी यहूद जूते या मौज़े में नमाज़ जाइज़ नहीं समझते तुम जाइज़ समझो, ख़याल रहे कि मौज़ों में नमाज़ अदा करना सुन्नत है लेकिन जूते अगर पाक हों और इतने नर्म कि सजदे में ह़रज वाक़ेअ़ न हो कि पाउं की उंगलियां ब ख़ूबी मुड़ कर क़िब्ला रू हो सकें तो इन में नमाज़ जाइज़ है हमारे मुल्क की जूतियां नमाज़ के क़ाबिल नहीं नीज़ अब लोग सह़ाबए किराम (رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن) जैसे बा अदब नहीं, अगर इन्हें जूतों में नमाज़ की इजाज़त दी जाए, तो मुसल्ले और मस्जिदें गन्दगी से भर देंगे इस लिये अब जूते उतार कर ही मस्जिदों में आना और नमाज़ पढ़ना चाहिये (از مرقاۃ و شامی) इस से मा'लूम हुवा कि बे दीनों की मुख़ालफ़त के लिये जाइज़ काम ज़रूर करना चाहियें जैसे इस ज़माने में मीलाद शरीफ़ और ग्यारहवीं, (साह़िबे) मिरक़ात ने फ़रमाया कि चूंकि अब यहूद हमारे अ़लाक़े में रहे नहीं, इस लिये अब जूता पहने हुए नमाज़ पढ़ने की ज़रूरत नहीं। ख़याल रहे कि मस्जिद या नमाज़ के अदब के लिये जूता उतारना क़ुरआन शरीफ़ से षाबित है। रब्ब (عَزَّ وَجَلَّ) फ़रमाता है : فَاخْلَعْ نَعْلَيْكَ ۚ اِنَّكَ بِالْوَادِ الْمُقَدَّسِ طُوًى (پ۱۶، طٰہٰ:۱۲) ऐ मूसा तुम इ़ज़्ज़त वाले जंगल में हो जूते उतार दो, बा'ज़ बा अदब मुरीद अपने शैख़ के शहर में जूते नहीं पहनते, इमाम मालिक ज़मीने मदीना में कभी घोड़े या किसी और सुवारी पर सुवार न हुए, इन के आदाब का माख़ज़ येह आयत है और येह ह़दीष इस आयत के ख़िलाफ़ नहीं।

2......سنن ابی داود، کتاب الصلاۃ، باب الصلاۃ فی النعل، الحدیث:۶۵۰، ج۱، ص۲۶۱۔

3....मिरआतुल मनाजीह़, जि. 1 स. 470 पर इस ह़दीषे मुबारका के तह़त है : येह सब कुछ थोड़ी सी ह़रकत से हुवा, वरना अ़मले कषीर नमाज़ को फ़ासिद कर देता है। ह़दीष के जुज़ **"जब क़ौम ने येह देखा तो उन्हों ने भी अपने जूते उतार दिये"** के तह़त फ़रमाते हैं : इस से दो मस्अले मा'लूम हुए एक येह कि हु़ज़ूर (صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) की पैरवी बहर ह़ाल की जाए वजह समझ में आए या न आए देखो सह़ाबए किराम (عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان) ने हु़ज़ूर (صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) को ना'लैन उतारते देखा तो बिग़ैर वजह की तह़क़ीक़ किये जूते उतार दिये और सरकार ने इस इत्तिबाअ़ पर ए'तिराज़ न फ़रमाया, दूसरा येह कि सह़ाबए किराम (عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان) नमाज़ में बजाए सजदागाह के अपने ईमानगाह या'नी हु़ज़ूरे अन्वर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को देखा करते थे वरना इन्हें आप के ....

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम नख़ई عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡقَوِی (नमाज़ में) जूते उतारने का रद्द करते हुए जूते उतारने वालों के मुतअ़ल्लिक़ फ़रमाया करते थे : "मैं चाहता हूं कि कोई ह़ाजत मन्द आए और इन के जूते ले कर चलता बने ।"

नीज़ अस्लाफ़े किराम رَحِمَھُمُ اللّٰہُ السَّلَام (ज़ाहिरी) उमूर में बहुत कम तवज्जोह देते थे बल्कि गली कूचों के कीचड़ से नंगे पाउं गुज़र जाते, इस पर बैठ जाते, मसाजिद में ज़मीन पर (कुछ बिछाए बिग़ैर) नमाज़ अदा कर लेते, गन्दुम और जव का आटा इस्ति'माल कर लेते ह़ालांकि वोह जानवरों के ज़रीए़ गाहा जाता और वोह इस पर चलते हैं, वोह नजासत में लोट पोट होने वाले ऊंटों और घोड़ों के पसीने से नहीं बचते थे । अस्लाफ़े किराम رَحِمَھُمُ اللّٰہُ السَّلَام में से किसी के मुतअ़ल्लिक़ मन्क़ूल नहीं कि उस ने नजासत की बारीकियों के मुतअ़ल्लिक़ सुवाल किया हो, इस मुआ़मले में वोह इस ह़द तक बे तवज्जोह रहते थे ।

बुराई नेकी और नेकी बुराई बन गई :

अब मुआ़मला यहां तक पहुंच गया है कि एक गुरौह ने जहालत का नाम पाकीज़गी रख दिया है और इसे दीन की बुन्याद क़रार देते हैं । उन का ज़ियादा वक़्त ज़ाहिर को संवार ने में गुज़रता है जैसा दुल्हन कंघी से बालों को संवारती है । जब कि उन का बात़िन ख़राब और ग़ुरूर व तकब्बुर, ख़ुदपसन्दी, जहालत, रिया और निफ़ाक़ से भरा हुवा है और ह़द तो येह है कि वोह

.....इस फ़े'ल शरीफ़ की ख़बर कैसे होती जैसे मस्जिदे ह़रम शरीफ़ का नमाज़ी नमाज़ में का'बा को देखे ऐसे ही हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के पीछे नमाज़ पढ़ने वाला नमाज़ में हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को देखे । ह़दीष के जुज़ **"इन में गन्दगी है"** के तह़्त फ़रमाते हैं : थूक रींट वग़ैरा घिन की चीज़ न कि पलीदी और नजासत वरना नमाज़ का लौटाना वाजिब होता क्यूंकि अगर गन्दे कपड़े गन्दे जूते में नमाज़ शुरूअ़ कर दी जाए फिर पता लगे तो नमाज़ दोबारा पढ़नी पड़ती है वाक़िआ़ येह था कि हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने ख़याल फ़रमाया येह चीज़ें पाक हैं इन के साथ नमाज़ पढ़ने में मुज़ाइक़ा नहीं रब्ब (عَزَّوَجَلَّ) ने जिब्रीले अमीन (عَلَیۡہِ السَّلَام) को भेजा कि प्यारे ! तुम्हारी शान के येह भी ख़िलाफ़ है तुम्हारे लिबास पाक भी चाहिये सुथरे भी लिहाज़ा ह़दीष पर न तो येह ए'तिराज़ है कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने नमाज़ लौटाई क्यूं नहीं और न येह ए'तिराज़ कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को अपने ना'लैन की भी ख़बर नहीं औरों कि क्या ख़बर होगी जो शहनशाह ज़मीन पर खड़े हो कर अन्दरूनी ज़मीन का अ़ज़ाब देख ले और अ़ज़ाबे क़ब्र की वजह जान ले और जो येह फ़रमाए कि नमाज़ सह़ीह़ पढ़ा करो मुझ पर तुम्हारे रुकूअ़ सजदे दिल का ख़ुशूअ़ ख़ुज़ूअ़ पोशीदा नहीं उस पर अपने ना'लैन का ह़ाल कैसे छुपेगा ? इस ह़दीष से मा'लूम हुवा कि रब्ब तआ़ला अपने ह़बीब की हर अदा की निगरानी फ़रमाता है क्यूं न हो ख़ुद फ़रमाता है । فَاِنَّکَ بِاَعۡیُنِنَا (پ۲۷،الطور:۴۸) ऐ मह़बूब ! तुम हमारी नज़रों में रहते हो । येह भी मा'लूम हुवा कि सह़ाबए किराम (عَلَیۡہِمُ الرِّضۡوَان) ऐन नमाज़ में हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की अदाएं देखते थे और हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की नक़्ल करते थे ।

इन बुराइयों को नापसन्द नहीं जानते और न ही इन पर तअ़ज्जुब करते हैं। अगर कोई शख़्स सिर्फ़ पथ्थर से इस्तिन्जा करे या ज़मीन पर नंगे पाउं चले या ज़मीन पर नमाज़ पढ़े या मुसल्ला बिछाए बिग़ैर मस्जिद की चटाई पर नमाज़ पढ़े या चमड़े का मौज़ा पहने बिग़ैर नंगे पाउं चले या किसी बुढ़िया या बे परवाह शख़्स के बरतन से वुज़ू करे तो उस पर क़ियामत ढा देते और ए'तिराज़ करते हैं। उसे नापाक ठहराते और अपने गुरौह से ख़ारिज कर देते हैं। उस के साथ खाना पीना और मैल जोल रखना पसन्द नहीं करते और वोह शिकस्ता हाली ईमान का हिस्सा है उसे नापाकी ठहराते और तकब्बुर को पाकीज़गी का नाम देते हैं। ग़ौर कीजिये कि कैसे बुराई नेकी और नेकी बुराई बन गई और दीन के रस्मो रवाज ऐसे मिटते चले गए जैसे उस की ह़क़ीक़त व इल्म मिट गया।

एक सुवाल और इस का जवाब :

अगर आप कहें कि सूफ़िया ने अपनी शक्ल व सूरत और पाकीज़गी के मुआ़मले में जो आ़दात अपना रखी हैं क्या हम इन्हें ममनूआ़त व मुन्किरात कह सकते हैं? तो मैं कहूंगा कि ऐसा हरगिज़ नहीं हो सकता कि मैं बिग़ैर तफ़्सील के मुत़लक़ ऐसी बात कहूं लेकिन मैं कहता हूं कि येह हुसूले पाकीज़गी, तकल्लुफ़, बरतन व आलात तय्यार करना, जूते इस्ति'माल करना, गर्दो गुबार से बचने के लिये चादर ओढ़ना और इस के इ़लावा अस्बाब को अगर ज़ाती तौ़र पर देखा जाए कोई दूसरी चीज़ मल्हूज़ न हो तो येह चीज़ें मुबाह़ हैं। बा'ज़ अवक़ात इन के साथ कुछ अह़वाल और निय्यतें मुलह़िक़ होती हैं जो इन्हें कभी अच्छे कामों से मिला देती हैं और कभी बुरे कामों से।

अश्या का मुबाह़, मज़मूम और मह़मूद होना :

जहां तक इन मज़्कूरा चीज़ों के ज़ाती तौ़र पर **मुबाह़** होने का तअ़ल्लुक़ है तो येह बात मख़्फ़ी नहीं कि बन्दा इन के ज़रीए़ अपने माल, बदन और कपड़ों में तसर्रुफ़ करता और इन के साथ जो चाहे करता है जब तक कि इसराफ़ और माल का जियाअ़ न हो।

इन चीज़ों के मज़मूम होने की दो सूरतें हैं : (1) या तो इन्हें इस फ़रमाने रसूल की तफ़्सीर क़रार दे कर दीन की अस्ल क़रार दिया जाए कि بُنِیَ الدِّیْنُ عَلَی النَّظَافَه या'नी : दीन की बुन्याद पाकीज़गी पर है।" (1) ह़त्ता कि अस्लाफ़ की त़रह़ जो इस पर कम तवज्जोह दे उस का रद्द किया जाए। (2) या इन चीज़ों का मक़्सद मख़्लूक़ के लिये ज़ाहिरी ज़ैबाइश और उन जगहों को

(1) ......الشفاء بتعریف حقوق المصطفی،الباب الثانی فی تکمیل محاسنه، فصل واما نظافة جسمه......الخ،ج ۱،ص ۶۱۔

संवारना है जहां लोगों की नज़र पड़ती है और येह रिया है जो कि ममनूअ़ है। पस इन दोनों वजहों से येह चीज़ें मुन्कर यानी बुरी हैं।

जहां तक अश्या का मा'रूफ़ (मह़मूद व नेकी) होने का तअ़ल्लुक़ है तो इस से भलाई मक़्सूद हो न कि ज़ैबो ज़ीनत और इसे तर्क करने वाले का रद्द न किया जाए, न इस के सबब अव्वल वक़्त से नमाज़ को मुअख़्ख़र किया जाए और न ही इस में मश्ग़ूल हो कर इस से अफ़्ज़ल अ़मल या इ़ल्म वग़ैरा को तर्क किया जाए। लिहाज़ा मज़्कूरा अफ़्आ़ल में से कोई चीज़ इस के साथ मिली हुई न हो तो येह जाइज़ है बल्कि हो सकता है कि अच्छी निय्यत से इ़बादत बन जाए लेकिन येह चीज़ निकम्मे लोगों को ह़ासिल है कि अगर वोह नमाज़ में वक़्त सर्फ़ न करें तो नीन्द या फ़ुज़ूल बातों में मश्ग़ूल हो जाएंगे तो उन का इस में मश्ग़ूल होना बेहतर है। क्यूंकि पाकीज़गी के ह़ुसूल में मश्ग़ूलिय्यत से ज़िक्रे इलाही और इ़बादात की याद ताज़ा होती रहती है। लिहाज़ा जब येह बुराई या इसराफ़ की त़रफ़ न ले जाए तो इस में कोई ह़रज नहीं।

अहले इ़ल्मो अ़मल के अवक़ात क़ीमती जोहर हैं :

अहले इ़ल्मो अ़मल को अपने अवक़ात इन (या'नी त़हारत व पाकीज़गी के) कामों में बक़दरे ह़ाजत ही सर्फ़ करने चाहियें। इन के ह़क़ में ज़ियादा वक़्त सर्फ़ करना बुरा और उस अम्र को ज़ाएअ़ करना है जो क़ीमती जोहर और इस से नफ़्अ़ उठाने पर क़ादिर शख़्स के लिये इन्तिहाई अ़ज़ीज़ है और इस पर तअ़ज्जुब नहीं करना चाहिये (कि एक ही चीज़ बा'ज़ के ह़क़ में बुरी है और बा'ज़ के ह़क़ में अच्छी) क्यूंकि नेकों की नेकियां मुक़र्रबीन के लिये बुराइयां होती हैं और निकम्मे लोगों को ऐसा नहीं करना चाहिये कि वोह पाकीज़गी का एहतिमाम न करें और सूफ़िया का रद्द करें और ख़ुद को सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيۡهِمۡ اَجۡمَعِيۡن की मुशाबहत करने वाला गुमान करें क्यूंकि इन के साथ मुशाबहत तो तब है कि इस से अहम काम के लिये फ़ारिग़ हों। जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना दावूद त़ाई رَحۡمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيۡه से पूछा गया कि "आप दाढ़ी में कंघी क्यूं नहीं करते?" तो फ़रमाया : "मेरे पास इस के लिये वक़्त कहां?"

(ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ग़ज़ाली عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡوَالِى फ़रमाते हैं :) इसी वजह से मैं आ़लिम, मुतअ़ल्लिम (त़ालिबे इ़ल्म) और अ़मल करने वाले के लिये जाइज़ नहीं समझता कि वोह धोबी के धोए हुए कपड़ों से एह़तिराज़ करें और येह गुमान करें कि उस ने धोने में कोताही

की होगी[1] और यूं ख़ुद कपड़े धोने में वक़्त ज़ाएअ़ करें। पहले ज़माने में लोग दबाग़त किये हुए चम्ड़े पर नमाज़ पढ़ लेते थे इन में से किसी के बारे में मा'लूम नहीं कि उस ने त़हारत व नजासत के मुआ़मले में धुले हुए और दबाग़त किये हुए कपड़ों में फ़र्क़ किया हो बल्कि जब वोह ख़ुद नजासत देखते तो उस से इजतिनाब करते और दक़ीक़ (या'नी गहरे और मुश्किल) एह़तिमालात की तलाश में नहीं रहते थे बल्कि रिया व ज़ुल्म की बारीकियों के बारे में सोचते थे।

फ़ुज़ूल ख़र्ची पर मददगार :

एक मरतबा ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान षौरी عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡقَوِی के रफ़ीक़े सफ़र ने एक मकान के बुलन्द व बाला दरवाज़े की त़रफ़ देखा तो आप ने फ़रमाया : "ऐसा न कर क्यूंकि अगर लोग इस मकान की त़रफ़ न देखते तो मकान वाला इस पर इतना इसराफ़ न करता।" पस इस की त़रफ़ देखने वाला भी फ़ुज़ूल ख़र्ची पर मददगार है।

अस्लाफ़े किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام अपने ज़ेह्नों को इस त़रह़ की बारीकियों में इस्ति'माल करते थे, नजासत के एह़तिमालात के मुतअ़ल्लिक़ ग़ौरो फ़िक्र नहीं करते थे।

दुन्या व माफ़ीहा से अफ़्ज़ल :

अगर किसी आ़लिम को कोई ऐसा आ़म शख़्स मिले जो एह़तियात़न उस के कपड़े धोए तो अफ़्ज़ल है कि येह सुस्ती की ब निस्बत बेहतर है और वोह आ़म शख़्स इस धोने के सबब नफ़्अ़ ह़ासिल करता है क्यूंकि वोह बुराइयों का हुक्म देने वाले नफ़्स को फ़ी नफ़्सिही जाइज़ काम में मश्ग़ूल रखता है। लिहाज़ा इस ह़ाल में वोह गुनाहों से रुका रहता है कि अगर नफ़्स किसी काम में मश्ग़ूल न हो तो वोह इन्सान को (गुनाहों में) मश्ग़ूल कर देता है और अगर उस आ़म शख़्स का मक़्सद आ़लिम का क़ुर्ब ह़ासिल करना हो तो येह उस के नज़दीक अफ़्ज़ल इबादत है और आ़लिम का वक़्त इस त़रह़ के कामों में इस्ति'माल होने से अफ़्ज़ल है तो यूं येह वक़्त मह़फ़ूज़ रहेगा और आ़म शख़्स का अफ़्ज़ल वक़्त वोह है जो इस त़रह़ के कामों में सर्फ़ हो और उसे हर त़रफ़ से वाफ़िर भलाई मिलेगी।

1.....फ़तावा अमजदिय्या, जिल्द अव्वल, जुज़, 1. स. 30 ता 31 पर सदरुश्शरीआ़ बदरुत्त़रीक़ा ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡقَوِی से सुवाल हुवा कि "धोबी को अगर नापाक कपड़ा दिया जाए तो पाक हो कर आता है या नहीं।" जवाब में आप رَحۡمَةُ اللّٰهِ تعالٰی علیہ फ़रमाते हैं : "बेहतर तो येही है कि पाक कर के धोबी को कपड़े दिये जाएं और नापाक कपड़ा दिया तो धुल कर पाक हो जाएगा।"

इस मिषाल से इस क़िस्म के दूसरे आ'माल, उन के फ़ज़ाइल की तरतीब और बा'ज़ के बा'ज़ पर मुक़द्दम होने के मुतअ़ल्लिक़ मा'लूम करना चाहिये। ज़िन्दगी के लमह़ात को अच्छे कामों में सर्फ़ करने के लिये इन का ह़िसाबो किताब करना उमूरे दुन्या और इस के तमाम मालो अस्बाब में ग़ौरो फ़िक्र करने से अफ़्ज़ल है।

जब आप ने इब्तिदाई कलाम समझ लिया और आप को मा'लूम हो गया कि त़हारत के चार दर्जात हैं तो येह भी जान लीजिये कि हम इस किताब में सिर्फ़ चौथे दर्जे या'नी ज़ाहिरी त़हारत पर कलाम करेंगे इस लिये कि किताब के पहले ह़िस्से में हम सिर्फ़ ज़ाहिरी त़हारत की बह़्ष करेंगे। चुनान्चे,

ज़ाहिरी त़हारत की अक़्साम :

ज़ाहिरी त़हारत (पाकी ह़ासिल करने) की तीन क़िस्में हैं : (1)....नजासत से त़हारत (2).....नजासते ह़ुकमी से पाकी ह़ासिल करना (3)....बदन के फ़ुज़लात से त़हारत और येह नाख़ुन काटने, (ज़ेरे बग़ल व ज़ेरे नाफ़ बाल साफ़ करने के लिये) उस्तरा या चूना इस्ति'माल करने और ख़त्ना से ह़ासिल होती है।

...मज़ार पर ह़ाज़िरी का त़रीक़ा...

बुज़ुर्गों के पास क़दमों की त़रफ़ से ह़ाज़िर होना चाहिये, पीछे से आने की सूरत में उन्हें मुड़ कर देखने की ज़ह़मत होती है। लिहाज़ा मज़ारे औलिया पर भी पाइंती (क़दमों) की त़रफ़ से ह़ाज़िर हो कर क़िब्ले को पीठ और साह़िबे मज़ार के चेहरे की त़रफ़ रुख़ कर के कम अज़ कम चार हाथ (दो गज़) दूर खड़ा हो और इस त़रह़ सलाम अ़र्ज़ करे :

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا وَلِيَّ اللّٰه وَ رَحْمَةُ اللّٰهِ وَ بَرَكَاتُهٗ

एक बार सूरए फ़ातिह़ा और 11 बार सूरए इख़्लास (अव्वल आख़िर एक बार दुरूद शरीफ़) पढ़ कर हाथ उठा कर दुआ़ मांगे। "اَحْسَنُ الْوِعَاء" में है वली के क़ुर्ब में दुआ़ क़बूल होती है। (माख़ूज़ अज़ मदनी पंज सूरह, स. 413)

बाब नम्बर 1 : नजासत से तहारत हासिल करना

इस में तीन फ़स्लें हैं : (1)....येह मद्दे नज़र रखना कि किस चीज़ को दूर किया जा रहा है (2)....किस चीज़ से दूर किया जा रहा है और (3).....दूर करने का त़रीक़ा क्या है।

पहली फ़स्ल : ज़ाइल की जाने वाली नजासत का बयान

अश्या तीन क़िस्म की हैं :

(1).....जमादात (2)....हैवानात और (3).....हैवानात के अज्ज़ा। शराब और हर झाग वाली नशा आवर चीज़ के सिवा तमाम जमादात पाक हैं। कुत्ते और ख़िन्ज़ीर और इन दोनों या किसी एक से पैदा होने वालों के सिवा तमाम हैवानात पाक हैं। लेकिन जब येह मर जाएं तो पांच के इ़लावा तमाम हैवानात नापाक हो जाते हैं : (1).....इन्सान (2).....मछली (3).....मकड़ी (4)....सेब का कीड़ा और (5).....खाई जाने वाली हर वोह चीज़ जो अपनी अस्ली ह़ालत पर न रहे और हर हैवान जिस में बहने वाला ख़ून न हो जैसे मख्खी, गुबरीला (येह एक कीड़ा है जो गोबर में होता है) वग़ैरा। लिहाज़ा इन में से किसी के पानी में गिरने से पानी नापाक नहीं होता।

हैवानात[1] के अज्ज़ा की अक़्साम और इन का हुक्म :

जहां तक हैवानात के अज्ज़ा का मुआ़मला है तो इन की दो क़िस्में हैं : (1)....वोह जिन्हें काटा जाता है और उन का हुक्म वोही है जो मुर्दा का है। बाल काटने और (जानवर के) मरने से नजिस नहीं होते जब कि हड्डी नजिस हो जाती है। (2).....अन्दर से निकलने वाली रुतू़बात : जो तब्दील नहीं होतीं और न ही इन का कोई ठिकाना है वोह पाक हैं जैसे आंसू, पसीना, थूक और रींठ और जिन का कोई ठिकाना है और वोह बदल जाती हैं तो नापाक हैं (जैसे ख़ून, पेशाब

1......जिन जानवरों का गोश्त नहीं खाया जाता ज़ब्हे शरई से उन का गोश्त और चर्बी और चमड़ा पाक हो जाता है मगर ख़िन्ज़ीर कि उस का हर जुज़ नजिस है और आदमी अगर्चे त़ाहिर है उस का इस्ति'माल नाजाइज़ है। (दुर्रे मुख़्तार) इन जानवरों की चर्बी वग़ैरा को अगर खाने के सिवा ख़ारिजी तौ़र पर इस्ति'माल करना चाहें तो ज़ब्ह कर लें कि इस सूरत में इस के इस्ति'माल से बदन या कपड़ा नजिस नहीं होगा और नजासत के इस्ति'माल की क़बाहत से भी बचना होगा। (बहारे शरीअ़त, जि. 3. हिस्सा. 15, स. 327)

और गन्दगी वग़ैरा) । अलबत्ता, जो ह़ैवान की अस्ल हो वोह पाक है जैसे मनी[1] और अन्डा कि पाक हैं और तमाम ह़ैवानात की पीप, ख़ून, गोबर और पेशाब नजिस हैं। इन नजासतों में से पांच के इलावा किसी में से कुछ भी मुआ़फ़ नहीं अगर्चे थोड़ा हो (वोह पांच येह हैं) :

﴾1﴿.....पथ्थरों से इस्तिन्जा करने के बा'द नजासत का अषर जब तक मख़रज से तजावुज़ न करे, मुआ़फ़ है।

﴾2﴿....रास्तों की कीचड़ और गोबर का गुबार मुआ़फ़ है अगर इतनी नजासत के लगे होने का यक़ीन हो जिस से बचना मुश्किल है और येह वोह मिक़्दार है कि इस शख़्स के बारे में येह न कहा जाए कि इस ने अपने आप को कीचड़ में लथेड़ा है या येह उस में गिरा है।

﴾3﴿....मौज़े के पीछे लगी हुई वोह नजासत[2] कि इस से रास्ता ख़ाली नहीं होता लिहाज़ा रगड़ने के बा'द कुछ रह जाए तो वोह ज़रूरत के तह़्त मुआ़फ़ है।

1.....अह़नाफ़ के नज़्दीक मनी नापाक है। (माख़ूज़ अज़ बहारे शरीअ़त, जि.1 हि़स्सा. 2 स. 390) मनी वोह गाढ़ा सफ़ेद पानी है जिस के निकलने की वजह से ज़कर की तुन्दी और इन्सान की शहवत ख़त्म हो जाती है। (تحفة الفقهاء، ج ۱، ص۲۷)

2....दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना के मत़्बूआ़ 40 सफ़्ह़ात पर मुश्तमिल रिसाले **"कपड़े पाक करने का त़रीक़ा मअ़ नजासतों का बयान"** में शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त़्त़ार क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه नक़्ल फ़रमाते हैं : नजासत की दो क़िस्में हैं : (1) नजासते ग़लीज़ा (غ-لی-ظه) (2) नजासते ख़फ़ीफ़ा (خ-فی-فه) । इन्सान के बदन से जो ऐसी चीज़ निकले कि इस से ग़ुस्ल या वुज़ू वाजिब हो नजासते ग़लीज़ा है जैसे पाख़ाना, पेशाब, बहता ख़ून, पीप, मुंह भर क़ै, ह़ैज़ व नफ़ास व इस्तिह़ाज़ा का ख़ून, मनी, मज़ी, वदी। **नजासते ग़लीज़ा का हुक्म येह है** कि अगर कपड़े या बदन पर एक दिरहम से ज़ियादा लग जाए तो उस का पाक करना फ़र्ज़ है, बिग़ैर पाक किये अगर नमाज़ पढ़ ली तो नमाज़ न होगी। और इस सूरत में जान बूझ कर नमाज़ पढ़ना सख़्त गुनाह है, और अगर नमाज़ को हलका जानते हुए इस त़रह़ नमाज़ पढ़ी तो कुफ़्र है। और जिन जानवरों का गोश्त ह़लाल है (जैसे गाए, बेल, भेंस, बकरी, ऊंट वग़ैरहा) उन का पेशाब, नीज़ घोड़े का पेशाब और जिस परन्दे का गोश्त ह़राम है, ख़्वाह शिकारी हो या नहीं, (जैसे कव्वा, चील, शिकरा, बाज़) उस की बीट नजासते ख़फ़ीफ़ा है। **नजासते ख़फ़ीफ़ा का हुक्म येह है** कि कपड़े के जिस हि़स्से या बदन के जिस उ़ज़्व में लगी है अगर इस की चौथाई से कम है तो मुआ़फ़ है, मषलन आस्तीन में नजासते ख़फ़ीफ़ा लगी हुई है तो अगर आस्तीन की चौथाई से कम है या दामन में लगी है तो दामन की चौथाई से कम है या इसी त़रह़ हाथ में लगी है तो हाथ की चौथाई से कम है तो मुआ़फ़ है या'नी इस सूरत में पढ़ी गई नमाज़ हो जाएगी और अलबत्ता अगर पूरी चौथाई में लगी हो तो बिग़ैर पाक किये नमाज़ न होगी। **मज़ीद फ़रमाते हैं :** "और पेशाब की निहायत बारीक छींटें सूई की नोक बराबर की बदन या कपड़े पर पड़ जाएं, तो कपड़ा और बदन पाक रहेगा।" (माख़ूज़ अज़ : नजासत का बयान मअ़ कपड़े पाक करने का त़रीक़ा) मज़ीद मा'लूमात के लिये **"नजासत का बयान मअ़ कपड़े पाक करने का त़रीक़ा"** नामी रिसाले का मुत़ालआ़ फ़रमा लीजिये।

﴾4﴿.....पिस्सू का ख़ून थोड़ा हो या ज़ियादा, मुआ़फ़ है। अलबत्ता येह कि आ़दत से बढ़ जाए ख़्वाह वोह तुम्हारे कपड़े में लगे या किसी दूसरे के कपड़े में लगे और तुम उसे पहन लो।

﴾5﴿....फुन्सियों का बहने वाला ख़ून और पीप[1] वग़ैरा मुआ़फ़ है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا के चेहरे पर फुंसी थी उस से ख़ून निकल आया तो आप ने उसे धोए बिग़ैर नमाज़ पढ़ ली। वोह ज़ख़्म जो नासूर की ह़ैषिय्यत इख़्तियार कर लेते हैं उन से निकलने वाली रुतूबत और पंछने लगवाने से निकलने वाले ख़ून का भी येही हुक्म है। मगर वोह फुन्सियां जो कभी कभी निकलती हैं उन का हुक्म इस्तिह़ाज़ा[2] के ख़ून जैसा है। येह उन फुन्सियों के हुक्म में नहीं होंगी जिन से इन्सान किसी ह़ाल में पाक नहीं रह सकता।

मज़्कूरा पांच क़िस्म की नजासतों में शरीअ़त की रिआ़यत से आप ने जान लिया कि त़हारत का मुआ़मला कितना आसान है और इस में पैदा होने वाले वस्वसों की कोई ह़क़ीक़त नहीं।

تُوبُوا اِلَی اللّٰہ   اَسْتَغْفِرُاللّٰہ

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب   صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

1....दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़्बूआ़ 1250 सफ़्ह़ात पर मुश्तमिल किताब बहारे शरीअ़त जिल्द अव्वल सफ़्ह़ा 304 पर सदरुश्शरीआ़, बदरुत्त़रीक़ा ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی नक़्ल फ़रमाते हैं कि "ख़ून या पीप या ज़र्द पानी कहीं से निकल कर बहा और इस बहने में ऐसी जगह पहुंचने की सलाह़िय्यत थी जिस का वुज़ू या ग़ुस्ल में धोना फ़र्ज़ है तो वुज़ू जाता रहेगा अगर सिर्फ़ चमका या उभरा और बहा नहीं जैसे सूई की नोक या चाक़ू का कनारा लग जाता है और ख़ून उभर या चमक जाता है या ख़िलाल किया या मिस्वाक की या उंगली से दांत मांझे या दांत से कोई चीज़ काटी इस पर ख़ून का अषर पाया या नाक में उंगली डाली इस पर ख़ून की सुर्ख़ी आ गई वोह ख़ून बहने के क़ाबिल न था तो वुज़ू नहीं टूटा।

(فتاوی ھندیہ ، کتاب الطھارۃ،الباب الاول فی الوضوء،الفصل الخامس،ج ۱،ص ۱۰)

2....वोह ख़ून जो औ़रत के आगे के मक़ाम से किसी बीमारी के सबब निकले तो उसे इस्तिह़ाज़ा कहते हैं।

(माख़ूज़ अज़ : बहारे शरीअ़त, जि. 1 हिस्सा. 2 स. 371)

दूसरी फ़स्ल : नजासत ज़ाइल करने वाली चीज़

नजासत ज़ाइल करने वाली चीज़ की दो क़िस्में हैं : (1)....या तो वोह चीज़ जामिद होगी (2)....या माएअ़ (बहने वाली)। जामिद जैसे इस्तिन्जा के पथ्थर जो पाक भी करते हैं और खुश्क भी हैं बशर्तेकि वोह सख़्त, पाक, खुश्क करने वाले हों और क़ाबिले एह़तिराम न हों।

माएआ़त में से सिर्फ़ पानी नजासत को ज़ाइल करता है और हर पानी नहीं बल्कि ऐसा पाक पानी जो किसी ग़ैर ज़रूरी चीज़ के मिलने से बदल न गया हो। अगर नजासत के मिलने से पानी के तीन औसाफ़ ज़ाइक़ा, रंग और बू में से कोई दो तब्दील हो जाएं तो पानी नापाक हो जाएगा [1] (इस के बा'द मुसन्निफ़ عَلَيْهِ الرَّحْمَة ने पानी की पाकी व नापाकी के बारे में एक दक़ीक़ व पेचीदा बह़ष फ़रमाई है। अहले इल्म अस्ल किताब की त़रफ़ रुजूअ़ फ़रमाएं। इस बह़ष के आख़िर में फ़रमाते हैं :) इस मस्अले में तह़क़ीक़ येह है कि हर माएअ़ चीज़ की ख़ासिय्यत है कि अपने अन्दर गिरने वाली चीज़ को अपनी सिफ़त पर ले आती है और वोह चीज़ इस में मग़लूब हो जाती है जैसे तुम कुत्ते को देखते हो कि वोह नमक (की कान) में गिर कर नमक हो जाता है तो नमक बन जाने नीज़ कुत्ता होने का वस्फ़ ज़ाइल होने के सबब उसे पाक क़रार दिया जाता है। इसी त़रह़ सिर्का और दूध पानी में मिल जाएं और कम मिक़दार में हों तो उन की सिफ़त बात़िल हो जाती है, पानी की सिफ़त का ही तसव्वुर होता है और इन में पानी की त़बीअ़त आ जाती है। अलबत्ता ज़ियादा हो और ग़ालिब आ जाए तो अलग बात है और इस का ग़लबा इस के ज़ाइक़ा, रंग और बू के ग़लबे से मा'लूम होता है और येही मे'यार है। शरीअ़त ने क़वी (तेज़ जारी) पानी की नजासत को ज़ाइल करने के सिलसिले में इसी मे'यार की त़रफ़ इशारा किया है और बेहतर येही है कि इसी पर ए'तिमाद किया जाए। पस इस से ह़रज दूर होता है और इसी से इस की सिफ़ते त़हूर (या'नी पाक करने वाला होना) ज़ाहिर हो जाती है क्यूंकि जब येह इस पर ग़ालिब होता है तो इसे पाक कर देता है।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب　صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

1.....येह हुक्म माए कषीर का है जब कि माए क़लील या'नी थोड़ा पानी जो कि दह दर दह से कम है उस में कोई नजासत मिल जाए तो वोह पानी नजिस या'नी नापाक है। (ماخوذازنورالایضاح مع مراقی الفلاح،ص ۳۰)

तीसरी फ़स्ल : नजासत ज़ाइल करने के त़रीके

नजासत की दो क़िस्में हैं : (1).....हुक्मिया (2).....ह़क़ीक़िया

नजासते हुक्मिया : वोह है कि जिस का मह़सूस जिस्म न हो इस में तमाम जगहों पर पानी बहाना काफ़ी है और **नजासते ह़क़ीक़िया :** वोह है कि जिस का मह़सूस जिस्म हो इस के ऐन को ज़ाइल करना ज़रूरी है और ज़ाइक़ा का बाक़ी रहना ऐन के बाक़ी रहने पर दलालत करता है इसी त़रह़ रंग का बाक़ी रहना भी। अलबत्ता जो नजासत जिस्म से मिल जाए तो खुरचने के बा'द (जो ज़ाइल न हो) मुआ़फ़ है। बू का बाक़ी रहना भी ऐन नजासत की बक़ा पर दलालत करता है इस से सिर्फ़ इतना मुआ़फ़ है कि बू इतनी तेज़ हो कि उस का इज़ाला मुश्किल हो। पस रंग के मुआ़मले में कई बार मलना और हर बार निचोड़ना खुरचने के क़ाइम मक़ाम होगा और वस्वसों को ख़त्म करने के लिये येह यक़ीन रखना ज़रूरी है कि अश्या को पाक पैदा किया गया है लिहाज़ा जिस चीज़ पर नजासत नज़र न आए और यक़ीनी त़ौर पर उस का नापाक होना भी मा'लूम न हो तो उस के साथ नमाज़ पढ़ना जाइज़ है और नजासतों की मिक़दार मुक़र्रर करने के लिये इस्तिम्बात़ न किये जाएं।

.....उम्मे सा'द رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْھَا के लिये कुंवां.....

ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन उ़बादा رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْہُ ने बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم मेरी मां इन्तिक़ाल कर गई हैं (मैं उन की त़रफ़ से सदक़ा करना चाहता हूं) कौन सा सदक़ा अफ़्ज़ल रहेगा ?" इरशाद फ़रमाया : "पानी।" चुनान्चे, उन्हों ने एक कुंवां खुदवाया और कहा : "येह उम्मे सा'द رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْھَا के लिये है।" (سنن ابی داؤد،الحدیث:۱۶۸۱،ج۲،ص ۱۸۰)

बाब नम्बर 2 : नजासते हुक्मी से पाकी हासिल करना

इस में वुज़ू, ग़ुस्ल और तयम्मुम का बयान है। इन से पहले इस्तिन्जा का बयान है। हम इस की सुन्नतों और आदाब के साथ कैफ़िय्यत बयान करेंगे और अस्बाबे वुज़ू और क़ज़ाए ह़ाजत के आदाब से इब्तिदा करेंगे।

क़ज़ाए ह़ाजत के आदाब

क़ज़ाए ह़ाजत करने वाले को चाहिये कि इन आदाब को मद्दे नज़र रखे : (1)....क़ज़ाए ह़ाजत के लिये लोगों की नज़रों से दूर सह़रा में जाए। (2).....कोई चीज़ पाए तो उस के साथ पर्दा कर ले। (3).....बैठने के बिल्कुल क़रीब होने से पहले शर्मगाह को न खोले। (4).....सूरज या चांद की त़रफ़ रुख़ न करे। (5)....क़िब्ला की त़रफ़ न मुंह करे न पीठ अलबत्ता अगर घर में हो तो ह़रज नहीं[1] लेकिन घर में भी ब वक़्ते क़ज़ाए ह़ाजत क़िब्ले की त़रफ़ मुंह या पीठ न करना अफ़्ज़ल है और अगर सह़रा में अपनी सुवारी को पर्दा बना ले तो जाइज़ है इसी त़रह़ दामन

---

❶....अह़नाफ़ के नज़दीक घर में हों या सह़रा में कहीं भी क़ज़ाए ह़ाजत के वक़्त क़िब्ले की सम्त मुंह या पीठ न हो। चुनान्चे, दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 1250 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब बहारे शरीअ़त जिल्द अव्वल सफ़ह़ा 408 पर सदरुश्शरीआ, बदरुत्त़रीक़ा ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی नक़्ल फ़रमाते हैं : पाख़ाना या पेशाब फिरते वक़्त या त़हारत करने में न क़िब्ले की त़रफ़ मुंह हो न पीठ और येह हुक्म आ़म है चाहे मकान के अन्दर हो, या मैदान में और अगर भूल कर क़िब्ले की त़रफ़ मुंह या पुश्त कर के बैठ गया, तो याद आते ही फ़ौरन रुख़ बदल दे इस में उम्मीद है कि फ़ौरन उस के लिये मग़फ़िरत फ़रमा दी जाए।

नीज़ **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना के मत़बूआ़ 26 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल रिसाले "**ग़ुस्ल का त़रीक़ा**" सफ़ह़ा 11 पर शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** دَامَتْ بَرَکَاتُهُمُ الْعَالِیَه फ़रमाते हैं : अगर आप के ह़म्माम में फ़व्वारा (SHOWER) हो तो उसे अच्छी त़रह़ देख लीजिये कि उस की त़रफ़ मुंह कर के नंगे नहाने में मुंह या पीठ क़िब्ला शरीफ़ की त़रफ़ तो नहीं हो रही। इस्तिन्जा ख़ाने में भी इसी त़रह़ एह़तियात़ फ़रमाइये। क़िब्ले की त़रफ़ मुंह या पीठ होने का मा'ना येह है कि 45° दर्जे के ज़ाविये के अन्दर अन्दर हो। लिहाज़ा येह एह़तियात़ भी ज़रूरी है कि 45° डिग्री के ज़ाविये (एंगल–ANGLE) के बाहर हो। इस मस्अले से अकषर लोग नावाक़िफ़ हैं। मेहरबानी फ़रमा कर अपने घर वग़ैरा के डबल्यू–सी (W.C) और फ़व्वारे का रुख़ अगर ग़लत़ हो तो उस की इस्लाह़ फ़रमा लीजिये। ज़ियादा एह़तियात़ इस में है कि W.C क़िब्ले से 90° के दर्जे पर या'नी नमाज़ पढ़ने में सलाम फेरने के रुख़ कर दीजिये। मे'मार उ़मूमन ता'मीराती सहूलत और ख़ूब सूरती का लिह़ाज़ करते हैं। आदाबे क़िब्ला की परवाह नहीं करते। मुसलमानों को मकान की ग़ैर वाजिबी बेहतरी के बजाए आख़िरत की ह़क़ीक़ी बेहतरी पर नज़र रखनी चाहिये।

से भी पर्दा कर सकता है। (6).....ऐसी जगह इस्तिन्जा वग़ैरा न करे जहां बैठ कर लोग गुफ़्त्गू करते हों। (7)....ठहरे हुए पानी, (8)....फलदार दरख़्त और (9).....सुराख़ में भी पेशाब न करे। (10).....सख़्त जगह और (11)....हवा के रुख़ पर भी पेशाब न करे ताकि छींटों से बचे। (12)....दौराने इस्तिन्जा बाएं (उलटे) पाउं पर दबाऊ डाले। (13).....अगर इस्तिन्जा ख़ाना किसी इमारत में हो तो दाख़िल होते वक़्त पहले बायां पाउं अन्दर रखे और निकालते वक़्त पहले दायां पाउं निकाले। (14)....खड़ा हो कर पेशाब न करे (कि येह ख़िलाफ़े सुन्नत है)। जैसा कि उम्मुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा त़य्यिबा त़ाहिरा رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنۡھَا फ़रमाती हैं : "जो शख़्स तुम से येह कहे कि हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم खड़े हो कर पेशाब करते थे तो उस की तस्दीक़ न करो।"(1)

खड़े हो कर पेशाब न करो :

अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنۡہُ फ़रमाते हैं : हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझे खड़े हो कर पेशाब करते देखा तो इरशाद फ़रमाया : "ऐ उ़मर ! खड़े हो कर पेशाब न किया करो।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنۡہُ फ़रमाते हैं : "इस के बा'द मैं ने कभी खड़े हो कर पेशाब न किया।"(2) (हां ब वक़्ते ज़रूरत) खड़े हो कर पेशाब करने की रुख़्सत है क्यूंकि ह़ज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنۡہُ से मरवी है कि आक़ाए दो आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم एक क़ौम की कोड़ी पर तशरीफ़ लाए तो आप ने खड़े हो कर पेशाब किया,(3) फिर मैं वुज़ू के लिये पानी लाया तो आप صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने वुज़ू फ़रमाया और मौज़ों पर मसह़ किया।"(4) (15)....ग़ुस्ल ख़ाने में पेशाब न करे।

---

1 ......سنن الترمذی، ابواب الطھارۃ، باب ماجاء فی النھی عن البول قائماً، الحدیث:۱۲، ج۱، ص۹۰۔

2 ......سنن ابن ماجه، کتاب الطھارۃ، باب فی البول قاعداً، الحدیث:۳۰۸، ج۱، ص۱۹۲۔

3.....मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ الۡمَنَّان मिरआतुल मनाजीह़, जि. 1 स. 270 पर इस ह़दीषे मुबारक के तह़त फ़रमाते हैं : या तो वहां बैठने की जगह न थी क्यूंकि कोड़ी पर हर जगह नजासत ही होती है या पाउं शरीफ़ में ज़ख़्म या पीठ में दर्द था जिस के लिये खड़े हो कर पेशाब करना मुफ़ीद था। अत़िब्बा कहते हैं कि खड़े हो कर अंगारे पर पेशाब करना सत्तर बीमारियों का इ़लाज है। (مرقاۃ اشعۃ للمعات) ख़याल रहे कि इस मौक़अ़ पर सरकार ऊंची जगह खड़े हुए होंगे जिस से पेशाब के छींटों से मह़फ़ूज़ रहे होंगे।

मज़ीद मा'लूमात के लिये फ़तावा रज़विय्या (मुख़र्रजा) जि. 4 स. 585 का मुत़ालआ़ फ़रमा लीजिये।

4 ......صحیح مسلم، کتاب الطھارۃ، باب المسح علی الخفین، الحدیث:۲۷۳، ص۱۵۸۔

वस्वसे पैदा होने का सबब :

हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "आ़म वस्वसे इसी (या'नी ग़ुस्ल ख़ाने में पेशाब करने) से होते हैं।"(1) (2)

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : ग़ुस्ल ख़ाने में पेशाब करने की इजाज़त है बशर्तेकि इस पर से पानी बह जाए।

नीज़ प्यारे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "तुम में से कोई ग़ुस्ल ख़ाने में हरगिज़ पेशाब न करे फिर इस में वुज़ू करेगा क्यूंकि आ़म वस्वसे इसी से होते हैं।"(3)

हज़रते सय्यिदुना इब्ने मुबारक رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : "जारी पानी में पेशाब करने में ह़रज नहीं।"(4)

(16)....इस्तिन्जा ख़ाने में ऐसी चीज़ साथ न ले जाए जिस पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ या रसूले अकरम صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का नाम मुबारक हो। (17)....इस्तिन्जा ख़ाने में नंगे सर न जाए।

बैतुल ख़ला में दाख़िल होने से पहले की दुआ़ :

(18).....इस्तिन्जा ख़ाने में दाख़िल होने से पहले येह दुआ़ पढ़े :

"بِسْمِ اللّٰہِ اَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الرِّجْسِ النَّجِسِ الْخَبِیْثِ الْمُخْبِثِ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْم"

या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नाम से शुरूअ़ करता और मर्दूद पलीद ख़बीष शैत़ान से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की पनाह चाहता हूं।"(5)

1.....मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْمَنَّان मिरआतुल मनाजीह़, जि. 1 स. 266 पर इस ह़दीषे मुबारक के तह़त फ़रमाते हैं : अगर ग़ुस्लख़ाने की ज़मीन पुख़्ता हो और उस में पानी ख़ारिज होने की नाली भी हो तो वहां पेशाब करने में ह़रज नहीं अगर्चे बेहतर है कि न करे, लेकिन अगर ज़मीन कच्ची हो और पानी निकलने का रास्ता भी न हो तो पेशाब करना सख़्त बुरा है कि ज़मीन नजिस हो जाएगी, और ग़ुस्ल या वुज़ू में गन्दा पानी जिस्म पर पड़ेगा।

2.....سنن ابن ماجہ،کتاب الطھارۃ، باب کراھیۃ البول فی المغتسل، الحدیث:۳۰۴، ج۱، ص۱۹۴۔

3.....سنن ابن ماجہ،کتاب الطھارۃ، باب کراھیۃ البول فی المغتسل، الحدیث:۳۰۴، ج۱، ص۱۹۴۔

4.....जारी पानी में पेशाब, पाख़ाना करना मकरूह है। (माख़ूज़ अज़ : बहारे शरीअ़त, जि. 1 हिस्सए दुवुम, स. 409)

5.....المعجم الکبیر، النضر بن انس عن زید بن ارقم، الحدیث:۵۰۹۹، ج۵، ص۲۰۴، باختصار۔
المصنف لابن ابی شیبۃ، کتاب الطھارات، مایقول الرجل اذا دخل الخلاء، الحدیث:۵، ج۱، ص۱۲

बैतुल ख़ला से निकलने के बा'द की दुआ़ :

(19).....निकलने के बा'द येह दुआ़ पढ़े :

''اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ الَّذِیْ اَذْھَبَ عَنِّیْ مَا یُؤْذِیْنِیْ وَاَبْقٰی عَلَیَّ مَا یَنْفَعُنِیْ

या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का शुक्र है कि उस ने मुझ से अज़िय्यत को दूर किया और मुझे फ़ाइदा देने वाली चीज़ को बाक़ी रखा।''[1]

(20).....इस्तिन्जा के लिये बैठने से पहले ढेलों को गिन ले। (21)....क़ज़ाए ह़ाजत की जगह पानी से इस्तिन्जा न करे। (22)....इस्तिन्जा करने के बा'द इस्तिब्रा कर ले (या'नी पेशाब करने के बा'द ऐसा काम करना कि अगर कोई क़त़रा रुका हो तो गिर जाए और येह वाजिब है) इस के तीन त़रीक़े हैं : खांसने, उ़ज़्वे मख़सूस को तीन बार झाड़ने और उ़ज़्वे मख़सूस के निचले ह़िस्से पर हाथ फैरने से। नीज़ इस मुआ़मले में ज़ियादा सोच बिचार न करे कि इस से वस्वसे पैदा होंगे और इस पर मुआ़मला दुश्वार हो जाएगा। लिहाज़ा इस्तिब्रा के बा'द जो तरी वग़ैरा मह़सूस करे उसे बाक़ी मांदा पानी ख़याल करे। अगर येह बात उसे अज़िय्यत देती हो कि वस्वसे फिर भी दूर न हों तो मियानी (पाजामे का वोह ह़िस्सा जो पेशाब गाह के क़रीब होता है उस) पर पानी के छींटे मारे ताकि उस के दिल में येह बात पुख़्ता हो जाए और वस्वसों की वजह से उस पर शैत़ान मुसल्लत़ न हो। ह़दीषे पाक में भी है कि ''ह़ुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने ऐसे ही किया या'नी (मियानी पर) पानी के छींटे मारे।''[2]

पहले के लोगों में से जो शख़्स इस्तिन्जा से जल्दी फ़ारिग़ होता वोह उन में ज़ियादा फ़क़ीह होता था क्यूंकि इस्तिन्जा में वस्वसे फ़ुक़ाहत की कमी पर दलालत करता है।

हड्डी और गोबर से इस्तिन्जा करने की मुमानअ़त :

ह़ज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि ''रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने हमें हर चीज़ सिखाई ह़त्ता कि आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने हमें हुक्म फ़रमाया कि हम हड्डी और गोबर से इस्तिन्जा न करें और हमें क़िब्ला रू हो कर बोलो बराज़ करने से मन्अ़ फ़रमाया।''[3]

---

1 ......المصنف لابن ابی شیبة، کتاب الطھارات، مایقول اذا خرج من المخرج، الحدیث:۱، ج۱، ص۲۔

2 ......سنن ابن ماجه، کتاب الطھارة، باب ماجاء فی النضح بعد الوضوء، الحدیث:۴۶۱، ج۱، ص۲۶۹۔

3 ......صحیح مسلم، کتاب الطھارة، باب الاستطابة، الحدیث:۲۶۲، ص۱۵۴

किसी सह़ाबी से एक आ'राबी का झगड़ा हो गया, कहने लगा : मेरा ख़याल है कि तुम्हें पेशाब करने का त़रीक़ा भी अच्छी त़रह़ नहीं आता तो सह़ाबी ने फ़रमाया : "मुझे इस में महारत ह़ासिल है कि आबादी से दूर जाता हूं, ढेले गिन कर रखता हूं, घास इकठ्ठी कर के सामने रखता हूं, हवा की त़रफ़ पीठ करता हूं, हिरन की त़रह़ (पंजों पर दबाव डाल कर) बैठता हूं, शुतर मुर्ग़ की त़रह़ पिछले मक़ाम को ऊपर उठाता हूं।"

इन्सान को पर्दे का एहतिमाम कर के किसी शख़्स के क़रीब इस्तिन्जा वग़ैरा करना जाइज़ है कि "इन्तिहाई बा ह़या होने के बा वुजूद ह़ुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने उम्मत की रहनुमाई के लिये ऐसा किया।"(1)

इस्तिन्जा का त़रीक़ा :

तीन ढेलों से अपनी पेशाब गाह को साफ़ करे अगर इन से साफ़ हो जाए तो काफ़ी है वरना चौथा पथ्थर इस्ति'माल करे और सफ़ाई ह़ासिल हो जाए तब भी पांचवां पथ्थर इस्ति'माल करे क्यूंकि साफ़ करना वाजिब है और त़ाक़ पथ्थरों का इस्ति'माल सुन्नत है कि सरकारे दो आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : مَنِ اسْتَجْمَرَ فَلْيُوْتِرْ या'नी जो शख़्स पथ्थरों का इस्ति'माल करे तो वोह त़ाक़ अ़दद में पथ्थर इस्ति'माल करे।"(2)

पथ्थर इस्ति'माल करने का त़रीक़ा :

पथ्थर बाईं (उलटे) हाथ में ले और पेशाब गाह के अगले ह़िस्से पर नजासत की जगह से पहले रखे और पोंछता हुवा पीछे की त़रफ़ ले जाए। फिर दूसरा पथ्थर ले और इसी त़रह़ पिछले ह़िस्से पर रख कर आगे की त़रफ़ ले आए। फिर तीसरा पथ्थर ले कर उसे एक बार शर्मगाह के इर्द गिर्द फैरे अगर फैरना मुश्किल हो तो पोंछते हुए आगे से पीछली त़रफ़ ले जाए तो भी काफ़ी है। फिर दाएं (सीधे) हाथ में बड़ा सा पथ्थर ले कर उ़ज़्वे मख़्सूस को बाएं हाथ से पकड़ कर इस पर पथ्थर को रगड़े और उ़ज़्वे मख़्सूस को ह़रकत दे और तीन दफ़्अ़ एक ही पथ्थर से तीन जगहों से पोंछे या तीन पथ्थरों से पोंछे या दीवार की तीन जगहों के साथ साफ़ करे यहां तक कि पोंछने वाली जगह पर तरी नज़र न आए। दो मरतबा में सफ़ाई ह़ासिल हो जाए तब भी तीन

---

1 ......صحیح مسلم، کتاب الطھارۃ، باب المسح علی الخفین، الحدیث:۲۷۳، ص۱۵۸۔

2 ......صحیح مسلم، کتاب الطھارۃ، باب الایتار فی الاستنثار......الخ، الحدیث:۲۳۷، ص۱۴۶۔

बार करे अगर एक पथ्थर पर इक्तिफ़ा करे तो (पथ्थर की अ़लाहि़दा अ़लाहि़दा) तीन जगहों से साफ़ करना वाजिब है अगर चार पथ्थरों से सफ़ाई ह़ासिल हो जाए तो त़ाक़ पर अ़मल के लिये पांचवें पथ्थर का इस्ति'माल मुस्तह़ब है। फिर उस जगह से दूसरी जगह चला जाए और पानी से सफ़ाई ह़ासिल करे, यूं कि दाएं (सीधे) हाथ से जाए नजासत (या'नी मक़्इद) पर पानी बहाए और बाएं हाथ से साफ़ करे यहां तक ऐसा अषर बाक़ी न रहे कि हथेली लगाने से उस का एह़सास हो और इस मुआ़मले में ज़ियादा मुबालग़ा न करे कि येह वस्वसों की जगह है।

जान लीजिये कि बात़िन से मुराद वोह जगह है जहां तक पानी नहीं पहुंचता और बात़िनी फ़ुज़्लात जब तक ज़ाहिर न हों उन पर नजासत का हुक्म नहीं लगाया जाता, जो नजासत ज़ाहिर है और उस के लिये नजासत का हुक्म षाबित है तो उस के ज़ुहूर की ह़द येह है कि पानी उस तक पहुंच कर उसे ख़त्म कर दे, वस्वसों की कोई ज़रूरत नहीं।

इस्तिन्जा से फ़राग़त के बा'द की दुआ़ :

इस्तिन्जा से फ़ारिग़ हो कर येह दुआ़ करे :

“اَللّٰهُمَّ طَهِّرْ قَلْبِىْ مِنَ النِّفَاقِ وَحَصِّنْ فَرْجِىْ مِنَ الْفَوَاحِشِ”

या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मेरे दिल को निफ़ाक़ से पाक कर दे और मेरी शर्मगाह को बेह़याई के कामों से बचा।”

अहले क़ुबा की फ़ज़ीलत :

(इस्तिन्जा से फ़राग़त के बा'द) अगर हाथ में बू बाक़ी हो तो हाथ को दीवार या ज़मीन से रगड़े (ताकि बू ख़त्म हो जाए)। पथ्थरों और पानी दोनों से इस्तिन्जा करना मुस्तह़ब है। चुनान्चे, मरवी है कि जब येह आयते मुक़द्दसा नाज़िल हुई :

فِيْهِ رِجَالٌ يُّحِبُّوْنَ اَنْ يَّتَطَهَّرُوْا ؕ وَاللّٰهُ يُحِبُّ الْمُطَّهِّرِيْنَ ﴿۱۰۸﴾ (پ ١١، التوبة:١٠٨)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *इस में वोह लोग हैं कि ख़ूब सुथरा होना चाहते हैं और सुथरे अल्लाह को प्यारे हैं।*

तो हुज़ूर नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अहले क़ुबा से इरशाद फ़रमाया : “येह कौन सी त़हारत है जिस पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने तुम्हारी ता'रीफ़ फ़रमाई है ?” उन्हों ने अ़र्ज़ की : “हम पथ्थरों और पानी से इस्तिन्जा करते हैं।”(1)

---

1 ......تلخيص الحبيرفى تخريج احاديث الرافعى الكبير، كتاب الطهارة،باب الاستنجاء، ج ١، ص ٣٢٢-٣٢٣-

वुज़ू का त़रीक़ा

इस्तिन्जा से फ़रागत के बा'द वुज़ू में मश्ग़ूल हो जाए कि मुस्तफ़ा जाने रह़मत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की आ़दते मुबारका थी कि जब भी क़ज़ाए ह़ाजत से फ़ारिग़ होते तो वुज़ू फ़रमाते और मिस्वाक से इब्तिदा करते।

मिस्वाक के मुतअ़ल्लिक़ सात फ़रामीने मुस्त़फ़ा

﴾1﴿.....बिला शुबा तुम्हारे मुंह कुरआने पाक के रास्ते हैं पस इन्हें मिस्वाक से साफ़ करो।(1)

निय्यत : मिस्वाक करते हुए ये निय्यत करनी चाहिये कि मैं नमाज़ में क़िराअते कुरआन और ज़िक्रुल्लाह के लिये मुंह साफ़ करता हूं।

﴾2﴿.....मिस्वाक (वाले वुज़ू) के बा'द नमाज़ बिग़ैर मिस्वाक वाली नमाज़ से पछत्तर दर्जे अफ़्ज़ल है।(2)

﴾3﴿....अगर मुझे अपनी उम्मत के मशक़्क़त में पड़ने का ख़ौफ़ न होता तो उन्हें हर नमाज़ के साथ मिस्वाक का हुक्म देता।(3)

﴾4﴿....क्या वजह है कि मैं देखता हूं तुम मेरे पास पीले दांतों के साथ आ जाते हो, मिस्वाक किया करो।(4)

﴾5﴿.....हुज़ूरे अन्वर, शाफ़ेए रोज़े मह़शर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم रात को बारबार मिस्वाक करते थे।(5)

﴾6﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने फ़रमाया कि हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم हमेशा हमें मिस्वाक का हुक्म देते रहे यहां तक कि हम ने गुमान किया कि अ़न क़रीब आप पर इस बारे में कुछ (हुक्म) नाज़िल होगा।(6)

﴾7﴿.....तुम पर मिस्वाक लाज़िम है बेशक येह मुंह की पाकीज़गी और रब्ब عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा का ज़रीआ़ है।(7)

---

1 ......حلیۃ الاولیاء، سعید بن جبیر، الحدیث:۵۷۳۶، ج۴، ص۳۲۶۔
سنن ابن ماجہ، کتاب الطھارۃ، باب السواک، الحدیث:۲۹۱، ج۱، ص۱۸۷، قول علی رضی اللّٰہ تعالٰی عنہ۔
2 ......المسند للامام احمد بن حنبل،مسندالسیدۃ عائشہ رضی اللّٰہ تعالٰی عنھا،الحدیث:۲۶۴۰۰،ج۱۰،ص۱۴۱۔
3 ......صحیح مسلم، کتاب الطھارۃ، باب السواک، الحدیث:۲۵۲، ص۱۵۲۔
4 ......المسند للامام احمد بن حنبل، حدیث تمام بن العباس، الحدیث:۱۸۳۵، ج۱، ص۴۵۹۔
5 ......صحیح مسلم، کتاب الطھارۃ، باب السواک، الحدیث:۲۵۶، ص۱۵۲۔
6 ......المسند للامام احمد بن حنبل، مسند عبد اللّٰہ بن عباس، الحدیث:۳۱۵۲، ج۱، ص۷۲۷۔
7 ......سنن النسائی، کتاب الطھارۃ، باب الترغیب فی السواک، الحدیث:۵، ص۱۰۔

अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم फ़रमाते हैं : "मिस्वाक ह़ाफ़िज़े को तेज़ करती और बलग़म को दूर करती है।"(1)

सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن सुब्ह़ इस ह़ाल में निकलते कि मिस्वाक इन के कानों पर होती।(2)

मिस्वाक का त़रीक़ा :

पीलू की लकड़ी या किसी दूसरे दरख़्त की सख़्त लकड़ी से मिस्वाक करे जो दांतों की ज़र्दी को दूर कर दे। मिस्वाक (दांतों की) चौड़ाई और लम्बाई में जिस त़रह़ चाहे कर सकता है। अगर एक त़रीक़े पर करे तो चौड़ाई में होनी चाहिये। हर नमाज़ और हर वुज़ू के साथ मिस्वाक करना मुस्तह़ब है अगर्चे वुज़ू कर के नमाज़ न पढ़े। नींद की वजह से जब मुंह की बू बदल जाए तो भी मिस्वाक करे। ज़ियादा देर तक कुछ न खाने और ना पसन्दीदा बू वाली चीज़ खाने से जो बू पैदा होती है उसे ज़ाइल करने के लिये मिस्वाक करना मुस्तह़ब है।

वुज़ू से पहले की दुआ़ :

मिस्वाक से फ़ारिग़ हो कर वुज़ू के लिये क़िब्ला रुख़ बैठे और بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم पढ़े कि प्यारे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जिस ने वुज़ू से क़ब्ल بِسْمِ اللّٰه न पढ़ी उस का वुज़ू (कामिल) नहीं।"(3)

फिर येह दुआ़ पढ़े : "اَعُوْذُ بِكَ مِنْ هَمَزَاتِ الشَّيٰطِيْنِ وَاَعُوْذُ بِكَ رَبِّ اَنْ يَّحْضُرُوْن" या'नी मैं शयात़ीन के वस्वसों से तेरी पनाह चाहता हूं और ऐ मेरे रब्ब عَزَّوَجَلَّ इन के ह़ाज़िर होने से तेरी पनाह मांगता हूं।(4)

हाथ धोने से पहले की दुआ़ :

फिर हाथ बरतन में दाख़िल करने से क़ब्ल तीन मरतबा धोए और येह दुआ़ पढ़े :

"اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ الْيُمْنَ وَالْبَرَكَةَ وَاَعُوْذُ بِكَ مِنَ الشُّوْمِ وَالْهَلَكَةِ"

---

1 ......فردوس الاخبارللدیلمی، باب الخاء، الحدیث:۲۸۰۲، ج ۱، ص۳۷۷۔

2 ......سنن الترمذی، ابواب الطهارة، باب ماجاء فی السواک، الحدیث:۲۳، ج ۱، ص ۱۰۰۔

3 ......سنن الترمذی، ابواب الطهارة، باب ماجاء فی التسمیة، عندالوضوء، الحدیث:۲۵، ج ۱، ص ۱۰۱۔

4 ......المصنف لعبد الرزاق، کتاب الصلاة، باب الاستعاذة فی الصلاة، الحدیث:۲۵۸۰، ج۲، ص ۵۴۔

قوت القلوب، الفصل الثالث والثلاثون فی ذکر دُعائم الاسلام......الخ، ج ۲، ص ۱۵۱۔

या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मैं तुझ से बरकत का सुवाल करता हूं और बद बख़्ती व हलाकत से तेरी पनाह मांगता हूं।[1]

फिर ह़दष दूर करने या जवाज़े नमाज़ की निय्यत करने और चेहरा धोने तक निय्यत को क़ाइम (या'नी याद) रखे अगर चेहरा धोते वक़्त भूल गया तो येह निय्यत काफ़ी न होगी।[2]

फिर दाएं (सीधे) हाथ से एक चुल्लू पानी ले और तीन बार कुल्ली करे[3] और ग़र ग़रा करे यहां तक कि पानी ह़ल्क़ तक पहुंच जाए और रोज़ादार हो तो पानी ह़ल्क़ तक न पहुंचाए।

कुल्ली करते वक़्त की दुआ़ :

फिर येह दुआ़ पढ़े : "اَللّٰھُمَّ اَعِنِّیْ عَلٰی تِلَاوَۃِ کِتَابِکَ وَکَثْرَۃِ الذِّکْرِ لَکَ या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अपनी किताब की तिलावत और अपने ज़िक्र की कषरत पर मेरी मदद फ़रमा।"[4]

फिर नाक के लिये एक चुल्लू पानी ले और तीन बार नाक में चढ़ाए[5] सांस ले कर पानी नाक के नथनों तक खींचे और इस में मौजूद रींठ वग़ैरा अच्छी त़रह़ साफ़ करे।

नाक में पानी पहुंचाते वक़्त की दुआ़ :

नाक में पानी पहुंचाते हुए येह दुआ़ पढ़े : "اَللّٰھُمَّ اَوْجِدْلِیْ رَائِحَۃَ الْجَنَّۃِ وَاَنْتَ عَنِّیْ رَاضٍ" या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मेरे लिये जन्नत की ख़ुश्बू बना दे इस ह़ाल में कि तू मुझ से राज़ी हो।[6]

---

1 ......قوت القلوب، الفصل الثالث والثلاثون فی ذکر دعائم الاسلام......الخ، ج۲، ص۱۵۲۔

2 .....अह़नाफ़ के नज़्दीक वुज़ू के लिये निय्यत सुन्नत है न कि फ़र्ज़। (ماخوذ ازھدایہ،کتاب الطھارۃ،ج۱،ص۱۶)

3 .....अह़नाफ़ के नज़्दीक तीन चुल्लु से तीन बार कुल्ली करे। चुनान्चे, दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़्बूआ़ 1250 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब बहारे शरीअ़त जिल्द अव्वल सफ़्ह़ा 295 पर सदरुश्शरीआ़, बदरुत़्त़रीक़ा ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْقَوِی नक़्ल फ़रमाते हैं : तीन चुल्लू पानी से तीन बार कुल्ली करे कि हर बार मुंह के हर पुर्ज़े पर पानी बह जाए और रोज़ादार न हो तो ग़रग़रा करे।"

4 ......قوت القلوب، الفصل الثالث والثلاثون فی ذکر دعائم الاسلام......الخ، ج۲، ص۱۵۲۔

5 .....अह़नाफ़ के नज़्दीक तीन चुल्लू से तीन बार नाक में पानी चढ़ाए। चुनान्चे, बहारे शरीअ़त जिल्द अव्वल सफ़्ह़ा 295 पर है : "फिर तीन चुल्लू से तीन बार नाक में पानी चढ़ाए कि जहां तक नर्म गोश्त होता है हर बार इस पर पानी बह जाए और रोज़ादार न हो तो नाक की जड़ तक पानी पहुंचाए।"

6 ......قوت القلوب، الفصل الثالث والثلاثون فی ذکر دعائم الاسلام......الخ، ج۲، ص۱۵۲۔

नाक साफ़ करते वक़्त की दुआ़ :

नाक साफ़ करते हुए येह दुआ़ पढ़े : اَللّٰھُمَّ اِنِّی اَعُوْذُبِکَ مِنْ رَوَائِحِ النَّارِ وَمِنْ سُوْءِ الدَّار "या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मैं जहन्नम की बदबूओं और बुरे घर से तेरी पनाह चाहता हूं।"(1)

फिर चेहरे के लिये एक चुल्लू पानी ले और लम्बाई में पेशानी की इब्तिदा से ठोड़ी के नीचे तक और चौड़ाई में एक कान की लौ से दूसरे कान की लौ तक धोए और पेशानी के दोनों कनारों पर बाल झड़ने की जगह चेहरे में दाख़िल नहीं बल्कि वोह सर का ह़िस्सा हैं। उस जगह तक भी पानी पहुंचाए जहां से औ़रतें बाल हटाती रहती हैं और येह वोह मिक़्दार है कि अगर किसी धागे का एक सिरा कान के ऊपर रखें और दूसरा पेशानी के कनारे पर तो येह ह़िस्सा चेहरे की त़रफ़ रहेगा (इस से मुराद कनपट्टी है)। इन जगहों पर भी पानी पहुंचाए : अब्रू, मूंछें, रुख़्सारों के बाल और पलकें क्यूंकि आ़म तौ़र पर येह कम होते हैं। दाढ़ी घनी न हो तो बालों की जड़ों तक पानी पहुंचाना वाजिब है लेकिन घनी दाढ़ी में येह हुक्म नहीं। निचले होंट के नीचे के बाल हलके और घने होने में दाढ़ी के हुक्म में हैं। फिर तीन मरतबा इसी त़रह़ चेहरे पर पानी बहाए और दाढ़ी के लटके हुए बालों के ज़ाहिरी ह़िस्से पर पानी बहाए(2) और आंखों के ख़ानों और मेल और सुर्मा जम्अ़ होने की जगहों में उंगलियां दाख़िल कर के अच्छी त़रह़ साफ़ करे। मरवी है कि "ह़ुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इसी त़रह़ किया।"(3) आंखें धोते वक़्त येह उम्मीद रखे कि आंखों के गुनाह धुल रहे हैं और हर उ़ज़्व धोते वक़्त येही उम्मीद रखे कि इस उ़ज़्व के गुनाह धुल रहे हैं।

चेहरा धोते वक़्त की दुआ़ :

चेहरा धोते वक़्त येह दुआ़ पढ़े :

"اَللّٰھُمَّ بَیِّضْ وَجْھِیْ بِنُوْرِکَ یَوْمَ تَبْیَضُّ وُجُوْہُ اَوْلِیَائِکَ وَلَا تُسَوِّدْ وَجْھِیْ بِظُلُمَاتِکَ یَوْمَ تَسْوَدُّ وُجُوْہُ اَعْدَائِکَ"

---

❶......قوت القلوب، الفصل الثالث و الثلاثون فی ذکر دعائم الاسلام......الخ، ج ۲، ص ۱۵۲ ۔

❷.....बहारे शरीअ़त जिल्द अव्वल सफ़्ह़ा 289 पर है : दाढ़ी के बाल अगर घने न हों तो जिल्द का धोना फ़र्ज़ है और अगर घने हों तो गले की त़रफ़ दबाने से जिस क़दर चेहरे के गिर्दे में आएं इन का धोना फ़र्ज़ है और जड़ों का धोना फ़र्ज़ नहीं और जो ह़ल्के़ से नीचे हों उन का धोना ज़रूर नहीं और अगर कुछ ह़िस्से में घने हों और कुछ छिदरे, तो जहां घने हों वहां बाल और जहां छिदरे हैं उस जगह जिल्द का धोना फ़र्ज़ है।

❸......المسند للامام احمد بن حنبل، مسند الانصار، حدیث ابی امامة الباهلی، الحدیث: ۲۲۲۸۶، ج ۸، ص ۲۸۸ ۔

या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ जिस दिन तेरे औलिया के चेहरे रोशन होंगे उस दिन अपने नूर से मेरे चेहरे को भी रोशन फ़रमा देना और जिस दिन तेरे दुश्मनों के चेहरे सियाह होंगे उस दिन मेरा चेहरा सियाह न फ़रमाना ।''(1)

चेहरा धोते वक़्त घनी दाढ़ी का ख़िलाल करे कि येह मुस्तह़ब है। फिर हाथों को कोहनियों समेत तीन मरतबा धोए, अंगूठी को ह़रकत दे और आ'ज़ा की चमक को ज़ियादा करते हुए कोहनियों से ऊपर तक पानी पहुंचाए ''क्यूंकि आ'ज़ाए वुज़ू बरोज़े क़ियामत चमकते रोशन होंगे।'' मरवी है कि, ह़ुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ''जो अपनी चमक को ज़ियादा कर सकता हो वोह करे ।(2)

एक रिवायत में है कि ''बेशक (क़ियामत का) ज़ेवर वुज़ू की जगहों तक पहुंचेगा।''(3)

दायां बाज़ू धोते वक़्त की दुआ़ :

बाज़ू धोने में सीधे हाथ से इब्तिदा करे और येह दुआ़ पढे :

''اَللّٰھُمَّ اَعْطِنِیْ کِتَابِیْ بِیَمِیْنِیْ وَحَاسِبْنِیْ حِسَابًا یَّسِیْرًا या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मेरा नामए आ'माल दाहिने हाथ में देना और मुझ से आसान ह़िसाब करना ।''(4)

बायां बाज़ू धोते वक़्त की दुआ़ :

बाया बाज़ूं धोते वक़्त येह दुआ़ पढ़े : ''اَللّٰھُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِکَ اَنْ تُعْطِیَنِیْ کِتَابِیْ بِشِمَالِیْ اَوْ مِنْ وَّرَاءِ ظَھْرِیْ या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मैं तेरी पनाह चाहता हूं कि तू मुझे मेरा नामए आ'माल बाएं हाथ में या पीठ के पीछे से दे ।''(5)

फिर पूरे सर का मस्ह़ करे यूं कि अपने हाथों को तर कर के दाएं हाथ की उंगलियों को बाएं हाथ की उंगलियों से मिलाए और इन्हें सर के अगले ह़िस्से पर रखे और गुद्दी की त़रफ़ खींचे फिर सर के अगले ह़िस्से पर ले आए येह एक मस्ह़ है इसी त़रह़ तीन मरतबा करे ।(6)

---

1 ......قوت القلوب، الفصل الثالث و الثلاثون، فی ذکر دعائم الاسلام......الخ، ج ۲، ص ۱۵۲ ۔

2 ......صحیح مسلم، کتاب الطھارۃ، باب استحباب اطالۃ الغرۃ......الخ، الحدیث:۲۴۶، ص ۱۵۰ ۔

3 ......صحیح مسلم، کتاب الطھارۃ، باب تبلغ الحلیۃ حیث یبلغ الوضوء، الحدیث:۲۵۰، ص ۱۵۱ ۔

4 ......قوت القلوب، الفصل الثالث و الثلاثون فی ذکر دعائم الاسلام......الخ، ج ۲، ص ۱۵۲ ۔

5 ......قوت القلوب، الفصل الثالث و الثلاثون فی ذکر دعائم الاسلام......الخ، ج ۲، ص ۱۵۲ ۔

6 .....**अह़नाफ़ के नज़दीक :** चौथाई सर का मस्ह़ फ़र्ज़ है। नीज़ पूरे सर का एक बार मस्ह़ करना सुन्नत है। (माख़ूज़ अज़ : बहारे शरीअ़त, जि. 1 स. 291, 296)

सर का मस्ह़ करते वक़्त की दुआ़ :

फिर येह दुआ़ पढ़े :

اَللّٰھُمَّ غَشِّنِی بِرَحْمَتِكَ وَاَنْزِلْ عَلَیَّ مِنْ بَرَكَاتِكَ وَاَظِلَّنِی تَحْتَ ظِلِّ عَرْشِكَ یَوْمَ لَا ظِلَّ اِلَّا ظِلُّكَ

"या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मुझे अपनी रह़मत से ढांप ले मुझ पर अपनी बरकतें नाज़िल फ़रमा और मुझे उस दिन अ़र्श का साया अ़त़ा फ़रमाना जिस दिन तेरे अ़र्श के साए के सिवा कोई साया न होगा।"(1)

फिर नए पानी से दोनों कानों के ज़ाहिर व बात़िन का मस्ह़ करे। इस का त़रीक़ा येह है कि शहादत की उंगलियों को कानों के सुराख़ों में दाख़िल कर के अंगूठों को कानों के बाहर वाले ह़िस्से पर फेरे एह़तियात़न हथेली दोनों कानों पर रखे और तीन बार कानों का मस्ह़ करे।

कानों का मस्ह़ करते वक़्त की दुआ़ :

फिर येह दुआ़ पढ़े :

اَللّٰھُمَّ اجْعَلْنِی مِنَ الَّذِیْنَ یَسْتَمِعُوْنَ الْقَوْلَ فَیَتَّبِعُوْنَ اَحْسَنَہٗ اَللّٰھُمَّ اَسْمِعْنِی مُنَادِیَ الْجَنَّۃِ مَعَ الْاَبْرَارِ

"या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मुझे उन में कर दे जो बात सुनते और अच्छी बात पर अ़मल करते हैं। ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मुझे नेक लोगों के साथ जन्नत के मुनादी की आवाज़ सुना।"(2)

फिर नए पानी के साथ गर्दन का मस्ह़ करे(3) कि सरकारे दो आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "गर्दन का मस्ह़ बरोज़े क़ियामत त़ौक़ से अमान देगा।"(4)

---

1 ......قوت القلوب، الفصل الثالث والثلاثون فی ذکر دعائم الاسلام......الخ، ج ۲، ص ۱۵۲۔

2 ......قوت القلوب، الفصل الثالث والثلاثون فی ذکر دعائم الاسلام......الخ، ج ۲، ص ۱۵۲۔

3 ....अह़नाफ़ के नज़्दीक सर, कानों और गर्दन का मस्ह़ एक ही बार सुन्नत है और हर बार नया पानी लेने की भी ह़ाजत नहीं। **सर के मस्ह़ का त़रीक़ा :** चुनान्चे, दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 499 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब **नमाज़ के अह़काम** सफ़ह़ा 11 पर है : सर का मस्ह़ इस त़रह़ कीजिये कि दोनों अंगूठों और कलिमे की उंगलियों को छोड़ कर दोनों हाथ की तीन तीन उंगलियों के सिरे एक दूसरे से मिला लीजिये और पेशानी के बाल या खाल पर रख कर खींचते हुए गुद्दी तक इस त़रह़ ले जाए कि हथेलियां सर से जुदा रहें, फिर गुद्दी से हथेलियां खींचते हुए पेशानी तक ले आइये, कलिमे की उंगलियां और अंगूठे इस दरमियान सर पर बिलकुल मस नहीं होने चाहियें, फिर कलिमे की उंगलियों से कानों की अन्दरूनी सत़ह़ का और अंगूठों से कानों की बाहरी सत़ह़ का मस्ह़ कीजिये और छुंगलियां (या'नी छोटी उंगलियां) कानों के सुराख़ों में दाख़िल कीजिये और उंगलियों की पुश्त से गर्दन के पिछले ह़िस्से का मस्ह़ कीजिये, बा'ज़ लोग गले का और धुले हुए हाथों की कोहनियों और कलाइयों का मस्ह़ करते हैं येह सुन्नत नहीं है। **सर का मस्ह़ करने से क़ब्ल टूंटी अच्छी त़रह़ बन्द करने की आ़दत बना लीजिये** बिला वजह नल खुला छोड़ देना या अधूरा बन्द करना कि पानी टपकता रहे गुनाह है।

4 ......تلخیص الحبیر، کتاب الطھارۃ، ذکر الاحادیث الواردۃ فی أن الأذنین من الراس، ج ۱، ص ۲۸۶

गर्दन का मस्ह़ करते वक़्त की दुआ :

फिर येह दुआ पढ़े : ''اَللّٰھُمَّ فَکِّ رَقَبَتِیْ مِنَ النَّارِ وَاَعُوْذُبِکَ مِنَ السَّلَاسِلِ وَالْاَغْلَال''

या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मेरी गर्दन आग से आज़ाद फ़रमा और मैं जहन्नम के तौक़ और ज़न्जीरों से तेरी पनाह चाहता हूं।''[1]

फिर तीन मरतबा दायां पाउं धोए और बाएं हाथ से दाएं पाउं की उंगलियों के नीचे से ख़िलाल करे और दाएं पाउं की छुंगलिया से इब्तिदा कर के बाएं पाउं की छुंगलिया पर ख़त्म करे।

दायां पाउं धोते वक़्त की दुआ :

दायां पाउं धोते वक़्त येह दुआ पढ़े : اَللّٰھُمَّ ثَبِّتْ قَدَمِیْ عَلَی الصِّرَاطِ الْمُسْتَقِیْمِ یَوْمَ تَزِلُّ الْاَقْدَامُ فِی النَّار

या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मेरा क़दम पुल सिरात़ पर षाबित क़दम रख जिस दिन कि इस पर क़दम जहन्नम की त़रफ़ लग़्ज़िश करेंगे।''[2]

बाया पाउं धोते वक़्त की दुआ :

बायां पाउं धोते वक़्त येह दुआ पढ़े : ''اَعُوْذُبِکَ اَنْ تَزِلَّ قَدَمِیْ عَنِ الصِّرَاطِ یَوْمَ تَزِلُّ فِیْہِ اَقْدَامُ الْمُنَافِقِیْن

या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ जिस दिन पुल सिरात़ पर मुनाफ़िक़ीन के क़दम फिसल रहे होंगे उस दिन मैं अपने क़दम फिसलने से तेरी पनाह चाहता हूं।''[3] पाउं धोते हुए पानी आधी पिन्डलियों तक पहुंचाए।

वुज़ू के बा'द की दुआ :

वुज़ू से फ़ारिग़ हो कर सर आस्मान की त़रफ़ उठाए और यूं कहे :

اَشْھَدُ اَنْ لَّا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ وَحْدَہٗ لَا شَرِیْکَ لَہٗ وَاَشْھَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُہٗ وَرَسُوْلُہٗ سُبْحٰنَکَ اللّٰھُمَّ وَبِحَمْدِکَ لَا اِلٰہَ اِلَّا اَنْتَ عَمِلْتُ سُوْءًا وَظَلَمْتُ نَفْسِیْ اَسْتَغْفِرُکَ اَللّٰھُمَّ وَاَتُوْبُ اِلَیْکَ فَاغْفِرْلِیْ وَتُبْ عَلَیَّ اَنْتَ التَّوَّابُ الرَّحِیْمُ اَللّٰھُمَّ اجْعَلْنِیْ مِنَ التَّوَّابِیْنَ وَاجْعَلْنِیْ مِنَ الْمُتَطَھِّرِیْنَ وَاجْعَلْنِیْ مِنْ عِبَادِکَ الصَّالِحِیْنَ وَاجْعَلْنِیْ عَبْدًا صَبُوْرًا شَکُوْرًا وَاجْعَلْنِیْ اَذْکُرُکَ کَثِیْرًا

وَاُسَبِّحُکَ بُکْرَۃً وَّاَصِیْلًا

---

1 ......قوت القلوب، الفصل الثالث والثلاثون فی ذکر دعائم الاسلام......الخ، ج۲، ص۱۵۲۔

2 ......المرجع السابق۔ 3 ......المرجع السابق۔

या'नी मैं गवाही देता हूं कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई मा'बूद नहीं, वोह यक्ता है, उस का कोई शरीक नहीं और मैं गवाही देता हूं कि मुह़म्मद صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के बन्दे और रसूल हैं। ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तेरे लिये पाकी है और तेरी ही ता'रीफ़ है, तेरे सिवा कोई मा'बूद नहीं, मैं ने बुराई की और अपनी जान पर ज़ुल्म किया। ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मैं मग़्फ़िरत चाहता हूं और तेरी बारगाह में तौबा करता हूं मेरी मग़्फ़िरत फ़रमा और मेरी तौबा क़बूल फ़रमा। तू बहुत ज़ियादा तौबा क़बूल करने वाला, रह़्म फ़रमाने वाला है। ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मुझे तौबा करने वालों, पाक लोगों में कर दे, मुझे अपने नेक बन्दों में शामिल फ़रमा, मुझे साबिरो शाकिर बन्दा बना, मुझे ऐसा बना दे कि कषरत से तेरा ज़िक्र करूं और सुब्ह़ शाम तेरी पाकी बयान करता रहूं।"(1)

मन्क़ूल है कि जिस ने वुज़ू के बा'द येह कलिमात कहे उस के वुज़ू पर मोहर लगा दी जाएगी और उसे अ़र्श के नीचे बुलन्द कर दिया जाएगा। वोह हमेशा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की तस्बीह़ व तक़्दीस बयान करता रहेगा और उस का षवाब क़ियामत तक वुज़ू करने वाले के लिये लिखा जाता रहेगा।

वुज़ू के मकरूहात :

वुज़ू में दर्जे ज़ैल चीज़ें मकरूह हैं : (1).....किसी उ़ज़्व को तीन से ज़ियादा मरतबा धोना जिस ने ज़ियादा किया उस ने ज़ुल्म किया। (2)......पानी (के इस्ति'माल) में इस्राफ़ करना। चुनान्चे, हु़ज़ूर नबिय्ये पाक, साहि़बे लौलाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने (आ'ज़ाए वुज़ू को) तीन बार धोया और इरशाद फ़रमाया : "जिस ने ज़ियादा किया उस ने ज़ुल्म किया और बुरा किया।"(2)

एक रिवायत में है कि "इस उम्मत में कुछ लोग होंगे जो दुआ़ और त़हारत में ह़द से बढ़ेंगे।"(3)

मन्क़ूल है कि वुज़ू में पानी ज़ियादा इस्ति'माल करना आदमी के इ़ल्म में कमी की अ़लामत है।(4)

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم फ़रमाते हैं : "मन्क़ूल है कि वस्वसों की इब्तिदा वुज़ू से होती है।"(5)

---

1 ......قوت القلوب، الفصل الثالث و الثلاثون فی ذکر دعائم الاسلام......الخ، ج۲، ص۱۵۲۔

2 ......سنن ابی داود، کتاب الطھارۃ، باب الوضوء ثلاثا ثلاثا، الحدیث:۱۳۵، ج۱، ص۷۸۔۷۹۔

3 ......سنن ابی داود، کتاب الطھارۃ، باب الاسراف فی الماء، الحدیث:۹۶، ج۱، ص۶۸۔

4 ......الطھورللقاسم بن سلام، باب مایستحب من الاقتصاد......الخ، الحدیث:۱۰۹، ص۱۲۴۔

5 ......الجامع لاحکام القرآن، پ:۳۰، سورۃ الناس:۵، ج۱۰، الجزء:۲۰، ص۱۹۳۔

वुज़ू में वस्वसे डालने वाला शैत़ान :[1]

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : "एक शैत़ान वुज़ू में आदमी पर हंसता है उसे वल्हान कहते हैं।"[2]

(3).....हाथ झाड़ते हुए पानी को दूर करना (4).....दौराने वुज़ू गुफ़्तगू करना (5).....चेहरे पर ज़ोर ज़ोर से पानी मारना। ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन मुसय्यब और ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ज़ोहरी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمَا ने आ'ज़ाए वुज़ू को ख़ुश्क करना भी मकरूह कहा है। बतौरे दलील फ़रमाते हैं कि "(बरोज़े क़ियामत) आ'ज़ाए वुज़ू की तरी का वज़्न किया जाएगा।" लेकिन ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ से मरवी है कि "मदीने के सुल्त़ान, रह़मते आ़लमिय्यान صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपने कपड़े के एक कनारे से चेहरा पोंछा।"[3]

उम्मुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا से मरवी है कि "मेरे सरताज, साहि़बे मे'राज صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का एक तोलिया मुबारक था (जिस से बा'दे वुज़ू आ'ज़ा साफ़ किया करते थे)"[4]

(6).....पीतल के बरतन से वुज़ू करना मकरूह है (7).....धूप में गर्म किये हुए पानी से वुज़ू करना भी मकरूह है[5] और येह कराहत त़िब्ब के ए'तिबार से है। ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर और ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा (رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُم) से पीतल के बरतन से वुज़ू करने की कराहत मरवी है। बा'ज़ ह़ज़रात ने फ़रमाया कि ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शअ़बा

1....वल्हान एक शैत़ान का नाम है जो वुज़ू में वस्वसे डालता है इस के वस्वसे से बचने की बेहतरीन तदाबीर येह हैं : (1) رُجُوْع اِلَى اللّٰه (2) اَعُوْذُ بِاللّٰه (3) وَلَاحَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰه (4) सूरए नास (5) اٰمَنْتُ بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ (6) هُوَالْاَوَّلُ وَالْاٰخِرُ وَ الظَّاهِرُ وَ الْبَاطِنُ وَ هُوَ بِكُلِّ شَىْءٍ عَلِيْمٌ (7) سُبْحَانَ الْمَلِكِ الْخَلَّاقِ اِنْ يَّشَاْ يُذْهِبْكُمْ وَيَاْتِ بِخَلْقٍ جَدِيْدٍ ۙ وَمَا ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ بِعَزِيْزٍ ط पढ़ना कि वस्वसे जड़ से कट जाएगा और (8) वस्वसे का बिल्कुल ख़याल न करना बल्कि उस के ख़िलाफ़ करना भी दाफ़ेए़ वस्वसा है। (बहारे शरीअ़त, जि. 1 स. 303)

2......سنن الکبری للبیھقی، کتاب الطھارۃ، باب الستر فی الغسل عندالناس، الحدیث: ۹۵۰، ج ۱، ص ۳۰۴۔

3......سنن الترمذی، ابواب الطھارۃ، باب ماجاء فی المندیل بعد الوضوء، الحدیث: ۵۴، ج ۱، ص ۱۲۰۔

4......سنن الترمذی، ابواب الطھارۃ، باب ماجاء فی المندیل بعد الوضوء، الحدیث: ۵۳، ج ۱، ص ۱۱۹۔

5.....सय्यिदी आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़तावा रज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 2 स. 464 पर फ़रमाते हैं धूप का गर्म पानी मुत़लक़न मगर गर्म मुल्क गर्म मौसिम में जो पानी सोने चांदी के सिवा किसी और धात के बरतन में गर्म हो जाए वोह जब तक ठंडा न हो ले बदन को किसी त़रह पहुंचाना न चाहिये वुज़ू से न ग़ुस्ल से न पीने से यहां तक कि जो कपड़ा इस से भीगा हो जब तक सर्द (ठंडा) न हो जाए पहनना मुनासिब नहीं कि इस पानी के बदन को पहुंचने से مَعَاذَاللّٰه एह़तिमाले बर्स है।

رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के लिये पीतल के बरतन में पानी लाया गया तो उन्हों ने इस से वुज़ू करने से इन्कार कर दिया और ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर और ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) से इस की कराहत नक़्ल की।

जब वुज़ू से फ़ारिग़ हो और नमाज़ की त़रफ़ मुतवज्जेह हो तो दिल में येह ख़याल होना चाहिये कि मैं ने अपने ज़ाहिर को तो पाक कर लिया जिस पर मख़्लूक़ की नज़र पड़ती है। लिहाज़ा अब दिल को पाक किये बिग़ैर बारगाहे इलाही में मुनाजात करने से ह़या करना चाहिये कि उसे तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मुलाह़ज़ा फ़रमाता है और येह बात यक़ीनी है कि दिल की पाकीज़गी तौबा से ह़ासिल होती है। नीज़ दिल का बुरे अख़्लाक़ से कनारा कश और अच्छे अख़्लाक़ से मुज़य्यन होना ज़रूरी है। जो सिर्फ़ ज़ाहिरी त़हारत पर इक्तिफ़ा करता है वोह उस शख़्स की त़रह है जिस ने बादशाह को घर में आने की दा'वत देने का इरादा किया और अन्दरूनी ह़िस्से को गन्दगियों से आलूदा छोड़ कर बैरूनी ह़िस्से पर चूना करने में मश्ग़ूल हो गया तो ऐसा शख़्स बादशाह के ग़ैज़ो ग़ज़ब का किस क़दर ह़क़दार है। अल्लाह سبحانہ وتعالٰی बेहतर जानता है।

वुज़ू के फ़ज़ाइल पर मुश्तमिल 10 फ़रामीने मुस्त़फ़ा

﴿1﴾.....जिस ने अच्छी त़रह़ वुज़ू किया और दो रक्अ़त नमाज़ पढ़ी और इन में कोई दुन्यावी बात दिल में न लाया तो वोह अपने गुनाहों से इस त़रह़ निकल जाएगा जैसे उस दिन था कि जिस दिन उस की मां ने उसे जना था।

﴿2﴾.....एक रिवायत में है कि इन दो रक्अ़तों में वोह न भूला तो उस के पिछले गुनाह बख़्श दिये जाएंगे।[1]

﴿3﴾.....''क्या मैं तुम्हें ऐसी चीज़ के बारे में न बताऊं जिस के ज़रीए़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ख़त़ाओं को मिटाता और दर्जात को बुलन्द फ़रमाता है : (सुनो ! वोह) दुश्वारी के वक़्त कामिल वुज़ू

---

[1] .....المعجم الکبیر، الحدیث:۹۱۵، ج۱۷، ص۳۳۱، باختصارٍ۔
المعجم الاوسط، من اسمہ القاسم، الحدیث:۴۹۷۲، ج۳، ص۴۱۰، باختصارٍ۔
سنن ابی داود، کتاب الصلاۃ، باب کراھیۃ الوسوسۃ.....الخ، الحدیث:۹۰۵، ج۱، ص۳۴۲، باختصارٍ۔

करना, मसाजिद की त़रफ़ चल कर जाना और एक नमाज़ के बा'द दूसरी नमाज़ का इन्तिज़ार करना और येह जिहाद है। आख़िरी जुम्ला तीन मरतबा इरशाद फ़रमाया।"(1)

﴾4﴿.....मरवी है कि सय्यिदे आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने वुज़ू में एक एक बार आ'ज़ा को धोया और इरशाद फ़रमाया : इस वुज़ू के बिग़ैर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ नमाज़ क़बूल नहीं फ़रमाता।" फिर वुज़ू में दो दो बार आ'ज़ा को धोया और इरशाद फ़रमाया : "जिस ने आ'ज़ाए वुज़ू को दो दो बार धोया अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे दो गुना अज्र अ़त़ा फ़रमाएगा।" फिर आ'ज़ाए वुज़ू को तीन तीन बार धोया और इरशाद फ़रमाया : येह मेरा, मुझ से पहले अम्बियाए किराम और ह़ज़रते इब्राहीम ख़लीलुल्लाह عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام का वुज़ू है।"(2)

﴾5﴿.....जो वुज़ू के वक़्त अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र करे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस का तमाम जिस्म पाक फ़रमाएगा और जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र न करे तो उस का वोही ह़िस्सा पाक होगा जहां तक पानी पहुंचा।(3)

﴾6﴿.....जिस ने बा वुज़ू होने के बा वुजूद वुज़ू किया अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के लिये दस नेकियां लिख देता है।(4)

﴾7﴿.....वुज़ू पर वुज़ू, नूर पर नूर है।(5)

येह तमाम रिवायात नए वुज़ू की तरग़ीब देती हैं।

﴾8﴿.....जब मुसलमान वुज़ू करता और कुल्ली करता है तो उस के मुंह की ख़त़ाएं निकल जाती हैं। जब नाक साफ़ करता है तो उस के नाक की ख़त़ाएं निकल जाती हैं। जब चेहरा धोता है तो चेहरे की ख़त़ाएं निकल जाती हैं यहां तक कि उस की आंखों की पल्कों के नीचे की भी। जब सर का मस्ह़ करता है तो सर की ख़त़ाएं निकल जाती हैं ह़त्ता कि कानों के नीचे की भी। जब पाउं धोता है तो दोनों पाउं की ख़त़ाएं निकल जाती हैं ह़त्ता कि पाउं के नाख़ुनों के नीचे की भी। फिर उस का मस्जिद की त़रफ़ जाना और नमाज़ पढ़ना मज़ीद षवाब का सबब होता है।(6)

---

1 ......صحیح مسلم، کتاب الطھارۃ، باب فضل اسباغ الوضوء علی المکارہ، الحدیث: ۲۵۱، ص۱۵۲۔

2 ......سنن ابن ماجہ، کتاب الطھارۃ، باب ماجاء فی الوضوء......الخ، الحدیث: ۴۱۹، ۴۲۰، ج۱، ص۲۵۰-۲۵۱۔

3 ......الجامع الصغیر، حرف المیم، الحدیث: ۸۶۷۵، ص۵۲۶۔

4 ......سنن ابی داود، کتاب الطھارۃ، باب الرجل یجدد الوضوء......الخ، الحدیث: ۶۲، ج۱، ص۵۶۔

5 ......الترغیب والترھیب، کتاب الطھارۃ، الترغیب فی المحافظۃ علی الوضوء......الخ، الحدیث: ۳۱۸، ج۱، ص۱۲۳۔

6 ......سنن ابن ماجہ، کتاب الطھارۃ، باب ثواب الطھور، الحدیث: ۲۸۲، ج۱، ص۱۸۲۔

﴾9﴿.....اَنَّ الطَّاھِرَ کَالصَّائِمِ या'नी वुज़ू करने वाला रोज़ेदार जैसा है।(1)

﴾10﴿.....जिस ने अच्छी त़रह़ वुज़ू किया फिर अपनी निगाहें आस्मान की त़रफ़ उठाईं और कलिमए शहादत : اَشْھَدُ اَنْ لَّا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ وَحْدَہٗ لَا شَرِیْکَ لَہٗ وَاَشْھَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُہٗ وَرَسُوْلُہٗ पढ़ा उस के लिये जन्नत के आठों दरवाज़े खोल दिये जाते हैं जिस से चाहे दाख़िल हो।(2)

अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : "अच्छा वुज़ू तुझ से शैत़ान को भगा देगा।"

ह़ज़रते सय्यिदुना मुजाहिद عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَاحِد फ़रमाते हैं : "जो शख़्स इस्तित़ाअ़त रखता है कि बा वुज़ू, ज़िक्र और इस्तिग़फ़ार के साथ रात गुज़ारे तो उसे ऐसा ही करना चाहिये क्यूंकि जिस अ़मल पर रूहें क़ब्ज़ की जाती हैं उसी पर उठाई जाएंगी।"(3)

ग़ुस्ल का त़रीक़ा

(ग़ुस्ल करने वाला) पानी के बरतन को सीधी जानिब रखे फिर بِسْمِ اللّٰہِ शरीफ़ कह कर तीन बार हाथ धोए फिर इस्तिन्जा करे जिस का त़रीक़ा बयान हो चुका है। अगर जिस्म पर नजासत लगी हो तो उसे ज़ाइल करे फिर नमाज़ का सा वुज़ू करे मगर पाउं आख़िर में धोए अगर पाउं पहले धो कर ज़मीन पर रखे तो येह पानी का ज़ियाअ़ होगा। फिर सर पर तीन मरतबा पानी बहाए फिर तीन मरतबा दाएं कंधे पर और तीन मरतबा बाएं कंधे पर पानी बहाए फिर जिस्म को आगे पीछे से मले और सर और दाढ़ी के बालों का ख़िलाल करे और घने या हलके बालों के उगने की जगह तक पानी पहुंचाए। औ़रत पर मेन्डियों (लटों) को खोलना लाज़िम नहीं। लेकिन जब मा'लूम हो कि बालों के दरमियान पानी नहीं पहुंचेगा तो खोलना ज़रूरी है और बदन की सलूटों का ख़ास ख़याल रखे। दौराने ग़ुस्ल उ़ज़्वे मख़्सूस को हाथ लगाने से बचे अगर ऐसा करे तो दोबारा वुज़ू करे।(4)

1.....येह ह़दीषे पाक مسند الفردوس में इस तरह है "اَلطَّاھِرُ النَّائِمُ کَالصَّائِمِ الْقَائِمِ या'नी वुज़ू कर के सोने वाला रोज़ा रख कर रात भर क़ियाम करने वाले की त़रह़ है।" (فردوس الاخبار للدیلمی، باب الطاء، الحدیث:۳۷۹۴، ج۲، ص۵۲)

2.....سنن ابن ماجہ، کتاب الطھارۃ، باب مایقال بعد الوضوء، ج۱، ص۲۷۳۔

3.....المصنف لابن ابی شیبۃ، کتاب الطھارات، من کان یقول نم......الخ، الحدیث:۳، ج۱، ص۱۴۲۔

4.....**अह़नाफ़ के नज़दीक :** सित्रे ग़लीज़ (उ़ज़्वे मख़्सूस) को हाथ लगाने से वुज़ू नहीं टूटता हां दोबारा कर लेना मुस्तह़ब है। (बहारे शरीअ़त, जि. 1 स. 302)

अगर ग़ुस्ल से पहले वुज़ू कर लिया तो अब दोबारा वुज़ू करने की ह़ाजत नहीं। वुज़ू और ग़ुस्ल की सुन्नतों में से वोह बातें हम ने ज़िक्र कर दी हैं जिन का जानना और अ़मल करना राहे आख़िरत पर चलने वाले के लिये ज़रूरी है। इस के इ़लावा मुख़्तलिफ़ अह़वाल पेश आने से जिन मसाइल की ज़रूरत पड़ती है उन के लिये कुतुबे फ़िक़्ह की त़रफ़ रुजूअ़ करें।

ग़ुस्ल के फ़राइज़ :

ग़ुस्ल में दो फ़र्ज़ हैं : (1)....निय्यत (2)....पूरे बदन पर पानी बहाना।[1]

वुज़ू के फ़राइज़ :

वुज़ू के फ़राइज़ येह है : (1)....निय्यत (2)....चेहरे का धोना (3).....दोनों हाथों को कोहनियों समेत धोना (4)....उतने ह़िस्से पर मस्ह़ करना जिस पर सर का इत़लाक़ हो सके (5)....दोनों पाउं को टख़्नों समेत धोना (6) तरतीब क़ाइम रखना। आ'ज़ा को पे दर पे धोना वाजिब नहीं।[2]

ग़ुस्ल फ़र्ज़ होने के अस्बाब :

ग़ुस्ल फ़र्ज़ होने के चार अस्बाब हैं : (1)....मनी का (शहवत के साथ) निकलना (2)....(मर्द व औ़रत की) शर्मगाहों का बिग़ैर किसी रुकावट के मिलना (3)...ह़ैज़ और (4)....नफ़ास का ख़त्म होना।[3]

---

❶.....अह़नाफ़ के नज़्दीक ग़ुस्ल में तीन फ़र्ज़ है : (1)....कुल्ली करना (2)....नाक में पानी डालना (3)....तमाम ज़ाहिर बदन पर पानी बहाना। (माख़ूज़ अज : बहारे शरीअ़त, जि.1, स. 316, 317)

❷....अह़नाफ़ के नज़्दीक वुज़ू में चार फ़र्ज़ हैं : (1)....मुंह धोना (2)....कोहनियों समेत हाथ धोना (3)....चौथाई सर का मस्ह़ (4).....पाउं को गिट्टों (टख़्नों) समेत एक दफ़्आ़ धोना। (माख़ूज़ अज़ : बहारे शरीअ़त, जि.1, स. 288 ता 291)

❸....अह़नाफ़ के नज़्दीक ग़ुस्ल फ़र्ज़ होने के दर्जे ज़ैल अस्बाब हैं। चुनान्चे, दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़्बूआ़ 499 सफ़्ह़ात पर मुश्तमिल किताब नमाज़ के अह़काम सफ़्ह़ा 107 पर शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी रज़वी دامت برکاتہم العالیہ नक़्ल फ़रमाते हैं : (1) मनी का अपनी जगह से शहवत के साथ जुदा हो कर उ़ज़्व से निकलना। (फ़तावा आ़लमगीरी, जि. 1 स. 4) (2) एह़तिलाम या'नी सोते में मनी निकल जाना : (ख़ुलासतुल फ़तावा, जि.1 स. 13) (3) शर्मगाह में ह़श्फ़ा (सुपारी) दाख़िल हो जाना ख़्वाह शहवत हो या न हो, इन्ज़ाल हो या न हो दोनों पर ग़ुस्ल फ़र्ज़ है। (مراقی الفلاح معہ حاشیۃ الطحطاوی، ص۹۷) (4) ह़ैज़ से फ़ारिग़ होना। (ऐज़न) (5) निफ़ास (या'नी बच्चा जनने पर जो ख़ून आता है उस) से फ़ारिग़ होना। (تبیین الحقائق،ج ۱،ص۱۷)

इन मवाके़अ़ पर ग़ुस्ल करना सुन्नत है :

ईदैन (या'नी ईदुल फ़ित्र और ईदुल अज़्ह़ा), जुमुआ़, एह़राम, अ़रफ़ा व मुज़्दलिफ़ा में ठहरने और मक्कए मुकर्रमा में दाख़िल होने के लिये ग़ुस्ल करना।

जिन मवाके़अ़ पर ग़ुस्ल करना मुस्तह़ब है :

तीन ग़ुस्ल सुन्नत हैं : अय्यामे तशरीक़ के हर दिन। एक क़ौल के मुत़ाबिक़ त़वाफ़े वदाअ़ के लिये ग़ुस्ल करना सुन्नत मगर दुरुस्त येह है कि सुन्नत नहीं बल्कि मुस्तह़ब है। काफ़िर जब ग़ैर जुनुबी ह़ालत में इस्लाम लाए और मजनून जब इफ़ाक़ा पाए और मय्यित को ग़ुस्ल देने वाले के लिये भी ग़ुस्ल करना मुस्तह़ब है।

तयम्मुम का बयान

तयम्मुम के जवाज़ की सूरतें :

जिस के लिये पानी का इस्ति'माल मुश्किल हो तलाश के बावुजूद न मिलने के सबब या कोई दरिन्दा वग़ैरा उस तक पहुंचने से रुकावट हो या प्यासा होने की वजह से उसे ख़ुद मौजूद पानी की ज़रूरत हो या उस का रफ़ीक़ प्यासा हो या पानी किसी और की मिलकिय्यत में हो और वोह राइज क़ीमत से ज़ियादा में बेचता हो या आ'ज़ाए वुज़ू पर कहीं ज़ख़्म हो या बीमार हो या पानी के इस्ति'माल से किसी उ़ज़्व के ख़राब होने या बहुत ज़ियादा कमज़ोरी का डर हो तो फ़र्ज़ नमाज़ का वक़्त दाख़िल होने तक सब्र करे।

तयम्मुम का त़रीक़ा :

फिर वोह ऐसी पाक मिट्टी का क़स्द करे जो नर्म हो जिस से ग़ुबार उड़ता हो। अब अपनी उंगलियों को मिला कर उस पर दोनों हाथों को मारे और एक बार पूरे चेहरे का मस्ह़ करे और उस वक़्त जवाज़े नमाज़ की निय्यत करे। बालों के नीचे ग़ुबार पहुंचाने की मशक़्क़त न करे ख़्वाह बाल घने हों या हल्के। ग़ुबार से पूरे चेहरे को घेरने की कोशिश करे और येह चीज़ एक बार मारने से ह़ासिल हो जाती है क्यूंकि चेहरे की चोड़ाई हथेलियों की चोड़ाई से ज़ियादा नहीं और घेरने में ग़ालिब गुमान काफ़ी है। फिर अंगूठी उतारे और अपनी उंगलियों को कुशादा कर के दूसरी ज़र्ब मारे इस के बा'द दाएं हाथ की उंगलियों के ज़ाहिर को बाएं हाथ की उंगलियों के बात़िन से इस

त़रह़ मिलाए कि उंगलियों के पोरे दूसरी त़रफ़ की शहादत की उंगली से बाहर न हों फिर बाएं हाथ को जिस त़रह़ रखा था उसी त़रह़ दाएं बाज़ू के ज़ाहिर पर फैरे फिर बाईं हथेली उलट कर दाएं बाज़ू के बात़िन पर फैरे और कलाई तक ले आए फिर बाएं हाथ के अंगूठे के अन्दर वाले ह़िस्से को दाएं हाथ के अंगूठे के ज़ाहिर पर फैरे फिर बाएं बाज़ू के साथ भी इसी त़रह़ करे फिर हथेलियों का मस्ह़ कर के उंगलियों के दरमियान ख़िलाल करे।

इस तक्लीफ़ का मक़्सद येह है कि एक ही ज़र्ब में कोहनियों तक घेरना पाया जाए अगर एक ही ज़र्ब से ऐसा मुश्किल हो तो दो या इस से ज़ियादा ज़र्बों में भी कोई ह़रज नहीं। जब इस के साथ फ़र्ज़ पढ़े तो उसे इख़्तियार है जैसे चाहे नफ़्ल पढ़े और अगर दो फ़र्ज़ों को जम्अ़ करना चाहे तो दूसरी फ़र्ज़ नमाज़ के लिये दोबारा तयम्मुम करे। इसी त़रह़ हर फ़र्ज़ नमाज़ के लिये अ़लाह़िदा अ़लाह़िदा तयम्मुम करे।[1]

......ता'रीफ़ और सआ़दत....

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर बैज़ावी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی (मुतवफ़्फ़ा 685 हि.) इरशाद फ़रमाते हैं कि "जो शख़्स अल्लाह व रसूल عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللّٰه تعالٰی علیه واٰلهٖ وسلَّم की फ़रमां बरदारी करता है दुन्या में उस की ता'रीफ़ें होती हैं और आख़िरत में सआ़दत मन्दी से सरफ़राज़ होगा।"

(تفسیر البیضاوی، پ۲۲، الاحزاب، تحت الآیة: ۷۱، ج۴، ص۳۸۸)

---

❶.....अह़नाफ़ के नज़दीक एक तयम्मुम से जिस क़दर चाहें फ़राइज़ व नवाफ़िल अदा किये जा सकते हैं क्यूंकि तयम्मुम वुज़ू के क़ाइम मक़ाम है। हर फ़र्ज़ के लिये अ़लाह़िदा तयम्मुम करना ज़रूरी नहीं।

(ماخوذ از الهداية، كتاب الطهارة، ج ۱، ص ۲۹)

बाब नम्बर 3 : ज़ाहिरी नजासतों से पाकी ह़ासिल करना

ज़ाहिरी नजासतों से पाकी ह़ासिल करने की दो क़िस्में हैं :

(1)....मैल कुचेल दूर करना और (2).....अज्ज़ाए जिस्म को साफ़ करना

पहली क़िस्म : मैल कुचेल और रुत़ूबात की आठ क़िस्में हैं :

(1)....सर के बालों में जो मैल और जूएं जम्अ़ होती हैं इन से पाकीज़गी ह़ासिल करना : धोने, कंघी करने और तेल लगाने के ज़रीए़ मुस्तह़ब है ताकि बाल उलझते न रहें कि प्यारे आक़ा, मदीने वाले मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से कभी कभी सरे अन्वर में तेल डालना और कंघी करना भी मरवी है।[1] नीज़ इस का हुक्म भी फ़रमाते और इरशाद फ़रमाते : "कभी कभी तेल लगाया करो।"[2]

एक रिवायत में है कि "जिस के बाल हों वोह इन की इ़ज़्ज़त करे।"[3] या'नी इन्हें मैल कुचेल से बचाए।

बारगाहे रिसालत में एक शख़्स ह़ाज़िर हुवा जिस के सर और दाढ़ी के बाल बिखरे हुए थे तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "क्या इस के पास तेल नहीं जिस के ज़रीए़ बालों को बिठा लेता।" फिर इरशाद फ़रमाया : "तुम में से कोई इस ह़ालत में आता है गोया वोह शैत़ान (की त़रह़ बाल बिखरे हुए) है।"[4]

(2).....कानों की सलूटों में जम्अ़ होने वाली मैल कुचेल : इस में से जो ज़ाहिर हो वोह मस्ह़ से ज़ाइल हो जाती है और जो कान के सूराख़ की गहराई में जम्अ़ हो जाती है ग़ुस्ल ख़ाने से निकलते वक़्त इसे नर्मी से साफ़ किया जाए क्यूंकि बसा अवक़ात इस की कषरत समाअ़त को नुक़्सान पहुंचाती है।

(3)....नाक में जम्अ़ होने वाली रुत़ूबतें जो अत़राफ़ से मिली होती हैं : इन्हें नाक में पानी चढ़ा कर (उलटे हाथ की) छुंगलिया से साफ़ करे।

---

1 ......الشمائل المحمدیة للترمذی، باب ماجاء فی ترجل رسول اللّٰہ، الحدیث:۳۳_۳۵، ص ۴۰_۴۲_

2 ......سنن الترمذی، کتاب اللباس، باب ماجاء فی النھی عن الترجل الّا غِبًّا، الحدیث:۱۷۶۲، ج۳، ص۲۹۳_

3 ......سنن ابی داود، کتاب الترجل، باب ماجاء فی استحباب الطیب، الحدیث:۴۱۶۳، ج۴، ص۱۰۳_

4 ......سنن ابی داود، کتاب اللباس، باب فی غسل الثوب وفی الخلقان، الحدیث:۴۰۶۲، ج۴، ص۷۲_

قوت القلوب، الفصل الثالث و الثلاثون فی فضائل اھل السنة......الخ، ج۲، ص۲۴۳_

(4).....दांतों और ज़बान के कनारों पर जम्अ़ होने वाली रुतूबतें : इन्हें मिस्वाक और कुल्ली के ज़रीए ज़ाइल करे। हम इन दोनों का ज़िक्र माक़ब्ल में कर चुके हैं।

(5).....एह्तियात न करने की वजह से दाढ़ी में जम्अ़ होने वाली मैल कुचेल और जूएं : इन्हें धोने और कंघी के ज़रीए दूर करना मुस्तह़ब है। मरवी है कि "हुज़ूर नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم सफ़र व ह़ज़र में कंघी, सर खुजाने की लकड़ी और आईना अपने पास रखते थे।"[1] और येह अहले अ़रब का त़रीक़ा है।

आक़ा صَلَّى اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की दाढ़ी मुबारक :

मरवी है कि आक़ाए दो जहान, मह़बूबे रह़मान صَلَّى اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم दिन में दो मरतबा दाढ़ी में कंघी करते थे[2] और आप صَلَّى اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की दाढ़ी मुबारक घनी थी।[3]

अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ की दाढ़ी मुबारक भी घनी थी। अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते उषमाने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ की दाढ़ी मुबारक हलकी और लम्बी थी। अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा کَرَّمَ اللّٰہُ تعَالٰی وَجْھَهُ الْکَرِیْم की दाढ़ी मुबारक चौड़ी थी जो दोनों कंधों को भर लेती थी।

अच्छी निय्यत से ज़ैबो ज़ीनत इख़्तियार करना :

उम्मुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा त़य्यिबा त़ाहिरा رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं कि एक बार हुजरए मुबारका के पास कुछ लोग जम्अ़ हुए तो उन की त़रफ़ तशरीफ़ ले जाने से पहले प्यारे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने मटके में मौजूद पानी में अपना अ़क्स देख कर सर और दाढ़ी को दुरुस्त फ़रमाया। मैं ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم क्या आप भी ऐसा कर रहे हैं ?" इरशाद फ़रमाया : "हां **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपने बन्दे को पसन्द फ़रमाता है कि जब वोह अपने (मुसलमान) भाइयों के पास जाए तो बन संवर कर जाए।"[4]

---

1. ......قوت القلوب، الفصل الثالث و الثلاثون فی فضائل اھل السنة......الخ، ج ۲، ص ۲۴۳ ـ
2. ......قوت القلوب، الفصل الثالث و الثلاثون فی فضائل اھل السنة......الخ، ج ۲، ص ۲۴۳ ـ
3. ......سنن النسائی، کتاب الزینة،اتخاذ الجمّة، الحدیث: ۵۲۴۲، ص ۸۳۲ـ
4. ......قوت القلوب، الفصل الثالث و الثلاثون فی فضائل اھل السنة......الخ، ج ۲، ص ۲۴۳، باختصارٍ ـ

जाहिल शख़्स येह ख़याल करता है कि येह तो लोगों के लिये ज़ैबो ज़ीनत इख़्तियार करना है वोह इसे दूसरों की आ़दत पर क़ियास करता है और फ़िरिश्तें सिफ़त लोगों को लोहारों जैसे कम दर्जा लोगों से तशबीह देता है। अफ़्सोस है ऐसे शख़्स पर। ह़ालांकि रसूलुल्लाह صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को तब्लीग़े इस्लाम का हुक्म था और आप की ज़िम्मेदारी थी कि उन के दिलों में अपनी अ़ज़्मत को उजागर करें ताकि उन के दिलों में आप का मर्तबा कम न हो और उन की नज़रों में अपनी सूरत को उ़म्दा करें ताकि वोह आप को ह़क़ीर समझ कर आप से नफ़रत न करें। मुनाफ़िक़ीन इसी त़रह़ (की बातों और अफ़्आ़ल के ज़रीए) लोगों के दिलों में आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के लिये नफ़रत पैदा करने की कोशिश करते थे। लोगों को दा'वत देने वाले आ़लिम पर भी येही त़रीक़ा इख़्तियार करना ज़रूरी है और वोह ज़ाहिरी त़ौर पर उन चीज़ों का ख़याल रखे जो लोगों के उस से मुतनफ़्फ़िर होने का सबब न बनें। इस क़िस्म के उमूर में ए'तिमाद का दारोमदार निय्यत पर होता है और येह आ'माल ही हैं जो (हुस्ने निय्यत के सबब) मक़्सूद का दर्जा ह़ासिल कर लेते हैं। इस इरादे से ज़ैबो ज़ीनत इख़्तियार करना पसन्दीदा है और ख़ुद को ज़ाहिद (या'नी दुन्या से कनाराकश) ज़ाहिर करने के लिये दाढ़ी को परागन्दा छोड़ देना ममनूअ़ है जब कि निय्यत येह हो कि लोग समझें येह ज़ाहिद है और नफ़्स की त़रफ़ मुतवज्जेह नहीं हैं। अलबत्ता इस से अहम काम में मश्ग़ूलिय्यत के सबब इसे छोड़ना अच्छा है। येह बन्दे और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के दरमियान पोशीदा अह़वाल हैं और निगरानी करने वाला अच्छी त़रह़ देखता है। लिहाज़ा मुनाफ़क़त किसी ह़ाल में फ़ाइदे मन्द नहीं।

बुरी निय्यत से ज़ैबो ज़ीनत इख़्तियार करना :

कितने ही जाहिल लोग ऐसे हैं जो मख़्लूक़ की ख़ातिर उन चीज़ों को इख़्तियार करते हैं ऐसा शख़्स ख़ुद भी ग़लत़ फ़हमी का शिकार है और दूसरों को भी ग़लत़ फ़हमी में डालता है और गुमान करता है कि उस का मक़्सद अच्छा है। पस तुम उ़-लमा के एक गुरौह को देखोगे कि वोह क़ीमती लिबास ज़ैबे तन करते हैं और कहते हैं कि हमारा मक़्सद बिदअ़तियों और झगड़ालू लोगों का मुक़ाबला करना और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का क़ुर्ब ह़ासिल करना है। येह बात उस दिन वाज़ेह़ हो जाएगी जिस दिन दिलों का इम्तिह़ान होगा और क़ब्रों से मुर्दों को उठाया जाएगा और जो कुछ सीनों में है ज़ाहिर हो जाएगा उस दिन ख़ालिस चांदी और खोट वाली चांदी में तमीज़ हो जाएगी। हम इस बड़ी पेशी के दिन की रुस्वाई से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की पनाह चाहते हैं।

(6).....उंगलियों के बैरूनी हिस्से के जोड़ों पर जम्अ़ होने वाली मैल : अहले अ़रब आ़म तौ़र पर इसे धोते न थे क्यूंकि वोह खाने के बा'द हाथ नहीं धोते थे जिस की वजह से उंगलियों की सलूटों में मैल जम्अ़ हो जाती थी तो सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन्हें जोड़ों के धोने का हुक्म इरशाद फ़रमाया।[1]

(7).....उंगलियों के पोरों की सफ़ाई : "मुस्त़फ़ा जाने रह़मत صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने अहले अ़रब को इन की सफ़ाई का हुक्म दिया[2] और नाखुनों में जम्अ़ होने वाली मैल कुचेल को साफ़ करना क्यूंकि (नाखुन तराशने के लिये) हर वक़्त कैंची वग़ैरा मुयस्सर नहीं होती जिस की वजह से नाखुनों में मैल जम्अ़ हो जाता है। अगर्चे सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने नाखुन तराशने, बग़लों के बाल उखेड़ने और ज़ेरे नाफ़ बाल मुन्डने के लिये चालीस दिन मुक़र्रर फ़रमाए।"[3] मगर इन की सफ़ाई का ख़ास ख़याल रखने का हुक्म दिया।[4]

मरवी है कि एक बार कुछ दिन वह़्य न आई तो फिर जब सय्यिदुना ह़ज़रते जिब्रईल عَلَیْهِ السَّلَام बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर हुए तो (आप के इस्तिफ़सार फ़रमाने पर) अ़र्ज़ की : "हम आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के पास कैसे आए जब कि आप (के उम्मती) न अपनी उंगिलयों के जोड़ों को धोते हैं, न पोरों को साफ़ करते हैं और न ही मिस्वाक से दांत साफ़ करते हैं। लिहाज़ा अपनी उम्मत को इस का हुक्म दें।"[5]

नाखुनों के मैल को "उफ़" और कानों के नीचे के मैल को "तुफ़" कहा जाता है। इरशादे खुदावन्दी है : فَلَا تَقُلْ لَّهُمَاۤ اُفٍّ (پ۱۵،بنی اسرائیل:۲۳) इस की तफ़्सीर में कहा गया है कि वालिदैन को नाखुनों के मैल कुचेल के ज़रीए़ तक्लीफ़ न दो। एक क़ौल येह है कि वालिदैन को इतनी भी अज़िय्यत न दो जितनी तुम नाखुनों के मैल कुचेल से मह़सूस करते हो।

(8)....पसीना बहने और गर्दो ग़ुबार पड़ने की वजह से तमाम बदन पर जम्अ़ हो जाने वाला मैल कुचेल : इसे ग़ुस्ल से दूर किया जाता है। (इस के लिये) ह़म्माम में दाख़िल होने में कोई ह़रज नहीं कि बा'ज़ सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْهِمْ اَجْمَعِیْن शाम के ह़म्मामों में जाया करते थे।

---

1 ......سنن ابی داود، کتاب الطھارۃ، باب السواک من الفطرۃ، الحدیث:۵۳، ج۱، ص۵۳۔

2 ......قوت القلوب الفصل الثالث والثلاثون فی فضائل اھل السنۃ......الخ، ج۲، ص۲۳۹۔

3 ......صحیح مسلم، کتاب الطھارۃ، باب خصال الفطرۃ، الحدیث:۲۵۸، ص۱۵۳۔

4 ......قوت القلوب الفصل الثالث والثلاثون فی فضائل اھل السنۃ......الخ، ج۲، ص۲۳۹۔

5 ......المسند للامام احمد بن حنبل، مسند عبداللّٰہ بن العباس، الحدیث:۲۱۸۱، ج۱، ص۵۲۴۔

सब से बेहतर और सब से बदतर घर :

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा और ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अय्यूब अन्सारी (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا) से मरवी है कि "बेहतरीन घर ह़म्माम है कि येह बदन को पाक करता और आग की याद दिलाता है।"[1] जब कि बा'ज़ सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْهِمْ اَجْمَعِين से मन्क़ूल है कि "बदतरीन घर ह़म्माम है कि येह शर्मगाह को ज़ाहिर करता और ह़या को ख़त्म करता है।"[2] येह दूसरा क़ौल ह़म्माम की आफ़त को ज़ाहिर करता है जब कि पहला क़ौल इस के फ़ाइदे को बयान करता है। लिहाज़ा आफ़त से बचते हुए फ़ाइदे को त़लब करने में कोई ह़रज नहीं। लेकिन ह़म्माम में दाख़िल होने वाले के लिये कुछ चीजें सुन्नतें और कुछ वाजिब हैं।

ह़म्माम में दाख़िल होने वाले पर वाजिब उमूर :

ह़म्माम में दाख़िल होने वाले पर दो चीज़ें अपनी शर्मगाह और दो दूसरे की शर्मगाह के ह़वाले से वाजिब हैं :

(1).....अपनी शर्मगाह के ह़वाले से उस पर वाजिब है कि उसे दूसरों के देखने और छूने से बचाए। उस की मैल अपने हाथों से दूर करे और मलने वाले को रानों और नाफ़ के नीचे से शर्मगाह तक के ह़िस्से को हाथ लगाने से मन्अ़ करे। मैल दूर करने के लिये शर्मगाह के इ़लावा दूसरी जगहों को हाथ लगाने में जवाज़ का एह़तिमाल है लेकिन क़ियास येही है कि ह़राम हो क्यूंकि हुरमत के मुआ़मले में शर्मगाहों को छूने का वोही हुक्म है जो देखने का है। इसी त़रह़ बाक़ी पर्दे की जगहों (या'नी रानों) का भी येही हुक्म होना चाहिये।

(2).....दूसरे की शर्मगाह के सिलसिले में उस पर वाजिब है कि अपनी निगाहें उस से बचाए और उसे पर्दे की जगह खोलने से मन्अ़ करे क्यूंकि बुराई से मन्अ़ करना वाजिब है। उस पर याद दिलाना वाजिब है अ़मल करवाना वाजिब नहीं और जब तक उसे किसी की त़रफ़ से मारने या गाली गलोच करने या किसी दूसरे ह़राम काम का ख़ौफ़ न हो तब तक इस से येह (या'नी बुराई से मन्अ़ करने की) ज़िम्मेदारी साक़ित़ नहीं होगी। अगर इन में से कोई सूरत हो तो उस पर लाज़िम नहीं कि वोह किसी को एक ह़राम काम से रोक कर दूसरे ह़राम काम का मुर्तकिब बना

1 ......مرقاۃ المفاتیح، کتاب اللباس، الفصل الثانی، تحت الحدیث:۴۴۷۶، ج۸، ص۲۵۵، بتغیرٍقلیلٍ۔
المصنف لابن ابی شیبۃ، کتاب الطھارات، من رخص فی دخول الحمام، الحدیث:۱، ج۱، ص۱۳۳، بتغیرٍقلیلٍ۔

2 ......السنن الکبری للبیھقی، کتاب القسم والنشوز، باب ماجاء فی دخول الحمام، الحدیث:۱۴۸۰۸، ج۷، ص۵۰۵۔
فردوس الاخبارللدیلمی، باب الباء، الحدیث:۱۹۷۲، ج۱، ص۲۷۶۔

दे । अलबत्ता वोह उ़ज़्र पेश करते हुए येह नहीं कह सकता कि मैं जानता हूं कि येह बात उसे फ़ाइदा न देगी और न ही वोह इस पर अ़मल करेगा बल्कि उस पर याद दिलाना लाज़िम है क्यूंकि दिल इन्कार सुनने के तअष्षुर से ख़ाली नहीं होता और गुनाहों के याद दिलाने से बचने के मवाक़ेअ़ होते हैं और येह बात इस काम को उस की निगाहों में क़बीह़ क़रार देती और उसे उस से नफ़रत दिलाती है । लिहाज़ा उसे (या'नी बुराई से मन्अ़ करने को) छोड़ना नहीं चाहिये । इसी बिना पर आज कल एह़तियात़ के त़ौर पर ह़म्माम में जाना छोड़ दिया गया है क्यूंकि शर्मगाहों को नंगा करना ही पड़ता है ख़ुसूसन नाफ़ के नीचे और शर्मगाह से ऊपर की जगह क्यूंकि लोग इसे क़ाबिले सित्र नहीं समझते ह़ालांकि शरीअ़त ने इसे सित्र में शुमार किया है और गोया इसे सित्र की ह़द क़रार दिया । इस लिये ह़म्माम में तन्हा जाना मुस्तह़ब है ।

ह़ज़रते सय्यिदुना बिशर बिन ह़ारिष ह़ाफ़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِى फ़रमाते हैं : "मैं उस शख़्स को मलामत नहीं करता जिस के पास सिर्फ़ एक दिरहम हो और वोह ह़म्माम वाले को इस लिये दे दे कि वोह उस के लिये ह़म्माम ख़ाली कर दे ।"(1)

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا को ह़म्माम में यूं देखा गया कि "आप का चेहरा दीवार की त़रफ़ था और आंखों पर पट्टी बंधी हुई थी ।"(2)

बा'ज़ उ़-लमा ने फ़रमाया : "ह़म्माम में दाख़िल होने में कोई ह़रज नहीं लेकिन दो चादरें हों एक चादर सित्र पोशी के लिये और एक सर पर ओढ़ने के लिये ताकि शर्मगाह और आंखों की ह़िफ़ाज़त हो ।"(3)

ह़म्माम में दाख़िल होने की दस सुन्नतें :

(1)....निय्यत करे यूं कि नमाज़ के लिये जो ज़ीनत पसन्दीदा है उस के लिये पाकीज़गी ह़ासिल करने की निय्यत करे, दुन्या के लिये या ख़्वाहिशात पर अ़मल करने की निय्यत न करे ।

(2).....दाख़िल होने से पहले ह़म्माम वाले को उजरत दे क्यूंकि जितना फ़ाइदा वोह उठाएगा वोह मजहूल है और ह़म्माम वाले को न जाने कितनी देर इन्तिज़ार करना पड़ेगा । अन्दर जाने से पहले उजरत देने से दोनों इ़वज़ों में से एक की जहालत ख़त्म हो जाएगी और दिल भी ख़ुश हो जाएगा ।

(3)....दाख़िल होते वक़्त बायां पाउं अन्दर रखे ।

---

1 ......قوت القلوب، الفصل الثالث والثلاثون فی فضائل اهل السنة......الخ، ج۲، ص۴۲۹۔

2 ......قوت القلوب، الفصل الثالث والثلاثون فی فضائل اهل السنة......الخ، ج۲، ص۴۲۹۔

3 ......فیض القدیر، حرف الباء، تحت الحدیث: ۳۱۸۱، ج۳، ص۲۷۸۔

ह़म्माम में दाख़िल होने से पहले की दुआ़ :

(4)....दाख़िल होने से पहले येह दुआ़ पढ़े :

"بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ اَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الرِّجْسِ النَّجِسِ الْخَبِیْثِ الْمُخْبِثِ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ"

या'नी : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रह़्म वाला है सख़्त नापाकी और निहायत शरीर पलीद शैत़ान मर्दूद से मैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की पनाह चाहता हूं।

(5).....उस वक़्त ह़म्माम में जाए जब कोई न हो या ह़म्माम को ख़ाली कराए क्यूंकि अगर ह़म्माम में सिर्फ़ दीनदार और मोह़तात़ लोग हों तो नंगे बदनों की त़रफ़ देखना ह़या की कमी पर दलालत करता है और येह चीज़ शर्मगाहों को देखने का ख़याल लाती है फिर आ'ज़ा को ह़रकत देने से इन्सान इस से नहीं बच सकता कि चादर का पल्लू हट जाए और शर्मगाह ज़ाहिर हो जाए तो यूं लाशुऊ़री त़ौर पर शर्मगाह पर नज़र पड़ जाएगी। इसी वजह से ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا ने अपनी दोनों आंखों पर पट्टी बांधी।

(6)....ह़म्माम में दाख़िल होने से पहले अपने दोनों पहलू धोए।

(7)....गर्म ह़म्माम में दाख़िल होने में जल्दी न करे जब तक कि पहले पसीना न आ जाए।

(8)....पानी ज़ियादा इस्ति'माल न करे बल्कि ब क़दरे ह़ाजत पर इक्तिफ़ा करे क्यूंकि ह़ालात व क़राइन के मुत़ाबिक़ इसी की इजाज़त है। नीज़ ज़ियादा इस्ति'माल करने की सूरत में अगर ह़म्मामी को पता चल जाए तो वोह नापसन्द करेगा ख़ुसूसन जब कि पानी गर्म हो क्यूंकि इस पर ख़र्च करना पड़ता और थकावट भी होती है।

(9).....ह़म्माम की गर्मी से जहन्नम की तपिश को याद करे और कुछ देर के लिये ख़ुद को गर्म घर में क़ैद समझे और इसे जहन्नम पर क़ियास करे क्यूंकि येह जहन्नम के एक घर के मुशाबेह है जिस के नीचे आग और ऊपर तारीकी है, हम इस से अल्लाह की पनाह चाहते हैं बल्कि अ़क़्लमन्द एक लम्ह़े के लिये भी आख़िरत की याद से ग़ाफ़िल नहीं होता क्यूंकि उस ने उधर ही जाना है और वोही उस का ठिकाना है। पस अ़क़्लमन्द पानी और आग वग़ैरा जो भी चीज़ देखे उसे इस से इ़ब्रत और नसीह़त ही ह़ासिल करनी चाहिये। इस लिये कि इन्सान अपनी हिम्मत के मुत़ाबिक़ ही देखता है।

राहे आख़िरत के मुसाफ़िर की पहचान :

मषलन कोई कपड़े का ताजिर, बढ़ई, मे'मार और जुलाहा जब किसी आबाद मकान में जाएं कि जिस में क़ालीन बिछा हुवा हो और उन्हें ग़ौरो फ़िक्र में गुम पाए तो तू देखेगा कि कपड़े वाला क़ालीन देख कर इस की क़ीमत में ग़ौर कर रहा होगा, जोलाहा कपड़े की बनावट में ग़ौर कर रहा होगा, बढई छत बनने के त़रीके़ पर ग़ौर कर रहा होगा और मे'मार उस की दीवारों को देख कर इन के मज़बूत़ और सीधे होने के मुतअ़ल्लिक़ सोच रहा होगा। इसी त़रह़ राहे आख़िरत का मुसाफ़िर जब भी किसी चीज़ को देखता है तो वोह उस के लिये नसीह़त और आख़िरत की याद बन जाती है बल्कि वोह कोई भी चीज़ देखता है तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इस में उस के लिये इ़ब्रत का रास्ता खोल देता है अगर वोह सियाही को देखता है तो उसे क़ब्र की तारीकी याद आती है, अगर सांप को देखता है तो उसे जहन्नम के सांप याद आते हैं, अगर किसी बद सूरत चीज़ को देखता है तो मुन्कर नकीर और ज़बानिय्या (फ़िरिश्तों का एक गुरोह जो नाफ़रमानों को जहन्नम की त़रफ़ धकेलने पर मा'मूर है) को याद करता है, अगर कोई ख़ौफ़नाक आवाज़ सुनता है तो सूर का फूंकना याद आ जाता है, अगर किसी अच्छी व ख़ूब सूरत चीज़ को देखता है तो जन्नत की ने'मतों को याद करता है, अगर किसी बाज़ार या घर से इन्कार या क़बूलिय्यत की कोई बात सुनता है तो अपने उ़ख़रवी मुआ़मले में ह़िसाब किताब के बा'द अपने मक़्बूल या मर्दूद होने को याद करता है। ज़ियादा मुनासिब है कि अ़क़्लमन्द के दिल पर येह बात छाई रहे क्यूंकि दुन्या के काम ही उसे इन उमूर से रोकते हैं। लिहाज़ा जब भी वोह दुन्या में ठहरने की मुद्दत का आख़िरत में ठहरने की मुद्दत से मुक़ाबला करेगा उसे ह़क़ीर जानेगा बशर्ते कि वोह उन लोगों में से न हो जिन के दिल ग़ाफ़िल और बसीरत ख़त्म हो चुकी है।

(10)....ह़म्माम में दाख़िल होने वाले के लिये येह उमूर भी सुन्नत हैं कि दाख़िल होते वक़्त सलाम न करे अगर इसे कोई सलाम करे तो इस पर लफ़्ज़े सलाम के साथ जवाब देना वाजिब नहीं अगर कोई दूसरा शख़्स जवाब दे दे तो ख़ामोश रहे और अगर बोलना चाहे तो यूं कहे : "عَافَاكَ اللّٰهُ या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुझे आ़फ़िय्यत अ़त़ा फ़रमाए।" न ह़म्माम में ज़ियादा बातें करे और न ही बुलन्द आवाज़ से तिलावत करे।(1)

---

(1) ....फ़तावा फ़क़ीहे मिल्लत जिल्द 1, सफ़ह़ा. 69 पर ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना जलालुद्दीन अह़मद अमजदी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى इस बारे में पूछे गए एक सुवाल के जवाब में इरशाद फ़रमाते हैं : ग़ुस्ल करते वक़्त कलिमा व दुरूद शरीफ़ पढ़ना मन्अ़ और ख़िलाफ़े सुन्नत है कि उस वक़्त किसी क़िस्म का कलाम करने और दुआ़ पढ़ने की इजाज़त नहीं।

अलबत्ता ज़ाहिरी अल्फ़ाज़ के ज़रीए शैतान से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की पनाह तलब करने में ह़रज नहीं। गुरूबे आफ़्ताब के वक़्त और मग़रिब व इशा के दरमियान ह़म्माम में जाना मकरूह है क्यूंकि येह वक़्त शयातीन के मुन्तशिर होने का है। ह़म्माम में किसी दूसरे के जिस्म को मलने में ह़रज नहीं।

मन्क़ूल है कि ह़ज़रते सय्यिदुना यूसुफ़ बिन अस्बात़ رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने वसिय्यत फ़रमाई कि मुझे फ़ुलां शख़्स ग़ुस्ल दे वोह आप के मुसाहिबीन में से न था और फ़रमाया कि "उस शख़्स ने एक मरतबा ह़म्माम में मेरे जिस्म को मला था लिहाज़ा मैं चाहता हूं कि उसे इस का ऐसा बदला दूं कि वोह खुश हो जाए और वोह इसी त़रीक़े से खुश होगा।"

बा'ज़ सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن की रिवायात भी जिस्म मलने के जवाज़ पर दलालत करती हैं। चुनान्चे, मरवी है कि मदीने के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने एक सफ़र में किसी मक़ाम पर पड़ाव किया और पेट के बल लैट गए, एक सियाह फ़ाम ग़ुलाम आप की पीठ मुबारक दबाने लगा। (रावी कहते हैं :) मैं ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم येह क्या है ?" इरशाद फ़रमाया : "मुझे ऊंटनी ने गिरा दिया है।"(1)

जैसे ही ह़म्माम से फ़ारिग़ हो तो इस ने'मत पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का शुक्र अदा करे। कहा गया है कि "सर्दियों में गर्म पानी ने'मतों में से है जिस के मुतअ़ल्लिक़ उस से पूछ गछ होगी। ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا फ़रमाते हैं कि "ह़म्माम जदीद ने'मतों में से है।"(2) येह हुक्म शरई ए'तिबार से है।

चन्द मुफ़ीद बातें :

अत़िब्बा कहते हैं कि "चूने से (ज़ेरे नाफ़ बाल साफ़ कर के) ह़म्माम में जाना कोढ़ के मरज़ से अमान है।" मन्क़ूल है कि "(ज़ेरे नाफ़ बाल साफ़ करने के लिये) महीने में एक बार चूने का इस्ति'माल सफ़रा की गर्मी को ख़त्म करता, रंग को साफ़ करता और क़ुव्वते जिमाअ़ में इज़ाफ़ा करता है।" येह भी मन्क़ूल है कि "सर्दियों में ह़म्माम में खड़े हो कर पेशाब करना दवा से

---

(1)......المعجم الاوسط، من اسمه موسی، الحدیث:۸۰۷۷، ج۲، ص ۸۱، مفهومًا۔

قوت القلوب الفصل، السادس والاربعون فیه کتب ذکر دخول الحمام، ج ۲، ص ۴۳۰۔

(2)......قوت القلوب، الفصل السادس والاربعون فیه کتب ذکر دخول الحمام، ج ۲، ص ۴۲۹۔

ज़ियादा मुफ़ीद है।" नीज़ येह भी मन्क़ूल है कि "गर्मियों में ह़म्माम से निकलने के बा'द सो जाना दवा पीने के क़ाइम मक़ाम है और ह़म्माम से निकलने के बा'द ठंडे पानी से पाउं धोना निक़रिस[1] (नामी बीमारी) से बचाता है।"[2] ह़म्माम से निकलते वक़्त ठंडा पानी पीना या सर पर डालना मकरूह है। येह मर्दों के अह़काम बयान हुए।

जब कि औ़रतों के मुतअ़ल्लिक़ हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "किसी मर्द के लिये जाइज़ नहीं कि वोह अपनी ज़ौजा को ह़म्माम में ले जाए जब कि घर में ग़ुस्ल ख़ाना मौजूद हो।"[3] और मश्हूर है कि "मर्दों पर तहबन्द के बिग़ैर ह़म्माम में दाख़िल होना ह़राम है इसी त़रह़ नफ़ास वाली और बीमार औ़रतों के इ़लावा औ़रतों का ह़म्माम में दाख़िल होना ह़राम है।"[4] उम्मुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा त़य्यिबा त़ाहिरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا किसी बीमारी के सबब ह़म्माम तशरीफ़ ले गई थीं। लिहाज़ा अगर औ़रत किसी ज़रूरत के तह़त ह़म्माम में जाए तो एक बड़ी चादर ओढ़ कर जाए[5] और मर्द के लिये मकरूह है कि औ़रत को ह़म्माम में जाने के लिये उजरत दे कि इस त़रह़ वोह मकरूह काम में औ़रत का मददगार होगा।

दूसरी क़िस्म : अज्ज़ाए बदन की सफ़ाई, जिस्म के ज़ाइद अज्ज़ा आठ हैं :

(1).....**सर के बाल :** जो शख़्स सफ़ाई का इरादा करे तो उसे सर के बाल मुन्डवाने में कोई ह़रज नहीं और जो तेल लगाए और कंघी करे उसे बाल रखने में भी ह़रज नहीं लेकिन छोटे बड़े रखना मन्अ़ है क्यूंकि येह कमतर लोगों का त़रीक़ा है या मुअ़ज़्ज़ज़ लोगों की त़रह़ ज़ुल्फ़ें रख ले कि अब येह उन की अ़लामत बन गई है और अगर ऐसा करने वाला शरीफ़ लोगों में से न हो तो येह धोका होगा।

(2).....**मूंछों के बाल :** हुज़ूर नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "قُصُّوا الشَّارِبَ" या'नी मूंछों को पस्त करो।"[6]

1.....**निक़रिस :** वोह दर्द जो पाउं के अंगूठे में होता है। (फ़िरोज़ुल्लुग़ात, स. 1437)

2.....قوت القلوب، الفصل السادس والاربعون فیہ کتب ذکر دخول الحمام، ج۲،ص ۴۳۰۔

3.....المرجع السابق، ص ۴۳۰۔

4.....سنن النسائی،کتاب الغسل، باب الرخصۃ فی دخول الحمام، الحدیث:۳۹۹، ص ۷۲۔
سنن ابن ماجہ،کتاب الادب، باب دخول الحمام، الحدیث:۳۷۴۸، ج۴، ص ۲۲۴۔

5.....قوت القلوب، الفصل السادس والاربعون فیہ کتب ذکر دخول الحمام، ج۲، ص ۴۳۰۔

6.....المسند للامام احمد بن حنبل، مسند ابی ہریرۃ، الحدیث:۷۱۳۵، ج۳، ص ۵۔

एक रिवायत में "جُزُّوا الشَّوَارِب"[1] के अल्फ़ाज़ हैं। एक रिवायत में है : "حُفُّوا الشَّوَارِبَ وَاعْفُوا اللِّحٰى या'नी मूंछों को पस्त करो और दाढ़ियों को बढ़ाओ।"[2]

बहर ह़ाल जहां तक मुन्डने का तअ़ल्लुक़ है तो इस सिलसिले में कोई रिवायत मरवी नहीं और इह्फ़ा मुन्डने के ही मुतरादिफ़ होता है। सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰهِ تعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن से इसी त़रह़ मन्क़ूल है।

सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की याद ताज़ा हो गई :

ताबेईन में से किसी ने एक शख़्स को देखा जिस ने अपनी मूंछें उखेड़ी हुई थीं तो फ़रमाया : "तू ने मुझे सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰهِ تعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن की याद दिला दी।" ह़ज़रते सय्यिदुना मुग़ीरा बिन शअ़बा رَضِيَ اللّٰهُ تعَالٰى عَنْهُ ने फ़रमाया : रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने मेरी त़रफ़ देखा कि मेरी मूंछें बढ़ी हुई थीं तो इरशाद फ़रमाया : "इधर आओ।" चुनान्चे, आप صَلَّى اللّٰهُ تعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने मिस्वाक पर मेरी मूंछें तराश दीं।[3]

मूंछों के कनारे वाले बालों को छोड़ने में ह़रज नहीं कि अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म और दीगर सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰهِ تعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن ने इस त़रह़ किया है, इस लिये कि येह ह़िस्सा न तो मुंह को ढांपता है और न ही इस में खाने की चिकनाहट बाक़ी रहती है क्यूंकि वोह उस जगह तक नहीं पहुंचती। सरकार صَلَّى اللّٰهُ تعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के फ़रमान "اَعْفُوا اللِّحٰى" का मत़लब येह है कि दाढ़ियां बढ़ाओ।

यहूद की मुख़ालफ़त करो :

ह़दीषे पाक में है कि "यहूद मूछें बढ़ाते और दाढ़ियां काटते हैं, लिहाज़ा तुम उन की मुख़ालफ़त करो।"[4] बा'ज़ उ़–लमा ने मूछें मुन्डने को मकरूह समझा और इसे बिदअ़त क़रार दिया है।

---

1 ......صحیح مسلم، کتاب الطهارة، باب خصال الفطرة، الحديث:٢٦٠، ص ١٥٣ـ

2 ......صحیح مسلم، کتاب الطهارة، باب خصال الفطرة، الحديث:٢٥٩، ص ١٥٣، بلفظ "احفو"ـ

3 ......سنن ابی داود، کتاب الطهارة، باب فی ترک الوضوء ممّا مست النار، الحديث:١٨٨، ج ١، ص ٩٦ـ

4 ......المسند للامام احمد بن حنبل، مسند الانصار، حديث ابی امامة الباهلی، الحديث:٢٢٣٤٦، ج٨، ص ٣٠٠ـ

قوت القلوب، الفصل السادس والثلاثون فی فضائل اهل السنة......الخ، ج ٢، ص ٢٤٢ـ

(3).....**बग़लों के बाल :** 40 दिन के अन्दर अन्दर बग़लों के बाल उखेड़ना मुस्तह़ब है। जो शख़्स इब्तिदा में ही उखेड़ने की आ़दत बना ले उस के लिये उखेड़ना आसान है लेकिन जो शुरूअ़ से मूंडने की आ़दत बनाए उस के लिये मूंडने काफ़ी है क्यूंकि उखेड़ने में अपने आप को अ़ज़ाब और तक्लीफ़ में मुब्तला करना है और मक़्सूद सफ़ाई का ह़ुसूल और येह कि इस में मैल कुचेल जम्अ़ न हो येह चीज़ मूंडने से ह़ासिल हो जाती है।

(4)....**ज़ेरे नाफ़ बाल :** इन बालों को मूंडना या चूना लगा कर दूर करना मुस्तह़ब है और 40 दिन से ताख़ीर नहीं होनी चाहिये।

(5).....**नाख़ुन तराशना :** येह मुस्तह़ब है क्यूंकि बढ़े हुए नाख़ुन बुरे लगते हैं नीज़ इन में मैल जम्अ़ हो जाता है।

शैत़ान के बैठने की जगह :

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "ऐ अबू हुरैरा ! अपने नाख़ुनों को काटो क्यूंकि बढ़े हुए नाख़ुनों पर शैत़ान बैठता है।"[1]

मस्अला : अगर नाख़ुनों में मैल हो तो येह वुज़ू के सह़ीह़ होने से मानेअ़ नहीं क्यूंकि येह पानी पहुंचने को नहीं रोकती नीज़ इस वजह से कि इस में ग़फ़्लत हो जाती है और ज़रूरत के तह़्त इस में नर्मी की जाती है ख़ुसूसन मर्द के नाख़ुनों के मुआ़मले में। इसी त़रह़ अ़रबियों और देहातियों की उंगलियों के जोड़ों और हाथों और पाउं की पीठ पर जो मैल जम्अ़ हो जाता है वोह भी वुज़ू से मानेअ़ नहीं। कि ह़ुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم नाख़ुनों के काटने का ह़ुक्म फ़रमाते थे[2] और इन के मैल को नापसन्द फ़रमाते लेकिन (इस ह़ालत में पढ़ी गई) नमाज़ लौटाने का ह़ुक्म न फ़रमाते, अगर कभी ह़ुक्म दिया भी तो इस से मक़्सूद डांट डपट और तम्बीह होती थी।

(इस मक़ाम पर ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى ने हाथों के नाख़ुन काटने के मुतअ़ल्लिक़ एक नफ़ीस व पेचीदा बह़्स फ़रमाई है। अहले इल्म ह़ज़रात अस्ल किताब की त़रफ़ रुजूअ़ फ़रमाएं। ख़ुलासा येह है)

नाख़ुन काटने का मसनून त़रीक़ा :

ह़ुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से मन्क़ूल है कि सीधे हाथ की शहादत की उंगली से शुरूअ़ कर के तरतीब वार छुंगलिया समेत नाख़ुन तराशें मगर अंगूठा छोड़ दें। अब

---

1 ......فردوس الاخبارللدیلمی، باب القاف، الحدیث:۴۶۱۴، ج۲، ص ۱۵۴، بخطاب علی رضی اللہ عنہ۔

2 ......صحیح مسلم، کتاب الطھارۃ، باب خصال الفطرۃ، الحدیث:۲۵۷-۲۵۸، ص ۱۵۳۔

उलटे हाथ की छुंगलिया से शुरूअ़ कर के तरतीब वार अंगूठे समेत नाखुन तराश लें। अब आख़िर में सीधे हाथ का अंगूठा जो बाक़ी था उस का नाखुन भी काट लें। इस त़रह़ सीधे हाथ ही से शुरूअ़ हुवा और सीधे हाथ ही पर ख़त्म हुवा (ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡوَالِی फ़रमाते हैं :) मैंने किताबों में नाखुन काटने की तरतीब के मुतअ़ल्लिक़ कोई रिवायत नहीं देखी अलबत्ता, मैं ने मशाइख़ से सुना है कि हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم दाएं हाथ की शहादत की उंगली से (नाखुन काटने) शुरूअ़ फ़रमाते और दाएं हाथ के अंगूठे पर ख़त्म फ़रमाते और बाएं हाथ की छुंगलिया से शुरूअ़ कर के अंगूठे पर ख़त्म फ़रमाते।

पाउं के नाखुन तराशने का अह़सन त़रीक़ा :

जहां तक पाउं की उंगलियों का तअ़ल्लुक़ है कि अगर इन के मुतअ़ल्लिक़ कोई रिवायत न हो तो इस में मेरे नज़्दीक बेहतर येह है कि दाएं पाउं की छोटी उंगली से शुरूअ़ करे और बाएं पाउं की छोटी उंगली पर ख़त्म करे जैसे इन का ख़िलाल किया जाता है।

सुर्मा लगाने का मसनून त़रीक़ा :

अफ़्आ़ल की तरतीब के सिलसिले में आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के सुर्मा लगाने को ही देख लीजिये कि नबियों के सुल्त़ान, रह़मते आ़लमिय्यान صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم दाईं आंख में तीन और बाईं आंख में दो सालइयां लगाते थे और दाईं आंख की शराफ़त की वजह से इस से आग़ाज़ करते।[1]

दोनों आंखों में सुर्मा डालते हुए फ़र्क़ इस लिये रखते थे ताकि मजमूआ़ त़ाक़ हो जाए कि त़ाक़ को जुफ़्त पर फ़ज़ीलत ह़ासिल है क्यूंकि "اللّٰه سُبۡحَانَهٗ وَتَعَالٰی" वित्र (त़ाक़) है और त़ाक़ को पसन्द फ़रमाता है।"[2] लिहाज़ा ऐसा नहीं होना चाहिये कि बन्दे का कोई फ़े'ल **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के औसाफ़ में से किसी वस्फ़ से मुनासबत न रखता हो। इसी लिये इस्तिन्जा करते हुए त़ाक़ पथ्थर इस्ति'माल करना मुस्तह़ब है और (सुर्मा लगाने में) तीन बार पर इक्तिफ़ा नहीं किया गया ह़ालांकि येह त़ाक़ अ़दद है क्यूंकि इस त़रह़ बाईं आंख में सिर्फ़ एक बार सुर्मा लगाना पड़ता और ग़ालिब येह है कि एक बार सुर्मा लगाना पल्कों की जड़ों तक भी नहीं पहुंचता और (बाईं के मुक़ाबले में) दाईं आंख में तीन सलाइयां लगाने की वजह येह है कि फ़ज़ीलत त़ाक़ अ़दद में है और दाईं आंख अफ़्ज़ल होने के सबब इस का ज़ियादा ह़क़ रखती है।

---

1 ......المعجم الکبیر، الحدیث: ۱۳۳۵۳، ج ۱۲، ص ۲۷۹، بتغیرٍقلیلٍ۔

2 ......صحیح مسلم، کتاب الذکر و الدعاء و التوبة......الخ، باب فی اسماء اللّٰه تعالیٰ......الخ، الحدیث: ۲۶۷۷، ص ۱۴۳۹۔

एक सुवाल और इस का जवाब :

अगर कहा जाए कि बाईं आंख में दो पर क्यूं इक्तिफ़ा किया गया ह़ालांकि येह जुफ़्त है ? तो इस का जवाब येह है कि ऐसा ज़रूरत के तह़्त किया गया है क्यूंकि हर आंख में त़ाक़ अ़दद में लगाने से इस का मजमूआ़ जुफ़्त हो जाता। क्यूंकि त़ाक़ और त़ाक़ मिल कर जुफ़्त हो जाते हैं और फ़े'ल के मजमूए़ में त़ाक़ का ख़याल रखना एक एक में त़ाक़ का ख़याल रखने से बेहतर है इस की एक और सूरत भी है वोह येह कि वुज़ू पर क़ियास करते हुए "दोनों आंखों में तीन तीन सलाइयां लगाए"(1) और येही ज़ियादा बेहतर है।

अल ग़रज़ अगर मैं उन तमाम बातों की बारीकियों की तलाश में लग जाउं जिन का हु़ज़ूर صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपने अफ़्आ़ल में ख़याल रखा है तो बात त़वील हो जाएगी। लिहाज़ा जो कुछ तुम ने सुना इसी पर उसे भी क़ियास कर लो जो नहीं सुना।

जान लीजिये कि कोई आ़लिम उस वक़्त तक हु़ज़ूर नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का वारिष नहीं बन सकता जब तक कि शरीअ़त के तमाम मआ़नी पर आगाह न हो जाए यहां तक कि उस के और हु़ज़ूर صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के दरमियान सिर्फ़ एक दर्जा फ़र्क़ रह जाए और वोह दर्जए नबुव्वत है और येही दर्जा वारिष और मूरिष के दरमियान फ़र्क़ करने वाला है क्यूंकि मूरिष वोह होता है जिसे माल ह़ासिल होता है और वोह इस के हु़सूल में मश्ग़ूल होता है और वोह इस पर क़ादिर होता है जब कि वारिष वोह होता है जिसे माल ह़ासिल नहीं होता और न ही वोह इस पर क़ादिर होता है लेकिन जब वोह माल मूरिष को ह़ासिल होता है तो इस के बा'द वारिष की त़रफ़ मुन्तक़िल होता है और येह उस से ले लेता है।

येह ऐसी बातें हैं कि गहराई और पोशीदगी के ए'तिबार से बा वुजूद आसान होने के इब्तिदाअन इन का इदराक सिर्फ़ अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को ही होता है फिर उन की त़रफ़ से आगाही के बा'द इस्तिम्बात़ के ज़रीए़ सिर्फ़ उ़-लमा ही जान सकते हैं क्यूंकि वोह अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के वारिष हैं।

(6-7)....**नाफ़ और कुलफ़ा का बढ़ा हुवा ह़िस्सा :** नाफ़ (का बढ़ा हुवा ह़िस्सा) तो विलादत के वक़्त काट दिया जाता है और ख़तना के ज़रीए़ त़हारत ह़ासिल करने में यहूदियों का त़रीक़ा

---

1 ......سنن ابن ماجه، كتاب الطب، باب من اكتحل وترا، الحديث:۳۴۹۹، ج۴، ص۱۱۶۔

येह है कि वोह विलादत के सातवें दिन ख़तना करते हैं लेकिन उन की मुख़ालफ़त करते हुए अगले दांत निकलने तक ताख़ीर करना पसन्दीदा और ख़तरों से दूर है।[1] मरवी है कि ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत صَلَّى اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "ख़तना करना मर्दों के लिये सुन्नत और औरतों के लिये बाइषे इज़्ज़त है।"[2] [3]

औरतों के ख़तना में मुबालग़ा नहीं करना चाहिये कि हज़रते सय्यिदतुना उम्मे अतिय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا बच्चों के ख़तना किया करती थीं, हुज़ूर صَلَّى اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन से इरशाद फ़रमाया : "ऐ उम्मे अतिय्या ! ज़रा सी बू सुंघा दो और ज़ियादा न काटो क्यूंकि इस से चेहरे की ताज़गी ज़ियादा होगी और ख़ावन्द लज़्ज़त ज़ियादा पाएगा।"[4] या'नी चेहरे की रौनक़ और ख़ून ज़ियादा होगा और जिमाअ़ में शोहर ज़ियादा लुत्फ़ अन्दोज़ होगा।

पस ग़ौर कीजिये कि हुज़ूर صَلَّى اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने किस तरह किनायतन प्यारे अन्दाज़ में बयान फ़रमाया और नूरे नबुव्वत की चमक को देखें कि इस ने किस तरह उख़रवी मक़ासिद को दुन्यवी मक़ासिद तक पहुंचाया यहां तक कि आप पर येह बातें मुन्कशिफ़ हो गईं हालांकि आप ने (मख़्लूक़ में) किसी से पढ़ा नहीं था। अगर येह बातें वाज़ेह न होतीं और आप से गफ़्लत के बाइष सादिर होतीं तो इस के नुक़्सान का ख़ौफ़ होता। पाक है वोह ज़ात जिस ने आप को तमाम जहानों के लिये रहमत बना कर भेजा ताकि आप की बिअ़षत की बरकत से दीनो दुन्या की भलाइयां जम्अ़ हो जाएं।

1....दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मतबूआ 1197 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब बहारे शरीअ़त जिल्द. 3 सफ़हा 589 पर है : ख़तना की मुद्दत सात साल से बारह साल की उ़म्र तक है और बा'ज़ उ़-लमा ने येह फ़रमाया कि विलादत से सातवें दिन के बा'द ख़तना करना जाइज़ है।

2.....बहारे शरीअ़त जिल्द. 3 सफ़हा 589 पर मज़ीद फ़रमाते हैं : "ख़तना सुन्नत है और येह शिआ़रे इस्लाम है कि मुस्लिम व ग़ैर मुस्लिम में इस से इम्तियाज़ होता है इसी लिये उ़र्फ़े आ़म में इस को **मुसलमानी** भी कहते हैं।"

और लड़कियों के ख़तने के मुतअ़ल्लिक़ **आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं। "लड़कियों के ख़तना करने का ताकीदी हुक्म नहीं और यहां पाक व हिन्द में रवाज न होने के सबब अ़वाम इस पर हंसेंगे और येह उन के गुनाहे अ़ज़ीम में पड़ने का सबब होगा और हिफ़्ज़े दीने मुसलमानान वाजिब है। लिहाज़ा यहां (पाक व हिन्द में) इस का हुक्म नहीं।" (फ़तावा रज़विय्या, जि. 22 स. 680)

3......المسند للامام احمد بن حنبل، مسند البصریین، حدیث أسامة الھذلی، الحدیث:۲۰۷۴۵، ج۷، ص ۳۸۱۔

4......السنن الکبری للبیھقی، کتاب الاشربة، باب السلطان یکرہ علی الاختتان، الحدیث:۱۷۵۵۹، ج۸، ص ۵۶۲۔

(8).....**दाढ़ी के बढ़े हुए बाल काटना :** इसे हम ने आख़िर में इस लिये ज़िक्र किया ताकि इस में जो बातें सुन्नत या मुस्तह़ब हैं उन्हें भी इस के साथ ही ज़िक्र कर दिया जाए क्यूंकि यहां इन बातों का ज़िक्र ज़ियादा मुनासिब है।

(एक मुठ्ठी से) ज़ाइद दाढ़ी (काटने) में इख़्तिलाफ़ है। मन्क़ूल है कि अगर आदमी अपनी दाढ़ी को मुठ्ठी में पकड़ कर ज़ाइद हिस्से को काट दे तो इस में कोई ह़रज नहीं। कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर और ताबेईन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُم के एक गुरोह ने ऐसा किया और ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शअ़बी और ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम इब्ने सीरीन رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہِمَا ने इसे अच्छा जाना जब कि ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी और ह़ज़रते सय्यिदुना क़तादा رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہِمَا ने इसे मकरूह क़रार दिया और फ़रमाया : "इसे बढ़ा हुवा छोड़ना ज़ियादा पसन्दीदा है क्यूंकि सरकारे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "اَعۡفُوا اللِّحۡیَۃَ" या'नी दाढ़ीयां बढ़ाओ।"(1)

अगर दाढ़ी काटने और कनारों से गोल करने की नौबत न आए तो (एक मुठ्ठी से) ज़ाइद दाढ़ी काटने में मुज़ाइक़ा नहीं क्यूंकि ह़द से बढ़ी हुई दाढ़ी कभी सूरत को बिगाड़ देती और ग़ीबत करने वालों की ज़बानें खोल देती है। लिहाज़ा इस निय्यत की बिना पर इस से बचने में ह़रज नहीं। ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम नख़ई عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡقَوِی फ़रमाते हैं कि "मुझे त़वील दाढ़ी वाले अ़क़्लमन्द शख़्स पर तअ़ज्जुब होता है कि वोह अपनी बढ़ी हुई दाढ़ी क्यूं नहीं काटता और इसे दो दाढ़ियों के दरमियान क्यूं नहीं करता इस लिये कि हर चीज़ में ए'तिदाल अच्छा लगता है। इसी लिये कहा गया है कि जब दाढ़ी (ज़ियादा) बढ़ जाती है तो अ़क़्ल रुख़्सत हो जाती है।"(2)

दाढ़ी के मकरूहात :

दस बातें दाढ़ी में मकरूह (नापसन्दीदा) हैं और बा'ज़ बा'ज़ से ज़ियादा नापसन्दीदा हैं : (1).....सियाह ख़िज़ाब लगाना (2)....गन्धक से सफ़ेद करना (3)....(मुत़लक़न दाढ़ी के बाल) उखेड़ना (4).....सफ़ेद बाल उखेड़ना (5)....दाढ़ी में कमी या ज़ियादती करना (6)....रियाकारी की निय्यत से कंघी करना (7)....ज़ोह्द दिखाने की निय्यत से कंघी के बिग़ैर बाल बिखरे छोड़ देना (8)....जवानी पर फ़ख़्र करते हुए इस की सियाही पर खुद पसन्दी में मुब्तला होना (9)....बड़ी उ़म्र पर तकब्बुर करते हुए इस की सफ़ेदी पर ख़ुश होना और (10)....सुर्ख़ और पीला ख़िज़ाब लगाना जब कि सालेह़ीन के साथ मुशाबहत की निय्यत न हो।

---

1 ......صحیح مسلم، کتاب الطھارۃ، باب خصال الفطرۃ، الحدیث: ۲۵۹، ص ۱۵۴۔

2 ......قوت القلوب، الفصل السادس والثلاثون فی فضائل اھل السنۃ......الخ، ج ۲، ص ۲۴۴۔

सियाह ख़िज़ाब से मुमानअ़त की रिवायात :

﴾1﴿.....**सियाह ख़िज़ाब लगाना :** मक्की मदनी सुल्त़ान, रह़मते आ़लमिय्यान صَلَّى اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इस से मन्अ़ फ़रमाया और इरशाद फ़रमाया : "तुम में से बेहतरीन नौजवान वोह हैं जो तुम्हारे बुढ्ढ़ों से मुशाबहत इख़्तियार करते हैं और तुम में से बुरे बुढ्ढ़े वोह हैं जो तुम्हारे नौजवानों से मुशाबहत इख़्तियार करते हैं ।"(1)

बुढ्ढ़ों से मुशाबहत इख़्तियार करने का मत़लब वक़ार में मुशाबहत इख़्तियार करना है न कि बालों को सफ़ेद करने में । नीज़ सियाह ख़िज़ाब से मन्अ़ फ़रमाते हुए इरशाद फ़रमाया : "هُوَ خِضَابُ اَهْلِ النَّار" या'नी येह जहन्नमियों का ख़िज़ाब है ।"(2)

एक रिवायत में येह अल्फ़ाज़ हैं : اَلْخِضَابُ بِالسَّوَادِ خِضَابُ الْكُفَّار या'नी सियाह ख़िज़ाब कुफ़्फ़ार का ख़िज़ाब है ।(3)

हि़कायत : धोके बाज़

अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہ के ज़माने में एक शख़्स ने निकाह़ किया वोह सियाह ख़िज़ाब लगाता था । जब ख़िज़ाब उतरा तो बुढ़ापा ज़ाहिर हो गया । औ़रत के घर वालों ने मुआ़मला अ़दालते फ़ारूक़ी में पेश किया तो आप رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہ ने उस का निकाह़ फ़स्ख़ कर दिया और उसे ख़ूब मारा और फ़रमाया : "तू ने इन लोगों को जवानी के साथ धोका दिया और बुढ़ापे को छुपाया ।" मन्क़ूल है कि सियाह ख़िज़ाब सब से पहले फ़िरऔ़न मलऊ़न ने लगाया ।(4)

ख़ुश्बूए जन्नत से मह़रूम लोग :

ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है कि हु़ज़ूर नबिय्ये पाक, साहि़बे लौलाक صَلَّى اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "आख़िरी ज़माने में कुछ लोग होंगे जो कबूतरों के पोटों की त़रह़ सियाह ख़िज़ाब लगाएंगे वोह जन्नत की ख़ुश्बू भी न सूंघ सकेंगे ।"(5)

---

1 ......المعجم الکبیر، الحدیث:۲۰۲، ج۲۲، ص ۲۲۔

2 ......قوت القلوب، الفصل السادس والثلاثون فی فضائل اهل السنة......الخ، ج۲، ص ۲۴۲۔

3 ......المستدرک، کتاب معرفة الصحابة، الصفرة خضاب المؤمن، الخ، الحدیث:۶۲۹۶، ج۴، ص ۶۷۶۔

4 ......قوت القلوب، الفصل السادس والثلاثون فی فضائل اهل السنة......الخ، ج۲، ص ۲۴۲۔

5 ......سنن النسائی، کتاب الزینة، المنهی عن الخضاب بالسواد، الحدیث:۵۰۸۵، ص ۸۱۲۔

सुर्ख़ या ज़र्द रंग का ख़िज़ाब लगाने का हुक्म :

﴾2﴿.....**सुर्ख़ और ज़र्द रंग का ख़िज़ाब लगाना :** येह जिहाद में कुफ़्फ़ार पर जवानी ज़ाहिर करने के लिये जाइज़ है। अगर इस निय्यत से न हो बल्कि दीनदार लोगों से मुशाबहत के लिये हो तो मज़्मूम (बुरा) है। चुनान्चे, मरवी है कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "ज़र्द ख़िज़ाब मुसलमानों का ख़िज़ाब है और सुर्ख़ ख़िज़ाब मोअमिनीन का ख़िज़ाब है।"[1]

और सह़ाबए किराम और ताबेइने उ़ज़्ज़ाम رِضْوَانُ اللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْھِمْ اَجْمَعِیْن सुर्ख़ी के लिये मेहंदी और ज़र्दी के लिये ख़लूक़[2] और कतम[3] लगाते थे नीज़ बा'ज़ उ़-लमाए किराम رَحِمَھُمُ اللّٰہُ السَّلَام ने जिहाद के लिये सियाह ख़िज़ाब लगाया है और जब निय्यत सह़ीह़ हो और ख़्वाहिशात का अ़मल दख़्ल न हो तो इस के लगाने में कोई ह़रज नहीं।

फ़ज़ीलत का बाइ़ष इ़ल्म है न कि बड़ी उ़म्र :

﴾3﴿.....**दाढ़ी को गन्धक से सफ़ेद करना :** ताकि जल्दी जल्दी बड़ी उ़म्र ज़ाहिर हो, लोग इ़ज़्ज़त करें, गवाही क़बूल की जाए, मशाइख़ से रिवायत करने पर तस्दीक़ हो जाए, जवानों पर फ़ौक़िय्यत ह़ासिल हो, कषरते इ़ल्म का इज़्हार हो और येह ख़याल हो कि उ़म्र का ज़ियादा होना इस के लिये बाइ़षे फ़ज़ीलत होगा, लेकिन अफ़्सोस ! उ़म्र की ज़ियादती से जाहिल की जहालत में ही इज़ाफ़ा होता है क्यूंकि इ़ल्म तो अ़क़्ल का नतीजा है और येह फ़ित़रती चीज़ है इस में बुढ़ापा अषर अन्दाज़ नहीं होता और जिस की फ़ित़रत में ही ह़माक़त हो तो मुद्दत की त़वालत इस की ह़माक़त को पुख़्ता करती है जब कि मशाइख़े किराम इ़ल्म की बदौलत जवानों को तरजीह़ देते थे (न की उ़म्र की ज़ियादती के सबब)। चुनान्चे, अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہُ ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْھُمَا को नौजवान होने के बावुजूद बड़ी उ़म्र वाले सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْھِمْ اَجْمَعِیْن से मुक़द्दम करते थे और उन्हीं से पूछते थे।

---

❶.....المستدرک، کتاب معرفة الصحابة، الصفرة خضاب المؤمن، الخ، الحدیث:۶۲۹۶، ج۴، ص۲۶۷۔
قوت القلوب، الفصل السادس و الثلاثون فی فضائل اھل السنة......الخ، ج۲، ص۲۴۲۔

❷.....**ख़लूक़ :** एक ख़ुश्बू जो अ़म्बर, मुश्क और काफ़ूर की आमेज़िश (मिलावट) से बनती है। **अज़ : इ़ल्मिय्या**

❸.....**कतम :** एक क़िस्म की घास जिस को मेहंदी में मिला कर वस्मा और इस की जड़ पका कर सियाह रोशनाई बनाते हैं। **अज़ : इ़ल्मिय्या**

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عَنْهُمَا फ़रमाते हैं कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अपने बन्दे को जवानी में ही इ़ल्म अ़त़ा फ़रमाता है और तमाम भलाई जवानी में है।(1) फिर येह तीन आयाते मुबारका तिलावत फ़रमाई :

﴾1﴿

قَالُوْا سَمِعْنَا فَتًى یَّذْكُرُهُمْ یُقَالُ لَهٗۤ اِبْرٰهِیْمُ ؕ﴿۶۰﴾ (پ۱۷، الانبیاء:۶۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *उन में के कुछ बोले हम ने एक जवान को उन्हें बुरा कहते सुना जिसे इब्राहीम कहते हैं।*

﴾2﴿

اِنَّهُمْ فِتْیَةٌ اٰمَنُوْا بِرَبِّهِمْ وَ زِدْنٰهُمْ هُدًى ۗۖ﴿۱۳﴾ (پ۱۵، الکھف:۱۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *वोह कुछ जवान थे कि अपने रब्ब पर ईमान लाए और हम ने उन को हिदायत बढ़ाई।*

﴾3﴿

وَ اٰتَیْنٰهُ الْحُكْمَ صَبِیًّا ۙ﴿۱۲﴾ (پ۱۶، مریم:۱۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और हम ने उसे बचपन ही में नबुव्वत दी।*

आक़ा صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के सफ़ेद बाल :

हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं कि "जब रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने विसाल फ़रमाया तो आप के सरे अन्वर और दाढ़ी मुबारक में बीस (20) सफ़ेद बाल थे।" हज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْهُ से पूछा गया : "ऐ अबू ह़म्ज़ा ! प्यारे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की उ़म्र मुबारक तो काफ़ी हो चुकी थी।" फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने अपने मह़बूब صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को बुढ़ापे का ऐ़ब न लगाया।" अ़र्ज़ की गई : "क्या येह ऐ़ब है ?" फ़रमाया : "तुम में से हर एक इसे नापसन्द करता है।"(2)

कम उ़म्री में ओ़हदए क़ज़ा :

मन्क़ूल है कि ह़ज़रते सय्यिदुना यह़्या अकषम عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰہِ الْاَكْرَم को 21 साल की उ़म्र में ओ़हदए क़ज़ा सोंपा गया तो छोटी उ़म्र की वजह से एक शख़्स ने रुस्वा करने का इरादा किया।

1 ......قوت القلوب، الفصل السادس و الثلاثون فی فضائل اهل السنة......الخ، ج ۲، ص ۲۴۴۔

2 ......صحیح البخاری، کتاب المناقب، باب صفة النبی، الحدیث: ۳۵۴۸، ج ۲، ص ۴۸۷۔
قوت القلوب، الفصل السادس و الثلاثون فی فضائل اهل السنة......الخ، ج ۲، ص ۲۴۴۔

चुनान्चे, एक बार मजलिस में उस ने पूछा : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ क़ाज़ी साहि़ब की मदद फ़रमाए, इन की उ़म्र कितनी है ?" तो आप رَحْمَةُاللهِ تعالٰی عَلَیْه ने फ़रमाया : "जब मुस्त़फ़ा जाने रह़मत صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इ़ताब बिन उसैद رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عَنْہُ को मक्कए मुअ़ज़्ज़मा का वाली बनाया तो जितनी उ़म्र उन की थी (उतनी मेरी है) ।" यूं आप رَحْمَةُاللهِ تعالٰی عَلَیْه ने उसे ला जवाब कर दिया ।"(1)

बकरे की भी दाढ़ी होती है :

ह़ज़रते सय्यिदुना मालिक बिन अनस رَحْمَةُاللهِ تعالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : "मैं ने बा'ज़ किताबों में पढ़ा कि तुझे दाढ़ी धोका न दे इस लिये कि बकरे की भी दाढ़ी होती है ।"(2)

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अ़म्र बिन उ़ला رَحْمَةُاللهِ تعالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : "जब तुम किसी ऐसे शख़्स को देखो जिस का क़द लम्बा, सर छोटा और दाढ़ी चौड़ी हो तो उस पर अह़मक़ होने का हुक्म लगाओ अगर्चे वोह उमय्या बिन अ़ब्दे शम्स ही क्यूं न हो ।"(3)

बुड्ढा त़ालिबे इ़ल्म :

ह़ज़रते सय्यिदुना अय्यूब सख़्तियानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّورانی फ़रमाते हैं : "मैं ने **80** साला बुड्ढे शख़्स को एक नौजवान के पीछे चलते देखा वोह उस नौजवान से इ़ल्म ह़ासिल करता था ।"(4)

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली बिन ह़सन رَحْمَةُاللهِ تعالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : "जो इ़ल्म में तुझ पर सब्क़त ले गया वोह तेरा इमाम है, अगर्चे उ़म्र में तुझ से छोटा हो ।"(5)

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अ़म्र बिन उ़ला رَحْمَةُاللهِ تعالٰی عَلَیْه से पूछा गया : "क्या बुड्ढे शख़्स को ज़ैब देता है कि वोह बच्चे से इ़ल्म ह़ासिल करे ?" फ़रमाया : "अगर जहालत बुरी चीज़ है तो इ़ल्म ह़ासिल करना अच्छी चीज़ है ।"(6)

ह़ुसूले इ़ल्म की जुस्तजू :

ह़ज़रते सय्यिदुना यह़्या बिन मुईन رَحْمَةُاللهِ تعالٰی عَلَیْه ने ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अह़मद बिन ह़म्बल عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَوَّل को ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِی की सुवारी के पीछे चलते हुए देख कर पूछा : "ऐ अबू अ़ब्दुल्लाह ! आप ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान सौरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی के बुलन्द मर्तबा होने के बा वुजूद उन की ह़दीष को छोड़ कर इस नौजवान के पीछे चल रहे और

---

1 ......قوت القلوب، الفصل السادس و الثلاثون فی فضائل اھل السنۃ......الخ، ج ۲، ص ۲۴۴۔

2 ......المرجع السابق۔ 3 ......المرجع السابق۔ 4 ......المرجع السابق۔

5 ......المرجع السابق۔ 6 ......المرجع السابق۔

इन से ह़दीष सुन रहे हैं ?'' फ़रमाया : ''अगर तुम इन्हें पहचानते तो इन की दूसरी त़रफ़ तुम चल रहे होते, अगर मुझे ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान षौरी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی के बुलन्द मर्तबे की वजह से इन का इल्म न मिला तो नीचे आने से ह़ासिल हो जाएगा और अगर मैं इस नौजवान की अ़क़्ल से इस्तिफ़ादा न कर पाऊं तो बुलन्दी व पस्ती कहीं से भी इल्म ह़ासिल न कर सकूंगा।''(1)

मोमिन का नूर :

﴾4﴿.....**नफ़रत के बाइ़ष सफ़ेद बालों को उखेड़ना :** हुज़ूर नबिय्ये पाक, साह़िबे लौलाक صَلَّی اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने सफ़ेद बालों को उखेड़ने से मन्अ़ फ़रमाया और इरशाद फ़रमाया : ''هُوَ نُوْرُ الْمُؤْمِنِ या'नी येह मोमिन का नूर है।''(2)

सफ़ेद बाल उखेड़ना सियाह ख़िज़ाब के मा'ना में है और इस के मकरूह होने की इ़ल्लत गुज़र चुकी है। नीज़ सफ़ेद बाल **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से नूर है और इन से मुंह फैरना नूरे इलाही से मुंह फैरना है।

﴾5﴿......**बे मक़्सद और ख़्वाहिश के तह़्त दाढ़ी या इस के कुछ बाल उखेड़ना :** येह मकरूह और सूरत को बिगाड़ना है और बुच्ची (या'नी निचले होंट के दरमियानी बालों) के दोनों अत़राफ़ के बाल उखेड़ना बिदअ़त है।

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه की ख़िदमत में एक शख़्स ह़ाज़िर हुवा वोह दाढ़ी के अत़राफ़ के बाल उखेड़ता था आप ने उस की गवाही रद्द कर दी।

अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ और मदीने के क़ाज़ी ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अबी लैला رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने दाढ़ी उखेड़ने वाले की गवाही क़बूल न की।

फ़िरिश्तों की क़सम का अन्दाज़ :

दाढ़ी उगने की इब्तिदा में अम्रदों से मुशाबहत इख़्तियार करते हुए दाढ़ी के बाल उखेड़ना कबीरा गुनाहों में से है क्यूंकि दाढ़ी मर्दों की ज़ीनत है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के कुछ फ़िरिश्ते इन अल्फ़ाज़

---

1 ......قوت القلوب، الفصل السادس والثلاثون فی فضائل اهل السنة......الخ، ج ۲، ص ۲۴۴ـ۲۴۵ـ

2 ......سنن ابی داود، کتاب الترجل، باب فی نتف الشیب، الحدیث: ۴۲۰۲، ج ۴، ص ۱۱۵ـ

में क़सम खाते हैं : "उस ज़ात की क़सम जिस ने मर्दों को दाढ़ियों से ज़ीनत बख़्शी।"[1] नीज़ येह तक्मीले तख़्लीक़ का बाइ़ष है। इसी से मर्द व औ़रत में तमीज़ होती है।

ग़रीबुत्तावील में मन्क़ूल है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के इस फ़रमान : يَزِيْدُ فِى الْخَلْقِ مَا يَشَآءُ ؕ (پ۲۲،فاطر:۱) "**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** बढ़ाता है आफ़रीनिश (पैदाइश) में जो चाहे।" से मुराद **दाढ़ी** है।

ह़ज़रते सय्यिदुना अह़नफ़ बिन क़ैस رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के शागिर्द फ़रमाया करते थे हम चाहते हैं कि "अह़नफ़ के लिये दाढ़ी ख़रीद लें अगर्चे **20** हज़ार की मिले।"[2]

ह़ज़रते सय्यिदुना क़ाज़ी शरीह़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : "मैं चाहता हूं कि मेरी दाढ़ी हो, अगर्चे 10 हज़ार की हो।"[3] तुम कैसे दाढ़ी को ना पसन्द करते हो ह़ालांकि इस में मर्द की ता'ज़ीम है, इस की त़रफ़ इ़ल्म और वक़ार की नज़र से देखा जाता है, मजालिस में बुलन्द मक़ाम दिया जाता है, लोग इस की त़रफ़ मुतवज्जेह होते हैं, इसे जमाअ़त पर मुक़द्दम करते हैं, इस की इ़ज़्ज़त मह़फ़ूज़ रहती है क्यूंकि गाली देने वाला शख़्स जिसे गाली दे रहा है अगर उस की दाढ़ी हो तो पहले उस का ज़िक्र करता है।

बा-रीश जन्नती :

मन्क़ूल है कि ह़ज़रते सय्यिदुना हारून عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के इ़लावा तमाम जन्नती बिग़ैर दाढ़ी के होंगे और आप عَلَیْہِ السَّلَام की ख़ुसूसिय्यत व फ़ज़ीलत के बाइ़ष आप की दाढ़ी नाफ़ तक होगी।[4]

﴾6﴿.....**इस ख़याल से दाढ़ी कतर के तेह ब तेह करना ताकि औ़रतों की नज़रों में ख़ूब सूरत हो ख़्वाह तकल्लुफ़ से ही क्यूं न हो :** ह़ज़रते सय्यिदुना का'बुल अह़बार رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि "आख़िर ज़माने में कुछ लोग होंगे जो अपनी दाढ़ियों को कबूतर की दुम की त़रह़ काटेंगे (या'नी गोल करेंगे) और जूतों से दरांतियों जैसी आवाज़े निकालेंगे उन का (आख़िरत में) कोई ह़िस्सा नहीं।"[5]

﴾7﴿.....**दाढ़ी बढ़ाना :** या'नी कनपटियों के बालों को गालों के बाल शुमार करना, ह़ालांकि वोह सर के बाल हैं यहां तक कि दाढ़ी बड़ी हो कर निस्फ़ रुख़सार तक पहुंच जाती है और येह नेक लोगों की हैअत के ख़िलाफ़ है।

---

1 ......قوت القلوب، الفصل السادس والثلاثون فی فضائل اهل السنة......الخ، ج۲، ص۲۴۰۔

2 ......المرجع السابق، ص۲۴۲۔
3 ......المرجع السابق، ص۲۴۲۔

4 ......المرجع السابق، ص۲۴۲، بتغیرٍقلیلٍ۔
5 ......المرجع السابق، ص۲۴۲۔

दो शिर्के ख़फ़ी :

﴾8﴿.....**लोगों को दिखाने के लिये कंघी करना :** ह़ज़रते सय्यिदुना बिशर बिन ह़ारिष ह़ाफ़ी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْکَافِی फ़रमाते हैं : "दाढ़ी के मुआ़मले में दो शिर्के ख़फ़ी (रियाकारी) हैं :
(1)....रियाकारी की निय्यत से कंघी करना और
(2)....ज़ोहदो तक़्वा ज़ाहिर करने की निय्यत से बिखरी हुई छोड़ देना।"[1]

﴾9-10﴿.....**दाढ़ी की सफ़ेदी और सियाही को ख़ुद पसन्दी की निगाह से देखना :** और येह जिस्म के तमाम अज्ज़ा में सब से ज़ियादा नापसन्दीदा है बल्कि तमाम अख़्लाक़ व अफ़्आ़ल में ख़ुद पसन्दी बुरी सिफ़त है इस का बयान आगे आएगा।

अह़ादीष से माख़ूज़ बारह सुन्नतें :

ज़ीनत व पाकीज़गी की अक़्साम के मुतअ़ल्लिक़ हमारा इसी क़दर तफ़्सील ज़िक्र करने का इरादा था। तीन अह़ादीषे मुबारका से जिस्म में बारह बातों का सुन्नत होना मा'लूम हुवा। **पांच सुन्नतों का तअ़ल्लुक़ सर से है :** (1) सर के बालों के दरमियान मांग निकालना[2] (2) कुल्ली करना (3) नाक में पानी चढ़ना[3] (4) मूंछें काटना और (5) मिस्वाक करना। **तीन का तअ़ल्लुक़ हाथ और पाउं से है :** (1) नाख़ुन काटना (2) उंगलियों की सलूटें धोना और (3) (उंगलियों के) अन्दरूनी जोड़ों की सफ़ाई करना।[4] **चार का तअ़ल्लुक़ जिस्म से है :** (1) बग़लों के बाल उखेड़ना (2) ज़ेरे नाफ़ बाल साफ़ करना (3) ख़तना करना और (4) पानी से इस्तिन्जा करना।

इन तमाम के बारे में अह़ादीषे मुक़द्दसा मरवी हैं और इस बाब में ज़ाहिरी त़हारत का बयान मक़्सूद है न कि बात़िनी त़हारत का। लिहाज़ा हम इसी पर इक्तिफ़ा करते हैं और येह बात यक़ीनी है कि बात़िनी नजासतें और गन्दगियां जिन से पाक होना ज़रूरी है, वोह शुमार से बाहर हैं इन की तफ़्सील मोहलिकात के बाब में आएगी वहीं इन के ज़ाइल करने और दिल को इन से पाक करने के त़रीक़े बयान किये जाएंगे। اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ

---

1 ......قوت القلوب، الفصل السادس والثلاثون فی فضائل اهل السنة......الخ، ج۲،ص ۲۴۲، عن سری السقطی۔

2 ......صحیح البخاری، کتاب اللباس، باب الفرق، الحدیث:۵۹۱۷، ج۴، ص ۷۹۔

3 ......سنن ابی داود، کتاب الطهارة، باب السواک من الفطرة، الحدیث:۵۴، ج۱، ص ۵۳۔

4 ......قوت القلوب، الفصل السادس والثلاثون فی فضائل اهل السنة والطریقة ......الخ، ج۲،ص ۲۳۹۔

नमाज़ का बयान

सब ख़ूबियां **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये जिस ने अपने लुत्फ़ो करम से बन्दों को ढांपा, दीन और अह्कामे दीन के अन्वार से उन के दिलों को आबाद फ़रमाया, वोह ज़ात कि अर्शे इलाही से आस्माने दुन्या की त़रफ़ दर्जाते रह्मत में से उस की कोई न कोई मेहरबानी उतरती रहती है। वोह अपने जलाल व किब्रियाई में यक्ता होने के साथ साथ बादशाहों से यूं भी मुमताज़ है कि वोह मख़्लूक़ को सुवाल व दुआ की तरग़ीब देते हुए इरशाद फ़रमाता है : है कोई दुआ मांगने वाला कि मैं उस की दुआ क़बूल करूं ? है कोई मग़फ़िरत का त़ालिब कि उसे बख़्श दूं ? बादशाहों का उस से क्या मुक़ाबला ? उस ने तो दरवाज़ा खोल कर पर्दा उठा दिया और बन्दों को नमाज़ में मुनाजात करने की इजाज़त दे दी, न सिर्फ़ रुख़्सत पर इक्तिफ़ा किया बल्कि दा'वत व तरग़ीब के ज़रीए भी मेहरबानी फ़रमाई जब कि दीगर दुन्यवी कमज़ोर बादशाह तो किसी को तन्हाई में वक़्त भी नहीं देते जब तक इन्हें हदिय्या या रिश्वत न दी जाए। पाक है वोह ज़ात, उस की शान कितनी अ़ज़ीम है। उस की बादशाहत कितनी क़वी है। उस का लुत्फ़ो करम कितना कामिल है। उस का एह्सान कितना आ़म है। दुरूद और ख़ूब सलाम हों उस के मुन्तख़ब नबी और पसन्दीदा दोस्त ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद मुस्त़फ़ा अह़मदे मुजतबा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم पर और आप के आल व अस्ह़ाब رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن पर जो हिदायत की कुन्जियां और तारीकियों के चराग़ हैं।

बेशक नमाज़ दीन का सुतून, यक़ीन का वसीला, इबादत की अस्ल और त़ाआ़त की चमक है। हम ने फ़न्ने फ़िक़्ह की कुतुब "بَسِيْطُ الْمَذْهَب، وَسِيْطُ الْمَذْهَب और وَجِيْزُ الْمَذْهَب" में नमाज़ के उसूली व फ़रोई मसाइल को तफ़्सील से बयान किया है। नीज़ बहुत से नादिर व कम वुक़ूअ़ पज़ीर होने वाले मसाइल इन में दर्ज किये हैं ताकि येह मुफ़्ती के लिये ख़ज़ाना बन जाए और ब वक़्ते ज़रूरत वोह इस की त़रफ़ रुजूअ़ करे और इस से मदद ह़ासिल करे। यहां इस बाब में हम सिर्फ़ उन आ'माले ज़ाहिरा और इसरारे बात़िना को बयान करेंगे जिन का जानना राहे आख़िरत के मुसाफ़िर पर ज़रूरी है। नीज़ ख़ुशूअ़ व ख़ुज़ूअ़, इख़्लास और निय्यत के वोह पोशीदा मआ़नी वाज़ेह करेंगे जिन्हें आ़म तौर पर फ़िक़्ह में बयान नहीं किया जाता इसे हम सात अबवाब पर तक़्सीम करते हैं : (1)...नमाज़ के फ़ज़ाइल (2)....नमाज़ के ज़ाहिरी आ'माल की तफ़्सील (3)....नमाज़ के बात़िनी आ'माल की तफ़्सील (4)....इमामत व पेशवाई का बयान (5)....नमाज़े जुमुआ़ और इस के आदाब (6)....मुतफ़र्रिक़ मसाइल जो आ़म तौर पर पाए जाते हैं और सालिक को इन से आगाही की ज़रूरत होती है (7)....नवाफ़िल वग़ैरा का बयान।

बाब नम्बर 1 : नमाज़, सुजूद, जमाअ़त और अज़ान वग़ैरा के फ़ज़ाइल (येह सात फ़स्लों पर मुश्तमिल है)

पहली फ़स्ल : अज़ान की फ़ज़ीलत

अज़ान की फ़ज़ीलत पर मुश्तमिल चार फ़रामीने मुस्त़फ़ा :

﴾1﴿.....तीन त़रह़ के लोग ऐसे हैं जो बरोज़े क़ियामत सियाह कस्तूरी के टीलों पर होंगे उन्हें ह़िसाब का ख़ौफ़ होगा न कोई घबराहट यहां तक कि लोगों का ह़िसाब हो जाए : (1)....जिस ने रिज़ाए इलाही के लिये कुरआने पाक की तिलावत की और लोगों की इमामत की जब कि वोह उस से खुश हों (2)....जिस ने रिज़ाए इलाही के लिये मस्जिद में अज़ान दी और लोगों को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ बुलाया (3)....जिसे दुन्या में रिज़्क़ के मुआ़मले में आज़माया गया मगर इस आज़माइश ने उसे उख़रवी आ'माल से ग़ाफ़िल न किया।(1)

﴾2﴿....जिन्न व इन्स और जो भी चीज़ मोअज़्ज़िन की निदा सुनती है वोह बरोज़े क़ियामत इस की गवाही देगी।(2)

﴾3﴿.....मोअज़्ज़िन के अज़ान से फ़ारिग़ होने तक रह़मान عَزَّوَجَلَّ का दस्ते कुदरत उस के सर पर होता है।(3)

नीज़ इस फ़रमाने बारी तआ़ला :

وَمَنْ اَحْسَنُ قَوْلًا مِّمَّنْ دَعَاۤ اِلَى اللّٰهِ وَعَمِلَ صَالِحًا (پ۲۴،حم السجدۃ:۳۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और उस से ज़ियादा किस की बात अच्छी जो अल्लाह की त़रफ़ बुलाए और नेकी करे।

की तफ़्सीर में एक क़ौल येह है कि "येह आयत मोअज़्ज़िनीन के बारे में नाज़िल हुई है।"

﴾4﴿....जब तुम अज़ान सुनो तो मोअज़्ज़िन की मिष्ल कहो।(4)

---

1 ......شعب الایمان للبیھقی، باب فی تعظیم القرآن، فصل فی ادمان تلاوتہ، الحدیث:۲۰۰۲، ج۲، ص۳۴۸،بتغیرٍ۔

2 ......صحیح البخاری، کتاب الاذان، باب رفع الصوت بالنداء، الحدیث:۶۰۹، ج۱، ص۲۲۲۔

3 ......المعجم الاوسط، من اسمہ احمد، الحدیث:۱۹۸۷، ج۱، ص۵۳۹۔
تاریخ بغداد، عصر بن حفص:۵۹۰۱، ج۱۱، ص۱۹۳۔

4 ......صحیح البخاری، کتاب الاذان، باب ما یقول اذا سمع المنادی، الحدیث:۶۱۱، ج۱، ص۲۲۳۔

“حَیَّ عَلَی الصَّلٰوۃ” और “حَیَّ عَلَی الْفَلَاح” के इलावा कलिमात में मोअज़्ज़िन की मिष्ल कहना मुस्तह़ब है जब कि इन दोनों के जवाब में ‘‘لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّۃَ اِلَّا بِاللّٰہ’’ या’नी गुनाहों से बचने की त़ाक़त और नेकी करने की तौफ़ीक़ अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ ही की त़रफ़ से है’’[1] कहना और ‘‘قَدْ قَامَتِ الصَّلٰوۃ’’ के जवाब में ‘‘وَاَقَامَهَااللّٰهُ وَاَدَامَهَا مَا دَامَتِ السَّمٰوٰتُ وَالْاَرْض’’ कहना[2] और तषवीब (या’नी अज़ाने फ़ज्र में मोअज़्ज़िन के क़ौल اَلصَّلٰوۃُ خَیْرٌ مِّنَ النَّوْم के जवाब) में ‘‘صَدَقْتَ وَبَرَرْتَ وَنَصَحْتَ’’ कहना मुस्तह़ब है।[3]

अज़ान के बा’द की दुआ :

अज़ान से फ़ारिग़ हो कर येह दुआ पढ़े :

اَللّٰھُمَّ رَبَّ ھٰذِہِ الدَّعْوَۃِ التَّآمَّۃِ وَالصَّلٰوۃِ الْقَآئِمَۃِ اٰتِ مُحَمَّدَانِ الْوَسِیْلَۃَ وَالْفَضِیْلَۃَ وَالدَّرَجَۃَ الرَّفِیْعَۃَ وَابْعَثْہُ الْمَقَامَ الْمَحْمُوْدَ الَّذِیْ وَعَدْتَّہٗ اِنَّکَ لَا تُخْلِفُ الْمِیْعَادَ

या’नी ऐ अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ इस दा’वते ताम्मा और सलाते क़ाइमा के मालिक तू मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को वसीला और फ़ज़ीलत और बहुत बुलन्द दर्जा अ़त़ा फ़रमा और इन को मक़ामे मह़मूद में खड़ा कर जिस का तू ने इन से वा’दा किया है बेशक तू वा’दे के ख़िलाफ़ नहीं करता।[4]

फ़िरिश्ते मुक़्तदी :

ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन मुसय्यब رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : ‘‘जो चटियल मैदान में नमाज़ अदा करता है उस की दाईं जानिब एक फ़िरिश्ता और बाईं जानिब एक फ़िरिश्ता नमाज़ अदा करता है अगर वोह अज़ान व इक़ामत कह कर नमाज़ अदा करे तो उस के पीछे पहाड़ों की मिष्ल (या’नी ता’दाद में) फ़िरिश्ते नमाज़ पढ़ते हैं।’’[5]

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ...... صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

---

1 ......عمدة القاری، کتاب الاذان، باب مایقول اذا سمع المنادی، تحت الحدیث: ۶۱۱، ج۴، ص ۱۶۴، باختصارٍ۔
سنن ابی داود، کتاب الصلاۃ، باب مایقول اذا سمع المؤذن، الحدیث، ۵۲۷، ج ۱، ص ۲۲۲، باختصارٍ۔

2 ......سنن ابی داود، کتاب الصلاۃ، باب مایقول اذا سمع الاقامۃ، الحدیث:۵۲۸، ج ۱، ص ۲۲۲۔

3 ......تلخیص الحبیر فی تخریج احادیث الرافعی الکبیر، کتاب الصلاۃ، الرقم:۳۱۰، ج ۱، ص ۵۱۹، دون ونصحت۔

4 ......سنن ابی داود، کتاب الصلاۃ، باب ماجاء فی الدعاء عندالاذان، الحدیث:۵۲۹، ج ۱، ص ۲۲۲۔۲۲۳۔
تلخیص الحبیر فی تخریج احادیث الرافعی الکبیر، کتاب الصلاۃ الرقم:۳۰۹، ج ۱، ص ۵۱۸۔

5 ......المصنف لعبد الرزاق، کتاب الصلاۃ، باب الرجل یصلی باقامۃ وحدہ، الحدیث:۱۹۵۸، ج ۱، ص ۳۷۹۔

दूसरी फ़स्ल :

फ़र्ज़ नमाज़ की फ़ज़ीलत

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ कुरआने मजीद, फ़ुरक़ाने ह़मीद में इरशाद फ़रमाता है :

اِنَّ الصَّلٰوةَ كَانَتْ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ كِتٰبًا مَّوْقُوْتًا ﴿۱۰۳﴾ (پ۵،النساء:۱۰۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक नमाज़ मुसलमानों पर वक़्त बांधा हुवा फ़र्ज़ है।

फ़र्ज़ नमाज़ की फ़ज़ीलत पर मुश्तमिल 14 फ़रामीने मुस्त़फ़ा :

﴾1﴿.....अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने बन्दों पर पांच नमाज़ें फ़र्ज़ फ़रमाई हैं जिस ने इन्हें अदा किया और इन के ह़क़ को मा'मूली जानते हुए इन में से किसी को ज़ाएअ़ न किया तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ज़िम्मए करम पर उस के लिये वा'दा है कि वोह उसे जन्नत में दाख़िल कर दे और जिस ने इन्हें अदा न किया उस के लिये अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ज़िम्मए करम पर अ़हद नहीं, चाहे उसे अ़ज़ाब दे चाहे जन्नत में दाख़िल फ़रमाए ।(1)

﴾2﴿....पांच नमाज़ों की मिषाल नहर की त़रह़ है जिस का पानी साफ़ सुथरा और गहरा हो जो तुम में से किसी के घर के सामने से गुज़रती हो और वोह इस में हर रोज़ पांच बार ग़ुस्ल करता हो तो तुम क्या ख़याल करते हो कि उस के जिस्म पर कोई मैल बाक़ी छोड़ेगी ? सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللهِ تعَالٰی عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن ने अ़र्ज़ की : "नहीं।" इरशाद फ़रमाया : "पांच नमाज़ें (सग़ीरा) गुनाहों को इस त़रह़ ख़त्म कर देती हैं जैसे पानी मैल को ख़त्म कर देता है।"(2)

﴾3﴿.....बेशक नमाज़ें गुनाहों का कफ़्फ़ारा हैं जब तक कबीरा गुनाहों से बचा जाए।(3)

﴾4﴿....हमारे और मुनाफ़िक़ीन के दरमियान इ़शा और फ़ज्र की (जमाअ़त में) ह़ाज़िरी का फ़र्क़ है, मुनाफ़िक़ीन को इन दो नमाज़ों में ह़ाज़िरी की त़ाक़त नहीं।(4)

﴾5﴿....जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से इस ह़ाल में मिला कि उस ने नमाज़ ज़ाएअ़ की हो तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इस की किसी नेकी की परवाह न करेगा।(5)

---

1 ......سنن ابی داود، کتاب الوتر، باب فیمن لم یوتر، الحدیث:۱۴۲۰، ج۲، ص۸۹۔

2 ......صحیح مسلم،کتاب المساجدومواضع الصلاۃ،باب المشی الی الصلاۃ......الخ،الحدیث:۶۶۸،۶۶۷،ص۳۳۶۔

3 ......صحیح مسلم، کتاب الطھارۃ، باب الصلاۃ الخمس......الخ، الحدیث:۲۳۳، ص۱۴۴۔

4 ......المؤطا للامام مالک، کتاب صلاۃ الجاعۃ، باب ماجاء فی العتمۃ والصبح، الحدیث:۲۹۸، ج۱،ص۱۳۳۔

5 ......کتاب الکبائر، الکبیرۃ الرابعۃ فی ترک الصلاۃ، ص۲۲۔

﴾6﴿....नमाज़ दीन का सुतून है तो जिस ने इसे छोड़ा उस ने दीन को गिराया।[1]

﴾7﴿.....बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ की गई : "कौन सा अ़मल अफ़्ज़ल है ?" इरशाद फ़रमाया : "वक़्त पर नमाज़ अदा करना।"[2]

﴾8﴿.....जिस ने मुकम्मल त़हारत और अवक़ात का ख़याल रखते हुए पांच नमाज़ों की मुह़ाफ़ज़त की तो वोह नमाज़ उस के लिये बरोज़े क़ियामत नूर और बुरहान होगी और जिस ने इन्हें ज़ाएअ़ किया उस का ह़श्र फ़िरऔ़न और हामान के साथ होगा।[3]

﴾9﴿....नमाज़ जन्नत की कुन्जी है।[4]

﴾10﴿....अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इक़रारे तौह़ीद के बा'द नमाज़ से ज़ियादा पसन्दीदा कोई चीज़ अपने बन्दों पर फ़र्ज़ नहीं की और अगर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ को कोई और अ़मल इस से ज़ियादा मह़बूब होता तो उस के फ़िरिश्ते भी इसे अपनाते। फ़िरिश्तों में से बा'ज़ ह़ालते रुकूअ़ में, बा'ज़ सुजूद में, बा'ज़ क़ियाम में और बा'ज़ का'दे में हैं।[5]

﴾11﴿....जिस ने जान बूझ कर नमाज़ छोड़ी उस ने कुफ़्र किया।[6]

वज़ाह़त : या'नी क़रीब है कि दीन की रस्सी खुलने और उस का सुतून गिरने की वजह से उस शख़्स का ईमान रुख़्सत हो जाए और येह ऐसे ही है जैसा कि जब कोई शख़्स किसी शहर के क़रीब पहुंच जाए तो कहा जाता है कि येह शख़्स उस शहर में पहुंच गया और वहां दाख़िल हो गया।

﴾12﴿....जिस ने जान बूझ कर नमाज़ तर्क की वोह मुह़म्मद (صَلَّى اللّٰه تعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) के ज़िम्मे से निकल गया।[7]

---

1 ......شعب الایمان للبیهقی، باب فی الصلوات، الحدیث: ۲۸۰۷، ج۳، ص ۳۹، بتغیرٍ۔

2 ......صحیح مسلم، کتاب الایمان، باب بیان کون الایمان باللّٰه......الخ، الحدیث: ۸۵، ص ۵۸۔

3 ......المسند للامام احمد بن حنبل، مسند عبداللّٰه بن عمرو بن العاص، الحدیث: ۶۵۸۷، ج۲، ص ۵۷۴۔

4 ......المسند للامام احمد بن حنبل، مسند جابر بن عبداللّٰه، الحدیث: ۱۴۶۶۸، ج۵، ص ۱۰۳۔

5 ......قوت القلوب، الفصل الثالث والثلاثون فی ذکر دعائم الاسلام......الخ، ج۲، ص ۱۶۵۔

6 ......المعجم الاوسط، من اسمه جعفر، الحدیث: ۳۳۴۸، ج۲، ص ۲۹۹۔

7 ......المسند للامام احمد بن حنبل، حدیث امّ ایمن، الحدیث: ۲۷۴۳۳، ج۱۰، ص ۳۸۶۔

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ फ़रमाते हैं : जिस ने अच्छी त़रह़ वुज़ू किया फिर नमाज़ के इरादे से निकला तो जब तक इस इरादे पर रहेगा वोह नमाज़ में है। उस के लिये एक क़दम पर एक नेकी लिखी और दूसरे क़दम पर एक बुराई मिटाई जाएगी। जब तुम में से कोई इक़ामत सुनता है तो उस के लिये जाइज़ नहीं कि (नमाज़ में) ताख़ीर करे। बेशक तुम में सब से ज़ियादा अज्र उसे मिलेगा जिस का घर ज़ियादा दूर होगा। लोगों ने अ़र्ज़ की : "ऐ अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ किस वजह से ?" फ़रमाया : "ज़ियादा क़दम चलने की वजह से।"(1)

﴾13﴿.....क़ियामत के दिन बन्दे के आ'माल में से सब से पहले नमाज़ देखी जाएगी अगर वोह कामिल पाई गई तो वोह भी और उस के सारे आ'माल भी क़बूल होंगे और अगर इस में कमी हुई तो वोह भी और दीगर सब आ'माल भी मर्दूद हो जाएंगे।(2)

﴾14﴿.....हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से इरशाद फ़रमाया : "ऐ अबू हुरैरा ! अपने घर वालों को नमाज़ का हुक्म दो, बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम्हें वहां से रोज़ी देगा जहां तुम्हारा गुमान न हो।"

बा'ज़ उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰہُ السَّلَام फ़रमाते हैं : "नमाज़ी की मिषाल उस ताजिर की सी है जो उस वक़्त तक नफ़्अ़ ह़ासिल नहीं कर सकता जब तक पूरा माल ख़र्च न करे। यूंही नमाज़ी की नफ़्ल नमाज़ उस वक़्त तक क़बूल नहीं होती जब तक वोह फ़र्ज़ अदा न कर ले।"(3)

जब नमाज़ का वक़्त होता तो अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ फ़रमाया करते : "उठो उस आग की त़रफ़ जो तुम ने जला रखी है और उसे बुझा दो।"(4)

صَلُّوۡا عَلَی الۡحَبِیۡب ...... صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

---

1 ......الموطا للامام مالک، کتاب الطھارۃ، باب جامع الوضوء، الحدیث:۶۷، ج ۱، ص ۵۴۔

2 ......الموطا للامام مالک، کتاب قصر الصلاۃ فی السفر، باب جامع الصلاۃ، الحدیث:۴۲۸، ج ۱، ص ۱۲۹، بتغیرٍ۔

3 ......شعب الایمان للبیھقی، باب فی الصلوات، فضل قیام شھر رمضان، الحدیث:۳۲۸۵، ج۳، ص ۱۸۲۔

4 ......کنزالعمال، کتاب الصلاۃ، قسم الاقوال، الحدیث:۱۹۰۴۱، ج۷، ص ۱۲۸، عن انس۔

तीसरी फ़स्ल : अरकाने नमाज़ पूरा करने की फ़ज़ीलत

छे फ़रामीने मुस्त़फ़ा :

﴾1﴿....फ़र्ज़ नमाज़ की मिषाल तराज़ू की सी है जिस ने इसे पूरा किया उसे पूरा अज्र मिलेगा।[1]

हज़रते सय्यिदुना यज़ीद बिन अब्बान रक्क़ाशी हज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत करते हैं कि "रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की नमाज़ बराबर होती थी गोया उस का वज़्न किया गया हो।"[2]

﴾2﴿....मेरी उम्मत के दो शख़्स नमाज़ के लिये खड़े होते हैं उन के रुकूअ़ व सुजूद एक जैसे होते हैं लेकिन उन दोनों की नमाज़ों में ज़मीनो आस्मान जितना फ़ासिला होता है।[3]

इस से आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने ख़ुशूअ़ व ख़ुज़ूअ़ की त़रफ़ इशारा फ़रमाया। (या'नी ख़ुशूअ़ व ख़ुज़ूअ़ के सबब एक की नमाज़ अफ़्ज़ल हो जाती है)

﴾3﴿....अल्लाह عَزَّوَجَلَّ बरोज़े क़ियामत उस बन्दे की त़रफ़ नज़र नहीं फ़रमाएगा जिस की पीठ रुकूअ़ व सुजूद के दरमियान सीधी नहीं होती।[4]

﴾4﴿....जो शख़्स नमाज़ में चेहरे को इधर उधर फैरता है क्या वोह इस से नहीं डरता कि कहीं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस का चेहरा गधे के चेहरे से न बदल डाले।[5]

﴾5﴿....जिस ने अच्छी त़रह़ वुज़ू कर के वक़्त पर नमाज़ अदा की ख़ुशूअ़ व ख़ुज़ूअ़ के साथ रुकूअ़ व सुजूद को पूरा किया तो उस की नमाज़ सफ़ेद चमकती हुई बुलन्द होती है और कहती है : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तेरी हि़फ़ाज़त फ़रमाए जिस त़रह़ तू ने मेरी हि़फ़ाज़त की और जो शख़्स कामिल वुज़ू के साथ वक़्त पर नमाज़ नहीं पढ़ता, रुकूअ़ व सुजूद ख़ुशूअ़ व ख़ुज़ूअ़ से अदा नहीं

---

1 ......كتاب الزهد لابن المبارك، الجزء التاسع، الحديث:١١٩٠، ص٣١٩۔

2 ......كتاب الزهد لابن المبارك، باب ماجاء فی فضل العبادة، الحديث:١٠٣، ص٣٤۔

3 ......كشف الخفاء، خاتمة يختم بها الكتاب، ج٢، ص٣٧٦۔

4 ......المسندللامام احمد بن حنبل، مسند ابی هريرة، الحديث:١٠٨٠٣، ج٣، ص٦١٧۔

5 ......صحيح مسلم، كتاب الصلاة، باب تحريم سبق الامام بركوع......الخ، الحديث:٤٢٧، ص٢٢٨۔

करता तो वोह नमाज़ सियाह और तारीक हो कर बुलन्द होती है और कहती है : अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ तुझे बरबाद करे जैसे तू ने मुझे ज़ाएअ़ किया यहां तक कि जब वहां जाती है जहां अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ चाहता है तो इस को बोसीदा कपड़े की त़रह़ लपेट कर उस के मुंह पर मार दिया जाता है ।[1]

﴾6﴿.....लोगों में सब से बुरा चोर वोह है जो नमाज़ में चोरी करता है ।[2] [3]

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द और हज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھُمَا) से मरवी है कि "नमाज़ पैमाना है जिस ने इसे पूरा किया उसे पूरा बदला मिलेगा और जो इस में कमी करता है तो उसे मा'लूम है कि अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ ने कमी करने वालों के मुतअ़ल्लिक़ क्या फ़रमाया है ।"[4]

تُوۡبُوۡا اِلَی اللّٰہ　اَسۡتَغۡفِرُ اللّٰہ

صَلُّوۡا عَلَی الۡحَبِیۡب　صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

---

❶......المعجم الاوسط، الحدیث:۳۰۹۵، ج۲، ص۲۲۷۔

❷....सहाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہِمۡ اَجۡمَعِیۡن ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अपनी नमाज़ में चोरी कैसे करेगा ।" इरशाद फ़रमाया : "रुकूअ़ और सजदा पूरा न करे ।"

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ الۡمَنَّان मिरआतुल मनाजीह़, जि. 2 स. 78 पर इस के तह़त फ़रमाते हैं : वाह سُبۡحٰنَ اللّٰہ क्या नफ़ीस तमषील है या'नी माल के चोर से नमाज़ का चोर बदतर है क्यूंकि माल का चोर अगर सज़ा पाता है तो कुछ नफ़्अ़ भी उठा लेता है मगर नमाज़ का चोर सज़ा पूरी पाएगा नफ़्अ़ कुछ ह़ासिल नहीं करता नीज़ माल का चोर बन्दे का ह़क़ मारता है मगर नमाज़ का चोर अल्लाह का ह़क़, नीज़ माल का चोर यहां सज़ा पा कर अ़ज़ाबे आख़िरत से बच जाता है मगर नमाज़ के चोर में येह बात नहीं नीज़ बा'ज़ सूरतों में माल के चोर को मालिक मुआ़फ़ कर सकता है लेकिन नमाज़ के चोर की मुआ़फ़ी की कोई सूरत नहीं । ख़याल करो कि जब नमाज़ नाक़िस पढ़ने वालों का येह ह़ाल है तो जो सिरे से पढ़ते ही नहीं उन का क्या ह़ाल है । फिर जो कुल या बा'ज़ नमाज़ों के मुन्किर हो चुके जैसे भंगी पस्ती फ़क़ीर और चकड़ालवी वग़ैरा इन का क्या पूछना ।

❸......المسند للامام احمد بن حنبل، حدیث ابی قتادۃ الانصاری، الحدیث:۲۲۷۰۵، ج۸، ص۳۸۶۔

❹......کنز العمال، کتاب الصلاۃ، الحدیث:۲۲۵۳۸، ج۸، ص۹۵۔

चौथी फ़स्ल : नमाज़े बा जमाअ़त के फ़ज़ाइल

फ़ज़ीलते जमाअ़त पर मुश्तमिल पांच फ़रामीने मुस्त़फ़ा :

﴾1﴿....बा जमाअ़त नमाज़ तन्हा नमाज़ से 27 दर्जे अफ़्ज़ल है।(1)

﴾2﴿....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने बा'ज़ नमाज़ों में कुछ लोगों को ग़ैर ह़ाज़िर पाया तो इरशाद फ़रमाया : "मैं चाहता हूं किसी शख़्स को हुक्म दूं कि वोह लोगों को नमाज़ पढ़ाए फिर मैं उन लोगों की त़रफ़ जाऊं जो नमाज़ (बाजमाअ़त) से पीछे रह जाते हैं(2) और इन पर उन के घर जला दूं।(3)

﴾3﴿....एक रिवायत में है कि फिर मैं जमाअ़त से पीछे रह जाने वालों कि त़रफ़ जाऊं और उन के मुतअ़ल्लिक़ हुक्म दूं कि इन पर उन के घरों को लकड़ियों के गट्ठे से जला दिया जाए। अगर उन में से कोई जानता कि वोह चिकनी हड्डी या दो अच्छे खुर पाएगा तो इस नमाज़ (या'नी नमाज़े इशा) में ज़रूर ह़ाज़िर होता।(4)

﴾4﴿....अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़षमाने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि जो नमाज़े इ़शा जमाअ़त से पढ़े तो गोया वोह आधी रात इ़बादत में खड़ा रहा और जो फ़ज्र जमाअ़त से पढ़े तो गोया वोह सारी रात इ़बादत में खड़ा रहा।(5)

﴾5﴿....जिस ने बा जमाअ़त नमाज़ पढ़ी बेशक उस ने अपने सीने को इ़बादत से भर दिया।

ह़ज़रते सय्यिदुना सई़द बिन मुसय्यब رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : "20 साल से मेरा येह मा'मूल है कि मुअज़्ज़िन के अज़ान देने से पहले ही मस्जिद में होता हूं।"(6)

---

1 ......صحیح البخاری، کتاب الأذان، باب فضل صلاۃ الجماعۃ، الحدیث:۶۴۵، ج ۱، ص ۲۳۲۔

2 ....मिरआतुल मनाजीह़, जि. 2 स. 168 पर है : बिला उ़ज़्र, लिहाज़ा इस से छोटे बच्चे, औ़रतें, मा'ज़ूर बीमार अ़लाह़िदा हैं। यहां रुए सुख़न मुनाफ़िक़ीन की त़रफ़ है क्यूंकि कोई सह़ाबी बिला वजह जमाअ़त और मस्जिद की ह़ाज़िरी नहीं छोड़ते थे। लिहाज़ा रवाफ़िज़ का येह कहना कि सह़ाबा फ़ासिक़ या तारिके जमाअ़त थे, ग़लत़ है, रब्ब ने उन के तक़्वा और जन्नती होने की गवाही दी। अगर यहां सह़ाबा मुराद हों तो ह़दीष कुरआन के ख़िलाफ़ होगी।

3 ......صحیح مسلم، کتاب المساجد......الخ، باب کراھیۃ تأخیر الصلاۃ......الخ، الحدیث:۲۵۱ـ۲۵۲، ص۳۲۷۔

4 ......المرجع السابق، الحدیث:۲۵۲ـالمسندللامام احمد بن حنبل، مسند ابی ھریرۃ، الحدیث:۷۳۳۲، ج۳، ص ۳۹۔

5 ......صحیح مسلم، کتاب المساجد......الخ، باب فضل صلاۃ العشاء......الخ، الحدیث:۲۶۰، ص ۳۲۹۔

6 ......المصنف لابن ابی شیبۃ، کتاب الصلاۃ، من کان یشھد الصلاۃ، الحدیث:۴، ج ۱، ص ۳۸۶، فیہ:"ثلاثین سنۃ"۔

तीन चीज़ों का शौक़ :

ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन वासेअ़ رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : "मुझे दुन्या में फ़क़त़ तीन चीज़ों का शौक़ है : (1) ऐसा भाई कि जब मैं टेढ़ा हो जाऊं तो वोह मुझे सीधा कर दे (2) इतना रिज़्क़ जो दूसरे के ह़क़ में ख़ाली हो और (3) बा जमाअ़त नमाज़ जिस में भूलना मुझे मुआ़फ़ कर दिया जाए और मेरे लिये इस की फ़ज़ीलत लिख दी जाए।"(1)

मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ ने एक मरतबा इमामत करवाई जब नमाज़ से फ़ारिग़ हुए तो फ़रमाया : "अभी शैत़ान मुसलसल मेरे साथ रहा यहां तक कि मैं ने समझा कि मैं दूसरे लोगों से अफ़्ज़ल हूं, अब मैं कभी इमामत नहीं करूंगा।"(2)

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं कि "ऐसे शख़्स के पीछे नमाज़ न पढ़ो जो उ़-लमा की सोह़बत इख़्तियार नहीं करता।"

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम नख़ई عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَلِی फ़रमाते हैं : "जो शख़्स बिग़ैर इ़ल्म के इमामत करता है उस की मिषाल उस शख़्स की सी है जो समन्दर में पानी को मापता है, उस की ज़ियादती या कमी को नहीं जानता।"

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़ातिमे असम عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْاَکْرَم फ़रमाते हैं : "एक बार (किसी उ़ज़्र के बाइ़ष) मैं बा जमाअ़त नमाज़ के लिये ह़ाज़िर न हो सका तो अकेले अबू इस्ह़ाक़ बुख़ारी ने मुझ से ता'ज़िय्यत की और अगर मेरा बेटा फ़ौत हो जाता तो दस हज़ार से ज़ियादा लोग ता'ज़िय्यत करते क्यूंकि लोगों के नज़दीक दीन की मुसीबत दुन्या की मुसीबत से ज़ियादा आसान है।(3)

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं : "जो मुअज़्ज़िन की आवाज़ सुन कर जवाब न दे (या'नी बा जमाअ़त नमाज़ में ह़ाज़िर न हो) तो न उस ने भलाई का इरादा किया और न उस के साथ भलाई का इरादा किया गया।"(4)

---

1 ......تاریخ دمشق لابن عساکر، محمد بن واسع، ج۵۶، ص۱۶۱، بتغیرِالفاظٍ۔

2 ......کتاب الزھد لابن المبارک، باب التواضع، الحدیث:۸۳۴، الجزء السادس، ص۲۸۷۔

3 ......الکبائرللذھبی، الکبیرۃ الرابعۃ، ص۳۳۔

4 ......المصنف لعبد الرزاق،کتاب الصلاۃ،باب من سمع النداء،الحدیث:۱۹۲۱،ج۱،ص۳۷۰،عن عائشۃ۔

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : "अगर इब्ने आदम के कान को पिघले हुए सीसे से भर दिया जाए तो येह उस के लिये इस से बेहतर है कि वोह अज़ान सुने और जवाब न दे ।"(1)

इराक़ की बादशाहत से ज़ियादा महबूब :

हज़रते सय्यिदुना मैमून बिन मेहरान मस्जिद में हाज़िर हुए तो उन से अर्ज़ की गई : "लोग तो जा चुके हैं ।" तो आप ने اِنَّا لِلّٰہِ وَ اِنَّاۤ اِلَیْہِ رٰجِعُوْنَ (پ۲،البقرۃ:۱۵۶) पढ़ा और फ़रमाया : "बा जमाअ़त नमाज़ पढ़ना मुझे इराक़ की बादशाहत से ज़ियादा पसन्द है ।"

निफ़ाक़ और आग से आज़ादी का परवाना :

मरवी है कि हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जिस ने **40** दिन बा जमाअ़त नमाज़ इस तरह पढ़ी कि उस की तक्बीरे तहरीमा भी फ़ौत न हुई तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के लिये दो परवाने लिखेगा एक परवाना निफ़ाक़ से आज़ादी का और दूसरा आग से आज़ादी का ।"(2)

सूरज, चांद और सितारों की मानिन्द चमकते चेहरे :

मन्क़ूल है कि जब क़ियामत का दिन होगा तो कुछ लोगों को लाया जाएगा जिन के चेहरे सितारों की तरह चमकते दमकते होंगे फ़िरिश्ते उन से कहेंगे : "तुम क्या अ़मल करते थे ?" वोह कहेंगे : "हम अज़ान सुनते ही वुज़ू के लिये उठ खड़े होते थे कोई दूसरी चीज़ हमें मश्ग़ूल न करती थी ।" फिर एक गुरौह को लाया जाएगा जिन के चेहरे चांद की मानिन्द रोशन होंगे (फ़िरिश्तों के) पूछने पर वोह कहेंगे : "हम (नमाज़ का) वक़्त शुरूअ़ होने से पहले ही वुज़ू कर लेते थे ।" फिर एक गुरौह लाया जाएगा जिन के चेहरे सूरज की तरह रोशन होंगे (फ़िरिश्तों के पूछने पर) वोह कहेंगे : "हम अज़ान मस्जिद में सुनते थे ।"(3)

मन्क़ूल है कि अस्लाफ़े किराम رَحِمَهُمُ اللّٰہ السَّلَام में से किसी की तक्बीरे ऊला फ़ौत हो जाती तो तीन दीन अफ़्सोस करते और अगर जमाअ़त फ़ौत हो जाती तो सात दिन अफ़्सोस करते ।

---

1 ......المصنف لابن ابی شیبۃ، کتاب الصلاۃ، من قال اذاسمع المنادی فلیجب، الحدیث:۴، ج۱، ص۳۸۰۔

2 ......سنن الترمذی، کتاب الصلاۃ، باب ماجاء فی فضل التکبیرۃ الاولی، الحدیث:۲۴۱، ج۱، ص۲۷۴۔

3 ......قوت القلوب، الفصل الثالث والثلاثون فی ذکر دعائم الاسلام......الخ، ج۲، ص۱۶۸، بتغیرٍ۔

पांचवीं फ़स्ल : **फ़ज़ाइले सजदा**

सजदे की फ़ज़ीलत पर मुश्तमिल चार फ़रामीने मुस्त़फ़ा :

﴾1﴿.....बन्दा एक पोशीदा सजदे से बढ़ कर किसी चीज़ से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का कुर्ब ह़ासिल नहीं करता ।[1]

﴾2﴿.....कोई मुसलमान **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को सजदा करता है तो इस के बदले **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस का एक दर्जा बुलन्द फ़रमाता और एक गुनाह मिटा देता है ।[2]

﴾3﴿.....एक शख़्स ने बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ की : "(या रसूलल्लाह صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से दुआ़ कीजिये कि वोह मुझे आप की शफ़ाअ़त पाने वालों में से बना दे और जन्नत में मुझे आप की रफ़ाक़त अ़त़ा फ़रमाए ।" आप صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "कषरते सुजूद से मेरी मदद करो ।"[3] [4]

मन्क़ूल है कि बन्दा रब्ब عَزَّوَجَلَّ के सब से ज़ियादा क़रीब सजदे की ह़ालत में होता है ।[5] दर्जे ज़ैल फ़रमाने बारी तआ़ला का येही मा'ना है :

---

❶......كتاب الزهد لابن المبارك، كتاب الصلاة، باب ماجاء فى الخشوع والخوف، الحديث:١٥٢، ص٥٠۔

❷......سنن ابن ماجه،كتاب الصلاة، باب ماجاء فى كثرة السجود، ، الحديث:١٤٢٤، ج٢، ص١٨٢۔
صحيح مسلم، كتاب الصلاة، باب فضل السجود والحث عليه، الحديث:٤٨٨، ص٢٥٢۔

❸....मिरआतुल मनाजीह़, जि. 2 स. 84 पर इस के तह़्त है : जन्नत में तुम्हें आ'ला मक़ाम पर पहुंचना मेरे करम से है न कि मह़ज़ तुम्हारे सजदों से तुम अपने सजदों से मुझे इस काम में इमदाद दो । عَلٰی نَفْسِكَ फ़रमा कर इशारतन फ़रमाया गया कि नफ़्स की मुख़ालफ़त जन्नत का ज़रीआ़ है (मिरक़ात) कषरते सुजूद से बताया गया कि फ़क़त़ नमाज़े पन्जगाना पर किफ़ायत न करो बल्कि नवाफ़िल कषरत से पढ़ो ताकि मेरे क़ुर्ब के लाइक़ हो जाओ । जैसे बादशाह कहे कि मेरे पास आना है तो अच्छा लिबास पहनो । ह़ाज़िरी बादशाह के करम से है और अच्छा लिबास दरबार के आदाब में से ।

❹......صحيح مسلم، كتاب الصلاة، باب فضل السجود والحث عليه، الحديث:٤٨٩، ص٢٥٣۔

❺......صحيح مسلم، كتاب الصلاة، باب مايقال فى الركوع والسجود، الحديث:٤٨٢، ص٢٥٠۔

وَاسۡجُدۡ وَاقۡتَرِبۡ ﴿۱۹﴾ (پ۳۰،العلق:۱۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और सजदा करो और हम से क़रीब हो जाओ ।*[1]

दूसरे मक़ाम पर इरशाद फ़रमाया :

سِيۡمَاهُمۡ فِىۡ وُجُوۡهِهِمۡ مِّنۡ اَثَرِ السُّجُوۡدِ ؕ (پ۲۶،الفتح:۲۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *उन की अ़लामत उन के चेहरों में है सजदों के निशान से ।*

इस आयत की तफ़सीर में मुख़्तलिफ़ अक़्वाल हैं :

(1)....इस से मुराद हिस्सए ज़मीन है जो ह़ालते सजदा में उन के चेहरों से मिला होता है ।

(2)....इस से ख़ुशूअ़ का नूर मुराद है क्यूंकि वोह बात़िन से ज़ाहिर पर चमकता है और येही ज़ियादा सह़ीह़ है ।

(3).....इस से मुराद वोह चमक है जो बरोज़े क़ियामत वुज़ू के अषर से इन के चेहरों पर होगी ।

(4).....जब इन्सान आयते सजदा पढ़ कर सजदा करता है तो शैत़ान एक त़रफ़ हो कर रोते हुए कहता है : हाए अफ़्सोस ! इन्सान को सजदे का हुक्म हुवा तो इस ने सजदा किया लिहाज़ा इस के लिये जन्नत है और मुझे सजदे का हुक्म हुवा तो मैं ने नाफ़रमानी की पस मेरे लिये जहन्नम है ।[2]

बहुत ज़ियादा सजदे करने वाले :

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھُم के मुतअ़ल्लिक़ मन्क़ूल है कि आप हर रोज़ एक हज़ार (1000) सजदे करते थे और लोग इन्हें "**सज्जाद** या'नी बहुत ज़ियादा सजदे करने वाला" कहते थे ।[3]

---

❶ ...येह आयते सजदा है । बहारे शरीअ़त जिल्द अव्वल सफ़ह़ा 728 पर है : आयते सजदा पढ़ने या सुनने से सजदा वाजिब हो जाता है । सजदा वाजिब होने के लिये पूरी आयत पढ़ना ज़रूरी नहीं बल्कि वोह लफ़्ज़ जिस में सजदे का माद्दा पाया जाता है और इस के क़ब्ल या बा'द का कोई लफ़्ज़ मिला कर पढ़ना काफ़ी है ।" और सफ़ह़ा 730 पर है : "फ़ारसी या किसी और ज़बान में आयत का तर्जमा पढ़ा तो पढ़ने वाले और सुनने वाले पर सजदा वाजिब हो गया, सुनने वाले ने येह समझा हो या नहीं कि आयते सजदा का तर्जमा है, अलबत्ता येह ज़रूर है कि उसे ना मा'लूम हो तो बता दिया गया हो कि येह आयते सजदा का तर्जमा था और आयत पढ़ी गई हो तो इस की ज़रूरत नहीं कि सुनने वाले को आयते सजदा होना बताया गया हो ।"

नोट : मज़ीद तफ़सील के लिये बहारे शरीअ़त के मज़्कूरा मक़ाम का सफ़ह़ा 726 ता 739 का या दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना के मत़्बूआ़ 49 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल रिसाले "तिलावत की फ़ज़ीलत" का मुत़ालआ़ कीजिये ।

❷ ......صحیح مسلم، کتاب الایمان، باب بیان اطلاق اسم الکفر علی من ترک الصلاۃ، الحدیث:۸۱، ص۵۶۔

❸ ......صفۃ الصفوۃ، علی بن عبداللّٰہ بن عباس، ج۲، ص۷۶۔

मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْعَزِیْز मिट्टी पर ही सजदा किया करते थे।

ह़ज़रते सय्यिदुना यूसुफ़ बिन अस्बात़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ (बुढ़ापे में) फ़रमाया करते थे : "ऐ नौजवानों के गुरौह ! मरज़ से पहले सिह़्ह़त में जल्दी करो। मैं सिर्फ़ उस शख़्स पर रश्क करता हूं जो रुकूअ़ व सुजूद को पूरा करता है जब कि मेरे और सजदे के दरमियान रुकावट पैदा हो गई है।"(1)

ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन जुबैर رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : "मुझे सजदे के सिवा दुन्या की किसी चीज़ के छूटने पर अफ़्सोस नहीं होता।"(2)

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़क़्बा बिन मुस्लिम رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : "बन्दे की कोई ख़स्लत **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को इस से ज़ियादा पसन्द नहीं कि वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से मुलाक़ात को पसन्द करे और बन्दा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में सजदा करने के इ़लावा किसी घड़ी में उस का ज़ियादा क़ुर्ब नहीं पाता।"(3)

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि "बन्दा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से ज़ियादा क़रीब सजदा करते हुए होता है तो इस में दुआ़एं ज़ियादा मांगो।"(4)

छटी फ़स्ल : ख़ुशूअ़ की फ़ज़ीलत

ख़ुशूअ़ के मुतअ़ल्लिक़ तीन फ़रामीने बारी तआ़ला :

﴾1﴿ وَ اَقِمِ الصَّلٰوۃَ لِذِكْرِیْ ﴿۱۴﴾ (پ۱۶،طٰهٰ:۱۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और मेरी याद के लिये नमाज़ क़ाइम रख।*

﴾2﴿ وَلَا تَكُنْ مِّنَ الْغٰفِلِیْنَ ﴿۲۰۵﴾ (پ۹،الاعراف:۲۰۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और ग़ाफ़िलों में न होना।*

﴾3﴿ لَا تَقْرَبُوا الصَّلٰوۃَ وَاَنْتُمْ سُكٰرٰی حَتّٰی تَعْلَمُوْا مَا تَقُوْلُوْنَ (پ۵،النساء:۴۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *नशे की ह़ालत में नमाज़ के पास न जाओ जब तक इतना होश न हो कि जो कहो उसे समझो।*

---

1 ......المجالسة و جواهر العلم، الجزء الثالث، الحديث: ۳۳۱، ج ۱، ص ۱۷۳ـ

2 ......شعب الايمان للبيهقى، باب فى الصلوات، الحديث: ۳۱۷۸، ج ۳، ص ۱۵۳ـ

3 ......كتاب الزهد لابن المبارك، باب الذى يجزع من الموت......الخ، الحديث: ۲۷۹، ص ۹۵ـ

4 ......سنن ابى داود، كتاب الصلوٰة، باب الدعا فى الركوع والسجود، الحديث ۸۷۵، ج ۱، ص ۳۳۳ـ

इस आयत में मज़्कूर लफ़्ज़ "سُکٰرٰی" की तफ़्सीर में मुख़्तलिफ़ अक़्वाल हैं : (1) बन्दा ग़मों की कषरत के बाइ़ष नशे में हो (2) दुन्या की मह़ब्बत की वजह से नशे में हो (3) ह़ज़रते सय्यिदुना वहब बिन मुनब्बेह رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : इस से ज़ाहिर मुराद है।

(मुसन्निफ़ عَلَیْہِ الرَّحْمَۃ) इस में दुन्यवी नशे पर तम्बीह है क्यूंकि इस की इ़ल्लत बयान करते हुए इरशाद फ़रमाया : "जब तक इतना होश न हो कि जो कहो उसे समझो और कितने ही नमाज़ी हैं जो शराब नोशी नहीं करते मगर इन्हें मा'लूम नहीं होता कि वोह नमाज़ में क्या कह रहे हैं !"

हुज़ूर नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जिस ने दो रक्अ़त नफ़्ल अदा किये जिन में अपने दिल से कुछ बात न की तो उस के पिछले गुनाह बख़्श दिये जाएंगे।"[1]

सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "बेशक नमाज़ सुकून, आ़जिज़ी, गिड़गिड़ाने, ख़ौफ़ और नदामत का नाम है और येह कि तू हाथ बांध कर यूं कहे : "ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ !" और जो ऐसा न करे तो उस की नमाज़ नाक़िस है।"[2]

किस की नमाज़ मक़्बूल है ?

कुतुबे साबिक़ा में है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है : "मैं हर नमाज़ी की नमाज़ क़बूल नहीं करता बल्कि मैं उस की नमाज़ क़बूल करता हूं जो मेरी अ़ज़मत के सामने आ़जिज़ी करे और मेरे बन्दों पर बड़ाई न चाहे और मेरी रिज़ा के लिये फ़क़ीर को खाना खिलाए।"[3]

मक्की मदनी सुल्तान, रह़मते आ़लमिय्यान صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : बेशक नमाज़ की फ़र्ज़िय्यत, ह़ज व त़वाफ़ का हुक्म और मनासिके ह़ज की अदाएगी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ज़िक्र को क़ाइम रखने के लिये है। तो जब तुम्हारे दिल में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ही अ़ज़मत व हैबत न हो जो कि मक़्सूद व मत़्लूब है तो फिर तुम्हारे ज़िक्र की क़ीमत क्या रह जाएगी।"[4]

---

1 ......صحیح البخاری، کتاب الوضو، باب الوضو ثلاثاً ثلاثاً، الحدیث:۱۵۹، ج۱، ص۷۸۔

2 ......سنن الترمذی، ابواب الصلوۃ، باب ماجاء فی التخشع فی الصلوۃ، الحدیث:۳۸۵،ج۱، ص۳۹۴، بتغیرٍ۔

3 ......کنزالعمال، کتاب الصلوۃ، الحدیث:۲۰۱۰۰، ج۷، ص۲۱۴، باختصارٍ۔

4 ......سنن ابی داود، کتاب المناسک، الحدیث:۱۸۸۸، ج۲، ص۲۶۰، ولم یذکر"فرضت الصلوۃ" باختصارٍ۔

मदीने के ताजदार, बिइज़्ने परवर दगार दो आ़लम के मालिको मुख़्तार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने एक शख़्स को वसिय्यत करते हुए इरशाद फ़रमाया : "जब तुम नमाज़ पढ़ो तो रुख़्सत करने वाले की त़रह़ नमाज़ पढ़ो ।"(1)

या'नी उस शख़्स की त़रह़ जो अपने नफ़्स, अपनी ख़्वाहिशात और अपनी उ़म्र को अल वदाअ़ कहता हुवा अपने मालिक की त़रफ़ जाता है ।

अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

يٰۤاَیُّهَا الْاِنْسَانُ اِنَّكَ كَادِحٌ اِلٰى رَبِّكَ كَدْحًا فَمُلٰقِیْهِۚ(۶) (پ۳۰،الانشقاق:۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ आदमी ! बेशक तुझे अपने रब्ब की त़रफ़ यक़ीनी दौड़ना है फिर उस से मिलना ।

एक जगह इरशाद फ़रमाया :

وَاتَّقُوا اللّٰهَؕ وَیُعَلِّمُكُمُ اللّٰهُؕ (پ۳،البقرۃ:۲۸۲)

*तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और **अल्लाह** से डरो और **अल्लाह** तुम्हें सिखाता है ।*

एक और मक़ाम पर इरशाद फ़रमाया :

وَ اتَّقُوا اللّٰهَ وَ اعْلَمُوْۤا اَنَّكُمْ مُّلٰقُوْهُؕ (پ۲،البقرۃ:۲۲۳)

*तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और **अल्लाह** से डरते रहो और जान रखो कि तुम्हें उस से मिलना है ।*

अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जिसे उस की नमाज़ बे ह़याई और बुरे कामों से न रोके उस की **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ से दूरी में ही इज़ाफ़ा होगा ।"(2)

नमाज़ मुनाजात का नाम है तो फिर येह ग़फ़्लत के साथ कैसे अदा होगी ?

बिग़ैर तर्जुमान के अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ से हम कलामी :

ह़ज़रते सय्यिदुना बक्र बिन **अ़ब्दुल्लाह मुज़नी** عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْغَنِی फ़रमाते हैं : "ऐ इब्ने आदम ! जब तू बिग़ैर इजाज़त मौला की बारगाह में ह़ाज़िर होना और बिग़ैर तर्जमान के उस से कलाम करना चाहे तो उस की बारगाह में ह़ाज़िर हो जा ।" अ़र्ज़ की गई : "येह कैसे मुमकिन है ?" फ़रमाया : "कामिल वुज़ू कर के मेह़राब में दाख़िल (हो कर नमाज़ में मश्ग़ूल) हो जा, पस

---

1 ......كنزالعمال، كتاب الصلوة، الحديث:۲۰۰۹۰، ج۷، ص۲۱۲۔

2 ......كنزالعمال، كتاب الصلوة، الحديث:۲۰۰۷۹، ج۷، ص۲۱۲۔

जब तू अपने मौला की बारगाह में बिग़ैर इजाज़त के दाख़िल हो जाएगा तो बिग़ैर तर्जमान के उस के साथ कलाम भी करेगा।"(1)

उम्मुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنہَا फ़रमाती हैं : "रसूलुल्लाह صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ و اٰلِہٖ وَسَلَّم हम से और हम आप से गुफ़्तगू करते लेकिन जब नमाज़ का वक़्त होता तो अ़ज़मत व जलालते किब्रियाई में इस क़दर मश्ग़ूल हो जाते गोया न आप हमें पहचानते और न हम आप को पहचानते।"(2)

अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ و اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ ऐसी नमाज़ की त़रफ़ नज़र नहीं फ़रमाता जिस में बन्दा अपने जिस्म के साथ दिल को ह़ाज़िर न करे।"(3)

नमाज़ हो तो ऐसी :

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ख़लीलुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام जब नमाज़ के लिये खड़े होते तो आप के दिल की धड़कन दो मील की मसाफ़त से सुनाई देती।(4)

ह़ज़रते सय्यिदुना सई़द तनोख़ी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْغَنِی जब नमाज़ पढ़ते तो (इस क़दर रोते कि) रुख़्सार से दाढ़ी पर मुसलसल आंसू गिरते रहते।(5)

सरकारे मक्कए मुकर्रमा, सरदारे मदीनए मुनव्वरा صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ و اٰلِہٖ وَسَلَّم ने एक शख़्स को नमाज़ में अपनी दाढ़ी से खेलते देखा तो इरशाद फ़रमाया : "अगर इस के दिल में ख़ुशूअ़ होता तो इस के आ'ज़ा में भी ख़ुशूअ़ होता।"(6)

ग़ाफ़िल ख़्वाहिश मन्द :

मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی ने एक शख़्स को कंकरियों से खेलते देखा, वोह कह रहा था : "ऐ अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ ! हूरे ऐ़न से मेरी शादी करा दे।" आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया : "तू बुरा पैग़ाम देने वाला है, हूरे ऐ़न से शादी का इरादा है और खेल कंकरियों से रहा है।"(7)

---

1. ......شعب الایمان للبیھقی، باب فی الصلوات، الحدیث:۳۲۴۴، ج۳، ص۱۶۸، نحوہ۔
2. ......المستطرف فی کل فن مستطرف، الباب الاول فی مبانی الاسلام، الفصل الثانی، ج۱، ص۱۴۔
3. ......کتاب الفقہ علی المذاھب الاربعۃ، کتاب الصلاۃ، حکمۃ مشروعیتھا، ج۱، ص۱۵۸۔
4. ......الجامع لاحکام القرآن، پ۱۱، سورۃ براءۃ، تحت الآیۃ:۱۱۴، ج۸، ص۱۵۹۔
5. ......تاریخ مدینۃ دمشق لابن عساکر، سعید بن عبدالعزیزالتنوخی، ج۲۱، ص۲۰۳، بنحوہ۔
6. ......نوادرالاصول، الاصل السابع والاربعون والمائتان، الحدیث:۱۳۱۱، ص۱۰۰۷۔
7. ......تفسیرغرائب القرآن...،پ۱۸،سورۃ المؤمنون، تحت الآیۃ:۲،ج۵،ص۱۰۹، دون قولہ:تخطب الحور العین۔

हि़कायत : सय्यिदुना ख़लफ़ बिन अय्यूब عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَدُوْد का ख़ौफ़े ख़ुदा :

ह़ज़रते सय्यिदुना ख़लफ़ बिन अय्यूब عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَدُوْد से पूछा गया : "आप मख्खियों को दूर नहीं करते क्या येह नमाज़ में आप को तक्लीफ़ नहीं पहुंचातीं ?" फ़रमाया : "मैं अपने नफ़्स को ऐसी चीज़ का आ़दी नहीं बनाता जो मेरी नमाज़ फ़ासिद कर दे।" पूछा गया : "आप इस पर सब्र कैसे कर लेते हैं ?" फ़रमाया : "मुझे येह बात पहुंची है कि फ़ासिक़ो फ़ाजिर लोग बादशाहों के कोड़ों तले सब्र करते हैं तो कहा जाता है फ़ुलां बहुत सब्र करने वाला है और वोह इस पर फ़ख्ऱ करते हैं। तो क्या मैं अपने रब्ब عَزَّوَجَلَّ के हुज़ूर खड़ा हो कर मख्खी की वजह से ह़रकत करूं ?"(1)

सय्यिदुना मुस्लिम बिन यसार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَفَّار और नमाज़ :

मन्क़ूल है कि ह़ज़रते सय्यिदुना मुस्लिम बिन यसार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَفَّار जब नमाज़ का इरादा करते तो घर वालों से फ़रमाते : "तुम आपस में गुफ़्त्गू करते रहो अब मैं तुम्हारी गुफ़्त्गू नहीं सुनूंगा।"(2) एक दिन आप رَحْمَةُ اللهِ تعالٰی عَلَيْه बसरा की जामेअ़ मस्जिद में नमाज़ अदा कर रहे थे कि (आप की पिछली जानिब) मस्जिद का एक सुतून गिर गया इस की वजह से लोग जम्अ़ हो गए लेकिन आप को इस के बारे में इ़ल्म न हुवा ह़त्ता की नमाज़ मुकम्मल कर ली।(3)

नमाज़ अमानत है :

जब नमाज़ का वक़्त आता तो अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تعالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم पर कपकपी त़ारी हो जाती और चेहरे का रंग बदल जाता। अ़र्ज़ की जाती : "ऐ अमीरल मोअमिनीन رَضِیَ اللّٰهُ تعالٰی عَنْهُ ! आप को क्या हुवा ?" फ़रमाते : "ऐसा वक़्त आया है जो अमानत है। इस अमानत को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने ज़मीनो आस्मान और पहाड़ों पर पेश किया तो उन्हों ने इसे उठाने से इन्कार कर दिया और डर गए जब कि मैं (या'नी इब्ने आदम) ने इसे उठा लिया।"(4)

---

(1) المستطرف فی کل فن مستطرف، الباب الاول فی مبانی الاسلام، الفصل الثانی، ج ۱، ص ۱۵، نحوہ۔

(2) حلیة الاولیاء، مسلم بن یسار: ۱۹۴، الحدیث: ۲۴۴۰، ج ۲، ص ۳۲۹، نحوہ۔

(3) حلیة الاولیاء، مسلم بن یسار: ۱۹۴، الحدیث: ۲۴۴۲، ج ۲، ص ۳۳۰، نحوہ۔
قوت القلوب، الفصل الثالث والثلاثون فی ذکر دعائم الاسلام......الخ، ج ۲، ص ۱۲۹، مفھومًا۔

(4) روح المعانی، الجزء الثانی والعشرون، سورۃ الاحزاب: ۷۲، ص ۳۷۳۔

सय्यिदुना इमाम ज़ैनुल आ़बेदीन عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْمُبِیْن और नमाज़ :

मन्क़ूल है कि इमाम ज़ैनुल आ़बेदीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली बिन हुसैन رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ जब वुज़ू करते तो चेहरे का रंग ज़र्द पड़ जाता। अहले ख़ाना कहते : "वुज़ू करते वक़्त आप पर किस चीज़ का ख़ौफ़ त़ारी हो जाता है ?" फ़रमाते : "क्या तुम जानते हो कि मैं किस की बारगाह में खड़े होने का इरादा कर रहा हूं।"(1)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के घर में रहने वाला ख़ुश नसीब :

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا फ़रमाते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना दावूद عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام अपनी दुआ़ओं में यूं अ़र्ज़ करते : "ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तेरे घर (या'नी जन्नत) में कौन रहेगा और तू किस की नमाज़ क़बूल फ़रमाता है ?" अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने वह्य फ़रमाई : ऐ दावूद ! मेरे घर में वोही रहेगा और मैं उसी की नमाज़ क़बूल करता हूं जो मेरी अ़ज़मत के सामने आ़जिज़ी इख़्तियार करता, दिन मेरे ज़िक्र में गुज़ारता, अपने नफ़्स को ख़्वाहिशात से रोकता, मेरी रिज़ा के लिये भूकों को खाना खिलाता, मुसाफ़िर और मुसीबत ज़दा को पनाह देता है। येह वोह शख़्स है जिस का नूर आस्मानों में सूरज की त़रह़ चमकता है। अगर वोह मुझे पुकारे तो मैं उसे जवाब देता हूं। अगर मुझ से मांगे तो उसे अ़त़ा करता हूं। मैं उसे जहालत के वक़्त ह़िल्म अ़त़ा करता, ग़फ़्लत में ज़िक्र की तौफ़ीक़ बख़्शता और तारीकियों में रोशनी अ़त़ा करता हूं। इस की मिषाल लोगों में ऐसी है जैसे तमाम जन्नतों में फ़िरदौसे आ'ला की, जिस की नहरें ख़ुश्क नहीं होतीं और उस के फल ख़राब नहीं होते।" (2)

सय्यिदुना ह़ातिमे असम عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَكْرَم और नमाज़ :

मन्क़ूल है कि ह़ज़रते सय्यिदुना ह़ातिमे असम عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَكْرَم से किसी ने इन की नमाज़ की कैफ़िय्यत के बारे में पूछा तो फ़रमाया : "जब नमाज़ का वक़्त क़रीब आता है तो मैं कामिल वुज़ू करता हूं फिर जिस जगह नमाज़ पढ़ने का इरादा होता है वहां आ कर बैठ जाता हूं यहां तक कि मेरे तमाम आ'ज़ा जम्अ़ हो जाते हैं। फिर येह तसव्वुर बांध कर नमाज़ के लिये खड़ा होता हूं कि का'बतुल्लाह मुशर्रफ़ा मेरे सामने, पुल सिरात़ पाउं तले, जन्नत मेरे दाईं जानिब, जहन्नम

---

1 ......الزھد للامام احمد بن حنبل، زھد عاصم بن ھبیرۃ، الحدیث:٢١٣٨، ص ٣٦٣۔

2 ......الزھد للامام احمد بن حنبل، زھد عاصم بن ھبیرۃ، الحدیث:٢١٣٨، ص ٣٦٣۔

बाईं त़रफ़ और मलकुल मौत عَلَیْہِ السَّلَام मेरे पीछे हैं और गुमान करता हूं कि येह मेरी आख़िरी नमाज़ है। फिर उम्मीद व ख़ौफ़ की दरमियानी ह़ालत में होता हूं। फिर ह़क़ीक़तन तक्बीरे तह़रीमा कहता, ठहर ठहर कर क़िराअत करता, आ़जिज़ी के साथ रुकूअ़ और ख़ुशूअ़ के साथ सजदा करता हूं। फिर दाएं पहलू पर क़ा'दा करता और बायां पाउं बिछा कर इस पर बैठ जाता हूं और दाएं पाउं को अंगूठे पर खड़ा करता हूं। फिर इख़्लास से काम लेता हूं। इस के बा'द मैं नहीं जानता कि **मेरी नमाज़ क़बूल होती है या नहीं** ?"(1)

पूरी रात इबादत से बेहतर अ़मल :

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْھُمَا फ़रमाते हैं : "ग़ौरो फ़िक्र के साथ दो रक्अ़त नफ़्ल अदा करना, ग़ाफ़िल दिल के साथ पूरी रात क़ियाम (या'नी इबादत) करने से बेहतर है।"(2)

....मुर्दों की ता'दाद के बराबर अज्र.....

*जो क़ब्रिस्तान में **11** बार सूरए इख़्लास पढ़ कर मुर्दों को इस का **ईसाले षवाब** करे तो मुर्दों की ता'दाद के बराबर **ईसाले षवाब** करने वाले को इस का अज्र मिलेगा।* (کشف الخفاء،الحدیث۲۶۲۹،ج۲،ص۲۵۲)

تُوبُوْا اِلَی اللّٰہ ...... اَسْتَغْفِرُاللّٰہ

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ...... صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

1 ......قوت القلوب، الفصل الثالث والثلاثون فی ذکر دعائم الاسلام......الخ، ج ۲، ص ۱۷۱، بتغیرٍ۔

2 ......الزھد لابن المبارک، باب الاعتبار والتفکر، الحدیث:۲۸۸، ص۹۷۔

सातवीं फ़स्ल : मस्जिद और जाए नमाज़ की फ़ज़ीलत

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

اِنَّمَا يَعْمُرُ مَسٰجِدَ اللّٰهِ مَنْ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ (پ١٠،التوبة:١٨)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : अल्लाह की मस्जिदें वोही आबाद करते हैं जो अल्लाह और क़ियामत पर ईमान लाते ।

मस्जिद की फ़ज़ीलत पर मुश्तमिल सात फ़रामीने मुस्त़फ़ा :

﴾1﴿.....जिस ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये मस्जिद बनाई अगर्चे वोह तीतर (परन्दे) के घोसले के बराबर हो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के लिये जन्नत में एक मह़ल बनाएगा ।(1)

﴾2﴿.....जो मस्जिद से मह़ब्बत रखता है अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस से मह़ब्बत फ़रमाता है ।(2)

﴾3﴿.....जब तुम में से कोई मस्जिद में दाख़िल हो तो बैठने से पहले दो रक्अ़त नमाज़ अदा कर ले ।(3)

﴾4﴿..... मस्जिद के पड़ोसी की, मस्जिद के इलावा (घर में या कहीं और) नमाज़ कामिल नहीं होती ।(4)

﴾5﴿.....जब तक तुम में से कोई नमाज़ अदा कर के वहां बैठा रहता है तब तक फ़िरिश्ते उस के लिये दुआ़ए रह़मत करते रहते हैं और कहते : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! इस पर रह़मत नाज़िल फ़रमा । ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! इस पर रह़म फ़रमा । ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! इस की मग़फ़िरत फ़रमा । उस वक़्त तक दुआ़ करते रहते हैं जब तक कि बे वुज़ू न हो जाए या मस्जिद से चला न जाए ।(5)

﴾6﴿.....आख़िरी ज़माने में मेरी उम्मत के कुछ लोग होंगे जो गुरौह दर गुरौह मस्जिद में आ कर बैठेंगे उन का ज़िक्र दुन्या और दुन्या की मह़ब्बत होगी । तुम उन के साथ न बैठना कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ को उन से कोई ह़ाजत नहीं ।(6)

---

(1)......شعب الایمان للبیهقی،باب فی الصلوات،فصل المشی الی المساجد،الحدیث:۲۹۴۲،ج۳،ص۸۱،بتغیرٍ۔

(2)......المعجم الاوسط، الحدیث:۶۳۸۳، ج۲، ص۴۰۰۔

(3)......صحیح البخاری، کتاب الصلاة، باب اذادخل المسجد......الخ، الحدیث:۴۴۴، ج۱، ص۱۷۰۔

(4)......سنن الدارقطنی، کتاب الصلاة ، باب الحث لجارالمسجد علی الصلاة......الخ، الحدیث:۱۵۳۸، ج۱، ص۵۵۴۔

(5)......صحیح البخاری، کتاب الصلاة، باب الحدث فی المسجد، الحدیث:۴۴۵، ج۱، ص۱۷۰۔

(6)......المعجم الکبیر،عبداللّٰه بن مسعود، الحدیث:۱۰۴۵۲، ج۱۰، ص۱۹۸۔
التفسیر الکبیرللرازی، الجزء السادس عشر، سورة التوبة، ج۶، ص۱۱۔

बा'ज़ किताबों में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का येह फ़रमान मौजूद है : "मेरी ज़मीन में मेरे घर मसाजिद हैं और इन में मेरी ज़ियारत करने वाले वोह हैं जो इन्हें आबाद करते हैं। पस उस बन्दे को मुबारक हो जो अपने घर में पाकीज़गी ह़ासिल करे फिर मेरे घर में मेरी ज़ियारत करे और जिस की ज़ियारत की जाए उस पर ह़क़ है कि वोह ज़ियारत करने वाले की इ़ज़्ज़त करे।"[1]

﴾7﴿.....जब तुम किसी शख़्स को मस्जिद में आता जाता देखो तो उस के ईमान की गवाही दो।[2]

मस्जिद की फ़ज़ीलत पर मुश्तमिल आठ अक़्वाले बुज़ुर्गाने दीन :

﴾1﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन मुसय्यब رَحْمَةُ اللّٰهِ تعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : "जो मस्जिद में बैठता है वोह अपने रब्ब के हु़ज़ूर बैठता है तो उसे अच्छी बात ही करनी चाहिये।"[3]

नीज़ मरवी है कि "मस्जिद में दुन्या की बातें करना नेकियों को यूं खा जाता है जैसे चोपाए घास खा जाते हैं।"[4]

﴾2﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम नख़ई عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَلِی फ़रमाते हैं : "अस्लाफ़े किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام तारीक रात में मस्जिद जाने को जन्नत में जाने का ज़रीआ़ समझते थे।"[5]

﴾3﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰهُ تعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं : "जिस ने मस्जिद में चराग़ जलाया तो जब तक मस्जिद में रोशनी रहती है तब तक आ़म फ़िरिश्ते और अ़र्श उठाने वाले ख़ास फ़िरिश्ते उस के लिये दुआ़ए मग़फ़िरत करते रहते हैं।"[6]

﴾4﴿.....अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تعَالٰی وَجْهَهُ الْکَرِیْم फ़रमाते हैं कि "जब बन्दा फ़ौत होता है तो ज़मीन में उस की जाए नमाज़ और आस्मान में उस के अ़मल

---

1 ......التفسیر الکبیر للرازی، الجزء السادس عشر، سورۃ التوبۃ، ج٦، ص ١١۔

2 ......سنن الترمذی، کتاب التفسیر، باب ومن سورۃ التوبۃ، الحدیث:٣١٠٤، ج٥، ص ٢٤۔

3 ......الزھد لابن المبارک ، باب فضل المشی الی الصلاۃ......الخ، الحدیث:٤١٢، ص ١٤٠۔

4 ......التفسیر الکبیر للرازی،الجزء السادس عشر،سورۃ التوبۃ،ج٦،ص ١١۔

5 ......شرح السنۃ،کتاب الصلاۃ،باب فضل اتیان المساجد، الحدیث:٤٧٤،ج٢،ص١١٨،بتقدمٍ وتاخرٍ۔

6 ......التفسیر الکبیر للرازی، الجزء السادس عشر، سورۃ التوبۃ، ج٦، ص ١١، عن النبی صلی اللّٰہ علیہ وسلم دون ذالک۔

का ठिकाना उस पर रोते हैं।" फिर आप رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہ ने येह आयते मुबारका तिलावत फ़रमाई :

فَمَا بَكَتْ عَلَيْهِمُ السَّمَآءُ وَالْاَرْضُ وَمَا كَانُوْا مُنْظَرِيْنَ۠ ﴿۲۹﴾ (پ۲۵،الدخان:۲۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तो उन पर आस्मान और ज़मीन न रोए और उन्हें मोहलत न दी गई। (1)

﴾5﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं : "चालीस सुब्ह़ उस पर ज़मीन रोती रहती है।"(2)

﴾6﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अ़त़ा ख़ुरासानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّوْرَانِی फ़रमाते हैं : "जो शख़्स ज़मीन के जिस ह़िस्से पर भी नमाज़ पढ़ता है तो वोह ह़िस्सा क़ियामत के दिन इस की गवाही देगा और जिस दिन येह मरता है वोह इस पर रोता है।"(3)

﴾7﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : "ज़मीन के जिस ह़िस्से पर नमाज़ या ज़िक्र के ज़रीए **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ को याद किया जाए वोह ह़िस्सा इर्द गिर्द की ज़मीन पर फ़ख़्र करता है और सात ज़मीनों तक **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के ज़िक्र से ख़ुश होता है और जब कोई बन्दा खड़े हो कर नमाज़ पढ़ता है तो उस के लिये ज़मीन को आरास्ता किया जाता है।"(4)

﴾8﴿.....मन्क़ूल है कि "(अषनाए सफ़र) जब कोई क़ौम किसी जगह ठहरती है तो वोह जगह उस के लिये दुआ़ए रह़मत करती या उस पर ला'नत भेजती है।"(5)

تُوْبُوْا اِلَی اللّٰہ ...... اَسْتَغْفِرُاللّٰہ

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ...... صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

---

1 ......الزھد لابن المبارک، باب فخر الارض بعضھا علی بعض، الحدیث:۳۳۶، ص ۱۱۴۔

2 ......الزھد لابن المبارک، باب فخر الارض بعضھا علی بعض، الحدیث:۳۳۸، ص ۱۱۴،بتقدمٍ و تاخرٍ۔

3 ......الزھد لابن المبارک، باب فخر الارض بعضھا علی بعض ، الحدیث:۳۴۰، ص۱۱۵۔

4 ......الزھد لابن المبارک، باب فخر الارض بعضھا علی بعض، الحدیث:۳۳۹، ص۱۱۵۔

5 ......الزھد لابن المبارک، باب فخر الارض بعضھا علی بعض، الحدیث:۳۳۴، ص۱۱۳۔

बाब नम्बर 2 : ज़ाहिरी आ'माल की कैफ़िय्यत व आदाब का बयान

(इस में तीन फ़स्लें हैं)

पहली फ़स्ल : नमाज़ में ज़ाहिरी आ'माल की कैफ़िय्यत और तक्बीरे तह़रीमा से इब्तिदा करना

नमाज़ का त़रीक़ा :[1]

नमाज़ पढ़ने वाले को चाहिये कि जब बदन, मकान, लिबास, नाफ़ से घुंटनों के नीचे तक सित्रे औ़रत पर नापाकी वग़ैरा से पाकी ह़ासिल कर ले और वुज़ू से फ़ारिग़ हो जाए तो क़िब्ला रुख़ हो कर खड़ा हो जाए।

पहला रुक्न क़ियाम :

दोनों क़दमों के दरमियान फ़ासिला रखे, इन्हें न मिलाए क्यूंकि येह उन चीज़ों में से है जिन से आदमी की समझ पर इस्तिदलाल किया जाता है।

नीज़ मह़बूबे रब्बे ज़ुल जलाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّى اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने नमाज़ में एक पाउं उठाने या दोनों पाउं मिला कर रखने से मन्अ़ फ़रमाया है।[2]

येह उस के बारे में है जो खड़ा होते वक़्त अपने पाउं के मुआ़मले में इस बात का ख़याल रखता है, घुटनों और कमर को सीधा खड़ा करता है और जहां तक सर का मुआ़मला है तो अगर चाहे तो सर को सीधा रखे चाहे तो झुका दे बल्कि झुकाना ख़ुशूअ़ के ज़ियादा क़रीब और आंखों को ज़ियादा पस्त करने वाला है। इस की निगाह सिर्फ़ जाए नमाज़ पर रहे जिस पर नमाज़ पढ़ रहा है। अगर जाए नमाज़ न हो तो दीवार के क़रीब खड़ा हो या कोई लकीर खींच दे इस से निगाह आगे नहीं बढ़ेगी और सोच में इन्तिशार पैदा नहीं होगा। आंखों को जाए नमाज़ के कनारों और

---

1 ...... फ़िक़्हे अह़नाफ़ के मुत़ाबिक़ नमाज़ के फ़ज़ाइल व मसाइल व त़रीक़े के मुतअ़ल्लिक़ तफ़्सीली मा'लूमात ह़ासिल करने के लिये दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 1250 सफ़्ह़ात पर मुश्तमिल किताब **बहारे शरीअ़त** जिल्द अव्वल, हिस्सा 3 और 4 सफ़्ह़ा 433 ता 865 या शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना **अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी** دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ की तह़रीर कर्दा 499 सफ़्ह़ात पर मुश्तमिल किताब **नमाज़ के अह़काम** का मुत़ालआ़ कीजिये।

2 ......قوت القلوب، الفصل الثالث والثلاثون فی ذکر دعائم الاسلام......الخ، ج ۲، ص ۱۵۸ ۔

लकीर की हुदूद से तजावुज़ न करने दे। रुकूअ़ तक इस त़रह़ खड़ा रहे और इधर उधर तवज्जोह न करे येह क़ियाम के आदाब हैं। जब इस त़रह़ खड़ा हो जाए और क़िब्ला रू हो कर सर को झुका ले तो शैत़ान से बचने के लिये अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से पनाह त़लब करते हुए सूरए नास या'नी : قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ النَّاسِ की तिलावत करे। फिर इक़ामत कहे, अगर किसी मुक़्तदी के आने की उम्मीद हो तो पहले अज़ान भी कहे।

निय्यते नमाज़ :

फिर निय्यत को ह़ाज़िर करे मषलन ज़ोहर में येह निय्यत करे : "मैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये ज़ोहर की फ़र्ज़ नमाज़ अदा करता हूं।" ताकि लफ़्ज़े अदा के ज़रीए क़ज़ा से, फ़र्ज़ के ज़रीए नफ़्ल से और ज़ोहर के ज़रीए अ़स्र से मुमताज़ हो जाए। इन अल्फ़ाज़ के मआ़नी दिल में ह़ाज़िर होने चाहियें क्यूंकि निय्यत दिल के इरादे का ही नाम है, अल्फ़ाज़ तो याद दिलाने वाले और इन मआ़नी के ज़ुहूर के अस्बाब हैं। फिर तक्बीरे तह़रीमा के आख़िर तक निय्यत को बाक़ी रखने की कोशिश करे ग़ाइब न होने दे।

हाथ उठाने के आदाब :

जब येह बात दिल में ह़ाज़िर हो जाए तो लटके हुए हाथों को कंधों तक इस त़रह़ उठाए कि हथेलियां कंधों के बराबर और दोनों अंगूठे कानों की लौं तक और उंगलियां कानों के सिरों के बराबर हो जाएं ताकि इस के मुतअ़ल्लिक़ वारिद तमाम रिवायात पर अ़मल हो जाए। हथेलियों और अंगूठों को क़िब्ला रू और उंगलियों को कुशादा रखे, उन्हें बन्द न करे, हां उन्हें खोलते या मिलाते हुए तकल्लुफ़ से काम न ले बल्कि त़बई ह़ालत पर छोड़ दे क्यूंकि रिवायत में खुला छोड़ना और मिलाना दोनों त़रीक़े आए हैं। येह इन दोनों के दरमियान है और येही ज़ियादा बेहतर है।

दूसरा रुक्न तक्बीरे तह़रीमा :

जब दोनों हाथ अपनी जगह पर पहुंच जाएं तो इन्हें छोड़ते हुए और निय्यत को ह़ाज़िर रखते हुए तक्बीर कहे फिर दोनों हाथों को नाफ़ से ऊपर और सीने से नीचे बांध ले(1) और दाएं

1.....अह़नाफ़ के नज़्दीक : निय्यत कर के اَللّٰهُ اَكْبَر कहता हुवा हाथ नीचे लाए और नाफ़ के नीचे बांध ले। (बहारे शरीअ़त, जि.1 स. 504)

हाथ की तकरीम के लिये इसे बाएं हाथ के ऊपर इस त़रह़ रखे कि वोह उठा हुवा हो और दाएं हाथ की शहादत की उंगली और दरमियानी उंगली खुली रखते हुए बाज़ू की लम्बाई पर फैला दे जब कि अंगूठे, छोटी उंगली और साथ वाली उंगली के साथ बाएं हाथ की कलाई को पकड़ ले।[1]

तक्बीर कब कही जाए :

(इस के मुतअ़ल्लिक़ तीन रिवायतें हैं :) (1).....हाथों को उठाते वक़्त तक्बीर कही जाए (2).....जब हाथ कंधों के बराबर हो जाएं तब कही जाए (3)....हाथ छोड़ते वक़्त तक्बीर कही जाए।[2]

फ़ैसलए ग़ज़ाली :

इन सब त़रीक़ों में ह़रज नहीं लेकिन हाथों को (कानों के साथ लगाने के बा'द) छोड़ते वक़्त तक्बीर कहना ज़ियादा मुनासिब है। क्यूंकि येह कलिमए अ़क़्द है और एक हाथ को दूसरे हाथ पर रखना भी अ़क़्द की सूरत में होता है जिस की इब्तिदा छोड़ना और इन्तिहा रखना है तक्बीर की इब्तिदा "ا" और आख़िर "ر" पर होती है ताकि फ़े'ल और अ़क़्द में मुत़ाबक़त हो जाए और हाथों का उठाना इस इब्तिदा के लिये मुक़द्दमे की त़रह़ है।

ऐसा भी न हो कि तक्बीर के वक़्त हाथों को उठाते वक़्त आगे या कन्धों के पीछे की त़रफ़ ले जाए और तक्बीर के बा'द दाएं बाएं हाथ झाड़ना भी मुनासिब नहीं बल्कि इन्तिहाई आहिस्तगी के साथ छोड़ दे। हाथ छोड़ने के बा'द दायां हाथ बाएं हाथ पर रखे।

बा'ज़ रिवायात में है कि "आक़ाए दो आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم जब तक्बीर कहते तो अपने दोनों हाथों को छोड़ देते और जब क़िराअत का इरादा फ़रमाते तो दायां हाथ बाएं हाथ पर बांध लेते।"[3]

---

1 ......قوت القلوب، الفصل الثالث و الثلاثون فی ذکر دعائم الاسلام......الخ، ج ۲، ص ۱۵۴، مفہومًا۔
قوت القلوب، الفصل الثالث و الثلاثون فی ذکر دعائم الاسلام......الخ، ج ۲، ص ۱۵۸، دون القمر۔
سنن الترمذی، ابواب الصلاۃ، باب ماجاء فی نشر الاصابع عندالتکبیر، الحدیث: ۲۳۹، ج ۱، ص ۲۷۳، دون الضم۔

2 ......سنن ابی داود، کتاب الصلاۃ، باب رفع الیدین فی الصلاۃ، الحدیث: ۷۲۵، ج ۱، ص ۲۸۴۔
صحیح مسلم، کتاب الصلاۃ، باب استحباب رفع الیدین حذو المنکبین......الخ، الحدیث: ۳۹۰، ص ۲۰۶۔
سنن ابی داود، کتاب الصلاۃ، باب افتتاح الصلاۃ، الحدیث: ۷۳۰، ج ۱، ص ۲۸۵۔

3 ......المعجم الکبیر، الحدیث: ۱۳۹، ج ۲۰، ص ۷۴، مفہومًا۔

अगर येह सह़ीह़ हो तो हमारे बयान कर्दा त़रीक़े से बेहतर है। तक्बीर कहते हुए इस्मे जलालत **अल्लाह** की "ﮦ" को बिग़ैर मुबालग़े के आहिस्ता से (लफ़्ज़े अक्बर के साथ) मिलाए "ﮦ" और (अक्बर के) "ا" के दरमियान "و" का शुबा पैदा न हो कि मुबालग़े के साथ दोनों को मिलाने से "و" की आवाज़ पैदा हो जाती है। अक्बर की "ب" और "ر" के दरमियान "ا" की आवाज़ पैदा न हो जैसे ऐसा लगे कि वोह **अक्बार** कह रहा है और **अक्बर** की "ر" को जज़्म के साथ (या'नी साकिन) पढ़े पेश के साथ न पढ़े। येह तक्बीरे तह़रीमा के आदाब हैं।

तीसरा रुक्न क़िराअत :

फिर शुरूअ़ की दुआ़ पढ़े और तक्बीरे तह़रीमा के बा'द येह कलिमात पढ़े तो बेहतर है :

اَللّٰہُ اَکْبَرُ کَبِیْرًا وَّالْحَمْدُ لِلّٰہِ کَثِیْرًا وَّسُبْحٰنَ اللّٰہِ بُکْرَۃً وَّاَصِیْلًا اِنِّیْ وَجَّھْتُ وَجْھِیَ لِلَّذِیْ فَطَرَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ حَنِیْفًا وَّمَا اَنَا مِنَ الْمُشْرِکِیْنَ

या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ सब से बड़ा है और उस की बे शुमार ता'रीफ़ है और मैं सुब्ह़ो शाम उस की पाकी बयान करता हूं। मैं ने अपना मुंह उस की त़रफ़ किया जिस ने आस्मान व ज़मीन बनाए एक उसी का हो कर और मैं मुशरिकों में नहीं।(1)

फिर षना पढ़े : سُبْحٰنَكَ اللّٰھُمَّ وَبِحَمْدِكَ وَتَبَارَكَ اسْمُكَ وَتَعَالٰى جَدُّكَ وَجَلَّ ثَنَاؤُكَ وَلَآ اِلٰهَ غَيْرُكَ या'नी पाक है तू ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! और मैं तेरी ह़म्द करता हूं तेरा नाम बरकत वाला है और तेरी अ़ज़मत बुलन्द है और तेरी षना बरतर है और तेरे सिवा कोई मा'बूद नहीं।(2)

येह दुआ़ पढ़ने से वोह इस सिलसिले में वारिद मुतफ़र्रिक़ अह़ादीष पर अ़मल करने वाला होगा।

अगर इमाम की इक़्तिदा में हो और इमाम क़िराअत शुरूअ़ कर दे तो षना मुख़्तसर कर दे। फिर तअ़व्वुज़ : "اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ" पढ़े फिर तस्मिय्या : "بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ" से सूरए फ़ातिह़ा की इब्तिदा करे और **मख़ारिज व हुरूफ़** की अदाएगी का ख़ास ख़याल रखे बिल ख़ुसूस "ظ" और "ض" में फ़र्क़ करे।(3)

(सूरए फ़ातिह़ा के इख़्तिताम पर अच्छी त़रह़ मद के साथ "आमीन" कहे और इसे "وَلَا الضَّآلِّيْنَ" के साथ न मिलाए।)

---

1 ......صحیح مسلم، کتاب المساجد و مواضع الصلاۃ، باب مایقال بین تکبیرۃ الاحرام......الخ، الحدیث: ۲۰۱، ص ۳۰۲۔

صحیح مسلم، کتاب صلاۃ المسافرین و قصرھا، باب الدعاء فی صلاۃ اللیل و قیامہ، الحدیث: ۷۷۱، ص ۳۹۰۔

2 ......سنن ابی داود، کتاب الصلاۃ، باب من رأی الاستفتاح......الخ، الحدیث: ۷۷۶، ج ۱، ص ۳۰۰، دون "وجل ثناء ک"۔

3 .....दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 1250 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब बहारे शरीअ़त जिल्द अव्वल सफ़ह़ा 557 पर है : ط ت، س ث ص، ذ ز ظ، ا ء ع، ہ ح، ض ظ د इन हुरूफ़ में सह़ीह़ त़ौर पर इम्तियाज़ रखें, वरना मा'ना फ़ासिद होने की सूरत में नमाज़ न होगी और बा'ज़ तो س ش، ز ج، ق ك में भी फ़र्क़ नहीं करते।

फ़ज्र, मग़रिब और इशा में जह्र (या'नी बुलन्द आवाज़) से क़िराअत करे अगर मुक़्तदी हो तो क़िराअत न करे। (इख़्तितामे फ़ातिहा पर) "اٰمِیْــــن" बुलन्द आवाज़ से कहे।[1] फिर कोई सूरत पढ़े या कुरआने पाक की तीन आयात या इस से ज़ाइद तिलावत करे और सूरत को तक्बीरे रुकूअ़ के साथ न मिलाए बल्कि इन में एक बार "سُبْحٰنَ اللّٰه" कहने की मिक़्दार वक़्फ़ा करे। फ़ज्र की नमाज़ में त़वाले मुफ़स्सल (या'नी सूरए हुजुरात से सूरए बुरूज तक), मग़रिब में क़षारे मुफ़स्सल (या'नी सूरए बय्यिना से आख़िरे कुरआन तक), ज़ोहर, अ़स्र और इशा में अवसाते मुफ़स्सल (या'नी सूरए बुरूज से सूरए बय्यना तक) में से पढ़े।

सफ़र में फ़ज्र की नमाज़ में (वक़्त कम हो तो) सूरए काफ़िरून और सूरए इख़्लास की क़िराअत करे। इसी त़रह़ फ़ज्र की सुन्नतों, त़वाफ़ की नमाज़ और तहिय्यतुल मस्जिद और तहिय्यतुल वुज़ू में भी येही सूरतें पढ़े। इस तमाम वक़्त में वोह खड़ा रहे और हाथों को इस त़रह़ बांधे जिस त़रह़ हम ने नमाज़ के आग़ाज़ में ज़िक्र किया है।

चौथा रुक्न रुकूअ़ और इस के मुतअ़ल्लिक़ात :

फिर रुकूअ़ करे। इस में चन्द उमूर का लिहाज़ रखे, वोह येह हैं : रुकूअ़ की तक्बीर कहे, तक्बीरे रुकूअ़ के वक़्त रफ़्अ़ यदैन[2] करे (या'नी तक्बीरे तह़रीमा की त़रह़ दोनों हाथ बुलन्द करे),

---

❶.....अह़नाफ़ के नज़्दीक : "आमीन" आहिस्ता कहने का हुक्म है। (माख़ूज़ अज़ बहारे शरीअ़त, जि.1 हि. 3, स. 504)

❷.....अह़नाफ़ के नज़्दीक नमाज़ में तक्बीरे तह़रीमा और तक्बीरे क़ुनूत के सिवा कहीं भी रफ़्अ़ यदैन जाइज़ नहीं। चुनान्चे, मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْمَنَّان मिरआतुल मनाजीह़, जि. 2 स. 16 पर ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से मरवी इस ह़दीषे पाक कि "नबी صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم जब नमाज़ शुरूअ़ करते तो अपने दोनों हाथ कन्धों के मुक़ाबिल उठाते और जब रुकूअ़ की तक्बीर कहते और जब रुकूअ़ से सर उठाते तो भी यूंही हाथ उठाते और कहते سَمِعَ اللّٰهُ لِمَنْ حَمِدَهٗ رَبَّنَا لَكَ الْحَمْدُ और सजदे में येह न करते" के तह़्त फ़रमाते हैं : "(कन्धों के मुक़ाबिल हाथ उठाने से मुराद येह है) कि गट्टे कंधों तक रहते और अंगूठे कानों तक। (नीज़) इस ह़दीष से येह तो मा'लूम हुवा कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने रुकूअ़ में जाते आते रफ़्अ़ यदैन किया मगर येह ज़िक्र नहीं किया कि आख़िर वक़्त तक किया। ह़क़ येह है कि रफ़्अ़ यदैन मन्सूख़ है। चुनान्चे ऐनी शर्ह़े बुख़ारी में है कि सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह इब्ने ज़ुबैर ने एक शख़्स को रुकूअ़ में जाते आते रफ़्अ़ यदैन करते देखा तो फ़रमाया ऐसा न किया करो येह वोह काम है जिसे हुज़ूर صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने अव्वलन किया था फिर छोड़ दिया नीज़ सय्यिदुना इब्ने मसऊ़द, उ़मर इब्ने ख़त्ताब, अ़लिय्युल मुर्तज़ा, बरा इब्ने आ़ज़िब, ह़ज़रते अ़लक़मा वग़ैरा बहुत सह़ाबा से कि वोह रफ़्अ़ यदैन न करते थे और करने वालों को मन्अ़ करते थे नीज़ इब्ने अबी शैबा और त़ह़ावी ने ह़ज़रते मुजाहिद से रिवायत की, कि मैं ने ह़ज़रते इब्ने उ़मर के पीछे नमाज़ पढ़ी आप ने सिवा तक्बीरे ऊला के किसी वक़्त हाथ न उठाए ....

तक्बीर को रुकूअ़ में पहुंचने तक खींच कर कहे, रुकूअ़ में हथेलियां घुटनों पर यूं रखे कि उंगलियां खुली हों और पिन्डली की लम्बाई पर क़िब्ला रुख़ हों, घुटनों को खड़ा करे इन्हें न मोड़े, पीठ इस त़रह़ सीधी बिछाए कि गर्दन और सर पीठ के बराबर हों जैसे एक सत़ह़ होती है। सर न तो ज़ियादा झुका हुवा हो और न ज़ियादा बुलन्द हो, (मर्द) कोहनियों को पहलूओं से जुदा रखे जब कि औ़रत कोहनियों को पहलूओं के साथ मिला कर रखे और तीन बार तस्बीह़े रुकूअ़ या'नी : ''سُبْحٰنَ رَبِّیَ الْعَظِیْم'' कहे और सात या दस बार कहना अच्छा है जब कि येह इमाम न हो, फिर ह़स्बे साबिक़ रुकूअ़ से खड़ा होते रफ़्अ़ यदैन करे और तस्मीअ़ या'नी ''سَمِعَ اللّٰہُ لِمَنْ حَمِدَہٗ कहते हुए सीधा खड़ा हो जाए और رَبَّنَا لَكَ الْحَمْدُ مِلْءَ السَّمٰوٰتِ وَمِلْءَ الْاَرْضِ وَمِلْءَ مَا شِئْتَ مِنْ شَیْءٍ بَعْدُ या'नी ऐ हमारे रब्ब عَزَّوَجَلَّ तमाम ख़ूबियां तेरे लिये हैं जो आस्मानों और ज़मीन को भर दे और इस के बा'द जिस चीज़ को तू चाहे भर दे'' कहे, रुकूअ़ से खड़े होने के बा'द (क़ौमा में) सलातुत्तस्बीह़, नमाज़े कुसूफ़ और नमाज़े फ़ज्र के इ़लावा में ज़ियादा खड़ा न हो और नमाज़े फ़ज्र की दूसरी रक्अ़त में सजदों से पहले अह़ादीष में मन्क़ूल अल्फ़ाज़ के साथ दुआ़ए क़ुनूत पढ़े।(1) (2)

पांचवां रुक्न सजदा :

फिर तक्बीर कहते हुए सजदे के लिये झुके और घुंटने, पेशानी और नाक ज़मीन पर रखे और हथेलियां कुशादा रखे, सजदे में जाते और उठते हुए तक्बीर कहे और तक्बीरे रुकूअ़ के इ़लावा कहीं भी रफ़्अ़ यदैन न करे।

..... मा'लूम हुवा कि सय्यिदुना इब्ने उ़मर के नज़्दीक भी रफ़्अ़ यदैन मन्सूख़ है नीज़ रिसाला आफ़्ताबे मुह़म्मदी में है कि ह़ज़रते इब्ने उ़मर की ह़दीष चन्द रिवायतों से मन्क़ूल है जिस में से एक रिवायत में **यूनुस** है जो सख़्त ज़ईफ़ है दूसरी अस्नाद में **अबू क़िलाबा** है जो ख़ारिजियुल मज़्हब था (देखो तहज़ीब) तीसरी अस्नाद में **अ़ब्दुल्लाह** है। येह पक्का राफ़िज़ी था, चौथी अस्नाद में **शोएब इब्ने इस्ह़ाक़** है जो मरजिय्या मज़्हब का था ग़रज़ की रफ़्अ़ यदैन की अह़ादीष की अकषर अस्नादों में बद मज़्हब ख़ुसूसन रवाफ़िज़ बहुत शामिल हैं क्यूंकि येह उन का अ़मल है। हो सकता है कि रवाफ़िज़ के तक़िय्ये की वजह से इमाम बुख़ारी को भी पता न लगा हो। लिहाज़ा मज़्हबे ह़नफ़ी निहायत क़वी है कि नमाज़ों में सिवा तक्बीरे तह़रीमा के और कहीं रफ़्अ़ यदैन न किया जाए।

नोट : रफ़्अ़ यदैन के मुतअ़ल्लिक़ तफ़्सीली मा'लूमात के लिये मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْمَنَّان की माया नाज़ तस्नीफ़ ''जाअल ह़क़'' (मत़बूआ़ क़ादिरी पब्लिशर्ज़) हिस्सए दुवुम, छटा बाब, **रफ़्अ़ यदैन न करो**, स 407 ता 422 का मुत़ालआ़ मुफ़ीद रहेगा।

1.....अह़नाफ़ के नज़्दीक : वित्र के सिवा और किसी नमाज़ में क़ुनूत न पढ़े। हां अगर ह़ादिषए अ़ज़ीमा वाक़ेअ़ हो तो फ़ज्र में भी पढ़ सकता है और ज़ाहिर येह है कि रुकूअ़ से क़ब्ल क़ुनूत पढ़े। (बहारे शरीअ़त, जि.1 स. 657)

2.....السنن الکبری للبیہقی، کتاب الصلاۃ، باب دعاء القنوت، الحدیث:۳۱۴۰، ج۲، ص۲۹۷۔

सजदे का मस्नून त़रीक़ा : सजदे में जाते हुए पहले घुटने, फिर दोनों हाथ, फिर चेहरा, पेशानी और नाक ज़मीन पर रखे, मर्द कोहनियां पहलूओं से जुदा रखे और दोनों पाउं के दरमियान फ़ासिला रखे, सजदे में पेट रानों से अलग रखे, दोनों घुटनों के दरमियान फ़ासिला रखे, ज़मीन पर दोनों हाथ कंधों के बराबर रखे और दोनों हाथों की उंगलियों के दरमियान फ़ासिला न रखे बल्कि इन्हें मिला कर रखे, अगर अंगूठा न मिलाए तो कोई ह़रज नहीं, कुत्ते की त़रह़ बाज़ू बिछा कर सजदा न करे क्यूंकि इस से मन्अ़ किया गया है।[1] तीन बार तस्बीह़े सजदा या'नी "سُبْحٰنَ رَبِّیَ الْاَعْلٰی" कहे। अगर तन्हा नमाज़ पढ़ रहा हो तो ज़ियादा बार कह ले तो अच्छा है। फिर सजदे से उठे और मुत़मइन हो कर ह़ालते ए'तिदाल में बैठे और तक्बीर कहते हुए सर उठाए, बायां पाउं बिछा कर इस पर बैठे और दायां खड़ा रखे, दोनों हाथ घुटनों पर यूं रखे कि उंगलियां फैली हुई अपनी (नॉरमल) ह़ालत में हों। दो सजदों के दरमियान जल्से में येह दुआ़ पढ़े : رَبِّ اغْفِرْلِیْ وَارْحَمْنِیْ وَارْزُقْنِیْ وَاهْدِنِیْ وَاجْبُرْنِیْ وَعَافِنِیْ وَاعْفُ عَنِّیْ या'नी ऐ मेरे रब्ब عَزَّوَجَلَّ मेरी मग़्फ़िरत फ़रमा, मुझ पर रह़्म फ़रमा, मुझे रिज़्क़ अ़त़ा फ़रमा, मुझे हिदायत अ़त़ा फ़रमा, मेरी परेशानी दूर फ़रमा और मुझे आ़फ़िय्यत और मुआ़फ़ी अ़त़ा फ़रमा।"[2] सलातुत्तस्बीह़ के इलावा जल्से को त़वील न करे, इसी त़रह़ दूसरा सजदा करे और सीधा बैठ जाए और हर ऐसी रक्अ़त में इस्तिराह़त के लिये थोड़ी देर बैठे जिस में तशह्हुद नहीं। फिर हाथ ज़मीन पर रख कर खड़ा हो[3] और उठते हुए दोनों पाउं में से एक को भी आगे न करे और तक्बीर को इतना खींचे कि बैठने की ह़ालत से उठने और क़ियाम के दरमियान हो जाए या'नी बैठे हुए लफ़्ज़े अल्लाह की "ہ", खड़ा होने के लिये हाथ के सहारे के वक़्त अक्बर का "ك" और उठते वक़्त दरमियान में पहुंचते हुए अक्बर की "ر" कहे। उठने के दरमियान तक्बीर शुरूअ़ करे ताकि क़ियाम की त़रफ़ इन्तिक़ाल के दरमियान में तक्बीर वाक़ेअ़ हो। दोनों कनारे इस से ख़ाली न हों और येही सूरत उ़मूम

1 ......صحیح مسلم کتاب الصلاۃ، باب الاعتدال فی السجود......الخ، الحدیث:۴۹۳، ص ۲۵۴، مفہومًا۔

2 ......قوت القلوب، الفصل الثالث والثلاثون فی ذکر دعائم الاسلام......الخ، ج۲، ص ۱۵۲، مختصراً۔
سنن الدارقطنی، کتاب الصلاۃ، باب مایجزیہ من الدعاء عندالعجز......الخ، ج ۱، ص ۴۲۲، دون"واعف عنی"۔

3 ....**अह़नाफ़ के नज़दीक :** क़ा'दए ऊला के बा'द तीसरी रक्अ़त के लिये उठे तो ज़मीन पर हाथ रख कर न उठे, बल्कि घुटनों पर ज़ोर और हाथ रख कर उठे, येह सुन्नत है, हां कमज़ोरी वग़ैरा उ़ज़्र के सबब अगर ज़मीन पर हाथ रख कर उठा जब भी ह़रज नहीं। (बहारे शरीअ़त, जि. 1 स. 530, 531 मुलतक़त़न)

के ज़ियादा क़रीब है। अब दूसरी रक्अ़त भी पहली की त़रह़ पढ़े और इस में भी इब्तिदा में तअ़व्वुज़ "اَعُوْذُبِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ" पढ़े।[1]

छटा रुक्न क़ा'दा :

फिर दूसरी रक्अ़त (के बा'द क़ा'दा) में तशह्हुद पढ़े, फिर हु़ज़ूरे अन्वर, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم और आप की आल पर दुरूदे पाक भेजे।[2] अपना दायां हाथ दाईं रान पर रखे और दाएं हाथ की उंगलियों को बन्द कर के सिर्फ़ अंगुश्ते शहादत से इशारा करे, अंगूठे को खुला छोड़ने में भी ह़रज नहीं, "اِلَّا اللّٰہ" पर इशारा करे "لَا اِلٰہ" पर[3] नहीं, तशह्हुद में इसी त़रह़ बैठे जैसे दो सजदों के दरमियान बैठते हैं और आख़िरी तशह्हुद में (या'नी क़ा'दए अख़ीरा में बा'दे तशह्हुद) हु़ज़ूर नबिय्ये रह़मत صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم पर दुरूदे पाक पढ़ने के बा'द मस्नून दुआ़ पढ़े।[4]

क़ा'दए अख़ीरा में वोही बातें सुन्नत हैं जो क़ा'दए ऊला में हैं लेकिन इस में बाईं सुरीन पर बैठे कि अब वोह उठने का इरादा नहीं करता बल्कि क़रार पकड़ने वाला है। बायां पाउं अपने नीचे से दूसरी त़रफ़ निकाले और दाएं पाउं को खड़ा कर ले और अगर इसे तक्लीफ़ न हो तो अंगूठे का सिरा क़िब्ला रुख़ कर ले।

सातवां रुक्न सलाम :

फिर "اَلسَّلَامُ عَلَیْکُمْ وَرَحْمَةُ اللّٰہ" कहते हुए सलाम फैर दे। दाईं त़रफ़ इस त़रह़ चेहरा फेरे कि

1.....**अह़नाफ़ के नज़्दीक :** तअ़व्वुज़ सिर्फ़ पहली रक्अ़त में है और तस्मिय्या हर रक्अ़त के अव्वल में मस्नून है फ़ातिह़ा के बा'द अगर अव्वल सूरत शुरूअ़ की तो सूरत पढ़ते वक़्त بِسْمِ اللّٰہ पढ़ना मुस्तह़सन है, क़िराअत ख़्वाह सिर्री हो या जहरी, मगर بِسْمِ اللّٰہ बहर ह़ाल आहिस्ता पढ़ी जाए। (बहारे शरीअ़त, जि.1 स. 523)

2.....**अह़नाफ़ के नज़्दीक :** क़ा'दए अख़ीरा के इ़लावा फ़र्ज़ नमाज़, सुनने मुअक्कदा में दुरूद शरीफ़ पढ़ना नहीं और नवाफ़िल, सुनने ग़ैर मुअक्कदा के क़ा'दए ऊला में भी मस्नून है।(बहारे शरीअ़त, जि.1 स. 534 ,667 मुलख़्ख़सन)

3.....**अह़नाफ़ के नज़्दीक :** जब कलिमा لَا के क़रीब पहुंचे, दहने हाथ की बीच की उंगली और अंगूठे का ह़ल्क़ा बनाए और छुंगलिया और इस के पास वाली को हथेली से मिला दे और लफ़्ज़े لَا पर कलिमे की उंगली उठाए मगर इस को जुम्बीश न दे और कलिमए اِلَّا पर गिरा दे और सब उंगलियां फ़ौरन सीधी कर ले।

(बहारे शरीअ़त, जि.1 स. 505)

4.....صحیح مسلم، کتاب صلاۃ المسافرین وقصرھا، باب الدعاء فی صلاۃ اللیل وقیامہ،الحدیث:۷۷۱،ص۳۹۰۔

इस के पीछे दाईं त़रफ़ बैठा हुवा शख़्स उस के रुख़्सार को देख सके फिर इसी त़रह़ बाईं त़रफ़ सलाम फेरे और दूसरे सलाम के साथ नमाज़ से निकलने की निय्यत करे, पहले सलाम में दाईं और दूसरे में बाईं जानिब के फ़िरिश्तों और मुसलमानों को सलाम करने की निय्यत करे। सलाम में सुन्नत त़रीक़ा येह है कि तख़्फ़ीफ़ करे ज़ियादा न खींचे।[1] **येह अकेले नमाज़ पढ़ने का त़रीक़ा है।** तक्बीरें कहते हुए आवाज़ इतनी बुलन्द करे कि ख़ुद सुन ले।

इमाम व मुक़्तदी के लिये मुस्तह़ब उमूर :

इमाम इमामत की निय्यत करे ताकि फ़ज़ीलत को पा ले अगर इस ने इमामत की निय्यत न की और लोगों ने इक़्तिदा की निय्यत कर ली तो उन की नमाज़ सह़ीह़ है और वोह जमाअ़त की फ़ज़ीलत को पा लेंगे। अकेले शख़्स की त़रह़ इमाम भी षना और तअ़व्वुज़ (व तस्मिय्या) आहिस्ता पढ़े और फ़ज्र की दोनों रक्अ़तों और मग़रिब व इ़शा की पहली दो रक्अ़तों में सूरए फ़ातिह़ा और कोई दूसरी सूरत बुलन्द आवाज़ से पढ़े, तन्हा नमाज़ पढ़ने वाला भी इस त़रह़ कर सकता है (लेकिन इस पर इन नमाज़ों में बुलन्द आवाज़ से क़िराअत वाजिब नहीं)। जह्‌री नमाज़ों (या'नी फ़ज्र, मग़रिब व इ़शा) में इमाम व मुक़्तदी दोनों बुलन्द आवाज़ से आमीन कहें।[2] नीज़ मुक़्तदी इमाम के साथ आमीन कहे। इमाम सूरए फ़ातिह़ा के बा'द कुछ सक्ता करे ताकि इस का सांस लौट आए और मुक़्तदी जहरी नमाज़ों में इस सक्ते के दौरान सूरए फ़ातिह़ा पढ़े ताकि इमाम जब क़िराअत करे तो इस की क़िराअ़त सुने मुक़्तदी जहरी नमाज़ों में किराअत न करे (या'नी कोई सूरत न पढ़े) लेकिन अगर उस तक इमाम की आवाज़ न पहुंच रही हो तो क़िराअत कर सकता है।[3] इमाम व मुक़्तदी रुकूअ़ से सर उठाते हुए "سَمِعَ اللّٰہُ لِمَنْ حَمِدَہٗ" कहे।[4]

---

1 ......سنن ابی داود، کتاب الصلاۃ، باب حذف السلام، الحدیث:۱۰۰۴، ج۱، ص۳۷۵۔

2 .....अह़नाफ़ के नज़्दीक : आमीन आहिस्ता आवाज़ में कहने का हुक्म है। (माख़ूज़ अज़ बहारे शरीअ़त, जि.1 स. 504)

3 ..... अह़नाफ़ के नज़्दीक : मुक़्तदी को नमाज़ में क़िराअत जाइज़ नहीं, न सूरए फ़ातिह़ा, न आयत, न सिर्री (या'नी आहिस्ता क़िराअत वाली) नमाज़ में न जहरी (या'नी बुलन्द आवाज़ से क़िराअत वाली) नमाज़ में। इमाम की क़िराअत मुक़्तदी के लिये काफ़ी है। (مراقی الفلاح معہ حاشیۃ الطحطاوی،ص۲۲۷)

4 .....अह़नाफ़ के नज़्दीक : रुकूअ़ से उठने में इमाम के लिये "سَمِعَ اللّٰہُ لِمَنْ حَمِدَہٗ" कहना और मुक़्तदी के लिये "اَللّٰھُمَّ رَبَّنَا وَ لَکَ الْحَمْدُ" कहना और मुन्फ़रिद को दोनों कहना सुन्नत है। (बहारे शरीअ़त, जि.1 स. 527)

इमाम रुकूअ़ व सुजूद में तीन से ज़ियादा तक्बीरात न कहे और पहले (क़ा'दा में) तशह्हुद के बा'द "اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّعَلٰی اٰلِ مُحَمَّد" से ज़ियादा कुछ न पढ़े[1] और आख़िरी दो रक्अ़तों (के क़ियाम) में सूरए फ़ातिह़ा पर इक्तिफ़ा करे, लोगों को लम्बी नमाज़ न पढ़ाए और क़ा'दए अख़ीरा के तशह्हुद और दुरूदे पाक की मिक़्दार से ज़ियादा लम्बी दुआ़ न मांगे और सलाम फेरते वक़्त फ़िरिश्तों और मुक़्तदियों को सलाम करने की निय्यत करे और मुक़्तदी अपने सलाम में इमाम के जवाब की भी निय्यत करें।

इमाम बा'दे सलाम कुछ देर तवक्कुफ़ करे ताकि लोग सलाम वग़ैरा कह कर फ़ारिग़ हो जाएं फिर इमाम अपना चेहरा लोगों की त़रफ़ कर ले। अगर मर्दों के पीछे नमाज़ में औ़रतें भी शामिल हों तो इमाम का इतनी देर ठहरना औला है कि वोह चली जाएं। जब तक इमाम खड़ा न हो कोई मुक़्तदी खड़ा न हो और इमाम दाएं या बाएं जिस त़रफ़ चाहे रुख़ फेर सकता है लेकिन दाईं जानिब फिरना ज़ियादा बेहतर है।

इमाम फ़ज्र की दुआ़ए क़ुनूत में ख़ास अपने लिये दुआ़ न मांगे बल्कि यूं कहे : "اَللّٰھُمَّ اِھْدِنَا या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें हिदायत अ़त़ा फ़रमा।" इमाम बुलन्द आवाज़ से दुआ़ए क़ुनूत पढ़े और लोग आमीन कहें और अपने हाथों को सीनों के बराबर उठाए रखें, दुआ़ के इख़्तिताम पर इन्हें चेहरे पर फेर लें इस वजह से कि इस के मुतअ़ल्लिक़ ह़दीष मन्क़ूल है वरना क़ियास का तक़ाज़ा तो येह है कि तशह्हुद के बा'द वाली दुआ़ की त़रह़ यहां भी हाथ न उठाए जाएं।

﴾.....नूरानी लिबास.....﴿

एक बुज़ुर्ग ने अपने मर्ह़ूम भाई को ख़्वाब में देख कर पूछा : "क्या ज़िन्दा लोगों की दुआ़ तुम लोगों को पहुंचती है?" तो उन्हों ने जवाब दिया : "हां! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम! वोह नूरानी लिबास की सूरत में आती है उसे हम पहन लेते हैं।"

(شرح الصدور،ص۳۰۵)

---

1 .....**अह़नाफ़ के नज़दीक :** फ़र्ज़ व वित्र व सुनने रवातिब (या'नी सुन्नते मुअक्कदा) में क़ा'दए ऊला में तशह्हुद (या'नी अत्तह़िय्यात) पर कुछ न बढ़ाना वाजिब है। (बहारे शरीअ़त, जि. 1 स. 518) (नीज़ फ़र्ज़ व वित्र व सुनने रवातिब में भूले से) क़ा'दए ऊला में तशह्हुद के बा'द इतना पढ़ा "اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ" तो सजदए सह्व वाजिब है इस की वजह येह नहीं कि दुरूद शरीफ़ पढ़ा बल्कि इस की वजह येह है कि तीसरी रक्अ़त के क़ियाम में ताख़ीर हुई। लिहाज़ा अगर इतनी देर तक ख़ामोश रहा जब भी सजदए सह्व वाजिब है। (नमाज़ के अह़काम, स. 279)

दूसरी फ़स्ल :

ममनूआते नमाज़

आक़ाए दो जहां, मह़बूबे रह़मान صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ و اٰلہٖ وسلَّم ने नमाज़ में दोनों पाउं मिला कर रखने और एक पाउं पर खड़ा होने से मन्अ़ फ़रमाया।[1] नीज़ इन दस बातों से भी मन्अ़ फ़रमाया : (1).....इक़्आ़[2] (2).....सदल[3] (3).....कफ़[4] (4)....इख़्तिसार[5] (5)....सुल्ब[6] (6).....मुवासला[7] (7).....सलातुल ह़ाक़िन[8] (8).....ह़ाक़िब[9] (9).....ह़ाज़िक़[10] (10)....जाएअ़, ग़ज़्बान व मुतलषिम।[11]

मज़्कूरा उमूर की तफ़्सील :

﴾1﴿.....**इक़्आ़ :** अहले लुग़त के नज़्दीक इक़्आ़ येह है कि कोई शख़्स अपनी सुरीन पर बैठे, घुटनों को खड़ा कर के हाथ ज़मीन पर रख दे जैसे कुत्ता बैठता है, जब कि मुह़द्दिषीन के नज़्दीक इक़्आ़ येह है कि अपनी पिन्डलियों पर यूं बैठे कि ज़मीन पर सिर्फ़ पाउं की उंगलियों के सिरे और घुटने लगे हुए हों।

﴾2﴿.....**सदल :** इस में मुह़द्दिषीन का मौक़िफ़ येह है कि नमाज़ी कपड़ा लपेट कर हाथों को अन्दर दाख़िल करे और इसी त़रह़ रुकूअ़ व सुजूद करे। यहूद इस त़रह़ इबादत किया करते थे लिहाज़ा इन के साथ मुशाबहत की वजह से इस से मन्अ़ कर दिया गया। क़मीस भी इसी हुक्म में है, लिहाज़ा नमाज़ी के लिये मुनासिब नहीं कि दोनों हाथ क़मीस में डाले हुए रुकूअ़ व सुजूद

---

1 ......قوت القلوب،الفصل الثالث و الثلاثون فی ذکر دعائم الاسلام......الخ، ج ۲، ص ۱۵۸، بتقدمٍ وتاخرٍ۔

2 ......سنن ابن ماجہ،کتاب الصلاۃ، باب الجلوس بین السجدتین، الحدیث:۸۹۴،۸۹۵، ج ۱، ص ۴۸۲۔

3 ......سنن ابی داود،کتاب الصلاۃ، باب ماجاء فی السدل فی الصلاۃ، الحدیث:۶۴۳، ج ۱، ص ۲۵۹۔

4 ......صحیح مسلم،کتاب الصلاۃ، باب اعضاء السجود......الخ، الحدیث:۴۹۰، ص ۲۵۳۔

5 ......صحیح مسلم،کتاب المساجد و مواضع الصلاۃ، باب کراھۃ الاختصارفی الصلاۃ، الحدیث:۵۴۵، ص ۲۷۶۔

6 ......سنن ابی داود،کتاب الصلاۃ، باب فی التخصر و الاقعاء، الحدیث:۹۰۳، ج ۱، ص ۳۴۲۔

7 ......صحیح مسلم،کتاب المساجد و مواضع الصلاۃ، باب مایقال بین تکبیرۃ الاحرام......الخ، الحدیث:۵۹۸، ص ۳۰۲۔

8 ......سنن ابن ماجہ،کتاب الطھارۃ و سننھا، باب ماجاء فی النھی للحاقن ان یصلی، الحدیث:۶۱۷، ج ۱، ص ۳۴۲۔

9 ......صحیح مسلم،کتاب المساجدومواضع الصلاۃ،باب کراھۃ الصلاۃ بحضرۃ الطعام......الخ،الحدیث:۵۶۰، ص ۲۸۱۔

10 ......قوت القلوب، الفصل الثالث و الثلاثون فی ذکر دعائم الاسلام......الخ، ج ۲، ص ۱۶۰۔

11 ......صحیح مسلم،کتاب المساجد و مواضع الصلاۃ، باب کراھۃ الصلاۃ بحضرۃ الطعام......الخ، الحدیث:۵۵۷، ص ۲۸۰۔

قوت القلوب، الفصل الثالث و الثلاثون فی ذکر دعائم الاسلام......الخ، ج ۲، ص ۱۶۰۔

سنن ابی داود، کتاب الصلاۃ، باب ماجاء فی السدل فی الصلاۃ، الحدیث:۶۴۳، ج ۱، ص ۲۵۹۔

करे। एक क़ौल के मुताबिक़ इस का मा'ना येह है कि नमाज़ी चादर का दरमियान वाला हिस्सा सर पर रखे और इस के दोनों कनारे दाएं बाएं लटका दे इन्हें अपने कन्धों पर न रखे।[1] पहला मा'ना ज़ियादा मुनासिब है।

﴾3﴿.....**कफ़ :** या'नी सजदे में जाते हुए आगे या पीछे से कपड़ा उठाना और कभी सर के बालों का जोड़ा बना लिया जाता है। लिहाज़ा मर्द को चाहिये कि सर के बालों को लपटे हुए नमाज़ न पढ़े। ह़दीषे पाक में है कि हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : मुझे हुक्म दिया गया है कि सात आ'ज़ा पर सजदा करूं और बालों और कपड़ों को न लपेटूं।[2]

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अह़मद बिन ह़म्बल عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَوَّل ने नमाज़ में क़मीस के ऊपर चादर बान्धने से मन्अ़ फ़रमाया और इसे कफ़ (या'नी लपेटना या समेटना) क़रार दिया।

﴾4﴿.....**इख़्तिसार :** नमाज़ी का अपने हाथों को कमर पर (या'नी दोनों पहलूओं के वस्त में) रखना।[3]

﴾5﴿.....**सुल्ब :** ह़ालते क़ियाम में दोनों हाथ कमर पर यूं रखना कि बाज़ू जिस्म से जुदा रहें।

﴾6﴿.....**मुवासला :** के पांच त़रीक़े हैं :

दो का तअ़ल्लुक़ इमाम के साथ है : (1).....इमाम क़िराअत को तक्बीरे तह़रीमा से न मिलाए (2).....न ही रुकूअ़ को क़िराअत से मिलाए।

दो का तअ़ल्लुक़ मुक़्तदी के साथ है : (1)....मुक़्तदी तक्बीरे तह़रीमा को इमाम की तक्बीर के साथ न मिलाए (2).....न ही अपने सलाम को उस के सलाम के साथ मिलाए।

1....दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 499 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब नमाज़ के अह़काम सफ़ह़ा 247 पर है : सदल या'नी कपड़ा लटकाना। मषलन सर या कन्धे पर इस त़रह़ से चादर या रूमाल वग़ैरा डालना कि दोनों कनारे लटकते हों मकरूहे तह़रीमी है। हां ! अगर एक कनारा दूसरे कंधे पर डाल दिया और दूसरा लटक रहा है तो ह़रज नहीं। आज कल बा'ज़ लोग एक कंधे पर इस त़रह़ रूमाल रखते हैं कि इस का एक सिरा पेट पर लटक रहा होता है और दूसरा पीठ पर इस त़रह़ नमाज़ पढ़ना मकरूहे तह़रीमी है।

2.......صحيح مسلم، كتاب الصلاة، باب اعضاء السجود......الخ، الحديث: ٤٩٠، ص ٢٥٣، بتقدمٍ وتاخرٍ۔

3....नमाज़ के अह़काम सफ़ह़ा 251 पर है : कमर पर हाथ रखना मकरूहे तह़रीमी है। नमाज़ के इ़लावा भी (बिला उ़ज़्र) कमर पर (या'नी दोनों पहलूओं के वस्त़ में) हाथ नहीं रखना चाहिये अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : "कमर पर हाथ रखना जहन्नमियों की राह़त है।" या'नी येह यहूदियों का फ़े'ल है कि वोह जहन्नमी हैं वरना जहन्नमियों के लिये जहन्नम में क्या राह़त है !

एक का तअ़ल्लुक़ दोनों के साथ है या'नी फ़र्ज़ नमाज़ में एक सलाम को दूसरे सलाम के साथ न मिलाया जाए बल्कि दोनों के दरमियान थोड़ा सा वक़्फ़ा कर लिया जाए (ताकि दोनों में फ़र्क़ हो जाए) ।

﴾7﴿.....**ह़ाक़ुन :** जिसे शिद्दत का पेशाब आ रहा हो ।

﴾8﴿.....**ह़ाक़िब :** जिसे पाख़ाने की शदीद ह़ाजत हो ।(1)

﴾9﴿.....**ह़ाज़िक़ :** तंग मौजे़ पहन कर नमाज़ पढ़ने वाला । येह सब चीजे़ं चूंकि ख़ुशूअ़ में रुकावट बनती हैं (लिहाज़ा इन ह़ालतों में नमाज़ पढ़ना भी ममनूअ़ है) ।

﴾10﴿.....**जाएअ़ और अ़तशान :** भूक और प्यास की शिद्दत का भी येही हुक्म है (कि इस ह़ालत में नमाज़ पढ़ना भी ममनूअ़ है) । भूक की शिद्दत में नमाज़ की मुमानअ़त हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के इस फ़रमाने आ़लीशान से समझी गई है कि "जब खाना ह़ाज़िर हो और नमाज़ खड़ी हो जाए तो पहले खाना खाओ मगर येह कि जब वक़्त तंग हो या दिल मुत़मइन हो (तो पहले नमाज़ पढ़ो) ।"(2)

एक रिवायत में है कि "न तो तुम में से कोई ह़ालते इज़्तिराब में नमाज़ शुरूअ़ करे और न ही गुस्से की ह़ालत में नमाज़ पढ़े ।"(3)

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : "जो नमाज़ हुज़ूरे क़ल्ब के साथ न पढ़ी जाए उस की सज़ा जल्द मिलती है ।"(4)

1...... **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ किताब **नमाज़ के अह़काम** सफ़ह़ा 248 पर है : पेशाब, पाख़ाना या रीह़ की शिद्दत होना । अगर नमाज़ शुरूअ़ करने से पहले ही शिद्दत हो तो वक़्त में वुस्अ़त होने की सूरत में नमाज़ शुरूअ़ करना ही गुनाह है । हां अगर ऐसा है कि फ़राग़त और वुज़ू के बा'द नमाज़ का वक़्त ख़त्म हो जाएगा तो नमाज़ पढ़ लीजिये । और अगर दौराने नमाज़ येह ह़ालत पैदा हुई तो अगर वक़्त में गुन्जाइश हो तो नमाज़ तोड़ देना वाजिब है अगर इसी त़रह़ पढ़ ली तो गुनहगार होंगे ।

2......صحیح مسلم، کتاب المساجد ومواضع الصلاۃ، باب کراھۃ الصلاۃ بحضرۃ الطعام......الخ، الحدیث:۵۵۷، ص ۲۸۰۔

3......قوت القلوب، الفصل الثالث والثلاثون فی ذکر دعائم الاسلام......الخ، ج۲، ص ۱۲۰۔

صحیح مسلم، کتاب المساجد ومواضع الصلاۃ، باب کراھۃ الصلاۃ بحضرۃ الطعام......الخ، الحدیث:۵۵۷، ص ۲۸۰۔

4......قوت القلوب، الفصل الثالث والثلاثون فی ذکر دعائم الاسلام......الخ، ج۲، ص ۱۲۰۔

नमाज़ में सात चीज़ें शैत़ान की त़रफ़ से हैं :

ह़दीषे मुबारका में है कि नमाज़ में सात चीज़ें शैत़ान की त़रफ़ से हैं : (1)....नकसीर फूटना (2).....ऊंघ आना (3)....वस्वसा आना (4)....जमाही आना (5)....खुजाना (6)....इधर उधर तवज्जोह करना और (7)....किसी चीज़ से खेलना।[(1)]

बा'ज़ ने भूलने और शक में पड़ने का भी इज़ाफ़ा किया है।[(2)]

नमाज़ में चार चीज़ें ज़ुल्म से हैं :

बा'ज़ अस्लाफ़े किराम رَحِمَهُمُ اللّٰہُ السَّلَام फ़रमाते हैं : "नमाज़ में चार चीज़ें ज़ुल्म से हैं : (1)....इधर उधर मुतवज्जेह होना (2)....चेहरे पर हाथ फेरना (3)...कंकरियों का बराबर करना और (4)....रास्ते में ऐसी जगह नमाज़ पढ़ना कि सामने से कोई गुज़र सकता हो।"[(3)] नीज़ उंगलियों में उंगलियां डालना,[(4)] या उंगलियां चटख़ाना,[(5)] [(6)] या चेहरा ढांपना,[(7)] या रुकूअ़

---

1 ......قوت القلوب، الفصل الثالث والثلاثون فی ذکر دعائم الاسلام......الخ، ج ۲، ص ۱۶۰۔

2 ......المرجع السابق۔ 3 ......المرجع السابق۔

4 ......المسندللامام احمد بن حنبل، حدیث کعب بن عجرۃ، الحدیث:۱۸۱۵۳، ج ۶، ص ۳۲۵۔

5 ......दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 499 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब नमाज़ के अह़काम सफ़ह़ा 249 पर शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना **अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त़्त़ार क़ादिरी रज़वी** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه नक़्ल फ़रमाते हैं : **ख़ातमुल मुह़क़्क़िक़ीन** अ़ल्लामा इब्ने आ़बेदीन शामी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : इब्ने माजा की रिवायत है कि सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "नमाज़ में अपनी उंगलियां न चटख़ाया करो।" (سنن ابن ماجہ، ج ۱ ص ۵۱۴ حدیث ۹۶۵) मुजतबा के ह़वाले से नक़्ल किया, सुल्त़ाने दो जहां, शहनशाहे कौनो मकान, रह़मते आ़लमिय्यान صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने "इन्तिज़ारे नमाज़ के दौरान उंगलियां चटख़ाने से मन्अ़ फ़रमाया।" मज़ीद एक रिवायत में है : "नमाज़ के लिये जाते हुए उंगलियां चटख़ाने से मन्अ़ फ़रमाया।" इन अह़ादीषे मुबारका से येह तीन अह़काम षाबित हुए (الف) नमाज़ के दौरान और तवाबेअ़ नमाज़ में मषलन नमाज़ के लिये जाते हुए नमाज़ का इन्तिज़ार करते हुए उंगलियां चटख़ाना **मकरूहे तह़रीमी है** (ب) ख़ारिजे नमाज़ (या'नी तवाबेए़ नमाज़ में भी न हो) में बिग़ैर ह़ाजत के उंगलियां चटख़ाना **मकरूहे तन्ज़ीही** है (ج) ख़ारिजे नमाज़ में किसी ह़ाजत के सबब मषलन उंगलियों को आराम देने के लिये उंगलियां चटख़ाना मुबाह़ (या'नी बिला कराहत जाइज़) है।

6 ......سنن ابن ماجہ، کتاب اقامۃ الصلاۃ والسنۃ فیھا، باب مایکرہ فی الصلاۃ، الحدیث:۹۶۵، ج ۱، ص ۵۱۴۔

7 ......سنن ابی داود، کتاب الصلاۃ، باب ماجاء فی السدل فی الصلاۃ، الحدیث:۶۴۳، ج ۱، ص ۲۵۹۔

में एक हाथ को दूसरे हाथ पर रख कर रानों के दरमियान दाख़िल करना भी मन्अ़ है[1] कि बा'ज़ सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان फ़रमाते हैं : "हम इस त़रह़ किया करते थे तो हमें इस से मन्अ़ कर दिया गया ।"[2] यूंही सजदा करते हुए सफ़ाई की ग़रज़ से ज़मीन पर फूंकना और हाथ से कंकरियां बराबर करना भी मकरूह है क्यूंकि येह ऐसे अफ़्आ़ल हैं कि जिन से दौराने नमाज़ बन्दा मुस्तग़्नी है । इसी त़रह़ एक पाउं उठा कर रान पर रखना भी मन्अ़ है । क़ियाम की ह़ालत में दीवार या किसी और चीज़ से सहारा लेना भी मन्अ़ है । अगर किसी ऐसी चीज़ से सहारा लिया कि जिसे हटाने से नमाज़ी गिर जाए तो ज़ाहिर येह है कि नमाज़ बात़िल हो जाएगी । وَاللّٰهُ اَعْلَم

तीसरी फ़स्ल : फ़राइज़ व सुनन में फ़र्क़

मज़्कूरा कलाम फ़र्ज़ों, सुन्नतों, मुस्तह़ब्बात और आदाब पर मुश्तमिल है इन का लिह़ाज़ रखना राहे आख़िरत का इरादा करने वाले के लिये ज़रूरी है ।

नमाज़ के फ़राइज़ :

नमाज़ में बारह फ़र्ज़ हैं[3]: (1)....निय्यत (2)....तक्बीरे तह़रीमा (3).....क़ियाम (4).....सूरए फ़ातिह़ा (5).....रुकूअ़ में इतना झुकना कि हथेलियां घुटनों तक पहुंच जाएं (6).....इत़्मीनान से रुकूअ़ करना (7).....रुकूअ़ से सीधा खड़ा होना (8).....इत़्मीनान से सजदा करना, हाथों का रखना ज़रूरी नहीं (9).....सजदे के बा'द इत़्मीनान से बैठ जाना (10).....क़ा'दए अख़ीरा के लिये बैठना और तशह्हुद पढ़ना (11)..... हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूदे पाक पढ़ना और (12).....पहला सलाम । नमाज़ से बाहर होने की निय्यत करना ज़रूरी नहीं ।

इन के इ़लावा उमूर वाजिब नहीं बल्कि या तो वोह सुन्नतें हैं या मुस्तह़ब्बात ।

---

1 ......صحیح مسلم، کتاب المساجد و مواضع الصلاۃ، باب الندب الی وضع الایدی......الخ، الحدیث:۵۳۵،ص ۲۷۱ـ

2 ......صحیح مسلم، کتاب المساجد و مواضع الصلاۃ، باب الندب الی وضع الایدی......الخ، الحدیث:۵۳۵،ص ۲۷۲ـ

3 ....**अह़नाफ़ के नज़्दीक :** नमाज़ में सात फ़र्ज़ हैं । चुनान्चे, दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़्बूआ़ 1250 सफ़्ह़ात पर मुश्तमिल किताब बहारे शरीअ़त जिल्द अव्वल सफ़्ह़ा 507 पर सदरुश्शरीआ़, बदरुत्त़रीक़ा ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى नक़्ल फ़रमाते हैं : सात चीजें नमाज़ में फ़र्ज़ है : (1).....तक्बीरे तह़रीमा (2)....क़ियाम (3)....क़िराअत (4).....रुकूअ़ (5).....सजदा (6).....क़ा'दए अख़ीरा (7)....ख़ुरूजे बिसुन्इ़ही ।

नमाज़ की सुन्नतें :

फ़े'ली सुन्नतें चार हैं : (1).....तक्बीरे तह़रीमा में दोनों हाथ उठाना (2–3).....रुकूअ़ में जाते और रुकूअ़ से उठते हुए रफ़्अ़ यदैन करना (इस पर ह़ाशिया सफ़ह़ा 481 पर गुज़र चुका है) और (4).....पहले तशह्हुद के लिये बैठना (या'नी क़ा'दए ऊला)[1] बहर ह़ाल तशह्हुद में उंगलियां फैलाने की कैफ़िय्यत और इन्हें उठाने की मिक़्दार जो हम ने ज़िक्र की येह मुस्तह़ब और सुन्नत के ताबेअ़ है। पाउं फैलाना और सुरीन पर बैठना जल्से के ताबेअ़ और मुस्तह़ब है। सर झुकाना, इधर उधर मुतवज्जेह न होना क़ियाम के मुस्तह़ब्बात और इस की ख़ूबसूरती में से है। (पहली या तीसरी रक्अ़त में दूसरे सजदे के बा'द कुछ देर) इस्तिराह़त के लिये बैठने को हम ने फ़े'ली सुन्नतों में शुमार नहीं किया क्यूंकि येह सजदे से क़ियाम की त़रफ़ उठने की बेहतरी के लिये है नीज़ येह फ़ि नफ़्सिही मक़्सूद नहीं इसी लिये हम ने इसे अ़लाह़िदा ज़िक्र नहीं किया।

अज़्कार की सुन्नतें :

क़ौली सुन्नतें : दर्जे ज़ैल हैं : षना व तअ़व्वुज़ पढ़ना, आमीन कहना सुन्नते मुअक्कदा में से हैं। सूरत पढ़ना, तक्बीराते इन्तिक़ाल कहना, रुकूअ़ सुजूद में तस्बीह़ात पढ़ना नीज़ रुकूअ़ व सुजूद से उठ कर तस्बीह़ कहना (रुकूअ़ से उठ कर رَبَّنَا لَكَ الْحَمْدُ और दो सजदों के दरमियान رَبِّ اغْفِرْلِي पढ़ना), पहला क़ा'दा करना, इस में हु़ज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूदे पाक पढ़ना, आख़िरी तशह्हुद के आख़िर में दुआ़ पढ़ना और दूसरा सलाम फेरना। अगर्चे हम ने इन्हें सुन्नत के तह़्त ज़िक्र कर दिया है लेकिन इन के मुतफ़र्रिक़ दर्जे हैं क्यूंकि इन में से चार वोह हैं कि जिन का तदारुक सजदए सह्व से किया जाता है (या'नी इन के रह जाने या इन में ताख़ीर हो जाने की वजह से सजदए सह्व लाज़िम हो जाता है। वोह चार येह हैं :
(1) क़ा'दए ऊला (2)....दुआ़ए क़ुनूत (3) पहला तशह्हुद और (4) इस में दुरूदे पाक पढ़ना)

एक सुवाल और इस का जवाब :

सुन्नतों और फ़राइज़ में तो फ़र्क़ समझ में आता है कि फ़र्ज़ के छूटने से सिह़्ह़ते नमाज़ फ़ौत होती है जब कि सुन्नत के छूटने से (नमाज़ की सिह़्ह़त पर) कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता, नीज़ फ़र्ज़ छोड़ने पर अ़ज़ाब की वईद है जब कि सुन्नत का मुआ़मला ऐसा नहीं। लेकिन सुन्नतों के माबैन

1....**अह़नाफ़ के नज़्दीक :** क़ा'दए ऊला वाजिब है अगर्चे नमाज़े नफ़्ल हो। (नमाज़ के अह़काम, स. 219)

फ़र्क़ समझ में नहीं आता क्यूंकि तमाम सुन्नतों पर अ़मल का हुक्म इस्तिह़बाबी है, नीज़ इन्हें छोड़ने पर अ़ज़ाब नहीं, अलबत्ता इन पर अ़मल की सूरत में षवाब की बिशारत है, फिर इन में फ़र्क़ करने का क्या मा'ना ? जान लीजिये ! कि मुख़्तलिफ़ सुन्नतों का षवाब व अ़ज़ाब और इस्तिह़बाब में मुश्तरक होना इन के बाहमी फ़र्क़ को ख़त्म नहीं करता। इस की वज़ाह़त के लिये हम एक मिषाल पेश करते हैं। **मिषाल :** इन्सान दो वजह से ही कामिल होता है : (1)....अम्रे बात़िन (2)....आ'ज़ाए ज़ाहिर। बात़िन से रूह़ व ह़यात और ज़ाहिर से आ'ज़ाए जिस्म मुराद हैं।

आ'ज़ाए जिस्म के दर्जात :

आ'ज़ाए जिस्म के चार दर्जे हैं : (1)....बा'ज़ ऐसे हैं कि इन के न होने से इन्सान ख़त्म हो जाता है। जैसे दिल, जिगर, दिमाग़ कि इन में से हर एक उ़ज़्व के ख़त्म होने से ज़िन्दगी ख़त्म हो जाती है। (2)....बा'ज़ वोह हैं कि जिन के ख़त्म होने से ज़िन्दगी तो ख़त्म नहीं होती मगर मक़्सदे ह़यात फ़ौत हो जाता है। जैसे आंख, हाथ, पाउं, ज़बान। (3)...बा'ज़ वोह हैं कि जिन के न होने से न तो ह़यात ख़त्म होती है और न ही इस का मक़्सद फ़ौत होता है मगर ज़ाहिरी हुस्न ख़त्म हो जाता है। जैसे अब्रू, दाढ़ी, पल्कें और ह़सीन रंगत। (4)....बा'ज़ वोह हैं कि जिन से हुस्नो जमाल ख़त्म तो नहीं होता लेकिन इस के कमाल में फ़र्क़ आ जाता है। जैसे अब्रूओं का टेढ़ा होना, पल्कों और दाढ़ी के बालों की सियाही का ख़त्म होना, आ'ज़ा की बनावट में फ़र्क़ आना और सफ़ेद रंग में सुर्ख़ रंग का मिल जाना, येह मुख़्तलिफ़ दर्जात हैं।

इसी त़रह़ इबादत की शरीअ़त ने एक सूरत बनाई है जिस पर अ़मल कर के हम इसे पाने की कोशिश करते हैं। इबादत की रूह़ और बात़िनी ज़िन्दगी ख़ुशूअ़ व ख़ुज़ूअ़, निय्यत, यक्सूई, इख़्लास वग़ैरा है जिस का बयान अ़न क़रीब आएगा। अब हम (आ'ज़ाए जिस्म की त़रह़) इबादत के ज़ाहिरी अरकान बयान करेंगे।

इबादत के ज़ाहिरी अरकान :

रुकूअ़, सुजूद, क़ियाम और तमाम अरकान दिल, सर और जिगर के क़ाइम मक़ाम हैं क्यूंकि इन के फ़ौत होने से नमाज़ का वुजूद ही ख़त्म हो जाता है। रफ़्अ़ यदैन (या'नी हाथ उठाना), षना और पहला क़ा'दा हाथ, आंख और पाउं के क़ाइम मक़ाम हैं कि इन के फ़ौत होने से नमाज़ की सिह़ह़त में फ़र्क़ नहीं आता जैसे इन आ'ज़ा के ख़त्म होने से ज़िन्दगी तो ख़त्म नहीं होती लेकिन इन्सान बद नुमा हो जाता है इस में रग़बत नहीं रहती, इसी त़रह़ जो शख़्स नमाज़

में कम अज़ कम बात पर इक्तिफ़ा करे वोह उस की त़रह है जो किसी बादशाह को ज़िन्दा ग़ुलाम बत़ौरे तोहफ़ा पेश करे लेकिन उस के आ'ज़ा कटे हुए हों। जहां तक मुस्तह़ब्बात का मुआ़मला है तो वोह सुन्नतों के इ़लावा हैं। लिहाज़ा वोह अब्रू, दाढ़ी, पल्कों और ख़ूब सूरती के क़ाइम मक़ाम हैं और इन सुन्नतों में अज़्कार हुस्ने नमाज़ की तक्मील के लिये हैं जैसे अब्रू और दाढ़ी की गोलाई। पस ऐ बन्दे! नमाज़ तेरी इ़बादत और ऐसा तोह़फ़ा है कि जिस के ज़रीए़ तुझे बादशाहों के बादशाह (या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ) का क़ुर्ब ह़ासिल होता है जैसा कि वोह शख़्स जो बादशाह का क़ुर्ब ह़ासिल करने के लिये उसे ग़ुलाम तोह़फ़े के त़ौर पर पेश करता है। येह (नमाज़ का) तोह़फ़ा जो तू बारगाहे रब्बुल इ़ज़्ज़त में पेश करता है, बड़ी पेशी (या'नी क़ियामत) के दिन तुझे लौटा दिया जाएगा अब तुझे इख़्तियार है कि इसे अच्छी सूरत में पेश कर या बुरी शक्ल में, अगर अच्छी सूरत में पेश करेगा तो तुझे ही फ़ाइदा होगा और अगर बुरी सूरत में पेश करेगा तो तेरा ही नुक़्सान होगा। लिहाज़ा तेरे लिये मुनासिब नहीं कि तू फ़िक़्ह से इतना ही ह़िस्सा पाए जो तेरे लिये फ़र्ज़ व सुन्नत में फ़र्क़ कर दे और तू सुन्नत के मुतअ़ल्लिक़ इतनी ही बात समझे कि फ़ुलां चीज़ का छोड़ना जाइज़ है और तू इसे छोड़ दे। येह तो त़बीब के इस क़ौल के मुशाबेह होगा कि आंख फोड़ देने से इन्सान का वुजूद बात़िल नहीं होता और वोह उस बात से क़त़्ए़ नज़र कर लेता है कि अगर बादशाह की ख़िदमत में ऐसा तोह़फ़ा पेश किया जाए तो वोह उसे क़बूल नहीं करेगा। पस सुन्नतों, मुस्तह़ब्बात और आदाब के दर्जात को यूंही समझना चाहिये।

नमाज़ी का सब से पहला दुश्मन :

जो नमाज़ी नमाज़ के रुकूअ़ व सुजूद को कामिल त़ौर पर अदा न करे तो (बरोज़े क़ियामत) उस का सब से पहला दुश्मन वोही नमाज़ होगी और कहेगी : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुझे ज़ाएअ़ करे जैसा तूने मुझे ज़ाएअ़ किया।"[1] नीज़ उन रिवायात का मुत़ालआ़ भी करो जो हम ने अरकाने नमाज़ की तक्मील के ह़वाले से पेश की हैं ताकि तुम्हारे सामने इन की अहम्मिय्यत वाज़ेह़ हो जाए।

---

1 ......شعب الایمان للبیھقی،باب فی الصلاۃ،فصل تحسین الصّلاۃ والاکثار منھالیلا......الخ،الحدیث:۳۱۴۰،ج۳،ص۱۴۳۔

बाब नम्बर 3 : आ'माले क़ल्ब की बातिनी शराइत

येह बाब तीन फ़स्लों पर मुश्तमिल है। इस में अव्वलन हम नमाज़ को खुशूअ़ व खुज़ूअ़ और यक्सूई के साथ अदा करने के मुतअ़ल्लिक़ ज़िक्र करेंगे। फिर बातिनी मआ़नी, इन की ता'रीफ़ात और अस्बाब व इलाज बयान करेंगे। फिर तफ़्सीलन वोह उमूर ज़िक्र करेंगे जिन का नमाज़ के हर रुक्न में पाया जाना ज़रूरी है ताकि नमाज़ आख़िरत का सरमाया बन सके।

पहली फ़स्ल : खुशूअ़, खुज़ूअ़ और हुज़ूरिये क़ल्ब की शराइत

जान लीजिये कि खुशूअ़ व खुज़ूअ़ से नमाज़ पढ़ने के कई दलाइल हैं।

खुशूअ़ व खुज़ूअ़ से नमाज़ पढ़ने से मुतअ़ल्लिक़ तीन फ़रामीने बारी तआ़ला :

﴾1﴿

اَقِمِ الصَّلٰوةَ لِذِكْرِیْ ﴿۱۴﴾ (پ۱۶،طٰہٰ:۱۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *मेरी याद के लिये नमाज़ क़ाइम रख।*

इस में सीग़ए "अम्र" है जो ज़ाहिर वुजूब पर दलालत करता है और ग़फ़लत ज़िक्र का मुतज़ाद है। लिहाज़ा जो पूरी नमाज़ में ग़ाफ़िल रहे वोह नमाज़ को ज़िक्रे इलाही के साथ क़ाइम करने वाला कैसे हो सकता है ?

﴾2﴿

وَلَا تَكُنْ مِّنَ الْغٰفِلِیْنَ ﴿۲۰۵﴾ (پ۹،الاعراف:۲۰۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और ग़ाफ़िलों में न होना।*

इस में सीग़ए "नही" है जो ज़ाहिर हुरमत पर दलालत करता है (या'नी ज़िक्रे इलाही से ग़फ़्लत बरतना ह़राम है)।

﴾3﴿

حَتّٰى تَعْلَمُوْا مَا تَقُوْلُوْنَ (پ۵،النساء:۴۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *जब तक इतना होश न हो कि जो कहो उसे समझो।*

इस में ह़ालते नशा में नमाज़ से मन्अ़ करने की इ़ल्लत बयान की गई है। येह इ़ल्लत उसे भी शामिल है जो ग़ाफ़िल और वस्वसों और दुन्या की फ़िक्रों में डूबा हुवा हो।

खुशूअ़ व खुज़ूअ़ से नमाज़ पढ़ने से मुतअ़ल्लिक़ चार फ़रामीने मुस्तफ़ा :

﴾1﴿....नमाज़ सुकून और आ़जिज़ी का नाम है।(1)

---

1 ......سنن الترمذی، ابواب الصلاة، باب ماجاء فی التخشع فی الصلاة، الحدیث:۳۸۵، ج ۱، ص ۳۹۴، بتقدمٍ وتاخرٍ۔

इस में लफ़्ज़े अस्सलात पर अलिफ़ लाम बयाने ह़सिर के लिये है और कलिमा إِنَّمَا तह़क़ीक़ और ताकीद के लिये है और फ़ुक़हाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام ने इस फ़रमाने मुस्त़फ़ा कि "शफ़अ़ा का ह़क़ ग़ैरे मुन्क़सिम (या'नी तक़्सीम न होने वाली) जाईदाद में है।"(1) से ह़सिर, अषबात और नफ़ी का मफ़्हूम समझा है।

﴾2﴿.....जिसे उस की नमाज़ बे ह़याई और बुराई से न रोके तो इस से उस की **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से दूरी में ही इज़ाफ़ा होता है।(2)

और ग़ाफ़िल की नमाज़ उसे बे ह़याई और बुराई से नहीं रोकती।

﴾3﴿.....कितने ही क़ियाम करने वाले ऐसे हैं कि जिन्हें नमाज़ से सिवाए थकावट और मशक़्क़त के कुछ ह़ासिल नहीं होता।(3)

इस से आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की मुराद ग़ाफ़िल नमाज़ी हैं।

﴾4﴿....बन्दे के लिये नमाज़ में से वोही है जिसे वोह समझ कर अदा करे।(4)

इस में तह़क़ीक़ येह है कि नमाज़ी अपने रब्ब عَزَّوَجَلَّ से मुनाजात करने वाला है।(5) जैसा कि ह़दीष में वारिद है और ग़फ़्लत वाला कलाम क़त़अ़न मुनाजात नहीं हो सकता। इस की वज़ाह़त येह है कि मिषाल के त़ौर पर अगर इन्सान ज़कात से ग़फ़्लत बरते जो कि बज़ाते ख़ुद ख़्वाहिशात के मुख़ालिफ़ और नफ़्स पर गिरां है, इसी त़रह़ रोज़ा आ'ज़ा को कमज़ोर करने वाला और ख़्वाहिशात जो की शैत़ान का आला है कि बुलन्दियों को तोड़ने वाला है तो ग़फ़्लत के बा वुजूद इन से मक़्सद ह़ासिल हो जाता है, इसी त़रह़ ह़ज के अफ़्आ़ल मशक़्क़त त़लब और सख़्त हैं और इस में ऐसा मुजाहदा है जिस में तक्लीफ़ होती है ख़्वाह इस के अफ़्आ़ल अदा करते हुए दिल ह़ाज़िर हो या न हो? जब कि नमाज़ में ज़िक्र, तिलावत, रुकूअ़, सुजूद, क़ियाम, क़ुऊ़द की अदाएगी है।

---

1 ......صحیح البخاری، کتاب الشفعة، باب الشفعة فیما لم یقسم......الخ، الحدیث:۲۲۵۷، ج۲، ص ۶۱، مفهومًا۔

2 ......کنزالعمال، کتاب الصلاۃ، الحدیث:۲۰۰۷۹، ج۷، ص ۲۱۲۔

3 ......سنن ابن ماجه، کتاب الصیام، باب ماجاء فی الغیبة والرفث للصائم، الحدیث:۱۶۹۰، ج۲، ص ۳۲۰۔

4 ......قوت القلوب، الفصل الثالث والثلاثون فی ذکر دعائم الاسلام......الخ، ج۲، ص ۱۷۰۔

5 ......صحیح مسلم، کتاب المساجد ومواضع الصلاۃ، باب النهی عن البصاق فی المسجد......الخ، الحدیث: ۵۵۱، ص ۲۷۹۔

नमाज़ में क़िराअत व अज़्कार से मक़्सूद :

ज़िक्र जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से गुफ़्त्गू और दुआ़ का नाम है इस से मक़्सूद या तो कलाम और गुफ़्त्गू करना है या हुरूफ़ और आवाज़ें हैं ताकि ज़बान की अ़मल के ज़रीए़ आज़्माइश हो, जैसे रोज़े में मे'दे (को खाने पीने) और शर्मगाह को (नफ़्सानी ख़्वाहिशात से) रोकने से इम्तिहा़न लिया जाता, ह़ज की मशक़्क़तों से जिस्म का इम्तिहा़न लिया जाता, ज़कात निकालने और मह़बूब माल को जुदा करने से दिल का इम्तिहा़न लिया जाता है और इस में कोई शक नहीं कि नमाज़ में ऐसा तसव्वुर बाति़ल है कि ज़िक्र से हुरूफ़ व आवाज़ के ज़रीए़ ज़बान का इम्तिहा़न मक़्सूद है क्यूंकि बेहूदा गुफ़्त्गू के साथ ज़बान को ह़रकत देना ग़ाफ़िल आदमी पर बहुत आसान है, नीज़ इस में अ़मल के ए'तिबार से भी कोई इम्तिहा़न नहीं बल्कि अदाएगी के ए'तिबार से हुरूफ़ और बोलते वक़्त ما فی الضمیر ज़ाहिर करना मक़्सूद होता है और येह हुज़ूरे क़ल्ब के बिग़ैर मुमकिन नहीं। लिहाज़ा जब दिल ही ग़ाफ़िल होगा तो "اِهۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِيۡمَ ۙ (الفاتحۃ:۵) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** हम को सीधा रास्ता चला।" में क्या सुवाल करेगा ? और जब मक़्सद गिरया व ज़ारी करना और दुआ़ मांगना न हो तो इन्सान को ग़फ़्लत के साथ ज़बान को ह़रकत देने में कौन सी मशक़्क़त है ? ख़ुसूसन जब कि वोह बोलने का आ़दी हो। येह अज़्कार के मुतअ़ल्लिक़ वज़ाह़त है।

(सय्यिदुना इमाम ग़ज़ाली عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡوَالِی वज़ाह़त के तौ़र पर मज़ीद फ़रमाते हैं :) बल्कि मैं कहता हूं कि अगर इन्सान क़सम उठाए और कहे : मैं फ़ुलां का शुक्र अदा करूंगा, उस की ता'रीफ़ करूंगा और उस से ह़ाजत बयान करूंगा ? फिर नींद की ह़ालत में उस की ज़बान पर इन मआ़नी पर दलालत करने वाले अल्फ़ाज़ जारी हो जाएं तो वोह अपनी क़सम से बरियुज़्ज़िम्मा नहीं होगा। अगर उस की ज़बान पर तारीकी में येह कलिमात जारी हुए और दूसरा शख़्स भी मौजूद है मगर उसे उस की मौजूदगी का इ़ल्म नहीं और न ही येह उसे देख रहा है तो भी क़सम से बरी न होगा क्यूंकि जब तक वोह उस के दिल में ह़ाज़िर न होगा उस का कलाम उस से ख़िता़ब और उस के साथ गुफ़्त्गू क़रार नहीं पाएगा। इसी त़रह़ अगर वोह शख़्स उस की मौजूदगी में दिन की रोशनी में येह अल्फ़ाज़ अपनी ज़बान पर लाता है लेकिन उस का दिल ह़ाज़िर नहीं बल्कि किसी सोच में गुम होने की वजह से ग़ाफ़िल है और बोलते वक़्त उस से गुफ़्त्गू करने का इरादा नहीं है तो फिर भी येह अपनी क़सम से बरियुज़्ज़िम्मा नहीं होगा।

इस में कोई शक नहीं कि क़िराअत और अज़्कार से मक़्सूद **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ह़म्दो षना, उस की बारगाह में इज़्हारे आ़जिज़ी और दुआ़ करना है, इस का मुख़ात़ब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ

है और इस का दिल गफ़्लत में है तो येह उसे नहीं देख सकता बल्कि येह तो मुख़ात़ब ज़ात से भी ग़ाफ़िल है, इस की ज़बान तो आ़दतन ह़रकत कर रही है और येह बात नमाज़ के मक़्सूद से किस क़दर दूर है कि इस के फ़र्ज़ करने का मक़्सद ही दिल की सफ़ाई, ज़िक्रे इलाही की तजदीद और इस पर ईमान को मज़बूत़ करना है। येह क़िराअत और ज़िक्र का हुक्म है। ख़ुलासए कलाम येह है कि बोलने में इस ख़ासिय्यत के इन्कार और इसे फ़े'ल से जुदा करने का कोई रास्ता नहीं।

रुकूअ़ व सुजूद से मक़्सूद :

रुकूअ़ व सुजूद से यक़ीनन ता'ज़ीम मक़्सूद है और अगर येह बात मान ली जाए कि वोह अपने फ़े'ल से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ता'ज़ीम कर रहा है मगर उस से ग़ाफ़िल है तो येह कहना बजा होगा कि वोह किसी बुत की ता'ज़ीम कर रहा है जो उस के सामने है और वोह ख़ुद उस से ग़ाफ़िल है। या वोह किसी दीवार की ता'ज़ीम कर रहा है जो इस के सामने है और येह उस से ग़ाफ़िल है। जब येह अफ़्आ़ल ता'ज़ीम से ख़ारिज हो गए तो येह मह़ज़ पीठ और कमर की ह़रकत रह जाएगी और इस में कोई ऐसी मशक़्क़त भी नहीं कि इस से इम्तिह़ान लिया जाए और इसे दीन का सुतून और इस्लाम व कुफ़्र के दरमियान फ़र्क़ करने वाली क़रार दिया जाए। नीज़ इसे ह़ज और तमाम इ़बादात पर मुक़द्दम किया जाए ख़ुसूसन इसे छोड़ने पर क़त्ल वाजिब क़रार दिया जाए।

(सय्यिदुना इमाम ग़ज़ाली عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِی फ़रमाते हैं :) नमाज़ की येह तमाम अ़ज़्मत इस के ज़ाहिरी आ'माल के ए'तिबार से नहीं बल्कि येह अ़ज़्मत इस वजह से है कि मुनाजात का मक़्सद इस से मिला हुवा है क्यूंकि येह रोज़ा, ज़कात और ह़ज वग़ैरा पर फ़ौक़िय्यत रखती है बल्कि कुरबानियों पर भी फ़ौक़िय्यत रखती है जो कि माल की कमी के ज़रीए़ नफ़्स का मुजाहदा है। चुनान्चे, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

لَنْ یَّنَالَ اللّٰهَ لُحُوْمُهَا وَ لَا دِمَآؤُهَا وَ لٰكِنْ یَّنَالُهُ التَّقْوٰى مِنْكُمْ (پ ۱۷، الحج: ۳۷)

*तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : **अल्लाह** को हरगिज़ न गोश्त पहुंचते हैं न इन के ख़ून। हां ! तुम्हारी परहेज़गारी इस तक बारयाब होती है।*

इस में तक़्वा से मुराद वो सिफ़त है जो दिल पर ग़ालिब हो कर इसे मत़लूबा अह़काम पर अ़मल करने पर बर अंगेख़्ता करती है। लिहाज़ा नमाज़ में येह कैफ़िय्यत कैसे होगी जब कि इस में अफ़्आ़ल से तो कुछ ग़रज़ ही नहीं ? पस बा ए'तिबार मा'ना के येह कलाम हुज़ूरे क़ल्ब के शर्त़ होने पर दलालत करता है।

एक सुवाल और इस का जवाब :

अगर आप नमाज़ के बाति़ल होने का हुक्म लगाएं और हु़ज़ूरे क़ल्ब को इस के सह़ीह़ होने के लिये शर्त़ क़रार दें तो आप इजमाए़ फ़ुक़हा की ख़िलाफ़ वर्ज़ी करने वाले होंगे क्यूंकि उन्हों ने सिर्फ़ तक्बीरे तह़रीमा के वक़्त हु़ज़ूरे क़ल्ब को शर्त़ क़रार दिया है ? जान लीजिये ! किताबुल इ़ल्म में गुज़र चुका है कि फ़ुक़हाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام बाति़न में तसर्रुफ़ नहीं फ़रमाते और दिलों को चीर कर नहीं देखते और न ही राहे आख़िरत में तसर्रुफ़ करते हैं बल्कि आ'ज़ा के ज़ाहिरी अह़वाल के मुत़ाबिक़ अह़कामे दीन बयान करते हैं नीज़ क़त्ल और ह़ाकिमे वक़्त की ता'ज़ीर के साक़ित़ होने के लिये ज़ाहिरी आ'माल काफ़ी हैं। रही येह बात कि क्या येह अ़मल आख़िरत में नफ़्अ़ देगा (या नहीं) तो येह मुआ़मला फ़िक़्ह की हु़दूद से बाहर है और इजमाअ़ का दा'वा नहीं किया जा सकता (क्यूंकि इस मस्अले में फ़ुक़हा का इख़्तिलाफ़ मौजूद है)। चुनान्चे,

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू त़ालिब मक्की عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَلِى ने ह़ज़रते सय्यिदुना बिशर बिन ह़ारिष ह़ाफ़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْكَافِى के ह़वाले से ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान षौरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى का येह क़ौल नक़्ल किया है कि "जो ख़ुशूअ़ व ख़ुज़ूअ़ से नमाज़ नहीं पढ़ता उस की नमाज़ फ़ासिद है।"(1)

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : " जो नमाज़ हु़ज़ूरे क़ल्ब के साथ न पढ़ी जाए उस की सज़ा जल्द मिलती है।(2)

हजरते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ फरमाते हैं : जो ह़ालते नमाज़ में दाएं बाएं वाले को क़स्दन पहचाने उस की कोई नमाज़ नहीं।"(3)

हु़ज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "बन्दा नमाज़ पढ़ता रहता है मगर उस के लिये उस का छटा या दसवां ह़िस्सा भी नहीं लिखा जाता। बेशक बन्दे के लिये उस की नमाज़ में से वोही लिखा जाता है जिसे वोह समझ कर अदा करे।"(4)

और अगर येह बात किसी इमाम से मन्क़ूल होती तो इसे मज़हब ठहरा लिया जाता लेकिन अब इस से क्यूं दलील नहीं पकड़ी जाती ?

---

1 ......قوت القلوب، الفصل الثالث والثلاثون فی ذکر دعائم الاسلام......الخ، ج۲، ص ۱۶۱۔

2 ......المرجع السابق، ص ۱۷۰۔ 3 ......المرجع السابق، ص ۱۶۱۔

4 ......سنن ابی داود، کتاب الصلاۃ، باب ماجاء فی نقصان الصلاۃ، الحدیث:۷۹۶، ج۱، ص۳۰۶۔
قوت القلوب، الفصل الثالث والثلاثون فی ذکر دعائم الاسلام......الخ، ج۲، ص ۱۶۹۔۱۷۰۔

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल वाह़िद बिन ज़ैद رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : ''उ़-लमा का इस पर इजमाअ़ है कि बन्दे के लिये उस की नमाज़ में से वोही कुछ है जिसे वोह समझ कर अदा करे। उन्हों ने हुज़ूरे क़ल्ब को इजमाअ़ क़रार दे दिया। नीज़ परहेज़गार फ़ुक़हा और उ़-लमाए आख़िरत رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰى से इस क़िस्म की बातें इस क़दर मन्क़ूल हैं जो शुमार से बाहर हैं।

ह़क़ येह है कि इस (या'नी ख़ुशूअ़ व हुज़ूरे क़ल्ब के) मुआ़मले में शरई दलाइल और अह़ादीष व आषार की त़रफ़ रुजूअ़ किया जाए और इसे शर्त़ क़रार देने के मुतअ़ल्लिक़ वाज़ेह़ अह़ादीष मौजूद हैं (हां इतना ज़रूर है) कि ज़ाहिरी तक्लीफ़ में फ़तवा मक़ामे मख़्लूक़ के तसव्वुर के मुत़ाबिक़ ठहरा लिया जाता है। लिहाज़ा लोगों पर पूरी नमाज़ में दिल को ह़ाज़िर करने की शर्त़ लगाना मुमकिन नहीं क्यूंकि इस से सिवाए चन्द लोगों के हर इन्सान आ़जिज़ है और जब ज़रूरत के तह़त पूरी नमाज़ में हुज़ूरिये क़ल्ब को शर्त़ क़रार देना मुमकिन नहीं तो इस के सिवा कोई चारा नहीं कि इसे ऐसी शर्त़ क़रार दिया जाए जिस पर हुज़ूरिये क़ल्ब का नाम सादिक़ आ जाए अगर्चे लम्ह़ा भर के लिये हो और (इस में) सब से बेहतर तक्बीरे तह़रीमा कहने का मरह़ला है। पस हम ने तक्बीरे तह़रीमा के वक़्त हुज़ूरे क़ल्ब को लाज़िम क़रार दिया। नीज़ इस के साथ हम उम्मीद रखते हैं कि पूरी नमाज़ में ग़ाफ़िल रहने वाले का ह़ाल बिल्कुल न पढ़ने वाले की मिष्ल नहीं क्यूंकि वोह ज़ाहिरन फ़े'ल को अदा करने वाला और लम्ह़ा भर दिल को ह़ाज़िर करने वाला है और येह कैसे न होगा ह़ालांकि जो शख़्स भूले से बे वुज़ू नमाज़ पढ़ता है उस की नमाज़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़दीक बात़िल है लेकिन उसे अपने फ़े'ल, क़ुसूर और उ़ज़्र के मुत़ाबिक़ अज्र मिलेगा। नीज़ उसे उम्मीद के साथ साथ येह भी ख़ौफ़ है कि नमाज़ में सुस्ती करने वाले का ह़ाल नमाज़ न पढ़ने वाले के ह़ाल से भी बुरा हो और येह क्यूंकर न हो कि जो बारगाहे ख़ुदावन्दी में ह़ाज़िर हो कर सुस्ती करता, ग़ाफ़िल और ह़क़ीर समझने वालों जैसा कलाम करता है उस का ह़ाल इस से भी बदतर है जो ख़िदमत में ह़ाज़िर ही नहीं होता। पस जब ख़ौफ़ व रजा के अस्बाब मुतआ़रिज़ हो गए और मुआ़मला फ़ी नफ़्सिही ख़त़रनाक हो गया तो अब तुम्हें सुस्ती बरतने या एह़तियात़ करने में इख़्तियार है। नीज़ फ़ुक़हाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام ने ग़फ़्लत में नमाज़ पढ़ने के जवाज़ का जो फ़तवा दिया इस की मुख़ालफ़त की कोई ज़रूरत नहीं क्यूंकि येह फ़तवे की ज़रूरत में से है जैसा कि इस पर तम्बीह गुज़र चुकी है। जिस ने नमाज़ के बात़िन को जान लिया वोह येह बात भी जान लेगा कि ग़फ़्लत उस की मुतज़ाद चीज़ है लेकिन ''قَوَاعِدُ الْعَقَائِد'' के बाब में इ़ल्मे बात़िन और ज़ाहिर के दरमियान फ़र्क़ के बयान में हम ज़िक्र कर चुके हैं कि शरीअ़त के जो असरार ज़ाहिर होते हैं इन में से हर एक की तसरीह़ से मानेअ़ (या'नी वज़ाह़त में रुकावट बनने वाले)

अस्बाब में से एक सबब लोगों की समझ की कमी है। लिहाज़ा हम इसी क़दर बह्स पर इक्तिफ़ा करते हैं क्यूंकि राहे आख़िरत के ता़लिब के लिये इतनी मिक़दार ही काफ़ी है जब कि झगड़ा व जिदाल करने वाले से हम गुफ़्तगू नहीं करना चाहते।

हा़सिले कलाम :

दिल की हा़ज़िरी नमाज़ की रूह़ है और कम अज़ कम मिक़दार जिस से रूह़ बाक़ी रहे वोह तक्बीरे तह़रीमा के वक़्त दिल का हा़ज़िर होना है और इस क़दर से भी कम हो तो हलाकत है। इस से ज़ियादा जिस क़दर हुज़ूरे क़ल्ब होगा उसी क़दर रूह़ नमाज़ के अज्ज़ा में फैलेगी और कितने ही ज़िन्दा लोग हैं जो ह़रकत नहीं कर सकते वोह मुर्दों के क़रीब हैं। पस तक्बीरे तह़रीमा के इलावा ग़ाफ़िल उस ज़िन्दा की मिष्ल है जिस में ह़रकत नहीं। हम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से अच्छी मदद के त़लबगार हैं।

दूसरी फ़स्ल : नमाज़ मुकम्मल करने वाले बात़िनी उमूर

जान लीजिये कि इन ख़ूबियों के लिये ज़ियादा इबारतों की ज़रूरत है लेकिन इन्हें छे जुम्लों में जम्अ़ किया जाता है और वोह येह हैं :

(1)....हुज़ूरे क़ल्ब (2)....फ़हम (3)....ता'ज़ीम (4).....हैबत (5).....रजा और (6)....ह़या। पहले हम इन की तफ़्सील ज़िक्र करेंगे, फिर इन के अस्बाब और इलाज बयान करेंगे।

इन उमूर की तफ़्सील :

﴾1﴿.....**हुज़ूरे क़ल्ब :** इस से मुराद येह है कि बन्दा जो काम कर रहा है या जो कुछ बोल रहा है इस के सिवा दूसरी चीज़ों से दिल फ़ारिग़ हो और दिल को क़ौल व फ़े'ल दोनों का इ़ल्म हो और दोनों के इलावा किसी चीज़ की फ़िक्र न हो। जिस काम में बन्दा मसरूफ़ है उस की फ़िक्र इस से दूसरी त़रफ़ न जाए। जिस काम में वोह लगा हुवा है उस के दिल में उसी की याद हो और इस से मुतअ़ल्लिक़ा किसी चीज़ से ग़ाफ़िल न हो तो हुज़ूरे क़ल्ब हा़सिल हो जाएगा।

﴾2﴿.....**मा'निए कलाम को समझना :** येह हुज़ूरे क़ल्म के इलावा दूसरा अम्र है कि बसा अवक़ात दिल लफ़्ज़ों के साथ तो हा़ज़िर होता है मगर इन के मा'नों के साथ हा़ज़िर नहीं होता। **फ़हम** से हमारी मुराद दिल में लफ़्ज़ के मा'नी का हा़ज़िर होना है और येह ऐसा मक़ाम है जिस में लोग मुख़्तलिफ़ हैं क्यूंकि तस्बीह़ात व क़ुरआनी आयात के मआ़नी समझने के मुआ़मले में लोग एक जैसे नहीं। नीज़ कितने ही लत़ीफ़ मआ़नी ऐसे होते हैं जिन्हें नमाज़ी ह़ालते नमाज़ में ही समझता है ह़ालांकि वोह इस के दिल में पहले कभी नहीं गुज़रे होते। इसी वजह से नमाज़ बे ह़याई और बुरी बातों से रोकती है क्यूंकि इस से कई उमूर समझ में आते हैं और येह उमूर यक़ीनन बे ह़याई से बचाते हैं।

﴾3﴿....**ता'ज़ीम :** येह हुज़ूरे क़ल्ब और फ़हम के इ़लावा तीसरी चीज़ है क्यूंकि आदमी अपने गुलाम से कलाम कर रहा होता है, उस का दिल भी ह़ाज़िर होता है और मा'नी भी समझ रहा होता है लेकिन वोह गुलाम की ता'ज़ीम नहीं कर रहा होता पस ता'ज़ीम मज़्कूरा दोनों पर ज़ाइद चीज़ है।

﴾4﴿.....**हैबत :** येह ता'ज़ीम से भी बढ़ कर है, बल्कि इस से मुराद ऐसा ख़ौफ़ है जो ता'ज़ीम से पैदा होता है क्यूंकि जिसे ख़ौफ़ नहीं होता उसे ख़ौफ़ ज़दा नहीं कहा जाता। नीज़ बिच्छू, गुलाम की बद ख़ुल्क़ी और इस जैसी अदना चीज़ों से डरने को हैबत नहीं कहा जाता बल्कि हैबत मुअ़ज़्ज़म (बड़े) बादशाह से डरने को कहते हैं और हैबत ऐसा ख़ौफ़ है जो इजलाल व ता'ज़ीम से पैदा होता है (कि जलालत व ता'ज़ीमे इलाही दिल में हो तो उस का ख़ौफ़ भी होगा)।

﴾5﴿.....**रजा** (उम्मीद) **:** इस में कोई शक नहीं कि येह मज़्कूरा तमाम चीज़ों से एक ज़ाइद अम्र है, क्यूंकि कितने ही लोग ऐसे हैं जो बादशाहों के रो'ब व दबदबे से डरते हुए उन की ता'ज़ीम करते हैं लेकिन उन से किसी जज़ा की तवक़्क़ोअ़ नहीं रखते। जब कि बन्दे को चाहिये कि वोह नमाज़ पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से षवाब मिलने की उम्मीद भी रखे जैसा कि वोह गुनाहों के मुआ़मले में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के अ़ज़ाब से डरता है।

﴾6﴿.....**ह़या :** येह गुज़श्ता तमाम उमूर से बढ़ कर है क्यूंकि येह अपनी ख़त़ा पर वाक़िफ़ होने और अपनी ग़लत़ी का वहम गुज़रने से पैदा होती है। नीज़ ता'ज़ीम, ख़ौफ़ और रजा ह़या के बिग़ैर भी हो सकते हैं यूं कि तक़्सीर (या'नी ख़त़ा) का वहम और इर्तिकाबे गुनाह का ख़याल न हो मगर ह़या नहीं हो सकती।

मज़्कूरा उमूर के अस्बाब :

﴾1﴿.....**हुज़ूरे क़ल्ब :** का सबब फ़िक्र है। क्यूंकि तेरा दिल तेरी फ़िक्र के ताबेअ़ है और तुझे जिस चीज़ की फ़िक्र होगी तेरा दिल भी उसी में मश्ग़ूल होगा। नीज़ तबई त़ौर पर दिल फ़िक्री उमूर में ख़्वाह मख़्वाह मश्ग़ूल रहता है और जब दिल नमाज़ में मश्ग़ूल न होगा तो फ़ारिग़ नहीं बल्कि दुन्यावी उमूर में से जिन उमूर की आदमी को फ़िक्र होगी उन्हीं में मश्ग़ूल होगा।

दिल को नमाज़ में ह़ाज़िर रखने का **ह़ीला और इ़लाज** येह है कि बन्दा अपनी सोच व फ़िक्र नमाज़ ही की जानिब मरकूज़ रखे और फ़िक्र नमाज़ की त़रफ़ तभी फिरेगी जब येह ज़ाहिर हो जाए कि मक़्सद व मत़्लूब इसी से मुतअ़ल्लिक़ है या'नी इस बात का यक़ीन और तस्दीक़ करना कि आख़िरत बेहतर और बाक़ी रहने वाली है और नमाज़ उस तक पहुंचाने वाली है। पस जब इस बात की ह़क़ीक़त इ़ल्म की त़रफ़ इज़ाफ़त की जाए नीज़ दुन्या और इस के उमूर को

ह़क़ारत की निगाह से देखा जाए तो इस के मजमूए़ से नमाज़ में हुज़ूरे क़ल्ब ह़ासिल होगा। इसे इस मिषाल से समझो कि जब तुम ऐसे बादशाहों के पास जाते हो जो तुम्हारे नफ़्अ़ व नुक़्सान के मालिक नहीं तो तुम्हारा दिल ह़ाज़िर होता है तो जब बादशाहों के बादशाह की बारगाह में मुनाजात करते हो जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मुल्को मलकूत (ज़मीन व आस्मान की बादशाहत) और नफ़्अ़ व नुक़्सान है तो उस वक़्त तुम्हारा दिल क्यूं ह़ाज़िर नहीं होता इस का सबब ब जुज़ ईमान की कमज़ोरी के और क्या हो सकता है। लिहाज़ा तुम्हें अपना ईमान मज़बूत़ करने की पूरी कोशिश करनी चाहिये। इस का त़रीक़ा किसी और मक़ाम पर तफ़्सील से बयान किया जाएगा।

﴾2﴿.....**फ़हम** का सबब हुज़ूरे क़ल्ब के बा'द फ़िक्र को दाइमी रखना और ज़ेह्न को मआ़नी के इदराक की त़रफ़ फैरना है। इस का **इलाज** वोही है जो दिल के ह़ाज़िर करने का है। इस के साथ फ़िक्र पर मुतवज्जेह होना और वस्वसों को दूर करने के लिये मुस्तइद रहना चाहिये। नीज़ मश्ग़ूल करने वाले वस्वसों को दूर करने का **इलाज** येह है कि इन के वारिद होने के मक़ाम को ही ख़त्म कर दिया जाए या'नी इन अस्बाब को जड़ से उखेड़ दिया जाए जिन की त़रफ़ ख़यालात मुतवज्जेह होते हैं और जब तक येह उमूर दूर न होगा वस्वसे न जाएंगे। क्यूंकि जो शख़्स जिसे चाहता है उस का ज़िक्र कषरत से करता है नीज़ मह़बूब चीज़ का ज़िक्र यक़ीनन बिग़ैर क़स्दो इरादे के दिल में आ ही जाता है, इसी वजह से आप देखते हैं कि जो शख़्स ग़ैरुल्लाह से मह़ब्बत करता है उस की कोई नमाज़ वस्वसों से ख़ाली नहीं होती।

﴾3﴿.....**ता'ज़ीम** दिली कैफ़िय्यत का नाम है जो दो चीज़ों की मा'रिफ़त से ह़ासिल होती है : (1).....**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के जलाल व अ़ज़मत की मा'रिफ़त और येह उसूले ईमान में से है क्यूंकि जिस का दिल अ़ज़मते इलाही का मो'तक़िद नहीं उस का नफ़्स उस की ता'ज़ीम तस्लीम नहीं करेगा। (2).....नफ़्स की ह़क़ारत व ख़सासत (या'नी कमीनगी) को पहचानना और इसे मुसख़्ख़र व ममलूक बन्दा समझना। इन दो चीज़ों की मा'रिफ़त से आ़जिज़ी व इन्किसारी और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये ख़ुशूअ़ व ख़ुज़ूअ़ पैदा होगा इसे ही ता'ज़ीम कहते हैं। नीज़ जब तक नफ़्स के ह़क़ीर होने की मा'रिफ़त **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के जलाल व अ़ज़मत की मा'रिफ़त से न मिले तब तक ता'ज़ीम और ख़ुशूअ़ की ह़ालत मुन्तज़िम नहीं होती क्यूंकि जो शख़्स दूसरों से मुस्तग़नी और अपने नफ़्स से अम्न में हो तो हो सकता है कि वोह दूसरों की सिफ़ाते अ़ज़मत को जान ले। लेकिन न तो उसे ख़ुशूअ़ ह़ासिल होगा और न ही ता'ज़ीम इस लिये कि दूसरा क़रीना या'नी नफ़्स की ह़क़ारत की पहचान और इस की ह़ाजत उस के साथ मिली हुई नहीं।

﴾4﴿.....**हैबत व ख़ौफ़** नफ़्स की ह़ालत का नाम है जो इस बात की मा'रिफ़त से ह़ासिल होती है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ क़ादिरे मुत़लक़, ग़लबा व इक्तिदार का मालिक और उसी की मशिय्यत का निफ़ाज़ है, नीज़ उसे ज़रा भी परवाह नहीं क्यूंकि अगर वोह अगलों पिछलों को हलाक कर दे तो उस के मुल्क में ज़र्रा बराबर कमी न आए। इस के साथ साथ अम्बियाए किराम व औलियाए उ़ज़्ज़ाम के मसाइब और त़रह़ त़रह़ की आज़माइशों को भी पेशे नज़र रखे बा वुजूद येह कि वोह उन्हें दूर करने पर क़ादिर थे जब कि दुन्यावी बादशाहों का ह़ाल इस के बर अ़क्स है। अल ग़रज़ ! जूं जूं मा'रिफ़ते इलाही में इज़ाफ़ा होगा ख़ौफ़ व ख़शिय्यत में भी इज़ाफ़ा होता जाएगा। अ़न क़रीब किताबुल मुन्जियात (नजात देने वाली चीज़ों पर मुश्तमिल किताब के बाब) ख़ौफ़ के बयान में इस के अस्बाब बयान किये जाएंगे।

﴾5﴿......**रजा** का सबब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लुत़्फ़ो करम, उस के वसीअ़ इन्आ़म और उस की तख़्लीक़ की बारीक बीनियों को पहचाने और नमाज़ के बाइ़ष जो उस ने जन्नत का वा'दा फ़रमाया है इसे सच्चा जानना है। लिहाज़ा जब वा'दए इलाही का यक़ीन और उस के लुत़्फ़ो करम की मा'रिफ़त ह़ासिल हो जाएगी तो दोनों के मजमूए़ से ला मह़ाला रजा भी ह़ासिल हो जाएगी।

﴾6﴿.....**ह़या** का सबब येह है कि (बन्दे को) इ़बादत में कोताही का शुऊ़र हो और इस बात का यक़ीन रखता हो कि वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के अ़ज़ीम ह़क़ को क़ाइम रखने से आ़जिज़ है और उसे अपने नफ़्स के उ़यूब, उस की आफ़ात की मा'रिफ़त, इख़्लास की कमी, बात़िनी ख़बाषत और तमाम अफ़्आ़ल में फ़ौरी दुन्यावी फ़ाइदे की त़रफ़ ख़याल के मैलान से पुख़्तगी दे, इस के साथ साथ येह भी जाने कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का जलाल किस अ़ज़्मत का तक़ाज़ा करता है। इस बात का भी यक़ीन रखे कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ बात़िन और दिल के ख़यालात पर मुत्त़लअ़ है अगर्चे वोह कितने ही बारीक और पोशीदा हों। जब यक़ीनी त़ौर पर इन चीज़ों की मा'रीफ़त ह़ासिल होगी तो ज़रूर इस से वोह ह़ालत पैदा होगी जिसे ह़या कहा जाता है। येही इन सिफ़ात के अस्बाब हैं।

ह़ासिले कलाम :

जिसे ह़ासिल करना मत़लूब हो उस का इ़लाज येह है कि उस का सबब दरयाफ़्त किया जाए क्यूंकि सबब की पहचान ही इ़लाज की पहचान है। इन तमाम अस्बाब का राबित़ा ईमान और यक़ीन हैं या'नी येही मा'रिफ़तें जिन्हें अभी हम ने तफ़्सीलन ज़िक्र किया है और यक़ीनी मा'रिफ़त का मत़लब येह है कि किसी क़िस्म का शक न रहे यूं कि वोह मआ़रिफ़ दिल पर ग़ालिब आ जाएं जैसा कि किताबुल इ़ल्म में यक़ीन के बयान में येह बह़्ष गुज़र चुकी है। नीज़ यक़ीन जितना पुख़्ता होगा दिल में ख़ुशूअ़ व ख़ुज़ूअ़ भी इतना ही पैदा होगा।

इसी लिये उम्मुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا फ़रमाती हैं : "मेरे सरताज, साहि़बे मे'राज صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم हम से और हम आप से गुफ़्त्गू कर रहे होते लेकिन जब नमाज़ का वक़्त होता तो गोया न आप हमें पहचानते और न हम आप को पहचानते ।"(1)

ज़िक्रे इलाही के वक़्त आ'ज़ा की कैफ़िय्यत :

एक रिवायत में है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की त़रफ़ वह़्य फ़रमाई : "ऐ मूसा ! जब तुम मेरा ज़िक्र करो तो यूं करो कि मेरे हैबत व जलाल की वजह से तुम्हारे आ'ज़ा पर लर्ज़ा त़ारी हो । मेरे ज़िक्र के वक़्त ख़ुशूअ़ और इत़्मीनान वाले हो । नीज़ मेरा ज़िक्र करते वक़्त अपनी ज़बान को दिल से लगा लो । जब मेरी बारगाह में खड़े हो तो आ़जिज़ बन्दे की त़रह़ खड़े हो और सच्ची ज़बान और ख़ाइफ़ दिल के साथ मुझ से मुनाजात करो ।"(2)

नाफ़रमान मेरा ज़िक्र न करें :

मरवी है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप عَلَیْہِ السَّلَام की त़रफ़ वह़्य फ़रमाई कि "अपनी उम्मत के नाफ़रमानों से कह दीजिये कि मेरा ज़िक्र न करें क्यूंकि मैंने ख़ुद पर क़सम याद फ़रमाई है कि जो मेरा ज़िक्र करेगा मैं उस का चरचा करूंगा । पस नाफ़रमान जब मुझे याद करेंगे तो मैं उन्हें ला'नत के साथ याद करूंगा ।"(3)

ज़िक्रे इलाही में ग़फ़्लत न करने वाले नाफ़रमान के बारे में येह वई़द है तो जब ग़फ़्लत और इ़स्यान जम्अ़ हो जाएंगे तो फिर क्या ह़ाल होगा ?

दिल के मुतअ़ल्लिक़ ज़िक्र कर्दा मआ़नी का इख़्तिलाफ़ और लोगों की अक़्साम :

दिलों के मुतअ़ल्लिक़ जो मआ़नी हम ने ज़िक्र किये इन के इख़्तिलाफ़ के ए'तिबार से लोगों की मुख़्तलिफ़ अक़्साम हैं । कुछ तो ऐसे ग़ाफ़िल हैं जो नमाज़ पूरी पढ़ते हैं मगर उन का दिल लम्ह़ा भर भी ह़ाज़िर नहीं होता । कुछ वोह हैं जो इस त़रह़ पूरी नमाज़ पढ़ते हैं कि एक लम्ह़े के लिये भी दिल ग़ाइब नहीं होता बल्कि बा'ज़ अवक़ात इतनी फ़िक्र से नमाज़ पढ़ते हैं कि अपने सामने होने वाले वाक़िए़ का भी इ़ल्म नहीं होता । जैसा कि,

---

1 ......المستطرف فی کل فن مستطرف، الباب الاول فی مبانی الاسلام، الفصل الثانی، ج ۱، ص ۱۶۔

2 ......الزھد للامام احمد بن حنبل، اخبار موسی علیه السلام، الحدیث:۳۴۸، ص ۱۰۳۔

3 ......قوت القلوب، الفصل الثامن عشر فیه کتاب اذکر الوصف المکروہ......الخ، ج ۱، ص ۱۰۶۔

ह़ज़रते सय्यिदुना मुस्लिम बिन यसार عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡغَفَّار को मस्जिद का सुतून गिरने और लोगों के जम्अ़ होने का एह़सास तक न हुवा।

बा'ज़ बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَہُمُ اللّٰہُ الۡمُبِیۡن एक मुद्दत जमाअ़त में ह़ाज़िर होते रहे लेकिन कभी न पहचाना कि दाईं त़रफ़ कौन है और बाईं त़रफ़ कौन ?

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ख़लीलुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیۡہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के जोशे क़ल्ब की आवाज़ दो मील से सुनाई देती थी।

बा'ज़ लोग ऐसे भी थे कि (ह़ालते नमाज़ में) उन के चेहरे ख़ौफ़ से ज़र्द हो जाते और कंधे थर थराने लगते। येह तमाम बातें समझ से बाला तर नहीं क्यूंकि दुन्यावी बादशाहों के ख़ौफ़ से दुन्यादारों के इस से दुगना शौक़ का मुशाहदा किया जाता है ह़ालांकि वोह आ़जिज़ और कमज़ोर हैं और इन से ह़ासिल होने वाला फ़ाइदा भी ह़क़ीर है। यहां तक कि कोई शख़्स बादशाह या वज़ीर के पास जाता, उस से अपना मक़्सद बयान करता, फिर वहां से चला जाता है। अगर इस से बादशाह के लिबास या इस के इर्द गिर्द खड़े लोगों के मुतअ़ल्लिक़ पूछा जाए तो वोह इस के मुतअ़ल्लिक़ न बता पाएगा क्यूंकि इस की फ़िक्र ने इसे बादशाह के कपड़ों और दरबारियों की त़रफ़ मुतवज्जेह होने से ग़ाफ़िल कर दिया।

(इरशादे बारी तआ़ला है :)

وَ لِكُلٍّ دَرَجٰتٌ مِّمَّا عَمِلُوْا ؕ (پ۸، الانعام:۱۳۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और हर एक के लिये इन के कामों से दर्जे हैं।*

लिहाज़ा हर शख़्स का नमाज़ में इस का ह़िस्सा ख़ुशूअ़-ख़ुज़ूअ़ और ख़ौफ़ व ता'ज़ीम के मुत़ाबिक़ ही होता है क्यूंकि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ज़ाहिरी ह़रकात व सकनात को नहीं बल्कि दिलों को मुलाह़ज़ा फ़रमाता है। इसी वजह से बा'ज़ सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہِمۡ اَجۡمَعِیۡن ने फ़रमाया : बरोज़े क़ियामत लोग नमाज़ वाली हैअत पर उठाए जाएंगे। या'नी नमाज़ में उन्हें जिस क़दर इत़मीनान व सुकून और सुरूर ह़ासिल होता है इसी के मुत़ाबिक़ उन का ह़श्र होगा।(1)

1 ......قوت القلوب، الفصل الثالث والثلاثون فی ذکر دعائم الاسلام......الخ، ج۲، ص۱۶۱۔

बेशक इन्हों ने सच फ़रमाया क्यूंकि हर शख़्स उसी ह़ालत पर उठाया जाएगा जिस पर मरेगा और मौत उसी ह़ालत पर होगी जिस पर ज़िन्दगी गुज़ारी होगी। इस में उस की शख़्सिय्यत नहीं बल्कि क़ल्बी ह़ालत देखी जाएगी। नीज़ आख़िरत में दिलों की सिफ़ात ही को सूरतों में ढाला जाएगा और वोही नजात पाएगा जो क़ल्बे सलीम ले कर आया।

हम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से सुवाल करते हैं कि अपने लुत्फ़ो करम से हमें अच्छी तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए।

तीसरी फ़स्ल : हुज़ूरे क़ल्ब में नफ़्अ़ बख़्श दवा

जान लीजिये ! मोमिन के लिये ज़रूरी है कि वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ता'ज़ीम करे, उस से ख़ौफ़ ज़दा रहे, उस से उम्मीद रखे और अपनी कोताहियों पर ह़या करे। ईमान के बा'द येह ह़ालतें (इस से) जुदा नहीं होनी चाहियें अगर्चे इन की क़ुव्वत यक़ीन की क़ुव्वत के बराबर हो। नमाज़ में उन ह़ालतों के जुदा होने का सबब फ़िक्र का मुन्तशिर होना, सोच का तक़्सीम होना, मुनाजात से दिल का ग़ाइब होना और नमाज़ से ग़ाफ़िल होना है और वोही ख़यालात नमाज़ से तवज्जोह हटाते हैं जो दूसरी त़रफ़ मश्ग़ूल करते हैं और दिल को ह़ाज़िर करने का इ़लाज इन ख़यालात को दूर करना है और कोई चीज़ तभी दूर होती है जब इस के सबब को दूर किया जाए। लिहाज़ा तुम्हें इस का सबब जानना चाहिये।

दिली ख़यालात का सबब :

दिल के ख़यालात का सबब या तो ख़ारिजी अम्र होगा या ऐसा बात़िनी अम्र होगा जो उस की ज़ात में पाया जाएगा।

﴾1﴿....**ख़ारिजी सबब :** येह वोह है जो कानों से टकराता या आंखों के सामने ज़ाहिर होता है तो फ़िक्र को उचक लेता है ह़त्ता कि फ़िक्र इस के पीछे चली जाती और इस में तसर्रुफ़ करती है फिर वोह इन उमूर से दूसरे उमूर की त़रफ़ जाती है और वोह मुसलसल आगे बढ़ती रहती है। सब से पहले नज़र इस सोच का सबब बनती है फिर बा'ज़ सोचें दूसरी बा'ज़ के लिये सबब बनती हैं। लिहाजा जिस की निय्यत पुख़्ता और हिम्मत बुलन्द हो उस के ह़वास पर जारी होने वाली कोई बात उसे ग़ाफ़िल नहीं कर सकती लेकिन कमज़ोर आदमी इधर उधर मुतवज्जेह हो जाता है।

इस का इ़लाज : येह है कि इन अस्बाब को ख़त्म कर दिया जाए और इस का त़रीक़ा येह है कि (नमाज़ी) अपनी आंखें बन्द कर ले या तारीक कमरे में नमाज़ पढ़े या अपने सामने

कोई ऐसी चीज़ न रहने दे जो उस के ह़वास को मश्ग़ूल करे या दीवार के क़रीब नमाज़ पढ़े ताकि नज़र ज़ियादा दूर तक न जाए और रास्तों में नमाज़ पढ़ने से बचे इसी त़रह़ नक़्शो निगार वाली जगहों और रंग दार फ़र्श पर भी नमाज़ न पढ़े। इसी लिये इबादत गुज़ार लोग छोटे से तारीक कमरे में नमाज़ पढ़ते थे जिस में सिर्फ़ सजदा हो सकता था ताकि उन की सोचें वहीं जम्अ़ रहें। अलबत्ता ! इन में जो (ईमान के लिह़ाज़ से) मज़बूत़ थे वोह मस्जिद में ह़ाज़िर होते थे और आंखों को बन्द रखते, नीज़ इन की नज़र सजदा गाह से आगे न बढ़ती थी। वोह इस बात को नमाज़ के कामिल होने का सबब जानते थे कि उन्हें दाएं बाएं वालों की भी पहचान न हो और ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْھُمَا नमाज़ की जगह से मुस्ह़फ़ शरीफ़ (या'नी कुरआने पाक) और तल्वार को भी हटा देते, अगर (दीवार में) कोई तह़रीर लिखी होती तो उसे भी मिटा देते थे।

﴾2﴿.....**बात़िनी सबब :** येह (ज़ाहिरी सबब) से भी सख़्त है क्यूंकि जिस शख़्स की फ़िक्रें दुन्या की वादियों में बिखरी हुई हों उस की सोच एक फ़न में मुन्ह़सिर नहीं रहती बल्कि हमेशा एक त़रफ़ से दूसरी त़रफ़ उड़ती रहती है, आंखों का बन्द रखना भी उसे कोई फ़ाइदा नहीं देता क्यूंकि जो चीज़ पहले ही दिल में मौजूद है वोह उसे मश्ग़ूल रखने के लिये काफ़ी है।

इस का इलाज : येह है कि (नमाज़ी) अपने नफ़्स को ज़बरदस्ती अपनी क़िराअत के समझने की त़रफ़ मुतवज्जेह करे और इसे ग़ैर से फेर दे। अगर वोह तक्बीरे तह़रीमा से पहले तय्यार हो जाए कि अपने नफ़्स को आख़िरत की याद दिलाता और इसे मुनाजात के लिये खड़े होने के मक़ाम और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में ह़ाज़िरी के ख़त़रात से आगाह करता रहेगा तो इस त़रह़ भी उसे दिल की हुज़ूरी में मदद मिलेगी। नमाज़ के लिये तक्बीरे तह़रीमा कहने से पहले दिल को तमाम फ़िक्रों से ख़ाली कर देना चाहिये और नफ़्स के लिये ऐसी कोई चीज़ न छोड़ी जाए जिस की त़रफ़ दिल मुतवज्जेह हो। चुनान्चे, सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना उ़षमान बिन अबी शैबा رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہُ से इरशाद फ़रमाया : "मैं तुम से येह कहना भूल गया था कि घर में मौजूद हन्डिया को ढांप दो क्यूंकि मुनासिब नहीं कि घर में ऐसी चीज़ हो जो लोगों की तवज्जोह नमाज़ से फेर दे।"[1]

येह फ़िक्रों को पुर सुकून करने का त़रीक़ा है। अगर इस सुकून पहुंचाने वाली दवा से फ़िक्रों का जोश ख़त्म न हो तो इस्हाल पैदा करने वाली दवा ही नजात देगी जो रगों के अन्दर से बीमारी का माद्दा ख़त्म कर देती है। वोह **मुस्हल दवा येह है** कि बन्दा नमाज़ में उन उमूर की

---

1 ......سنن ابی داود، کتاب المناسک، باب فی الحجر، الحدیث:۲۰۳۰، ج۲، ص ۳۱۱، مفهومًا۔

तरफ़ तवज्जोह दे जो हुजूरे क़ल्ब को फेरने वाले और दूसरे उमूर की तरफ़ मुतवज्जेह करने वाले हैं। इस में कोई शक नहीं कि येह उमूर उस की (दुन्यावी) फ़िक्रों की तरफ़ ही लौटेंगे और तमाम फ़िक्रें ख़्वाहिशात की बिना पर होती हैं। लिहाज़ा ख़्वाहिशात को ख़त्म करने और इन ख़राबियों को दूर करने के ज़रीए अपने नफ़्स को सज़ा दे और हर वोह चीज़ जो उसे नमाज़ से ग़ाफ़िल करती है वोह उस के दीन की ज़िद और उस के दुश्मन इब्लीस का लश्कर है। पस इस चीज़ को रोकना निकालने से ज़ियादा नुक़्सान देह है। लिहाज़ा इसे निकाल कर इस से मुकम्मल छुटकारा हासिल करे।

आक़ा صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की आजिज़ी व इन्किसारी :

मरवी है कि जब हुजूरे अकरम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने हज़रते सय्यिदुना अबू जहम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہُ की पेश कर्दा बेल बोटों वाली चादर में नमाज़ पढ़ी तो नमाज़ के बा'द उसे उतार दिया और इरशाद फ़रमाया : "येह चादर अबू जहम के पास ले जाओ क्यूंकि इस ने मुझे अभी नमाज़ से मश्ग़ूल रखा और अबू जहम की सादा चादर मुझे ला दो।"(1) (2)

नीज़ मरवी है कि हुजूर नबिय्ये पाक صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपने मुबारक ना'लैन में नए तस्मे लगाने का हुक्म दिया फिर नए होने के सबब नमाज़ में उन पर नज़र पड़ गई तो उन्हें निकालने और पुराने तस्मे लगाने का हुक्म फ़रमाया।(3)

मरवी है कि एक बार हुजूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने जूतों का नया जोड़ा पहना वोह आप को अच्छा लगा तो सजदए शुक्र किया और इरशाद फ़रमाया : "मैं ने अपने रब्ब के सामने आजिज़ी व इन्किसारी की ताकि वोह मुझ पर ग़ज़ब नाक न हो।" फिर आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم बाहर तशरीफ़ ले गए और सब से पहले मिलने वाले साइल को वोह जूता दे दिया। फिर अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा کَرَّمَ اللہُ تَعَالٰی وَجۡھَہُ الۡکَرِیۡم से इरशाद फ़रमाया : "मेरे लिये पुराने नर्म चमड़े का जूतों का जोड़ा ख़रीदो।" फिर उन्हें पहना।(4)

---

1 .....मुफ़स्सिरे शहीर हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ الۡمَنَّان मिरआतुल मनाजीह, जि. 1 स. 466 पर इस के तहत फ़रमाते हैं : ख़याल रहे कि येह सब अपनी उम्मत की ता'लीम के लिये है। क़ल्बे पाके मुस्तफ़ा की वारिदात मुख़्तलिफ़ हैं, कभी कपड़े के बेल बोटे से ख़ुज़ूअ ख़ुशूअ कम होने का अन्देशा होता है और कभी मैदाने जिहाद में तल्वारों के साए में नमाज़ पढ़ते हैं और ख़ुशूअ में कोई फ़र्क़ नहीं आता कभी बशीरत का ज़ुहूर है और कभी नूरानिय्यत की जल्वा गरी।

2 ......صحیح مسلم، کتاب المساجد و مواضع الصلاۃ، باب کراھۃ الصلاۃ......الخ، الحدیث:۵۵۶، ص ۲۸۰، مفھومًا۔

3 ......الزھد لابن المبارک، باب فی التواضع، الحدیث:۴۰۲، ص ۱۳۵۔۱۳۶، مفھومًا۔

4 ......قوت القلوب، الفصل الثالث و الثلاثون فی ذکر دعائم الاسلام......الخ، ج ۲، ص ۱۷۳۔

मरवी है कि सोना ह़राम होने से पहले मुस्त़फ़ा जाने रह़मत صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के हाथ में सोने की एक अंगूठी थी आप मिम्बर पर तशरीफ़ फ़रमा थे कि अंगूठी उतार दी और इरशाद फ़रमाया : "इस ने मुझे मश्ग़ूल कर दिया मेरी एक नज़र इस की त़रफ़ रही और एक नज़र तुम्हारी त़रफ़ ।"(1)

कफ़्फ़ारे में बाग़ सदक़ा कर दिया :

मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू त़ल्ह़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने (अपने) एक बाग़ में नमाज़ पढ़ी, एक दरख़्त पर भूरे रंग का परन्दा देखा तो आप को अच्छा लगा, परन्दा उड़ कर निकलने का रास्ता तलाश करने लगा तो घड़ी भर के लिये आप ने उसे देखा फिर नमाज़ की त़रफ़ मुतवज्जेह हुए तो याद न रहा कि कितनी रक्अ़तें पढ़ी हैं । येह वाक़िआ़ ह़ुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से बयान करने के बा'द अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم अब वोह बाग़ सदक़ा है, आप जहां चाहें इसे सर्फ़ फ़रमाएं ।"(2)

एक और शख़्स के मुतअ़ल्लिक़ भी ऐसा ही वाक़िआ़ मन्क़ूल है कि उस ने अपने खजूरों के बाग़ में नमाज़ अदा की । खजूर के दरख़्त फलों (की कषरत की वजह) से झुके हुए थे, इन पर नज़र पड़ी तो उसे भले लगे और याद न रहा कि कितनी रक्अ़तें पढ़ी हैं ? उस ने येह वाक़िआ़ अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़षमाने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के गोश गुज़ार किया और अ़र्ज़ की : "अब वोह बाग़ सदक़ा है उसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में ख़र्च कर दीजिये ।"(3) चुनान्चे, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने उसे **50** हज़ार में बेच दिया ।

अल ग़रज़ अस्लाफ़े किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام फ़िक्र की जड़ को ख़त्म करने के लिये ऐसा करते थे और इसे नमाज़ की । कमी का कफ़्फ़ारा क़रार देते थे । येही वोह दवा है जो बीमारी को जड़ से उखेड़ने वाली है, इस के सिवा कोई चीज़ नाफ़ेअ़ नहीं ।

बहर ह़ाल जो हम ने बयान किया कि फ़िक्रों को नर्मी से ठंडा करे और ज़िक्र को समझने की कोशिश करे तो येह कमज़ोर ख़्वाहिशात और इन ख़यालात में मुफ़ीद है जो दिल के अत़राफ़ को मश्ग़ूल रखते हैं । लेकिन इन के ज़रीए़ मज़बूत़ और त़ाक़तवर ख़्वाहिशात को ठन्डा नहीं किया जा सकता । बल्कि हमेशा तू उन्हें और वोह तुझे खींचती रहेंगी फिर वोह तुझ पर ग़ालिब आ जाएंगी और इसी खींचातानी में तेरी पूरी नमाज़ गुज़र जाएगी । इस की मिषाल येह है कि कोई

---

1 ......سنن النسائی، کتاب الزینة، باب طرح الخاتم وترک لبسه، الحدیث:۵۲۹۸،۵۲۹۹، ص۸۳۸، مفهومًا۔

2 ......الموطاللامام مالک، کتاب الصلاة، باب النظر فی الصلاة الی مایشغلک عنها، الحدیث:۲۲۵، ج۱، ص۱۰۷۔

3 ......حیاة الحیوان الکبری، باب الدال المهملة، الدبسی، ج۱، ص۴۵۷۔

शख़्स दरख़्त के नीचे है और अपनी फ़िक्र को साफ़ रखना चाहता है मगर चिड़ियों की आवाज़ उसे तश्वीश में डालती है तो वोह अपने हाथ में लकड़ी ले कर उन्हें उड़ा देता और अपनी फ़िक्र की त़रफ़ लौटता है लेकिन चिड़ियां फिर लौट आती हैं वोह दोबारा लकड़ी ले कर उन्हें उड़ाता है तो उस से कहा जाएगा : "هٰذَاسَيْرُالسَّوَانِي या'नी येह आबपाशी के लिये रहट में चलने वाले ऊंट की चाल है जो कभी ख़त्म न होगी।" अगर तुम इस से छुटकारा चाहते हो तो दरख़्त को ही काट दो। येही ह़ाल ख़्वाहिशात के दरख़्त का है कि जब वोह फैल जाए और इस की शाख़ें इधर उधर बिखर जाएं तो वोह फ़िक्रों को अपनी त़रफ़ खींचती हैं जैसे चिड़ियों को दरख़्त की त़रफ़ और मख्खियों को गन्दगी की त़रफ़ कशिश होती हैं क्यूंकि मख्खी को जब भगाया जाए तो फिर आ जाती है इसी लिये इसे "**ज़ुबाब**" (या'नी जिसे ज़ियादा भगाया जाए) कहा जाता है। दिल में खटकने वाले ख़यालात का भी येही ह़ाल है। येह ख़्वाहिशात बहुत ज़ियादा हैं। इन्सान इन से बहुत कम ख़ाली होता है। इन सब की जड़ एक ही चीज़ है और वोह दुन्या की मह़ब्बत है जो हर बुराई की जड़, हर नुक़्सान की अस्ल और हर फ़साद की बुन्याद है। लिहाज़ा जिस का बात़िन मह़ब्बते दुन्या में लिपटा हुवा हो और इस में से किसी चीज़ की त़रफ़ माइल हो मगर इस लिये नहीं कि इस से आख़िरत का ज़ादे राह ले या इस से आख़िरत पर मदद ह़ासिल करे तो उसे इस बात का ख़्वाहिशमन्द नहीं होना चाहिये कि मुनाजात की ख़ालिस लज़्ज़त उसे ह़ासिल होगी क्यूंकि जो दुन्या पर ख़ुश हो वोह अपनी मुनाजात से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ को ख़ुश नहीं कर सकता। नीज़ बन्दे की फ़िक्र उस चीज़ के साथ मुअ़ल्लक़ होती जिस से उस की आंखों को ठंडक ह़ासिल हो अगर उस की आंखों की ठंडक दुन्या में हो तो ला मह़ाला उस का इरादा भी इसी की त़रफ़ होगा। लेकिन इस के बा वुजूद उसे मुजाहदा नहीं छोड़ना चाहिये और दिल को नमाज़ की जानिब मुतवज्जेह रखने और उमूर में मश्ग़ूल करने वाले अस्बाब को कम करने की कोशिश करनी चाहिये। येह एक कड़वी दवा है। इसी कड़वाहट के सबब त़बीअ़तें इसे बदमज़ा समझती हैं और मरज़ दाइमी और ला इलाज हो जाता है। यहां तक कि अकाबिरीन ने भी कोशिश की, कि दो रक्अ़तें ऐसी पढ़ें कि इन में दुन्यवी उमूर के मुतअ़ल्लिक़ कोई बात न हो लेकिन वोह भी इस से आ़जिज़ रहे तो अब हम जैसे लोगों के लिये इस में क्या उम्मीद बाक़ी रही। काश ! हमें आधी या तीसरा ह़िस्सा ही वस्वसों से ख़ाली नमाज़ की तौफ़ीक़ मिल जाती ताकि हम उन लोगों में से हो जाते जिन्हों ने अच्छे अ़मल को बुरे अ़मल से मिला दिया।

ख़ुलासा : येह है कि दुन्या की हिम्मत और आख़िरत का इरादा दिल में उस पानी की मानिन्द है जो सिर्के से भरे प्याले में डाला जाए तो बिल यक़ीन जिस क़दर पानी उस में डाला जाएगा उसी क़दर सिरका निकल जाएगा और येह दोनों जम्अ़ न होंगे।

चौथी फ़स्ल : नमाज़ में हुज़ूरिये क़ल्ब की तफ़्सील

यहां उन उमूरे क़ल्बिया को बयान किया जाएगा जिन का नमाज़ के हर रुक्न और शर्त़ में पाया जाना ज़रूरी है। हम कहते हैं कि अगर तुम आख़िरत का इरादा रखने वालों में से हो तो सब से पहले इन तम्बीहात से ग़ाफ़िल न हो जो नमाज़ की शराइत़ और अरकान हैं।

नमाज़ की शराइत़ व फ़राइज़ :[1]

नमाज़ से पहले जिन शराइत़ का पाया जाना ज़रूरी है वोह येह हैं :....अज़ान (वक़्त)...त़हारत....सित्रे औ़रत...इस्तिक़बाले क़िब्ला.....सीधा खड़ा होना.......निय्यत करना।

अज़ान :

जब तुम मुअज़्ज़िन की अज़ान सुनो तो दिल में क़ियामत के दिन की पुकार को ह़ाज़िर करो और अपने ज़ाहिर व बात़िन को जवाबे अज़ान और नमाज़ की त़रफ़ जल्दी करने के लिये तय्यार करो क्यूंकि इस निदा की त़रफ़ जल्दी करने वाले बड़ी पेशी (या'नी क़ियामत) के दिन लुत़्फ़ो करम से पुकारे जाएंगे। लिहाज़ा इस निदा पर अपने दिल को ह़ाज़िर करो। अगर इसे ख़ुशी और ख़ुशख़बरी से भरपूर पाओ और देखो कि उस की त़रफ़ जल्दी करने की दिलचस्पी पैदा हो रही है तो जान लो कि तुम्हें बरोज़े क़ियामत ख़ुशख़बरी और कामयाबी के साथ पुकारा जाएगा इसी लिये सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "ऐ बिलाल ! हमें राह़त पहुंचाओ।"[2] या'नी नमाज़ और अज़ान से हमें राह़त पहुंचाओ क्यूंकि नमाज़ आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की आंखों की ठंडक है।

त़हारत :

जब तुम नमाज़ के लिये जगह को पाक करते हो जो (बदन और कपड़ों के ए'तिबार से) तुम से दूर है, फिर अपने जिस्म से मुत्तसिल कपड़ों को पाक करते हो जो तुम्हारे जिस्म से मुत्तसिल और ज़ियादा क़रीब हैं, फिर अपने जिस्म को पाक करते हो जो तुम्हारा चमड़ा और तुम्हारे बहुत क़रीब है तो अपने मग़्ज़ या'नी ज़ात से ग़ाफ़िल न रहो और वोह तुम्हारा दिल है। लिहाज़ा उसे अपनी कोताहियों पर तौबा और नदामत के साथ पाक करने की कोशिश करो और आयन्दा इन्हें छोड़ने का पुख़्ता इरादा कर लो नीज़ अपने बात़िन (या'नी दिल) को भी पाक कर लो क्यूंकि वोह तुम्हारे मा'बूदे ह़क़ीक़ी के मुलाह़ज़ा फ़रमाने की जगह है।

1.....येह तमाम शराइत़ व फ़राइज़ शवाफ़ेअ़ के नज़दीक हैं : अह़नाफ़ के मसाइल के लिये दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ किताब बहारे शरीअ़त जिल्द अव्वल में से ह़िस्सा सिवुम का मुत़ालआ़ करें।

2.....تاریخِ بغداد، عبدالعزیز بن ابان، ۵۶۰۴، ج۱۰، ص ۴۴۲۔

सित्रे औ़रत :

इस का मा'ना है कि बदन के उन हिस्सों को लोगों से छुपाना जिन की त़रफ़ नज़र करना बुरा है । पस जब ज़ाहिर बदन कि जो लोगों के नज़र पड़ने की जगह है उस के मुतअ़ल्लिक़ येह हुक्म है तो बात़िनी पर्दों और उन बुराइयों के मुतअ़ल्लिक़ तेरा क्या ख़याल है जिन पर सिर्फ़ तेरा रब्ब عَزَّوَجَلَّ मुत्तलअ़ होता है । लिहाज़ा अपने दिल में इन ख़राबियों को हाज़िर कर के नफ़्स से इन के छुपाने का मुत़ालबा कर और येह बात षाबित है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की निगाह से कोई भी पर्दा नहीं छुपा सकता । येह नदामत, ख़ौफ़ और ह़या ही से मिट सकती हैं । दिल में इन बुराइयों के हाज़िर होने का फ़ाइदा येह होगा कि ख़ौफ़ व ह़या के लश्कर तेरे दिल में उठ खड़े होगें और तेरा नफ़्स ज़लील होगा और नदामत के बाइ़ष दिल दब जाएगा और तू रब्ब عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में यूं खड़ा होगा जैसे भागा हुवा मुजरिम ग़ुलाम खड़ा होता है जो नादिम हो कर ख़ौफ़ व ह़या से सर झुकाए अपने आक़ा की त़रफ़ लौट आता है ।

इस्तिक़्बाले क़िब्ला :

इस से मुराद येह है कि चेहरे के ज़ाहिर को तमाम अत़राफ़ से फेर कर बैतुल्लाह शरीफ़ की त़रफ़ करना । क्या तुम्हारा ख़याल है कि यहां दिल को तमाम उमूर से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के हुक्म की त़रफ़ फेरना मत़लूब नहीं ! (चेहरे के ज़ाहिर को ही फेरना ही मत़लूब है तो) ऐसा हरगिज़ नहीं है बल्कि येही मत़लूब व मक़्सूद है और येह ज़ाहिरी उमूर बात़िनी उमूर को ह़रकत देते, आ'ज़ा को कन्ट्रोल करते और उन्हें एक सम्त में रख कर साकिन करते हैं ताकि वोह दिल पर बग़ावत न करें क्यूंकि जब वोह अपनी ह़रकात और दीगर जहात की त़रफ़ मुतवज्जेह होने की सूरत में बग़ावत व ज़ुल्म करते हैं तो दिल उन के पीछे जाता है और यूं उस की तवज्जोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से हट जाती है । लिहाज़ा दिल की तवज्जोह बदन की तवज्जोह के साथ रहनी चाहिये । जान लीजिये कि जिस त़रह़ चेहरा उस वक़्त तक क़िब्ला रुख़ नहीं हो सकता जब तक उसे तमाम अत़राफ़ से फेर न दिया जाए इसी त़रह़ दिल भी उस वक़्त तक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ मुतवज्जेह नहीं हो सकता जब तक इसे ग़ैर (के ख़याल) से ख़ाली न कर लिया जाए ।

हुज़ूरे क़ल्ब के साथ नमाज़ अदा करने की फ़ज़ीलत :

हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जब बन्दा अपनी ख़्वाहिश, चेहरा और दिल अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ मुतवज्जेह कर के नमाज़ के लिये

खड़ा होता है तो अपने गुनाहों से यूं पाक व साफ़ हो कर लौटता है जैसे उस दिन था कि जिस दिन उस की मां ने उसे जना था।''(1)

सीधा खड़ा होना :

या'नी बदन और दिल के साथ बारगाहे ख़ुदावन्दी में खड़ा होना यूं कि जिस्म का सब से बुलन्द उ़ज़्व या'नी सर पस्त और झुका हुवा हो, इस का बुलन्द होने के बा वुजूद झुका हुवा होना इस बात पर तम्बीह है कि दिल में आ़जिज़ी व इन्किसारी पैदा करना और तकब्बुर व ग़ुरूर से बचना लाज़िम है। नीज़ इस वक़्त पेशे नज़र वोह हौलनाक मक़ाम हो जब बारगाहे इलाही में सुवाल के लिये ह़ाज़िर होगे, फिर येह तसव्वुर क़ाइम करो कि तुम बारगाहे इलाही में खड़े हो और वोह तुम्हारे अह़वाल पर मुत्तलअ़ है। अगर उस के जलाल की ह़क़ीक़त जानने से आ़जिज़ हो तो कम से कम यूं खड़े हो जाओ जैसे किसी दुन्यवी बादशाह के सामने खड़े होते हो बल्कि नमाज़ में क़ियाम करते वक़्त येह तसव्वुर क़ाइम करो कि तुम्हारे घर का नेक शख़्स तुम्हें देख रहा और खुली आंखों से तुम्हारी निगरानी कर रहा है या वोह जिसे तुम्हारी इस्लाह़ में रग़बत है, उस वक़्त तुम्हारा जिस्म साकिन हो जाता, आ'ज़ा में ख़ुशूअ़ और तमाम अजज़ाए बदन में सुकून आ जाता है क्यूं कि तुम्हें डर होता है कि कहीं येह आ़जिज़ शख़्स तुम्हें ख़ुशूअ़ की कमी का ता'ना न दे। लिहाज़ा जब एक आ़जिज़ शख़्स के देखते हुए तुम येह बात मह़सूस करो तो अपने नफ़्स को झिड़कते हुए कहो कि तू अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की मा'रिफ़त और उस की मह़ब्बत का दा'वा करता है तो इस बात पर जुरअत करते हुए तुझे ह़या नहीं आती ? उस के बन्दों में से एक बन्दे की ता'ज़ीम करता है या लोगों से डरता है मगर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से नहीं डरता ह़ालांकि वोह इस का ज़ियादा ह़क़दार है कि उस से डरा जाए।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से कैसे ह़या करें :

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہُ ने पूछा : ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से कैसे ह़या करें ?'' तो इरशाद फ़रमाया : ''उस से यूं ह़या करो जैसे अपनी क़ौम के नेक शख़्स से ह़या करते हो।''(2)

एक रिवायत में है कि ''जैसे अपने घर के नेक शख़्स से ह़या करते हो।''(3)

---

1 ......المعجم الاوسط، الحدیث:۷۹۴۷، ج۶، ص۴۶_نحوہ

2 ......شعب الایمان للبیھقی، باب الحیاء، الحدیث:۷۷۳۸، ج۶، ص۱۴۵_

3 ......مسند البزار، مسند معاذ بن جبل، الحدیث:۲۶۴۲، ج۷، ص۸۹_

निय्यत :

येह कि बन्दा इस बात का पुख़्ता अ़ज़्म करे कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने नमाज़ पढ़ने, इसे मुकम्मल करने, तोड़ने, फ़ासिद करने वाली चीज़ों से रुकने और इन सब अफ़्आ़ल में अपनी रिज़ा चाहने का जो हुक्म दिया है मैं उसे मानता हूं। उस से षवाब की उम्मीद और उस के अ़ज़ाब का ख़ौफ़ हो नीज़ उस का कुर्ब मत़्लूब हो। उस के एह़सान को गले का हार बनाए कि उस ने मेरी बे अदबी और गुनाहों की कषरत के बा वुजूद मुझे अपनी बारगाह में मुनाजात करने की सआ़दत अ़ता फ़रमाई। इस से मुनाजात की क़द्रो मन्ज़िलत को दिल में अ़ज़ीम जाने और ग़ौर करे कि किस से, कैसे और किस कलाम के ज़रीए मुनाजात कर रहा है ? उस वक़्त उस की पेशानी नदामत से झुकी हो, कन्धे हैबत से थर थराने लगें और ख़ौफ़ से चेहरे का रंग ज़र्द हो जाए।

तक्बीरे तह़रीमा :

जब तुम ज़बान से तक्बीर कहो तो तुम्हारा दिल उस की तक्ज़ीब न कर रहा हो अगर दिल में कोई चीज़ खुदा तआ़ला से बड़ी जानते होगे तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ गवाह है कि तुम झूटे हो अगर्चे तुम्हारा कलाम सच्चा हो जैसे मुनाफ़िक़ीन के बारे में (उन के झूटा होने की) गवाही दी, जब उन्हों ने हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से कहा कि आप अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के रसूल हैं (तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने फ़रमाया कि मुनाफ़िक़ आप को रसूल कहते हैं और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ भी गवाही देता है कि आप उस के रसूल हैं लेकिन मुनाफ़िक़ झूटे हैं) अगर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के हुक्म के बजाए तुम्हारी ख़्वाहिशात तुम पर ग़ालिब हों तो तुम अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की नहीं बल्कि ख़्वाहिशात की ज़ियादा इत़ाअ़त करने वाले हो गोया तुम ने इन को ही अपना मा'बूद बना रखा है और इन की बड़ाई बयान की तो क़रीब है कि तुम्हारा अल्लाहु अक्बर कहना मह़ज़ ज़बानी कलामी हो क्यूंकि दिल उस की मुत़ाबक़त नहीं कर रहा। अगर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के अ़फ़्वो करम से अच्छा गुमान और तौबा व इस्तिग़फ़ार न हो तो इस में कितना बड़ा ख़त़रा है।

दुआ़ए आग़ाज़ :

नमाज़ की इब्तिदा में तुम येह कलिमात कहते हो : "اِنِّیْ وَجَّهْتُ وَجْهِیَ لِلَّذِیْ فَطَرَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ" तो इस क़ौल में चेहरे से मुराद ज़ाहिरी चेहरा नहीं क्यूंकि तुम्हारा ज़ाहिरी चेहरा तो क़िब्ला रुख़ है और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इस से पाक है कि कोई जिहत उस का इह़ात़ा कर सके ह़त्ता कि चेहरे के साथ तुम्हारा बदन भी उस की त़रफ़ मुतवज्जेह हो बल्कि इस से मुराद येह है कि तुम्हारा दिल

ज़मीनो आस्मान के पैदा करने वाले की त़रफ़ मुतवज्जेह हो। लिहाज़ा तुम देखो कि तुम्हारा दिल ख़्वाहिशात की पैरवी करते हुए घर और बाज़ार के ख़यालात और अपनी ख़्वाहिशात की जानिब मुतवज्जेह है या ज़मीनो आस्मान के ख़ालिक़ की त़रफ़। इस से बचो कि मुनाजात की इब्तिदा ही झूट और बनावटी बातों पर हो। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ उस वक़्त तक तवज्जोह नहीं हो सकती जब तक उस के ग़ैर से तवज्जोह न फेर ली जाए। लिहाज़ा उसी की त़रफ़ मुतवज्जेह रहने की कोशिश करो। अगर सारी नमाज़ में येह न हो सके तो कम अज़ कम येह कलिमात कहते हुए तो इस का मिस्दाक़ बनो। जब तुम "حَنِيْفًا مُّسْلِمًا" कहो तो तुम्हारे दिल में येह बात होनी चाहिये कि मुसलमान वोह है जिस की ज़बान और हाथ से दूसरे मुसलमान मह़फ़ूज़ रहें। अगर तुम ऐसे नहीं तो तुम झूटे हो पस आयन्दा इस का अ़ज़्म करो और गुज़श्ता कोताहियों पर नादिम हो। जब "وَمَاۤ اَنَا مِنَ الْمُشْرِكِیْنَ" कहो तो अपने दिल में शिर्के ख़फ़ी (या'नी रियाकारी) से डरो क्यूंकि येह फ़रमाने बारी तआ़ला :

فَمَنْ كَانَ یَرْجُوْا لِقَآءَ رَبِّهٖ فَلْیَعْمَلْ عَمَلًا صَالِحًا وَّ لَا یُشْرِكْ بِعِبَادَةِ رَبِّهٖۤ اَحَدًا۠ ﴿۱۱۰﴾

(پ۱٦، الكهف:۱۱۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *तो जिसे अपने रब्ब से मिलने की उम्मीद हो उसे चाहिये कि नेक काम करे और अपने रब्ब की बन्दगी में किसी को शरीक न करे।*

उस शख़्स के मुतअ़ल्लिक़ नाज़िल हुवा जो अपनी इबादत से रिज़ाए इलाही और लोगों से ता'रीफ़ चाहता है। तुम्हें उस शिर्क से बचना चाहिये और अगर तुम अपने बारे में कहते हो कि तुम मुशरिकों में से नहीं और इस शिर्क (ख़फ़ी) से भी नहीं बचते तो तुम्हें दिली त़ौर पर नादिम होना चाहिये क्यूंकि लफ़्ज़े शिर्क कम या ज़ियादा सब पर बोला जाता है। जब तुम "وَمَحْیَایَ وَمَمَاتِیْ لِلّٰهِ या'नी मेरी ज़िन्दगी और मेरी मौत अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये है" कहो तो जान लो कि येह उस गुलाम की ह़ालत है जो ख़ुद को फ़रामोश कर के आक़ा के सामने मौजूद हो और जब येह कलिमा ऐसे शख़्स से सादिर हो जिस की रिज़ा व ग़ज़ब, खड़ा होना और बैठना, ज़िन्दगी में रग़बत और मौत की हैबत दुन्या के कामों के लिये हो तो येह कलिमा उस के ह़ाल के मुनासिब नहीं। जब "اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ" कहो तो यक़ीन रखो कि शैत़ान तुम्हारा दुश्मन और तुम्हारे दिल को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से फैरने के लिये ताक लगाए हुए है क्यूंकि वोह तुम्हारे मुनाजात और सजदा करने से ह़सद करता है कि उसे एक सजदा न करने और उस की तौफ़ीक़ न दिये जाने के सबब मलऊ़न ठहराया गया। तुम अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की पनाह में आना चाहते हो तो शैत़ान की मह़बूब चीज़ को तर्क कर दो और इस के बदले अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की मह़बूब चीज़ इख़्तियार करो, सिर्फ़ ज़बान से पनाह मांगना काफ़ी नहीं। क्यूंकि जिस शख़्स को कोई दरिन्दा चीर फाड़

करने या दुश्मन क़त्ल करने का इरादा करे और वोह कहे कि मैं तुम से इस मज़्बूत़ क़ल्ए़ की पनाह में आता हूं लेकिन अपनी जगह पर खड़ा रहे तो येह क़ौल उसे कोई फ़ाइदा न देगा बल्कि उसे जगह तब्दील करने से ही पनाह मिलेगी। इसी त़रह़ जो शख़्स ख़्वाहिशात की पैरवी करता है जो शैत़ान को मह़बूब और रह़मान عَزَّوَجَلَّ को नापसन्द हैं, तो उसे मह़ज़ ज़बान से पनाह त़लब करना कोई फ़ाइदा न देगा बल्कि शैत़ान के शर से रह़मान عَزَّوَجَلَّ के क़ल्ए़ में पनाह त़लब करने का पुख़्ता इरादा करे।

क़ल्अ़ए इलाही :

क़लआ़ "لَا اِلٰہَ اِلَّا اللہ" है। जैसा कि ह़दीषे क़ुदसी में है कि "لَا اِلٰہَ اِلَّا اللہ मेरा क़लआ़ है जो मेरे क़ल्ए़ में दाख़िल हो गया वोह मेरे अ़ज़ाब से मह़फ़ूज़ हो गया।"(1) इस क़ल्ए़ में वोही शख़्स पनाह ले सकता है जिस का अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई मा'बूद न हो। लेकिन जिस ने ख़्वाहिशात को ही अपना मा'बूद बनाया वोह रह़मान عَزَّوَجَلَّ के क़ल्ए़ में नहीं बल्कि शैत़ान के मैदान में है।

तुम्हें मा'लूम होना चाहिये कि शैत़ान का एक फ़रेब येह भी है कि वोह तुम्हें नमाज़ में आख़िरत की फ़िक्र और अच्छे कामों के सोचने में लगा देता है ताकि तुम जो कुछ पढ़ रहे हो उस के समझने से रोके। याद रखो जो चीज़ तुम्हें क़िराअत के मआ़नी समझने से रोके वोह वस्वसे हैं क्यूंकि क़िराअत से मक़्सूद ज़बान को ह़रकत देना नहीं बल्कि इस के मआ़नी (समझना) हैं।

क़िराअत :

इस में तीन क़िस्म के लोग हैं :

(1).....जिस की ज़बान ह़रकत करती लेकिन दिल ग़फ़्लत का शिकार है।

(2)......जिस की ज़बान ह़रकत करती है और दिल भी ज़बान की पैरवी करता है। वोह इसे यूं समझता और सुनता है गोया किसी दूसरे से सुन रहा है और येह अस्ह़ाबे यमीन (या'नी दाएं त़रफ़ वालों) के दर्जात हैं।

(3).....जिस का दिल पहले, मआ़नी को समझता है फिर ज़बान उस की ख़िदमत करती और दिल की तर्जुमान बनती है। ज़बान दिल की तर्जुमान बने या मुअ़ल्लिम बने इस में बड़ा फ़र्क़ है। मुक़र्रबीन की ज़बान दिल की तर्जुमान होती है जो दिल के पीछे होती है, दिल उस के पीछे नहीं होता।

तिलावत के मआ़नी की तफ़्सील :

जब तुम بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ पढ़ो तो इस से कलामे इलाही की क़िराअत शुरूअ़ करने के लिये तबर्रुक की निय्यत करो और समझो इस का मा'ना येह है कि तमाम उमूर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से हैं। यहां इस्म से मुराद मुसम्मा या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नाम से मुराद उस की ज़ात है। जब तमाम उमूर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से हैं तो यक़ीनन اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ कहना सह़ीह़ है। इस

(1)......تاریخِ دمشق لابن عساکر، ابواس حاق الطرسوسی:۴۸۶، الحدیث:۱۸۸۷، ج۷، ص۱۱۵۔

का मा'ना येह है : तमाम ख़ूबियां अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं क्यूंकि तमाम ने'मतें उसी की त़रफ़ से हैं और जो शख़्स किसी ने'मत को ग़ैरे ख़ुदा की त़रफ़ से जानता या शुक्र से ग़ैरे ख़ुदा का इरादा करता है और इसे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से मुसख़्ख़र नहीं जानता तो उस के بِسۡمِ اللّٰہِ और اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ कहने में इसी क़दर नुक़्सान होगा जिस क़दर उस की तवज्जोह ग़ैरे ख़ुदा की त़रफ़ होगी।

जब तुम "اَلرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ" कहो तो दिल में उस की हर त़रह़ की मेहरबानी का तसव्वुर करो ताकि तुम्हारे लिये उस की रह़मत वाज़ेह़ और तुम्हारी उम्मीद पूरी हो जाए। फिर "مٰلِکِ یَوۡمِ الدِّیۡنِ" कहते वक़्त दिल में उस की ता'ज़ीम व ख़ौफ़ को उभारो। अ़ज़मत इस ए'तिबार से कि उस के सिवा किसी की बादशाही नहीं और ख़ौफ़ रोज़े जज़ा और ह़िसाब की हौलनाकी का हो जिस का वोह मालिक है। "اِیَّاکَ نَعۡبُدُ" कह कर अपने इख़्लास की तजदीद करो और "وَ اِیَّاکَ نَسۡتَعِیۡنُ" कह कर अपने इ़ज्ज़, मोह़ताजी, त़ाक़त व क़ुव्वत से ख़ाली होने की तजदीद करो और येह यक़ीन रखो कि उस की मदद के बिग़ैर इ़बादत नहीं हो सकती। नीज़ उसी का एह़सान है कि उस ने तुम्हें अपनी इत़ाअ़त की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाई, तुम से अपनी इ़बादत कराई और तुम्हें अपनी बारगाह में मुनाजात का अहल बनाया कि अगर वोह तुम्हें अपनी तौफ़ीक़ से मह़रूम कर देता तो तुम शैत़ाने लईन के साथ धुतकारे हुओं में से होते।

जब तुम "اَعُوۡذُ بِاللّٰہِ", بِسۡمِ اللّٰہِ और اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ नीज़ उस की मदद की एह़तियाज के इज़्हार से फ़ारिग़ हो जाओ तो अपने सुवाल को मुअ़य्यन करो और अपनी अहम ह़ाजत का ही सुवाल करो और कहो "اِہۡدِ نَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِیۡمَ" या'नी ऐसा रास्ता जो हमें तेरे क़रीब कर दे और तेरी रिज़ा तक पहुंचा दे। फिर इस की शर्ह़ व तफ़्सील बयान करने, इसे मुअक्कद करने के लिये उन लोगों की मइ़य्यत ह़ासिल करने के साथ मिला दो जिन्हें उस ने हिदायत की ने'मत से सरफ़राज़ फ़रमाया और वोह अम्बिया, सिद्दीक़ीन, शुहदा और सालेह़ीन हैं, न कि वोह लोग जिन पर ग़ज़ब हुवा और वोह यहूदो नसारा और सितारा परस्त कुफ़्फ़ार हैं जो राहे ह़क़ से हटे हुए हैं। फिर क़बूलिय्यते दुआ़ की उम्मीद रखते हुए आमीन कहो (इस का मत़लब है : ऐ रब्ब عَزَّوَجَلَّ दुआ़ क़बूल फ़रमा)। जब इस त़रह़ फ़ातिह़ा पढ़ लोगे तो तुम उन लोगों में से हो जाओगे जिन के मुतअ़ल्लिक़ ह़दीषे क़ुदसी में है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया : "मैं ने नमाज़ को अपने और अपने बन्दे के दरमियान आधों आध बांट दिया है, निस्फ़ मेरे लिये है और निस्फ़ मेरे बन्दे के लिये, मेरे बन्दे के लिये वोही है जो वोह मांगे। बन्दा कहता है : اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعٰلَمِیۡنَ, तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है : "मेरे बन्दे ने मेरी ह़म्दो षना की।"(1)

---

(1) ......صحيح مسلم، كتاب الصلاة، باب وجوب قراءة الفاتحة فى كل ركعة......الخ، الحديث:٣٩٥، ص٢٠٨_٢٠٩

नमाज़ी के क़ौल "سَمِعَ اللّٰہُ لِمَنْ حَمِدَہٗ या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उस आदमी की बात सुनी जिस ने उस की ता'रीफ़ की" का भी येही मा'ना है। अगर तुम्हें नमाज़ से इतना ही हिस्सा मिल जाए कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के जलाल व अज़मत का ही ज़िक्र कर लो तो येह भी तुम्हारे लिये ग़नीमत है तो जिस षवाब व फ़ज़्ल की तुम उम्मीद रखते हो तो उस की क्या बात है? इसी तरह तुम जो सूरत पढ़ो उसे समझो जैसा कि अन क़रीब तिलावते क़ुरआन के बयान में आएगा। लिहाज़ा इस के अम्र व नही, वा'दा व वईद, वा'ज़ व नसीहत, अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की ख़बरें और उस के एहसान के ज़िक्र से ग़ाफ़िल न होना। हर हुक्म का एक हक़ है, वा'दे का हक़ उम्मीद, वईद का हक़ ख़ौफ़, अम्र व नही का हक़ अमल करने या न करने का पुख़्ता अज़्म, वा'ज़ का हक़ नसीहत हासिल करना, फ़ज़्ल व एहसान के ज़िक्र का हक़ शुक्र अदा करना और अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की ख़बरों का हक़ इब्रत हासिल करना है।

मरवी है कि हज़रते सय्यिदुना ज़रारह बिन ऊफ़ी رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ (तिलावत करते हुए) जब इस फ़रमाने बारी तआला:

فَاِذَا نُقِرَ فِی النَّاقُوْرِ ۙ﴿۸﴾ (پ۲۹، المدثر: ۸) ***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : फिर जब सूर फूंका जाएगा।***

तक पहुंचे तो गिर कर इन्तिक़ाल फ़रमा गए।

मन्क़ूल है कि हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम नख़ई عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی जब येह इरशादे रब्बानी:

اِذَا السَّمَآءُ انْشَقَّتْ ۙ﴿۱﴾ (پ۳۰، الانشقاق: ۱) ***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : जब आस्मान शक़ हो।***

सुनते तो बे चैन हो जाते यहां तक कि आप के जोड़ थर थराने लगते।

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन वाक़िद عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَاحِد फ़रमाते हैं: "मैं ने हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन उमर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا को हमेशा ग़मज़दा हालत में नमाज़ पढ़ते देखा।"[1]

बन्दे का हक़ है कि मौला तआला के वा'दे व वईद से उस का दिल फ़ना हो जाए क्यूंकि बन्दा जब्बार क़हहार عَزَّوَجَلَّ के सामने आजिज़ व गुनहगार और ज़लील है।

येह मआनी समझ बूझ के दर्जात के मुताबिक़ होते हैं और समझ बूझ उसी क़दर होती है जिस क़दर इल्म और दिल की सफ़ाई ज़ियादा होती है इन दर्जात की कोई ख़ास हद नहीं।

---

1 ......سیر اعلام النبلاء، عبداللہ بن عمر بن الخطاب: ۲۶۷، ج ۴، ص ۳۶۰، مفہومًا

नमाज़ दिलों की चाबी है जिस से कलिमात के राज़ ज़ाहिर होते हैं और येह क़िराअत का हक़ है और अज़्कार व तस्बीहात का भी येही हक़ है। नमाज़ी दौराने क़िराअत ख़ौफ़ की कैफ़िय्यत भी पैदा करे और तरतील से (या'नी मख़ारिज अदा कर के और ठहर ठहर कर) पढ़े जल्दी जल्दी न पढ़े क्यूंकि ग़ौरो फ़िक्र के लिये येही आसान त़रीक़ा है। नीज़ रह़मत व अ़ज़ाब, वा'दा व वईद, तह़मीद व ता'ज़ीम और तमजीद की आयतों को अ़लाहि़दा अ़लाहि़दा लहजों में पढ़े। ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम नख़ई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی जब इस मफ़्हूम की आयाते मुबारका तिलावत करते (जैसे येह फ़रमाने बारी तआला :)

مَا اتَّخَذَ اللّٰهُ مِنْ وَّلَدٍ وَّ مَا كَانَ مَعَهٗ مِنْ اِلٰهٍ (پ۱۸،المؤمنون:۹۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : अल्लाह ने कोई बच्चा इख़्तियार न किया और न उस के साथ कोई दूसरा ख़ुदा।

तो आवाज़ पस्त कर लेते। जैसे कोई ऐसी बात से ह़या करे जो ज़िक्र करने के लाइक़ नहीं।

नीज़ मरवी है कि कुरआन वाले से कहा जाएगा : "पढ़ और चढ़ और यूं ही आहिस्तगी से तिलावत कर जैसे दुन्या में करता था।"(1)

नमाज़ में मुसलसल खड़े रहना :

येह इस बात पर तम्बीह है कि दिल अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के साथ हुज़ूरी की सिफ़त में एक ही ह़ालत पर क़ाइम रहे। हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जो बन्दा नमाज़ में है अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रह़मते ख़ास्सा उस की त़रफ़ मुतवज्जेह रहती है जब तक इधर उधर न देखे, जब उस ने अपना मुंह फैरा उस की रह़मत फिर जाती है।"(2)

जैसे इधर उधर मुतवज्जेह होने से सर और आंखों को बचाना ज़रूरी है इसी त़रह़ दिल को भी नमाज़ के इ़लावा की त़रफ़ मुतवज्जेह होने से बचाना ज़रूरी है। जब वोह ग़ैर की त़रफ़ मुतवज्जेह होने लगे तो उसे याद दिलाओ कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस पर आगाह है। जब मुनाजात करने वाला इस से ग़ाफ़िल हो जिस से मुनाजात कर रहा है तो दोबारा उस के पास जाना बहुत बुरा होता है। लिहाज़ा अपने दिल पर ख़ुशूअ़ को लाज़िम कर लो क्यूंकि ज़ाहिरी व बात़िनी त़ौर पर इधर उधर मुतवज्जेह होने से नजात ख़ुशूअ़ ही के नतीजे में मिलती है। जब बात़िन में ख़ुशूअ़ पैदा होगा तो ज़ाहिर में भी पैदा हो जाएगा।

1 ......سنن الترمذی، کتاب فضائل القرآن، الحدیث:۲۹۲۳، ج۴، ص۴۱۹۔

2 ......سنن ابی داود، کتاب الصلاۃ، باب الالتفات فی الصلاۃ، الحدیث:۹۰۹، ج۱، ص۳۴۴، مفهومًا۔

मरवी है कि हु़ज़ूर नबिय्ये पाक, साहि़बे लौलाक صَلَّى اللهُ تعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने एक शख़्स को नमाज़ में अपनी दाढ़ी से खेलते देखा तो इरशाद फ़रमाया : "अगर इस के दिल में ख़ुशूअ़ होता तो इस के आ'ज़ा में भी ख़ुशूअ़ होता।"(1)

दिल ह़ाकिम और आ'ज़ा रिआ़या हैं :

क्यूंकि रिआ़या हुक्मरान के हुक्म के ताबेअ़ है इसी लिये दुआ़ में येह अल्फ़ाज़ आए हैं : "اَللّٰهُمَّ اَصْلِحِ الرَّاعِي وَالرَّعِيَّة या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ह़ाकिम और रिआ़या दोनों की इस्लाह़ फ़रमा।"(2) यहां ह़ाकिम दिल और रिआ़या दीगर आ'ज़ा हैं।

अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ नमाज़ में मीख़ (खूंटे) की त़रह़ और ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ सुतून की त़रह़ खडे होते और बा'ज़ सह़ाबा रुकूअ़ में इतने पुर सुकून होते कि इन पर चिड़ियां बैठ जातीं गोया वोह जमादात में से हैं (जो ह़रकत नहीं करते)।

येह तमाम वोह बातें हैं कि इन्सानी त़बीअ़त दुन्यादारों के सामने इन के बजा लाने का तक़ाज़ा करती है तो बादशाहों के बादशाह की मा'रिफ़त रखने वाले शख़्स से बादशाहे ह़क़ीक़ी की बारगाह में इन उमूर का तक़ाज़ा क्यूं न होगा ? और हर वोह शख़्स जो ग़ैरे ख़ुदा के सामने तो ख़ाशेअ़ और मुत़मइन मगर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के हु़ज़ूर बे चैन और फ़ुज़ूल कामों में पड़ा होता है तो वोह जलाले ख़ुदावन्दी की मा'रिफ़त से मह़रूम है और उसे मा'लूम नहीं कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के ज़ाहिरो बात़िन पर आगाह है।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

اَلَّذِیْ یَرٰىكَ حِیْنَ تَقُوْمُ ﴿۲۱۸﴾ وَ تَقَلُّبَكَ فِی السّٰجِدِیْنَ ﴿۲۱۹﴾ (پ۱۹، الشعراء:۲۱۸، ۲۱۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *जो तुम्हें देखता है जब तुम खड़े होते हो और नमाज़ियों में तुम्हारे दौरे को।*

ह़ज़रते सय्यिदुना इकरमा رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه इस आयते मुबारका की तफ़्सीर में फ़रमाते हैं : इस से बन्दे का क़ियाम, रुकूअ़, सुजूद और क़ा'दा मुराद है।

रुकूअ़ व सुजूद :

रुकूअ़ व सुजूद में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की किब्रियाई का दोबारा ज़िक्र करो और दोनों हाथ उठा कर नई निय्यत के साथ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के अ़ज़ाब से उस के अ़फ़्वो दरगुज़र की पनाह

1 ......نوادرالاصول، الاصل السابع والاربعون والمائتان، الحديث:١٣١٠، ص١٠٠٧ـ

2 ......كشف الخفاء، حرف الهمزة مع اللام، الحديث:٥٤٣، ج١، ص١٦٥ـ

त़लब करो और सुन्नते नबवी की पैरवी करो । फिर रुकूअ़ के ज़रीए़ ज़िल्लत और आ़जिज़ी व इन्किसारी का इज़्हार करो और दिल में रिक़्क़त और ख़ुशूअ़ पैदा करने की कोशिश करो, अपनी ज़िल्लत, अपने मौला की इ़ज़्ज़त और उस के मक़ाम की बुलन्दी को समझने की कोशिश करो, ज़बान की मदद से उसे दिल में पुख़्ता करो, अपने रब्ब عَزَّ وَجَلَّ की तस्बीह़ करो और उस की अ़ज़मत की गवाही दो कि वोह हर अ़ज़ीम से बर तर है और दिल में बार बार इस की तकरार करो ताकि येह पुख़्ता हो जाए । फिर रुकूअ़ से येह उम्मीद करते हुए उठो कि वोह तुम पर रह़्म फ़रमाने वाला है और "سَمِعَ اللّٰہُ لِمَنْ حَمِدَہ" कह कर दिल में उम्मीद को पुख़्ता करो और इस का मत़लब है कि जो उस का शुक्र अदा करता है वोह उस की बात क़बूल फ़रमाता है । फिर मज़ीद ने'मत के ह़ुसूल के लिये दोबारा शुक्र अदा करते हुए "رَبَّنَا لَكَ الْحَمْدُ" कहो । नीज़ इन अल्फ़ाज़ के ज़रीए़ ब कष्रत शुक्र अदा करो : "مِلْءُ السَّمٰوٰتِ وَمِلْءُ الْاَرْضِ या'नी ज़मीन व आस्मान शुक्र से भरे हुए हैं ।" फिर सजदे के लिये झुक जाओ और येह इज़्हारे आ़जिज़ी का सब से आ'ला दर्जा है लिहाज़ा अपने सब से ज़ियादा इ़ज़्ज़त वाले ह़िस्सए बदन को, जो कि चेहरा है सब से ह़क़ीर व बे वुक़अ़त चीज़ या'नी मिट्टी पर रख दो और अगर हो सके तो ज़मीन पर यूं सजदा करो कि पेशानी और ज़मीन के दरमियान कोई चीज़ ह़ाइल न हो क्यूंकि येह ख़ुशूअ़ को जल्द लाती और ज़िल्लत पर ज़ियादा दलालत करती है । जब तुम ने ख़ुद को मक़ामे ज़िल्लत पर डाल दिया तो जान लो कि तुम ने अपने नफ़्स को उस की जगह पर रख दिया और फ़र्अ़ को अस्ल की त़रफ़ लौटा दिया क्यूंकि तुम मिट्टी से पैदा किये गए हो और इसी की त़रफ़ लौट कर जाओगे । इस वक़्त अपने दिल में अ़ज़्मते इलाही की तजदीद करते हुए : "سُبْحٰنَ رَبِّیَ الْاَعْلٰی या'नी मेरा रब्ब عَزَّ وَجَلَّ पाक है जो सब से आ'ला है ।" कहो और इसे तकरार के साथ मुअक्कद करो क्यूंकि एक बार कहने का अषर कमज़ोर होता है । जब तुम्हारा दिल नर्म और ज़िल्लत वाज़ेह़ हो जाए तो रह़मते इलाही की पुख़्ता उम्मीद रखो क्यूंकि उस की रह़मत कमज़ोरी व ज़िल्लत ही की त़रफ़ जल्द मुतवज्जेह होती है न कि तकब्बुर व ग़ुरूर की त़रफ़ । फिर तक्बीर कहते हुए सर उठाओ और अपनी ह़ाजत त़लब करते हुए यूं कहो : "ऐ मेरे रब्ब عَزَّ وَجَلَّ मेरी मग़फ़िरत फ़रमा और रह़्म फ़रमा और मेरे गुनाह मुआ़फ़ फ़रमा जो कि तेरे इ़ल्म में हैं ।" या जो दुआ़ तुम करना चाहो वोह करो । फिर दोबारा इसी त़रह़ सजदा करते हुए आ़जिज़ी को पुख़्ता करो ।

तशह्हुद :

जब तशह्हुद के लिये बैठो तो अदब से बैठो और इस बात की वज़ाह़त करो कि जो उमूर क़ुर्बे इलाही का मूजिब हैं ख़्वाह नमाज़ें हों या अच्छे अख़्लाक़ सब **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ की त़रफ़ से

हैं। इसी त़रह़ मुल्क भी उसी का है और अत्तह़िय्यात का येही मा'ना है। नीज़ दिल में ज़ाते पाके मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم और आप के मक़ाम व मर्तबे को ह़ाज़िर कर के कहो : "اَلسَّلَامُ عَلَیْكَ اَیُّھَا النَّبِیُّ وَرَحْمَةُ اللّٰہِ وَبَرَکَاتُہٗ या'नी सलाम हो आप पर ऐ नबी और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रह़मतें और बरकतें।" और क़वी उम्मीद रखो कि येह सलाम आप صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को पहुंचता है और आप इस से बेहतर जवाब मरह़मत फ़रमाते हैं। फिर ख़ुद पर और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के तमाम नेक बन्दों पर सलाम भेजो। फिर येह उम्मीद रखो कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ (अपनी रह़मत से) नेक बन्दों की ता'दाद के बराबर तुम पर सलामती नाज़िल फ़रमाएगा। फिर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से किये हुए अ़हद की तजदीद करते हुए कलिमए शहादत के साथ उस की वह़दानिय्यत और उस के नबी ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की रिसालत की गवाही दो और फिर से उस के कलिमे के क़ल्ए़ में मह़फ़ूज़ हो जाओ। फिर नमाज़ के इख़्तिताम पर आ़जिज़ी व इन्किसारी, गिड़ गिड़ाने और लजाजत के साथ क़बूलिय्यत की सच्ची उम्मीद रखते हुए मस्नून दुआ़ करो, दुआ़ में अपने वालिदैन और तमाम मोअमिनीन को शरीक करो और सलाम फेरते वक़्त फ़िरिश्तों और मौजूद लोगों को सलाम की निय्यत करो और इस के साथ ही नमाज़ ख़त्म करने की निय्यत करो। नीज़ इस इ़बादत को पायए तक्मील तक पहुंचाने की तौफ़ीक़ देने पर रब्ब عَزَّوَجَلَّ का शुक्र अदा करो और येह गुमान करो कि येह तुम्हारी आख़िरी नमाज़ है, आयन्दा इस जैसी नमाज़ के लिये ज़िन्दा नहीं रहोगे। चुनान्चे,

आक़ाए दो आ़लम, नूरे मजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने एक शख़्स को वसिय्यत करते हुए इरशाद फ़रमाया : "रुख़्सत होने वाले की त़रह़ नमाज़ पढ़।"(1)

नीज़ नमाज़ में कोताही पर अपने दिल में ह़या और ख़ौफ़ मह़सूस करो और इस बात से डरो कि कहीं तुम्हारी नमाज़ क़बूल ही न हो या तुम किसी ज़ाहिरी या बात़िनी गुनाह के सबब मर्दूद हो जाओ और तुम्हारी नमाज़ तुम्हारे मुंह पर मार दी जाए लेकिन इस के साथ साथ येह भी उम्मीद रखो कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अपने फ़ज़्लो करम से क़बूल फ़रमाएगा।

ह़ज़रते सय्यिदुना यह़्या बिन वषाब عَلَیْہِ رَحْمَةُ اللّٰہِ الْوَھَّاب जब नमाज़ पढ़ते तो कुछ देर जिस क़दर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ चाहता ठहरते। इन पर नमाज़ की थकावट मह़सूस होती और ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम नख़ई عَلَیْہِ رَحْمَةُ اللّٰہِ الْقَوِی नमाज़ के बा'द घन्टा भर ठहरे रहते (और चेहरे के अषरात से ज़ाहिर होता) गोया आप मरीज़ हैं। येह ख़ाशिईन की नमाज़ की तफ़्सील है, जो अपनी नमाज़ में गिड़ गिड़ाते हैं, जो अपनी नमाज़ की ह़िफ़ाज़त करते हैं, जो अपनी नमाज़ के

1 ......سنن ابن ماجه، کتاب الزھد، باب الحکمة، الحدیث: ۴۱۷۱، ج۴، ص۴۵۵۔

पाबन्द हैं और जो इबादत में अपनी इस्तित़ाअ़त के मुत़ाबिक़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से मुनाजात करते हैं। लिहाज़ा इन्सान खुद को नमाज़ का आ़दी बनाए और इस में से जिस क़दर इसे मयस्सर हो उस पर खुशी मनाए, इस में से जो न पा सके उस पर ह़सरत करे और इस कमी को पूरा करने के लिये खूब कोशिश करे। ग़ाफ़िलीन की नमाज़ें ख़त़रे के मक़ाम में हैं मगर येह कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन्हें अपनी रह़मत से ढांप ले और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत वसीअ़ और करम आ़म है।

हम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में सुवाल करते हैं कि वोह हमें अपनी रह़मत से ढांप ले और अपनी मग़्फ़िरत से हमारी पर्दापोशी करे क्यूंकि हमारा कोई वसीला नहीं सिवाए उस के कि उस की इत़ाअ़त से आ़जिज़ होने का ए'तिराफ़ करें।

नमाज़ को आफ़ात से मह़फ़ूज़ रखने की फ़ज़ीलत :

जान लीजिये कि (बात़िनी) आफ़ात से नमाज़ को बचा कर ख़ालिसतन रिज़ाए इलाही के लिये मज़्कूरा बात़िनी शराइत़ जैसे खुशूअ़, ता'ज़ीम और ह़या का ख़याल रखते हुए अदा करना दिल में पाए जाने वाले इन अन्वार का सबब है जो उ़लूमे मुकाशफ़ा के लिये चाबियां हैं। औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام को असरारे इलाही और ज़मीन व आस्मान की बादशाही का जो कशफ़ होता है वोह उन्हें नमाज़ में खुसूसन ह़ालते सजदा में होता है क्यूंकि बन्दा सजदे की ह़ालत में रब्ब عَزَّوَجَلَّ के ज़ियादा क़रीब होता है। इसी लिये **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया :

وَاسْجُدْ وَاقْتَرِبْ ﴿١٩﴾ (پ٣٠، العلق: ١٩)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और सजदा करो और हम से क़रीब हो जाओ।* (1)

---

(1)....येह आयते सजदा है और आयते सजदा पढ़ने या सुनने से सजदा वाजिब हो जाता है। चुनान्चे, दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 1250 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब बहारे शरीअ़त जिल्द अव्वल सफ़ह़ा 728 पर सदरुश्शरीआ़,बदरुत्त़रीक़ा ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی नक़्ल फ़रमाते हैं : आयते सजदा पढ़ने या सुनने से सजदा वाजिब हो जाता है। सजदा वाजिब होने के लिये पूरी आयत पढ़ना ज़रूरी नहीं बल्कि वोह लफ़्ज़ जिस में सजदे का माद्दा पाया जाता है और इस के क़ब्ल या बा'द का कोई लफ़्ज़ मिला कर पढ़ना काफ़ी है।" और सफ़ह़ा 730 पर फ़रमाते हैं : "फ़ारसी या किसी और ज़बान में आयत का तर्जमा पढ़ा तो पढ़ने वाले और सुनने वाले पर सजदा वाजिब हो गया, सुनने वाले ने येह समझा हो या नहीं कि आयते सजदा का तर्जमा है, अलबत्ता येह ज़रूर है कि इसे ना मा'लूम हो तो बता दिया गया हो कि येह आयते सजदा का तर्मजा था और आयत पढ़ी गई हो तो इस की ज़रूरत नहीं कि सुनने वाले को आयते सजदा होना बताया गया हो।"
नोट : मजीद तफ़्सील के लिये बहारे शरीअ़त के मज़्कूरा मक़ाम का सफ़ह़ा 726 ता 739 का या दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना का मत़बूआ़ 49 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल रिसाले "तिलावत की फ़ज़ीलत" का मुत़ालआ़ कीजिये।

और हर नमाज़ी का मुकाशफ़ा दुन्या की कदूरतों से बाति़न की सफ़ाई के मुता़बिक़ होता है और येह ता़क़त व कमज़ोरी, क़िल्लत व कषरत और जिला व ख़फ़ा के ए'तिबार से मुख़्तलिफ़ होता है ह़त्ता कि बा'ज़ लोगों के सामने एक चीज़ अस्ल ह़ालत में मुन्कशिफ़ होती है जब कि बा'ज़ के सामने वोही चीज़ अपनी मिषाल के साथ मुन्कशिफ़ होती है जैसा कि बा'ज़ को दुन्या मुरदार की मिष्ल और शैता़न कुत्ते की सूरत में नज़र आता है जो उस पर छाती लगाए बैठ कर उस की त़रफ़ बुला रहा होता है। इसी त़रह़ मुकाशफ़ा का इख़्तिलाफ़ कश्फ़ की चीज़ों में भी होता है बा'ज़ बुज़ुर्गों के लिये **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की सिफ़ात मुन्कशिफ़ होती हैं, बा'ज़ को उस के अफ़्आ़ल मुन्कशिफ़ होते हैं और बा'ज़ को उ़लूमे मुआ़मला की बारीकियां मुन्कशिफ़ होती हैं। हर वक़्त इन मआ़नी की तइ़य्यीन के लिये बे शुमार पोशीदा अस्बाब हैं, इन में सब से सख़्त इस की त़रफ़ क़ल्बी फ़िक्र की मुनासबत है क्यूंकि जब किसी मुअ़य्यन चीज़ की त़रफ़ तवज्जोह की जाए तो वोह इन्किशाफ़ के लिये बेहतर होती है।

अहले क़ुलूब के मुकाशफ़ा का इन्कार मुनासिब नहीं :

येह उमूर (ज़ंग से) सीक़ल शुदा आईने में ही नज़र आते हैं और तमाम आईने ज़ंग आलूद हैं इस लिये उन से हिदायत छुप जाती है। इस की वजह येह नहीं कि मुनइ़म (या'नी ने'मत बख़्शने वाले) की त़रफ़ से बुख़्ल होता है बल्कि वजह येह है कि हिदायत के मक़ाम पर मैल की तह जम जाने के सबब ज़बानें इस क़िस्म की बातों का इन्कार करने में जल्दी करती हैं क्यूंकि त़बीअ़त उस चीज़ का इन्कार कर देती है जो मौजूद न हो। अगर पेट में मौजूद बच्चे में अ़क़्ल होती तो वोह हवा कि वुस्अ़तों में इन्सान की मौजूदगी के इमकान का इन्कार कर देता और अगर बच्चे को तमीज़ होती तो ज़मीन व आस्मान की बादशाहत में जिन चीज़ों के इदराक का उ़-क़ला गुमान करते हैं उन का इन्कार कर देता। इसी तरह़ इन्सान हर ह़ालत में इस से आ'ला ह़ालत का इन्कार करता है और जो विलायत के ह़ाल का मुन्किर हो उस पर नबुव्वत के ह़ाल का इन्कार भी लाज़िम आएगा और मख़्लूक़ मुख़्तलिफ़ दर्जात पर पैदा की गई है। लिहाज़ा बन्दे को अपने से ऊपर वाले दर्जे का इन्कार नहीं करना चाहिये मगर चूंकि लोगों ने इस चीज़ को बह़ष व मुबाह़षा के ज़रीए़ तलाश किया ग़ैरे ख़ुदा से दिल को पाक करने के ज़रीए़ नहीं ढूंडा तो इसे न पा सकने के बाइ़ष इन्कार कर दिया। जो अहले मुकाशफ़ा में से न हो तो कम अज़ कम उसे ग़ैब पर ईमान लाना और इस की तस्दीक़ करनी चाहिये यहां तक कि वोह तजरिबे से इस का मुशाहदा कर ले।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ नमाज़ी बन्दे पर फ़ख़्र फ़रमाता है :

हदीषे पाक में है : "बन्दा जब नमाज़ में खड़ा होता है तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अपने और बन्दे के दरमियान से पर्दे उठा देता और उस की त़रफ़ खुसूसी तवज्जोह फ़रमाता है, फ़िरिश्ते उस के कांधे से हवा तक खडे हो जाते हैं, उस के साथ नमाज़ पढ़ते, उस की दुआ पर आमीन कहते हैं और आस्मान से नमाज़ी के सर की मांग तक एक नेकी उतरती है और एक मुनादी निदा करता है कि अगर येह मुनाजात करने वाला जान लेता कि वोह किस की बारगाह में मुनाजात कर रहा है तो इधर उधर मुतवज्जेह न होता। आस्मान के दरवाज़े नमाज़ियों के लिये खोल दिये जाते हैं और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़िरिश्तों की मजलिस में अपने नमाज़ी बन्दे पर फ़ख़्र फ़रमाता है।"(1)

(सय्यिदुना इमाम ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِى फ़रमाते हैं :) आस्मान के दरवाज़ों का खुलना और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का नमाज़ी की त़रफ़ मुतवज्जेह होना हमारे ज़िक्र कर्दा कश्फ़ से किनाया है।

तौरात में लिखा है कि "ऐ इब्ने आदम ! मेरे सामने नमाज़ पढ़ते और रोते हुए खड़ा होने से आ़जिज़ न होना, मैं अल्लाह हूं जो तेरे दिल से क़रीब है और तूने ग़ैब से मेरे नूर को देखा।"(2)

रावी कहते हैं कि येह रिक़्क़त, रोना और वोह कुशादगी जिसे नमाज़ी अपने दिल में पाता है दिल में कुर्बे इलाही की बिना पर है और जब येह कुर्ब, मकानी कुर्ब नहीं तो इस का मा'ना हिदायत, रह़मत और हि़जाब का उठ जाना ही है।

फ़िरिश्ते किस पर तअ़ज्जुब करते हैं ?

मन्क़ूल है कि "बन्दा जब दो रक्अ़तें पढ़ता है तो फ़िरिश्तों की दस सफ़ें उस पर तअ़ज्जुब करती हैं इन में से हर सफ़ में दस हज़ार फ़िरिश्ते होते हैं और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ एक लाख फ़िरिश्तों के सामने उस पर फ़ख़्र करता है।"(3)

फ़िरिश्तों के तअ़ज्जुब करने की वजह :

इस की वजह येह है कि बन्दे की नमाज़ में क़ियाम व कुऊ़द और रुकूअ़ व सुजूद जम्अ़ होते हैं जब कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इन चार अरकान को 40 हज़ार मलाइका में तक़्सीम किया है। कियाम करने वाले फ़िरिश्ते क़ियामत तक रुकूअ़ नहीं करेंगे। सजदा करने वाले ता क़ियामत

---

1 ......قوت القلوب، الفصل الثالث والثلاثون، فی ذکر دعائم السلام......الخ، ج ٢، ص ١٢٥ ـ

2 ......المرجع السابق۔ 3 ......المرجع السابق۔

इस से सर नहीं उठाएंगे। इसी त़रह़ रुकूअ़ और क़ा'दा करने वालों का ह़ाल है क्यूंकि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने फ़िरिश्तों को जो क़ुर्ब और रुतबा अ़त़ा फ़रमाया है (इस के मुत़ाबिक़) इन पर हमेशा एक ही ह़ालत पर रहना लाज़िम है इस में कमी बेशी नहीं हो सकती। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इन के मुतअ़ल्लिक़ ख़बर देते हुए इरशाद फ़रमाया :

وَمَا مِنَّاۤ اِلَّا لَهٗ مَقَامٌ مَّعْلُوْمٌۙ۝۱۶۴

(پ۲۳، الصّٰفّٰت:۱۶۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और फ़िरिश्ते कहते हैं हम में हर एक का एक मक़ाम मा'लूम है।

बा ए'तिबार तरक़्क़िये दर्जात इन्सान फ़िरिश्तों से मुख़्तलिफ़ है :

इन्सान एक दर्जे से दूसरे की त़रफ़ तरक़्क़ी करने में फ़िरिश्तों से मुख़्तलिफ़ है क्यूंकि येह हमेशा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के क़रीब होता रहता और उस का मज़ीद क़ुर्ब पाता है जब कि फ़िरिश्तों पर मज़ीद क़ुर्ब का दरवाज़ा बन्द है और हर फ़िरिश्ते का वोही रुतबा है जिस पर वोह खड़ा है और वोही इ़बादत है जिस में वोह मश्ग़ूल है। वोह न तो इस के ग़ैर की त़रफ़ मुन्तक़िल होता और न ही इस में कोताही करता है। चुनान्चे,

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

لَا یَسْتَكْبِرُوْنَ عَنْ عِبَادَتِهٖ وَ لَا یَسْتَحْسِرُوْنَۚ۝۱۹ یُسَبِّحُوْنَ الَّیْلَ وَ النَّهَارَ لَا یَفْتُرُوْنَ۝۲۰

(پ۱۷، الانبیاء:۱۹،۲۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : उस की इ़बादत से तकब्बुर नहीं करते और न थकें रात दिन उस की पाकी बोलते हैं और सुस्ती नहीं करते।

और ज़ियादतिये दर्जात की चाबी नमाज़ है। चुनान्चे,

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है :

قَدْ اَفْلَحَ الْمُؤْمِنُوْنَۙ۝۱ الَّذِیْنَ هُمْ فِیْ صَلَاتِهِمْ خٰشِعُوْنَۙ۝۲ (پ۱۸، المؤمنون:۱،۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक मुराद को पहुंचे ईमान वाले, जो अपनी नमाज़ में गिड़ गिड़ाते हैं।

यहां अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने ईमान के बा'द मख़्सूस नमाज़ के साथ ईमान वालों की ता'रीफ़ फ़रमाई जो ख़ुशूअ़ के साथ मिली हुई है। फिर दुन्या व आख़िरत में कामयाबी पाने वालों की ख़ूबियों का इख़्तिताम भी नमाज़ के ज़िक्र से किया। चुनान्चे, इरशाद फ़रमाया :

وَ الَّذِیْنَ هُمْ عَلٰى صَلَوٰتِهِمْ یُحَافِظُوْنَ۝۹

(پ۱۸، المؤمنون:۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और वोह जो अपनी नमाज़ों की निगहबानी करते हैं।

फिर इन ख़ूबियों के नतीजे में इरशाद फ़रमाया :

أُولَٰٓئِكَ هُمُ الْوَارِثُونَ ﴿١٠﴾ الَّذِينَ يَرِثُونَ الْفِرْدَوْسَ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿١١﴾

(پ۱۸، المؤمنون: ۱۰، ۱۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : येही लोग वारिष हैं कि फ़िरदौस की मीराष पाएंगे, वोह इस में हमेशा रहेंगे ।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने पहले इन्हें फ़लाह़ (कामयाबी) के साथ फिर जन्नतुल फ़िरदौस की विराषत के साथ मुत्तसिफ़ फ़रमाया ।

(सय्यिदुना इमाम ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِى फ़रमाते हैं :) मेरे ख़याल में ग़ाफ़िल दिल के साथ मह़ज़ ज़बान को जल्दी जल्दी चलाना उस दर्जे तक नहीं पहुंचा सकता । इसी वजह से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इन (नमाज़ियों) के मुक़ाबिल जहन्नमियों से मुतअ़ल्लिक़ इरशाद फ़रमाया :

مَا سَلَكَكُمْ فِي سَقَرَ ﴿٤٢﴾ قَالُوا لَمْ نَكُ مِنَ الْمُصَلِّينَ ﴿٤٣﴾ (پ۲۹، المدثر: ۴۲، ۴۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तुम्हें क्या बात दोज़ख़ में ले गई वोह बोले हम नमाज़ न पढ़ते थे ।

लिहाज़ा नमाज़ी ही जन्नतुल फ़िरदौस के वारिष हैं और वोही **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नूर का मुशाहदा करने वाले और उस के क़ुर्ब से लुत़्फ़ अन्दोज़ होने वाले हैं ।

दुआ़ :

हम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में सुवाल करते हैं कि हमें इन (या'नी मज़्कूरा औसाफ़ से मुत्तसिफ़ नमाज़ियों) में से बनाए और हम उन लोगों की सज़ा से पनाह त़लब करते हैं जिन की बातें तो अच्छी मगर काम बुरे हैं । बेशक वोही करम व एह़सान फ़रमाने वाला है । उस का एह़सान क़दीम है । नीज़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हर बरगुज़ीदा बन्दे पर रह़मत हो ।

تُوبُوا إِلَى اللّٰه ...... أَسْتَغْفِرُ اللّٰه

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ...... صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

पांचवीं फ़स्ल : ख़ुशूअ़, ख़ुज़ूअ़ से नमाज़ पढ़ने वालों की ह़िकायात

जान लीजिये कि ख़ुशूअ़ ईमान का फल और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के जलाल से ह़ासिल होने वाले यक़ीन का नतीजा है। जिसे येह ह़ासिल हो जाए वोह नमाज़ में और नमाज़ से बाहर बल्कि तन्हाई में और इस्तिन्जा ख़ाने में भी क़ज़ाए ह़ाजत के वक़्त ख़ुशूअ़ अपनाता है। क्यूंकि ख़ुशूअ़ का मुजिब इस बात की पहचान है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ बन्दे पर मुत्तलअ़ है। नीज़ बन्दा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के जलाल और अपनी कोताही की मा'रिफ़त रखता है। इन्ही बातों की पहचान से ख़ुशूअ़ ह़ासिल होता है और येह नमाज़ के साथ ख़ास नहीं इसी लिये बा'ज़ बुज़ुर्गों के मुतअ़ल्लिक़ मन्क़ूल है कि उन्हों ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से ह़या करते और उस से डरते हुए **40** साल तक आस्मान की त़रफ़ सर नहीं उठाया।

आंखों का क़ुफ़्ले मदीना :

मन्क़ूल है कि ह़ज़रते सय्यिदुना रबीअ़ बिन ख़ुषैम رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَیْه हमेशा सर और आंखें झुकाए रखते थे ह़त्ता कि बा'ज़ लोग आप को नाबीना समझते। आप **20** साल ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰهُ تعَالٰی عَنْهُ के घर ह़ाज़िर होते रहे। जब ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने मसऊ़द رَضِیَ اللّٰهُ تعَالٰی عَنْهُ की कनीज़ उन्हें (आते) देखती तो कहती : "आप के नाबीना दोस्त तशरीफ़ लाए हैं।" ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰهُ تعَالٰی عَنْهُ उस की बात सुन कर मुस्कुरा देते। आप رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَیْه जब दरवाज़ा बजाते, कनीज़ बाहर निकलती तो उन्हें सर और आंखें झुकाए देखती। ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰهُ تعَالٰی عَنْهُ जब ह़ज़रते सय्यिदुना रबीअ़ बिन ख़ुषैम رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَیْه को देखते तो येह आयते मुक़द्दसा तिलावत करते :

وَبَشِّرِ الْمُخْبِتِيْنَ ﴿٣٤﴾ (پ۱۷، الحج:۳۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और ऐ मह़बूब ! ख़ुशी सुना दो उन तवाज़ोअ़ वालों को।*

और फ़रमाते : ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! अगर ह़ुज़ूरे अन्वर, शाफ़ेए़ मह़शर صَلَّى اللّٰه تعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم तुम्हें देखते तो तुम से ख़ुश होते। एक रिवायत में है कि "आप को पसन्द फ़रमाते।" एक रिवायत में है कि "आप को देख कर मुस्कुरा देते।"

सय्यिदुना रबीअ़ عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْبَدِیْع का ख़ौफ़े ख़ुदा :

मन्क़ूल है कि एक दिन ह़ज़रते सय्यिदुना रबीअ़ बिन ख़ुषैम رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَیْه ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰهُ تعَالٰی عَنْهُ के साथ लोहारों के पास से गुज़रे जब आप ने भट्टियों के धोंकने और आग के शो'ले बुलन्द होने को देखा तो एक चीख़ मारी और बेहोश हो

कर गिर पड़े। ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عَنۡہُ नमाज़ के वक़्त तक आप के सिरहाने बैठे रहे मगर होश में न आए। वोह आप को पीठ पर उठा कर घर ले आए। दूसरे दिन उस वक़्त तक आप बेहोश रहे जिस वक़्त चीख़ मारी थी, इस दौरान आप की पांच नमाज़ें क़ज़ा हो गईं और ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عَنۡہُ उन के सिरहाने बैठे फ़रमा रहे थे : "ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! ख़ौफ़े (ख़ुदा) इसे ही कहते हैं।"(1)

ह़ज़रते सय्यिदुना रबीअ़ बिन ख़ुषैम رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تعالٰی عَلَیۡہ फ़रमाते थे : "मैं जब भी नमाज़ पढ़ता मुझे येही फ़िक्र रहती कि मैं क्या कहता हूं और मुझे क्या जवाब मिलेगा।"(2)

सय्यिदुना आ़मिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تعالٰی عَلَیۡہ का ख़ुशूअ़ :

ह़ज़रते सय्यिदुना आ़मिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تعالٰی عَلَیۡہ भी ख़ुशूअ़ से नमाज़ पढ़ने वालों में से थे। जब आप नमाज़ पढ़ रहे होते तो अकषर आप की बेटी दफ़ बजाती और घर में आने वाली औ़रतों से बातें करती लेकिन आप न उन की बातें सुनते और न ही समझ पाते। एक दिन आप رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تعالٰی عَلَیۡہ से पूछा गया : "क्या आप नमाज़ में अपने नफ़्स से कोई बात करते हैं ?" तो फ़रमाया : "हां ! येह बात कि मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सामने खड़ा हूं और मैं ने दो घरों में से एक घर में लौटना है।" अ़र्ज़ की गई : "क्या हमारी त़रह़ आप भी नमाज़ में उमूरे दुन्या में से कुछ पाते हैं ?" फ़रमाया : "मुझे नमाज़ में दुन्या के ख़यालात पैदा होने से येह बात ज़ियादा पसन्द है कि मुझ पर तीरों से ह़म्ला किया जाए।" आप رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تعالٰی عَلَیۡہ फ़रमाया करते थे : "अगर पर्दा उठा दिया जाए तो मेरे यक़ीन में कोई इज़ाफ़ा न हो।"(3)

ह़ज़रते सय्यिदुना मुस्लिम बिन यसार عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡغَفَّار भी कषरते ख़ुशूअ़ वालों में से थे। हम ज़िक्र कर चुके हैं कि आप नमाज़ में थे तो आप को मस्जिद में सुतून गिरने का पता भी न चला।

तक्लीफ़ का एह़सास तक न हुवा :

मन्क़ूल है कि "एक बुज़ुर्ग के जिस्म का कोई ह़िस्सा गल गया और उसे काटने की ज़रूरत मह़सूस हुई लेकिन मुमकिन न था तो कहा गया कि कुछ भी हो जाए नमाज़ में इन्हें किसी चीज़ का एह़सास नहीं होता। चुनान्चे, नमाज़ की ह़ालत में उन के बदन का वोह ह़िस्सा काट दिया गया।"

---

1 ......قوت القلوب، الفصل الثالث والثلاثون فی ذکر دعائم الاسلام......الخ، ج ۲، ص ۱۶۹۔

2 ......المرجع السابق۔　3 ......المرجع السابق۔

मन्क़ूल है कि "नमाज़ आख़िरत में से है। लिहाज़ा जब तू नमाज़ शुरूअ़ करे तो दुन्या से निकल जा।"[1]

किसी बुज़ुर्ग से पूछा गया : क्या दौराने नमाज़ आप अपने नफ़्स से कोई दुन्यवी बात करते हैं ? तो उन्हों ने जवाब दिया : न नमाज़ में न नमाज़ से बाहर।

बा'ज़ बुज़ुर्गों से पूछा गया : क्या आप नमाज़ में कोई चीज़ याद करते हैं ?" जवाब मिला : "मुझे नमाज़ से ज़ियादा कौन सी चीज़ प्यारी है कि मैं नमाज़ में उसे याद करूं ?"

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते थे : "आदमी की समझदारी में से है कि नमाज़ शुरूअ़ करने से पहले अपना ज़रूरी काम निमटा ले ताकि नमाज़ शुरूअ़ करे तो उस का दिल फ़ारिग़ हो।"[2]

वस्वसों के ख़ौफ़ से नमाज़ मुख़्तसर पढ़ी :

बा'ज़ बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَہُمُ اللّٰہُ الْمُبِیْن वस्वसों के ख़ौफ़ से नमाज़ मुख़्तसर कर देते थे। चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्मार बिन यासिर رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ ने एक दिन नमाज़ मुख़्तसर कर के पढ़ी तो इन से अ़र्ज़ की गई : "ऐ अबू यक़ज़ान ! आप ने नमाज़ मुख़्तसर कर के पढ़ी है ?" तो आप رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : "क्या तुम ने मुझे नमाज़ में कुछ कमी करते पाया ?" लोगों ने कहा "नहीं।" फ़रमाया : मैं ने शैत़ान के भुलाने के ख़ौफ़ से जल्दी की, बेशक रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "बन्दा नमाज़ पढ़ता है लेकिन उस के लिये नमाज़ का निस्फ़, तीसरा, चौथा, पांचवां, छटा और दस्वां ह़िस्सा भी नहीं लिखा जाता।"[3]

नीज़ हुज़ूरे अकरम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم इरशाद फ़रमाते : "बन्दे के लिये उस की नमाज़ में से वोही लिखा जाता है जिसे वोह समझ कर अदा करे।"[4]

---

1 ......قوت القلوب، الفصل الثالث و الثلاثون فی ذکر دعائم الاسلام......الخ، ج ۲، ص ۱۲۹ ۔

2 ......قوت القلوب، الفصل الثالث و الثلاثون فی ذکر دعائم الاسلام......الخ، ج ۲، ص ۱۲۹ ۔

3 ......المسند للامام احمد بن حنبل، مسند الکوفیین، حدیث عمار بن یاسر، الحدیث: ۱۸۹۱۶، ج ۶، ص ۴۸۳، مفهومًا ۔

4 ......قوت القلوب، الفصل الثالث و الثلاثون فی ذکر دعائم الاسلام......الخ، ج ۲، ص ۱۲۹ ۔ ۱۷۰ ۔ بتقدمٍ و تاخرٍ ۔

मन्कूल है कि ह़ज़रते सय्यिदुना त़ल्ह़ा, ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुबैर और सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْھِمْ اَجْمَعِیْن का एक गुरौह इन्तिहाई मुख़्तसर नमाज़ पढ़ते और फ़रमाते : "हम शैत़ान के वस्वसों की वजह से जल्दी पढ़ते हैं।"(1)

एक भी नमाज़ नहीं पढ़ी :

मरवी है कि अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने बर सरे मिम्बर फ़रमाया : "बेशक ह़ालते इस्लाम में इन्सान के रुख़्सारों पर सफे़दी आ जाती है (उस की दाढ़ी सफे़द हो जाती है) लेकिन उस ने रिज़ाए इलाही के लिये एक नमाज़ भी पूरी नहीं पढ़ी होती।"(2) अ़र्ज़ की गई : "येह कैसे ?" फ़रमाया : "वोह ख़ुशूअ़ व ख़ुज़ूअ़ से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ मुतवज्जेह नहीं होता।"(3)

आयते मुबारका की तफ़्सीर :

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू आ़लिय्या رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से इस फ़रमाने बारी तआ़ला :

الَّذِیۡنَ ہُمۡ عَنۡ صَلَاتِہِمۡ سَاہُوۡنَ ۙ﴿۵﴾

(پ۳۰، الماعون:۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *जो अपनी नमाज़ से भूले बैठे हैं।*

के मुतअ़ल्लिक़ पूछा गया तो फ़रमाया : "इस से मुराद वोह शख़्स है जो नमाज़ में भूल जाता है और नहीं जानता कि कितनी रक्अ़तों के बा'द फ़ारिग़ होगा जुफ़्त के बा'द या त़ाक़ के ?"(4)

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ह़सन बसरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : "इस से मुराद वोह है जो नमाज़ के वक़्त ग़ाफ़िल रहता है यहां तक कि नमाज़ का वक़्त निकल जाता है।"(5)

बा'ज़ उ़-लमाए किराम رَحِمَھُمُ اللّٰہُ السَّلَام ने इस का मा'ना येह बयान फ़रमाया कि "येह वोह शख़्स है जो अव्वल वक़्त में नमाज़ पढ़ने पर ख़ुश नहीं होता और ताख़ीर करने पर ग़मज़दा नहीं होता और जल्दी पढ़ने को षवाब और ताख़ीर को गुनाह नहीं समझता।"(6)

---

1 ……قوت القلوب، الفصل الثالث والثلاثون فی ذکر دعائم الاسلام……الخ، ج۲، ص ۱۷۰۔

2 ……قوت القلوب، الفصل الثالث والثلاثون فی ذکر دعائم الاسلام……الخ، ج۲، ص ۱۷۰۔

3 ……المرجع السابق۔

4 ……المرجع السابق۔

5 ……المرجع السابق۔

6 ……المرجع السابق۔

याद रखिये कि नमाज़ का कुछ हिस्सा शुमार होता और लिखा जाता है जब कि कुछ हिस्सा न शुमार किया जाता और न लिखा जाता है। जैसा कि इस पर रिवायात दलालत करती हैं अगर्चे फ़क़ीह के नज़्दीक नमाज़ सहीह़ होने के ए'तिबार से तक़्सीम नहीं होती लेकिन इस का एक और मा'ना भी है जो हम ने ज़िक्र किया और इस मा'ना पर अह़ादीष दलालत करती हैं। चुनान्चे, मरवी है कि "फ़राइज़ की कमी नवाफ़िल के ज़रीए पूरी की जाएगी।"

बाइषे नजात और क़ुर्ब का ज़रीआ :

मन्क़ूल है कि ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने फ़रमाया : अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है : "फ़राइज़ के ज़रीए मेरा बन्दा मुझ (या'नी मेरे अ़ज़ाब) से नजात पा लेता और नवाफ़िल के ज़रीए क़ुर्ब ह़ासिल करता है।"(1)

सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है : "मेरे फ़र्ज़ कर्दा अह़काम की बजा आवरी के बिग़ैर बन्दा मेरे अ़ज़ाब से छुटकारा नहीं पा सकता।"(2)

दिल नमाज़ में ह़ाज़िर नहीं :

मरवी है कि (एक बार) हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने नमाज़ पढ़ी और क़िराअत से एक आयत रह गई। नमाज़ से फ़ारिग़ हुए तो इस्तिफ़सार फ़रमाया : "मैं ने क्या पढ़ा ?" सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن ख़ामोश रहे फिर आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना उबय्य बिन का'ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से पूछा तो उन्हों ने अ़र्ज़ की : "आप ने फ़ुलां सूरत पढ़ी और फ़ुलां आयत नहीं पढ़ी, मैं नहीं जानता कि वोह मन्सूख़ हो गई या उठा ली गई।" आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "ऐ उबय्य ! तुम ही इस के लिये हो (या'नी नमाज़ में कामिल त़ौर पर मुतवज्जेह रहना तुम्हारे ही लाइक़ है)।" फिर दीगर सह़ाबए किराम की त़रफ़ मुतवज्जेह हो कर इरशाद फ़रमाया : उन लोगों का क्या ह़ाल है जो नमाज़ में ह़ाज़िर होते, सफ़ों को मुकम्मल करते और अपने नबी की इक़्तिदा में होते हैं लेकिन वोह नहीं जानते कि उन के सामने किताबुल्लाह में से क्या पढ़ा जाता है। ख़बरदार ! बनी इसराईल ने इसी

---

1 ......قوت القلوب، الفصل الثالث والثلاثون فی ذکر دعائم الاسلام......الخ، ج ۲، ص ۱۷۰۔

2 ......قوت القلوب، الفصل الثالث والثلاثون فی ذکر دعائم الاسلام......الخ، ج ۲، ص ۱۷۰۔

त़रह़ किया था तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इन के नबी عَلَيْهِ السَّلَام की त़रफ़ वह्य फ़रमाई कि अपनी क़ौम से फ़रमा दीजिये : "तुम्हारे बदन मेरी बारगाह में ह़ाज़िर होते हैं और अपने कलिमात तुम बारगाह तक पहुंचाते हो लेकिन तुम्हारे दिल मेरी त़रफ़ मुतवज्जेह नहीं होते जिस त़रफ़ तुम जा रहे हो वोह बात़िल है।"(1) येह रिवायत इस बात पर दलालत करती है कि इमाम की क़िराअत सुनना और समझना खुद क़िराअत करने की त़रह़ है।

बा'ज़ बुज़ुर्गों ने फ़रमाया : "कोई शख़्स एक सजदा कर के समझता है कि उस ने इस के ज़रीए क़ुर्बे खुदावन्दी ह़ासिल कर लिया है ह़ालांकि उस के एक सजदे के गुनाह अहले मदीना पर तक़्सीम कर दिये जाएं तो सब हलाक हो जाएं।" पूछा गया : "वोह कैसे ?" फ़रमाया : "वोह बज़ाहिर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ को सजदा कर रहा होता है मगर उस का दिल ख़्वाहिशात की त़रफ़ झुका होता और वोह बात़िल का मुशाहदा कर रहा होता है जो उस पर ग़ालिब होता है।"(2)

(मज़्कूरा कलाम जो कुछ ज़िक्र किया गया है) येह ख़ाशिईन की सिफ़त है। बयान कर्दा ह़िकायात व रिवायात इस बात पर दलालत करती हैं कि नमाज़ में अस्ल खुशूअ़ और हुज़ूरे क़ल्ब है जब कि ग़फ़्लत के साथ मह़ज़ ऊपर नीचे होना आख़िरत में बहुत कम नफ़्अ़ देगा।

وَاللّٰهُ اَعْلَم या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ बेहतर जानता है।

हम अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से अच्छी तौफ़ीक़ का सुवाल करते हैं।

تُوبُوا اِلَى الله ...... اَسْتَغْفِرُ الله

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ...... صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

---

1 ......قوت القلوب، الفصل الثالث والثلاثون فی ذكر دعائم الاسلام......الخ، ج ٢، ص ١٧١، ١٧٢۔

2 ......قوت القلوب، الفصل الثالث والثلاثون فی ذكر دعائم الاسلام......الخ، ج ٢، ص ١٧٢۔

बाब नम्बर 4 :

इमामत का बयान

﴾येह चार फ़स्लों पर मुश्तमिल है﴿

पहली फ़स्ल : इमाम पर नमाज़ से पहले के, नीज़ क़िराअत, अरकान और सलाम के बा'द के लाज़िम उमूर

क़ब्ले नमाज़ इमाम पर छे बातें लाज़िम हैं :

﴾1﴿.....इमाम को चाहिये कि ऐसी क़ौम की इमामत न करे जो उसे ना पसन्द करती हो अगर लोगों में इख़्तिलाफ़ हो जाए तो अकषरिय्यत की राए पर अ़मल किया जाए अगर कम ता'दाद वाले लोग दीनदार और नेक लोग हों तो उन को तरजीह़ दी जाए।

किन की नमाज़ मक़्बूल नहीं होती :

ह़दीषे मुबारका में है कि "तीन आदमियों की नमाज़ उन के सरों से तजावुज़ नहीं करती : (1) भागा हुवा ग़ुलाम (2) वोह औ़रत जिस का शोहर उस पर नाराज़ हो और (3) वोह शख़्स जो ऐसे लोगों की इमामत करे जो उसे नापसन्द करते हों।"[1]

नीज़ जिस त़रह़ लोगों की नापसन्दीदगी की सूरत में किसी शख़्स का इन की इमामत करवाना मन्अ़ है इसी त़रह़ अगर उस के पीछे उस से बड़ा आ़लिम मौजूद हो तब भी उस का इमामत करवाना मन्अ़ है। अलबत्ता अगर वोह बड़ा आ़लिम ख़ुद रुक जाए तो वोह इमामत करवा सकता है। अगर मज़्कूरा बातों में से कोई बात न हो तो जब उसे आगे किया जाए और वोह अपने अन्दर शराइत़े इमामत पाता हो तो आगे बढ़ जाए। इस वक़्त एक दूसरे को आगे करना या'नी इमामत को दूसरों पर डाल देना मकरूह है। मन्क़ूल है कि "एक क़ौम ने नमाज़ की इक़ामत के बा'द एक दूसरे को आगे करना शुरूअ़ किया तो उन्हें ज़मीन में धंसा दिया गया।"

एक सुवाल और इस का जवाब :

फिर सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن को जब इमामत के लिये कहा जाता था तो दूसरों को आगे क्यूं बढ़ा देते थे ? इस का जवाब येह है कि वोह जिसे इमामत के ज़ियादा लाइक़ समझते उसे तरजीह़ देते या उन्हें भूलने और दूसरों की नमाज़ का ज़ामिन बनने से डर लगता था क्यूंकि अइम्मा (मुक़्तदियों की नमाज़ के) ज़ामिन होते हैं। नीज़ लोगों में से जो इमामत का आ़दी नहीं होता बा'ज़ अवक़ात मुक़्तदियों से ह़या करते हुए उस का दिल दूसरी त़रफ़ मुतवज्जेह

---

1 ......الدرالمنثور، الجزء الخامس، النساء، تحت الآية:۳۴، ج۲، ص۵۲۰،"رؤسهم" بدله "آذانهم"۔

हो जाता है और नमाज़ में इख़्लास बाक़ी नहीं रहता। बिल ख़ुसूस जहरी नमाज़ों में ऐसा हो जाता है इस लिये इस त़रह़ के अस्बाब की वजह से सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡھِمۡ اَجۡمَعِیۡن ने नमाज़ पढ़ाने से एह़तिराज़ किया।

इमामत अफ़्ज़ल है या मुअज़्ज़िनी :

《2》......जब बन्दे को अज़ान और इमामत के दरमियान इख़्तियार दिया जाए तो उसे इमामत को इख़्तियार करना चाहिये। क्यूंकि इन में से हर एक में फ़ज़ीलत है लेकिन दोनों को जम्अ़ करना मकरूह है बल्कि इमाम, मुअज़्ज़िन के इ़लावा होना चाहिये।[1] जब दोनों को जम्अ़ करना मुश्किल है तो **इमामत** बेहतर है। बा'ज़ उ़-लमाए किराम फ़रमाते हैं कि **अज़ान** अफ़्ज़ल है जैसा कि हम ने इस की फ़ज़ीलत नक़्ल की है और फ़रमाने मुस्त़फ़ा है : "اَلۡاِمَامُ ضَامِنٌ وَّالۡمُؤَذِّنُ مُؤۡتَمِنٌ या'नी इमाम ज़ामिन है और मुअज़्ज़िन अमीन।"[2] लिहाज़ा उन्हों ने फ़रमाया कि इमामत में ज़मानत का ख़त़रा है (इस लिये अज़ान अफ़्ज़ल है)। एक रिवायत में है कि "इमाम अमीर है जब रुकूअ़ करे तो तुम भी रुकूअ़ करो और जब सजदा करे तो तुम भी सजदा करो।"[3]

एक रिवायत में है : "अगर इमाम नमाज़ पूरी करे तो उस का भी फ़ाइदा है दूसरों का भी और अगर पूरी न करे तो इसी पर गुनाह है मुक़्तदियों पर नहीं।"[4] इसी लिये हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने दुआ़ मांगी : "اَللّٰھُمَّ اَرۡشِدِ الۡاَئِمَّۃَ وَاغۡفِرۡ لِلۡمُؤَذِّنِیۡن या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इमामों की रहनुमाई फ़रमा और मुअज़्ज़िनों को बख़्श दे।"[5] [6] और मांगने में मग़फ़िरत अफ़्ज़ल है क्यूंकि मग़फ़िरत के लिये हिदायत का इरादा किया जाता है।

---

❶....**अह़नाफ़ के नज़्दीक :** अगर मुअज़्ज़िन ही इमाम भी हो तो बेहतर है। (बहारे शरीअ़त, जि. 1 स. 467)

❷......سنن الترمذی، ابواب الصلاۃ، باب ماجاء أن الامام ضامن......الخ، الحدیث:۲۰۷، ج ۱، ص ۲۵۰۔

❸......قوت القلوب، الفصل الثالث والاربعون......الخ، ج ۲، ص ۳۵۰، "امین" بدلہ "امیر"۔

صحیح ابن خزیمۃ، باب امرالماموم بالصلاۃ جالسا......الخ، الحدیث:۱۶۱۳، ج ۳، ص ۵۲۔

❹......سنن ابی داود، کتاب الصلاۃ، باب فی جماع الامامۃ وفضلھا،الحدیث:۵۸۰، ج ۱، ص ۲۳۹، مفھومًا۔

❺ .....मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ الۡمَنَّان मिरआतुल मनाजीह़, जि. 1 स. 415 पर इस के तह़त फ़रमाते हैं : इस से भी इमामत की अज़ान पर फ़ज़ीलत मा'लूम हो रही है क्यूंकि मग़फ़िरत से हिदायत आ'ला है या'नी या अल्लाह इमामों को नमाज़ के मसाइल सीखने और सह़ीह़ अदा करने की हिदायत दे कि इन की नमाज़ से बहुत सी नमाज़ें वाबस्ता हैं और मुअज़्ज़िन कभी वक़्त में धोका भी खा सकता है इसे बख़्श दे।

❻......سنن الترمذی، ابواب الصلاۃ، باب ماجاء أن الامام ضامن......الخ، الحدیث:۲۰۷، ج ۱، ص ۲۵۰۔

बिला हि़साब जन्नत में दाखि़ला :

ह़दीषे पाक में है कि "जिस ने मस्जिद में सात साल (षवाब की निय्यत से) नमाज़ की इमामत कराई उस के लिये बिला हि़साब जन्नत वाजिब हो जाती है और जिस ने 40 साल (षवाब की निय्यत से) अज़ान दी वोह बिग़ैर हि़साब के जन्नत में दाखि़ल होगा।"[1] इसी लिये सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْهِمْ اَجْمَعِیْن के बारे में मरवी है कि वोह (ईषार की निय्यत से) इमामत में एक दूसरे को आगे करते थे।

सह़ीह़ येह है कि **इमामत** अफ़्ज़ल है क्यूंकि सरकारे मक्कए मुकर्रमा, सरदारे मदीनए मुनव्वरा صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ व अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا) और इन के बा'द अइम्मए दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِیْن ने इस पर हमेशगी इख़्तियार फ़रमाई। इस में ज़मानत का ख़त़रा है मगर फ़ज़ीलत भी ख़त़रे के साथ है जैसा कि हुकूमत व ख़िलाफ़त का रुतबा अफ़्ज़ल है।

70 साला इ़बादत से अफ़्ज़ल :

हुज़ूर नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "आ़दिल बादशाह का एक दिन 70 साल की इ़बादत से अफ़्ज़ल है।"[2] लेकिन चूंकि इमामत में ख़त़रात हैं इस लिये अफ़्ज़ल और ज़ियादा फ़क़ीह शख़्स को मुक़द्दम करना अफ़्ज़ल है, कि हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "तुम्हारे अइम्मा तुम्हारे सिफ़ारिशी होंगे।[3] या फ़रमाया : वोह तुम्हारे नुमाइन्दे होंगे।[4] अगर तुम चाहते हो कि अपनी नमाज़ों को पाक करो तो अच्छे लोगों को इमाम बनाओ।"

अम्बिया व उ़-लमा عَلَیْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के बा'द अफ़्ज़ल :

बा'ज़ बुज़ुर्गों ने फ़रमाया : अम्बियाए किराम عَلَیْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के बा'द उ़-लमाए उ़ज़्ज़ाम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام से अफ़्ज़ल कोई नहीं और उ़-लमाए दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِیْن के बा'द नमाज़ पढ़ाने वाले अइम्मा से अफ़्ज़ल कोई नहीं क्यूंकि येह लोग अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस के बन्दों के दरमियान

---

1. ......قوت القلوب، الفصل الثالث والاربعون فی حکم وصف الامام والمأموم، ج ۲، ص ۳۵۶۔
2. ......المعجم الکبیر، عکرمة عن ابن عباس، الحدیث: ۱۱۹۳۲، ج ۱۱، ص ۲۶۷، بتصریح ستین سنة۔
3. ......المعجم الکبیر، ماسند مرثد بن ابی مرثد الغنوی، الحدیث: ۷۷۷، ج ۲۰، ص ۳۲۸، مفهومًا۔
4. ......کنزالعمال، کتاب الصلاة، الترهیب عن الامامة، الحدیث: ۲۰۳۸۶، ج ۷، ص ۲۴۰۔

खड़े होते हैं। अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को येह ए'ज़ाज़ नबुव्वत से, उ़-लमाए उ़ज़्ज़ाम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام को इ़ल्म से और अइम्मा को नमाज़ से ह़ासिल होता है जो दीन का सुतून है।(1)

ख़िलाफ़ते सिद्दीक़ी पर एक दलील :

मज़्कूरा दलील की बिना पर सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن ने अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ को ख़िलाफ़त के लिये मुन्तख़ब फ़रमाया। चुनान्चे, उन्हों ने फ़रमाया : हम ने ग़ौरो फ़िक्र किया तो वाज़ेह़ हुवा कि नमाज़ दीन का सुतून है। लिहाज़ा हम ने अपने दुन्यावी मुआ़मलात के लिये उस शख़्स को चुना जिसे रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने हमारे दीनी मुआ़मलात के लिये पसन्द फ़रमाया था।(2) और मुअज़्ज़िने रसूल ह़ज़रते सय्यिदुना बिलाल को सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن इस लिये मुक़द्दम करते थे कि प्यारे मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इन्हें अज़ान के लिये पसन्द फ़रमाया था।

मुक़्तदी ही बन जाओ :

मरवी है कि एक शख़्स ने बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم मुझे ऐसा अ़मल बताइये जिस पर अ़मल कर के मैं जन्नत में दाख़िल हो जाऊं।" इरशाद फ़रमाया : "मुअज़्ज़िन बन जा।" अ़र्ज़ की : "मुझे इस की इस्तिताअ़त नहीं।" इरशाद फ़रमाया : "इमाम बन जा।" अ़र्ज़ की : "मुझे इस की भी त़ाक़त नहीं।" इरशाद फ़रमाया : "मुक़्तदी बन जाओ।"(3)

शायद आप ने येह ख़याल फ़रमाया कि येह इमामत पर राज़ी न होगा क्यूंकि अज़ान तो उस के इख़्तियार में है मगर इमामत लोगों के इख़्तियार में है वोह उसे आगे करेंगे तो इमामत करवा सकेगा फिर ख़याल फ़रमाया कि शायद येह इमामत पर क़ादिर है (इस लिये इमामत का ज़िक्र बा'द में फ़रमाया)।

﴾3﴿.....इमाम को चाहिये कि अवक़ाते नमाज़ की रिआ़यत रखते हुए अव्वल वक़्त में नमाज़ पढ़ाए ताकि अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ की रिज़ा को पा ले कि ह़दीषे पाक में है : "अव्वल वक़्त की नमाज़ को आख़िर वक़्त पर इस त़रह़ फ़ज़ीलत है जिस त़रह़ आख़िरत को दुन्या पर।"(4)

---

1 ......قوت القلوب، الفصل الثالث والاربعون فی کتاب حکم الامام......الخ، ج ۲، ص ۳۵۰-۳۵۱۔

2 ......قوت القلوب، الفصل الثالث والاربعون فی کتاب حکم الامام......الخ، ج ۲، ص ۳۵۱۔

3 ......مجمع الزوائد، کتاب الصلاۃ، باب فضل الاذان، الحدیث: ۱۸۴۲، ج ۲، ص ۸۴ "صل" بدلہ "قم"۔

4 ......الجامع الصغیر، حرف الفاء، الحدیث: ۵۸۶۷، ص ۳۶۳

एक रिवायत में है कि "बन्दा आख़िरी वक़्त में नमाज़ अदा करता है, अगर्चे येह नमाज़ उस से फ़ौत नहीं हुई मगर अव्वल वक़्त फ़ौत हो गया जो उस के ह़क़ में **दुन्या व माफ़ीहा** (या'नी दुन्या और जो कुछ इस में है) से बेहतर था।"[1]

कषरते जमाअ़त के लिये नमाज़ियों का इन्तिज़ार करना कैसा ?

इमाम जमाअ़त की कषरत के इन्तिज़ार में नमाज़ को मुस्तह़ब वक़्त से मुअख़्ख़र न करे बल्कि लोगों को चाहिये कि वोह अव्वल वक़्त की फ़ज़ीलत ह़ासिल करने के लिये जल्दी करें कि येह कषरते जमाअ़त और लम्बी सूरतें पढ़ने से अफ़्ज़ल है। नीज़ मन्क़ूल है कि "बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللهُ الْمُبِيْن में से जब दो आदमी जमाअ़त के लिये ह़ाज़िर हो जाते तो तीसरे का इन्तिज़ार न करते और नमाज़े जनाज़ा में जब चार आदमी ह़ाज़िर हो जाते तो पांचवें का इन्तिज़ार न करते।"

नीज़ मरवी है कि एक बार ह़ालते सफ़र में ह़ुज़ूरे अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم से त़हारत के सबब नमाज़े फ़ज्र में ताख़ीर हो गई तो इन्तिज़ार के बजाए ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ को इमामत के मुसल्ले पर खड़ा कर दिया गया। उन्हों ने नमाज़ पढ़ाई यहां तक कि ह़ुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की एक रक्अ़त फ़ौत हो गई, आख़िर में आप उसे अदा करने के लिये खड़े हो गए। रावी फ़रमाते हैं : इस पर हम ख़ौफ़ज़दा हो गए। तो रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "तुम ने अच्छा किया (कि अव्वल वक़्त में नमाज़ पढ़ी) इसी त़रह़ किया करो।"[2]

एक बार आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को नमाज़े ज़ोहर में ताख़ीर हो गई तो सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن ने अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ को इमामत के मुसल्ले पर खड़ा कर दिया ह़त्ता कि दौराने नमाज़ ही ह़ुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم तशरीफ़ ले आए और अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ के बराबर खड़े हो गए।[3]

---

1 ......سنن الدارقطنی، کتاب الصلاۃ، باب النهی عن الصلاۃ......الخ، الحدیث:۹۶۷، ج۱، ص۳۴۱،مفهومًا۔
قوت القلوب، الفصل الثالث والاربعون فی کتاب حکم الامام......الخ، ج۲، ص۳۵۱۔

2 ......صحیح مسلم، کتاب الصلاۃ، باب تقدیم الجماعۃ من یصلی......الخ، الحدیث:۱۰۵، ص۲۲۶، مفهومًا۔

3 ......صحیح البخاری، کتاب الأذان، باب من دخل لیوم الناس......الخ، الحدیث:۶۸۴، ج۱، ص۲۴۴، مفهومًا۔

इमाम पर मुअज़्ज़िन का इन्तिज़ार करना लाज़िम नहीं बल्कि मुअज़्ज़िन पर इक़ामत के लिये इमाम का इन्तिज़ार करना लाज़िम है। जब इमाम आ जाए तो वोह किसी दूसरे का इन्तिज़ार न करे।

《4》....इमाम ख़ालिसतन रिज़ाए इलाही के लिये इमामत कराए। नीज़ त़हारत और नमाज़ की तमाम शराइत़ में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की अमानत को अदा करने वाला हो।

इख़्लास येह है कि इमामत पर उजरत न ले कि मुस्त़फ़ा जाने रह़मत صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना उ़षमान बिन अबी आ़स षक़फ़ी رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْہُ से इरशाद फ़रमाया : "एक मुअज़्ज़िन रखो जो बिग़ैर उजरत अज़ान दे।"(1)

अज़ान नमाज़ का ज़रीआ़ है जब इस पर उजरत न लेने का फ़रमाया तो इमामत पर बदरजए औला नहीं लेनी चाहिये। अगर मस्जिद की आमदनी इमाम के लिये वक़्फ़ हो और वोह इस में से ले या बादशाह या मुक़्तदियों से कुछ ले तो इसे ह़राम नहीं कहा जाएगा अलबत्ता मकरूह है। फ़र्ज़ नमाज़ों पर उजरत लेना नमाज़े तरावीह़ पर उजरत लेने से ज़ियादा मकरूह है।

इमामत पर उजरत लेने का ह़ीला :

अगर उजरत ले तो येह निय्यत हो कि ह़ाज़िरी की पाबन्दी और जमाअ़त क़ाइम करने के सिलसिले में मस्जिद के मुआ़मलात की निगरानी की ले रहा हूं न कि नफ़्से नमाज़ की।(2)

जहां तक अमानत का तअ़ल्लुक़ है तो वोह बात़िनी त़ौर पर फ़िस्क़, गुनाहे कबीरा और सग़ीरा पर इसरार से पाक होना है। जो शख़्स इमामत की ज़िम्मेदारी उठाना चाहता है वोह पूरी कोशिश के साथ इन कामों से बचे क्यूंकि वोह क़ौम के लिये सिफ़ारीशी और तर्जुमान की ह़ैषिय्यत

---

❶......سنن ابی داود، کتاب الصلاۃ، باب اخذالاجر علی التأذنین، الحدیث:۵۳۱، ج۱، ص۲۲۳۔

❷ ....**दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ **1197** सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब बहारे शरीअ़त जिल्द सिवुम सफ़ह़ा **146** पर है : "ता'लीमुल क़ुरआन व फ़िक़्ह और अज़ान व इमामत पर इजारा जाइज़ है। अगर ऐसा न किया जाए तो क़ुरआन व फ़िक़्ह के पढ़ाने वाले त़लबे मईशत में मश्ग़ूल हो कर इस काम को छोड़ देंगे और लोग दीन की बातों से नावाक़िफ़ होते जाएंगे इसी त़रह़ अगर मुअज़्ज़िन व इमाम को नोकर न रखा जाए तो बहुत सी मसाजिद में अज़ान व जमाअ़त का सिलसिला बन्द हो जाएगा और इस शिआ़रे इस्लामी में ज़बरदस्त कमी वाक़ेअ़ हो जाएगी इसी त़रह़ बा'ज़ उ़-लमा ने वा'ज़ पर इजारे को भी जाइज़ कहा है इस ज़माने में अकषर मक़ामात ऐसे हैं जहां अहले इल्म नहीं हैं इधर उधर से कभी कोई आ़लिम पहुंच जाता है जो वा'ज़ तक़रीर के ज़रीए इन्हें दीन की ता'लीम दे देता है अगर इस इजारे को ना जाइज़ कर दिया जाए तो अ़वाम को जो इस ज़रीए से इल्म की बातें मा'लूम हो जाती हैं इस का इन्सिदाद हो जाएगा।"

रखता है, लिहाज़ा वोह क़ौम में से बेहतरीन शख़्स होना चाहिये। इसी त़रह़ ज़ाहिरी त़ौर पर ह़दष और नजासत से भी पाक होना ज़रूरी है क्यूंकि इस पर सिर्फ़ वोही आगाह हो सकता है। अगर नमाज़ के दौरान याद आए कि वोह बे वुज़ू था या उस की हवा ख़ारिज हुई तो शर्म नहीं करनी चाहिये बल्कि अपने क़रीबी शख़्स को हाथ से पकड़ कर उसे नमाज़ में अपना ख़लीफ़ा बना दे। कि हु़ज़ूरे अन्वर, शाफ़ेए़ मह़शर صَلَّى اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को दौराने नमाज़ जनाबत याद आई तो आप صَلَّى اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने किसी को ख़लीफ़ा बना कर ग़ुस्ल फ़रमाया फिर वापस तशरीफ़ ला कर नमाज़ में शामिल हो गए।(1)

किन की इक़्तिदा में नमाज़ जाइज़ नहीं ?

ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान षौरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : "हर नेक व बद के पीछे नमाज़ पढ़ लो मगर शराब के आ़दी, अ़लानिया गुनाह करने वाले, वालिदैन के नाफ़रमान, बिदअ़ती या भागे हुए ग़ुलाम के पीछे न पढ़ो।(2) (3)

﴾5﴿......जब तक सफ़ें बराबर न हो जाएं तक्बीर (तह़रीमा) न कहे बल्कि दाएं बाएं देख ले अगर कोई ख़लल पाए तो सफ़ें बराबर करने का हुक्म दे। अस्लाफ़े किराम के बारे में मन्क़ूल है कि वोह कन्धों को बराबर रखते और एड़ियों को मिलाते। जब तक मुअज़्ज़िन इक़ामत से फ़ारिग़ न हो इमाम तक्बीर न कहे।

अज़ान व इक़ामत के दरमियान कितना वक़्फ़ा हो ?

मुअज़्ज़िन अज़ान के इतनी देर बा'द इक़ामत कहे कि लोग नमाज़ की तय्यारी कर लें। क्यूंकि ह़दीषे मुबारका में है कि "मुअज़्ज़िन अज़ान व इक़ामत के दरमियान इतनी देर ठहरे

1......سنن ابی داود، کتاب الصلاۃ، باب فی الجنب یصلی......الخ، الحدیث:۲۳۳، ج۱، ص۱۱۱، مفہومًا۔

2......**बहारे शरीअ़त जिल्द अव्वल सफ़ह़ा 562** पर है : वोह बद मज़्हब जिस की बद मज़्हबी ह़द्दे कुफ़्र को पहुंच गई हो, जैसे राफ़िज़ी अगर्चे सिर्फ़ सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللہ تَعَالٰی عَنْہ की ख़िलाफ़त या सोह़बत से इन्कार करता हो, या शैख़ैन رَضِیَ اللہ تَعَالٰی عَنْہُمَا की शाने अक़्दस में तबर्रा कहता हो। क़दरी, जहमी, मिश्बा और वोह जो क़ुरआन को मख़्लूक़ बताता है और वोह जो शफ़ाअ़त या दीदारे इलाही या अ़ज़ाबे क़ब्र या किरामन कातिबीन का इन्कार करता है, उन के पीछे नमाज़ नहीं हो सकती। (عالمگیری،غنیۃ) इस से सख़्त हुक्म वहाबियए ज़माना का है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ व नबी صَلَّى اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की तौहीन करते या तौहीन करने वालों को अपना पेशवा या कम अज़ कम मुसलमान ही जानते हैं। मज़ीद सफ़ह़ा 568 पर नक़्ल फ़रमाते हैं : बद मज़्हब कि जिस की बद मज़्हबी ह़द्दे कुफ़्र को न पहुंची हो और फ़ासिक़े मुअ़लिन जैसे शराबी, जूआरी, ज़िनाकार, सूद ख़ोर, चुग़ल ख़ोर, वग़ैरहुम जो कबीरा गुनाह बिल ए'लान करते हैं, उन को इमाम बनाना गुनाह और उन के पीछे नमाज़ मकरूहे तह़रीमी वाजिबुल इआ़दा।

3......تذکرۃ الحفاظ، الطبقۃ الخامسۃ، الجزء الاوّل، ج۱، ص۱۵۳، باختصار۔

कि खाना खाने वाला खाने से और इस्तिन्जा वग़ैरा करने वाला अपनी ह़ाजत से फ़ारिग़ हो जाए।"(1) क्यूंकि हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहि़बे लौलाक صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने बोलो बराज़ (या'नी पेशाब पाखा़ना) की शिद्दत में नमाज़ से मन्अ़ फ़रमाया और रात का खाना इशा से पहले खाने का हुक्म फ़रमाया।(2) ताकि दिल फ़ारिग़ हो (और ख़ुशूअ़ व ख़ुज़ूअ़ ह़ासिल हो)।

﴾6﴿....इमाम तक्बीरे तह़रीमा और तमाम तक्बीरात बुलन्द आवाज़ से कहे और मुक़्तदी इतनी आवाज़ में कहे कि ख़ुद सुन ले। नीज़ हु़सूले षवाब के लिये इमाम इमामत की निय्यत करे, कि अगर उस ने इमामत की निय्यत न की तब भी उस की नमाज़ हो जाएगी और लोगों ने उस की इक़्तिदा की निय्यत की तो उन की नमाज़ भी हो जाएगी और वोह जमाअ़त की फ़ज़ीलत पा लेंगे मगर इमाम को इमामत की फ़ज़ीलत ह़ासिल न होगी। मुक़्तदी तक्बीर, इमाम के तक्बीर कह लेने के बा'द शुरूअ़ करे।

दूसरी फ़स्ल : क़िराअत में इमाम की ज़िम्मेदारी

क़िराअत के सिलसिले में इमाम पर तीन बातें लाज़िम हैं :

﴾1﴿.....तन्हा नमाज़ पढ़ने वाले की त़रह़ षना और तअ़व्वुज़ (या'नी اَعُوْذُبِاللّٰہِ नीज़ بِسۡمِ اللّٰہِ) आहिस्ता पढ़े और फ़ज्र की पूरी नमाज़ में और मग़रिब व इशा की पहली दो रक्अ़तों में सूरए फ़ातिह़ा और इस के बा'द वाली सूरत बुलन्द आवाज़ से पढ़े। मुन्फ़रिद भी इसी त़रह़ क़िराअत करे।(3) नीज़ इमाम व मुक़्तदी जहरी नमाज़ों में बुलन्द आवाज़ से आमीन कहे।(4) मुक़्तदी आमीन इमाम के साथ कहे इस के बा'द न कहे। بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ बुलन्द आवाज़ से पढ़ने में रिवायात मुख़्तलिफ़ हैं। ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی ने बुलन्द आवाज़ से पढ़ने को इख़्तियार फ़रमाया।(5)

---

❶......سنن الترمذی، ابواب الصلاۃ، باب ماجاء فی الترسل فی الاذان، الحدیث:۱۹۵، ج۱، ص۲۳۹، مفہومًا۔

❷......صحیح مسلم، کتاب المساجد ومواضع الصلاۃ، باب کراھۃ الصلاۃ فی ثوب لہ اعلام، الحدیث:۶۲، ص۲۸۰۔

❸.....**अह़नाफ़ के नज़दीक :** जहरी नमाज़ों में मुन्फ़रिद (तन्हा नमाज़ पढ़ने वाले) को इख़्तियार है (कि आहिस्ता पढ़े या बुलन्द आवाज़ से) और अफ़्ज़ल जहर है जब कि अदा पढ़े और जब क़ज़ा है तो आहिस्ता पढ़ना वाजिब है। (बहारे शरीअ़त, जि. 1 स. 545)

❹.....**अह़नाफ़ के नज़दीक :** तमाम नमाज़ों में इमाम व मुक़्तदी और मुन्फ़रिद आमीन आहिस्ता कहेंगे। (बहारे शरीअ़त, जि. 1 स. 545)

❺.....**अह़नाफ़ के नज़दीक :** بِسۡمِ اللّٰہِ आहिस्ता पढ़ना सुन्नत है। (बहारे शरीअ़त, जि. 1 स. 523)

﴿2﴾.....इमाम क़ियाम में तीन सक्ते करे ह़ज़रते सय्यिदुना समूरा बिन जुन्दब और ह़ज़रते सय्यिदुना इमरान बिन ह़ुसीन (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا) ने ह़ुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से इसी त़रह़ रिवायत किया।[1]

(1)....तकबीरे तह़रीमा के वक़्त : येह सब से त़वील सक्ता है और इतनी देर है कि मुक़्तदी सूरए फ़ातिह़ा पढ़ लें और येह षना पढ़ने का वक़्त है क्यूंकि अगर इमाम इस वक़्त सक्ता न करेगा तो मुक़्तदियों का सुनना फ़ौत हो जाएगा और उन की नमाज़ों में जो कमी रह जाएगी उस का वबाल इमाम पर आएगा। अगर इस सक्ते के दौरान मुक़्तदी फ़ातिह़ा न पढ़ें बल्कि किसी दूसरी त़रफ़ मश्ग़ूल रहें तो येह उन की कोताही होगी न कि इमाम की।[2]

(2).....दूसरा सक्ता उस वक़्त करे जब सूरए फ़ातिह़ा की क़िराअत से फ़ारिग़ हो जाए ताकि जिस ने पहले सक्ते में सूरए फ़ातिह़ा नहीं पढ़ी वोह अब पढ़ ले और येह पहले सक्ते का निस्फ़ है।

(3).....तीसरा सक्ता सूरत की क़िराअत के बा'द रुकूअ़ से पहले करे, इस की मिक़्दार सब से कम है और येह इतना ही है कि क़िराअत को तक्बीर से जुदा कर दे क्यूंकि क़िराअत को तक्बीरे रुकूअ़ के साथ मिलाने से मन्अ़ किया गया है। नीज़ मुक़्तदी इमाम के पीछे फ़ातिह़ा के इलावा कुछ न पढ़े।[3] अगर इमाम सक्ता न करे तो मुक़्तदी उस के साथ ही सूरए फ़ातिह़ा पढ़ ले इस में क़ुसूरवार इमाम होगा। अगर मुक़्तदी जहरी नमाज़ में दूर होने की वजह से न सुन सके या सिर्री नमाज़ पढ़ रहा हो तो मुक़्तदी के सूरत पढ़ने में कोई ह़रज नहीं।

﴿3﴾....नमाज़े फ़ज्र में इमाम 100 से कम आयात वाली दो सूरतें पढ़े क्यूंकि फ़ज्र की क़िराअत को लम्बा करना और इसे अंधेरे में पढ़ना सुन्नत है जब कि रोशनी में नमाज़ से फ़ारिग़ होने में कोई ह़रज नहीं, दूसरी रक्अ़त में सूरतों के आख़िर से 20–30 आयात पढ़ने में भी कोई ह़रज नहीं और येह आयात सूरतों के आख़िर से पढ़े क्यूंकि आख़िरी आयात (अ़वामुन्नास के) कानों में बारबार नहीं पड़तीं, इस लिये वा'ज़ में ज़ियादा अषर रखती और ग़ौरो फ़िक्र को ज़ियादा दा'वत

---

❶......المسند للامام احمد بن حنبل، حدیث سمرۃ بن جندب، الحدیث:۲۰۱۰۲، ج۷، ص۲۴۸، بتصریح "سکتتان"۔

قوت القلوب، الفصل الثالث والاربعون فی کتاب حکم الامام......الخ، ج۲، ص۳۵۱۔

❷.....**अह़नाफ़ के नज़्दीक :** चूंकि मुक़्तदी के लिये क़िराअत करना जाइज़ नहीं न फ़ातिह़ा न कोई और सूरत लिहाज़ा येह सक्ता न किया जाए।

❸.....**अह़नाफ़ के नज़्दीक :** इमाम जब क़िराअत करे बुलन्द आवाज़ से हो ख़्वाह आहिस्ता, उस वक़्त मुक़्तदी का चुप रहना वाजिब है। (बहारे शरीअ़त, जि. 1 स. 519)

देती हैं। बा'ज़ उ-लामए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام ने सूरतों के आगाज़ से कुछ पढ़ने और बाक़ी को छोड़ देने को मकरूह क़रार दिया है। हालांकि ऐसा नहीं है क्यूंकि मरवी है कि ''हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने सूरए यूनुस का कुछ हिस्सा पढ़ा। जब हज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلٰی نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام और फ़िरऔन के ज़िक्र पर पहुंचे तो क़िराअत मुन्क़तेअ़ कर दी और रुकूअ़ में चले गए।[1] नीज़ येह भी मरवी है कि नमाज़े फ़ज्र में सूरए बक़रह की येह आयत :

قُوۡلُوۡۤا اٰمَنَّا بِاللّٰهِ وَمَاۤ اُنۡزِلَ اِلَيۡنَا وَمَاۤ اُنۡزِلَ اِلٰٓى اِبۡرٰهٖمَ وَاِسۡمٰعِيۡلَ وَاِسۡحٰقَ وَيَعۡقُوۡبَ وَالۡاَسۡبَاطِ وَمَاۤ اُوۡتِىَ مُوۡسٰى وَعِيۡسٰى وَمَاۤ اُوۡتِىَ النَّبِيُّوۡنَ مِنۡ رَّبِّهِمۡ‌ۚ لَا نُفَرِّقُ بَيۡنَ اَحَدٍ مِّنۡهُمۡ وَنَحۡنُ لَهٗ مُسۡلِمُوۡنَ﴿۱۳۶﴾ (پ۱، البقرة:۱۳۶)

पढ़ी और दूसरी रक्अ़त में सूरए आले इमरान की येह आयत पढ़ी :

''رَبَّنَاۤ اٰمَنَّا بِمَاۤ اَنۡزَلۡتَ وَاتَّبَعۡنَا الرَّسُوۡلَ فَاكۡتُبۡنَا مَعَ الشّٰهِدِيۡنَ﴿۵۳﴾ (پ۳، اٰل عمرٰن:۵۳)۔''[2]

नीज़ हज़रते सय्यिदुना बिलाल رَضِیَ اللّٰه تَعَالٰی عَنْهُ को सुना कि वोह कहीं कहीं से पढ़ते। उन से इस के मुतअ़ल्लिक़ पूछा तो उन्हों ने अ़र्ज़ की : ''मैं त़य्यिब को त़य्यिब से मिलाता हूं।'' तो आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ''तुम ने अच्छा किया।''[3]

नमाज़े ज़ोहर में त़वाले मुफ़स्सल (सूरए हुजुरात से सूरए बुरूज तक) में से तीस आयात की तिलावत करे। अ़स्र में इस का निस्फ़ (या'नी अवसाते मुफ़स्सल जो सूरए बुरूज से لَمْ يَكُنِ الَّذِيْنَ तक है) पढ़े। मग़रिब में क़िसारे मुफ़स्सल (لَمْ يَكُنِ الَّذِيْنَ से आख़िर तक) पढ़े।

सरकार صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की आख़िरी नमाज़ :

रसूले अकरम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने आख़िरी नमाज़ मग़रिब की पढ़ी, इस में आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने सूरए मुर्सलात की तिलावत की, इस के बा'द कोई नमाज़ न पढ़ी।[4]

---

1 ......قوت القلوب، الفصل الثالث والاربعون فی کتاب حکم الامام......الخ، ج۲، ص۳۵۲۔
صحیح البخاری، کتاب الاذان، باب الجمع بین السورتین......الخ، ج۱، ص۲۷۳۔

2 ......سنن ابی داود، کتاب التطوع، باب فی تخفیفھا، الحدیث:۱۲۶۰، ج۲، ص۳۱۔

3 ......قوت القلوب، الفصل الثالث والاربعون فی کتاب حکم الامام......الخ، ج۲، ص۳۵۲۔
سنن ابی داود، کتاب التطوّع، باب رفع الصوت بالقراءة......الخ، الحدیث:۱۳۳۰، ج۲، ص۵۵، مفھومًا۔

4 ......صحیح مسلم، کتاب الصلاة، باب القراءة فی الصبح، الحدیث:۱۷۳، ص۲۴۱۔

ख़ुलासए कलाम :

नमाज़ मुख़्तसर पढ़ना बेहतर है ख़ुसूसन जब लोग ज़ियादा हों। मुख़्तसर पढ़ने की दलील येह है कि सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जब तुम में से कोई लोगों को नमाज़ पढ़ाए तो मुख़्तसर पढ़ाए क्यूंकि इन में कमज़ोर, बुढ्ढे और काम काज वाले भी होते हैं और जब ख़ुद नमाज़ पढ़े तो जो जितनी चाहे लम्बी पढ़े।"(1)

हज़रते सय्यिदुना मुआज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ ने नमाज़े इशा पढ़ाते हुए सूरए बक़रह की तिलावत की तो एक शख़्स ने अ़लाहि़दा हो कर नमाज़ मुकम्मल की तो लोग कहने लगे कि येह मुनाफ़िक़ हो गया है। उस ने बारगाहे रिसालत में हाज़िर हो कर शिकायत की तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने हज़रते सय्यिदुना मुआज़ رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ को तम्बीह करते हुए इरशाद फ़रमाया : "ऐ मुआज़ ! क्या लोगों को फ़ितने में डालना चाहते हो, سُوْرَۃُ اَعْلٰی, سورۂ طارق, और وَالشَّمْسِ وَضُحٰھَا पढ़ा करो।"(2)

तीसरी फ़स्ल : अरकाने नमाज़ में इमाम व मुक़्तदी की ज़िम्मेदारियां

नमाज़ के अरकान में इमाम व मुक़्तदी पर तीन ज़िम्मेदारियां आ़इद होती हैं :

﴾1﴿....इमाम को चाहिये कि रुकूअ़ व सुजूद मुख़्तसर करे कि तीन तस्बीहात से ज़ाइद न कहे। क्यूंकि हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि "मैं ने सरकारे मक्कए मुकर्रमा, सरदारे मदीनए मुनव्वरा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की नमाज़ से बढ़ कर किसी की नमाज़ को मुकम्मल और मुख़्तसर नहीं देखा।"(3)

येह भी मरवी है कि हज़रते अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ ने अमीरे मदीना हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ العزیز के पीछे नमाज़ पढ़ी तो फ़रमाया : "मैं ने सिवाए उस नौजवान के किसी शख़्स के पीछे नमाज़ नहीं पढ़ी जिस की नमाज़ हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की नमाज़ के ज़ियादा मुशाबेह हो।"(4)

हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ से येह भी मरवी है कि हम उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رحمۃُ اللّٰہِ العزیز के पीछे (रुकूअ़ व सुजूद में) दस दस बार तस्बीह़ पढ़ लेते थे।

---

1 ......صحیح مسلم، کتاب الصلاۃ، باب امر الأئمۃ بتخفیف......الخ، الحدیث:۱۸۳-۱۸۶، ص ۲۴۴۔

2 ......صحیح مسلم، کتاب الصلاۃ، باب القراء ۃ فی العشاء، الحدیث :۱۷۸ ، ص ۲۴۲، بتقدمٍ وتاخرٍ۔

3 ......صحیح مسلم، کتاب الصلاۃ، باب امر الائمۃ بتخفیف الصلاۃ......الخ، الحدیث:۱۸۹، ص ۲۴۴۔

4 ......سنن ابی داود، کتاب الصلاۃ، باب مقدار الرکوع والسجود، الحدیث:۸۸۸، ج ۱، ص ۳۳۷، بتقدمٍ وتاخرٍ۔

एक मुजमल रिवायत में है कि सहाबए किराम رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْهِمْ اَجْمَعِیْن फ़रमाते हैं : "हम हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की इक्तिदा में नमाज़ पढ़ते तो रुकूअ़ व सुजूद में दस दस बार तस्बीह़ पढ़ लिया करते थे।"(1)

दस दस बार तस्बीह़ात पढ़ना अच्छा है लेकिन जब मजमअ़ कषीर हो तो तीन बार तस्बीह़ पढ़ना ज़ियादा बेहतर है। नीज़ जब मुक़्तदी ऐसे लोग हों जिन्हों ने ख़ुद को दीन के लिये वक़्फ़ कर रखा है तो दस दस बार तस्बीह़ात पढ़ने में कोई ह़रज़ नहीं। येह मुख़्तलिफ़ रिवायात में तत़बीक़ है। रुकूअ़ से सर उठाते हुए इमाम को "سَمِعَ اللّٰهُ لِمَنْ حَمِدَه" कहना चाहिये।

﴿2﴾......दूसरी ज़िम्मेदारी मुक़्तदी की है। उसे चाहिये कि रुकूअ़ व सुजूद में इमाम के बराबर खड़ा न हो बल्कि उस के पीछे ख़ड़ा हो। मुक़्तदी सजदे के लिये उस वक़्त झुके जब इमाम की पेशानी जाए सजदा पर पहुंच जाए कि सहाबए किराम رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْهِمْ اَجْمَعِیْن हुज़ूरे पुरनूर, शाफ़ेए यौमुन्नुशूर صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की इक्तिदा में इसी त़रह़ नमाज़ पढ़ते थे।(2)

नीज़ मुक़्तदी रुकूअ़ के लिये उस वक़्त झुके जब इमाम रुकूअ़ में बराबर हो जाए।

बा ए'तिबारे षवाब लोगों की नमाज़ :

मन्क़ूल है कि लोग (बा ए'तिबारे षवाब) तीन अक़्साम में नमाज़ से फ़ारिग़ होते हैं : (1).....एक गुरौह पच्चीस नमाज़ों के (षवाब के) साथ नमाज़ से निकलता है। येह वोह लोग हैं जो इमाम के बा'द रुकूअ़ व सुजूद करते हैं। (2).....एक गुरौह एक नमाज़ के साथ फ़ारिग़ होता है। येह वोह लोग हैं जो इमाम की बराबरी करते हैं। (3)....एक गुरौह बिग़ैर (कोई षवाब पाए) नमाज़ से निकलता है। येह वोह लोग हैं जो (रुकूअ़ व सुजूद वग़ैरा में) इमाम से सबक़त ले जाते हैं।

इमाम का किसी आने वाले के लिये रुकूअ़ को तूल देना :

किसी आने वाले के लिये इमाम का रुकूअ़ को लम्बा कर देना ताकि वोह जमाअ़त और तक्बीरे ऊला की फ़ज़ीलत को पा ले जाइज़ है या नहीं इस में इख़्तिलाफ़ है। बेहतर येही है कि इख़्लास के साथ ऐसा करने में कोई ह़रज नहीं जब कि मुक़्तदियों पर गिरां न गुज़रे क्यूंकि इन

---

1 ......سنن ابی داود، کتاب الصلاة، باب مقدار الرکوع و السجود، الحدیث:۸۸۸، ج۱، ص۳۳۷۔

2 ......صحیح مسلم، کتاب الصلاة، باب متابعة الامام......الخ، الحدیث:۱۹۷، ص۲۴۲۔

के ह़क़ की रिआ़यत येह है कि नमाज़ को त़वील न किया जाए।[1]

《3》....त़वालत से बचते हुए दुआ़ए तशह्हुद के कलिमात में ज़ियादती न करे। नीज़ दुआ़ में खुद को ख़ास न करे बल्कि जम्अ़ के सीग़े के साथ यूं कहे : اَللّٰھُمَّ اغْفِرْلَنَا या'नी ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमारी मग़फ़िरत फ़रमा। यूं न कहे : اِغْفِرْلِی या'नी मेरी मग़फ़िरत फ़रमा। इस की वजह येह है कि इमाम का ख़ास अपने लिये दुआ़ करना मकरूह है। तशह्हुद में इन पांच मस्नून कलिमात को पढ़ने में ह़रज नहीं :

نَعُوْذُبِكَ مِنْ عَذَابِ جَهَنَّمَ وَعَذَابِ الْقَبْرِ وَنَعُوْذُبِكَ مِنْ فِتْنَةِ الْمَحْيَا وَالْمَمَاتِ وَمِنْ فِتْنَةِ الْمَسِيْحِ الدَّجَّالِ
وَاِذَا اَرَدْتَ بِقَوْمٍ فِتْنَةً فَاقْبِضْنَا اِلَيْكَ غَيْرَ مَفْتُوْنِيْنَ فِيْهِ

या'नी ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हम अ़ज़ाबे जहन्नम और अ़ज़ाबे क़ब्र से तेरी पनाह चाहते हैं, ज़िन्दगी व मौत और मसीहे़ दज्जाल के फ़ितने से तेरी पनाह चाहते हैं और जब तू किसी क़ौम को आज़माइश में डालने का इरादा करे तो फ़ितने से मह़फ़ूज़ रखते हुए हमें मौत दे देना।[2]

मन्क़ूल है कि दज्जाल को इस लिये मसीह़ कहते हैं कि वोह ज़मीन पर बहुत ज़ियादा फ़ासिला तै़ करेगा या इस की वजह येह है कि वोह काना होगा।

تُوْبُوْا اِلَى اللّٰه ...... اَسْتَغْفِرُاللّٰه

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ...... صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

---

1 ....**दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ **1250** सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब बहारे शरीअ़त जिल्द अव्वल सफ़ह़ा **630** पर सदरुश्शरीआ़, बदरुत्तरीक़ा ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی नक़्ल फ़रमाते हैं : इमाम का किसी आने वाले की ख़ात़िर नमाज़ को तूल देना मकरूहे तह़रीमी है, अगर इस को पहचानता हो और इस की ख़ात़िर मद्दे नज़र हो और अगर नमाज़ पर इस की इआ़नत के लिये बक़दरे एक या दो तस्बीह़ के तूल दिया तो कराहत नहीं।

2 ......قوت القلوب، الفصل الثالث والاربعون فی کتاب حکم الامام......الخ، ج ۲، ص ۳۵۴، بالفاظ قریب۔
سنن الترمذی، کتاب التفسیر، باب ومن سورۃ ص، الحدیث: ۳۲۴۴، ج ۵، ص ۱۵۹۔

चौथी फ़स्ल : सलाम फेरने के बा'द इमाम की ज़िम्मेदारी

नमाज़ से ख़ारिज होते वक़्त इमाम पर तीन ज़िम्मेदारियां आइद होती हैं :

﴾1﴿....दोनों सलाम फेरते वक़्त मुक़्तदियों और फ़िरिश्तों को सलाम करने की निय्यत करे।

﴾2﴿....सलाम फेरने के बा'द कुछ देर वहीं ठहरे कि सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم[1] अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ और अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا ऐसा ही करते थे। फिर नफ़्ल नमाज़ दूसरे मक़ाम पर पढ़े। अगर उस की इक़्तिदा में औ़रतें भी हों तो उन के चले जाने के बा'द खड़ा हो।[2]

मश्हूर ह़दीष में है कि हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم सलाम फेरने के बा'द इस दुआ़ की मिक़्दार ठहरते थे : اَللّٰھُمَّ اَنْتَ السَّلَامُ وَمِنْکَ السَّلَامُ تَبَارَکْتَ یَاذَا الْجَلَالِ وَالْاِکْرَامِ या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तू सलामती अ़ता फ़रमाने वाला है और तेरी ही त़रफ़ से सलामती है, ऐ इ़ज़्ज़त व जलाल वाले ! तू बरकत वाला है।[3]

﴾3﴿....सलाम के बा'द जब फिरे तो लोगों की त़रफ़ मुतवज्जेह हो और इमाम के फिरने से पहले मुक़्तदी का उठना मकरूह है। ह़ज़रते सय्यिदुना त़लह़ा और ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا के बारे में मरवी है कि उन्हों ने एक इमाम के पीछे नमाज़ पढ़ी। जब दोनों ने सलाम फेरा तो इमाम से कहा : ''आप की नमाज़ कितनी अच्छी और मुकम्मल है मगर एक चीज़ की कमी है कि जब आप ने सलाम फेरा तो लोगों की त़रफ़ मुतवज्जेह न हुए।'' फ़िर लोगों से कहा : ''तुम्हारी नमाज़ कितनी अच्छी है मगर तुम अपने इमाम के फिरने से पहले फिर गए।''[4]

फिर इमाम दाएं बाएं जिधर चाहे फिर जाए। अलबत्ता दाईं त़रफ़ फिरना ज़ियादा अच्छा है। येह तमाम नमाज़ों के अहम मसाइल हैं।

---

1 ......صحیح البخاری، کتاب الاذان، باب مکث الامام فی صلاۃ......الخ، الحدیث:۸۴۹، ج ۱، ص ۲۹۵۔

2 ......قوت القلوب، الفصل الثالث والاربعون فی کتاب حکم الامام......الخ، ج ۲، ص ۳۵۸، مفھومًا۔

3 ......قوت القلوب، الفصل الثالث والاربعون فی کتاب حکم الامام......الخ، ج ۲، ص ۳۵۸۔

4 ......قوت القلوب، الفصل الثالث والاربعون فی کتاب حکم الامام......الخ، ج ۲، ص ۳۵۷۔

नमाज़े फ़ज्र में दुआए क़ुनूत

नमाज़े फ़ज्र में क़ुनूत का इज़ाफ़ा करे।[1] फिर इमाम यूं कहे : اَللّٰھُمَّ اھْدِنَا या'नी ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें हिदायत अ़ता फ़रमा। यूं न कहे : اَللّٰھُمَّ اھْدِنِی या'नी ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मुझे हिदायत अ़ता फ़रमा। मुक़्तदी आमीन कहे। जब इमाम येह कलिमात : "اِنَّكَ تَقْضِیْ وَلَا تُقْضٰی عَلَیْكَ या'नी बेशक तू फ़ैसला करता है और तेरे ख़िलाफ़ कोई फ़ैसला नहीं कर सकता" कहे तो मुक़्तदी आमीन न कहे क्यूंकि येह षना है, लिहाज़ा इस के साथ या तो येही अल्फ़ाज़ कहे या यूं कहे : بَلٰی وَاَنَا عَلٰی ذٰلِكَ مِنَ الشَّاھِدِیْنَ या'नी हां ! और मैं इस पर गवाहों में से हूं। या कहे : صَدَقْتَ وَبَرَرْتَ या'नी तू सच्चा और नेकूकार है। या इस जैसे दीगर अल्फ़ाज़ कहे। **क़ुनूत में हाथ उठाने के मुतअ़ल्लिक़ ह़दीषे पाक मरवी है।**[2]

और जब ह़दीष सह़ीह़ हो तो हाथ उठाना मुस्तह़ब होगा अगर्चे येह तशह्हुद में मांगी जाने वाली दुआ़ओं के ख़िलाफ़ है क्यूंकि तशह्हुद की दुआ़ के सबब हाथ नहीं उठाए जाते बल्कि इस में हाथ रखने पर ए'तिमाद है। इन दोनों सूरतों में फ़र्क़ है इस लिये कि तशह्हुद में हाथों को मख़्सूस त़रीक़े पर रानों पर रखना है और यहां इस के लिये कोई त़रीक़ा मुक़र्रर नहीं तो मुमकिन है कि क़ुनूत में हाथ उठाने का त़रीक़ा मुक़र्रर हो क्यूंकि येह दुआ़ के लाइक़ है।

मज़्कूरा तमाम उमूर इमामत के आदाब से मुतअ़ल्लिक़ हैं। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही तौफ़ीक़ देने वाला है।

---

❶.....**अह़नाफ़ के नज़्दीक :** वित्र के सिवा किसी और नमाज़ में क़ुनूत पढ़ने का हुक्म।

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़्बूआ़ **1250** सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब **बहारे शरीअ़त जिल्द अव्वल** सफ़ह़ा **657** पर सदरुश्शरीआ़, बदरुत्तरीक़ा ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی नक़्ल फ़रमाते हैं : वित्र के सिवा और किसी नमाज़ में क़ुनूत न पढ़े। हां अगर ह़ादिषए अ़ज़ीमा वाक़ेअ़ हो तो फ़ज्र में भी पढ़ सकता है और ज़ाहिर येह है कि रुकूअ़ के क़ब्ल क़ुनूत पढ़े।

❷.....السنن الکبری للبیھقی، کتاب الصلاۃ، باب رفع الیدین فی القنوت، الحدیث:۳۱۴۵، ج۲، ص۲۹۹۔

बाब नम्बर 5 : जुमुअ़तुल मुबारक का बयान (इस में चार फ़स्लें हैं)

जुमुआ़ के फ़ज़ाइल, आदाब, सुन्नतें और शराइत़

पहली फ़स्ल : जुमुआ़ की फ़ज़ीलत

जान लीजिये कि येह अ़ज़ीम दिन है। इस के ज़रीए़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इस्लाम को इ़ज़्ज़त बख़्शी और इसे मुसलमानों के साथ ख़ास किया। अल्लाह तआ़ला कुरआने मजीद, फुरक़ाने ह़मीद में इरशाद फ़रमाता है :

اِذَا نُوْدِیَ لِلصَّلٰوۃِ مِنْ یَّوْمِ الْجُمُعَۃِ فَاسْعَوْا اِلٰی ذِکْرِ اللّٰہِ وَ ذَرُوا الْبَیْعَ ؕ (پ۲۸، الجمعۃ:۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : जब नमाज़ की अज़ान हो जुमुआ़ के दिन तो अल्लाह के ज़िक्र की त़रफ़ दौड़ो और ख़रीदो फ़रोख़्त छोड़ दो।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने दुन्यवी उमूर में मश्ग़ूल होने को और हर उस काम को ह़राम ठहराया जो जुमुआ़ की त़रफ़ कोशिश से रोकता है।

हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहि़बे लौलाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "बेशक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने तुम पर इस दिन और इस मक़ाम पर जुमुआ़ फ़र्ज़ फ़रमाया।"(1)

बिला उ़ज़्रे शरई जुमुआ़ न पढ़ने का वबाल :

एक रिवायत में है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब, ह़बीबे लबीब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जिस ने बिला उ़ज़्र (शरई) तीन जुमुए़ तर्क किये अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के दिल पर मोहर लगा देता है।"(2)

एक रिवायत में है कि "ऐसे शख़्स ने इस्लाम को पसे पुश्त डाल दिया।"(3)

एक शख़्स ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْھُمَا के पास किसी मरने वाले के मुतअ़ल्लिक़ येह पूछने के लिये ह़ाज़िर हुवा कि वोह नमाज़े जुमुआ़ और बा जमाअ़त नमाज़ नहीं पढ़ता था तो आप رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : "वोह जहन्नम में जाएगा।" वोह पूरा महीना आप के पास आ कर उस के मुतअ़ल्लिक़ पूछता रहा और आप येही जवाब देते रहे कि वोह जहन्नम में जाएगा।

---

1 ......سنن ابن ماجہ، کتاب اقامۃ الصلاۃ......الخ، باب فی فرض الجمعۃ، الحدیث:۱۰۸۱، ج۲، ص۵، بتقدمٍ وتاخرٍ۔

2 ......المسندللامام احمد بن حنبل، مسند المکیین، حدیث ابی الجعد الضمری، الحدیث:۱۵۴۹۸، ج۵، ص۲۸۰۔

3 ......مجمع الزوائد، کتاب الصلاۃ، باب فیمن ترک الجمعۃ، الحدیث:۳۱۷۷، ج۲، ص۴۲۲۔

ह़दीषे पाक में है कि "बेशक तौरात व इन्जील वालों को जुमुआ़ का दिन अ़त़ा किया गया तो उन्हों ने इस में इख़्तिलाफ़ किया और इस से मुंह मोड़ लिया तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उसे इस उम्मत के लिये मुअख़्ख़र किया और इसे इन के लिये ईद बनाया। पस येह उम्मत सब लोगों से सबक़त वाली है और तौरात व इन्जील वाली उम्मतें इस के ताबेअ़ हैं।"(1)

यौमुल मज़ीद :

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ह़ज़रते जिब्रईल عَلَیْہِ السَّلَام हथेली में सफ़ेद आईना लिये मेरे पास ह़ाज़िर हुए और कहा : "येह जुमुआ़ है जो आप पर आप के रब्ब ने फ़र्ज़ फ़रमाया है ताकि येह आप के लिये और आप के बा'द आप की उम्मत के लिये ईद बन जाए।" मैं ने पूछा : "इस में हमारे लिये क्या है ?" तो उन्हों ने बताया कि इस में आप के लिये एक भलाई वाली घड़ी है(2), जिस ने इस में ऐसी भलाई की दुआ़ की जो उस की क़िस्मत में थी तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ वोह उसे अ़त़ा फ़रमाएगा या उस की क़िस्मत में नहीं तो इस से बड़ी चीज़ उस के लिये जम्अ़ की जाएगी। या इस ने ऐसी बुराई से पनाह मांगी जो उस के लिये लिख दी गई है तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे इस से बड़ी बुराई से पनाह अ़त़ा फ़रमाएगा और येह हमारे नज़्दीक तमाम दिनों का सरदार है, और आख़िरत में हम इसे **यौमुल मज़ीद** (या'नी ज़ियादा षवाब का दिन) के नाम से पुकारेंगे।" मैं ने पूछा : "इस की क्या वजह है ?" तो उन्हों ने कहा : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने जन्नत में एक वादी बनाई है जो सफ़ेद मुश्क से ज़ियादा ख़ुश्बूदार है, जब जुमुआ़ का दिन होगा तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इल्लिय्यीन से अपनी शायाने शान कुर्सी पर नुज़ूल फ़रमाएगा और लोगों के लिये अपनी तजल्ली ज़ाहिर फ़रमाएगा यहां तक कि लोग उस के दीदार से मुशर्रफ़ होंगे।"(3)

---

1 ......صحیح البخاری، کتاب الجمعۃ، باب فرض الجمعۃ، الحدیث:۸۷۶، ج۲، ص ۳۰۳، مفہومًا۔
قوت القلوب، الفصل الحادی والعشرون فیہ کتاب الجمعۃ......الخ، ج ۱، ص ۱۱۷۔

2 .....**मुफ़स्सिरे शहीर** ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْمَنَّان मिरआतुल मनाजीह़, जि. 2 स. 319 पर इस के तह़्त फ़रमाते हैं : वोह साअ़त क़बूलिय्यते दुआ़ की है रात में रोज़ाना वोह साअ़त आती है मगर दिनों में सिर्फ़ जुमुआ़ के दिन, यक़ीनन नहीं मा'लूम कि वोह साअ़त कब है। ग़ालिब येह है कि दो ख़ुत़बों के दरमियान या मग़रिब से कुछ पहले।

3 قوت القلوب، الفصل الحادی والعشرون فیہ کتاب الجمعۃ......الخ، ج ۱، ص ۱۱۷

मक्की मदनी सुल्तान, रह्मते आलमिय्यान صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "बेहतरीन दिन जिस पर सूरज तुलूअ होता है, जुमुआ का दिन है। इसी दिन हज़रते आदम عَلَیْهِ السَّلَام को पैदा किया गया। इसी दिन इन्हें जन्नत में दाख़िल किया गया। इसी दिन इन्हें ज़मीन पर उतारा गया। इसी दिन इन की तौबा क़बूल की गई। इसी दिन इन का विसाल हुवा। इसी दिन क़ियामत क़ाइम होगी[1] और येह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक **यौमुल मज़ीद** (या'नी ज़ियादा षवाब का दिन) है। आस्मान में फ़िरिश्ते इसे इसी नाम से पुकारते हैं और येह जन्नत में दीदारे ख़ुदावन्दी का दिन है।"[2]

एक रिवायत में है कि "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हर जुमुआ के दिन छे लाख लोगों को जहन्नम के अज़ाब से नजात अता फ़रमाता है।"[3]

हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है कि आक़ाए दो आलम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जुमुआ का दिन सलामती से गुज़र जाए तो तमाम दिन सलामती से गुज़रते हैं।"[4]

एक रिवायत में है कि "बेशक हर रोज़ ज़वाल से पहले सूरज के आस्मान पर ठहरने के वक़्त जहन्नम को झोंका जाता है लिहाज़ा इस वक़्त नमाज़ न पढ़ो। हां ! जुमुआ के दिन पढ़ लो क्यूंकि येह तमाम नमाज़ का वक़्त है और इस दिन जहन्नम को नहीं झोंका जाता।"[5]

---

❶.....मिरआतुल मनाजीह़, जि. 2 स. 319 पर है : पहले भी बड़े बड़े वाक़िआत इस दिन में हुए और आयन्दा निहायत अहम और संगीन वाक़िआ वुक़ूए क़ियामत का इसी दिन होगा। इस लिये येह दिन बड़ी अज़्मत वाला है। ख़याल रहे कि आदम عَلَیْهِ السَّلَام का जन्नत में जाना भी **अल्लाह** की रह्मत थी और वहां से तशरीफ़ लाना भी क्यूंकि वहां सीखने गए थे यहां सिखाने और ख़िलाफ़त करने आए। इस से मा'लूम हुवा कि जिस दिन में दीनी अहम वाक़िआत हो चुके हों वोह दिन ता क़ियामत अफ़्ज़ल हो जाता है और इस दिन में ख़ुशियां मनाना इबादतें करना बेहतर होता है देखो माहे रमज़ान व शबे क़द्र इस लिये अफ़्ज़ल हैं कि इन में क़ुरआन शरीफ़ नाज़िल हुवा। मुसलमानों का अक़ीदा है कि शबे विलादत शबे मे'राज वग़ैरा बहुत अफ़्ज़ल रातें हैं इन में इबादात करना ख़ुशियां मनाना बेहतर है इस का माख़ज़ येह ह़दीष है।

❷......صحیح مسلم، کتاب الجمعۃ، باب فضل یوم الجمعۃ، الحدیث:۱۷، ص۴۲۵، باختصارٍ۔

قوت القلوب، الفصل الحادی والعشرون فیه کتاب الجمعۃ......الخ، ج۱، ص۱۱۷، بتقدمٍ وتاخرٍ۔

❸......شعب الایمان للبیهقی، باب فی الصلوات، فضل قراءۃ سورۃ الکهف......الخ، الحدیث:۱۱۴، ج۳، ص۱۱۴۔

❹......شعب الایمان للبیهقی، باب فی الصیام، فصل فی لیلۃ القدر، الحدیث:۳۷۰۸، ج۳، ص۳۴۰۔

❺......سنن ابی داود، کتاب الصلاۃ، باب الصلاۃ یوم الجمعۃ قبل الزوال، الحدیث:۱۰۸۳، ج۱، ص۴۰۳، مفهومًا۔

हज़रते सय्यिदुना का'बुल अह़बार رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنۂ फ़रमाते हैं : "बेशक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने शहरों में मक्कए मुकर्रमा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعْظِیْمًا को, महीनों में माहे रमज़ानुल मुबारक को, दिनों में जुमुआ़ को और रातों में शबे क़द्र को फ़ज़ीलत बख़्शी।"[1]

नीज़ मन्क़ूल है कि "जुमुआ़ के दिन परन्दे और कीड़े मकोड़े एक दूसरे से मिल कर कहते हैं : सलामती हो, सलामती हो येह उ़म्दा दिन है।"[2]

जुमुआ़ के दिन मरने की फ़ज़ीलत :

हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जिस शख़्स का जुमुआ़ के दिन या जुमुआ़ की रात इन्तिक़ाल हो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के लिये शहीद का अज्र लिखता और उसे अ़ज़ाबे क़ब्र से मह़फ़ूज़ रखता है।"[3] [4]

.....ईसाले षवाब का इन्तिज़ार.....

हुज़ूर नबिय्ये करीम, *रऊफ़ुर्रहीम* صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم *का इरशादे मुश्कबार है : "मुर्दे का हाल क़ब्र में डूबते हुए इन्सान की मानिन्द है कि वोह शिद्दत से इन्तिज़ार करता है कि बाप या मां या भाई या किसी दोस्त की दुआ़ उस को पहुंचे और जब किसी की दुआ़ उसे पहुंचती है तो उस के नज़्दीक वोह दुन्या व माफ़ीहा (या'नी दुन्या और इस में जो कुछ है) से बेहतर होती है। अल्लाह* عَزَّوَجَلَّ *क़ब्र वालों को उन के ज़िन्दा मुतअ़ल्लिक़ीन की त़रफ़ से हदिय्या (या'नी तोह़फ़ा) किया हुवा षवाब पहाड़ों की मानिन्द अ़ता फ़रमाता है, ज़िन्दों का हदिय्या मुर्दों के लिये दुआ़ए मग़्फ़िरत करना है।"* (شعب الایمان،الحدیث:۷۹۰۵،ج۶،ص۲۰۳)

---

1 ......قوت القلوب، الفصل الحادی والعشرون فیه کتاب الجمعة......الخ، ج ۱، ص۱۱۷، دون من اللیالی لیلة القدر۔

2 ......قوت القلوب، الفصل الحادی والعشرون فیه کتاب الجمعة......الخ، ج ۱، ص۱۱۷، دون کتب اللّٰہ له اجر شهید۔

3 ......المسند للامام احمد بن حنبل، مسند عبداللّٰہ بن عمرو بن العاص، الحدیث:۶۶۵۷، ج۲، ص۵۹۰۔
شرح الصدور، باب من لایسئل فی القبر، ص ۱۵۱، دون لیلة الجمعة۔

4 .....मिरआतुल मनाजीह़, जि. 2 स. 328 पर है : जुमुआ़ की शब या जुमुआ़ के दिन मरने वाले मोमिन से न हि़साबे क़ब्र हो न अ़ज़ाबे क़ब्र। क्यूंकि इस दिन की मौत शहादत की मौत है और शहीद हि़साब व अ़ज़ाब से मह़फ़ूज़ है। जैसा कि दीगर रिवायात में है।

दूसरी फ़स्ल :

जुमुआ़ की शराइत़

जान लीजिये कि नमाज़े जुमुआ़ की वोही शराइत़ हैं जो दीगर तमाम नमाज़ों की हैं अलबत्ता येह छे शराइत़ में दीगर नमाज़ों से मुमताज़ है।

जुमुआ़ सह़ीह़ होने की शराइत़ :(1)

﴾1﴿.....**वक़्त :** अगर इमाम ने अ़स्र के वक़्त में नमाज़े जुमुआ़ का सलाम फेरा तो नमाज़े जुमुआ़ फ़ौत हो गई और इस पर लाज़िम है कि ज़ोहर की चार रक्अ़तें (क़ज़ा) पढ़े और मस्बूक़ के आख़िरी रक्अ़त वक़्त के बा'द अदा करने में इख़्तिलाफ़ है।

﴾2﴿....**मकान :** सह़राओं, मैदानों और ख़ैमों के दरमियान जुमुआ़ की नमाज़ सह़ीह़ नहीं होती बल्कि एक जामेअ़ जगह का होना ज़रूरी है जहां की बस्ती ग़ैर मन्क़ूला हो और कम अज़ कम ऐसे 40 आदमियों पर मुश्तमिल हो जिन पर जुमुआ़ फ़र्ज़ होता हो और इस में देहात शहर की त़रह़ है। बादशाह की मौजूदगी या उस की इजाज़त शर्त़ नहीं लेकिन उस से इजाज़त लेना पसन्दीदा है।

﴾3﴿....**ता'दाद :** 40 आदमियों से कम के साथ जुमुआ़ मुन्अ़क़िद नहीं होता और इस के लिये शर्त़ है कि वोह सब मर्द, मुकल्लफ़, आज़ाद और मुक़ीम हों गर्मी, सर्दी में वहां से दूसरी जगह मुन्तक़िल न होते हों। अगर कम हों कि ख़ुत़बा या नमाज़ में ता'दाद पूरी न हो तो जुमुआ़ की नमाज़ सह़ीह़ नहीं, अव्वल ता आख़िर पूरी ता'दाद होना ज़रूरी है।

﴾4﴿.....**जमाअ़त :** अगर चालीस आदमियों ने एक गाउं या शहर में अ़लाह़िदा अ़लाह़िदा जुमुआ़ अदा किया तो इन का जुमुआ़ सह़ीह़ नहीं। लेकिन मस्बूक़ ने जब एक रक्अ़त पाई तो उस के लिये इनफ़िरादी त़ौर पर दूसरी रक्अ़त पढ़ना जाइज़ है। अगर उस ने दूसरी रक्अ़त का रुकूअ़ न पाया तो इक़्तिदा करे और ज़ोहर की निय्यत करे और जब इमाम सलाम फेर दे तो ज़ोहर की नमाज़ मुकम्मल करे।(2)

---

❶.....**अह़नाफ़ के नज़दीक :** जुमुआ़ पढ़ने के लिये छे शर्तें हैं कि इन में से एक शर्त़ भी मफ़्क़ूद हो तो होगा ही नहीं। (1)....मिस्र (शहर) या फ़िनाए मिस्र (2)....सुल्त़ाने इस्लाम या उस का नाइब जिसे जुमुआ़ क़ाइम करने का हुक्म दिया (3)....वक़्ते ज़ोहर (4)....ख़ुत़बा (5).....जमाअ़त या'नी इमाम के इलावा कम से कम तीन मर्द (6).....इज़्ने आ़म। (माख़ूज़ अज़ बहारे शरीअ़त, जि. 1 हि़स्सा. 4, स. 762 ता 770)

नोट : मज़ीद तफ़्सील के लिये बहारे शरीअ़त के मज़कूरा मक़ाम का मुत़ालआ़ कीजिये।

❷.....**अह़नाफ़ के नज़दीक :** जिस ने जुमुआ़ का क़ा'दा पा लिया या सजदए सह्व के बा'द शरीक हुवा उसे जुमुआ़ मिल गया। लिहाज़ा अपनी दो ही रक्अ़तें पूरी करे। (बहारे शरीअ़त, जि. 1 हि़स्सा. 4, स.774)

﴾5﴿....उस शहर में किसी और जगह जुमुआ़ की नमाज़ न पढ़ी गई हो : अगर सब लोगों का एक जामेअ़ मस्जिद में जम्अ़ होना मुश्किल हो तो ज़रूरत के मुत़ाबिक़ दो, तीन या चार मस्जिदों में नमाज़े जुमुआ़ पढ़ सकते हैं और अगर ज़रूरत न हो तो वोही जुमुआ़ दुरुस्त है जहां सब से पहले निय्यत की गई हो। ज़रूरत की सूरत में बेहतर येह है कि अफ़्ज़ल इमाम के पीछे नमाज़ अदा करे। अगर दोनों बराबर हों तो ज़ियादा क़दीम मस्जिद में अदा करे। अगर दोनों मस्जिदें भी बराबर हों तो क़रीबी मस्जिद में पढ़े और लोगों की कषरत की भी फ़ज़ीलत है इस का भी लिहाज़ रखे। (कि जहां ज़ियादा लोग हों वहां पढ़े)

﴾6﴿....दो ख़ुत़बे : येह दोनों फ़र्ज़ हैं। इन में क़ियाम और दोनों के दरमियान बैठना फ़र्ज़ है। पहले ख़ुत़बे में चार चीज़ें हैं : (1)....तह़मीद इस की कम से कम मिक़दार اَلْحَمْدُ لِلّٰہ है। (2)....ह़ुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूदो सलाम पढ़ना। (3)....अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से डरने की वसिय्यत करना। (4)....क़ुरआन की एक आयत का पढ़ना। इसी त़रह़ दूसरे ख़ुत़बे में भी चार चीज़ें ज़रूरी हैं मगर इस में क़िराअत की जगह दुआ़ करना है। चालीस आदमियों का ख़ुत़बा सुनना वाजिब है।

जुमुआ़ की सुन्नतें :

जब सूरज ढल जाए, मुअज़्ज़िन अज़ान कह दे और इमाम मिम्बर पर बैठ जाए तो सिवाए **तह़िय्यतुल मस्जिद** के कोई नमाज़ नहीं पढ़ सकते।[1] ख़ुत़बा शुरूअ़ होने तक कलाम मन्अ़ नहीं। ख़त़ीब जब लोगों की त़रफ़ मुतवज्जेह हो तो उन्हें सलाम करे[2] और लोग सलाम का जवाब दें। जब मुअज़्ज़िन अज़ान से फ़ारिग़ हो तो ख़त़ीब लोगों की त़रफ़ रुख़ कर के खड़ा और दाएं बाएं मुतवज्जेह न हो। खड़े हो कर दोनों हाथ तल्वार, अ़सा या मिम्बर पर रखे ताकि कोई लग़्व काम न कर सके या एक हाथ को दूसरे पर रख ले। दो ख़ुत़बे कहे इन के दरमियान मुख़्तसर जल्सा करे। ख़ुत़बे में अजनबी अल्फ़ाज़ इस्ति'माल न करे। अल्फ़ाज़ को न ज़ियादा लम्बा करे और न ही गाने के अन्दाज़ में पढ़े। नीज़ ख़ुत़बा मुख़्तसर फ़सीह़ व बलीग़ हो और

---

❶.....**अह़नाफ़ के नज़दीक :** जब इमाम ख़ुत़बे के लिये खड़ा हो उस वक़्त से ख़त्मे नमाज़ तक नमाज़ व अज़्कार और हर क़िस्म का कलाम मन्अ़ है, अलबत्ता साह़िबे तरतीब अपनी क़ज़ा नमाज़ पढ़ ले। यूंहीं जो शख़्स सुन्नत या नफ़्ल पढ़ रहा है जल्द जल्द पूरी कर ले। (बहारे शरीअ़त, जि. 1 ह़ि. 4, स. 774)

❷.....**अह़नाफ़ के नज़दीक :** ख़त़ीब के लिये सुन्नत येह है कि सलाम न करे।

(النهر الفائق شرح كنزالدقائق، كتاب الصلوة، باب صلوة الجمعة، ج ١، ص ٣٥٩)

दूसरे खुत़बे में कोई आयत पढ़े कि मुस्तह़ब है। ख़त़ीब जब खुत़बा दे रहा हो तो आने वाला सलाम न करे, अगर सलाम कर दे तो जवाब का मुस्तह़िक़ नहीं, अलबत्ता इशारे से जवाब देना मुस्तह़सन है और इसी त़रह़ छींकने वाले के जवाब में يَرْحَمُكَ الله भी न कहा जाए।(1) येह जुमुआ़ के सह़ीह़ होने की शराइत़ हैं।

जुमुआ़ वाजिब होने की शराइत़ :

नमाज़े जुमुआ़ मर्द, आ़क़िल, बालिग़, मुसलमान, आज़ाद और ऐसी बस्ती में मुक़ीम पर वाजिब है जिस में मज़्कूरा सिफ़ात के ह़ामिल **40** आदमी रहते हों या शहर के मुज़ाफ़ात की बस्ती हो जहां अज़ान की आवाज़ पहुंचती हो जब कि शोर न हो और मुअज़्ज़िन की आवाज़ बुलन्द हो। क्यूंकि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आ़लीशान है :

اِذَا نُوْدِیَ لِلصَّلٰوةِ مِنْ یَّوْمِ الْجُمُعَةِ فَاسْعَوْا اِلٰی ذِكْرِ اللّٰهِ وَ ذَرُوا الْبَیْعَ ؕ (پ۲۸، الجمعة:۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *जब नमाज़ की अज़ान हो जुमुआ़ के दिन तो **अल्लाह** के ज़िक्र की त़रफ़ दौड़ो और ख़रीदो फ़रोख़्त छोड़ दो।*

तर्के जुमुआ़ के पांच आ'ज़ार :

(1)....(तेज़) बारिश (2)....कीचड़ (3)....घबराहट (4)....मरज़ (5)....मरीज़ की इ़यादत के लिये जुमुआ़ छोड़ने की रुख़्सत है जब कि कोई और तीमार दारी करने वाला न हो। फिर इन उ़ज़्र वालों के लिये मुस्तह़ब है कि ज़ोहर की नमाज़ मुअख़्ख़र करें यहां तक कि लोग नमाज़े जुमुआ़ से फ़ारिग़ हो जाएं। अगर जुमुआ़ की नमाज़ में बीमार, मुसाफ़िर, गुलाम या औ़रत आ जाएं तो इन की नमाज़े जुमुआ़ सह़ीह़ होगी और ज़ोहर के क़ाइम मक़ाम हो जाएगी। وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِالصَّوَاب

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ...... صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

---

1 ....**दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ **1250** सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब **बहारे शरीअ़त जिल्द अव्वल सफ़ह़ा 774** पर सदरुश्शरीआ़, बदरुत्त़रीक़ा ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى नक़्ल फ़रमाते हैं : जो चीज़ें नमाज़ में ह़राम हैं मषलन खाना–पीना, सलाम व जवाबे सलाम वग़ैरा येह सब खुत़बे की ह़ालत में भी ह़राम हैं यहां तक कि अम्र बिल मा'रूफ़, हां, ख़त़ीब अम्र बिल मा'रूफ़ कर सकता है, जब खुत़बा पढ़े तो तमाम ह़ाज़िरीन पर सुनना और चुप रहना फ़र्ज़ है, जो लोग इमाम से दूर हों कि खुत़बे की आवाज़ उन तक नहीं पहुंचती उन्हें भी चुप रहना वाजिब है, अगर किसी को बुरी बात करते देखें तो हाथ के इशारे से मन्अ़ कर सकते हैं ज़बान से नाजाइज़ है।

तीसरी फ़स्ल : आदत की तरतीब के मुताबिक़ आदाबे जुमुआ का बयान

(येह फ़स्ल दस उमूर पर मुश्तमिल है)

﴾1﴿....जुमा'रात से जुमुआ की तय्यारी करना :

(नमाज़े जुमुआ पढ़ने वाला) जुमुआ की तय्यारी के अ़ज़्म और इस की फ़ज़ीलत के इस्तिक़बाल के तौर पर जुमा'रात को ही तय्यारी शुरूअ़ कर दे। जुमा'रात को नमाज़े अ़स्र के बा'द दुआ व इस्तिग़फ़ार और तस्बीह़ में मश्ग़ूल हो जाए। क्यूंकि येह जुमुआ के दिन की मक़्बूल घड़ी के मुक़ाबिल का वक़्त है।

बा'ज़ बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللهُ الْمُبِيْن फ़रमाते हैं : "बन्दों की रोज़ी के इलावा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मज़ीद फ़ज़्ल फ़रमाता है और येह फ़ज़्ल वोह उसी को अ़ता फ़रमाता है जो जुमा'रात की शाम और जुमुआ के दिन सुवाल करे।"[(1)]

इस दिन अपने कपड़े धोए, इन्हें पाक साफ़ करे, अगर ख़ुश्बू मौजूद न हो तो उसे ह़ासिल करे, दिल को उन कामों में मश्ग़ूल होने से रोके जो जुमुआ के लिये जल्दी जाने से मानेअ़ हैं, शबे जुमुआ जुमुआ के दिन का रोज़ा रखने की निय्यत करे क्यूंकि इस की बड़ी फ़ज़ीलत है लेकिन सिर्फ़ जुमुआ का न रखे बल्कि इस के साथ जुमा'रात या हफ़्ता का रोज़ा मिला ले क्यूंकि सिर्फ़ जुमुआ का रोज़ा रखना मकरूह है। शबे जुमुआ इबादत में गुज़ारे क्यूंकि जुमुआ की रात बड़ी फ़ज़ीलत वाली है और इस पर जुमुआ के दिन की फ़ज़ीलत का इज़ाफ़ा सोने पे सुहागा है। शबे जुमुआ या रोज़े जुमुआ बीवी से हम बिस्तरी करे कि बा'ज़ उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام ने इसे मुस्तह़ब कहा है और इस फ़रमाने मुस्त़फ़ा से येही मुराद लिया है। चुनान्चे,

इरशादे गिरामी है कि "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस शख़्स पर रह़्म फ़रमाए जो (जुमुआ के लिये) पहले आए और जल्दी करे, ग़ुस्ल कराए और ख़ुद ग़ुस्ल करे।"[(2)] ग़ुस्ल कराने का मत़लब येह है कि बीवी के लिये ग़ुस्ल का सबब पैदा करे। (या'नी जिमाअ़ करे)

एक क़ौल येह है कि इस का मत़लब कपड़े धोना है और येह "**ग़स्सल**" के बजाए तख़्फ़ीफ़ के साथ "**ग़सल**" भी मरवी है और "**इग़तसल**" का मत़लब है कि अपने जिस्म को धोए। इस के साथ इस्तिक़बाले जुमुआ के आदाब मुकम्मल हो जाते हैं और बन्दा उन ग़ाफ़िल लोगों से निकल जाता है कि जब वोह सुब्ह़ करते हैं तो कहते हैं : "येह कौन सा दिन है ?"

---

❶......قوت القلوب،الفصل الحادی والعشرون فیه كتاب الجمعة......الخ، ج ۱، ص ۱۲۰ ۔

❷......سنن ابی داود،كتاب الطهارة، باب فی الغسل يوم الجمعة،الحدیث:۳۴۵،ج ۱،ص ۱۵۸ ۔

बा'ज़ बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللّٰہُ الْمُبِیْن फ़रमाते हैं : "जुमुआ़ के दिन ज़ियादा मुकम्मल ह़िस्से वाला शख़्स वोह है जो एक दिन पहले से ही इस का इन्तिज़ार करता और इस की रिआ़यत करता है और सब से कम ह़िस्से वाला शख़्स वोह है जो सुब्ह़ के वक़्त कहता है कि येह कौन सा दिन है ?" और बा'ज़ बुज़ुर्ग तो नमाज़े जुमुआ़ पाने के लिये जुमुआ़ की रात भी मस्जिद में गुज़ारते थे।(1)

﴾2﴿....तुलूए़ फ़ज्र के बा'द ग़ुस्ल करना :

अगर जल्दी मस्जिद में न जा सके तो इस के क़रीब क़रीब जाना बेहतर है ताकि पाकीज़गी ह़ासिल करने का वक़्त जुमुआ़ के क़रीब हो। ग़ुस्ल करना बहुत पसन्दीदा है और इस की ताकीद की गई है। बा'ज़ उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰہُ السَّلَام ने ह़दीष की बिना पर इसे **वाजिब** क़रार दिया है।

ग़ुस्ले जुमुआ़ के मुतअ़ल्लिक़ रिवायात :

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब, ह़बीबे लबीब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जुमुआ़ का ग़ुस्ल हर बालिग़ पर वाजिब है।"(2)

ह़ज़रते सय्यिदुना नाफ़ेअ़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत किया है कि "जो जुमुआ़ के लिये आए, उसे चाहिये कि ग़ुस्ल करे।"(3)

नीज़ ह़दीषे मुबारका में है कि "जो मर्द व औ़रत जुमुआ़ के लिये ह़ाज़िर हो उसे चाहिये कि ग़ुस्ल करे।"(4)

अहले मदीना जब एक दूसरे को बुरा भला कहते तो उन में से एक दूसरे को कहता : "तुम उस शख़्स से भी बुरे हो जो जुमुआ़ के दिन ग़ुस्ल नहीं करता।"(5)

1......قوت القلوب، الفصل الحادی والعشرون فیه کتاب الجمعة......الخ، ج۱، ص۱۲۷، مفهومًا۔

2......صحیح مسلم، کتاب الجمعة، باب غسل الجمعة......الخ، الحدیث:۸۴۶، ص۴۲۲۔

3......الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان، ذکرالامر بغسل یوم الجمعة......الخ، الحدیث:۱۲۲۱، ج۲، ص۲۶۴۔

4......الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان، ذکرالاستحباب للنساء......الخ، الحدیث:۱۲۲۳، ج۲، ص۲۶۴۔

5......قوت القلوب، الفصل الحادی والعشرون فیه کتاب الجمعة......الخ، ج۱، ص۱۱۸۔

रोज़े जुमुआ़ ग़ुस्ल न करने का जवाज़ :

अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ख़ुत़बा दे रहे थे कि अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़षमान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ह़ाज़िर हुए तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : "(ऐ उ़षमान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) क्या येह (जुमुआ़ के लिये) आने का वक़्त है ?" तो अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़षमाने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अ़र्ज़ की : "मैं ने अज़ान सुनने के बा'द सिर्फ़ वुज़ू किया और चला आया।" अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : "सिर्फ़ वुज़ू ? ह़ालांकि आप जानते हैं कि हु़ज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم हमें ग़ुस्ल का हुक्म दिया करते थे।"[1]

अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़षमाने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के वुज़ू करने से ग़ुस्ल न करने का जवाज़ मा'लूम हो गया। नीज़ इस के मुतअ़ल्लिक़ ह़दीषे पाक भी मरवी है। चुनान्चे,

हु़ज़ूर नबिय्ये पाक, साह़िबे लौलाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जो जुमुआ़ के दिन वुज़ू करे तो ख़ैर और अच्छा किया और जो नहाए तो नहाना बहुत अच्छा है।"[2]

एक ही निय्यत काफ़ी है :

जुमुआ़ के दिन ग़ुस्ले जनाबत करने वाला ग़ुस्ले जुमुआ़ की निय्यत से अपने बदन पर दोबारा पानी बहाए, अगर एक ही ग़ुस्ल पर इक्तिफ़ा किया तब भी काफ़ी है और दोनों ग़ुस्लों की निय्यत कर लेगा तो उसे फ़ज़ीलत ह़ासिल हो जाएगी और ग़ुस्ले जुमुआ़ ग़ुस्ले जनाबत में दाख़िल हो जाएगा।

हि़कायत :- बेटे की तर्बिय्यत :

(जुमुआ़ के दिन) एक सह़ाबी अपने बेटे के पास तशरीफ़ लाए वोह ग़ुस्ल किये हुए थे, पूछा : "(ऐ बेटे !) क्या येह जुमुआ़ का ग़ुस्ल है ?" अ़र्ज़ की : "नहीं ! ग़ुस्ले जनाबत है।" तो उन्हों ने बेटे से फ़रमाया दोबारा ग़ुस्ल करो[3] और हर बालिग़ पर ग़ुस्ले जुमुआ़ वाजिब होने के मुतअ़ल्लिक़ ह़दीष बयान फ़रमाई।[4]

---

1 ......قوت القلوب، الفصل الحادی والعشرون فیه کتاب الجمعة......الخ، ج ۱، ص ۱۱۸۔

صحیح البخاری، کتاب الجمعة، باب فضل الغسل یوم الجمعة......الخ، الحدیث: ۸۷۸، ج ۱، ص ۳۰۴۔

2 ......سنن ابی داود، کتاب الطهارة، باب فی الرخصة فی ترک الغسل......الخ، الحدیث: ۳۵۴، ج ۱، ص ۱۶۱۔

3 ......قوت القلوب، الفصل الحادی والعشرون فیه کتاب الجمعة......الخ، ج ۱، ص ۱۱۹۔

4 ......صحیح مسلم، کتاب الجمعة، باب طیب السواد یوم الجمعة، الحدیث: ۸۴۶، ص ۴۲۲۔

दोबारा ग़ुस्ल का हुक्म देने की तौजीह :

उन्हों ने दोबारा ग़ुस्ल का हुक्म इस लिये दिया था कि उन के बेटे ने ग़ुस्ले जुमुआ़ की निय्यत नहीं की थी। येह कहना बई़द नहीं कि मक़्सूद पाकीज़गी है और वोह निय्यत के बिग़ैर भी ह़ासिल हो गई थी लेकिन निय्यत न करना वुज़ू पर ए'तिराज़ का बाइ़ष बनेगा क्यूंकि शरीअ़त ने निय्यत को षवाब का काम क़रार दिया है। लिहाज़ा इस की फ़ज़ीलत त़लब करना ज़रूरी है और जिस ने जुमुआ़ का ग़ुस्ल किया फिर बे वुज़ू हो गया तो उस का ग़ुस्ल बात़िल नहीं होगा सिर्फ़ वोह वुज़ू कर ले लेकिन इस से बचना ज़ियादा बेहतर है (या'नी ग़ुस्ल के बा'द ह़त्तल इमकान ह़दष से बचे)।

﴾3﴿....ज़ीनत इख़्तियार करना :

जुमुआ़ के दिन ज़ीनत इख़्तियार करना मुस्तह़ब है। नीज़ येह तीन चीज़ों में मौजूद होती है : (1)....लिबास (2)....जिस्मानी सफ़ाई और (3)....ख़ुश्बू लगाना।

मिस्वाक करना, बाल कटवाना, नाख़ुन तरश्वाना, मूंछें पस्त करना जिस्मानी सफ़ाई में शामिल है। नीज़ किताबुत्तहारत में बयान कर्दा तमाम चीज़ें भी जिस्मानी सफ़ाई में शामिल हैं।

रोज़े जुमुआ़ नाख़ुन तराशने की फ़ज़ीलत :

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : "जो शख़्स जुमुआ़ के दिन नाख़ुन काटता है अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस से बीमारी निकाल कर शिफ़ा दाख़िल कर देता है।"[1]

अगर जुमा'रात या बुध को ह़म्माम में जाए तब भी मक़्सूद ह़ासिल हो जाता है। पस इस दिन अच्छी ख़ुश्बू लगाए जो उस के पास हो ताकि वोह नापसन्दीदा बू पर ग़ालिब आ जाए और क़रीब बैठे हुए ह़ाज़िरीन के दिमाग़ को भी ख़ुश्बू और आराम पहुंचाए।

मर्दों और औ़रतों की पसन्दीदा ख़ुश्बू :

मर्दों की पसन्दीदा ख़ुश्बू वोह है जिस की बू ज़ाहिर और रंग पोशीदा हो और औ़रतों की पसन्दीदा ख़ुश्बू वोह है जिस का रंग ज़ाहिर और बू पोशिदा हो। ह़दीष में इसी त़रह़ मरवी है।[2]

---

❶......قوت القلوب، الفصل الحادی والعشرون فیہ کتاب الجمعۃ......الخ، ج ۱، ص ۱۱۹

❷......سنن ابی داود، کتاب اللباس، باب من کرھہ، الحدیث:۴۰۴۸، ج۴، ص۶۸، مفھومًا۔

ग़म दूर और अ़क़्ल में इज़ाफ़ा हो :

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन इदरीस शाफ़ेई عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : "जो अपना लिबास साफ़ रखे उस के ग़म कम हो जाएंगे और जो ख़ुश्बू लगाए उस की अ़क़्ल में इज़ाफ़ा होगा।"

जहां तक कपड़ों का मुआ़मला है तो सफ़ेद कपड़े पसन्दीदा लिबास है क्यूंकि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ को सफ़ेद कपड़े पसन्द हैं। लिबासे शोहरत न पहने और काले कपड़े पहनना सुन्नत नहीं और न ही इस में कोई फ़ज़ीलत है बल्कि उ़-लमाए किराम رَحِمَھُمُ اللّٰہُ السَّلَام के एक गुरोह ने काले कपड़े पहनने वाले की त़रफ़ देखना भी नापसन्द किया है क्यूंकि येह हु़ज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के बा'द नई ईजाद है। जुमुआ़ के दिन इमामा बांधना मुस्तह़ब है।

जुमुआ़ के दिन इमामा बांधने की फ़ज़ीलत :

ह़ज़रते सय्यिदुना वाषिला बिन अस्क़अ़ رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि हु़ज़ूर नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "बेशक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस के फ़िरिश्ते जुमुआ़ के दिन इमामा बांधने वालों पर दुरूद भेजते हैं।"(1)

अगर गर्मी तंग करे तो (इमामा) नमाज़ से पहले और बा'द उतारने में कोई ह़रज नहीं लेकिन घर से जुमुआ़ के लिये जाते हुए, नमाज़ के वक़्त, इमाम के मिम्बर पर चढ़ते वक़्त और ख़ुत़बे के वक़्त न उतारे।

﴿4﴾....जामेअ़ मस्जिद की त़रफ़ जल्दी जाना :

मुस्तह़ब येह है कि ऐसी जामेअ़ मस्जिद में जाए जो दो या तीन फ़रसख़ (एक फ़रसख़ आठ किलो मीटर का होता है या'नी 24 किलो मीटर) दूर हो। नीज़ सुब्ह़ सवेरे या'नी सुब्ह़े सादिक़ के फ़ौरन बा'द जाए कि इस की बहुत ज़ियादा फ़ज़ीलत है। जुमुआ़ के लिये जाते हुए ख़ुशूअ़ ख़ुज़ूअ़ और आ़जिज़ी अपनाए। नमाज़ के वक़्त तक मस्जिद में ए'तिकाफ़ की निय्यत से रहे और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से जुमुआ़ के लिये ह़ाज़िरी की जो निदा आई है उस की त़रफ़ और मग़्फ़िरत व रिज़ाए इलाही की त़रफ़ जल्दी करने का इरादा करे।

---

1 ......الکامل فی صعفاء الرجال، ایوب بن مدرک الحنفی، ج ۲، ص ۵، عن ابی درداء

जुमुआ़ के लिये जल्द आने की फ़ज़ीलत :

सरकारे मदीना, सुल्ताने बा क़रीना صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का इरशादे रह़मत बुन्याद है । "(नमाज़े जुमुआ़ के लिये) पहली साअ़त में आने वाला उस शख़्स की त़रह़ है जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की राह में एक **ऊंट** सदक़ा करता है । दूसरी साअ़त में आने वाला उस शख़्स की त़रह़ है जो एक **गाए** सदक़ा करता है । तीसरी साअ़त में आने वाला उस शख़्स की मिष्ल है जो **मेंढा** सदक़ा करता है । चौथी साअ़त में आने वाला उस की मिष्ल है जो **मुर्ग़ी** सदक़ा करता है । पांचवीं साअ़त में आने वाला उस की मिष्ल है जो **अन्डा** सदक़ा करता है और जब इमाम (ख़ुत़बे के लिये) बैठ जाता है तो आ'माल नामे लपेट दिये जाते और क़लमें उठा ली जाती हैं और फ़िरिश्ते मिम्बर के पास जम्अ़ हो कर ज़िक्र सुनने में मश्ग़ूल हो जाते हैं । इस के बा'द जो आया वोह सिर्फ़ ह़क़्क़े नमाज़ के लिये आया । उस के लिये मज़ीद कोई फ़ज़ीलत नहीं ।"[1]

पहली साअ़त तुलूए़ आफ़्ताब तक है । **दूसरी साअ़त** सूरज बुलन्द होने तक । **तीसरी साअ़त** सूरज की रोशनी फैलने तक है जब पाउं जलने लगें । **चौथी और पांचवीं साअ़त** बड़ी चाश्त के वक़्त से ज़वाल तक है । इन दोनों की फ़ज़ीलत (पहली तीन की ब निस्बत) कम है और ज़वाल का वक़्त नमाज़ के ह़क़ का वक़्त है, इस में मज़ीद कोई फ़ज़ीलत नहीं ।

तीन बेहतरीन अ़मल :

सरकारे मक्कए मुकर्रमा, सरदारे मदीनए मुनव्वरा صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : तीन अ़मल ऐसे हैं अगर लोग जान लें कि इन में क्या अज्र है तो इन्हें पाने के लिये ऊंटों पर सुवार हो जाएं : (1)....अज़ान (2)....सफ़े अव्वल और (3).....जुमुआ़ के लिये जल्दी जाना ।"

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अह़मद बिन ह़म्बल عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْاَوَّل फ़रमाते हैं : "इन (या'नी ह़दीष में मज़कूर तीन आ'माल) में से अफ़्ज़ल जुमुआ़ के लिये जल्दी जाना है ।"[2]

---

1 ......صحیح مسلم، کتاب الجمعۃ، باب الطیب والسواک یوم الجمعۃ، الحدیث:۸۵۰، ص۴۲۳، باختصارٍ۔
السنن الکبری للبیھقی، کتاب الجمعۃ، باب فضل التکبیر الی الجمعۃ، الحدیث:۵۸۶۴، ج۳، ص۳۲۱، مفھومًا۔

2 ......فتح الباری لابن رجب، کتاب الجمعۃ، باب فضل الغسل یوم الجمعۃ......الخ، ج۵، ص۳۵۷۔
قوت القلوب، الفصل الحادی والعشرون فیہ کتاب الجمعۃ......الخ، ج ۱، ص۱۱۸۔

फ़िरिश्ते ख़ुश नसीबों के नाम लिखते हैं :

सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जब जुमुआ़ का दिन आता है तो फ़िरिश्ते मस्जिदों के दरवाज़ों पर बैठ जाते हैं, उन के हाथों में चांदी के काग़ज़ और सोने के क़लम होते हैं वोह लिखते हैं कि मर्तबे के ए'तिबार से लोगों में से कौन पहले आया और कौन बा'द में।"(1)

फ़िरिश्तों की दुआ़ :

एक रिवायत में है कि "जब कोई शख़्स जुमुआ़ के दिन पीछे रह जाता है और फ़िरिश्ते उसे नहीं पाते तो एक दूसरे से पूछते हैं : फ़ुलां के साथ क्या हुवा और किस वजह से वोह पीछे रह गया ? फिर दुआ़ करते हैं : ऐ परवर दगार عَزَّوَجَلَّ अगर वोह ग़रीबी की वजह से पीछे रहा तो उसे मालदार कर दे। अगर बीमारी की वजह से पीछे रहा तो उसे शिफ़ायाब फ़रमा। अगर किसी काम में मश्ग़ूलिय्यत उस के पीछे रह जाने का सबब बनी तो उसे अपनी इ़बादत के लिये फ़ुरसत अ़ता फ़रमा। अगर खेल कूद की वजह से पीछे रहा तो उस के दिल को अपनी इत़ाअ़त की त़रफ़ फेर दे।"(2)

पहली सदी में जुमुआ़ का जज़्बा :

पहली सदी में सह़री के वक़्त और फ़ज्र के बा'द रास्तों को लोगों से भरा हुवा देखा जाता था वोह चराग़ लिये हुए (नमाज़े जुमुआ़ के लिये) जामेअ़ मस्जिद की त़रफ़ जाते गोया ईद का दिन हो, ह़त्ता कि येह सिलसिला ख़त्म हो गया। पस कहा गया कि इस्लाम में जो पहली बिदअ़त ज़ाहिर हुई वोह जामेअ़ मस्जिद की त़रफ़ जल्दी जाने को छोड़ना है।(3) अफ़्सोस ! मुसलमानों को किसी त़रह़ यहूदो नसारा से ह़या नहीं आती कि वोह लोग अपनी इ़बादत गाहों की त़रफ़ हफ़्ते और इतवार के दिन सुब्ह़ सवेरे जाते हैं। नीज़ त़लबगाराने दुन्या ख़रीदो फ़रोख़्त और ह़ुसूले नफ़्ए़ दुन्यवी के लिये सवेरे सवेरे बाज़ारों की त़रफ़ चल पड़ते हैं तो आख़िरत त़लब करने वाले इन से मुक़ाबला क्यूं नहीं करते नीज़ मन्क़ूल है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के दीदार के वक़्त सब से ज़ियादा क़ुर्ब उन लोगों को ह़ासिल होगा जो सवेरे सवेरे नमाज़े जुमुआ़ के लिये जाते हैं। ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللہ تَعَالٰی عَنْہ (एक बार रोज़े जुमुआ़) सुब्ह़ सवेरे जामेअ़ मस्जिद में

---

1 ......روح البیان، الجزء الثامن والعشرون، سورۃ الجمعة، ج۹، ص۵۲۳۔

2 ......السنن الکبری للبیهقی، کتاب الجمعة، باب فضل التکبیر الی الجمعة، الحدیث:۵۸۶۴، ج۳، ص۳۲۱، مفهومًا۔

3 ......قوت القلوب، الفصل الحادی والعشرون فیه کتاب الجمعة......الخ، ج۱، ص۱۲۷۔

तशरीफ़ लाए तो तीन आदमियों को मौजूद पाया जो जल्दी करने में उन से सबक़त ले गए थे। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ग़मगीन हो गए और अपने नफ़्स को इ़ताब करते हुए कहने लगे : "चार में से चौथा।" ह़ालांकि चौथा शख़्स जल्दी करने में पीछे रहने वाला नहीं।

《5》.....मस्जिद में दाख़िल होने के आदाब :

मस्जिद में दाख़िल होने वाले को चाहिये कि लोगों की गर्दनें न फलांगे, न उन के सामने से गुज़रे और जल्दी जाना इस बात को आसान कर देगा (कि उसे गर्दनें नहीं फलांगनी पड़ेंगी) नीज़ गर्दनें फलांगने के मुतअ़ल्लिक़ ह़दीषे मुबारका में शदीद वई़द वारिद है कि "ऐसे शख़्स को बरोज़े क़ियामत (जहन्नम पर) पुल बनाया जाएगा जिसे लोग रोंदेंगे।"(1)

जुमुआ़ के दिन लोगों की गर्दनें फलांगने पर वई़द :

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने जुरैज رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से मरवी है कि हु़ज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم जुमुआ़ के दिन ख़ुत़बा इरशाद फ़रमा रहे थे कि एक शख़्स को लोगों की गर्दनें फलांगते देखा यहां तक कि वोह आगे आ कर बैठ गया। जब आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने नमाज़ मुकम्मल कर ली तो उस शख़्स को दीदार से नवाज़ा और मुलाक़ात का शरफ़ अ़त़ा करने के बा'द इरशाद फ़रमाया : "ऐ फ़ुलां ! तुम्हें किस चीज़ ने आज हमारे साथ जम्अ़ होने (या'नी नमाज़े जुमुआ़ अदा करने) से रोका ?" उस ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم मैं आप के साथ ही तो था। तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "क्या हम ने तुम्हें लोगों की गर्दनें फलांगते नहीं देखा ?"(2)

इस फ़रमान से आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस का अ़मल ज़ाएअ़ होने की त़रफ़ इशारा फ़रमाया।

एक रिवायत में है कि आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "तुझे हमारे साथ नमाज़ पढ़ने से किस चीज़ ने रोका ?" उस ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم क्या आप ने मुझे नहीं देखा ?" इरशाद फ़रमाया : "मैं ने देखा कि तुम देर से आए और लोगों को अज़िय्यत पहुंचाई।"(3) या'नी जल्दी आने से पीछे रह गए और ह़ाज़िरीन को तक्लीफ़ दी।

---

1 ......سنن الترمذی، کتاب الجمعۃ، باب ماجاء فی کراھیۃ......الخ، الحدیث:۵۱۳، ج۲، ص۴۸۔

2 ......المعجم الاوسط، باب السین، من اسمہ سعید، الحدیث:۳۶۰۷، ج۲، ص۳۸۷، مفھومًا۔

3 ......سنن ابی داود، کتاب الصلاۃ، باب تخطی رقاب الناس یوم الجمعۃ، الحدیث:۱۱۱۸، ج۱، ص۴۱۳۔

बा'ज़ अवक़ात पहली सफ़ ख़ाली होती है। इस सूरत में बा'द में आने वाले के लिये लोगों की गर्दनें फलांगना जाइज़ है क्यूंकि उन्हों ने खुद अपना ह़क़ ज़ाएअ़ किया और फ़ज़ीलत की जगह को छोड़ दिया। चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : "उन लोगों की गर्दनें फलांगो जो जुमुआ़ के दिन जामेअ़ मसाजिद के दरवाज़ों पर बैठते हैं क्यूंकि इन की कोई हु़र्मत नहीं।"(1)

जब मस्जिद में सिर्फ़ नमाज़ पढ़ने वाले मौजूद हों तो सलाम नहीं करना चाहिये क्यूंकि येह ग़ैरे मह़ल में जवाब का पाबन्द करना है।

﴾6﴿.....ह़ाज़िरीन का अदब :

लोगों के सामने से न गुज़रे, सुतून या दीवार के क़रीब बैठ जाए ताकि लोग भी उस के सामने से न गुज़रें। मक़्सूद येह है कि नमाज़ी के सामने से लोग न गुज़रें। इस से नमाज़ तो नहीं टूटती लेकिन येह ममनूअ़ है।

नमाज़ी के आगे से गुज़रना गुनाह है :

हु़ज़ूरे अन्वर, शाफ़ेए़ मह़शर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "इन्सान के लिये 40 साल खड़े रहना नमाज़ी के आगे से गुज़रने से बेहतर है।"(2)

एक रिवायत में है कि "इन्सान राख बन जाए जिसे हवाएं इधर उधर फैंक दें येह उस से बेहतर है कि वोह नमाज़ी के सामने से गुज़रे।"(3)

नमाज़ी के आगे से गुज़रने वाले और रास्ते में नमाज़ पढ़ने वाले या गुज़रने में कोताही करने वाले के मुतअ़ल्लिक़ एक रिवायत में है कि "अगर नमाज़ी के आगे से गुज़रने वाला और इस मक़ाम पर नमाज़ पढ़ने वाला जानता कि इन दोनों पर क्या गुनाह है तो उस के लिये नमाज़ी के आगे से गुज़रने से 40 साल खड़े रहना बेहतर होता।"(4)

---

1 ......قوت القلوب، الفصل الحادی والعشرون فیہ کتاب الجمعۃ......الخ، ج ۱، ص ۱۲۴۔

2 ......صحیح البخاری، کتاب الصلاۃ، باب اثم المارّبین یدی المصلّی، الحدیث: ۵۱۰، ج ۱، ص ۱۹۰۔

قوت القلوب، الفصل الحادی والعشرون فیہ کتاب الجمعۃ......الخ، ج ۱، ص ۱۲۳، "عاما" بدلہ "سنۃ"۔

3 ......قوت القلوب، الفصل الحادی والعشرون فیہ کتاب الجمعۃ......الخ، ج ۱، ص ۱۲۳، "عاما" بدلہ "سنۃ"۔

التمہید لما فی الموطا من المعانی والمسانید، ابوالنضر مولی عمر بن عبید اللّٰہ، ج۸، ص ۴۷۸۔

4 ......صحیح البخاری، کتاب الصلاۃ، باب اثم المارّبین یدی المصلّی، الحدیث: ۵۱۰، ج ۱، ص ۱۹۰۔

قوت القلوب، الفصل الحادی والعشرون فیہ کتاب الجمعۃ......الخ، ج ۱، ص ۱۲۳، دون "سنۃ"۔

सुतून, दीवार, बिछी हुई जाए नमाज़ नमाज़ी की ह़द है जो इस ह़द के अन्दर से गुज़रे तो नमाज़ी के लिये जाइज़ है कि उसे रोक दे।[1] चुनान्चे,

आक़ाए दो आ़लम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "(कोई नमाज़ी के सामने से गुज़रना चाहे तो) नमाज़ी उसे दफ़्अ़ करे[2] अगर न माने तो फिर दफ़्अ़ करे, फिर भी न माने तो उस से जंग करे कि वोह शैत़ान है।"[3]

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ आगे से गुज़रने वाले को दफ़्अ़ करते ह़त्ता कि उसे गिरा देते बल्कि कभी तो वोह शख़्स आप से लिपट जाता और मरवान के पास आप की शिकायत करता तो आप बताते कि "ह़ुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इस का ह़ुक्म दिया है।"[4]

अगर नमाज़ी कोई सुतून न पाए तो बत़ौरे सुतरा अपने सामने कोई चीज़ खड़ी कर दे जिस की ऊंचाई एक हाथ हो ताकि येह उस की ह़द की अ़लामत बन जाए।

---

❶ .....**अह़नाफ़ के नज़दीक :** नमाज़ी के आगे से गुज़रने की ह़द

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ **1250** सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब बहारे शरीअ़त जिल्द अव्वल सफ़ह़ा **615** पर सदरुश्शरीआ़, बदरुत्त़रीक़ा ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی नक़्ल फ़रमाते हैं : मैदान और बड़ी मस्जिद में मुसल्ली (या'नी नमाज़ी) के क़दम से मौज़ए सुजूद तक गुज़रना नाजाइज़ है। मौज़ए सुजूद से मुराद येह है कि क़ियाम की ह़ालत में सजदे की जगह की त़रफ़ नज़र करे तो जितनी दूर तक निगाह फैले वोह मौज़ए सुजूद है इस के दरमियान से गुज़रना नाजाइज़ है, मकान और छोटी मस्जिद में क़दम से दीवारे क़िब्ला तक कहीं से गुज़रना जाइज़ नहीं अगर सुतरा न हो।

❷ .....मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْمَنَّان मिरआतुल मनाजीह़, जि. **2** स. **5** पर "**उसे दफ़्अ़ करे**" के तह़त फ़रमाते हैं : अ़मले क़लील से हाथ के साथ उसे हटा दे गुज़रने न दे ज़ाहिर येह है कि अह़दुन में बच्चा और दीवाना भी दाख़िल है इन को भी गुज़रने से रोका जाए यहां सामने से गुज़रने से मुराद है सुतरे और नमाज़ी के दरमियान गुज़रना कि येही ममनूअ़ है।

❸ ......صحیح البخاری کتاب الصلاۃ، باب یرد مصلی من مریین یدیہ، الحدیث:۵۰۹، ج۱، ص۱۸۹، باختصارٍ۔

❹ ......المرجع السابق، مفھوما

﴾7﴿.....पहली सफ़ की कोशिश करना :

पहली सफ़ पाने की कोशिश करे क्यूंकि इस की फ़ज़ीलत बहुत ज़ियादा है जैसा कि हम ने रिवायत ज़िक्र की। नीज़ ह़दीषे पाक में है कि "जिस ने ग़ुस्ल कराया और ग़ुस्ल किया, सुब्ह़ सवेरे उठा, इमाम के क़रीब हुवा और ग़ौर से सुना तो येह उस के लिये दो जुमुओं के माबैन और मज़ीद तीन अय्याम के गुनाहों का कफ़्फ़ारा है।"(1)

एक रिवायत में है कि "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे दूसरे जुमुआ़ तक बख़्श देता है।"

बा'ज़ रिवायात में येह क़ैद है कि "वोह लोगों की गर्दनें न फलांगे।"(2)

दूर बैठने में ही आ़फ़िय्यत है :

पहली सफ़ पाने के लिये तीन बातों से ग़फ़्लत न बरती जाए :

(1)....अगर ख़त़ीब के क़रीब कोई बुराई देखे जिसे बदलने से आ़जिज़ है मषलन इमाम या किसी और ने रेशम पहन रखा है या कोई शख़्स बहुत ज़ियादा हथयार लिये नमाज़ पढ़ रहा है जो नमाज़ से तवज्जोह हटाने वाले हैं या सुनह्री हथयार वग़ैरा हों जिस पर ए'तिराज़ करना उस शख़्स पर वाजिब है तो उस के लिये पीछे बैठना, सोच मुन्तशिर होने से बचने और ज़ियादा ह़िफ़ाज़त का बाइ़ष है कि उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰہُ السَّلَام की एक जमाअ़त ने सलामती के लिये ऐसा किया।

दिलों का क़ुर्ब मत़लूब है न कि अजसाम का :

ह़ज़रते सय्यिदुना बिशर बिन ह़ारिष ह़ाफ़ी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْکَافِی से पूछा गया : "हम देखते हैं कि आप सुब्ह़ सवेरे आते हैं लेकिन आख़िरी सफ़ में नमाज़ पढ़ते हैं।" तो आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया : "(क़रीब होने से) दिलों का क़ुर्ब मत़लूब है जिस्मों का नहीं।" इस से उन्हों ने इस त़रफ़ इशारा फ़रमाया कि येह अ़मल दिल को ज़ियादा सलामत रखता है।

---

1 ......قوت القلوب، الفصل الحادی والعشرون فیه کتاب الجمعة......الخ، ج ۱، ص ۱۲۰۔

سنن ابی داود، کتاب الطهارة، باب فی الغسل یوم الجمعة، الحدیث: ۳۴۳، ج ۱، ص ۱۵۷، باختصارٍ۔

المستدرک، کتاب الجمعة، من غسل یوم الجمعة......الخ، الحدیث: ۱۰۸۵، ج ۱، ص ۵۷۶، بتغیر الفاظٍ۔

2 ......سنن ابی داود، کتاب الطهارة، باب فی الغسل یوم الجمعة، الحدیث: ۳۴۷، ج ۱، ص ۱۵۹۔

हि़कायत :- किस हुक्मरान से दूरी इख़्तियार की जाए :

हज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान सौरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی ने हज़रते सय्यिदुना शोऐ़ब बिन ह़र्ब رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को मिम्बर के क़रीब देखा जो अबू जा'फ़र मन्सूर का ख़ुत़बा सुन रहे थे। जब नमाज़ से फ़ारिग़ हुए तो फ़रमाया : "तुम्हारे इस के क़रीब बैठने ने मेरे दिल को मश्ग़ूल कर दिया, क्या इस बात से बे ख़ौफ़ हो कि तुम ऐसी बात सुनो जिस का इन्कार करना तुम पर लाज़िम है लेकिन तुम इन्कार न कर सको।" फिर हुक्मरानों के सियाह कपड़े पहनने की बिदअ़त का ज़िक्र किया। हज़रते सय्यिदुना शोऐ़ब बिन ह़र्ब رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने अ़र्ज़ की : "ऐ अबू अ़ब्दुल्लाह ! क्या ह़दीष में नहीं है कि क़रीब हो कर ग़ौर से सुनो।"(1) तो आप ने फ़रमाया : "तेरा बुरा हो येह तो हिदायत याफ़्ता ख़ुलफ़ाए राशिदीन के मुतअ़ल्लिक़ है, रहे येह लोग तो तुम इन से जिस क़दर दूर होगे और जितना इन की त़रफ़ नज़र करने से बचोगे उतना ही अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का क़ुर्ब पाओगे।"

ईषार का अनोखा अन्दाज़ :

हज़रते सय्यिदुना सईद बिन आ़मिर عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْغَافِر फ़रमाते हैं : मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के साथ नमाज़ पढ़ी उन्हों ने सफ़ों से पीछे हटना शुरूअ़ किया यहां तक कि आख़िरी सफ़ में जा पहुंचे। नमाज़ के बा'द मैं ने उन से अ़र्ज़ की : "क्या येह नहीं कहा गया कि सब से बेहतर सफ़ पहली सफ़ है ?" तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया "जी हां ! मगर येह उम्मत तमाम उम्मतों में से ज़ियादा रह़्म की गई है। बेशक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ जब अपने किसी बन्दे को नमाज़ में देखता है तो उसे भी और उस के पीछे जितने लोग हों सब की बख़्शिश फ़रमा देता है, मैं इस उम्मीद पर पीछे हो गया कि इन लोगों में से किसी की त़रफ़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ नज़रे रह़मत फ़रमाए तो मेरी भी बख़्शिश हो जाए।" एक रावी से मरवी है कि उन्हों ने फ़रमाया : "येह बात मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से सुनी है।"(2)

पस जो इस निय्यत से ईषार और हुस्ने ख़ुल्क़ का इज़हार करते हुए पीछे रहे तो कोई ह़रज नहीं। ऐसे मौक़अ़ पर ही कहा जाता है कि "आ'माल का दारो मदार निय्यतों पर है।"

---

1 ......سنن ابی داود، کتاب الطھارۃ، باب فی الغسل یوم الجمعۃ، الحدیث:۳۴۵، ج ۱، ص۱۵۸، دون"واستمع"۔
قوت القلوب، الفصل الحادی والعشرون فیہ کتاب الجمعۃ......الخ، ج ۱، ص۱۲۵۔

2 ......قوت القلوب، الفصل الحادی والعشرون فیہ کتاب الجمعۃ......الخ، ج ۱، ص۱۲۵۔

मस्जिदों में नमाज़ के लिये जगह मख़्सूस कर लेना कैसा ?

(2).....अगर ख़तीब के पास मस्जिद से अ़लाह़िदा में बादशाहों के लिये मख़्सूस जगह न हो तो पहली सफ़ पसन्दीदा है वरना इस मख़्सूस जगह में दाख़िल होने को बा'ज़ उ़-लमा ने मकरूह क़रार दिया है। चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी और ह़ज़रते सय्यिदुना बक्र मुज़नी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْهِمَا मख़्सूस जगह में नमाज़ नहीं पढ़ते थे, इन का ख़याल था कि येह हुक्मरानों के लिये मख़्सूस है और येह बिदअ़त है जो मसाजिद में ज़मानए रिसालत के बा'द शुरूअ़ हुई। मस्जिद मुत़लक़न तमाम लोगों के लिये बराबर है लिहाज़ा कोई जगह अ़लाह़िदा कर देना ख़िलाफ़े सुन्नत है और ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक और ह़ज़रते सय्यिदुना इमरान बिन ह़ुसैन (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا) (हुक्मरानों के लिये) मख़्सूस जगह में नमाज़ पढ़ते थे और क़ुर्ब के सबब इसे मकरूह नहीं कहा। ग़ालिबन कराहिय्यत कुछ लोगों के लिये मख़्सूस करने और कुछ को मन्अ़ करने के सबब है वरना आ़म लोगों को मन्अ़ न किया जाए तो अ़लाह़िदा जगह बनाने में कराहत का कोई सबब नहीं।

(3)....मिम्बर बा'ज़ सफ़ों को क़त़अ़ करता हो तो पहली सफ़ वोही है जो मिम्बर से मुत्तसिल और इस के बा'द है और जो सफ़ें मिम्बर के दाएं बाएं हैं वोह ग़ैरे मुत्तसिल हैं (लिहाज़ा इन्हें पहली सफ़ नहीं कह सकते)। ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान सौरी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی फ़रमाते थे : "पहली सफ़ वोह है जो मिम्बर के सामने और उस के अगले हिस्से से अलग हो।"[1] येह बात दुरुस्त है क्यूंकि वोह मुत्तसिल है और इस लिये भी कि उस पर बैठने वाला ख़तीब के सामने होता और उसे सुनता है। नीज़ येह कहना भी बईद नहीं कि मिम्बर वाले मा'नी की रिआ़यत न की जाए और पहली सफ़ वोही क़रार दी जाए जो क़िब्ला के क़रीब हो।

बाज़ारों और मस्जिद से ख़ारिज खुले मैदानों में नमाज़ पढ़ना मकरूह है। नीज़ बा'ज़ सहाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْهِمْ اَجْمَعِیْن इस पर लोगों को सज़ा देते और उन्हें खुले मैदानों से उठा दिया करते थे।

﴿8﴾.....ख़ुत़बे के आदाब :

इमाम ख़ुत़बे के लिये आए तो उस वक़्त नमाज़ पढ़ना और कलाम करना जाइज़ नहीं। अज़ान का जवाब दे[2] और तवज्जोह से ख़ुत़बा सुने। नमाज़ियों में से बा'ज़ की आ़दत है कि

---

1 ......قوت القلوب، الفصل الحادی والعشرون فیه کتاب الجمعة......الخ، ج ۱، ص ۱۲۵ ۔

2.....**अह़नाफ़ के नज़्दीक :** मुक़्तदियों को ख़ुत़बे की अज़ान का जवाब देना मन्अ़ है। चुनान्चे, **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 499 सफ़्ह़ात पर मुश्तमिल किताब नमाज़ के अह़काम सफ़्ह़ा 151 पर है : "मुक़्तदियों को ख़ुत़बे की अज़ान का जवाब हरगिज़ न देना चाहिये येही ...... (**बक़िय्या ह़ाशिय्या अगले सफ़्ह़े पर**)

जब मुअज़्ज़िन अज़ान के लिये खड़ा होता है उस वक़्त सजदा करते हैं इस की कोई अस्ल नहीं, न ही किसी ह़दीष व रिवायत से षाबित है । अलबत्ता अगर इत्तिफ़ाक़न उस वक़्त सजदए तिलावत आ जाए तो इस के करने में कोई ह़रज नहीं और इस वक़्त दुआ़ भी कर सकता है क्यूंकि येह इज़ाफ़ी वक़्त है । नीज़ इस सजदे के ह़राम होने का हुक्म नहीं दिया जाएगा क्यूंकि इस की हु़रमत का कोई सबब नहीं ।

तवज्जोह से खुत़बा सुनने की फ़ज़ीलत :

मरवी है कि अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा और अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़षमाने ग़नी (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھُمَا) ने फ़रमाया : "जिस ने बग़ौर खुत़बा सुना और ख़ामोश रहा उस के लिये दो अज्र हैं और जो ख़ामोश रहा लेकिन तवज्जोह से न सुना उस के लिये एक अज्र है । जिस ने सुना लेकिन फ़ुज़ूल कामों में मश्ग़ूल रहा उस पर दो गुनाह हैं और जिस ने ग़ौर से न सुना और फ़ुज़ूल कामों में मुन्हमिक रहा उस पर एक गुनाह है ।"

दौराने खुत़बा कलाम करने पर वईद :

ह़दीषे मुबारका में है कि हु़ज़ूरे अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जिस ने इमाम के खुत़बे के दौरान अपने साथ वाले को कहा : ख़मोश हो जा, ठहर जा बेशक उस ने लग़्व बात की और जिस ने दौराने खुत़बा लग़्व बात की उस का जुमुआ़ नहीं (या'नी जुमुआ़ का षवाब न पाएगा ।)"(1)

दौराने खुत़बा इशारे से ख़ामोश कराने का हुक्म :

इस फ़रमाने आ़लीशान से षाबित होता है कि दौराने खुत़बा ज़बान से किसी को ख़ामोश कराना जाइज़ नहीं अलबत्ता इशारे से या कंकरी मार कर ख़ामोश करना जाइज़ है । जैसा कि मरवी है कि हु़ज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के खुत़बा इरशाद फ़रमाने के दौरान ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़र ग़िफ़ारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने ह़ज़रते सय्यिदुना उबय्य बिन का'ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से पूछा : "फ़ुला सूरत कब नाज़िल हुई ?" तो उन्हों ने इशारे से ख़ामोश रहने को कहा । जब

(**बक़िय्या ह़ाशिया**) .... अह़वत़ (या'नी इह़तियात़ से क़रीब) है । हां अगर येह जवाबे अज़ान या (दो खुत़बों के दरमियान) दुआ़ , अगर दिल से करें, ज़बान से तलफ़्फ़ुज़ अस्लन न हो तो कोई ह़रज नहीं । और इमाम या'नी ख़त़ीब अगर ज़बान से भी जवाबे अज़ान दे या दुआ़ करे बिलाशुबा जाइज़ है ।

1 ......سنن النسائی، کتاب الجمعة، باب الانصات للخطبة یوم الجمعة، الحدیث:۱۳۹۸، ص ۲۴۱، باختصارٍ۔

سنن ابی داود، کتاب الصلاة، باب فضل الجمعة، الحدیث:۱۰۵۱، ج ۱، ص ۳۹۳، مفهومًا۔

आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ख़ुत़बे से फ़ारिग़ होने के बा'द मिम्बर से उतरे तो ह़ज़रते सय्यिदुना उबय्य बिन का'ब رَضِىَ اللّٰه تَعَالٰى عَنْهُ ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़र ग़िफ़ारी رَضِىَ اللّٰه تَعَالٰى عَنْهُ से कहा : "जाओ, तुम्हारा जुमुआ़ नहीं हुवा।" उन्हों ने बारगाहे रिसालत में जब येह बात अ़र्ज़ की तो आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "उबय्य बिन का'ब ने सच कहा।"(1)

अगर कोई ख़त़ीब से दूर हो तब भी इ़ल्म वग़ैरा के मुतअ़ल्लिक़ सुवाल न करे बल्कि ख़ामोश रहे क्यूंकि इस से पैदा होने वाली आवाज़ कान लगाने वालों तक पहुंचेगी। ऐसे लोगों के पास न बैठे जो बातों में मश्ग़ूल हों। पस जो दूर होने के सबब सुनने से आ़जिज़ रहा उसे भी ख़ामोश रहना **मुस्तह़ब** है।(2) जब दौराने ख़ुत़बा नमाज़ पढ़ना मकरूह है तो कलाम बदर्जए औला मकरूह है।

चार मकरूह अवक़ात :

अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰه تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم फ़रमाते हैं : "चार अवक़ात ऐसे हैं जिन में नमाज़ पढ़ना मकरूह है : नमाज़े फ़ज्र व अ़स्र के बा'द, ज़ह़्वए कुब्रा से ज़वाल तक और इमाम के ख़ुत़बे के दौरान।"(3)

﴾9﴿......नमाज़े जुमुआ़ के आदाब :

नमाज़े जुमुआ़ में ज़िक्र कर्दा शराइत़ की रिआ़यत करे, और जब इमाम की क़िराअत सुने तो फ़ातिह़ा के इ़लावा कुछ न पढ़े। (इन्दल अह़नाफ़ इमाम के पीछे क़िराअत जाइज़ नहीं)।

बा'द नमाज़े जुमुआ़ सूरए फ़ातिह़ा, इख़्लास और मुअ़व्वज़तैन पढ़ने की फ़ज़ीलत :

जब जुमुआ़ से फ़ारिग़ हो तो बिग़ैर कलाम किये सूरए फ़ातिह़ा, सूरए इख़्लास और मुअ़व्वज़तैन (या'नी सूरए फ़लक़ और सूरए नास) सात सात बार पढ़े। बा'ज़ अस्लाफ़े किराम رَحِمَهُمُ اللّٰه السَّلَام

1......سنن ابن ماجه، كتاب الصلاة، باب ماجاء فى الاستماع......الخ، الحديث: ١١١١، ج٢، ص ٢١، بتغيرِ الفاظٍ۔
السنن الكبرى للبيهقى، كتاب الجمعة، باب الانصات للخطبة......الخ، الحديث: ٥٨٣٢، ج٣، ص ٣١١، مفهومًا۔

2.....**अह़नाफ़ के नज़दीक :** जो लोग इमाम (ख़त़ीब) से दूर हों कि ख़ुत़बे की आवाज़ उन तक नहीं पहुंचती उन्हें भी चुप रहना **वाजिब** है। (बहारे शरीअ़त, जि. 1 स. 774)

3......قوت القلوب، الفصل الحادى والعشرون فيه كتاب الجمعة......الخ، ج ١، ص ١٢٤۔

से मन्क़ूल है कि "जिस ने ऐसा किया वोह एक जुमुआ़ से दूसरे जुमुआ़ तक मह़फ़ूज़ रहा और येह उस के लिये शैत़ान से बचाव है।"(1)

मख़्लूक़ से बे नियाज़ी और हुसूले रिज़्क़ की दुआ़ :

जुमुआ़ के बा'द येह कहना भी मुस्तह़ब है :

"اَللّٰھُمَّ یَاغَنِیُّ یَاحَمِیْدُ یَامُبْدِئُ یَامُعِیْدُ یَارَحِیْمُ یَاوَدُوْدُ اَغْنِنِیْ بِحَلَالِکَ عَنْ حَرَامِکَ وَبِفَضْلِکَ عَمَّنْ سِوَاکَ

या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ऐ ग़नी ! ऐ ह़म्द वाले ! ऐ इब्तिदाअन पैदा करने वाले ! ऐ (रोज़े क़ियामत) लौटाने वाले ! ऐ रह़्म फ़रमाने वाले ! ऐ मह़ब्बत करने वाले ! मुझे अपने ह़लाल के साथ ह़राम से और अपने फ़ज़्ल के साथ मासिवा से बे नियाज़ कर दे।"(2)

मन्क़ूल है कि जो इस पर हमेशगी इख़्तियार करे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे मख़्लूक़ से बे नियाज़ कर देता और उसे वहां से रिज़्क़ अ़त़ा फ़रमाता है जहां से उसे गुमान भी नहीं होता।

जुमुआ़ के फ़र्ज़ अदा करने के बा'द छे रक्अ़त नमाज़ पढ़े कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْھُمَا से मरवी रिवायत में है कि "हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم जुमुआ़ के बा'द दो रक्अ़त पढ़ा करते थे।"(3)

और ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी रिवायत में है कि "चार रक्अ़त पढ़ा करते थे।"(4)

जब कि अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा और ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْھُم) से छे रक्अ़तें पढ़ना भी मरवी है।"(5)

तमाम रिवायात सह़ीह़ हैं और ज़ियादा मुकम्मल करना (या'नी छे रक्अ़ते पढ़ना) अफ़्ज़ल है।

---

1 ......قوت القلوب، الفصل الحادی والعشرون فیه کتاب الجمعة......الخ، ج ۱، ص ۱۲۶۔

2 ......قوت القلوب، الفصل الحادی والعشرون فیه کتاب الجمعة......الخ، ج ۱، ص ۱۲۶۔

3 ......صحیح البخاری، کتاب الجمعة، باب الصلاة بعد الجمعة وقبلها، الحدیث:۹۳۷، ج ۱، ص ۳۲۲، مفهومًا۔

4 ......صحیح مسلم، کتاب الجمعة، باب الصلاة بعد الجمعة، الحدیث:۸۸۱، ص ۴۳۶۔

5 ......مجمع الزوائد، کتاب الصلاة، باب فی سنة الجمعة، الحدیث:۳۱۹۳، ج ۲، ص ۴۲۶، دون "عبدالله بن عباس"۔

قوت القلوب، الفصل الحادی والعشرون فیه کتاب الجمعة......الخ، ج ۱، ص ۱۲۶۔

﴾10﴿......मस्जिद में ठहरे रहना :

जुमुआ़ के बा'द नमाज़े अ़स्र पढ़ने तक मस्जिद में ठहरे रहना मुस्तह़ब है। अगर मग़रिब तक ठहरे तो अफ़्ज़ल है। चुनान्चे, मन्क़ूल है कि जिस ने जामेअ़ मस्जिद में अ़स्र की नमाज़ पढ़ी उस के लिये ह़ज का षवाब है और जिस ने वहां मग़रिब की नमाज़ पढ़ी उस के लिये एक ह़ज और एक उ़मरे का षवाब है (या'नी जुमुआ़ अदा करने के बा'द अ़स्र व मग़रिब अदा करने के लिये मस्जिद में ठहरे रहने पर येह षवाब है) अगर बनावट के इज़्हार या लोगों के इस के ए'तिकाफ़ को देख कर किसी आफ़त में मुब्तला होने या बे मक़्सद बातों में मश्ग़ूल होने का ख़ौफ़ न हो तो ऐसा करे। नमाज़े जुमुआ़ अदा करने के बा'द अफ़्ज़ल येह है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र करते, उस की ने'मतों में ग़ौरो फ़िक्र करते, इस तौफ़ीक़ पर उस का शुक्र अदा करते और अपनी कोताहियों की वजह से डरते हुए घर की त़रफ़ लौटे और ग़ुरूबे आफ़्ताब तक अपने दिल और ज़बान की निगरानी करे कि इस से फ़ज़ीलत वाली घड़ी फ़ौत न हो जाए।

मस्जिद में दुन्यवी बातें न करे कि हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "लोगों पर एक ऐसा ज़माना आएगा कि मसाजिद में दुन्या की बातें होंगी, तुम इन के साथ न बैठो कि ख़ुदा को इन से कुछ काम नहीं।"(1)

चौथी फ़स्ल : जुमुआ़ की सुन्नतें और आदाब

येह उन आदाब और सुन्नतों का बयान है जो साबिक़ा तरतीब से ख़ारिज हैं येह तमाम दिन को शामिल हैं और येह सात उमूर हैं।

﴾1﴿....नमाज़ी सुब्ह़ सवेरे या नमाज़े अ़स्र या नमाज़े जुमुआ़ के बा'द इ़ल्म की मजलिस में ह़ाज़िर हो। क़िस्सा गोओं की मजालिस में शरीक न हो क्यूंकि उन के कलाम में कोई भलाई नहीं। नीज़ जुमुआ़ पढ़ने वाले को जुमुआ़ का पूरा दिन भलाई के कामों और दुआ़ओं में गुज़ारना चाहिये ताकि जब फ़ज़ीलत वाली घड़ी आए तो अच्छे काम में मश्ग़ूल हो। नमाज़े जुमुआ़ से पहले लोगों के ह़ल्क़ों में न जाए कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है कि "हुज़ूरे अकरम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने जुमुआ़ के दिन नमाज़ से पहले ह़ल्क़े बनाने से मन्अ़ फ़रमाया।"(2) अलबत्ता ! अगर कोई शख़्स अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की मा'रिफ़त

---

1 ......شعب الایمان للبیهقی، باب فی الصلوات، الحدیث:۲۹۶۲، ج۳، ص۸۷، بتقدمٍ وتاخرٍ۔

2 ......سنن ابی داود، کتاب الصلاة، باب التحلق یوم الجمعة قبل الصلاة، الحدیث:۱۰۷۹، ج۱، ص۴۰۲، بتغیرٍ۔

रखता हो, उस के इन्आ़मात और अ़ज़ाबात के दिनों को याद करता, दीन की समझ रखता और सुब्ह़ के वक़्त जामेअ़ मस्जिद में दर्स देता हो तो उस के पास बैठे यूं वोह जल्दी आने और ग़ौर से सुनने को जम्अ़ करने वाला होगा। नीज़ आख़िरत में नफ़्अ़ बख़्श इल्म को बग़ौर सुनना नवाफ़िल में मश्ग़ूल होने से अफ़्ज़ल है।

इल्म की मजलिस में ह़ाज़िर होने की फ़ज़ीलत :

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़र ग़िफ़ारी رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि "इल्म की मजलिस में ह़ाज़िर होना हज़ार रक्अ़त (नफ़्ल) नमाज़ पढ़ने से अफ़्ज़ल है।"[1]

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ ने इस फ़रमाने बारी तआ़ला : "فَاِذَا قُضِیَتِ الصَّلٰوةُ فَانْتَشِرُوْا فِی الْاَرْضِ وَ ابْتَغُوْا مِنْ فَضْلِ اللّٰهِ وَ اذْكُرُوا اللّٰهَ كَثِیْرًا لَّعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ⑩ (پ۲۸، الجمعة:۱۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *फिर जब नमाज़ हो चुके तो ज़मीन में फैल जाओ और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का फ़ज़्ल तलाश करो और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को बहुत याद करो इस उम्मीद पर कि फ़लाह़ पाओ।"*

के मुतअ़ल्लिक़ फ़रमाया : "इस से मुराद दुन्या त़लब करना नहीं बल्कि मरीज़ की इ़यादत, जनाज़े में शिर्कत, **इल्म** सीखना और रिज़ाए इलाही की ख़ात़िर मुसलमान भाई से मुलाक़ात के लिये जाना मुराद है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने कई मक़ामात पर **इल्म** को **फ़ज़्ल** का नाम दिया।" चुनान्चे, इरशाद फ़रमाया :

وَعَلَّمَكَ مَا لَمْ تَكُنْ تَعْلَمُ ؕ وَكَانَ فَضْلُ اللّٰهِ عَلَیْكَ عَظِیْمًا ⑪⑬ (پ۵، النساء:۱۱۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और तुम्हें सिखा दिया जो कुछ तुम न जानते थे और **अल्लाह** का तुम पर बड़ा **फ़ज़्ल** है।*

एक मक़ाम पर इरशाद फ़रमाया :

وَلَقَدْ اٰتَیْنَا دَاوٗدَ مِنَّا فَضْلًا ؕ (پ۲۲، سبا:۱۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और बेशक हम ने दावूद को अपना बड़ा **फ़ज़्ल** दिया।*

इन आयात में **फ़ज़्ल** से मुराद **इल्म** है। लिहाज़ा जुमुआ़ के दिन इल्म सीखना और सिखाना अफ़्ज़ल इ़बादात में से है और क़िस्सा गो वाइ़ज़ीन की मजालिस से नमाज़ अफ़्ज़ल है क्यूंकि बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِیْن इसे बिदअ़त समझते और ऐसे क़िस्सा गोओं को मस्जिद से निकाल देते थे।

---

1 ......المدخل، فصل فی الاشتغال بالعلم یوم الجمعة، ج ۱، ص ۳۳۳۔

क़िस्सा गोई बिदअ़त है :

एक बार ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْہُمَا सुब्ह़ सवेरे मस्जिद में अपनी निशस्तगाह पर ह़ाज़िर हुए तो उस जगह एक क़िस्सा गो क़िस्सा बयान कर रहा था आप رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْہُ ने उसे देख कर फ़रमाया : "मेरी जगह से उठ।" उस ने कहा : "मैं नहीं उठूंगा क्यूंकि मैं आप से पहले आ कर बैठा हूं।" तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْہُ ने सिपाहियों को बुला कर उसे उठवा दिया।" अगर येह अ़मल (या'नी क़िस्से वग़ैरा बयान करना) सुन्नत होता तो उसे वहां से उठाना जाइज़ न होता कि सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "तुम में से कोई अपने भाई को उस की जगह से उठा कर खुद वहां न बैठ जाए बल्कि येह कह दे कि जगह दो और जगह वसीअ़ करो।"(1)

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْہُمَا का त़रीक़ा येह था कि जब कोई शख़्स अपनी जगह से उठता तो उस की जगह पर न बैठते यहां तक कि वोह लौट आता। एक रिवायत में है कि एक क़िस्सा गो उम्मुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा त़य्यिबा त़ाहिरा رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْہَا के ह़ुजरए मुबारका के बाहर वसीअ़ जगह पर बैठता था। आप ने ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْہُمَا को पैग़ाम भेजा कि इस ने अपनी क़िस्सा गोई से मुझे अज़िय्यत पहुंचाई और मुझे तस्बीह़ से रोक दिया। चुनान्चे, आप رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْہُ ने उसे इस क़दर मारा कि आप का अ़सा टूट गया फिर आप ने (टूटा हुवा) अ़सा फैंक दिया।

(2).....फ़ज़ीलत वाली घड़ी की अच्छी त़रह़ निगरानी करे। ह़दीषे पाक में है कि "जुमुआ़ में एक ऐसी साअ़त है जो मुसलमान इसे पा ले और इस में **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ से किसी चीज़ का सुवाल करे तो वोह उसे अ़त़ा फ़रमाता है।"(2) एक रिवायत में है कि "बन्दा नमाज़ पढ़ते हुए इसे पा ले (और **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ से किसी चीज़ का सुवाल करे तो वोह उसे अ़त़ा फ़रमा देता है)।"(3)

फ़ज़ीलत वाली घड़ी कौन सी है ?

फ़ज़ीलत वाली घड़ी के मुतअ़ल्लिक़ मुख़्तलिफ़ अक़्वाल हैं : (1)....वोह मुबारक साअ़त तुलूए़ आफ़्ताब के वक़्त है। (2).....ज़वाल के वक़्त। (3).....अज़ान के वक़्त

---

1 ......صحیح مسلم، کتاب السلام، باب تحریم اقامۃ الانسان......الخ، الحدیث:۲۱۷۷، ص۱۱۹۸، بتغیرِ الفاظٍ۔
صحیح البخاری، کتاب الجمعۃ، باب لایقیم الرجل اخاہ......الخ، الحدیث:۹۱۱، ج۱، ص۳۱۴، باختصارٍ۔
2 ......سنن ابن ماجہ، کتاب اقامۃ الصلاۃ و السنۃ فیھا، باب ماجاء فی الساعۃ......الخ، الحدیث:۱۱۳۷، ج۲، ص۳۱۔
3 ......صحیح مسلم، کتاب الجمعۃ، باب الساعۃ التی فی یوم الجمعۃ، الحدیث:۸۵۲، ص۴۲۴، بتغیرٍ۔

(4)....जब इमाम मिम्बर पर चढ़ कर खुत़बा शुरूअ़ कर दे । (5).....जब लोग नमाज़ के लिये खड़े हों । (6).....अ़स्र का आख़िरी वक़्त है । (7).....सूरज ग़ुरूब होने से पहले का वक़्त है कि शहज़ादिये कौनैन ह़ज़रते सय्यिदतुना फ़ात़िमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا इस वक़्त का ख़याल रखा करतीं और अपनी ख़ादिमा को हुक्म देतीं कि वोह सूरज को देखे और इस के झुकने के बारे में आगाह करे । फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ग़ुरूबे आफ़्ताब तक दुआ़ व इस्तिग़फ़ार में मश्ग़ूल रहतीं और बतातीं कि येह वोह घड़ी है जिस का इन्तिज़ार किया जाता है और इसे प्यारे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से रिवायत करतीं ।[1] (8).....येह साअ़त शबे क़द्र की त़रह़ (जुमुआ़ के) पूरे दिन में मख़्फ़ी है ताकि इस की ह़िफ़ाज़त की ज़ियादा से ज़ियादा कोशिश हो ।[2] (9).....शबे क़द्र की त़रह़ जुमुआ़ के दिन में येह साअ़त तब्दील होती रहती है येह मा'ना ज़ियादा मुनासिब है । इस में एक राज़ है जिस का ज़िक्र इल्मे मुआ़मला के मुनासिब नहीं मगर जो कुछ ह़ुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया इस की तस्दीक़ करना ज़रूरी है । चुनान्चे, आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "बेशक ज़माने के दिनों में तुम्हारे रब्ब की त़रफ़ से ख़ुश्बूदार झोंके हैं । सुनो ! इन्हें ह़ासिल करो ।"[3] और जुमुआ़ का दिन भी इन्हीं अय्याम में से है । लिहाज़ा बन्दे को चाहिये कि जुमुआ़ का सारा दिन इस घड़ी के ह़ुसूल के लिये दिल को ह़ाज़िर रखे, ज़िक्र को लाज़िम पकड़े और दुन्या के वस्वसों से बचे तो क़रीब है कि वोह इन ख़ुश्बूदार झोंकों में से कुछ ह़िस्सा पा ले । (10).....ह़ज़रते सय्यिदुना का'बुल अह़बार رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : "येह जुमुआ़ की आख़िरी साअ़त है और येह ग़ुरूबे आफ़्ताब के वक़्त है ।"[4] ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : "येह आख़िरी घड़ी कैसे हो सकती है जब कि मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को इरशाद फ़रमाते सुना कि वोह ऐसे बन्दे के मुवाफ़िक़ होती है जो नमाज़ पढ़ता है और येह नमाज़ का वक़्त नहीं ।" तो ह़ज़रते सय्यिदुना का'बुल अह़बार رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : क्या मक्की मदनी सरकार, ह़बीबे परवर दगार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने येह इरशाद नहीं फ़रमाया कि "नमाज़ के इन्तिज़ार में बैठने वाला नमाज़ में है ।"[5]

---

1 ......شعب الایمان للبیهقی، باب فی الصلوات، فضل الجمعة، الحدیث:۲۹۷۷، ج۳، ص۹۳، مفهومًا۔
قوت القلوب، الفصل الحادی والعشرون فیه کتاب الجمعة......الخ، ج۱، ص۱۲۰۔

2 ......قوت القلوب، الفصل الحادی والعشرون فیه کتاب الجمعة......الخ، ج۱، ص۱۲۰۔۱۲۱، مفهومًا۔

3 ......المعجم الاوسط، الحدیث:۲۸۵۶، ج۲، ص۱۵۵۔

4 ......قوت القلوب، الفصل الحادی والعشرون فیه کتاب الجمعة......الخ، ج۱، ص۱۲۱، باختصار۔

5 ......سنن ابن ماجه، کتاب اقامة الصلاة والسنة فیها، باب ماجاء فی الساعة......الخ، الحدیث:۱۱۳۷، ج۲، ص۳۱۔

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : "जी हां ! येह तो फ़रमाया है। तो उन्हों ने फ़रमाया : "येह नमाज़ ही है।" (येह सुन कर) ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ख़ामोश हो गए।[1]

ह़ज़रते सय्यिदुना का'बुल अह़बार رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ इस त़रफ़ माइल थे कि उस दिन का ह़क़ पूरा करने वालों के लिये येह एक रह़मत है और इस के भेजने का वक़्त वोह है जब बन्दा अ़मल से मुकम्मल त़ौर पर फ़ारिग़ हो जाए।

ख़ुलासए कलाम येह है कि येह और इस के साथ इमाम के मिम्बर पर बैठने का वक़्त बाइ़षे फ़ज़ीलत है। लिहाज़ा इन दो वक़्तों में ज़ियादा से ज़ियादा दुआ़ करनी चाहिये।

﴾3﴿.....रोज़े जुमुआ़ मोह़सिने इन्सानिय्यत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم पर कषरत से दुरूदे पाक पढ़ना मुस्तह़ब है।

80 साल के गुनाह मुआ़फ़ :

सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जो शख़्स जुमुआ़ के दिन मुझ पर 200 बार दुरूदे पाक पढ़ेगा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के 80 साल के गुनाह मुआ़फ़ फ़रमा देगा।" अ़र्ज़ की गई : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم आप पर दुरूद कैसे भेजें ?" इरशाद फ़रमाया : "यूं कहो : اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ عَبْدِكَ وَنَبِیِّكَ وَرَسُوْلِكَ النَّبِیِّ الْاُمِّیِّ या'नी ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपने बन्दे, अपने रसूल और अपने उम्मी नबी ह़ज़रते मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم पर रह़मत नाज़िल फ़रमा।"[2]

शफ़ाअ़ते मुस्त़फ़ा :

मन्क़ूल है कि जो शख़्स लगातार सात जुमुओं तक सात बार मज़्कूरा दुरूदे पाक पढ़े तो उस के लिये हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की शफ़ाअ़त वाजिब हो गई :

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَعَلٰی اٰلِ مُحَمَّدٍ صَلَاةً تَكُوْنُ لَكَ رِضًا وَلِحَقِّهٖ اَدَاءً وَاَعْطِهِ الْوَسِیْلَةَ وَابْعَثْهُ الْمَقَامَ الْمَحْمُوْدَ الَّذِیْ وَعَدْتَّهٗ

وَاجْزِهٖ عَنَّا مَا هُوَ اَهْلُهٗ وَاجْزِهٖ اَفْضَلَ مَا جَازَیْتَ نَبِیًّا عَنْ اُمَّتِهٖ وَصَلِّ عَلَیْهِ وَعَلٰی جَمِیْعِ اِخْوَانِهٖ مِنَ النَّبِیِّیْنَ وَالصَّالِحِیْنَ یَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِیْنَ

1 ......قوت القلوب، الفصل الحادی والعشرون فیه کتاب الجمعة......الخ، ج ۱، ص ۱۲۱۔

2 ......سنن الترمذی، کتاب الجمعة، باب ماجاء فی الساعة......الخ، الحدیث: ۴۹۱، ج ۲، ص ۳۳، مفهومًا

या'नी ऐ अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ हज़रते मुहम्मद صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم और आप की आल पर ऐसा दुरूद भेज जो तेरे लिये बाइषे रिज़ा और इन के हक़ की अदाएगी हो और उन्हें मक़ामे वसीला अ़ता फ़रमा और उस मक़ामे महमूद पर फ़ाइज़ फ़रमा जिस का तू ने इन से वा'दा फ़रमाया और हमारी जानिब से इन्हें ऐसा अज्र अ़ता फ़रमा जो इन की शायाने शान हो और इस से अफ़्ज़ल जज़ा अ़ता फ़रमा जो तूने किसी नबी को उस की उम्मत की तरफ़ से अ़ता फ़रमाई। नीज़ आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم आप के तमाम भाइयों या'नी अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام और सालिहीने किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام पर रहमत नाज़िल फ़रमा। ऐ सब से बढ़ कर रह्म फ़रमाने वाले !"[1]

अगर मज़ीद पढ़ना चाहे तो येह मसनून दुरूदे पाक पढ़े :

اَللّٰھُمَّ اجْعَلْ فَضَائِلَ صَلَوَاتِكَ وَنَوَامِي بَرَكَاتِكَ وَشَرَائِفَ زَكَوَاتِكَ وَرَافَتِكَ وَرَحْمَتِكَ وَتَحِيَّتِكَ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ وَاِمَامِ الْمُتَّقِيْنَ وَخَاتَمِ النَّبِيِّيْنَ وَرَسُوْلِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ قَائِدِ الْخَيْرِ وَفَاتِحِ الْبِرِّ وَنَبِيِّ الرَّحْمَةِ وَسَيِّدِ الْاُمَّةِ۔اَللّٰھُمَّ ابْعَثْهُ مَقَامًا مَّحْمُوْدًا تُزْلِفُ بِهٖ قُرْبَهٗ وَتَقَرُّ بِهٖ عَيْنَهٗ يَغْبِطُهٗ بِهِ الْاَوَّلُوْنَ وَالْاٰخِرُوْنَ۔اَللّٰھُمَّ اَعْطِهِ الْفَضْلَ وَالْفَضِيْلَةَ وَالشَّرَفَ وَالدَّرَجَةَ الرَّفِيْعَةَ وَالْمَنْزِلَةَ الشَّامِخَةَ الْمُنِيْفَةَ۔اَللّٰھُمَّ اَعْطِ مُحَمَّدًا سُؤْلَهٗ وَبَلِّغْهُ مَاْمُوْلَهٗ وَاجْعَلْهُ اَوَّلَ شَافِعٍ وَّاَوَّلَ مُشَفَّعٍ۔اَللّٰھُمَّ عَظِّمْ بُرْهَانَهٗ وَثَقِّلْ مِيْزَانَهٗ وَاَبْلِجْ حُجَّتَهٗ وَارْفَعْ فِيْ اَعْلَى الْمُقَرَّبِيْنَ دَرَجَتَهٗ۔ اَللّٰھُمَّ احْشُرْنَا فِيْ زُمْرَتِهٖ وَاجْعَلْنَا فِيْ اَهْلِ شَفَاعَتِهٖ وَاَحْيِنَا عَلٰى سُنَّتِهٖ وَتَوَفَّنَا عَلٰى مِلَّتِهٖ وَاَوْرِدْنَا حَوْضَهٗ وَاسْقِنَا غَيْرَ خَزَايَا وَلَا نَادِمِيْنَ وَلَا شَاكِّيْنَ وَلَا مُبَدِّلِيْنَ وَلَا فَاتِنِيْنَ وَلَا مَفْتُوْنِيْنَ اٰمِيْن اٰمِيْن يَا رَبَّ الْعٰلَمِيْن۔

या'नी : ऐ अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ ! अपने मुबारक तरीन दुरूद, अपनी बेहतरीन ख़ूबी, अपनी बख़्शिश, अपनी नर्मी व रहमत और अपना सलाम अम्बिया के सरदार हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم पर नाज़िल फ़रमा जो परहेज़गारों के इमाम, आख़िरी नबी, तमाम जहानों के रब्ब के रसूल, भलाई की तरफ़ ले जाने वाले, नेकी के दरवाज़े खोलने वाले, नबिय्ये रहमत और सरदारे उम्मत हैं। ऐ अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ इन्हें मक़ामे महमूद पर फ़ाइज़ फ़रमा जिस के सबब इन के कुर्ब को मज़ीद कुर्ब नसीब हो इन की आंखें ठन्डी हों कि इन पर अगले और पिछले रश्क करें। ऐ अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को फ़ज़्ल, फ़ज़ीलत, बुज़ुर्गी, वसीला बुलन्द दर्जा और बुलन्द मक़ाम अ़ता फ़रमा। ऐ अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के सुवाल को पूरा फ़रमा, इन की उम्मीद इन तक पहुंचा, इन्हें पहला शफ़ाअ़त करने वाला और मक़्बूले शफ़ाअ़त बना दे। ऐ अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ इन की दलील को बुज़ुर्गी अ़ता फ़रमा, इन के तराज़ू को भारी

[1] ......قوت القلوب، الفصل الحادی و العشرون فيه كتاب الجمعة......الخ، ج ۱، ص ۱۲۱، دون"وصل عليه"۔

कर दे, इन की दलील को पहुंचने वाली बना दे, बुलन्द तर मुक़र्रबीन में इन का मर्तबा बुलन्द फ़रमा। ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें इन के गुरोह में उठा, इन की शफ़ाअ़त के मुस्तह़िक़ीन में से कर दे, इन की सुन्नत पर ज़िन्दा रख और इन की मिल्लत पर मौत दे, हमें इन के ह़ौज़े कौषर पर पहुंचा, इन के प्याले से सैराब फ़रमा कि हम न रुस्वा हो, न नादिम हों, न शक करने वाले, न तब्दीली करने वाले, न गुमराह करने वाले और न ही गुमराह किये गए हों, ऐ तमाम जहानों के रब्ब ! हमारी दुआ़ क़बूल फ़रमा।[1]

ख़ुलासए कलाम :

दुरूदे पाक के जो भी अल्फ़ाज़ कहे ख़्वाह तशह्हुद में पढ़े जाने वाले मश्हूर अल्फ़ाज़ कहे (या'नी दुरूदे इब्राहीमी पढ़े) तो वोह दुरूद पढ़ने वाला शुमार होगा और दुरूदे पाक के साथ इस्तिग़फ़ार भी मिला लेना चाहिये क्यूंकि रोज़े जुमुआ़ कषरत से इस्तिग़फ़ार करना मुस्तह़ब है।

﴾4﴿.....जुमुआ़ के दिन क़ुरआने पाक की तिलावत कषरत से करनी चाहिये ख़ुसूसन **सूरए कह्फ़** की।

शबे जुमुआ़ सूरए कह्फ़ पढ़ने की फ़ज़ीलत :

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास और ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा (رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنۡھُم) से मरवी है कि "जो शख़्स शबे जुमुआ़ सूरए कह्फ़ की तिलावत करे तो जिस जगह वोह पढ़ता है वहां से मक्का तक उसे नूर अ़ता किया जाता है और दूसरे जुमुआ़ तक उस के गुनाह मुआ़फ़ कर दिये जाते हैं बल्कि मज़ीद तीन दिन के गुनाह भी। नीज़ उस के लिये सुब्ह़ तक 70 हज़ार फ़िरिश्ते दुआ़ए रह़मत करते हैं और उसे बीमारी, पेट के फोड़े, पहलू के दर्द, बर्स, कोढ़ के मरज़ नीज़ दज्जाल के फ़ित्ने से मह़फ़ूज़ रखा जाएगा।"[2]

अगर हो सके तो जुमुआ़ के दिन और शबे जुमुआ़ ख़त्मे क़ुरआन करना चाहिये कि इस में ख़त्मे क़ुरआन मुस्तह़ब है। अगर रात को पढ़े तो फ़ज्र की दो रक्अ़तों में क़ुरआन ख़त्म करे या मग़रिब की दो रक्अ़तों में या जुमुआ़ की अज़ान व इक़ामत के दरमियान ख़त्म करे कि बहुत ज़ियादा फ़ज़ीलत ह़ासिल होगी। इबादत गुज़ार लोग जुमुआ़ के दिन हज़ार मरतबा सूरए इख़्लास

---

1 ......سنن ابن ماجه كتاب اقامة الصلاة والسنة فيها، الحديث:٩٠٦، ج١، ص٤٨٩، باختصار۔
قوت القلوب، الفصل الحادى والعشرون فيه كتاب الجمعة......الخ، ج١، ص١٢١۔١٢٢، بتقدم وتاخر۔

2 ......قوت القلوب، الفصل الحادى والعشرون فيه كتاب الجمعة......الخ، ج١، ص١٢٢۔

पढ़ना पसन्द करते थे। नीज़ मन्कूल है कि जो शख़्स दस या बीस रक्अ़ात में हज़ार बार सूरए इख़्लास पढ़े तो येह पूरा कुरआने पाक ख़त्म करने से अफ़्ज़ल है। नीज़ इबादत गुज़ार लोग दिन भर में हज़ार बार दुरूदे पाक का नज़राना पेश करते और हज़ार बार येह तस्बीह़ पढ़ते थे : سُبْحٰنَ اللّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَلَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ अगर रोज़े जुमुआ़ या शबे जुमुआ़ मुसब्बह़ात सूरतें[1] पढ़े तो बहुत अच्छा है।

हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم से मुअ़य्यन सूरतें पढ़ना मरवी नहीं सिवाए रोज़े जुमुआ़ और शबे जुमुआ़ के कि जुमुआ़ की रात आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم नमाज़े मग़रिब में सूरए काफ़िरून व सूरए इख़्लास और नमाज़े इशा में **सूरए जुमुअ़ह व सूरए मुनाफ़िक़ून** की तिलावत फ़रमाते थे।[2]

एक रिवायत में है कि आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم जुमुआ़ की दो रक्अ़तों में येह सूरतें (**सूरए जुमुअ़ह व मुनाफ़िक़ून**) पढ़ते थे, जब कि जुमुआ़ के दिन नमाज़े फ़ज्र में सूरए सजदह, सूरए लुक़्मान और सूरए दहर की तिलावत फ़रमाते थे।[3]

मरने से पहले जन्नत में अपना ठिकाना देख ले :

﴿5﴾.....जब जामेअ़ मस्जिद में दाख़िल हो तो इस त़रह़ चार रक्अ़त नफ़्ल पढ़ना मुस्तह़ब है कि हर रक्अ़त में **50** बार सूरए इख़्लास पढ़े ताकि मजमूआ़ **200** बार हो जाए। क्यूंकि मरवी है कि "जो शख़्स ऐसा करेगा वोह मरने से पहले जन्नत में अपना ठिकाना देख लेगा या उसे उस का ठिकाना दिखा दिया जाएगा।"[4]

दो रक्अ़त **तह़िय्यतुल मस्जिद** ज़रूर पढ़े अगर्चे इमाम ख़ुत़बा दे रहा हो लेकिन मुख़्तसर पढ़े कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इस के पढ़ने का हुक्म दिया है।[5]

---

❶.....**मुसब्बह़ात** वोह सूरतें हैं जिन के शुरूअ़ में तस्बीह़ का ज़िक्र है, जैसे सूरए बनी इस्राईल, सूरए ह़दीद, सूरए जुमुआ़, सूरए सफ़, सूरए तग़ाबुन और सूरए आ'ला।

❷......قوت القلوب، الفصل الحادى والعشرون فيه كتاب الجمعة......الخ، ج ۱، ص ۱۲۳۔

❸......صحيح مسلم، كتاب الجمعة، باب مايقرأ فى يوم الجمعة، الحديث: ۸۷۹، ص ۴۳۵۔

❹......قوت القلوب، الفصل الحادى والعشرون فيه كتاب الجمعة......الخ، ج ۱، ص ۱۲۲۔

❺......صحيح مسلم، كتاب الجمعة، باب التحية والامام يخطب، الحديث: ۸۷۵، ص ۴۳۳۔

एक ग़ैर मश्हूर रिवायत में है कि "दौराने ख़ुत्बा एक शख़्स मस्जिद में दाख़िल हुवा तो हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ख़ामोश हो गए ह़त्ता कि उस ने दो रक्अ़तें पढ़ लीं।"[1]

उ़-लमाए कूफ़ा का क़ौल है कि दौराने ख़ुत्बा अगर इमाम किसी के लिये ख़ामोशी इख़्तियार करे तो वोह दो रक्अ़त **तहिय्यतुल मस्जिद** पढ़ ले। रोज़े जुमुआ़ और शबे जुमुआ़ चार रक्अ़तें इस त़रह़ पढ़ना मुस्तह़ब है कि इन में येह चार सूरतें पढ़े : सूरए अन्आ़म, सूरए कह्फ़, सूरए त़ाहा, सूरए यासीन। अगर येह सूरतें अच्छी त़रह़ याद न हों तो **सूरए यासीन, सूरए सजदह, सूरए लुक़्मान, सूरए दुख़ान, सूरए मुल्क** पढ़े। नीज़ शबे जुमुआ़ मज़्कूरा चार सूरतों की तिलावत पाबन्दी से करे कि इस की बहुत ज़ियादा फ़ज़ीलत है। जो पूरा क़ुरआन सह़ीह़ त़ौर पर न पढ़ सकता हो तो जिस क़दर सह़ीह़ पढ़ सके पढ़े कि वोही उस के लिये ख़त्मे क़ुरआन के क़ाइम मक़ाम है और सूरए इख़्लास तो बकषरत पढ़े। नीज़ रोज़े जुमुआ़ सलातुत्तस्बीह़ पढ़ना मुस्तह़ब है। इस का त़रीक़ा नवाफ़िल के बाब में बयान किया जाएगा कि हुज़ूरे पुरनूर, शाफ़ेए यौमुन्नुशूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपने चचा ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से इरशाद फ़रमाया : "इसे हर जुमुआ़ को पढ़ो।"[2]

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا रोज़े जुमुआ़ ज़वाल के बा'द इस नमाज़ को पाबन्दी से पढ़ा करते और बताते कि इस की बहुत बड़ी फ़ज़ीलत है।[3]

जुमुआ़ के दिन वक़्त की तक़्सीम :

बेहतर येह है कि रोज़े जुमुआ़ ज़वाल तक का वक़्त नमाज़ के लिये, नमाज़े जुमुआ़ के बा'द से अ़स्र तक का वक़्त इल्म सीखने सिखाने के लिये और अ़स्र से मग़रिब तक का वक़्त तस्बीह़ व इस्तिग़फ़ार के लिये मुक़र्रर करे।

﴿6﴾....जुमुआ़ के दिन ख़ास त़ौर पर सदक़ा करना मुस्तह़ब है क्यूंकि इस दिन दुगना अज्र मिलता है बशर्ते कि साइल इमाम के ख़ुत़बे के दौरान सुवाल न करे, क्यूंकि इस वक़्त मांगने वाला ख़ुत़बे के दौराने गुफ़्त्गू करने वाला होगा ह़ालांकि इस वक़्त गुफ़्त्गू करना मकरूह है।

ह़ज़रते सय्यिदुना सालेह़ बिन अह़मद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الصَّمَد फ़रमाते हैं : "जुमुआ़ के दिन दौराने ख़ुत़बा मेरे वालिद के पास बैठे एक मिस्कीन ने सुवाल किया तो एक शख़्स ने मेरे वालिद

---

1 ......سنن الدارقطنی، کتاب الجمعة، باب فی الرکعتین اذاجاء الرجل......الخ، الحدیث، ۱۶۰۲، ج۲، ص۱۸۔

2 ......سنن ابی داود، کتاب التطوع، باب صلاة التسبیح، الحدیث:۱۲۹۷، ج۲، ص۴۴۔

3 ......قوت القلوب، الفصل الحادی والعشرون فیه کتاب الجمعة......الخ، ج۱، ص۱۲۳، "یوم الجمعة" بدله "کل یوم"۔

को टुकड़ा दिया ताकि वोह उसे दे दें तो वालिद साहि़ब ने वोह टुकड़ा न पकड़ा।"[1]

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : "जब कोई शख़्स मस्जिद में सुवाल करे तो वोह इसी का मुस्तह़िक़ है कि उसे न दिया जाए और जब क़ुरआन के नाम पर मांगे तो भी उसे न दो।"[2]

बा'ज़ उ़-लमाए किराम رَحِمَھُمُ اللہُ السَّلَام ने जामेअ़ मस्जिद में ऐसे साइलीन को सदक़ा देने से मन्अ़ फ़रमाया है जो लोगों की गर्दनें फलांगते हैं। अलबत्ता ! अगर वोह गर्दनें फलांगे बिग़ैर अपनी जगह पर खड़े हो कर या बैठ कर सुवाल करे तो दे सकते हैं।[3]

उस का सुवाल पूरा कर दिया जाता है :

ह़ज़रते सय्यिदुना का'बुल अह़बार رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : "जो जुमुआ़ में ह़ाज़िर हो फिर लौट कर दो मुख़्तलिफ़ चीज़ें सदक़ा करे, फिर पलट कर रुकूअ़ व सुजूद की तक्मील और खुशूअ़ के साथ दो रक्अ़तें पढ़े और येह दुआ़ मांगे :

اَللّٰھُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ بِاِسْمِكَ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ وَبِاِسْمِكَ الَّذِیْ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ هُوَ الْحَیُّ الْقَیُّوْمُ الَّذِیْ لَا تَاْخُذُهٗ سِنَةٌ وَّلَا نَوْمٌ

*या'नी ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मैं तुझ से तेरे नाम के वासित़े से सुवाल करता हूं, **अल्लाह** के नाम से शुरूअ़ जो बहुत मेहरबान रह़मत वाला, और तेरे नाम से कि जिस के सिवा कोई मा'बूद नहीं, वोह ज़ात जो खुद ज़िन्दा और दूसरों को क़ाइम रखने वाली है, जिसे न नींद आती है न ऊंघ। तो वोह जो कुछ मांगे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे अ़त़ा फ़रमा देता है।"*[4]

जो दुआ़ मांगे क़बूल होगी :

बा'ज़ अस्लाफ़े किराम رَحِمَھُمُ اللہُ السَّلَام फ़रमाते हैं : "जो शख़्स जुमुआ़ के दिन किसी मिस्कीन को खाना खिलाए, सुब्ह़ सवेरे नमाज़े जुमुआ़ के लिये जाए, किसी को अज़िय्यत न पहुंचाए और इमाम के सलाम फेरते वक़्त येह कहे :

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ الْحَیِّ الْقَیُّوْمِ اَسْئَلُكَ اَنْ تَغْفِرَلِیْ وَتَرْحَمَنِیْ وَتُعَافِيَنِیْ مِنَ النَّارِ

---

1 ......قوت القلوب، الفصل الحادی والعشرون فیه کتاب الجمعة......الخ، ج ۱، ص ۱۲۵۔

2 ......المرجع السابق، ص ۱۲۵۔

3 ......**अह़नाफ़ के नज़दीक :** मस्जिद में सुवाल करना ह़राम है और उस साइल को देना भी मन्अ़ है। (बहारे शरीअ़त, जि.1 स. 647)

4 ......قوت القلوب، ص ۱۲۵، بتقدمٍ وتاخرٍ۔

या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नाम से शुरूअ़ जो बहुत मेहरबान रह़मत वाला ख़ुद ज़िन्दा, दूसरों को क़ाइम रखने वाला मैं तुझ से सुवाल करता हूं कि मेरी बख़्शिश फ़रमा दे, मुझ पर रह़्म फ़रमा और मुझे जहन्नम से बचा। फिर जो दुआ़ मांगे क़बूल होगी।"[1]

﴾7﴿.....जुमुआ़ का पूरा दिन आ'माले आख़िरत के लिये मुक़र्रर कर दे और दुन्यावी मश्ग़ूलिय्यात से रुक जाए, अवरादो वज़ाइफ़ की कषरत करे और इस दिन सफ़र शुरूअ़ न करे, कि रिवायत में है : "जिस ने शबे जुमुआ़ सफ़र किया उस के दोनों फ़िरिश्ते उस के लिये बद दुआ़ करते हैं।"[2] नीज़ (रोज़े जुमुआ़) तुलूए़ फ़ज्र के बा'द सफ़र करना ह़राम है। अलबत्ता, अगर रुफ़क़ाए सफ़र के चले जाने का अन्देशा हो तो सफ़र करना जाइज़ है।

बा'ज़ अकाबिरीन رَحِمَهُمُ اللهُ الْمُبِيْن फ़रमाते हैं : "सक़ा (पानी फ़राहम करने वाले) से मस्जिद में पीने के लिये या मुफ़्त पिलाने के लिये पानी ख़रीदना जाइज़ नहीं ह़त्ता कि मस्जिद में इस का बेचना भी जाइज़ नहीं क्यूंकि मस्जिद में ख़रीदो फ़रोख़्त मकरूह है।"

बा'ज़ उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام फ़रमाते हैं : "अगर क़ीमत मस्जिद से बाहर अदा कर दे और मस्जिद में ले कर पी ले या किसी को पिला दे तो कोई ह़रज नहीं।"

ह़ासिले कलाम :

जुमुआ़ के दिन अवरादो वज़ाइफ़ और भलाई के कामों की कषरत करनी चाहिये। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ जब अपने किसी बन्दे से मह़ब्बत करता है तो उसे फ़ज़ीलत वाले अवक़ात में नेक आ'माल की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमा देता है और जब किसी बन्दे से नाराज़ होता है तो वोह बन्दा फ़ज़ीलत वाले अवक़ात में बुरे आ'माल में मश्ग़ूल हो जाता है ताकि वक़्त की बरकत से मह़रूम होने और इस की ह़ुरमत को तोड़ने के सबब उस शख़्स के अ़ज़ाब में ज़ियादती और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की नाराज़ी में इज़ाफ़ा हो। जुमुआ़ के दिन दुआएं मांगना मुस्तह़ब है। اِنْ شَآءَاللهعَزَّوَجَلَّ किताबुद्दा'वात (दुआ़ओं के बाब) में इस का ज़िक्र आएगा।

हर चुने हुए बन्दे पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रह़मत हो।

---

1 ......قوت القلوب، الفصل الحادی والعشرون فیه کتاب الجمعة......الخ، ج ۱، ص ۱۲۵_۱۲۶_

2 ......کنزالعمال، کتاب السفر، الحدیث: ۱۷۵۳۶، ج ۶، ص ۳۰۴_

बाब नम्बर : 6

मुतफ़र्रिक़ मसाइल का बयान

इस बाब में वोह मुतफ़र्रिक़ मसाइल बयान किये जाएंगे जिन में आ़म लोग मुब्तला हैं और राहे आख़िरत का मुसाफ़िर इन्हें जानना चाहता है और जो मसाइल शाज़ोनादर पेश आते हैं वोह हम ने कुतुबे फ़िक़ह में बयान कर दिये हैं।

अ़मले क़लील से नमाज़ फ़ासिद नहीं होती :

मस्अला 1 : अ़मले क़लील से अगर्चे नमाज़ नहीं टूटती मगर बिला ज़रूरत ऐसा करना मकरूह है।

ज़रूरत की चन्द मिषालें : आगे से गुज़रने वाले को रोकना और ख़ौफ़नाक बिच्छू को एक या दो ज़र्बों से मारना, तीन ज़र्बों से मारा तो अ़मले कषीर होगा और नमाज़ बात़िल हो जाएगी। इसी त़रह़ जूंई और पिस्सू अगर अज़िय्यत देते हों तो उन्हें दूर करना भी जाइज़ है। यूं ही खुजाने की ज़रूरत पड़ती है क्यूंकि न खुजाने से ख़ुशूअ़ में ख़लल वाक़ेअ़ होता है।

ह़ालते नमाज़ में जूं और पिस्सू मारने का हुक्म :

ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہُ नमाज़ में जूं और पिस्सू पकड़ लिया करते थे।[1]

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने उ़मर (رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہُمَا) नमाज़ में पिस्सू को मार डालते यहां तक कि उन के हाथ पर ख़ून नज़र आता।[2]

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम नख़ई عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَلِی फ़रमाते हैं : "नमाज़ी इसे पकड़ कर सुस्त कर दे और अगर मार भी दे तो कोई ह़रज नहीं।"[3]

ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन मुसय्यब رَحْمَۃُ اللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : "इसे पकड़ ले और मसल कर फेंक दे।"[4]

ह़ज़रते सय्यिदुना मुजाहिद عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَاحِد फ़रमाते हैं : "मुझे येह पसन्द है कि इसे छोड़ दे लेकिन अगर अज़िय्यत दे कर नमाज़ से ग़ाफ़िल करे तो इस क़दर मसल दे कि अज़िय्यत न दे सके फिर फेंक दे।"[5]

येह रुख़्सत है वरना कमाल तो येह है कि नमाज़ में अ़मले क़लील से भी बचा जाए।

---

1 ......المصنف لابن ابی شبة، کتاب صلاة التطوع والامامة، الرجل یاخذ اللقمة فی الصلاة، الحدیث:۱، ج۲، ص۲۶۱۔

2 ......المرجع السابق،الحدیث:۱، ج۲، ص۲۶۱۔

3 ......المرجع السابق، الحدیث:۵، ص۲۶۲، باختصارٍ۔

4 ......المرجع السابق، الحدیث:۳، ص۲۶۱۔

5 ......المرجع السابق، الحدیث:۹، ص۲۶۲، باختصارٍ۔

इसी लिये बा'ज़ बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِيْن नमाज़ में मख्खी को भी नहीं उड़ाते थे और फ़रमाते : "मैं अपने नफ़्स को इस चीज़ का आ़दी नहीं बनाता वरना मेरी नमाज़ फ़ासिद हो जाएगी। मैं ने सुना है कि फ़ासिक़ लोग बादशाहों के सामने सख़्त तक्लीफ़ भी बरदाश्त करते हैं और ह़रकत तक नहीं करते।"

जब जमाई आए तो मुंह पर हाथ रखने में कोई ह़रज नहीं और येह औला है। (नमाज़ में) छींक आए तो दिल में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ह़म्द करे, ज़बान को ह़रकत न दे, अगर डकार आए तो सर आस्मान की त़रफ़ न उठाए, अगर चादर गिर जाए तो उसे उठा कर बराबर न करे इसी त़रह़ इमामे के कनारों का हुक्म है। येह तमाम उमूर बिला ज़रूरत मकरूह हैं।

मस्अला 2 : जूतों में नमाज़ पढ़ना जाइज़ है अगर्चे जूतों को उतारना आसान है और मौज़े पहने नमाज़ पढ़ने की रुख़्सत इस वजह से नहीं कि उन का उतारना मुश्किल बल्कि इस वजह से है कि इतनी नजासत मुआ़फ़ है और येही हुक्म पाइताबों का है।

जूते पहने नमाज़ पढ़ने की दलील :

मुस्त़फ़ा जाने रह़मत صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने ना'लैन शरीफ़ैन में नमाज़ पढ़ी फिर ना'लैन मुबारकैन उतारे तो सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن ने भी जूते उतार दिये। (नमाज़ के बा'द) आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इस्तिफ़्सार फ़रमाया : "तुम ने जूते क्यूं उतारे।" अ़र्ज़ की : "आप को जूते उतारते देख कर हम ने भी उतार दिये।" इरशाद फ़रमाया : "बेशक ह़ज़रते जिब्रईल عَلَيْهِ السَّلَام मेरे पास आए और मुझे बताया कि इन में कुछ लगा हुवा है (इस लिये मैं ने जूते उतार दिये) लिहाज़ा जब तुम में से कोई मस्जिद आने का इरादा करे तो अपने जूते पलट कर देख ले अगर इन में कोई नजासत लगी हो तो इन्हें ज़मीन से रगड़ दे फिर इन में नमाज़ पढ़ ले।"(1) (2)

बा'ज़ उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام फ़रमाते हैं : "जूतों में नमाज़ पढ़ना अफ़्ज़ल है क्यूंकि प्यारे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : तुम ने जूते क्यूं उतारे? और येह मुबालग़ा है क्यूंकि आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन से इस लिये पूछा ताकि उन के सामने जूते उतारने का सबब बयान करें क्यूंकि आप को इ़ल्म था कि उन्हों ने जूते आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की पैरवी में उतारे हैं।"

---

❶.....इस पर ह़ाशिया सफ़्ह़ा 399 पर गुज़र चुका है।

❷......المسند للامام احمد بن حنبل، مسند ابی سعید الخدری، الحدیث:۱۱۱۵۳، ج۴، ص ۴۱۔

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन साइब رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से मरवी है कि "ह़ुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने (नमाज़ से क़ब्ल) अपने जूते उतारे।"(1)

गोया आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने दोनों त़रह़ अ़मल किया (या'नी जूते पहने हुए भी नमाज़ पढ़ी और उतार कर भी)। पस जो जूते उतारे उसे चाहिये कि इन्हें अपने दाएं या बाएं न रखे वरना नमाज़ियों के लिये जगह तंग हो जाएगी और क़त़्ए़ सफ़ भी होगी बल्कि अपने सामने रखे, अपने पीछे भी न रखे वरना दिल इन की त़रफ़ मुतवज्जेह होगा। जिन उ़-लमा ने जूते पहन कर नमाज़ पढ़ने का क़ौल किया है, हो सकता है उन्हों ने इस मा'ना का लिह़ाज़ रखा हो या'नी दिल का जूतों की त़रफ़ मुतवज्जेह होना।

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि ह़ुज़ूर नबिय्ये पाक, साहि़बे लौलाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जब तुम में से कोई नमाज़ पढ़े तो अपने जूते अपने पाउं के दरमियान रख ले।"(2)

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने एक नमाज़ी से फ़रमाया : "जूते पाउं के दरमियान रख ले ताकि इन की वजह से किसी मुसलमान को अज़िय्यत न हो, रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم इमामत के दौरान जूते अपने बाईं जानिब रखते।(3) इमाम ऐसा कर सकता है क्यूंकि उस के बाईं जानिब कोई नहीं होता। बेहतर येह है कि जूते क़दमों के दरमियान न रखे वरना (रुकूअ़ व सुजूद की ह़ालत में) वोह उसे मश्ग़ूल रखेंगे बल्कि क़दमों के आगे रखे, शायद ! ह़दीष से येही मुराद है।"

ह़ज़रते सय्यिदुना जुबैर बिन मुत़इम عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْاَکْرَم फ़रमाते हैं : "नमाज़ी का अपने क़दमों के दरमियान जूते रखना बिदअ़त है।"(4)

मस्अला 3 : नमाज़ में थूकने से नमाज़ नहीं टूटती क्यूंकि येह अ़मले क़लील है। जब तक थूकने से आवाज़ पैदा न हो कलाम शुमार नहीं होता नीज़ थूकने से आवाज़ पैदा होती भी नहीं, अलबत्ता बिग़ैर ज़रूरत ऐसा करना मकरूह है, लिहाज़ा इस से बचना चाहिये और सिर्फ़ वोह त़रीक़ा इख़्तियार किया जाए जिस की सरकारे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इजाज़त दी है। चुनान्चे,

1 ......سنن ابی داود، کتاب الصلاۃ، باب الصلاۃ فی النعل، الحدیث:۶۴۸، ج ۱، ص ۲۶۰، "خلع" بدلہ "وضع"۔

2 ......سنن ابی داود، کتاب الصلاۃ، باب المصلی اذخلع نعلیہ......الخ، الحدیث:۶۵۵، ج ۱، ص ۲۶۲۔

3 ......سنن ابی داود، کتاب الصلاۃ، باب الصلاۃ فی النعل، الحدیث:۶۴۸، ج ۱، ص ۲۶۰، باختصارٍ۔

4 ......تفسیر قرطبی، سورۂ طٰہٰ، ج ۱۱، ص ۷۸۔

जानिबे क़िब्ला थूकना कैसा ?

बा'ज़ सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن से मरवी है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब, ह़बीबे लबीब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने क़िब्ले की जानिब थूक देखा तो सख़्त जलाल में आ गए और अपने हाथ में मौजूद टहनी से उसे खुरच दिया और इरशाद फ़रमाया : "ख़ुश्बू लाओ।" चुनान्चे, आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस पर ज़ा'फ़रान लगा दी फिर हमारी त़रफ़ मुतवज्जेह हो कर इरशाद फ़रमाया : "तुम में से कौन पसन्द करता है कि अपने चेहरे पर थूके ?" हम ने अ़र्ज़ की : "कोई भी पसन्द नहीं करता।" इरशाद फ़रमाया : "जब तुम में से कोई नमाज़ शुरूअ़ करता है तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के और क़िब्ला के दरमियान होता है।" एक रिवायत में है कि "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के सामने होता है। लिहाज़ा तुम में से कोई अपने सामने या दाईं त़रफ़ न थूके बल्कि बाईं जानिब या बाएं पाउं के नीचे थूके अगर जल्दी हो तो अपने कपड़ों में थूके और अ़मलन बताया कि इसे एक दूसरे के साथ रगड़ दे।"(1)

मस्अला 4 : (इमाम के पीछे) मुक़्तदी के खड़ा होने के लिये सुन्नत भी है और फ़र्ज़ भी। **सुन्नत** येह है कि एक मुक़्तदी हो तो इमाम के थोड़ा पीछे उस के दाईं त़रफ़ खड़ा हो और एक औ़रत मुक़्तदी हो तो इमाम के पीछे खड़ी हो अगर इमाम के पहलू में खड़ी हो जाए तब भी नमाज़ हो जाएगी लेकिन ख़िलाफ़े सुन्नत है।(2) अगर औ़रत के साथ एक मर्द भी मुक़्तदी हो तो मर्द इमाम की दाईं जानिब और औ़रत मर्द के पीछे खड़ी हो। कोई शख़्स पिछली सफ़ में अकेला खड़ा न हो बल्कि अगर जगह पाए तो अगली सफ़ में शामिल हो जाए या सफ़ में से किसी को खींच कर पीछे कर ले। अगर अकेला खड़ा हो गया तो नमाज़ हो जाएगी मगर मकरूह है।

इत्तिसाले सफ़ूफ़ :

खड़ा होने में मुक़्तदी के लिये **फ़र्ज़** येह है कि सफ़ में इत्तिसाल हो यूं कि इमाम व मुक़्तदी के दरमियान जामेअ़ राबित़ा हो या'नी दोनों जमाअ़त में हों अगर दोनों मस्जिद में हों तो

---

1 ......صحیح مسلم، کتاب الزھد و الرقائق، باب حدیث جابر الطویل......الخ، الحدیث: ۳۰۰۸، ص ۱۲۰۳، باختصارٍ۔
صحیح مسلم، کتاب المساجد و مواضع الصلاۃ، باب النھی عن البصاق......الخ، الحدیث: ۵۵۱، ص ۲۷۸، باختصارٍ۔

2 .....**अह़नाफ़ के नज़दीक :** औ़रत अगर मर्द के मुह़ाज़ी हो तो मर्द की नमाज़ जाती रहेगी। इस के लिये चन्द शर्तें हैं। इस के मुतअ़ल्लिक़ तफ़्सीली मा'लूमात ह़ासिल करने के लिये दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 1250 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब **बहारे शरीअ़त जिल्द अव्वल** सफ़ह़ा 587 का मुत़ालआ़ कीजिये !

जामेअ़ होने के लिये येह काफ़ी है क्यूंकि मस्जिद इसी लिये बनाई जाती है। लिहाज़ा सफ़ के मुत्तसिल होने की ह़ाजत नहीं बल्कि इमाम के अफ़्आ़ल का इ़ल्म होना ज़रूरी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ ने मस्जिद की छत पर इमाम की इक़्तिदा में नमाज़ पढ़ी। अगर मुक़्तदी मस्जिद से बाहर रास्ते या सह़रा में हो कि दोनों के दरमियान कोई इ़मारत (ह़ाइल) न हो तो तीर के निशाने की मिक़्दार क़ुर्ब काफ़ी है और (जामेअ़ होने के लिये) येह राबित़ा काफ़ी है क्यूंकि एक का फ़े'ल दूसरे के फ़े'ल से मिला हुवा है। अगर मुक़्तदी मस्जिद की दाएं या बाएं जानिब वाले मकान के सह़्न में हो और उस का दरवाज़ा मस्जिद से मिला हुवा हो तो अब शर्त़ येह है कि मस्जिद की सफ़ उस की देहलीज़ से सह़्न तक बिग़ैर किसी इन्क़िता़अ़ के मुत्तसिल हो। यूं जो लोग इस सफ़ में और इस से पिछली सफ़ में होंगे उन की नमाज़ सह़ीह़ होगी लेकिन जो आगे होंगे उन की नमाज़ सह़ीह़ न होगी (अगर्चे इमाम से पीछे हों) मुख़्तलिफ़ इ़मारतों का येही हुक्म है। बहर ह़ाल एक इ़मारत या वसीअ़ मैदान का हुक्म वोही है जो सह़रा का है।

मस्बूक़ के अह़काम :[1]

मस्अला 5 : मस्बूक़ इमाम की नमाज़ का आख़िरी ह़िस्सा पाए तो वोह नमाज़ के इब्तिदाई ह़िस्से की त़रह़ है। लिहाज़ा इमाम की मुवाफ़क़त करे, बाक़ी नमाज़ को इसी पर मुकम्मल करे और फ़ज्र की नमाज़ के आख़िर में तन्हा क़ुनूत पढ़े अगर्चे इमाम के साथ क़ुनूत पढ़ चुका हो (इन्दश्शवाफ़ेअ़)।

अगर इमाम के साथ क़ियाम का बा'ज़ ह़िस्सा पाए तो दुआ़ में मश्ग़ूल न हो (या'नी षना वग़ैरा न पढ़े) बल्कि जल्दी से इख़्तिसार के साथ सूरए फ़ातिह़ा पढ़े (इन्दश्शवाफ़ेअ़), अगर उस के फ़ातिह़ा से फ़ारिग़ होने से पहले इमाम रुकूअ़ में चला जाए तो अगर फ़ातिह़ा पढ़ कर रुकूअ़ में शामिल हो सकता हो तो पढ़ ले वगरना इमाम के साथ रुकूअ़ में शामिल हो जाए और बा'ज़ फ़ातिह़ा कुल फ़ातिह़ा के हुक्म में है, लिहाज़ा येह उस से निकल जाने की वजह से साक़ित़ हो जाएगी।

मस्बूक़ अगर सूरत पढ़ रहा हो और इमाम रुकूअ़ में चला जाए तो उसे छोड़ दे।

अगर इमाम को सजदे या तशह्हुद में पाए तो तक्बीरे तह़रीमा कह कर तक्बीरे इन्तिक़ाल कहे बिग़ैर बैठ जाए[2] लेकिन अगर इमाम को रुकूअ़ में पाए तो (तक्बीरे तह़रीमा के बा'द) रुकूअ़

---

❶.....मस्बूक़ वोह है कि इमाम की बा'ज़ रक्अ़तें पढ़ने के बा'द शामिल हुवा और आख़िर तक शामिल रहा।
(बहारे शरीअ़त, जि.1 स.588)

❷.....**अह़नाफ़ के नज़दीक :** तक्बीर कहेगा जैसा कि बहारे शरीअ़त जिल्द अव्वल सफ़ह़ा 589 पर है कि मस्बूक़ ने इमाम को क़ा'दा में पाया, तो तक्बीरे तह़रीमा सीधे खड़े होने की ह़ालत में करे, फिर दूसरी तक्बीर कहता हुवा क़ा'दा में जाए।

में जाते हुए दोबारा तक्बीर कहे क्यूंकि येह इन्तिक़ाल उस के लिये शुमार होगा या'नी रक्अ़त मिल जाएगी । नमाज़ में अस्ली इन्तिक़ालात के लिये तक्बीरें होती हैं न कि आ़रिज़ी के लिये ।

(रुकूअ़ में शामिल होने वाला) रक्अ़त पाने वाला तब शुमार होगा जब इमाम के साथ इत़्मीनान से रुकूअ़ कर ले, अगर इमाम ह़द्दे रुकूअ़ से निकल आए (फिर येह रुकूअ़ में जाए) तो इस की वोह रक्अ़त फ़ौत हो जाएगी ।

क़ज़ा और बा जमाअ़त नमाज़ के अह़काम :

मस्अला 6 : जिस की नमाज़े ज़ोहर फ़ौत हो गई और अ़स्र का वक़्त शुरूअ़ हो गया (और वोह साहिबे तरतीब हो तो बेहतर येह है कि) पहले ज़ोहर पढ़े फिर अ़स्र अदा करे । अगर पहले अ़स्र पढ़ी तो अदा हो जाएगी लेकिन ख़िलाफ़े औला है और वोह इख़्तिलाफ़ के शुबे में दाख़िल हो जाएगा । अगर इमाम को (अ़स्र की जमाअ़त में) पाए तो पहले अ़स्र की नमाज़ पढ़े फिर ज़ोहर पढ़े क्यूंकि जमाअ़त के साथ नमाज़ पढ़ना औला है ।(1)

अगर अव्वल वक़्त में अकेले नमाज़ पढ़ ली फिर जमाअ़त पाई तो जमाअ़त से नमाज़ पढ़े और वक़्ती नमाज़ की निय्यत करे, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ जिसे चाहेगा शुमार फ़रमा लेगा, अगर फ़ौत शुदा या नफ़्ल नमाज़ की निय्यत की तो भी जाइज़ है ।(2)

अगर पहले जमाअ़त से नमाज़ पढ़ चुका था फिर दूसरी जमाअ़त पाई तो फ़ौत शुदा या नफ़्ल नमाज़ की निय्यत करे, जमाअ़त से अदा की हुई नमाज़ का इआ़दा करने की ज़रूरत नहीं जब कि माक़ब्ल सूरत में जमाअ़त की फ़ज़ीलत पाने का एह़तिमाल था (इस लिये वहां वक़्ती नमाज़ की निय्यत का हुक्म है) ।

दौराने नमाज़ या बा'दे नमाज़ कपड़ों पर नजासत नज़र आना :

मस्अला 7 : जिस ने नमाज़ पढ़ने के बा'द (क़दरे मानेअ़) कपड़ों पर नजासत देखी तो नमाज़ दोबारा पढ़ना बेहतर है ज़रूरी नहीं ।

---

❶.....**अह़नाफ़ के नज़दीक :** अ़स्र की नमाज़ उस सूरत में जाइज़ होगी जब उसे ज़ोहर की नमाज़ याद न रही या वोह साहिबे तरतीब न हो या'नी उस वक़्त उस के ज़िम्मे पांच से ज़ियादा नमाज़ें हों वरना अ़स्र की नमाज़ न होगी । (माख़ूज़ अज़ बहारे शरीअ़त, जि. 1 स. 705)

साहिबे तरतीब के तफ़सीली अह़काम जानने के लिये बहारे शरीअ़त, जिल्द अव्वल स. 703 ता 707 का मुत़ालआ़ कीजिये ।

❷..... **अह़नाफ़ के नज़दीक :** फ़र्ज़ नमाज़ दोबारा पढ़ना जाइज़ नहीं, नफ़्ल की निय्यत से पढ़ सकता है अगर फ़र्ज़ की निय्यत से पढ़ेगा तो वोह नफ़्ल ही होगी । (फ़तावा रज़विय्या, जि. 7 स. 397 मुलख़्ख़सन)

अगर नमाज़ के दौरान नजासत देखे तो नजिस कपड़ा उतार दे और नमाज़ मुकम्मल कर ले, अलबत्ता नए सिरे से पढ़ना मुस्तहब है। इस की दलील सरकार صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का ना'लैन शरीफ़ैन उतारने वाला वाक़िआ है कि जब ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्राईल عَلَیْہِ السَّلَام ने ख़बर दी कि ना'लैन मुबारक पर कुछ लगा हुवा है तो आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने नए सिरे से नमाज़ न पढ़ी।(1)

सजदए सह्व के अह़काम :

मस्अला 8 : जिस ने पहला तशह्हुद या दुआए कुनूत छोड़ दी या क़ा'दए ऊला में (बा'दे तशह्हुद) दुरूदे पाक न पढ़ा(2) या कोई ऐसा फ़े'ल भूल कर किया कि अगर उसे जान बूझ कर करता तो नमाज़ फ़ासिद हो जाती या शक हुवा कि तीन रक्अ़तें पढ़ी हैं या चार तो यक़ीन पर अ़मल करे और सलाम से पहले दो सजदे करे।(3)

अगर सजदए सह्व करना भूल जाए तो सलाम फेरने के बा'द फ़ौरन याद आ जाए तो कर ले। अगर बा'दे सलाम सजदए सह्व करने के बा'द बे वुज़ू हो गया तो नमाज़ बातिल हो गई क्यूंकि जब (बा'दे सलाम) सजदए सह्व किया तो गोया उस ने भूल कर ग़ैर मह़ल में सलाम फैर दिया लिहाज़ा इस सलाम के साथ वोह नमाज़ से बाहर नहीं हुवा बल्कि दोबारा नमाज़ में मश्ग़ूल हो गया इसी लिये सजदए सह्व के बा'द वोह दोबारा सलाम फेरेगा। अगर मस्जिद से निकलने या ज़ियादा देर बा'द सजदए सह्व याद आया तो अब सजदए सह्व फ़ौत हो गया।

नमाज़ की निय्यत करते वक़्त वस्वसे आना :

मस्अला 9 : नमाज़ की निय्यत में वस्वसे अ़क़्ल की ख़राबी या शरई अह़काम से ला इल्मी के सबब आते हैं क्यूंकि निय्यत के मुआ़मले में हुक्मे इलाही को बजा लाना दूसरों के हुक्म को बजाने की त़रह़ और इस की ता'ज़ीम दूसरों की ता'ज़ीम की त़रह़ है। मषलन अगर किसी के पास कोई आ़लिमे दीन आए और वोह ता'ज़ीमन उस के लिये खड़ा हो जाए और उस के दाख़िल होते ही

---

❶.....**अह़नाफ़ के नज़्दीक :** मुसल्ली (या'नी नमाज़ी) के बदन का ह़दषे अक्बर व असग़र और नजासते ह़क़ीक़िया क़दरे मानेअ़ से पाक होना नीज़ उस के कपड़े उस जगह का जिस पर नमाज़ पढ़े, नजासते ह़क़ीक़िया क़दरे मानेअ़ से पाक होना (शर्त़ है)। (बहारे शरीअ़त, जि.1 स.476) चुनान्चे, बक़दरे मानेअ़ नजासते ह़क़ीक़िया देखी तो नमाज़ शुरूअ़ ही न होगी नए सिरे से पाक कपड़ों में नमाज़ पढ़नी होगी। रहा आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का नमाज़ न लौटाना तो इस की वजह येह है कि "ना'लैन मुबारक में नजासत न थी।" (ماخوذازمراۃ المناجیح، ج ۱، ص ۴۷۰)

❷.....**अह़नाफ़ के नज़्दीक :** फ़र्ज़ व वित्र व सुनने रवातिब में क़ा'दए ऊला में तशह्हुद पर कुछ न बढ़ाना वाजिब है। (बहारे शरीअ़त, जि.1 स. 518)

❸.....**अह़नाफ़ के नज़्दीक :** सजदए सह्व सलाम के बा'द है। (माख़ूज़ अज़ : बहारे शरीअ़त, जि. 1 स. 708)

कहे : “मैं ज़ैद आ़लिम फ़ाज़िल की आमद पर उस की ता'ज़ीम के लिये खड़ा होने की निय्यत करता और उस की त़रफ़ मुतवज्जेह होता हूं।” तो ऐसा शख़्स बे वुक़ूफ़ है। बल्कि जैसे ही वोह उसे देखे और उस की फ़ज़ीलत का इ़ल्म हो, ता'ज़ीम का सबब पाया जाए और उसे खड़ा कर दे तो वोह ता'ज़ीम करने वाला होगा बशर्ते कि किसी दूसरे काम के लिये ग़फ़्लत में खड़ा न हुवा हो। निय्यते नमाज़ में अम्रे इलाही की ता'मील के लिये ज़ोहर, अदा और फ़र्ज़ का होना इसी त़रह़ शर्त़ है जैसे आने वाले आ़लिमे दीन की ता'ज़ीम के लिये उस के आते ही खड़ा होना, उस की त़रफ़ मुतवज्जेह होना और उस का कोई दूसरा सबब न होना (शर्त़ है)। नीज़ ता'ज़ीम उसी सूरत में होगी कि ता'ज़ीम का इरादा भी हो क्यूंकि अगर वोह उस से पीठ फेर कर खड़ा हो गया या कुछ देर ठहर कर खड़ा हुवा तो येह ता'ज़ीम नहीं। फिर इन सिफ़ात का मा'लूम व मक़्सूद होना भी ज़रूरी है और दिल में इन की मौजूदगी एक लम्ह़े से ज़ियादा नहीं होती। अलबत्ता ! इस पर दलालत करने वाले अल्फ़ाज़ की तरतीब में वक़्त लगता है तो वोह ज़बान से बोलता है या दिल में सोचता है। जो शख़्स इस त़रीक़े पर निय्यत का इ़ल्म रखता हो गोया वोह निय्यत को समझा ही नहीं क्यूंकि निय्यत येही है कि जब तुम्हें वक़्त पर नमाज़ की अदाएगी के लिये बुलाया जाए तो हुक्म की ता'मील के लिये फ़ौरन खड़े हो जाओ। अब वस्वसे मह़ज़ जहालत है।

जिसे वस्वसे आते हैं वोह अपने दिल को इस बात का मुकल्लफ़ बनाता है कि दिल में ज़ोहर, अदा और फ़र्ज़ होने को एक ही ह़ालत में तफ़्सीलन अदा करे और इसे मल्ह़ूज़े ख़ात़िर रखे ह़ालांकि येह मह़ाल है। अगर (इस त़रीक़े पर) वोह ख़ुद को आ़लिम की ता'ज़ीम के लिये क़ियाम का पाबन्द करेगा तो येह उस पर दुश्वार होगा। अल ग़रज़ इस ह़ालत के जान लेने से ही वस्वसे दूर हो जाएंगे कि निय्यत (के मुआ़मले) में हुक्मे इलाही की ता'मील ग़ैर के हुक्म की ता'मील की त़रह़ है।

इक़्तिदा के अह़काम :

मस्अला 10 : मुक़्तदी रुकूअ़ व सुजूद में आते जाते और तमाम अरकान में इमाम से न तो आगे बढ़े और न ही इमाम के बराबर हो बल्कि उस से पीछे रहे। येही इक़्तिदा का मा'ना है। अगर जान बूझ कर इमाम के साथ साथ अरकान अदा किये तब भी उस की नमाज़ बात़िल न होगी जैसा कि इमाम के पहलू में उस के बिल्कुल बराबर खड़ा होने में नमाज़ बात़िल नहीं होती।

किसी रुक्न की अदाएगी में इमाम से बढ़ जाने की सूरत में नमाज़ बात़िल होने में इख़्तिलाफ़ है। येह बात बईद नहीं कि उसे इस पर क़ियास किया जाए कि जिस त़रह़ इमाम से आगे खड़े होने की सूरत में नमाज़ बात़िल हो जाती इसी त़रह़ किसी रुक्न की अदाएगी में इमाम

से बढ़ जाने की सूरत में भी नमाज़ बाति़ल हो बल्कि यहां बाति़ल होना ही ज़ियादा मुनासिब है (अह़नाफ़ के नज़दीक बाति़ल नहीं होगी) क्यूंकि जमाअ़त खड़े होने में नहीं बल्कि फ़े'ल में इक़्तिदा का नाम है और फ़े'ल में इमाम की पैरवी करना ज़ियादा अहम है। नीज़ मुक़्तदी के लिये इमाम से आगे खड़ा न होने की शर्त़ इस लिये लगाई है ताकि फ़े'ल में इत्तिबाअ़ आसान हो और इत्तिबाअ़ का त़रीक़ा मा'लूम हो जाए क्यूंकि इमाम के शायाने शान येही है कि वोह आगे खड़ा हो। लिहाज़ा अ़मल में इस से आगे बढ़ने की कोई वजह नहीं। हां, भूल कर हो जाए तो अलग बात है। इसी लिये हु़ज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने सख़्ती से इस का इन्कार करते हुए इरशाद फ़रमाया : "क्या जो शख़्स इमाम से पहले सर उठाता है इस से डरता नहीं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस का सर गधे का सर कर दे।"(1)

एक रुक्न में इमाम से पीछे रहने की सूरत में नमाज़ बाति़ल नहीं होती मषलन मुक़्तदी रुकूअ़ में नहीं गया कि इमाम रुकूअ़ से सीधा खड़ा हो गया (इस से नमाज़ तो बाति़ल नहीं होगी) लेकिन इस ह़द तक पीछे रहना मकरूह है।

अगर इमाम ने सजदे के लिये पेशानी ज़मीन पर रख दी और मुक़्तदी अभी तक रुकूअ़ की ह़द तक नहीं झुका तो मुक़्तदी की नमाज़ बाति़ल हो जाएगी। यूंही अगर इमाम ने दूसरे सजदे के लिये पेशानी ज़मीन पर रख दी और मुक़्तदी ने अभी तक पहला सजदा भी नहीं किया तो भी इस की नमाज़ बाति़ल हो जाएगी (अह़नाफ़ के नज़दीक मज़कूरा सूरत में नमाज़ बाति़ल नहीं होगी)।

सफ़ें दुरुस्त करना और दाईं जानिब की फ़ज़ीलत :

मस्अला 11 : नमाज़ के लिये ह़ाज़िर होने वाले पर लाज़िम है कि अगर किसी को नमाज़ में ग़लत़ी करता देखे तो उसे बता दे और दुरुस्त करवाए। अगर येह अ़मल किसी जाहिल से सादिर हो तो उसे नर्मी से समझाए। मषलन सफ़ों को बराबर करने के लिये कहना, सफ़ से अ़लाह़िदा तन्हा खड़े होने वाले को रोकना, इमाम से पहले सर उठाने वाले को रोकना और इस के इ़लावा दीगर उमूर।

हु़ज़ूर नबिय्ये पाक, साह़िबे लौलाक صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जाहिल की वजह से उस आ़लिम के लिये हलाकत है जो जाहिल को सिखाता नहीं।"(2)

---

1 ......صحیح مسلم، کتاب الصلاۃ، باب تحریم سبق الامام برکوع......الخ، الحدیث:۴۲۷، ص۲۲۸۔

2 ......کنزالعمال، کتاب العلم، الحدیث:۲۹۰۳۳، ج۱۰، ص۸۲، دون"حیث لایعلمہ"۔

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन मसऊद رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "जो नमाज़ में ग़लती करने वाले को देखे और मन्अ़ न करे तो वोह उस के गुनाह में शरीक है।"

हज़रते सय्यिदुना बिलाल बिन सा'द عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْاَحَد फ़रमाते हैं : "गुनाह जब पोशीदा हो तो सिर्फ़ गुनाह करने वाले को नुक़्सान देता है लेकिन जब ज़ाहिर हो और उसे बदला न जाए तो इस का नुक़्सान सब को होता है।"(1)

ह़दीषे पाक में है कि ह़ज़रते सय्यिदुना बिलाल رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہ टख़्नों पर दुर्रे मार कर सफ़ें दुरुस्त करवाते।(2)

अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : "नमाज़ में अपने भाइयों को न पाओं तो उन्हें तलाश करो। अगर बीमार हों तो उन की इ़यादत करो। अगर तुन्दुरुस्त हों तो उन्हें झिड़को।"

झिड़कने से मुराद जमाअ़त छोड़ने पर तम्बीह करना है और इस में सुस्ती नहीं करनी चाहिये।

हि़कायत :- गोया वोह मुर्दा है :

अस्लाफ़े किराम رَحِمَھُمُ اللّٰہ السَّلَام इस मुआ़मले में मुबालग़ा करते ह़त्ता कि बा'ज़ बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَھُمُ اللّٰہُ الْمُبِیْن जमाअ़त से पीछे रह जाने वालों की त़रफ़ जनाज़ा (की चार पाई) उठा कर ले जाते, येह इस बात की त़रफ़ इशारा होता कि **मुर्दा जमाअ़त से पीछे रहता है न कि ज़िन्दा** !

मस्जिद में दाख़िल होने वाले को चाहिये कि सफ़ की दाईं जानिब बैठने का इरादा करे, कि ज़मानए रिसालत में (सफ़ के) दाईं जानिब लोगों का हुजूम होता था ह़त्ता कि बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ की गई कि "बाईं त़रफ़ को छोड़ दिया गया।" तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जिस ने बाईं जानिब को आबाद किया उस के लिये दुगना अज्र है।"(3)

(नमाज़ में ह़ाज़िर होने वाला) सफ़ में किसी ना समझ बच्चे को पाए और अपने खड़े होने की जगह न पाए तो बच्चे को पीछे कर के ख़ुद सफ़ में खड़ा हो सकता है। नमाज़ के वोह मसाइल कि जिन में आ़म लोग मुब्तला हैं येह उन में से चन्द हैं जिन के बयान करने का हम ने इरादा किया है। नमाज़ के मुतफ़र्रिक़ अह़काम اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ किताबुल अवराद में आएंगे।

---

1 ......حلیۃ الاولیاء، بلال بن سعد، الحدیث: ۷۰۱۹، ج۵، ص ۲۵۴۔

2 ......طبقات الحنابلۃ، الطبقۃ الاولی، باب المیم، ج ۱، ص ۳۲۸۔

3 ......سنن ابن ماجہ، کتاب اقامۃ الصلاۃ والسنۃ فیھا، باب فضل میمنۃ الصف، الحدیث: ۱۰۰۷، ج ۱، ص ۵۳۲، بتغیرٍ۔

बाब नम्बर 7 :

नवाफ़िल का बयान

जान लीजिये ! फ़र्ज़ के इलावा दीगर नमाज़ों की तीन अक़्साम हैं :

(1)....सुन्नत (2)....मुस्तह़ब और (3).....नफ़्ल

﴾1﴿.....**सुन्नत :** से वोह नमाज़ें मुराद हैं जिन्हें रसूलुल्लाह صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने पाबन्दी से अदा फ़रमाया। जैसे नमाज़ों के बा'द की सुन्नतें, नमाज़े चाश्त, वित्र और तहज्जुद वग़ैरा क्यूंकि सुन्नत उस रास्ते को कहते हैं जिस पर चला जाए।

﴾2﴿....**मुस्तह़ब :** से वोह नमाज़ें मुराद हैं जिन की फ़ज़ीलत पर अह़ादीष वारिद हों लेकिन हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन पर हमेशगी इख़्तियार न फ़रमाई हो। जैसा कि हम अ़न क़रीब हफ़्ता भर की दिन रात की नमाज़ों के बयान में नक़्ल करेंगे। मषलन घर में दाख़िल होते और निकलते वक़्त की और इस जैसी दीगर नमाज़ें।

﴾3﴿.....**ततव्वुअ़ :** से मुराद वोह नमाज़ें हैं जिन के मुतअ़ल्लिक़ ख़ास त़ौर पर कोई ह़दीष वारिद न हुई हो लेकिन लोग ख़ुद इन्हें पढ़ते हों क्यूंकि शरीअ़त में नमाज़ के ज़रीए **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से मुनाजात की तरग़ीब दी गई है। गोया लोग ख़ुद इन्हें पढ़ते हैं क्यूंकि येह नमाज़ मुअ़य्यन त़रीक़े पर मुस्तह़ब नहीं अगर्चे मुत़लक़न मुस्तह़ब है और ततव्वुअ़, तबर्रुअ़ को कहते हैं।

इन तीनों अक़्साम को इस ए'तिबार से नवाफ़िल कहा जाता है कि नफ़्ल का मा'ना ज़ाइद है और येह तमाम अक़्साम फ़राइज़ पर ज़ाइद हैं। इन्ही मक़ासिद को बयान करने के लिये हम ने नफ़्ल, सुन्नत, मुस्तह़ब और ततव्वुअ़ की इस्त़िलाह़ क़ाइम कर ली है, अगर कोई इस इस्त़िलाह़ को बदले तो कोई ह़रज नहीं क्यूंकि मक़ासिद को समझने के बा'द अल्फ़ाज़ की कोई पाबन्दी नहीं होती। इन में से हर क़िस्म के दर्जात फ़ज़ीलत के ए'तिबार से मुख़्तलिफ़ हैं। इस सिलसिले में अह़ादीष और अक़्वाले सह़ाबा मरवी हैं या प्यारे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इन पर हमेशगी फ़रमाई या इस के मुतअ़ल्लिक़ मरवी रिवायात सह़ीह़ और मश्हूर हैं। इसी लिये कहा जाता है : जमाअ़त की सुन्नतें इनफ़िरादी सुन्नतों से अफ़्ज़ल हैं। बा जमाअ़त सुन्नतों में से अफ़्ज़ल ईदैन की नमाज़ है, फिर सूरज ग्रहन की, फिर नमाज़े इस्तिसक़ा। इनफ़िरादी सुन्नतों में अफ़्ज़ल वित्र, फिर फ़ज्र की दो रक्अ़तें, फिर इस के बा'द अपने अपने मर्तबे के मुत़ाबिक़ बाक़ी सुनने मुअक्कदा हैं।

इज़ाफ़त के ए'तिबार से नवाफ़िल की तक़्सीम :

जान लीजिये ! नवाफ़िल की अपने मुतअ़ल्लिक़ात की त़रफ़ इज़ाफ़त के ए'तिबार से दो क़िस्में हैं : (1).....जिन का तअ़ल्लुक़ अस्बाब से होता है जैसे नमाज़े कुसूफ़ व इस्तिसक़ा।

(2).....जिन का तअ़ल्लुक़ अवक़ात से होता है और अवक़ात से मुतअ़ल्लिक़ा नवाफ़िल की भी कुछ अक़्साम हैं : शबो रोज़ के नवाफ़िल, हफ़्तावार नवाफ़िल और सालाना नवाफ़िल।

इन तमाम की चार अक़्साम हैं।

﴾1﴿....वोह नमाज़ें जो हर दिन रात पढ़ी जाती हैं :

येह आठ हैं। पांच इन में से सुन्नते मुअक्कदा हैं जो पांच नमाज़ों की सुन्नतें हैं। तीन इस के इ़लावा हैं और वोह नमाज़े चाश्त, मग़रिब व इ़शा के दरमियान (या'नी अव्वाबीन) के नवाफ़िल और नमाज़े तहज्जुद है।

(1)....फ़ज्र की सुन्नतें :

येह दो रक्अ़तें हैं, इन की फ़ज़ीलत के बारे में मरवी है कि आक़ाए दो आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "फ़ज्र की दो रक्अ़तें दुन्या व माफ़ीहा से बेहतर हैं।"[1]

इन का वक़्त सुब्हे सादिक़ के तुलूअ़ से शुरूअ़ होता है। सुब्हे सादिक़ कनारों में फैलने वाली रोशनी होती है न कि लम्बाई में। इब्तिदा में मुशाहदे के साथ इस का इदराक मुश्किल होता है मगर येह कि चांद की मनाज़िल का इ़ल्म हो या येह कि फ़ुलां सितारा तुलूअ़ होगा तो सुब्हे सादिक़ उस के साथ मुत्तसिल होगी पस इस त़रह़ सितारों के ज़रीए़ इस पर रहनुमाई ह़ासिल होती है। महीने की दो रातों में चांद के ज़रीए़ येह वक़्त मा'लूम होता है क्यूंकि छब्बीसवीं की रात चांद फ़ज्र के साथ तुलूअ़ होता है और महीने की बारहवीं रात चांद के ग़ुरूब होने के साथ फ़ज्र तुलूअ़ होती है अकषर ऐसा ही होता है। बा'ज़ बुरजों में फ़र्क़ भी पड़ता है, इस की तशरीह़ त़वील है। सालिक के लिये चांद की मनाज़िल का जानना अहम उमूर में से है ताकि वोह दिन रात के अवक़ात की मिक़्दार पर मुत्तलअ़ हो सके।

फ़ज्र की फ़र्ज़ नमाज़ का वक़्त फ़ौत हो जाने से फ़ज्र की सुन्नतें फ़ौत हो जाती हैं और वोह तुलूए़ आफ़्ताब का वक़्त है। लेकिन सुन्नत येह है कि इन्हें फ़र्ज़ नमाज़ से पहले अदा किया जाए। अगर जमाअ़त खड़ी हो जाने के बा'द मस्जिद में दाख़िल हुवा तो फ़र्ज़ नमाज़ अदा करे क्यूंकि हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जब नमाज़ खड़ी हो जाए तो फ़र्ज़ नमाज़ के इ़लावा कोई नमाज़ जाइज़ नहीं।"[2]

---

1 ......صحیح مسلم، کتاب صلاۃ المسافرین وقصرھا، باب استحباب رکعتی سنۃ الفجر، الحدیث:۷۲۵، ص۳۶۲۔

2 ......المرجع السابق، باب کراھۃ الشروع فی نافلۃ بعد شروع......الخ، الحدیث:۷۱۰، ص۳۵۸۔

जब फ़र्ज़ नमाज़ से फ़ारिग़ हो तो उठ कर सुन्नतें अदा कर ले[1] और सहीह़ येह है कि येह सूरज तुलूअ़ होने से पहले अदा ही होगी क्यूंकि येह दोनों वक़्त में फ़र्ज़ के ताबेअ़ हैं। तक़्दीम व ताख़ीर के ए'तिबार से इन में तरतीब उस वक़्त सुन्नत है जब जमाअ़त न हो रही हो और जमाअ़त हो रही हो तो तरतीब बदल जाएगी लेकिन अदाएगी बाक़ी रहेगी।[2]

मुस्तह़ब येह है कि सुन्नतें घर में मुख़्तसर तौर पर अदा करे। फिर मस्जिद में दाख़िल हो और दो रक्अ़त **तहिय्यतुल मस्जिद** अदा करे और बैठ जाए[3] फिर फ़र्ज़ नमाज़ तक कोई नमाज़ न पढ़े। नमाज़े फ़ज्र और तुलूए़ आफ़्ताब के दरमियानी वक़्त में ज़िक्रो फ़िक्र, फ़ज्र की दो रक्अ़तों और फ़र्ज़ नमाज़ पर इक्तिफ़ा करे।

(2).....ज़ोहर की सुन्नतें :

येह छे रक्आ़त हैं। दो फ़र्ज़ के बा'द हैं, वोह भी सुन्नते मुअक्कदा हैं और चार फ़र्ज़ से पहले हैं, वोह भी सुन्नत हैं लेकिन फ़र्ज़ों के बा'द वाली दो रक्अ़तों के मुक़ाबले में कम अहम हैं।

ज़ोहर की चार सुन्नतों की फ़ज़ीलत :

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफुर्रहीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जिस ने ज़वाल के बा'द चार रक्अ़तें पढ़ीं इन में अच्छी तरह़ क़िराअत की और रुकूअ़ व सुजूद किया उस के साथ 70 हज़ार फ़िरिश्ते नमाज़ पढ़ते और रात तक उस के लिये इस्तिग़फ़ार करते हैं।"[4]

---

❶....दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़्बूआ़ 1250 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब बहारे शरीअ़त जिल्द अव्वल सफ़हा 664 पर है : फ़ज्र की सुन्नत क़ज़ा हो गई और फ़र्ज़ पढ़ लिये तो अब सुन्नतों की क़ज़ा नहीं अलबत्ता इमाम मुहम्मद رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि तुलूए़ आफ़्ताब के बा'द पढ़ ले तो बेहतर है। और तुलूअ़ से पेशतर (सूरज निकलने से पहले) बिल इत्तिफ़ाक़ ममनूअ़ है। आज कल अकषर अ़वाम बा'दे फ़र्ज़ फ़ौरन पढ़ लिया करते हैं येह ना जाइज़ है, पढ़ना हो तो आफ़्ताब बुलन्द होने के बा'द ज़वाल से पहले पढ़ें।

❷.....बहारे शरीअ़त जिल्द अव्वल सफ़हा 665 पर है : जमाअ़त क़ाइम होने के बा'द किसी नफ़्ल का शुरूअ़ करना जाइज़ नहीं सिवा सुन्नते फ़ज्र के कि अगर येह जाने कि सुन्नत पढ़ने के बा'द जमाअ़त मिल जाएगी, अगर्चे क़ा'दा ही में शामिल होगा तो सुन्नत पढ़ ले।

❸.....बहारे शरीअ़त जिल्द अव्वल सफ़हा 455 पर है : ह़दीषे मुबारका में है कि "जब फ़ज्र तुलूअ़ कर आए तो कोई (नफ़्ल) नमाज़ नहीं सिवा दो रक्अ़त फ़ज्र के।" (المعجم الاوسط لطبرانی،الحدیث:۸۱۲،ج۱،ص۲۳۸)

लिहाज़ा अह़नाफ़ के नज़दीक : तुलूए़ फ़ज्र से तुलूए़ आफ़्ताब तक के इस दरमियान में सिवा दो रक्अ़त सुन्नते फ़ज्र के कोई नफ़्ल नमाज़ जाइज़ नहीं।

❹......قوت القلوب، الفصل الحادی عشرفیہ کتاب فضل الصلاۃ فی الایام......الخ، ج۱، ص۵۲.

एक रिवायत में है कि हुज़ूर صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ज़वाल के बा'द चार त़वील रक्अ़तें पढ़ना तर्क न करते और इरशाद फ़रमाते : "इस वक़्त आस्मान के दरवाज़े खोले जाते हैं और मैं पसन्द करता हूं कि इस घड़ी मेरा अ़मल बुलन्द हो।"(1)

हर रोज़ बारह रक्अ़त सुन्नत अदा करने की फ़ज़ीलत :

उम्मुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे ह़बीबा رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنھَا से मरवी है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जिस ने हर रोज़ फ़र्ज़ नमाज़ों के इ़लावा 12 रक्अ़तें अदा कीं उस के लिये जन्नत में एक घर बनाया जाएगा। दो रक्अ़तें नमाज़े फ़ज्र से पहले, चार ज़ोहर से पहले, दो ज़ोहर के बा'द, दो अ़स्र से पहले और दो मग़रिब के बा'द।"(2)

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنھُمَا फ़रमाते हैं : "मैं ने हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से हर रोज़ की दस रक्अ़तें याद कीं।" फिर इन्हों ने फ़ज्र की दो रक्अ़तों के इ़लावा वोह तमाम ज़िक्र कीं जो उम्मुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे ह़बीबा رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنھَا ने बयान फ़रमाईं। ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنھُمَا ने फ़रमाया कि सुब्ह़ के वक़्त बारगाहे रिसालत में कोई नहीं जाता था मगर मेरी बहन उम्मुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना ह़फ़्सा رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنھَا ने मुझे बताया कि "आप صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم मेरे घर में दो रक्अ़त नमाज़ अदा फ़रमा कर बाहर तशरीफ़ ले जाते थे।"(3)

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنھُمَا ने ज़ोहर से पहले दो रक्अ़त सुन्नत और दो इ़शा के बा'द बयान कीं यूं ज़ोहर से क़ब्ल दो रक्अ़तें चार के मुक़ाबले में ज़ियादा मुअक्कद हो गईं और ज़ोहर का वक़्त ज़वाल के बा'द शुरूअ़ होता है।

ज़वाल के वक़्त की पहचान :

ज़वाल की पहचान येह है कि कोई शख़्स सीधा खड़ा हो कर मशरिक़ की त़रफ़ झुके तो उस का साया ज़ियादा हो जाए। क्यूंकि तुलूअ़ के वक़्त साया मग़रिब की जानिब होता है और

---

1 ......المرجع السابق۔شرح معانی الآثار، کتاب الصلاۃ، باب التطوع بالیل والنھار، الحدیث:۱۹۲۲، ج۱، ص۴۳۶۔

2 ......سنن النسائی، کتاب قیام اللیل وتطوع النھار، باب ثواب من صلی فی الیوم......الخ، الحدیث:۱۸۰۰ ص۳۰۸۔

3 ......صحیح البخاری، کتاب التھجد، باب الرکعتان قبل الظھر، الحدیث:۱۱۸۰۔۱۱۸۱، ج۱، ص۳۹۸، مفھومًا۔

लम्बा होता है जूं जूं सूरज बुलन्द होता जाता है साया कम होता और मग़रिब की सम्त से बटता जाता है यहां तक कि सूरज अपनी इन्तिहाई बुलन्दी तक पहुंच जाता है और वोह निस्फ़ुन्नहार की क़ौस है। यहां साया कम होना रुक जाता है जब सूरज इन्तिहाई बुलन्दी से ढलना शुरूअ़ हो जाता है तो साया बढ़ना शुरूअ़ हो जाता है, जब येह इज़ाफ़ा महसूस होने लगे तो ज़ोहर का वक़्त शुरूअ़ हो जाता है।

इब्तिदाए वक़्ते अ़स्र :

ज़वाल के वक़्त साए के सिरे पर एक अ़लामत (मषलन कोई लकड़ी) रखी जाए जब साया उस लकड़ी की एक मिष्ल हो जाए तो (ज़ोहर का वक़्त ख़त्म और) अ़स्र का वक़्त शुरूअ़ हो जाता है।[1]

(3).....अ़स्र की सुन्नतें :

येह अ़स्र से पहले चार रक्अ़ात हैं। हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि सरकारे मक्कए मुकर्रमा, सरदारे मदीनए मुनव्वरा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस बन्दे पर रह़्म फ़रमाए जिस ने अ़स्र से पहले चार रक्अ़तें पढ़ीं।"[2]

दुआ़ए मुस्त़फ़ा में शामिल होने की उम्मीद पर येह नमाज़ पढ़ना निहायत मुअक्कद मुस्तह़ब है क्यूंकि आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की दुआ़ बिल यक़ीन क़बूल होती है। लेकिन जिस त़रह़ पाबन्दी के साथ ज़ोहर से पहले दो सुन्नतें पढ़ते अ़स्र से क़ब्ल की सुन्नतों पर इस त़रह़ हमेशगी इख़्तियार नहीं फ़रमाई।

(4).....मग़रिब की सुन्नतें :

येह फ़र्ज़ नमाज़ के बा'द दो रक्अ़तें हैं इन के मुतअ़ल्लिक़ रिवायत में इख़्तिलाफ़ नहीं। अलबत्ता नमाज़े मग़रिब से पहले या'नी अज़ान और इक़ामत के दरमियान दो रक्अ़तें जल्दी जल्दी पढ़ने के बारे में सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْھِمْ اَجْمَعِیْن की एक जमाअ़त जैसे हज़रते सय्यिदुना उबय्य बिन का'ब, हज़रते सय्यिदुना उ़बादा बिन सामित, हज़रते सय्यिदुना अबू ज़र और हज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन षाबित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم वग़ैरा से रिवायत मन्क़ूल है। चुनान्चे,

---

1 ...**अह़नाफ़ के नज़दीक :** अ़स्र का वक़्त (किसी चीज़ के) सायए अस्ली के इलावा दो मिष्ल साया होने पर शुरूअ़ होता है। (مختصر القدوری،ص۳۴،۳۵)

2 ......سنن ابی داود، کتاب التطوع، باب الصلاۃ قبل العصر، الحدیث:۱۲۷۱، ج۲، ص۳۵، عن ابن عمر۔

हज़रते सय्यिदुना उबादा बिन सामित या कोई और सहाबी رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنۡہ फ़रमाते हैं : “जब मुअज़्ज़िन मग़रिब की अज़ान देता तो सहाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہِمۡ اَجۡمَعِیۡن दो सुतूनों की तरफ़ जल्दी जल्दी जाते और दो रक्अ़त नमाज़ पढ़ते ।”(1)

बा’ज़ सहाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہِمۡ اَجۡمَعِیۡن फ़रमाते हैं : “हम मग़रिब से पहले दो रक्अ़त नमाज़ अदा करते ह़त्ताकि दाख़िल होने वाला समझता कि हम मग़रिब की नमाज़ पढ़ चुके हैं तो वोह पूछता क्या तुम मग़रिब की नमाज़ पढ़ चुके हो ?”(2)

येह इस आ़म फ़रमाने मुस्त़फ़ा के तह़त दाख़िल है कि “दो अज़ानों (या’नी अज़ान व इक़ामत) के दरमियान नमाज़ है जो चाहे पढ़े ।”(3) (4)

हज़रते सय्यिदुना इमाम अह़मद बिन ह़म्बल عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡاَوَّل येह दो रक्अ़तें पढ़ा करते थे। लोगों के ए’तिराज़ करने पर छोड़ दीं वजह पूछी गई तो फ़रमाया : “मैं ने देखा कि लोग नहीं पढ़ते इस लिये मैं ने भी तर्क कर दीं ।” आप رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ फ़रमाते हैं : “अगर कोई शख़्स येह दो रक्अ़तें घर में पढ़े या ऐसी जगह पढ़े जहां लोगों की नज़र न पड़े तो बेहतर है ।”(5)

इब्तिदाए वक़्ते मग़रिब :

ऐसी हमवार ज़मीनें जो पहाड़ों के पीछे नहीं छुपी होतीं उन में मग़रिब का वक़्त सूरज के निगाहों से ग़ाइब होने के बा’द शुरूअ़ होता है अगर वोह मग़रिब की तरफ़ से पहाड़ों के पीछे छुपी हों तो तवक़्क़ुफ़ किया जाए यहां तक कि मशरिक़ की जानिब से अंधेरा आता दिखाई दे कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब, ह़बीबे लबीब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : “जब रात उधर से आ जाए और दिन वहां से चला जाए तो रोज़ादार रोज़ा इफ़्त़ार कर ले ।”(6)

---

1 ......صحیح مسلم، کتاب صلاۃ المسافرین وقصرھا، باب استحباب رکعتین......الخ، الحدیث : ۸۳۷، ص۴۱۸، عن انس بن مالک

2 ......المرجع السابق، الحدیث۸۳۷، ص۴۱۸، مفهومًا۔

3 ......صحیح مسلم، کتاب صلاۃ المسافرین وقصرھا، باب بین کل اذانین صلاۃ، الحدیث : ۸۳۸، ص۴۱۸۔

4 ....**अह़नाफ़ के नज़दीक :** ग़ुरूबे आफ़्ताब से फ़र्ज़े मग़रिब तक नफ़्ल नमाज़ पढ़ना मन्अ़ है ।
(فتاوٰی عالمگیری، ج۱، ص۵۳)

5 ......قوت القلوب، الفصل السادس والثلاثون فی فضائل اھل السنة......الخ، ج۲، ص۲۴۸۔

6 ......صحیح مسلم، کتاب الصیام، باب بیان وقت انقضاء الصوم وخروج النهار، الحدیث : ۱۱۰۰، ۱۱۰۱، ص۵۵۴۔

मग़रिब की नमाज़ ख़ुसूसन जल्दी जल्दी पढ़ना पसन्दीदा है अगर इसे शफ़क़े अह़मर (सुर्ख़ी) ग़ाइब होने से पहले जल्दी जल्दी पढ़ ले तो अदा होगी लेकिन (इतनी ताख़ीर) मकरूह है[1] कि अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से एक बार मग़रिब की नमाज़ में इतनी ताख़ीर हो गई कि एक सितारा निकल आया तो आप ने एक ग़ुलाम आज़ाद किया और ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से इतनी ताख़ीर हो गई कि दो सितारे निकल आए तो उन्हों ने दो ग़ुलाम आज़ाद किये।

(5).....इशा की सुन्नतें :

येह फ़र्ज़ नमाज़ के बा'द चार रक्अ़तें हैं। उम्मुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा त़य्यिबा त़ाहिरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं : "मेरे सरताज, साह़िबे मे'राज صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم इशा की नमाज़ के बा'द चार रक्आ़त पढ़ते फिर आराम फ़रमाते।"[2]

बा'ज़ उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰہُ السَّلَام ने (मज़्कूरा) अह़ादीष के मजमूए़ से फ़र्ज़ों की ता'दाद के मुत़ाबिक़ 17 सुन्नतों को इख़्तियार फ़रमाया : "दो रक्अ़तें फ़ज्र से पहले, चार ज़ोहर से पहले और दो बा'द, चार अ़स्र से पहले, दो मग़रिब के बा'द और इशा के बा'द तीन वित्र।"[3]

जब आप इस सिलसिले में वारिद रिवायात की पहचान ह़ासिल कर चुके तो इन की ता'दाद मुअ़य्यन करने का क्या मा'ना ह़ालांकि ह़ुज़ूरे अन्वर, शाफ़ेए़ मह़शर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "नमाज़ जो मुक़र्रर की गई इस में भलाई ही भलाई है तो जो चाहे ज़ियादा पढ़े और जो चाहे कम पढ़े।"[4] लिहाज़ा राहे आख़िरत का हर मुसाफ़िर नमाज़ों में से उसी क़दर इख़्तियार करता है जिस क़दर वोह भलाई में रग़बत रखता है। हमारी ज़िक्र कर्दा तफ़्सील से वाज़ेह़ हुवा कि बा'ज़ नवाफ़िल की दीगर बा'ज़ से ज़ियादा ताकीद है और मुअक्कद अ़मल को

1.....**अह़नाफ़ के नज़दीक :** वक़्ते मग़रिब ग़ुरूबे आफ़्ताब से ग़ुरूबे शफ़क़ तक है। शफ़क़ हमारे मज़्हब में उस सपेदी का नाम है, जो जानिबे मग़रिब में सुर्ख़ी डूबने के बा'द जुनूबन शुमालन सुब्ह़े सादिक़ की त़रह़ फैली हुई रहती है। (बहारे शरीअ़त, जि. 1 स. 450-451)

2.....سنن ابی داود، کتاب التطوع، باب الصلاۃ بعد العشاء، الحدیث:۱۳۰۳، ج۲، ص۴۲، باختصارٍ۔

3.....سنن النسائی، کتاب قیام اللیل وتطوع النھار، باب کیف الوتر بثلاث؟، الحدیث:۱۶۹۴، ص۲۹۳،۲۹۴، مفھومًا۔

المسندللامام احمد بن حنبل، مسند السیدۃ عائشۃ رضی اللّٰہ عنھا، الحدیث:۲۵۲۷۸، ج۹، ص۴۹۸، مفھومًا۔

4.....المسندللامام احمد بن حنبل،مسند الانصار،حدیث ابی ذرالغفاری، الحدیث:۲۱۶۰۲، ج۸، ص۱۳۰،بتقدمٍ وتاخرٍ۔

तर्क करना नामुनासिब है ख़ुसूसन इस सूरत में कि फ़राइज़ की तक्मील नवाफ़िल के ज़रीए होती है तो जो कषरत से नवाफ़िल न पढ़े तो क़रीब है कि उस के फ़राइज़ पूरे न हों और उन के नुक़्सान के तदारुक की भी कोई सूरत न हो।

(6)....नमाज़े वित्र :

हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं : "मक्की मदनी सरकार صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم इशा के बा'द तीन रक्आत वित्र पढ़ते। पहली रक्अत में "سَبِّحِ اسْمَ رَبِّكَ الْاَعْلَى" दूसरी में "قُلْ يَاۤ اَيُّهَا الْكٰفِرُوْنَ" और तीसरी में "قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ" की तिलावत फ़रमाते।"(1)

हदीषे पाक में है कि "मक्की मदनी मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم वित्र के बा'द दो रक्अतें बैठ कर अदा करते और कुछ हिस्सा चार ज़ानू पढ़ते थे।"(2)

बा'ज़ अहादीषे मुबारका में है कि "जब बिस्तर पर तशरीफ़ ले जाने का इरादा फ़रमाते तो घुटनों के बल इस की तरफ़ बढ़ते और सोने से पहले इस पर दो रक्अतें अदा फ़रमाते और इन में "سورۂ زلزال" और "سورۂ تکاثر" पढ़ते।"(3)

एक रिवायत में है कि "سورۂ تکاثر" की जगह "سورۂ کافرون" पढ़ते।(4)

वित्र मौसूलन या'नी एक सलाम के साथ और मफ़्सूलन या'नी दो सलामों के साथ भी जाइज़ है।(5)

---

1 ......سنن ابن ماجه، کتاب الصلاة، باب ماجاء فیما یقرا فی الوتر، الحدیث:۱۱۷۲، ج۲، ص۴۷، ملخصًا۔

2 ......صحیح مسلم، کتاب صلاة المسافرین، وقصرها، باب صلاة اللیل......الخ، الحدیث:۷۳۸، ص۳۷۲۔

3 ......حاشیة اعانة الطالبین، فصل فی صلاة النفل، ج۱، ص۴۳۱۔

قوت القلوب، الفصل السادس والثلاثون فی فضائل اهل السنة......الخ،ج ۲، ص۲۴۷، دون"یقرء"۔

4 ......السنن الکبری للبیهقی، کتاب الصلاة، باب فی الرکعتین بعد الوتر،ج۳، ص۴۸۔

حاشیة اعانة الطالبین، فصل فی صلاة النفل،ج ۱، ص۴۳۱۔

5 ....**अह़नाफ़ के नज़्दीक :** नमाज़े वित्र वाजिब है और नमाज़े वित्र तीन रक्अत है और इस में क़ा'दए ऊला वाजिब है और क़ा'दए ऊला में सिर्फ़ अत्तहिय्यात पढ़ कर खड़ा हो जाए, न दुरूद पढ़े न सलाम फेरे जैसे (नमाज़े) मग़रिब में करते हैं इसी त़रह़ करे और अगर क़ा'दए ऊला भूल कर खड़ा हो गया तो लौटने की इजाज़त नहीं बल्कि सजदए सह्व करे। वित्र की तीनों रक्अतों में मुत़लक़न क़िराअत फ़र्ज़ है और हर रक्अत में बा'दे फ़ातिहा सूरत मिलाना वाजिब। (माख़ूज़ अज़ : बहारे शरीअ़त, जि. 1 स. 653-654)

नीज़ हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم एक, तीन, पांच[1] और इसी त़रह़ ग्यारह रक्आ़त से वित्र बनाते थे ।[2] तेरह रक्अ़तों वाली रिवायत में इज़्तिराब है ।[3] एक ग़ैर मा'रूफ़ रिवायत में **17** रक्आ़त वित्र का ज़िक्र है ।[4]

तमाम रक्अ़तें जिन्हें हम ने वित्र का नाम दिया है येह हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की शब की नमाज़ या'नी तहज्जुद थी और रात को तहज्जुद पढ़ना सुन्नते मुअक्कदा है ।

अ़न क़रीब किताबुल अवराद (या'नी वज़ाइफ़ के बयान) में इस का ज़िक्र आएगा ।

वित्र कितनी रक्अ़त पढ़ना अफ़्ज़ल है ?

वित्र की फ़ज़ीलत में इख़्तिलाफ़ है :

(1)....एक रक्अ़त वित्र पढ़ना अफ़्ज़ल है क्यूंकि सह़ीह़ त़ौर पर षाबित है कि मदीने के सुल्त़ान, रह़मते आ़लमिय्यान صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم एक रक्अ़त वित्र पर हमेशगी इख़्तियार फ़रमाते थे ।

(2)....(वित्र तीन रक्अ़त) मिला कर पढ़ना अफ़्ज़ल है ताकि इख़्तिलाफ़ का शुबा न रहे ख़ुसूसन जब इमाम पढ़ा रहा हो क्यूंकि बा'ज़ अवक़ात इस की इक़्तिदा में ऐसा शख़्स भी होता है जो एक रक्अ़त नमाज़ का क़ाइल नहीं होता (मषलन कोई ह़नफ़ी मुक़्तदी हो) । अगर मिला कर पढ़े तो तमाम से वित्र की निय्यत करे । अगर इशा की दो सुन्नतों या फ़र्ज़ों के बा'द एक रक्अ़त वित्र की निय्यत से पढ़े तो येह भी दुरुस्त है । क्यूंकि नमाज़े वित्र में शर्त़ येह है कि वोह त़ाक़ हो और ग़ैर को भी त़ाक़ बना दे जैसे पहले गुज़रा कि इस नमाज़ ने फ़र्ज़ नमाज़ को वित्र बना दिया ।

इशा से क़ब्ल वित्र पढ़ना दुरुस्त नहीं या'नी वित्र की फ़ज़ीलत न पाएगा जो उस के लिये सुर्ख़ ऊंटों से बेहतर है । जैसा कि ह़दीष में वारिद है ।[5] वरना जब भी एक रक्अ़त पढ़े दुरुस्त है (इन्दश्शवाफ़ेअ़) । इशा से पहले सह़ीह़ न होने की वजह येह है कि येह अ़मलन इजमाए उम्मत के ख़िलाफ़ है । नीज़ इस से पहले कोई नमाज़ नहीं जो इस के साथ वित्र बन सके ।

1......صحیح مسلم، کتاب صلاۃ المسافرین وقصرھا، باب صلاۃ اللیل......الخ، الحدیث:۷۳۶، ص۳۷۱۔
سنن النسائی، کتاب قیام اللیل وتطوع النھار، باب کیف الوتر بثلاث؟، الحدیث:۱۶۹۴، ص۲۹۴۔
صحیح مسلم، کتاب صلاۃ المسافرین وقصرھا، باب صلاۃ اللیل......الخ، الحدیث:۷۳۷، ص۳۷۱۔

2......صحیح مسلم، کتاب صلاۃ المسافرین وقصرھا، باب جامع صلاۃ اللیل......الخ، الحدیث:۷۴۶، ص۳۷۵۔
سنن ابی داود، کتاب التطوع، باب فی صلاۃ اللیل، الحدیث:۱۳۶۲، ج۲، ص۶۶۔

3......سنن ابی داود، کتاب التطوع، باب فی صلاۃ اللیل، الحدیث:۱۳۶۲، ج۲، ص۶۶۔

4......الزھد لابن المبارک، الجزء العاشر، الحدیث:۱۲۷۳، ص۴۵۱۔

5......سنن ابی داود، کتاب الوتر، باب استحباب الوتر، الحدیث: ۱۴۱۸، ج۲، ص۸۹۔

अगर तीन वित्रों को अ़लाहि़दा अ़लाहि़दा पढ़े तो दो रक्अ़तों की निय्यत में तअम्मुल है क्यूंकि अगर इस से वोह तहज्जुद या इ़शा की सुन्नतों की निय्यत करे तो वोह वित्र न होंगे और अगर वित्रों की निय्यत करे तो वोह ज़ाती तौ़र पर वित्र नहीं कि वित्र तो उस के बा'द हैं। ज़ियादा ज़ाहिर येह है कि वोह वित्र की निय्यत करे जैसा कि मुत्तसिलन तीन रक्अ़त में वित्र की निय्यत करता है।

वित्र के मआ़नी :

वित्र के दो मआ़नी हैं : एक येह कि वोह फ़ी नफ़्सिही वित्र हैं और दूसरा येह कि इसे बा'द वाली रक्अ़त से मिला कर वित्र बना दिया जाए और तीन का मजमूआ़ वित्र बन जाए। तीन रक्अ़तों में से दो रक्अ़तों का वित्र होना तीसरी रक्अ़त पर मौकूफ़ है। अगर इस का अ़ज़्म हो कि तीसरी रक्अ़त के साथ वित्र बना लेगा तो इन दोनों से वित्र की निय्यत करे कि तीसरी रक्अ़त **बि नफ़्सिही** वित्र है और ग़ैर को वित्र बनाने वाली है। दो रक्अ़तें न तो बज़ाते खुद वित्र हैं और न ही किसी और को वित्र बनाती हैं लेकिन दूसरी नमाज़ के साथ वित्र बन जाती हैं। नमाज़े वित्र रात की नमाज़ के आख़िर में होनी चाहिये यूं येह तहज्जुद के बा'द वाके़अ़ होगी।

नमाज़े वित्र तहज्जुद के फ़ज़ाइल और इन दोनों के दरमियान तरतीब का त़रीक़ए कार اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ **किताबे तरतीबुल अवराद** (वज़ाइफ़ की तरतीब के बयान) में आएगा।

(7)....नमाज़े चाश्त :

नमाज़े चाश्त पर हमेशगी इख़्तियार करना अच्छा और बाइ़से फ़ज़ीलत है। इस की ज़ियादा से ज़ियादा आठ रक्अ़तें हैं। अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم की बहन ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे हानी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से मरवी है कि "हु़ज़ूरे अन्वर, शाफ़ेए़ मह़शर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने चाश्त की आठ रक्आ़त पढ़ीं, इन्हें निहायत त़वील और उ़म्दगी से पढ़ा।"[1] येह ता'दाद किसी और सह़ाबी ने नक़्ल नहीं की बल्कि उम्मुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा त़य्यिबा त़ाहिरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं कि ताजदारे अम्बिया, मह़बूबे किब्रिया صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم चाश्त की चार रक्आ़त पढ़ते थे और मज़ीद जितनी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ चाहता पढ़ते।[2] ज़ियादती की कोई ह़द नहीं या'नी चार रक्आ़त पर हमेशगी इख़्तियार फरमाते थे इस से कम न पढ़ते, अलबत्ता कभी ज़ियादा (भी) पढ़ लेते थे।

1 ......صحیح مسلم، کتاب الحیض، باب تستر المغتسل بثوب ونحو، الحدیث:۳۳۶،ص۱۸۶،دون"اطالعن وحسنھن"۔
قوت القلوب، الفصل السادس والثلاثون فی فضائل اھل السنة......الخ،ج۲، ص۲۴۶۔

2 ......صحیح مسلم، کتاب صلاۃ المسافرین وقصرھا، باب استحباب صلاۃ الضحی......الخ، الحدیث:۷۱۹، ص۳۶۲۔

एक रिवायत में है कि हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم चाश्त की छे रक्अ़तें अदा फ़रमाते थे ।[1]

चाश्त का वक़्त :

जहां तक इस के वक़्त का तअ़ल्लुक़ है तो अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَهُ الْکَرِیْم से मरवी है कि हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم दो वक़्तों में चाश्त की छे रक्अ़तें पढ़ते थे : (1)....जब सूरज रोशन और बुलन्द हो जाता तो दो रक्अ़तें पढ़ लेते। येह दिन के वज़ाइफ़ में से दूसरे वज़ीफ़े का पहला ह़िस्सा है जैसा कि अ़न क़रीब आएगा । (2).....जब सूरज मशरिक़ी जानिब आस्मान के चौथे ह़िस्से में फैल जाता तो चार रक्अ़त पढ़ते ।[2]

पहली (दो रक्अ़त) उस वक़्त पढ़ते जब सूरज निस्फ़ नेज़ा बुलन्द हो जाता और बाक़ी रक्आ़त दिन का चौथाई ह़िस्सा गुज़र जाने पर पढ़ते जो नमाज़े अ़स्र का मुक़ाबिल वक़्त होता क्यूंकि अ़स्र का वक़्त वोह है कि जब दिन का चौथाई ह़िस्सा बाक़ी रहे। ज़ोहर का वक़्त निस्फ़ दिन से शुरूअ़ होता है। चाश्त का वक़्त तुलूए़ आफ़्ताब और ज़वाल के निस्फ़ में होता है जैसा कि अ़स्र का वक़्त ज़वाल और ग़ुरूबे आफ़्ताब के निस्फ़ में होता है। येह तमाम अवक़ात में अफ़्ज़ल वक़्त है। अल ग़रज़ सूरज बुलन्द होने से ज़वाल से पहले तक चाश्त का वक़्त है।

(8).....सलातुल अव्वाबीन :

येह नमाज़ भी सुन्नते मुअक्कदा है (इन्दश्शवाफ़ेअ़)। इस की छे रक्आ़त मन्क़ूल हैं।[3] इस नमाज़ की बहुत ज़ियादा फ़ज़ीलत है। फ़रमाने बारी तआ़ला :

تَتَجَافٰی جُنُوۡبُهُمۡ عَنِ الۡمَضَاجِعِ

(پ ۲۱، السجدۃ:۱۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *उन की करवटें जुदा होती हैं ख़्वाब गाहों से।*

मन्क़ूल है कि ''इस फ़रमाने आ़लीशान से येही (या'नी सलातुल अव्वाबीन) मुराद है। नीज़ मरवी है कि हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया :

---

1 ......المعجم الکبیر، الحدیث:۱۰۶۳، ج۲۴، ص۴۳۵۔

2 ......سنن النسائی، کتاب الامامۃ، باب الصلاۃ قبل العصر......الخ، الحدیث:۸۷۲، ص۱۵۲، مفهومًا۔

3 ......المعجم الصغیر، باب المیم، ج۲، ص۴۸۔

"जिस ने मग़रिब व इशा के दरमियान नमाज़ पढ़ी तो येह अव्वाबीन की नमाज़ है।"(1)

सलातुल अव्वाबीन पढ़ने की फ़ज़ीलत :

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब, ह़बीबे लबीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जो शख़्स खुद को मग़रिब व इशा के दरमियान मस्जिद में रोके रखे, नमाज़ व तिलावते कुरआन के सिवा कोई गुफ़्त्गू न करे तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ज़िम्मए करम पर है कि उस के लिये जन्नत में दो ऐसे मह़ल बनाए कि हर मह़ल की लम्बाई 100 साल की मसाफ़त होगी और उस के लिये इन दोनों के दरमियान ऐसा दरख़्त लगाए कि अगर तमाम अहले ज़मीन इस में घूमें तो सब के लिये काफ़ी हो।"(2)

बाक़ी फ़ज़ाइल اِنْ شَآءَاللهعَزَّوَجَلَّ किताबुल अवराद के बयान में आएंगे।

﴾2﴿..... हफ़्तावार शबो रोज़ के नवाफ़िल :

येह हफ़्ते के तमाम दिनों और रातों की नमाजें हैं। रही **दिन की नमाज़ें** तो हम हफ़्ते के दिन से शुरूअ़ करते हैं :

इतवार के नवाफ़िल

जन्नत में ख़ालिस कस्तूरी का शहर :

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है कि मक्की मदनी सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जिस ने इतवार के दिन चार रक्अ़त नमाज़ पढ़ी यूं कि हर रक्अ़त में सूरए फ़ातिह़ा और सूरए बक़रह की आख़िरी आयात (امن الرسول से आख़िर तक)" पढ़ीं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के लिये तमाम नसरानी मर्दों और औ़रतों की ता'दाद के बराबर नेकियां लिखेगा। उसे एक नबी के षवाब के बराबर षवाब अ़ता फ़रमाएगा। उस के लिये एक ह़ज व उ़मरे का षवाब लिखेगा। हर रक्अ़त के बदले हज़ार नमाज़ों का षवाब अ़ता फ़माएगा और उसे हर ह़र्फ़ के बदले जन्नत में ख़ालिस कस्तूरी का शहर अ़ता फ़रमाएगा।(3) (4)

---

1 ......الزهد لابن المبارک، الجزء العاشر، الحديث: ١٢٥٩، ص٤٤٥۔

2 ......قوت القلوب، الفصل الحادی عشرفيه كتاب فضل الصلاة......الخ،ج١، ص٥٨۔

3 .....इस ह़दीष को उ़-लमा ने मौज़ूअ़ क़रार दिया है लिहाज़ा इसे बयान न किया जाए।

4 ......قوت القلوب، الفصل الحادی عشرفيه كتاب فضل الصلاة......الخ،

चार रक्अ़त पढ़ने की फ़ज़ीलत :

अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم से मरवी है कि हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक صَلَّی اللّٰه تعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "इतवार के दिन कषरते नमाज़ से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की वह्‌दानिय्यत बयान करो। बेशक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ यक्ता है। उस का कोई शरीक नहीं। पस जिस ने इतवार के दिन नमाज़े ज़ोहर के फ़र्ज़ व सुन्नतों के बा'द चार रक्अ़त नमाज़ पढ़ी, पहली रक्अ़त में **सूरए फ़ातिह़ा** और **तनज़ीलुस्सजदह** पढ़ी और दूसरी में **सूरए फ़ातिह़ा** और **सूरए मुल्क** पढ़ी, फिर **तशह्हुद** पढ़ कर सलाम फेरा फिर आख़िरी दो रक्अ़तें पढ़ने के लिये खड़ा हो गया और इन में **सूरए फ़ातिह़ा** और **सूरए जुमुअ़ह** की तिलावत की और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से अपनी ह़ाजत त़लब की तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ज़िम्मए करम पर है कि उस की ह़ाजत पूरी फ़रमा दे।"[1]

पीर के नवाफ़िल

तमाम गुनाह मुआ़फ़ :

ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللّٰهُ تعَالٰی عَنْهُ से मरवी है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए गुयूब صَلَّی اللّٰه تعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जो शख़्स बरोज़ पीर सूरज बुलन्द होते वक़्त दो रक्अ़तें अदा करे हर रक्अ़त में एक बार सूरए फ़ातिह़ा, एक बार आयतुल कुरसी, एक बार सूरए इख़्लास और एक एक बार **मुअ़व्वज़तैन** (या'नी सूरए फ़लक़ और सूरए नास) पढ़े फिर सलाम फेर कर दस बार इस्तिग़्फ़ार करे और दस बार मुझ पर दुरूदे पाक पढ़े तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के तमाम गुनाह मुआ़फ़ फ़रमा देगा।"[2]

फ़िरिश्ते इस्तिक़बाल करेंगे :

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰهُ تعَالٰی عَنْهُ से मरवी है कि सरकारे मक्कए मुकर्रमा, सरदारे मदीनए मुनव्वरा صَلَّی اللّٰه تعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जो शख़्स बरोज़ पीर बारह रक्अ़तें पढ़े, हर रक्अ़त में एक बार सूरए फ़ातिह़ा और आयतुल कुरसी पढ़े, सलाम फेरने के बा'द बारह बार सूरए इख़्लास पढ़े और बारह बार इस्तिग़्फ़ार करे तो बरोज़े क़ियामत निदा

1 ......قوت القلوب، الفصل الحادی عشرفیه کتاب فی فضل الصلاة......الخ، ج ۱، ص ۵۲-۵۳۔

2 ......قوت القلوب، الفصل الحادی عشرفیه کتاب فی فضل الصلاة......الخ، ج ۱، ص ۵۳۔

दी जाएगी : “फुलां बिन फुलां कहां है ? वोह खड़ा हो और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से अपना षवाब ले ले।” चुनान्चे, बत़ौरे षवाब उसे पहले हज़ार हुल्ले और ताज अ़त़ा किये जाएंगे और कहा जाएगा : “जन्नत में दाखि़ल हो जा।” पस एक लाख फ़िरिश्ते एक लाख तोह़फ़ों से उस का इस्तिक़्बाल करेंगे और उसे तोह़फ़े पेश करेंगे ह़त्ताकि वोह नूर से बने हुए हज़ार मह़ल्लात पर जाएगा जो जगमगा रहे होंगे।(1)

मंगल के नवाफ़िल

शहादत की मौत :

ह़ज़रते सय्यिदुना यज़ीद रक़्क़ाशी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत करते हैं कि रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : “जिस ने मंगल के दिन निस्फ़ दिन के वक़्त दस रक्अ़त नमाज़ पढ़ी।” एक रिवायत में है कि “सूरज बुलन्द होते वक़्त दस रक्अ़त नमाज़ पढ़ी हर रक्अ़त में एक बार सूरए फ़ातिह़ा, एक बार आयतुल कुरसी और तीन बार सूरए इख़्लास पढ़ी तो 70 दिन तक उस की कोई बुराई न लिखी जाएगी अगर 70 दिन के अन्दर मर गया तो शहादत की मौत मरेगा और उस के 70 साल के गुनाह मुआ़फ़ कर दिये जाएंगे।”(2)

बुध के नवाफ़िल

अ़ज़ाबे क़ब्र और क़ियामत की सख़्तियों से नजात :

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू इदरीस ख़ौलानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّوْرَانِی ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत करते हैं कि मुस्त़फ़ा जाने रह़मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जिस ने बुध के दिन सूरज बुलन्द होते वक़्त बारह रक्अ़त नमाज़ अदा की हर रक्अ़त में एक बार सूरए फ़ातिह़ा, एक बार आयतुल कुरसी, तीन बार सूरए इख़्लास और तीन तीन बार मुअ़व्वज़तैन (या'नी सूरए फ़लक़ और सूरए नास) पढ़ी तो अ़र्श के पास एक मुनादी निदा देता है : “ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के बन्दे ! नए सिरे से अ़मल कर तेरे गुज़श्ता गुनाह बख़्श दिये गए। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने तुझ से क़ब्र का अ़ज़ाब, इस की तंगी व तारीकी और क़ियामत की सख़्तियों को उठा लिया।” उस दिन एक नबी के अ़मल के बराबर उस का अ़मल बुलन्द होगा।(3)

1 ......قوت القلوب، الفصل الحادی عشرفیه کتاب فـ ل الصلاة......الخ، ج ۱، ص ۵۳، "یشیعونه" بدله "یسعون به"۔

2 ......قوت القلوب، الفصل الحادی عشرفیه کتاب فـ ل الصلاة......الخ، ج ۱، ص ۵۳۔

3 ......قوت القلوب، الفصل الحادی عشرفیه کتاب فـ ل الصلاة......الخ، ج ۱، ص ۵۳، لیس فیه ذکر آیة الکرسی۔

जुमा'रात के नवाफ़िल

मोअमिनीन व मुतवक्किलीन की ता'दाद के बराबर नेकियां :

हज़रते सय्यिदुना इकरमा رَحْمَةُ اللّٰهِ تعالٰی عَلَيْه हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تعالٰی عَنْهُمَا से रिवायत करते हैं कि मदीने के सुल्त़ान, रह़मते आ़लमिय्यान صَلَّى الله تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जिस ने जुमा'रात के दिन ज़ोहर और अ़स्र के दरमियान दो रक्अ़तें पढ़ीं, पहली रक्अ़त में एक बार सूरए फ़ातिह़ा, 100 बार आयतुल कुरसी और दूसरी रक्अ़त में एक बार सूरए फ़ातिह़ा, 100 बार सूरए इख़्लास पढ़ी और 100 बार मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ा तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे रजब, शा'बान और रमज़ान के रोज़े रखने वाले का षवाब अ़त़ा फ़रमाएगा और उस के लिये ह़ज करने वाले की मिष्ल षवाब है। नीज़ उस के लिये मोअमिनीन व मुतवक्किलीन की ता'दाद के बराबर नेकियां लिखी जाएंगी।"(1)

जुमुआ़ के नवाफ़िल

नेकियां ही नेकियां :

अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تعالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم से मरवी है कि आक़ाए दो आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّى الله تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जुमुआ़ का पूरा दिन नमाज़ के लिये है। जब सूरज क़रार पकड़ ले और नेज़े की मिक़्दार या इस से ज़ियादा बुलन्द हो जाए तो कोई बन्दए मोमिन अच्छी त़रह़ वुज़ू करे फिर ह़ालते ईमान और षवाब की उम्मीद पर दो रक्अ़त नमाज़े चाश्त पढ़े तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के लिये 200 नेकियां लिखता, उस के 200 गुनाह मिटाता है और जो चार रक्अ़तें पढ़े तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जन्नत में उस के 400 दर्जात बुलन्द फ़रमाता है और जो आठ रक्अ़तें पढ़े तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जन्नत में उस के 800 दर्जात बुलन्द फ़रमाता और उस के तमाम गुनाह मुआ़फ़ फ़रमा देता है और जो बारह रक्अ़तें पढ़े तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के लिये 2200 नेकियां लिखता, 2200 गुनाह मिटाता है और जन्नत में उस के 2200 दर्जात बुलन्द फ़रमाता है।"(2)

---

1 ......قوت القلوب، الفصل الحادی عشرفيه كتاب فـل الصلاة......الخ، ج ١، ص ٥٣، بتغيرٍ۔

2 ......قوت القلوب، الفصل الحادی عشرفيه كتاب فـل الصلاة......الخ، ج ١، ص ٥٣، بتغيرٍ۔

हज़रते सय्यिदुना नाफ़ेअ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत करते हैं कि हुज़ूर नबिय्ये अकरम, रसूले मोह़्तशम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जो जुमुआ़ के दिन जामेअ़ मस्जिद में दाख़िल हो और जुमुआ़ की नमाज़ से पहले चार रक्अ़त नमाज़ पढ़े हर रक्अ़त में सूरए फ़ातिह़ा और 50 बार सूरए इख़्लास पढ़े वोह मरने से पहले जन्नत में अपना ठिकाना देख लेगा या उसे दिखा दिया जाएगा।"[1]

हफ़्ते के नवाफ़िल

अ़र्शे इलाही के साए में अम्बिया व शुहदा عَلَیْہِمُ السَّلَام का साथ :

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि प्यारे आक़ा, मदीने वाले मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जो शख़्स हफ़्ते के दिन चार रक्अ़त नमाज़ पढ़े हर रक्अ़त में एक बार सूरए फ़ातिह़ा और तीन बार सूरए इख़्लास पढ़े, सलाम फेरने के बा'द आयतुल कुरसी पढ़े तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हर ह़र्फ़ के बदले उस के लिये एक ह़ज व उ़मरे का षवाब लिखता, हर ह़र्फ़ के बदले एक साल के रोज़ों और रात के क़ियाम का षवाब बढ़ाता, हर ह़र्फ़ के बदले एक शहीद का षवाब अ़त़ा फ़रमाता है और (बरोज़े क़ियामत) वोह अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ السَّلَام व शुहदाए उ़ज़्ज़ाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم के साथ अ़र्शे इलाही के साए में होगा।"[2]

हफ़्तावार शब के नवाफ़िल ।

शबे इतवार के नवाफ़िल

अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ السَّلَام के साथ जन्नत में दाख़िला :

हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जो शख़्स शबे इतवार बीस रक्अ़त नमाज़ पढ़े हर रक्अ़त में एक बार सूरए फ़ातिह़ा, 50 बार सूरए इख़्लास और एक एक बार मुअ़व्वज़तैन (सूरए फ़लक़ व नास) पढ़े फिर 100 बार इस्तिग़फ़ार करे फिर अपने लिये और अपने वालिदैन के लिये 100 बार मग़फ़िरत की दुआ़ मांगे, 100 बार दुरूदे पाक पढ़े, अपनी

---

1 ......قوت القلوب، الفصل الحادی عشرفیہ کتاب فی فضل الصلاۃ......الخ، ج ۱، ص ۵۴۔

2 ......المرجع السابق، ص ۵۵، "قل ھواللہ احد" بدلہ "قل یاایھاالکفرون"۔ ۱

ताक़त व कुव्वत से बराअत का इज़्हार करे और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की पनाह त़लब करे फिर कहे : मैं गवाही देता हूं कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई मा'बूद नहीं और मैं गवाही देता हूं कि ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام सफ़िय्युल्लाह हैं और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इन्हें अपने दस्ते कुदरत से बनाया है । ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام ख़लीलुल्लाह, ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام कलीमुल्लाह, ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام रूहुल्लाह और ह़ज़रते मुह़म्मद صَلَّى اللّٰه تعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ह़बीबुल्लाह हैं तो उस के लिये अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से अवलाद की दुआ मांगने और न मांगने वालों की ता'दाद के बराबर षवाब है । बरोजे़ क़ियामत अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे अम्न वालों के साथ उठाएगा और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ज़िम्मए करम पर है कि उसे अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام के साथ जन्नत में दाख़िल फ़रमाए ।(1)

शबे पीर के नवाफ़िल

सलातुल ह़ाजत पढ़ने की फ़ज़ीलत :

ह़ज़रते सय्यिदुना आ'मश رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَيْه ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِىَ اللّٰهُ تعَالٰی عَنْهُ से रिवायत करते हैं कि, ह़ुज़ूर नबिय्ये अकरम, रसूले मोह़तशम صَلَّى اللّٰه تعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जो पीर के दिन चार रक्अ़त नमाज़ पढ़े, पहली रक्अ़त में एक बार सूरए फ़ातिह़ा और 10 बार सूरए इख़्लास पढ़े, दूसरी रक्अ़त में एक बार सूरए फ़ातिह़ा और 20 बार सूरए इख़्लास पढ़े, तीसरी में एक बार सूरए फ़ातिह़ा और 30 बार सूरए इख़्लास पढ़े, चौथी में एक बार सूरए फ़ातिह़ा और 40 बार सूरए इख़्लास पढ़े फिर सलाम फेर कर 75 बार सूरए इख़्लास पढ़े फिर अपने और अपने वालिदैन के लिये 75 बार इस्तिग़फ़ार करे फिर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से अपनी ह़ाजत त़लब करे तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ज़िम्मए करम पर है कि उस की ह़ाजत पूरी फ़रमा दे ।"(2)

शबे मंगल के नवाफ़िल

जो शख़्स दो रक्अ़त नमाज़ पढ़े हर रक्अ़त में 15 बार सूरए फ़ातिह़ा, 15 बार सूरए इख़्लास और 15-15 बार मुअ़व्वज़तैन (या'नी सूरए फ़लक़ व नास) पढ़े और सलाम फेरने के बा'द 15 बार आयतुल कुरसी पढ़े और 15 बार अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से इस्तिग़फ़ार करे तो उस के लिये अ़ज़ीम षवाब और बड़ा अज्र है ।

---

1 ......قوت القلوب، الفصل الحادى عشرفيه كتاب فــل الصلاة......الخ، ج ١، ص ٥٥۔

2 ......قوت القلوب، الفصل الحادى عشرفيه كتاب فــل الصلاة......الخ، ج ١، ص ٥٥۔٥٦، بتغير۔

जहन्नम से आज़ादी :

अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से मरवी है कि हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जो शख़्स मंगल की रात दो रक्अ़त नमाज़ पढ़े, हर रक्अ़त में एक बार सूरए फ़ातिह़ा और सात बार सूरए क़द्र और सूरए इख़्लास पढ़े तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे जहन्नम की आग से आज़ाद फ़रमा देगा और बरोज़े क़ियामत येह नमाज़ उस के लिये जन्नत की त़रफ़ राहनुमा और दलील होगी।"(1)

शबे बुध के नवाफ़िल

4 लाख 90 हज़ार मलाइका का नुज़ूल :

शहज़ादिये कौनैन ह़ज़रते सय्यिदतुना फ़ाति़मा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا से मरवी है कि नानाए ह़सनैन, दुखी दिलों के चैन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जो शख़्स बुध की रात चार रक्अ़त नमाज़ पढ़े, पहली रक्अ़त में एक बार सूरए फ़ातिह़ा और 10 बार सूरए फ़लक़ पढ़े, दूसरी में एक बार सूरए फ़ातिह़ा और 10 बार सूरए नास पढ़े फिर सलाम के बा'द 10 बार इस्तिग़फ़ार करे और 10 बार मुझ पर दुरूदे पाक पढ़े तो हर आस्मान से 70 हज़ार फ़िरिश्ते नाज़िल होंगे जो क़ियामत तक उस का षवाब लिखते रहेंगे।"(2)

अहले ख़ाना के 10 अफ़राद की शफ़ाअ़त का ह़क़ :

एक रिवायत में है कि "जो (इस रात) 16 रक्अ़त नमाज़ पढ़े, सूरए फ़ातिह़ा के बा'द जितना चाहे (कुरआन) पढ़े और हर दो रक्अ़त के आख़िर में 30 बार आयतुल कुरसी पढ़े और पहली दो रक्अ़तों में 30 बार सूरए इख़्लास पढ़े तो वोह अपने घर वालों में से उन 10 अश्ख़ास की शफ़ाअ़त करेगा जिन पर जहन्नम वाजिब हो चुका होगा।"

70 साल के गुनाह मुआ़फ़ :

शहज़ादिये कौनैन ह़ज़रते सय्यिदतुना फ़ाति़मा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا से मरवी है कि सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जो शबे बुध छे रक्आ़त पढ़े, हर रक्अ़त में सूरए फ़ातिह़ा के बा'द येह आयत :

---

1 ......قوت القلوب، الفصل الحادی عشرفیہ کتاب فـل الصلاۃ......الخ، ج ۱، ص ۵۲، باختصارٍ۔

2 ......قوت القلوب، الفصل الحادی عشرفیہ کتاب فـل الصلاۃ......الخ، ج ۱، ص ۵۲، لیس فیہ ذکر الا ستغفار والتسلیم۔

قُلِ اللّٰهُمَّ مٰلِكَ الْمُلْكِ تُؤْتِی الْمُلْكَ مَنْ تَشَآءُ وَ تَنْزِعُ الْمُلْكَ مِمَّنْ تَشَآءُ٘ وَ تُعِزُّ مَنْ تَشَآءُ وَ تُذِلُّ مَنْ تَشَآءُ ؕ بِیَدِكَ الْخَیْرُ ؕ اِنَّكَ عَلٰی كُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ ﴿۲۶﴾ पढ़े, जब फ़ारिग़ हो तो यूं कहे : جَزَ اللّٰهُ مُحَمَّدًا عَنَّا مَا هُوَ اَهْلُهٗ या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमारी त़रफ़ से ह़ज़रते मुह़म्मद صَلَّى اللّٰه تعالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को उन की शायाने शान जज़ा अ़त़ा फ़रमाए। तो उस के 70 साल के गुनाह मुआ़फ़ कर दिये जाएंगे और उस के लिये जहन्नम से आज़ादी लिख दी जाएगी।"

शबे जुमा'रात के नवाफ़िल

शुहदा व सिद्दीक़ीन का मर्तबा :

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تعالٰی عَنْهُ से मरवी है कि हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰه تعالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जिस ने जुमा'रात की रात मग़रिब व इ़शा के दरमियान दो रक्अ़तें इस त़रह़ पढ़ीं कि हर रक्अ़त में सूरए फ़ातिह़ा और पांच बार आयतुल कुरसी, पांच बार सूरए इख़्लास और पांच-पांच बार मुअ़व्वज़तैन (या'नी सूरए फ़लक़ व नास) पढीं और सलाम के बा'द 15 बार इस्तिग़फ़ार किया और इस का षवाब अपने वालिदैन को पहुंचाया तो तह़क़ीक़ उस ने वालिदैन का ह़क़ अदा कर दिया अगर्चे उन का नाफ़रमान हो और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे शुहदा व सिद्दीक़ीन का मर्तबा अ़त़ा फ़रमाएगा।"(1)

शबे जुमुआ़ के नवाफ़िल

12 साल शबो रोज़ इ़बादत की मिष्ल :

ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह अन्सारी رَضِیَ اللّٰهُ تعالٰی عَنْهُ से मरवी है कि हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰه تعالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जो शख़्स शबे जुमुआ़ मग़रिब व इ़शा के दरमियान 12 रक्अ़तें पढ़े हर रक्अ़त में एक बार सूरए फ़ातिह़ा और 11 बार सूरए इख़्लास पढ़े तो गोया उस ने 12 साल **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इस त़रह़ इ़बादत की, कि दिन रोज़े में और रात क़ियाम में गुज़ारी।"(2)

---

1 ......قوت القلوب، الفصل الحادی عشرفیه کتاب فـ ـل الصلاة......الخ، ج ۱، ص ۵۶۔

2 ......قوت القلوب، الفصل الحادی عشرفیه کتاب فـ ـل الصلاة......الخ، ج ۱، ص ۵۔

शबे क़द्र की इबादत का षवाब :

हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जो शख़्स शबे जुमुआ़ इशा की नमाज़ बा जमाअ़त पढ़े और दो सुन्नतें अदा करने के बा'द 10 रक्अ़तें इस त़रह़ पढ़े कि हर रक्अ़त में एक बार सूरए फ़ातिह़ा, सूरए इख़्लास और आख़िरी मुअ़व्वज़तैन (सूरए फ़लक़ व नास) पढ़े फिर तीन रक्आ़त वित्र पढ़ कर दाएं पहलू पर क़िब्ला रुख़ हो कर सो जाए तो गोया उस ने शबे क़द्र इबादत में गुज़ारी।"[1]

सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "रोशन रात और चमकते दिन या'नी जुमुआ़ की रात और जुमुआ़ के दिन में मुझ पर कषरत से दुरूदे पाक पढ़ो।"[2]

शबे हफ़्ता के नवाफ़िल

हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब, ह़बीबे लबीब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जो शख़्स शबे हफ़्ता मग़रिब व इशा के दरमियान 12 रक्अ़तें पढ़े उस के लिये जन्नत में एक मह़ल बनाया जाएगा और गोया उस ने हर मोमिन व मोमिना पर सदक़ा किया और यहूदियों से बेज़ार हुवा और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ज़िम्मए करम पर है कि उस की मग़फ़िरत फ़रमा दे"[3]

﴾3﴿....सालाना नवाफ़िल :

येह चार नमाज़ें हैं : ईदैन, तरावीह़ और माहे रजब व शा'बान की नमाज़।

ईदैन की नमाज़ : सुन्नते मुअक्कदा[4] और दीन की निशानियों में से एक निशानी है। इस में सात बातों का ख़याल रखना ज़रूरी है :

(1).....तीन बार इस त़रह़ तक्बीर कहना :

اَللّٰہُ اَکْبَرُ اَللّٰہُ اَکْبَرُ اَللّٰہُ اَکْبَرُ کَبِیْرًا وَّالْحَمْدُ لِلّٰہِ کَثِیْرًا وَّسُبْحٰنَ اللّٰہِ بُکْرَۃً وَّاَصِیْلًا لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ وَحْدَہٗ لَا شَرِیْکَ لَہٗ مُخْلِصِیْنَ لَہُ الدِّیْنَ وَلَوْ کَرِہَ الْکٰفِرُوْنَ

*या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ सब से बड़ा है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ सब से बड़ा है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ सब से बड़ा है, उस की बहुत ज़ियादा ता'रीफ़ है, उस की सुब्ह़-शाम पाकी है, उस के सिवा कोई मा'बूद नहीं, वोह यक्ता है, उस का कोई शरीक नहीं, निरे उसी के हो जाओ, पड़े बुरा मानें काफ़िर।*

---

1 ......قوت القلوب، الفصل الحادی عشرفیہ کتاب فـ ـل الصلاۃ......الخ، ج ۱، ص ۵۷۔

2 ......المعجم الاوسط، الحدیث: ۲۴۱، ج ۱، ص ۸۴، باختصارٍ۔

3 ......قوت القلوب، الفصل الحادی عشرفیہ کتاب فـ ـل الصلاۃ......الخ، ج ۱، ص ۵۷۔

4 ....**अह़नाफ़ के नज़दीक :** ईदैन की नमाज़ वाजिब है मगर सब पर नहीं बल्कि उन्हीं पर जिन पर जुमुआ़ वाजिब है। (बहारे शरीअ़त, जि. 1 स.779)

ईदुल फ़ित्र की रात से शुरूअ़ कर के नमाज़े ईद तक कहता रहे और ईदुल अज़्ह़ा में यौमे अ़रफ़ा (9 ज़ुल ह़िज्जतिल ह़राम) की फ़ज्र से शुरूअ़ करे और 13 ज़ुल ह़िज्जतिल ह़राम के दिन के आख़िर तक पढ़े। येह कामिल तरीन अक़्वाल में से है। फ़र्ज़ नमाज़ों और नवाफ़िल[1] के बा'द तक्बीर कहे फ़राइज़ के बा'द कहने की ज़ियादा ताकीद है।[2]

(2).....ईद के दिन की सुब्ह़ ग़ुस्ल करना, ज़ीनत इख़्तियार करना और ख़ुश्बू लगाना जैसा कि जुमुआ़ के बयान में ज़िक्र हुवा, मर्दों के लिये इमामा और चादर अफ़्ज़ल है। बच्चे रेशमी कपड़ों से इजतिनाब करें और बूढ़ी औ़रतें ईद के लिये निकलें तो ज़ीनत इख़्तियार न करें।

(3).....एक रास्ते से जाना और दूसरे से वापस आना।[3] कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का येही त़रीक़ा था और आप जवान औ़रतों और पर्दादार ख़वातीन को भी निकलने की इजाज़त देते थे।[4] [5]

(4).....मक्कए मुकर्रमा और बैतुल मुक़द्दस के इलावा (नमाज़े ईद के लिये) सह़रा (या खुले मैदान) में जाना मुस्तह़ब है। अगर बारिश हो तो मस्जिद में नमाज़ पढ़ने में भी कोई ह़रज नहीं। दिन अब्र आलूद हो तो इमाम किसी शख़्स को नाइब बनाए जो कमज़ोरों को मस्जिद में नमाज़ पढ़ाए और ख़ुद क़वी लोगों के साथ बाहर जाए और (रास्ते में) तक्बीर कहते जाएं।

(5)....वक़्त का ख़याल रखना : ईद की नमाज़ का वक़्त तुलूए आफ़्ताब से ज़वाल तक है।

---

❶....**अह़नाफ़ के नज़दीक :** नफ़्ल व सुन्नत व वित्र के बा'द तक्बीर (तक्बीरे तशरीक़) वाजिब नहीं और जुमुआ़ के बा'द वाजिब है और नमाज़े ईद के बा'द भी कह ले। (बहारे शरीअ़त, जि. 1 स. 785)

❷....**अह़नाफ़ के नज़दीक :** नवीं ज़िल ह़िज्जा की फ़ज्र से तेरहवीं की अ़स्र तक हर नमाज़े फ़र्ज़ पंजगाना के बा'द जो जमाअ़ते मुस्तह़ब्बा के साथ अदा की गई, एक बार तक्बीर बुलन्द आवाज़ से कहना वाजिब है और तीन बार अफ़्ज़ल इसे तक्बीरे तशरीक़ कहते हैं, वोह येह है : اَللّٰہُ اَکْبَرُ اَللّٰہُ اَکْبَرُ لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ وَ اللّٰہُ اَکْبَرُ اَللّٰہُ اَکْبَرُ وَلِلّٰہِ الْحَمْدُ۔ तक्बीरे तशरीक़ सलाम फेरने के फ़ौरन बा'द वाजिब है। (बहारे शरीअ़त, जि. 1 स. 784)

❸......سنن الترمذی، کتاب العیدین، باب ما جاء فی خروج النبی صلی اللہ علیہ وسلم، الحدیث: ۵۴۱، ج۲، ص ۶۹۔

❹....**अह़नाफ़ के नज़दीक :** औ़रतों को किसी नमाज़ में जमाअ़त की ह़ाज़िरी जाइज़ नहीं, दिन की नमाज़ हो या रात की, जुमुआ़ हो या ईदैन, ख़्वाह वोह जवान हों या बुढ़ियां। (बहारे शरीअ़त, जि. 1 स. 584)

❺......صحیح مسلم، کتاب الجمعۃ، باب ذکر اباحۃ خروج النساء......الخ، الحدیث: ۸۹۰، ص ۴۴۰۔

क़ुरबानी का वक़्त :

क़ुरबानी के वक़्त की इब्तिदा दो ख़ुत़बों और दो रक्अ़तों जितनी देर के बा'द से ले कर तेरह ज़िल ह़िज्जा के आख़िर (या'नी ग़ुरूबे आफ़्ताब से पहले) तक है।[1]

क़ुरबानी की वजह से ईदुल अज़्ह़ा में जल्दी करना मुस्तह़ब है और ईदुल फ़ित्र में ताख़ीर मुस्तह़ब है ताकि पहले सदक़ए फ़ित्र तक़्सीम हो जाए, येही सुन्नत है।[2]

नमाज़े ईद का त़रीक़ा :

(6).....नमाज़े ईद के लिये जाते हुए लोग रास्ते में तक्बीर कहते हुए जाएं। जब इमाम ईदगाह पहुंचे तो न बैठे, न नफ़्ल पढ़े और लोग भी नफ़्ल न पढें फिर एक मुनादी ए'लान करे कि नमाज़ खड़ी होने वाली है। इमाम उन्हें दो रक्अ़तें पढ़ाए, पहली रक्अ़त में इमाम तक्बीरे तह़रीमा और तक्बीरे रुकूअ़ के इ़लावा सात तक्बीरें कहे और हर दो तक्बीरों के दरमियान येह तस्बीह़ पढ़े : "سُبْحٰنَ اللّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَلَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَر" तक्बीरे तह़रीमा के बा'द येह कहे : اِنِّیْ وَجَّهْتُ وَجْهِیَ لِلَّذِیْ فَطَرَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ (या'नी मैं ने अपना मुंह उस की त़रफ़ किया जिस ने आस्मान व ज़मीन बनाए) और आठवीं तक्बीर तक तअ़व्वुज़ (या'नी اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ) न पढ़े। पहली रक्अ़त में सूरए फ़ातिह़ा के बा'द सूरए قٓ और दूसरी में اِقْتَرَبَتِ السَّاعَةُ (सूरए क़मर) पढ़े। दूसरी रक्अ़त में क़ियाम और रुकूअ़ की तक्बीरों के इ़लावा ज़ाइद तक्बीरें पांच हैं, इस में भी हर दो तक्बीरों के दरमियान मज़्कूरा तस्बीह़ पढ़े। नमाज़ के बा'द इमाम दो ख़ुत़बे पढ़े इन के दरमियान कुछ देर बैठे। जिस की नमाज़े ईद फ़ौत हो जाए वोह इस की क़ज़ा करे।"[3]

---

❶.....**अह़नाफ़ के नज़्दीक :** क़ुरबानी का वक़्त दसवीं ज़िल ह़िज्जा के त़ुलूए़ सुब्ह़े सादिक़ से बारहवीं के ग़ुरूबे आफ़्ताब तक है। (बहारे शरीअ़त, जि. 3 स. 336)

❷......السنن الکبری للبیھقی، کتاب صلاۃ العیدین، باب الغدو الی العیدین، الحدیث: ۶۱۲۹، ج۳، ص ۳۹۹۔

❸.....**अह़नाफ़ के नज़्दीक :** इमाम ने नमाज़ पढ़ ली और कोई शख़्स बाक़ी रह गया ख़्वाह वोह शामिल ही न हुवा था या शामिल तो हुवा मगर उस की नमाज़ फ़ासिद हो गई तो अगर दूसरी जगह मिल जाए पढ़ ले वरना नहीं पढ़ सकता, हां बेहतर येह है कि येह शख़्स चार रक्अ़त चाश्त की नमाज़ पढ़े। (बहारे शरीअ़त, जि. 1 स. 783)

नोट : नमाज़े ईद का त़रीक़ए ह़नफ़ी की मा'लूमात के लिये बहारे शरीअ़त जिल्द अव्वल, ह़िस्सा चहारुम के सफ़ह़ा 781–782 का मुत़ालआ़ कीजिये !

कु़रबानी :

(7)......मेंढे की कुरबानी करना (सुन्नत है) कि रसूले करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने दो चितकुबरे मेंढ़ों की कुरबानी की और उन्हें अपने हाथ से ज़ब्ह़ किया और पढ़ा : بِسْمِ اللّٰهِ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ هٰذَا عَنِّى وَعَمَّنْ لَمْ يُضَحِّ مِنْ اُمَّتِى या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नाम से, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ सब से बड़ा है। येह कुरबानी मेरी त़रफ़ से और मेरी उम्मत के उन लोगों की त़रफ़ से जो कुरबानी नहीं कर सकते।"[1]

सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जो शख़्स़ **ज़ुल ह़िज्जतिल ह़राम** का चांद देखे और कुरबानी करने का इरादा रखता हो तो अपने बालों और नाखुनों में से कुछ न ले।"[2]

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अय्यूब अन्सारी رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ फ़रमाते हैं : "एक शख़्स़ अ़हदे रिसालत में अपने घर वालों की त़रफ़ से कुरबानी करता था वोह खुद भी खाता और दूसरों को भी खिलाता।"[3] कुरबानी का गोश्त तीन दिन बल्कि इस के बा'द भी खा सकते हैं। पहले इस की मुमानअ़त थी फिर रुख़्स़त दे दी गई। ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान सौरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : ईदुल फ़ित्र के बा'द 12 रक्अ़तें पढ़ना और ईदुल अज़्ह़ा के बा'द 6 रक्अ़तें पढ़ना मुस्तह़ब है। (जब कि एक रिवायत में है कि) येह सुन्नत है।"

नमाज़े तरावीह़ : नमाज़े तरावीह़ की 20 रक्अ़तें हैं। इन का त़रीक़ा मश्हूर है और येह भी सुन्नते मुअक्कदा हैं अगर्चे इस का दर्जा ईदैन से कम है।

तरावीह़ तन्हा पढ़ना अफ़्ज़ल है या बा जमाअ़त ? :[4]

इस में इख़्तिलाफ़ है कि नमाज़े तरावीह़ बा जमाअ़त पढ़ना अफ़्ज़ल है या तन्हा क्यूंकि हु़ज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم तरावीह़ की जमाअ़त के लिये दो या तीन रातें तशरीफ़

---

1 ......سنن ابی داود، کتاب الضحایا، باب مایستحب من الضحایا، الحدیث:۲۷۹۵، ج۳، ص۱۲۶، بتغیر۔

2 ......صحیح مسلم، کتاب الاضاحی، باب نھی من دخل علیہ عشرذی الحجۃ......الخ،الحدیث:۱۹۷۷، ص۱۰۹۲، مفھومًا۔

3 ......سنن الترمذی، کتاب الاضاحی، باب ماجاء أن الشاۃ الواحدۃ......الخ، الحدیث:۱۵۱۰، ج۳، ص۱۲۸۔

4 ....**अह़नाफ़ के नज़्दीक :** तरावीह़ में जमाअ़त सुन्नते किफ़ाया है कि अगर मस्जिद के सब लोग छोड़ देंगे तो गुनाहगार होंगे और अगर किसी एक ने घर में तन्हा पढ़ ही ली तो गुनाहगार नहीं मगर जो शख़्स़ मुक़्तदा हो कि उस के होने से जमाअ़त बड़ी होती है और छोड़ देगा तो लोग कम हो जाएंगे उसे बिला उ़ज़्र जमाअ़त छोड़ने की इजाज़त नहीं। (बहारे शरीअ़त, जि. 1 स. 691)

लाए फिर तशरीफ़ न लाए और इरशाद फ़रमाया : "मुझे ख़ौफ़ है कि तुम पर वाजिब न हो जाए।"(1)

जब वह़्य मुन्क़तेअ़ होने के सबब इस के वाजिब होने का डर न रहा तो अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने लोगों को बा जमाअ़त तरावीह़ के लिये जम्अ़ कर दिया। इस बिना पर कहा गया कि अमीरुल मोअमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के अ़मल की वजह से तरावीह़ की जमाअ़त अफ़्ज़ल है क्यूंकि इजतिमाअ़ की बरकत व फ़ज़ीलत है और इस की दलील फ़र्ज़ नमाज़ है। नीज़ तन्हाई में अकषर सुस्ती पैदा हो जाती है जब कि बहुत से लोगों को देख कर चुस्ती पैदा होती है। एक क़ौल येह है कि तन्हा पढ़ना अफ़्ज़ल है क्यूंकि येह ऐसी सुन्नत है जो शआ़इरे इस्लाम में से नहीं जैसे ईदैन की नमाज़ें शआ़इरे इस्लाम में से हैं। पस इसे चाश्त की नमाज़ और तह़िय्यतुल मस्जिद के साथ मिलाना ज़ियादा बेहतर है और इस में जमाअ़त मशरूअ़ नहीं और आ़दते जारिया है कि चन्द लोग इकट्ठे मस्जिद में दाखि़ल होते हैं तो फिर भी बा जमाअ़त तह़िय्यतुल मस्जिद नहीं पढ़ते क्यूंकि हु़ज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "नफ़्ल नमाज़ घर में पढ़ना मस्जिद में पढ़ने से इतनी अफ़्ज़ल है जितनी फ़र्ज़ नमाज़ मस्जिद में पढ़ना घर में पढ़ने से अफ़्ज़ल है।"(2)

मस्जिदे नबवी और मस्जिदे ह़राम में नमाज़ पढ़ने से अफ़्ज़ल अ़मल :

अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ के प्यारे ह़बीब, ह़बीबे लबीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "मेरी इस मस्जिद में एक नमाज़ पढ़ना दीगर मसाजिद में 100 नमाज़ें पढ़ने से अफ़्ज़ल है और मस्जिदे ह़राम में एक नमाज़ पढ़ना मेरी मस्जिद में हज़ार नमाज़ें पढ़ने से अफ़्ज़ल है और इन तमाम से अफ़्ज़ल येह है कि कोई शख़्स अपने घर के कोने में दो रक्अ़त नमाज़ पढ़े जिस का इ़ल्म सिर्फ़ अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ को हो।"

वज़ाह़त :

बा'ज़ अवक़ात बा जमाअ़त नमाज़ पढ़ने की सूरत में रिया और बनावट आ जाती है और तन्हाई में बन्दा इस से मह़फ़ूज़ होता है। लिहाज़ा आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने रिया को पेशे नज़र रखते हुए येह क़ौल इरशाद फ़रमाया।

---

1 ......صحیح مسلم، کتاب صلاۃ المسافرین وقصرھا، باب الترغیب فی قیام رمضان......الخ، الحدیث: ۷۶۱، ص ۳۸۳، مفھومًا۔

2 ......سنن الترمذی، ابواب الصلاۃ، باب ماجاء فی فضل صلاۃ التطوع فی البیت، الحدیث: ۴۵۰، ج ۱، ص ۴۴۷، مفھومًا۔

المصنف لابن ابی شیبۃ، کتاب صلاۃ التطوع والامامۃ، من امربالصلاۃ فی البیوت، الحدیث: ۵، ج ۲، ص ۱۵۷، مفھومًا۔

ख़ुलासए कलाम :

मुख़्तार क़ौल येह है कि तरावीह़ बा जमाअ़त पढ़ना अफ़्ज़ल है जैसा कि अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का ख़याल था क्यूंकि बा'ज़ नवाफ़िल में जमाअ़त जाइज़ है और नमाज़े तरावीह़ के ज़ियादा मुनासिब है कि येह बा जमाअ़त हो क्यूंकि येह उन शिआ़र में से है जिस का इज़्हार मुनासिब है। जमाअ़त की सूरत में रिया की त़रफ़ और अ़लाह़िदा पढ़ने की सूरत में सुस्ती की त़रफ़ तवज्जोह देना फ़ज़ीलते जमाअ़त के मक़्सूद से फिरना है जो कि इस के जमाअ़त होने की हैषिय्यत से ह़ासिल है। गोया इस का क़ाइल कहता है कि "सुस्ती के सबब तर्क करने से नमाज़ पढ़ना बेहतर है और इख़्लास रिया से बेहतर है।"

हम इस मस्अले को यूं फ़र्ज़ करते हैं कि जिसे ख़ुद पर ए'तिमाद हो कि अगर अ़लाह़िदा पढ़े तो सुस्ती न करेगा और जमाअ़त में दिखावा न करेगा तो उस के लिये कौन सी सूरत अफ़्ज़ल है ? तो नज़र जमाअ़त की बरकत और तन्हा पढ़ने में क़ुव्वते इख़्लास और ह़ुज़ूरे क़ल्बी के दरमियान घूमती है। इस सूरत में एक को दूसरी पर फ़ज़ीलत देने में तरद्दुद ही रहेगा।

माहे रमज़ान के आख़िरी पन्दरह दिनों में वित्रों में दुआ़ए क़ुनूत पढ़ना मुस्तह़ब है।[1]

माहे रजबुल मुरज्जब के नवाफ़िल

अहले ख़ाना के 700 अफ़्राद की शफ़ाअ़त का ह़क़ :

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जो शख़्स रजब की पहली जुमा'रात को रोज़ा रखे फिर मग़रिब व इशा के दरमियान 12 रक्अ़त नमाज़ दो दो रक्अ़त कर के पढ़े, हर रक्अ़त में एक बार सूरए फ़ातिह़ा, तीन बार सूरए क़द्र और 12 बार सूरए इख़्लास पढ़े, सलाम के बा'द मुझ पर 70 बार येह दुरूदे पाक पढ़े : اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدِنِ النَّبِیِّ الْاُمِّیِّ وَعَلٰی اٰلِہٖ, फिर सजदा करे और सजदे में 70 मरतबा سُبُّوْحٌ قُدُّوْسٌ رَبُّ الْمَلٰٓئِکَۃِ وَالرُّوْحِ पढ़े, फिर सर उठा कर 70 मरतबा येह दुआ़ पढ़े : "رَبِّ اغْفِرْ وَارْحَمْ وَتَجَاوَزْ عَمَّا تَعْلَمُ اِنَّکَ اَنْتَ الْاَعَزُّ الْاَکْرَم (या'नी ऐ रब्ब عَزَّوَجَلَّ मेरी मग़फ़िरत फ़रमा, मुझ पर रह़्म फ़रमा और जो तू जानता है उस से दरगुज़र फ़रमा बेशक तू इ़ज़्ज़तो बुज़ुर्गी वाला है।)"

---

❶....**अह़नाफ़ के नज़दीक :** दुआ़ए क़ुनूत का पढ़ना वाजिब है, दुआ़ए क़ुनूत आहिस्ता पढ़े इमाम हो या मुन्फ़रिद या मुक़्तदी, अदा हो या क़ज़ा, रमज़ान में हो या और दिनों में। (माख़ूज़ अज़ बहारे शरीअ़त, जि. 1 स. 654-655)

फिर दूसरा सजदा करे और इस में भी पहले सजदे की त़रह़ तस्बीह़ पढ़े फिर अपनी ह़ाजत का सुवाल करे तो वोह पूरी कर दी जाएगी ।" हु़ज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जो शख़्स येह नमाज़ पढ़ता है अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के तमाम गुनाह मुआ़फ़ फ़रमा देता है अगर्चे समुन्दर की झाग, रैत के ज़र्रात, पहाड़ों के वज़्न और दरख़्तों के पत्तों के बराबर हों और बरोज़े क़ियामत वोह अपने घर के उन 700 अफ़राद की सिफ़ारिश करेगा जिन पर जहन्नम वाजिब हो चुका होगा ।"(1)

येह नमाज़ मुस्तह़ब है। हम ने इसे यहां इस लिये ज़िक्र किया क्यूंकि येह साल के बदलने से बदलती है। अगर्चे इस का मरतबा नमाज़े तरावीह़ और नमाज़े ई़द को नहीं पहुंचता क्यूंकि इस नमाज़ का षुबूत ख़बरे वाह़िद से है लेकिन मैं ने तमाम अहले क़ुद्स (या'नी बैतुल मुक़द्दस वालों) को देखा है कि वोह इस की पाबन्दी करते हैं और इसे तर्क नहीं करते, इस लिये मैं ने इसे यहां ज़िक्र करना अच्छा समझा।

माहे शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म के नवाफ़िल

शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म की पन्दरहवीं रात 100 रक्अ़तें पढ़े, हर दो रक्अ़त पर सलाम फेरे, हर रक्अ़त में सूरए फ़ातिह़ा के बा'द 11 बार सूरए इख़्लास पढ़े। अगर चाहे तो 10 रक्अ़त नमाज़ पढ़े। हर रक्अ़त में सूरए फ़ातिह़ा के बा'द 100 बार सूरए इख़्लास पढ़े। दीगर नफ़्ल नमाज़ों के ज़िम्न में येह भी मरवी है। अस्लाफ़े किराम رَحِمَهُمُ اللّٰہُ السَّلَام इसे पढ़ते और सलातुल ख़ैर का नाम देते, इस के लिये इकट्ठे होते और बा'ज़ अवक़ात जमाअ़त से भी पढ़ते थे।

70 बार नज़रे रह़मत :

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : मुझ से 30 सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن ने बयान फ़रमाया कि "जो शख़्स शबे बराअत की रात येह नमाज़ पढ़े अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस की त़रफ़ 70 बार नज़रे रह़मत फ़रमाता है और हर नज़र के साथ उस की 70 ह़ाजात पूरी फ़रमाता है जिन में से सब से छोटी ह़ाजत उस की मग़फ़िरत है।"(2)

---

1 ......جامع الاصول، کتاب الصلاۃ، الفصل السابع فی صلاۃ الرغائب، الحدیث ، ۴۲۶۸، ج۶، ص ۱۷۰، باختصارٍ۔

2 ......قوت القلوب، الفصل العشرون فی ذکر احیاء اللیالی......الخ، ج ۱، ص ۱۱۴۔

﴾4﴿.....अस्बाब से मुतअ़ल्लिक़ नवाफ़िल का बयान :

वोह नवाफ़िल जो आ़रिज़ी अस्बाब के साथ मुतअ़ल्लिक़ हैं किसी ख़ास वक़्त से इन का तअ़ल्लुक़ नहीं, येह ता'दाद में नव हैं : नमाज़े ख़ुसूफ़ व कुसूफ़ (सूरज व चांद ग्रहन की नमाज़), नमाज़े इस्तिसक़ा (त़लबे बारिश के लिये नमाज़), तहिय्यतुल मस्जिद व तहिय्यतुल वुज़ू, अज़ान और इक़ामत के दरमियान दो रक्अ़तें, घर से निकलते वक़्त और दाख़िल होते वक़्त की दो रक्अ़तें और दीगर इस जैसी नमाज़ें।

(1)......ग्रहन की नमाज़ :

जब हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के साहिबज़ादे ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ का विसाल हुवा तो सूरज को ग्रहन लग गया, लोग कहने लगे : "इब्ने रसूल के विसाल पर इसे ग्रहन लग गया।" तब हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "सूरज और चांद **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की निशानियों में से दो निशानियां हैं, किसी की मौत या ज़िन्दगी पर इन्हें ग्रहन नहीं लगता। जब तुम (सूरज या चांद) ग्रहन देखो तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ज़िक्र और नमाज़ की त़रफ़ जल्दी करो।"(1) (2)

नमाज़े ग्रहन का त़रीक़ा व वक़्त :

इस का त़रीक़ा येह है कि मकरूह(3) या ग़ैरे मकरूह वक़्त में जब सूरज ग्रहन हो तो आवाज़ दी जाए कि नमाज़ खड़ी होने वाली है। इमाम मस्जिद में लोगों को दो रक्अ़त नमाज़ पढ़ाए, हर रक्अ़त में दो रुकूअ़ करे,(4) दूसरी के मुक़ाबले में पहली रक्अ़त लम्बी पढ़े, क़िराअत बुलन्द आवाज़ से न करे, पहली रक्अ़त के पहले क़ियाम में सूरए फ़ातिह़ा और सूरए बक़रह जब कि दूसरे क़ियाम में सूरए फ़ातिह़ा और सूरए आले इमरान पढ़े, दूसरी रक्अ़त के पहले क़ियाम में सूरए फ़ातिह़ा और सूरए निसा जब कि दूसरे क़ियाम में सूरए फ़ातिह़ा और सूरए माइदह पढ़े

1....मिरआतुल मनाजीह़, जि. 2 स. 381 पर है : इस कलाम शरीफ़ में उस जहालत के अ़क़ीदे का रद्द है जो अहले अ़रब में फैला हुवा था और इत्तिफ़ाक़न इस दिन ह़ज़रते इब्राहीम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ का इन्तिक़ाल भी हुवा था इस से उन के ख़यालात में और पुख़्तगी होने का अन्देशा था इस लिये हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने येह इरशाद फ़रमाया।

2......صحیح مسلم، کتاب الکسوف، باب ذکر النداء بصلاۃ الکسوف......الخ، الحدیث:۹۱۵، ص۴۵۲، مفہومًا۔

3....**अह़नाफ़ के नज़्दीक :** मकरूह वक़्त में नमाज़े ग्रहन न पढ़ी जाए। (बहारे शरीअ़त, जि. 1 स. 787)

4....**अह़नाफ़ के नज़्दीक :** येह नमाज़ और नवाफ़िल की त़रह दो रक्अ़त पढ़ें या'नी हर रक्अ़त में एक रुकूअ़ और दो सजदे करें। (बहारे शरीअ़त, जि. 1 स. 787)

या इन की मिक़्दार में जहां से चाहे पढ़े। अगर हर क़ियाम में सूरए फ़ातिह़ा पर इक्तिफ़ा करे तो भी काफ़ी है और अगर छोटी सूरत पर इक्तिफ़ा करे तब भी कोई ह़रज नहीं। मक़्सूद येह है कि इसे सूरज रोशन होने तक त़वील करे। पहले रुकूअ़ में सो आयात, दूसरे में दो सो आयात, तीसरे में तीन सो आयात और चौथे में चार सो आयात की मिक़्दार तस्बीह़ पढ़े और हर रक्अ़त में सजदे भी रुकूअ़ के बराबर होने चाहियें। फिर नमाज़ के बा'द दो ख़ुत़बे पढ़े जिन के दरमियान एक जल्सा हो और लोगों को सदक़ा, ग़ुलाम आज़ाद करने और तौबा का हुक्म दे। चांद ग्रहन में भी इसी त़रह़ करे। अलबत्ता, इस में क़िराअत बुलन्द आवाज़ से करे क्यूंकि वोह रात की नमाज़ है।

वक़्त : सूरज ग्रहन की नमाज़ का वक़्त सूरज ग्रहन लगने से शुरूअ़ हो कर इस के रोशन होने तक है और सूरज ग़ुरूब होने पर इस का वक़्त ख़त्म हो जाता है और सूरज की टिकया ज़ाहिर होने पर चांद ग्रहन की नमाज़ का वक़्त ख़त्म हो जाता है क्यूंकि इस वक़्त रात का ग़लबा ख़त्म हो जाता है। अगर ग्रहन लगने से चांद छुप जाए तो भी इस का वक़्त ख़त्म नहीं होता क्यूंकि पूरी रात चांद का ग़लबा होता है। अगर नमाज़ के दौरान ग्रहन ख़त्म हो जाए तो नमाज़ मुख़्तसर कर दे। जो इमाम के साथ दूसरा रुकूअ़ पाए उस की वोह रक्अ़त फ़ौत हो गई क्यूंकि अस्ल पहला रुकूअ़ है।

(2)....नमाज़े इस्तिस्क़ा :

जब नहरों का पानी अन्दर चला जाए, बारिश बन्द हो जाए या नालियां सूख जाएं तो इमाम के लिये मुस्तह़ब है कि अव्वलन लोगों को तीन दिन रोज़ा रखने का हुक्म दे और ह़स्बे इस्तित़ाअ़त सदक़ा दें, लोगों के हुक़ूक़ अदा करें और गुनाहों से सच्ची तौबा करें। फिर चौथे दिन मर्दों, बुढ़ी औ़रतों और बच्चों को ले कर निकलें। पाक साफ़ फटे पुराने कपड़े पहन कर आ़जिज़ी करते हुए मिस्कीनी की ह़ालत में जाएं न कि ई़द की त़रह़ ज़ैबो ज़ीनत इख़्तियार कर के। एक क़ौल के मुत़ाबिक़ चोपायों को साथ ले जाना मुस्तह़ब है क्यूंकि वोह भी ह़ाजत में शरीक हैं। नीज़ ह़दीषे मुबारका में है कि "अगर बच्चे दूध पीने वाले, बुढ़े रुकूअ़ करने वाले और चोपाए चरने वाले न होते तो तुम पर शिद्दत से अ़ज़ाब की बारिश होती।"[1] अगर ज़िम्मी[2] अ़लाह़िदा तौ़र पर निकलें तो उन्हें मन्अ़ न किया जाए।

---

1 ......السنن الكبرى للبيهقى، كتاب صلاة الاستسقاء، باب استحباب الخروج......الخ، الحديث: ٦٣٩٠، ٦٣٩١، ج٣، ص ٤٨١، بتغيرٍ۔

2 ....फ़तावा फ़ैज़ुर्रसूल जिल्द 1 सफ़ह़ा 501 पर फ़क़ीहे मिल्लत ह़ज़रते अ़ल्लामा मुफ़्ती जलालुद्दीन अह़मद अमजदी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : "ज़िम्मी उस काफ़िर को कहते हैं जिस के जान व माल की ह़िफ़ाज़त का बादशाहे इस्लाम ने जिज़्ये के बदले ज़िम्मा लिया हो।"

जब लोग वसीअ़ सह़रा में जम्अ़ हो जाएं तो येह आवाज़ दी जाए : “नमाज़ खड़ी होने वाली है।” इमाम लोगों को नमाज़े ईद की त़रह़ बिग़ैर इक़ामत के दो रक्अ़त नमाज़ पढ़ाए फिर दो खुत़बे पढ़े और इन के दरमियान मुख़्तसरसा जल्सा करे, दोनों खुत़बों में ज़ियादा तर इस्तिग़्फ़ार हो, दूसरे खुत़बे के दरमियान इमाम लोगों से मुंह फेर कर क़िब्ला रुख़ हो जाए और ह़ालत बदलने के लिये नेक फ़ाली के त़ौर पर अपनी चादर उलटाए कि सुन्नत है।[1] यूं कि ऊपर वाले हिस्से को नीचे, दाएं को बाएं और बाएं को दाएं त़रफ़ कर दे। लोग भी इसी त़रह़ करें, इस वक़्त आहिस्ता आवाज़ में दुआ़ मांगे। फिर इमाम लोगों की त़रफ़ मुंह कर के खुत़बा पढ़े और चादरें इसी त़रह़ उलटी हुई रहने दें ह़त्ता कि जब कपड़े उतारें, चादरें भी तब ही उतारें।

दुआ़ :

दुआ़ यूं मांगें :

اَللّٰھُمَّ اِنَّكَ اَمَرْتَنَا بِدُعَائِكَ وَوَعَدْتَنَا اِجَابَتَكَ فَقَدْ دَعَوْنَا كَمَا اَمَرْتَنَا فَاَجِبْنَا كَمَا وَعَدْتَنَا اَللّٰھُمَّ فَامْنُنْ عَلَیْنَا بِمَغْفِرَةٍ مَّا قَارَفْنَا وَاِجَابَتِكَ فِیْ سُقْیَانًا وَسِعَةِ اَرْزَاقِنَا

या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तूने हमें दुआ़ मांगने का हुक्म दिया और क़बूलिय्यत का वा'दा फ़रमाया है। हम ने तेरे हुक्म के मुत़ाबिक़ दुआ़ मांगी पस तू अपने वा'दे के मुत़ाबिक़ क़बूल फ़रमा। ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हम पर करम फ़रमा कर हमारे गुनाह बख़्श दे, हमें बारिश अ़त़ा फ़रमाने और हमारे रिज़्क़ को कुशादा फ़रमाने की सूरत में क़बूलिय्यते दुआ़ के वा'दे को पूरा फ़रमा।”[2]

तीनों दिन नमाज़े इस्तिसक़ा के लिये निकलने से पहले नमाज़ों के बा'द दुआ़ मांगने में कोई ह़रज नहीं। इस (ह़ालत में) दुआ़ के लिये कुछ बात़िनी आदाब व शराइत़ हैं : वोह येह कि तौबा करें और दूसरों के हुक़ूक़ वग़ैरा अदा करें। मज़ीद तफ़्सील اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ किताबुद्दा'वात में बयान की जाएगी।

(3).....नमाज़े जनाज़ा :

इस का त़रीक़ा मश्हूर है, इस में पढ़ी जाने वाली दुआ़ए माषूरा वोह है जो ह़ज़रते सय्यिदुना औ़फ़ बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ से सह़ीह़ सनद के साथ मरवी है। चुनान्चे, फ़रमाते हैं : मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को एक शख़्स की नमाज़े जनाज़ा पढ़ते देखा। आप ने जो दुआ़ पढ़ी उसे मैं ने ह़िफ़्ज़ कर लिया। दुआ़ येह है :

---

1 ......صحیح مسلم، کتاب صلاۃ الاستسقاء، الحدیث:۸۹۴، ص۴۴۳۔

2 ......معرفة السنن والاثارللبیھقی، کتاب الاستسقاء، باب السنة فی صلاۃ الاستسقاء، الحدیث:۲۰۱۱، ج۳، ص۹۸۔

اَللّٰھُمَّ اغْفِرْ لَہٗ وَارْحَمْہُ وَعَافِہٖ وَاعْفُ عَنْہُ وَاَکْرِمْ نُزُلَہٗ وَوَسِّعْ مَدْخَلَہٗ وَاغْسِلْہُ بِالْمَاءِ وَالثَّلْجِ وَالْبَرْدِ وَنَقِّہٖ مِنَ الْخَطَایَا کَمَا یُنَقَّی الثَّوْبُ الْاَبْیَضُ مِنَ الدَّنَسِ وَاَبْدِلْہُ دَارًا خَیْرًا مِنْ دَارِہٖ وَاَھْلًا خَیْرًا مِنْ اَھْلِہٖ وَزَوْجًا خَیْرًا مِنْ زَوْجِہٖ وَاَدْخِلْہُ الْجَنَّۃَ وَاَعِذْہُ مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ وَمِنْ عَذَابِ النَّار

या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इसे बख़्श दे, इस पर रह़म फ़रमा, आ़फ़िय्यत अ़त़ा फ़रमा, इसे मुआ़फ़ फ़रमा, इस की अच्छी त़रह़ मेहमानी फ़रमा, इस की क़ब्र कुशादा फ़रमा, इसे पानी, बर्फ़ और औलों से धो डाल, इसे ख़त़ाओं से ऐसा पाक साफ़ कर दे जैसे सफ़ेद कपड़े को मैल कुचैल से साफ़ करता है, इसे इस के घर से अच्छा घर, घर वालों से अच्छे घर वाले और इस की बीवी से बेहतर बीवी अ़त़ा फ़रमा, इसे जन्नत में दाख़िल फ़रमा, अ़ज़ाबे क़ब्र और जहन्नम के अ़ज़ाब से बचा।''

ह़ज़रते सय्यिदुना औ़फ़ बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : ''मैं ने तमन्ना की, कि काश ! वोह मय्यित मैं होता।''[1]

जो शख़्स दूसरी तक्बीर पाए उसे चाहिये कि दिल में नमाज़ की तरतीब का ख़याल रखे और इमाम के साथ तक्बीरें कहे। जब इमाम सलाम फेरे तो अपनी फ़ौत शुदा तक्बीर कह ले जिस त़रह़ मसबूक़ (या'नी जिस की एक या चन्द रक्अ़तें रह गई हों) करता है। अगर मुक़्तदी तक्बीरात में जल्दी करे तो इस नमाज़ में इक़्तिदा का कोई मा'ना नहीं रहता। तक्बीरें नमाज़े जनाज़ा के ज़ाहिरी अरकान हैं, इन्हें दीगर नमाज़ों की रक्आ़त के क़ाइम मक़ाम क़रार देना ज़ियादा मुनासिब है। येह तौजीह मेरे (या'नी इमाम ग़ज़ाली के) नज़्दीक ज़ियादा मुनासिब है अगर्चे दीगर तौजीहात का भी एह़तिमाल है।

नमाज़े जनाज़ा पढ़ने और जनाज़े के साथ जाने की फ़ज़ीलत में बहुत सी अह़ादीष वारिद हैं, इन्हें ज़िक्र कर के हम बात को तूल नहीं देते, इस की अ़ज़ीम फ़ज़ीलत क्यूंकर न होगी ह़ालांकि येह फ़र्ज़े किफ़ाया है ? नफ़्ल उस के ह़क़ में है कि दूसरों की शिर्कत के सबब जिस पर शरीक होना ज़रूरी न हो फिर भी उसे फ़र्ज़े किफ़ाया ही का षवाब मिलेगा अगर्चे उस का जाना ज़रूरी न हो क्यूंकि शरीक होने वालों ने फ़र्ज़े किफ़ाया की अदाएगी कर के दूसरों से ह़रज को दूर किया है। लिहाज़ा येह नफ़्ल नमाज़ की त़रह़ न होगी कि जिस की अदाएगी से किसी से फ़र्ज़ साक़ित़ नहीं होता। जनाज़े में ज़ियादा लोगों को तलाश करना मुस्तह़ब है क्यूंकि ज़ियादा लोगों की शिर्कत और दुआ़एं बाइ़षे बरकत हैं, नीज़ इन में कोई मुस्तजाबुद्दा'वात भी होगा।

---

1 ......صحیح مسلم، کتاب الجنائز، باب الدعاء للمیت فی الصلاۃ، الحدیث:۹۶۳، ص۴۷۹۔۴۸۰۔

जनाज़े में 40 लोगों के शरीक होने की बरकत :

ह़ज़रते सय्यिदुना कुरैब رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا के बेटे का इन्तिक़ाल हो गया तो उन्हों ने मुझे फ़रमाया : "ऐ कुरैब ! कितने लोग जम्अ़ हो गए हैं ?" मैं निकला तो कुछ लोग जम्अ़ हो ही गए थे, मैं ने आप को ख़बर दी। फ़रमाया : "क्या तुम कह सकते हो कि चालीस होंगे।" मैंने कहा : "हां।" फ़रमाया : मय्यित को लाओ। मैं ने रसूले अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को इरशाद फ़रमाते सुना कि "जो मुसलमान फ़ौत हो जाए और उस के जनाज़े में चालीस आदमी हों जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के साथ शरीक न ठहराते हों तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के बारे में उन की सिफ़ारिश ज़रूर क़बूल फ़रमाता है।"(1)

क़ब्रिस्तान में सलाम करने का त़रीक़ा :

जब जनाज़े के साथ क़ब्रिस्तान जाए या वैसे ही जाए तो यूं कहे :

اَلسَّلَامُ عَلَیْكُمْ اَهْلَ هٰذِهِ الدِّیَارِ مِنَ الْمُؤْمِنِیْنَ وَالْمُسْلِمِیْنَ وَیَرْحَمُ اللّٰهُ الْمُسْتَقْدِمِیْنَ مِنَّا وَالْمُسْتَاْخِرِیْنَ وَاِنَّا اِنْ شَآءَ اللّٰهُ بِكُمْ لَاحِقُوْن

*या'नी इन घरों में रहने वाले मोमिनों और मुसलमानों पर सलाम हो, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हम में से आगे जाने वालों और पीछे रहने वालों पर रह़्म फ़रमाए, اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ हम तुम से मिलने वाले हैं।* (2)

दफ़्न करने के बा'द की दुआ़ :

अफ़्ज़ल येह है कि मय्यित को दफ़्न करने से पहले वापस न आए। जब मय्यित पर क़ब्र बराबर कर दी जाए तो वहां खड़ा हो कर येह दुआ़ करे :

اَللّٰهُمَّ عَبْدُكَ رُدَّ اِلَیْكَ فَارْاَفْ بِهٖ وَارْحَمْهُ اَللّٰهُمَّ جَافِ الْاَرْضَ عَنْ جَنْبَیْهِ وَافْتَحْ اَبْوَابَ السَّمَآءِ لِرُوْحِهٖ وَتَقَبَّلْهُ مِنْكَ بِقَبُوْلٍ حَسَنٍ اَللّٰهُمَّ اِنْ كَانَ مُحْسِنًا فَضَاعِفْ لَهٗ فِیْ اِحْسَانِهٖ وَاِنْ كَانَ مُسِیْئًا فَتَجَاوَزْ عَنْهُ

*या'नी ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तेरा बन्दा तेरी त़रफ़ लौटा दिया गया, इस पर नर्मी कर और इस पर रह़्म फ़रमा। ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इस के दोनों पहलूओं से ज़मीन को दूर कर दे, इस की रूह़ के लिये आस्मान के दरवाज़े खोल दे और इसे अच्छी त़रह़ क़बूल फ़रमा। ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अगर येह नेक था तो इस की नेकियों का षवाब दुगना फ़रमा और अगर गुनहगार था तो इस से दरगुज़र फ़रमा।"* (3)

---

1 ......صحیح مسلم، کتاب الجنائز، باب من صلی علیه اربعون شفعوا فیه، الحدیث:۹۴۸، ص ۴۷۳۔

2 ......صحیح مسلم، کتاب الجنائز، باب مایقال عند دخول القبور و الدعاء لاهلها، الحدیث:۹۷۴، ص ۴۸۵۔

3 ......المصنف لابن ابی شیبة،کتاب الجنائز،فی الدعاء للمیت بعد مایدفن......الخ، الحدیث: ۱، ج۳، ص ۲۱۲۔

(4).....**तह़िय्यतुल मस्जिद :**

दो या इस से ज़ियादा रक्अ़तें मुअक्कदा हैं। अगर्चे इमाम जुमुआ़ के दिन ख़ुत़बा दे रहा हो फिर भी साक़ित़ न होंगी (इन्दश्शवाफ़ेअ़) बावुजूद येह कि तवज्जोह से ख़ुत़बा सुनना वाजिब है। अगर (मस्जिद में दाख़िल होते ही) फ़र्ज़ या क़ज़ा नमाज़ में मश्ग़ूल हो जाए तो इसी से तह़िय्यतुल मस्जिद के नवाफ़िल अदा हो गए और फ़ज़ीलत भी ह़ासिल हो गई क्यूंकि मक़्सूद येह है कि मस्जिद के ह़क़ की वजह से मस्जिद में दाख़िल होने की इब्तिदा उस इ़बादत से ख़ाली न हो जो मस्जिद के साथ ख़ास है, इसी वजह से मस्जिद में बे वुज़ू दाख़िल होना मकरूह है। अगर मस्जिद से गुज़रने या वहां बैठने के लिये दाख़िल हो तो चार मरतबा येह कलिमात कहे : سُبْحٰنَ اللّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَلَا اِلٰهَ اِلَّااللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَر[1] मन्क़ूल है कि येह कलिमात फ़ज़ीलत में दो रक्अ़तों के बराबर हैं।

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन इदरीस शाफ़ेई़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْكَافِي का मस्लक येह है कि मकरूह अवक़ात में भी तह़िय्यतुल मस्जिद मकरूह नहीं[2] और वोह फ़ज्र व अ़स्र के बा'द का वक़्त, ज़वाल का वक़्त, तुलूअ़ व ग़ुरूबे आफ़्ताब का वक़्त है। क्यूंकि मरवी है कि ह़ुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने अ़स्र के बा'द दो रक्अ़तें अदा फ़रमाईं तो अ़र्ज़ की गई : "क्या आप ने हमें इस (या'नी नमाज़े अ़स्र के बा'द नफ़्ल पढ़ने) से मन्अ़ नहीं फ़रमाया ?" तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "येह दो रक्अ़तें मैं ज़ोहर के बा'द पढ़ता था (आज मुलाक़ात के लिये आए) एक वफ़्द की वजह से न पढ़ सका।"[3]

ह़दीष से ह़ासिल शुदा दो फ़वाइद :

(1).....सिर्फ़ वोह नमाज़ मकरूह है जिस का कोई सबब न हो और सब से कमज़ोर सबब नवाफ़िल की क़ज़ा है क्यूंकि नवाफ़िल की क़ज़ा में उ़-लमा का इख़्तिलाफ़ है कि जब वोह ऐसा अ़मल करे जैसा फ़ौत हुवा तो क्या येह क़ज़ा होगी (या अदा) ? तो जब सब से कमज़ोर सबब (या'नी नवाफ़िल की क़ज़ा) की वजह से कराहिय्यत ख़त्म हो गई तो मस्जिद में दाख़िल होने से भी कराहिय्यत ख़त्म होनी चाहिये क्यूंकि येह क़वी सबब है, इसी लिये (इस वक़्त में) जब

---

1 ......قوت القلوب، الفصل التاسع فيه ذكر وقت الفجر......الخ، ج ١، ص ٤٥۔

2 ....**अह़नाफ़ के नज़दीक :** (कोई शख़्स) ऐसे वक़्त मस्जिद में आया जिस में नफ़्ल नमाज़ मकरूह है मषलन बा'दे तुलूए़ फ़ज्र या बा'दे नमाज़े अ़स्र वोह तह़िय्यतुल मस्जिद न पढ़े बल्कि तस्बीह़ व तहलील व दुरूद शरीफ़ में मश्ग़ूल हो ह़क़्क़े मस्जिद अदा हो जाएगा। (बहारे शरीअ़त, जि. 1 स. 674)

3 ......صحيح مسلم، كتاب صلاة المسافرين وقصرها، باب معرفة الركعتين......الخ، الحديث: ٨٣٤، ص ٤١٧۔

जनाज़ा आ जाए तो नमाज़े जनाज़ा पढ़ना मकरूह नहीं और न ही इन अवक़ात में नमाज़े ख़ुसूफ़ व इस्तिसक़ा मकरूह है (इन्दश्शवाफ़ेअ़) क्यूंकि इन के लिये भी अस्बाब हैं।

(2).....नवाफ़िल की भी क़ज़ा है क्यूंकि हु़ज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इन की क़ज़ा की और हमें आप की पैरवी बेहतर है। उम्मुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा त़य्यिबा त़ाहिरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا फ़रमाती हैं : "मेरे सरताज, साहि़बे मे'राज صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم जिस रात नींद या मरज़ के ग़लबे के सबब क़ियाम न फ़रमा सकते तो दिन के शुरूअ़ में 12 रक्अ़त नमाज़ अदा फ़रमाते।"(1)

उ़-लमाए किराम फ़रमाते हैं : जो शख़्स नमाज़ में मश्ग़ूल होने के सबब अज़ान का जवाब न दे सके तो सलाम फैरने के बा'द बत़ौरे क़ज़ा अज़ान का जवाब दे अगर्चे मुअज़्ज़िन ख़ामोश हो चुका हो। जब मुआ़मला ऐसा हो तो क़ाइल के इस क़ौल कि "येह अदा है क़ज़ा नहीं" का कोई मा'ना नहीं क्यूंकि अगर ऐसा होता तो हु़ज़ूर नबिय्ये पाक, साहि़बे लौलाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم मकरूह वक़्त में नफ़्ल न पढ़ते।

ख़ुलासए कलाम :

किसी शख़्स का वज़ीफ़ा हो और किसी उ़ज़्र की वजह से वक़्त पर न पढ़ सके तो उसे चाहिये कि अपने नफ़्स को इस के छोड़ने की रुख़्सत न दे बल्कि किसी दूसरे वक़्त में इस का तदारुक करे ताकि उस का नफ़्स आसाइश व आराम की त़रफ़ माइल न हो और नफ़्स के मुजाहदे के त़ौर पर इस का तदारुक अच्छा है क्यूंकि हु़ज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक सब से पसन्दीदा अ़मल वोह है जो हमेशा किया जाए अगर्चे थोड़ा हो।"(2)

इस से आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की मुराद येह है कि पाबन्दी के साथ किये जाने वाले अ़मल में कोताही न हो। क्यूंकि उम्मुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا से मरवी है कि हु़ज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत करता हो, फिर उक्ता कर इसे छोड़ दे तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर ग़ज़ब नाक होता है।"(3)

---

1 ......صحیح مسلم، کتاب صلاۃ المسافرین وقصرھا، باب جامع صلاۃ اللیل......الخ، الحدیث:۷۴۶، ص ۳۷۵، مفہومًا۔

2 ......صحیح مسلم، کتاب الصلاۃ، باب فـیلۃ العمل الدائم......الخ، الحدیث:۷۸۲، ص ۳۹۴۔

3 ......قوت القلوب، الفصل التاسع فیه ذکر وقت الفجر......الخ، ج ۱، ص ۴۴۔

लिहाज़ा इस वईद का मुस्तहिक़ बनने से डरना चाहिये। इस ह़दीष की तह़क़ीक़ येह है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उक्ताहट के सबब छोड़ने पर ग़ज़ब फ़रमाता है, अगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की नाराज़ी और रह़मते इलाही से दूरी न होती तो उस पर उक्ताहट मुसल्लत़ न होती।

(5).....**तहि़य्यतुल वुज़ू :**

वुज़ू के बा'द दो रक्अ़तें पढ़ना मुस्तह़ब है क्यूंकि वुज़ू एक इ़बादत है, इस का मक़्सूद नमाज़ है और बे वुज़ू होना एक आ़रिज़ा है। बसा अवक़ात इन्सान पर नमाज़ से पहले ह़दष त़ारी हो जाता है तो वुज़ू टूट जाता और मेह़नत राइगां जाती है। लिहाज़ा जल्दी जल्दी दो रक्अ़त अदा कर लेने से वुज़ू का मक़्सूद फ़ौत होने से पहले पूरा हो जाता है। नीज़ ह़ज़रते सय्यिदुना बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ की ह़दीष से येह बात जानी जा सकती है कि जब रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "मैं जन्नत में दाख़िल हुवा तो बिलाल को वहां पाया। मैं ने बिलाल से पूछा : किस अ़मल के सबब तुम जन्नत में मुझ से पहले पहुंच गए ?" बिलाल ने अ़र्ज़ की : "और तो मैं कुछ नहीं जानता, अलबत्ता इतनी बात है कि मैं जब भी वुज़ू करता हूं तो इस के बा'द दो रक्अ़त नमाज़ पढ़ लेता हूं।"[(1)]

(6)....**घर में दाख़िल होते और निकलते वक़्त के नवाफ़िल :**

घर में दाख़िल होते और निकलते वक़्त दो रक्अ़त नफ़्ल (पढ़ना मुस्तह़ब) है। ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से मरवी है कि मुस्त़फ़ा जाने रह़मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जब तुम अपने घर से निकलो तो दो रक्अ़त नमाज़ पढ़ लो येह तुम्हें बुरे निकलने से बाज़ रखेंगी और जब घर में दाख़िल हो तो दो रक्अ़त नमाज़ पढ़ लो येह तुम्हें बुरे दाख़िले से मह़फ़ूज़ रखेंगी।"[(2)]

हर ज़ी मर्तबा काम शुरूअ़ करने का मुआ़मला भी इसी त़रह़ है। इसी लिये एह़राम के वक़्त दो रक्अ़तें,[(3)] इब्तिदाए सफ़र में दो रक्अ़तें[(4)] और सफ़र से वापसी पर घर में दाख़िल

---

1 ......صحیح مسلم،کتاب فضائل الصحابۃ،باب من فضائل بلال رضی اللّٰہ عنہ،الحدیث:۲۴۵۸،ص۱۳۳۴،۱۳۳۵،مفہومًا۔

2 ......شعب الایمان للبیہقی، باب فی الصلوات، فصل الاذان والاقامۃ للصلاۃ المکتوبۃ، الحدیث:۳۰۷۸، ج۳، ص۱۲۴۔

3 ......صحیح البخاری،کتاب الحج،باب خروج النبی صلی اللّٰہ علیہ وسلم......الخ،الحدیث:۱۵۳۳،ج۱،ص۵۱۶،مفہومًا۔

4 ......المصنف لابن ابی شیبۃ، کتاب الصلاۃ، الرجل یریدالسفر، الحدیث: ۱، ج۱، ص۵۲۹۔

होने से पहले मस्जिद में दो रक्अ़तें पढ़ना[1] ह़दीषे पाक में वारिद और रसूले अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के अ़मल से षाबित हैं। बा'ज़ सालेह़ीने किराम رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن जब कुछ खाते या पानी पीते तो दो रक्अ़तें पढ़ते। इसी त़रह़ उन्हें जो मुआ़मला भी पेश आता उस वक़्त दो रक्अ़त नमाज़ पढ़ते। हर काम का आग़ाज़ करते हुए **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नाम से बरकत ह़ासिल करनी चाहिये। इस के तीन दर्जे हैं :

(1)....बा'ज़ काम कई बार किये जाते हैं जैसे खाना पीना तो इन का आग़ाज़ तस्मिया से किया जाए कि हु़ज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जो भी अहम काम بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ पढ़ कर शुरूअ़ नहीं किया जाता वोह अधूरा रह जाता है।"[2]

(2)....कई काम ऐसे हैं जो बार बार नहीं किये जाते लेकिन वोह अहम होते हैं। जैसे अ़क़्दे निकाह़ और नसीह़त व मश्वरे की इब्तिदा। इस सूरत में मुस्तह़ब येह है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ह़म्द से शुरूअ़ करे। लिहाज़ा निकाह़ कराने वाला यूं कहे : "اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ وَالصَّلٰوةُ عَلٰى رَسُوْلِ اللّٰهِ زَوَّجْتُكَ اِبْنَتِيْ" क़बूल करने वाला यूं कहे : "اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ وَالصَّلٰوةُ عَلٰى رَسُوْلِ اللّٰهِ قَبِلْتُ النِّكَاحَ" सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن की आ़दत थी कि कोई पैग़ाम भेजते या नसीह़त और मश्वरा करते तो ह़म्दे इलाही से आग़ाज़ करते।

(3)....अ़मल में तकरार तो नहीं होता लेकिन जब किया जाए तो देर पा होता है गोया वोह भी अहम काम होता है। जैसे सफ़र करना, नया घर ख़रीदना, एह़राम बांधना या इस जैसे दीगर आ'माल। लिहाज़ा इन से पहले दो रक्अ़तें पढ़ना मुस्तह़ब है। इस का अदना दर्जा घर से निकलना और दाख़िल होना है क्यूंकि येह भी क़रीबी सफ़र की एक क़िस्म है।

(7)....नमाज़े इस्तिख़ारा :

जो शख़्स किसी काम का इरादा करे लेकिन उस के अन्जाम का इ़ल्म न हो और न ही येह जानता हो कि इस के करने में बेहतरी है या छोड़ने में तो ऐसे शख़्स को रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इस त़रीक़े पर दो रक्अ़त पढ़ने का हुक्म फ़रमाया कि "पहली रक्अ़त में सूरए फ़ातिह़ा और सूरए काफ़िरून, दूसरी में सूरए फ़ातिह़ा और सूरए इख़्लास पढ़े। जब नमाज़ से फ़ारिग़ हो तो यूं दुआ़ मांगे :

---

1 ......صحیح مسلم، کتاب التوبة، باب حدیث توبة کعب بن مالک، الحدیث: ۲۷۶۹، ص ۱۴۸۳، مفهومًا۔

2 ......الجامع الصغیر، حرف الکاف، الحدیث: ۶۲۸۴، ص ۳۹۱، بلفظ "اقطع"۔

کشف الخفاء، حرف الکاف، تحت الحدیث: ۱۹۶۲، ج۲، ص۱۰۹۔

اَللّٰھُمَّ اِنِّیْ اَسْتَخِیْرُکَ بِعِلْمِکَ وَاَسْتَقْدِرُکَ بِقُدْرَتِکَ وَاَسْئَلُکَ مِنْ فَضْلِکَ الْعَظِیْمِ فَاِنَّکَ تَقْدِرُ وَلَا اَقْدِرُ وَتَعْلَمُ وَلَا اَعْلَمُ وَاَنْتَ عَلَّامُ الْغُیُوْبِ اَللّٰھُمَّ اِنْ کُنْتَ تَعْلَمُ اَنَّ ھٰذَا الْاَمْرَ خَیْرٌ لِّیْ فِیْ دِیْنِیْ وَدُنْیَایَ وَعَاقِبَۃِ اَمْرِیْ وَعَاجِلِہٖ وَاٰجِلِہٖ فَاقْدُرْہُ لِیْ وَبَارِکْ لِیْ فِیْہِ ثُمَّ یَسِّرْہُ لِیْ وَاِنْ کُنْتَ تَعْلَمُ اَنَّ ھٰذَا الْاَمْرَ شَرٌّ لِّیْ فِیْ دِیْنِیْ وَدُنْیَایَ وَعَاقِبَۃِ اَمْرِیْ وَعَاجِلِہٖ وَاٰجِلِہٖ فَاصْرِفْنِیْ عَنْہُ وَاصْرِفْہُ عَنِّیْ وَاقْدُرْ لِیَ الْخَیْرَ اَیْنَمَا کَانَ اِنَّکَ عَلٰی کُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ۔

या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मैं तुझ से इस्तिख़ारा करता हूं, तेरे इ़ल्म और तेरी क़ुदरत के साथ त़ाक़त त़लब करता हूं और तुझ से तेरे फ़ज़्ले अ़ज़ीम का सुवाल करता हूं इस लिये कि तू क़ादिर है और मैं क़ादिर नहीं, तू जानता है और मैं नहीं जानता और तू ग़ैबों का जानने वाला है। ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अगर तेरे इ़ल्म में येह काम मेरे लिये बेहतर है मेरे दीन व दुन्या और अन्जामे कार में, इस वक़्त या आयन्दा तू इसे मेरे लिये मुक़द्दर कर दे और आसान कर फिर मेरे लिये इस में बरकत दे और अगर तेरे इ़ल्म में मेरे लिये येह काम बुरा है मेरे दीन व दुन्या और अन्जामे कार में, इस वक़्त या आयन्दा तू इसे मुझ से और मुझे इस से फैर दे और मेरे लिये ख़ैर को मुक़द्दर फ़रमा जहां भी हो बेशक तू सब कुछ कर सकता है।[1]

इसे ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا ने रिवायत किया। आप फ़रमाते हैं : हु़ज़ूर नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हमें तमाम उमूर में इस्तिख़ारा की ता'लीम फ़रमाते जैसे क़ुरआने पाक की सूरत ता'लीम फ़रमाते थे और इरशाद फ़रमाते : जब तुम में से कोई किसी काम का क़स्द करे तो दो रक्अ़त नफ़्ल पढ़े फिर उस काम का नाम ले और (मज़कूरा) दुआ़ मांगे।[2]

(8).....नमाज़े ह़ाजत :

जिस शख़्स पर कोई मुआ़मला तंग हो जाए और उसे दीन व दुन्या के मुआ़मले में किसी ऐसे मुआ़मले की ह़ाजत हो जो उस पर मुश्किल हो तो उसे चाहिये कि येह नमाज़ पढ़े।

---

1 ......صحیح البخاری، کتاب الدعوات، باب الدعاء عندالاستخارۃ، الحدیث:۶۳۸۲، ج۴، ص ۲۱۱، ۲۱۲۔
منحۃ الخالق علی البحر الرائق، کتاب الصلاۃ، باب الوتر والنوافل، ج۲، ص ۹۱۔۹۲، باختصارٍ۔

2 ......صحیح البخاری، کتاب الدعوات، باب الدعاء عندالاستخارۃ، الحدیث:۶۳۸۲، ج۴، ص ۲۱۲، بتغیرِ الفاظٍ۔

दुआ ज़रूर क़बूल हो :

ह़ज़रते सय्यिदुना वुहैब बिन वर्द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से मरवी है कि एक ऐसी दुआ है जो रद्द नहीं की जाती कि बन्दा 12 रक्अ़त नमाज़ पढ़े हर रक्अ़त में सूरए फ़ातिह़ा, आयतुल कुरसी और सूरए इख़्लास पढ़े जब नमाज़ से फ़ारिग़ हो तो सजदा करे, फिर यूं कहे :

سُبۡحٰنَ الَّذِیۡ لَبِسَ الۡعِزَّ وَقَالَ بِہٖ سُبۡحٰنَ الَّذِیۡ تَعَطَّفَ بِالۡمَجۡدِ وَتَکَرَّمَ بِہٖ سُبۡحٰنَ الَّذِیۡ اَحۡصٰی کُلَّ شَیۡءٍ بِعِلۡمِہٖ سُبۡحٰنَ الَّذِیۡ لَا یَنۡبَغِیۡ التَّسۡبِیۡحُ اِلَّا لَہٗ سُبۡحٰنَ ذِی الۡمَنِّ وَالۡفَضۡلِ سُبۡحٰنَ ذِی الۡعِزِّ وَالۡکَرَمِ وَسُبۡحٰنَ ذِی الطَّوۡلِ اَسۡئَلُکَ بِمَعَاقِدِ الۡعِزِّ مِنۡ عَرۡشِکَ وَمُنۡتَھَی الرَّحۡمَۃِ مِنۡ کِتٰبِکَ وَبِاسۡمِکَ الۡاَعۡظَمِ وَجَدِّکَ الۡاَعۡلٰی وَکَلِمَاتِکَ التَّآمَّاتِ الۡعَامَاتِ الَّتِیۡ لَا یُجَاوِزُھُنَّ بَرٌّ وَّلَا فَاجِرٌ اَنۡ تُصَلِّیَ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّعَلٰی اٰلِ مُحَمَّدٍ

या'नी पाक है वोह ज़ात जिस ने इज़्ज़त को लिबास बनाया और इसे पसन्द किया पाक है वोह ज़ात जिस ने बुज़ुर्गी को चादर बनाया और इसे अपनाया। पाक है वोह ज़ात जिस के इह़ात़ए इल्म में हर चीज़ है। पाक है वोह ज़ात जिस के लिये तस्बीह़ है। एह़सान व फ़ज़्ल वाली ज़ात पाक है। इज़्ज़त व करम वाली ज़ात पाक है। ने'मत वाली ज़ात पाक है। मैं तुझ से इज़्ज़त की उन ख़स्लतों के वसीले से सुवाल करता हूं जिन का तअ़ल्लुक़ तेरे अ़र्श से है, तेरी किताब के ज़रीए सुवाल करता हूं जो रह़मत की इन्तिहा है, तेरे इस्मे आ'ज़म, बुलन्द व बरतर शान और उन कामिल व आ़म कलिमात के ज़रीए सुवाल करता हूं कि जिन से कोई नेक और बद तजावुज़ नहीं कर सकता कि तू ह़ज़रते मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और आले मुह़म्मद (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھُم) पर रह़मत नाज़िल फ़रमा।"[1]

फिर अपनी उस ह़ाजत का सुवाल करे जिस में कोई गुनाह न हो तो اِنۡ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ उस की दुआ ज़रूर क़बूल होगी।

ह़ज़रते सय्यिदुना वुहैब बिन वर्द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ फ़रमाते हैं : "हमें येह बात पहुंची है कि कहा जाता था : बे वुक़ूफ़ों को येह दुआ न सिखाओ वरना वोह इस के ज़रीए अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की नाफ़रमानी पर मदद ह़ासिल करेंगे।"

जिसे चार ने'मतें मिलें वोह चार से मह़रूम न होगा :

बा'ज़ हुक्मा फ़रमाते हैं : "जिसे चार चीज़ें अ़त़ा की गई उस से चार चीज़ें न रोकी जाएंगी :

(1)....जिसे शुक्र की ने'मत अ़त़ा की गई उस से मज़ीद ने'मत न रोकी जाएगी।
(2)....जिसे तौबा की तौफ़ीक़ दी गई उस से क़बूलिय्यत न रोकी जाएगी।
(3)....जिसे इस्तिख़ारा की तौफ़ीक़ दी गई उस से भलाई न रोकी जाएगी।
(4)....जिसे मश्वरे की तौफ़ीक़ दी गई उसे सीधी राह से न रोका जाएगा।"

1 ......حلیۃ الاولیاء، وھیب بن الورد، الحدیث:۱۱۷۵۰، ج۸، ص۱۶۸۔

(9)....सलातुत्तस्बीह़ और इस की फ़ज़ीलत :

येह ह़दीषे पाक से षाबित है, किसी वक़्त या सबब के साथ ख़ास नहीं। हफ़्ते या महीने में एक बार पढ़ना मुस्तह़ब है।

ह़ज़रते सय्यिदुना इक्रमा رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत करते हैं कि मदीने के सुल्त़ान, रह़मते आ़लमिय्यान صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने (अपने चचा) ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्बास बिन अ़ब्दुल मुत्त़लिब رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ से इरशाद फ़रमाया : "(ऐ चचा !) क्या मैं तुम को अ़त़ा न करूं ? क्या मैं तुम को बख़्शिश न करूं ? क्या मैं तुम को ऐसी चीज़ न दूं कि जब तुम करो तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम्हारे गुनाह बख़्श देगा। अगला पिछला पुराना नया जो भूल कर किया और जो क़सदन किया छोटा और बड़ा पोशीदा और ज़ाहिर। तुम चार रक्अ़त नमाज़ पढ़ो हर रक्अ़त में सूरए फ़ातिह़ा और सूरत पढ़ो, जब पहली रक्अ़त में क़िराअत से फ़ारिग़ हो जाओ तो ह़ालते क़ियाम में 15 बार سُبْحٰنَ اللّٰہِ وَالْحَمْدُ لِلّٰہِ وَلَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ وَاللّٰہُ اَکْبَر पढ़ो, फिर रुकूअ़ करो और रुकूअ़ में दस बार पढ़ो, फिर रुकूअ़ से सर उठाओ और दस बार पढ़ो, फिर सजदे में जाओ और दस बार पढ़ो, फिर सजदे से सर उठा कर दस बार पढ़ो, फिर सजदे में जाओ और दस बार पढ़ो फिर दूसरे सजदे के बा'द दस बार पढ़ो। यूं हर रक्अ़त में 75 बार तस्बीह़ हुई, चारों रक्अ़तों में इसी त़रह़ करो। अगर येह नमाज़ हर रोज़ एक बार पढ़ सको तो पढ़ो, अगर ऐसा न कर सको तो हर जुमुआ़ में एक बार पढ़ो, अगर येह न कर सको तो महीने में एक बार पढ़ो और अगर येह भी न कर सको तो साल में एक बार पढ़ो।"(1)

सलातुत्तस्बीह़ का उ़म्दा त़रीक़ा :

एक रिवायत में है कि इस नमाज़ के शुरूअ़ में यूं षना पढ़े :

سُبْحٰنَكَ اللّٰهُمَّ وَبِحَمْدِكَ وَتَبَارَكَ اسْمُكَ وَتَعَالٰى جَدُّكَ وَتَقَدَّسَتْ اَسْمَآءُكَ وَلَا اِلٰهَ غَيْرُكَ

फिर क़िराअत से पहले 15 बार तस्बीह़ पढ़े और क़िराअत के बा'द 10 बार तस्बीह़ पढ़े और दीगर अरकान में गुज़श्ता तरतीब से दस दस बार तस्बीह़ पढ़े और दूसरे सजदे के बा'द बैठ कर तस्बीह़ न पढ़े।(2) येह ज़ियादा अच्छा त़रीक़ा है। ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ ने इसे ही इख़्तियार किया है। दो रिवायतों के मजमूए़ से 300 तस्बीह़ात बनती हैं। येह नमाज़ अगर दिन में पढ़े तो एक सलाम से पढ़े और रात में पढ़े

---

1 ......سنن ابی داود، کتاب التطوع، باب صلاۃ التسبیح، الحدیث:۱۲۹۷، ج۲، ص۴۴۔۴۵۔

2 ......قوت القلوب، الفصل الخامس عشر فی ذکر ورد العبد من التسبیح......الخ، ج۱، ص۸۲، بتغیرٍ۔

तो दो सलामों से पढ़ना बेहतर है क्यूंकि ह़दीषे पाक में है कि "रात की नमाज़ दो दो रक्अ़त है।"(1) और अगर तस्बीह़ के बा'द येह कलिमात कहे तो अच्छा है : "لَاحَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْم"(2)

मज़्कूरा नवाफ़िल अह़ादिष से षाबित हैं। इन में से सिवाए तह़िय्यतुल मस्जिद के कोई नमाज़ मकरूह अवक़ात में पढ़ना बेहतर नहीं (अह़नाफ़ के नज़्दीक मकरूह वक़्त में सिवाए नमाज़े जनाज़ा के कोई नमाज़ नहीं पढ़ सकते) **तह़िय्यतुल वुज़ू,** सफ़री और घर से निकलते वक़्त नमाज़ और नमाज़े इस्तिख़ारा मकरूह अवक़ात में जाइज़ नहीं क्यूंकि इस से ताकीद के साथ मन्अ़ किया गया है और येह अस्बाब कमज़ोर हैं, लिहाज़ा येह नवाफ़िल नमाज़े ख़ुसूफ़ व इस्तिसक़ा और तह़िय्यतुल मस्जिद के दर्जे तक नहीं पहुंचते।

मैं ने बा'ज़ बनावटी सूफ़ियों को मकरूह अवक़ात में तह़िय्यतुल वुज़ू पढ़ते देखा है ह़ालांकि येह बईद अज़ क़ियास है क्यूंकि वुज़ू नमाज़ का सबब नहीं बल्कि नमाज़ वुज़ू का सबब है। लिहाज़ा नमाज़ पढ़ने के लिये वुज़ू करना चाहिये न येह कि वुज़ू करने की वजह से नमाज़ पढ़े। हर बे वुज़ू शख़्स जो मकरूह वक़्त में नमाज़ पढ़ना चाहता है वोह बे वुज़ू नहीं पढ़ सकता तो कराहत का कोई मा'ना बाक़ी नहीं रहता। मुनासिब येही है कि वुज़ू करते वक़्त दो रक्अ़त वुज़ू की निय्यत न करे जैसे दो रक्अ़त तह़िय्यतुल मस्जिद की निय्यत की जाती है। बल्कि जब वुज़ू करे दो नफ़्ल पढ़ ले ताकि वुज़ू राइगां न जाए जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना बिलाल رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عَنْہ किया करते थे। येह सिर्फ़ नफ़्ल हैं जो वुज़ू के बा'द पढ़े जाते हैं। ह़ज़रते सय्यिदुना बिलाल رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عَنْہ की रिवायत इस बात पर दलालत नहीं करती कि नमाज़े ख़ुसूफ़ व तह़िय्यतुल मस्जिद की त़रह़ वुज़ू भी (नमाज़ का) सबब है कि दो रक्अ़त वुज़ू की निय्यत की जाए। वुज़ू से नमाज़ की निय्यत करनी चाहिये न की नमाज़ से वुज़ू की निय्यत। येह कैसे दुरुस्त है कि वुज़ू में वोह कहे कि नमाज़ के लिये वुज़ू करता हूं और नमाज़ में कहे मैं वुज़ू की वजह से नमाज़ पढ़ता हूं बल्कि जो शख़्स मकरूह वक़्त में वुज़ू को बेकार होने से बचाना चाहे वोह क़ज़ा की निय्यत करे क्यूंकि मुमकिन है कि उस के ज़िम्मे ऐसी नमाज़ हो जिस में किसी सबब से ख़लल वाक़ेअ़ हो गया हो और मकरूह अवक़ात में क़ज़ा नमाज़ पढ़ना मकरूह नहीं(3) लेकिन नफ़्ल की निय्यत की कोई वजह नहीं।

---

1 ......صحيح مسلم، كتاب صلاة المسافرين وقصرها......الخ، باب صلاة الليل مثنى......الخ، الحديث: ٧٤٩، ص ٣٧٧۔

2 ......قوت القلوب، الفصل الخامس عشر فى ذكر ورد العبد من التسبيح......الخ، ج ١، ص ٨٢۔

3 ....**अह़नाफ़ के नज़्दीक :** मकरूह अवक़ात में क़ज़ा नमाज़ें पढ़ना जाइज़ नहीं। चुनान्चे, दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 1250 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब बहारे शरीअ़त जिल्द अव्वल सफ़ह़ा 702 पर है : क़ज़ा के लिये कोई वक़्त मुअ़य्यन नहीं उ़म्र में जब पढ़ेगा बरियुज़्ज़िमा हो जाएगा मगर तुलूअ़ व ग़ुरूब और ज़वाल के वक़्त कि इन वक़्तों में नमाज़ जाइज़ नहीं।

अवक़ाते मकरूहा में मुमानअ़ते नमाज़ की वुजूहात :

मकरूह अवक़ात में नमाज़ से मन्अ़ करने की तीन वुजूहात हैं :

﴾1﴿.....सूरज की पूजा करने वालों की मुशाबहत से बचना।

﴾2﴿....शयाती़न के मुन्तशिर होने से बचना क्यूंकि हु़ज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "सूरज तुलूअ़ होता है तो इस के साथ शैता़न के सींग होते हैं। जब तुलूअ़ होता है तो शैता़न इस के साथ मिल जाता है और जब बुलन्द हो जाता है तो सींग इस से अलग हो जाते हैं। जब ठहरता (या'नी ज़वाल का वक़्त होता) है फिर इस से मिल जाते हैं, जब ढल जाता है तो अलग हो जाते हैं, जब डूबने के क़रीब होता है तो फिर इस से मिल जाते हैं और जब डूब जाता है तो अलग हो जाता है।"[1]

इस वजह से **इन अवक़ात** में नमाज़ पढ़ने से मन्अ़ किया गया और इस ख़राबी पर **तम्बीह** की गई।

﴾3﴿....राहे आख़िरत के मुसाफ़िर तमाम अवक़ात में नमाज़ पर हमेशगी इख़्तियार करते हैं। मुसलसल एक ही त़रीके़ पर इ़बादत करने से उक्ताहट पैदा होती है। जब एक घड़ी के लिये बन्दे को रोका जाए तो उस की चुस्ती में इज़ाफ़ा होता और इ़बादत में रग़बत पैदा होती है। नीज़ इन्सान को जिस चीज़ से मन्अ़ किया जाए वोह उस का ज़ियादा ह़रीस होता है। इन अवक़ात में इ़बादत से रोकना ज़ियादा त़म्अ़ का सबब बनता है और बन्दा वक़्त ख़त्म होने का मुन्तज़िर रहता है।

लिहाज़ा इन अवक़ात को तस्बीह़ व इस्तिग़फ़ार के साथ ख़ास किया गया ताकि तसलसुल से नमाज़ के बाइ़ष त़बीअ़त उक्ता न जाए और एक क़िस्म से दूसरी क़िस्म की इ़बादत की त़रफ़ मुन्तक़िल होने से त़बीअ़त ख़ुश हो क्यूंकि नई चीज़ में लज़्ज़त व निशात़ होती है जब कि एक ही चीज़ पर मुस्तक़िल अ़मल पैरा रहना भारी पन और उक्ताहट का बाइ़ष बनता है। इसी लिये नमाज़ मह़ज़ रुकूअ़ व सुजूद या क़ियाम का नाम नहीं बल्कि इ़बादात मुख़्तलिफ़ आ'माल और जुदा जुदा अज़्कार का नाम है और इन में से हर अ़मल की त़रफ़ इन्तिक़ाल से दिल नई लज़्ज़त पाता है अगर वोह मुसलसल एक ही चीज़ पर रहे तो जल्द उक्ताहट का शिकार हो जाता है। अवक़ाते मकरूहा में नमाज़ की मुमानअ़त के मुतअ़ल्लिक़ येह अहम उमूर हैं, इस के इ़लावा दीगर असरार भी हैं लेकिन इस पर आगाह होना (आ़म) इन्सानी क़ुव्वत के बस की बात नहीं, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم बेहतर जानते हैं।

---

1 ......سنن النسائی، کتاب المواقیت، باب الساعات التی نهی عن الصلاة فیها، الحدیث: ۵۵۶، ص ۹۹، باختصارٍ۔

जब ऐसी बात है तो इन अहम वुजूह को सिर्फ़ इसी बुन्याद पर छोड़ा जा सकता है कि शरई त़ौर पर अहम अस्बाब पाए जाते हों जैसे नमाज़ की क़ज़ा, नमाज़े इस्तिसक़ा, नमाज़े कुसूफ़ और **तहिय्यतुल मस्जिद** वग़ैरा (इन्दश्शवाफ़ेअ़) लेकिन जो ज़ईफ़ अस्बाब हों तो इन की वजह से इन अहम वुजूह को न छोड़ा जाए। हमारे नज़्दीक येह बात ज़ियादा मुनासिब है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ बेहतर जानता है।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का शुक्र है कि उसी की मदद और हुस्ने तौफ़ीक़ से "**इह्याउल उ़लूमिद्दीन**" के बाब "**नमाज़ के असरार**" की तक्मील हुई। अब اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ "**ज़कात के असरार**" का बयान आएगा।

सब ख़ूबियां उस ख़ुदाए वह़दहू लाशरीक के लिये हैं जो अकेला है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की मख़्लूक़ में से बेहतरीन ज़ात ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم और इन की आल व असह़ाब पर रह़मतें और ख़ूब सलाम हो।

.....ह़दीषे क़ुदसी.....

दा'वते इस्लामी *के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़्बूआ़ 54 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "**नसीह़तों के मदनी फूल ब वसीलए अह़ादीषे रसूल**" सफ़ह़ा 51 ता 52 पर है :* ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ *इरशाद फ़रमाता है :* ***ऐ इब्ने आदम !*** *जिस ने हंस हंस कर गुनाह किये मैं उसे रुला रुला कर जहन्नम में डालूंगा और जो मेरे ख़ौफ़ से रोता रहा मैं उसे ख़ुश कर के जन्नत में दाख़िल करूंगा।*

ऐ इब्ने आदम ! *कितने ग़नी ऐसे हैं जो रोज़े ह़िसाब मोह़ताजी व मुफ़्लिसी की तमन्ना करेंगे ? ....कितने बे रह़म ऐसे हैं जिन्हें मौत ज़लीलो रुस्वा कर देगी ? ...कितनी शीरीं चीज़ें ऐसी हैं जिन्हें मौत तल्ख़ कर देगी ? ...ने'मतों पर कितनी ख़ुशियां ऐसी हैं कि जिन्हें मौत गदला कर देगी ? ...कितनी ख़ुशियां ऐसी हैं जो अपने बा'द त़वील ग़म लाएंगी ?*

(مجموعۃ رسائل الامام الغزالی، المواعظ فی الاحادیث القدسیۃ، ص۵۷۷)

ज़कात के असरार का बयान[1]

सब ख़ूबियां अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं जिस की त़रफ़ से सआ़दत मन्दी व बद बख़्ती है और जिस ने ज़िन्दगी और मौत दी, हंसाया और रुलाया, वुजूद बख़्शा और फ़ना किया, फ़क़ीर व ग़नी बनाया, रोका और अ़त़ा किया, जिस ने ह़ैवान को माद्दए मनविय्या के क़त़रे से पैदा किया, वोह सिफ़ते ग़ना के साथ मख़्लूक़ से मुमताज़ है, फिर अपने बा'ज़ बन्दों को नेकी के साथ ख़ास किया और इन में से जिसे चाहा अपनी ने'मतों से नवाज़ा और ग़नी कर दिया, रिज़्क़ कमाने में नाकाम होने वालों को इम्तिह़ान और आज़माइश के लिये उन बन्दों का मोह़ताज कर दिया फिर ज़कात को दीन की बुन्याद बनाया और इस बात को वाज़ेह़ किया कि उस के बन्दों में से जो पाक हुवा वोह उस के फ़ज़्लो करम से ही पाक हुवा और जिस का माल पाक हुवा वोह भी उस के ग़ना से ही पाक हुवा और मख़्लूक़ के सरदार हिदायत के सूरज ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم पर रह़मत हो और इ़ल्म व तक़्वा के साथ मख़्सूस आप के आलो असह़ाब رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْهِمْ اَجْمَعِیْن पर भी रह़मत हो।

बेशक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने ज़कात को इस्लाम की बुन्यादों में से एक बुन्याद क़रार दिया और दीन की बड़ी अ़लामत नमाज़ के बा'द ज़कात ही का ज़िक्र किया। चुनान्चे, इरशादे ख़ुदावन्दी है :

وَاَقِیْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ (پ ۱، البقرة: ۴۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और नमाज़ क़ाइम रखो और ज़कात दो।*

नीज़ मरवी है कि ह़ुज़ूर नबिय्ये पाक, साह़िबे लौलाक صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : इस्लाम की बुन्याद पांच चीज़ों पर है : इस बात की गवाही देना कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई मा'बूद नहीं और मुह़म्मद صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के बन्दे और रसूल हैं, नमाज़ क़ाइम करना, ज़कात अदा करना, रमज़ान के रोज़े रखना और बैतुल्लाह का ह़ज करना।[2]

ज़कात न देने वालों का अन्जाम :

ज़कात देने के मुआ़मले में कोताही करने वालों को सख़्त वई़द सुनाई। चुनान्चे, इरशादे बारी तआ़ला है :

1.....ज़कात के फ़ज़ाइल व मसाइल की तफ़्सीली मा'लूमात ह़ासिल करने के लिये दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़्बूआ़ 1250 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब **बहारे शरीअ़त** जिल्द 1, ह़िस्सा 5 सफ़ह़ा 866 ता 957 का मुत़ालआ़ कीजिये।

2.....صحیح مسلم، کتاب الایمان، باب بیان ارکان الاسلام......الخ، الحدیث: ۱۶، ص ۲۷-۲۸۔

وَ الَّذِيْنَ يَكْنِزُوْنَ الذَّهَبَ وَ الْفِضَّةَ وَلَا يُنْفِقُوْنَهَا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۙ فَبَشِّرْهُمْ بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ ۙ﴿۳۴﴾ (پ۱۰، التوبۃ:۳۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और वोह कि जोड़ कर रखते हैं सोना और चांदी और उसे अल्लाह की राह में ख़र्च नहीं करते उन्हें ख़ुशख़बरी सुनाओ दर्द नाक अ़ज़ाब की ।

और اِنْفَاق فِیْ سَبِیْلِ اللّٰه का मा'ना ज़कात का ह़क़ अदा करना है ।

ह़ज़रते सय्यिदुना अह़नफ़ बिन क़ैस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : मैं कुछ अहले क़ुरैश के साथ था कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़र गिफ़ारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का वहां से गुज़र हुवा । आप ने फ़रमाया : "ख़ज़ाने जम्अ़ करने वालों को बिशारत दे दो कि उन की पीठों में दाग़ लगाया जाएगा जो उन के पहलूओं से निकलेगा और उन की गुद्दियों में दाग़ लगाया जाएगा जो उन की पेशानियों से ज़ाहिर होगा ।"(1)

एक रिवायत में है कि उन के पिस्तानों के ऊपर रखा जाएगा तो कन्धों की नर्म जगह से ज़ाहिर होगा और कन्धों की नर्म जगह पर रखा जाएगा तो पिस्तानों के ऊपर से थरथराता हुवा निकलेगा ।(2)

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़र गिफ़ारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का'बए मुशर्रफ़ा के साए में तशरीफ़ फ़रमा थे, मैं ख़िदमते अक़्दस में ह़ाज़िर हुवा तो मुझे देख कर इरशाद फ़रमाया : "रब्बे का'बा की क़सम ! वोह ख़सारा पाने वाले हैं ।" मैं ने अ़र्ज़ की : "वोह कौन हैं ?" इरशाद फ़रमाया : "कषरते मालो दौलत वाले मगर वोह लोग जो अपने आगे पीछे, दाएं बाएं इस त़रह़ उस त़रह़ ख़र्च करें और ऐसे लोग बहुत कम हैं और जो ऊंट, गाए और बकरी का मालिक ज़कात अदा नहीं करता तो वोह जानवर बरोज़े क़ियामत पहले से ज़ियादा मोटे ताज़े हो कर आएंगे, उसे अपने सींगों से मारेंगे और खुरों से रौंदेंगे जब आख़िरी गुज़र जाएगा तो पहला दोबारा आ जाएगा यहां तक कि लोगों के दरमियान फ़ैसला हो जाए ।"(3)

जब बुख़ारी व मुस्लिम में इस क़दर शदीद वईद मज़्कूर है तो ज़कात के असरार, इस की ज़ाहिरी व पोशीदा शराइत़ और ज़ाहिरी व बात़िनी मआ़नी को बयान करना दीन के ज़रूरी उमूर में से है । नीज़ उन मसाइल पर इक्तिफ़ा ज़रूरी है जिन की मा'रिफ़त ज़कात देने और लेने वाले के लिये ज़रूरी है । इन उमूर को चार फ़स्लों में बयान किया जाएगा ।

---

1 ......صحیح مسلم، کتاب الزکاۃ، باب فی الکنازین للاموال و التغلیظ علیہم، الحدیث:۹۹۲، ص۴۹۸۔

2 ......صحیح مسلم، کتاب الزکاۃ، باب فی الکنازین للاموال و التغلیظ علیہم، الحدیث:۹۹۲، ص۴۹۷۔

3 ......صحیح مسلم، کتاب الزکاۃ، باب تغلیظ عقوبۃ من لا یؤدی الزکاۃ، الحدیث:۹۹۰، ص۴۹۵،۴۹۶۔

पहली फ़स्ल : ज़कात की अक़्साम और इस के वुजूब के अस्बाब।

दूसरी फ़स्ल : ज़कात के आदाब और इस की ज़ाहिरी व बात़िनी शराइत़।

तीसरी फ़स्ल : ज़कात लेने वाले और इस के मुस्तह़िक़ होने की शराइत़ का बयान और ज़कात लेने का त़रीक़ा।

चौथी फ़स्ल : नफ़्ली सदक़ा और इस की फ़ज़ीलत।

पहली फ़स्ल : ज़कात की अक़्साम और इस के वुजूब के अस्बाब

अपने मुतअ़ल्लिक़ात के ए'तिबार से ज़कात की छे अक़्साम हैं :

(1)....जानवरों की ज़कात (2).....सोने चांदी की ज़कात (3)......माले तिजारत की ज़कात (4).....ख़ज़ाने और मा'दिनिय्यात की ज़कात (5)......ज़मीनी पैदावार की ज़कात और (6)....सदक़ए फ़ित्र।

﴾1﴿....जानवरों की ज़कात :

जानवरों वग़ैरा की ज़कात आज़ाद मुसलमान पर फ़र्ज़ है इस में बालिग़ होना शर्त़ नहीं बल्कि येह बच्चे और पागल के माल में भी वाजिब होती है। येह उस शख़्स के लिये शराइत़ हैं जिस पर ज़कात वाजिब है।(1)

माल में ज़कात फ़र्ज़ होने की शराइत़ :(2)

माल में ज़कात फ़र्ज़ होने की पांच शराइत़ हैं :

(1)....जानवर हो (2)....चरने वाला हो (3).....पूरा साल बाक़ी रहने वाला हो (4).....निसाब पूरा हो और (5).....कामिल त़ौर पर मिल्किय्यत और तसर्रुफ़ में हो।

---

❶....**अह़नाफ़ के नज़्दीक : ज़कात वाजिब** होने के लिये चन्द शर्तें हैं : (1)....मुसलमान होना (2)....बुलूग़ (3)....अ़क़्ल (4)....आज़ाद होना (5)....माल ब क़दरे निसाब उस की मिल्क में होना (6)....पूरे त़ौर पर इस का मालिक हो (7)....निसाब का दैन (क़र्ज़) से फ़ारिग़ होना (8)....निसाब ह़ाजते अस्लिय्या से फ़ारिग़ हो (9)....माले नामी हो। (10)....साल गुज़रना, साल से मुराद क़मरी साल है या'नी चांद के महीनों से बारह महीने। (बहारे शरीअ़त, जि. 1 स. 875 ता 884 मुलख़्ख़सन)

❷....**अह़नाफ़ के नज़्दीक :** ज़कात तीन क़िस्म के माल पर है : (1)....षमन या'नी सोना चांदी (2)....माले तिजारत (3)....साइमा या'नी चराई पर छुटे जानवर। (बहारे शरीअ़त, जि. 1 स. 882)

तफ़्सील :

(1).....**जानवर हो :** लिहाज़ा ऊंट, गाए और बकरी के इ़लावा में ज़कात वाजिब नहीं। घोड़े, ख़च्चर, गधे, हिरन और बकरी के मिलाप से पैदा होने वाले जानवर में ज़कात वाजिब नहीं।

(2).....**चरने वाला हो :** लिहाज़ा जिसे (घर पर) चारा दिया गया उस पर ज़कात वाजिब नहीं और अगर कभी चराया गया और कभी चारा दिया गया और इस में (ख़ुराक वग़ैरा का) ख़र्च ज़ाहिर हो तो भी ज़कात वाजिब न होगी।

(3).....**पूरा साल बाक़ी रहने वाला हो :** जैसा कि हु़ज़ूर नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "किसी माल में उस वक़्त तक कोई ज़कात नहीं जब तक कि इस पर साल न गुज़र जाए।"[1]

जानवरों के पैदा होने वाले बच्चे इस शर्त़ से ख़ारिज हैं क्यूंकि इन पर माल का हु़क्म सादिक़ आता है और इन के उसूल पर साल गुज़रने से इन पर भी ज़कात फ़र्ज़ होगी और साल के दौरान जब कभी माल बेच दे या किसी को हिबा कर दे तो साल पूरा नहीं होगा। (या'नी वोह जानवर ह़िसाब में शुमार न होगा)

(4).....**कामिल त़ौर पर मिल्किय्यत में हो :** लिहाज़ा रहन रखे हुए जानवरों में भी ज़कात वाजिब है क्यूंकि उस ने अपने आप को खुद इस में तसर्रुफ़ से रोका हुवा है।[2] गुमशुदा या ग़सब शुदा जानवर में ज़कात फ़र्ज़ नहीं। अलबत्ता अगर वोह अपने पूरे मनाफ़ेअ़ के साथ वापस आ जाए तो वापसी पर गुज़श्ता सालों की ज़कात भी देना होगी। अगर उस पर इतना क़र्ज़ है जो उस के तमाम माल को घेरे हुए है तो उस पर कोई ज़कात वाजिब न होगी क्यूंकि वोह इस के सबब ग़नी शुमार न होगा इस लिये कि ग़ना उस माल से होता है जो ह़ाजत से बच जाए।

---

❶......سنن ابی داود، کتاب الزکاۃ، باب فی زکاۃ السائمۃ، الحدیث:۱۵۷۳، ج۲، ص۱۴۴۔

❷....**अह़नाफ़ के नज़दीक :** शै मरहून (जो चीज़ गिरवी रखी गई है उस) की ज़कात न मुरतहिन (या'नी जिस के पास चीज़ गिरवी रखी गई हो उस) पर है न राहिन (गिरवी रखने वाले) पर, मुरतहिन तो मालिक ही नहीं और राहिन की मिल्के ताम नहीं कि इस के क़ब्ज़े में नहीं और बा'दे रहन छुड़ाने के भी इन बरसों की ज़कात वाजिब नहीं।
(बहारे शरीअ़त, जि. 1 स. 877)

(5).....**निसाब पूरा हो :** (निसाब की तफ़्सील दर्जे ज़ैल है)

ऊंट की ज़कात :

पांच से कम ऊंटों में ज़कात वाजिब नहीं, पांच ऊंटों में **जिज़्आ़**[1] भेड़ होगी या **षनिय्या** (या'नी बकरी) जो तीसरे साल में दाख़िल हो,[2] दस ऊंटों में दो बकरियां, पन्दरह ऊंटों में तीन बकरियां, बीस ऊंटों में चार बकरियां होगी और पच्चीस ऊंटों में एक बिन्ते **मख़ाज़**[3] लिया जाएगा और अगर इस के माल में बिन्ते मख़ाज़ न हो तो एक इब्ने लबून[4] लिया जाएगा अगर्चे वोह दो साल का मादा बच्चा ख़रीद सकता हो। छत्तीस (से पैंतालीस तक) में एक बिन्ते लबून (या'नी दो साला ऊंटनी) ली जाएगी, छियालीस (से साठ तक) हों तो एक **हिक़्क़ा**[5] ली जाएगी, इकसठ (से पछत्तर तक) हों तो एक जिज़्आ़ ली जाएगी,[6] छहत्तर (से नव्वे तक) हों तो **दो बिन्ते लबून** ली जाएंगी, इक्यानवे (से एक सो बीस तक) हों तो दो हिक़्क़ा ली जाएंगी, एक सो इक्कीस हो जाएं तो तीन बिन्ते लबून ली जाएंगी और जब एक सो तीस हो जाएं तो हिसाब ठहर जाएगा फिर हर पचास में एक हिक़्क़ा और हर चालीस में एक बिन्ते लबून होगी।[7]

---

❶....**जिज़्आ़ :** जो एक साल की हो कर दूसरे साल में दाख़िल हो जाए (या'नी एक साला भेड़)। अज़ मुसन्निफ़

❷....**अह़नाफ़ के नज़्दीक :** ज़कात में जो बकरी दी जाए वोह साल भर से कम की न हो। बकरी दें या बकरा, इस का इख़्तियार है। (ردالمحتار،کتاب الزکاۃ،باب نصاب الابل،ج۳،ص۲۳۸)

❸....**बिन्ते मख़ाज़ :** ऊंट का वोह मादा बच्चा जो दूसरे साल में दाख़िल हो चुका हो।

❹....**इब्ने लबून :** ऊंट का वोह नर बच्चा जो तीसरे साल में दाख़िल हो चुका हो।

❺....**हिक़्क़ा :** वोह ऊंटनी जो चौथे साल में दाख़िल हो चुकी हो।

❻....**जिज़्आ़ :** वोह ऊंटनी है जो पांचवें साल में दाख़िल हो चुकी हो। अज़ मुसन्निफ़

❼....**अह़नाफ़ के नज़्दीक :** पांच ऊंट से कम में ज़कात वाजिब नहीं और जब पांच या पांच से ज़ियादा हों, मगर पच्चीस से कम हों तो हर पांच में एक बकरी वाजिब है या'नी पांच हों तो एक बकरी, दस हो तो दो। وعلی ھذالقیاس और अगर पच्चीस ऊंट हों तो एक बिन्ते मख़ाज़, पैंतीस तक येही हुक्म है या'नी वोही बिन्ते मख़ाज़ देंगे। छत्तीस से पैंतालीस तक में एक बिन्ते लबून, छियालीस से साठ तक में हिक़्क़ा, इकसठ से पछत्तर तक जिज़्आ़, छहत्तर से नव्वे तक में दो बिन्ते लबून, इकानवे से एक सो बीस तक में दो हिक़्क़ा. इस के बा'द एक सो पैंतालीस तक दो हिक़्क़ा और हर पांच में एक बकरी। मषलन एक सो पच्चीस में दो हिक़्क़ा एक बकरी और एक सो तीस में दो हिक़्क़ा दो बकरियां। وعلی ھذالقیاس (बहारे शरीअ़त, जि. 1 स. 893)

नोट : तफ़्सीली मा'लूमात के लिये बहारे शरीअ़त के इसी मक़ाम का मुत़ालआ़ कीजिये।

गाए की ज़कात :

तीस से कम गायों में ज़कात वाजिब नहीं, तीस गायों में एक तबीअ़,[1] चालीस में एक मुसिन्ना[2] और साठ में दो तबीअ़, फिर ह़िसाब रुक जाएगा और अब हर चालीस में एक मुसिन्ना और हर तीस में एक तबीअ़ होगी ।[3]

बकरी की ज़कात :

चालीस से कम बकरियों में ज़कात वाजिब नहीं, बकरियां चालीस (से 120 तक) हों तो एक जिज़्आ़ भेड़ होगी या बकरी का एक षनिय्या होगा, 121 (से 200 तक) में दो बकरियां होंगी, 201 (से 399 तक) में तीन बकरियां होंगी और 400 में चार बकरियां होंगी, फिर ह़िसाब रुक जाएगा और अब हर 100 में एक बकरी होगी ।

निसाब में शरीक मालिकों की ज़कात की सूरत :

अगर एक निसाब में दो शख़्स शरीक हों तो उन की ज़कात एक मालिके निसाब की ज़कात की त़रह़ है या'नी जब दो आदमियों की मुश्तरका 40 बकरियां हों तो इन में एक बकरी ज़कात वाजिब होगी, अगर तीन आदमियों की मुश्तरका 120 बकरियां हों तो सब पर एक ही बकरी ज़कात वाजिब होगी ।[4] पड़ोस की शिर्कत हिस्सों की शिर्कत की त़रह़ है लेकिन शर्त़ येह है कि इन का बाड़ा एक हो और वोह एक जगह पानी पियें, एक ही जगह इन का दूध दोहा जाए और इन की चरागाह एक हो और नर का मादा को जुफ़्ती करना एक वक़्त में हो और दोनों मालिक उन में से हों जिन पर ज़कात वाजिब हो । ज़िम्मी और मुकातब के साथ शिर्कत का ए'तिबार नहीं । बा'ज़ अवक़ात ऊंट उ़म्र में कम होता है इस में कोई ह़रज नहीं बशर्तेकि वोह बिन्ते मख़ाज़ से कम न हो और उ़म्र की कमी को यूं पूरा किया जाएगा कि एक साल की कमी को दो

1...**तबीअ़ :** वोह गाए जो दूसरे साल में दाख़िल हो चुकी हो ।

2...**मुसिन्ना :** जो तीसरे साल में दाख़िल हो चुकी हो । अज़ मुसन्निफ़

3...**अह़नाफ़ के नज़्दीक :** गाए भैंस की ज़कात में इख़्तियार है कि नर लिया जाए या मादा, मगर अफ़्ज़ल येह है कि गाएं ज़ियादा हों तो बछ्या और नर ज़ियादा हों तो बछड़ा । (बहारे शरीअ़त, जि. 1 स. 896)

4...**अह़नाफ़ के नज़्दीक :** मवेशी में शिर्कत से ज़कात पर कुछ अषर नहीं पड़ता, ख़्वाह वोह किसी क़िस्म की हो । अगर हर एक का हिस्सा बक़दरे निसाब है तो दोनों पर पूरी पूरी ज़कात वाजिब और एक का हिस्सा बक़दरे निसाब है दूसरे का नहीं तो इस पर वाजिब है, उस पर नहीं मषलन एक की चालीस बकरियां हैं दूसरे की तीस तो चालीस वाले पर एक बकरी तीस वाले पर कुछ नहीं और अगर किसी की बक़दरे निसाब न हों मगर मजमूआ़ बक़दरे निसाब है तो किसी पर कुछ नहीं । (बहारे शरीअ़त, जि. 1 स. 900)

बकरियों या बीस दिरहम से पूरा किया जाएगा और दो साल की कमी को चार बकरियों या चालीस दिरहम से पूरा किया जाएगा और उ़म्र में ज़ियादा भी दे सकते हैं मगर वोह जिज़्आ़ से ज़ियादा बड़ा न हो और जो ज़ियादा दिया इस की कमी बैतुल माल के कारन्दों से ली जाएगी। अगर बा'ज़ माल सह़ीह़ हो तो ज़कात में बीमार जानवर नहीं लिया जाएगा अगर्चे एक ही सह़ीह़ हो। अच्छे माल में से अच्छा माल और ख़राब में से ख़राब माल लिया जाएगा और माल से खाने के लिये तय्यार किया हुवा जानवर, बच्चे जनने वाला जानवर, दूध देने वाला जानवर, सांड और क़ीमती माल न लिया जाए। (बल्कि दरमियानी क़िस्म का लिया जाए)

﴾2﴿....ज़मीनी पैदावार की ज़कात :[1]

हर उगने वाली चीज़ जिसे बत़ौरे ग़िज़ा इस्ति'माल किया जाए जब आठ सो सैर यानी बीस मन हो तो उस में उ़श्र वाजिब है।[2] इस से कम में नहीं, फलों और रूई में उ़श्र नहीं, लेकिन उस ग़ल्ले में उ़श्र है जिसे बत़ौरे ग़िज़ा इस्ति'माल करते हैं। ख़ुश्क खजूर (छूहारों) और किश्मिश में ज़कात वाजिब है। ख़ुश्क खजूरों और किश्मिश जब कि तर खजूर और अंगूर न हो तो उस पर उ़श्र वाजिब होने में बीस मन का ए'तिबार है और वज़्न का ए'तिबार ख़ुश्क होने के बा'द होगा।

ज़मीनी पैदावार में शरीक मालिकों के उ़श्र की सूरत :

जब ह़िस्सों में शिर्कत हो तो दो शरीकों के माल को एक दूसरे के साथ मिला कर पूरा किया जाएगा जैसे तमाम शुरका के वुरषा में मुश्तरका बाग़ में आठ सो सैर या'नी बीस मन किश्मिश हो तो तमाम पर उन के ह़िस्सों के ए'तिबार से दो मन किश्मिश वाजिब होगी और इस में पड़ोस की शिर्कत का ए'तिबार नहीं। गन्दुम का निसाब जव से पूरा नहीं किया जाएगा। अलबत्ता जव का निसाब सुल्त (या'नी छिलके के बिग़ैर जव जिसे पैग़म्बरी जव कहते हैं) से पूरा किया जाएगा क्यूंकि येह इसी की क़िस्म है।

---

❶ ....ज़मीनी पैदावार की ज़कात के मसाइल तफ़्सीलन जानने के लिये दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 1250 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब बहारे शरीअ़त जिल्द 1, ह़िस्सा 5, सफ़ह़ा 914 ता 921 का और 48 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल **"उ़श्र के अह़काम"** नामी रिसाले का मुत़ालआ़ कीजिये।

❷ ....**अह़नाफ़ के नज़्दीक :** इस में निसाब भी शर्त़ नहीं। एक साअ़ भी पैदावार हो तो उ़श्र (या'नी दसवां ह़िस्सा) वाजिब है। (बहारे शरीअ़त, जि. 1 स. 917)

ज़मीनी पैदावार में उ़श्र कब वाजिब होगा ?

ज़मीनी पैदावार में उ़श्र (या'नी दसवां हि़स्सा) इस सूरत में वाजिब होगा जब कि वोह फ़स्ल जारी पानी या नाली से सैराब होती हो और अगर उसे ऊंट या कुंवें से डोलों के ज़रीए सैराब किया जाए तो निस्फ़ उ़श्र या'नी बीसवां हि़स्सा वाजिब होगा और अगर दोनों त़रीके़ जम्अ़ हो जाएं (या'नी बारिश और कुंवें का पानी वग़ैरा) तो ग़ालिब का ए'तिबार किया जाएगा। नीज़ खजूर, ख़ुश्क किश्मिश और ख़ुश्क ग़ल्ले से भूसा वग़ैरा दूर करने के बा'द उ़श्र लिया जाए, तर खजूर और अंगूर से उश्र न लिया जाए। अलबत्ता अगर दरख़्तों पर कोई आफ़त आ जाए और फ़ल पकने से पहले दरख़्तों को काटना ज़रूरी हो तो तर खजूरों से भी उ़श्र लिया जाए माप कर नव हि़स्से मालिक को और एक हि़स्सा फ़की़र को दिया जाए और येह तक़्सीम हमारे इस क़ौल के मुख़ालिफ़ नहीं कि "तक़्सीम बैअ़ है।" (या'नी जब कच्चे फल की ख़रीदो फ़रोख़्त जाइज़ नहीं तो तक़्सीम किस त़रह़ जाइज़ होगी) बल्कि ह़ाजत के तह़्त इस की इजाज़त दी जाएगी।

उ़श्र वाजिब होने का वक़्त :

उ़श्र वाजिब होने का वक़्त येह है कि फलों में सलाहि़य्यत ज़ाहिर हो जाए और दाना सख़्त हो जाए जब कि उ़श्र की अदाएगी ख़ुश्क होने के बा'द होगी।

﴾3﴿.....सोने चांदी की ज़कात :

चांदी का निसाब : ख़ालिस चांदी जब मक्कए मुकर्रमा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا के वज़्न से 200 दिरहम (या'नी साढ़े बावन तोले चांदी) पर साल पूरा हो जाए तो इस में पांच दिरहम ज़कात वाजिब होगी और येह चालीसवां हि़स्सा है और ज़ाइद में इस के हि़साब से ज़कात होगी अगर्चे एक दिरहम हो।(1)

सोने का निसाब : बीस मिषक़ाल (या'नी साढ़े सात तोले) सोना है और येह भी मक्कए मुकर्रमा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا के वज़्न से है इस में भी चालीसवां हि़स्सा है और जो ज़ियादा हो इस में इस के हि़साब से ज़कात होगी और अगर निसाब से कुछ भी कम हो तो ज़कात वाजिब नहीं। जिस के पास खोट मिले दराहिम हों तो उस पर भी ज़कात वाजिब है जब कि इस

---

❶....**अह़नाफ़ के नज़दीक :** निसाब से ज़ियादा माल है तो अगर येह ज़ियादती निसाब का पांचवां हि़स्सा है तो इस की ज़कात भी वाजिब है, मषलन दो सो चालीस दिरहम हो तो ज़कात में छे दिरम वाजिब। وعلی ھذا القیاس

(बहारे शरीअ़त, जि. 1 स. 903 मुलख़्ख़सन)

में ख़ालिस चांदी की भी इतनी मिक़्दार मौजूद हो। सोने की डली, ममनूअ़ ज़ेवरात जैसे सोने चांदी के बरतन और मर्दों के लिये सोने की काठियों में ज़कात वाजिब है और जाइज़ (या'नी औ़रतों के इस्ति'माली) ज़ेवरात में ज़कात वाजिब नहीं।[1] अगर क़र्ज़ किसी ऐसे शख़्स पर हो जो देने पर क़ादिर हो (लेकिन देने में टालम टोल कर रहा हो) तो इस क़र्ज़ पर भी ज़कात है लेकिन क़र्ज़ वुसूल करने के बा'द वाजिब होगी और अगर क़र्ज़ की अदाएगी का वक़्त मुक़र्रर हो तो मुद्दत पूरी होने पर ज़कात वाजिब होगी।

﴾4﴿.....माले तिजारत की ज़कात :

येह भी सोने चांदी की ज़कात की त़रह़ है। अगर रक़म निसाब के बराबर हो तो साल उस वक़्त से शुरूअ़ होगा जब वोह उस रक़म का मालिक हुवा जिस से उस ने सामान ख़रीदा और अगर रक़म निसाब से कम हो या उस ने सामान के बदले तिजारत की निय्यत से कोई चीज़ ख़रीदी तो ख़रीदारी के वक़्त से साल की इब्तिदा होगी और मुल्क में राइज सिक्कों से ज़कात अदा की जाएगी और उसी के साथ क़ीमत लगाई जाएगी अगर किसी सिक्के से सामान ख़रीदा और इस से निसाब कामिल है तो अपने शहर के सिक्के के बजाए इसी से क़ीमत लगाना ज़ियादा बेहतर है।

जिस ने अपने ज़ाती माल में तिजारत की निय्यत की तो मह़ज़ निय्यत से साल शुरूअ़ न होगा जब तक कि इस से कोई चीज़ न ख़रीदे। साल पूरा होने से पहले तिजारत की निय्यत ख़त्म हो जाए तो ज़कात साक़ित़ हो जाएगी लेकिन बेहतर येह है कि वोह उस साल की ज़कात अदा करे।

साल के आख़िर में ह़ासिल होने वाले मनाफ़ेअ़ पर इस सूरत में ज़कात वाजिब होगी जब कि अस्ल माल पर साल पूरा हो जाए, इस के लिये अलग साल शुरूअ़ न किया जाए जैसे जानवरों के बच्चों में नहीं करते। ज़रगरों (सुनारों) के दरमियान जारी रहने वाले बाहमी तबादलों से इन के माल में साल ख़त्म नहीं होता जिस त़रह़ बाक़ी तिजारतों में ख़त्म नहीं होता।

---

❶....**अह़नाफ़ के नज़्दीक :** सोना चांदी जब कि बक़दरे निसाब हों तो इन की ज़कात चालीसवां ह़िस्सा है, ख़्वाह वोह वैसे ही (डली की सूरत में) हों या इन के सिक्के जैसे रूपे अशरफ़ियां या इन की कोई चीज़ बनी हुई हो ख़्वाह इस का इस्ति'माल जाइज़ हो जैसे औ़रत के लिये ज़ेवर, मर्द के लिये चांदी की एक नग की एक अंगूठी साढ़े चार माशे से कम की या सोने चांदी के बिला ज़न्जीर के बटन या इस्ति'माल ना जाइज़ हो जैसे चांदी सोने के बरतन, घड़ी, सुर्मादानी, सलाई कि इन का इस्ति'माल मर्द व औ़रत सब के लिये ह़राम है या मर्द के लिये सोने चांदी का छल्ला या ज़ेवर या सोने की अंगूठी या साढ़े चार माशे से ज़ियादा चांदी की अंगूठी या चन्द अंगूठियां या कई नग की एक अंगूठी, ग़रज़ जो कुछ हो ज़कात सब की वाजिब है। (बहारे शरीअ़त, जि. 1 स. 903)

माले मुज़ारबत[1] के नफ़्अ़ में मुज़ारिब पर ज़कात वाजिब होगी अगर्चे अभी तक़्सीम न हुवा हो क़ियास का तक़ाज़ा येही है।

﴿5﴾.....दफ़ीनों और मा'दनिय्यात की ज़कात :

दफ़ीने की ज़कात : उस माल को रिकाज़ कहते हैं जो ज़मानए जाहिलियत में कहीं दफ़्न किया गया और ऐसी जगह से मिला जिस पर इस्लाम में मिल्क जारी नहीं हुई तो उस ख़ज़ाने को पाने वाले पर सोने चांदी की सूरत में पांचवा हिस्सा लाज़िम होगा और साल पूरा होने का ए'तिबार न होगा और बेहतर तो येह है कि इसी त़रह़ निसाब का ए'तिबार भी न हो क्यूंकि पांचवां हिस्सा वाजिब करने में माले ग़नीमत के साथ मुशाबहत पाई जाती है और निसाब का ए'तिबार करना भी बईद अज़् क़ियास नहीं क्यूंकि इस के इस्ति'माल की जगह वोही है जो ज़कात की है इसी लिये सह़ीह़ क़ौल के मुत़ाबिक़ दफ़ीने को सोने चांदी के साथ ख़ास किया जाएगा।

मा'दनिय्यात की ज़कात : सोने चांदी के इलावा मा'दनिय्यात पर ज़कात नहीं।[2] दो अक़्वाल में से सह़ीह़ क़ौल के मुत़ाबिक़ सोने चांदी को भट्टी से गुज़ारने और ख़ालिस करने के बा'द इन में से चालीसवां हिस्सा लिया जाएगा और इसी बुन्याद पर निसाब मो'तबर होगा। साल पूरा होने के मुतअ़ल्लिक़ दो क़ौल हैं एक क़ौल के मुत़ाबिक़ ख़ुम्स वाजिब है इस बुन्याद पर निसाब का ए'तिबार न होगा। निसाब के मुतअ़ल्लिक़ भी दो क़ौल हैं ज़ियादा मुनासिब येह है (और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ बेहतर जानता है) कि वाजिब मिक़्दार में माले तिजारत की ज़कात से मिला दें क्यूंकि येह भी एक क़िस्म की कमाई है और साल के ए'तिबार से उ़श्री चीज़ों के साथ मिला दें इस त़रह़ साल का ए'तिबार न होगा क्यूंकि येह बिल्कुल नर्मी का बरताव है। अलबत्ता ! उ़श्री चीज़ों की त़रह़ निसाब का ए'तिबार किया जाएगा लेकिन एह़तियात़ इस में है कि क़लील व कषीर मिक़्दार में पांचवां हिस्सा निकाला जाए और शुबए इख़्तिलाफ़ से बचते हुए सोने चांदी के ऐन से निकालें क्यूंकि येह गुमान तआ़रुज़ के क़रीब है और तआ़रुज़े इश्तिबाह के सबब एक बात पर फ़तवा देना मुमकिन नहीं।

---

❶....**मुज़ारबत :** तिजारत में एक क़िस्म की शिर्कत है कि एक जानिब से माल हो और एक जानिब से काम और मुनाफ़ेअ़ में दोनों शरीक। माल देने वाले को रब्बुल माल और काम करने वाले को मुज़ारिब और मालिक ने जो दिया उसे रासुल माल कहते हैं। (माख़ूज़ अज़ : बहारे शरीअ़त, जि. 3 स. 1)

❷....**अह़नाफ़ के नज़्दीक :** कान से लोहा, सीसा, तांबा, पीतल, सोना, चांदी निकले, इस में ख़ुम्स (पांचवां हिस्सा) लिया जाएगा और बाक़ी पाने वाले का है। (अलबत्ता) फ़ीरोज़ा व याक़ूत व ज़मरुद व दीगर जवाहिर और सुर्मा, फटकरी, चूना, मोती में और नमक वग़ैरा बहने वाली चीज़ों में ख़ुम्स नहीं। (बहारे शरीअ़त, जि. 1 स. 912, मुलख़्ख़सन)

﴾6﴿.....सदक़ए फ़ित्र :

सदक़ए फ़ित्र ज़बाने मुस्त़फ़ा से हर उस मुसलमान पर वाजिब है जिस के पास अपने और अपने ज़ेरे किफ़ालत लोगों के लिये ईदुल फ़ित्र के दिन और रात के खाने से एक साअ़ ज़ाइद उन चीज़ों में से हो जिसे बत़ौरे ख़ुराक इस्ति'माल किया जाता है[1] और रसूले अकरम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के साअ़ से इस का ह़िसाब लगाया जाएगा[2] जो कि दो सेर और सेर का तिहाई ह़िस्सा है।[3] उस चीज़ की जिन्स से दे जिसे वोह ख़ुद खाता है या इस से अफ़्ज़ल चीज़ से दे। अगर वोह गन्दुम खाता है तो सदक़ए फ़ित्र में जव देना जाइज़ नहीं।[4] अगर मुख़्तलिफ़ अनाज खाता है तो इन में से बेहतर को इख़्तियार करे बहर ह़ाल जिस से दे अदा हो जाएगा और सदक़ए फ़ित्र की तक़्सीम अम्वाल की ज़कात की तक़्सीम की त़रह़ है। लिहाज़ा इस में तमाम मसारिफ़े ज़कात (या'नी जिन्हें ज़कात दी जाती है) को घेरना ज़रूरी है। सदक़ए फ़ित्र में आटा या सत्तू देना जाइज़ नहीं।[5]

मुसलमान मर्द पर अपनी बीवी-बच्चों,[6] गुलामों और हर उस क़रीबी रिश्तेदार का सदक़ए फ़ित्र वाजिब है जो इस के ज़ेरे किफ़ालत हो या'नी इस के मां बाप और अवलाद में से जिन का नफ़्क़ा इस पर वाजिब है उन की त़रफ़ से सदक़ए फ़ित्र देगा[7] कि ह़ुज़ूर नबिय्ये पाक साह़िबे लौलाक صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जो तुम्हारे ज़ेरे किफ़ालत हैं उन का सदक़ए फ़ित्र अदा करो।"[8]

---

❶ ....**अह़नाफ़ के नज़्दीक :** सदक़ए फ़ित्र के वुजूब की शराइत़ दर्जे ज़ैल हैं : **सदक़ए फ़ित्र** हर मुसलमान आज़ाद मालिके निसाब पर जिस की निसाब ह़ाजते अस्लिय्या से फ़ारिग़ हो वाजिब है। इस में आ़क़िल बालिग़ और माले नामी होने की शर्त़ नहीं। (बहारे शरीअ़त, जि. 1 स. 935)

❷ ......صحیح مسلم، کتاب الزکاۃ، باب زکاۃ الفطر علی المسلمین......الخ، الحدیث:۹۸۴، ص ۴۸۹۔

❸ .... दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 1548 सफ़्ह़ात पर मुश्तमिल किताब फ़ैज़ाने सुन्नत जिल्द अव्वल सफ़्ह़ा 1321 पर है : "अह़नाफ़ के नज़्दीक सदक़ए फ़ित्र की मिक़्दार एक सो पछत्तर रूपे अठन्नी भर" वज़्न गैहूं या इस का आटा या इतने गैहूं की क़ीमत एक सदक़ए फ़ित्र की मिक़्दार है। (या'नी 2 किलो ग्राम से 80 ग्राम कम)

❹....**अह़नाफ़ के नज़्दीक :** जव वग़ैरा देना भी जाइज़ है। (माख़ूज़ अज़ : बहारे शरीअ़त, जि. 1 स. 939)

❺....**अह़नाफ़ के नज़्दीक :** गैहूं और जव के देने से इन का आटा देना अफ़्ज़ल है। (बहारे शरीअ़त, जि. 1 स. 939)

❻ ....**अह़नाफ़ के नज़्दीक :** अपनी औ़रत और औलाद आ़क़िल बालिग़ का फ़ित्रा उस के ज़िम्मे नहीं अगर्चे अपाहज हो, अगर्चे उस के नफ़्क़ात इस के ज़िम्मे हों। (बहारे शरीअ़त, जि. 1 स. 938)

❼....**अह़नाफ़ के नज़्दीक :** मां बाप, दादा दादी, नाबालिग़ भाई और दीगर रिश्तेदारों का फ़ित्रा उस के ज़िम्मे नहीं और बिग़ैर हुक्म अदा भी नहीं कर सकता। (बहारे शरीअ़त, जि. 1 स. 938)

❽......السنن الکبری للبیھقی، کتاب الزکاۃ، باب اخراج زکاۃ الفطر عن نفسه......الخ، الحدیث:۸۲۸۲، ج۴، ص ۲۷۲، مفھومًا۔

मुश्तरक ग़ुलाम का सदक़ए फ़ित्र दोनों शरीकों पर वाजिब है[1] लेकिन काफ़िर ग़ुलाम का सदक़ए फ़ित्र वाजिब नहीं। अगर ज़ौजा अपनी त़रफ़ से अदा करे तो अदा हो जाएगा और शोहर उस की इजाज़त के बिग़ैर भी अदा कर सकता है। अगर कोई शख़्स बा'ज़ का नफ़्क़ा अदा कर सकता हो तो बा'ज़ का ही अदा कर दे और इन में से ज़ियादा ह़क़दार वोह हैं जिन का नफ़्क़ा ज़ियादा लाज़िम है। चुनान्चे, हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने बच्चों के नफ़्क़े को बीवी के नफ़्क़े पर और बीवी के नफ़्क़े को ख़ादिम के नफ़्क़े पर मुक़द्दम फ़रमाया है।[2]

पस येह वोह फ़िक़ही अह़काम हैं कि जिन का जानना मालदार शख़्स के लिये ज़रूरी है और कभी इन मसाइल के इलावा नादर वाक़िआत भी पेश आते हैं तो ऐसे वाक़िआत के पेश आने पर उ़-लमा से पूछने में ह़रज नहीं लेकिन इन मसाइल को याद रखना चाहिये।

दूसरी फ़स्ल : ज़कात की अदाएगी और इस की ज़ाहिरी व बात़िनी शराइत़

जान लीजिये कि ज़कात अदा करने वाले पर पांच बातों की रिआ़यत ज़रूरी है :

﴾1﴿.....निय्यत करना :

या'नी अपने दिल से फ़र्ज़ ज़कात की निय्यत करे मगर उस पर माल को मुतअ़य्यन करना लाज़िम नहीं। अगर उस का माल ग़ाइब हो तो यूं कहे : "येह मेरे ग़ाइब माल की ज़कात है अगर वोह सह़ीह़ सलामत है वरना नफ़्ली सदक़ा हो जाए" येह कहना जाइज़ है। क्यूंकि अगर वोह तसरीह़ न करता और मुत़लक़न कहता तो भी इसी त़रह़ होता और वली की निय्यत पागल और बच्चे की निय्यत के क़ाइम मक़ाम है। जो शख़्स ज़कात अदा न करे (और बादशाहे इस्लाम उस से जबरन ले ले) तो बादशाह की निय्यत उस की निय्यत के क़ाइम मक़ाम हो जाती है लेकिन येह ज़ाहिरी दुन्यवी हुक्म के ए'तिबार से है या'नी दुन्या में उस से मुत़ालबा न हो, आख़िरत के ए'तिबार से नहीं बल्कि उस की ज़िम्मेदारी बाक़ी रहेगी यहां तक कि वोह नए सिरे से ज़कात अदा करे। अगर कोई शख़्स ज़कात की अदाएगी के लिये किसी को वकील बनाए और वकील बनाते हुए निय्यत कर ले या किसी को निय्यत का वकील करे तो काफ़ी है क्यूंकि निय्यत का वकील बनाना भी निय्यत ही है।

---

❶....**अह़नाफ़ के नज़दीक :** मुश्तरक ग़ुलाम का सदक़ए फ़ित्र किसी पर वाजिब नहीं। चुनान्चे, बहारे शरीअ़त में आ़लमगीरी के ह़वाले से है कि दो या चन्द शख़्सों में ग़ुलाम मुश्तरक है तो इस का फ़ित्रा किसी पर नहीं।

(बहारे शरीअ़त, जि. 1 स. 937)

❷......سنن ابی داود، کتاب الزکاۃ، باب فی صلاۃ الرحم، الحدیث:۱۶۹۱، ج۲، ص۱۸۴، مفہومًا۔

﴾2﴿.....साल पूरा होने पर अदाएगी में जल्दी करना :

साल पूरा होने पर ज़कात जल्दी अदा कर दे। सदक़ए फ़ित्र में ईदुल फ़ित्र के दिन से ताख़ीर न करे और सदक़ए फ़ित्र वाजिब होने का वक़्त माहे रमज़ान के आख़िरी दिन के ग़ुरूबे आफ़्ताब से शुरूअ़ होता है[1] और इसे जल्दी अदा करने का वक़्त पूरा माहे रमज़ान है। जो शख़्स क़ुदरत के बा वुजूद अपने माल की ज़कात देने में ताख़ीर करे तो वोह गुनहगार है लेकिन इस से ज़कात साक़ित़ न होगी अगर्चे उस का माल ज़ाएअ़ हो जाए और क़ादिर होने से मुराद येह है कि उसे मुस्तह़िक़्क़े ज़कात मिल जाए और अगर उस ने मुस्तह़िक़ न मिलने के सबब ज़कात देने में ताख़ीर की और माल ज़ाएअ़ हो गया तो उस से ज़कात साक़ित़ हो जाएगी। निसाब मुकम्मल होने और साल गुज़रने के बा'द जल्दी ज़कात देना जाइज़ है।[2] और दो साल की ज़कात जल्दी अदा कर देना भी जाइज़ है और जल्दी ज़कात अदा की फिर साल पूरा होने से पहले मिस्कीन मर गया या मुर्तद हो गया या ज़कात के इ़लावा माल के सबब अमीर हो गया या मालिक का माल तलफ़ हो गया या मालिक मर गया तो दिये हुए माल से ज़कात अदा न होगी और इस से वापस भी नहीं ले सकता अलबत्ता अगर देते वक़्त वापसी की शर्त़ लगाए तो वापस ले सकता है। लिहाज़ा ज़कात जल्दी देने वाले को उमूरे आख़िरत और आख़िरत की सलामती की त़रफ़ ध्यान देना चाहिये।

﴾3﴿.....माल की जगह क़ीमत न देना :

माल के बजाए क़ीमत न दे बल्कि जिस के बारे में हुक्म है वोही माल दे। लिहाज़ा सोने के बदले चांदी या चांदी के बदले सोना न दे अगर्चे येह क़ीमत में ज़ियादा हो।[3]

---

❶....**अह़नाफ़ के नज़दीक :** ईद के दिन सुब्ह़े सादिक़ त़ुलूअ़ होते ही सदक़ए फ़ित्र वाजिब होता है।
(बहारे शरीअ़त, जि. 1 स. 935)

❷....**अह़नाफ़ के नज़दीक :** ज़कात फ़र्ज़ हो जाने के बा'द फ़ौरन अदा करना वाजिब है और इस की अदाएगी में बिला उ़ज़्रे शरई ताख़ीर करना गुनाह है। (الفتاوی الهندیه، کتاب الزکوة، فصل فی مال التجارة، الباب الاول، ج۱، ص۱۷۰)

❸....**अह़नाफ़ का मौक़िफ़ :** किसी के पास सोना भी है और चांदी भी और दोनों की कामिल निसाबें तो येह ज़रूर नहीं कि सोने को चांदी या चांदी को सोना क़रार दे कर ज़कात अदा करे, बल्कि हर एक की ज़कात अ़लाह़िदा अ़लाह़िदा वाजिब है। हां, ज़कात देने वाला अगर सिर्फ़ एक चीज़ से दोनों निसाबों की ज़कात अदा करे तो उसे इख़्तियार है मगर इस सूरत में येह वाजिब होगा कि क़ीमत वोह लगाए जिस में फ़क़ीरों का ज़ियादा नफ़्अ़ है।
(बहारे शरीअ़त, जि. 1 स. 904)

﴾4﴿.....ज़कात दूसरे शहर की त़रफ़ मुन्तक़िल न करना :[1]

चौथी शर्त़ येह है कि ज़कात को दूसरे शहर की त़रफ़ मुन्तक़िल न करे क्यूंकि हर शहर के मसाकीन वहां के मालों पर निगाह रखते हैं और दूसरी जगह मुन्तक़िल करने से बदगुमानी पैदा होगी। अगर कोई ऐसा करे तो एक क़ौल के मुत़ाबिक़ ज़कात अदा हो जाएगी लेकिन इख़्तिलाफ़ के शुबे से निकलना ज़ियादा बेहतर है। लिहाज़ा पूरे माल की ज़कात उसी शहर में निकाले और उसी शहर के ग़ुरबा में तक़्सीम करने में कोई ह़रज नहीं।

﴾5﴿....मसारिफ़े ज़कात की ता'दाद के मुत़ाबिक़ माले ज़कात तक़्सीम करना :

अपने शहर में मौजूद तमाम मसारिफ़े ज़कात की ता'दाद के मुत़ाबिक़ माल तक़्सीम करे क्यूंकि तमाम मसारिफ़े ज़कात को घेरना वाजिब है[2] कि इस फ़रमाने बारी तआ़ला का ज़ाहिरी मफ़्हूम इसी पर दलालत करता है। चुनान्चे, इरशाद होता है :

اِنَّمَا الصَّدَقٰتُ لِلْفُقَرَآءِ وَ الْمَسٰكِیْنِ...الآية
(پ۱۰،التوبۃ:۶۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *ज़कात तो इन्हीं लोगों के लिये है मोह़ताज और निरे नादार।*

येह मरीज़ के उस क़ौल के मुशाबेह है कि "मेरा तिहाई माल फ़ुक़रा और मसाकीन के लिये है" और उस का तक़ाज़ा है कि मालिक बनाने में सब को शरीक किया जाए और इबादात में ज़ाहिरी मफ़्हूम मुराद लेने से बचा जाए।

आठ अक़्साम में से दो क़िस्म के मुस्तह़िक़े ज़कात ऐसे हैं जो अकषर शहरों में नहीं पाए जाते : (1)....एक **मोअल्लफ़तुल क़ुलूब** (या'नी जिन के दिलों को इस्लाम की त़रफ़ माइल करने के लिये ज़कात दी जाती है) और (2)..... **आ़मिल** (या'नी जिसे बादशाहे इस्लाम ने ज़कात और उ़श्र वुसूल करने के लिये मुक़र्रर किया)। चार क़िस्म के मुस्तह़िक़े ज़कात ऐसे हैं

---

❶....**अह़नाफ़ के नज़्दीक :** दूसरे शहर को ज़कात भेजना मकरूह है, मगर जब कि वहां इस (या'नी भेजने वाले) के रिश्तेवाले हों तो उन के लिये भेज सकता है या वहां के लोगों को ज़ियादा ह़ाजत है या ज़ियादा परहेज़गार हैं या मुसलमानों के ह़क़ में वहां भेजना ज़ियादा नाफ़ेअ़ है या त़ालिबे इल्म के लिये भेजे या ज़ाहिदों के लिये या दारुल ह़र्ब में है और ज़कात दारुल इस्लाम में भेजे या साले तमाम से पहले ही भेज दे, इन सब सूरतों में दूसरे शहर को भेजना बिला कराहत जाइज़ है। (नीज़) शहर से मुराद वोह शहर है जहां माल हो, अगर ख़ुद एक शहर में है और माल दूसरे शहर में तो जहां माल हो वहां के फ़ुक़रा को ज़कात दी जाए और सदक़ए फ़ित़्र में वोह शहर मुराद है जहां ख़ुद है, अगर ख़ुद एक शहर में है उस के छोटे बच्चे और ग़ुलाम दूसरे शहर में तो जहां ख़ुद है वहां के फ़ुक़रा पर सदक़ए फ़ित़्र तक़्सीम करे। (बहारे शरीअ़त, जि. 1 स. 933)

❷ ....**अह़नाफ़ के नज़्दीक :** ज़कात देने वाले को इख़्तियार है कि इन सातों क़िस्मों को दे या इन में किसी एक को दे दे, ख़्वाह एक क़िस्म के चन्द अश्ख़ास को या एक को। (बहारे शरीअ़त, जि. 1 स. 927)

जो तमाम शहरों में पाए जाते हैं : (1).....फ़ुक़रा (2)..... मसाकीन (3)..... क़र्ज़दार और (4)..... मुसाफ़िर। दो क़िस्म के मुस्तह़िक़े ज़कात बा'ज़ शहरों में पाए जाते हैं, बा'ज़ में नहीं : (1).....जिहाद करने वाले और (2)..... मुकातब गुलाम।[1]

मिषाल के तौ़र पर अगर पांच क़िस्म के लोग मौजूद हों तो इन के दरमियान बराबर बराबर या इस के क़रीब क़रीब माल की ज़कात तक़्सीम की जाए। हर एक के लिये एक ह़िस्सा मुक़र्रर किया जाए फिर हर क़िस्म को आपस में बराबर बराबर या थोड़े बहुत फ़र्क़ के साथ तीन ह़िस्सों में तक़्सीम करे या ज़ियादा ह़िस्से करे और किसी एक क़िस्म के तह़्त सब को बराबर देना वाजिब नहीं, इस के लिये जाइज़ है कि दस या बीस पर तक़्सीम करे पस हर एक का ह़िस्सा कम हो जाएगा लेकिन अक़्सामे मसारिफ़ ज़ियादती या कमी को क़बूल नहीं करतीं। लिहाज़ा हर क़िस्म में तीन से कम न करें अगर वोह पाए जाते हों। फिर अगर सदक़ए फ़ित्र में एक ही साअ़ वाजिब हो और पांच क़िस्म के मसारिफ़ पाए जाएं तो उसे चाहिये कि पन्दरह आदमियों को दे, अगर इमकान के बा वुजूद एक को न पहुंचे तो उस एक के ह़िस्से का तावान दे, अगर वाजिब के कम होने के सबब येह (या'नी तक़्सीम) मुश्किल हो तो एक गुरौह को जिन पर ज़कात वाजिब हो, अपने साथ शरीक कर ले और अपना माल उन के माल के साथ मिला ले फिर मुस्तह़िक़ीन को जम्अ़ करे और माल इन के सिपुर्द कर दे ताकि वोह आपस में तक़्सीम कर लें क्यूंकि येह अ़मल उस के लिये ज़रूरी है।

ज़कात के बात़िनी आदाब की बारीकियां

जान लीजिये कि राहे आख़िरत का इरादा करने वाले हर शख़्स पर ज़कात के मुतअ़ल्लिक़ कुछ ज़िम्मेदारियां आ़इद होती हैं :

﴾1﴿..... ज़कात के वुजूब और इस के मा'ना को समझना नीज़ इस के ज़रीए़ आज़्माइश की वजह क्या है ? इसे इस्लाम के बुन्यादी अरकान में से क्यूं क़रार दिया गया हा़लांकि येह मह़्ज़ माली तसर्रुफ़ है, बदनी इ़बादात से नहीं।

वुजूबे ज़कात की तीन वुजूहात :

पहली वजह : कलिमाते शहादत की अदाएगी का मक़्सद तौह़ीद को लाज़िम करना और मा'बूद के एक होने की गवाही देना है और इसे पूरा करने की शर्त़ येह है कि **मुवह़्ह़िद** (तौह़ीद के क़ाइल) के लिये उस यक्ता ज़ात के सिवा कोई मह़बूब न रहे क्यूंकि मह़ब्बत शिर्कत को क़बूल नहीं करती और ज़बान के साथ वह़दानिय्यत का इक़रार करने में कम आज़्माइश है और मह़बूब की जुदाई से मुह़िब्ब के दर्जे का इमतिह़ान लिया जाता है और बन्दों के नज़्दीक पसन्दीदा व

---

❶.....**मुकातब :** आक़ा अपने गुलाम से माल की एक मिक़्दार मुक़र्रर कर के येह कह दे कि ''इतना अदा कर दे, तू आज़ाद है'' और गुलाम इसे क़बूल भी कर ले तो ऐसे गुलाम को मुकातब कहते हैं। (माख़ूज़ अज़ : बहारे शरीअ़त, जि. 2 ह़िस्सा 9, स. 292)

मह़बूब चीज़ अमवाल हैं क्यूंकि येह दुन्या में उन के लुत्फ़ उठाने का आला हैं और इन्ही अम्वाल के ज़रीए वोह इस जहान से मानूस होते और मौत से नफ़रत करते हैं ह़ालांकि इसी मौत के ज़रीए मह़बूब की मुलाक़ात होती है। लिहाज़ा इन के दा'वे की तस्दीक़ के लिये मह़बूब चीज़ में उन्हें आज़्माया जाता और उन से इस माल का मुत़ालबा किया जाता है जो उन्हें मह़बूब व मरग़ूब है। इसी लिये **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया :

اِنَّ اللّٰهَ اشْتَرٰى مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ اَنْفُسَهُمْ وَاَمْوَالَهُمْ بِاَنَّ لَهُمُ الْجَنَّةَ ؕ (پ۱۱،التوبة:۱۱۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *बेशक **अल्लाह** ने मुसलमानों से उन के माल और जान ख़रीद लिये हैं इस बदले पर कि उन के लिये जन्नत है।*

और येह फ़ज़ीलत जिहाद से ह़ासिल होती है और जिहाद **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से मुलाक़ात के शौक़ में जान का नज़्राना पेश करने का नाम है और माल से चश्म पोशी करना जान की ब निस्बत ज़ियादा आसान है। जब माल व अस्बाब के ख़र्च करने पर येह मा'ना समझे गए तो अब लोगों की तीन क़िस्में बन गईं :

अल्लाह व रसूल عَزَّوَجَلَّ وصَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰله وسلَّم काफ़ी हैं :

(1).....वोह लोग जिन्हों ने तौह़ीद की तस्दीक़ की और अपने अ़हद को पूरा किया, अपना तमाम माल छोड़ दिया, दिरहमो दीनार जम्अ़ न किये और ऐसी नौबत ही न आने दी कि उन पर ज़कात फ़र्ज़ हो यहां तक कि उन में से बा'ज़ से पूछा गया कि "दो सो दिरहम में कितनी ज़कात फ़र्ज़ है ?" तो फ़रमाया : अ़वाम पर तो शरीअ़त के हुक्म से पांच दिरहम हैं लेकिन हम पर तमाम माल ख़र्च करना वाजिब है।" इसी लिये अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عَنْہ ने अपना तमाम माल सदक़ा कर दिया और अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عَنْہ ने अपना आधा माल पेश कर दिया सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने पूछा : "ऐ उ़मर ! घर वालों के लिये क्या छोड़ा ?" अ़र्ज़ की : "इसी की मिस्ल।" फिर अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عَنْہ से पूछा : "घर वालों के लिये क्या छोड़ा ?" अ़र्ज़ की : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस का रसूल काफ़ी है।" तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "तुम दोनों के दरमियान इतना फ़र्क़ है जितना तुम दोनों के कलिमात में फ़र्क़ है।"[1] पस अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عَنْہ ने तमाम सिद्क़ को पूरा कर दिया और अपने पास **अल्लाह** और उस के रसूल के सिवा कुछ न छोड़ा।

---

1 ......سنن ابی داود،کتاب الزکاۃ، باب فی الرحمة فی ذلک،الحدیث:۱۶۷۸ ، ج۲، ص ۱۸۰ ،بِدُونِ بَعْضِ الْاَلْفَاظ۔

माल में ज़कात के इ़लावा भी कुछ हु़क़ूक़ हैं :

(2)..... दूसरी क़िस्म के लोगों का दर्जा पहली क़िस्म के लोगों से कम है। येह वोह लोग हैं जो अपने माल रोक रखते हैं। ज़रूरियात और ख़ैरात के मौसिमों के मुन्तज़िर रहते हैं। जम्अ़ करने से इन का मक़्सद ऐ़शो इ़शरत नहीं बल्कि ज़रूरत के मुत़ाबिक़ ख़र्च करना होता है। येह ह़ाजत से ज़ाइद माल को ज़रूरत पड़ने पर नेकी के कामों में ख़र्च करते हैं। येह लोग ज़कात की मिक़्दार पर इक्तिफ़ा नहीं करते और एक गुरौहे ताबेईन ने इस मौक़िफ़ को इख़्तियार किया है कि माल में ज़कात के इ़लावा भी कुछ हु़क़ूक़ हैं जैसे ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम नख़ई, ह़ज़रते सय्यिदुना शअ़बी, ह़ज़रते सय्यिदुना अ़त़ा और ह़ज़रते सय्यिदुना मुजाहिद (رَحْمَةُ اللهِ تعالٰی عَلَیهِم اَجْمَعِین)। ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शअ़बी رَحْمَةُ اللهِ تعالٰی عَلَیه से पूछा गया कि "क्या माल में ज़कात के इ़लावा भी कोई ह़क़ है ?" फ़रमाया : जी हां ! क्या तुम ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का येह फ़रमान नहीं सुना :

وَاٰتَى الْمَالَ عَلٰى حُبِّهٖ ذَوِی الْقُرْبٰى

(پ۲، البقرۃ:۱۷۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और **अल्लाह** की मह़ब्बत में अपना अ़ज़ीज़ माल दे रिश्तेदारों को।*

नीज़ इन्हों ने इन फ़रामीने बारी तआ़ला से इस्तिदलाल किया :

وَمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ یُنْفِقُوْنَ ۟

(پ۹، الانفال:۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और हमारे दिये से कुछ हमारी राह में ख़र्च करें।*

एक मक़ाम पर इरशाद हुवा :

وَاَنْفِقُوْا مِنْ مَّا رَزَقْنٰكُمْ

(پ۲۸، المنافقون:۱۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और हमारे दिये में से कुछ हमारी राह में ख़र्च करो।*

इन ह़ज़रात का ख़याल है कि येह हुक्म आयते ज़कात से मन्सूख़ नहीं बल्कि येह मुसलमान पर मुसलमान के ह़क़ में दाख़िल है। इस का मा'ना येह है कि माले ज़कात के इ़लावा मालदार पर वाजिब है कि जब वो मोह़ताज को पाए तो उस की ह़ाजत पूरी करे। इस बाब में फ़िक़्ह की रू से दुरुस्त मस्अला येह है कि जब किसी मुसलमान को ह़ाजत तंग करे तो दूसरों पर इस का इज़ाला करना फ़र्ज़े किफ़ाया है क्यूंकि किसी मुसलमान को ज़ाएअ़ करना जाइज़ नहीं। अलबत्ता येह एह़तिमाल है कि "यूं कहा जाए कि मालदार उसे इतना माल क़र्ज़ दे दे कि उस की ह़ाजत पूरी हो जाए और जब मालदार अपने माल की ज़कात दे दे तो अब मज़ीद कुछ ख़र्च करना

उस पर लाज़िम नहीं।" येह भी कहा जा सकता है कि "इसी वक़्त उस पर ख़र्च करना लाज़िम है लेकिन क़र्ज़ देना जाइज़ नहीं या'नी फ़क़ीर को क़र्ज़ क़बूल करने की तक्लीफ़ देना लाज़िम नहीं।" इस मस्अले में इख़्तिलाफ़ है।

(3).....क़र्ज़ लेना अ़वाम के दर्जात में से आख़िरी दर्जे की त़रफ़ उतरना है और येह तीसरी क़िस्म का दर्जा उन लोगों का है जो वाजिब की अदाएगी पर इक्तिफ़ा करते हैं कि न इस से कम करते हैं, न ज़ियादा। (आ़रिफ़ीन के नज़्दीक) येह तमाम दर्जात से कम दर्जा है। आ़म लोग इसी पर इक्तिफ़ा करते हैं क्यूंकि वोह माल के मुआ़मले में कन्जूसी से काम लेते और इस की त़रफ़ मैलान की वजह से आख़िरत से उन की मह़ब्बत कमज़ोर है।

अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

اِنْ يَّسْـَٔلْكُمُوْهَا فَيُحْفِكُمْ تَبْخَلُوْا وَ يُخْرِجْ اَضْغَانَكُمْ ﴿۳۷﴾ (پ۲۶، محمد:۳۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *अगर इन्हें तुम से त़लब करे और ज़ियादा त़लब करे तुम बुख़्ल करोगे और वोह बुख़्ल तुम्हारे दिलों के मैल ज़ाहिर कर देगा।*

इन दोनों बन्दों में कितना फ़र्क़ है कि एक से उस का जान और माल जन्नत के बदले ख़रीद लिया और दूसरे पर इस के बुख़्ल की वजह से ज़ियादा मुत़ालबा नहीं किया गया। **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ने अपने बन्दों को माल ख़र्च करने का जो हुक्म फ़रमाया येह उस के मआ़नी में से एक मा'ना है।

दूसरी वजह : बुख़्ल की सिफ़त से पाक होना क्यूंकि येह मोहलिकात में से है। चुनान्चे, **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के प्यारे ह़बीब, ह़बीबे लबीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "तीन चीज़ें हलाक करने वाली हैं : (1).....ऐसा बुख़्ल जिस की इत़ाअ़त हो (2).....ऐसी ख़्वाहिश जिस की इत्तिबाअ़ की जाए (3).....इन्सान का अपने आप को अच्छा जानना।"[1]

अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

وَمَنْ يُّوْقَ شُحَّ نَفْسِهٖ فَاُولٰٓىِٕكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴿۹﴾ (پ۲۸، الحشر:۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और जो अपने नफ़्स के लालच से बचाया गया तो वोही कामयाब हैं।*

आगे मोह्लिकात के बाब में बुख़्ल के हलाकत ख़ेज़ होने की वजह और इस से बचने का त़रीक़ा बयान किया जाएगा।

---

1 ......شعب الایمان للبیهقی، باب فی الخوف من الله تعالٰی، الحدیث:۷۴۵، ج۱، ص۴۷۱۔

बुख़्ल से बचने का त़रीक़ा :

बुख़्ल की सिफ़त यूं ज़ाइल हो सकती है कि इन्सान माल ख़र्च करने का आ़दी हो जाए क्यूंकि किसी चीज़ की महब्बत उसी सूरत में ख़त्म हो सकती है कि इन्सान उस के छोड़ने पर नफ़्स को मजबूर करे यहां तक कि वोह उस की आ़दत बन जाए इसी मा'ना के ए'तिबार से ज़कात पाक करने वाली है या'नी साहि़बे माल को हलाकत ख़ेज़ बुख़्ल की बुराई से पाक कर देती है और पाकीज़गी उसी क़दर ह़ासिल होगी जिस क़दर बन्दा ख़र्च करते और ज़कात देते वक़्त ख़ुशी का इज़्हार करेगा।

माली ने'मतों का शुक्र :

तीसरी वजह : ने'मत का शुक्र अदा करना चूंकि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपने बन्दे पर उस की जान और माल के ए'तिबार से इन्आ़म फ़रमाया है : लिहाज़ा बदनी इ़बादात बदनी ने'मतों और माली इ़बादात माली ने'मतों का शुक्र हैं। वोह शख़्स कितना ह़क़ीर है जो किसी फ़क़ीर को देखता है कि उसे रिज़्क़ की तंगी लाह़िक़ है और वोह इस का मोह़ताज है फिर भी वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का शुक्र अदा करने पर माइल नहीं होता कि उस ने इसे सुवाल से बे नियाज़ कर दिया और माल के चालीसवें या दसवें ह़िस्से में दूसरों को इस का मोह़ताज बना दिया।

﴾2﴿.....दूसरी ज़िम्मेदारी वक़्ते अदाएगी से मुतअ़ल्लिक़ है। दीनदार लोगों का त़रीक़ा येह है कि हुक्मे इलाही बजा लाने में इज़्हारे रग़बत के लिये वक़्ते वुजूब से पहले ज़कात अदा करते हैं ताकि वोह फ़ुक़रा के दिलों में ख़ुशी दाख़िल करें और ह़वादिषाते ज़माना की वजह से जल्दी करते हैं ताकि भलाई के काम में ह़रज वाक़ेअ़ न हो क्यूंकि वोह जानते हैं कि ताख़ीर करने में आफ़ात हैं नीज़ अगर वक़्ते वुजूब से ताख़ीर हुई तो बन्दा गुनहगार होता है। कभी कभार बात़िन से नेकी की आवाज़ आती है तो इसे ग़नीमत समझना चाहिये क्यूंकि येह फ़िरिश्ते का अलक़ा होता है। ह़दीषे पाक में है कि "मोमिन का दिल रह़मान की दो उंगलियों के दरमियान होता है।"

तो इस का बदलना कितना तेज़ होगा जब कि शैत़ान तंगदस्ती से डराता और बे ह़याई और बुरी बातों का हुक्म देता है और फ़िरिश्ते के इलक़ा के बा'द शैत़ान का वस्वसा होता है। लिहाज़ा दिल में सबबे ख़ैर गुज़रने को ग़नीमत जाने।

अदाएगिये ज़कात के अफ़्ज़ल अवक़ात :

अगर यकमुश्त ज़कात अदा करता हो तो उस के लिये एक महीना मुक़र्रर कर ले और अफ़्ज़ल अवक़ात में ज़कात अदा करने की कोशिश करे ताकि इस के सबब षवाब ज़ियादा हो और ज़कात दो गुना हो जाए। जैसे मुह़र्रम का महीना कि येह साल का पहला महीना है और हुर्मत वाले महीनों में से है या माहे रमज़ानुल मुबारक कि आक़ाए दो आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم तमाम मख़्लूक़ से ज़ियादा सख़ी थे और रमज़ानुल मुबारक में तेज़ चलने वाली हवा की त़रह़ होते कि इस में कोई चीज़ न रोकते,(1) रमज़ान शरीफ़ में शबे क़द्र की फ़ज़ीलत भी है नीज़ क़ुरआने पाक भी इस माहे मुबारक में नाज़िल हुवा।

रमज़ान नहीं बल्कि माहे रमज़ान कहो :

ह़ज़रते सय्यिदुना मुजाहिद عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْوَاحِد फ़रमाया करते थे कि "रमज़ान न कहो बल्कि माहे रमज़ान कहो क्यूंकि येह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नामों में से एक नाम है।"

माहे ज़ुल हि़ज्जतिल ह़राम भी कषीर फ़ज़्लो बरकत वाले महीनों में से है क्यूंकि येह हुर्मत वाला महीना है और इस में ह़ज्जे अक्बर है और मा'लूम दिन या'नी पहले दस दिन और गिने हुए दिन या'नी अय्यामे तशरीक़ भी इसी में हैं।(2) माहे रमज़ान के आख़िरी और माहे ज़ुलहि़ज्जा के पहले दस दिन अफ़्ज़ल हैं।

छुपा कर सदक़ा करने की फ़ज़ीलत :

﴾3﴿.....तीसरी ज़िम्मेदारी येह है कि ज़कात का पोशीदा अदा करना क्यूंकि येह रिया और नामो नुमूद से दूर है कि हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "अफ़्ज़ल सदक़ा येह है कि कम कमाने वाले का मेह़नत कर के फ़क़ीर को पोशीदा त़ौर पर सदक़ा देना।"(3)

---

1 ......صحیح البخاری، کتاب بدء الوحی، باب کیف کان بدء الوحی......الخ، الحدیث:٦، ج ١، ص ١٠، مفھومًا۔

2 ....अय्यामे तशरीक़ की वजहे तसमिय्या : बक़र ईद के दिन या'नी दसवीं ज़िलहि़ज्जा के बा'द वाले तीन दिनों को अय्यामे तशरीक़ कहते हैं कि इन दिनों में अहले अ़रब क़ुरबानी के गोश्त सुखाते इन्हें धूप देते हैं, तशरीक़ ब मा'ना सुखाना, धूप देना। (मिरआतुल मनाजीह़, जि. 4 स. 171)

अय्यामे तशरीक़ पांच हैं : चुनान्चे दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 1250 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब बहारे शरीअ़त जिल्द अव्वल सफ़ह़ा **784** पर है : नवीं ज़िलहि़ज्जा की फ़ज्र से तेरहवीं की अ़स्र तक, हर नमाज़े फ़र्ज़ पंजगाना के बा'द जो जमाअ़ते मुस्तह़ब्बा के साथ अदा की गई एक बार तक्बीर बुलन्द आवाज़ से कहना वाजिब है और तीन बार अफ़्ज़ल इसे तक्बीरे तशरीक़ कहते हैं, वोह येह है :

اَللّٰہُ اَکْبَرُ اَللّٰہُ اَکْبَرُ لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ وَ اللّٰہُ اَکْبَرُ اَللّٰہُ اَکْبَرُ وَلِلّٰہِ الْحَمْد

3 ......المسندللامام احمد بن حنبل، مسند الانصار، حدیث ابی ذرالغفاری، الحدیث:٢١٦٠٢، ج٨، ص ١٣٠۔

बा'ज़ उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام फ़रमाते हैं : "तीन बातें नेकी के ख़ज़ानों में से हैं। इन में से एक पोशीदा त़ौर पर सदक़ा करना है।"(1)

नीज़ मरवी है कि हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "बेशक बन्दा पोशीदा त़ौर पर कोई अ़मल करता है तो **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ उसे पोशीदा में लिख देता है फिर अगर वोह ज़ाहिर करता है तो **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ पोशीदा से निकाल कर अ़लानिया में लिख देता है और अगर वोह किसी को बताता है तो पोशीदा और अ़लानिय्या दोनों से निकाल कर रिया में लिख देता है।"(2)

मशहूर ह़दीष में है कि "सात क़िस्म के लोग ऐसे हैं जिन्हें **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ उस दिन (अ़र्श का) साया अ़त़ा फ़रमाएगा जिस दिन उस के साए के सिवा कोई साया न होगा इन में से एक वोह है जिस ने यूं सदक़ा किया कि बाएं हाथ को ख़बर न हुई कि दाएं हाथ ने क्या सदक़ा किया।"(3)

एक रिवायत में है : "صَدَقَةُ السِّرِّ تُطْفِئُ غَضَبَ الرَّبِّ या'नी पोशीदा सदक़ा ग़ज़बे इलाही की आग को बुझा देता है।"(4)

अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

وَ اِنۡ تُخۡفُوۡهَا وَ تُؤۡتُوۡهَا الۡفُقَرَآءَ فَهُوَ خَيۡرٌ لَّكُمۡ ؕ (پ۳،البقرة:۲۷۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और अगर छुपा कर फ़क़ीरों को दो येह तुम्हारे लिये सब से बेहतर है।

छुपा कर सदक़ा देने का फ़ाइदा :

पोशीदा सदक़ा देने का फ़ाइदा येह है कि बन्दा दिखावे और नामो नुमूद की आफ़ात से बच जाता है। नीज़ मरवी है कि मक्की मदनी सुल्त़ान, रह़मते आ़लमिय्यान صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "**अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ उस का अ़मल क़बूल नहीं फ़रमाता जो लोगों को सुनाए, रियाकारी करे और एह़सान जताए।"(5) जब कि सदक़े का चर्चा करने वाला सुनाने की ख़्वाहिश करता है और लोगों की मौजूदगी में सदक़ा देने वाला रियाकारी चाहता है और पोशीदा देने वाला, ख़ामोश रहने वाला रियाकारी से बचने वाला है।

---

1 ......شعب الایمان للبیهقی،باب فی الصبر علی المصائب،الحدیث:۱۰۰۵۱، ج۷، ص۲۱۵،"اخفاء" بدله "کتمان"۔
2 ......التفسیر الکبیر للرازی، سورة البقرة:۲۷۱، ج۳، ص۶۲۔
3 ......صحیح البخاری، کتاب الاذان، باب من جلس فی المسجد......الخ، الحدیث:۶۶۰، ج۱، ص۲۳۶۔
4 ......شعب الایمان للبیهقی، باب فی الزکاة، فصل فی الاختیار فی صدقة التطوع، الحدیث:۳۴۴۲، ج۳، ص۲۴۵۔
5 ......قوت القلوب، الفصل الثالث والثلاثون فی ذکر دعائم الاسلام......الخ، ج۲، ص۱۷۸۔

सदके़ में नुमूद व नुमाइश से बचने के त़रीके़ :

उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام के एक गुरौह ने पोशीदा त़ौर पर सदक़ा देने में मुबालग़ा किया यहां तक कि उन्हों ने कोशिश की, कि सदक़ा लेने वाला देने वाले को न पहचान सके। इन में से बा'ज़ तो नाबीना के हाथ में सदक़ा देते, बा'ज़ फ़क़ीर के रास्ते में डाल देते और उस के बैठने की जगह रख देते जहां से वोह देख लेता लेकिन देने वाला नज़र न आता, बा'ज़ सोए हुए फ़क़ीर के कपड़े में बांध देते, बा'ज़ किसी दूसरे के हाथ फ़क़ीर की त़रफ़ भेज देते ताकि वोह देने वाले को न जाने और कह देता कि इसे हमारे बारे में न बताए। येह तमाम त़रीके़ ग़ज़बे इलाही को बुझाने वाले, रियाकारी और सुनाने से बचाने वाले हैं अगर एक शख़्स के पहचाने बिग़ैर देना मुमकिन न हो तो वकील को दे कि वोह मिस्कीन के ह़वाले कर दे और मिस्कीन का न जानना ज़ियादा बेहतर है क्यूंकि मिस्कीन के जानने में रियाकारी और एह़सान जतलाना दोनों पाए जाते हैं जब कि पहुंचाने वाले के जानने में सिर्फ़ रियाकारी पाई जाती है।

बुख़्ल और रियाकारी सांप और बिच्छू की सूरत में :

जब भी शोहरत मक़्सूद होगी तो अ़मल ज़ाएअ़ हो जाएगा क्यूंकि ज़कात बुख़्ल के ख़ातिमे और माल की मह़ब्बत कम करने के लिये होती है और हुब्बे जाह दिल पर हुब्बे माल से ज़ियादा ग़लबा रखती है, दोनों में से हर एक आख़िरत में नुक़्सान देह है। बुख़्ल क़ब्र में डंक मारने वाले बिच्छू की शक्ल में जब कि रियाकारी ज़हरीले सांप की सूरत में आती है और इन्सान को हुक्म है कि इन दोनों की तक्लीफ़ को दूर करने या कम करने के लिये दोनों को कमज़ोर कर दे या मार दे। जब भी वोह दिखावे और सुनाने का इरादा करेगा तो गोया बिच्छू के बा'ज़ आ'ज़ा को सांप के लिये ग़िज़ा बना देगा तो जिस क़दर बिच्छू कमज़ोर होगा उसी क़दर सांप ताक़तवर हो जाएगा अगर मुआ़मले को जूं का तूं छोड़ देता तो येह उस पर ज़ियादा आसान होता। इन सिफ़ात के तक़ाज़े के मुत़ाबिक़ अ़मल करने से उन्हें तक़विय्यत मिलती और उन के तक़ाज़े के ख़िलाफ़ अ़मल करने से येह कमज़ोर होती हैं (और मक़्सद उन्हें कमज़ोर करना ही है) लिहाज़ा बुख़्ल की त़रफ़ ले जाने वाले उमूर की मुख़ालफ़त और रिया का सबब बनने वाले उमूर की इत़ाअ़त का क्या फ़ाइदा? इस त़रह़ तो अदना मज़ीद कमज़ोर और मज़बूत़ मज़ीद क़वी हो जाएगा। अ़न क़रीब मोहलिकात के बाब में इन मआ़नी के असरार बयान किये जाएंगे।

﴾4﴿.....चौथी ज़िम्मेदारी येह है कि जब मा'लूम हो कि अ़लानिया सदक़ा देने से लोगों को तरग़ीब मिलेगी तो ज़ाहिरी त़ौर पर सदक़ा दे और अपने बात़िन को रियाकारी के त़रीक़े से इस त़रह़ बचाए जो हम "**किताबुर्रिया**" में रिया के इलाज के सिलसिले में ज़िक्र करेंगे। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ कुरआने मजीद में इरशाद फ़रमाता है :

اِنْ تُبْدُوا الصَّدَقٰتِ فَنِعِمَّا هِيَ ۚ (پ۳،البقرۃ:۲۷۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *अगर ख़ैरात अ़लानिया दो तो वोह क्या ही अच्छी बात है।*

सदक़ा ज़ाहिर कर के देने की सूरत :

येह वहां है जहां ह़ाल ज़ाहिर करने का तक़ाज़ा करता हो या तो दूसरों की इक़्तिदा के लिये या इस लिये कि साइल लोगों के मजमअ़ में मांगे। लिहाज़ा रिया से डरते हुए ज़ाहिरी त़ौर पर सदक़ा देना तर्क न करे बल्कि उसे चाहिये कि सदक़ा करे और जहां तक हो सके अपने बात़िन को रिया से बचाए। नीज़ ज़ाहिर कर के सदक़ा देने में एह़सान जताने और रियाकारी के इ़लावा तीसरी ममनूअ़ चीज़ भी है और वोह फ़क़ीर की पर्दादरी है क्यूंकि अकषर फ़क़ीर को येह बात तक्लीफ़ देती है कि उसे मोह़ताज की सूरत में देखा जाए तो जिस ने लोगों के सामने सुवाल किया उस ने अपना पर्दा खुद फ़ाश किया। लिहाज़ा उसे अ़लानिया देने में येह तीसरी ख़राबी ममनूअ़ न रहेगी जिस त़रह़ कि कोई शख़्स पोशीदा फ़िस्क़ करता है तो उसे ज़ाहिर करना ममनूअ़ है और इस की टोह में पड़ना और पीछे से उस का ज़िक्र करना भी ममनूअ़ है लेकिन जो अ़लानिया फ़िस्क़ का मुरतकिब होता है उस पर ह़द क़ाइम करना उस की इशाअ़त ही तो है लेकिन इस का सबब वोह खुद है। हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के इस इरशादे गिरामी : "مَنْ اَلْقٰى جِلْبَابَ الْحَيَاءِ فَلَا غِيْبَةَ لَهٗ जिस ने ह़या की चादर उतार डाली उस की कोई ग़ीबत नहीं।"[1] का येही मा'ना है।

इरशादे बारी तआ़ला है :

وَاَنْفَقُوْا مِمَّا رَزَقْنٰهُمْ سِرًّا وَّعَلَانِيَةً (پ۲۲،فاطر:۲۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और हमारे दिये से कुछ हमारी राह में ख़र्च करते हैं पोशीदा और ज़ाहिर।*

अ़लानिया देना भी मुस्तह़ब है क्यूंकि इस में तरग़ीब का फ़ाइदा है। पस बन्दे को इस फ़ाइदे के वज़्न का इस के मुतअ़ल्लिक़ वारिद मुमानअ़त के साथ गहरी नज़र से मुवाज़ना करना चाहिये। क्यूंकि येह बात ह़ालात और लोगों के बदलने से मुख़्तलिफ़ होती है। बा'ज़ अवक़ात बा'ज़ लोगों के लिये अ़लानिया देना अफ़्ज़ल होता है। जो ख़्वाहिशात से क़त़ए नज़र फ़वाइद और ख़राबियों को देखता है उस के लिये हर ह़ाल में मुनासिब और बेहतर बात सामने आ जाती है।

1......السنن الکبری للبیہقی، کتاب الشھادات، باب الرجل من اھل الفقہ......الخ، الحدیث:۲۰۹۱۵، ج۱۰، ص۳۵۵۔

《5》.....पांचवीं ज़िम्मेदारी येह है कि एह़सान जता कर और तक्लीफ़ पहुंचा कर अपने सदके़ को फ़ासिद न करना।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

لَا تُبْطِلُوْا صَدَقٰتِكُمْ بِالْمَنِّ وَ الْاَذٰىۙ (پ۳، البقرۃ:۲۶۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : अपने सदके़ बात़िल न कर दो एह़सान रख कर और ईज़ा दे कर।

एह़सान जताने और तक्लीफ़ पहुंचाने की ह़क़ीक़त में उ़-लमा का इख़्तिलाफ़ है। चुनान्चे,

एह़सान जताने और ईज़ा देने की ह़क़ीक़त :

कहा गया है कि "**एह़सान जताने** से मुराद येह है कि सदक़ा दे कर उस का तज़्किरा करे और **ईज़ा देने** से मुराद येह है कि देने के बा'द उसे ज़ाहिर करे।"

ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान सौरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं कि "जिस ने **एह़सान जताया** उस का सदक़ा फ़ासिद हो गया।" अ़र्ज़ की गई : "**एह़सान जताना** क्या है?" फ़रमाया : "उसे याद करे और लोगों को बताए।"

एक क़ौल है कि "**एह़सान जताना** येह है कि कुछ दे कर ख़िदमत लेना और **अज़िय्यत पहुंचाना** येह है कि ग़ुरबत का त़ा'ना देना।"

बा'ज़ ह़ज़रात ने फ़रमाया : "**एह़सान जताना** येह है कि अपने अ़त़िय्ये के सबब उस पर तकब्बुर करे और **अज़िय्यत पहुंचाना** येह है कि सुवाल करने पर उसे झिड़के और बुरा भला कहे।" और हु़ज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ एह़सान जताने वाले का सदक़ा क़बूल नहीं करता।"[1]

(हु़ज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं :) मेरे नज़्दीक एह़सान जताने की एक बुन्याद और जड़ है और वोह दिल के अह़वाल और इस की सिफ़ात हैं फिर इस से ज़ाहिरी अह़वाल ज़बान और आ'ज़ा पर मुरत्तब होते हैं।

एह़सान जताने की बुन्याद :

इस की बुन्याद येह है कि सदक़ा देने वाला येह समझे कि मैं ने इस पर इन्आ़म और एह़सान किया। जब कि ह़क़ येह है कि फ़क़ीर तो मोह़सिन है कि उस ने इस से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का ह़क़ क़बूल किया जो इस के लिये त़हारत और जहन्नम से नजात का ज़रीआ़ है कि अगर वोह क़बूल न करता तो येह इस के सबब गिरवी रहता। लिहाज़ा इसे फ़क़ीर का एह़सान मन्द होना चाहिये

---

1 ......قوت القلوب، الفصل الثالث والثلاثون فی ذکر دعائم الاسلام......الخ، ج ۲، ص ۱۷۸، مفهومًا۔

المعجم الکبیر، الحدیث: ۷۵۴۷، ج ۸، ص ۱۱۹۔

कि इस ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ह़क़ को क़बूल करने के लिये अपनी हथेली को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का नाइब बनाया। जैसा कि रसूले अन्वर, शाफ़ेए़ मह़शर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "सदक़ा साइल के हाथ में पहुंचने से पहले अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में पहुंच जाता है।"(1)

पस उसे येह यक़ीन रखना चाहिये कि साइल को देने में वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का ह़क़ उसे पेश कर रहा है और ह़ाजत मन्द अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से अपना रिज़्क़ वुसूल कर रहा है क्यूंकि ह़ाजत मन्द को मिलने से पहले वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के पास पहुंच चुका होता है। बिल फ़र्ज़ अगर मालदार पर किसी का क़र्ज़ हो और क़र्ज़ ख़्वाह कह दे कि येह रक़म मेरे ग़ुलाम या ख़ादिम को दे देना जो मेरे ज़ेरे कफ़ालत है तो मक़रूज़ का येह ख़याल करना बे वुक़ूफ़ी व जहालत है कि उस ने क़र्ज़ वुसूल करने वाले पर एह़सान किया है क्यूंकि एह़सान करने वाला तो वोह है जो उस के रिज़्क़ का कफ़ील है उस ने तो वोह चीज़ अदा की है जो अपनी पसन्दीदा चीज़ ख़रीदने के सबब उस पर लाज़िम होती थी। लिहाज़ा वोह अपने ह़क़ में कोशिश करने वाला है दूसरों पर उस का कोई एह़सान नहीं।

अल ग़रज़ जब वुजूबे ज़कात के मुतअ़ल्लिक़ हमारे ज़िक्र कर्दा तीन मआ़नी को वोह समझ ले या इन में से एक को समझ ले तो वोह सिर्फ़ अपनी ज़ात पर एह़सान ख़याल करेगा या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से इज़्हारे मह़ब्बत के लिये माल को ख़र्च कर रहा है या बुख़्ल की बुराई से ख़ुद को पाक कर रहा है या मज़ीद के ह़ुसूल के लिये माली ने'मत पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का शुक्र अदा कर रहा है। बहर ह़ाल जो भी सूरत हो येह उस का और फ़क़ीर का मुआ़मला नहीं कि वोह ख़ुद को फ़क़ीर पर एह़सान करने वाला समझ बैठे। बा'ज़ अवक़ात जहालत यूं भी ज़ाहिर होती है कि वोह ख़ुद को फ़क़ीर पर एह़सान करने वाला समझता है तो इस से अ़मल ज़ाहिर होता है जो एह़सान जताने के मा'ना में ज़िक्र किया गया या'नी वोह इसे बयान करता, इस का इज़्हार करता और उस से बदला त़लब करता है कि वोह उस का शुक्र अदा करे और दुआ़, ख़िदमत, ता'ज़ीम व तौक़ीर, ह़ुक़ूक़ की अदाएगी, मजालिस में मुक़द्दम करना और हर बात में उस की पैरवी करना वग़ैरा उमूर की ख़्वाहिश रखता है और येह तमाम बातें एह़सान जताने का नतीजा हैं। एह़सान जताने का बात़िनी मा'ना वोह है जो अभी हम ने ज़िक्र किया।

अज़िय्यत पहुंचाने का ज़ाहिर :

जहां तक अज़िय्यत पहुंचाने का तअ़ल्लुक़ है तो इस का ज़ाहिर तौबीख़, आ़र दिलाना, सख़्त कलामी, तुर्शरूई, इसे ज़ाहिर कर के पर्दा दरी करना है और इसे ह़क़ीर जानने के मुख़्तलिफ़ त़रीक़े इख़्तियार करना है।

---

1 ......المعجم الكبير، الحديث: ۱۷۸۵۷، ج۹، ص۱۰۹۔

अज़िय्यत पहुंचाने का बातिन और इस की बुन्याद :

इस की बुन्याद दो बातें हैं : (1).....माल से अपना हाथ उठा लेने को बुरा जानना और इसे अपने नफ़्स पर गिरां समझना क्यूंकि येह बात मख़्लूक़ के लिये बिल यक़ीन तंगी का बाइष बनती है। (2).....ख़ुद को फ़क़ीर से बेहतर समझना और येह कि फ़क़ीर अपनी ह़ाजत के सबब इस से घटया है। येह दोनों बातें जहालत के बाइष पैदा होती हैं। मषलन किसी को माल देने को नापसन्द करना ह़माक़त है क्यूंकि जो एक हज़ार के बराबर चीज़ पर एक दिरहम ख़र्च करना नापसन्द करता है वोह बहुत बड़ा बेवुकूफ़ है और येह बात اظہر من الشمس (सूरज से ज़ियादा ज़ाहिर) है कि जो माल रिज़ाए इलाही पाने और आख़िरत में षवाब के ह़ुसूल के लिये ख़र्च किया जाता है वोह उस माल से बेहतर है जो वोह ख़ुद को बुख़्ल की बुरी आ़दत से पाक करने या मज़ीद के ह़ुसूल के लिये बत़ौरे शुक्र ख़र्च किया जाता है। बहर ह़ाल कोई सी भी सूरत हो नापसन्दीदगी की कोई वजह नहीं।

दूसरी बात (या'नी ख़ुद को फ़क़ीर से बेहतर समझना) भी जहालत है क्यूंकि अगर वोह ग़िना (मालदारी) पर फ़क्र की फ़ज़ीलत को जानता और ग़िना का ख़त़रा जानता तो कभी फ़क़ीर को ह़क़ीर न समझता बल्कि इस से बरकत लेता और इस का दर्जा पाने की तमन्ना करता। लिहाज़ा फ़ुक़रा मालदार नेक लोगों से 500 साल पहले जन्नत में जाएंगे। इसी लिये **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "रब्बे का'बा की क़सम ! वोह ख़सारा पाने वाले हैं।" ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अ़र्ज़ की : "कौन ?" इरशाद फ़रमाया : "जो ज़ियादा मालदार हैं।"[1]

मालदार शख़्स मोहताज ख़ादिम है :

मालदार कैसे फ़क़ीर को ह़क़ीर समझता है। ह़ालांकि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इसे उस के लिये ज़रीअ़ए तिजारत बना दिया क्यूंकि मालदार अपनी कोशिश से माल कमाता और इस में ज़ियादती चाहता है और बक़दरे ह़ाजत इस की ह़िफ़ाज़त की कोशिश करता है और इस पर लाज़िम किया गया है कि फ़क़ीर को उस की ह़ाजत की मिक़दार सिपुर्द कर दे और ज़ाइद माल अगर उस के लिये नुक़्सान देह हो तो वोह इस से रोक ले। पस फ़क़ीर के रिज़्क़ के लिये कोशिश करने में अमीर उस का ख़ादिम है। फिर लोगों के ह़ुक़ूक़ की ज़िम्मेदारी, मशक़्क़त बर्दाश्त करने और ज़ाइद माल की ह़िफ़ाज़त करने में वोह फ़क़ीर से जुदा है। यहां तक कि जब अमीर शख़्स

1 ......صحیح مسلم، کتاب الزکاۃ، باب تغلیظ عقوبۃ من لایؤدی الزکاۃ، الحدیث: ۹۹۰، ص ۴۹۵۔

मर जाता है तो उस का माल उस के दुश्मन खाते हैं। पस इस सूरत में जब नापसन्दीदगी फ़रह़त व मसर्रत में बदल जाती और ख़ुशी ह़ासिल होती है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इसे वाजिब की अदाएगी की तौफ़ीक़ बख़्शी और फ़क़ीर माल क़बूल कर के इसे ज़िम्मेदारी से ओ़हदा बरआ करता है इस वक़्त अज़िय्यत पहुंचाने, झिड़कने और तुर्शरूई का ख़ातिमा हो जाता है, फिर येह बातें ख़ुशी, ता'रीफ़ और एह़सान क़बूल करने में बदल जाती हैं। अज़िय्यत पहुंचाने और एह़सान जताने का मक़्सद येही है (जो मैं ने ज़िक्र किया)।

सुवाल-जवाब :

सुवाल नम्बर 1 : अगर आप कहें कि ज़कात देने वाले का अपने आप को मोह़सिन समझना बहुत बारीक मुआ़मला है। क्या कोई ऐसी अ़लामत है जिस के ज़रीए़ इस के दिल का इम्तिह़ान लिया जाए और मा'लूम हो जाए कि वोह ख़ुद को एह़सान जताने वाला नहीं समझता।

जवाब : जान लीजिये कि इस की एक बारीक वाज़ेह़ अ़लामत है और वोह येह है कि अगर फ़क़ीर उस का कोई नुक़्सान कर दे या उस के दुश्मन की मदद करे तो देखे कि (दिल में) उस की नफ़रत व दूरी जो अब पैदा हुई क्या येह ज़कात देने से पहले की नफ़रत से ज़ियादा है? अगर ज़ियादा है तो इस का सदक़ा एह़सान जताने के शाइबे से ख़ाली नहीं क्यूंकि ज़कात के सबब इसे अब फ़क़ीर से जो उम्मीद है वोह पहले न थी।

सुवाल नम्बर 2 : अगर आप कहें कि येह भी बारीक मुआ़मला है और किसी का दिल इस से ख़ाली नहीं इस का इ़लाज क्या है?

जवाब : जान लीजिये कि इस के दो इ़लाज हैं : एक बात़िनी और एक ज़ाहिरी।

बात़िनी इ़लाज : येह है कि उन ह़क़ाइक़ (या'नी तीन मआ़नी) की पहचान ह़ासिल करना जो हम ने वुजूब के समझने में ज़िक्र किये हैं और येह कि फ़क़ीर ज़कात क़बूल कर के उस के माल को पाक करने में उस पर एह़सान करता है।

ज़ाहिरी इ़लाज : येह है कि वोह ऐसे आ'माल करे जो ममनून आदमी करता है क्यूंकि ज़ाहिरी अख़्लाक़ व अफ़्आ़ल का दिल पर अषर होता है जैसा कि इस किताब के आख़िरी हि़स्से में इस के असरार बयान किये जाएंगे इसी लिये बा'ज़ बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِیْن फ़क़ीर के पास सदक़ा रख कर उस के सामने खड़े हो जाते और क़बूल करने की दरख़्वास्त करते ह़त्ता कि साइल की त़रह़ खड़े हो जाते और डरते कि वोह रद्द न कर दे। बा'ज़ अपनी हथेली फैला देते ताकि फ़क़ीर इस की हथेली से ले ले और फ़क़ीर का हाथ ऊपर रहे। उम्मुल मोअमिनीन ह़ज़रते

सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा और उम्मुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे सलमा (رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عَنْھُمَا) जब फ़क़ीर की त़रफ़ कोई हदिय्या भेजतीं तो ले जाने वाले से कहतीं कि इस के दुआ़इय्या कलिमात को याद रखे फिर इस जैसे कलिमात के साथ जवाब देतीं और कहतीं : दुआ़ के बदले इस लिये दुआ़ दी है ताकि हमारा सदक़ा मह़फ़ूज़ रहे। अल ग़रज़ सालिह़ीन तो दुआ़ की तवक़्क़ोअ़ भी नहीं रखते थे क्यूंकि येह बदले के मुशाबेह है और वोह दुआ़ के बदले दुआ़ दिया करते थे। अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عَنْہُ और आप के बेटे ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عَنْہُ भी ऐसा ही किया करते थे। अस्ह़ाबे क़ुलूब ह़ज़रात अपने दिलों का इलाज इसी त़रह़ किया करते थे।

ज़ाहिरी ए'तिबार से इस का इ़लाज येही आ'माल हैं जो आ़जिज़ी व इन्किसारी और एह़सान क़बूल करने पर दलालत करते हैं बात़िनी ए'तिबार से इस का इ़लाज उन चीज़ों की पहचान है जो हम ने ज़िक्र की हैं। येह अ़मल के ए'तिबार से है और वोह इ़ल्म के ए'तिबार से जब कि दिल का इ़लाज इ़ल्मो अ़मल दोनों के इम्तिज़ाज से होता है। ज़कात की मज़कूरा (बात़िनी) शराइत़ नमाज़ में ख़ुशूअ़ व ख़ुज़ूअ़ के क़ाइम मक़ाम हैं और येह दोनों बातें (या'नी नमाज़ व ज़कात की बात़िनी शराइत़ क़ुरआन व ह़दीष से षाबित हैं)

(नमाज़ के मुतअ़ल्लिक़) इरशाद हुवा : "बन्दे के लिये नमाज़ में वोही कुछ है जो इसे समझ आए।"(1)

(ज़कात के मुतअ़ल्लिक़) इरशाद हुवा : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ एह़सान जताने वाले का सदक़ा क़बूल नहीं करता।"(2)

नीज़ इरशादे बारी तआ़ला है :

لَا تُبْطِلُوْا صَدَقٰتِكُمْ بِالْمَنِّ وَ الْاَذٰىۙ

(پ۳، البقرۃ:۲۶۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *अपने सदक़े बात़िल न कर दो एह़सान रख कर और ईज़ा दे कर।*

अलबत्ता फ़क़ीह का फ़तवा कि ज़कात अपने मक़ाम पर पहुंच गई और उस की ज़िम्मेदारी पूरी हो गई येह एक अ़लाह़िदा बात है। हम ने "**किताबुस्सलात**" में इस मा'ना की त़रफ़ इशारा कर दिया है।

---

1 ......قوت القلوب، الفصل الثالث والثلاثون فی ذکر دعائم الاسلام......الخ، ج ۲، ص ۱۶۹ـ ۱۷۰ـ

2 ......قوت القلوب، الفصل الثالث والثلاثون فی ذکر دعائم الاسلام......الخ، ج ۲، ص ۱۷۸، مفھومًا۔

المعجم الکبیر، الحدیث:۷۵۴۷، ج۸، ص ۱۱۹ـ

《6》......छटी ज़िम्मेदारी येह है कि अपने अ़तिय्ये को कम समझे क्यूंकि अगर वोह इसे बड़ा समझेगा तो खुदपसन्दी में मुब्तला होगा और खुदपसन्दी हलाक करने वाली है और इस से आ'माल ज़ाएअ़ हो जाते हैं। चुनान्चे, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है :

وَيَوْمَ حُنَيْنٍ ۙ اِذْ اَعْجَبَتْكُمْ كَثْرَتُكُمْ فَلَمْ تُغْنِ عَنْكُمْ شَيْـًٔا (پ۱۰، التوبۃ:۲۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और हुनैन के दिन जब तुम अपनी कषरत पर इतरा गए थे तो वोह तुम्हारे कुछ काम न आई।* [1]

कहा जाता है कि जब भी नेकी को छोटा समझा जाता है तो वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक अ़ज़्मत वाली हो जाती है और जब भी नाफ़रमानी को बड़ा समझा जाता है तो वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक छोटी हो जाती है।

नेकी की तक्मील :

मन्क़ूल है कि नेकी तीन उमूर से मुकम्मल होती है : (1)....नेकी को छोटा समझना (2)....इसे करने में जल्दी करना और (3)....इसे छुपाना। नीज़ बड़ा समझना एह़सान जताने और अज़िय्यत पहुंचाने के इ़लावा है क्यूंकि अगर कोई शख़्स अपना माल मस्जिद या मुसाफ़िर ख़ाने की ता'मीर में ख़र्च करे तो इस में बड़ा समझना मुमकिन है लेकिन एह़सान जताने या अज़िय्यत पहुंचाने का इमकान नहीं बल्कि खुद पसन्दी और बड़ा समझना तमाम इ़बादात में जारी होते हैं।

---

❶ ....**सदरुल अफ़ाज़िल मुफ़स्सिरे शहीर** ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِی तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इ़रफ़ान में इस आयत के तह़त फ़रमाते हैं : मक्का से थोड़े ही रोज़ बा'द क़बीला हवाज़िन व षक़ीफ़ से जंग हुई। इस जंग में मुसलमानों की ता'दाद बहुत कषीर बारह हज़ार या इस से ज़ाइद थी और मुशरिकीन चार हज़ार थे जब दोनों लश्कर मुक़ाबिल हुए तो मुसलमानों में से किसी शख़्स ने अपनी कषरत पर नज़र कर के येह कहा कि अब हम हरगिज़ मग़लूब न होंगे, येह कलिमा रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को बहुत गिरां गुज़रा क्यूंकि हुज़ूर हर ह़ाल में अल्लाह तआ़ला पर तवक्कुल फ़रमाते थे और ता'दाद की क़िल्लत व कषरत पर नज़र न रखते थे। जंग शुरूअ़ हुई और क़िताले शदीद हुवा मुशरिकीन भागे और मुसलमान माले ग़नीमत लेने में मसरूफ़ हो गए तो भागे हुए लश्कर ने इस को ग़नीमत समझा और तीरों की बारिश शुरूअ़ कर दी और तीर अन्दाज़ी में बहुत महारत रखते थे। नतीजा येह हुवा कि इस हंगामे में मुसलमानों के क़दम उखड़ गए, लश्कर भाग पड़ा और सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पास सिवाए हुज़ूर के चचा ह़ज़रते अ़ब्बास और आप के इब्ने उ़म्म अबू सुफ़्यान बिन ह़ारिष के और कोई बाक़ी न रहा। हुज़ूर ने उस वक़्त अपनी सुवारी को कुफ़्फ़ार की त़रफ़ आगे बढ़ाया और ह़ज़रते अ़ब्बास को हुक्म दिया कि वोह बुलन्द आवाज़ से अपने अस्ह़ाब को पुकारें, इन के पुकारने से वोह लोग लब्बैक लब्बैक कहते हुए पलट आए और कुफ़्फ़ार से जंग शुरूअ़ हो गई जब लड़ाई ख़ूब गर्म हुई हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपने दस्ते मुबारक में संगरेज़े ले कर कुफ़्फ़ार के मुंहों पर मारे और फ़रमाया : रब्बे मुह़म्मद की क़सम ! भाग निकले, संगरेज़ों का मारना था कि कुफ़्फ़ार भाग पड़े और रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन की ग़नीमतें मुसलमानों को तक़्सीम फ़रमा दीं।

बुख़्ल और ख़ुद पसन्दी का इलाज :

इस का इलाज इ़ल्मो अ़मल के ज़रीए़ ही मुमकिन है। इ़ल्म का मत़लब येह है कि वोह येह समझे कि दसवां या चालीसवां ह़िस्सा कषीर में से क़लील है और उस ने ख़र्च करने में हल्के दर्जे पर क़नाअ़त की है जैसा कि हम ने वुजूब के बाब में ज़िक्र किया है। लिहाज़ा मुनासिब येही है कि वोह इस पर इक्तिफ़ा करने में ह़या करे, वोह कैसे इसे बड़ा समझता है अगर्चे बुलन्द दर्जे तक पहुंच जाए और अपना तमाम या अकषर माल ख़र्च कर दे। उसे ग़ौर करना चाहिये कि येह माल उस के पास कहां से आया और वोह कहां ख़र्च कर रहा है? येह माल अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का है और उस का एह़सान है कि उस ने उसे माल अ़त़ा फ़रमाया और ख़र्च करने की तौफ़ीक़ बख़्शी। लिहाज़ा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ह़क़ में इसे बड़ा न समझे जो ख़ुद अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का ह़क़ है। उस का मक़ाम व मर्तबा तो येह तक़ाज़ा करता है कि वोह आख़िरत को पेशे नज़र रखे और षवाब के लिये ख़र्च करे, नीज़ इस माल के ख़र्च करने को क्यूं बड़ा समझता है जिस के बदले उसे दुगना (अज्रो षवाब) मिलेगा?

अ़मल से मुराद येह है कि वोह अपने बुख़्ल की वजह से बाक़ी माल अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से रोकने के सबब शर्मसार हो। पस माल देते वक़्त उस की आ़जिज़ी व इन्किसारी की कैफ़िय्यत होनी चाहिये बिल्कुल ऐसे ही जैसे कोई शख़्स अमानत वापस करते हुए बा'ज़ माल रोक लेता है क्यूंकि तमाम माल अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का है और तमाम का ख़र्च करना उस के नज़्दीक पसन्दीदा है लेकिन उस ने तमाम माल ख़र्च करने का हुक्म इस लिये नहीं दिया कि फ़ित़रती बुख़्ल के सबब येह उस पर गिरां गुज़रता है। जैसा कि क़ुरआने मजीद में इरशाद होता है :

فَيُحْفِكُمْ تَبْخَلُوْا (پ٢٦،محمد:٣٧)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और ज़ियादा त़लब करे तुम बुख़्ल करोगे।*

﴾7﴿.....सातवीं ज़िम्मेदारी येह है कि अपने माल में से उ़म्दा, पसन्दीदा और पाक व साफ़ माल दे क्यूंकि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ पाक है और पाक माल को ही पसन्द फ़रमाता है। अगर माल शुबे से ह़ासिल हुवा तो मुमकिन है कि वोह इस की मिल्क ही न हो लिहाज़ा अपने मौक़अ़ पर न होगा।

ख़ुश बख़्त शख़्स :

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है कि "उस बन्दे के लिये ख़ुश ख़बरी है जो उस माल में से ख़र्च करता है जो उस ने बिग़ैर किसी गुनाह के कमाया।"[1]

1 ......شعب الایمان للبیهقی، باب فی الزکاۃ، فصل فی کراهیة امساک ......الخ، الحدیث:٣٣٨٨، ج٣، ص٢٢٥، مفهومًا۔

ज़कात में घटिया माल देना येह बे अदबी है क्यूंकि अगर उस ने बेहतरीन माल अपने लिये या घर वालों या गुलाम के लिये रखा है तो उस ने ग़ैर को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ पर तरजीह़ दी। अगर येही सुलूक वोह अपने मेहमान के साथ करे और उस के सामने मा'मूली खाना रखे तो उस का दिल अ़दावत से भर जाए। येह इस सूरत में है कि जब उस की नज़र अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ हो और अगर उस की नज़र अपनी ज़ात और आख़िरत के षवाब की त़रफ़ हो तो वोह शख़्स अ़क़्लमन्द नहीं जो ग़ैर को खुद पर तरजीह़ देता है ह़ालांकि उस का माल वोही है जो उस ने सदक़ा किया और वोह बाक़ी रहेगा या खा कर फ़ना कर दिया और जो वोह खाता है वोह तो फ़ौरी ज़रूरत को पूरा करता है। पस अ़क़्लमन्दी येह नहीं कि वोह फ़ौरी ज़रूरत पर नज़र रखे और जम्अ़ करना छोड़ दे।

अल्लाह तआ़ला इरशाद फ़रमाता है :

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اَنْفِقُوْا مِنْ طَيِّبٰتِ مَا كَسَبْتُمْ وَمِمَّاۤ اَخْرَجْنَا لَكُمْ مِّنَ الْاَرْضِ ۪ وَلَا تَيَمَّمُوا الْخَبِيْثَ مِنْهُ تُنْفِقُوْنَ وَلَسْتُمْ بِاٰخِذِيْهِ اِلَّاۤ اَنْ تُغْمِضُوْا فِيْهِ ؕ (پ۳، البقرة:۲۶۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *ऐ ईमान वालो ! अपनी पाक कमाइयों से कुछ दो और उस में से जो हम ने तुम्हारे लिये ज़मीन से निकाला और ख़ास नाक़िस का इरादा न करो कि दो तो उस में से और तुम्हें मिले तो न लोगे जब तक इस में चश्म पोशी न करो।*

या'नी तुम नापसन्द करते और ह़या करते हुए लेते हो, चश्म पोशी का येही मत़लब है। लिहाज़ा अपने रब عَزَّوَجَلَّ के लिये भी ऐसी बात को तरजीह़ न दो। ह़दीषे पाक में है कि "एक दिरहम हज़ार दराहिम पर सबक़त ले गया।"(1) इस की सूरत येह है कि इन्सान अपने ह़लाल और उ़मदा माल में से एक दिरहम निकाले और इसे रिज़ामन्दी और खुशी के साथ अदा करे और कभी अपने नापसन्दीदा माल में से एक लाख दिरहम ख़र्च कर देता है तो येह इस बात पर दलालत करता है कि वोह अपनी पसन्दीदा चीज़ के ह़वाले से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ को तरजीह़ नहीं देता। इसी लिये अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उन लोगों की मज़म्मत फ़रमाई जो नापसन्दीदा चीज़ों को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नाम पर देते हैं। चुनान्चे,

---

1 ......سنن النسائی، کتاب الزکاۃ، باب جھد المقل، الحدیث:۲۵۲۴، ص ۴۱۵۔

इरशादे बारी तआला है : وَ يَجْعَلُوْنَ لِلّٰهِ مَا يَكْرَهُوْنَ وَ تَصِفُ اَلْسِنَتُهُمُ الْكَذِبَ اَنَّ لَهُمُ الْحُسْنٰى ؕ لَا (پ۱۴، النحل: ۶۲) बा'ज़ कुर्रा ह़ज़रात ने ह़र्फ़े नफ़ी "ला" पर वक़्फ़ किया इस त़रह़ उन को झुटलाया फिर शुरूअ़ करते हुए यूं पढ़ा : "جَرَمَ اَنَّ لَهُمُ النَّارَ (پ۱۴، النحل: ۶۲)" جَرَمَ का मा'ना कसब है या'नी अपना नापसन्दीदा माल अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये ख़र्च करने के सबब वोह जहन्नमी हुए। (आ़म क़िराअत لَاجَرَمَ के साथ है या'नी उन के लिये जहन्नम की आग है)

《8》....आठवीं ज़िम्मेदारी येह है कि अपने सदक़े के लिये ऐसे लोगों को तलाश करे जिन के ज़रीए़ सदक़े को पाकीज़गी ह़ासिल हो जाए। मसारिफ़े ज़कात में से आ़म लोगों पर इक्तिफ़ा न करे बल्कि इन में से भी उसे दे जिस में छे सिफ़ात पाई जाएं और इन सिफ़ात का ख़ास ख़याल रखे वोह येह हैं :

ज़कात मुत्तक़ी व परहेज़गार ह़ाजत मन्द को दो :

(1).....मुत्तक़ी लोगों को तलाश करे जो दुन्या से कनारा कश हों और ख़ुद को आख़िरत की तिजारत के लिये ख़ास कर लिया हो। चुनान्चे, मरवी है कि हुज़ूरे अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "तू सिर्फ़ मुत्तक़ी का खाना खा और तेरा खाना भी मुत्तक़ी ही खाए।"[1] येह इस लिये फ़रमाया कि मुत्तक़ी शख़्स खाने के ज़रीए़ तक़्वा पर मदद ह़ासिल करता है तो इस त़रह़ तुम उस की मदद कर के उस के साथ इ़बादत में शरीक हो जाओगे।

एक रिवायत में है कि "अपना खाना मुत्तक़ियों और नेक मोअमिनीन को खिलाओ।"[2]

एक रिवायत में येह अल्फ़ाज़ हैं : "अपने खाने के साथ उस की मेहमान नवाज़ी करो जिस से तुम अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये मह़ब्बत करते हो।"[3]

औलिया में से एक वली :

एक आ़लिम साह़िब के बारे में मन्क़ूल है कि वोह खाना वग़ैरा सदक़ा करने में फ़ुक़रा सूफ़ियाए उ़ज़्ज़ाम رَحِمَهُمُ اللّٰه السَّلَام को दीगर फ़ुक़रा पर तरजीह़ देते थे। उन से कहा गया कि "अगर आप तमाम फ़ुक़रा के साथ उ़मूमी त़ौर पर नेकी करें तो अफ़्ज़ल है।" फ़रमाया : "नहीं, येह (या'नी फ़ुक़रा सूफ़िया) ऐसे लोग हैं जिन्हों ने अपनी हिम्मत व इरादे को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ लगा रखा है और जब येह फ़ाक़ा कशी का शिकार होते हैं तो उन की तवज्जोह मुन्तशिर हो

---

1 ......سنن ابی داود، کتاب الادب، باب من یؤمر ان یجالس، الحدیث: ۴۸۳۲، ج۴، ص ۳۴۱، باختصارٍ۔

2 ......الزھد لابن المبارک، باب ماجاء فی تخویف عواقب الذنوب، الحدیث: ۷۳، ص ۲۴۔

3 ......الزھد لابن المبارک، باب جلیس الصدق وغیر ذلک، الحدیث: ۳۶۶، ص ۱۲۴۔

जाती है। पस मैं एक शख़्स की तवज्जोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ लगा दूं तो मुझे येह उस से ज़ियादा पसन्द है कि उन हज़ार आदमियों को खाना खिलाऊं जिन का मक़्सद दुन्या (का हुसूल) है।" जब येह बात सय्यिदुत्ताइफ़ा ह़ज़रते सय्यिदुना जुनैद बग़दादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِى से ज़िक्र की गई तो उन्हों ने उस की तह़सीन फ़रमाई और फ़रमाया : "येह शख़्स अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के औलिया में से एक वली है मैं ने आज तक ऐसा उ़म्दा कलाम नहीं सुना।" कुछ अ़र्से बा'द उस के ह़ालात ख़राब हो गए और उस ने दुकान छोड़ने का इरादा कर लिया तो ह़ज़रते सय्यिदुना जुनैद बग़दादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِى ने उस की त़रफ़ माल भेजा और फ़रमाया : "इसे अपने माल में शामिल कर लो और दुकान न छोड़ो बेशक तुम जैसे लोगों को तिजारत नुक़्सान नहीं पहुंचाती।" येह शख़्स सब्ज़ी फ़रोश था फ़ुक़रा को जो कुछ देता उस की क़ीमत नहीं लेता था।

अपने माल से उ़-लमा की मदद करने का जज़्बा :

(2).....जिसे ज़कात दें वोह ख़ास अहले इ़ल्म से हो क्यूंकि येह इ़ल्म पर उस की मदद है और इ़ल्म सब से मुअ़ज़्ज़ज़ इ़बादत है जब कि निय्यत सह़ीह़ हो। ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ अपना सदक़ा ख़ुसूसन अहले इ़ल्म में तक़्सीम फ़रमाते थे। इन से अ़र्ज़ की गई : "अगर आप तमाम लोगों में तक़्सीम किया करें तो ज़ियादा बेहतर है?" आप رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने फ़रमाया : "मैं मक़ामे नबुव्वत के बा'द उ़-लमा के मक़ाम से बढ़ कर किसी के मक़ाम को अफ़्ज़ल नहीं समझता। जब इन में से किसी का दिल अपनी ह़ाजत में मश्ग़ूल होता है तो वोह इ़ल्म के लिये फ़राग़त नहीं पाता और इ़ल्म ह़ासिल करने की त़रफ़ मुतवज्जेह नहीं होता लिहाज़ा ऐसे लोगों को हुसूले इ़ल्म के लिये फ़ारिग़ करना अफ़्ज़ल है।"

ज़कात लेने वाले को कैसा होना चाहिये ?

(3).....ज़कात लेने वाला तक़्वा और इ़ल्मे तौह़ीद में सच्चा हो। उस की तौह़ीद येह है कि जब वोह कोई चीज़ ले तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ह़म्द और उस का शुक्र बजा लाए और यक़ीन रखे कि येह ने'मत अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ही की त़रफ़ से है, किसी सबब की त़रफ़ मुतवज्जेह न हो तो येह शख़्स अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का सब से ज़ियादा शुक्र गुज़ार बन्दा है या'नी उस का यक़ीन है कि तमाम ने'मतें उसी ख़ुदाए वाह़िद की त़रफ़ से हैं।

ह़ज़रते सय्यिदुना लुक़मान رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने अपने बेटे को वसिय्यत फ़रमाई कि अपने और रब्ब عَزَّوَجَلَّ के दरमियान किसी को इन्आ़म देने वाला न समझना, किसी दूसरे की त़रफ़ से मिलने वाली ने'मत को ख़ुद पर क़र्ज़ समझना, जिस ने ग़ैरे ख़ुदा का शुक्रिया अदा किया गोया

उस ने इन्आ़म देने वाले को नहीं पहचाना और उसे यक़ीन नहीं कि जो वासित़ा होता है वोह मग़लूब और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से मुसख़्ख़र होता है क्यूंकि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने अ़मल की दा'वत देने वाले उमूर उस पर मुसल्लत़ किये और उस के लिये अस्बाब को आसान कर दिया लिहाज़ा वोह इस त़रह़ दे रहा है कि वोह बारगाहे ख़ुदावन्दी में मग़लूब है। अगर वोह इसे छोड़ने का इरादा भी करे तो ऐसा नहीं कर सकता क्यूंकि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उस के दिल में येह बात डाल दी है कि इस अ़मल में उस के दीन व दुन्या की बेहतरी है। नेकी पर उभारने वाली बात जितनी ज़ियादा मज़बूत़ होगी इरादा भी उतना ही ज़ियादा पुख़्ता होगा और त़ाक़त उभरेगी, नीज़ बन्दा तरग़ीब देने वाली उस मज़बूत़ बात की मुख़ालफ़त नहीं कर सकता जिस में किसी क़िस्म का तरद्दुद नहीं। इन उमूरे तरग़ीबिया को पैदा करने, इन्हें ह़रकत देने, इन से कमज़ोरी और तरद्दुद को दूर करने और इन उमूर के तक़ाज़े के मुत़ाबिक़ क़ुदरत को मुसख़्ख़र करने वाली ज़ात अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ही की है और जिसे ऐसा यक़ीन ह़ासिल हो जाए उस की नज़र मुसब्बिबुल अस्बाब की त़रफ़ होती है। इस क़िस्म के बन्दे का यक़ीन दूसरों की त़रफ़ से मिलने वाली ता'रीफ़ और शुक्रिया वग़ैरा से ज़ियादा मुफ़ीद है क्यूंकि वोह तो मह़ज़ ज़बान की ह़रकत है जिस का नफ़्अ़ आ़म त़ौर पर कम होता है और इस क़िस्म के मुवह़्ह़िद बन्दे की मदद ज़ाएअ़ नहीं होती। नीज़ वोह शख़्स जो ज़कात मिलने पर देने वाले की ता'रीफ़ करता और भलाई की दुआ़ देता है तो न देने पर उस की मज़म्मत भी करेगा और ईज़ा पहुंचने पर बद दुआ़ देगा और उस का ह़ाल एक जैसा नहीं रहेगा।

हर ह़ाल में नज़र मुसब्बिबुल अस्बाब पर हो :

मरवी है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए गुयूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने एक ह़ाजत मन्द की त़रफ़ सदक़ा भेजा और ले जाने वाले से इरशाद फ़रमाया : ‘‘जो कुछ वोह कहे उसे याद रखना।’’ जब उस ने सदक़ा वुसूल किया तो कहा : ‘‘तमाम ख़ूबियां उस ज़ात के लिये हैं जो अपना ज़िक्र करने वालों को भूलता नहीं और अपना शुक्र अदा करने वाले को ज़ाएअ़ नहीं करता।’’ फिर कहा : ‘‘ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तू ने फुलां को नहीं भुलाया पस तू उसे ऐसा बना दे कि वोह तुझे न भुलाए।’’ जब आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को इस की ख़बर दी गई तो आप ख़ुश हुए और इरशाद फ़रमाया : ‘‘मुझे मा'लूम था कि वोह येही कहेगा।’’(1) पस ग़ौर कीजिये कि कैसे उस ने अपनी तवज्जोह ज़ाते बारी तआ़ला पर मह़दूद रखी।

---

1 ......قوت القلوب، الفصل الثالث والثلاثون فی ذکر دعائم الاسلام......الخ، ج ۲، ص ۱۸۲۔

मरवी है कि हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللہ تَعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने एक शख़्स से इरशाद फ़रमाया : "तौबा कर ।" उस ने कहा : "मैं अल्लाह वाहिद की त़रफ़ तौबा करता हूं, मुह़म्मद صَلَّی اللہ تَعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की त़रफ़ तौबा नहीं करता ।" तो आप صَلَّی اللہ تَعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "इस ने ह़क़दार के ह़क़ को पहचान लिया ।"(1)

जब वाक़िअ़ए इफ़्क में उम्मुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا की बराअत नाज़िल हुई तो अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने उन से फ़रमाया : "उठो और रसूलुल्लाह صَلَّی اللہ تَعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के सरे अन्वर को बोसा दो ।" तो उन्हों ने कहा : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं ऐसा नहीं करूंगी और अल्लाह के सिवा किसी की ह़म्द नहीं करूंगी ।" तो आप صَلَّی اللہ تَعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "ऐ अबू बक्र ! इसे छोड़ दो ।"(2)

एक रिवायत में है कि उम्मुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا ने अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से कहा : "मैं तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का शुक्र करती हूं न कि आप दोनों का ।" तो हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللہ تَعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इस पर इन्कार न फ़रमाया(3) ह़ालांकि इन तक बराअत की ख़बर रसूलुल्लाह صَلَّی اللہ تَعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ही की ज़बाने मुबारक से पहुंची थी ।

कुफ़्फ़ार का त़रीक़ा :

अश्या का ग़ैरे ख़ुदा की त़रफ़ से होने का नज़रिया रखना कुफ़्फ़ार का त़रीक़ा है । चुनान्चे, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

وَ اِذَا ذُكِرَ اللّٰهُ وَحْدَهُ اشْمَاَزَّتْ قُلُوْبُ الَّذِیْنَ لَا یُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِۚ وَ اِذَا ذُكِرَ الَّذِیْنَ مِنْ دُوْنِهٖۤ اِذَا هُمْ یَسْتَبْشِرُوْنَ ۝۴۵

(پ۲۴،الزمر:۴۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और जब एक अल्लाह का ज़िक्र किया जाता है दिल सिमट जाते हैं उन के जो आख़िरत पर ईमान नहीं लाते और जब इस के सिवा औरों का ज़िक्र होता है जभी वोह ख़ुशियां मनाते हैं ।*

---

1 ......المسند للامام احمد بن حنبل، مسند المکیین، حدیث الاسود بن سریع، الحدیث:۱۵۵۸۷، ج۵، ص۳۰۳۔

2 ......سنن ابی داود، کتاب الادب، باب فی قبلۃ الرجل ولدہ، الحدیث:۵۲۱۹، ج۴، ص۴۵۵۔

قوت القلوب، الفصل الثالث والثلاثون فی ذکر دعائم الاسلام......الخ، ج۲، ص۱۸۳۔

3 ......قوت القلوب، الفصل الثالث والثلاثون فی ذکر دعائم الاسلام......الخ، ج۲، ص۱۸۳،بتغیرٍ۔

المعجم الکبیر،الحدیث:۱۲۲،ج۲۳، ص۱۲۴، باختصارٍ۔

जिस का बाति़न वासित़ों को मह़ज़ वासित़ा नहीं समझता तो उस का बाति़न पोशीदा शिर्क से मह़फ़ूज़ नहीं रह सकता। लिहाज़ा वह़दानिय्यत को शिर्क की मैल और इस के शुबहात से पाक करने के मुआ़मले में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से डरते रहना चाहिये।

सफे़द पोश मुस्तह़िक़ को सदक़ा देने का षवाब :

(4).....ज़कात लेने वाला अपनी ज़रूरत को छुपाता हो, न तो इस का चर्चा करे और न ही शिकवा करे या अहले मुरव्वत में से हो कि जिस की ने'मत चली गई लेकिन आ़दत बाक़ी रही कि हुस्नो ख़ूबी की चादर ओढ़े रखता है। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ (ऐसे लोगों के अवसाफ़ बयान करते हुए) इरशाद फ़रमाता है :

يَحْسَبُهُمُ الْجَاهِلُ اَغْنِيَآءَ مِنَ التَّعَفُّفِ ۚ تَعْرِفُهُمْ بِسِيْمٰهُمْ ۚ لَا يَسْـَٔلُوْنَ النَّاسَ اِلْحَافًا ؕ

(پ۳،البقرۃ:۲۷۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *नादान उन्हें तवंगर समझे बचने के सबब तो उन्हें उन की सूरत से पहचान लेगा, लोगों से सुवाल नहीं करते कि गिड़ गिड़ाना पड़े।*

या'नी वोह सुवाल करने में ह़द से नहीं बढ़ते क्यूंकि वोह अपने यक़ीन के सबब ग़नी और अपने सब्र की वजह से मुअ़ज़्ज़ज़ हैं। लिहाज़ा हर मह़ल्ले में ऐसे दीनदार लोगों को तलाश किया जाए और नेक लोगों के अन्दरूनी ह़ालात मा'लूम करने की कोशिश की जाए क्यूंकि उन्हें सदक़ा देने का षवाब उन लोगों की ब निस्बत कई गुना ज़ियादा है जो ज़ाहिरन मांगते हैं।

(5)....ज़कात लेने वाला शख़्स इयालदार हो या किसी मरज़ या किसी और वजह से कमाने से रुका हुवा हो, इस में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के इस इरशादे पाक का मफ़्हूम पाया जाता है :

لِلْفُقَرَآءِ الَّذِيْنَ اُحْصِرُوْا فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ

(پ۳،البقرۃ:۲۷۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *उन फ़क़ीरों के लिये जो राहे ख़ुदा में रोके गए।*

या'नी किसी बीमारी या मईशत की तंगी या इस्लाहे़ क़ल्ब के सबब वोह ज़मीन में चलने की त़ाक़त नहीं रखते, यूं येह लोग आख़िरत के रास्ते से रोक दिये गए हैं क्यूंकि इन के पर कटे हुए और पाउं रुके हुए हैं। इन्हीं अस्बाब की बदौलत अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ अहले बैते किराम को बकरियों का एक रेवड़ देते थे जिस में दस या इस से ज़ाइद बकरियां होती थीं।[1]

1......قوت القلوب، الفصل الثالث والثلاثون فی ذکر دعائم الاسلام......الخ، ج۲، ص۱۸۵۔

नीज़ हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم किसी शख़्स को उस के अहलो इयाल के हिसाब से माल अता फ़रमाते थे। अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से **जुहदुल बला** के मुतअ़ल्लिक़ पूछा गया तो फ़रमाया : "इयाल की कषरत और माल की क़िल्लत।"(1)

(6).....सदक़ा लेने वाला उस का क़रीबी रिश्तेदार हो तो येह सदक़ा भी होगा और सिलए रहमी भी और सिलए रहमी में बे शुमार षवाब है। चुनान्चे,

एक गुलाम आज़ाद करने से ज़ियादा महबूब :

अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم फ़रमाते हैं : "मुझे अपने भाई पर एक दिरहम सदक़ा करना किसी और पर बीस दिरहम सदक़ा करने से ज़ियादा पसन्द है। अपने भाई पर बीस दिरहम सदक़ा करना किसी और पर 100 दिरहम सदक़ा करने से ज़ियादा पसन्द है। अपने भाई पर 100 दिरहम ख़र्च करना एक गुलाम आज़ाद करने से ज़ियादा पसन्द है।"

जिस तरह क़रीबी रिश्तेदार अजनबी लोगों पर मुक़द्दम है इसी तरह दोस्त और दीनी भाई भी सदक़ात के हवाले से दूसरों पर मुक़द्दम हैं। इन बारीक बातों का लिहाज़ रखना चाहिये। येह मत़लूबा सिफ़ात हैं और हर सिफ़त में कुछ दर्जात हैं पस आ'ला दर्जे की जुस्तजू होनी चाहिये। अगर येह तमाम सिफ़ात इकठ्ठी हासिल हो जाएं तो येह बहुत बड़ा ज़ख़ीरा और बहुत बड़ी ग़नीमत है। जब भी कोई इस मुआमले में कोशिश करे और मक़्सद को पा ले तो उस के लिये दो अज्र हैं और अगर ख़ता करे तो एक अज्र है। दो अज्रों में से फ़िलहाल एक तो येह मिलता है कि उस का नफ़्स बुख़्ल की सिफ़त से पाक हो जाता, दिल में महब्बते इलाही और इताअ़त में कोशिश पुख़्ता हो जाती है। येही सिफ़ात उस के दिल का तक़्वा हैं जो उसे मुलाक़ाते ख़ुदावन्दी का शौक़ दिलाती हैं। दूसरा अज्र ज़कात लेने वाले की दुआ और तवज्जोह का हासिल होना है क्यूंकि नेक लोगों के दिलों के लिये मौजूदा हालात और आयन्दा के लिये कुछ अलामात होती हैं। लिहाज़ा अगर (ज़कात देने में) सहीह नतीजा निकले तो दो अज्र हासिल होंगे और अगर ख़ता हो जाए तो पहला फ़ाइदा हासिल होगा दूसरा नहीं। इसी वजह से इजतिहाद में दुरुस्ती तक पहुंचने वाले को इस सूरत में भी और दीगर मक़ामात पर भी दो गुना षवाब मिलता है और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ बेहतर जानता है।

---

1 ......قوت القلوب، الفصل الثالث والثلاثون فی ذکر دعائم الاسلام......الخ، ج ۲، ص ۱۸۵ ـ فیہ ذکر "ابن عمر"ـ

तीसरी फ़स्ल : ज़कात लेने वाला, मुस्तह़िक़ होने के अस्बाब और क़ब्ज़े के वज़ाइफ़

मुस्तह़िक़े ज़कात होने के अस्बाब :

जान लीजिये ! ज़कात का मुस्तह़िक़ वोह आज़ाद मुसलमान है जो हाशिमी या मुत्त़लिबी न हो और कु़रआने पाक में मज़्कूर आठ क़िस्म की सिफ़ात में से किसी सिफ़त से मुत्तसिफ़ हो । किसी काफ़िर, गुलाम, हाशिमी, मुत्त़लिबी को ज़कात देना जाइज़ नहीं । बच्चे और पागल को ज़कात देना जाइज़ है जब कि इन का वली क़ब्ज़ा करे । हम यहां मसारिफ़े ज़कात की आठ क़िस्मों को ज़िक्र करेंगे ।

﴾1﴿.......**फु़क़रा :** फ़क़ीर[1] वोह शख़्स है जिस के पास न तो माल हो और न ही वोह कमाने पर क़ादिर हो अगर उस के पास एक दिन की ख़ुराक और फ़िलह़ाल पहनने के कपड़े हों तो वोह फ़क़ीर नहीं बल्कि मिस्कीन है । अगर उस के पास निस्फ़ दिन का रिज़्क़ है तो वोह फ़क़ीर है । अगर उस के पास क़मीस हो लेकिन रूमाल, मोज़ा और शलवार न हो और क़मीस की इतनी क़ीमत नहीं जो फु़क़रा के ह़ाल के मुवाफ़िक़ इन तमाम चीज़ों की क़ीमत को पहुंच सके तो वोह भी फ़क़ीर है क्यूंकि फ़िल वक़्त उस के पास वोह तमाम चीज़ें नहीं जिन का वोह मोह़ताज और जिन से वोह आ़जिज़ है । लिहाज़ा फ़क़ीर में येह शर्त़ नहीं रखनी चाहिये कि उस के पास सतर छुपाने के इलावा लिबास हो क्यूंकि येह बहुत ज़ियादा है और आ़म तौ़र पर ऐसा आदमी नायाब होता है ।

अगर उसे मांगने की आ़दत हो तो वोह फु़क़रा के ज़ुमरे से ख़ारिज नहीं होगा और मांगने को कसब क़रार नहीं दिया जाएगा अलबत्ता अगर वोह कमाने पर क़ादिर हो तो फु़क़रा की सिफ़त से निकल जाएगा ।[2]

---

❶....मसारिफ़े ज़कात की तफ़्सील जानने के लिये बहारे शरीअ़त जिल्द अव्वल से ह़िस्सा पन्जुम का मुत़ालआ़ करें ।

❷....**सुवाल :** भीक मांगना कैसा ? और भीक मांगने वालों को ज़कात देने से ज़कात अदा होगी या नहीं ? "**फ़तावा फ़ैज़ुर्रसूल, जि. 1 स. 505**" पर फ़क़ीहे मिल्लत ह़ज़रते अ़ल्लामा मुफ़्ती जलालुद्दीन अह़मद अमजदी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى मज़्कूरा सुवाल के जवाब में फ़रमाते हैं : "भीक मांगने वाले तीन त़रह़ के होते हैं । एक मालदार जैसे बहुत से क़ौम के फ़क़ीर, जोगी और साधू । इन्हें भीक मांगना ह़राम और इन्हें देना ह़राम । ऐसे लोगों को देने से ज़कात नहीं अदा हो सकती । दूसरे वोह जो ह़क़ीक़त में फ़क़ीर हैं या'नी निसाब के मालिक नहीं हैं मगर मज़्बूत़ व तन्दुरुस्त हैं, कमाने की कु़व्वत रखते हैं और भीक मांगना किसी ऐसी ज़रूरत के लिये नहीं जो इन की त़ाक़त से बाहर हो । मज़्दूरी वग़ैरा कोई काम नहीं करना चाहते मुफ़्त खाना खाने की आ़दत पड़ी है जिस के सबब भीक मांगते फिरते हैं । ऐसे लोगों को भीक मांगना ह़राम है और.....

अगर किसी आले के ज़रीए कमाने पर क़ादिर हो तो भी वोह फ़क़ीर है और उसे औज़ार ख़रीद कर देना जाइज़ है।

अगर ऐसे कसब पर क़ादिर हो जो उस की शान के मुवाफ़िक़ नहीं तो भी वोह फ़क़ीर समझा जाएगा।

अगर कोई शख़्स फ़क़ीह हो और फ़िक़ह का हुसूल किसी काम में मश्ग़ूल होने से रुकावट हो तो वोह भी फ़क़ीर है और उस का कसब वग़ैरा पर क़ादिर होना मो'तबर न होगा।

अगर आ़बिद है और कोई पेशा इख़्तियार करने से इ़बादत और मा'मूल के अवरादो वज़ाइफ़ में ख़लल आता हो तो मेह़नत मज़्दूरी करे क्यूंकि अवरादो वज़ाइफ़ में मश्ग़ूल होने से कसबे मुआ़श अफ़्ज़ल है। चुनान्चे,

हु़ज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : طَلَبُ الْحَلَالِ فَرِیْضَۃٌ بَعْدَ الْفَرِیْضَۃ या'नी ह़लाल की त़लब एक फ़र्ज़ के बा'द दूसरा फ़र्ज़ है।''[1] इस से मुराद कमाने के सिलसिले में कोशिश करना है।

अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : ''शुबे के साथ कमाना मांगने से बेहतर है।''

अगर इस के पास इस क़दर माल हो जो इस के बाप या दीगर ज़ेरे कफ़ालत लोगों को काफ़ी हो तो येह कमाने से आसान है। लिहाज़ा ऐसा शख़्स भी फ़ुक़रा में शुमार न होगा।

.... जो इन्हें मांगने से मिले वोह इन के लिये ख़बीष है ह़दीष शरीफ़ में है : لَاتَحِلُّ الصَّدَقَۃُ لِغَنِیٍّ وَّلَالِذِیْ مِرَّۃٍ سَوِیٍّ या'नी न किसी मालदार के लिये सदक़ा ह़लाल है और न किसी तवाना तन्दुरुस्त के लिये। ऐसे लोगों को भीक देना मन्अ़ है कि गुनाह पर मदद करना है। लोग अगर नहीं देंगे तो वोह मेह़नत मज़्दूरी करने पर मजबूर होंगे قَالَ اللّٰہُ تَعَالٰی: وَلَاتَعَاوَنُوْاعَلَی الْاِثْمِ وَالْعُدْوَانِ (پ ٦، المائدۃ: ٢) या'नी गुनाह और ज़ियादती पर मदद न करो। मगर ऐसे लोगों को देने से ज़कात अदा हो जाएगी जब कि और कोई शरई रुकावट न हो। इस लिये कि वोह मालिके निसाब नहीं हैं और भीक मांगने वालों की तीसरी क़िस्म वोह है कि जो न माल रखते हैं और न कमाने की त़ाक़त रखते हैं या जितने की ह़ाजत है इतना कमाने की त़ाक़त नहीं रखते। ऐसे लोगों को अपनी ह़ाजत पूरी करने भर की भीक मांगना जाइज़ है और मांगने से जो कुछ मिले वोह इन के लिये ह़लाल व त़य्यिब है और येह लोग ज़कात के बेहतरीन मसरफ़ हैं। इन्हें देना बहुत बड़ा षवाब है और येही वोह लोग हैं जिन्हें झिड़कना ह़राम है।''

1 ......شعب الایمان للبیہقی، باب فی حقوق الاولاد والاھلین، الحدیث: ۸۷۴۱، ج۶، ص ۴۲۰۔

《2》....**मसाकीन :**[1] मिस्कीन वोह है जिस की आमदनी से इस के अख़राजात पूरे न होते हों। हो सकता है कि वोह हज़ार दिरहम का मालिक होने के बा वुजूद मिस्कीन हो और बा'ज़ अवक़ात वोह सिर्फ़ कुलहाड़ी और रस्सी का मालिक होता है लेकिन अमीर होता है। छोटा सा मकान और वोह कपड़ा जिस से वोह बक़दरे ज़रूरत सतर ढांपता है उसे मसाकीन की सिफ़त से ख़ारिज नहीं करता, इसी त़रह़ घर का सामान है या'नी जिस की इसे ज़रूरत होती है और जो सामान उस के ह़ाल के मुत़ाबिक़ हो, इसी त़रह़ कुतुबे फ़िक़्ह उसे मिस्कीन होने से ख़ारिज नहीं कर सकतीं कि जब वोह सिर्फ़ कुतुब का मालिक हो तो उस पर सदक़ए फ़ित्र वाजिब नहीं और किताबों का हुक्म कपड़ों और घरेलू सामान की त़रह़ है क्यूंकि उसे इन चीज़ों की ज़रूरत होती है। लेकिन उसे चाहिये कि किताब की ज़रूरत के ह़वाले से मोह़तात़ रहे।

किताब की ज़रूरत के मक़ासिद :

सिर्फ़ तीन मक़ासिद के लिये किताब की ज़रूरत होती है :

(1).....ता'लीम (2)...फ़ाइदा ह़ासिल करना (3).....मुत़ालए़ के ज़रीए़ सुरूर का हुसूल।

तफ़्सील : जहां तक **सुरूर** के हुसूल का तअ़ल्लुक़ है तो इस का ए'तिबार नहीं जैसे अश्आ़र की कुतुब और तारीख़ी कुतुब और इस जैसी दीगर कुतुब जो आख़िरत में नफ़्अ़ नहीं देतीं, दुन्या में भी मह़ज़ लुत़्फ़ो सुरूर देती और मानूस करती हैं। ऐसी किताबों को कफ़्फ़ारों और सदक़ए फ़ित्र (की अदाएगी) के लिये बेचा जाए और ऐसे शख़्स को मिस्कीन नहीं कह सकते।

जहां तक **ता'लीमी** ज़रूरत का तअ़ल्लुक़ है तो अगर ता'लीम कमाने के लिये हो जैसे तनख़्वाह पर इल्मो अदब सिखाने वाले और मुदर्रिसीन वग़ैरा तो इन के लिये येह कुतुबे आला हैं। इन्हें सदक़ए फ़ित्र के लिये नहीं बेच सकते येह ऐसे ही हैं जैसे दरज़ी और दीगर पेशों के लोगों के औज़ार, अगर वोह फ़र्ज़े किफ़ाया को क़ाइम रखने के लिये पढ़ाता है तो उस की किताबें न बेची जाएं और इस से उस के मिस्कीन होने की नफ़ी न होगी क्यूंकि येह अहम ह़ाजत है।

कुतुब से **फ़ाइदा** ह़ासिल करना और सीखना जैसे त़िब्ब की किताबें इस लिये इकठ्ठी करना ताकि इन के ज़रीए़ अपना इ़लाज कर सके या वा'ज़ की किताबें रखना ताकि इन का मुत़ालआ़ कर के वा'ज़ करे, अगर शहर में डोक्टर और वाइ़ज़ मौजूद हैं तो इसे इन किताबों की ज़रूरत नहीं और अगर मौजूद नहीं तो फिर येह इन कुतुब का मोह़ताज है। फिर कभी एक मुद्दत तक इन्सान को किसी

1....**अह़नाफ़ के नज़दीक :** मिस्कीन वोह है कि जिस के पास कुछ न हो यहां तक कि खाने और बदन छुपाने के लिये इस का मोह़ताज है कि लोगों से सुवाल करे और उसे सुवाल ह़लाल है, फ़क़ीर को सुवाल नाजाइज़ कि जिस के पास खाने और बदन छुपाने को हो उसे बिग़ैर ज़रूरत व मजबूरी सुवाल ह़राम है। (बहारे शरीअ़त, जि. 1 स. 924)

किताब की ज़रूरत नहीं पड़ती तो उसे मुद्दते ज़रूरत को देखना चाहिये। यूं कहना ज़ियादा मुनासिब है कि साल भर तक जिस किताब की ज़रूरत नहीं पड़ती वोह ज़रूरत में दाख़िल नहीं।

जो शख़्स एक दिन के खाने से ज़ाइद चीज़ का मालिक हो तो उस पर सदक़ए फ़ित्र वाजिब है। जब हम ने ख़ुराक के सिलसिले में एक दिन का तख़्मीना लगाया तो घर के सामान और बदन के कपड़ों की ह़ाजत के सिलसिले में एक साल का अन्दाज़ा होना चाहिये। गर्मियों के कपड़े सर्दियों में नहीं बेचे जा सकते और किताबें कपड़ों और घरेलू सामान के ज़ियादा मुशाबेह हैं और बा'ज़ अवक़ात बन्दे के पास एक किताब के दो नुस्ख़े होते हैं तो इन में से एक की ह़ाजत नहीं होती और अगर वोह कहे कि एक नुस्ख़ा ज़ियादा सह़ीह़ है और दूसरा ज़ियादा उ़म्दा और मुझे दोनों की ह़ाजत है तो हम कहेंगे कि अस्सह़ पर इक्तिफ़ा करो, अह़सन को बेच दो और ऐ़शो इ़शरत छोड़ दो। अगर एक ही इ़ल्म से मुतअ़ल्लिक़ दो नुस्ख़े हैं जिन में से एक किताब बड़ी और दूसरी मुख़्तसर है तो अगर उस का मक़्सद इस्तिफ़ादा हो तो वोह बड़ी किताब पर इक्तिफ़ा करे और अगर पढ़ाने का इरादा है तो उसे दोनों की ज़रूरत पड़ेगी क्यूंकि इन में से हर एक में जो फ़ाइदा है वोह दूसरी में नहीं।

इस क़िस्म की बेशुमार मिषालें हैं, फ़न्ने फ़िक़्ह में इन के मुतअ़ल्लिक़ बह़ष नहीं की गई। हम ने इसे यहां इस लिये बयान किया कि इस में आ़म तौ़र पर लोग मुब्तला हैं नीज़ इस बात का लिह़ाज़ दूसरी चीज़ों में भी करें क्यूंकि इन सब सूरतों का ज़िक्र करना मुमकिन नहीं कि हर एक चीज़ में येह नज़र हो सकती है मषलन घर का सामान, इस की मिक़्दार, ता'दाद और अक़्साम, बदन के कपड़े और मकान की वुस्अ़त व तंगी को देखा जाता है। इन उमूर के लिये कोई ह़ुदूद मुक़र्रर नहीं बल्कि मुज्तहिद अपनी राए से इजतिहाद करता और राए के मुत़ाबिक़ ह़द बन्दी करता है और यूं शुबहात के ख़त़रे में दाख़िल हो जाता है जब कि परहेज़गार आदमी एह़तियात़ से काम लेता और शक वाली बात को छोड़ कर ग़ैरे मश्कूक को इख़्तियार करता है और जो दर्जात दरमियान में हैं और दोनों त़रफ़ के ज़ाहिरी उमूर के दरमियान हैं वोह ग़ैर वाज़ेह़ और बहुत ज़ियादा हैं और इन से नजात का त़रीक़ा येही है कि एह़तियात़ से काम लिया जाए और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ बेहतर जानता है।

﴾3﴿.....**आ़मिलीन :**(1) येह वोह लोग हैं जो कोशिश कर के ज़कात जम्अ़ करते हैं। क़ाज़ी और ख़लीफ़ा इन में शामिल नहीं। निगरान, कातिब, वुसूल करने वाला, ह़िफ़ाज़त करने वाला और

---

❶....**आ़मिल :** वोह है जिसे बादशाहे इस्लाम ने ज़कात और उ़श्र वुसूल करने के लिये मुक़र्रर किया, उसे काम के लिह़ाज़ से इतना दिया जाए कि उस को और उस के मददगारों को मुतवस्सित़ तौ़र पर काफ़ी हो, मगर इतना न दिया जाए कि जो वुसूल कर लाया है उस के निस्फ़ से ज़ियादा हो जाए। (बहारे शरीअ़त, जि. 1 स. 924)

नक़्ल करने वाला इन में शामिल हैं और किसी को राइज उजरत से ज़ियादा न दी जाए। अगर आठवें हि़स्से में आ़म उजरत से कुछ बच जाए तो दूसरे मसारिफ़ को दें और अगर कम हो जाए तो दीगर ज़रूरतों के माल से मुकम्मल किया जाए।

﴾4﴿..... **मुअल्लफ़तुल क़ुलूब :**[1] वोह लोग जिन के दिलों को इस्लाम के लिये नर्म किया जाए, येह मुअ़ज़्ज़ज़ लोग होते हैं जो इस्लाम क़बूल करते हैं तो क़ौम इन की इत़ाअ़त करती है। इन को देने का मक़्सद येह होता है कि येह इस्लाम पर षाबित क़दम रहें और दीगर इन जैसे लोगों और इन की इत्तिबाअ़ करने वालों को तरग़ीब मिले।

﴾5﴿....**मुकातब :** (इस की ता'रीफ़ माक़ब्ल गुज़र चुकी है) मुकातब का हि़स्सा उन के सरदार को दिया जाए और अगर मुकातब को भी दिया तो जाइज़ है। सरदार अपने मुकातब को ज़कात नहीं दे सकता क्यूंकि येह अपना ग़ुलाम शुमार होता है।

﴾6﴿....**क़र्ज़दार :**[2] ग़ारिम उस शख़्स को कहते हैं जो किसी इबादत या किसी जाइज़ काम के लिये क़र्ज़ लेता है और येह फ़क़ीर है। अगर किसी गुनाह के लिये क़र्ज़ ले तो उस वक़्त तक ज़कात न दी जाए जब तक तौबा न करे, अगर ग़नी हो तो उस का क़र्ज़ अदा न किया जाए मगर येह कि उस ने किसी मस्लेह़त के पेशे नज़र या किसी फ़ित्ने को दबाने के लिये क़र्ज़ लिया हो।

﴾7﴿....**मुजाहिदीन :** येह वोह हैं कि जिन का वज़ीफ़ा मुह़ाफ़िज़ ख़ाने के दफ़्तर में कुछ न हो तो इन्हें एक हि़स्सा दिया जाए अगर्चे वोह मालदार हों क्यूंकि येह जिहाद पर मदद करना है।

﴾8﴿....**मुसाफ़िर :** मुसाफ़िर से मुराद वोह शख़्स है जो अपने शहर से सफ़र के लिये निकला जबकि गुनाह का इरादा न हो या वोह ज़कात देने वाले के शहर से गुज़रा, अगर फ़क़ीर है तो उसे ज़कात दी जाए और अगर उस का माल दूसरे शहर में है तो इतना दिया जाए कि वोह वहां तक पहुंच सके।

---

❶.... **मुअल्लफ़तुल क़ुलूब** ब इजमाए सह़ाबा साक़ित़ हो गए क्यूंकि जब **अल्लाह** तबारक व तआ़ला ने इस्लाम को ग़लबा दिया तो अब इस की ह़ाजत न रही। येह इजमाअ़ ज़मानए सिद्दीक़ में मुन्अ़क़िद हुवा।

(ماخوذازالهدايه اولين،كتاب الزكوة،باب من يجوزدفع الصدقات اليه و من لا يجوز،ص ۱۸۴)

❷....**ग़ारिम :** से मुराद मदयून (क़र्ज़दार) है या'नी इस पर इतना दैन (क़र्ज़) हो कि उसे निकालने के बा'द निसाब बाक़ी न रहे, अगर्चे इस का औरों पर बाक़ी हो मगर लेने पर क़ादिर न हो, मगर शर्त़ येह है कि मदयून हाशिमी न हो।

(बहारे शरीअ़त, जि. 1 स. 926)

एक सुवाल और इस का जवाब :

अगर आप कहें कि येह सिफ़ात किस त़रह़ पहचानी जा सकती हैं ? तो इस का जवाब येह है कि जहां तक **फ़क़ीरी व मिस्कीनी** का मुआ़मला है तो वोह लेने वाले के क़ौल से मा'लूम होंगी, उस से न तो दलील त़लब की जाएगी और न ही क़सम ली जाएगी बल्कि उस के कहने पर ए'तिमाद करना जाइज़ है जब कि झूटा होना षाबित न हो। **जिहाद और सफ़र** तो मुस्तक़बिल का मुआ़मला है, अगर वोह कहे कि मैं जिहाद पर जाऊंगा तो उसे ज़कात दी जाएगी फिर अगर वोह अपना क़ौल पूरा न करे तो वापस ले ली जाए। इन के इ़लावा दीगर मसारिफ़े ज़कात में गवाही ज़रूरी है। येह ज़कात के मुस्तह़िक़ होने की शराइत़ हैं। हर मसरफ़े जकात को कितना कितना देना चाहिये इस का बयान आगे आएगा।

ज़कात लेने वाले की ज़िम्मेदारी :

ज़कात लेने वाले की पांच ज़िम्मेदारियां हैं :

﴿1﴾.....**पहली ज़िम्मेदारी :** वोह जाने कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने दूसरों पर उस के लिये ज़कात इस लिये फ़र्ज़ की है ताकि उस की तमाम फ़िक्रें ख़त्म हो जाएं सिर्फ़ एक बाक़ी रहे। नीज़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने बन्दों पर लाज़िम किया है कि उन की तमाम फ़िक्रें एक फ़िक्र में जम्अ़ हो जाएं और वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और आख़िरत की फ़िक्र है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के इस फ़रमाने आ़लीशान का येही मा'ना है :

وَمَا خَلَقْتُ الْجِنَّ وَالْإِنْسَ إِلَّا لِيَعْبُدُوْنِ ﴿۵۶﴾

(پ۲۷، الذّٰرِیٰت: ۵۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और मैं ने जिन्न और आदमी इतने ही (इसी) लिये बनाए कि मेरी बन्दगी करें।*

लेकिन चूंकि ह़िक्मत का तक़ाज़ा येह है कि बन्दे पर ख़्वाहिशात और ह़ाजात मुसल्लत़ की जाएं और ख़्वाहिश व ह़ाजत बन्दे की सोच व फ़िक्र को मुतफ़र्रिक़ कर देती है तो उस का करम ने'मत की ऐसी कषरत का तक़ाज़ा करता है जो ह़ाजात में किफ़ायत करे। पस उस ने अम्वाल की कषरत कर के लोगों के हाथों में दे दिया ताकि येह उन की ह़ाजात को पूरा करने का आला और इ़बादात के लिये फ़राग़त का वसीला बन जाए। बा'ज़ लोगों के लिये माल की कषरत आज़माइश व फ़ितने का सबब बन गई और उन्हें ख़त़रे में डाल दिया जब कि बा'ज़ को अपना मह़बूब बना लिया और उन्हें दुन्या से बचा लिया जैसे कोई शफ़ीक़ व मेहरबान शख़्स अपने मरीज़ की ह़िफ़ाज़त करता है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उन से ज़ाइद माल को दूर रखा और बक़दरे ह़ाजत मिक़दारे अग़निया के ज़रीए़ उन तक पहुंचाई कि कमाने, जम्अ़ करने और ह़िफ़ाज़त करने की मेह़नत व मशक़्क़त की ज़िम्मेदारी मालदारों पर रहे और इस का फ़ाइदा फ़ुक़रा को पहुंचे और वोह

इबादते इलाही और सफ़रे आख़िरत की तय्यारी के लिये फ़ारिग़ हों, दुन्या का ज़ाइद माल उन्हें इबादत से नहीं फेरता और फ़ाक़ा कशी सफ़रे आख़िरत की तय्यारी में रुकावट नहीं बनता, येह ने'मत की इन्तिहा है। लिहाज़ा फ़क़ीर पर लाज़िम है कि ने'मते फ़क़्र की क़द्रो क़ीमत पहचाने और इस बात को अच्छी त़रह़ जान ले कि जो चीज़ मुझे अ़त़ा की गई इस के मुक़ाबले में जो अ़त़ा नहीं की गई उस में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का मुझ पर बहुत बड़ा फ़ज़्ल है। اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ इस की तह़क़ीक़ और वज़ाह़त फ़क़्र के बयान में आएगी।

ह़ासिल शुदा माल में मोह़ताज की निय्यत :

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के फ़ज़्ल से फ़क़ीर को जो कुछ ह़ासिल हो उसे अपना रिज़्क़ समझे और इत़ाअ़त पर मददगार बनाए और येह निय्यत करे कि इस के ज़रीए़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत पर क़ुव्वत ह़ासिल करेगा, अगर ऐसा न कर सकता हो तो (बक़द्रे ह़ाजत रख कर) बाक़ी को जाइज़ मसरफ़ में ख़र्च कर दे। अगर उस ने इस के ज़रीए़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की नाफ़रमानी पर मदद चाही तो वोह ने'मतों की नाशुक्री करने वाला नीज़ रह़मते इलाही से दूरी और उस की नाराज़ी का मुस्तह़िक़ होगा।

﴾2﴿.....**दूसरी ज़िम्मेदारी :** देने वाले का शुक्रिया अदा करे, उस के लिये दुआ़ करे, उस की ता'रीफ़ करे लेकिन इस शुक्र और दुआ़ के ज़रीए़ इसे वासित़ा होने से न निकाले (या'नी ह़क़ीक़ी देने वाला न समझे) बल्कि इसे अपने तक ने'मते इलाही पहुंचने का रास्ता समझे और इस ए'तिबार से रास्ते का भी एक ह़क़ है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इसे रास्ता और ज़रीआ़ बनाया (लिहाज़ा इस का भी शुक्रिया अदा करना चाहिये) और येह नज़रिया रखना अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से ने'मत मिलने के अ़क़ीदे के ख़िलाफ़ नहीं कि सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : مَنْ لَّمْ یَشْکُرِ النَّاسَ لَمْ یَشْکُرِ اللّٰہ या'नी जो बन्दों का शुक्रिया अदा नहीं करता वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का भी शुक्र अदा नहीं करता।[1]

बा'ज़ मक़ामात पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने ख़ुद बन्दों के आ'माल के सबब उन की ता'रीफ़ फ़रमाई ह़ालांकि आ'माल का ख़ालिक़ और इस की क़ुदरत पैदा करने वाला वोही है। जैसा कि इरशादे ख़ुदावन्दी है :

نِعْمَ الْعَبْدُ ؕ اِنَّهٗۤ اَوَّابٌ ﴿۳۰﴾ (پ۲۳،ص:۳۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : क्या अच्छा बन्दा बेशक वोह बहुत रुजूअ़ लाने वाला।

इस के इ़लावा भी कई आयात में ऐसे फ़रामीन मौजूद हैं।

---

1 ......سنن الترمذی، کتاب البر و الصلة، باب ماجاء فی الشکر لمن احسن الیک، الحدیث:۱۹۶۲، ج۳، ص۳۸۴۔

ज़कात लेने वाला देने वाले को यूं दुआ़ दे :

ज़कात लेने वाले को चाहिये कि (देने वाले के लिये) यूं दुआ़ करे : "طَهَّرَاللّٰهُ قَلْبَكَ فِيْ قُلُوْبِ الْاَبْرَارِ وَ زَكّٰى عَمَلَكَ فِيْ عَمَلِ الْاَخْيَارِ وَصَلّٰى عَلٰى رُوْحِكَ فِيْ اَرْوَاحِ الشُّهَدَاء" या'नी अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ नेक लोगों के दिलों के साथ तेरे दिल को पाक व साफ़ करे, नेकूकारों के आ'माल के साथ तेरे अ़मल को पाकीज़गी बख़्शे और शुहदा की रूहों के साथ तुझ पर रह़मत भेजे।"

नीज़ मरवी है कि हु़ज़ूरे अन्वर, शाफ़ेए़ मह़शर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जो तुम्हारे साथ भलाई करे तुम उस का बदला दो, अगर बदला नहीं दे सकते तो उस के लिये दुआ़ करो यहां तक कि तुम जान लो कि तुम ने उस का बदला दे दिया।"[1]

कामिल शुक्र येह है कि अगर अ़तिय्या (या'नी दी गई चीज़) में कोई ऐ़ब हो तो उसे छुपाए, न उस की तह़क़ीर करे और न ही मज़म्मत, अगर वोह न दे तो इस पर उसे आ़र न दिलाए। देने वाले के अ़मल को खुद भी बड़ा समझे और लोगों के सामने भी इसे बड़ा ही क़रार दे।

अ़तिय्या देने और लेने वाले की निय्यत :

देने वाले की ज़िम्मेदारी है कि अपने अ़तिय्ये को ह़क़ीर समझे जब कि लेने वाले की ज़िम्मेदारी है कि उस का एह़सान मन्द हो और उसे बड़ा ख़याल करे। हर बन्दे पर लाज़िम है कि अपने ह़क़ पर क़ाइम रहे और इस मस्अले में कोई तज़ाद नहीं क्यूंकि छोटा और बड़ा मानने के अस्बाब में फ़र्क़ है। देने वाले के लिये छोटाई के अस्बाब का लिह़ाज़ नफ़्अ़ बख़्श है और इस का ख़िलाफ़ नुक़सान देह जब कि लेने वाले का मुआ़मला इस के बर अ़क्स है और दोनों सूरतों में ने'मत को अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ की त़रफ़ से जानने में कोई तज़ाद नहीं क्यूंकि जो वासित़े को वासित़ा नहीं जानता वोह जाहिल है जो वासित़े को अस्ल समझता है वोह मुन्किर है।

﴿3﴾....**तीसरी ज़िम्मेदारी :** लेने वाला देखे कि वोह क्या ले रहा है अगर जाइज़ न हो तो न ले। कि अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ फ़रमाता है :

---

1 ......سنن ابی داود، کتاب الزکاۃ، باب عطیۃ من سأل اللّٰہ عزوجل،الحدیث:۱۶۷۲،ج۲،ص۱۷۸،مفہوماً۔

وَمَنۡ يَّتَّقِ اللّٰهَ يَجۡعَلۡ لَّهٗ مَخۡرَجًا ۙ﴿۲﴾ وَّيَرۡزُقۡهُ مِنۡ حَيۡثُ لَا يَحۡتَسِبُ ؕ

(پ۲۸،الطلاق:۲،۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और जो **अल्लाह** से डरे **अल्लाह** उस के लिये नजात की राह निकाल देगा और उसे वहां से रोज़ी देगा जहां उस का गुमान न हो।[1]

ह़राम से बचने वाला ह़लाल के मिलने से मह़रूम नहीं रहता। पस तुर्कों (या'नी सरकारी लोगों), सिपाहियों और बादशाहों के अम्वाल से न ले नीज़ उन लोगों से भी न ले जिन की अकषर कमाई ह़राम की होती है। अलबत्ता अगर उस पर मुआ़मला तंग हो जाए और जो माल उसे दिया जा रहा है इस का मुअ़य्यन मालिक मा'लूम न हो तो वोह ज़रूरत के मुताबिक़ ले सकता है क्यूंकि ऐसी सूरत में शरीअ़त का फ़तवा येह है कि इसे ख़ैरात कर दे जैसा कि ह़लाल व ह़राम के बयान में आएगा और येह इस सूरत में है जब ह़लाल से आ़जिज़ हो जाए। नीज़ जब (इस क़िस्म का माल) लेगा तो ज़कात लेने वाला नहीं होगा क्यूंकि ह़राम माल से देने वाले की ज़कात अदा नहीं होती।

﴾4﴿....**चौथी ज़िम्मेदारी :** येह है कि जो कुछ वोह ले रहा है उस की मिक़दार के मुआ़मले में भी शक व शुबे से बचे। जाइज़ मिक़दार में भी उस वक़्त ले जब षाबित हो जाए कि लेने का ह़क़दार होने की सिफ़त से मुत्तसिफ़ है।

अगर मुकातबत या क़र्ज़ के इ़वज़ लेता है तो क़र्ज़ की मिक़दार से ज़ियादा न ले।

अगर आ़मिल (या'नी माल जम्अ़ करने पर मुक़र्रर हो) और अ़मल की वजह से ले तो आ़म उजरत से ज़ियादा न ले, अगर ज़ियादा दिया जाए तो इन्कार कर दे और न ले क्यूंकि देने वाला माल का मालिक नहीं कि वोह अपनी त़रफ़ से ज़ियादा दे।

अगर वोह मुसाफ़िर हो तो ज़ादे राह और मन्ज़िल तक सुवारी के किराए से ज़ियादा न ले।

---

❶ ....**सदरुल अफ़ाज़िल मुफ़स्सिरे शहीर** ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِی इस आयत के तह़्त फ़रमाते हैं : सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم से मरवी है कि जो शख़्स इस आयत को पढ़े **अल्लाह** तआ़ला उस के लिये शुब्हाते दुन्या ग़मराते मौत व शदाइदे रोज़े क़ियामत से ख़लास की राह निकालेगा और इस आयत की निस्बत सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने येह भी फ़रमाया कि मेरे इ़ल्म में एक ऐसी आयत है जिसे लोग मह़फ़ूज़ कर लें तो उन की हर ज़रूरत व ह़ाजत के लिये काफ़ी है। **शाने नुज़ूल :** (ह़ज़रते सय्यिदुना) औ़फ़ बिन मालिक के फ़रज़न्द को मुशरिकीन ने क़ैद कर लिया तो (ह़ज़रते) औ़फ़ नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुए और उन्हों ने येह भी अ़र्ज़ किया कि मेरा बेटा मुशरिकीन ने क़ैद कर लिया है और इसी के साथ अपनी मोह़ताजी व नादारी की शिकायत की, सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि **अल्लाह** तआ़ला का डर रखो और सब्र करो और कषरत से لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِیِّ الْعَظِیْم पढ़ते रहो (ह़ज़रते सय्यिदुना) औ़फ़ ने घर आ कर अपनी बीबी से येह कहा और दोनों ने पढ़ना शुरूअ़ किया वोह पढ़ ही रहे थे कि बेटे ने दरवाज़ा खट खटाया, दुश्मन ग़ाफ़िल हो गया था उस ने मौक़अ़ पाया क़ैद से निकल भागा और चलते हुए चार हज़ार बकरियां भी दुश्मन की साथ ले आया, (ह़ज़रते सय्यिदुना) औ़फ़ ने ख़िदमते अक़्दस में ह़ाज़िर हो कर दरयाफ़्त किया कि येह बकरियां इन के लिये ह़लाल हैं ? ह़ुज़ूर ने इजाज़त दी और येह आयत नाज़िल हुई।

अगर ग़ाज़ी हो तो घोड़े, अस्लहे़ और नफ़्क़े के लिये जितने माल का मोह़ताज है उसी क़दर ले, इस की कोई ह़द मुक़र्रर नहीं बल्कि उस का अन्दाज़ा ग़ौरो फ़िक्र से होगा इसी त़रह़ ज़ादे सफ़र का मुआ़मला है और तक़्वा येह है कि शक वाली चीज़ को छोड़ कर उसे इख़्तियार किया जाए जिस में शक न हो।

अगर तंगदस्ती की वजह से ले रहा है तो पहले अपने घर के सामान, कपड़ों और किताबों को देखे कि क्या इन में से कोई ऐसी चीज़ है जो ज़ाती तौर पर उस की ज़रूरत से ज़ाइद है या उसे इस की उ़म्दगी की ज़रूरत नहीं। क्यूंकि मुमकिन है कि उसे बदल कर वोह ह़ासिल करे जो उसे काफ़ी हो और उस की क़ीमत में से कुछ रक़म बच भी जाए और येह तमाम बातें बन्दे के ग़ौरो फ़िक्र से तअ़ल्लुक़ रखती हैं। इस में एक ज़ाहिरी पहलू है जिस से षाबित होता है कि वोह मुस्तह़िक़ है और एक पहलू वोह है कि जिस से उस का मुस्तह़िक़ न होना षाबित होता है। दोनों के दरमियान कुछ मुश्तबहात उमूर हैं। जो शख़्स शाही चरागाह के आस-पास (जानवर) चराता है तो क़रीब है कि वोह इस में चरने लगें। नीज़ इस मुआ़मले में लेने वाले के ज़ाहिरी क़ौल पर ए'तिमाद किया जाएगा। मोह़ताज के लिये तंगी और वुस्अ़त के ए'तिबार से ह़ाजात का अन्दाज़ा लगाने के सिलसिले में कई मक़ामात हैं, इस के मरातिब शुमार नहीं हो सकते। तक़्वा का मैलान तंगी की त़रफ़ जब कि सुस्ती करने वाले का मैलान वुस्अ़त की त़रफ़ होता है जिस के सबब वोह नफ़्स को कई ज़रूरतों के लिये मोह़ताज समझता है और येह बात शरीअ़त में बुरी है।

जब ह़ाजत षाबित हो जाए तो कषीर माल न ले बल्कि इतना ले जो लेने के वक़्त से साल भर तक ज़रूरत पूरी करे। रुख़्सत की इन्तिहाई ह़द येही (एक साल) है क्यूंकि जब साल लौट आता है तो आमदनी के अस्बाब भी लौट आते हैं। एक वजह येह भी है कि सय्यिदुल मुतवक्किलीन صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपने घर वालों के लिये एक साल ही की ख़ूराक जम्अ़ फ़रमाई[1] येह ह़दबन्दी फ़क़ीर और मिस्कीन की ता'रीफ़ के ज़ियादा क़रीब है अगर उस ने एक माह या एक दिन की ज़रूरत पर इक्तिफ़ा किया तो येह तक़्वा के ज़ियादा क़रीब है। ज़कात और सदक़े के माल से ली जाने वाली मिक़दार के हुक्म में उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام के मुख़्तलिफ़ मज़ाहिब हैं। चुनान्चे,

सदक़ात से ली जाने वाली मिक़्दार के हुक्म में मुख़्तलिफ़ मौक़िफ़:

(1).....बा'ज़ उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام ने कमी में मुबालग़ा करते हुए एक दिन और एक रात की ख़ूराक पर इक्तिफ़ा को वाजिब क़रार दिया और ह़ज़रते सय्यिदुना सहल बिन

1 .....صحیح مسلم، کتاب الجهاد والسیر، باب حکم الفیئ، الحدیث:۱۷۵۷، ص۹۶۵، مفهومًا۔

हन्ज़ला رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी इस रिवायत से इस्तिदलाल किया कि हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने ग़ना (तवंगरी) के होते हुए सुवाल करने से मन्अ़ फ़रमाया। ग़ना के मुतअ़ल्लिक़ पूछा गया तो इरशाद फ़रमाया : "सुब्ह़ और शाम का खाना ग़ना है।"(1)

(2).....बा'ज़ फ़रमाते हैं : ग़ना की ह़द तक ले सकता है और वोही निसाबे ज़कात है क्यूंकि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अग़निया पर ही ज़कात फ़र्ज़ फ़रमाई। उन्हों ने ज़कात लेने वाले के मुतअ़ल्लिक़ फ़रमाया कि वोह अपने लिये और अपने अहलो इ़याल में से हर एक के लिये निसाबे ज़कात ले सकता है।

(3)....एक गुरौह का मौक़िफ़ है कि ग़ना (मालदारी) की ह़द **50** दिरहम या इतनी मालियत का सोना है। जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जो शख़्स ब क़दरे ज़रूरत माल होने के बा वुजूद सुवाल करता है तो बरोज़े क़ियामत वोह इस ह़ाल में आएगा कि उस के चेहरे पर ख़राशें होंगी।" पूछा गया : "बक़दरे ज़रूरत की ह़द क्या है?" इरशाद फ़रमाया : "**50** दिरहम या इतनी क़ीमत का सोना।"(2)

(4).....बा'ज़ ह़ज़रात ने **40** दिरहम मिक़्दार को ग़ना क़रार दिया है क्यूंकि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ता़ बिन यसार عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْغَفَّار से एक मुन्क़त़अ़ रिवायत मरवी है कि सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना, फ़ैज़े गन्जीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जिस ने एक ऊक़िया (या'नी **40** दिरहम) सोना होने के बा वुजूद सुवाल किया उस ने मांगने में मुबालग़ा किया।"(3)

(5).....बा'ज़ उ़-लमाए किराम رَحِمَھُمُ اللّٰہُ السَّلَام ने वुस्अ़त में मुबालग़ा करते हुए फ़रमाया : इतनी मिक़्दार ले ले कि जिस से सामान ख़रीद कर उ़म्र भर के लिये बे नियाज़ हो जाए या सामान तय्यार कर के तिजारत करे और इस के ज़रीए तमाम उ़म्र के लिये मुस्तग़नी हो जाए क्यूंकि येही ग़ना (मालदारी) है कि अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : "इतना दो कि लोग ग़नी हो जाएं।"

(6).....एक गुरौह का मौक़िफ़ है कि अगर (कोई मालदार) मोह़ताज हो जाए तो उस के लिये इतना माल लेना जाइज़ है कि वोह साबिक़ा ह़ालत पर लौट आए अगर्चे दस हज़ार दिरहम हो मगर ह़द्दे ए'तिदाल से न निकले।

---

1 ......سنن ابی داود، کتاب الزکاۃ، باب من یعطی من الصدقۃ......الخ، الحدیث:۱۶۲۹، ج۲، ص۱۶۴-۱۶۵، مفھومًا۔

2 ......سنن ابی داود، کتاب الزکاۃ، باب من یعطی من الصدقۃ......الخ، الحدیث:۱۶۲۶، ج۲، ص۱۶۳۔

3 ......المرجع السابق، الحدیث:۱۶۲۷، ص۱۶۴۔

खजूरों का बाग़ सदक़ा कर दिया :

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू त़लह़ा رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ की अपने बाग़ के सबब जब नमाज़ से तवज्जोह कम होने लगी तो फ़रमाया : "मैंने इसे सदक़ा किया।" तो आक़ाए दो आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "इसे अपने रिश्तेदारों पर सदक़ा कर दो येह तुम्हारे लिये बेहतर है।" तो उन्हों ने वोह बाग़ ह़ज़रते सय्यिदुना ह़स्सान बिन षाबित और सय्यिदुना अबू क़तादा (رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُمَا) पर सदक़ा कर दिया।[1] और खजूरों का एक बाग़ दो आदमियों के लिये कषीर और ग़नी बनाने वाला है।

अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ ने एक आ'राबी को ऊंटनी के साथ दूध पीता बच्चा भी अ़त़ा फ़रमा दिया।

क़ौले फ़ैसल :

येह सब कुछ वुस्अ़त (या'नी ज़ियादा देने) के मुआ़मले में मन्क़ूल है। जहां तक एक दिन के रिज़्क़ और एक ऊक़िया (**40** दिरहम) देने की सूरत में क़िल्लत का तअ़ल्लुक़ है तो (इस का हुक्म येह है कि) इतना होते हुए सुवाल न करे और दर दर की ठोकरें न खाता फिरे क्यूंकि गदागरी (या'नी मांगने) का पेशा शरअ़न बुरा है और इस का हुक्म और है। येह तजवीज़ एह़तिमाल के ज़ियादा क़रीब है कि वोह सामान ख़रीद कर ग़नी हो जाए लेकिन येह भी फ़ुज़ूल ख़र्ची की त़रफ़ माइल है। ए'तिदाल के ज़ियादा क़रीब येह है कि (इतना ले जो) एक साल के लिये किफ़ायत करे, इस से ज़ाइद लेने में ख़त़रा और कम में तंगी है। जिन उमूर में कोई अन्दाज़ा मुक़र्रर नहीं किया जा सकता उन में तवक़्क़ुफ़ किया जाएगा और मुज्तहिद पर जो ह़ाल ज़ाहिर हो उस के मुत़ाबिक़ हुक्म लगाए। परहेज़गार से कहा जाएगा कि "अपने दिल से फ़तवा ले अगर्चे लोग तुझे कुछ फ़तवा दें, अगर्चे लोग तुझे कुछ फ़तवा दें।"[2] क्यूंकि गुनाहों के बाइ़ष दिल सख़्त हो जाते हैं। अगर लेने वाला माल की वजह से अपने दिल में कोई ख़दशा मह़सूस करे तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डरे और उ़-लमाए ज़ाहिर के फ़तवे को ह़ील्लत बना कर रुख़्सत न ढूंडता फिरे क्यूंकि इन के फ़तवों में कुछ क़ुयूदात होती हैं और वोह ज़रूरतों की क़ैद से आज़ाद भी होते हैं। इन में तख़्मीने और शुबहात पाए जाते हैं और शुबहात से बचना दीनदारों का त़रीक़ा और राहे आख़िरत पर चलने वालों की आ़दात में से है।

---

1 ......صحیح مسلم، کتاب الزکاۃ، باب فـــل النفقة والصدقة علی الاقربین......الخ، الحدیث:۹۹۸، ص ۵۰۰۔

2 ......المسند للامام احمد بن حنبل، حدیث وابصة بن معبد الاسدی، الحدیث:۱۸۰۲۳، ج۶، ص ۲۹۲، مفهومًا۔

﴾5﴿.....**ज़कात लेने वाले की पांचवी ज़िम्मेदारी :** येह है कि वोह साहि़बे माल से उस पर वाजिब ज़कात की मिक़्दार मा'लूम करे, वोह माल जो वोह दे रहा है अगर आठवें हि़स्से से ज़ियादा हो तो न ले क्यूंकि वोह अपने शरीक के साथ सिर्फ़ आठवें हि़स्से का मुस्तह़िक़ है तो आठवें हि़स्से से भी इतना कम करे जो इस क़िस्म के दो रुफ़क़ा को मिल सके। अकषर लोगों पर येह बात पूछना वाजिब है क्यूंकि वोह जहालत या सुस्ती की वजह से इस तक़्सीम की परवाह नहीं करते। अलबत्ता जब हु़र्मत का ग़ालिब गुमान न हो तो सुवाल न करना जाइज़ है। सुवाल के मवाक़ेअ़ और एह़तिमाल के दर्जात का बयान اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ ह़लाल व ह़राम के बयान में आएगा।

चौथी फ़स्ल : नफ़्ली सदक़े के फ़ज़ाइल और लेने देने के आदाब

फ़ज़ाइले सदक़ा के मुतअ़ल्लिक़ 18 फ़रामीने मुस्त़फ़ा :

﴾1﴿.....सदक़ा करो अगर्चे एक खजूर हो क्यूंकि येह भूके की भूक मिटाता और गुनाहों को इस त़रह़ मिटा देता है जिस त़रह़ पानी आग बुझा देता है।(1)

﴾2﴿.....आग से बचो अगर्चे खजूर के एक टुकड़े के ज़रीए़, अगर कुछ न पाओ तो अच्छे कलिमे के ज़रीए़ बचो।(2)

﴾3﴿.....अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ह़लाल (माल) ही क़बूल फ़रमाता है, पस जो मुसलमान बन्दा ह़लाल कमाई से कुछ सदक़ा करता है तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे अपने दाएं दस्ते क़ुदरत से पकड़ता है फिर उस की ऐसी परवरिश करता है जैसे तुम में से कोई ऊंट के बच्चे को पालता है ह़त्ता कि एक खजूर उह़द पहाड़ के बराबर हो जाती है।(3)

﴾4﴿.....मक्की मदनी सुल्त़ान صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ से इरशाद फ़रमाया : "जब शोरबा पकाओ तो इस का पानी ज़ियादा करो फिर अपने पड़ोसियों को देखो और इस में से कुछ उन्हें दे कर उन के साथ भलाई करो।"(4)

---

1 ......الزھد لابن المبارک، باب الصدقۃ، الحدیث: ۶۵۱، ص ۲۲۹۔

2 ......صحیح مسلم، کتاب الزکاۃ، باب الحث علی الصدقۃ......الخ، الحدیث: ۱۰۱۶، ص ۵۰۷۔

3 ......صحیح البخاری، کتاب الزکاۃ، باب الصدقۃ من کسب طیب، الحدیث: ۱۴۱۰، ج ۱، ص ۴۷۶، مفھومًا۔

سنن ابن ماجہ، کتاب الزکاۃ، باب فضل الصدقۃ، الحدیث: ۱۸۴۲، ج ۲، ص ۴۰۳۔۴۰۴، مفھومًا۔

4 ......صحیح مسلم، کتاب البروالصلۃ، باب الوصیۃ بالجار والاحسان الیہ، الحدیث: ۲۶۲۵، ص ۱۴۱۳، عن ابی ذر۔

﴾5﴿.....जो बन्दा अच्छा सदक़ा देता है अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के छोड़े हुए माल में बरकत डाल देता है।(1)

﴾6﴿....(बरोज़े क़ियामत) हर शख़्स अपने सदक़े के साए में होगा यहां तक कि लोगों के दरमियान फ़ैसला हो जाए।(2)

﴾7﴿....सदक़ा बुराई के 70 दरवाज़े बन्द कर देता है।(3)

﴾8﴿.....पोशीदा सदक़ा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ग़ज़ब को बुझाता है।(4)

﴾9﴿....जो शख़्स कुशादगी की ह़ालत में सदक़ा देता है वोह षवाब में उस से अफ़्ज़ल नहीं जो ह़ाजत के सबब क़ुबूल करता है।(5)

शायद इस से मुराद वोह है जो इ़ल्मे दीन के ह़ुसूल की ख़ातिर फ़राग़त की निय्यत से अपनी ह़ाजत पूरी करने का इरादा करता है तो (षवाब में) वोह देने वाले के बराबर होगा जो अपनी अ़त़ा से दीन की ता'मीर का इरादा करता है।

﴾10﴿.....बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ की गई : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم कौन सा सदक़ा अफ़्ज़ल है ?" इरशाद फ़रमाया : "इस ह़ालत में सदक़ा करना अफ़्ज़ल है जब तुम तन्दुरुस्त हो, माल के ह़रीस हो, ज़िन्दगी की उम्मीद रखते हो, फ़ाक़े से डरते हो और इतनी ताख़ीर न हो कि रूह़ ह़ल्क़ तक पहुंच जाए फिर तुम कहो : फ़ुलां के लिये इतना माल, फ़ुलां के लिये इतना माल ह़ालांकि (अब तो) वोह फ़ुलां का हो चुका।"(6)

﴾11﴿.....एक दिन प्यारे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْهِمْ اَجْمَعِیْن से इरशाद फ़रमाया : "सदक़ा दो।" एक शख़्स ने अ़र्ज़ की : "मेरे पास एक दीनार है।" आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "इसे अपने ऊपर ख़र्च कर।" उस ने अ़र्ज़ की : "और भी है।" इरशाद फ़रमाया : "इसे अपनी ज़ौजा पर ख़र्च कर।" अ़र्ज की : "और

---

(1) الزهد لا بن المبارک، باب الصدقة، الحديث:۶۴۴، ص۲۲۷۔

(2) المستدرک، کتاب الزکاة، باب کل امری فی ظل صدقته......الخ، الحديث:۱۵۵۷، ج۲، ص۴۳۔

(3) المعجم الکبير، الحديث:۴۴۰۲، ج۴، ص۲۷۴، الشر بدله السوء۔

(4) شعب الايمان للبيهقی، باب فی الزکاة، فصل فی الاختيار فی صدقة التطوع، الحديث:۳۴۴۲، ج۳، ص۲۴۵۔

(5) المعجم الکبير، الحديث:۱۳۵۶۰، ج۱۲، ص۳۲۴، مفهومًا۔

(6) صحيح البخاری، کتاب الزکاة، باب أیّ الصدقة افـضـل......الخ، الحديث:۱۴۱۹، ج۱، ص۴۷۹۔

भी है।" इरशाद फ़रमाया : "इसे अपने बच्चे पर ख़र्च कर।" अ़र्ज़ की : "और भी है।" फ़रमाया : "इसे अपने ख़ादिम पर ख़र्च कर।" अ़र्ज़ की : "एक और भी है।" इरशाद फ़रमाया : "जहां बेहतर समझो ख़र्च करो।"[1]

﴾12﴿.....आले मुह़म्मद के लिये सदक़ा जाइज़ नहीं, येह तो लोगों की मैल है।[2]

﴾13﴿.....मांगने वाले का ह़क़ लौटाओ अगर्चे परन्दे के सर के बराबर खाना हो।[3]

﴾14﴿....अगर मांगने वाला सच्चा हो तो इसे (ख़ाली हाथ) लौटाने वाला फ़लाह़ नहीं पा सकता।[4]

﴾15﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने इरशाद फ़रमाया : "जो शख़्स मांगने वाले को अपने घर से ख़ाली हाथ लौटाता है तो सात दिन तक रह़मत के फ़िरिश्ते उस घर में नहीं आते।"

﴾16﴿.....**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم कभी दो काम किसी के सिपुर्द नहीं फ़रमाते थे। रात को वुज़ू का पानी ख़ुद रखते और इसे ढांप कर रखते और मिस्कीन को अपने हाथ से खिलाते थे।[5]

﴾17﴿....मिस्कीन वोह नहीं जिसे एक दो खजूरें या एक दो लुक़्मे दे कर वापस लौटा देते हैं बल्कि मिस्कीन तो वोह है जो सुवाल से बचता है चाहो तो येह आयते मुबारका पढ़ो :

لَا یَسْـَٔلُوْنَ النَّاسَ اِلْحَافًا (پ۳،البقرۃ:۲۷۳) ***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :*** *लोगों से सुवाल नहीं करते कि गिड़गिड़ाना पड़े।*[6]

﴾18﴿.....जो मुसलमान किसी मुसलमान भाई को लिबास पहनाता है तो जब तक उस (के जिस्म) पर एक टुकड़ा भी रहता है पहनाने वाला **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ह़िफ़्ज़ो अमान में रहता है।[7]

---

1 ......سنن ابی داود، کتاب الزکاۃ، باب فی صلۃ الرحم، الحدیث:۱۶۹۱، ج۲، ص۱۸۴، بتغیرٍ۔

2 ......صحیح مسلم، کتاب الزکاۃ، باب ترک استعمال آل النبی علی الصدقۃ، الحدیث:۱۰۷۲، ص۵۴۰، بتغیرٍ۔

3 ......کتاب الضعفاء للعقیلی،اسحق بن نصیح الملطی:۱۲۳، ج۱، ص۱۲۱،بتغیرٍ۔

4 ......المقاصد الحسنۃ، حرف اللام، الحدیث:۸۹۲، ص۳۵۱۔

5 ......سنن ابن ماجہ، کتاب الطھارۃ، باب تغطیۃ الاناء، الحدیث:۳۶۲، ج۱، ص۲۲۶، مفھومًا۔

6 ......صحیح مسلم، کتاب الزکاۃ، باب المسکین الذی لا یجد غنی......الخ، الحدیث:۱۰۳۹، ص۵۱۷۔

7 ......سنن الترمذی، کتاب صفۃ القیامۃ، باب:۴۱، الحدیث:۲۴۹۲، ج۴، ص۲۱۸، بتغیرٍ۔

फ़ज़ाइले सदक़ा के मुतअ़ल्लिक़ 17 अक़्वाले बुज़ुर्गाने दीन :

﴿1﴾......ह़ज़रते सय्यिदुना उ़र्वा बिन ज़ुबैर رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : "उम्मुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہا ने 50 हज़ार (दिरहम) सदक़ा किये ह़ालांकि आप की ओढ़नी में पैवन्द लगे हुए थे ।"(1)

﴿2﴾.....ह़ज़रते सय्यिदुना मुजाहिद عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَاحِد इस फ़रमाने बारी तआ़ला : وَيُطْعِمُوْنَ الطَّعَامَ عَلٰى حُبِّهٖ مِسْكِيْنًا وَّيَتِيْمًا وَّاَسِيْرًا ﴿۸﴾ (پ۲۹،الدھر:۸) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और खाना खिलाते हैं उस की मह़ब्बत पर मिस्कीन और यतीम और असीर (क़ैदी) को । की तफ़्सीर में फ़रमाते हैं कि "वोह खाने की ख़्वाहिश के बा वुजूद खिलाते हैं ।"(2)

﴿3﴾....अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ दुआ़ फ़रमाया करते थे कि "ऐ अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ हमारे अच्छे लोगों को दौलत अ़ता फ़रमा कि वोह इसे ह़ाजत मन्दों की त़रफ़ लौटाएं ।"

﴿4﴾....ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन उ़मैर رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : "नमाज़ तुझे आधे रास्ते तक पहुंचाती, रोज़ा बादशाह के दरवाज़े तक पहुंचाता और सदक़ा इस में दाखि़ल कर देता है ।"(3)

﴿5﴾.....ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अबिल जअ़द عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْاَحَد फ़रमाते हैं : "बेशक सदक़ा बुराई के 70 दरवाज़े बन्द कर देता है(4) और पोशीदा सदक़ा ज़ाहिरी सदके़ पर 70 गुना ज़ियादा फ़ज़ीलत रखता है(5) और येह 70 शयात़ीन के जबड़े चीर देता है ।"

﴿6﴾.....ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : "एक शख़्स ने 70 साल अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ की इबादत की फिर एक फ़ाह़िशा से ज़िना कर बैठा तो उस के तमाम आ'माल ज़ाएअ़ हो गए फिर एक मिस्कीन के पास से गुज़रा और उस पर एक रोटी सदक़ा की तो अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ ने उस का गुनाह बख़्श दिया और उस के 70 साल के आ'माल लौटा दिये ।"(6)

---

1 ......الزهدلابن المبارک، باب اصلاح ذات البین، الحدیث: ۷۵۴، ص ۲۶۰، بلفظ سبعین۔

2 ......الدرالمنثور، الجزء التاسع و العشرون، سورۃ الانسان: ۸، ج ۸، ص ۳۷۰۔

3 ......المستطرف فی کل فن مستظرف، الباب الاول فی مبانی الاسلام......الخ، الفصل الثالث فی الزکاۃ وفضلها، ج ۱، ص ۱۹۔

4 ......قوت القلوب، الفصل الثالث و الثلاثون فی ذکر دعائم الاسلام......الخ، ج ۲، ص ۱۷۸۔

5 ......تاریخ مدینۃ دمشق لابن عساکر، یزید بن بشر السکسکی: ۸۲۴۶، ج ۶۵، ص ۱۳۱، باختصارٍ۔

6 ......جامع العلوم و الحکم، الحدیث: الثامن عشر، ص ۲۲۰، بتغیرٍ۔

﴾7﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना लुक़्मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अपने बेटे को नसीह़त करते हुए फ़रमाया : “जब तुझ से कोई ख़त़ा हो जाए तो सदक़ा दे ।”(1)

﴾8﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना यह्या बिन मुआ़ज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : “मैं सदके़ के दाने के इ़लावा किसी दाने को नहीं जानता जो दुन्या के पहाड़ों के बराबर वज़्नी हो ।”(2)

﴾9﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन अबी रव्वाद علیہ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الجَوَاد फ़रमाते हैं : “कहा जाता है कि तीन बातें जन्नत के ख़ज़ानों में से हैं :

(1).....बीमारी को छुपाना (2)....सदक़ा छुपा कर देना और (3)....मुसीबतों को छुपाना ।”(3)

﴾10﴿.....अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : “आ’माल आपस में फ़ख़्र करते हैं तो सदक़ा कहता है : मैं तुम सब से अफ़्ज़ल हूं ।”(4)

﴾11﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) शकर सदक़ा किया करते और फ़रमाते : मैं ने अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ का येह फ़रमान सुना है : لَنْ تَنَالُوا الْبِرَّ حَتّٰى تُنْفِقُوْا مِمَّا تُحِبُّوْنَ ﵞ (پ۴،اٰل عمرٰن:۹۲) “**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** तुम हरगिज़ भलाई को न पहुंचोगे जब तक राहे ख़ुदा में अपनी प्यारी चीज़ न ख़र्च करो ।” और अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ जानता है कि मुझे शकर बहुत पसन्द है ।”(5)

﴾12﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम नख़ई عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : “मुझे ऐ़बदार चीज़ राहे ख़ुदा में सदक़ा करना नापसन्द है ।”

﴾13﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना उ़बैद बिन उ़मैर رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : “बरोज़े क़ियामत लोग इतने भूके होंगे जितने पहले कभी न थे, इतने प्यासे होंगे जितने पहले कभी न थे और ऐसे बरहना होंगे जैसे पहले कभी न थे तो जिस ने (दुन्या में) रिज़ाए इलाही के लिये किसी को कुछ खिलाया अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ उसे पेट भर कर खिलाएगा, जिस ने अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ के लिये किसी को कुछ पिलाया अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ उसे सैराब फ़रमाएगा और जिस ने अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ की रिज़ा की

---

1 ......البر والصلة، باب ماجاء فی الصدقة و النفقة، الحدیث: ۲۸۱، ص ۱۴۳۔

2 ......المستطرف فی کل فن مستظرف، الباب الاول فی مبانی الاسلام......الخ، الفصل الثالث فی الزکاة وفضلها، ج ۱، ص ۱۹۔

3 ......اللآلئ المصنوعة، کتاب المرض و الطب، ج ۲، ص ۳۲۹، عن ابن عمر۔

4 ......المستطرف فی کل فن مستظرف، الباب الاوّل فی مبانی الاسلام......الخ، الفصل الثالث فی الزکاة وفضلها، ج ۱، ص ۱۹۔

5 ......الدرالمنثور، الجزء الرابع، سورة آل عمران: ۹۲، ج ۲، ص ۲۶۲۔

ख़ाति़र किसी को लिबास पहनाया अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे (जन्नती) लिबास पहनाएगा।"[1]

﴾14﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : "अगर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ चाहता तो तुम्हें ग़नी कर देता तुम में कोई फ़क़ीर न होता लेकिन उस ने तुम में से बा'ज़ को बा'ज़ के ज़रीए़ आज़माया।"[2]

﴾15﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना शा'बी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَلِی फ़रमाते हैं : "जो शख़्स ख़ुद को सदक़े के षवाब का इस से ज़ियादा मोह़ताज न समझे जितना फ़क़ीर सदक़े का मोह़ताज है तो उस ने अपना सदक़ा ज़ाएअ़ कर दिया और इसे अपने चेहरे पर दे मारा।"[3]

﴾16﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे मालिक عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمَالِك फ़रमाते हैं : "हम इस में कोई ह़रज नहीं समझते कि ख़ुश ह़ाल शख़्स सदक़े के पानी या मस्जिद के पानी से पिये क्यूंकि वोह प्यासों के लिये होता है जो भी प्यासा हो नीज़ इस पर फ़क़त़ अहले ह़ाजत और मसाकीन लोग ही नहीं आते।"

﴾17﴿.....मन्क़ूल है कि ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی के क़रीब से एक दलाल गुज़रा उस के साथ एक लौंडी भी थी। आप ने दलाल से पूछा : "क्या तुम इस की एक या दो दिरहम क़ीमत पर राज़ी हो ?" उस ने कहा : "नहीं।" आप ने फ़रमाया : "जाओ ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ एक पैसे और एक लुक़्मे के बदले जन्नती हूर देने पर राज़ी होता है।"[4]

सदक़े को छुपाना और ज़ाहिर करना

इस सिलसिले में इख़्लास की जुस्त्जू करने वालों का रास्ता मुख़्तलिफ़ है। कुछ ह़ज़रात इस त़रफ़ माइल हुए कि पोशीदा देना अफ़्ज़ल है और कुछ ह़ज़रात का मौक़िफ़ येह है कि ज़ाहिरी तौ़र पर देना अफ़्ज़ल है। हम दोनों में से हर एक में मौजूद मआ़नी और आफ़ात की त़रफ़ इशारा करते हैं फिर ह़क़ बात से पर्दा उठाएंगे।

पोशीदा तौ़र पर देने में पांच ह़िक्मतें :

﴾1﴿......इस त़रह़ लेने वाले का पर्दा रह जाता है क्यूंकि ज़ाहिरी तौ़र पर लेने से उस की मुरव्वत पोशीदा नहीं रहती, ह़ाजत सामने आ जाती है और वोह इस पसन्दीदा इफ़्फ़त की सिफ़त से ख़ारिज हो जाता है जिस से मुत्तसिफ़ शख़्स को जाहिल लोग मालदार समझते हैं क्यूंकि वोह सुवाल करने से इजतिनाब करता है।

---

1 ......المستطرف فی کل فن مستظرف، الباب الاول فی مبانی الاسلام......الخ، الفصل الثالث فی الزکاۃ......الخ، ج ۱، ص ۱۹۔

2 ......الدرالمنثور، الجزء التاسع عشر، سورۃ الفرقان: ۲۰، ج ۶، ص ۲۴۴، عن الحسن عن النبی صلی اللّٰہ علیہ وسلم۔

3 ......المستطرف فی کل فن مستظرف، الباب الاول فی مبانی الاسلام......الخ، الفصل الثالث فی الزکاۃ وفضلها، ج ۱، ص ۱۹۔

4 ...... روح البیان، سورۃ التوبۃ، الجزء العاشر، ج ۳، ص ۴۷۴۔

﴾2﴿......इस त़रह़ लोगों की ज़बानें और दिल मह़फ़ूज़ रहते हैं क्यूंकि बा'ज़ अवक़ात लोग ह़सद करते और इस के लेने पर ए'तिराज़ करते हैं। वोह इसे बिला ज़रूरत लेने वाला गुमान करते हैं या ज़ियादा लेने की त़रफ़ मन्सूब करते हैं। ह़ालांकि ह़सद, बद गुमानी और ग़ीबत कबीरा गुनाहों में से है और लोगों को इन से बचाना बेहतर है। ह़ज़रते सय्यिदुना अय्यूब सख़्तियानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّورَانِی फ़रमाते हैं : "मैं ने इस डर से नए कपड़े पहनना छोड़ दिये कि कहीं मेरे पड़ोसी ह़सद में मुब्तला न हो जाएं।" किसी ज़ाहिद (दुन्या से कनारा कश शख़्स) का क़ौल है कि "बा'ज़ अवक़ात मैं अपने भाइयों की वजह से किसी चीज़ का इस्ति'माल छोड़ देता हूं क्यूंकि वोह कहते हैं कि येह कहां से आई है?" ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम तैमी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَنِی के दोस्तों ने उन्हें नई क़मीस पहने देख कर पूछा : "येह तुम्हारे पास कहां से आई?" फ़रमाया : "मुझे मेरे भाई ख़ैषमा ने पहनाई है, अगर मुझे मा'लूम होता कि इस के मुतअ़ल्लिक़ उन के घर वालों को मा'लूम है तो मैं क़बूल न करता।"[1]

﴾3﴿......छुपा कर देने वाले के अ़मल को पोशीदा रखने में इस की मदद करना है क्यूंकि पोशीदा देने की ज़ाहिरन देने से ज़ियादा फ़ज़ीलत है और नेकी को मुकम्मल करने पर मदद करना भी नेकी है और किसी चीज़ को मुकम्मल त़ौर पर दो आदमियों के ज़रीए़ छुपाया जा सकता है तो जब एक (या'नी मिस्कीन) का ह़ाल ज़ाहिर हो जाए तो देने वाले का मुआ़मला भी वाज़ेह़ हो जाता है।

अस्लाफ़ ज़ाहिरन दी गई चीज़ क़बूल न करते :

मन्क़ूल है कि एक शख़्स ने किसी आ़लिम को कोई चीज़ ज़ाहिरी त़ौर पर दी तो उन्हों ने वापस कर दी, दूसरे ने पोशीदा त़ौर पर दी तो क़बूल फ़रमा ली। उन से इस की वजह पूछी गई तो फ़रमाया : "पोशीदा देने वाले ने नेकी छुपाने में अदब को मल्ह़ूज़े ख़ात़िर रखा मैं ने क़बूल कर ली जब कि पहले ने नेकी छुपाने में अदब को पेशे नज़र नहीं रखा इस लिये मैं ने वापस लौटा दी।"

एक शख़्स ने किसी सूफ़ी को मजमअ़ में कोई चीज़ दी तो उन्हों ने वापस कर दी। उस शख़्स ने कहा : "आप ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का अ़तिय्या क्यूं वापस कर दिया।" तो सूफ़ी साह़िब ने फ़रमाया : "जो चीज़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये थी तुम ने इस में ग़ैरुल्लाह को शरीक कर लिया और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ पर क़नाअ़त न की तो मैं ने तेरा शिर्क तुझे वापस लौटा दिया।"

---

1 ......قوت القلوب، الفصل الحادی والاربعون فی ذکر فـائل الفقر......الخ، ج ٢، ص ٣٣٨۔

एक आ़रिफ़ ने पोशीदा त़ौर पर दी गई वोही चीज़ क़बूल कर ली जो अ़लानिया मिलने पर वापस लौटा दी थी। उन से इस का सबब पुछा गया तो फ़रमाया : "तुम ने अ़लानिया दे कर गुनाह किया तो मैं गुनाह में तुम्हारा शरीक नहीं बनना चाहता था और पोशीदा दे कर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की फ़रमां बरदारी की तो मैं ने नेकी पर तुम्हारी मदद की।"

ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान षौरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : "अगर मुझे मा'लूम हो कि कोई शख़्स अपने सदके़ का ज़िक्र नहीं करेगा और किसी से बयान नहीं करेगा तो मैं ज़रूर उस का सदक़ा क़बूल कर लूं।"(1)

﴾4﴿......ज़ाहिरी त़ौर पर लेने में ज़िल्लत और तौहीन है और मोमिन के लिये दुरुस्त नहीं कि वोह अपने नफ़्स को रुस्वा करे। बा'ज़ उ़-लमा पोशीदा त़ौर पर दी गई चीज़ ले लेते थे जब कि अ़लानिया दी गई चीज़ नहीं लेते थे और फ़रमाया करते थे : "इस के ज़ाहिर करने में इ़ल्म की रुस्वाई और अहले इ़ल्म की तौहीन है। लिहाज़ा मैं इ़ल्म को पस्त और अहले इ़ल्म को रुस्वा कर के किसी दुन्यवी चीज़ को बुलन्द नहीं कर सकता।"

﴾5﴿......पोशीदा त़ौर पर लेने में शिर्कत के शुबे से बचाव हो जाता है। चुनान्चे,

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब, ह़बीबे लबीब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "लोगों की मौजूदगी में जिसे कोई चीज़ बत़ौरे हदिय्या दी जाए तो इस में लोग भी उस के साथ शरीक हैं।"(2)

अगर वोह चांदी या सोना हो तब भी हदिय्या ही रहेगा कि आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने मह़ज़ चांदी को भी हदिय्या क़रार दिया है। चुनान्चे,

सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़्मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "अफ़्ज़ल हदिय्या जो कोई शख़्स अपने भाई को देता है वोह चांदी या उसे रोटी खिलाना है।"(3)

लिहाज़ा मजलिस में सब की रिज़ा मन्दी के बिग़ैर किसी एक को देना मकरूह है और शुबे से ख़ाली नहीं तो जब तन्हाई में इनफ़िरादी त़ौर पर लेगा तो शिर्कत के शुबे से बच जाएगा।

---

1 ......قوت القلوب، الفصل الحادی والاربعون فی ذکر فـــائل الفقر......الخ، ج۲، ص ۳۳۹، مفهومًا۔

2 ......المعجم الکبیر، الحدیث:۱۱۱۸۳، ج ۱۱، ص ۸۵۔

3 ......قوت القلوب، الفصل الحادی والاربعون فی ذکر فـــائل الفقر......الخ، ج۲، ص ۳۳۹۔

ज़ाहिरी तौर पर देने में चार हिक्मतें :

﴾1﴿.....इख़्लास, सच्चाई, अपने माल की लोगों के धोके और रियाकारी से सलामती है।

﴾2﴿.....जाहो मर्तबा को दूर करना, बन्दगी और ग़ुर्बत को ज़ाहिर करना, तकब्बुर और इस्तिग़्ना के दा'वे से बरी होना और लोगों की निगाहों में नफ़्स को गिराना है।

हिकायत : सदक़ा ज़ाहिर करने की फ़ज़ीलत :

मा'रेफ़ते इलाही रखने वाले एक बुज़ुर्ग ने अपने शागिर्द से फ़रमाया : "अगर तुम सदक़ा लो तो हर ह़ाल में उसे ज़ाहिर करो क्यूंकि तुम दो में से एक शख़्स से ख़ाली न होंगे एक शख़्स वोह है कि जब तुम ऐसा करोगे तो उस के दिल से गिर जाओगे और येही मक़्सूद है क्यूंकि इस में तुम्हारे दीन की सलामती ज़ियादा और नफ़्स की आफ़ात कम हैं या दूसरा वोह शख़्स कि तुम्हारे सच ज़ाहिर करने के सबब उस के दिल में तुम्हारा मक़ाम बुलन्द होगा और तुम्हारा भाई भी येही चाहता है क्यूंकि वोह तुम से जिस क़दर ज़ियादा महब्बत करेगा और तुम्हारी ता'ज़ीम करेगा उस का षवाब ज़ियादा होगा और चूंकि तुम उस के लिये मज़ीद षवाब का बाइ़ष बने लिहाज़ा तुम्हें भी अज्र दिया जाएगा।

﴾3﴿.....आ़रिफ़ की नज़र **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर होती है उस के ह़क़ में पोशीदा व अ़लानिया एक जैसे होते हैं। पस ह़ाल का मुख़्तलिफ़ होना तौह़ीद में शिर्क हैं। बा'ज़ बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِیْن फ़रमाते हैं : "हम उस शख़्स की दुआ़ का ए'तिबार नहीं करते जो पोशीदा तो ले ले मगर अ़लानिया लौटा दे। लोग मौजूद हों या ग़ाइब इन की त़रफ़ मुतवज्जेह होना फ़ौरी नुक़्सान का बाइ़ष है बल्कि बन्दे की नज़र हमेशा **अल्लाह** वाह़िद पर लगी रहे।"

हिकायत : अल्लाह देख रहा है !

मन्क़ूल है कि एक बुज़ुर्ग को अपने एक मुरीद से बहुत ज़ियादा मह़ब्बत थी दूसरों को येह बात बहुत नागवार थी, बुज़ुर्ग ने लोगों के सामने उस मुरीद की फ़ज़ीलत ज़ाहिर करने का इरादा किया। चुनान्चे, हर एक को एक एक मुर्ग़ी दी और फ़रमाया : "तुम में से हर एक अकेला जाए और इसे वहां जा कर ज़ब्ह़ करे जहां कोई न देख रहा हो।" लिहाज़ा हर शख़्स ने तन्हाई में जा कर मुर्ग़ी ज़ब्ह़ कर दी लेकिन वोह मुरीद ज़िन्दा मुर्ग़ी वापस ले आया। शैख़ ने दीगर मुरीदों से पूछा तो उन्हों ने जवाब दिया हम ने शैख़ के हुक्म की ता'मील की है। फिर शैख़ ने मुरीदे ख़ास

से पूछा कि "तुम ने अपने दोस्तों की त़रह़ मुर्ग़ी ज़ब्ह़ क्यूं न की ?" उस ने जवाब दिया : "मुझे कोई ऐसी जगह न मिली जहां मुझे कोई न देख रहा हो क्यूंकि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तो (मुझे) हर जगह मुलाह़ज़ा फ़रमा रहा है।" येह सुन कर शैख़ ने फ़रमाया : "इसी ख़ूबी की वजह से मैं इस की त़रफ़ ज़ियादा मैलान रखता हूं क्यूंकि येह ग़ैरे ख़ुदा की त़रफ़ मुतवज्जेह नहीं होता।"

﴾4﴿.....अ़लानिया त़ौर पर देने में सुन्नते शुक्र को क़ाइम करना है। चुनान्चे,

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है : وَاَمَّا بِنِعْمَةِ رَبِّكَ فَحَدِّثْ ﴿۱۱﴾ (پ۳۰،الضحٰی:۱۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और अपने रब्ब की ने'मत का ख़ूब चर्चा करो।*

और छुपाना ने'मत की नाशुक्री है।

नीज़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने अपने अ़त़ा कर्दा माल को पोशीदा रखने से मन्अ़ फ़रमाया और ऐसा करने वाले को बख़ील का साथी क़रार दिया। चुनान्चे, इरशाद फ़रमाया :

الَّذِیۡنَ یَبۡخَلُوۡنَ وَ یَاۡمُرُوۡنَ النَّاسَ بِالۡبُخۡلِ وَ یَکۡتُمُوۡنَ مَاۤ اٰتٰہُمُ اللّٰہُ مِنۡ فَضۡلِہٖ (پ۵،النساء:۳۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *जो आप बुख़्ल करें और औरों से बुख़्ल के लिये कहें और अल्लाह ने जो इन्हें अपने फ़ज़्ल से दिया है उसे छुपाएं।*

नीज़ हुज़ूर नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ किसी बन्दे को ने'मत अ़त़ा फ़रमाता है तो वोह पसन्द करता है कि वोह ने'मत उस पर दिखाई दे।[(1)]

एक शख़्स ने किसी आ़रिफ़ को कोई चीज़ छुपा कर दी तो उन्हों ने उसे उठा कर फ़रमाया : "येह दुन्या में से है और इसे ज़ाहिर करना अफ़्ज़ल है जब कि उमूरे आख़िरत को पोशीदा रखना अफ़्ज़ल है।"

इसी लिये बा'ज़ उ़-लमा ने फ़रमाया : जब तुम्हें लोगों में अ़त़ा किया जाए तो ले लो फिर पोशीदा त़ौर पर लौटा दो और इस पर शुक्रिया अदा करने की तरग़ीब दी गई है। चुनान्चे,

सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जिस ने लोगों का शुक्रिया अदा न किया उस ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का भी शुक्रिया अदा न किया।"[(2)]

और शुक्रिया अदा करना भी बदला देने के क़ाइम मक़ाम है। चुनान्चे,

---

1 ......سنن الترمذی، کتاب الادب، باب ماجاء ان اللّٰہ تعالٰی یحب......الخ،الحدیث:۲۸۲۸،ج۴،ص۳۷۴، مفہومًا۔

2 ......سنن الترمذی، کتاب البر و الصلة ، باب ماجاء فی الشکرلمن احسن الیک، الحدیث:۱۹۶۲، ج۳، ص۳۸۴۔

मुस्त़फ़ा जाने रह़मत صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जो तुम्हारे साथ भलाई करे उसे इस का बदला दो अगर बदला नहीं दे सकते तो उस की अच्छी ता'रीफ़ करो और उस के लिये दुआ़ करो ह़त्ता कि तुम जान लो कि तुम ने बदला दे दिया।"(1)

नीज़ जब मुहाजिरीन ने शुक्र के बारे में अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم हम ने उन लोगों (या'नी अन्सार) से बेहतर किसी को न देखा कि हम उन के पास ठहरे तो उन्हों ने हमारे दरमियान अपने अमवाल भी तक़्सीम कर दिये यहां तक कि हमें ख़ौफ़ होने लगा कि सारा अज्र येह ले जाएंगे।" तो आप صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ऐसा हरगिज़ नहीं है, तुम ने जो इन का शुक्रिया अदा किया और इन की ता'रीफ़ की येही इस का बदला है।

फ़ैसलए ग़ज़ाली :

अब जब कि तुम ने येह मआ़नी समझ लिये तो जान लीजिये कि इस में लोगों का इख़्तिलाफ़ अस्ल मस्अले में इख़्तिलाफ़ नहीं बल्कि येह ह़ालत में इख़्तिलाफ़ है। ह़क़ीक़ते ह़ाल यूं वाज़ेह़ होगी कि हम क़त़ई फ़ैसला नहीं दे सकते कि हर ह़ाल में पोशीदा देना अफ़्ज़ल है या अ़लानिया ? बल्कि निय्यतों के बदलने से हुक्म और अह़वाल व अश्ख़ास के बदलने से निय्यतें बदल जाती हैं। पस मुख़्लिस शख़्स को अपने नफ़्स की ह़िफ़ाज़त करनी चाहिये कि कहीं वोह धोके की रस्सी में न लटक जाए, त़बीअ़त और शैत़ान के मक्रो फ़रैब में न फंस जाए। नीज़ दोनों सूरतों में धोके का अ़मल दख़्ल है मगर अ़लानिया देने की ब निस्बत पोशीदा देने में मक्रो फ़रैब ज़ियादा है।

पोशीदा त़ौर पर लेने में फ़रैब का दख़्ल इस त़रह़ है कि इस की त़रफ़ त़बीअ़त का मैलान होता है। नीज़ इस में जाहो मर्तबा की ह़िफ़ाज़त और लोगों की नज़रों से अपनी इ़ज़्ज़त को गिरने से बचाना है और इस से भी एह़तिराज़ है कि लोग इस की त़रफ़ तौहीन आमेज़ नज़रों से देखें और देने वाले को मुनइ़म व मोह़सिन ख़याल करें। येह ला इ़लाज बीमारी और नफ़्स में क़रार पकड़ती है। शैत़ान इस के ज़रीए़ अच्छे मआ़नी को ज़ाहिर करता है यहां तक कि मज़्कूरा पांचों (पोशीदा देने के) मआ़नी को इ़ल्लत बना कर पेश करता है। इन तमाम का मे'यार व कसोटी एक ही बात है, वोह येह कि उसे अपने सदक़ा लेने का ह़ाल खुल जाने का इतना ही ग़म हो जितना उसे अपने दूसरे अह़बाब के सदक़ा के ज़ाहिर होने से दुख होता है क्यूंकि अगर उस का मक़्सद येह है कि लोग ग़ीबत, ह़सद, बद गुमानी या पर्दा दरी से बचें या देने वाले की पोशीदा देने पर इआ़नत या इ़ल्म की ज़िल्लत से ह़िफ़ाज़त मक़्सूद हो तो येह तमाम बातें दूसरे भाई के सदक़े

का ह़ाल खुलने से भी होंगी। अगर इस का ह़ाल खुलने का इन्किशाफ़ दूसरों का ह़ाल खुलने के इन्किशाफ़ से ज़ियादा भारी मह़सूस हो तो पोशीदा ले कि इन मआ़नी का बहाना बनाना मह़ज़ झूट और शैत़ान का धोका है क्यूंकि इ़ल्म का ज़लील होना इस ए'तिबार से है कि वोह इ़ल्म है न कि इस ए'तिबार से कि वोह ज़ैद या अ़म्र का इ़ल्म है और ग़ीबत इस ए'तिबार से ममनूअ़ है कि येह मह़फ़ूज़ इ़ज़्ज़त को ऐ़ब लगाना है न कि इस ए'तिबार से कि ख़ास त़ौर पर ज़ैद की इ़ज़्ज़त को ऐ़ब लगाना है। लिहाज़ा जो आदमी इन बातों को अच्छी त़रह़ पेशे नज़र रखता है बा'ज़ अवक़ात शैत़ान उस से आ़जिज़ आ जाता है वरना वोह हमेशा ज़ियादा अ़मल कर के कम फ़ाइदा पाता है।

जहां तक **ज़ाहिरी त़ौर** पर सदक़ा देने का मस्अला है तो इस की त़रफ़ त़बीअ़त का मैलान इस लिये होता है कि इस से देने वाले को दिली ख़ुशी होती है और उसे ऐसे कामों की तरग़ीब मिलती है। दूसरों के सामने ज़िक्र करने से मुराद येह है कि येह (या'नी लेने वाला) शख़्स बहुत ज़ियादा शुक्र करने वाला है ताकि वोह उस की इ़ज़्ज़त करें और उस पर माल ख़र्च करें। येह बात़िनी ला इलाज बीमारी है और शैत़ान दीनदार आदमी पर उसी सूरत में क़ादिर होता है कि वोह उस के सामने ऐसे कामों को सुन्नत के त़ौर पर पेश करता है और कहता है: "शुक्र अदा करना सुन्नत है जब कि पोशीदा रखना रियाकारी है।" नीज़ उस के सामने हमारे ज़िक्र कर्दा (ज़ाहिर कर के देने वाले चार) मआ़नी पेश करता है ताकि उसे ज़ाहिर कर के देने पर उभारे ह़ालांकि उस का मक़्सद वोही होता है जो हम ने ज़िक्र कर दिया है। उस का मे'यार व कसोटी येह है कि वोह शुक्र की त़रफ़ अपने नफ़्स का मैलान देखे यहां तक कि उस की ख़बर देने वाले को भी न पहुंचे और न उन लोगों तक पहुंचे जो उसे देने की रग़बत रखते हैं और जिन की आ़दत है कि वोह उसी को देते हैं जो पोशीदा रखता है और शुक्रिया अदा नहीं करता। अगर इस के नज़्दीक येह अह़वाल बराबर हों तो जान ले कि इस का मक़्सद सुन्नत को क़ाइम करना और ने'मत का इज़्हार करना है वरना येह धोका है।

फिर जब वोह जान ले कि इस का सबब शुक्रिया अदा करने में सुन्नत को अपनाना है तो देने वाले को उस का ह़क़ अदा करने में ग़ाफ़िल न हो। पस वोह ग़ौर कर ले कि अगर वोह शुक्रिया अदा करने और इस के ज़ाहिर होने को पसन्द करता है तो चाहिये कि मख़्फ़ी रखे और शुक्रिया अदा न करे क्यूंकि उस के ह़क़ को पूरा करना येह है कि ज़ुल्म पर उस की मदद न करे और उस से शुक्रिया अदा करने का मुत़ालबा करना ज़ुल्म है और जब उस का ह़ाल इस बात पर दलालत करे कि वोह शुक्रिया अदा करने को पसन्द नहीं करता और न इस का इरादा रखता है तो उस वक़्त उस का शुक्रिया अदा करे और उस का सदक़ा ज़ाहिर करे। येही वजह है कि

हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के सामने एक शख़्स की ता'रीफ़ की गई तो आप ने इरशाद फ़रमाया : "तुम ने उस की गर्दन मार दी[1] अगर वोह सुनता तो कामयाबी न पाता ।"[2] ह़ालां कि आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने कई लोगों की उन के सामने ता'रीफ़ की क्यूंकि आप उन के यक़ीन के मुतअ़ल्लिक़ मुत़मइन थे और जानते थे कि येह चीज़ उन्हें नुक़्सान नहीं देगी बल्कि उन की रग़बत में इज़ाफ़ा करेगी । चुनान्चे,

किसी के सामने उस की ता'रीफ़ करना कैसा ?

एक शख़्स से इरशाद फ़रमाया : "येह जंगल वालों का सरदार है ।"[3] [4]

एक से इरशाद फ़रमाया : "जब तुम्हारे पास क़ौम का मुअ़ज़्ज़ज़ शख़्स आए तो उस की तकरीम करो ।"[5] [6]

एक शख़्स की (फ़सीह़ व बलीग़) गुफ़्त्गू सुन कर पसन्द फ़रमाई और इरशाद फ़रमाया : "اِنَّ مِنَ الْبَيَانِ لَسِحْرًا या'नी बेशक बा'ज़ बयान जादू होते हैं ।"[7]

एक रिवायत में है कि "जब तुम में से किसी को अपने भाई की नेकी का इ़ल्म हो तो उसे बता दे क्यूंकि इस से नेकी में रग़बत बढ़ती है ।"[8]

---

1 ......المسند للامام احمد بن حنبل،مسند البصريين،حديث ابی بكرة......الخ، الحديث:٢٠٥٣٥،ج٧،ص٣٣٤، بتغيرالفاظ۔

2 ....मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْمَنَّان मिरआतुल मनाजीह़, जि. 6 स. 455 पर इस के तह़्त फ़रमाते हैं : "वोह शख़्स ऐसी त़बीअ़त का है कि तेरी ता'रीफ़ सुन कर मग़रूर व मुतकब्बिर हो जाएगा । ऐसे शख़्स की मुंह पर ता'रीफ़ उसे नुक़्सान देती है ।"

3 ....येह बात हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना क़ैश बिन आ़सिम तमीमी رَضِیَ اللہ تَعَالٰی عَنْہُ के मुतअ़ल्लिक़ इरशाद फ़रमाई थी । (मिरआतुल मनाजीह़, जि. 1, स. 347)

4 ......المستدرك، كتاب معرفة الصحابة، ذكر قيس بن عاصم المنقرى، الحديث:٦٦٢٣، ج٤، ص٨٠٣۔

5 ....इस रिवायत का सबब कुछ यूं है कि ह़ज़रते सय्यिदुना जरीर बिन अ़ब्दुल्लाह बजली رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ अपनी क़ौम के सरदार और मुअ़ज़्ज़ज़ शख़्स थे । जब येह बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर हुए तो आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इन की ता'ज़ीम व तौक़ीर फ़रमाई और उन के लिये अपनी चादरे मुबारक बिछा दी और इरशाद फ़रमाया : "जब तुम्हारे पास क़ौम का मुअ़ज़्ज़ज़ शख़्स आए तो उस की तकरीम करो ।"

(عمدة القاری لعینی، كتاب المناقب،باب مناقب الانصار،ذكر جرير بن عبدالله البجلی رضی الله تعالی عنه،ج١١،ص٥٣٥)

6 ......سنن ابن ماجه،كتاب الادب،باب اذااتاكم كريم قوم فاكرموه، الحديث:٣٧١٢، ج٤،ص٢٠٨،بتغير۔

7 ......صحيح البخاری، كتاب الطب، باب من البيان سحرا، الحديث:٥٧٦٧، ج٤، ص٤١۔

8 ......تهذيب التهذيب، علم الجرح والتعديل، ج١، ص٢٤۔

एक रिवायत में है कि "जब किसी मोमिन (के सामने उस) की ता'रीफ़ की जाती है तो उस के दिल में ईमान बढ़ता है।"(1)

हज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान सौरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : "जिस ने अपने नफ़्स को पहचान लिया लोगों की ता'रीफ़ उसे नुक़्सान नहीं पहुंचाती।"

हज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान सौरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى ने हज़रते सय्यिदुना यूसुफ़ बिन अस्बात़ رَحْمَةُاللهِ تعالٰی عَلَیْه से फ़रमाया : "जब मैं तुम्हारे साथ कोई भलाई करूं और इस पर तुम से ज़ियादा खुश होऊं और इसे अपने ऊपर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ने'मत शुमार करूं तो तुम मेरा शुक्रिया अदा करो वरना मेरा शुक्रिया अदा न करो।"(2)

अपने दिल की निगरानी करने वाले को इन बारीक मआ़नी का लिहाज़ करना चाहिये क्यूंकि इन मक़ासिद से ग़फ़्लत के बा वुजूद आ'ज़ा को अ़मल में लगा देना शैत़ान का क़हक़हा और खुशी है कि इस में थकावट ज़ियादा और नफ़्अ़ कम है। इस क़िस्म के इ़ल्म के मुतअ़ल्लिक़ कहा जाता है कि एक मस्अला मा'लूम करना साल भर की इ़बादत से अफ़्ज़ल है क्यूंकि इ़ल्म के ज़रीए ज़िन्दगी भर की इ़बादत ज़िन्दा होती है, जब कि जहालत की वजह से उ़म्र भर की इ़बादत मुर्दा और ख़त्म हो जाती है।

ह़र्फ़े आख़िर :

लोगों के सामने लेना और अ़लाह़िदगी में वापस करना तमाम रास्तों से उ़म्दा और मह़फ़ूज़ रास्ता है। इसे मुलम्मअ़ साज़ी से दूर नहीं करना चाहिये। अलबत्ता मा'रिफ़त मुकम्मल हो जाए या'नी पोशीदा व ज़ाहिर बराबर हो जाए तो अलग बात है लेकिन ऐसा शख़्स सुर्ख़ गन्धक की त़रह़ (नायाब) है जिस का ज़िक्र तो होता है लेकिन दिखाई नहीं देती। हम अल्लाह करीम عَزَّوَجَلَّ से अच्छी मदद और तौफ़ीक़ का सुवाल करते हैं।

सदक़ा लेना अफ़्ज़ल है या ज़कात :

(इस में दो मौक़िफ़ हैं) (1).....ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ख़वास, ह़ज़रते सय्यिदुना जुनैद बग़दादी और एक गुरौहे सूफ़िया رَحِمَهُمُ اللّٰه تعالٰی के नज़दीक सदक़ा लेना अफ़्ज़ल है।

1 ......تهذيب التهذيب، علم الجرح والتعديل، ج ١، ص ٢٤ـ المعجم الكبير، الحديث: ٤٢٤، ج ١، ص ١٧١ـ

2 ......قوت القلوب، الفصل الحادى والاربعون فى ذكر فـ ـائل الفقر......الخ، ج ٢، ص ٣٤١ـ

(**वजहे तरजीह़**) क्यूंकि ज़कात लेने की सूरत में मसाकीन की मुज़ाह़मत और इन पर तंगी करना है। नीज़ बा'ज़ अवक़ात ज़कात लेने में क़ुरआने पाक में ज़िक्र कर्दा औसाफ़ के मुत़ाबिक़ सिफ़्ते इस्तिह़क़ाक़ की तक्मील नहीं होती लेकिन सदक़े के मुआ़मले में चूंकि ज़ियादा वुस्अ़त है (इस लिये सदक़ा लेना अफ़्ज़ल है)।

(2)....कुछ ह़ज़रात का मौक़िफ़ है कि ज़कात लेना अफ़्ज़ल है न कि सदक़ा।
(**वजहे तरजीह़**) क्यूंकि येह वाजिब की अदाएगी पर मदद करना है और अगर तमाम मसाकीन ज़कात लेना छोड़ दें तो सब गुनहगार होंगे। नीज़ ज़कात में एह़सान जताना भी नहीं पाया जाता इस लिये कि येह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये वाजिब ह़क़ और उस के मोह़ताज बन्दों का रिज़्क़ है। नीज़ ज़कात ह़ाजत के सबब ली जाती है और इन्सान यक़ीनी त़ौर पर अपनी ह़ाजत को जानता है जब कि सदक़ा दैन के बदले में लेना होता है क्यूंकि अकषर देने वाला उसे देता है जिस में कोई भलाई देखता है। नीज़ मसाकीन की मुवाफ़क़त ज़िल्लत व गुर्बत में ज़ियादा दाख़िल करती और तकब्बुर से दूर रखती है इस लिये कि बा'ज़ अवक़ात इन्सान सदक़ा हदिय्ये के त़ौर पर ले लेता है और यूं सदक़ा और हदिय्ये में फ़र्क़ नहीं रहता मगर ज़कात में लेने वाले की ज़िल्लत और ह़ाजत वाज़ेह़ हो जाती है।

फ़ैसलए ग़ज़ाली :

इस में दुरुस्त क़ौल येह है कि येह बात लोगों के अह़वाल के मुत़ाबिक़ मुख़्तलिफ़ होती है कि इस पर क्या ग़ालिब है और इस की निय्यत क्या है?

अगर इस के सिफ़्ते इस्तिह़क़ाक़ से मुत्तसिफ़ होने में शुबा हो तो ज़कात नहीं लेनी चाहिये और जब मा'लूम हो कि वोह क़त़ई त़ौर पर मुस्तह़िक़ है जैसा कि उस पर कोई क़र्ज़ हो और उसे पूरा करने की कोई सूरत न हो तो उसे ज़कात और सदक़े में इख़्तियार है।

अगर सदक़ा देने वाले की सूरत येह हो कि अगर येह न लेता तो वोह सदक़ा न देता तो सदक़ा ले ले क्यूंकि ज़कात देने वाला उस के मुस्तह़िक़ तक वाजिब ज़कात पहुंचा देगा। इस में ख़ैर में इज़ाफ़ा करना और मसाकीन पर वुस्अ़त करना है।

अगर माल सदके़ के लिये रखा हो और ज़कात लेने की सूरत में मसाकीन पर तंगी भी न आती हो तो उसे इख़्तियार है और इन दोनों सूरतों में मुआ़मला मुख़्तलिफ़ है और अकषर अह़वाल में नफ़्स की सरकशी को तोड़ने और इसे रुस्वा करने में ज़कात लेना ज़ियादा मुअषिर है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ बेहतर जानता है।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ह़म्द, उस की मदद और हुस्ने तौफ़ीक़ से "**असरारुज़्ज़कात**" का बयान मुकम्मल हो गया। इस के फ़ौरन बा'द اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ "**असरारुस्सौम**" का बयान शुरूअ़ होगा।

दुआ़ :

तमाम ख़ूबियां **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं जो तमाम जहानों का पालने वाला है और हमारे सरदार मुह़म्मदे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم तमाम अम्बिया व मुर्सलीन, तमाम फ़िरिश्तों, ज़मीन व आस्मान के हर मुक़र्रब बन्दे और आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के आलो अस्ह़ाब पर ता क़ियामत हमेशा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मतें और ख़ूब सलाम हो। तमाम ता'रीफ़ें **अल्लाह** वह़दहू लाशरीक के लिये हैं और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हम को बस (काफ़ी) है और क्या अच्छा कारसाज़।

....अच्छी आ़दतों की नसीह़त.....

__दा'वते इस्लामी__ के इशाअ़ती इदारे __मक्तबतुल मदीना__ की मत़बूआ़ 43 सफ़्ह़ात पर मुश्तमिल किताब "__इमामे आ'ज़म__ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَكْرَم __की वसिय्यतें__" सफ़्ह़ा 27 पर ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَكْرَم ने अपने एक शागिर्द को यूं नसीह़त फ़रमाई : "तुम हर शख़्स को उस के मर्तबे के लिह़ाज़ से इ़ज़्ज़त देना, शुरफ़ा की इ़ज़्ज़त और अहले इ़ल्म की ता'ज़ीम व तौक़ीर करना, बड़ों का अदब व एह़तिराम और छोटों से प्यार व मह़ब्बत करना, आ़म लोगों से तअ़ल्लुक़ क़ाइम करना, फ़ासिक़ व फ़ाजिर को ज़लील व रुस्वा न करना, अच्छे लोगों की सोह़बत इख़्तियार करना, सुल्तान की इहानत करने से बचना, किसी को भी ह़क़ीर न समझना, अपने अख़्लाक़ व आ़दात में कोताही न करना, किसी पर अपना राज़ ज़ाहिर न करना, बिग़ैर आज़माए किसी की सोह़बत पर भरोसा न करना, किसी ज़लील व घटिया शख़्स की ता'रीफ़ न करना।"

रोज़ों का बयान

तमाम ख़ूबियां **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये जिस ने अपने बन्दों पर एह़साने अ़ज़ीम फ़रमाया कि इन से शैत़ान के मक्रो फ़रेब को दूर किया, उस की उम्मीद को मर्दूद और उस के गुमान को नाकाम कर दिया। रोज़ों को अपने दोस्तों के लिये क़ल्आ़ और ढाल बनाया। इन के लिये जन्नत के दरवाज़े खोल दिये और इन्हें इस बात की पहचान कराई कि इन के दिलों तक शैत़ान के पहुंचने का ज़रीआ़ ख़्वाहिशात हैं। ख़्वाहिशात को ख़त्म करने से नफ़्से मुत़मइन्ना दुश्मन शैत़ान को ख़त्म करने में ग़ालिब और क़वी होता है। मख़्लूक़ के क़ाइद और सुन्नत पर चलाने वाले ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मदे मुस्त़फ़ा, अह़मदे मुज्तबा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और आप के आल व अस्ह़ाब पर रह़मत और ख़ूब सलाम हो जो रोशन बसीरत और तरजीह़ याफ़्ता अ़क़्लों वाले हैं।

फ़ज़ाइले रोज़ा के मुतअ़ल्लिक़ 11 फ़रामीने मुस्त़फ़ा :

बेशक रोज़ा चौथाई ईमान है। क्यूंकि

﴾1﴿.....रोज़ा आधा सब्र है।[1]

﴾2﴿.....और सब्र आधा ईमान है।[2]

फिर रोज़े को येह ख़ुसूसिय्यत ह़ासिल है कि दूसरे तमाम अरकान की ब निस्बत इसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से ख़ास निस्बत ह़ासिल है। चुनान्चे,

﴾3﴿......ह़दीषे क़ुदसी है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है : "हर नेकी का षवाब **10** गुना से ले कर **700** गुना तक है सिवाए रोज़ा के। बेशक येह मेरे लिये है और मैं ही इस की जज़ा दूंगा।"[3]

इरशादे बारी तआ़ला है :

اِنَّمَا یُوَفَّى الصّٰبِرُوْنَ اَجْرَهُمْ بِغَیْرِ حِسَابٍ ⑩ (پ۲۳،الزمر:۱۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : साबिरों ही को उन का षवाब भरपूर दिया जाएगा बे गिनती।

---

1 ......سنن ابن ماجه، كتاب الصيام، باب فى الصوم زكاة الجسد، الحديث:۱۷۴۵، ج ۲، ص ۳۴۷۔
سنن الترمذی، کتاب الدعوات، باب:۹۲، الحديث:۳۵۳۰، ج ۵، ص ۳۰۸۔

2 ......تاریخ بغداد، مطیع بن عبدالله بن مطیع بن راشد الكبرى:۷۱۹۷، ج ۱۳، ص ۲۲۷۔

3 ......صحیح مسلم، کتاب الصیام، باب فضل الصیام، الحديث:۱۱۵۱، ص ۵۷۹۔
صحیح ابن خزیمة، کتاب الصیام، باب ذكر اعطاء الرب ......الخ، الحديث:۱۸۹۷، ج ۳، ص ۱۹۷، بتغیر قلیلٍ۔

रोज़ा सब्र का निस्फ़ है इस का षवाब अन्दाज़ व ह़िसाब से बढ़ कर है और इस की फ़ज़ीलत जानने के लिये येही बात काफ़ी है कि सरवरे आ़लम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया :

﴾4﴿.....उस ज़ात की क़सम जिस के क़ब्ज़ए कुदरत में मेरी जान है ! रोज़ादार के मुंह की बू **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के नज़्दीक मुश्क की खुश्बू से बेहतर है, **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ फ़रमाता है : "येह शख़्स अपनी ख़्वाहिश और खाने पीने को मेरे लिये छोड़ता है पस रोज़ा मेरे लिये है और मैं ही इस की जज़ा दूंगा ।"(1)

﴾5﴿.....जन्नत का एक दरवाज़ा है जिसे रय्यान कहा जाता है जिस में सिर्फ़ रोज़ादार दाख़िल होंगे ।(2) रोजे़ की जज़ा के तौ़र पर रोज़ादार से **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ की मुलाक़ात का वा'दा किया गया है ।

﴾6﴿....रोज़ादार के लिये दो खुशियां हैं : एक खुशी इफ़्त़ार के वक़्त, दूसरी खुशी **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ से मुलाक़ात के वक़्त ।(3)

﴾7﴿.....हर चीज़ का एक दरवाज़ा है और इ़बादत का दरवाज़ा रोज़ा है ।(4)

﴾8﴿....रोज़ादार का सोना इ़बादत है ।(5)

﴾9﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जब माहे रमज़ान आता है तो जन्नत के दरवाजे़ खोल दिये जाते और जहन्नम के दरवाजे़ बन्द कर दिये जाते हैं, शयात़ीन को जकड़ दिया जाता है और एक मुनादी निदा करता है : ऐ भलाई के त़ालिब ! आगे बढ़ और ऐ बुराई चाहने वाले ! बाज़ आ ।"(6)

---

1 ......صحیح البخاری، کتاب التوحید، باب قول اللّٰہ تعالیٰ:یریدون ان یبدلوا......الخ، الحدیث:۷۴۹۲، ج۴، ص ۵۷۲۔
صحیح البخاری، کتاب الصوم ، باب فضل الصوم، الحدیث:۱۸۹۴، ج ۱، ص ۲۲۴، باختصارٍ۔

2 ......صحیح مسلم، کتاب الصیام، باب فضل الصیام، الحدیث:۱۱۵۲، ص ۵۸۱۔

3 ......صحیح مسلم، کتاب الصیام، باب فضل الصیام، الحدیث:۱۱۵۱، ص ۵۸۰۔

4 ......الزھد لابن المبارک، الجزء الحادی عشر، الحدیث:۱۴۲۳، ص ۵۰۰، بتغیرٍقلیلٍ۔

5 ......شعب الایمان للبیھقی، باب فی الصیام، اخبار و حکایات فی الصیام، الحدیث:۳۹۳۸، ج۳، ص۴۱۵۔

6 ......سنن الترمذی، کتاب الصوم، باب ماجاء فی فضل شھر رمضان ، الحدیث:۶۸۲، ج۲، ص۱۵۵، بتغیرٍ۔

ह़ज़रते सय्यिदुना वकीअ़ عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْبَدِیْع ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के इस फ़रमाने आ़लीशान :

كُلُوْا وَاشْرَبُوْا هَنِیْٓـًٔۢا بِمَاۤ اَسْلَفْتُمْ فِی الْاَیَّامِ الْخَالِیَةِ ﴿۲۴﴾ (پ۲۹،الحآقۃ:۲۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *खाओ और पीओ रचता हुवा सिला उस का जो तुम ने गुज़रे दिनों में आगे भेजा ।*

के मुतअ़ल्लिक़ फ़रमाया : इस से मुराद रोज़ों के अय्याम हैं क्यूंकि इन दिनों उन्हों ने खाना पीना छोड़ दिया और मक्की मदनी सरकार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने दुन्या में ज़ोह्द इख़्तियार करने और रोज़ा रखने के रुतबे पर फ़ख़्र को जम्अ़ कर के इरशाद फ़रमाया ।

﴾10﴿....बेशक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ नौजवान आ़बिद पर फ़िरिश्तों के सामने फ़ख़्र करते हुए इरशाद फ़रमाता है : "ऐ मेरे लिये अपनी ख़्वाहिश को तर्क करने वाले, मेरे लिये अपनी जवानी ख़र्च करने वाले नौजवान ! तू मेरे नज़्दीक मेरे बा'ज़ फ़िरिश्तों की त़रह़ है ।"(1)

﴾11﴿.....आक़ाए दो आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने रोज़ादार के मुतअ़ल्लिक़ फ़रमाया कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है : "ऐ मेरे फ़िरिश्तो ! मेरे बन्दे को देखो, इस ने अपनी ख़्वाहिश, अपनी लज़्ज़त और अपना खाना पीना मेरे लिये छोड़ दिया ।"(2)

इरशादे बारी तआ़ला है :

فَلَا تَعْلَمُ نَفْسٌ مَّاۤ اُخْفِیَ لَهُمْ مِّنْ قُرَّةِ اَعْیُنٍۚ جَزَآءًۢ بِمَا كَانُوْا یَعْمَلُوْنَ ﴿۱۷﴾ (پ۲۱،السجدۃ:۱۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *तो किसी जी को नहीं मा'लूम जो आंख की ठंडक उन के लिये छुपा रखी है सिला उन के कामों का ।*

इस की तफ़्सीर में एक क़ौल येह है कि इन लोगों का अ़मल रोज़े रखना है क्यूंकि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आ़लीशान है :

اِنَّمَا یُوَفَّی الصّٰبِرُوْنَ اَجْرَهُمْ بِغَیْرِ حِسَابٍ ﴿۱۰﴾ (پ۲۳،الزمر:۱۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *साबिरों ही को उन का सवाब भरपूर दिया जाएगा बे गिनती ।*

1......جمع الجوامع، حرف الھمزۃ، الحدیث:۵۵۳۲، ج۲، ص۲۶۶، بتقدمٍ وتاخرٍ۔
قوت القلوب، الفصل الثانی والعشرون:الصیام وترتیبہ......الخ،ج۱، ص۱۳۲، "مبذل" بدلہ "مبتذل"

2......قوت القلوب، الفصل الثانی والعشرون:الصیام وترتیبہ......الخ،ج۱، ص۱۳۲، بتقدمٍ وتاخرٍ۔

लिहाज़ा रोज़ादार को इस की जज़ा वाफ़िर और बे ह़िसाब दी जाएगी जो किसी गुमान और पैमाने के तह़्त नहीं होगी और मुनासिब येही है कि ऐसा ही हो क्यूंकि रोज़ा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये है और इस की त़रफ़ मन्सूब होने की वजह से इसे ख़ुसूसी मक़ाम व मर्तबा ह़ासिल है अगर्चे तमाम इबादात उसी के लिये हैं येह बिल्कुल ऐसे ही है जैसे बैतुल्लाह शरीफ़ को तमाम ज़मीन पर फ़ज़ीलत ह़ासिल है अगर्चे तमाम ज़मीन उसी की है क्यूंकि बैतुल्लाह शरीफ़ को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने अपनी त़रफ़ मन्सूब किया है।

दीगर इबादात पर रोज़े की अफ़्ज़लिय्यत की वजह :

इस की दो वुजूहात हैं : (1).....रोज़ा अ़मल को छोड़ने और इस से रुकने का नाम है और येह ज़ाती त़ौर पर पोशीदा है इस में दिखाई देने वाला कोई अ़मल नहीं जब कि दीगर तमाम आ'माल लोगों को नज़र आते हैं। रोज़े को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ही मुलाह़ज़ा फ़रमाता है और वोह मह़ज़ सब्र के ज़रीए़ बात़िनी अ़मल है। (2).....येह दुश्मने ख़ुदा (शैत़ान मर्दूद) पर ग़लबा पाने का ज़रीआ़ है क्यूंकि शैत़ाने लईन का वसीला ख़्वाहिशात हैं (जिन के ज़रीए़ वोह बनी आदम को धोका देता है) और शहवात को तक़विय्यत खाने पीने से ह़ासिल होती है इसी लिये ह़ुज़ूर नबिय्ये पाक, साह़िबे लौलाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "बेशक शैत़ान इन्सान में ख़ून की त़रह़ दौड़ता है पस भूक के ज़रीए़ इस के रास्तों को तंग करो।"[1] इसी वजह से ह़ुज़ूर नबिय्ये अकरम, रसूले मोह़्तशम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने उम्मुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا से इरशाद फ़रमाया : "हमेशा जन्नत का दरवाज़ा खटखटाती रहो।" उन्हों ने अ़र्ज़ की : "किस चीज़ से ?" इरशाद फ़रमाया : "भूक से।"[2]

अ़न क़रीब "मोहलिकात" के बयान में खाने की ख़राबी और इस के इ़लाज के ज़िम्न में भूक की फ़ज़ीलत बयान की जाएगी। लिहाज़ा (दीगर इबादात के मुक़ाबले में) बिल ख़ुसूस रोज़ा शैत़ान की जड़ काटने वाला, उस के रास्तों को रोकने और तंग करने वाला है तो वोह ख़ुसूसी त़ौर पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के साथ निस्बत का मुस्तह़िक़ हुवा और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के दुश्मन की बेख़ कनी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की मदद से ही मुमकिन है और मददे इलाही तब शामिले ह़ाल होगी जब बन्दा दीने इलाही की मदद करे। चुनान्चे, क़ुरआने मजीद, फ़ुरक़ाने ह़मीद में इरशाद होता है :

---

1 ......التفسیر الکبیرللرازی، ارکان الاستعاذة، ج ۱ ، ص ۸۵۔
قوت القلوب، الفصل السابع و العشرون: کتاب اساس المریدین......الخ، ج ۱ ، ص ۱۷۰۔

2 ......کشف الخفاء، حرف الدال المھملة، الحدیث: ۱۳۲۶ ، ج ۱ ، ص ۳۶۷۔
قوت القلوب، الفصل التاسع و الثلاثون فی ترتیب الاقوات......الخ، ج ۲، ص ۲۸۸، مفھوماً

اِنْ تَنْصُرُوا اللّٰهَ یَنْصُرْكُمْ وَ یُثَبِّتْ اَقْدَامَكُمْ ⑦ (پ۲۶،محمد:۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *ऐ ईमान वालो ! अगर तुम दीने ख़ुदा की मदद करोगे अल्लाह तुम्हारी मदद करेगा और तुम्हारे क़दम जमा देगा ।*

पस इब्तिदाअन जिद्दो जहद बन्दे का काम है और हिदायत के साथ बदला अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से है । इसी लिये अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया :

وَالَّذِیْنَ جَاهَدُوْا فِیْنَا لَنَهْدِیَنَّهُمْ سُبُلَنَا (پ۲۱،العنکبوت:۶۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और जिन्हों ने हमारी राह में कोशिश की ज़रूर हम उन्हें अपने रास्ते दिखा देंगे ।*

एक मक़ाम पर इरशाद फ़रमाया :

اِنَّ اللّٰهَ لَا یُغَیِّرُ مَا بِقَوْمٍ حَتّٰى یُغَیِّرُوْا مَا بِاَنْفُسِهِمْ (پ۱۳،الرعد:۱۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *बेशक अल्लाह किसी क़ौम से अपनी ने'मत नहीं बदलता जब तक वोह ख़ुद अपनी ह़ालत न बदल दें ।*

और येह तब्दीली ख़्वाहिशात की कषरत की वजह से हुई क्यूंकि ख़्वाहिशात शैत़ान की चरागाहें हैं और जब तक येह तरोताज़ा रहती हैं शैत़ान का आना जाना बन्द नहीं होता और जब तक वोह आता रहता है बन्दे के सामने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का जलाल ज़ाहिर नहीं होता और वोह इस की मुलाक़ात से पर्दे में रहता है । (इसी लिये) मक्की मदनी सुल्त़ान, रह़मते आ़लमियान صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "अगर बनी आदम के दिलों पर शयात़ीन चक्कर न लगाते तो वोह आस्मानों की बादशाही देख लेते ।"[1]

इसी वजह से रोज़ा इबादत का दरवाज़ा और ढाल बन गया । जब इस की फ़ज़ीलत इस क़दर है तो इस के अरकान व सुनन को बयान करने के साथ ज़ाहिरी व बात़िनी शराइत़ को बयान करना ज़रूरी है । हम इसे तीन फ़स्लों में बयान करेंगे ।

تُوْبُوْا اِلَى اللّٰه ...... اَسْتَغْفِرُاللّٰه

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِیْب ...... صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

---

1 ...... المسند للامام احمد بن حنبل، مسند ابی ہریرۃ، الحدیث ۸۶۴۸، ج۳، ص۲۷۰، بتغیر الفاظٍ۔

पहली फ़स्ल : रोज़े के वाजिबात, ज़ाहिरी सुन्नतें और रोज़ा तोड़ने वाले लाज़िम उमूर का बयान

ज़ाहिरी वाजिबात :

रोज़े के ज़ाहिरी वाजिबात तो छे हैं :

﴾1﴿.....**माहे रमज़ान शुरूअ़ होने का ख़याल रखना :** येह चांद देखने से होता है और अगर मत़लअ़ अब्र आलूद हो तो शा'बान के तीस दिन पूरे करे। रूयत से मुराद इ़ल्म है और येह एक आ़दिल आदमी के क़ौल से ह़ासिल हो जाता है लेकिन चूंकि इ़बादत में मोह़तात़ त़रीक़ा इख़्तियार किया गया है इसी लिये शव्वाल का चांद दो आ़दिल शख़्सों के क़ौल से षाबित होता है और जिस ने किसी आ़दिल शख़्स से सुना और उसे उस के क़ौल पर ए'तिमाद और उस के सच्चा होने का गुमान ग़ालिब हो तो उस पर रोज़ा लाज़िम है अगर्चे क़ाज़ी फ़ैसला न करे। लिहाज़ा अपनी इ़बादत के मुआ़मले में हर शख़्स अपने ग़ालिब गुमान की पैरवी करे।

अगर किसी शहर में चांद दिखाई दे और दूसरे में दिखाई न दे और दोनों के दरमियान दो मरह़लों (या'नी दो दिन की मसाफ़त) से कम फ़ासिला हो तो सब पर रोज़ा वाजिब है और अगर दो मरह़लों से ज़ियादा फ़ासिला हो तो हर शहर के लिये अलग हुक्म होगा और वुजूब मुतअ़द्दी न होगा (या'नी ऐसा नहीं कि एक शहर में वाजिब हो गया तो दूसरे में भी वाजिब हो)।[1]

निय्यत के मुतअ़ल्लिक़ अह़काम :

﴾2﴿......**निय्यत करना :** हर रोज़े के लिये रात को पुख़्ता निय्यत करना और इसे मुतअ़य्यन करना लाज़िम है। हम ने "كُلَّ لَيْلَةٍ" (हर शब) की क़ैद इस लिये लगाई कि अगर एक ही बार पूरे रमज़ान के रोज़ों की निय्यत कर ली तो येह काफ़ी न होगी।

---

❶...... दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 1250 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब बहारे शरीअ़त जिल्द अव्वल सफ़ह़ा 979 पर है : एक जगह चांद हुवा तो वोह सिर्फ़ वहीं के लिये नहीं, बल्कि तमाम जहां के लिये है। मगर दूसरी जगह के लिये इस का हुक्म उस वक़्त है कि उन के नज़्दीक उस दिन तारीख़ में चांद होना शरई षुबूत से षाबित हो जाए या'नी देखने की गवाही या क़ाज़ी के हुक्म की शहादत गुज़रे या मुतअ़द्दद जमाअ़तें वहां से आ कर ख़बर दें कि फ़ुलां जगह चांद हुवा है और वहां लोगों ने रोज़ा रखा या ईद की है।"

"مُبَيَّتَةٌ" (रात) की क़ैद इस लिये लगाई कि अगर दिन में (ज़हवए कुब्रा से पहले) निय्यत की तो येह नफ़्ली रोज़े के लिये तो कार आमद हो सकती है लेकिन अदाए रोज़ए रमज़ान, क़ज़ा और नज़्र के रोज़ों के लिये काफ़ी न होगी।(1)

"مُعَيَّنَةٌ" (मुतअ़य्यन करना) की क़ैद इस लिये लगाई कि अगर मुत़लक़ रोज़े की निय्यत की या मुत़लक़ फ़र्ज़ की निय्यत की तो येह निय्यत सह़ीह़ नहीं जब तक कि यूं निय्यत न करे कि येह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से रमज़ान का फ़र्ज़ रोज़ा है।(2)

"جَازِمَةٌ" की क़ैद इस लिये लगाई कि अगर किसी ने शक की रात (या'नी शा'बान की तीसवीं रात) निय्यत की, कि अगर कल रमज़ान हुवा तो रोज़ा रखूंगा तो येह निय्यत सह़ीह़ नहीं क्यूंकि येह यक़ीनी नहीं मगर येह कि वोह अपनी निय्यत की निस्बत किसी आ़दिल शाहिद के क़ौल की त़रफ़ करे और उस आ़दिल के क़ौल में ग़लत़ी या झूट का एह़तिमाल यक़ीन को नहीं बदलता या मौजूदा सूरते ह़ाल की त़रफ़ मन्सूब करे जैसे रमज़ानुल मुबारक की आख़िरी रात शक पड़ना कि येह निय्यत की पुख़्तगी को नहीं बदलता या इजतिहाद की त़रफ़ मन्सूब करे जैसे कोई शख़्स किसी तहख़ाने में क़ैद हो और इजतिहाद की बुन्याद पर उसे ज़न्ने ग़ालिब हो जाए कि रमज़ान शरीफ़ दाख़िल हो चुका है तो उस का शक उसे निय्यत से नहीं रोकेगा और जब शक की रात वोह शक में होगा तो ज़बान से पुख़्ता करना कुछ फ़ाइदा न देगा क्यूंकि निय्यत का मह़ल दिल है और इस में शक के साथ पुख़्ता इरादा मुतसव्वर नहीं हो सकता। जैसा कि अगर वोह रमज़ान के दरमियान में कहे : "अगर कल रमज़ान हुवा तो मैं रोज़ा रखूंगा।" तो येह बात उसे नुक़्सान नहीं देती क्यूंकि येह अल्फ़ाज़ में तरद्दुद है और निय्यत के मह़ल (या'नी दिल) में तरद्दुद नहीं बल्कि उसे यक़ीन है कि कल रमज़ान है। जिस ने रात को रोज़े की निय्यत करने के बा'द खाया तो उस की निय्यत फ़ासिद न हुई। अगर किसी औ़रत ने हैज़ में रोज़े की निय्यत की फिर फ़ज्र से पहले पाक हो गई तो उस का रोज़ा सह़ीह़ है।

1...... **अह़नाफ़ के नज़दीक :** दिन में निय्यत करना भी मुफ़ीद है। चुनान्चे बहारे शरीअ़त, जिल्द अव्वल, सफ़ह़ा 967 पर है : "अदाए रोज़ए रमज़ान और नज़्रे मुअ़य्यन और नफ़्ल के रोज़ों के लिये निय्यत का वक़्त ग़ुरूबे आफ़ताब से ज़हवए कुबरा तक है, इस वक़्त में जब निय्यत कर ले, येह रोज़े हो जाएंगे।"

2...... **अह़नाफ़ के नज़दीक :** मुत़लक़ निय्यत भी मुफ़ीद है। चुनान्चे बहारे शरीअ़त, जिल्द अव्वल, सफ़ह़ा 970 पर है : "रमज़ान की अदा और नफ़्ल व नज़्रे मुअ़य्यन मुत़लक़ रोज़े की निय्यत से हो जाते हैं। ख़ास इन्हीं की निय्यत ज़रूरी नहीं। यूं ही नफ़्ल की निय्यत से भी अदा हो जाते हैं, बल्कि ग़ैर मरीज़ व मुसाफ़िर ने रमज़ान में किसी और वाजिब की निय्यत की जब भी उसी रमज़ान का होगा।"

《3》.....**रोज़ा याद होते हुए जान बूझ कर पेट तक कोई चीज़ पहुंचाने से रुकना :** खाने पीने, नाक में दवाई चढ़ाने और हुक़्ना लेने से रोज़ा फ़ासिद हो जाता है और रग कटवाने, पछने लगवाने, सुरमा डालने और कान या उ़ज़्वे तनासुल में सलाई दाख़िल करने से रोज़ा फ़ासिद नहीं होता अलबत्ता अगर उ़ज़्वे तनासुल में ऐसी चीज़ डाल दे जो मषाने तक पहुंच जाए तो रोज़ा टूट जाएगा।

बिला क़स्द रास्ते का जो गुबार या मख्खी पेट तक पहुंच जाए या कुल्ली से जो चीज़ पेट तक पहुंच जाए तो इस से रोज़ा नहीं टूटेगा। हां, अगर कुल्ली करने में मुबालग़ा किया तो रोज़ा टूट जाएगा क्यूंकि वोह कोताही करने वाला है। हम ने "عَمْدًا" की क़ैद इसी लिये लगाई है। रोज़ा याद होने की क़ैद इस लिये लगाई है ताकि भूलने वाले का इस्तिषना हो जाए क्यूंकि भूल कर खाने पीने से रोज़ा नहीं टूटता। जिस ने दिन के दोनों अत़राफ़ में जान बूझ कर खाया फिर उसे मा'लूम हो गया कि उस ने यक़ीनी तौ़र पर दिन के वक़्त खाया है तो उस पर क़ज़ा लाज़िम है और अगर (यक़ीन न हुवा और) वोह अपने गुमान और इजतिहाद पर क़ाइम रहा तो उस पर क़ज़ा लाज़िम नहीं लिहाज़ा उसे चाहिये कि दिन के शुरूअ़ (तुलूए़ सुब्हे़ सादिक़ के वक़्त) और आख़िर में (या'नी गुरूबे आफ़्ताब के वक़्त) रात के ग़ालिब गुमान के बिग़ैर न खाए।

《4》......**जिमाअ़ से रुकना :** इस की ह़द हश्फ़ा का ग़ाइब होना है। अगर भूल कर जिमाअ़ किया तो रोज़ा नहीं टूटा। अगर रात को जिमाअ़ किया या एह़तिलाम के सबब जुनुबी हो गया तो रोज़ा नहीं टूटा। बीवी से सोह़बत में मश्ग़ूल था कि फ़ज्र तुलूअ़ हो गई अगर फ़ौरन जुदा हो गया तो रोज़ा सह़ीह़ है और अगर ठहरा रहा तो रोज़ा फ़ासिद हो जाएगा और कफ़्फ़ारा लाज़िम होगा।(1)

《5》......**मनी ख़ारिज करने से रुकना :** इस से मुराद जिमाअ़ या बिग़ैर जिमाअ़ के मनी ख़ारिज करना है क्यूंकि इस से रोज़ा टूट जाता है और अपनी बीवी का बोसा लेने या इस के साथ लैटने से जब तक इन्ज़ाल न हो रोज़ा नहीं टूटता लेकिन येह मकरूह है अलबत्ता अगर बुड्ढा हो या खुद पर क़ाबू रख सकता हो तो बोसा लेने में ह़रज नहीं लेकिन न लेना बेहतर है। अगर बोसा लेने से इन्ज़ाल का डर हो और बोसा लिया और मनी ख़ारिज हो गई तो इस की कोताही की वजह से रोज़ा टूट जाएगा।

---

❶...... इस सूरत में **अह़नाफ़ के नज़दीक :** क़ज़ा वाजिब है कफ़्फ़ारा नहीं। चुनान्चे, बहारे शरीअ़त, जिल्द अव्वल, सफ़ह़ा **990** पर है : "सुब्ह़ से पहले या भूल कर जिमाअ़ में मश्ग़ूल था, सुब्ह़ होते ही याद आने पर फ़ौरन जुदा हो गया तो कुछ नहीं और इसी ह़ालत पर रहा तो क़ज़ा वाजिब है, कफ़्फ़ारा नहीं।"

क़ै के अह़काम :

《6》......**क़ै (उल्टी) करने से बचना :** जान बूझ कर क़ै करने से रोज़ा फ़ासिद हो जाता है, अगर बिला इख़्तियार क़ै आ जाए तो रोज़ा नहीं टूटेगा।[1] अगर अपने ह़ल्क़ या सीने से बलग़म खींच कर निगल ली तो रोज़ा नहीं टूटेगा इस में इब्तिलाए आ़म की वजह से रुख़्सत है। अलबत्ता मुंह में पहुंचने के बा'द निगले तो रोज़ा टूट जाएगा।

रोज़ा तोड़ने से लाज़िम होने वाले उमूर :

रोज़ा तोड़ने से चार बातें लाज़िम आती हैं : (1).....क़ज़ा (2).....कफ़्फ़ारा (3)....फ़िदया और (4)....रोज़ादारों से मुशाबहत इख़्तियार करते हुए बाक़ी दिन खाने पीने से रुके रहना।

तफ़्सील :

《1》....**क़ज़ा :** येह हर मुकल्लफ़ मुसलमान पर वाजिब है, ख़्वाह उ़ज़्र की वजह से रोज़ा छोड़े या बिग़ैर उ़ज़्र के, हाइज़ा रोज़े की क़ज़ा करेगी इसी त़रह़ मुर्तद भी (जब दोबारा इस्लाम लाए तो ज़मानए इर्तिदाद की) क़ज़ा करेगा (अह़नाफ़ के नज़दीक नहीं करेगा) लेकिन काफ़िर, बच्चे और पागल पर कोई क़ज़ा नही, क़ज़ाए रमज़ान के रोज़े मुसलसल रखना ज़रूरी नहीं इकठ्ठे या अ़लाह़िदा अ़लाह़िदा जैसे चाहे क़ज़ा कर सकता है।

---

❶......**अह़नाफ़ के नज़दीक :** क़ै से रोज़ा टूटने न टूटने की दर्जे ज़ैल सूरतें हैं। चुनान्चे, दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ **1548** सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब फ़ैज़ाने सुन्नत जिल्द अव्वल सफ़ह़ा **1048** पर है : "《1》 **रोज़े** में ख़ुद ब ख़ुद कितनी ही क़ै (उ़ल्टी) हो जाए (ख़्वाह बालटी ही क्यूं न भर जाए) इस से रोज़ा नहीं टूटता। 《2》 **अगर** रोज़ा याद होने के बा वुजूद क़स्दन (या'नी जान बूझ कर) **क़ै** की और अगर वोह मुंह भर है (या'नी जिसे बिला तकल्लुफ़ न रोका जा सके) तो अब रोज़ा टूट जाएगा। 《3》 **क़स्दन** मुंह भर होने वाली क़ै से भी उस सूरत में रोज़ा टूटेगा जब कि क़ै में खाना (या पानी) या सफ़रा (या'नी कड़वा पानी) या ख़ून आए। 《4》 अगर क़ै में सिर्फ़ बलग़म निकला तो रोज़ा नहीं टूटेगा। 《5》 क़सदन क़ै की मगर थोड़ी सी आई, मुंह भर न आई तो अब भी रोज़ा न टूटा। 《6》 मुंह भर से कम क़ै हुई और मुंह ही से दोबारा लौट गई या ख़ुद ही लौटा दी, इन दोनों सूरतों में रोज़ा नहीं टूटेगा। 《7》 मुंह भर क़ै बिला इख़्तियार हो गई तो रोज़ा न टूटा अलबत्ता अगर इस में से एक चने के बराबर भी वापस लौटा दी तो रोज़ा टूट जाएगा और एक चने से कम हो तो रोज़ा न टूटा।"

﴾2﴿......**कफ़्फ़ारा :** कफ़्फ़ारा फ़क़त़ जिमाअ़ से वाजिब होता है। मनी ख़ारिज करने, खाने पीने और जिमाअ़ के इलावा उमूर से कफ़्फ़ारा लाज़िम नहीं आता।(1)

रोजे़ का कफ़्फ़ारा :

एक ग़ुलाम आज़ाद करना, अगर ग़ुलाम मुयस्सर न हो तो लगातार दो माह के रोजे़ रखना, अगर इस से भी आ़जिज़ हो तो साठ मिस्कीनों को खाना खिलाना हर एक को एक एक मुद (या'नी एक किलो गन्दुम) देना है।(2)

﴾3﴿.....**बाक़ी दिन में न खाना :** जिस ने रोज़ा तोड़ कर ना फ़रमानी की या कोताही की उस पर वाजिब है कि दिन का बक़िया ह़िस्सा खाने पीने से बाज़ रहे। ह़ाइज़ा जब पाक हो तो उस पर बक़िया दिन खाने पीने से रुकना ज़रूरी नहीं। मुसाफ़िर जब दो दिन की मसाफ़त तै़ कर के आए तो उस पर भी खाने पीने से रुकना ज़रूरी नहीं और शक के दिन अगर एक आ़दिल शख़्स चांद नज़र आने की ख़बर दे तो खाना पीना छोड़ना ज़रूरी है और सफ़र के दौरान इफ़्त़ार के बजाए रोज़ा रखना अफ़्ज़ल है। अलबत्ता अगर त़ाक़त न हो तो न रखे, जिस दिन सफ़र शुरूअ़ करना हो और दिन की इब्तिदा में घर में हो तो उस दिन का रोज़ा न छोड़े और रोजे़ की ह़ालत में सफ़र से आए तो भी रोज़ा न तोड़े।

---

❶...... **अह़नाफ़ के नज़दीक :** दर्जे ज़ैल सूरतों में क़ज़ा और कफ़्फ़ारा दोनों लाज़िम हैं।

चुनान्चे बहारे शरीअ़त, जिल्द अव्वल, सफ़ह़ा 991 पर है : "रमज़ान में रोज़ादार मुकल्लफ़ मुक़ीम ने अदाए रोज़ए रमज़ान की निय्यत से रोज़ा रखा और किसी आदमी के साथ जो क़ाबिले शहवत है, उस के आगे या पीछे के मक़ाम में जिमाअ़ किया, इन्ज़ाल हुवा हो या नहीं या उस रोज़ादार के साथ जिमाअ़ किया गया या कोई ग़िज़ा या दवा खाई या पानी पिया या कोई चीज़ लज़्ज़त के लिये खाई या पी या कोई ऐसा फे़'ल किया, जिस से इफ़्त़ार का गुमान न होता हो और उस ने गुमान कर लिया कि रोज़ा जाता रहा फिर क़स्दन खा पी लिया (मषलन फ़स्द या पंछना लिया या सुरमा लगाया या जानवर से वत़ी की या औ़रत को छुवा या बोसा लिया या साथ लैटाया या मुबाशरते फ़ाह़िशा की, मगर इन सब सूरतों में इन्ज़ाल न हुवा या पाख़ाने के मक़ाम में ख़ुश्क उंगली रखी, अब इन अफ़्आ़ल के बा'द क़स्दन खा लिया) तो इन सब सूरतों में रोजे़ की क़ज़ा और कफ़्फ़ारा दोनों लाज़िम हैं।"

❷...... **अह़नाफ़ के नज़दीक :** रोजे़ के कफ़्फ़ारे का त़रीक़ा दर्जे ज़ैल है।

चुनान्चे फै़ज़ाने सुन्नत, जिल्द अव्वल, सफ़ह़ा 1084 पर है : "रोज़ा तोड़ने का कफ़्फ़ारा येह है कि मुमकिन हो तो एक बांदी या ग़ुलाम आज़ाद करे और येह न कर सके मषलन उस के पास न लौंडी, ग़ुलाम न इतना माल कि ख़रीद सके, या माल तो है मगर ग़ुलाम मुयस्सर नहीं जैसा कि आज कल लौंडी ग़ुलाम नहीं मिलते। तो अब पै दर पै साठ रोजे़ रखे। येह भी अगर मुमकिन न हो तो साठ मिस्कीनों को पेट भर कर दोनों वक़्त खाना खिलाए येह ज़रूरी है कि जिस को एक वक़्त खिलाया दूसरे वक़्त भी उसी को खिलाए। येह भी हो सकता है कि साठ मसाकीन को एक एक सदक़ए फ़ित्र या'नी तक़रीबन 2किलो ग्राम से 80 ग्राम कम गेहूं या इस की रक़म का मालिक कर दिया जाए। एक ही मिस्कीन को इकठ्ठे साठ सदक़ए फ़ित्र नहीं दे सकते। हां येह कर सकते हैं कि एक ही को साठ दिन तक रोज़ाना एक एक सदक़ए फ़ित्र दें।" (ملخص ازرد المحتار ج۳ص ۳۹۰)

﴿4﴾......**फ़िदया :** ह़ामिला और दूध पिलाने वाली को अगर बच्चे पर ख़ौफ़ की वजह से रोज़ा छोड़ना पड़े तो इन पर फ़िदया वाजिब है[1] कि हर दिन के बदले एक मिस्कीन को एक मुद (या'नी एक किलो) गन्दुम दें और क़ज़ा भी करें और शैख़े फ़ानी (या'नी बहुत बुढ्ढा शख़्स)[2] हर दिन के बदले एक मुद गन्दुम दे।

रोज़े की सुन्नतें :

(1)....सह़री में ताख़ीर करना (2).....नमाज़े मग़रिब से पहले खजूर या पानी से इफ़्तार में जल्दी करना (3).....ज़वाल के बा'द मिस्वाक न करना[3] (4)....माहे रमज़ान में ख़ूब सख़ावत करना जैसा कि "किताबुज़्ज़कात" में इस के फ़ज़ाइल बयान हो चुके हैं (5).....क़ुरआने पाक का दौर करना (या'नी सुनना सुनाना) (6).....मस्जिद में ए'तिकाफ़ करना।

ख़ुसूसन आख़िरी अ़शरे में कि प्यारे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की आ़दते मुबारका थी कि "जब आख़िरी अ़शरा आता तो बिस्तर लपेट देते और इ़बादत पर कमरबस्ता हो जाते, ख़ुद भी ख़ूब इ़बादत करते और घर वालों को भी तरग़ीब दिलाते।"[4] या'नी : इ़बादत पर हमेशगी इख़्तियार करते क्यूंकि इस अ़शरह में लैलतुल क़द्र है और ज़न्ने ग़ालिब येह है कि येह त़ाक़ रातों में है और ज़ियादा इमकान इक्कीसवीं, तेईसवीं, पच्चीसवीं, सत्ताईसवीं रात का है।

---

❶...... **अह़नाफ़ के नज़दीक :** ह़ामिला और दूध पिलाने वाली पर सिर्फ़ क़ज़ा लाज़िम, फ़िदया वाजिब नहीं। चुनान्चे, शैख़ुल इस्लाम बुरहानुद्दीन अबुल ह़सन अ़ली बिन अबी बक्र फ़िरग़ानी मरग़ीनानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّوْرَانِی फ़रमाते हैं : "ह़म्ल वाली या दूध पिलाने वाली औ़रत को अगर अपनी या बच्चे की जान जाने का सह़ीह़ अन्देशा हो तो रोज़ा न रखें बा'द में क़ज़ा कर लें इस सूरत में न इन पर कफ़्फ़ारा है न फ़िदया।

(ماخوذ ازالھدایہ شرح بدایۃ المبتدی، کتاب الصوم،باب مایوجب القضاءو الکفارۃ،ج ۱ ،ص ۱۲۴)

❷...... फ़ैज़ाने सुन्नत, जिल्द अव्वल, सफ़ह़ा 1076 पर है : "शैख़े फ़ानी या'नी वोह मुअ़म्मर बुज़ुर्ग जिन की उ़म्र इतनी बढ़ चुकी है कि अब वोह बे चारे रोज़ बरोज़ कमज़ोर ही होते चले जाएंगे। जब वोह बिल्कुल ही रोज़ा रखने से आ़जिज़ हो जाएं। या'नी न अब रख सकते हैं न आयन्दा रोज़े की त़ाक़त आने की उम्मीद है उन्हें अब रोज़ा न रखने की इजाज़त है। लिहाज़ा हर रोज़े के बदले में (बत़ौरे फ़िदया) एक सदक़ए फ़ित्र (सदक़ए फ़ित्र की मिक़दार 2 किलो ग्राम से 80 ग्राम कम है) की मिक़दार मिस्कीन को दें।"

❸...... बहारे शरीअ़त, जिल्द अव्वल, सफ़ह़ा 997 पर है : "रोज़े में मिस्वाक करना मकरूह नहीं, बल्कि जैसे और दिनों में सुन्नत है रोज़े में भी मसनून है। मिस्वाक ख़ुश्क हो या तर अगर्चे पानी से तर की हो, ज़वाल से पहले करे या बा'द किसी वक़्त मकरूह नहीं। अकसर लोगों में मश्हूर है कि दोपहर बा'द रोज़ादार के लिये मिस्वाक करना मकरूह है, येह हमारे मज़हब (या'नी अह़नाफ़) के ख़िलाफ़ है।"

अलबत्ता, मुजद्दिदे आ'ज़म आ'ला ह़ज़रत इमाम अहले सुन्नत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ الرَّحۡمٰن फ़तावा रज़विय्या, जि. 1 स. 511 पर फ़रमाते हैं कि "अगर मिस्वाक चबाने से रेशे छूटें या मज़ा मह़सूस हो तो ऐसी मिस्वाक रोज़े में नहीं करना चाहिये।"

❹......قوت القلوب، الفصل العشرون فی ذکر احیاء اللیالی......الخ، ج ۱، ص ۱۱۵۔

ए'तिकाफ़ के अह्काम :[1]

ए'तिकाफ़ में तसलसुल क़ाइम रखना (मुसलसल दस दिन मस्जिद में ठहरना) ज़ियादा मुनासिब है और अगर मुसलसल ए'तिकाफ़ करने की नज़्र मानी या इस की निय्यत की (और ए'तिकाफ़ किया) तो बिला ज़रूरत मस्जिद से निकलने की वजह से ए'तिकाफ़ टूट जाएगा जैसे वोह किसी की इयादत के लिये या गवाही के लिये या जनाज़े के लिये या किसी से मुलाक़ात के लिये या ताज़ा वुज़ू करने के लिये निकले (जब कि पहले से बा वुज़ू हो)।

अगर क़ज़ाए हाजत के लिये निकला तो ए'तिकाफ़ नहीं टूटेगा उसे चाहिये कि घर में वुज़ू करे और किसी दूसरे काम में मश्ग़ूल न हो। ह़दीसे मुबारका में है कि "हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم सिर्फ़ क़ज़ाए ह़ाजत के लिये तशरीफ़ ले जाते थे और चलते चलते ही बीमार पुर्सी भी फ़रमा लेते थे।"[2]

जिमाअ़ करने से ए'तिकाफ़ का तसलसुल टूट जाता है मगर बोसा लेने से नहीं टूटता और मस्जिद में ख़ुश्बू लगाने, अ़क़्दे निकाह़ करने, खाने (पीने) सोने और त़श्त में हाथ धोने में कोई ह़रज नहीं, मुसलसल ए'तिकाफ़ में इन सब कामों की ज़रूरत होती है और बा'ज़ बदन को मस्जिद से बाहर निकालने से ए'तिकाफ़ का तसलसुल नहीं टूटता कि हुज़ूरे अन्वर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم अपना सरे अन्वर हुजरए मुबारका की त़रफ़ झुका देते तो उम्मुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا हुजरे में खड़ी खड़ी ही मूए मुबारक में कंघी कर देतीं।[3]

जब मो'तकिफ़ क़ज़ाए ह़ाजत से लौटे तो उसे दोबारा ए'तिकाफ़ की निय्यत करना ज़रूरी है और अगर पहले ही दस दिन की निय्यत कर चुका है तब भी नई निय्यत करना अफ़्ज़ल है।

---

❶...... ए'तिकाफ़ के अह्काम जानने और तफ़्सीली मा'लूमात ह़ासिल करने के लिये दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ **1548** सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब फ़ैज़ाने सुन्नत, जिल्द अव्वल सफ़्ह़ा **1173** ता **1280** का मुत़ालआ़ कीजिये।........... **इल्मिय्या**

❷......صحیح مسلم، کتاب الحیض، باب جواز غسل الحائض......الخ، الحدیث۲۹۷، ص۱۷۰، باختصارٍ۔

سنن ابی داود، کتاب الصوم، باب المعتکف یعود المریض، الحدیث۲۴۷۲، ج۲، ص۴۹۲، باختصارٍ۔

❸......صحیح مسلم، کتاب الحیض، باب جواز غسل الحائض......الخ، الحدیث۲۹۷، ص۱۷۰۔

दूसरी फ़स्ल : रोजे़ के असरार और इस की बात़िनी शराइत़

जान लीजिये कि रोजे़ के तीन दर्जे हैं :

(1).....अ़वाम का रोज़ा (2).....ख़्वास का रोज़ा और (3).....अख़्सुल ख़्वास का रोज़ा।

तफ़्सील :

आ़म लोगों का रोज़ा येह है कि बदन और शर्मगाह को ख़्वाहिश पूरी करने से रोकना जैसा कि पहले गुज़र चुका है।

ख़ास लोगों का रोज़ा (खाने पीने और जिमाअ़ से रुकने के साथ साथ) कान, आंख, ज़बान, हाथ, पाउं और तमाम आ'ज़ा को गुनाहों से रोकना है।

ख़ासुल ख़ास लोगों का रोज़ा दिल को बुरे ख़यालात और दुन्यवी फ़िक्रों बल्कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिवा हर चीज़ से मुकम्मल त़ौर पर ख़ाली करना है। इस सूरत में जब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और क़ियामत के सिवा कोई दूसरी फ़िक्र या दुन्यवी फ़िक्र आएगी तो रोज़ा टूट जाएगा। अलबत्ता अगर दुन्यवी फ़िक्र दीन के लिये हो तो इस का हुक्म मुख़्तलिफ़ है क्यूंकि येह ज़ादे आख़िरत से है न कि दुन्या से। बा'ज़ अहले दिल ह़ज़रात का क़ौल है कि "जो शख़्स दिन के वक़्त येह बात सोचे कि किस चीज़ से इफ़्तार करूंगा तो उस पर ख़त़ा लिख दी जाती है क्यूंकि येह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के फ़ज़्ल और उस के रिज़्क़े मौऊ़द (या'नी उस ने रिज़्क़ देने का जो वा'दा फ़रमाया है उस) पर कामिल यक़ीन न होने की दलील है।"

येह (आख़िरी दर्जा) अम्बिया, सिद्दीक़ीन और मुक़र्रबीन عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का रुतबा है इस की तफ़्सील में ज़ियादा कलाम नहीं किया जाएगा लेकिन इस की अ़मली तह़क़ीक़ बयान की जाएगी क्यूंकि येह रोज़ा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ लौ लगाने और मुकम्मल त़ौर पर ग़ैरुल्लाह से कनारा कश होने से ह़ासिल होता है जब कि बन्दा इस इरशादे बारी तआ़ला को अपना ओढ़ना बिछौना बना ले।

قُلِ اللّٰهُ ۙ ثُمَّ ذَرْهُمْ فِیْ خَوْضِهِمْ یَلْعَبُوْنَ ﴿۹۱﴾ (پ۷، الانعام: ۹۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : अल्लाह कहो फिर उन्हें छोड़ दो उन की बेहूदगी में खेलता।

ख़ास लोगों का रोज़ा औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام का रोज़ा है और वोह येह कि अपने आ'ज़ा को गुनाहों से बचाना। येह रोज़ा छे बातों से मुकम्मल होता है :

﴿1﴾....**आंख का रोज़ा :** उन चीज़ों को देखने से बचना जो बुरी और मकरूह हैं और नज़र को हर उस चीज़ से बचाना जो दिल को (दुन्यावी कामों में) मश्ग़ूल कर के ज़िक्रे इलाही से ग़ाफ़िल कर दे। चुनान्चे, सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "नज़र इब्लीसे मलऊ़न के बुझे हुए तीरों में से एक तीर है। जिस ने ख़ौफ़ के सबब बद निगाही को तर्क कर दिया **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे ऐसा ईमान अ़ता फ़रमाएगा जिस की ह़लावत वोह अपने दिल में पाएगा।"(1)

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "पांच चीज़ें रोज़ा दार का रोज़ा तोड़ देती हैं (1).....झूट (2)....ग़ीबत (3)....चुग़ली (4).....झूटी क़सम और (5)....शहवत से देखना।"(2) (3)

﴿2﴾....**ज़बान का रोज़ा :** ज़बान को बेहूदा गुफ़्तगू करने, झूट, ग़ीबत, चुग़ली, फ़ोह़्श गोई, ज़ुल्म, लड़ाई, रियाकारी और ख़ामोशी इख़्तियार करने से बचा कर ज़िक्रे इलाही और तिलावते क़ुरआन में मश्ग़ूल रखना।

ह़ज़रते सय्यिदुना बिशर बिन ह़ारिष ह़ाफ़ी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْکَافِی ने ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान षौरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی से नक़्ल फ़रमाया कि "ग़ीबत रोज़े को फ़ासिद कर देती है।"

ह़ज़रते सय्यिदुना लैष رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ह़ज़रते सय्यिदुना मुजाहिद عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَاحِد से नक़्ल फ़रमाते हैं कि "दो ख़स्लतें **ग़ीबत** और **झूट** रोज़े को फ़ासिद कर देती हैं।"

हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहि़बे लौलाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "बेशक रोज़ा ढाल है। लिहाज़ा जब तुम में से कोई रोज़ादार हो तो न बे ह़याई की बात करे, न जहालत की और अगर कोई शख़्स उस से लड़ाई झगड़ा या गाली गलोच करे तो कह दे कि मैं रोज़े से हूं।"(4)

---

❶......المعجم الکبیر، الحدیث:۱۰۳۶۲، ج۱۰، ص۱۷۳، بتغیرٍ۔

❷...... इन उमूर से रोज़ा फ़ासिद नहीं होता। चुनान्चे, फ़ैज़ाने सुन्नत जिल्द अव्वल सफ़ह़ा 1057 पर है : "झूट, चुग़ली, ग़ीबत, बद निगाही, गाली देना, बिला इजाज़ते शरई किसी का दिल दुखाना, दाढ़ी मुन्डाना वग़ैरा चीज़ें वैसे भी नाजाइज़ व ह़राम हैं रोज़े में और ज़ियादा ह़राम और इन की वजह से रोज़े में कराहिय्यत आती और रोज़े की नूरानिय्यत चली जाती है।"

❸......قوت القلوب، الفصل الثالث والثلاثون فی ذکر دعائم الاسلام......الخ، ج۲، ص۱۸۹۔

❹......صحیح البخاری، کتاب الصوم، باب فضل الصوم، الحدیث:۱۸۹۴، ج۱، ص۶۲۴، دون قولہ:اذا کان احدکم قائما۔

हि़कायत :- इन्सानी गोश्त ख़ोर रोज़ादार :

ह़दीषे पाक में है कि ज़मानए रिसालत में दो औ़रतों ने रोज़ा रखा दिन के इख़्तिताम पर उन्हें भूक और प्यास ने तंग किया क़रीब था कि वोह हलाक हो जातीं, चुनान्चे, उन्हों ने किसी को बारगाहे रिसालत में भेज कर रोज़ा इफ़्त़ार की इजाज़त त़लब की तो हु़ज़ूरे पुर नूर, शाफ़ेए़ यौमुन्नुशूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन की त़रफ़ एक प्याला भेजा और फ़रमाया : "उन दोनों से कहो कि तुम ने जो खाया है उस की प्याले में क़ै करो।" चुनान्चे, एक ने ताज़ा ख़ून और गोश्त की क़ै की और दूसरी ने भी इस जैसी क़ै की ह़त्ता कि दोनों ने प्याला भर दिया। लोगों को इस पर तअ़ज्जुब हुवा तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "उन दोनों ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ह़लाल कर्दा चीज़ से रोज़ा रखा और उस की ह़राम कर्दा चीज़ से इफ़्त़ार किया, यूं कि दोनों में से एक दूसरी के पास बैठी और दोनों लोगों की ग़ीबत करने लगीं तो येह लोगों का गोश्त है जो उन्हों ने (ग़ीबत की सूरत में) खाया।"(1)

﴾3﴿.....**कानों का रोज़ा :** येह है कि इन्हें हर बुरी बात सुनने से रोकना क्यूंकि जिस बात का करना ह़राम है उस की त़रफ़ तवज्जोह देना भी ह़राम है। इसी लिये अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने ग़ौर से सुनने वाले और माले ह़राम खाने वाले को बराबर क़रार दिया। चुनान्चे, इरशादे बारी तआ़ला है :

سَمّٰعُوْنَ لِلْكَذِبِ اَكّٰلُوْنَ لِلسُّحْتِ ؕ (پ۶، المائدۃ:۴۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *बड़े झूट सुनने वाले बड़े ह़राम ख़ोर।*

और इरशाद फ़रमाया :

لَوْ لَا یَنْهٰىهُمُ الرَّبّٰنِیُّوْنَ وَ الْاَحْبَارُ عَنْ قَوْلِهِمُ الْاِثْمَ وَ اَكْلِهِمُ السُّحْتَ ؕ (پ۶، المائدۃ:۶۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *उन्हें क्यूं नहीं मन्अ़ करते उन के पादरी और दुरवेश गुनाह की बात कहने और ह़राम खाने से।*

लिहाज़ा ग़ीबत पर ख़ामोशी इख़्तियार करना ह़राम है। एक जगह इरशाद फ़रमाया :

اِنَّكُمْ اِذًا مِّثْلُهُمْ ؕ (پ۵، النساء:۱۴۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *वरना तुम भी इन्हीं जैसे हो।*

---

1 ......المسند للامام احمد بن حنبل، حدیث عبید مولی النبی، الحدیث:۲۳۷۱۴، ج۹، ص۱۶۵، مفہومًا۔

इसी लिये आक़ाए दो जहां, महबूबे रहमान صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "ग़ीबत करने वाला और सुनने वाला दोनों गुनाह में (बराबर के) शरीक हैं।"[1]

ह़राम ज़ह्र जब कि ह़लाल दवा है :

﴾4﴿....बक़िय्या आ'ज़ा को गुनाहों से बचाना :

हाथ पाउं का रोज़ा : गुनाहों और नापसन्दीदा उमूर से बचाना।

पेट का रोज़ा : इफ़्तार के वक़्त इसे शुबहात से बचाना। क्यूंकि उस रोज़े का कोई फ़ाइदा नहीं जिस में ह़लाल खाने से रुका जाए फिर ह़राम पर इफ़्तार किया जाए। ऐसे रोज़ादार की मिषाल उस शख़्स की सी है जो मह़ल बनाता है और शहर को गिरा देता है, क्यूंकि ह़लाल खाना ज़ियादा होने की वजह से नुक़्सान देता है न कि किसी और वजह से। नीज़ रोज़े का मक़्सद खाने में कमी करना है। ज़ियादा दवा को उस के नुक़्सान देह होने की वजह से छोड़ कर ज़ह्र खाने वाला बे वुक़ूफ़ है। ह़राम दीन को हलाक करने वाला ज़ह्र जब कि ह़लाल दवा है जिस का क़लील नफ़्अ़ का बाइ़ष और कषीर नुक़्सान देह है और रोज़े का मक़्सद इस ह़लाल ग़िज़ा को कम करना है। चुनान्चे,

हु़ज़ूर नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "कितने ही रोज़ेदार ऐसे हैं कि जिन्हें उन के रोज़े से सिवाए भूक प्यास के कुछ ह़ासिल नहीं होता।"[2]

शर्ह़े ह़दीष :

इस की शर्ह़ में मुख़्तलिफ़ अक़्वाल हैं : (1)....इस से मुराद वोह है जो ह़राम पर इफ़्तार करता है (2)....इस से मुराद वोह है जो ह़लाल खाने से तो रुकता है लेकिन ग़ीबत के ज़रीए़ लोगों के गोश्त से इफ़्तार कर लेता है क्यूंकि ग़ीबत ह़राम है (3)....इस से मुराद वोह शख़्स है जो अपने आ'ज़ा को गुनाहों से नहीं बचाता।

﴾5﴿.....इफ़्तार के वक़्त पेट भर कर ह़लाल खाने से बचना : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नज़दीक उस पेट से बुरा बरतन कोई नहीं जो ह़लाल से भर जाए। रोज़े से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के दुश्मन (शैत़ान) पर ग़लबा पाने और शहवत को तोड़ने का फ़ाइदा कैसे ह़ासिल होगा जब कि रोज़ादार दिन के वक़्त होने वाली कमी को इफ़्तार के वक़्त पूरा कर ले। बा'ज़ अवक़ात बन्दे के पास अन्वाअ़ व अक़्साम के खाने जम्अ़ हो जाते हैं ह़त्ता कि अब तो येह आ़दत बन चुकी है कि रमज़ान

---

1 ......المقاصد الحسنة، حرف الميم، الحديث:١٠٣٦، ص٣٩٥۔

2 ......سنن ابن ماجه، كتاب الصيام، باب ماجاء فی الغيبة والرفث للصائم، الحديث:١٦٩٠، ج٢، ص٣٢٠، مفهومًا۔
المعجم الكبير، الحديث:١٣٤١٣، ج١٢، ص٢٩٢، مفهومًا۔

के लिये खाने जम्अ़ किये जाते हैं और इस महीने में वोह खाने खाए जाते हैं जो दीगर महीनों में नहीं खाए जाते ह़ालांकि येह बात मा'लूम है कि रोज़े का मक़्सद पेट को ख़ाली रखना और ख़्वाहिशात को तोड़ना है ताकि नफ़्स तक़्वा पर क़ुव्वत ह़ासिल कर ले। लेकिन जब सुब्ह़ से शाम तक मे'दे को क़ाबू (कन्ट्रोल) किये रखा यहां तक कि ख़्वाहिश ने जोश मारा और रग़बत मज़बूत़ हो गई फिर उसे लज़ीज़ खाने दे कर सैर किया गया तो उस की लज़्ज़त में भी इज़ाफ़ा हो गया और उस की क़ुव्वत दुगनी हो गई और वोह ख़्वाहिशात उभरीं जो आ़दतन पैदा नहीं होतीं।

रोज़े की रूह़ और राज़ :

रोज़े की रूह़ और राज़ उन क़ुव्वतों को कमज़ोर करना है जो बुराइयों की त़रफ़ लौटाने में शैत़ान का ज़रीआ़ हैं और येह चीज़ कम खाने से ह़ासिल होती है यूं कि वोह इतना खाना खाए जितना रोज़ादार न होने की सूरत में हर रात खाता है। अगर उस ने सुब्ह़ से शाम तक का खाना खाया तो उस के रोज़े का कोई फ़ाइदा नहीं बल्कि रोज़े के आदाब में से है कि वोह दिन को ज़ियादा न सोए ताकि उसे भूक और प्यास का एह़सास हो और आ'ज़ा की कमज़ोरी मह़सूस हो, दिल इसी सूरत में साफ़ होगा फिर हर रात इसी क़दर कमज़ोरी पैदा होगी तो उस पर तहज्जुद और दीगर अवरादो वज़ाइफ़ पढ़ना आसान हो जाएगा। पस मुमकिन है कि शैत़ान उस के दिल पर चक्कर न लगाए और वोह मल्कूत की बादशाही देख ले और लैलतुल क़द्र उसी रात को कहते हैं जिस में मल्कूत की कोई चीज़ मुन्कशिफ़ (ज़ाहिर) की जाती है। इस फ़रमाने बारी तआ़ला :

اِنَّاۤ اَنْزَلْنٰهُ فِیْ لَیْلَةِ الْقَدْرِ ۚۖ (پ۳۰، القدر:۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *बेशक हम ने इसे शबे क़द्र में उतारा।*

से येही मुराद है। लिहाज़ा जो शख़्स अपने सीने और दिल के दरमियान खाने का पर्दा ह़ाइल कर दे वोह इस (या'नी आ़लमे मल्कूत के मुशाहदे) से पर्दे में रहता है और जिस ने अपने मे'दे को ख़ाली रखा तो मह़ज़ येह बात भी पर्दा उठने के लिये काफ़ी नहीं जब तक कि वोह अपनी सोच ग़ैरे ख़ुदा से हटा न ले। मक़्सदे ह़क़ीक़ी येही है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ ही लौ लगी रहे और इन तमाम मुआ़मलात की इब्तिदा कम खाना है। इस की मज़ीद वज़ाह़त **"खाने के बयान"** में आएगी। اِنْ شَآءَ اللہ عَزَّوَجَلَّ

﴾6﴿......इफ़्त़ार के बा'द रोज़ेदार का दिल उम्मीद व ख़ौफ़ के दरमियान मुअ़ल्लक़ व मुतरद्दिद रहे : क्यूंकि वोह नहीं जानता कि उस का रोज़ा क़बूल कर लिया गया और वोह मुक़र्रबीन में से है या रद्द कर दिया गया और धुतकारे हुओं में से है? नीज़ हर इ़बादत के बा'द उस की दिली कैफ़िय्यत येही हो।

मुक़ाबले का मैदान :

मन्क़ूल है कि ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی ईद के दिन कुछ लोगों के पास से गुज़रे, उन्हें हंसते देख कर फ़रमाया : बेशक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने माहे रमज़ान को अपनी मख़्लूक़ के लिये मुक़ाबले का मैदान बनाया और वोह इस में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इत़ाअ़त में मुक़ाबला करते हैं, कुछ लोग सबक़त ले गए और कामयाब हो गए जब कि कुछ लोग पीछे रह गए और नाकाम हो गए। पस उस दिन खेलने और हंसने वाले पर इन्तिहाई तअ़ज्जुब है जिस में सबक़त ले जाने वाले कामयाब और नाकाम होने वाले ख़ाइब व ख़ासिर होते हैं। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! अगर पर्दा उठा दिया जाए तो भलाई करने वाला अपनी भलाई में और बुराई करने वाला अपनी बुराई में मश्ग़ूल होगा या'नी मक़्बूल की ख़ुशी उसे खेल-कूद से बे परवाह कर देगी और मर्दूद का अफ़्सोस उस पर हंसी का दरवाज़ा बन्द कर देगा।

मन्क़ूल है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अह़नफ़ बिन क़ैस رَحْمَۃُاللّٰہِ تعالٰی عَلَیْہ से अ़र्ज़ की गई : "आप उ़म्र रसीदा बुज़ुर्ग हैं और रोज़े आप को कमज़ोर कर देंगे।" तो आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تعالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया : "मैं इसे एक लम्बे सफ़र का सामान बनाता हूं और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इत़ाअ़त पर सब्र करना उस के अ़ज़ाब पर सब्र करने से ज़ियादा आसान है।" येह रोज़े के बात़िनी उमूर हैं।

एक सुवाल और इस का जवाब :

अगर आप कहें कि फ़ुक़हा फ़रमाते हैं कि जो पेट और शर्मगाह की शहवत से रुकने पर इक्तिफ़ा करे और ज़िक्र कर्दा बात़िनी उमूर को छोड़ दे उस का रोज़ा सह़ीह़ है तो इस का क्या मा'ना है ? जान लीजिये कि ज़ाहिरी फ़ुक़हा ज़ाहिरी शराइत़ को ऐसे दलाइल के साथ षाबित करते हैं जो उन दलाइल से कमज़ोर होते हैं जो हम ने इन बात़िनी शराइत़ में बयान किये हैं ख़ुसूसन ग़ीबत और इस की मिष्ल दूसरी चीज़ें।

रोज़े का मक़्सद :

फ़ुक़हाए ज़ाहिर वोही पाबन्दियां बयान करते हैं जो आ़म ग़ाफ़िल और दुन्या की त़रफ़ मुतवज्जेह होने वाले लोगों के लिये आसान हों लेकिन उ़-लमाए आख़िरत रोज़े की सिह़ह़त से क़बूलिय्यत मुराद लेते हैं और क़बूलिय्यत से मुराद मक़्सूद तक रसाई है और वोह इस बात को समझते हैं कि रोज़े का मक़्सद अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के अख़्लाक़ से मुत्तसिफ़ होना है और वोह बे नियाज़ी है। नीज़ इस का एक मक़्सद शहवात से बच कर फ़िरिश्तों की पैरवी करना है क्यूंकि

वोह शहवात से पाक हैं। नीज़ इन्सान का मर्तबा जानवरों के रुतबे से बुलन्द है क्यूंकि इन्सान नूरे अ़क़्ल के ज़रीए शहवात को ख़त्म कर सकता है और फ़िरिश्तों के मर्तबे से (आ़म) इन्सानों का रुतबा कम है क्यूंकि उन पर शहवात ग़ालिब हैं और उन्हें मुजाहिदे में मुब्तला किया गया है। लिहाज़ा जब वोह शहवात में मुनहमिक होता है तो सब से निचले दर्जे में गिरता है और जानवरों के दर्जे में चला जाता है और जब शहवात का ख़ातिमा होता है तो आ'ला इ़ल्लिय्यीन में चला जाता और मलाइका की दुन्या से जा मिलता है और फ़िरिश्ते **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मुक़र्रब हैं और जो शख़्स फ़िरिश्तों की इक़्तिदा करता और उन के अख़्लाक़ से मुशाबहत इख़्तियार करता है वोह भी उन्ही की त़रह़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का मुक़र्रब बन जाता है क्यूंकि क़रीब की मुशाबहत इख़्तियार करने वाला भी क़रीब होता है और वहां मकान का क़ुर्ब नहीं बल्कि सिफ़ात का क़ुर्ब होता है।

जब अहले अ़क़्ल और अहले दिल ह़ज़रात के नज़दीक रोज़े का मक़्सद और राज़ येह है तो एक खाने को मुअख़्ख़र कर के दोनों को शाम के वक़्त इकठ्ठा करने नीज़ दिन भर शहवात में मुन्हमिक रहने का क्या फ़ाइदा ? अगर इस का कोई फ़ाइदा है तो फिर हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के इस फ़रमाने आ़लीशान का क्या मत़लब होगा कि "कितने ही रोज़ादार ऐसे हैं कि जिन्हें अपने रोज़े से भूक और प्यास के सिवा कुछ ह़ासिल नहीं होता।"[1]

पहाड़ों के बराबर इ़बादत से अफ़्ज़ल व राजेह़ :

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : "अ़क़्लमन्द शख़्स का सोना और इफ़्त़ार करना कितना अच्छा है वोह बे वुक़ूफ़ के रोज़े और बेदारी को कैसे बुरा न जाने ? अलबत्ता यक़ीन और तक़्वा वालों का ज़र्रा (भर भलाई) धोके में मुब्तला लोगों की पहाड़ों के बराबर इ़बादत से अफ़्ज़ल और राजेह़ है।"

इसी लिये बा'ज़ उ़-लमा ने फ़रमाया : कितने ही रोज़ादार, बे रोज़ा और कितने ही बे रोज़ा, रोज़ादार होते हैं। रोज़ा न रखने के बा वुजूद रोज़ादार वोह शख़्स है जो अपने आ'ज़ा को गुनाहों से बचाता है अगर्चे वोह खाता पीता भी है और रोज़ा रखने के बा वुजूद बे रोज़ा वोह शख़्स है जो भूका प्यासा रहता और अपने आ'ज़ा को (गुनाहों की) खुली छूट दे देता है।

---

1 ......سنن ابن ماجه، کتاب الصیام، باب ماجاء فی الغیبة و الرفث للصائم، الحدیث: ۱۶۹۰، ج۲، ص۳۲۰، مفهومًا۔
المعجم الکبیر، الحدیث: ۱۳۴۱۳، ج۱۲، ص۲۹۲، مفهومًا۔

गुनाहों में मुलव्वष रहने वाले रोज़ादार की मिषाल :

रोज़े का मफ़्हूम और इस की ह़िक्मत समझने से येह बात मा'लूम हुई कि जो शख़्स खाने (पीने) और जिमाअ़ से तो रुका रहे लेकिन गुनाहों में मुलव्वस होने के बाइ़ष रोज़ा तोड़ दे तो वोह उस शख़्स की त़रह़ है जो वुज़ू में अपने किसी उ़ज़्व पर तीन बार मस्ह़ करे उस ने ज़ाहिर में ता'दाद को पूरा किया लेकिन मक़्सूद या'नी आ'ज़ा को धोना तर्क कर दिया तो जहालत के सबब उस की नमाज़ उस पर लौटा दी जाएगी। जो खाने के ज़रीए रोज़ादार नहीं लेकिन आ'ज़ा को नापसन्दीदा अफ़्आ़ल से रोकने के सबब रोज़ादार है उस की मिषाल उस शख़्स की सी है जो अपने आ'ज़ा को एक एक बार धोता है उस की नमाज़ اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ क़बूल होगी क्यूंकि उस ने अस्ल को पुख़्ता किया अगर्चे ज़ाइद को छोड़ दिया और जिस ने दोनों को जम्अ़ किया वोह उस की त़रह़ है जो हर उ़ज़्व को तीन तीन बार धोता है उस ने अस्ल और ज़ाइद दोनों को जम्अ़ किया और येही कमाल है।

मरवी है कि मुस्त़फ़ा जाने रह़मत صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ''बेशक रोज़ा अमानत है तो तुम अपनी अमानत की ह़िफ़ाज़त करो।''

आ'ज़ा भी अमानत हैं :

आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने जब येह आयते मुबारका तिलावत फ़रमाई :

اِنَّ اللّٰہَ یَاْمُرُكُمْ اَنْ تُؤَدُّوا الْاَمٰنٰتِ اِلٰۤى اَهْلِهَاۙ (پ۵،النساء:۵۸)

*तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक **अल्लाह** तुम्हें हुक्म देता है कि अमानतें जिन की हैं उन्हें सिपुर्द करो।*

और अपना हाथ, कान और आंख पर रख कर इरशाद फ़रमाया : ''समाअ़त व बसारत भी अमानत है।''[1]

और अगर येह रोज़े की अमानतों में से न होती तो हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم येह बात न फ़रमाते कि ''वोह यूं कह दे कि मैं रोज़े से हूं।''[2] या'नी ज़बान मेरे पास अमानत है ताकि मैं इस की ह़िफ़ाज़त करूं। लिहाज़ा तुम्हें जवाब देने के लिये इसे कैसे खुला छोड़ दूं।

अब येह बात वाज़ेह़ हो गई कि हर इ़बादत का ज़ाहिर भी है और बात़िन भी, छिलका भी है और मग़्ज़ भी। इस के छिलकों के कई दर्जात और हर दर्जे के कई त़बक़ात हैं। अब तुम्हें इख़्तियार है कि तुम मग़्ज़ छोड़ कर छिलके पर क़नाअ़त करो या अ़क़्लमन्दों के गुरोह में शामिल हो जाओ।

---

1 ......قوت القلوب، الفصل الثانی والعشرون، الصیام وترتیبه......الخ، ج ۱، ص ۱۳۶۔

2 ......صحیح مسلم، کتاب الصیام، باب حفظ اللسان للصائم، الحدیث: ۱۱۵۱، ص ۵۷۹۔

तीसरी फ़स्ल : नफ़्ली रोज़े और इन में वज़ाइफ़ की तरतीब

जान लीजिये कि फ़ज़ीलत वाले दिनों में रोज़ों का मुस्तह़ब होना मुअक्कद है और फ़ज़ीलत वाले दिनों में बा'ज़ साल में एक बार, बा'ज़ हर महीने में और बा'ज़ हर हफ़्ते में पाए जाते हैं।

तफ़्सील :

﴾1﴿....**साल में एक बार आने वाले अफ़्ज़ल अय्याम :** साल में रमज़ानुल मुबारक के बा'द अ़रफ़ा (नवीं जुल हिज्जह) का दिन[1] दसवीं मुह़र्रम का दिन, जुल हिज्जह के इब्तिदाई नव दिन, मुह़र्रमुल ह़राम के इब्तिदाई दस दिन और इ़ज़्ज़त वाले महीने (ज़ुल क़ा'दह, ज़ुल हिज्जह, मुह़र्रम और रजब) रोज़ों के लिये उ़म्दा महीने और येह फ़ज़ीलत वाले अवक़ात हैं। नीज़ मरवी है कि "ह़ुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم शा'बान में ब कषरत रोज़े रखते थे ह़त्ता कि गुमान होता कि येह माहे रमज़ान है।"[2]

एक ह़दीषे मुबारका में है कि "माहे रमज़ान के बा'द अफ़्ज़ल रोज़े अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के महीने मुह़र्रम के रोज़े हैं।[3] क्यूंकि येह साल का पहला महीना है। लिहाज़ा इसे नेकी में गुज़ारना ज़ियादा पसन्दीदा और दाइमी बरकत की उम्मीद है।"

एक रोज़ा 30 रोज़ों से अफ़्ज़ल :

मक्की मदनी सुल्त़ान, रह़मते आ़लमियान صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "ह़ुरमत वाले महीने का एक रोज़ा दूसरे महीनों के 30 रोज़ों से अफ़्ज़ल है और रमज़ानुल मुबारक का एक रोज़ा ह़ुरमत वाले महीने के 30 रोज़ों से अफ़्ज़ल है।"[4]

---

❶...... दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 1548 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब फ़ैज़ाने सुन्नत जिल्द अव्वल सफ़ह़ा 1405 पर शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ नक़्ल फ़रमाते हैं : "ह़ज करने वाले पर जो अ़रफ़ात में है, उसे अ़रफ़ा (या'नी 9 जुल हिज्जतिल ह़राम) के दिन रोज़ा रखना मकरूह है कि ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ुज़ैमा رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रावी (या'नी रिवायत फ़रमाते हैं) कि ह़ुज़ूरे पुरनूर, शाफ़ेए यौमुन्नुशूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने अ़रफ़ा के दिन (या'नी 9 जुल हिज्जतिल ह़राम के रोज़ हाजी को) अ़रफ़ात में रोज़ा रखने से मन्अ़ फ़रमाया।" (صحیح ابن خزیمه ، ج۳،ص ۲۹۲ الحدیث:۲۱۰۱)

❷......صحیح البخاری، کتاب الصوم، باب صوم شعبان، الحدیث:۱۹۶۹ـ۱۹۷۰، ج ۱، ص ۶۴۸، دون بعض الالفاظ۔

❸......صحیح مسلم، کتاب الصیام، باب فضل صوم المحرم، الحدیث:۱۱۶۳، ص ۵۹۱۔

❹......قوت القلوب، الفصل الثانی والعشرون......الخ، ج ۱، ص ۱۳۴

900 साल की इबादत का षवाब :

एक रिवायत में है कि "जो आदमी हुरमत वाले महीने में तीन दिनों जुमा'रात, जुमुआ़ और हफ़्ते का रोज़ा रखता है अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के लिये हर दिन के बदले 900 साल की इबादत (का षवाब) लिखता है।"[1]

एक रिवायत में है कि "निस्फ़ शा'बान के बा'द रमज़ानुल मुबारक तक कोई रोज़ा नहीं।"[2]

इस लिये मुस्तह़ब है कि रमज़ानुल मुबारक से चन्द दिन पहले रोज़े रखना तर्क कर दे। अगर शा'बान को (रोज़ों के ज़रीए) रमज़ान के साथ मिला दिया तो भी जाइज़ है कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने एक बार ऐसा किया[3] और कई बार दोनों को जुदा जुदा रखा[4] (या'नी शा'बान के आख़िर में रोज़ा रखना छोड़ दिया)। नीज़ इस्तिक़बाले रमज़ान के लिये दो या तीन दिन पहले के रोज़े रखना जाइज़ नहीं। अलबत्ता अगर किसी के मा'मूल के मुवाफ़िक़ हों तो रख सकता है। बा'ज़ सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने पूरा माहे रजबुल मुरज्जब रोज़े रखने को मकरूह क़रार दिया ताकि माहे रमज़ान से मुशाबहत न हो जाए।

फ़ज़ीलत व हुरमत वाले महीने :

फ़ज़ीलत वाले महीने चार हैं : (1).....ज़ुल ह़िज्जतिल ह़राम (2).....मुह़र्रमुल ह़राम (3).....रजबुल मुरज्जब और (4)....शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म और हुरमत वाले महीने भी चार हैं : (1)....ज़ुल क़ा'दतिल ह़राम (2).....ज़ुल ह़िज्जतिल ह़राम (3)....मुह़र्रमुल ह़राम और (4)....रजबुल मुरज्जब। एक (या'नी रजबुल मुरज्जब) अलग और बाक़ी तीन लगातार हैं। इन में से अफ़्ज़ल ज़ुल ह़िज्जतिल ह़राम है क्यूंकि इस में ह़ज और वोह अय्याम हैं जिन्हें अय्यामे मा'लूमह और मा'दूदह कहा गया है। ज़ुल क़ा'दतिल ह़राम हुरमत वाले और ह़ज के महीनों में से है, शव्वालुल मुकर्रम ह़ज के महीनों में से है लेकिन हुरमत वाले महीनों में से नहीं जब कि मुह़र्रमुल ह़राम और रजबुल मुरज्जब (हुरमत वाले महीनों में से तो हैं लेकिन) ह़ज के महीनों में से नहीं।

---

1 ......المعجم الاوسط، الحدیث:۱۷۸۹، ج۱، ص۴۸۵، بلفظ عبادۃ سنتین۔

2 ......سنن ابن ماجه، کتاب الصیام، باب ماجاء فی النھی ان یتقدم......الخ، الحدیث:۱۶۵۱، ج۲، ص۳۰۲۔

3 ......سنن ابی داود، کتاب الصوم، باب فیمن یصل شعبان برمضان، الحدیث:۲۳۳۶، ج۲، ص۴۳۸۔

4 ......سنن ابی داود، کتاب الصوم، باب من قال:فان غم علیکم......الخ، الحدیث:۲۳۲۷، ج۲، ص۴۳۵۔

राहे ख़ुदा में जिहाद से अफ़्ज़ल अ़मल :

ह़दीषे पाक में है कि "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक ज़ुल ह़िज्जतिल ह़राम के दस दिनों से बढ़ कर कोई दिन नहीं जिस में नेक आ'माल करना ज़ियादा अफ़्ज़ल और पसन्दीदा हों, इस के एक दिन का रोज़ा साल भर के रोज़ों के बराबर है और एक रात का क़ियाम शबे क़द्र के क़ियाम के बराबर है।" अ़र्ज़ की गई : "क्या राहे ख़ुदा में जिहाद भी नहीं ?" इरशाद फ़रमाया : "हां ! राहे ख़ुदा में जिहाद भी नहीं मगर जो शख़्स अपने घोड़े को ज़ख़्मी करे और इस का ख़ून बहाए (या'नी बहादुरी के ख़ूब जोहर दिखाए)।"[1]

﴾2﴿.....**हर महीने में आने वाले अफ़्ज़ल अय्याम :** जो दिन महीने में बार बार आते हैं वोह महीने के अव्वल, दरमियान और आख़िर है और दरमियान में अय्यामे बीज़ या'नी चांद की तेरह, चौदह और पन्दरह तारीख़ है।

﴾3﴿.....**हर हफ़्ते में आने वाले अफ़्ज़ल अय्याम :** हफ़्ते में बार बार आने वाले दिन पीर, जुमा'रात और जुमुआ़ है।

येह फ़ज़ीलत वाले अय्याम हैं इन में रोज़े रखना और बकषरत ख़ैरात करना मुस्तह़ब है ताकि इन अवक़ात की बरकत से इस का अज्र दुगना हो।

कुछ सौमे दहर के बारे में :

जहां तक सौमे दहर (या'नी उ़म्र भर के रोज़े) का तअ़ल्लुक़ है तो वोह इन तमाम और मज़ीद कुछ दिनों को शामिल है। मगर सालिकीन की इस बारे में कई आरा हैं। बा'ज़ ने इसे मकरूह क़रार दिया है क्यूंकि रिवायात इस की कराहत पर दलालत करती हैं।[2] लेकिन सह़ीह़ येह है कि येह दो बातों की वजह से मकरूह है : (1)....ईदैन और अय्यामे तशरीक़ में भी रोज़ा न छोड़ा जाए और येह उ़म्र भर का रोज़ा है। (2).....इफ़्त़ार के मुआ़मले में सुन्नत को छोड़ कर ख़ुद पर रोज़ा लाज़िम कर लेना ह़ालांकि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ रुख़्सत को भी पसन्द फ़रमाता है जैसा

---

1 ......سنن الترمذی، کتاب الصوم، باب ماجاء فی العمل فی ایام العشر، الحدیث:۷۵۷،۷۵۸، ج۲، ص۱۹۱، ۱۹۲، مفہومًا۔

2 ......صحیح مسلم، کتاب الصیام، باب النہی عن صوم الدھر لمن تضربہ......الخ، الحدیث:۱۱۵۹، ص۵۸۷۔

صحیح البخاری، کتاب الصیام، باب حق الاھل فی الصوم، الحدیث:۱۹۷۷، ج۱، ص۶۵۰۔

कि वोह **अ़ज़ीमत** को पसन्द फ़रमाता है।(1) लिहाज़ा जब इन दोनों में से कोई बात न हो और हमेशा रोज़ा रखने के मुआमले में नफ़्स की इस्लाह़ का पहलू नुमायां हो तो सौमे दहर के रोज़े रखना जाइज़ है कि सह़ाबए किराम व ताबेईने उ़ज़्ज़ाम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام के एक गुरौह ने ऐसा किया है।

नीज़ ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी ह़दीषे पाक में है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए गुयूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जो उ़म्र भर रोज़ा रखे उस पर जहन्नम तंग कर दी जाएगी और अपने हाथ से नव्वे का अ़दद बनाया।"(2) इस का मा'ना येह है कि उस के लिये जहन्नम में कोई जगह नहीं रहती (या'नी वोह जहन्नम में दाख़िल नहीं होगा)।

इस से कम एक और दर्जा है और वोह निस्फ़ दहर का रोज़ा है। इस का त़रीक़ा येह है कि एक दिन रोज़ा रखे और एक दिन इफ़्तार करे और येह नफ़्स पर ज़ियादा शदीद और इसे मग़लूब करने में ज़ियादा क़वी है। नीज़ इस की फ़ज़ीलत में कई अह़ादीष मरवी है क्यूंकि इस में बन्दा एक दिन रोज़ा रखता और दूसरे दिन शुक्र अदा करता है।

सब से अफ़्ज़ल रोज़े :

सरकारे मक्कए मुकर्रमा, सरदारे मदीनए मुनव्वरा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "मुझ पर दुन्या और ज़मीन के ख़ज़ानों की कुंजियां पेश की गईं लेकिन मैं ने वापस कर दीं और कहा : "(ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ) मैं एक दिन भूका रहूंगा और एक दिन सैर हो कर खाऊंगा जब सैर हो कर खाऊंगा तो तेरी ता'रीफ़ करूंगा और जब भूका होऊंगा तो तेरी बारगाह में गिड़ गिड़ाउंगा।"(3)

---

❶...... **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 868 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब **"इस्लाहे आ'माल"** जिल्द अव्वल, सफ़ह़ा 687 और 688 पर है : **रुख़्सत का लुग़वी मा'ना : अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से बन्दे को किसी काम में दी गई सहूलत व आसानी। **शरई व इस्तिलाह़ी मा'ना :** उ़ज़्र वालों (या'नी मा'ज़ूराने शरई) पर मेहरबानी और इन्हें वुस्अ़त देने के लिये हुक्म को अस्ल से तख़फ़ीफ़ व सहूलत की त़रफ़ फेर देने का नाम रुख़्सत है। और सफ़ह़ा 695 पर है : **अ़ज़ीमत का लुग़वी मा'ना : अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के वाजिब कर्दा अह़काम में से एक वाजिब हुक्म। **शरई व इस्तिलाह़ी मा'ना :** वोह चीज़ जो शरीअ़त में इब्तिदा ही से बन्दों के आ'ज़ार पर मब्नी न हो और इस में फ़र्ज़, वाजिब, सुन्नत, नफ़्ल, ह़राम, मकरूह और मुबाह़ सब शामिल हैं।

❷......المسند للامام احمدبن حنبل،حدیث ابی موسی الاشعری، الحدیث:۱۹۷۳۳، ج۷، ص۱۲۸،بتغیرٍ۔

❸......قوت القلوب، الفصل الثانی والعشرون:الصیام وترتیبه......الخ، ج۱، ص۱۳۴۔

एक रिवायत में है कि "सब से अफ़्ज़ल रोज़े मेरे भाई ह़ज़रते दाऊद عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के रोज़े हैं, वोह एक दिन रोज़ा रखते और एक दिन इफ़्त़ार करते थे।"(1)

इस की ताकीद इस ह़दीषे मुबारका से भी होती है कि जब ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन अ़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُمَا ने (बारगाहे रिसालत में) अ़र्ज़ की : "मैं इस (या'नी एक दिन रोज़ा और एक दिन इफ़्त़ार) से ज़ियादा की त़ाक़त रखता हूं।" तो मुश्फ़िक़ व मेहरबान आक़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "एक दिन रोज़ा रखो और एक दिन इफ़्त़ार करो।" अ़र्ज़ की : "मैं इस से अफ़्ज़ल का इरादा करता हूं।" इरशाद फ़रमाया : "इस से अफ़्ज़ल कोई अ़मल नहीं।"(2)

मरवी है कि "ह़ुज़ूरे अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने माहे रमज़ान के इलावा कभी भी पूरा महीना रोज़े न रखे।"(3) बल्कि ग़ैरे रमज़ान में रोज़ा छोड़ भी देते।

जो निस्फ़ दहर के रोज़ों पर क़ादिर न हो तो तिहाई ह़िस्से में कोई ह़रज नहीं या'नी एक दिन रोज़ा रखे और दो दिन छोड़ दे और जब महीने की इब्तिदा, दरमियान और इख़्तिताम पर तीन रोज़े रखे तो येह भी तिहाई है और येह फ़ज़ीलत के अवक़ात में वाक़ेअ़ होंगे और पीर जुमा'रात और जुमुआ़ का रोज़ा रखे तो येह भी तिहाई के क़रीब है। जब फ़ज़ीलत के अवक़ात ज़ाहिर हो गए तो कमाल येह है कि इन्सान रोज़े का मा'ना समझे और येह कि इस का मक़्सूद दिल को पाक करना और अपनी तमाम तर फ़िक्र को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ मुतवज्जेह करना है। बात़िन की बारीकियों को जानने वाला शख़्स अपने अह़वाल को देखता है कभी इस का ह़ाल हमेशा रोज़ा रखने का तक़ाज़ा करता है और कभी हमेशा इफ़्त़ार का और कभी रोज़े और इफ़्त़ार दोनों को मिलाने का तक़ाज़ा करता है। जब वोह (लफ़्ज़े सौम से ह़ासिल होने वाला) मा'ना समझ गया और दिल की निगरानी के ज़रीए़ त़रीक़े आख़िरत पर चलने में उस की कोशिश षाबित हो गई तो इस पर अपने दिल की इस्लाह़ पोशीदा नहीं रहेगी और येह चीज़ हमेशा की तरतीब का तक़ाज़ा नहीं करती।

---

1 ......صحیح مسلم، کتاب الصیام، باب النھی عن صوم الدھر لمن تضربه......الخ، الحدیث:۱۱۵۹، ص۵۸۸۔

2 ......صحیح مسلم، کتاب الصیام، باب النھی عن صوم الدھر لمن تضربه......الخ، الحدیث:۱۱۵۹، ص۵۸۴۔

3 ......صحیح مسلم، کتاب الصیام، باب صیام النبی صلی اللہ علیه وسلم فی غیر رمضان......الخ، الحدیث:۱۱۵۷، ص۵۸۳۔

इसी लिये मरवी है कि "हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم रोज़े रखते रहते यहां तक कि कहा जाता अब रोज़ा नहीं छोड़ेंगे और रोज़े रखना तर्क फ़रमा देते यहां तक कि कहा जाता अब रोज़ा नहीं रखेंगे और आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم आराम फ़रमाते यहां तक कि कहा जाता अब (नफ़्ल नमाज़ के लिये) क़ियाम नहीं करेंगे और क़ियाम फ़रमाते यहां तक कि कहा जाता अब आराम नहीं फ़रमाएंगे।"(1)

और येह सब कुछ इस के मुताबिक़ होता जो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के लिये अवक़ात के हुक़ूक़ के सिलसिले में नूरे नबुव्वत से मुन्कशिफ़ होता।

(अहले बातिन) उ-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام ने यौमे ईद और अय्यामे तशरीक़ का अन्दाज़ा लगाते हुए चार दिन से ज़ियादा मुसलसल रोज़ा न रखने को मकरूह क़रार दिया है इस बिना पर कि येह दिल को सख़्त करता, घटया आ़दात को जनम देता और ख़्वाहिशात के दरवाज़े खोलता है। मेरी ज़िन्दगी की क़सम ! येह अकषर लोगों के हक़ में इसी त़रह़ है ख़ुसूसन वोह लोग जो रात और दिन में दो मरतबा खाते हैं। ज़िक्र कर्दा कलाम वोह है जो हम ने नफ़्ली रोज़े की तरतीब के सिलसिले में ज़िक्र करने का इरादा किया था।

दुआ :

रोज़े के असरार का बयान पायए तक्मील को पहुंचा और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का शुक्र है उस की तमाम ख़ूबियों पर जो हम जानते हैं और जो नहीं जानते उस की तमाम ने'मतों पर जो हम जानते हैं और जो नहीं जानते और हमारे सरदार ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم, आप के आल व अस्ह़ाब رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن और ज़मीन व आस्मान के हर बर गुज़ीदा बन्दे पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रह़मत का नुज़ूल और सलाम व करम की बरसात हो।

تُوبُوْا اِلَى الله ...... اَسْتَغْفِرُالله

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ...... صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

1 ......صحیح مسلم، کتاب الصیام، باب صیام النبی صلی اللہ علیہ وسلم ......الخ، الحدیث:۱۱۵۷، ص ۵۸۳، باختصارٍ۔

ह़ज का बयान

सब ख़ूबियां **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं जिस ने कलिमए तौह़ीद को अपने बन्दों के लिये पनाह गाह और क़ल्आ़ बनाया, अपने क़ाबिले तकरीम घर **का'बतुल्लाहे मुशर्रफ़ा** को लोगों के लौटने और अम्न की जगह बनाया, ख़ास़ करते और एह़सान करते हुए इसे अपनी त़रफ़ मन्सूब कर के शरफ़ बख़्शा, इस की ज़ियारत व त़वाफ़ को बन्दे और अ़ज़ाब के दरमियान पर्दा व ढाल बनाया, वालिये उम्मत, हुज़ूर नबिय्ये रह़मत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم पर और इन के आल व अस्ह़ाब पर जो ह़क़ की त़रफ़ लाने वाले और मख़्लूक़ के सरदार हैं रह़मत और ख़ूब सलाम हो।

ह़ज इस्लाम के बुन्यादी अरकान में से है। येह उ़म्र भर की इ़बादत, अन्जामे कार, इस्लाम की तक्मील और दीन का कमाल है। इसी के मुतअ़ल्लिक़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया :

اَلْيَوْمَ اَكْمَلْتُ لَكُمْ دِيْنَكُمْ وَاَتْمَمْتُ عَلَيْكُمْ نِعْمَتِيْ وَرَضِيْتُ لَكُمُ الْاِسْلَامَ دِيْنًا ؕ (پ٦،المائدة:٣)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *आज मैं ने तुम्हारे लिये तुम्हारा दीन कामिल कर दिया और तुम पर अपनी ने'मत पूरी कर दी और तुम्हारे लिये इस्लाम को दीन पसन्द किया।*

नीज़ हुज़ूर सय्यिदे दो आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जो शख़्स़ (बा वुजूद फ़र्ज़ होने के) ह़ज किये बिग़ैर मर जाए तो चाहे यहूदी हो कर मरे, चाहे ईसाई हो कर।"(1)

वोह इ़बादत किस क़दर अ़ज़मत वाली है कि जिस के न होने से दीन का कमाल ख़त्म हो जाता है और उसे छोड़ने वाला गुमराही में यहूदो नसारा की त़रह़ है। पस जब येह इस क़दर अहम इ़बादत है तो ज़ियादा मुनासिब है कि इस की तशरीह़, अरकान की तफ़्सील, सुनन व आदाब और फ़ज़ाइल व असरार को बयान किया जाए और येह तमाम बातें तौफ़ीक़े इलाही से तीन अबवाब में वाज़ेह़ हो जाएंगी। पहले बाब में ह़ज, मक्कए मुकर्रमा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا के फ़ज़ाइल, अरकान और वुजूब की शराइत़ का बयान है। दूसरे बाब में सफ़र की इब्तिदा से लौटने तक बित्तरतीब ज़ाहिरी आ'माल का बयान है। तीसरे बाब में आदाब की बारीकियों, खुफ़िया असरार और बात़िनी आ'माल का बयान है।

---

(1) ......سنن الترمذى، كتاب الحج، باب ماجاء من التغليظ فى ترك الحج، الحديث: ٨١٢، ج٢، ص ٢١٩، مفهومًا۔

बाब नम्बर : 1

फ़ज़ाइले हज का बयान

(इस में दो फ़स्लें हैं)

पहली फ़स्ल : हज, बैतुल्लाह, मक्का व मदीना के फ़ज़ाइल और मसाजिद की जानिब सफ़र करने का बयान

हज की फ़ज़ीलत :

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

وَاَذِّنۡ فِی النَّاسِ بِالۡحَجِّ یَاۡتُوۡكَ رِجَالًا وَّعَلٰی كُلِّ ضَامِرٍ یَّاۡتِیۡنَ مِنۡ كُلِّ فَجٍّ عَمِیۡقٍ ۙ﴿۲۷﴾

(پ۱۷، الحج:۲۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और लोगों में हज की आ़म निदा कर दे वोह तेरे पास ह़ाज़िर होंगे प्यादा और हर दुबली ऊंटनी पर कि हर दूर की राह से आती हैं।*

ह़ज़रते सय्यिदुना क़तादा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنۡهُ फ़रमाते हैं : जब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम عَلَیۡهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को लोगों में ह़ज का ए'लान करने का हुक्म दिया तो आप عَلَیۡهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने निदा दी : "ऐ लोगो ! बेशक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने एक घर बनाया है पस तुम इस का ह़ज करो।"

अगली आयते मुबारका में इरशाद होता है :

لِّیَشۡهَدُوۡا مَنَافِعَ لَهُمۡ (پ۱۷، الحج:۲۸) ***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :*** *ताकि वोह अपना फ़ाइदा पाएं।*

मन्क़ूल है कि इस से मुराद मौसिमे ह़ज की तिजारत और आख़िरत का अज्र है।

बा'ज़ अस्लाफ़े किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام ने जब येह बात सुनी तो फ़रमाया : "रब्बे का'बा की क़सम ! इन की बख़्शिश हो गई।"

क़ुरआने करीम में है :

لَاَقۡعُدَنَّ لَهُمۡ صِرَاطَكَ الۡمُسۡتَقِیۡمَ ۙ﴿۱۶﴾

(پ۸،الاعراف:۱۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *मैं ज़रूर तेरे सीधे रास्ते पर इन की ताक में बैठूंगा।*

इस आयते मुक़द्दसा की तफ़्सीर में एक क़ौल येह भी है कि इस से मुराद मक्के का रास्ता है। शैत़ान इस पर बैठता है ताकि लोगों को इस से रोके।

फ़ज़ाइले ह़ज पर मुश्तमिल 11 फ़रामीने मुस्त़फ़ा :

﴾1﴿.....जिस ने ह़ज किया और रफ़ष (फ़ोह़श कलाम) और फ़िस्क़ न किया तो गुनाहों से पाक हो कर ऐसा लौटा जैसे उस दिन कि मां के पेट से पैदा हुवा हो।(1)

﴾2﴿.....शैत़ान जिस त़रह़ यौमे अ़रफ़ा में ज़लील, ह़क़ीर, धुतकारा हुवा और ग़ज़ब नाक होता है ऐसा कभी नहीं देखा गया। येह इस लिये होता है कि वोह नुज़ूले रह़मत और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से बड़े बड़े गुनाहों की मुआ़फ़ी देखता है।(2)

﴾3﴿.....मन्क़ूल है कि "कुछ गुनाह ऐसे हैं जो सिर्फ़ वुक़ूफ़े अ़रफ़ा से मुआ़फ़ होते हैं।"(3)

इस रिवायत को ह़ज़रते सय्यिदुना जा'फ़र बिन मुह़म्मद عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الصَّمَد ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की त़रफ़ मन्सूब किया है।

एक बुज़ुर्ग और शैत़ान का मुकालमा :

एक मुक़र्रबे बारगाहे इलाही का बयान है कि इब्लीसे मलऊ़न मैदाने अ़रफ़ात में उस के सामने इन्सानी सूरत में इस ह़ालत में ज़ाहिर हुवा कि दुबला पतला, रंग ज़र्द, गिरयां चश्म और पीठ टूटी हुई है। उन्हों ने पूछा : "तुझे किस चीज़ ने रुलाया ?" कहा : "ह़ाजियों के बिग़ैर निय्यते तिजारत इस (या'नी बैतुल्लाह शरीफ़) की त़रफ़ निकलने ने। मैं कहता हूं कि इन्हों ने मह़ज़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का क़स्द किया और मुझे डर है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इन्हें रुस्वा नहीं करेगा और येह बात मुझे ग़मज़दा कर देती है।" उन्हों ने पूछा : "तेरा जिस्म इतना कमज़ोर क्यूं हो गया ?" कहा : "राहे ख़ुदा में घोड़ों के हनहनाने की वजह से, ह़ालांकि मुझे येह बात ज़ियादा मह़बूब थी कि येह मेरी राह पर होते।" पूछा : "तेरा रंग क्यूं बदला हुवा है।" उस ने कहा : "इत़ाअ़त पर लोगों के एक दूसरे की मदद करने की वजह से, अगर नाफ़रमानी पर बाहम तआ़वुन करते तो येह मुझे ज़ियादा पसन्द होता।" पूछा : "तेरी पीठ क्यूं टूटी हुई है ?" कहा : "इस लिये कि बन्दा कहता है : (ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ) मैं तुझ से अच्छे ख़ातिमे का सुवाल करता हूं। मैं कहता हूं : हाए मेरी हलाकत ! येह कब अपने अ़मल पर ख़ुद पसन्दी में मुब्तला होगा मुझे डर है कि कहीं इसे येह बात मा'लूम न हो जाए (कि अपने अ़मल पर इतराना नहीं चाहिये बल्कि रह़मते इलाही की उम्मीद रखनी चाहिये)।"

---

1 ......صحیح البخاری، کتاب المحصر، باب قول اللّٰہ:ولافسوق......الخ، الحدیث:۱۸۲۰، ج۱، ص۶۰۰،
خرج من "ذنوبه" بدله "رجع"۔

2 ......الموطا للامام مالک، کتاب الحج، باب جامع الحج، الحدیث:۹۸۲، ج۱، ص۳۸۶۔۳۸۷۔

3 ......قوت القلوب، الفصل الثالث والثلاثون فی ذکر دعائم الاسلام......الخ، ج۲، ص۱۹۹۔

﴾4﴿....."जो ह़ज या उ़मरा के लिये निकला और मर गया तो क़ियामत तक उस के लिये ह़ज व उ़मरा करने वाले का षवाब लिखा जाएगा और जिस का ह़रमैन शरीफ़ैन में से किसी जगह इन्तिक़ाल हुवा तो उस की पेशी नहीं होगी, न उस का ह़िसाब होगा और उस से कहा जाएगा : तू जन्नत में दाख़िल हो जा।"(1)

﴾5﴿....."ह़ज्जे मक़्बूल दुन्या व माफ़ीहा से बेहतर है और ह़ज्जे मक़्बूल की जज़ा जन्नत के सिवा कुछ नहीं।"(2)

﴾6﴿....."ह़ज व उ़मरा करने वाले **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का वफ़्द और उस की ज़ियारत करने वाले हैं, अगर वोह उस से सुवाल करें तो वोह अ़त़ा फ़रमाता, अगर मुआ़फ़ी चाहें तो मुआ़फ़ फ़रमाता है, अगर दुआ़ करें तो उन की दुआ़ क़बूल होती है और अगर शफ़ाअ़त करें तो शफ़ाअ़त क़बूल होती है।"(3)

﴾7﴿....."लोगों में सब से बड़ा गुनहगार वोह है जो अ़रफ़ा में ख़ड़ा हो और येह गुमान करे कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उस की मग़्फ़िरत नहीं फ़रमाई।"(4)

﴾8﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنۡھُمَا से मरवी है कि ह़ुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "बैतुल्लाह शरीफ़ पर हर रोज़ **120** रह़मतें नाज़िल होती हैं, **60** त़वाफ़ करने वालों के लिये, **40** नमाज़ पढ़ने वालों के लिये और **20** ज़ियारत करने वालों के लिये हैं।"(5)

---

1 ......شعب الایمان للبیہقی،باب فی المناسک،فضل الحج و العمرۃ،الحدیث:۴۰۹۸۔۴۱۰۰،ج۳،ص۴۷۴،باختصارٍ۔

2 ......سنن النسائی، کتاب مناسک الحج، باب فضل الحج المبرور، الحدیث: ۲۶۱۹، ص ۴۳۲۔

قوت القلوب، الفصل الثالث و الثلاثون فی ذکر دعائم الاسلام......الخ، ج ۲، ص ۱۹۹۔

3 ......سنن ابن ماجۃ، کتاب المناسک، باب فضل دعاء الحاج، الحدیث: ۲۸۹۲۔۹۳، ج ۳، ص ۴۱۰۔۴۱۱۔

قوت القلوب، الفصل الثالث و الثلاثون فی ذکر دعائم الاسلام......الخ، ج ۲، ص ۱۹۹۔

4 ......کشف الخفاء، حرف الهمزة مع العین المهملة، الحدیث: ۴۲۵، ج ۱، ص ۱۳۱۔

قوت القلوب، الفصل الثالث و الثلاثون فی ذکر دعائم الاسلام......الخ، ج ۲، ص ۱۹۹۔

5 ......شعب الایمان للبیہقی، باب فی المناسک، فضیلۃ الحجر الاسود......الخ، الحدیث: ۴۰۵۱، ج ۳، ص ۴۵۵،

دون قوله "ینزل علی هذا البیت"۔

《9》..... बैतुल्लाह शरीफ़ का त़वाफ़ कषरत से करो क्यूंकि येह उन में सब से ज़ियादा क़द्रो मन्ज़िलत वाला है जिन्हें तुम बरोज़े क़ियामत अपने नामए आ'माल में पाओगे और येह तुम्हारे आ'माल में सब से ज़ियादा क़ाबिले रश्क होगा।[1] इसी लिये ह़ज व उ़मरा के इ़लावा त़वाफ़ मुस्तह़ब है।

《10》.....''जिस ने नंगे पाउं और नंगे सर त़वाफ़ के सात चक्कर लगाए उसे एक ग़ुलाम आज़ाद करने का षवाब मिलेगा और जिस ने बारिश में त़वाफ़ के सात चक्कर लगाए उस के गुज़श्ता गुनाह बख़्श दिये जाएंगे।''[2]

मन्क़ूल है कि ''जब अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ अ़रफ़ात में किसी बन्दे के गुनाह बख़्शता है तो वहां पहुंचने वाले हर शख़्स के गुनाह भी बख़्श देता है।''

दो ईदें :

बा'ज़ बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِيْن फ़रमाते हैं : ''अ़रफ़ा (या'नी नवीं ज़ुल ह़िज्जा) का दिन जुमुआ़ को आ जाए तो तमाम अहले अ़रफ़ा की मग़फ़िरत कर दी जाती है और वोह दुन्या में सब से अफ़्ज़ल दिन होता है। इसी दिन ह़ुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज्जतुल वदाअ़ अदा फ़रमाया और मैदाने अ़रफ़ात ही में थे कि येह आयते मुबारका नाज़िल हुई :''

اَلْيَوْمَ اَكْمَلْتُ لَكُمْ دِيْنَكُمْ وَ اَتْمَمْتُ عَلَيْكُمْ نِعْمَتِيْ وَ رَضِيْتُ لَكُمُ الْاِسْلَامَ دِيْنًا ؕ (پ٦، المائدة:٣)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *आज मैं ने तुम्हारे लिये तुम्हारा दीन कामिल कर दिया और तुम पर अपनी ने'मत पूरी कर दी और तुम्हारे लिये इस्लाम को दीन पसन्द किया।*

अहले किताब ने कहा : ''अगर येह आयत हम पर नाज़िल होती तो हम इस दिन को ईद का दिन बना लेते।'' अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने फ़रमाया : ''मैं गवाही देता हूं कि येह आयते मुबारका दो ईदों या'नी यौमे अ़रफ़ा और जुमुआ़ के दिन ह़ुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم पर नाज़िल हुई और आप अ़रफ़ा में वुक़ूफ़ फ़रमा थे।''[3]

---

1 ......قوت القلوب، الفصل الثالث و الثلاثون فی ذکر دعائم الاسلام......الخ، ج٢، ص١٩٨۔

2 ......قوت القلوب، الفصل الثالث و الثلاثون فی ذکر دعائم الاسلام......الخ، ج٢، ص١٩٨، دون ''اسبوعا''۔

3 ......صحیح مسلم، کتاب التفسیر، الحدیث:٣٠١٧، ص١٢٠٨۔١٢٠٩، مفهومًا۔

قوت القلوب، الفصل الثالث و الثلاثون فی ذکر دعائم الاسلام......الخ، ج٢، ص٢٠٠۔

﴾11﴿.....ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ह़ज करने वाले को बख़्श दे और जिस के लिये ह़ाजी बख़्शिश की दुआ़ करे उसे भी बख़्श दे।[(1)]

ह़िकायत :- जन्नत में दाख़िले की बिशारत :

मन्क़ूल है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली बिन मुवफ़्फ़क़ رَحْمَةُاللّٰہِ تعالٰی عَلَیْه ने हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की त़रफ़ से कई ह़ज किये। फ़रमाते हैं : "मैं ख़्वाब में ज़ियारते रसूल से मुशर्रफ़ हुवा, आप ने मुझ से इरशाद फ़रमाया : "ऐ इब्ने मुवफ़्फ़क़ ! तू ने मेरी त़रफ़ से ह़ज किये ?" मैं ने अ़र्ज़ की : "जी हां !" इरशाद फ़रमाया : "तूने मेरी त़रफ़ से तल्बिया कहा ?" मैं ने अ़र्ज़ की : "जी हां !" इरशाद फ़रमाया : "मैं क़ियामत के दिन तुझे इन का बदला दूंगा और मौक़िफ़ (या'नी मह़शर) में तेरा हाथ थाम कर तुझे जन्नत में दाख़िल करूंगा जब कि लोग अभी ह़िसाब की सख़्ती में होंगे।"

फ़ज़ाइले ह़ज पर मुश्तमिल अक़्वाले बुज़ुर्गाने दीन :

﴾1﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना मुजाहिद عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰہِ الْوَاحِد और दीगर उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام फ़रमाते हैं : "ह़ज करने वाले जब मक्कए मुकर्रमा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِیْمًا आते हैं तो फ़िरिश्ते उन से मुलाक़ात करते हैं। ऊंट पर सुवार ह़ाजियों को सलाम करते, दराज़ गोश (गधे) पर सुवार ह़ाजियों से मुसाफ़ह़ा करते और पैदल चलने वालों से गले मिलते हैं।"

﴾2﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : "जो रमज़ान के बा'द या ग़ज़्वे के बा'द या ह़ज के बा'द मरा वोह शहादत का रुत्बा पाएगा।"

﴾3﴿.....अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने फ़रमाया : "ह़ज करने वाला मग़्फ़िरत याफ़्ता है और ह़ाजी ज़िल ह़िज्जतिल ह़राम, मुह़र्रमुल ह़राम, सफ़रुल मुज़फ़्फ़र और रबीउ़ल अव्वल के 20 दिनों में जिस के लिये इस्तिग़फ़ार करे उस की भी मग़्फ़िरत हो जाती है।"

अस्लाफ़े किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام का त़रीक़ा रहा है कि वोह मुजाहिदीन को रुख़्सत करते और ह़ाजियों का इस्तिक़्बाल करते, उन की आंखों के दरमियान बोसा देते और उन्हें दुआ़ के लिये कहते और येह काम सलफ़े सालिह़ीन उन के गुनाहों में आलूदा होने से पहले पहले करते।

---

1 ......المستدرک، کتاب المناسک، باب وفد اللّٰہ ثلاثۃ......الخ، الحدیث:۱۶۵۴، ج۲، ص۸۴۔

छे के सदके़ छे लाख का ह़ज क़बूल :

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली बिन मुवफ़्फ़क़ رَحْمَةُ اللهِ تعالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : मैं ने एक साल ह़ज किया जब अ़रफ़े की रात आई तो मैं मस्जिदे ख़ैफ़ में मिना के मक़ाम पर सो गया। ख़्वाब में देखा कि सब्ज़ हुल्लों में मल्बूस दो फ़िरिश्ते आस्मान से उतरे, एक ने दूसरे को पुकारा : ऐ अ़ब्दुल्लाह ! दूसरे ने कहा : "मैं ह़ाज़िर हूं, ऐ अ़ब्दुल्लाह ! उस ने पूछा : "क्या तुम जानते हो कि इस साल कितने लोगों ने ह़ज किया ?" कहा : "मैं नहीं जानता।" उस ने कहा : "छे लाख लोगों ने ह़ज किया। क्या तुम जानते हो कि कितने लोगों का ह़ज क़बूल हुवा ?" कहा : "नहीं।" कहा : "सिर्फ़ छे आदमियों का।" आप رَحْمَةُ اللهِ تعالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : फिर वोह दोनों हवा में बुलन्द हो गए और मुझ से ग़ाइब हो गए। मैं घबरा कर बेदार हो गया और बहुत ज़ियादा ग़मगीन हुवा और मुझे मेरे मुआ़मले ने परेशान कर दिया। मैं ने सोचा : जब फ़क़त़ छे आदमियों का ह़ज क़बूल हुवा तो मैं छे आदमियों में कहां हो सकता हूं ? जब मैं अ़रफ़ात से वापस आया तो मशअ़रे ह़राम के पास खड़ा ह़ाजियों की कषरत और उन लोगों की क़िल्लत के मुतअ़ल्लिक़ सोचने लगा जिन का ह़ज क़बूल हुवा, मुझे नींद ने आ लिया तो देखा कि पहले दो की सूरत पर दो शख़्स आस्मान से उतरे, एक ने दूसरे को पुकारा और इसी त़रह़ का कलाम किया फिर पूछा : "क्या तुम जानते हो कि आज रात हमारे रब्ब عَزَّوَجَلَّ ने क्या हुक्म फ़रमाया ?" उस ने कहा : "नहीं।" कहा : "बेशक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने छे में से हर एक को एक लाख दे दिये।" आप رَحْمَةُ اللهِ تعالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : "मैं बेदार हुवा तो मुझे इतनी ख़ुशी हुई कि बयान से बाहर है।"

ह़िकायत :– ख़्वाब में दीदारे इलाही :

इन्ही से मन्क़ूल है, फ़रमाते हैं : एक साल मैं ने ह़ज किया जब मनासिके ह़ज अदा कर चुका तो उन लोगों के बारे में ग़ौरो फ़िक्र करने लगा जिन का ह़ज क़बूल न हुवा। मैं ने बारगाहे इलाही में अ़र्ज़ की : "ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मैं ने अपना ह़ज और इस का षवाब उन लोगों को दिया जिन का ह़ज क़बूल नहीं हुवा।" फ़रमाते हैं : मैं ख़्वाब में दीदारे इलाही से मुशर्रफ़ हुवा तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मुझ से इरशाद फ़रमाया : "ऐ अ़ली ! क्या मुझ पर सख़ावत करता है ह़ालांकि सख़ावत और सख़ियों को मैं ने ही पैदा फ़रमाया, मैं ही सब से बढ़ कर जूदो करम करने वाला और मैं ही तमाम जहान वालों से ज़ियादा जूदो करम का ह़क़ रखता हूं, मैं ने उन तमाम लोगों को जिन का ह़ज क़बूल नहीं हुवा उन के ह़वाले कर दिया है जिन का ह़ज क़बूल हुवा (या'नी मक़्बूलों के सदक़े उन का भी क़बूल हो गया)।"

बैतुल्लाह शरीफ़ और मक्कए मुकर्रमा के फ़ज़ाइल :

हुज़ूर नबिय्ये मुकर्रम صَلَّى اللّٰه تعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "बेशक अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ ने इस घर से वा'दा फ़रमाया है कि हर साल छे लाख आदमी इस का ह़ज करेंगे, अगर कम हुए तो फ़िरिश्तों के ज़रीए़ उन की कमी पूरी फ़रमा देगा और का'बए मुशर्रफ़ा पहली रात की दुल्हन की त़रह़ उठाया जाएगा और इस का ह़ज करने वाले तमाम लोग इस के पर्दों से लटके होंगे, वोह इस के गिर्द चक्कर लगाएंगे यहां तक कि येह जन्नत में दाख़िल होगा तो वोह भी दाख़िल हो जाएंगे।"(1)

ह़दीषे पाक में है कि "बेशक ह़जरे अस्वद जन्नती पथ्थरों में से एक पथ्थर है, इसे बरोज़े क़ियामत यूं उठाया जाएगा कि इस की दो आंखें और एक ज़बान होगी जिस के ज़रीए़ येह कलाम करेगा और हर उस शख़्स के ह़क़ में गवाही देगा जिस ने ह़क़ व सदाक़त के साथ इसे बोसा दिया होगा।"(2)

मरवी है कि "हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰه تعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ह़जरे अस्वद को बहुत ज़ियादा बोसे दिया करते थे।"(3)

एक रिवायत में है कि "आप صَلَّى اللّٰه تعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़जरे अस्वद पर पेशानी रखी।"(4) और आप सुवारी पर तवाफ़ फ़रमाते हुए अपने अ़सा मुबारक का मुड़ा हुवा कनारा इस पर रख देते फिर उस किनारे को बोसा देते।(5)

ह़जरे अस्वद नफ़्अ़ भी देता है और नुक़्सान भी :

अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تعَالٰی عَنْهُ ने ह़जरे अस्वद को बोसा दे कर फ़रमाया : "बेशक मैं जानता हूं कि तू एक पथ्थर है न नफ़्अ़ दे सकता है न नुक़्सान, अगर मैं ने प्यारे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰه تعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को तुझे बोसा देते न देखा होता तो मैं

---

1 ......قوت القلوب، الفصل الثالث و الثلاثون فی ذکر دعائم الاسلام......الخ، ج ۲، ص ۲۰۱۔

2 ......سنن ابن ماجه، کتاب المناسک، باب استلام الحجر، الحدیث: ۲۹۴۴، ج ۳، ص ۴۳۴، بتغیرٍ۔
قوت القلوب، الفصل الثالث و الثلاثون فی ذکر دعائم الاسلام......الخ، ج ۲، ص ۲۰۱۔

3 ......سنن النسائی، کتاب مناسک الحج، باب کیف یقبل، الحدیث: ۲۹۳۵، ص ۴۷۸، عن عمر رضی اللّٰه عنه۔
قوت القلوب الفصل الثالث، والثلاثون فی ذکر دعائم الاسلام......الخ، ج ۲، ص ۲۰۱۔

4 ......قوت القلوب الفصل الثالث، والثلاثون فی ذکر دعائم الاسلام......الخ، ج ۲، ص ۲۰۱۔
المستدرک، کتاب المناسک، باب استلام الحجر و تقبیله......الخ، الحدیث: ۱۷۱۵، ج ۲، ص ۱۰۶۔

5 ......صحیح مسلم، کتاب الحج، باب جواز الطواف علی بعیر......الخ، الحدیث: ۱۲۷۴۔۱۲۷۵، ص ۶۶۳۔

तुझे कभी बोसा न देता।" फिर आप रोने लगे यहां तक कि आप की आवाज़ बुलन्द हो गई। फिर अपने पीछे की जानिब मुतवज्जेह हुवे और अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم को देख कर फ़रमाया : "ऐ अबल ह़सन ! यहां पर आंसू बहाए जाते और दुआएं क़बूल होती हैं।" अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने कहा : "ऐ अमीरल मोअमिनीन ! बल्कि येह पथ्थर नफ़्अ़ भी देता है और नुक़्सान भी।" पूछा : "वोह कैसे ?" कहा : "बेशक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने जब बन्दों से अ़ह्द लिया तो एक तह़रीर लिख कर इस पथ्थर को खिला दी, पस येह मोमिन के ह़क़ में ईफ़ाए अ़ह्द की और काफ़िर के ख़िलाफ़ उस के इन्कार की गवाही देगा।"(1)

ह़जरे अस्वद को बोसा देते वक़्त की दुआ :

मन्क़ूल है कि इसे बोसा देते हुए लोगों के मज़्कूर कलिमात पढ़ने का येही मा'ना है : "اَللّٰهُمَّ اِيْمَانًابِكَ وَتَصْدِيْقًا بِكِتَابِكَ وَوَفَاءً بِعَهْدِكَ" या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मैं तुझ पर ईमान लाते, तेरी किताब की तस्दीक़ करते और तेरे वा'दे को पूरा करते हुए (इसे बोसा देता हूं)।"

एक नेकी एक लाख नेकियों के बराबर :

हज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى से मन्क़ूल है कि "मक्कए मुकर्रमा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا में एक दिन का रोज़ा एक लाख रोज़ों के बराबर है। एक दिरहम सदक़ा करना एक लाख दिरहम के बराबर है। इसी त़रह़ हर नेकी एक लाख नेकी के बराबर है।"

मन्क़ूल है कि "सात मर्तबा त़वाफ़ करना एक उ़मरा के बराबर है और तीन उ़मरे एक ह़ज के बराबर हैं।"

माहे रमज़ान में उ़मरा करने की फ़ज़ीलत :

ह़दीषे मुबारका में है कि हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "रमज़ान में उ़मरा मेरे साथ ह़ज के बराबर है।"(2)

---

1 ......المستدرک، کتاب المناسک، باب الحجر الاسود يمين الله......الخ، الحديث:١٧٢٥، ج٢، ص١٠٩ـ١١٠، باختصارـ

2 ......صحيح مسلم، کتاب الحج، باب فضل العمرة فی رمضان، الحديث:١٢٥٦، ص٦٥٧ـ

हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "मैं पहला वोह शख़्स हूं जिस से ज़मीन खोली जाएगी, फिर मैं बक़ीअ़ वालों के पास आऊंगा तो वोह मेरे साथ जम्अ़ किये जाएंगे, फिर अहले मक्का की त़रफ़ आऊंगा तो दोनों ह़रमों के दरमियान मेरा ह़श्र होगा।"(1)

ह़दीषे पाक में है कि "जब ह़ज़रते आदम عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने मनासिके ह़ज (या'नी ह़ज के अरकान व अफ़्आ़ल) अदा कर लिये तो फ़िरिश्तों ने आप से मुलाक़ात कर के अ़र्ज़ की : ऐ आदम ! आप का ह़ज मक़्बूल हुवा, हम ने आप से दो हज़ार साल पहले इस घर का ह़ज किया।"(2)

त़वाफ़ और नमाज़ अदा करने वालों की बख़्शिश :

एक रिवायत में है कि "बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हर रात अहले ज़मीन की त़रफ़ नज़र फ़रमाता है, सब से पहले अहले ह़रम की त़रफ़ नज़र फ़रमाता है और अहले ह़रम में भी सब से पहले मस्जिदे ह़राम वालों की त़रफ़ नज़र फ़रमाता है तो जिसे त़वाफ़ में मश्ग़ूल पाता है उसे बख़्श देता है, जिसे नमाज़ पढ़ते देखता है उस की भी मग़्फ़िरत फ़रमा देता है और जिसे का'बे की त़रफ़ मुंह किये हुए खड़ा देखता है उसे भी बख़्श देता है।"(3)

एक वली फ़रमाते हैं मुझे कश्फ़ हुवा : "मैं ने देखा कि तमाम वादियों के कुशादा मक़ामात, **अ़ब्बादान**(4) की त़रफ़ झुके हुए हैं और **अ़ब्बादान** को देखा कि वोह जिद्दा की जानिब झुका हुवा है।"

का'बा और क़ुरआन उठाए जाने का वक़्त :

मन्क़ूल है कि "जब तक **अबदाल**(5) में से कोई शख़्स बैतुल्लाह का त़वाफ़ न कर ले

---

1 ......سنن الترمذی، کتاب المناقب، باب فی مناقب عمر بن الخطاب رضی اللّٰہ عنہ، الحدیث:۳۷۱۲، ج۵، ص۳۸۸۔

2 ......قوت القلوب، الفصل الثالث والثلاثون فی ذکر دعائم الاسلام......الخ، ج۲، ص۲۰۱۔۲۰۲۔

3 ......قوت القلوب، الفصل الثالث والثلاثون فی ذکر دعائم الاسلام......الخ، ج۲، ص۲۰۲۔

4 ...... बसरा के क़रीब बह़रे फ़ारस के कनारे मशरिक़ी जानिब एक शहर है जो जानिबे जुनूब झुका हुवा है।

(اتحاف السادۃ المتقین، ج۴،ص۲۷۴)

5 ...... **औलिया की अक़्साम** में से चौथा मर्तबा **अबदाल** का है। येह हर दौर में सात होते हैं। इन के ज़रीए **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ सात ज़मीनों की ह़िफ़ाज़त फ़रमाता है। इन में से हर एक के लिये एक ज़मीन होती है जहां उस की विलायत होती है येह सातों बित्तरतीब इन सात अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के क़दम पर होते हैं : (1) ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ख़लीलुल्लाह (2) ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह (3) ह़ज़रते सय्यिदुना हारून (4) ह़ज़रते सय्यिदुना इदरीस (5) ह़ज़रते सय्यिदुना यूसुफ़ (6) ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा रूह़ुल्लाह और (7) ह़ज़रते सय्यिदुना आदम सफ़िय्युल्लाह (عَلٰی نَبِیِّنَا وعَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام)

उस दिन का सूरज ग़ुरूब नहीं होता और जब तक **अवताद**[1] में से कोई त़वाफ़ न कर ले फ़ज्र तुलूअ़ नहीं होती। जब येह सिलसिला मुन्क़त़ेअ़ हो जाएगा तो येह बैतुल्लाह के ज़मीन से उठने का सबब होगा। लोग सुब्ह़ करेंगे तो का'बा उठा लिया गया होगा ह़त्ता कि इस का निशान तक भी बाक़ी न होगा और येह उस वक़्त होगा जब इस पर सात साल यूं गुज़र जाएंगे कि कोई शख़्स इस का ह़ज न करेगा। फिर मसाहि़फ़ में से क़ुरआने पाक उठा लिया जाएगा लोग सुब्ह़ करेंगे तो काग़ज़ सफ़ेद चमकते होंगे उन पर ह़ुरूफ़ न होंगे। फिर क़ुरआने पाक दिलों से उठा लिया जाएगा ह़त्ता कि इस का एक कलिमा भी याद न रहेगा। फिर लोग अश्आ़र, गानों और ज़मानए जाहिलिय्यत की बातों की त़रफ़ रुजूअ़ करेंगे। फिर दज्जाल निकलेगा और ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام का नुज़ूल होगा, आप दज्जाल को क़त्ल करेंगे और उस वक़्त क़ियामत इतनी क़रीब होगी जितनी कि ह़ामिला औ़रत के बच्चा जनने की तवक़्क़ोअ़ होती है।"

ह़दीषे मुबारका में है कि "इस घर का त़वाफ़ कषरत से करो क़ब्ल इस के कि इसे उठा लिया जाए, येह दो मरतबा गिराया गया और तीसरी मरतबा उठा लिया जाएगा।"[2]

अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْھَہُ الْکَرِیْم से मरवी है कि ह़ुज़ूर सरवरे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है : "जब मैं दुन्या को ख़त्म करने का इरादा करूंगा तो अपने घर से इब्तिदा करूंगा इस के बा'द दुन्या को ख़त्म करूंगा।"[3]

मक्कए मुकर्रमा में रिहाइश इख़्तियार करना कैसा ?

ख़ाइफ़ीन और मोह़्तात उ़-लमाए किराम رَحِمَھُمُ اللّٰہُ السَّلَام ने तीन वजह से मक्कए मुकर्रमा में रिहाइश इख़्तियार करने को मकरूह (नापसन्द) जाना :

---

❶...... **औलिया** में तीसरा मर्तबा **अवताद** का है : येह हर दौर में सिर्फ़ चार ही होते हैं। अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ इन चारों के ज़रीए चारो जिहात या'नी मशरिक़, मग़रिब, शिमाल और जुनूब की ह़िफ़ाज़त फ़रमाता है। इन में हर एक की विलायत एक जहत में होती है। इन के सिफ़ाती नाम हैं : अ़ब्दुल ह़य्य, अ़ब्दुल अ़लीम, अ़ब्दुल क़ादिर और अ़ब्दुल मुरीद। (جامع کرامات اولیاء، ج۱، ص۷۹، مطبوعہ: مرکز اھل سنت برکات رضا)

❷......صحیح ابن خزیمہ، کتاب المناسک، باب الامر بتعجیل الحج خوف......الخ، الحدیث: ۲۵۰۶، ج۴، ص۱۲۹۔

❸......قوت القلوب، الفصل الثالث والثلاثون فی ذکر دعائم الاسلام......الخ، ج۲، ص۲۰۴۔
کشف الخفاء، حرف الھمزۃ مع الذال المعجمۃ، الحدیث: ۱۹۳، ج۱، ص۷۰، دون "علی اثرہ"۔

《1》......उक्ता जाने और बैतुल्लाह से उन्स पैदा होने का ख़ौफ़ : क्यूंकि येह चीज़ बा'ज़ अवक़ात एह़तिराम के सिलसिले में दिल की ह़रारत को मिटा देती है। येही वजह है कि अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ह़ज के बा'द ह़ाजियों को मारते और फ़रमाते "ऐ अहले यमन ! यमन को जाओ। ऐ अहले शाम ! शाम को जाओ और ऐ अहले इराक़ ! इराक़ को जाओ।"

नीज़ आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने लोगों को कषरते त़वाफ़ से मन्अ़ किया और फ़रमाया : "मुझे डर है कि लोग बैतुल्लाह शरीफ़ से मानूस न हो जाएं (क्यूंकि किसी चीज़ से उन्सिय्यत के सबब उस की अहमिय्यत कम हो जाती है) ।"

《2》......जुदाई की वजह से दोबारा आने का शौक़ पैदा होता है : क्यूंकि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने बैतुल्लाह शरीफ़ को मरजअ़ और अमान बनाया या'नी वोह उस की त़रफ़ बार बार लौटें और उस से उन की ख़्वाहिश पूरी न हो। बा'ज़ उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام फ़रमाते हैं : "तुम किसी भी शहर में हो लेकिन तुम्हारा दिल मक्का का मुश्ताक़ हो और इस घर से लगा हुवा हो तो येह इस से बेहतर है कि तुम मक्का में हो और इस से उक्ता जाओ और तुम्हारा दिल किसी और शहर का मुश्ताक़ हो।"

बा'ज़ बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِيْن फ़रमाते हैं : "कितने ही लोग ख़ुरासान में हैं लेकिन त़वाफ़ करने वालों से ज़ियादा बैतुल्लाह के क़रीब हैं।"

मन्क़ूल है कि "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के कुछ बन्दे ऐसे हैं कि क़ुर्बे इलाही के ह़ुसूल के लिये का'बतुल्लाहे मुशर्रफ़ा उन का त़वाफ़ करता है।"

《3》.....रिहाइश इख़्तियार करने में कहीं गुनाहों और ख़त़ाओं का इर्तिकाब न हो जाए : इस लिये ख़त़रा है कि कहीं इस मक़ाम के शरफ़ व बुज़ुर्गी की बे ह़ुरमती के सबब ग़ज़बे इलाही का शिकार न हो जाए।

ह़ज़रते सय्यिदुना वुहैब बिन वर्दमक्की عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَلِى फ़रमाते हैं : मैं एक रात ह़त़ीम में नमाज़ पढ़ रहा था कि मैं ने का'बा और उस के पर्दों के दरमियान से येह कलाम सुना : "मैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से, फिर ऐ जिब्रईल तुम से शिकायत करता हूं कि मेरा त़वाफ़ करने वाले दुन्यवी बातों में ग़ौरो फ़िक्र करते और लग़्व फ़ुज़ूल बातें करते हैं अगर वोह इस से बाज़ न आए तो मैं ऐसी ह़रकत करूंगा कि मेरा हर पथ्थर उस पहाड़ की त़रफ़ चला जाएगा जिस से वोह जुदा किया गया था।"

ह़रम में इरादए गुनाह पर भी मुआख़ज़ा है :

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : "मक्का के इ़लावा किसी शहर में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ गुनाह करने से पहले मह़ज़ निय्यत पर मुआख़ज़ा नहीं फ़रमाता, फिर येह आयते मुबारका तिलावत फ़रमाई :

وَ مَنْ یُّرِدْ فِیْهِ بِاِلْحَادٍۭ بِظُلْمٍ نُّذِقْهُ مِنْ عَذَابٍ اَلِیْمٍ۠ (۲۵) (پ۱۷، الحج:۲۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और जो इस में किसी ज़ियादती का नाह़क़ इरादा करे हम उसे दर्दनाक अ़ज़ाब चखाएंगे।

या'नी मह़ज़ इरादा करने पर येह सज़ा मिलेगी।"

मन्क़ूल है कि "नेकियों की त़रह़ यहां गुनाहों की सज़ा भी दुगनी हो जाती है।" ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं : "ह़रमे मक्का में ज़ख़ीरा अन्दोज़ी करना बे दीनी है।" मन्क़ूल है कि "ह़रमे मक्का में झूट बोलना भी बे दीनी है।"

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : "मुझे रुकिया[1] में 70 गुनाह करना मक्का में एक गुनाह करने से ज़ियादा पसन्द है।"

इस (या'नी बे ह़ुरमती के) ख़ौफ़ के सबब मक्कए मुकर्रमा में रहने वाले बा'ज़ ह़ज़रात ह़रम शरीफ़ में क़ज़ाए ह़ाजत न करते बल्कि क़ज़ाए ह़ाजत के वक़्त ह़ुदूदे ह़रम से बाहर निकल जाते। बा'ज़ ह़ज़रात ने वहां एक महीना क़ियाम किया लेकिन ज़मीन पर अपना पहलू न लगाया। मक्का में रहने की मुमानअ़त के सबब बा'ज़ उ़-लमा ने वहां के मकानात के किराये को ना पसन्द जाना है।

इज़ालए वहम :

(ऐ सुनने वाले !) तुझे येह ख़याल नहीं करना चाहिये कि वहां ठहरने की कराहत इस मक़ाम की फ़ज़ीलत कम कर देगी क्यूंकि कराहत की वजह मख़्लूक़ की कमज़ोरी और इस मक़ाम के ह़क़ की अदाएगी में कोताही करना है। लिहाज़ा हमारे इस क़ौल कि "**वहां न ठहरना अफ़्ज़ल है**" का मा'ना येह है कि इस मक़ाम से उकताने और इस की ता'ज़ीम में कोताही की सूरत में ऐसा है वरना इस मक़ाम का ह़क़ अदा करने की सूरत में कहीं और ठहरना कैसे अफ़्ज़ल हो सकता है ? और मक्का शरीफ़ कैसे अफ़्ज़ल न होगा जब कि ह़ुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم जब दोबारा मक्कए मुकर्रमा तशरीफ़ लाए तो का'बे की त़रफ़ मुतवज्जेह हो कर फ़रमाया : "यक़ीनन

❶...... **रुकिया :** मक्का व त़ाइफ़ के दरमियान एक जगह है। (अज़ मुसन्निफ़)

तू अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बेहतरीन ज़मीन है और मुझे उस के तमाम शहरों से ज़ियादा मह़बूब है। अगर मुझे यहां से निकलने पर मजबूर न किया जाता तो मैं कभी न निकलता।"[1]

और ऐसा क्यूंकर न हो जब कि बैतुल्लाह शरीफ़ को देखना भी इ़बादत है। नीज़ इस में नेकियां कई गुना बढ़ जाती हैं जैसा कि हम ने ज़िक्र किया।

मदीनए मुनव्वरा की अफ़्ज़लिय्यत :

मक्कए मुकर्रमा के बा'द मदीनए मुनव्वरा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا से अफ़्ज़ल कोई ज़मीन नहीं, इस में भी नेक आ'माल का षवाब बढ़ जाता है।

एक नमाज़ हज़ार नमाज़ों से बेहतर :

हु़ज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "मेरी इस मस्जिद (या'नी मस्जिदे नबवी) में एक नमाज़ मस्जिदे ह़राम के इ़लावा दीगर मसाजिद में एक हज़ार नमाज़ों से बेहतर है।"[2] इसी त़रह़ मदीनए मुनव्वरा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا में किया जाने वाला हर अ़मल एक हज़ार के बराबर है। मदीनए मुनव्वरा के बा'द बैतुल मुक़द्दस का मर्तबा है। इस में एक नमाज़ मस्जिदे ह़राम के इ़लावा दीगर मस्जिदों की पांच सो नमाज़ों के बराबर है और इसी त़रह़ तमाम आ'माल हैं।

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا से मरवी है कि हु़ज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "मस्जिदे नबवी में एक नमाज़ 10 हज़ार नमाज़ों के बराबर है। बैतुल मुक़द्दस में एक नमाज़ हज़ार नमाज़ों के बराबर है और मस्जिदे ह़राम में एक नमाज़ लाख नमाज़ों के बराबर है।"[3]

शफ़ाअ़त की बिशारत :

हु़ज़ूरे अन्वर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जिस ने मदीनए मुनव्वरा की सख़्ती और इस की शिद्दत पर सब्र किया बरोज़े क़ियामत मैं उस का शफ़ीअ़ होऊंगा।"[4]

---

1 ......سنن الترمذی، کتاب المناقب، باب فی فضل مکة، الحدیث:۳۹۵۱، ج۵، ص۴۸۶۔

2 ......صحیح مسلم، کتاب الحج، باب فضل الصلاة بمسجدی مکة والمدینة، الحدیث:۱۳۹۴، ص۷۲۰۔

3 ......قوت القلوب، الفصل الثالث والثلاثون فی ذکر دعائم الاسلام......الخ، ج۲، ص۲۰۴۔
الترغیب والترھیب، کتاب النوافل، الترغیب فی قیام اللیل، الحدیث:۹۲۹، ج۱، ص۲۹۲، مفهومًا۔

4 ......صحیح مسلم، کتاب الحج، باب الترغیب فی سکنی المدینة......الخ، الحدیث:۱۳۷۸، ص۷۱۶، بتقدمٍ وتاخرٍ۔

हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जिस से हो सके वोह मदीने में मरे क्यूंकि जो मदीने में मरेगा मैं क़ियामत के दिन उस का शफ़ीअ़ होऊंगा।"(1)

इन तीन मक़ामाते मुक़द्दसा के बा'द इस्लामी सरहदों के इलावा तमाम मक़ामात बराबर हैं क्यूंकि इस्लामी सरहद पर दुश्मन की निगरानी के लिये क़ियाम करने की बड़ी फ़ज़ीलत है। इसी लिये हुज़ूर सय्यिदे दो आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "तीन मस्जिदों के सिवा किसी त़रफ़ कजावे न बांधे जाएं : मस्जिदे ह़राम, मेरी येह मस्जिद (या'नी मस्जिदे नबवी) और मस्जिदे अक़्सा।"(2) (3)

ज़ियारते क़ुबूर के लिये सफ़र करने का हुक्म :

बा'ज़ अहले इ़ल्म ने इस ह़दीषे पाक से इस्तिदलाल करते हुए मुतबर्रक मक़ामात और उ़-लमा व औलिया की क़ुबूर की ज़ियारत के लिये सफ़र करने से मन्अ़ किया है लेकिन मुझ (या'नी इमाम ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِى) पर जो बात ज़ाहिर हुई है येह कि ज़ियारते क़ुबूर के लिये सफ़र करना जाइज़ है क्यूंकि इस का हुक्म दिया गया है। चुनान्चे,

---

1 ......سنن الترمذی، کتاب المناقب، باب فی فضل المدینۃ، الحدیث:۳۹۴۳، ج۵، ص۴۸۳، مفھومًا۔

2 ...... **मुफ़स्सिरे शहीर** ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْمَنَّان मिरआतुल मनाजीह़, जि. 1 स. 431 पर इस के तह़्त फ़रमाते हैं : वहाबी ह़ज़रात ने इस के मा'ना येह समझे कि सिवाए इन तीन मस्जिदों के किसी और मस्जिद की त़रफ़ सफ़र ही ह़राम है। लिहाज़ा उ़र्स, ज़ियारते क़ुबूर वग़ैरा के लिये सफ़र ह़राम। अगर येह मत़लब हो तो फिर तिजारत, इलाज, दोस्तों की मुलाक़ात, इ़ल्मे, दीन सीखने वग़ैरा तमाम कामों के लिये सफ़र ह़राम होंगे और रेल्वे का मोह़कमा **मअ़त्तल** (काम से बेकार) हो कर रह जाएगा और येह ह़दीष क़ुरआन के ख़िलाफ़ ही होगी और दीगर अह़ादीष के भी। रब्ब عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है : قُلْ سِيْرُوْا فِى الْاَرْضِ ثُمَّ انْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُكَذِّبِيْنَ ﴿۱۱﴾ (پ۷،الانعام:۱۱) ***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :*** *तुम फ़रमा दो ज़मीन में सैर करो फिर देखो कि झुटलाने वालों का कैसा अन्जाम हुवा।* (साहि़बे) मिरक़ात ने इसी जगह और शामी ने ज़ियारते क़ुबूर में फ़रमाया कि चूंकि इन तीन मसाजिद के सिवा तमाम मस्जिदें बराबर हैं इस लिये ओर मस्जिदों की त़रफ़ सफ़र ममनूअ़ है और औलिया अल्लाह की क़ब्रें फ़ुयूज़ो बरकात में मुख़्तलिफ़ हैं, लिहाज़ा ज़ियारते क़ुबूर के लिये सफ़र जाइज़, क्या येह जोहला अम्बियाए किराम के क़ुबूर की त़रफ़ सफ़र से भी मन्अ़ करेंगे ?

3 ......صحیح مسلم، کتاب الحج، باب لاتشدالرحال الالی ثلاثۃ مساجد، الحدیث:۱۳۹۷، ص۷۲۲، بتقدمٍ وتاخرٍ۔

हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : “मैं ने तुम्हें क़ब्रों की ज़ियारत से मन्अ़ किया था अब ज़ियारत किया करो[1] लेकिन ना मुनासिब कलाम न करो।”[2]

मज़ाराते औलिया की ज़ियारत का हुक्म :

माक़ब्ल ह़दीष मसाजिद के मुतअ़ल्लिक़ मरवी है और मक़ामाते मुक़द्दसा का हुक्म ऐसा नहीं क्यूंकि तीन मसाजिद के इलावा दीगर मसाजिद बराबर हैं और कोई शहर ऐसा नहीं जिस में मस्जिद न हो लिहाज़ा किसी दूसरी मस्जिद की त़रफ़ सफ़र करने का कोई मा'ना नहीं। रहा

❶...... **मुफ़स्सिरे शहीर** ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْمَنَّان मिरआतुल मनाजीह़, जि. 2 स. 522 पर “**ज़ियारते क़ुबूर से मन्अ़ किया था**” के तह़्त फ़रमाते हैं : शुरूए़ इस्लाम में ज़ियारते क़ुबूर से मुसलमान मर्दों औ़रतों को मन्अ़ थी क्यूंकि लोग नए नए इस्लाम लाए थे। अन्देशा था कि बुत परस्ती के आ़दी होने की वजह से अब क़ब्र परस्ती शुरूअ़ कर दें जब इन में इस्लाम रासिख़ हो गया तो येह मुमानअ़त मन्सूख़ हो गई, जैसे जब शराब ह़राम हुई तो शराब के बरतन इस्ति'माल करना भी ममनूअ़ हो गया ताकि लोग बरतन देख कर फिर शराब याद न कर लें, जब लोग तर्के शराब के आ़दी हो गए तो बरतनों के इस्ति'माल की मुमानअ़त मन्सूख़ हो गई। “**अब ज़ियारत किया करो**” के तह़्त फ़रमाते हैं : येह अम्र इस्तिह़बाबी है ह़क़ येह है कि इस हुक्म में औ़रतें भी शामिल हैं कि इन्हें भी ज़ियारते क़ुबूर की इजाज़त दी गई (لمعات،اشعہ،مرقاۃ) लेकिन अब औ़रतों को ज़ियारते क़ुबूर से रोका जाए या'नी घर से ज़ियारते क़ुबूर के लिये न निकलें सिवाए रोज़ए अत़हर हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की क़ब्रे मुनव्वर की ज़ियारत के, हां अगर कहीं जा रही हों और रास्ते में क़ब्र वाक़ेअ़ हो तो ज़ियारत कर लें जैसा कि ह़ज़रते आ़इशा सिद्दीक़ा (رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہَا) ने ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान (رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ) की क़ब्र की ज़ियारत की और अगर किसी घर में ही इत्तिफ़ाक़न वाक़ेअ़ हो तो ज़ियारत कर सकती हैं, ह़ज़रते आ़इशा सिद्दीक़ा (رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہَا) के घर में हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की क़ब्र शरीफ़ थी जहां आप मुजावरा व मुन्तज़िमा थीं। ख़याल रहे कि زُوْرُوْا मुत़लक़ अम्र है लिहाज़ा मुसलमानों को ज़ियारते क़ब्र के लिये सफ़र भी जाइज़ है, जब हस्पतालों और ह़कीमों के पास सफ़र कर के जा सकते हैं तो मज़ाराते औलिया पर भी सफ़र कर के जा सकते हैं कि इन की क़ुबूर रूह़ानी हस्पताल हैं, नीज़ अगर कहीं क़ब्र पर लोग नाजाइज़ ह़रकतें करते हों तो इस से ज़ियारते क़ुबूर न छोड़े, हो सके तो इन ह़रकतों को बन्द करे क्यूंकि زُوْرُوْا मुत़लक़ है, देखो हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने हिजरत से पहले बुतों की वजह से का'बा न छोड़ा बल्कि जब मौक़अ़ मिला तो बुत निकाल दिये आज भी निकाह़ में लोग ना जाइज़ ह़रकतें करते हैं मगर इस की वजह से न निकाह़ बन्द किये जाते हैं न वहां की शिर्कत, निकाह़ भी सुन्नते मुत़लक़ा है और ज़ियारते क़ुबूर भी सुन्नते मुत़लक़ा, निकाह़ व ज़ियारते क़ुबूर दोनों के लिये सफ़र भी दुरुस्त है और नाजाइज़ उमूर की वजह से इन में शिर्कत ममनूअ़ नहीं, येह दोनों मसाइल शामी ने जिल्द अव्वल बाब ज़ियारते क़ुबूर में बहुत तफ़्सील से बयान फ़रमाए।

नोट : मज़ीद तफ़्सील जानने के लिये आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن का रिसाला “جُمَلُ النُّوْرِ فِیْ نَھْیِ النِّسَاءِ عَنْ زِیَارَۃِ الْقُبُوْر” (नूर के जुम्ले, औ़रतों को ज़ियारते क़ुबूर से रोकने के बारे में) फ़तावा रज़विय्या, जि. 9, स. 541 ता 567 का मुत़ालआ़ कीजिये।

❷......المستدرک، کتاب الجنائز، باب زیارۃ النبی صلی اللہ علیہ وسلم قبر أمہ، الحدیث:۱۴۳۳، ج۱، ص۷۱۱۔

मक़ामाते मुक़द्दसा का मुआ़मला तो वोह एक जैसे नहीं बल्कि इन की ज़ियारत की बरकत अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक इन के दर्जात के मुत़ाबिक़ होती है। हां अगर कोई शख़्स ऐसी जगह हो जहां मस्जिद न हो तो उस के लिये ऐसी जगह की त़रफ़ सफ़र करना जाइज़ है जहां मस्जिद हो और अगर चाहे तो मुकम्मल त़ौर पर वहीं मुन्तक़िल हो जाए। काश मैं जान लेता कि क्या येह मुन्किरे अम्बियाए किराम मषलन ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ख़लीलुल्लाह, ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह और ह़ज़रते सय्यिदुना यह़्या (عَلٰی نَبِیِّنَا وعَلَیۡھِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام) वग़ैरा की क़ुबूर की ज़ियारत से भी मन्अ़ करेगा और इस से मन्अ़ करना तो बहुत मुह़ाल है। जब अम्बियाए किराम عَلَیۡھِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के मज़ारात की ज़ियारत जाइज़ है तो औलिया, उ़-लमा और सु-लह़ा के मज़ारात का भी येही हुक्म है। येह बात बई़द नहीं कि सफ़र से मज़ाराते औलिया पर ह़ाज़िरी मक़्सूद हो जैसे उ़-लमाए किराम رَحِمَھُمُ اللّٰہُ السَّلَام की ह़यात में उन की ज़ियारत के लिये सफ़र का क़स्द किया जाता है।

यहां तक तो एक मक़ाम से दूसरे मक़ाम की त़रफ़ सफ़र के मुतअ़ल्लिक़ बह़्ष थी। जहां तक इक़ामत इख़्तियार करने का तअ़ल्लुक़ है तो मुरीद के लिये बेहतर येह है कि जब सफ़र से मक़्सूद इ़ल्म का ह़ुसूल न हो तो अपने वत़न में ही सुकूनत इख़्तियार करे जब कि वहां रहने में सलामती हो और अगर वहां सलामती न हो तो ऐसी जगह तलाश करे जहां उसे कोई न जानता हो, उस का दीन ज़ियादा मह़फ़ूज़ हो, उस का दिल फ़ारिग़ हो और इ़बादत के लिये आसानी हो तो ऐसी जगह उस के लिये सब से अफ़्ज़ल है। चुनान्चे,

हु़ज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "तमाम शहर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के हैं और तमाम मख़्लूक़ उस के बन्दे हैं। पस तुम जहां आसानी पाओ वहीं ठहर जाओ और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का शुक्र करो।"[1]

ह़दीषे पाक में है कि जिसे किसी चीज़ में बरकत दी गई तो उसे चाहिये कि इसे लाज़िम पकड़े और जिस का ज़रीअ़ए मआ़श किसी चीज़ में रखा गया हो तो वोह उस से दूसरी चीज़ की त़रफ़ मुन्तक़िल न हो जब तक कि ज़रीअ़ए मआ़श न बदल जाए।[2]

ह़िकायत :- ह़िफ़ाज़ते दीन की फ़िक्र :

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू नुऐ़म رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ फ़रमाते हैं : मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान षौरी عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡقَوِی को तौशादान कन्धे पर रखे और पानी का कूज़ा हाथ में लिये देखा गोया कहीं

1 ......المسند للامام احمد بن حنبل، مسند الزبیر بن العوام، الحدیث: ۱۴۲۰، ج ۱، ص ۳۵۰، مفهوماً۔

2 ......سنن ابن ماجه، کتاب التجارات، باب اذقسم للرجل رزق......الخ، الحدیث: ۲۱۴۷۔۲۱۴۸، ج ۳، ص ۱۰، ۱۱، مفهوماً۔

जाने का इरादा रखते हैं। चुनान्चे, मैं ने पूछा : "ऐ अबू अ़ब्दुल्लाह ! कहां का इरादा है ?" फ़रमाया : "ऐसे शहर का जहां थेली को दराहिम से भर लूं।" एक रिवायत में है, फ़रमाया : मुझे ख़बर पहुंची है कि फुलां गाउं में अनाज बहुत सस्ता है लिहाज़ा मैं वहां रिहाइश इख़्तियार करूंगा।" ह़ज़रते सय्यिदुना अबू नुऐ़म رَحْمَةُاللهِ تعالٰی عَلَیه फ़रमाते हैं : मैं ने कहा : "ऐ अबू अ़ब्दुल्लाह ! आप भी ऐसा करेंगे ?" फ़रमाया : "हां ! जब तुम किसी शहर में अरज़ानी देखो (या'नी वहां मेहंगाई न हो) तो वहां का क़स्द करो क्यूंकि इस से तुम्हारा दीन मह़फ़ूज़ होगा और फ़िक्रें कम होंगी।" ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान सौरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی फ़रमाया करते थे : "येह बुरे लोगों का ज़माना है। इस में गुमनाम रहने वाले भी मह़फ़ूज़ नहीं तो मश्हूर लोग कैसे मह़फ़ूज़ रह सकते हैं ? येह इन्तिक़ाल का ज़माना है बन्दा अपने दीन को फ़ितनों से बचाने के लिये एक गाउं से दूसरे गाउं की त़रफ़ मुन्तक़िल होता है।"

मैं कहां रिहाइश इख़्तियार करूं ?

ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान सौरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं नहीं जानता कि मैं किस शहर में सुकूनत इख़्तियार करूं ?" अ़र्ज़ की गई : "ख़ुरासान में।" फ़रमाया : "वहां मुख़्तलिफ़ मज़ाहिब और फ़ासिद ख़यालात (के लोग) हैं।" अ़र्ज़ की गई : "शाम में।" फ़रमाया : "तुम्हारी त़रफ़ उंगलियों से इशारा किया जाएगा या'नी तुम्हारी शोहरत होगी।" अ़र्ज़ की गई : "इ़राक़ में।" फ़रमाया : "ज़ालिमों का मुल्क है।" अ़र्ज़ की गई : "मक्कए मुकर्रमा में।" फ़रमाया : "येह अ़क़्ल व जिस्म को पिघला देता है।"

तीन वसिय्यतें :

एक अजनबी शख़्स ने ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान सौरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی की ख़िदमत में अ़र्ज़ की : "मेरा मक्कए मुकर्रमा زَادَهَا اللهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا में रिहाइश इख़्तियार करने का इरादा है, मुझे नसीह़त फ़रमाइये !" फ़रमाया : "मैं तुझे तीन नसीह़तें करता हूं :

(1).... पहली सफ़ में नमाज़ न पढ़ना

(2).... किसी क़ुरशी की सोह़बत इख़्तियार न करना

(3)..... सदक़ा ज़ाहिर न करना।"

पहली सफ़ से इस लिये मन्अ़ फ़रमाया क्यूंकि इस से बन्दा मशहूर हो जाता है, फिर जब ग़ाइब हो तो मफ़्क़ूद समझा जाता (या'नी तलाश किया जाता) है, यूं उस के अ़मल में दिखावा और बनावट आ जाती है।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ...... صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

दूसरी फ़स्ल : वुजूबे हज की शराइत, अरकान की दुरुस्ती और वाजिबात व ममनूआत का बयान[1]

ह़ज की शराइत़ :

ह़ज सह़ीह़ होने की दो शर्तें हैं : (1).....वक़्त का पाया जाना (2).....मुसलमान होना।

बच्चे का ह़ज सह़ीह़ है, अगर तमीज़ रखता हो तो ख़ुद एह़राम बांधे और अगर छोटा हो तो वली उस की त़रफ़ से एह़राम बांधे और उस से वोह तमाम अफ़्आ़ल कराए जो ह़ज में किये जाते हैं जैसे त़वाफ़ व सअ़्य वग़ैरा।

ह़ज का वक़्त :

शव्वालुल मुकर्रम, ज़ुल क़ा'दतिल ह़राम, ज़ुल ह़िज्जतिल ह़राम के नव दिन और यौमे नह़्र (या'नी क़ुरबानी के दिन) की फ़ज्र त़ुलूअ़ होने तक है। जिस ने इस मुद्दत के इलावा ह़ज का एह़राम बांधा तो वोह उ़मरा कहलाएगा [2] और उ़मरे का वक़्त पूरा साल है लेकिन जो शख़्स मिना के दिनों में ह़ज के एह़काम का पाबन्द हो उसे उ़मरे का एह़राम नहीं बांधना चाहिये। क्यूंकि वोह मिना के अफ़्आ़ल की अदाएगी में मशग़ूलिय्यत के सबब इस के बा'द उ़मरे के अफ़्आ़ल अदा न कर सकेगा।

फ़र्ज़ ह़ज अदा होने की शराइत़ :

ह़ज्जे इस्लाम अदा होने की पांच शराइत़ हैं :

(1)....इस्लाम (2)....आज़ादी (3).....बुलूग़ (4).....अ़क़्ल और (5).....वक़्त।[3]

---

❶...... फ़िक़्हे ह़नफ़ी के मुत़ाबिक़ अरकाने ह़ज व शराइत़े ह़ज, वाजिबात व ममनूआ़त जानने और तफ़्सीली मा'लूमात के लिये बहारे शरीअ़त, जिल्द अव्वल, ह़िस्सा 6, सफ़ह़ा 1032 ता 1232 **ह़ज के बयान** का मुत़ालआ़ कीजिये !

❷...... **अह़नाफ़ के नज़दीक :** ह़ज का वक़्त शव्वाल से दसवीं ज़िल ह़िज्जा तक है कि इस से पेशतर ह़ज के अफ़्आ़ल नहीं हो सकते, सिवा एह़राम के कि एह़राम इस से पहले भी हो सकता है अगर्चे मकरूह है।

(बहारे शरीअ़त, जि. 1 स. 1036)

❸...... अह़नाफ़ के नज़दीक : ह़ज्जे फ़र्ज़ अदा होने के लिये नव शर्तें हैं : (1)....इस्लाम (2)..... मरते वक़्त तक इस्लाम ही पर रहना (3).....आ़क़िल (4)..... बालिग़ होना (5)..... अज़ाद होना (6).....अगर क़ादिर हो तो ख़ुद अदा करना (7).....नफ़्ल की निय्यत न हो (8).....दूसरे की त़रफ़ से ह़ज करने की निय्यत न हो (9).....फ़ासिद न करना। (बहारे शरीअ़त, जि.1 स.1047)

अगर बच्चे या ग़ुलाम ने एह़राम बांधा लेकिन अ़रफ़ा या मुज़दलिफ़ा में ग़ुलाम आज़ाद हो गया और बच्चा बालिग़ हो गया और तुलूए़ फ़ज्र से पहले अ़रफ़े की त़रफ़ लौट आया तो इन दोनों का ह़ज्जे इस्लाम अदा हो जाएगा(1) क्यूंकि ह़ज अ़रफ़ा में ठहरने का नाम है। अलबत्ता, दोनों पर बत़ौरे दम एक बकरी लाज़िम होगी। उ़मरा अदा होने की भी येही शराइत़ हैं सिवाए वक़्त के।

ह़ज्जे नफ़्ल अदा होने की शराइत़ :

आज़ाद बालिग़ शख़्स के नफ़्ली ह़ज के अदा होने की शराइत़ दर्जे ज़ैल हैं :

ह़ज्जे नफ़्ल ह़ज्जे इस्लाम से बरियुज़्ज़िम्मा होने के बा'द होगा क्यूंकि ह़ज्जे इस्लाम मुक़द्दम है। फिर उस ह़ज की क़ज़ा है जो वुक़ूफ़ (अ़रफ़ा) की ह़ालत में फ़ासिद कर दिया हो। फिर नज़्र का ह़ज, फिर किसी का नाइब बन कर ह़ज करना, फिर ह़ज्जे नफ़्ल है और येह तरतीब ज़रूरी है। इसी त़रह़ ह़ज अदा होगा अगर्चे इस के ख़िलाफ़ निय्यत करे।

ह़ज वाजिब होने की शराइत़ :

ह़ज वाजिब होने की पांच शराइत़ हैं : (1).....बालिग़ होना (2).....मुसलमान होना (3)....आ़क़िल होना (4).....आज़ाद होना और (5).....साहि़बे इस्तित़ाअ़त होना(2)

जिस पर फ़र्ज़ ह़ज लाज़िम हो उस पर फ़र्ज़ उ़मरा भी लाज़िम है।(3)

---

❶...... **अह़नाफ़ के नज़दीक :** नाबालिग़ ने ह़ज का एह़राम बांधा और वुक़ूफ़े अ़रफ़ा से पेशतर बालिग़ हो गया तो अगर इसी पहले एह़राम पर रह गया ह़ज नफ़्ल हुवा हि़ज्जतुल इस्लाम न हुवा और अगर सिरे से एह़राम बांध कर वुक़ूफ़े अ़रफ़ा किया तो हि़ज्जतुल इस्लाम हुवा। ग़ुलाम ने अपने मौला (आक़ा) के साथ ह़ज किया तो येह ह़ज नफ़्ल हुवा हि़ज्जतुल इस्लाम न हुवा। आज़ाद होने के बा'द अगर शराइत़ पाए जाएं तो फिर करना होगा और अगर मौला के साथ ह़ज को जाता था, रास्ते में उस ने आज़ाद कर दिया तो अगर एह़राम से पहले आज़ाद हुवा, अब एह़राम बांध कर ह़ज किया तो हि़ज्जतुल इस्लाम अदा हो गया और एह़राम बांधने के बा'द आज़ाद हुवा तो हि़ज्जतुल इस्लाम न होगा, अगर्चे नया एह़राम बांध कर ह़ज किया हो। (बहारे शरीअ़त, जि.1 स. 1038)

❷...... **अह़नाफ़ के नज़दीक :** ह़ज वाजिब होने की आठ शर्तें हैं, जब तक वोह सब न पाई जाएं ह़ज फ़र्ज़ नहीं : (1)....इस्लाम (2)....दारुल ह़र्ब (3)....बुलूग़ (4)....आ़क़िल होना (5)....आज़ाद होना (6).....तन्दुरुस्त हो (7)....सफ़रे ख़र्च का मालिक हो और सुवारी पर क़ादिर हो (8)....वक़्त (माख़ूज अज़ बहारे शरीअ़त, जि.1 स. 1036 ता 1043) तफ़्सील के लिये बहारे शरीअ़त के मज़्कूरा मक़ाम का मुत़ालआ़ कीजिये।

❸...... **अह़नाफ़ के नज़दीक :** ज़िन्दगी में एक बार उ़मरा करना सुन्नते मुअक्कदा है। (الدرالمختار وردالمحتار، ج۳، ص۵۴۵)

जो ज़ियारत या तिजारत के लिये मक्कए मुकर्रमा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعْظِیْمًا में दाख़िल हो और लकड़ियां बेचने वाला न हो तो एक क़ौल के मुताबिक़ उस पर एह़राम बांधना लाज़िम है, फिर उ़मरा या ह़ज करने के बा'द एह़राम खोल दे।[1]

इस्तित़ाअ़त की अक़्साम :

इस्तित़ाअ़त दो ए'तिबार से होती है :

﴾1﴿.....ख़ुद आ'माले ह़ज का बजा लाना : इस के कई अस्बाब हैं, वोह या तो उस की ज़ात से मुतअ़ल्लिक़ हैं या'नी उस का सिह़्ह़त मन्द होना या रास्ते से मुतअ़ल्लिक़ या'नी रास्ता सर सब्ज़ और पुर अम्न हो, समन्दरी और ख़त़रनाक न हो और न ही रास्ते में ज़ालिम दुश्मन मौजूद हो। माल के ए'तिबार से इस्तित़ाअ़त येह है कि आने जाने के अख़राजात रखता हो ख़्वाह उस के अहलो इ़याल हो या न हो। क्यूंकि वत़न की जुदाई ना क़ाबिले बरदाश्त होती है। नीज़ उन लोगों के अख़राजात अदा करने की भी त़ाक़त रखता हो जिन का नफ़्क़ा इस के ज़िम्मे लाज़िम है। क़र्ज़ की अदाएगी के लिये भी माल मौजूद हो। सुवारी या इस के किराए पर क़ादिर हो। कजावा या सुवारी हो बशर्ते कि इस पर ठहर सकता हो।

﴾2﴿.....जो ख़ुद आ'माले ह़ज अदा न कर सकता हो (या'नी अपाहज हो) उस के ए'तिबार से इस्तित़ाअ़त येह है कि वोह किसी ऐसे शख़्स को उजरत पर ले जो फ़र्ज़ ह़ज से फ़ारिग़ हो चुका हो ताकि उस की त़रफ़ से ह़ज करे और इस क़िस्म में, जाने के लिये सुवारी के अख़राजात काफ़ी हैं।[2]

---

❶...... **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ **1250** सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब बहारे शरीअ़त जिल्द अव्वल सफ़ह़ा **1068** पर सदरुश्शरीआ़, बदरुत्त़रीक़ा ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى नक़्ल फ़रमाते हैं : (किसी का) मक्कए मुकर्रमा जाने का इरादा न हो बल्कि मीक़ात के अन्दर किसी और जगह मषलन जिद्दा जाना चाहता है तो उसे एह़राम की ज़रूरत नहीं फिर वहां से अगर मक्कए मुअ़ज़्ज़मा जाना चाहे तो बिग़ैर एह़राम जा सकता है, लिहाज़ा जो शख़्स ह़रम में बिग़ैर एह़राम जाना चाहता है वोह येह ह़ीला कर सकता है बशर्ते कि वाक़ेई उस का इरादा पहले मषलन जिद्दा जाने का हो। नीज़ मक्कए मुअ़ज़्ज़मा ह़ज और उ़मरा के इरादे से न जाता हो, मषलन तिजारत के लिये जिद्दा जाता है और वहां से फ़ारिग़ हो कर मक्कए मुअ़ज़्ज़मा जाने का इरादा है और अगर पहले ही से मक्कए मुकर्रमा जाने का इरादा है तो अब बिग़ैर एह़राम नहीं जा सकता। जो शख़्स दूसरे की त़रफ़ से ह़ज्जे बदल को जाता हो उसे येह ह़ीला जाइज़ नहीं।

❷...... **अह़नाफ़ के नज़्दीक :** ह़ज वाजिब होने के लिये तन्दुरुस्त होना भी ज़रूरी जब कि मा'ज़ूर अश्ख़ास पर ह़ज वाजिब नहीं। चुनान्चे दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ **1250** सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब बहारे शरीअ़त जिल्द अव्वल सफ़ह़ा **1039** पर सदरुश्शरीआ़, बदरुत्त़रीक़ा ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى वाजिबाते ह़ज की शराइत़ नक़्ल फ़रमाते हुए लिखते हैं : तन्दुरुस्त हो कि ह़ज को जा सके, आ'ज़ा सलामत हों, अखियारा हो, अपाहज और फ़ालिज वाले और जिस के पाउं कटे हों और बुढ्ढे पर कि सुवारी पर ख़ुद न बैठ सकता हो ह़ज फ़र्ज़ नहीं। यू ही अन्धे पर भी वाजिब नहीं अगर्चे हाथ पकड़ कर ले चलने वाला उसे मिले। इन सब पर येह भी वाजिब नहीं कि किसी को भेज कर अपनी त़रफ़ से ह़ज करा दें या वसिय्यत कर जाएं और अगर तक्लीफ़ उठा कर ह़ज कर लिया तो सह़ीह़ हो गया और ह़िज्जतुल इस्लाम अदा हुवा या'नी इस के बा'द अगर आ'ज़ा दुरुस्त हो गए तो अब दोबारा ह़ज फ़र्ज़ न होगा वोही पहला ह़ज काफ़ी है। अगर पहले तन्दुरुस्त था और दीगर शराइत़ भी पाए जाते थे और ह़ज न किया फिर अपाहज वग़ैरा हो गया कि ह़ज नहीं कर सकता तो उस पर वोह ह़ज फ़र्ज़ बाक़ी है। ख़ुद न कर सके तो ह़ज्जे बदल कराए।

अगर अपाहज शख़्स का बेटा उस की ख़िदमत के लिये तय्यार हो जाए तो वोह इस्तिताअ़त वाला शुमार होगा और अगर बेटा अपना माल पेश कर दे तो इस सूरत में साहिबे इस्तिताअ़त शुमार न होगा[1] क्यूंकि खुद को ख़िदमत के लिये पेश करना बेटे की इ़ज़्ज़त व सआ़दत मन्दी है जब कि माल ख़र्च करना बाप पर एह़सान करना है। इस्तिताअ़त के साथ साथ जिस में तमाम शराइत़ पाई जाएं उस पर ह़ज लाज़िम है, अगर्चे ताख़ीर जाइज़ है मगर ख़त़रा है।

इस्तिताअ़त के बा वुजूद ह़ज न करने वाले का हुक्म :

अगर आख़िरी उ़म्र में भी ह़ज की सआ़दत मिल गई तो इस से फ़र्ज़ साक़ित़ हो जाएगा। लेकिन अगर फ़र्ज होने के बा'द अदाएगी से पहले मर गया तो ह़ज छोड़ने की वजह से बारगाहे इलाही में गुनहगार ह़ाज़िर होगा। इस सूरत में उस के तर्के से किया जाएगा अगर्चे उस ने वसिय्यत न की हो जैसे तमाम क़र्ज़ों का मुआ़मला है।

अगर एक साल में साहिबे इस्तिताअ़त हुवा और लोगों के साथ ह़ज के लिये न निकला और उसी साल लोगों के ह़ज करने से पहले उस का माल हलाक हो गया फिर उस का इन्तिक़ाल हो गया तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से इस ह़ाल में मिलेगा कि उस पर (ह़ज न करने का) गुनाह न होगा। जिस ने खुशह़ाली के बा वुजूद ह़ज न किया और मर गया तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक इस का मुआ़मला बड़ा सख़्त है।

अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : "मैं ने अ़ज़्म किया है कि हुक्काम को लिखूं कि जो बा वुजूदे इस्तिताअ़त ह़ज नहीं करता उस पर जिज़्या लाज़िम कर दो।"

मन्क़ूल है कि ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन जुबैर, ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम नख़ई, ह़ज़रते सय्यिदुना मुजाहिद और ह़ज़रते सय्यिदुना त़ाउस (رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن) फ़रमाते हैं : "अगर किसी दौलत मन्द शख़्स के बारे में मा'लूम हो कि वाजिब होने के बा वुजूद वोह ह़ज किये बिग़ैर मर गया तो हम उस पर नमाज़े जनाज़ा न पढ़ें।"

मन्क़ूल है कि "एक बुज़ुर्ग का खुशह़ाल पड़ोसी ह़ज किये बिग़ैर मर गया तो उन्हों ने उस की नमाज़े जनाज़ा न पढ़ी।"

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाया करते थे : जो साहिबे इस्तिताअ़त होने के बा वुजूद ज़कात अदा किये और ह़ज किये बिग़ैर मर गया वोह दुन्या में दोबारा लौटने का सुवाल करेगा फिर आप ने येह आयते मुक़द्दसा तिलावत फ़रमाई :

1...... **अह़नाफ़ के नज़्दीक :** किसी ने ह़ज के लिये माल हिबा किया तो क़बूल करना उस पर वाजिब नहीं। देने वाला अजनबी हो या मां, बाप, औलाद वग़ैरा मगर क़बूल कर लेगा तो ह़ज वाजिब हो जाएगा। (बहारे शरीअ़त, जि. 1 स. 1039)

رَبِّ ارْجِعُوْنِ ﴿۹۹﴾ لَعَلِّیْۤ اَعْمَلُ صَالِحًا فِیْمَا تَرَكْتُ (پ۱۸، المؤمنون:۹۹، ۱۰۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ मेरे रब्ब ! मुझे वापस फेर दीजिये, शायद अब मैं कुछ भलाई कमाऊं उस में जो छोड़ आया हूं।

और इस की तफ़्सीर में फ़रमाया : इस से मुराद ह़ज है :

ह़ज के अरकान :

अरकान कि जिन के बिग़ैर ह़ज दुरुस्त नहीं होता पांच है : (1)....एह़राम बांधना (2)....त़वाफ़ करना (3)....सअ़्य करना (4)....अ़रफ़ात में ठहरना और (5)....सर मुन्डाना।[1] एक क़ौल के मुत़ाबिक़ सर मुन्डवाना भी अरकाने ह़ज में शामिल है (जब कि एक क़ौल के मुत़ाबिक़ वाजिबात में से है।) उ़मरा के अरकान भी येही हैं सिवाए वुक़ूफ़े अ़रफ़ा के।

ह़ज के वाजिबात :

वाजिबाते ह़ज कि जिन के रह जाने से दम लाज़िम आता है[2] छे हैं[3] :

---

❶...... **अह़नाफ़ के नज़्दीक :** ह़ज के सात अरकान हैं। चुनान्चे, दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 1250 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब बहारे शरीअ़त जिल्द अव्वल सफ़ह़ा 1047 पर सदरुश्शरीआ़, बदरुत्तरीक़ा ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی नक़्ल फ़रमाते हैं : ह़ज में येह चीज़ें फ़र्ज़ हैं : (1)....एह़राम, कि येह शर्त़ है। (2).....वुक़ूफ़े अ़रफ़ा या'नी नवीं ज़िल ह़िज्जा के आफ़्ताब ढ़लने से दस्वीं की सुब्ह़े सादिक़ से पेशतर तक किसी वक़्त अ़रफ़ात में ठहरना। (3)....त़वाफ़े ज़ियारत का अक्सर ह़िस्सा, या'नी चार फेरे पिछली दोनों चीज़ें या'नी वुक़ूफ़ व त़वाफ़ रुक्न हैं। (4)....निय्यत। (5)....तरतीब या'नी पहले एह़राम बांधना फिर वुक़ूफ़ फिर त़वाफ़। (6)....हर फ़र्ज़ का अपने वक़्त पर होना, या'नी वुक़ूफ़ उस वक़्त होना जो मज़्कूर हो इस के बा'द त़वाफ़ इस का वक़्त वुक़ूफ़ के बा'द से आख़िर उ़म्र तक है। (7)....मकान या'नी वुक़ूफ़ ज़मीने अ़रफ़ात में होना सिवा बत़्ने अ़रना के और त़वाफ़ का मकान मस्जिदुल ह़राम शरीफ़ है।

❷...... दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 304 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब रफ़ीक़ुल ह़रमैन सफ़ह़ा 228 पर शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना **अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार** क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ नक़्ल फ़रमाते हैं : **दम** या'नी एक बकरा (इस में नर, मादा, दुम्बा, भेड़, नीज़ गाए या ऊंट का सातवां ह़िस्सा सब शामिल हैं)।

❸...... **अह़नाफ़ के नज़्दीक :** ह़ज के 28 वाजिबात हैं। चुनान्चे, दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 1250 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब बहारे शरीअ़त जिल्द अव्वल सफ़ह़ा 1048 पर सदरुश्शरीआ़, बदरुत्तरीक़ा ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی नक़्ल फ़रमाते हैं : ह़ज के वाजिबात येह हैं : (1)....मीक़ात से एह़राम बांधना, या'नी मीक़ात से बिग़ैर एह़राम न गुज़रना और अगर मीक़ात से पहले ही एह़राम बांध लिया तो जाइज़ है। (2)......सफ़ा व मरवा के दरमियान दौड़ना इस को सअ़्य कहते हैं। (3).....सअ़्य को सफ़ा से शुरूअ़ करना और अगर मर्वा से शुरूअ़ की तो पहला फेरा शुमार न किया जाए,......

(1)......मीक़ात से एह़राम बांधना पस जो मीक़ात से एह़राम बांधे बिग़ैर गुज़र गया तो उस पर बत़ौरे दम एक बकरी लाज़िम है। (2).....जमरात को कंकरियां मारना। एक क़ौल के मुत़ाबिक़ इसे छोड़ने पर भी दम लाज़िम होगा। (3)....ग़ुरूबे आफ़्ताब तक अ़रफ़ात में ठहरना।

...... उस का इआ़दा करे। (4).....अगर उ़ज़्र न हो तो पैदल सअ़्य करना, सअ़्य का त़वाफ़ मुअ़तदबा के बा'द या'नी कम से कम चार फेरों के बा'द होना। (5)......दिन में वुक़ूफ़ किया तो इतनी देर तक वुक़ूफ़ करे कि आफ़्ताब डूब जाए ख़्वाह आफ़्ताब ढलते ही शुरूअ़ किया हो या बा'द में, ग़रज़ ग़ुरूब तक वुक़ूफ़ में मश्ग़ूल रहे और अगर रात में वुक़ूफ़ किया तो उस के लिये किसी ख़ास ह़द तक वुक़ूफ़ करना वाजिब नहीं मगर वोह उस वाजिब का तारिक हुवा कि दिन में ग़ुरूब तक वुक़ूफ़ करता। (6)....वुक़ूफ़ में रात का कुछ जुज़ आ जाना। (7)....अ़रफ़ात से वापसी में इमाम की मुताबेअ़त करना या'नी जब तक इमाम वहां से न निकले येह भी न चले, हां अगर इमाम ने वक़्त से ताख़ीर की तो उसे इमाम के पहले चला जाना जाइज़ है और अगर भीड़ वग़ैरा किसी ज़रूरत से इमाम के चले जाने के बा'द ठहर गया साथ न गया जब भी जाइज़ है। (8)....मुज़्दलिफ़ा में ठहरना। (9)....मग़रिब व इशा की नमाज़ का वक़्त इशा में मुज़्दलिफ़ा में आ कर पढ़ना। (10)....तीनों जमरों पर दसवीं, ग्यारहवीं, बारहवीं तीनों दिन कंकरियां मारना या'नी दसवीं को सिर्फ़ जमरतुल अ़क़बा पर और ग्यारहवीं बारहवीं को तीनों पर रमी करना। (11)....जमरए अ़क़बा की रमी पहले दिन ह़ल्क़ से पहले होना। (12)....हर रोज़ की रमी का उसी दिन होना। (13).....सर मुंडाना या बाल कतरवाना। (14)....और उस का अय्यामें नह़र और (15)....ह़रम शरीफ़ में होना अगर्चे मिना में न हो। (16)....क़िरान और तमत्तोअ़ वाले को क़ुरबानी करना और (17)....इस क़ुरबानी का ह़रम और अय्यामे नह़र में होना। (18)....त़वाफ़े इफ़ाज़ा का अकषर हिस्सा अय्यामे नह़र में होना। अ़रफ़ात से वापसी के बा'द जो त़वाफ़ किया जाता है उस का नाम त़वाफ़े इफ़ाज़ा है और उसे त़वाफ़े ज़ियारत भी कहते हैं। त़वाफ़े ज़ियारत के अकषर हिस्से से जितना ज़ाइद है या'नी तीन फेरे अय्यामे नह़र के ग़ैर में भी हो सकता है। (19) त़वाफ़ ह़त़ीम के बाहर से होना। (20)....दहनी त़रफ़ से त़वाफ़ करना या'नी का'बए मुअ़ज़्ज़मा त़वाफ़ करने वाले की बाईं जानिब हो। (21)....उ़ज़्र न हो तो पाउं से चल कर त़वाफ़ करना, यहां तक कि अगर घसीटते हुए त़वाफ़ करने की मन्नत मानी जब भी त़वाफ़ में पाउं से चलना लाज़िम है और त़वाफ़े नफ़्ल अगर घसीटते हुए शुरूअ़ किया तो हो जाएगा मगर अफ़्ज़ल येह है कि चल कर त़वाफ़ करे। (22)....त़वाफ़ करने में नजासते हुक्मिय्या से पाक होना, या'नी जुनुब व बे वुज़ू न होना, अगर बे वुज़ू या जनाबत में त़वाफ़ किया तो इआ़दा करे। (23)....त़वाफ़ करते वक़्त सित्र छुपा होना या'नी अगर एक उ़ज़्व की चौथाई या इस से ज़ियादा हिस्सा खुला रहा तो दम वाजिब होगा और चन्द जगह से खुला रहा तो जम्अ़ करेंगे, गरज़ नमाज़ में सित्र खुलने से जहां नमाज़ फ़ासिद होती है यहां दम वाजिब होगा। (24)....त़वाफ़ के बा'द दो रक्अ़त नमाज़ पढ़ना, न पढ़ी तो दम वाजिब नहीं। (25)....कंकरियां फैंकने और ज़ब्ह़ और सर मुन्डाने और त़वाफ़ में तरतीब या'नी पहले कंकरियां फेंके फिर ग़ैर मुफ़रिद क़ुरबानी करे फिर सर मुन्डाए फिर त़वाफ़ करे। (26)...त़वाफ़े सद्र या'नी मीक़ात से बाहर के रहने वालों के लिये रुख़्सत का त़वाफ़ करना। अगर ह़ज करने वाली ह़ैज़ या नफ़ास से है और त़हारत से पहले क़ाफ़िला रवाना हो जाएगा तो उस पर त़वाफ़े रुख़्सत नहीं। (27)....वुक़ूफ़े अ़रफ़ा के बा'द सर मुन्डाने तक जिमाअ़ न होना। (28)....एह़राम के ममनूआ़त, मषलन सिला कपड़ा पहनने और मुंह या सर छुपाने से बचना।

(4-5).....मुज़्दलिफ़ा व मिना में रात गुज़ारना और (6)....त़वाफ़े वदाअ़ ।[1]

मुअख़्ख़रुज़्ज़िक्र चार (वाजिबात) को छोड़ने पर एक क़ौल के मुत़ाबिक़ दम लाज़िम होगा जब कि एक क़ौल के मुत़ाबिक़ इस्तिह़बाबी त़ौर पर दम होगा ।

ह़ज व उ़मरा की अदाएगी के त़रीक़े :

ह़ज व उ़मरा की अदाएगी के तीन त़रीक़े हैं :

﴾1﴿.....**ह़ज्जे इफ़राद :** येह अफ़्ज़ल है ।[2] इस का त़रीक़ा येह है कि पहले सिर्फ़ ह़ज करे, जब फ़ारिग़ हो तो ह़िल की त़रफ़ (या'नी ह़ुदूदे ह़रम से बाहर) निकल जाए और एह़राम बांध कर उ़मरा करे । उ़मरा के एह़राम के लिये ह़िल में अफ़्ज़ल जगह जिइर्राना है फिर तनईम फिर ह़ुदैबिया । ह़ज्जे इफ़राद करने वाले पर क़ुरबानी लाज़िम नहीं बल्कि नफ़्ल है ।

﴾2﴿.....**ह़ज्जे क़िरान :** इस का त़रीक़ा येह है कि ह़ज व उ़मरा को जम्अ़ करे और कहे मैं ह़ज व उ़मरा के साथ ह़ाज़िर हूं । वोह दोनों के साथ मोह़रिम (या'नी दोनों का एह़राम बांधने वाला) हो जाएगा उस के लिये ह़ज के आ'माल काफ़ी हैं और उ़मरा ह़ज के तह़त आ जाएगा जैसे वुज़ू ग़ुस्ल के ज़िम्न में हो जाता है । अलबत्ता, जब वोह त़वाफ़ करे और वुक़ूफ़ेअ़रफ़ा से पहले सअ़्य करे तो इस की सअ़्य दोनों इबादतों की त़रफ़ से शुमार होगी लेकिन त़वाफ़ शुमार नहीं होगा क्यूंकि ह़ज के फ़र्ज़ त़वाफ़ के लिये शर्त़ येह है कि वोह वुक़ूफ़े अ़रफ़ा के बा'द हो और क़ारिन पर एक बकरी की क़ुरबानी लाज़िम है । अलबत्ता, अगर वोह मक्कए मुकर्रमा का रिहाइशी हो तो इस पर कुछ लाज़िम नहीं क्यूंकि उस ने मीक़ात को तर्क नहीं किया इस लिये कि उस का मीक़ात मक्का ही है ।

﴾3﴿......**ह़ज्जे तमत्तोअ़ :** इस का त़रीक़ा येह है कि वोह मीक़ात से उ़मरे के एह़राम के साथ दाख़िल हो और उ़मरा करने के बा'द एह़राम खोल दे और वक़्ते ह़ज तक ममनूआ़ते एह़राम से फ़ाइदा उठाए फिर ह़ज का एह़राम बांधे ।

तमत्तोअ़ की शराइत़ :

तमत्तोअ़ की पांच शराइत़ हैं : (1)....ह़ज्जे तमत्तोअ़ करने वाला मस्जिदे ह़राम के ह़ाज़िरीन में से न हो और इस के ह़ाज़िरीन में से वोह है जो इतनी मसाफ़त पर हो जिस में नमाज़े क़सर न होती हो । (2).....वोह उ़मरा को ह़ज पर मक़द्दम करे । (3).... उ़मरा ह़ज के महीनों

---

❶...... **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 304 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब रफ़ीक़ुल ह़रमैन सफ़ह़ा 35 पर शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دامت برکاتہم العالیہ नक़्ल फ़रमाते हैं : ह़ज के बा'द मक्कए मुकर्रमा से रुख़्सत होते हुए किया जाता है । येह हर "आफ़ाक़ी" (मीक़ात के बाहर से आने वाले) ह़ाजी पर वाजिब है ।

❷...... **अह़नाफ़ के नज़दीक :** सब से अफ़्ज़ल ह़ज्जे क़िरान फिर तमत्तोअ़ फिर इफ़राद है । (ردالمحتار، کتاب الحج، باب القران، ج۳، ص ۶۳۱)

में हो। (4)....एह़राम ह़ज के लिये मीक़ाते ह़ज या इस के बराबर मसाफ़त की त़रफ़ न लौटे। (5).....ह़ज व उ़मरा एक ही शख़्स की त़रफ़ से हो।(1)

जब येह औसाफ़ पाए जाएं तो वोह ह़ज्जे तमत्तोअ़ करने वाला होगा और उस पर बकरी की क़ुरबानी लाज़िम होगी। अगर बकरी न पाए तो यौमे नह़्र (या'नी क़ुरबानी के दिन) से पहले ह़ज के दिनों में तीन रोज़े रखे ख़्वाह मुतफ़र्रिक़ त़ौर पर हों या लगातार और वत़न वापस आने के बा'द सात रोज़े रखे। अगर तीन रोज़े रखे बिग़ैर वत़न वापस लौट आया तो मुसलसल या मुतफ़र्रिक़ त़ौर पर दस रोज़े रखे। क़िरान और तमत्तोअ़ की क़ुरबानी एक जैसी है। इन में अफ़्ज़ल ह़ज्जे इफ़्राद है फिर तमत्तोअ़ फिर क़िरान। (इन्दशशवाफ़ेअ़)

ह़ज व उ़मरा के ममनूआ़त :

ह़ज व उ़मरा (या'नी ह़ालते एह़राम) में छे उमूर ममनूअ़ हैं :

﴾1﴿.....**शलवार क़मीस और मोज़े पहनना, इमामा बांधना :** इज़ार, रिदाअ (या'नी दो चादरें) और चप्पल पहने, अगर चप्पल न पाए तो जूते पहने। अगर इज़ार न पाए तो शलवार पहन ले। कमर बन्द बांधने और कजावे के साए में बैठने में कोई ह़रज नहीं लेकिन अपना सर न ढांपे क्यूंकि मर्द का एह़राम उस के सर में है। औ़रत हर सिला हुवा कपड़ा पहन सकती है। अलबत्ता, चेहरे को ऐसी चीज़ से न ढांपे जो चेहरे को मस करती हो क्यूंकि उस का एह़राम उस के चेहरे में है।

---

❶...... **अह़नाफ़ के नज़्दीक :** तमत्तोअ़ की 10 शराइत़ हैं।

चुनान्चे दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 1250 सफ़्ह़ात पर मुश्तमिल किताब बहारे शरीअ़त जिल्द अव्वल सफ़्ह़ा 1158 पर सदरुश्शरीआ़, बदरुत्तरीक़ा ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى नक़्ल फ़रमाते हैं : तमत्तोअ़ की दस शर्तें हैं : (1).....ह़ज के महीने में पूरा त़वाफ़ करना या अकषर हिस्सा या'नी चार फेरे। (2).....उ़मरे का एह़राम ह़ज के एह़राम से मुक़द्दम होना। (3).....ह़ज के एह़राम से पहले उ़मरा का पूरा त़वाफ़ या अकषर ह़िस्सा कर लिया हो। (4)....उ़मरा फ़ासिद न किया हो। (5)....ह़ज फ़ासिद न किया हो। (6).....इलमामे सह़ीह़ न किया हो। इलमामे सह़ीह़ के येह मा'ना हैं कि उ़मरा के बा'द एह़राम खोल कर अपने वत़न को वापस जाए और वत़न से मुराद वोह जगह है जहां वोह रहता है। पैदाइश का मक़ाम अगर्चे दूसरी जगह हो। लिहाज़ा अगर उमरह करने के बा'द वत़न गया फिर वापस आ कर ह़ज किया तो तमत्तोअ़ न हुवा और अगर उ़मरा करने से पेशतर गया या उ़मरा कर के बिग़ैर ह़ल्क़ किये या'नी एह़राम ही में वत़न गया फिर वापस आ कर इसी साल ह़ज किया तो तमत्तोअ़ है। यूं हीं अगर उ़मरा कर के एह़राम खोल दिया फिर ह़ज का एह़राम बांध कर वत़न गया तो येह भी इलमामे सह़ीह़ नहीं, लिहाज़ा अगर वापस आ कर ह़ज करेगा तो तमत्तोअ़ होगा। (7).....ह़ज व उ़मरा दोनों एक ही साल में हों। (8).....मक्कए मुअ़ज़्ज़मा में हमेशा के लिये ठहरने का इरादा न हो, लिहाज़ा अगर उ़मरा के बा'द पक्का इरादा कर लिया कि यहीं रहेगा तो तमत्तोअ़ नहीं और दो एक महीने का हो तो है। (9)....मक्कए मुअ़ज़्ज़मा में ह़ज का महीना आ जाए तो बे एह़राम के न हो, न ऐसा हो कि एह़राम है मगर चार फेरे त़वाफ़ के इस महीने से पहले कर चुका है, हां अगर मीक़ात से बाहर वापस जाए फिर उ़मरा का एह़राम बांध कर आए तो तमत्तोअ़ हो सकता है। (10).....मीक़ात से बाहर का रहने वाला हो। मक्के का रहने वाला तमत्तोअ़ नहीं कर सकता।

﴾2﴿.....**ख़ुश्बू लगाना :** लिहाज़ा मोह़रिम हर उस चीज़ से बचे जिसे उ़-क़ला ख़ुश्बू शुमार करते हैं। अगर उस ने ख़ुश्बू लगाई या मला हुवा कपड़ा पहना तो इस पर बत़ौरे दम एक बकरी लाज़िम होगी।

﴾3﴿.....**बाल मुंन्डवाना और नाख़ुन तरशवाना :** इन में भी फ़िदया या'नी बकरी का ख़ून बहाना लाज़िम होगा। सुरमा लगाने, हम्माम में जाने, पछने या सींगी लगवाने और बालों को कंघी करने में कोई ह़रज नहीं।

﴾4﴿.......**जिमाअ़ करना :** अगर एह़राम खोलने से पहले जिमाअ़ किया तो ह़ज फ़ासिद हो गया और इस में ऊंट, गाय, या सात बकरियों की क़ुरबानी लाज़िम है। अगर एह़राम खोलने के बा'द जिमाअ़ किया तो एक ऊंट क़ुरबान करना लाज़िम है लेकिन ह़ज फ़ासिद नहीं होगा।

﴾5﴿.....**जिमाअ़ की त़रफ़ ले जाने वाले उमूर :** जैसे बोसा देना या इस त़रह़ छूना कि अगर औ़रत के साथ ऐसा किया जाए तो वुज़ू टूट जाए, इस में एक बकरी की क़ुरबानी वाजिब है। येही हुक्म मुश्तज़्नी (या'नी हाथ से मनी ख़ारिज करने) का है। ह़ालते एह़राम में निकाह़ करना या कराना भी ह़राम है। अलबत्ता, इस में दम वाजिब नहीं क्यूंकि येह निकाह़ मुनअ़क़िद नहीं होता।[1]

﴾6﴿......**ख़ुश्की का शिकार करना :** या'नी जो जानवर खाया जाता है या जो ह़लाल और ह़राम के मिलाप से पैदा हुवा हो, अगर मोह़रिम ने किसी जानवर को क़त्ल किया तो उस पर इस की मिष्ल जानवर लाज़िम होगा या'नी जो जिस्मानी त़ौर पर इस जितना हो और समन्दरी शिकार ह़लाल है, इस में कोई बदला नहीं।[2]

---

❶...... **अह़नाफ़ के नज़्दीक :** एह़राम की ह़ालत में निकाह़ हो सकता है (मुजामअ़त जाइज़ नहीं)।

(बहारे शरीअ़त, जि. 1 स. 1216)

❷...... **अह़नाफ़ के नज़्दीक :** दर्जे ज़ैल उमूर ह़ालते एह़राम में ममनूअ़ हैं : (1).....औ़रत से सोह़बत। (2).....बोसा। (3)....मसास। (4)......गले लगाना। (5)..... उस की इन्दाम नहानी पर निगाह जब कि येह चारों बातें ब शहवत हों। (6)....औ़रतों के सामने इस काम का नाम लेना। (7)....फ़ोह़्ह़श। (8)....गुनाह हमेशा ह़राम थे अब और सख़्त ह़राम हो गए। (9).....किसी से दुन्यवी लड़ाई झगड़ा। (10)....जंगल का शिकार। (11)....उस की त़रफ़ शिकार करने को इशारा करना। या (12).....किसी त़रह़ बताना (13)....बन्दूक़ या बारूद या उस के ज़ब्ह़ करने को छुरी देना। (14)....उस के अन्डे तोड़ना। (15)....पर उखैड़ना। (16)....पाउं या बाज़ू तोड़ना। (17)....उस का दूध दोहना। (18)....उस का गोश्त। या (19)....अन्डे पकाना, भूनना। (20)....बेचना। (21)....ख़रीदना। (22)....खाना। (23)....अपना या दूसरे का नाख़ुन कतरना या दूसरे से अपना कतरवाना। (24)....सर से पाउं तक कहीं से कोई बाल किसी त़रह़ जुदा करना। (25)....मुंह, या (26)....सर किसी कपड़े वग़ैरा से छुपाना (27)....बस्ता या कपड़े की बुक़ची या गठड़ी सर पर रखना। (28)....इमामा बांधना। (29)....बुरक़अ़ (30)....दस्ताने पहनना। (31)....मोज़े या जुर्राबें वग़ैरा जो वस्ते़ क़दम को छुपाए ....

बाब नम्बर 2 : इब्तिदाए सफ़र से वापसी तक के दस आदाब

﴾1﴿.....घर से निकलने से ले कर एह़राम तक के आदाब :

इस में आठ उमूर मस्नून हैं :

(1).....**माल से मुतअ़ल्लिक़ उमूर :** ह़ज पर जाने वाला तौबा से इब्तिदा करे, लोगों के हुक़ूक़ अदा करे, क़र्ज़ वग़ैरा लिया हो तो वापस करे, ज़ेरे कफ़ालत लोगों को वापसी तक के अख़राजात दे, लोगों की अमानतें पास हों तो लौटा दे, अपने साथ पाक ह़लाल माल ले जाए जो उसे जाने से वापसी तक के लिये काफ़ी हो बल्कि इतना माल हो कि ख़र्च करने नीज़ कमज़ोरों और फ़क़ीरों के साथ ह़ुस्ने सुलूक करने की गुन्जाइश हो, निकलने से पहले कोई चीज़ सदक़ा करे, सुवार होने के लिये एक क़वी सुवारी ख़रीद ले जो कमज़ोर न हो या किराए पर ले ले, अगर किराए पर ले तो सुवारी के मालिक को सब कुछ बता दे कि वोह कितना सामान लादेगा थोड़ा या ज़ियादा और इस में उस की रिज़ामन्दी ह़ासिल कर ले।

(2).....**रफ़ीक़े सफ़र से मुतअ़ल्लिक़ सुन्नतें :** उसे चाहिये कि किसी नेक शख़्स को रफ़ीक़े सफ़र बनाए जो भलाई का ख़्वाहां और इस पर मदद गार हो कि अगर येह भूल जाए तो वोह याद दिलाए और याद हो तो इस की मदद करे, अगर येह बुज़दिली का मुज़ाहरा करे तो वोह इसे शुजाअ़त पर आमादा करे, अगर आ़जिज़ आ जाए तो वोह इसे क़वी करे, अगर (मसाइब व आलाम के बाइ़ष) येह तंग दिल हो तो वोह इसे सब्र की तल्क़ीन करे, अपने मुक़ीम दोस्तों, भाइयों और पड़ोसियों से रुख़्सत होते वक़्त उन्हें दुआ़ओं की दरख़्वास्त करे क्यूंकि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उन की दुआ़ओं में भलाई रखी है।

..... (जहां अ़रबी जूते का तस्मा होता है) पहनना अगर जूतियां न हों तो मोज़े काट कर पहनें कि वोह तस्मे की जगह न छुपे। (32)....सिला कपड़ा पहनना। (33)....ख़ुश्बू बालों, या (34)....बदन, या (35)....कपड़ों में लगाना। (36).....मिलागीरी या कुसुम, कैसर गरज़ किसी ख़ुश्बू के रंगे कपड़े पहनना जब कि अभी ख़ुश्बू दे रहे हों। (37)....ख़ालिस ख़ुश्बू मुश्क, अ़म्बर, ज़ा'फ़रान, जावतरी, लोंग, इलाइची, दारचीनी, ज़नजबील वग़ैरा खाना। (38)....ऐसी ख़ुश्बू का आंचल में बांधना जिस में फ़िल ह़ाल महक हो जैसे मुश्क, अ़म्बर, ज़ा'फ़रान। (39)....सर या दाढ़ी को ख़त़मी या किसी ख़ुश्बूदार या ऐसी चीज़ से धोना जिस से जूएं मर जाएं। (40)....वस्मा या मेहंदी का ख़िज़ाब लगाना। (41)....गुन्द वग़ैरा से बाल जमाना। (42)....ज़ैतून, या (43)....तिल का तेल अगर्चे बे ख़ुश्बू हो बालों या बदन में लगाना। (44)....किसी का सर मुन्डना अगर्चे उस का एह़राम न हो। (45)....जूं मारना। (46)....फैंकना। (47)....किसी को इस के मारने का इशारा करना। (48)....कपड़ा इस के मारने को धोना। या (49)...धूप में डालना। (50)....बालों में पारा वग़ैरा इस के मारने को लगाना गरज़ जूं के हलाक पर किसी त़रह़ बाइ़ष होना।

किसी को रुख़्सत करते वक़्त की दुआ :

रुख़्सत के वक़्त येह दुआ पढ़ना सुन्नत है : اَسْتَوْدِعُ اللّٰهَ دِيْنَكَ وَاَمَانَتَكَ وَخَوَاتِيْمَ عَمَلِكَ *या'नी मैं तेरे दीन, तेरी अमानत और तेरे अ़मल के ख़ातिमे को* ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ *के सिपुर्द करता हूं।*[1]

हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم जब किसी को रुख़्सत फ़रमाते तो येह दुआ पढ़ते : "فِيْ حِفْظِ اللّٰهِ وَكَنَفِهٖ زَوَّدَكَ اللّٰهُ التَّقْوٰى وَغَفَرَ ذَنْبَكَ وَوَجَّهَكَ لِلْخَيْرِ اَيْنَمَا كُنْتَ" *या'नी मैं तुझे* ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ *की ह़िफ़ाज़त और उस की पनाह में देता हूं।* ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ *तक़्वा को तेरा तोशा करे, तेरे गुनाह बख़्श दे और तू जहां भी हो तेरे लिये भलाई मुयस्सर करे।"* [2]

(3).....**घर से निकलते वक़्त की सुन्नतें :** जब घर से निकलने का इरादा करे तो पहले दो रक्अ़त नमाज़ पढ़े, पहली रक्अ़त में सूरए फ़ातिहा के बा'द सूरए काफ़िरून और दूसरी में सूरए इख़्लास पढ़े, सलाम फेरने के बा'द हाथ उठा कर इख़्लास व सच्ची निय्यत से बारगाहे इलाही में दुआ करे।

सफ़रे ह़ज पर रवाना होने से पहले की दुआ :

اَللّٰهُمَّ اَنْتَ الصَّاحِبُ فِي السَّفَرِ وَاَنْتَ الْخَلِيْفَةُ فِي الْاَهْلِ وَالْمَالِ وَالْوَلَدِ وَالْاَصْحَابِ اِحْفَظْنَا وَاِيَّاهُمْ مِنْ كُلِّ اٰفَةٍ وَعَاهَةٍ اَللّٰهُمَّ اِنَّا نَسْئَلُكَ فِيْ مَسِيْرِنَا هٰذَا الْبِرَّ وَالتَّقْوٰى وَمِنَ الْعَمَلِ مَا تَرْضٰى اَللّٰهُمَّ اِنَّا نَسْئَلُكَ اَنْ تُطْوِيَ لَنَا الْاَرْضَ وَتُهَوِّنَ عَلَيْنَا السَّفَرَ وَاَنْ تَرْزُقَنَا فِيْ سَفَرِنَا سَلَامَةَ الْبَدَنِ وَالدِّيْنِ وَالْمَالِ وَتُبَلِّغَنَا حَجَّ بَيْتِكَ وَزِيَارَةَ قَبْرِ نَبِيِّكَ مُحَمَّدٍ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اَللّٰهُمَّ اِنَّا نَعُوْذُ بِكَ مِنْ وَعْثَاءِ السَّفَرِ وَكَآبَةِ الْمُنْقَلَبِ وَسُوْءِ الْمَنْظَرِ فِي الْاَهْلِ وَالْمَالِ وَالْوَلَدِ وَالْاَصْحَابِ اَللّٰهُمَّ اجْعَلْنَا وَاِيَّاهُمْ فِيْ جِوَارِكَ وَلَا تَسْلُبْنَا وَاِيَّاهُمْ نِعْمَتَكَ وَلَا تُغَيِّرْ مَا بِنَا وَبِهِمْ مِنْ عَافِيَتِكَ

या'नी : ऐ ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ *तू ही सफ़र का रफ़ीक़ और अहलो माल और अवलाद व अह़बाब की ह़िफ़ाज़त फ़रमाने वाला है, हमें और इन्हें हर आफ़त व मुसीबत से मह़फ़ूज़ फ़रमा। ऐ* ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ *हम अपने इस सफ़र में नेकी, तक़्वा और उस अ़मल का सुवाल करते हैं जिस में तेरी रिज़ा हो। ऐ* ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ *हम सुवाल करते हैं कि हमारे लिये ज़मीन लपेट दे, हम पर सफ़र आसान फ़रमा, हमें सफ़र में बदन, दीन और माल की सलामती अ़त़ा फ़रमा और हमें अपने घर का ह़ज और अपने*

---

1 ......سنن الترمذی، کتاب الدعوات، باب مایقول اذا ودع انسانًا، الحدیث:۳۴۵۴، ج۵، ص۲۷۷۔

2 ......کنزالعمال، کتاب السفر، فصل فی آدابه، الحدیث:۱۷۵۹۱، ج۶، ص۳۰۸۔

प्यारे नबी ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के मज़ारे पुर अन्वार की ज़ियारत की सआदत अ़ता फ़रमा । ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हम सफ़र की सख़्ती, बुरी वापसी, अहलो माल और अवलाद व असह़ाब के बुरे ह़ालात देखने से तेरी पनाह मांगते हैं । ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें और इन्हें अपने जवारे रह़मत में जगह अ़ता फ़रमा, हम से ने'मत सल्ब न फ़रमा और अ़ता की हुई आ़फ़िय्यत को हम से तब्दील न फ़रमाना ।

(4)....दरवाज़े पर पहुंचने से मुतअ़ल्लिक़ सुन्नतें : जब घर के दरवाज़े पर पहुंचे तो दुआ़ पढ़े :

بِسْمِ اللّٰهِ تَوَكَّلْتُ عَلَى اللّٰهِ وَلَاحَوْلَ وَلَاقُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ اَعُوْذُ بِاللّٰهِ رَبِّ اَعُوْذُ بِكَ اَنْ اُضِلَّ اَوْ اُضَلَّ اَوْ اُذِلَّ اَوْ اُذَلَّ اَوْ اُزِلَّ اَوْ اُزَلَّ اَوْ اَظْلِمَ اَوْ اُظْلَمَ اَوْ اَجْهَلَ اَوْ يُجْهَلَ عَلَيَّ اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ لَمْ اَخْرُجْ اَشَرًا بَطَرًا وَلَارِيَاءً وَّلَاسُمْعَةً بَلْ خَرَجْتُ اِتِّقَاءَ سَخَطِكَ وَابْتِغَاءَ مَرْضَاتِكَ وَقَضَاءَ فَرْضِكَ وَاتِّبَاعَ سُنَّةِ نَبِيِّكَ وَشَوْقًا اِلٰى لِقَائِكَ

या'नी : मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नाम से जाता हूं, मैं ने उसी पर भरोसा किया, गुनाहों से बचने की त़ाक़त और नेकी करने की तौफ़ीक़ नहीं मगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से, मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की पनाह त़लब करता हूं । ऐ रब्ब عَزَّوَجَلَّ मैं तेरी पनाह मांगता हूं इस से कि मैं गुमराह होऊं या गुमराह किया जाऊं, ज़लील होऊं या ज़लील किया जाऊं, लग़ज़िश करूं या मुझे कोई लग़ज़िश दे, किसी पर ज़ुल्म करूं या मुझ पर ज़ुल्म किया जाए, जाहिल बनूं या जाहिल बनाया जाए । ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मैं ना शुक्री, तकब्बुर और दिखावे के लिये नहीं निकला बल्कि तेरी नाराज़ी से डरने, तेरी रिज़ा चाहने, तेरे फ़र्ज़ को अदा करने और तेरे नबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नत की पैरवी में और तेरी मुलाक़ात के शौक़ में निकला हूं ।"

रवाना होते वक़्त की दुआ़ :

जब रवाना हो तो येह दुआ़ पढ़े :

اَللّٰهُمَّ بِكَ انْتَشَرْتُ وَعَلَيْكَ تَوَكَّلْتُ وَبِكَ اعْتَصَمْتُ وَاِلَيْكَ تَوَجَّهْتُ اَللّٰهُمَّ اَنْتَ ثِقَتِيْ وَاَنْتَ رَجَائِيْ فَاكْفِنِيْ مَا اَهَمَّنِيْ وَمَا لَا اَهْتَمُّ بِهٖ وَمَا اَنْتَ اَعْلَمُ بِهٖ مِنِّيْ عَزَّ جَارُكَ وَجَلَّ ثَنَاؤُكَ وَلَا اِلٰهَ غَيْرُكَ اَللّٰهُمَّ زَوِّدْنِي التَّقْوٰى وَاغْفِرْلِيْ ذَنْبِيْ وَوَجِّهْنِيْ لِلْخَيْرِ اَيْنَمَا تَوَجَّهْتُ

या'नी : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तेरी मदद से मैं निकला, तुझी पर भरोसा करता, तेरी पनाह लेता और तेरी त़रफ़ मुतवज्जेह होता हूं । ऐ **अल्लाह** मुझे तुझी पर ए'तिमाद है और तू ही मेरी उम्मीद गाह, मुझे किफ़ायत कर उस चीज़ से जो मुझे फ़िक्र में डाले और उस से जिस की मैं फ़िक्र नहीं करता और उस से जिसे तू मुझ से ज़ियादा जानता है, तेरी पनाह लेने वाला बा इ़ज़्ज़त है, तेरी षना बुलन्द व बाला है और तेरे सिवा कोई मा'बूद नहीं । ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तक़्वा को मेरा ज़ादे राह कर और मेरे गुनाहों को बख़्श दे और मुझे ख़ैर की त़रफ़ मुतवज्जेह कर जिधर मैं तवज्जोह करूं ।"

जिस मन्ज़िल से चले इसे पढ़ लिया करे ।

सुवार होते वक़्त की दुआ़ :

(5)......सुवार होने से मुतअ़ल्लिक़ सुन्नतें : जब सुवार हो तो येह दुआ़ पढ़े :

بِسْمِ اللّٰهِ وَبِاللّٰهِ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ تَوَكَّلْتُ عَلَى اللّٰهِ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْمِ مَا شَاءَ اللّٰهُ كَانَ وَمَا لَمْ يَشَاْءُ لَمْ يَكُنْ،سُبْحٰنَ الَّذِيْ سَخَّرَ لَنَا هٰذَا وَمَا كُنَّا لَهٗ مُقْرِنِيْنَ وَاِنَّا اِلٰى رَبِّنَا لَمُنْقَلِبُوْنَ اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ وَجَّهْتُ وَجْهِيَ اِلَيْكَ وَفَوَّضْتُ اَمْرِيْ كُلَّهٗ اِلَيْكَ وَتَوَكَّلْتُ فِيْ جَمِيْعِ اُمُوْرِيْ عَلَيْكَ اَنْتَ حَسْبِيْ وَنِعْمَ الْوَكِيْلُ

*या'नी : मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नाम से सुवार होता हूं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ सब से बड़ा है, मैं ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर भरोसा किया, गुनाहों से बचने की ता़क़त और नेकी करने की तौफ़ीक़ नहीं मगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से जो सब से बुलन्द अ़ज़मत वाला है, जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने चाहा हुवा, जो नहीं चाहा न हुवा, पाकी है उसे जिस ने इस सुवारी को हमारे बस में कर दिया और येह हमारे बूते की न थी और बेशक हमें अपने रब्ब की त़रफ़ पलटना है, ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मैं तेरी त़रफ़ मुतवज्जेह हुवा, अपना तमाम तर मुआ़मला तेरे सिपुर्द किया, अपने तमाम उमूर में तुझ पर ही भरोसा किया तू मुझे काफ़ी है और अच्छा कार साज़ ।"*

जब सुवारी पर पुर सुकून हो कर बैठ जाए तो सात बार येह पढ़े : سُبْحٰنَ اللّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَلَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ और येह भी पढ़े : اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ هَدَانَا لِهٰذَا وَمَا كُنَّا لِنَهْتَدِيَ لَوْلَا اَنْ هَدَانَا اللّٰهُ اَللّٰهُمَّ اَنْتَ الْحَامِلُ عَلَى الظَّهْرِ وَاَنْتَ الْمُسْتَعَانُ عَلَى الْاُمُوْرِ

*या'नी : पाकी है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये, तमाम ख़ूबियां **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई मा'बूद नहीं और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ सब से बड़ा है । सब ख़ूबियां **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को जिस ने हमें उस की राह दिखाई और हम राह न पाते अगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ न दिखाता । ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तू इस (या'नी सुवारी) की पीठ पर बिठाने वाला है और तमाम उमूर में तू ही मददगार है ।"*

(6).....किसी जगह ठहरने से मुतअ़ल्लिक़ सुन्नतें : जब तक दिन गर्म न हो जाए किसी जगह पड़ाव न करे, ज़ियादा तर सफ़र रात में हो कि हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "तुम रात में सफ़र किया करो क्यूंकि रात में ज़मीन लपेट दी जाती है जो दिन में नहीं लपेटी जाती ।"[1]

किसी मन्ज़िल पर ठहरे तो येह दुआ़ पढ़े :

रात में कम सोए ताकि सफ़र पर मदद मिले, जब किसी मन्ज़िल पर ठहरे तो येह दुआ़ पढ़े :

اَللّٰهُمَّ رَبَّ السَّمٰوٰتِ السَّبْعِ وَمَا اَظْلَلْنَ وَرَبَّ الْاَرَضِيْنَ السَّبْعِ وَمَا اَقْلَلْنَ وَرَبَّ الشَّيٰطِيْنِ وَمَا اَضْلَلْنَ وَرَبَّ الرِّيَاحِ وَمَا ذَرَيْنَ وَرَبَّ الْبِحَارِ وَمَا جَرَيْنَ اَسْئَلُكَ خَيْرَ هٰذَا الْمَنْزِلِ وَخَيْرَ اَهْلِهٖ وَاَعُوْذُ بِكَ مِنْ شَرِّهٖ وَشَرِّ مَا فِيْهِ اِصْرِفْ عَنِّيْ شَرَّ شِرَارِهِمْ

1 ......سنن ابی داود، کتاب الجهاد، باب فی الدرجة، الحديث: ۲۵۷۱، ج۳، ص۴۰، بدون قوله:مالاتطوی بالنهار۔

*या'नी ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ सातों आस्मानों के रब्ब और उन के जिन पर इन का साया है, सातों ज़मीनों के रब्ब और उन के जिन को इन्हों ने उठा रखा है, शयात़ीन के रब्ब और उन के जिन्हों ने गुमराह किया, हवाओं के रब्ब और उन के जिसे वोह उड़ाएं, समन्दरों के रब्ब और उन के जिसे वोह बहाएं ! मैं तुझ से इस मक़ाम और इस में रहने वालों की भलाई का सुवाल करता हूं, इस के शर और इस में मौजूद चीज़ों के शर से तेरी पनाह त़लब करता हूं, यहां के शरीर लोगों के शर को मुझ से दूर कर दे।"*

जब किसी मक़ाम पर ठहरे तो दो रक्अ़त नमाज़ पढ़ कर येह दुआ़ पढ़े :

اَعُوْذُ بِكَلِمَاتِ اللّٰهِ التَّآمَّاتِ الَّتِیْ لَا یُجَاوِزُهُنَّ بِرٌّ وَّلَا فَاجِرٌ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ

*या'नी मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के उन कलिमाते ताम्मा के साथ उस की मख़्लूक़ के शर से पनाह मांगता हूं जिन से कोई नेक व बद तजावुज़ नहीं कर सकता।*

रात के वक़्त येह दुआ़ पढ़े :

जब रात छा जाए तो येह दुआ़ पढ़े :

یَا اَرْضُ! رَبِّیْ وَرَبُّكِ اللّٰهُ اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شَرِّكِ وَشَرِّ مَا فِیْكِ وَشَرِّ مَا دَبَّ عَلَیْكِ اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شَرِّ كُلِّ اَسَدٍ وَّاَسْوَدَ وَحَیَّةٍ وَعَقْرَبٍ وَمِنْ شَرِّ سَاكِنِ الْبَلَدِ وَوَالِدٍ وَّمَا وَلَدَ وَلَهٗ مَا سَكَنَ فِی الَّیْلِ وَالنَّهَارِ وَهُوَ السَّمِیْعُ الْعَلِیْمُ

*या'नी : ऐ ज़मीन ! मेरा और तेरा रब्ब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ है, मैं तेरे शर, तुझ में मौजूद चीज़ों के शर और तुझ पर चलने वाली चीज़ों के शर से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की पनाह चाहता हूं। मैं शेर, अज़्दहे, सांप, बिच्छू, शहर में रहने वाले और बाप (शैत़ान) और उस की अवलाद के शर से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की पनाह चाहता हूं और उसी का है जो कुछ बसता है रात और दिन में और वोही है सुनता जानता।"*

(7).....**हि़फ़ाज़ती इक़्दामात :** दिन के वक़्त ख़ूब एह़तियात़ बरते और क़ाफ़िले से अलग तन्हा न चले क्यूंकि बा'ज़ अवक़ात इन्सान गफ़्लत में क़त्ल कर दिया जाता या क़ाफ़िले से बिछड़ जाता है, रात को होशियार हो कर सोए। अगर रात के इब्तिदाई हि़स्से में आराम करे तो बाज़ूओं को बिछा ले और अगर आख़िरी हि़स्से में सोए तो बाज़ूओं को खड़ा कर ले और सर हथेली पर रख ले कि "प्यारे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم सफ़र में इसी त़रह़ आराम फ़रमाया करते थे।"[1] क्यूंकि बसा अवक़ात नींद का ऐसा ग़लबा होता है कि सूरज तुलूअ़ हो जाता (और फ़ज्र क़ज़ा हो जाती) है और बन्दे को ख़बर तक नहीं होती ह़ालांकि नमाज़ जो क़ज़ा हो जाती है वोह ह़ज में मिलने वाले षवाब से अफ़्ज़ल थी। रात के वक़्त बेहतर येह है कि दो रफ़ीक़ बारी बारी हि़फ़ाज़त करें कि जब एक सो जाए तो दूसरा हि़फ़ाज़त करे, येही सुन्नत है।

---

1 ......الشمائل المحمدیۃ للترمذی، باب ماجاء فی صفۃ نوم رسول اللّٰہ، الحدیث:۲۴۷، ص ۱۵۹، مفهومًا۔

दुश्मन या किसी दरिन्दे का ख़ौफ़ हो तो येह दुआ़ पढ़े :

अगर रात या दिन में दुश्मन या किसी दरिन्दे के ह़म्ले का ख़ौफ़ हो तो येह दुआ़ पढ़े :

"اَللّٰهُ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ اَلْحَیُّ الْقَیُّوْمُ ۚ

لَا تَاْخُذُهٗ سِنَةٌ وَّلَا نَوْمٌ ؕ لَهٗ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَمَا فِی الْاَرْضِ ؕ مَنْ ذَا الَّذِیْ یَشْفَعُ عِنْدَهٗۤ اِلَّا بِاِذْنِهٖ ؕ یَعْلَمُ مَا بَیْنَ اَیْدِیْهِمْ وَمَا
خَلْفَهُمْ ۚ وَلَا یُحِیْطُوْنَ بِشَیْءٍ مِّنْ عِلْمِهٖۤ اِلَّا بِمَا شَآءَ ۚ وَسِعَ كُرْسِیُّهُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ ۚ وَلَا یَـٴُـوْدُهٗ حِفْظُهُمَا ۚ وَهُوَ الْعَلِیُّ
الْعَظِیْمُ ﴿۲۵۵﴾ لَاۤ اِكْرَاهَ فِی الدِّیْنِ ۙ قَدْ تَّبَیَّنَ الرُّشْدُ مِنَ الْغَیِّ ۚ فَمَنْ یَّكْفُرْ بِالطَّاغُوْتِ وَیُؤْمِنْۢ بِاللّٰهِ فَقَدِ اسْتَمْسَكَ بِالْعُرْوَةِ
الْوُثْقٰی ۚ لَا انْفِصَامَ لَهَا ؕ وَاللّٰهُ سَمِیْعٌ عَلِیْمٌ ﴿۲۵۶﴾ اَللّٰهُ وَلِیُّ الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا ۙ یُخْرِجُهُمْ مِّنَ الظُّلُمٰتِ اِلَی النُّوْرِ ؕ۬ وَالَّذِیْنَ كَفَرُوْۤا
اَوْلِیٰٓـٴُـهُمُ الطَّاغُوْتُ ۙ یُخْرِجُوْنَهُمْ مِّنَ النُّوْرِ اِلَی الظُّلُمٰتِ ؕ اُولٰٓـئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِیْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿۲۵۷﴾ (پ۳، البقرۃ: ۲۵۵ تا ۲۵۷)،
شَهِدَ اللّٰهُ اَنَّهٗ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۙ وَالْمَلٰٓـئِكَةُ وَاُولُوا الْعِلْمِ قَآئِمًۢا بِالْقِسْطِ ؕ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْعَزِیْزُ الْحَكِیْمُ ﴿۱۸﴾ اِنَّ الدِّیْنَ عِنْدَ اللّٰهِ الْاِسْلَامُ ۟
وَمَا اخْتَلَفَ الَّذِیْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ اِلَّا مِنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَهُمُ الْعِلْمُ بَغْیًۢا بَیْنَهُمْ ؕ وَمَنْ یَّكْفُرْ بِاٰیٰتِ اللّٰهِ فَاِنَّ اللّٰهَ سَرِیْعُ الْحِسَابِ ﴿۱۹﴾ (پ۳، اٰل عمران: ۱۸، ۱۹)

सूरए इख़्लास, सूरए फ़लक़ और सूरए नास फिर येह दुआ़ पढ़े :

بِسْمِ اللّٰهِ مَا شَاءَ اللّٰهُ لَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ حَسْبِیَ اللّٰهُ تَوَكَّلْتُ عَلَى اللّٰهِ مَا شَاءَ اللّٰهُ لَا يَاْتِیْ بِالْخَيْرِ اِلَّا اللّٰهُ مَا شَاءَ اللّٰهُ لَا يَصْرِفُ السُّوْءَ اِلَّا اللّٰهُ
حَسْبِیَ اللّٰهُ وَكَفٰى سَمِعَ اللّٰهُ لِمَنْ دَعَا لَيْسَ وَرَاءَ اللّٰهِ مُنْتَهٰى وَلَا دُوْنَ اللّٰهِ مَلْجَاً كَتَبَ اللّٰهُ لَاَغْلِبَنَّ اَنَا وَرُسُلِیْ اِنَّ اللّٰهَ قَوِیٌّ عَزِيْزٌ تَحَصَّنْتُ
بِاللّٰهِ الْعَظِيْمِ وَاسْتَغَثْتُ بِالْحَیِّ الَّذِیْ لَا يَمُوْتُ اَللّٰهُمَّ احْرُسْنَا بِعَيْنِكَ الَّتِیْ لَا تَنَامُ وَاكْنُفْنَا بِرُكْنِكَ الَّذِیْ لَا يُرَامُ اَللّٰهُمَّ ارْحَمْنَا بِقُدْرَتِكَ
عَلَيْنَا فَلَا نَهْلِكُ وَاَنْتَ ثِقَتُنَا وَرَجَاؤُنَا اَللّٰهُمَّ اعْطِفْ عَلَيْنَا قُلُوْبَ عِبَادِكَ وَاِمَائِكَ بِرَاْفَةٍ وَّرَحْمَةٍ اِنَّكَ اَنْتَ اَرْحَمُ الرّٰحِمِيْنَ

या'नी : मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नाम से शुरूअ़ करता हूं जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ चाहे (वोही होता है), **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई त़ाक़त नहीं, मुझे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ काफ़ी है मैं ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर भरोसा किया जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ चाहे (वोही होता है), **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई भलाई नहीं ला सकता जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ चाहे (वोही होता है), **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई बुराई को नहीं टाल सकता, मुझे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ काफ़ी है, वोह पुकारने वाले की पुकार सुनता है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई इन्तिहा व ठिकाना नहीं और ना ही उस के सिवा कोई पनाहगाह है, **अल्लाह** लिख चुका कि ज़रूर मैं ग़ालिब आऊंगा और मेरे रसूल, बेशक **अल्लाह** कुव्वत वाला इ़ज़्ज़त वाला है, मैं ने अ़ज़मत वाले रब्ब के क़ल्ए़ में पनाह ली, उस ज़िन्दा की बारगाह में इस्तिग़ाषा किया जिसे कभी मौत नहीं। ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपनी उस नज़र के साथ हमारी ह़िफ़ाज़त फ़रमा जो सोती नहीं, अपने उस सहारे के साथ हमारी ह़िफ़ाज़त फ़रमा जो कभी जुदा नहीं होता। ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हम पर अपनी क़ुदरत के मुत़ाबिक़ रह़्म फ़रमा ताकि हम हलाक न हों कि हमें तुझ पर ही भरोसा है और तू ही हमारी उम्मीदगाह है। ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपने बन्दों और बन्दियों के दिलों को अपनी रह़मत व मेहरबानी से हम पर मेहरबान फ़रमा, बेशक तू सब से बढ़ कर रह़्म फ़रमाने वाला है।"

(8)......**बुलन्दी पर चढ़ने और ढलान में उतरने की सुन्नतें :** जब रास्ते में ज़मीन के किसी बुलन्द मक़ाम पर पहुंचे तो तीन बार اَللّٰهُ اَكْبَر कहना और येह दुआ पढ़ना मुस्तहब है : اَللّٰهُمَّ لَكَ الشَّرَفُ عَلٰى كُلِّ شَرَفٍ وَّلَكَ الْحَمْدُ عَلٰى كُلِّ حَالٍ या'नी : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तू सब से बुजु़र्ग व बरतर है और हर हा़ल में तेरी ही ह़म्द है। जब ढलान में उतरे तो سُبْحٰنَ الله कहे।

डर-ख़ौफ़ मह़सूस हो तो येह दुआ पढ़े :

दौराने सफ़र डर-ख़ौफ़ मह़सूस हो तो येह दुआ पढ़े :

سُبْحٰنَ اللهِ الْمَلِكِ الْقُدُّوْسِ رَبِّ الْمَلَائِكَةِ وَالرُّوْحِ جَلَّلَتِ السَّمٰوٰتُ بِالْعِزَّةِ وَالْجَبَرُوْتِ

या'नी : *पाक है अल्लाह जो मुक़द्दस बादशाह है, वोह फ़िरिश्तों और जिब्राईल (عَلَيْهِمُ السَّلَام) का रब्ब है, उसी की इ़ज़्ज़त व ग़लबे के साथ आस्मानों को बुजु़र्गी ह़ासिल हुई।*

﴾2﴿.....एह़राम बांधने से ले कर दुख़ूले मक्का तक के आदाब :

इस में पांच उमूर मुस्तह़ब हैं :

(1).....**गुस्ल से मुतअ़ल्लिक़ उमूर :** एह़राम की निय्यत से गुस्ल करे या'नी जब उस मशहूर मीक़ात तक पहुंचे जहां से लोग एह़राम बांधते हैं (तो गुस्ल करे) और ख़ूब सफ़ाई सुथराई से काम ले, दाढ़ी और सर में कंघी करे, नाख़ुन तराशे, और मूंछें पस्त करे अल ग़रज़ त़हारत के बाब में बयान किये गए त़रीक़े के मुत़ाबिक़ अच्छी त़रह़ गुस्ल करे।

(2)....**कपड़ों से मुतअ़ल्लिक़ उमूर :** सिले हुए कपड़े न पहने बल्कि एह़राम की दो चादरें पहने, सफ़ेद अफ़्ज़ल हैं कि सफ़ेद कपड़े अल्लाह عَزَّوَجَلَّ को ज़ियादा मह़बूब हैं। एक ऊपर ओढ़ ले और दूसरी को बत़ौरे तहबन्द बांध ले, कपड़ों और जिस्म पर ख़ुश्बू लगाए, ऐसी ख़ुश्बू लगाने में कोई ह़रज नहीं कि एह़राम के बा'द जिस का जिर्म बाक़ी रहे क्यूंकि हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने एह़राम बांधने से पहले जो ख़ुश्बू इस्ति'माल की थी बांधने के बा'द भी कुछ ख़ुश्बू सरे अन्वर पर पाई गई थी।(1) (2)

---

❶...... **अह़नाफ़ के नज़दीक :** बदन और कपड़ों पर ख़ुश्बू लगाएं कि सुन्नत है, अगर ख़ुश्बू ऐसी है कि इस का जिर्म (या'नी तेह) बाक़ी रहेगा जैसे मुश्क वग़ैरा तो कपड़ों में न लगाएं। (बहारे शरीअ़त, जि. 1 स. 1072)

❷......صحيح مسلم، كتاب الحج، باب الطيب للمحرم عندالاحرام، الحديث: ١١٩٠، ص ٦٠٩، مفهومًا۔

(3).....**एह्राम बांधने के बा'द के उमूर :** एह्राम बांधने के बा'द कुछ देर तवक्कुफ़ करे यहां तक कि सुवारी उसे ले कर उठे जब कि सुवार हो, अगर पैदल हो तो चलना शुरूअ़ करे, इस वक़्त हज या उ़मरे के एह्राम की निय्यत करे। हज्जे क़िरान या इफ़राद जो भी उस का इरादा हो, एह्राम के इनइक़ाद के लिये फ़क़त़ निय्यत काफ़ी है लेकिन सुन्नत येह है कि निय्यत के साथ तल्बिय्या भी कह ले और यूं कहे : ''لَبَّيْكَ اَللّٰهُمَّ لَبَّيْكَ لَبَّيْكَ لَاشَرِيْكَ لَكَ لَبَّيْكَ اِنَّ الْحَمْدَ وَالنِّعْمَةَ لَكَ وَالْمُلْكَ لَا شَرِيْكَ لَكَ

या'नी : मैं ह़ाज़िर हूं, ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मैं ह़ाज़िर हूं, मैं ह़ाज़िर हूं, तेरा कोई शरीक नहीं, मैं ह़ाज़िर हूं, बेशक ह़म्द, ना'त और बादशाही तेरे लिये है, तेरा कोई शरीक नहीं।''

अगर ज़ियादा कहना चाहे तो यूं कहे : ''

لَبَّيْكَ وَسَعْدَيْكَ وَالْخَيْرُ كُلُّهُ بِيَدَيْكَ وَالرَّغْبَاءُ اِلَيْكَ لَبَّيْكَ بِحَجَّةٍ حَقًّا تَعَبُّدًا وَّرِقًّا اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ مُحَمَّدٍ

या'नी : मैं ह़ाज़िर हूं और बार बार ह़ाज़िर हूं और तमाम भलाई तेरे क़ब्ज़ए क़ुदरत में है और तेरी त़रफ़ रग़बत है। मैं तेरी बन्दगी व ग़ुलामी करते हुए ह़क़ के साथ ह़ज के लिये ह़ाज़िर हूं। ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मुह़म्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और उन की आल पर रह़मत नाज़िल फ़रमा।''

एह्राम बांधने के बा'द येह दुआ़ पढ़े :

(4)......**तल्बिय्या कह लेने के बा'द के उमूर :** जब तल्बिय्या के साथ एह्राम मुन्अ़क़िद हो जाए तो येह दुआ़ पढ़ना मुस्तह़ब है :

اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اُرِيْدُ الْحَجَّ فَيَسِّرْهُ لِيْ وَاَعِنِّيْ عَلٰى اَدَاءِ فَرْضِهٖ وَتَقَبَّلْهُ مِنِّيْ اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ
نَوَيْتُ اَدَاءَ فَرِيْضَتِكَ فِي الْحَجِّ فَاجْعَلْنِيْ مِنَ الَّذِيْنَ اسْتَجَابُوْا لَكَ وَاٰمَنُوْا بِوَعْدِكَ وَاتَّبَعُوْا اَمْرَكَ وَاجْعَلْنِيْ مِنْ وَفْدِكَ الَّذِيْنَ رَضِيْتَ
عَنْهُمْ وَارْتَضَيْتَ وَقَبِلْتَ فَيَسِّرْ لِيْ اَدَاءَ مَا نَوَيْتُ مِنَ الْحَجِّ اَللّٰهُمَّ قَدْ اَحْرَمَ لَكَ لَحْمِيْ وَشَعْرِيْ وَدَمِيْ وَعَصَبِيْ وَمُخِّيْ وَعِظَامِيْ
عِظَامِيْ وَحَرَّمْتُ عَلٰى نَفْسِي النِّسَاءَ وَالطِّيْبَ وَلُبْسَ الْمُخِيْطِ اِبْتِغَاءَ وَجْهِكَ وَالدَّارَ الْاٰخِرَةَ

या'नी : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मैं ह़ज का इरादा करता हूं, इसे मेरे लिये आसान फ़रमा दे, ह़ज फ़र्ज़ अदा करने पर मेरी मदद फ़रमा और इसे मेरी त़रफ़ से क़बूल फ़रमा। ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मैं ने ह़ज में तेरे फ़र्ज़ को अदा करने की निय्यत की, तू मुझे उन लोगों में से बना जिन्हों ने तेरा हुक्म माना, तेरे वा'दे पर ईमान लाए, तेरे हुक्म की पैरवी की, उन लोगों के गुरोह में से कर जिन से तू राज़ी हुवा, जिन्हें तूने राज़ी किया और जिन्हें मक़्बूल बनाया। ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मैं ने ह़ज का इरादा किया है लिहाज़ा इस की अदाएगी मेरे लिये आसान फ़रमा। ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मेरे गोश्त, बालों, ख़ून, आ'साब, मग़ज़ और हड्डियों ने तेरे लिये एह्राम बांधा और मैं ने तेरी रिज़ा जोई और दारे आख़िरत के ह़ुसूल के लिये औ़रतों, ख़ुश्बू और सिले हुए कपड़ों को ख़ुद पर ह़राम कर लिया।

एह़राम बांधते ही उस पर हमारी माक़ब्ल ज़िक्र कर्दा छे चीज़ें ह़राम हो जाती हैं। लिहाज़ा इन से बचे।

(5)......**बार बार तल्बिय्या कहने से मुतअ़ल्लिक़ उमूर :** एह़राम बांधे हुए बार बार तल्बिय्या कहना मुस्तह़ब है, ख़ुसूसन जब रुफ़क़ा से मुलाक़ात हो, लोग जम्अ़ हों, हर बार चढ़ाई पर चढ़ते, उतरते, सुवारी पर सुवार होते और उतरते वक़्त बा आवाज़े बुलन्द तल्बिय्या कहे लेकिन गला फाड़ कर न कहे, न ही सांस रूके क्यूंकि वोह किसी बहरे या ग़ाइब को नहीं सुना रहा जैसा कि ह़दीष शरीफ़ में वारिद है।[1] नीज़ तीन मसाजिद (या'नी मस्जिदे ह़राम, मस्जिदे मीक़ात और मस्जिदे ख़ैफ़) में बुलन्द आवाज़ से तल्बिय्या कहने में कोई ह़रज नहीं क्यूंकि येह अरकाने ह़ज की जगह वाक़ेअ़ हैं, इन के इलावा दीगर मसाजिद में आहिस्ता आवाज़ से कहने में कोई ह़रज नहीं।

कोई चीज़ अच्छी लगे तो येह पढ़ो :

हु़ज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को जब कोई चीज़ अच्छी लगती तो फ़रमाते : "لَبَّیْكَ اِنَّ الْعَیْشَ عَیْشُ الْاٰخِرَۃ **या'नी** मैं ह़ाज़िर हूं बेशक ज़िन्दगी तो आख़िरत की ज़िन्दगी है।"[2]

(3)......दुख़ूले मक्का से त़वाफ़ तक के आदाब :

इस में छे उमूर मुस्तह़ब हैं :

(1).....**मक्कए मुकर्रमा में दाख़िल होने से मुतअ़ल्लिक़ उमूर :** दुख़ूले मक्का के लिये ज़ी त़वा के मक़ाम पर ग़ुस्ल करे, ह़ज में मुस्तह़ब मस्नून ग़ुस्ल 9 हैं : (1).....मीक़ात से एह़राम के लिये (2)....मक्का में दाख़िल होने के लिये (3)....त़वाफ़े क़ुदूम[3] के लिये (4-5).....वुक़ूफ़े अ़रफ़ा व मुज़्दलिफ़ा के लिये (6-7-8).....(अय्यामे तशरीक़ में) जमरात को कंकरियां मारने के तीन ग़ुस्ल (यौमे नह़्र) जमरए अक़्बा की रमी के लिये ग़ुस्ल करना मुस्तह़ब नहीं।

1......صحيح مسلم، كتاب الذكر والدعاء والتوبة......الخ، الحديث: ٢٧٠٤، ص ١٤٥٠ ـ

2......المسند للامام الشافعي، ومن كتاب المناسك، ص ١٢٢ ـ

3..... मक्कए मुअ़ज़्ज़मा में दाख़िल होने पर (जो) पहला त़वाफ़ किया जाता है उसे त़वाफ़े क़ुदूम कहते हैं येह "इफ़राद" या "क़िरान" की निय्यत से ह़ज करने वालों के लिये सुन्नते मुअक्कदा है।
(रफ़ीक़ुल ह़रमैन, स. 34)

(9).....तवाफ़े वदाअ़ के लिये। ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی के नज़दीक त़वाफ़े ज़ियारत[1] और त़वाफ़े वदाअ़ के लिये नए ग़ुस्ल की ज़रूरत नहीं, इसी त़रह़ येह 7 रह जाते हैं।[2]

हुदूदे ह़रम में दाख़िल होने से पहले की दुआ़ :

(2)..... **हुदूदे ह़रम में दाख़िल होने से मुतअ़ल्लिक़ उमूर :** ह़रम शरीफ़ के शुरूअ़ में दाख़िल होते वक़्त मक्कए मुकर्रमा से बाहर ही येह दुआ़ पढ़े :

اَللّٰھُمَّ ھٰذَا حَرَمُكَ وَاَمْنُكَ فَحَرِّمْ لَحْمِیْ وَدَمِیْ وَشَعْرِیْ وَبَشَرِیْ عَلَی النَّارِ وَاٰمِنِّیْ مِنْ عَذَابِكَ یَوْمَ تَبْعَثُ عِبَادَكَ وَاجْعَلْنِیْ مِنْ اَوْلِیَائِكَ وَاَھْلِ طَاعَتِكَ

***या'नी :** ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ येह तेरा ह़रम और अम्न की जगह है। पस मेरा गोश्त, मेरा ख़ून, मेरे बाल और मेरी खाल आग पर ह़राम फ़रमा दे, जिस दिन तू अपने बन्दों को उठाएगा उस दिन मुझे अ़ज़ाब से मह़फ़ूज़ रखना, मुझे अपने औलिया और इत़ाअ़त गुज़ार बन्दों में से कर दे।"*

मक्का शरीफ़ में दाख़िल होने और निकलने की सुन्नत :

(3).....**मक्का शरीफ़ में दाख़िल होने से मुतअ़ल्लिक़ उमूर :** वादिये अबत़ह़ से मक्का शरीफ़ में दाख़िल हो और वोह षनिय्यए कदा (या'नी कदा की घाटी) है कि मुस्त़फ़ा जाने रह़मत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने आ़म रास्ते से हट कर इसे इख़्तियार फ़रमाया था।[3] लिहाज़ा हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की पैरवी ज़ियादा बेहतर है, जब निकले तो षनिय्यए कुदा से निकले। षनिय्यए कदा बुलन्द जब कि कुदा पस्त घाटी है।

बैतुल्लाह पर पहली नज़र पड़ते वक़्त की दुआ़ :

(4).....जब मक्कए मुकर्रमा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعْظِیْمًا में दाख़िल हो और जूं ही बैतुल्लाह शरीफ़ पर नज़र पड़े तो येह दुआ़ पढ़े :

1..... **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 304 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब रफ़ीक़ुल ह़रमैन सफ़ह़ा 34 पर शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ नक़्ल फ़रमाते हैं : इसे त़वाफ़े इफ़ाज़ा भी कहते हैं। येह ह़ज का रुक्न है। इस का वक़्त 10 ज़ुल हिज्जा की सुब्ह़ सादिक़ से बारह ज़ुल हिज्जा के ग़ुरूबे आफ़्ताब तक है मगर दस ज़िल हिज्जा को करना अफ़्ज़ल है।

2..... **अह़नाफ़ के नज़दीक :** अ़रफ़ा के दिन और एह़राम बांधते वक़्त ग़ुस्ल करना सुन्नत है और वुक़ूफ़े अ़रफ़ा व मुज़्दलिफ़ा, ह़ाज़िरिये ह़रम व ह़ाज़िरिये सरकारे आ'ज़म, त़वाफ़, दुख़ूले मिना, जमरों पर कंकरियां मारने के लिये और अ़रफ़ा की रात ग़ुस्ल करना मुस्तह़ब है। (الدرالمختار، کتاب الطھارۃ، ج ۱، ص ۳۳۹۔۳۴۲)

3 ......صحیح مسلم، کتاب الحج، باب استحباب دخول مکۃ من الثنیۃ العلیا......الخ، الحدیث: ۱۲۵۷۔۱۲۵۸، ص ۶۵۷۔

لَااِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ وَاللّٰہُ اَکْبَرُ اَللّٰھُمَّ اَنْتَ السَّلَامُ وَمِنْکَ السَّلَامُ وَدَارُکَ دَارُ السَّلَامِ تَبَارَکْتَ یَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِکْرَامِ اَللّٰھُمَّ اِنَّ ھٰذَا بَیْتُکَ عَظَّمْتَہٗ وَکَرَّمْتَہٗ وَشَرَّفْتَہٗ اَللّٰھُمَّ فَزِدْہُ تَعْظِیْمًا وَزِدْہُ تَشْرِیْفًا وَتَکْرِیْمًا وَزِدْہُ مُھَابَۃً وَزِدْ مَنْ حَجَّہٗ بِرًّا وَکَرَامَۃً اَللّٰھُمَّ افْتَحْ لِیْ اَبْوَابَ رَحْمَتِکَ وَاَدْخِلْنِیْ جَنَّتَکَ وَاَعِذْنِیْ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ

या'नी : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई मा'बूद नहीं, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ सब से बड़ा है। ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तू सलामती वाला है, तुझ से सलामती है, तेरा घर सलामती वाला घर है, ऐ जलाल व बुज़ुर्गी वाले ! तू बरकत वाला है। ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ बेशक तूने अपने इस घर को बुज़ुर्गी, करामत और शरफ़ अ़ता फ़रमाया। ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इस की ता'ज़ीम, शरफ़ व बुज़ुर्गी और इस के रो'ब में इज़ाफ़ा फ़रमा, इस का ह़ज करने वाले की नेकी और बुज़ुर्गी में इज़ाफ़ा फ़रमा। ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मेरे लिये अपनी रह़मत के दरवाज़े खोल दे, मुझे जन्नत में दाख़िल फ़रमा और शैत़ान मर्दूद से मह़फ़ूज़ फ़रमा।"

(5).....**मस्जिदे ह़राम में दाख़िले से मुतअ़ल्लिक़ उमूर :** जब मस्जिदे ह़राम में दाख़िल हो तो बाबे बनी शैबा से दाख़िल हो और येह दुआ़ पढ़े :

بِسْمِ اللّٰہِ وَبِاللّٰہِ وَمِنَ اللّٰہِ وَاِلَی اللّٰہِ وَفِیْ سَبِیْلِ اللّٰہِ وَعَلٰی مِلَّۃِ رَسُوْلِ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ

या'नी : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नाम से, उसी की मदद से, उसी की त़रफ़ से, उसी की त़रफ़, उसी की राह में और उस के रसूल के दीन पर क़ाइम रहते हुए दाख़िल होता हूं।

बैतुल्लाह के क़रीब पहुंच कर येह दुआ़ पढ़े :

जब बैतुल्लाह शरीफ़ के क़रीब पहुंचे तो येह दुआ़ पढ़े :

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ وَسَلَامٌ عَلٰی عِبَادِہِ الَّذِیْنَ اصْطَفٰی اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ عَبْدِکَ وَرَسُوْلِکَ وَعَلٰی اِبْرٰھِیْمَ خَلِیْلِکَ وَعَلٰی جَمِیْعِ اَنْبِیَائِکَ وَرُسُلِکَ

या'नी सब ख़ूबियां अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं, उस के पसन्दीदा बन्दों पर सलाम हो। ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अपने बन्दे और रसूल ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم पर, अपने ख़लील ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام पर, अपने तमाम अम्बिया और रसूलों عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام पर रह़मत नाज़िल फ़रमा।

फिर हाथ उठा कर येह दुआ़ पढ़े :

اَللّٰھُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُکَ فِیْ مَقَامِیْ ھٰذَا فِیْ اَوَّلِ مَنَاسِکِیْ اَنْ تَتَقَبَّلَ تَوْبَتِیْ وَاَنْ تَتَجَاوَزَ عَنْ خَطِیْئَتِیْ وَتَضَعَ عَنِّیْ وِزْرِیْ اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ الَّذِیْ بَلَّغَنِیْ بَیْتَہُ الْحَرَامَ الَّذِیْ جَعَلَہٗ مَثَابَۃً لِّلنَّاسِ وَاَمْنًا وَّجَعَلَہٗ مُبٰرَکًا وَّھُدًی لِّلْعٰلَمِیْنَ اَللّٰھُمَّ اِنِّیْ عَبْدُکَ وَالْبَلَدُ بَلَدُکَ وَالْحَرَمُ حَرَمُکَ وَالْبَیْتُ بَیْتُکَ جِئْتُکَ اَطْلُبُ رَحْمَتَکَ وَاَسْئَلُکَ مَسْئَلَۃَ الْمُضْطَرِّ الْخَائِفِ مِنْ عُقُوْبَتِکَ الرَّاجِیْ لِرَحْمَتِکَ الطَّالِبِ مَرْضَاتِکَ

या'नी : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मैं इस मक़ाम पर और ह़ज के पहले अ़मल पर तुझ से सुवाल करता हूं कि मेरी तौबा क़बूल फ़रमा, मेरी ख़त़ाओं से दर गुज़र फ़रमा, मेरा बोझ मुझ से उतार दे। सब ख़ूबियां अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं जिस ने मुझे अपने इ़ज़्ज़त वाले घर तक पहुंचाया जिसे उस ने लोगों के लौटने

और अम्न की जगह बनाया, इसे मुबारक और तमाम जहानों के लिये हिदायत बनाया। ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मैं तेरा बन्दा हूं, येह शहर तेरा शहर है, येह ह़रम तेरा ह़रम है, येह घर तेरा घर है, मैं तेरी बारगाह में तेरी रह़मत का त़लबगार बन कर ह़ाज़िर हुवा हूं, मैं तुझ से इस त़रह़ सुवाल करता हूं जिस त़रह़ कोई मजबूर शख़्स तेरे अ़ज़ाब से ख़ौफ़ज़दा, तेरी रह़मत का उम्मीद वार और तेरी रिज़ा का मुतलाशी सुवाल करता है।

ह़जरे अस्वद को बोसा दे कर येह दुआ़ पढ़े :

(6).....**ह़जरे अस्वद से मुतअ़ल्लिक़ उमूर :** इस के बा'द ह़जरे अस्वद के पास जाए और उसे दाएं हाथ से छू कर बोसा दे और येह दुआ़ पढ़े :

"اَللّٰھُمَّ اَمَانَتِیْ اَدَّیْتُھَا وَمِیْثَاقِیْ وَفَّیْتُہٗ اَشْھَدْ لِیْ بِالْمُوَافَاۃِ *या'नी : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मैं ने अपनी अमानत अदा कर दी, अपना वा'दा पूरा किया तू इस वफ़ा पर गवाह रहना।"* अगर बोसा न दे सके तो उस के सामने खड़ा हो कर मज़्कूरा दुआ़ पढ़े फिर त़वाफ़े क़ुदूम के इ़लावा कोई और अ़मल न करे। अलबत्ता, अगर लोगों को फ़र्ज़ नमाज़ में मश्ग़ूल पाए तो उन के साथ नमाज़ पढ़े फिर त़वाफ़ करे।

﴾4﴿.....त़वाफ़ के आदाब :

जब त़वाफ़ का इरादा हो ख़्वाह त़वाफ़े क़ुदूम हो या कोई और तो इन छे उमूर का ख़याल रखे :

(1).....**नमाज़ की शराइत़ का ख़याल रखे :** जैसे बा वुज़ू होना, लिबास, जिस्म, जगह का पाक होना और सित्रे औ़रत वग़ैरा कि बैतुल्लाह शरीफ़ का त़वाफ़ भी नमाज़ की त़रह़ है लेकिन अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इस में कलाम करने की इजाज़त अ़त़ा फ़रमाई है। त़वाफ़ की इब्तिदा में इज़्तिबाअ़ करे। इज़्तिबाअ़ का त़रीक़ा येह है कि चादर का दरमियानी ह़िस्सा दाएं बग़ल के नीचे से ले जा कर इस के दोनों कनारे बाएं कन्धे पर जम्अ़ कर दे, इस के एक कनारे को पीठ की जानिब लटका दे जब कि दूसरे को सीने पर रखे। त़वाफ़ शुरूअ़ करते ही तल्बिय्या कहना छोड़ दे और उन दुआ़ओं में मश्ग़ूल हो जाए जो हम अ़न क़रीब ज़िक्र करेंगे।

(2)....**इज़्तिबाअ़ के बा'द के मा'मूलात :** जब चादर कन्धे पर डाल ले ह़जरे अस्वद के पास यूं खड़ा हो कि बैतुल्लाह शरीफ़ उस के दाईं जानिब हो लेकिन इस से कुछ दूर रहे ताकि ह़जरे अस्वद उस के सामने हो और वोह त़वाफ़ की इब्तिदा में अपने पूरे जिस्म के साथ पूरे ह़जरे अस्वद के सामने से गुज़रे, अपने और बैतुल्लाह शरीफ़ के दरमियान तीन क़दमों का फ़ासिला रखे ताकि ख़ानए का'बा के क़रीब रहे क्यूंकि येह अफ़्ज़ल है, नीज़ शाज़रवान (या'नी दीवार के पाये के साथ अ़र्ज़ में छोड़े हुए ह़िस्से) के अन्दर त़वाफ़ करने वाला न हो क्यूंकि येह ख़ानए का'बा में शामिल है। ह़जरे अस्वद के पास शाज़रवान ज़मीन से मिला हुवा है, इस में त़वाफ़ करने वाले

का त़वाफ़ सह़ीह़ नहीं क्यूंकि वोह ख़ानए का'बा के अन्दर त़वाफ़ करने वाला शुमार होता है। शाज़रवान वोह हिस्सा है जो ख़ानए का'बा की दीवार की चौड़ाई से बच गया था जब ऊपर से दीवार तंग हो गई थी। फिर उसी जगह से तवाफ़ शुरूअ़ करे।

(3).....**त़वाफ़ शुरूअ़ करने से पहले के मा'मूलात :** ह़जरे अस्वद के पास से गुज़रने से पहले बल्कि त़वाफ़ की इब्तिदा में येह दुआ़ पढ़े :

بِسْمِ اللّٰهِ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ اَللّٰهُمَّ اِيْمَانًا بِكَ وَتَصْدِيْقًا بِكِتَابِكَ وَوَفَاءً بِعَهْدِكَ وَاتِّبَاعًا لِّسُنَّةِ نَبِيِّكَ مُحَمَّدٍ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ

या'नी : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नाम से शुरूअ़, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ सब से बड़ा है। ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मैं तुझ पर ईमान लाते, तेरी किताब की तस्दीक़ करते, तेरे वा'दे को पूरा करते और तेरे नबी ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नत की पैरवी करते हुए त़वाफ़ करता हूं।

त़वाफ़ का त़रीक़ा

अब त़वाफ़ करे, ह़जरे अस्वद से आगे बढ़ने के बा'द सब से पहले ख़ानए का'बा का दरवाज़ा आता है वहां येह कलिमात कहे :

اَللّٰهُمَّ هٰذَا الْبَيْتُ بَيْتُكَ وَهٰذَا الْحَرَمُ حَرَمُكَ وَهٰذَا الْاَمْنُ اَمْنُكَ وَهٰذَا مَقَامُ الْعَائِذِ بِكَ مِنَ النَّارِ

या'नी : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ येह घर तेरा घर है, येह ह़रम तेरा ह़रम है, येह अम्न तेरी जानिब से है और येह वोह जगह है जहां जहन्नम की आग से तेरी पनाह त़लब की जाती है।

मक़ामे इब्राहीम को देख कर येह दुआ़ पढ़े :

मज़्कूरा कलिमात पढ़ते हुए जब मक़ाम का ज़िक्र आए तो आंखों से मक़ामे इब्राहीम की त़रफ़ इशारा करे और येह दुआ़ पढ़े :

اَللّٰهُمَّ اِنَّ بَيْتَكَ عَظِيْمٌ وَوَجْهَكَ كَرِيْمٌ وَاَنْتَ اَرْحَمُ الرَّاحِمِيْنَ فَاَعِذْنِيْ مِنَ النَّارِ وَمِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ وَحَرِّمْ لَحْمِيْ
وَدَمِيْ عَلَى النَّارِ وَاٰمِنِّيْ مِنْ اَهْوَالِ يَوْمِ الْقِيَامَةِ وَاكْفِنِيْ مَؤُوْنَةَ الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ

या'नी : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ बेशक तेरा घर अ़ज़ीम और तेरी ज़ात करीम है, तू सब से बढ़ कर रह़म फ़रमाने वाला है, जहन्नम और शैत़ान मर्दूद से मुझे पनाह अ़त़ा फ़रमा, मेरे गोश्त और ख़ून को आग पर ह़राम फ़रमा, मुझे रोज़े मह़शर की हौलनाकियों से अम्न अ़त़ा फ़रमा और दुन्या व आख़िरत की मशक़्क़तों में मुझे किफ़ायत फ़रमा।"

फिर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ह़म्दो तस्बीह़ बयान करते हुए रुक्ने इराक़ी तक पहुंचे और येह दुआ़ पढ़े :

اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَعُوْذُ بِكَ مِنَ الشِّرْكِ وَالشَّكِّ وَالْكُفْرِ وَالنِّفَاقِ وَالشِّقَاقِ وَسُوْءِ الْاَخْلَاقِ وَسُوْءِ الْمَنْظَرِ فِي الْاَهْلِ وَالْمَالِ وَالْوَلَدِ

या'नी : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मैं शिर्क, शक, कुफ़्र, निफ़ाक़, बद बख़्ती, बद अख़्लाक़ी और अहलो माल व औलाद के मुतअ़ल्लिक़ बुराई देखने से तेरी पनाह त़लब करता हूं।

मीज़ाबे रह़मत के पास येह दुआ़ पढ़े :

जब मीज़ाबे रह़मत के पास पहुंचे तो येह दुआ़ पढ़े :

اَللّٰهُمَّ اَظِلَّنَا تَحْتَ عَرْشِكَ يَوْمَ لَا ظِلَّ اِلَّا ظِلُّكَ اَللّٰهُمَّ اسْقِنِيْ بِكَاْسِ مُحَمَّدٍ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ شَرْبَةً لَا اَظْمَاُ بَعْدَهَا اَبَدًا

या'नी : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें उस दिन अपने अ़र्श का साया अ़ता फ़रमा जिस दिन तेरे (अ़र्श के) साए के सिवा कोई साया न होगा। ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मुझे ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मुबारक कूज़े से ऐसा जाम पिलाना कि इस के बा'द मैं कभी प्यासा न होऊं।

रुक्ने शामी के पास पहुंचे तो येह दुआ़ पढ़े :

اَللّٰهُمَّ اجْعَلْهُ حَجًّا مَبْرُوْرًا وَّسَعْيًا مَشْكُوْرًا وَّذَنْبًا مَغْفُوْرًا وَّتِجَارَةً لَّنْ تَبُوْرَ يَاعَزِيْزُ يَاغَفُوْرُ رَبِّ اغْفِرْ وَارْحَمْ وَتَجَاوَزْ عَمَّا تَعْلَمُ اِنَّكَ اَنْتَ الْاَعَزُّ الْاَكْرَمُ

या'नी : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इस ह़ज को मक़्बूल फ़रमा, इस कोशिश को क़बूलिय्यत अ़ता फ़रमा, गुनाह मुआ़फ़ फ़रमा और इसे न ख़त्म होने वाली तिजारत बना। ऐ अ़ज़ीज़ ! ऐ ग़फ़ूर ! ऐ रब्ब عَزَّوَجَلَّ मुझे बख़्श दे, रह़म फ़रमा, मेरे गुनाहों को तू जानता है इन से दर गुज़र फ़रमा बेशक तू बहुत इ़ज़्ज़त व इकराम वाला है।

रुक्ने यमानी के पास पहुंचे तो येह दुआ़ पढ़े :

اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَعُوْذُ بِكَ مِنَ الْكُفْرِ وَاَعُوْذُ بِكَ مِنَ الْفَقْرِ وَمِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ وَمِنْ فِتْنَةِ الْمَحْيَا وَالْمَمَاتِ وَاَعُوْذُ بِكَ مِنَ الْخِزْيِ فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ

"**या'नी :** ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मैं कुफ़्र से तेरी पनाह मांगता हूं, फ़क़्र, अ़ज़ाबे क़ब्र, ज़िन्दगी और मौत के फ़ित्ने, नीज़ दुन्या व आख़िरत की रुस्वाई से तेरी पनाह मांगता हूं।"

रुक्ने यमानी और ह़जरे अस्वद के दरमियान येह दुआ़ पढ़े :

اَللّٰهُمَّ رَبَّنَا اٰتِنَا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَّفِي الْاٰخِرَةِ حَسَنَةً وَّقِنَا بِرَحْمَتِكَ فِتْنَةَ الْقَبْرِ وَعَذَابَ النَّارِ

या'नी : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ऐ रब्ब हमारे ! हमें दुन्या में भलाई दे और हमें आख़िरत में भलाई दे और हमें अपनी रह़मत से फ़ितनए क़ब्र और जहन्नम के अ़ज़ाब से बचा।

ह़ज्रे अस्वद के पास पहुंचे तो येह दुआ़ पढ़े :

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِيْ بِرَحْمَتِكَ اَعُوْذُ بِرَبِّ هٰذَا الْحَجَرِ مِنَ الدَّيْنِ وَالْفَقْرِ وَضِيْقِ الصَّدْرِ وَعَذَابِ الْقَبْرِ

या'नी : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपनी रह़मत से मुझे बख़्श दे। मैं क़र्ज़, तंग दस्ती, सीने की तंगी और अ़ज़ाबे क़ब्र से इस पथ्थर के रब्ब की पनाह चाहता हूं।

इस वक़्त त़वाफ़ का एक चक्कर मुकम्मल हो गया। इसी त़रह़ सात चक्कर पूरे करे हर बार मज़कूरा दुआ़एं पढ़े।

(4)......**रमल से मुतअ़ल्लिक़ उमूर :** पहले तीन फेरों में रमल करे और बक़िय्या में आ़दत के मुताबिक़ चले। रमल का त़रीक़ा येह है कि पाउं क़रीब क़रीब रखते हुए तेज़ तेज़ चलना। येह दौड़ने से कम लेकिन आ़म आ़दत से कुछ तेज़ है। रमल व इज़्तिबाअ़ से मक़्सूद बे ख़ौफ़ी और कुव्वत का इज़्हार है। शुरूअ़ में कुफ़्फ़ार का त़म्अ़ ख़त्म करने के लिये इस का मक़्सद येही था, अब भी येह सुन्नत बाक़ी है। ख़ानए का'बा के क़रीब से रमल करना अफ़्ज़ल है अगर भीड़ के सबब ऐसा मुमकिन न हो तो दूर से रमल करना अफ़्ज़ल है। मत़ाफ़ (मक़ामे त़वाफ़) के कनारे पर चलते हुए तीन फेरों में रमल करे फिर बैतुल्लाह शरीफ़ के क़रीब हुजूम में आ जाए चार फेरों में आ़म त़रीक़े पर चले। अगर हर चक्कर में ह़जरे अस्वद का इस्तिलाम[1] कर सके तो ज़ियादा अच्छा है और अगर हुजूम रूकावट हो तो हाथ से इशारा कर के हाथ को बोसा दे ले। इसी त़रह़ रुक्ने यमानी का इस्तिलाम भी मुस्तह़ब है दीगर अरकान (या'नी रुक्ने शामी व इ़राक़ी) का इस्तिलाम मुस्तह़ब नहीं। मरवी है कि "ह़ुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم रुक्ने यमानी का इस्तिलाम करते,[2] उसे बोसा देते[3] और अपना रुख़्सारे पुर अन्वार उस पर रख देते थे।"[4] जो ख़ास त़ौर पर ह़जरे अस्वद को बोसा देना और रुक्ने यमानी को इस्तिलाम करना चाहे तो येह ज़ियादा बेहतर है।

(5).....**त़वाफ़ के बा'द के मा'मूलात :** जब त़वाफ़ के सात चक्कर पूरे हो जाएं तो मुल्तज़म के पास आए और येह ह़जरे अस्वद और दरवाज़े के दरमियान है। येह वोह जगह है जहां दुआ़ क़बूल होती है। यहां बैतुल्लाह शरीफ़ से चिमट जाए, पर्दों से लटक जाए, अपने पेट को बैतुल्लाह शरीफ़ से मिला ले, इस पर अपना दायां रुख़्सार रख दे, अपने बाज़ू और हथेलियां इस पर फैला दे।

त़वाफ़ के बा'द की दुआ़ :

फिर येह दुआ़ पढ़े :

اَللّٰهُمَّ يَا رَبَّ الْبَيْتِ الْعَتِيْقِ اَعْتِقْ رَقَبَتِيْ مِنَ النَّارِ وَاَعِذْنِيْ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ وَاَعِذْنِيْ مِنْ كُلِّ سُوْءٍ وَقَنِّعْنِيْ بِمَا رَزَقْتَنِيْ وَبَارِكْ لِيْ فِيْمَا اٰتَيْتَنِيْ اَللّٰهُمَّ اِنَّ هٰذَا الْبَيْتَ بَيْتُكَ وَالْعَبْدُ عَبْدُكَ وَهٰذَا مَقَامُ الْعَائِذِ بِكَ مِنَ النَّارِ اَللّٰهُمَّ اجْعَلْنِيْ مِنْ اَكْرَمِ وَفْدِكَ عَلَيْكَ

1..... **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़्बूआ़ 304 सफ़्ह़ात पर मुश्तमिल किताब रफ़ीक़ुल ह़रमैन सफ़्ह़ा 70 पर शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना **अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार** क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه नक़्ल फ़रमाते हैं : ह़जरे अस्वद को बोसा देने या हाथ से छू कर चूमने या हाथों का इशारा कर के इन्हें चूम लेने को इस्तिलाम कहते हैं।

2......صحیح مسلم، کتاب الحج، باب استحباب استلام الرکنین الیمانیین......الخ، الحدیث:١٢٦٧، ص ٦٦١۔

3......المستدرک، کتاب المناسک، باب تقبیل الرکن الیمانی......الخ، الحدیث:١٧١٨، ج٢، ص١٠٧۔

4......المستدرک، کتاب المناسک، باب تقبیل الرکن الیمانی......الخ، الحدیث:١٧١٨، ج٢، ص١٠٧۔

या'नी : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ऐ क़दीम घर के रब्ब ! मेरी गर्दन को जहन्नम से आज़ाद फ़रमा और मुझे शैत़ान मर्दूद से पनाह अ़त़ा फ़रमा और हर बुराई से पनाह दे और जो चीज़ तू ने मुझे अ़त़ा फ़रमाई इस पर क़नाअ़त की तौफ़ीक़ इनायत फ़रमा और मेरे लिये इस में बरकत डाल दे। ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! येह घर तेरा घर है, येह बन्दा तेरा बन्दा है और येह दोज़ख़ से तेरी पनाह मांगने वाले का मक़ाम है। ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मुझे अपनी बारगाह में आने वालों में से बेहतर लोगों में कर दे।"

इस मक़ाम पर कषरत से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ह़म्दो षना बयान करे और उस के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم और तमाम रुसुल व अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام पर ब कषरत दुरूदे पाक पढ़े। अपनी ख़ास ह़ाजात के लिये दुआ़ मांगे, गुनाहों की बख़्शिश चाहे।

मन्क़ूल है कि बा'ज़ बुज़ुर्ग इस मक़ाम पर अपने ख़ुद्दाम से फ़रमाते : "मुझ से दूर हो जाओ ताकि मैं रब्ब عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में अपने गुनाहों का इक़रार करूं।"

(6).....**त़वाफ़ की दो रक्अ़तें**[1]**:** त़वाफ़ वग़ैरा के मा'मूलात से फ़ारिग़ होने के बा'द मक़ामे इब्राहीम के पीछे दो रक्अ़त नमाज़ पढ़े, पहली रक्अ़त में सूरए काफ़िरून और दूसरी में सूरए इख़्लास पढ़े। येह त़वाफ़ की दो रक्अ़तें हैं।

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ज़ोहरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : "येह सुन्नत है कि बन्दा हर सात फेरों के बा'द दो रक्अ़त नमाज़ पढ़े। अगर कई बार त़वाफ़ कर के दो रक्अ़त पढ़ ले तब भी जाइज़ है।[2] कि येह भी सुन्नत है। हर सात फेरे एक त़वाफ़ है।"

दो रक्अ़त त़वाफ़ के बा'द की दुआ़ :

त़वाफ़ की दो रक्अ़तों के बा'द येह दुआ़ पढ़े :

اَللّٰهُمَّ يَسِّرْ لِيَ الْيُسْرٰى وَجَنِّبْنِي الْعُسْرٰى وَاغْفِرْ لِيْ فِي الْاٰخِرَةِ وَالْاُوْلٰى

وَاَعْصِمْنِيْ بِاَلْطَافِكَ حَتّٰى لَا اَعْصِيَكَ وَاَعِنِّيْ عَلٰى طَاعَتِكَ بِتَوْفِيْقِكَ وَجَنِّبْنِيْ مَعَاصِيَكَ وَاجْعَلْنِيْ مِمَّنْ يُحِبُّكَ وَيُحِبُّ مَلَائِكَتَكَ وَرُسُلَكَ وَيُحِبُّ عِبَادَكَ الصَّالِحِيْنَ اَللّٰهُمَّ حَبِّبْنِيْ اِلٰى مَلَائِكَتِكَ وَرُسُلِكَ وَاِلٰى عِبَادِكَ الصَّالِحِيْنَ اَللّٰهُمَّ فَكَمَا هَدَيْتَنِيْ اِلَى الْاِسْلَامِ فَثَبِّتْنِيْ عَلَيْهِ بِاَلْطَافِكَ وَوِلَايَتِكَ وَاسْتَعْمِلْنِيْ لِطَاعَتِكَ وَطَاعَةِ رَسُوْلِكَ وَاَجِرْنِيْ مِنْ مُضَلَّاتِ الْفِتَنِ

1..... येह नमाज़ वाजिब है। (बहारे शरीअ़त, जि. 1 स. 1102)

2.....صحیح البخاری، کتاب الحج، تحت الباب صلی النبی صلی اللّٰہ علیہ وسلم لسبوعہ رکعتین، ج ۱، ص ۵۴۳-

या'नी : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मेरे लिये आसानी को आसान फ़रमा, मुझे तंगी से बचा, दुन्या व आख़िरत में मेरी बख़्शिश फ़रमा, अपनी मेहरबानियों के ज़रीए मुझे बचा ले ताकि मैं तेरी नाफ़रमानी न करूं, अपनी तौफ़ीक़ से इबादत पर मेरी मदद फ़रमा, मुझे अपनी नाफ़रमानियों से बचा, मुझे उन लोगों में से कर दे जो तुझ से, तेरे फ़िरिश्तों, तेरे रसूलों और तेरे नेक बन्दों से महब्बत करते हैं। ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ जैसा कि तू ने इस्लाम की तरफ़ मेरी रहनुमाई फ़रमाई तू अपनी मेहरबानियों से मुझे इस पर षाबित क़दम रख। मुझे अपनी और अपने रसूल की फ़रमां बरदारी वाले काम करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमा और मुझे गुमराह कुन फ़ितनों से महफ़ूज़ फ़रमा।"

फिर हजरे अस्वद की तरफ़ आए और इस का इस्तिलाम कर के तवाफ़ ख़त्म कर दे।

ग़ुलाम आज़ाद करने का षवाब :

हुज़ूर नबिय्ये अन्वर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जो बैतुल्लाह शरीफ़ का एक हफ़्ता तवाफ़ करे[1] और दो रक्अत नमाज़ पढ़े तो उस के लिये एक ग़ुलाम आज़ाद करने का षवाब हैं।"[2]

येह तवाफ़ का तरीक़ा मज़्कूर हुवा। नमाज़ की शराइत (मषलन तहारत, सित्रे औरत वग़ैरा) के बा'द मज़्कूरा उमूर में से वाजिब येह है कि पूरे बैतुल्लाह शरीफ़ के सात चक्कर मुकम्मल करे, हजरे अस्वद से इब्तिदा करे, ख़ानए का'बा बाईं जानिब हो और मस्जिद के अन्दर तवाफ़ करे लेकिन ख़ानए का'बा से बाहर हो, न तो बुन्याद पर तवाफ़ करे, न ही हतीम के अन्दर करे, पै दरपै सात चक्कर पूरे करे, इन में आम आदत से ज़ियादा फ़र्क़ न हो। इन के इलावा वोह उमूर सुन्नत व मुस्तहब हैं।

﴾5﴿......सअ्य के आदाब :

जब तवाफ़ से फ़ारिग़ हो जाए तो बाबे सफ़ा से निकले, येह रुक्ने यमानी और हजरे अस्वद के दरमियान मौजूद दीवार के मुक़ाबिल है। जब इस दरवाज़े से बाहर निकल कर सफ़ा पहाड़ी तक पहुंचे तो इस के नीचे से इन्सानी क़द के बराबर कुछ ऊपर चला जाए कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم इस पर चढ़े यहां तक कि ख़ानए का'बा नज़र आ गया।[3] पहाड़ के दामन से सअ्य शुरूअ करना भी काफ़ी है और येह ज़ियादती (या'नी ऊपर चढ़ना) मुस्तहब है। लेकिन दर्जे नए बनाए गए हैं लिहाज़ा इन्हें अपनी पीठ के पीछे नहीं छोड़ना चाहिये क्यूंकि इस तरह वोह सअ्य मुकम्मल करने वाला न होगा। जब यहां से इब्तिदा करे तो सफ़ा व मर्वा के दरमियान सात मरतबा सअ्य करे।

---

❶..... इस तरह कि मुसलसल एक हफ़्ता तवाफ़ करे, कोई दिन नाग़ा न हो।

(मिरआतुल मनाजीह, जि. 4, स. 134)

❷......سنن ابن ماجه، كتاب المناسك، باب فضل الطواف، الحديث:٢٩٥٦، ج٣، ص٤٣٩، باختصارٍ۔

❸......صحيح مسلم، كتاب الحج، باب حجة النبى صلى الله عليه وسلم، الحديث:١٢١٨، ص٦٣٥۔

सफ़ा पर चढ़े तो येह दुआ पढ़े :

सफ़ा पर चढ़ते हुए बैतुल्लाह शरीफ़ की तरफ़ रुख़ करे और येह दुआ पढ़े :

اَللّٰهُ اَكْبَرُ اَللّٰهُ اَكْبَرُ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَلٰى مَا هَدَانَا اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ بِمَحَامِدِهٖ كُلِّهَا عَلٰى جَمِيْعِ نِعَمِهٖ كُلِّهَا لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ يُحْيِيْ وَيُمِيْتُ بِيَدِهِ الْخَيْرُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ صَدَقَ وَعْدَهٗ وَنَصَرَ عَبْدَهٗ وَاَعَزَّ جُنْدَهٗ وَهَزَمَ الْاَحْزَابَ وَحْدَهٗ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ وَلَوْ كَرِهَ الْكَافِرُوْنَ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ فَسُبْحٰنَ اللّٰهِ حِيْنَ تُمْسُوْنَ وَحِيْنَ تُصْبِحُوْنَ وَلَهُ الْحَمْدُ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَعَشِيًّا وَحِيْنَ تُظْهِرُوْنَ يُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَيُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ وَيُحْيِي الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا وَكَذٰلِكَ تُخْرَجُوْنَ وَمِنْ اٰيٰتِهٖ اَنْ خَلَقَكُمْ مِنْ تُرَابٍ ثُمَّ اِذَا اَنْتُمْ بَشَرٌ تَنْتَشِرُوْنَ اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَسْئَلُكَ اِيْمَانًا دَائِمًا وَيَقِيْنًا صَادِقًا وَعِلْمًا نَافِعًا وَقَلْبًا خَاشِعًا وَلِسَانًا ذَاكِرًا وَاَسْئَلُكَ الْعَفْوَ وَالْعَافِيَةَ وَالْمُعَافَاةَ الدَّائِمَةَ فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ

या'नी : *अल्लाह* عَزَّوَجَلَّ *सब से बड़ा है, अल्लाह* عَزَّوَجَلَّ *सब से बड़ा है, सब ख़ूबियां अल्लाह* عَزَّوَجَلَّ *के लिये हैं कि उस ने हमें हिदायत अ़ता फ़रमाई, अल्लाह* عَزَّوَجَلَّ *की तमाम ने'मतों पर तमाम ता'रीफ़ों के साथ उस की ह़म्द है। अल्लाह* عَزَّوَجَلَّ *के सिवा कोई मा'बूद नहीं वोह अकेला है, उस का कोई शरीक नहीं उसी के लिये बादशाहत है, उसी के लिये ता'रीफ़ है, वोह जिलाता और मारता है, उसी के क़ब्ज़ए क़ुदरत में भलाई है, वोह सब कुछ कर सकता है। अल्लाह* عَزَّوَجَلَّ *के सिवा कोई मा'बूद नहीं, वोह तन्हा है, उस ने अपना वा'दा सच्चा किया, अपने बन्दे की मदद फ़रमाई, अपने लश्कर को इ़ज़्ज़त अ़ता फ़रमाई और तन्हा दुश्मन के लश्करों को भगा दिया, अल्लाह* عَزَّوَجَلَّ *के सिवा कोई मा'बूद नहीं, हम सिर्फ़ उसी की इ़बादत करते हैं अगर्चे काफ़िरों को नापसन्द हो, अल्लाह* عَزَّوَجَلَّ *के सिवा कोई मा'बूद नहीं, हम सिर्फ़ उसी की इ़बादत करते हैं सब ख़ूबियां अल्लाह* عَزَّوَجَلَّ *के लिये हैं, तो अल्लाह* عَزَّوَجَلَّ *की पाकी बोलो जब शाम करो और जब सुब्ह़ हो और उसी की ता'रीफ़ है आस्मानों और ज़मीन में और जो कुछ दिन रहे और जब तुम्हें दोपहर हो, वोह ज़िन्दा को निकालता है मुर्दे से और मुर्दे को निकालता है ज़िन्दा से और ज़मीन को जिलाता है उस के मरे पीछे और यूंही तुम निकाले जाओगे और उस की निशानियों से है येह कि तुम्हें पैदा किया मिट्टी से फिर जभी तुम इन्सान हो दुन्या में फैले हुए। ऐ अल्लाह* عَزَّوَجَلَّ *मैं तुझ से दाइमी ईमान, सच्चे यक़ीन, इ़ल्मे नाफ़ेअ़, डरने वाले दिल और ज़िक्र वाली ज़बान का सुवाल करता हूं और तुझ से बख़्शिश, दाइमी आ़फ़िय्यत और दुन्या व आख़िरत में मुआ़फ़ी त़लब करता हूं।*

फिर बारगाहे रिसालत में हदिय्यए दुरूद पेश करे और इस के बा'द अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से जिस ह़ाजत की चाहे दुआ़ करे।

फिर सफ़ा से उतर कर येह कहते हुए सअ्य शुरूअ् कर दे :

رَبِّ اغْفِرْ وَارْحَمْ وَتَجَاوَزْ عَمَّا تَعْلَمُ اِنَّكَ اَنْتَ الْاَعَزُّ الْاَكْرَمُ اَللّٰهُمَّ اٰتِنَا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَّفِي الْاٰخِرَةِ حَسَنَةً وَّقِنَا عَذَابَ النَّارِ

या'नी : *ऐ रब्ब عَزَّوَجَلَّ मुझ पर रहम फ़रमा और मेरी जो ख़ताएं तू जानता है उन से दर गुज़र फ़रमा, बेशक तू बहुत ज़ियादा इ़ज़्ज़त व इकराम वाला है। ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें दुन्या में भलाई दे और हमें आख़िरत में भलाई दे और हमें अ़ज़ाबे दोज़ख़ से बचा।*

और आहिस्ता आहिस्ता चलते हुए सब्ज़ मील तक पहुंचे, येह सफ़ा से उतरते हुए सब से पहले आता है और येह मस्जिदे ह़राम के कोने पर है। जब इस के और सब्ज़ मील के दरमियान छे गज़ फ़ासिला रह जाए तो तेज़ चलना शुरूअ् कर दे या'नी रमल करे यहां तक कि मैलाने अख़्ज़रैन तक जा पहुंचे अब आ़म रफ़्तार से चले जब मर्वा के पास पहुंचे तो उस पर इसी त़रह़ चढ़े जिस त़रह़ सफ़ा पर चढ़ा था और चेहरा सफ़ा की त़रफ़ कर ले और ऐसी ही दुआ़ करे जैसी सफ़ा पर की थी। यहां एक मरतबा सअ्य मुकम्मल हो गई। जब सफ़ा की त़रफ़ लौटेगा तो दो चक्कर मुकम्मल हो जाएंगे। यूं सात चक्कर लगाए और हर चक्कर में तेज़ चलने की जगह तेज़ और आहिस्ता की जगह आहिस्ता चले जैसा कि बयान हो चुका है और हर बार सफ़ा व मर्वा पर चढ़े। जब ऐसा कर लिया तो त़वाफ़े कुदूम और सअ्य से फ़ारिग़ हो गया और येह दोनों सुन्नत हैं। सअ्य के लिये वुज़ू मुस्तह़ब है वाजिब नहीं जब कि त़वाफ़ में वुज़ू वाजिब है। जब सअ्य कर ली तो अब वुक़ूफ़े अ़रफ़ा के बा'द दोबारा सअ्य की ज़रूरत नहीं, बत़ौरे रुक्न येह सअ्य काफ़ी है क्यूंकि सअ्य में येह शर्त़ नहीं कि वुक़ूफ़े अ़रफ़ा के बा'द हो अलबत्ता, फ़र्ज़ त़वाफ़ में येह शर्त़ है। हां! हर सअ्य में येह शर्त है कि वोह त़वाफ़ के बा'द हो ख़्वाह कोई भी त़वाफ़ हो (त़वाफ़े कुदूम या फ़र्ज़ त़वाफ़)।

﴾6﴿.....वुक़ूफ़े अ़रफ़ा और इस से पहले के आदाब :

अगर ह़ाजी नव ज़िल ह़िज्जा के दिन अ़रफ़ात पहुंचे तो वुक़ूफ़े अ़रफ़ा से पहले त़वाफ़े कुदूम और मक्कए मुकर्रमा की ह़ाज़िरी के लिये न जाए, अगर कुछ दिन पहले पहुंचे तो त़वाफ़े कुदूम करे और ज़िल ह़िज्जा की सात तारीख़ तक ह़ालते एह़राम में रहे। सातवीं तारीख़ को इमाम ज़ोहर के बा'द का'बा शरीफ़ के पास ख़ुत़बा देता और लोगों को बताता है कि यौमे तरविया (या'नी आठ ज़िल ह़िज्जा) को मिना जाने की तय्यारी करें और वहां रात गुज़ारे, दूसरे दिन सुब्ह़ अ़रफ़ात में जाएं ताकि ज़वाल के बा'द वुक़ूफ़ कर के फ़र्ज़ की अदाएगी करें क्यूंकि वुक़ूफ़ का वक़्त (नव ज़िल ह़िज्जा के) ज़वाल से ले कर यौमे नह़र (या'नी कुरबानी के दिन) की तुलूए सुब्ह़े सादिक़ तक है। चुनान्चे, तल्बिय्या कहते हुए मिना की त़रफ़ निकले, अगर त़ाक़त रखता हो तो मक्का से ले कर ह़ज ख़त्म होने तक तमाम अरकाने ह़ज पैदल अदा करे कि मुस्तह़ब है। मस्जिदे इब्राहीम (येह मैदाने अ़रफ़ात में है वहां) से जाए वुक़ूफ़ तक पैदल चलना अफ़्ज़ल है और इस की ज़ियादा ताकीद है।

मिना में पहुंच कर येह दुआ़ पढ़े :

''اَللّٰھُمَّ ھٰذِہٖ مِنًی فَامْنُنْ عَلَیَّ بِمَا مَنَنْتَ بِہٖ عَلٰی اَوْلِیَائِکَ وَاَھْلِ طَاعَتِکَ''

या'नी : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ येह मिना है, मुझ पर ऐसे ही करम फ़रमा जैसे तू ने अपने औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام और नेक बन्दों पर करम फ़रमाया ।''

येह रात मिना में गुज़ारे यहां सिर्फ़ रात गुज़ारना है, ह़ज का कोई अ़मल इस से मुतअ़ल्लिक़ नहीं ।

अ़रफ़ात की जानिब जाए तो येह दुआ़ पढ़े :

नौ ज़िल ह़िज्जा की सुब्ह़ फ़ज्र की नमाज़ पढ़े और कोहे षबीर पर सूरज तुलूअ़ होने के बा'द अ़रफ़ात की त़रफ़ जाए और येह दुआ़ पढ़े :

اَللّٰھُمَّ اجْعَلْھَا خَیْرَ غَدْوَۃٍ غَدَوْتُھَا قَطُّ وَاَقْرِبْھَا مِنْ رِضْوَانِکَ وَاَبْعِدْھَا مِنْ سَخَطِکَ اَللّٰھُمَّ اِلَیْکَ

غَدَوْتُ وَاِیَّاکَ رَجَوْتُ وَعَلَیْکَ اِعْتَمَدْتُ وَوَجْھَکَ اَرَدْتُ فَاجْعَلْنِیْ مِمَّنْ تُبَاھِیْ بِہِ الْیَوْمَ مَنْ ھُوَ خَیْرٌ مِّنِّیْ وَاَفْضَلُ

या'नी : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इस सुब्ह़ को उन तमाम सुब्ह़ों से बेहतर कर दे जो मैं ने की हैं, इसे अपनी रिज़ा के क़रीब और अपनी नाराज़ी से दूर कर दे। ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मैं ने तेरी त़रफ़ सुब्ह़ की, तेरी तरफ़ रुजूअ़ किया, तुझ से उम्मीद रखी, तुझी पर भरोसा किया और तेरा ही इरादा किया, पस मुझे उन लोगों में से कर दे जिन पर आज तू उन (या'नी फ़िरिश्तों) के सामने फ़ख़्र फ़रमाता है जो मुझ से बेहतर और अफ़्ज़ल हैं ।

जब मैदाने अ़रफ़ात में पहुंच जाए तो मक़ामे निमरह में मस्जिद के क़रीब ख़ैमा लगाए कि हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने भी यहीं ख़ैमा लगाया था ।[1] निमरह उ़रना का निचला ह़िस्सा है जो मौक़िफ़ और अ़रफ़ात के इलावा है। वुक़ूफ़ के लिये ग़ुस्ल करना सुन्नत है। जब ज़वाल का वक़्त हो जाए तो इमाम एक मुख़्तसर ख़ुत़बा दे कर बैठ जाए, मुअज़्ज़िन अज़ान दे और इमाम दूसरा ख़ुत़बा दे, इक़ामत को अज़ान के साथ इस त़रह़ मिलाया जाए कि मुअज़्ज़िन के इक़ामत कहने के साथ इमाम ख़ुत़बे से फ़ारिग़ हो जाए, फिर एक अज़ान और दो इक़ामतों के साथ ज़ोहर व अ़स्र की नमाज़ मिला कर पढ़े, (अगर शरई मुसाफ़िर हों तो) नमाज़ क़स्र पढ़े। फिर मौक़िफ़ की त़रफ़ चल पड़े और अ़रफ़ात में ठहर जाए, वादिये उ़रना में न ठहरे, (अगर शरई मुसाफ़िर हों तो) नमाज़ क़स्र पढ़े । फिर मौक़िफ़ की त़रफ़ चल पड़े और अ़रफ़ात में ठहर जाए, वादिये उ़रना में न ठहरे । मस्जिदे इब्राहीम वादिये उ़रना से शुरूअ़ हो कर अ़रफ़ा में ख़त्म होती है, लिहाज़ा जिस ने मस्जिद के अगले ह़िस्से में वुक़ूफ़ किया उसे वुक़ूफ़े अ़रफ़ा ह़ासिल न होगा ।

---

1 ......صحیح مسلم، کتاب الحج، باب حجۃ النبی صلی اللہ علیہ وسلم، الحدیث:١٢١٨، ص ٦٣٦۔

मस्जिद में अ़रफ़ात की जगह को बड़े बड़े पथ्थरों के ज़रीए़ मुम्ताज़ किया गया है, बेहतर येह है कि इन पथ्थरों के पास इमाम के क़रीब क़िब्ला रू हो कर सुवारी पर खड़ा हो । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ह़म्दो षना, तस्बीह़ व तहलील और तौबा व इस्तिग़्फ़ार की कषरत करे । इस दिन रोज़ा न रखे ताकि मुसलसल दुआ़ पर कुव्वत ह़ासिल हो, अ़रफ़ा के दिन तल्बिय्या कहना न छोड़े बल्कि कभी तल्बिय्या कहे और कभी दुआ़ में मश्ग़ूल हो। अ़रफ़ात से ग़ुरूबे आफ़्ताब से पहले नहीं निकलना चाहिये ताकि अ़रफ़ात में दिन और रात जम्अ़ हो जाए, चांद के शुबे की वजह से आठवीं तारीख़ की एक साअ़त वहां ठहरना मुमकिन हो तो येह एह़तियात़ के मुत़ाबिक़ है। जो शख़्स दस ज़िल ह़िज्जा की तुलूए़ फ़ज्र तक वुक़ूफ़ न कर सके उस का ह़ज फ़ौत हो जाएगा, उस पर लाज़िम है कि उ़मरा के अफ़्आ़ल अदा कर के एह़राम खोल दे, फिर ह़ज फ़ौत होने की वजह से जानवर ज़ब्ह़ करे और आयन्दा साल क़ज़ा करे । इस दिन सब से अहम मश्ग़ूलिय्यत दुआ़ करते रहना है क्यूंकि इस क़िस्म की जगह, इस क़िस्म के इजतिमाअ़ में दुआ़ओं के क़बूल होने की ज़ियादा उम्मीद होती है । वोह दुआ़एं जो वुक़ूफ़े अ़रफ़ा के दिन पढ़ने के बारे में मन्क़ूल हैं उन का पढ़ना बेहतर है ।

वुक़ूफ़े अ़रफ़ा के दिन पढ़ी जाने वाली दुआ़एं :

﴾1﴿...... لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ وَحْدَہٗ لَا شَرِیْکَ لَہٗ لَہُ الْمُلْکُ وَلَہُ الْحَمْدُ یُحْیِیْ وَیُمِیْتُ وَھُوَ حَیٌّ لَا یَمُوْتُ بِیَدِہِ الْخَیْرُ وَھُوَ عَلٰی کُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ اَللّٰھُمَّ اجْعَلْ فِیْ قَلْبِیْ نُوْرًا وَفِیْ بَصَرِیْ نُوْرًا وَفِیْ لِسَانِیْ نُوْرًا اَللّٰھُمَّ اشْرَحْ لِیْ صَدْرِیْ وَیَسِّرْ لِیْ اَمْرِیْ

या'नी : ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ *के सिवा कोई मा'बूद नहीं, वोह अकेला है, उस का कोई शरीक नहीं, उसी की बादशाहत है, सब ख़ूबियां उसी के लिये हैं, वोह जिलाता और मारता है, वोह ऐसा ज़िन्दा है जिसे मौत नहीं, तमाम भलाई उसी के क़ब्ज़ए क़ुदरत में है, वोह हर चाहे पर क़ादिर है। ऐ* ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ *मेरे दिल, मेरी समाअ़त, मेरी बसारत और मेरी ज़बान को मुनव्वर फ़रमा । ऐ* ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ *मेरे लिये मेरा सीना खोल दे और मेरे लिये मेरा काम आसान फ़रमा ।* [1]

दुआ़ए ख़िज़्र :

﴾2﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना ख़िज़्र عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام से मन्क़ूल दुआ़ ब कषरत पढ़े, जो येह है :

یَا مَنْ لَا یَشْغَلُہٗ شَاْنٌ عَنْ شَاْنٍ وَلَا سَمْعٌ عَنْ سَمْعٍ وَلَا تَشْتَبِہُ عَلَیْہِ الْاَصْوَاتُ یَا مَنْ لَا تُغَلِّطُہُ الْمَسَائِلُ وَلَا تَخْتَلِفُ عَلَیْہِ اللُّغَاتُ یَا مَنْ لَا یُبْرِمُہٗ اِلْحَاحُ الْمُلِحِّیْنَ وَلَا تُضْجِرُہٗ مَسْاَلَۃُ السَّائِلِیْنَ اَذِقْنَا بَرْدَ عَفْوِکَ وَحَلَاوَۃَ مُنَاجَاتِکَ

1 ......السنن الکبری للبیھقی، کتاب الحج، باب افضل الدعا یوم عرفۃ، الحدیث: ۹۴۷۵، ج۵، ص ۱۹۰،
بدون: "یحیی ویمیت وھو حی لایموت بیدہ الخیر"۔

या'नी : *ऐ वोह ज़ात कि जिसे न तो एक काम दूसरे काम से, न एक बात का सुनना दूसरी बात के सुनने से मश्ग़ूल रखता है, न ही उस पर आवाज़ें मुश्तबा होती हैं। ऐ वोह ज़ात जिसे मसाइल में ग़लती नहीं लगती, न ही ज़बानें उस पर मुख़्तलिफ़ होती हैं। ऐ वोह ज़ात जो गिर्या करने वालों के गिर्या से बे चैन नहीं होती, न ही सुवाल करने वालों का सुवाल उसे तंग करता है, हमें अपने दरगुज़र की ठन्डक और क़बूलिय्यते दुआ़ की मिठास चखा।*

इस के इ़लावा जो दुआ़एं याद हों वोह पढ़े। नीज़ अपने लिये, अपने वालिदैन और तमाम मुसलमान मर्दों और औ़रतों के लिये इस्तिग़फ़ार करे। ख़ूब गिड़गिड़ा कर दुआ़ मांगे क्यूंकि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सामने कोई चीज़ बड़ी नहीं।

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मुत़र्रिफ़ رَحْمَةُاللهِ تعالٰی عَلَيْه ने मैदाने अ़रफ़ात में बारगाहे इलाही में यूं अ़र्ज़ की : "ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मेरी वजह से तमाम लोगों की दुआ़ रद्द न करना।"

ह़ज़रते सय्यिदुना बक्र बिन अ़ब्दुल्लाह मुज़नी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَنِی फ़रमाते हैं : एक शख़्स ने कहा कि "जब मैं ने अहले अ़रफ़ात को देखा तो गुमान किया कि अगर मैं इन में न होता तो इन की बख़्शिश कर दी जाती।"

﴾7﴿.....ह़ज के बक़िय्या आ'माल व आदाब :

वुक़ूफ़े अ़रफ़ा के बा'द (मुज़दलिफ़ा में) रात गुज़ारना, कंकरियां मारना, क़ुरबानी करना, सर मुन्डवाना और त़वाफ़ करना। जब ग़ुरूबे आफ़्ताब के बा'द अ़रफ़ात से वापस आए तो सुकून व वक़ार के साथ वापसी हो, घोड़ों और ऊंटों को दौड़ाने से बचे जैसे बा'ज़ लोगों की आ़दत है क्यूंकि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰه تعالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने घोड़े दौड़ाने और ऊंटों को तेज़ चलाने से मन्अ़ किया और इरशाद फ़रमाया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डरो और अच्छी त़रह़ चलो, किसी कमज़ोर को न रौंदो और न किसी मुसलमान को अज़िय्यत पहुंचाओ।"[1]

जब मुज़्दलिफ़ा पहुंचे तो ग़ुस्ल करे क्यूंकि मुज़्दलिफ़ा ह़रम से है, लिहाज़ा ग़ुस्ल कर के वहां दाख़िल हो। अगर पैदल दाख़िल हो सके तो येह अफ़्ज़ल है और ता'ज़ीमे ह़रम के ज़ियादा क़रीब है। रास्ते में बा अवाज़े बुलन्द तल्बिय्या कहता जाए।

मुज़दलिफ़ा की दुआ़ :

जब मुज़्दलिफ़ा पहुंचे तो येह दुआ़ पढ़े :

اَللّٰهُمَّ اِنَّ هٰذِهٖ مُزْدَلِفَةٌ جُمِعَتْ فِيْهَا اَلْسِنَةٌ مُّخْتَلِفَةٌ تَسْئَلُكَ حَوَائِجَ مُؤْتَنِفَةً فَاجْعَلْنِيْ مِمَّنْ دَعَاكَ فَاسْتَجَبْتَ لَهٗ وَتَوَكَّلَ عَلَيْكَ فَكَفَيْتَهٗ

---

1 ......كنزالعمال، كتاب الحج والعمرة، باب فى واجبات الحج ومندوباته، الحديث:١٢٦١٧، ج٥، ص ٨١، مفهومًا۔

या'नी : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ येह मुज़्दलिफ़ा है, इस में मुख़्तलिफ़ ज़बानें बोलने वाले लोग जम्अ़ हैं, हम तुझ से नए सिरे से ह़ाजात का सुवाल करते हैं, मुझे उन लोगों में से कर दे जिन की दुआ़ओं को तूने क़बूल फ़रमाया और उन्हों ने तुझ पर तवक्कुल किया तो तू उन्हें काफ़ी हुवा।"

फिर मुज़्दलिफ़ा में इ़शा के वक़्त में मग़रिब व इ़शा की नमाज़ एक अज़ान और दो इक़ामतों के साथ पढ़े,(1) (अगर मुसाफ़िर हो तो) इ़शा की नमाज़ क़स्र पढ़े, दोनों के दरमियान कोई नफ़्ल न पढ़े, मग़रिब व इ़शा की सुन्नतें, नवाफ़िल व वित्र दोनों के फ़र्ज़ों के बा'द पढ़े,(2) पहले मग़रिब फिर इ़शा के नवाफ़िल पढ़े जैसे फ़र्ज़ों में तरतीब क़ाइम रखी थी, सफ़र में भी नवाफ़िल न छोड़े कि नवाफ़िल का छोड़ना ज़ाहिरी नुक़्सान है। (मग़रिब व इ़शा के) सुनन व नवाफ़िल की वक़्त में अदाएगी का हुक्म देना भी तक्लीफ़ पहुंचाना है, नीज़ नवाफ़िल व फ़राइज़ के दरमियान जो तरतीब है या'नी नफ़्ल फ़र्ज़ के ताबेअ़ हैं इसे ख़त्म करना है। जब ताबेअ़ होने के हुक्म से एक तयम्मुम के साथ नवाफ़िल को फ़राइज़ के साथ अदा किया जा सकता है तो फ़राइज़ के ताबेअ़ कर के इन्हें जम्अ़ कर के पढ़ना बदरजए औला जाइज़ है। नीज़ इस से नवाफ़िल का फ़राइज़ से बा'ज़ बातों में जुदा होना रुकावट नहीं बनता मषलन नफ़्ल सुवारी पर अदा हो सकते हैं (जब कि फ़राइज़ सुवारी पर अदा नहीं हो सकते) येह इस लिये रुकावट नहीं बनते कि येह फ़र्ज़ के ताबेअ़ हैं और ह़ाजत भी पाई जाती है जैसा कि हम ने इस की त़रफ़ इशारा किया।

रात मुज़्दलिफ़ा में ठहरे कि येह भी ह़ज के अरकान में से है। जो रात के पहले निस्फ़ हिस्से में वहां से निकल जाए और वहां रात न गुज़ारे तो इस पर दम (या'नी बकरी ज़ब्ह़ करना) लाज़िम है।(3) जिस से हो सके वोह इस रात को इ़बादत में गुज़ारे कि इस मुबारक रात को इ़बादत

---

❶..... **अह़नाफ़ के नज़्दीक :** अ़रफ़ात में ज़ोहर व अ़स्र के लिये एक अज़ान और दो इक़ामतें हैं और मुज़्दलिफ़ा में मग़रिब व इ़शा के लिये एक अज़ान और एक इक़ामत। (बहारे शरीअ़त, जि.1 स.1133)

❷..... **अह़नाफ़ के नज़्दीक :** दोनों नमाज़ों के दरमियान में सुन्नत व नवाफ़िल न पढ़े। मग़रिब की सुन्नतें भी बा'दे इ़शा पढ़े अगर दरमियान में सुन्नतें पढ़ीं या कोई और काम किया तो एक इक़ामत और कही जाए या'नी इ़शा के लिये। (बहारे शरीअ़त, जि.1 स.1133)

❸..... मुज़्दलिफ़ा में रात गुज़ारना सुन्नते मुअक्कदा है मगर इस का वुक़ूफ़ वाजिब है। वुक़ूफ़े मुज़्दलिफ़ा का वक़्त सुब्ह़े सादिक़ से ले कर तुलूए आफ़्ताब तक है। इस के दरमियान अगर एक लम्ह़ा भी यहां गुज़ार लिया तो वुक़ूफ़ हो गया। ज़ाहिर है कि जिस ने फ़ज्र के वक़्त में यहां नमाज़े फ़ज्र अदा की उस का वुक़ूफ़ सह़ीह़ हो गया। जो सुब्ह़े सादिक़ से पहले ही मुज़्दलिफ़ा से चला गया उस का वाजिब तर्क हो गया। लिहाज़ा उस पर दम वाजिब है। हां, औ़रत, बीमार या ज़ईफ़ या कमज़ोर कि जिन्हें भीड़ के सबब ईज़ा पहुंचने का अन्देशा हो अगर ऐसे लोग मजबूरन चले गए तो कुछ नहीं। (रफ़ीक़ुल ह़रमैन, स.152)

में गुज़ारना उ़म्दा इ़बादात में से है। जब निस्फ़ रात गुज़र जाए तो जाने की तय्यारी करे, वहां से कंकरियां ले ले क्यूंकि वहां नर्म पथ्थर हैं। 70 कंकर ले ले कि इतने ही की ज़रूरत है, ज़रूरत से ज़ियादा लेने में भी कोई ह़रज नहीं क्यूंकि बा'ज़ अवक़ात कोई कंकरी गिर जाती है। नीज़ कंकरियां छोटी हों ताकि उंगलियों के पोरों में आ सकें। फिर अन्धेरे में नमाज़े फ़ज्र पढ़ कर चल पड़े।

मश्अ़रे ह़राम में येह दुआ़ पढ़े :

जब मश्अ़रे ह़राम तक पहुंच जाए जो मुज़्दलिफ़ा का इख़्तिताम है तो वहां खड़ा हो जाए और सुब्ह़ रोशन होने तक येह दुआ़ करता रहे :

اَللّٰھُمَّ بِحَقِّ الْمَشْعَرِ الْحَرَامِ وَالْبَیْتِ الْحَرَامِ وَالشَّھْرِ الْحَرَامِ وَالرُّکْنِ وَالْمَقَامِ اَبْلِغْ رُوْحَ مُحَمَّدٍ مِّنَّا التَّحِیَّۃَ وَالسَّلَامَ وَاَدْخِلْنَا دَارَ السَّلَامِ یَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِکْرَامِ

या'नी : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ *मश्अ़रे ह़राम, बैतुल्लाह शरीफ़, ह़ुरमत वाले महीने, रुक्ने यमानी और मक़ामे इब्राहीम का वासित़ा ! ऐ इ़ज़्ज़त व बुज़ुर्गी वाले ! ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद* صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم *की रूह़े मुबारक को हमारी त़रफ़ से सलाम पहुंचा और हमें सलामती के घर (जन्नत) में दाख़िल फ़रमा।"*

फिर तुलूए़ आफ़्ताब से पहले वहां से चल पड़े यहां तक कि "वादिये मुह़स्सिर" में पहुंच जाए। इस जगह सुवारी को तेज़ करना मुस्तह़ब है ह़त्ता कि वादी से निकल जाए, अगर पैदल हो तो तेज़ तेज़ चले। जब यौमे नह़र (या'नी कुरबानी के दिन) की सुब्ह़ हो तो तक्बीर और तल्बिय्या को मिलाए कि कभी तल्बिय्या कहे और कभी तक्बीर ह़त्ता कि मिना पहुंच जाए और जमरात (या'नी कंकरियां मारने) के तीन मक़ामात में से पहले और दूसरे से गुज़र जाए क्यूंकि यौमे नह़र यहां उस का कोई काम नहीं यहां तक कि जमरए अ़क़बा के पास पहुंच जाए, क़िब्ला रुख़ होने की सूरत में जमरए अ़क़बा दाईं जानिब रास्ते में पहाड़ के नीचे कुछ ऊंचाई पर है और कंकरियों की जगह में से येह वाज़ेह़ है। एक नेज़ा सूरज बुलन्द होने के बा'द जमरए अ़क़बा को कंकरियां मारे।

कंकरियां मारने का त़रीक़ा :[1]

क़िब्ला रू खड़ा हो, अगर जमरे की त़रफ़ मुंह करे तो भी ह़रज नहीं, हाथ बुलन्द कर के सात कंकरियां मारे और तल्बिय्या को तक्बीर में बदल दे। हर कंकरी मारते वक़्त येह दुआ़ पढ़ें :

---

❶..... **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 304 सफ़्ह़ात पर मुश्तमिल किताब रफ़ीक़ुल ह़रमैन सफ़्ह़ा 154 पर शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ कंकरियां मारने का त़रीक़ा इस त़रह़ तह़रीर फ़रमाते हैं : सात कंकरियां अपने उलटे हाथ में रख लें बल्कि दो तीन कंकरियां ज़ाइद ले लें।.......

اللّٰهُ اَكْبَرُ عَلٰى طَاعَةِ الرَّحْمٰنِ وَرَغْمِ الشَّيْطٰنِ اَللّٰهُمَّ تَصْدِيْقًا بِكِتَابِكَ وَاِتِّبَاعًا لِّسُنَّةِ نَبِيِّكَ

*या'नी : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ सब से बड़ा है। मैं रहमान عَزَّوَجَلَّ की इत़ाअ़त और शैत़ान को ज़लीलो रुस्वा करने के लिये कंकरियां मार रहा हूं। ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मैं तेरी किताब की तस्दीक़ करता और तेरे नबी की सुन्नत की पैरवी करता हूं।"*

जब कंकरियां मारना शुरूअ़ करे तो तल्बिय्या व तक्बीर कहना छोड़ दे। अलबत्ता, कुरबानी के दिन की ज़ोहर से अय्यामे तशरीक़ के आख़िरी दिन की फ़ज्र तक फ़र्ज़ नमाज़ के बा'द की तक्बीरे (तशरीक़) कहना न छोड़े।(1) इस दिन वहां दुआ़ के लिये न ठहरे बल्कि अपनी क़ियाम गाह में आ कर दुआ़ मांगे।

तक्बीरे तशरीक़ :

اَللّٰهُ اَكْبَرُ اَللّٰهُ اَكْبَرُ اَللّٰهُ اَكْبَرُ كَبِيْرًا وَّالْحَمْدُ لِلّٰهِ كَثِيْرًا وَّسُبْحٰنَ اللّٰهِ بُكْرَةً وَّاَصِيْلًا لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ وَلَوْ كَرِهَ الْكٰفِرُوْنَ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ صَدَقَ وَعْدَهٗ وَنَصَرَ عَبْدَهٗ وَهَزَمَ الْاَحْزَابَ وَحْدَهٗ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ

*या'नी : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ सब से बड़ा है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ सब से बड़ा है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ सब से बड़ा है, सब ख़ूबियां उसी के लिये हैं, मैं सुब्हो शाम इस की पाकी बयान करता हूं, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई मा'बूद नहीं, वोह यक्ता है, उस का कोई शरीक नहीं, हम उस केलिये दीन को ख़ालिस करते हैं पड़े काफ़िर बुरा माने, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई मा'बूद नहीं, वोह यक्ता है उस ने अपना वा'दा सच्चा किया और अपने बन्दे की मदद की और तन्हा, दुश्मन के लश्करों को भगाया, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई मा'बूद नहीं और **अल्लाह** عَزَّوَजَلَّ सब से बड़ा है,"*

अगर कुरबानी का जानवर साथ हो तो उसे ज़ब्ह करे, अपने हाथ से ज़ब्ह करना बेहतर है।

.......अब सीधे हाथ की शहादत की उंगली और अंगूठे की चुटकी में ले कर और सीधा हाथ अच्छी त़रह़ उठा कर कि बग़ल की रंगत ज़ाहिर हो بسم الله الله اكبر कहते हुए एक एक कर के सात कंकरियां इस त़रह़ मारें कि तमाम कंकरियां जमरे तक पहुंचें वरना कम अज़ कम तीन हाथ के फ़ासिले तक गिरें। पहली कंकरी मारते ही लबैक कहना मौक़ूफ़ कर दें कि अब लबैक कहना सुन्नत न रहा। जब सात पूरी हो जाएं तो वहां न रुके, न सीधे जाएं, न दाएं बाएं। बल्कि फ़ौरन ज़िक्र व दुआ़ करते हुए पलट आइये।

1..... **अह़नाफ़ के नज़्दीक :** नवीं ज़िल हिज्जा की फ़ज्र से तेरहवीं की अ़स्र तक हर नमाज़े फ़र्ज़ पंजगाना के बा'द जो जमाअ़ते मुस्तह़ब के साथ अदा की गई एक बार तक्बीर बुलन्द आवाज़ से कहना वाजिब है और तीन बार अफ़्ज़ल, इसे तक्बीरे तशरीक़ कहते हैं, वो येह है : اَللّٰهُ اَكْبَرُ اَللّٰهُ اَكْبَرُ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ اَللّٰهُ اَكْبَرُ وَلِلّٰهِ الْحَمْدُ

(बहारे शरीअ़त, जि. 1 स. 784)

ज़ब्ह़ करने के बा'द की दुआ़ :

ज़ब्ह़ के बा'द येह दुआ़ पढ़े :

بِسْمِ اللّٰهِ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ اَللّٰهُمَّ مِنْكَ وَبِكَ وَاِلَيْكَ تَقَبَّلْ مِنِّىْ كَمَا تَقَبَّلْتَ مِنْ خَلِيْلِكَ اِبْرٰهِيْم

या'नी : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नाम से, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ सब से बड़ा है, ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ येह कुरबानी तुझ से, तेरे साथ और तेरे लिये, इसे मेरी त़रफ़ से क़बूल फ़रमा जिस त़रह़ तूने अपने ख़लील ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की त़रफ़ से क़बूल फ़रमाई।

सब से अफ़्ज़ल ऊंट की कुरबानी है, फिर गाए की , फिर बकरी की। ऊंट और गाए में सात लोगों के शरीक होने से बकरी की कुरबानी अफ़्ज़ल है। बकरी से दुम्बे की कुरबानी अफ़्ज़ल है।

बेह़तरीन कु़रबानी :

हु़ज़ूर नबिय्ये पाक, साह़िबे लौलाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "बेहतरीन कुरबानी सींगों वाले मेंढ़े की है।"(1) सफ़ेद रंग का दुम्बा मटयाले और सियाह दुम्बे से अफ़्ज़ल है।

एक सफ़ेद दुम्बा दो सियाह दुम्बों से अफ़्ज़ल है :

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं : "कुरबानी में एक सफ़ेद दुम्बा दो सियाह दुम्बों से अफ़्ज़ल है।" अगर नफ़्ली कुरबानी हो तो इस में से कुछ खाए।(2)

वोह ऐ़ब कि जिन के सबब कु़रबानी जाइज़ नहीं :

लंगड़ा होना, नाक या कान का कटा होना, कान का ऊपर या नीचे से चीरा होना, सींगों का टूटा हुवा होना, पाउं कटे हुए होना, ख़ारिश ज़दा होना,(3) कान के अगले या पिछले हिस्से

---

❶......سنن ابی داود، کتاب الجنائز، باب کراھیة المغالاة فی الکفن، الحدیث:۳۱۵۶، ج۳، ص۲۶۷۔

❷..... **अह़नाफ़ के नज़्दीक :** कुरबानी का गोश्त खुद भी खा सकता है और दूसरे शख़्स ग़नी या फ़क़ीर को दे सकता है खिला सकता है बल्कि उस से कुछ खा लेना कुरबानी करने के लिये मुस्तह़ब है। कुरबानी अगर मन्नत की है तो इस का गोश्त न खुद खा सकता है न अग़निया को खिला सकता है बल्कि उस को सदक़ा कर देना वाजिब है वोह मन्नत मानने वाला फ़क़ीर हो या ग़नी दोनों का एक ही हुक्म है कि खुद नहीं खा सकता है न ग़नी को खिला सकता है।

❸..... **अह़नाफ़ के नज़्दीक :** ख़ारिशी जानवर की कुरबानी जाइज़ है जब कि फ़रबा (मोटा, सिह़ह़त मन्द) हो और इतना लाग़र कि हड्डी में मग़्ज़ न रहा तो कुरबानी जाइज़ नहीं। (बहारे शरीअ़त, जि.1 स. 340)

नोट : मज़ीद तफ़्सील के लिये बहारे शरीअ़त के मज़्कूरा मक़ाम का मुत़ालआ़ कीजिये !

में सुराख़ होना इतना दुब्ला व कमज़ोर कि हड्डियों में गुदा न रहे। जिस जानवर में मज़्कूरा उ़यूब में से कोई ऐ़ब हो उस की कुरबानी जाइज़ नहीं।

कुरबानी के बा'द सर मुंडाए। सुन्नत येह है कि क़िब्ला रू हो, सर के अगले हि़स्से से शुरूअ़ करे और दाईं त़रफ़ से गुद्दी पर उभरी हुई हड्डियों तक ह़ल्क़ कराए फिर बाक़ी सर का ह़ल्क़ कराए।

ह़ल्क़ कराने के बा'द की दुआ़ :

सर मुन्डवाने के बा'द येह दुआ़ पढ़े :

اَللّٰهُمَّ اثْبِتْ لِیْ بِکُلِّ شَعْرَةٍ حَسَنَةً وَّامْحُ عَنِّیْ بِهَا سَیِّئَةً وَّارْفَعْ لِیْ بِهَا عِنْدَكَ دَرَجَةً *या'नी : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हर बाल के बदले मेरे लिये नेकी लिख दे और गुनाह मिटा दे और अपने हां हर बाल के बदले एक दर्जा बुलन्द फ़रमा दे।"*

औ़रत (पौरे बराबर) बाल कतरवाए। गन्जे के लिये सर पर उस्तरा फिराना मुस्तह़ब है।[1] जमरों को कंकरियां मारने के बा'द जब ह़ल्क़ कराए तो एह़राम से बाहर हो गया, सिवाए औ़रतों और शिकार के तमाम ममनूअ़ काम ह़लाल हो गए। फिर मक्कए मुकर्रमा की त़रफ़ लौटे और हमारे बयान कर्दा त़रीक़े के मुत़ाबिक़ त़वाफ़ करे, येह त़वाफ़ ह़ज का रुक्न है इसे त़वाफ़े ज़ियारत कहते हैं।

त़वाफ़े ज़ियारत का वक़्त :

इस का अव्वल वक़्त कुरबानी की निस्फ़ रात के बा'द से शुरूअ़ होता है। अफ़्ज़ल वक़्त कुरबानी का दिन है। इस के लिये आख़िरी वक़्त मुक़र्रर नहीं बल्कि इसे मुअख़्ख़र कर सकता है लेकिन एह़राम की क़ैद बाक़ी रहेगी, इस त़वाफ़ के बा'द ही उस के लिये औ़रत का कुर्ब ह़लाल होगा। एह़राम से मुकम्मल त़ौर पर उस वक़्त बाहर होगा जब त़वाफ़े ज़ियारत कर ले, बीवी से जिमाअ़ भी तब ही जाइज़ होगा। अब सिर्फ़ अय्यामे तशरीक़ की कंकरियां मारना और मिना में रात गुज़ारना बाक़ी है, एह़राम से निकलने के बा'द ह़ज की इत्तिबाअ़ में येह वाजिब है। दो रक्अ़तों के साथ त़वाफ़े ज़ियारत का त़रीक़ा वोही है जो त़वाफ़े कुदूम का है। जब दो रक्अ़तें पढ़ चुके तो हमारे बयान कर्दा त़रीक़े के मुत़ाबिक़ (सफ़ा व मर्वा के दरमियान) सअ़्य करे बशर्तेकि त़वाफ़े कुदूम के बा'द सअ़्य न की हो और अगर सअ़्य कर चुका है तो इस का येह रुक्न अदा हो गया अब दोबारा सअ़्य करना ज़रूरी नहीं।

एह़राम से निकलने के अस्बाब :

एह़राम से निकलने के तीन अस्बाब हैं :

---

❶..... **अह़नाफ़ के नज़्दीक :** जिस के सर पर बाल न हो उसे उस्तरा फिरवाना वाजिब है।
(बहारे शरीअ़त, जि.1 स.1142)

(1)....कंकरियां मारना (2)....सर मुन्डवाना (3)....फ़र्ज़ त़वाफ़ करना।

इन तीन में से दो बातें पाई गईं तो उस के लिये दो में से एक ह़िल्लत पाई गई और ज़ब्ह़ के साथ इन तीनों को मुक़द्दम व मुअख़्ख़र करने में कोई ह़रज नहीं, मगर बेहतर येह है कि पहले कंकरियां मारे, फिर ज़ब्ह़ करे, फिर सर मुंडाए फिर त़वाफ़ करे। इस दिन इमाम के लिये सुन्नत येह है कि ज़वाल के बा'द खुत़बा दे और येह रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का अलवदाई खुत़बा था।

ह़ज के खुत़बात :

ह़ज में चार खुत़बे हैं : (1).... सातवीं ज़ुल ह़िज्जा का खुत़बा (2)....यौमे अ़रफ़ा (नवीं ज़ुल ह़िज्जा) का खुत़बा (3)....कुरबानी के दिन का खुत़बा (4)....मिना से वापसी के पहले दिन (या'नी बारहवीं ज़ुल ह़िज्जा) का खुत़बा।[1] येह तमाम खुत़बे ज़वाल के बा'द होंगे। तमाम में एक खुत़बा होगा सिवाए अ़रफ़ात कि इस में दो खुत़बे होंगे जिन के दरमियान बैठना है। जब त़वाफ़ से फ़ारिग़ हो जाए तो रात गुज़ारने और कंकरियां मारने के लिये मिना वापस लौटे और वोह रात मिना में गुज़ारे। इस रात को लैलतुल क़र (या'नी ठहरने की रात) कहा जाता है क्यूंकि दूसरे दिन लोग मिना में ठहरते हैं, वहां से जाते नहीं। जब ईद का दूसरा दिन आए और सूरज ढल जाए तो कंकरियां मारने के लिये गुस्ल करे और पहले जमरह जो अ़रफ़ात से मिला हुवा है उस का क़स्द करे, येह रास्ते की दाईं जानिब है, इसे सात कंकरियां मारे जब इस से आगे निकल जाए तो रास्ते की दाईं जानिब से थोड़ा हट कर क़िब्ला रुख़ खड़ा हो और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ह़म्द करे, لَا اِلٰهَ اِلَّا الله और اَللهُ اَكْبَر पढ़े, फिर ह़ुज़ूरे क़ल्ब और खुशूअ़ व खुज़ूअ़ के साथ दुआ़ मांगे। दुआ़ मांगते हुए सूरए बक़रह पढ़ने की मिक़दार क़िब्ला रू खड़ा रहे फिर जमरए वुस्त़ा की त़रफ़ जाए और उसे भी पहले जमरह की त़रह़ कंकरियां मारे और यहां भी पहले की त़रह़ खड़ा हो कर दुआ़ मांगे, फिर जमरए अ़क़बा की त़रफ़ आए और सात दफ़्आ़ कंकरियां मारे, फिर किसी और काम में मश्ग़ूल न हो बल्कि अपनी क़ियाम गाह की त़रफ़ लौटे और येह रात भी मिना में गुज़ारे, इस रात को ليلة النفر الاوّل (या'नी पहले कूच की रात) कहा जाता है, यहीं सुब्ह़ करे और अय्यामे तशरीक़ के दूसरे दिन जब ज़ोहर की नमाज़ पढ़ ले तो इस दिन भी 21 कंकरियां मारे जैसे गुज़श्ता दिन मारी थीं, फिर उसे इख़्तियार है कि मिना में रात गुज़ारे या मक्कए मुकर्रमा वापस लौट जाए। अगर गुरूबे आफ़्ताब से पहले मिना से निकला तो उस पर कुछ लाज़िम नहीं, अगर रात

---

[1]..... **अह़नाफ़ के नज़्दीक :** ह़ज में तीन खुत़बे सुन्नत हैं : (1).....इमाम का मक्के में सातवीं को और (2)....अ़रफ़ात में नवीं को और (3)....मिना में ग्यारहवीं को खुत़बा पढ़ना। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 1050)

तक सब्र किया तो निकलना जाइज़ नहीं बल्कि रात गुज़ारना लाज़िम है यहां तक कि दूसरे कूच के दिन **21** कंकरियां मारे जैसा कि गुज़र चुका है। मिना में रात न गुज़ारने और कंकरियां न मारने की वजह से जानवर ज़ब्ह़ करना लाज़िम होता है और उसे चाहिये कि इस का गोश्त सदक़ा कर दे (ख़ुद न खाए)। मिना की रातों में ज़ियारते बैतुल्लाह शरीफ़ के क़स्द से जा सकता है बशर्तेकि रात मिना ही में गुज़ारे[1] कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का येही त़रीक़ा था। (मिना में मौजूद) मस्जिदे ख़ैफ़ में इमाम के साथ फ़र्ज़ नमाज़ की ह़ाज़िरी को तर्क न करे क्यूंकि इस की बड़ी फ़ज़ीलत है। जब मिना से वापस आए तो अफ़्ज़ल येह है कि "**वादिये मुह़स्सब**" में ठहरे, वहां अ़स्र, मग़रिब और इशा की नमाज़ पढ़े और कुछ देर सो जाए कि येह सुन्नत है, इसे एक गुरौहे सह़ाबा رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْهِمْ اَجْمَعِیْن ने रिवायत किया, अगर ऐसा न किया तब भी उस पर कुछ लाज़िम नहीं।

﴾8﴿.....उ़मरह और त़वाफ़े वदाअ़ तक के दीगर आदाब :

जो शख़्स ह़ज से पहले या बा'द उ़मरा का इरादा रखता हो तो वोह गुस्ल कर के मीक़ात से उ़मरे का एह़राम बांध ले जैसा कि ह़ज के बयान में गुज़र चुका है और उ़मरे का अफ़्ज़ल मीक़ात **जिइर्राना** है फिर **तनईम** फिर **हुदैबिया**। उ़मरे की निय्यत कर के तल्बिय्या कहे, मस्जिदे आ़इशा का क़स्द करे और वहां दो रक्अ़तें पढ़े और जो चाहे दुआ़ मांगे फिर तल्बिय्या कहते हुए मक्कए मकर्रमा आ जाए यहां तक कि मस्जिदे ह़राम में दाख़िल हो जाए। जब मस्जिदे ह़राम में दाख़िल हो तो तल्बिय्या कहना छोड़ दे, सात मरतबा त़वाफ़ करे और सात मरतबा हमारे बयान कर्दा त़रीक़े के मुत़ाबिक़ सअ़्य करे, जब फ़ारिग़ हो जाए तो सर मुन्डवाए, यूं उस का उ़मरह मुकम्मल हो जाएगा।

जो शख़्स मक्कए मुकर्रमा में क़ियाम पज़ीर हो उसे चाहिये कि उ़मरे और त़वाफ़ कषरत से करे, बैतुल्लाह शरीफ़ की ज़ियारत ब कषरत करे, अगर (ख़ुश नसीबी से) बैतुल्लाह शरीफ़ में दाख़िल होने की सआ़दत मिल जाए तो ता'ज़ीमन नंगे पाउं दाख़िल हो और दो सुतूनों के दरमियान दो रक्अ़त नमाज़ पढ़े कि येह अफ़्ज़ल है।

मेरे क़दम तो इस क़ाबिल भी नहीं .....!

किसी बुज़ुर्ग से पूछा गया : "क्या आज आप बैतुल्लाह शरीफ़ में दाख़िल हुए हैं ?"

---

❶..... **अह़नाफ़ के नज़दीक :** येह चीज़ें ह़ज की सुन्नतों में से हैं : नवीं रात मिना में गुज़ारना। आफ़्ताब निकलने के बा'द मिना से अ़रफ़ात को रवाना होना। वुक़ूफ़े अ़रफ़ा के लिये गुस्ल करना। अ़रफ़ात से वापसी में मुज़्दलिफ़ा में रात को रहना और आफ़्ताब निकलने से पहले यहां से मिना को चले जाना। (बहारे शरीअ़त, जि.1, स. 1050)

फ़रमाया : “अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! बैतुल्लाह शरीफ़ में दाख़िल होना तो दूर की बात मैं तो अपने क़दमों को इस क़ाबिल भी नहीं समझता कि येह बैतुल्लाह शरीफ़ का त़वाफ़ करें क्यूंकि मैं जानता हूं कि येह कहां चले और किस त़रफ़ चले हैं ।”

ज़मज़म पिये और येह दुआ़ मांगे :

ख़ूब पेट भर कर ज़मज़म पिये, अगर मुमकिन हो तो किसी की मदद लिये बिग़ैर ख़ुद निकाल कर पिये और येह दुआ़ पढ़े : “اَللّٰھُمَّ اجْعَلْہُ شِفَاءً مِّنْ كُلِّ دَاءٍ وَسَقَمٍ وَّارْزُقْنِی الْاِخْلَاصَ وَالْيَقِيْنَ وَالْمُعَافَاةَ فِی الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ या'नी : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इसे हर बीमारी और कमज़ोरी के लिये शिफ़ा बना और मुझे इख़्लास, यक़ीन और दुन्या व आख़िरत में आ़फ़िय्यत की ने'मत से सरफ़राज़ फ़रमा ।”

ह़दीषे पाक में है कि हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : “आबे ज़मज़म इसी मक़्सद के लिये है जिस के लिये इसे पिया जाए ।”(1) या'नी जिस बीमारी से शिफ़ा की निय्यत से पिया जाए उस से शिफ़ा मिल जाती है ।

﴾9﴿.....त़वाफ़े वदाअ़ के आदाब :

ह़ज व उ़मरह की तक्मील के बा'द जब वत़न वापसी का इरादा हो तो पहले दीगर काम कर ले, सुवारी पर कजावा कस ले और बैतुल्लाह शरीफ़ से रुख़्सती सब से आख़िर में हो ।

मक्कए मुकर्रमा से रुख़्सती के आदाब :

मक्का शरीफ़ से रुख़्सत होने से क़ब्ल रमल व इज़्तिबाअ़ के बिग़ैर बैतुल्लाह शरीफ़ का सात बार त़वाफ़ करे, जब त़वाफ़ कर ले तो मक़ामे इब्राहीम के पीछे दो रक्अ़त नमाज़ पढ़े, आबे ज़म ज़म पिये फिर मुल्तज़म की त़रफ़ आए और ख़ूब गिड़ गिड़ा कर यूं दुआ़ मांगे :

اَللّٰھُمَّ اِنَّ الْبَيْتَ بَيْتُكَ وَالْعَبْدَ عَبْدُكَ وَابْنُ عَبْدِكَ وَابْنُ اَمَتِكَ حَمَلْتَنِیْ عَلٰی مَا سَخَّرْتَ لِیْ مِنْ خَلْقِكَ حَتّٰی سَيَّرْتَنِیْ فِیْ بِلَادِكَ وَبَلَّغْتَنِیْ بِنِعْمَتِكَ حَتّٰی اَعَنْتَنِیْ عَلٰی قَضَاءِ مَنَاسِكِكَ فَاِنْ كُنْتَ رَضِيْتَ عَنِّیْ فَازْدَدْ عَنِّیْ رِضًا وَاِلَّا فَمُنَّ الْاٰنَ قَبْلَ تَبَاعُدِیْ عَنْ بَيْتِكَ هٰذَا اَوَانَ اِنْصِرَافِیْ اِنْ اَذِنْتَ لِیْ غَيْرَ مُسْتَبْدِلٍ بِكَ وَلَا بِبَيْتِكَ وَلَا رَاغِبٍ عَنْكَ وَلَا عَنْ بَيْتِكَ اَللّٰھُمَّ اَصْحِبْنِیَ الْعَافِيَةَ فِیْ بَدَنِیْ وَالْعِصْمَةَ فِیْ دِيْنِیْ وَاَحْسِنْ مُنْقَلَبِیْ وَارْزُقْنِیْ طَاعَتَكَ اَبَدًا مَا اَبْقَيْتَنِیْ وَاجْمَعْ لِیْ خَيْرَ الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ اِنَّكَ عَلٰی كُلِّ شَیْءٍ قَدِيْرٌ اَللّٰھُمَّ لَا تَجْعَلْ هٰذَا آخِرَ عَهْدِیْ بِبَيْتِكَ الْحَرَامِ وَاِنْ جَعَلْتَهٗ آخِرَ عَهْدِیْ فَعَوِّضْنِیْ عَنْهُ الْجَنَّةَ

---

(1)......سنن ابن ماجه، کتاب المناسک، باب الشرب من زمزم، الحدیث:۳۰۶۲، ج۳، ص۴۹۰، دون "ماء"

या'नी : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ येह घर तेरा घर है और येह बन्दा तेरा बन्दा, तेरे बन्दे और तेरी बन्दी का बेटा है, अपनी मख़्लूक़ में से मुझे तू ने उस चीज़ पर सुवार किया जिसे तू ने मेरे क़ाबू में किया हत्ता कि मुझे अपने शहरों की सैर कराई, अपनी ने'मत से सरफ़राज़ फ़रमाया, अरकाने हज की अदाएगी में मेरी मदद फ़रमाई, अगर तू मुझ से राज़ी है तो मज़ीद रिज़ा अ़ता फ़रमा, अगर राज़ी नहीं तो अपने इस घर से वापसी से पहले पहले मुझ पर एह़सान फ़रमा, अगर तू मुझे इजाज़त दे तो मैं तेरी जगह किसी और को इख़्तियार न करूं, तेरे घर के इलावा कोई और घर न चाहूं, तुझ से और तेरे घर से मुंह न फेरूं, ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मुझे बदन में आ़फ़िय्यत और दीन में हि़फ़ाज़त अ़ता फ़रमा, मेरा आलोटना अच्छा फरमा, मुझे हमेशा अपनी इत़ाअ़त की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमा, मेरे लिये दुन्या व आख़िरत की भलाई जम्अ़ फ़रमा, बेशक तू हर चाहे पर क़ादिर है। ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मेरी बैतुल्लाह शरीफ़ की इस ह़ाज़िर को आख़िरी ह़ाज़िरी न बना, अगर तू ने इसे मेरी आख़िरी ह़ाज़िरी बनाया तो मुझे इस के बदले जन्नत अ़ता फ़रमा।"

मुस्तह़ब येह है कि जब तक बैतुल्लाह शरीफ़ से ओझल न हो इस से निगाह न फेरे।

﴾10﴿..... ज़ियारते मदीना और इस के आदाब :

तीन फ़रामीने मुस्त़फ़ा :

﴾1﴿.....مَنْ زَارَنِیْ بَعْدَ وَفَاتِیْ فَکَاَنَّمَا زَارَنِیْ فِیْ حَیَاتِیْ या'नी जिस ने मेरी वफ़ात के बा'द मेरी ज़ियारत की गोया उस ने मेरी ज़िन्दगी में मेरी ज़ियारत की।(1)

﴾2﴿......مَنْ وَجَدَ سِعَةً وَلَمْ یَفِدْ اِلَیَّ فَقَدْ جَفَانِیْ या'नी जो बा वुजूदे क़ुदरत मेरी ज़ियारत को न आया उस ने मुझ से जफ़ा की।

﴾3﴿......مَنْ جَاءَنِیْ زَائِرًا لَایُھِمُّہٗ اِلَّا زِیَارَتِیْ کَانَ حَقًّا عَلَی اللّٰہِ اَنْ اَکُوْنَ لَہٗ شَفِیْعًا या'नी जो मेरी ज़ियारत के लिये आया और उस का मेरी ज़ियारत के सिवा कोई मक़्सद न था तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ज़िम्मए करम पर है कि मैं उस का शफ़ीअ़ बनूं।(2)

मदीनए मुनव्वरा के दरो दीवार पर नज़र पड़े तो येह पढ़ो !

जिस का ज़ियारते मदीना का इरादा हो वोह रास्ते में हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم पर कषरत से दुरूदे पाक पढ़े। जब मदीनए मुनव्वरा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعْظِیْمًا के दरो दीवार और

---

1 ......السنن الکبری للبیھقی، کتاب الحج، باب زیارۃ قبرالنبی صلی اللہ علیہ وسلم، الحدیث:۱۰۲۷۴، ج۵، ص۴۰۳، مفھومًا۔

2 ......المعجم الکبیر، الحدیث:۱۳۱۴۹، ج۱۲، ص۲۲۵، مفھومًا۔

दरख़्तों पर नज़र पड़े तो यूं कहे :

“اَللّٰهُمَّ هٰذَا حَرَمُ رَسُوْلِكَ فَاجْعَلْهُ لِيْ وِقَايَةً مِّنَ النَّارِ وَاَمَانًا مِّنَ الْعَذَابِ وَسُوْءِ الْحِسَابِ *या'नी :* ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ येह तेरे रसूले *पाक का ह़रम है, इसे मेरे लिये जहन्नम से बचने, अ़ज़ाब और बुरे ह़िसाब से अमान का सबब बना।”*

मदीनए मुनव्वरा के आदाब :

मदीना शरीफ़ में दाख़िल होने से पहले बिअरे ह़ुर्रा (ह़ुर्रा के मक़ाम पर एक कुंवां है इस के पानी) से ग़ुस्ल करे, ख़ुश्बू लगाए, साफ़ कपड़े पहने, आ़जिज़ी व इन्किसारी करते, ता'ज़ीम बजा लाते हुए दाख़िल हो और येह दुआ़ पढ़े :

بِسْمِ اللّٰهِ وَعَلٰى مِلَّةِ رَسُوْلِ اللّٰهِ رَبِّ اَدْخِلْنِيْ مُدْخَلَ صِدْقٍ وَّاَخْرِجْنِيْ مُخْرَجَ صِدْقٍ وَّاجْعَلْ لِّيْ مِنْ لَّدُنْكَ سُلْطَانًا نَّصِيْرًا

या'नी : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ *के नाम से और हुज़ूर नबिय्ये करीम* صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم *के दीन पर दाख़िल होता हूं ऐ मेरे रब्ब ! मुझे सच्ची त़रह़ दाख़िल कर और सच्ची त़रह़ बाहर ले जा और मुझे अपनी त़रफ़ से मददगार ग़लबा दे।”*

मस्जिदे नबवी के आदाब :

फिर मस्जिदे नबवी शरीफ़ का क़स्द करे, मस्जिद में दाख़िल हो, मिम्बर के पास दो रक्अ़त नमाज़ अदा करे, मिम्बर के सुतून को अपने दाएं कन्धे के मुक़ाबिल रखे, मुंह उस सुतून की त़रफ़ करे जिस त़रफ़ सन्दूक़ है, मस्जिद के क़िब्ले में जो दाइरा है वोह आंखों के सामने हो कि मस्जिद की तब्दीली (या'नी अज़ सरे नौ ता'मीर) से पहले प्यारे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم नमाज़ के लिये यहीं खड़े होते थे। मस्जिद के उस ह़िस्से में नमाज़ पढ़ने की कोशिश करे जो तौसीअ़ से पहले थी।

रौज़ए अक़्दस पर ह़ाज़िरी :

फिर रौज़ए अक़्दस के पास ह़ाज़िर हो और सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के चेहरए अन्वर की जानिब रुख़ कर के इस त़रह़ खड़ा हो कि क़िब्ले की त़रफ़ पीठ हो और रौज़ए मुबारका की दीवार की त़रफ़ रुख़ कर के इस सुतून से चार गज़ के फ़ासिले पर खड़ा हो जो रौज़ए अक़्दस की दीवार से मुत्तसिल है, क़िन्दील सर पर रहे। रौज़ए अन्वर की दीवार को छूना और बोसा देना अदब के ख़िलाफ़ है बल्कि दूर खड़ा होना एह़तिराम के ज़ियादा क़रीब है। मज़्कूरा त़रीक़े के मुत़ाबिक़ खड़ा हो कर यूं हदिय्यए सलाम पेश करे।

اَلسَّلَامُ عَلَیْكَ یَا رَسُوْلَ اللّٰهِ اَلسَّلَامُ عَلَیْكَ یَا نَبِیَّ اللّٰهِ اَلسَّلَامُ عَلَیْكَ یَا اَمِیْنَ اللّٰهِ اَلسَّلَامُ عَلَیْكَ یَا حَبِیْبَ اللّٰهِ اَلسَّلَامُ عَلَیْكَ یَا صَفْوَةَ اللّٰهِ اَلسَّلَامُ عَلَیْكَ یَا خِیْرَةَ اللّٰهِ اَلسَّلَامُ عَلَیْكَ یَا اَحْمَدُ اَلسَّلَامُ عَلَیْكَ یَا مُحَمَّدُ اَلسَّلَامُ عَلَیْكَ یَا اَبَا الْقَاسِمِ اَلسَّلَامُ عَلَیْكَ یَا مَاحِیُ اَلسَّلَامُ عَلَیْكَ یَا عَاقِبُ اَلسَّلَامُ عَلَیْكَ یَا حَاشِرُ اَلسَّلَامُ عَلَیْكَ یَا بَشِیْرُ اَلسَّلَامُ عَلَیْكَ یَانَذِیْرُ اَلسَّلَامُ عَلَیْكَ یَا طُهْرُ اَلسَّلَامُ عَلَیْكَ یَا طَاهِرُ اَلسَّلَامُ عَلَیْكَ یَا اَكْرَمَ وُلْدِ آدَمَ اَلسَّلَامُ عَلَیْكَ یَا سَیِّدَ الْمُرْسَلِیْنَ اَلسَّلَامُ عَلَیْكَ یَاخَاتِمَ النَّبِیِّیْنَ اَلسَّلَامُ عَلَیْكَ یَا رَسُوْلَ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ اَلسَّلَامُ عَلَیْكَ یَا قَائِدَ الْخَیْرِ اَلسَّلَامُ عَلَیْكَ یَا فَاتِحَ الْبِرِّ اَلسَّلَامُ عَلَیْكَ یَانَبِیَّ الرَّحْمَةِ اَلسَّلَامُ عَلَیْكَ یَا هَادِیَ الْاُمَّةِ اَلسَّلَامُ عَلَیْكَ یَا قَائِدَ الْغُرِّ الْمُحَجَّلِیْنَ اَلسَّلَامُ عَلَیْكَ وَعَلٰی اَهْلِ بَیْتِكَ الَّذِیْنَ اَذْهَبَ اللّٰهُ عَنْهُمُ الرِّجْسَ وَطَهَّرَهُمْ تَطْهِیْرًا اَلسَّلَامُ عَلَیْكَ وَعَلٰی اَصْحَابِكَ الطَّیِّبِیْنَ وَعَلٰی اَزْوَاجِكَ الطَّاهِرَاتِ اُمَّهَاتِ الْمُؤْمِنِیْنَ جَزَاكَ اللّٰهُ عَنَّا اَفْضَلَ مَا جَزٰی نَبِیًّا عَنْ قَوْمِهٖ وَرَسُوْلًا عَنْ اُمَّتِهٖ وَصَلّٰی عَلَیْكَ كُلَّمَا ذَكَرَكَ الذَّاكِرُوْنَ وَكُلَّمَا غَفَلَ عَنْكَ الْغَافِلُوْنَ وَصَلّٰی عَلَیْكَ فِی الْاَوَّلِیْنَ وَالْاٰخِرِیْنَ اَفْضَلَ وَاَكْمَلَ وَاَعْلٰی وَاَجَلَّ وَاَطْیَبَ وَاَطْهَرَ مَا صَلّٰی عَلٰی اَحَدٍ مِنْ خَلْقِهٖ كَمَا اِسْتَنْقَذْنَا بِكَ مِنَ الضَّلَالَةِ وَبَصَّرَنَا بِكَ مِنَ الْعِمَایَةِ وَهَدَانَا بِكَ مِنَ الْجَهَالَةِ اَشْهَدُ اَنْ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِیْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّكَ عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ وَاَمِیْنُهٗ وَصَفِیُّهٗ وَخِیَرَتُهٗ مِنْ خَلْقِهٖ وَاَشْهَدُ اَنَّكَ قَدْ بَلَّغْتَ الرِّسَالَةَ وَاَدَّیْتَ الْاَمَانَةَ وَ نَصَحْتَ الْاُمَّةَ وَجَاهَدْتَ عَدُوَّكَ وَهَدَیْتَ اُمَّتَكَ وَعَبَدْتَ رَبَّكَ حَتّٰی اَتَاكَ الْیَقِیْنُ فَصَلَّی اللّٰهُ عَلَیْكَ وَعَلٰی اَهْلِ بَیْتِكَ الطَّیِّبِیْنَ وَسَلَّمَ وَشَرَّفَ وَكَرَّمَ وَعَظَّمَ

या'नी : ऐ **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के रसूल صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم आप पर सलाम हो, ऐ **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के नबी ! आप पर सलाम हो, ऐ **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के अमीन ! आप पर सलाम हो, ऐ **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के ह़बीब ! आप पर सलाम हो, ऐ **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के चुने हुए ! आप पर सलाम हो, ऐ **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के बेहतर मख़्लूक़ ! आप पर सलाम हो, ऐ अह़मद صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم आप पर सलाम हो, ऐ मुह़म्मद صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم आप पर सलाम हो, ऐ अबल क़ासिम ! आप पर सलाम हो ऐ गुनाहों को मिटाने वाले ! आप पर सलाम हो, ऐ सब से आख़िर में आने वाले ! आप पर सलाम हो , ऐ जम्अ़ करने वाले ! आप पर सलाम हो , ऐ ख़ुश ख़बरी देने वाले ! आप पर सलाम हो, ऐ आने वाले ख़त़रात से मुतनब्बेह करने वाले ! आप पर सलाम हो, ऐ पाक ज़ात ! आप पर सलाम हो, ऐ त़ाहिर ! आप पर सलाम हो, ऐ औलादे आदम में सब से ज़ियादा मुकर्रम ! आप पर सलाम हो, ऐ तमाम रसूलों के सरदार, आप पर सलाम हो, ऐ सब से आख़िरी नबी ! आप पर सलाम हो, ऐ तमाम जहानों के रब्ब के रसूल ! आप पर सलाम हो, ऐ भलाई के क़ाइद ! आप पर सलाम हो, ऐ नेकी का दरवाज़ा खोलने वाले ! आप पर सलाम हो, ऐ नबिय्ये रह़मत ! आप पर सलाम हो, ऐ हादिय्ये उम्मत ! आप पर सलाम हो, ऐ चमकते चेहरे वालों के क़ाइद ! आप पर सलाम हो, आप पर और आप के अहले बैत पर कि जिन से **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ने नापाकी को दूर और इन्हें ख़ूब सुथरा किया, सलाम हो आप

पर, आप के पाकीज़ा अस्ह़ाब और आप की पाक बाज़ अज़्वाजे मोअमिनीन की माओं पर सलाम हो, अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ हमारी त़रफ़ से आप को इस से अफ़्ज़ल जज़ा अ़ता फ़रमाए जो किसी नबी को उस की क़ौम या किसी रसूल को उस की उम्मत की त़रफ़ से अ़ता फ़रमाई, अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ आप पर रह़मत नाज़िल फ़रमाए जब भी याद करने वाले आप को याद करें, जब भी ग़फ़्लत शिआ़र आप से ग़ाफ़िल रहें, अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ आप पर पहलों और पिछलों में वोह रह़मत नाज़िल फ़रमाए जो किसी मख़्लूक़ पर नाज़िल होने वाली रह़मत से ज़ियादा फ़ज़ीलत वाली, ज़ियादा कामिल, ज़ियादा बुलन्द और ज़ियादा पाक हो जैसा कि उस ने आप के ज़रीए़ हमें गुमराही से बचाया और हमें (दिली) अन्धेपन से बचा कर बसीरत अ़ता फ़रमाई और आप के ज़रीए़ हमें हिदायत अ़ता फ़रमाई। मैं गवाही देता हूं कि अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ के सिवा कोई मा'बूद नहीं, वोह यक्ता है उस का कोई शरीक नहीं, मैं गवाही देता हूं कि आप उस के बन्दे, रसूल, अमीन, चुने हुए और उस की मख़्लूक़ में सब से बेहतर हैं, मैं गवाही देता हूं कि आप ने उस का पैग़ाम पहुंचा दिया, अमानत अदा कर दी, उम्मत की ख़ैर ख़्वाही की, कुफ़्फ़ार से जिहाद किया, अपनी उम्मत को हिदायत दी, तमाम ज़िन्दगी इ़बादत में गुज़ारी, आप पर और आप के अहले बैत पर अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ की रह़मत, सलाम, बुज़ुर्गी, करामत और अ़ज़मत का नुज़ूल हो।

बारगाहे रिसालत में किसी का सलाम पहुंचाने का त़रीक़ा :

अगर किसी ने बारगाहे रिसालत में हदिय्यए सलाम पेश करने की नसीह़त की हो तो यूं कहे : "اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ مِنْ فُلَانٍ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ مِنْ فُلَانٍ या'नी (या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) फुलां बिन फुलां की त़रफ़ से आप पर सलाम हो या फुलाना बिन्ते फुलां की त़रफ़ से आप पर सलाम हो।"

बारगाहे सिद्दीक़ी व फ़ारूक़ी में हदिय्यए सलाम :

फिर बारगाहे सिद्दीक़ी में हदिय्यए सलाम पेश करने के लिये एक गज़ की मिक़्दार पीछे हट जाए क्यूंकि अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ का सरे मुबारक रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के मुबारक कन्धे के पास है और बारगाहे फ़ारूक़ी में हदिय्यए सलाम करने के लिये एक गज़ की मिक़्दार और पीछे हट जाए क्यूंकि अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ का मुबारक सर अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ के कन्धे के क़रीब है। फिर बारी बारी दोनों की बारगाह में यूं सलाम पेश करे :

اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمَا يَا وَزِيْرَىْ رَسُوْلِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَالْمُعَاوِنِيْنَ لَهٗ عَلَى الْقِيَامِ بِالدِّيْنِ مَا دَامَ حَيًّا وَالْقَائِمِيْنَ فِيْ اُمَّتِهٖ بَعْدَهٗ بِاُمُوْرِ الدِّيْنِ تَتَّبِعَانِ فِيْ ذٰلِكَ اٰثَارَهٗ وَتَعْمَلَانِ بِسُنَّتِهٖ فَجَزَاكُمَا اللهُ خَيْرَ مَا جَزٰى وَزِيْرَىْ نَبِيٍّ عَنْ دِيْنِهٖ

या'नी : ऐ रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के वज़ीरों, सरकार की ह़याते मुबारका में दीने मतीन को क़ाइम रखने में इन की मदद करने वालों और विसाले (ज़ाहिरी) के बा'द उम्मत में दीन के उमूर को क़ाइम रखने वालो ! तुम पर सलाम हो, इस मुआमले में तुम ने हुज़ूर के त़रीके़ पर अ़मल किया और सुन्नते रसूल की पैरवी की, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम्हें इस से बेहतर बदला अ़त़ा फ़रमाए जो किसी नबी के दो वज़ीरों को दीन के मुआमले में दिया ।

हुज़ूर के वसीले से दुआ :

फिर लौट कर रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की क़ब्रे अन्वर और सुतून (जो सय्यिदुना इमाम ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِي के दौर में था उस) के दरमियान सरकार के सरे अक़्दस के सामने जानिबे क़िब्ला मुंह कर के खड़ा हो, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ह़म्द व बुज़ुर्गी बयान करे और कषरत से दुरूदे पाक पढ़े और यूं अ़र्ज़ करे : "ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ बेशक तू ने इरशाद फ़रमाया और तेरा क़ौल बर ह़क़ है, (फिर येह आयते मुबारका तिलावत करे :)"

وَلَوْ اَنَّهُمْ اِذْ ظَّلَمُوْۤا اَنْفُسَهُمْ جَآءُوْكَ فَاسْتَغْفَرُوا اللّٰهَ وَاسْتَغْفَرَ لَهُمُ الرَّسُوْلُ لَوَجَدُوا اللّٰهَ تَوَّابًا رَّحِيْمًا ﴿۶۴﴾

(پ۵، النسآء:۶۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और अगर जब वोह अपनी जानों पर ज़ुल्म करें तो ऐ मह़बूब ! तुम्हारे हुज़ूर ह़ाज़िर हों और फिर **अल्लाह** से मुआफ़ी चाहें और रसूल उन की शफ़ाअ़त फ़रमाए तो ज़रूर **अल्लाह** को बहुत तौबा क़बूल करने वाला मेहरबान पाएं ।

फिर अ़र्ज़ करे :

اَللّٰهُمَّ اِنَّا قَدْ سَمِعْنَا قَوْلَكَ وَاَطَعْنَا اَمْرَكَ وَقَصَدْنَا نَبِيَّكَ مُتَشَفِّعِيْنَ بِهٖ اِلَيْكَ فِيْ ذُنُوْبِنَا وَمَا اَثْقَلَ ظُهُوْرَنَا مِنْ اَوْزَارِنَا تَائِبِيْنَ مِنْ زَلَلِنَا مُعْتَرِفِيْنَ بِخَطَايَانَا وَتَقْصِيْرِنَا فَتُبْ اَللّٰهُمَّ عَلَيْنَا وَشَفِّعْ نَبِيَّكَ هٰذَا فِيْنَا وَارْفَعْنَا بِمَنْزِلَتِهٖ عِنْدَكَ وَحَقِّهٖ عَلَيْكَ اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِلْمُهَاجِرِيْنَ وَالْاَنْصَارِ وَاغْفِرْ لَنَا وَلِاِخْوَانِنَا الَّذِيْنَ سَبَقُوْنَا بِالْاِيْمَانِ اَللّٰهُمَّ لَا تَجْعَلْهُ آخِرَ الْعَهْدِ مِنْ قَبْرِ نَبِيِّكَ وَمِنْ حَرَمِكَ يَا اَرْحَمَ الرّٰحِمِيْنَ

या'नी : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ बेशक हम ने तेरा फ़रमान सुना, तेरे हुक्म की पैरवी की, अपने गुनाहों के मुआमले में तेरे नबी को शफ़ीअ़ बनाते हुए इन की बारगाह का क़स्द किया, गुनाहों से हमारी पीठें बोझल हो गईं, हम अपनी लग़्ज़िशों से तौबा करते, अपनी ख़त़ाओं और कोताहियों का ए'तिराफ़ करते हैं, ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमारी तौबा क़बूल फ़रमा, हमारे ह़क़ में अपने नबी की सिफ़ारिश क़बूल फ़रमा, तेरी बारगाह में जो इन का मक़ाम व मर्तबा और तुझ पर इन का जो ह़क़ है इस के तुफ़ैल हमें बुलन्दी अ़त़ा फ़रमा, ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मुहाजिरीन व अन्सार की मग़फ़िरत फ़रमा, हमारी और हमारे उन भाइयों की भी मग़फ़िरत फ़रमा जो हम से पहले ईमान की ह़ालत में रुख़्सत हो चुके हैं, ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपने नबी के मज़ारे पुर अन्वार और अपने ह़रम शरीफ़ में हमारी इस ह़ाज़िरी को आख़िरी ह़ाज़िरी न बनाना ऐ सब से बढ़ कर रह़्म फ़रमाने वाले ।

रियाज़ुल जन्नह की फ़ज़ीलत :

फिर रियाज़ में हाज़िर हो कर दो रक्अ़त नमाज़ पढ़े और ह़स्बे इस्तित़ाअ़त कषरत से दुआ़ करे कि हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''مَا بَيْنَ قَبْرِىْ وَمِنْبَرِىْ رَوْضَةٌ مِّنْ رِيَاضِ الْجَنَّةِ وَمِنْبَرِىْ عَلٰى حَوْضِىْ या'नी मेरी क़ब्र और मेरे मिम्बर के माबैन जन्नत के बाग़ों में से एक बाग़ है और मेरा मिम्बर मेरे हौज़ पर है।''(1)

मिम्बर के पास भी दुआ़ करे और मुस्तह़ब है कि अपना हाथ निचले पाए पर रखे कि हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم भी ख़ुत़बे के दौरान अपना हाथ इसी पाए पर रखते थे।(2) जुमा'रात के दिन शुहदाए उहुद की क़ब्रों की ज़ियारत के लिये जाना मुस्तह़ब है, नमाज़े फ़ज्र मस्जिदे नबवी में अदा कर के ज़ियारत के लिये निकल जाए और ज़ोहर की नमाज़ मस्जिदे नबवी में आ कर अदा करे, हर फ़र्ज़ नमाज़ मस्जिदे नबवी में बा जमाअ़त अदा करे।

जन्नतुल बक़ीअ़ में ह़ाज़िरी :(3)

हर रोज़ बारगाहे रिसालत में हदिय्यए सलाम पेश कर के जन्नतुल बक़ीअ़ में ह़ाज़िरी दे

---

1 ......صحیح مسلم، کتاب الحج، باب مابین القبر و المنبر......الخ، الحدیث:۱۳۹۰۔۱۳۹۱، ص۷۲۰، "قبری" بدلہ "بیتی"۔

2 ......وفاء الوفاء، مساحة المنبر، الجزء الثانی، ج۱، ص۴۰۲۔

3 ..... **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ **304** सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब रफ़ीक़ुल ह़रमैन सफ़ह़ा **200** पर शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه नक़्ल फ़रमाते हैं : जन्नतुल बक़ीअ़ के मदफ़ूनीन की ख़िदमत में बाहर ही खड़े हो कर सलाम अ़र्ज़ करें और बाहर ही से दुआ़ मांगे क्यूंकि नजदियों ने जन्नतुल बक़ीअ़ शरीफ़ नीज़ जन्नतुल मा'ला (मक्कए मुकर्रमा) दोनों मुक़द्दस क़ब्रिस्तानों के मक़बरों और मज़ारों को निहायत ही बे दर्दी और गुस्ताख़ी के साथ शहीद कर दिया है। ह़ज़ारहा सह़ाबए किराम رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُم और बे शुमार अहले बैते अत़्हार رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُم اَجْمَعِين व औलियाए किबार رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام उ़श्शाक़े ज़ार رَحِمَهُمُ الله के मज़ारात के नुक़ूश तक मिटा दिये हैं। आप अगर अन्दर तशरीफ़ ले गए तो आप को क्या मा'लूम कि आप का पाउं किसी सह़ाबी या किसी वली के मज़ार शरीफ़ पर पड़ रहा है बल्कि आ़म मुसलमानों की क़ब्रों पर भी पाउं रखना ह़राम है। जो रास्ता क़ब्रें मुन्हदिम कर के बनाया जाए उस पर चलना ह़राम है। बल्कि इमामे अहले सुन्नत, आ'ला ह़ज़रत عَلَيْهِ الرَّحْمَة फ़रमाते हैं कि अगर किसी रास्ते के बारे में शक भी हो कि येह रास्ता क़ब्रों को मिटा कर बनाया गया है तो इस पर भी चलना ह़राम है। (وَالْعِيَاذُ بِاللهِ تَعَالٰى) जन्नतुल बक़ीअ़ के दरवाज़े पर ही ह़ाज़िर हो कर सलाम अ़र्ज़ करना ज़रूरी नहीं। अस्ल त़रीक़ा तो येह है कि उस सम्त से ह़ाज़िर हों जहां से क़िब्ला को आप की पीठ हो और मदफ़ूनीन के चेहरे आप की त़रफ़ हों।

कि मुस्तह़ब है, वहां अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़षमान बिन अ़फ़्फ़ान, ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बिन अ़ली, ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली बिन हुसैन, ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन अ़ली और ह़ज़रते सय्यिदुना जा'फ़र बिन मुह़म्मद की क़ुबूर की ज़ियारत करे और मस्जिदे फ़ात़िमा में नमाज़ पढ़े, नीज़ इब्ने रसूल ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ और हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की फूफी ह़ज़रते सय्यिदतुना सफ़ीया (व अज़्वाजे मुत़ह्हरात رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْھُن) के मज़ारात की ज़ियारत करे। येह तमाम मज़ारात जन्नतुल बक़ीअ़ में हैं। हर हफ़्ते के दिन मस्जिदे क़ुबा में जाना और वहां नमाज़ पढ़ना मुस्तह़ब है।

एक उ़मरे का षवाब :

मरवी है कि मुस्त़फ़ा जाने रह़मत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जो अपने घर से निकले यहां तक कि मस्जिदे क़ुबा में आए और इस में नमाज़ पढ़े तो उस के लिये एक उ़मरे का षवाब है।"(1)

फिर मस्जिदे क़ुबा के क़रीब अरीस नामी कुंवें पर आए, इस से वुज़ू करे, इस का पानी पिये, मन्क़ूल है कि आक़ाए दो आ़लम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इस में अपना लुआ़बे दहन डाला था।(2) फिर मक़ामे ख़न्दक़ के पास मस्जिदे फ़त्ह़ में आए। इसी त़रह़ तमाम मसाजिद और मक़ामाते मुक़द्दसा पर ह़ाज़िरी दे। मन्क़ूल है कि मदीनए मुनव्वरा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعْظِیْمًا में मसाजिद और मुक़द्दस मक़ामात **30** हैं जिन के मुतअ़ल्लिक़ शहर के लोग जानते हैं जहां तक हो सके इन (की ज़ियारत) का क़स्द करे। इसी त़रह़ उन कुवों पर भी जाए जिन से हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم वुज़ू व ग़ुस्ल फ़रमाते और इन का पानी पीते थे, येह सात कुंवें हैं, ह़ुसूले बरकत व शिफ़ा की निय्यत से इन पर ह़ाज़िर हो।(3)

अगर मदीनए पाक की ह़ुरमत की पासदारी करते हुए वहां रहना मुमकिन हो तो इस में बहुत बड़ी फ़ज़ीलत है कि हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जो मदीने की सख़्ती और शिद्दत पर सब्र करेगा मैं बरोज़े क़ियामत उस का शफ़ीअ़ होऊंगा।"(4)

1 ......سنن ابن ماجه، کتاب اقامة الصلاة......الخ، باب ماجاء فی الصلاة......الخ، الحدیث:۱۴۱۲، ج۲، ص۱۷۵، مفهومًا۔

2 ......المجموع شرح المهذب، باب صفة الحج، ج۸، ص۲۷۶، فیه:یاتی بئراولیس۔

3 ......المجموع شرح المهذب، باب صفة الحج، ج۸، ص۲۷۶،دون للشفاء وتبرکابه۔

4 ......صحیح مسلم، کتاب الحج، باب الترغیب فی سکنی المدینة......الخ، الحدیث:۱۳۷۷، ص۷۱۵۔

एक रिवायत में है कि "जिस से हो सके मदीने में मरे क्यूंकि जो मदीने में मरेगा मैं बरोज़े क़ियामत उस का शफ़ीअ़ और गवाह होऊंगा।"(1) (2)

मदीनए मुनव्वरा से वापसी के आदाब :

(ज़ाइर) जब तमाम तर मश्ग़ूलियात से फ़ारिग़ हो कर मदीनए मुनव्वरा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّتَعْظِيْمًا से निकलने का इरादा हो तो रौज़ए अन्वर पर ह़ाजिर हो कर बयान कर्दा त़रीक़े के मुत़ाबिक़ दुआ़ व ज़ियारत करना मुस्तह़ब है। नीज़ बारगाहे रिसालत में अल वदाई सलाम पेश करे और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से दुआ़ करे कि दोबारा ह़ाज़िरी की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए, सफ़र में सलामती की दुआ़ मांगे, फिर रौज़ए सग़ीरा में दो रक्अ़त नमाज़ पढ़े येह मस्जिद में मक़्सूरा के इज़ाफ़े से पहले हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के खड़े होने की जगह थी। मस्जिद से निकलते वक़्त पहले बायां पाउं निकाले फिर दायां और येह दुआ़ पढ़े :

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ مُحَمَّدٍ وَّلَا تَجْعَلْهُ اٰخِرَ الْعَهْدِ بِنَبِيِّكَ وَحُطَّ اَوْزَارِىْ بِزِيَارَتِهٖ وَاَصْحِبْنِىْ فِىْ سَفَرِى السَّلَامَةَ وَيَسِّرْ رُجُوْعِىْ اِلٰى اَهْلِىْ وَوَطَنِىْ سَالِمًا يَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ

1..... **मुफ़स्सिरे शहीर** ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْمَنَّان मिरआतुल मनाजीह़, जि. 4 स. 222 पर इस के तह़्त फ़रमाते हैं : ज़ाहिर येह है कि येह बिशारत और हिदायत सारे मुसलमानों को है न कि सिर्फ़ मुहाजिरीन को या'नी जिस मुसलमान की निय्यत मदीनए पाक में मरने की हो वोह कोशिश भी वहां ही मरने की करे कि ख़ुदा नसीब करे तो वहां ही क़ियाम करे ख़ुसूसन बुढ़ापे में और बिला ज़रूरत मदीनए पाक से बाहर न जाए कि मौत व दफ़्न वहां का ही नसीब हो, ह़ज़रते उ़मर رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ दुआ़ करते थे कि मौला मुझे अपने मह़बूब के शहर में शहादत की मौत दे, आप की दुआ़ ऐसी क़बूल हुई कि سُبْحٰنَ اللّٰه फ़ज्र की नमाज़ मस्जिदे नबवी मेह़राबुन्नबी, मुसल्लए नबी और वहां शहादत ! मैं ने बा'ज़ लोगों को देखा कि तीस चालीस साल से मदीनए मुनव्वरा में हैं, हुदूदे मदीना बल्कि शहरे मदीना से भी बाहर नहीं जाते, इसी ख़त़रे से कि मौत बाहर न आ जाए ह़ज़रते इमामे मालिक का भी येह ही दस्तूर रहा। यहां शफ़ाअ़त से मुराद ख़ुसूसी शफ़ाअ़त है। गुनाह गारों के सारे गुनाह बख़्शवाने की शफ़ाअ़त और नेकोकारों के बहुत दर्जे बुलन्द करने की शफ़ाअ़त, वरना हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم अपनी सारी ही उम्मत की शफ़ाअ़त फ़रमाएंगे। ख़याल रहे कि मदीनए पाक में रहना भी अफ़्ज़ल, वहां मरना भी आ'ला और वहां दफ़्न होना भी बेहतर। बा'ज़ सह़ाबा बा'दे मौत मदीना में ला कर दफ़्न किये गए। इस से इशारतन मा'लूम होता है कि जो शख़्स मदीनए पाक में मरने दफ़्न होने की कोशिश करे वोह اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ ईमान पर मरेगा, क्यूंकि उस के लिये शफ़ाअ़ते ख़ास का वा'दा है और शफ़ाअ़त सिर्फ़ मोमिन की हो सकती है।

2......سنن الترمذی، کتاب المناقب، باب فی فضل المدینۃ، الحدیث:۳۹۴۳، ج۵، ص۴۸۳۔

या'नी : ऐ **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद صَلَّى اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم और आप की आल पर रह्मत नाज़िल फ़रमा और और अपने नबी की बारगाह में हमारी इस हाज़िरी को आख़िरी हाज़िरी न बनाना, इस ज़ियारत के तुफ़ैल मेरे (गुनाहों वग़ैरा के) बोझ को उतार दे, सफ़र में मुझे सलामती अ़ता फ़रमा और मुझे अपने वत़न व घर वालों के पास ख़ैरो आफ़िय्यत से पहुंचा, ऐ सब से बढ़ कर रह्म फ़रमाने वाले !''

(ज़ाइर से) जिस क़दर हो सके हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के क़ुर्बो जवार में रहने वालों पर सदक़ा करे। नीज़ मदीनए मुनव्वरा व मक्कए मुकर्रमा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا के दरमियान आने वाली मसाजिद में हाज़िरी दे और वहां नमाज़ पढ़े, येह **20** मसाजिद हैं।

सफ़र से वापसी के आदाब :

रसूलुल्लाह صَلَّى اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم जब किसी ग़ज़्वा या ह़ज व उ़मरह से वापस तशरीफ़ लाते तो ज़मीन की हर बुलन्द जगह पर तीन दफ़्आ़ तक्बीर कहते और येह कलिमात पढ़ते थे :

لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ قَدِيْرٌ اٰيِبُوْنَ تَائِبُوْنَ عَابِدُوْنَ سَاجِدُوْنَ لِرَبِّنَا حَامِدُوْنَ

صَدَقَ اللّٰهُ وَعْدَهٗ وَنَصَرَ عَبْدَهٗ وَ هَزَمَ الْاَحْزَابَ وَحْدَهٗ

***या'नी :** **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के सिवा कोई मा'बूद नहीं, वोह अकेला है, उस का कोई शरीक नहीं, उसी के लिये है बादशाही और उसी के लिये ह़म्द है और वोह हर चीज़ पर क़ादिर है। हम रुजूअ़ करने वाले, तौबा करने वाले, इबादत करने वाले, अपने रब्ब को सजदा करने वाले और ता'रीफ़ करने वाले हैं, **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ने अपना वा'दा सच्च कर दिखाया, अपने बन्दे की मदद फ़रमाई और तन्हा, (दुश्मन के) लश्करों को भगा दिया।''* (1)

बा'ज़ रिवायात में है कि येह (आयते मुबारका भी) पढ़ते :

كُلُّ شَيْءٍ هَالِكٌ اِلَّا وَجْهَهٗ ؕ لَهُ الْحُكْمُ وَاِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ۝۸۸ (پ۲۰، القصص:۸۸)

***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** हर चीज़ फ़ानी है सिवा उस की ज़ात के, उसी का हुक्म है और उस की तरफ़ फिर जाओगे।*

वापसी में इस सुन्नत पर अ़मल करे। जब अपने शहर के क़रीब पहुंचे तो अपनी सुवारी को ह़रकत दे और येह दुआ पढ़े : ''اَللّٰهُمَّ اجْعَلْ لَنَا بِهَا قَرَارًا وَّرِزْقًا حَسَنًا या'नी : ऐ **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ हमें इस शहर में सुकून और अच्छा रिज़्क़ अ़ता फ़रमा।''(2)

---

1 ......صحیح مسلم، کتاب الحج، باب مایقول اذا قفل من سفر الحج وغیرہ، الحدیث:۱۳۴۴، ص ۷۰۱۔

2 ......کنزالعمال، کتاب الفضائل/ فضائل الامکنۃ، الحدیث:۳۸۱۵۵، ج۱۴، ص۲۰۔

किसी को घर भेज कर अपने आने की ख़बर दे ताकि अचानक घर न जाए कि येही सुन्नत है ।[1]

रात के वक़्त घर वालों के पास न जाए । जब शहर में दाख़िल हो तो पहले मस्जिद में जाए और दो रक्अ़त नमाज़ पढ़े कि सुन्नत है[2] हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم इसी त़रह़ किया करते थे ।[3]

जब घर में दाख़िल हो तो येह दुआ़ पढ़े :

تَوْبًا تَوْبًا لِرَبِّنَا اَوْبًا لَا يُغَادِرُ عَلَيْنَا حَوْبًا

या'नी : *मैं तौबा करता हूं, मैं तौबा करता हूं, अपने रब्ब* عَزَّوَجَلَّ *की त़रफ़ रुजूअ़ करता हूं, वोह हम पर कोई गुनाह बाक़ी न रखे ।*

ह़ज्जे मक़्बूल की अ़लामत :

जब घर लौट कर मुत़्मइन हो जाए तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उसे बैतुल्लाह शरीफ़, ह़रम शरीफ़ और रौज़ए अन्वर की ज़ियारत की सूरत में जो ने'मतें अ़त़ा फ़रमाईं उन्हें न भुलाए । (लौटने के बा'द) अगर दोबारा लह्व लअ़ब, ग़फ़्लत और गुनाहों में मश्ग़ूल हो जाए तो येह उस ने'मत की ना शुक्री होगी । नीज़ येह ह़ज्जे मक़्बूल की अ़लामत नहीं बल्कि ह़ज्जे मक़्बूल की अ़लामत येह है कि वोह दुन्या से बे रग़बत और आख़िरत की त़रफ़ मुतवज्जेह हो जाए और ज़ियारते बैतुल्लाह शरीफ़ के बा'द **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से मुलाक़ात की तय्यारी करे ।

.....मुनाफ़िक़ की तीन निशानियां.....

हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم *ने इरशाद फ़रमाया : "मुनाफ़िक़ की तीन निशानियां हैं : (1)....जब बात करे तो झूट बोले (2).....जब वा'दा करे तो वा'दा ख़िलाफ़ी करे और (3)....जब उस के पास अमानत रखी जाए तो उस में ख़ियानत करे ।"*

(صحیح البخاری، الحدیث:۳۳، ج۱، ص۲۴)

---

1 ......قال العراقی:لم اجد فیه ذکرالارسال ، ھامش الاحیاء، ج۱، ص ۵۹۰۔

2 ......صحیح مسلم، کتاب التوبة، باب حدیث توبة کعب بن مالک......الخ، الحدیث:۲۷۶۹، ص۱۴۸۳۔

3 ......السنن الکبری للبیھقی، کتاب الحج، باب الدعاء اذا سفر، الحدیث:۱۰۳۰۴، ج۵، ص۴۱۰۔

बाब नम्बर 3 : ह़ज की बारीकियां और बात़िनी आ'माल

दस क़ाबिले तवज्जोह आदाब :

﴾1﴿.....नफ़्क़ा ह़लाल कमाई से हो और हाथ दिल को मश्ग़ूल करने वाली और ख़्यालात को मुन्तशिर करने वाली तिजारत से ख़ाली हो ताकि मुकम्मल तवज्जोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ही की त़रफ़ हो, दिल मुत़्मइन और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ज़िक्र और उस की निशानियों की ता'ज़ीम की त़रफ़ मुतवज्जेह हो। मरवी है कि "आख़िरी ज़माने में लोग ह़ज के लिये चार क़िस्में हो कर निकलेंगे : बादशाह ऐशो इ़शरत के लिये, उमरा तिजारत के लिये, फ़ुक़रा मांगने के लिये और क़ुर्रा दिखावे के लिये।"[1]

मज़्कूरा ह़दीषे पाक में ऐसे दुन्यवी मक़ासिद की त़रफ़ इशारा है जो ह़ज के ज़रीए ह़ासिल हो सकते हैं और ऐसी तमाम चीज़ें ह़ज की फ़ज़ीलत के ह़ुसूल में रुकावट बनती और ख़ुसूसी ह़ज की ह़द से निकाल देती हैं, ख़ुसूसन जब नफ़्से ह़ज के बदले तिजारत करे या'नी किसी की त़रफ़ से उजरत पर ह़ज करे और उख़रवी अ़मल के बदले दुन्या त़लब करे। मुत्तक़ी व परहेज़गार अहले दिल ने इसे नापसन्द फ़रमाया सिवाए येह कि इस का मक्कए मुकर्रमा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا में ठहरने का इरादा हो और उस के पास इतना माल न हो जो वहां तक पहुंचा दे तो इस इरादे से उजरत लेने में कोई ह़रज नहीं, दीन के ज़रीए दुन्या ह़ासिल करना मक़्सूद न हो बल्कि दुन्या के ज़रीए दीन का ह़ुसूल मक़्सूद हो। उस वक़्त उस की निय्यत येह होनी चाहिये कि बैतुल्लाह शरीफ़ की ज़ियारत करेगा और अपने भाई से फ़र्ज़ साक़ित़ कर के उस की मदद करेगा।

एक ह़ज के बदले तीन का जन्नत में दाख़िला :

ह़ुज़ूरे अन्वर, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ एक ह़ज के बदले तीन शख़्सों को दाख़िले जन्नत फ़रमाएगा : (1)....वसिय्यत करने वाला (2)....इसे नाफ़िज़ करने वाला (3).....अपने भाई की त़रफ़ से ह़ज करने वाला।"[2]

मैं येह नहीं कहता कि उजरत लेना जाइज़ नहीं या फ़र्ज़ ह़ज अदा करने के बा'द किसी

---

1 ......قوت القلوب، الفصل الثالث والثلاثون فی ذکر دعائم الاسلام......الخ، ج۲، ص ۱۹۳-۱۹۴۔
کنزالعمال، کتاب الحج والعمرۃ، الباب الثالث، الحدیث: ۱۲۳۵۸، ج۵، ص ۵۲، بتغیر۔

2 ......السنن الکبری للبیھقی، کتاب الحج، باب النیابۃ فی الحج......الخ، الحدیث: ۹۸۵۵، ج۵، ص ۲۹۳، مفھومًا۔

का ऐसा करना ह़राम है। बेहतर येह है कि वोह ऐसा न करे और इसे कमाई व तिजारत का ज़रीआ़ न बनाए क्यूंकि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ दीन के बदले दुन्या अ़त़ा फ़रमा देता है लेकिन दुन्या के बदले दीन नहीं देता।

ह़ज पर उजरत लेने वाले की मिषाल :

ह़दीषे पाक में है कि "जो राहे ख़ुदा में जिहाद करता और उजरत लेता है उस की मिषाल ह़ज़रते मूसा عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की मां की सी है जो अपने बेटे को दूध पिलाती और उजरत लेती थी।"(1)

ह़ज पर उजरत लेने वाले की मिषाल ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की मां की सी हो तो उस के उजरत लेने में कोई ह़रज नहीं क्यूंकि वोह तो इस लिये लेता है ताकि उस के ज़रीए ह़ज व ज़ियारत मुमकिन हो, न कि उजरत लेने के लिये ह़ज करता है बल्कि उस की निय्यत येह होती है कि ह़ज पर क़ादिर हो सके, जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की मां उजरत लेती थी ताकि उन के लिये दूध पिलाना आसान हो जाए क्यूंकि लोगों पर इन (या'नी उम्मे मूसा) का ह़ाल पोशीदा था।

﴾2﴿....जिज़्या (टेक्स) दे कर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के दुश्मन की मदद न करे और वोह मस्जिदे ह़राम से रोकने वाले मक्का के उमरा और वोह आ'राब (या'नी देहाती) हैं जो रास्ते में घात लगा कर बैठते हैं क्यूंकि उन्हें माल देना ज़ुल्म पर उन की मदद करना और अस्बाब मुहय्या कर के उन के लिये आसानी करना है और येह ख़ुद इस काम में मदद करने के क़ाइम मक़ाम है। लिहाज़ा इस से छुटकारे की तदबीर करनी चाहिये अगर इस पर क़ादिर न हो तो बा'ज़ उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام फ़रमाते हैं : अगर नफ़्ली ह़ज छोड़ दे और रास्ते से वापस आ जाए तो येह ज़ालिमों की मदद करने से अफ़्ज़ल है। क्यूंकि येह बिदअ़त है जो बा'द में ईजाद हुई। अगर इन लुटेरों की बात मान ली जाए तो येह आ़म रवाज बन जाएगा, नीज़ जिज़्या देने के सबब मुसलमानों की ज़िल्लत व रुस्वाई है, किसी की इस बात का कोई मा'ना नहीं कि मुझ से लिया गया, मैं मजबूर था क्यूंकि अगर वोह घर में बैठा रहता और रास्ते से वापस आ जाता तो उस से कोई चीज़ न ली जाती बल्कि बा'ज़ अवक़ात ख़ुशह़ाली के अस्बाब ज़ाहिर होने के सबब उन का मुत़ालबा बढ़ जाता है, अगर फ़ुक़रा की वज़्अ़ क़त़्अ़ अपनाए होता तो उस से मुत़ालबा न होता। पस उस ने अपने आप को ख़ुद ह़ालते इज़्तिरार में मुब्तला किया।

---

(1)......الکامل فی ضعفاء الرجال، اسماعیل بن عیاش:۱۲۷، ج۱، ص۴۷۶، بتغیرٍ۔

﴾3﴿....ज़ादे राह में वुस्अ़त हो, खु़श दिली से इफ़रात़ व तफ़रीत़ के बिग़ैर मियाना रवी से ख़र्च करे। इसराफ़ से मुराद मालदारों की आ़दत के मुताबिक़ त़रह़ त़रह़ के खाने खाना और मशरूबात पीना है।

इसराफ़ में भलाई नहीं और भलाई में इसराफ़ नहीं :

मह़ज़ ज़ियादा ख़र्च करने में इसराफ़ नहीं क्यूंकि इसराफ़ में कोई भलाई नहीं और भलाई के काम में कोई इसराफ़ नहीं जैसा मन्क़ूल है कि "राहे ह़ज में माल ख़र्च करना **अल्लाह** की राह में माल ख़र्च करना है और एक दिरहम के बदले **700** दराहिम हैं।"

सख़ी होने की एक अ़लामत :

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْھُمَا फ़रमाते हैं : "सफ़र में खु़श दिली से ख़र्च करना इन्सान के सख़ी होने की अ़लामत से है।" नीज़ फ़रमाया करते थे : "अफ़्ज़ल ह़ाजी वोह है जिस की निय्यत ख़ालिस, ख़र्च पाक और यक़ीन उ़म्दा हो।"

ह़दीषे मुबारका में है कि "ह़ज्जे मक़्बूल की जज़ा जन्नत ही है।" अ़र्ज़ की गई : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ह़ज की मक़्बूलिय्यत किस चीज़ से है ?" इरशाद फ़रमाया : "अच्छा कलाम करना और खाना खिलाना।"(1)

﴾4﴿.....रफ़ष, फ़िस्क़ और जिदाल तर्क कर दे जैसा कि क़ुरआने पाक में हुक्म है।

रफ़ष : से मुराद हर फ़ुज़ूल, बेहूदा और बे ह़याई वाली बात है, औ़रतों के बारे में इ़श्क़िया और दिल्लगी की बातें करना, जिमाअ़ और इस के मुक़द्दमात के बारे में गुफ़्तगू करना भी इस में शामिल है क्यूंकि येह चीज़ जिमाअ़ पर उभारती है जो इस वक़्त ममनूअ़ है और ममनूअ़ की त़रफ़ ले जाने वाला काम भी ममनूअ़ होता है। **फ़िस्क़ :** इत़ाअ़ते इलाही से ख़ारिज हर काम को शामिल है। **जिदाल :** से मुराद बहुत ज़ियादा झगड़ना है जिस से कीना पैदा हो जाए, उसी वक़्त हिम्मत मुन्तशिर और हुस्ने अख़्लाक़ ख़त्म हो जाए।

ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान षौरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : "जिस ने बेहूदा बात की उस का ह़ज फ़ासिद हो गया।" और हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने खाना खिलाने के साथ अच्छी गुफ़्तगू को भी ह़ज की क़बूलिय्यत का सबब क़रार दिया और झगड़ा अच्छी गुफ़्तगू के मनाफ़ी है। लिहाज़ा अपने रफ़ीक़, ऊंट हांकने वाले और दीगर रुफ़क़ा पर ज़ियादा ए'तिराज़ न करे बल्कि

---

(1)......المسند للامام احمد بن حنبل، مسند ابی ہریرۃ، الحدیث:۹۹۵۵، ج۳، ص۴۸۶، باختصارٍ۔
السنن الکبری للبیہقی، کتاب الحج، باب فضل الحج و العمرۃ، الحدیث:۱۰۳۹۰، ج۵، ص۴۳۱، بتقدمٍ و تاخرٍ۔

अपने पहलू को नर्म करे, बैतुल्लाह शरीफ़ की त़रफ़ जाने वालों के लिये आ़जिज़ी के बाज़ू बिछाए, हुस्ने अख़्लाक़ को लाज़िम पकड़े। हुस्ने ख़ुल्क़ सिर्फ़ अज़िय्यत दूर करने का नाम नहीं बल्कि (दूसरों की त़रफ़ से पहुंचने वाली) अज़िय्यत बरदाश्त करना भी हुस्ने ख़ुल्क़ है।

सफ़र को सफ़र कहने की वजह :

मन्क़ूल है कि सफ़र को सफ़र इस लिये कहते हैं कि येह लोगों के अख़्लाक़ को ज़ाहिर करता है, इसी वजह से जब एक शख़्स ने अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की मौजूदगी में कहा कि मैं फ़ुलां शख़्स को जानता हूं, तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : "क्या तुम ने उस के साथ सफ़र किया है जिस से उस के अच्छे अख़्लाक़ का पता चलता ?" अ़र्ज़ की : "नहीं।" फ़रमाया : "मेरा ख़याल है कि तुम उसे नहीं जानते।"

एक नेकी एक लाख नेकियों के बराबर :

﴾5﴿.....अगर हो सके तो पैदल ह़ज करे कि अफ़्ज़ल है। ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने ब वक़्ते मौत अपने बेटों को वसिय्यत करते हुए फ़रमाया : "ऐ मेरे बेटो ! पैदल ह़ज करो क्यूंकि पैदल ह़ज करने वाले के लिये हर क़दम के बदले ह़रम की नेकियों में से सात सो नेकियां हैं ?" अ़र्ज़ की गई : "ह़रम की नेकियां क्या हैं ?" फ़रमाया : "एक नेकी लाख नेकियों के बराबर है।"

रास्ते की ब निस्बत, अरकाने ह़ज अदा करते हुए मक्का शरीफ़ से मैदाने अ़रफ़ात और मिना की त़रफ़ पैदल चलने की ज़ियादा ताकीद है। इरशादे बारी तआ़ला है :

وَ اَتِمُّوا الْحَجَّ وَ الْعُمْرَةَ لِلّٰهِ ؕ (پ۲، البقرۃ:۱۹۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और ह़ज और उ़मरह अल्लाह के लिये पूरा करो।

अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़, अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा और मुअ़ल्लिमुल उम्मह ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْھِمْ اَجْمَعِیْن) इस की तफ़्सीर में फ़रमाते हैं कि "अगर घर से ही एह़राम बांध कर चले तो येह ह़ज की तक्मील है।"

बा'ज़ उ़-लमाए किराम رَحِمَہُمُ اللّٰہُ السَّلَام फ़रमाते हैं : "सुवार होना अफ़्ज़ल है क्यूंकि इस में माल ख़र्च करना है। नीज़ इस में नफ़्स को ज़ियादा मशक़्क़त नहीं उठानी पड़ती, इसे अज़िय्यत में मुब्तला नहीं किया जाता, सलामती ज़ियादा और ह़ज को मुकम्मल करना है।"

ततबीक़ :

हक़ीक़त येह है कि येह पहली बात के मुख़ालिफ़ नहीं बल्कि इस में तफ़्सील होनी चाहिये और यूं कहा जाए कि जिस के लिये पैदल चलना आसान हो उस के लिये पैदल चलना अफ़्ज़ल है और जो कमज़ोर हो कि पैदल न चल सके, नीज़ पैदल चलने के सबब बद अख़्लाक़ी और अ़मल में कोताही पैदा हो तो सुवार होना अफ़्ज़ल है जैसा कि मुसाफ़िर के लिये रोज़ा अफ़्ज़ल है और मरीज़ के लिये तब अफ़्ज़ल है जब कि कमज़ोरी और बद अख़्लाक़ी पैदा न हो।

जो नफ़्स पर गिरां गुज़रता हो वोह अ़मल अफ़्ज़ल है :

बा'ज़ उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰہُ السَّلَام से उ़मरे के मुतअ़ल्लिक़ पूछा गया कि इस में पैदल चले या एक दिरहम के बदले सुवारी किराए पर ले ले तो फ़रमाया : "अगर एक दिरहम ख़र्च करना ज़ियादा मा'लूम होता हो तो किराए पर जाना पैदल चलने से अफ़्ज़ल है और अगर पैदल चलना मुश्किल लगता हो जैसा कि उमरा तो उस के लिये पैदल चलना अफ़्ज़ल है।"

गोया उन्हों ने मुजाहदए नफ़्स का त़रीक़ा इख़्तियार किया, इस की भी एक वजह है। लेकिन अफ़्ज़ल येह है कि पैदल चले और दिरहम को भलाई के काम में ख़र्च कर दे और ऐसा करना सुवारी किराए लेने से बेहतर है। अगर उस का नफ़्स पैदल चलने और माल ख़र्च करने की दोहरी मशक़्क़त बरदाश्त न करे तो मज़्कूरा (बा'ज़ उ़-लमा की बयान कर्दा) सूरत ही मुनासिब है।

सुवार होने से मुतअ़ल्लिक़ आदाब :

﴾6﴿.....बोझ उठाने वाले जानवर पर बिग़ैर कजावे के सुवार हो। अलबत्ता, जब ख़ौफ़ हो कि किसी उ़ज़्र की वजह से जानवर (की पीठ) पर न ठहर सकेगा तो कजावे में बैठ सकता है। इस की दो वजहें हैं : (1).....सुवारी पर तख़्फ़ीफ़ करना क्यूंकि कजावा उसे तक्लीफ़ देता है (2)....ख़ुशह़ाल मुतकब्बीर लोगों की वज़्अ़ क़त़्अ़ से बचना।

मरवी है कि "हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने जिस सुवारी पर सुवार हो कर ह़ज किया उस पर पुराना कजावा और फटा हुवा कपड़ा था जिस की क़ीमत चार दिरहम थी,[1]

---

1 ......سنن ابن ماجه، کتاب المناسک، باب الحج على الرحل، الحديث: ٢٨٩٠، ج٣، ص ٤٠٩، بتغيرٍ-

और सुवारी पर ही त़वाफ़ फ़रमाया ताकि लोग आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के त़रीक़े और आ़दते मुबारका को देखें।"[1] और इरशाद फ़रमाया : "अपने अरकाने ह़ज मुझ से सीख लो।"[2]

मन्क़ूल है कि कजावे में सुवार होना ह़ज्जाज बिन युसूफ़ षक़फ़ी का ईजाद कर्दा त़रीक़ा है और उस दौर के उ़-लमा उसे नापसन्द करते थे।

ह़िकायत :- पसन्दीदा ह़ाजी :

ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान षौरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی के वालिदे मोह़तरम ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन मसरूक़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : "मैं ह़ज के लिये "कूफ़ा"" से "क़ादिसिय्या" की त़रफ़ गया, वहां शहर के रुफ़क़ा मिल गए, मैं ने देखा कि तमाम ह़ाजी सुवार हैं उन के पास कजावे और उ़म्दा क़िस्म के कपड़े थे सिवाए दो के कि वोह सिर्फ़ कजावों पर सुवार थे। ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا ने ह़ाजियों के लिबास और कजावों को देखा तो फ़रमाया : "ह़ाजी कम और सुवार ज़ियादा हैं।" फिर एक मिस्कीन शख़्स को देखा जिस की ह़ालत कमज़ोर थी, उस के नीचे ऊनी कपड़ा था तो फ़रमाया : "येह कितना अच्छा ह़ाजी है।"

ह़ाजी को कैसा होना चाहिये ?

﴾7﴿......ह़ाजी का लिबास आ़म व सादा हो, परा गन्दा ह़ाल और बिखरे बालों वाला हो, ज़ियादा ज़ैबो ज़ीनत इख़्तियार न करे और न ही एक दूसरे पर फ़ख़्र करने और माल में ज़ियादती चाहने के अस्बाब की त़रफ़ माइल हो वरना उस का नाम मुतकब्बिरीन और दुन्यादारों की फ़ेहरिस्त में लिख दिया जाएगा और वोह कमज़ोरों, मिस्कीनों और नेकूकारों के गुरौह से निकल जाएगा ह़ालांकि ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ज़ाला बिन उ़बैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी रिवायत में है कि रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने परा गन्दा बालों और नंगे पाउं वाला होने का हुक्म दिया,[3] ऐ़शो इ़शरत और अ़य्याश होने से मन्अ़ फ़रमाया।[4]

---

1 ......صحیح مسلم، کتاب الحج، باب جواز الطواف علی بعیر وغیرہ......الخ، الحدیث:۱۲۷۳، ص ۶۶۲۔

2 ......صحیح مسلم، کتاب الحج، باب استحباب رمی جمرۃ العقبۃ......الخ، الحدیث:۱۲۹۷، ص ۶۷۵۔

3 ......مجمع الزوائد، کتاب اللباس، باب ترک الرفاھیۃ، الحدیث:۸۷۰۹۔۸۷۱۰، ج۵، ص ۲۴۰، مفھومًا۔

4 ......سنن ابی داود، کتاب الترجل، الحدیث:۴۱۶۰، ج۴، ص ۱۰۲، فیہ لفظ "ینھاناعن کثیر من الرفاہ"۔

एक रिवायत में है कि "ह़ज करने वाला वोह है जो मैला और बू वाला हो।[1] [2] अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है : मेरे घर की ज़ियारत करने वालों को देखो वोह मेरे पास दूर दूर से परा गन्दा बालों और गर्द आलूद चेहरों के साथ आए हैं।"[3]

इरशादे बारी तआ़ला है :

ثُمَّ لْيَقْضُوْا تَفَثَهُمْ (پ۱۷، الحج:۲۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *फिर अपना मैल कुचेल उतारें।*

"تَفَث" का मा'ना बालों का बिखरा होना और चेहरे का गर्द आलूद होना है और "قَضَاء" से मुराद बाल मुन्डाना, मूछें तरशवाना और नाख़ुनों का काटना है।

अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہُ ने लश्करों के सरदारों को लिखा कि "पुराने और खुरदरे लिबास पहनो।"

मन्क़ूल है कि ह़ाजियों की ज़ीनत अहले यमन हैं क्यूंकि वोह आ़जिज़ी और मिस्कीनी इख़्तियार करते और अस्लाफ़े किराम رَحِمَهُمُ اللّٰہ السَّلَام के त़ौर त़रीक़ों पर चलते हैं। लिहाज़ा ह़ाजी को ख़ुसूसी त़ौर पर सुर्ख़ लिबास और उ़मूमी त़ौर पर लिबासे शोहरत से बचना चाहिये।

मरवी है कि एक बार सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْهِمْ اَجْمَعِیْن ह़ुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ सफ़र में थे, एक मक़ाम पर पड़ाव डाला जब ऊंट चरने लगे तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने पालानों पर सुर्ख़ कपड़े देख कर इरशाद फ़रमाया : "मैं देख रहा हूं कि येह सुर्ख़ रंग तुम पर ग़ालिब आने लगा है।" सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْهُم उसी वक़्त उठे और उन की पीठों से वोह कपड़े उतार लिये यहां तक कि बा'ज़ ऊंट बिदकने लगे।[4]

---

1 ..... **मुफ़स्सिरे शहीर** ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْمَنَّان मिरआतुल मनाजीह़, जि. 4 स. 96 पर इस ह़दीषे पाक के तह़्त फ़रमाते हैं : सुवाल येह था कि कामिल ह़ाजी कौन है ? फ़रमाया : जिस पर दो अ़लामतें हों। परागन्दगी बाल सर मैला, क्यूंकि ब ह़ालते एह़राम बाल टूटने के अन्देशे से सर कम धोते हैं और बू वाला क्यूंकि ब ह़ालते एह़राम ख़ुश्बू लगाना मन्अ़ है, और बसा अवक़ात पसीना और लोगों के अज़्दहाम से कुछ बू सी मह़सूस होने लगती है : ख़ुलासा येह है कि ह़ाजी ब ह़ालते ह़ज दुन्यावी, तकल्लुफ़ात से एक दम कनारा कश हो जाता है।

2 ......سنن ابن ماجه، كتاب المناسك،باب مايو جب الحج، الحديث:۲۸۹۶، ج۳، ص۴۱۲۔

3 ......شعب الايمان للبيهقى، باب فى المناسك/ فضل الوقوف بعرفات، الحديث:۴۰۶۷، ج۳، ص۴۶۰۔

4 ......سنن ابى داود، كتاب اللباس، باب فى الحمرة، الحديث:۴۰۷۰، ج۴، ص۷۴، مفهومًا۔

सुवारी के मुतअ़ल्लिक़ आदाब :

﴾8﴿.....सुवारी के साथ नर्म बरताव करे, उस पर त़ाक़त से ज़ियादा बोझ न लादे, कजावा भी उस की त़ाक़त से बाहर है, सुवारी पर सोना उस के लिये अज़िय्यत का बाइ़ष और उस पर बोझ बनता है। अहले तक़्वा सुवारियों पर नहीं सोते थे सिर्फ़ बैठे बैठे ऊंघते थे और उस पर ज़ियादा देर बैठते भी नहीं थे।

ह़दीषे मुबारका में है कि हु़ज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "अपने जानवरों की पीठों को कुरसियां न बनाओ।"(1)

सुब्ह़ो शाम सुवारी के जानवर से उतरना मुस्तह़ब है कि इस से वोह राह़त पाएगा।(2) नीज़ येह सुन्नते मुबारका है। इस बारे में अस्लाफ़ के अक़्वाल मिलते हैं। बा'ज़ अस्लाफ़े किराम رَحِمَهُمُ اللّٰه السَّلَام इस शर्त़ पर जानवर किराए पर लेते थे कि जानवर से उतरेंगे नहीं और पूरी उजरत देंगे फिर उतर जाते थे ताकि यूं वोह जानवर से भलाई करने वाले हो जाएं। पस येह अ़मल उन की नेकी शुमार होता और (बरोज़े क़ियामत) उन के मीज़ान में रखा जाएगा किराए पर देने वाले के मीज़ान में नहीं रखा जाएगा। जिस ने किसी चोपाए को अज़िय्यत दी और उस की त़ाक़त से ज़ियादा बोझ लादा तो क़ियामत के दिन उस से मुत़ालबा किया जाएगा। ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰه تَعَالٰی عَنْهُ ने ब वक़्ते मौत अपने ऊंट से फ़रमाया : "ऐ ऊंट ! अपने रब्ब की बारगाह में मुझ से न झगड़ना, मैंने तुझ पर त़ाक़त से ज़ियादा बोझ नहीं लादा।"

ख़ुलासए कलाम :

हर गर्म जिगर (या'नी जानदार चीज़) में अज्र है। लिहाज़ा सुवारी और किराए पर देने वाले के ह़क़ की रिआ़यत करनी चाहिये और घड़ी भर इस से उतरने में सुवारी को राह़त देना और इस के मालिक के दिल को ख़ुश करना है।

तक़्वा हो तो ऐसा :

एक शख़्स ने ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه से कहा : "मेरा येह ख़त़ फ़ुलां तक पहुंचा दें।" आप ने फ़रमाया : "(ठहरो !) मैं सुवारी के मालिक से इजाज़त ले लूं क्यूंकि मैंने येह जानवर किराए पर लिया है।" ग़ौर कीजिये ! उन्हों ने ख़त़ उठाने के मुआ़मले में भी तक़्वा इख़्तियार किया ह़ालांकि इस का कोई वज़्न नहीं होता। तक़्वा में येह

---

1 ......المسند للامام احمد بن حنبل، مسند المکیین، حدیث معاذ بن انس الجھنی، الحدیث:۱۵۶۵۰، ج۵، ص۳۱۵، مفھومًا۔

2 ......مجمع الزوائد، کتاب الحج، باب المشی عن الرواحل، الحدیث:۵۳۱۳، ج۳، ص۴۹۲۔

एह़तियात़ का त़रीक़ा है क्यूंकि अगर थोड़े काम का दरवाज़ा खुल जाए तो येह आहिस्ता आहिस्ता ज़ियादा की त़रफ़ ले जाता है।

﴾9﴿.....जानवर का ख़ून बहा कर (या'नी क़ुरबानी कर के) क़ुर्बे इलाही ह़ासिल करे अगर्चे वाजिब न हो और कोशिश करे कि जानवर मोटा ताज़ा और उ़म्दा हो। अगर नफ़्ली क़ुरबानी हो तो उस में से खाए और वाजिब हो तो न खाए। (इन्दश्शवाफ़ेअ़)

इरशादे बारी तआ़ला है :

ذٰلِكَ ۗ وَ مَنۡ يُّعَظِّمۡ شَعَآئِرَ اللّٰهِ فَاِنَّهَا مِنۡ تَقۡوَى الۡقُلُوۡبِ ﴿۳۲﴾ (پ۱۷، الحج:۳۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *बात येह है और जो **अल्लाह** के निशानों की ता'ज़ीम करे तो येह दिलों की परहेज़गारी से है।*

इस फ़रमाने बारी तआ़ला की तफ़्सीर में कहा गया है कि यहां ता'ज़ीम से मुराद उ़म्दा और मोटे जानवर की क़ुरबानी देना है। मीक़ात से क़ुरबानी का जानवर ले जाना अफ़्ज़ल है जब कि मशक़्क़त और दुश्वारी न हो, ख़रीदते वक़्त क़ीमत न घटाए, कि बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللهُ الْمُبِيْن तीन चीज़ों में क़ीमत ज़ियादा देते और कम कराने को नापसन्द करते थे :

(1)......हदी[1] (2).....क़ुरबानी का जानवर और (3).....ग़ुलाम।

क्यूंकि इन में ज़ियादा क़ीमत वाला मालिक के नज़्दीक ज़ियादा उ़म्दा होता है।

सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म और 300 दीनार :

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है कि अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ क़ुरबानी के लिये एक बख़्ती ऊंट लाए, आप से 300 दीनार में त़लब किया गया, आप ने रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से पूछा कि येह बेच कर दूसरा ऊंट ख़रीद लूं तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने मन्अ़ करते हुए इरशाद फ़रमाया : "इसे ही क़ुरबान करो।"[2]

इस लिये कि थोड़ी आ'ला चीज़ ज़ियादा अदना चीज़ से बेहतर है और तीन सो दीनार के तीस जानवर आ सकते थे, इन में गोश्त भी ज़ियादा होता लेकिन मक़्सूद गोश्त नहीं बल्कि मक़्सूद तो नफ़्स को बुख़्ल से पाक करना और **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के लिये ता'ज़ीम व ह़ुस्ने ख़ूबी से मुज़य्यन करना है। **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

---

1 ..... **हदी :** उस जानवर को कहते हैं जो क़ुरबानी के लिये ह़रम को ले जाया जाए। (बहारे शरीअ़त, जि.1 स. 1213)

2 ......سنن ابی داود، کتاب المناسک، باب تبدیل الھدی، الحدیث:۱۷۵۶، ج۲، ص۲۰۷، مفھومًا۔

لَنۡ یَّنَالَ اللّٰہَ لُحُوۡمُھَا وَلَا دِمَآؤُھَا وَلٰکِنۡ یَّنَالُہُ التَّقۡوٰی مِنۡکُمۡ ؕ (پ ۱۷، الحج:۳۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : अल्लाह को हरगिज़ न उन के गोश्त पहुंचते हैं न उन के ख़ून हां तुम्हारी परहेज़गारी उस तक बारयाब होती है।

और तक़्वा तब ह़ासिल होता है जब क़ीमत में उ़म्दगी की रिआ़यत की जाए चाहे ता'दाद कम हो या ज़ियादा।

हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से अ़र्ज़ की गई : "ह़ज की नेकी क्या है ?" इरशाद फ़रमाया : اَلْعَجُّ وَالثَّجُّ

عَجّ से मुराद बुलन्द आवाज़ से तल्बिय्या कहना और ثَجّ से मुराद जानवर की कुरबानी करना है।[(1)]

बक़रह ईद के दिन सब से अफ़्ज़ल नेकी :

उम्मुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा त़य्यिबा त़ाहिरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से मरवी है कि रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "इन्सान बक़रह ईद के दिन कोई ऐसी नेकी नहीं करता जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को ख़ून बहाने से ज़ियादा प्यारी हो, येह कुरबानी क़ियामत में अपने सींगों और खुरों के साथ आएगी और कुरबानी का ख़ून ज़मीन पर गिरने से पहले **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हां मक़्बूल हो जाता है, लिहाज़ा खुश दिली से कुरबानी करो।"[(2)]

ह़दीषे पाक में है कि "तुम्हारे लिये कुरबानी के जानवर के ऊन के हर बाल के इ़वज़ नेकी है और ख़ून के हर क़त़रे के बदले एक नेकी है, येह नेकियां मीज़ान में रखी जाएंगी, पस तुम्हारे लिये खुश ख़बरी है।"[(3)]

एक रिवायत में है कि "अपनी कुरबानी के जानवरों को मोटा ताज़ा करो क्यूंकि येह बरोज़े क़ियामत तुम्हारी सुवारियां होंगी।"[(4)]

﴾10﴿......राहे ह़ज में ज़ादे राह या कुरबानी वग़ैरा में जो माल ख़र्च करे खुश दिली से करे, नीज़ माल या बदन में किसी क़िस्म का नुक़्सान हो या कोई मुसीबत पहुंचे तो उसे भी खुश दिली से क़बूल करे (और सब्र करे) क्यूंकि येह ह़ज क़बूल होने की दलील है।

---

1 ......مسند البزار، مسند ابی بکر الصدیق رضی اللہ عنہ، الحدیث:۷۲، ج ۱، ص ۱۴۴۔

2 ......سنن ابن ماجہ، کتاب الاضاحی، باب ثواب الاضحیۃ، الحدیث:۳۱۲۶، ج۳، ص ۵۳۱۔

3 ......قوت القلوب، الفصل الثالث والثلاثون فی ذکر دعائم الاسلام......الخ، ج ۲، ص ۱۹۶۔۱۹۷۔

4 ......تلخیص الحبیر ، کتاب الضحایا، الحدیث:۱۹۵۳، ج۴، ص ۳۴۱، مفہومًا۔

सफ़रे ह़ज में मुसीबत पर सब्र करने की फ़ज़ीलत :

सफ़रे ह़ज में मुसीबत पर सब्र करना राहे ख़ुदा में ख़र्च (या'नी सदक़ा) करने के बराबर है कि एक दिरहम के बदले **700** दिरहम सदक़ा करने का षवाब मिलता है। नीज़ येह जिहाद में तक्लीफ़ पहुंचने की मिष्ल है। लिहाज़ा ह़ाजी जो भी तक्लीफ़ पाए या नुक़्सान उठाए (सब्र करने पर) उसे षवाब मिलेगा। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हां कोई चीज़ ज़ाएअ़ नहीं होती।

क़बूलिय्यते ह़ज की एक अ़लामत :

मन्क़ूल है कि क़बूलिय्यते ह़ज की एक अ़लामत येह है कि वोह जिन नाफ़रमानियों में मुब्तला था उन्हें छोड़ दे और अपने बुरे दोस्तों को छोड़ कर नेकों की सोह़बत इख़्तियार करे, लह्व व लअ़ब और ग़फ़्लत की मजालिस को छोड़ कर ज़िक्रो फ़िक्र और बेदारी की मह़ाफ़िल इख़्तियार करे।

बात़िनी आ'माल और इख़्लास

बात़िनी आ'माल, ख़ुलूसे निय्यत, मक़ामाते मुक़द्दसा से कुछ ह़ासिल करने, इन में ग़ौरो फ़िक्र करने और इब्तिदाए ह़ज से इख़्तिताम तक के असरार व मआ़नी को याद करने का बयान

जान लीजिये ! ह़ज के मुतअ़ल्लिक़ चन्द उमूर को समझना ज़रूरी है। सब से पहले इस बात को समझना कि दीन में ह़ज का क्या मक़ाम है, फिर इस का शौक़ रखना, इस का अ़ज़्म करना, इस से रोकने वाली चीज़ों को ख़त्म करना, एह़राम के कपड़े ख़रीदना, ज़ादे राह ख़रीदना, किराए पर सुवारी लेना, ह़ज के लिये निकलना, जंगलों का सफ़र तै़ करना, मीक़ात से तल्बिय्या के साथ एह़राम बांधना, मक्कए मुकर्रमा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا में दाख़िल होना फिर बयान कर्दा त़रीक़े के मुत़ाबिक़ अफ़्आ़ले ह़ज को मुकम्मल करना। इन उमूर में से हर एक में नसीह़त मानने वाले के लिये नसीह़त, इ़ब्रत ह़ासिल करने वाले के लिये इ़ब्रत, मुरीदे सादिक़ के लिये तम्बीह और हर ज़ह़ीन के लिये मा'रिफ़त व इशारा है। हम इन की कुन्जियों की त़रफ़ इशारा करते हैं ताकि इन का दरवाज़ा खुल जाए और तुम इन के अस्बाब जान लो और हर ह़ाजी के लिये इन के वोह असरार व रुमूज़ खुल जाएं जिन्हें उन की क़ल्बी सफ़ाई, बात़िनी त़हारत और समझ बूझ की रसाई चाहती है।

ह़ज का मफ़्हूम :

जान लीजिये कि बारगाहे इलाही तक रसाई का इस के सिवा कोई रास्ता नहीं कि शहवात से बचा जाए, लज़्ज़ात से कनारा कशी इख़्तियार की जाए, ज़रूरतों पर इक्तिफ़ा किया जाए और तमाम ह़रकात व सकनात में इख़्लास अपनाया जाए, इसी वजह से साबिक़ा उम्मतों के राहिब मख़्लूक़ से कनारा कशी इख़्तियार कर के पहाड़ों की चोटियों पर चले गए और मख़्लूक़ से वह़शत को तरजीह़ दी ताकि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के साथ उनसिय्यत ह़ासिल करें। पस इन्हों ने रिज़ाए इलाही की ख़ातिर लज़्ज़ात को तर्क कर दिया और आख़िरत में रग़बत रखते हुए मुजाहदात को ख़ुद पर लाज़िम कर लिया। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ क़ुरआने पाक में इन की ता'रीफ़ करते हुए फ़रमाता है :

ذٰلِكَ بِاَنَّ مِنْهُمْ قِسِّيْسِيْنَ وَرُهْبَانًا وَّاَنَّهُمْ لَا يَسْتَكْبِرُوْنَ ﴿۸۲﴾ (پ۷، المآئدۃ:۸۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : येह इस लिये कि इन में आ़लिम और दुरवेश हैं और येह ग़ुरूर नहीं करते।

सरकार صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बिअ़्षत का मक़्सद :

जब येह चीज़ मिट गई और लोग ख़्वाहिशात के पीछे पड़ गए, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत के लिये तन्हाई इख़्तियार करने को छोड़ दिया और इस में सुस्ती करने लगे तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने अपने प्यारे नबी ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद मुस्त़फ़ा, अह़मदे मुजतबा صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को मबऊ़ष फ़रमाया ताकि आप आख़िरत के रास्ते को ज़िन्दा करें और इस पर चलने में पहले रसूलों की सुन्नत की तजदीद फ़रमाए। जब मुख़्तलिफ़ मज़ाहिब के लोगों ने ह़ुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से दीन में रुहबानिय्यत (या'नी गोशा नशीनी) और सियाह़त के मुतअ़ल्लिक़ पूछा तो इरशाद फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने हमें इस के बदले जिहाद और हर बुलन्द मक़ाम पर तक्बीर कहने का ह़ुक्म दिया।"[1] यहां जिहाद से मुराद ह़ज है और सय्याह़ों के मुतअ़ल्लिक़ पूछा गया तो फ़रमाया : "वोह रोज़ेदार हैं।"[2]

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इस उम्मत पर इन्आ़म फ़रमाया कि ह़ज को इन के लिये रुहबानिय्यत क़रार दिया, बैतुल्लाह शरीफ़ को अपनी त़रफ़ मन्सूब कर के इसे इ़ज़्ज़त अ़त़ा फ़रमाई और इसे अपने बन्दों के इरादों का मक़ाम बनाया, इस की शान व अ़ज़मत के पेशे नज़र इस के इर्द गिर्द

---

1 ......سنن ابی داود، کتاب الجہاد، باب فی النھی عن السیاحۃ، الحدیث:۲۴۸۶، ج۳، ص ۹، باختصارٍ۔
سنن ابن ماجہ، کتاب الجہاد، باب فضل الحرس والتکبیر فی سبیل اللّٰہ، الحدیث: ۲۷۷۱، ج۳، ص ۳۴۴، باختصارٍ۔

2 ......السنن الکبریٰ للبیہقی، کتاب الصیام، باب فی فضل شھر رمضان......الخ، الحدیث:۸۵۱۴، ج۴، ص ۵۰۳۔

को ह़रम क़रार दिया, मैदाने अ़रफ़ात को ह़रम के मैदान की त़रह़ कर दिया, मक्कए मुकर्रमा के शिकार और दरख़्तों की हुरमत बयान कर के इस की हुरमत को मज़ीद पुख़्ता और बादशाहों के दरबार की त़रह़ क़रार दिया, इस की त़रफ़ दूर दराज़ से परागन्दा बालों और गर्द आलूद चेहरों वाले ज़ाइरीन बैतुल्लाह शरीफ़ के रब्ब के लिये आ़जिज़ी करते और उस की जलालत व इ़ज़्ज़त के सामने ख़ुशूअ़ व ख़ुज़ूअ़ अपनाते हुए ह़ाज़िर होते और इस बात का ए'तिराफ़ करते हैं कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इस से पाक है कि कोई घर या शहर इस का इह़ात़ा करे ताकि इन की ग़ुलामी और बन्दगी मज़ीद बढ़े, इन की इत़ाअ़त व फ़रमां बरदारी की तक्मील हो।

आ'माले ह़ज और दीगर इ़बादात में फ़र्क़ :

ह़ज में उन आ'माल की बजा आवरी का हुक्म है जिन से लोग मानूस नहीं और न ही अ़क़्ल उन के बात़िनी मा'ना तक रसाई पाती है जैसे रमिये जिमार और सफ़ा व मर्वा की सअ़्य। इस जैसे आ'माल से ग़ुलामी और बन्दगी का कमाल ज़ाहिर होता है क्यूंकि ज़कात में नर्मी है, इस की ह़िक्मत समझ आती और अ़क़्ल इस की त़रफ़ माइल होती है। रोज़ा उस ख़्वाहिश को तोड़ता है जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के दुश्मन शैत़ान का आला है और मसरूफ़िय्यात से रुक कर इ़बादत के लिये फ़ारिग़ होना है। नमाज़ में रुकूअ़ व सुजूद ऐसे अफ़्आ़ल हैं जिन की अदाएगी के त़रीक़े में ही अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये आ़जिज़ी पाई जाती है। और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ता'ज़ीम से लोगों को उन्स मिलता है लेकिन बार बार सफ़ा व मर्वा के दरमियान दौड़ने, जमरात को कंकरियां मारने और इस जैसे दीगर अफ़्आ़ले ह़ज में नुफ़ूस का कोई ह़िस्सा नहीं, न इन से त़बीअ़त को उन्स मिलता है और न ही अ़क़्ल की इन के बात़िनी मआ़नी तक रसाई होती है। लिहाज़ा इन की बजा आवरी का बाइ़ष मह़्ज़ हुक्मे इलाही है, हुक्म की बजा आवरी इस ए'तिबार से है कि उस के हुक्म पर अ़मल करना वाजिब है, अ़क़्ल को इस में तसर्रुफ़ से रोकना और नफ़्स व त़बीअ़त को इन के मह़ल्ले उन्स से फेरना है क्यूंकि हर वोह चीज़ जिस के मआ़नी तक अ़क़्ल की रसाई हो त़बीअ़त उस की त़रफ़ माइल हो जाती है तो येह मैलान हुक्म मानने में मुआ़विन षाबित होता और इस काम का बाइ़ष बनता है, इस से ग़ुलामी और फ़रमां बरदारी का कमाल ज़ाहिर नहीं होता इसी लिये हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज के मुतअ़ल्लिक़ ख़ुसूसी त़ौर पर इरशाद फ़रमाया : "मैं ह़ज के लिये ह़ाज़िर हूं जो ख़ालिस बन्दगी का ह़क़ है।"[1] जब कि नमाज़ वग़ैरा के मुतअ़ल्लिक़ येह बात इरशाद नहीं फ़रमाई।

(1) ......مجمع الزوائد، کتاب الحج، باب الاھلال، والتلبیة، الحدیث:٥٣٦٢، ج٣، ص٥٠٧۔

हि़क्मते इलाही का तक़ाज़ा :

हि़क्मते इलाही का तक़ाज़ा है कि मख़्लूक़ की नजात उन आ'माल से मरबूत़ हो जो त़बीअ़तों की ख़्वाहिश के मुख़ालिफ़ हों और मख़्लूक़ की लगाम शरीअ़त के हाथ में हो और वोह इन्हें तस्लीम करने और बन्दगी के त़रीक़े पर बजा लाएं। क्यूंकि जिन आ'माल के बात़िनी मआ़नी समझ नहीं आते वोह तज़्कियए नफ़्स, त़बीअ़त के तक़ाज़े और आ़दात को बन्दगी की त़रफ़ फेरने के सिलसिले में ज़ियादा बलीग़ होते हैं (इस लिये कि इन में ख़ालिस बन्दगी पाई जाती है)। येह बात समझ जाओ तो तुम जान लोगे कि इन अ़जीब अफ़्आ़ल में नुफ़ूस का तअ़ज्जुब करना इस वजह से है कि वोह इबादात के असरार से बे ख़बर हैं। ह़ज की ह़क़ीक़त को समझने के लिये इतनी वज़ाह़त काफ़ी है।

ह़ज का शौक़ :

इस का शौक़ तब पैदा होता है जब येह बात समझ आ जाए कि बैतुल्लाह शरीफ़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का घर है, येह ह़ाज़िरी बादशाहों के दरबार में ह़ाज़िरी की मिष्ल है, इस का क़स्द करने वाला **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का क़स्द करने वाला और उस की ज़ियारत करने वाला है। बेशक जिस ने दुन्या में बैतुल्लाह शरीफ़ का क़स्द किया वोह इस का मुस्तह़िक़ है कि उस की ज़ियारत ज़ाएअ़ न हो, उसे मुक़र्ररा मुद्दत में ज़ियारत का मक़्सूद अ़त़ा कर दिया जाए और वोह आख़िरत में दीदारे इलाही से मुशर्रफ़ होना है क्यूंकि दुन्या में फ़ना होने वाली और नाक़िस आंख में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के वजहे करीम को क़बूल करने की ताब नहीं, न ही इसे बरदाश्त कर सकती और अपनी कमज़ोरी के बाइ़ष इसे बत़ौरे सुर्मा भी इस्ति'माल नहीं कर सकती है, इस के बर अ़क्स आख़िरत में इसे बाक़ी रहने पर मदद मिलेगी और तग़य्युर व फ़ना के अस्बाब से पाक हो जाएगी तो दीदारे इलाही के लिये तय्यार हो जाएगी लेकिन वोह बैतुल्लाह शरीफ़ का क़स्द करने और उस का दीदार करने के सबब यक़ीनी त़ौर पर वा'दए इलाही के मुत़ाबिक़ बैतुल्लाह के रब्ब के दीदार का मुस्तह़िक़ हो जाएगा। मुह़िब्ब हर उस चीज़ का मुश्ताक़ होता है जिसे उस के मह़बूब से निस्बत होती है। जब बैतुल्लाह शरीफ़ को रब्ब عَزَّوَجَلَّ से निस्बत है तो मह़ज़ इस निस्बत की वजह से उस का मुश्ताक़ होना चाहिये चे जाइका इस पर वोह अ़ज़ीम षवाब मिले या न मिले जिस का वा'दा किया गया है।

ह़ज का अ़ज़्म :

आ़ज़िमे मक्का व मदीना बैतुल्लाह शरीफ़ की ज़ियारत की त़रफ़ मुतवज्जेह होते हुए अपने अहलो इ़याल, वत़न और ख़्वाहिशात व लज़्ज़ात को छोड़ने का अ़ज़्म करता है तो उस के दिल में बैतुल्लाह शरीफ़ और उस के रब्ब की ता'ज़ीम होनी चाहिये और उसे मा'लूम होना चाहिये कि उस ने रफ़ीउ़श्शान काम का इरादा किया है, जिस का मुआ़मला मुश्किल है और जो

बड़े काम का इरादा करता है उसे बड़े ख़त़रात का सामना करना पड़ता है, लिहाज़ा उस का अ़ज़्म ख़ालिस रिज़ाए इलाही के लिये हो जिस में दिखावे और शोहरत का शाइबा भी न हो, उसे यक़ीन होना चाहिये कि उस की निय्यत और अ़मल में से वोही क़बूल होगा जिस में इख़्लास होगा। येह बहुत बड़ी बुराई है कि कोई बादशाह के घर और उस के ह़रम का इरादा करे लेकिन मक़्सूद कुछ और हो। पस उस का इरादा सह़ीह़ होना चाहिये और येह तब सह़ीह़ होगा जब इख़्लास होगा और इख़्लास तब होगा जब दिखावे व शोहरत वग़ैरा से मुकम्मल इजतिनाब करेगा। लिहाज़ा उ़म्दा चीज़ के बदले ह़क़ीर चीज़ लेने से बचना चाहिये।

तमाम तर ख़यालात से दिल को पाक करना :

इस का मा'ना येह है कि ज़ुल्मन लिया हुवा माल वापस करना और तमाम गुनाहों से ख़ालिसतन अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये तौबा करना हर ज़ियादती एक अ़लाक़ा है और हर अ़लाक़ा क़र्ज़ ख़्वाह की त़रह़ है जो उस के गिरेबान को पकड़े हुए कह रहा है : "तू किस त़रफ़ मुतवज्जेह है ? क्या तू बादशाहों के बादशाह के घर का इरादा रखता हालांकि अपने घर में तू उस के हुक्म को ज़ाएअ़ कर रहा है, उसे ह़क़ीर जान रहा और उस की ता'मील नहीं कर रहा या क्या तुझे ह़या नहीं आती कि उस की बारगाह में नाफ़रमान बन्दे की त़रह़ पेश हो और वोह तुझे ठुकरा दे, क़बूल न करे ? अगर तेरी ख़्वाहिश है कि तेरा येह ज़ियारत करना क़बूल हो तो उस के अह़काम पर अ़मल कर, ज़ुल्मन लिया हुवा माल लौटा दे, पहले उस की बारगाह में तमाम गुनाहों से सच्ची तौबा कर, अपने दिल को किसी और जानिब मुतवज्जेह होने से रोक ले ताकि पूरी तवज्जोह के साथ उस की त़रफ़ मुतवज्जेह हो जैसे ज़ाहिरी चेहरे से उस के घर की त़रफ़ मुतवज्जेह होता है। अगर तू ने ऐसा न किया तो दुन्या में अपने इस सफ़र में तुझे थकावट व बदबख़्ती के सिवा कुछ ह़ासिल न होगा और आख़िरत में तुझे धुतकार कर लौटा दिया जाएगा। अपने वत़न के साथ तअ़ल्लुक़ात को इस त़रह़ दिल से निकाल दे जिस त़रह़ कोई शख़्स वत़न को छोड़ देता और दिल में ख़याल करता है कि दोबारा उस की त़रफ़ लौट कर नहीं आएगा। अपने अहलो इ़याल के लिये वसिय्यत लिखे क्यूंकि मुसाफ़िर और उस का माल ख़त़रे में होते हैं, सिवाए उस के जिसे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मह़फ़ूज़ रखे। जब सफ़रे ह़ज के लिये जुदा हो रहा हो तो सफ़रे आख़िरत के लिये सब से जुदा होने को याद करे क्यूंकि वोह भी क़रीब और सामने है। सफ़रे ह़ज में जो कुछ पेश आए उसे सफ़रे आख़िरत की आसानी का ज़रीआ़ समझे क्यूंकि वोह मुस्तक़िल ठिकाना है और उसी की त़रफ़ लौटना है। लिहाज़ा इस सफ़र की तय्यारी के वक़्त उस सफ़र से ग़ाफ़िल नहीं होना चाहिये।"

जा़दे राह :

जा़दे राह ह़लाल जगह से ह़ासिल करे, जब मह़सूस करे कि नफ़्स उस की कषरत का ह़रीस है और चाहता है कि दूर दराज़ सफ़र के बा वुजूद वोह बचा रहे, न उस में कोई तब्दीली आए और न ही मक़्सद तक पहुंचने से पहले वोह ख़राब हो तो याद करे कि सफ़रे आख़िरत इस सफ़र से बहुत त़वील है, उस का ज़ादे राह तक़्वा है, इस के इ़लावा जिस चीज़ को ज़ादे राह गुमान किया जाता है वोह मौत के वक़्त दुन्या में ही रह जाएगी और ख़यानत करेगी वोह उस के साथ बाक़ी नहीं रहेगी, जैसे ताज़ा खाना जो सफ़र की पहली मंज़िल पर ही ख़राब हो जाता है और ज़रूरत के वक़्त इन्सान हैरान व परेशान और मोह़ताज हो जाता है उस के पास कोई ह़ीला नहीं होता, लिहाज़ा उसे डरना चाहिये कि उस के वोह आ'माल जो आख़िरत का ज़ादे राह हैं मौत के बा'द उस का साथ नहीं देंगे बल्कि वोह रियाकारी के शाइबे और कोताही की मैल कुचेल से ख़राब हो जाएंगे।

सुवारी :

जब सुवारी के पास पहुंचे तो दिल से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का शुक्र अदा करे कि उस ने उस के लिये सुवारी को मुसख़्ख़र किया ताकि इस से तक्लीफ़ दूर और मशक़्क़त कम करे, इस वक़्त उस सुवारी को याद करे जिस पर सुवार हो कर आख़िरत की त़रफ़ जाएगा और वोह जनाज़ा (की चारपाई) है जिस पर डाल कर उसे ले जाया जाएगा क्यूंकि ह़ज का मुआ़मला एक ए'तिबार से सफ़रे आख़िरत की त़रह़ है तो उसे देखना चाहिये कि क्या इस सुवारी पर सफ़र इस क़ाबिल है कि इस सुवारी (जनाज़ा) पर सफ़रे आख़िरत करे और वोह सफ़र इस के किस क़दर क़रीब है, उसे क्या मा'लूम हो सकता है कि मौत क़रीब हो और सुवारी पर सुवार होने से पहले ही इसे जनाज़े की चारपाई पर सुवार होना पड़े। जनाज़े पर सुवार होना तो यक़ीनी है जब कि अस्बाबे सफ़र की आसानी मश्कूक है। तो कोई अक़्ल मन्द कैसे मश्कूक अस्बाबे सफ़र में एह़तियात़ से काम लेता, उस के लिये ज़ादे राह और सुवारी लेता है और यक़ीनी सफ़र का मुआ़मला मुहमल छोड़ देता है ?

एह़राम के कपड़े ख़रीदना :

एह़राम के कपड़े ख़रीदते हुए कफ़न और उस में लपेटे जाने को याद करे क्यूंकि अ़न क़रीब बैतुल्लाह शरीफ़ से क़रीब होते वक़्त वोह एह़राम की एक चादर नीचे और दूसरी ऊपर बांधेगा और हो सकता है उस का सफ़र मुकम्मल भी न हो और वोह यक़ीनी त़ौर पर कफ़न के

कपड़ों में लिपटा हुवा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से मुलाक़ात करे तो जिस त़रह़ वोह आ़म लिबास के बर अ़क्स लिबास में बैतुल्लाह शरीफ़ से मुलाक़ात करता है इसी त़रह़ मौत के बा'द दुन्यवी लिबास के मुख़ालिफ़ लिबास में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से मुलाक़ात करेगा। एह़राम भी कफ़न की त़रह़ बिग़ैर सिला हुवा होता है।

रवानगी :

शहर से रवाना होते वक़्त उसे इ़ल्म होना चाहिये कि उस ने अपने घर वालों और वत़न को छोड़ दिया और ऐसे सफ़र की त़रफ़ पेश क़दमी कर दी है जो दुन्यवी सफ़रों के मुशाबेह नहीं। लिहाज़ा अपने दिल में येह बात ह़ाज़िर करे कि उस का क्या इरादा है? किस की त़रफ़ मुतवज्जेह है? किस की ज़ियारत का क़स्द कर रहा है? दीगर ज़ाइरीन के साथ बादशाहों के बादशाह की त़रफ़ मुतवज्जेह है, जिन्हें पुकारा गया तो उन्हों ने जवाब दिया, उन्हें ज़ियारत का शौक़ दिलाया गया तो वोह मुश्ताक़ हो गए, उन्हें रग़्बत दिलाई गई तो वोह तय्यार हो गए, उन्हों ने तमाम रिश्ते नाते ख़त्म कर दिये, लोगों से जुदाई इख़्तियार कर ली और बैतुल्लाह शरीफ़ की त़रफ़ मुतवज्जेह हो गए जिस की अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने शान बुलन्द फ़रमाई, उसे क़द्रो मन्ज़िलत अ़त़ा फ़रमाई ताकि वोह रब्बे का'बा से मुलाक़ात की जगह बैतुल्लाह शरीफ़ की मुलाक़ात से दिल को तसल्ली दे लें यहां तक कि उन की आख़िरी तमन्ना पूरी कर दी जाए और वोह अपने रब्ब عَزَّوَجَلَّ के दीदार की सआ़दत पा लें। उसे चाहिये कि दिल में बारगाहे इलाही तक रसाई और क़बूलिय्यत की उम्मीद रखे और यूं न कहे कि मैं ने इतनी मुद्दत से अपने अहलो इ़याल और माल व अस्बाब को छोड़ा हुवा है बल्कि फ़ज़्ले इलाही पर भरोसा रखे और येह उम्मीद रखे कि जो उस के घर की ज़ियारत करे उस से वा'दा पूरा किया जाता है और उम्मीद रखे कि अगर का'बतुल्लाहि मुशर्रफ़ा तक न पहुंच सका और रास्ते में मौत आ गई तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से यूं मुलाक़ात करेगा कि वोह उस की त़रफ़ सफ़र करने वाला होगा क्यूंकि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ क़ुरआने मजीद, फ़ुरक़ाने ह़मीद में इरशाद फ़रमाता है :

وَمَنۡ یَّخۡرُجۡ مِنۡۢ بَیۡتِهٖ مُهَاجِرًا اِلَی اللّٰهِ وَ رَسُوۡلِهٖ ثُمَّ یُدۡرِكۡهُ الۡمَوۡتُ فَقَدۡ وَقَعَ اَجۡرُهٗ عَلَی اللّٰهِ ؕ (پ۵، النسآء:۱۰۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और जो अपने घर से निकला अल्लाह व रसूल की त़रफ़ हिजरत करता फिर उसे मौत ने आ लिया तो उस का षवाब अल्लाह के ज़िम्मे पर हो गया।*

जंगल व बयाबान का सफ़र :

मीक़ात की त़रफ़ जाते हुए जंगलों में दाखि़ल होने और उन घाटियों का मुशाहदा करते हुए उस वक़्त को याद करे कि मौत से क़ियामत तक के अ़र्से में जो हौलनाक मुआ़मला पेश आएगा और सुवालात होंगे, डाकूओं के ख़ौफ़ से मुन्कर नकीर के सुवालात की होलनाकी को याद करे, दरिन्दों से क़ब्र के बिच्छूओं, कीड़े मकोड़ों और सांपों को याद करे, घर बार और रिश्तेदारों से जुदाई को क़ब्र की तन्हाई, सख़्ती और तन्हाई का पेश ख़ैमा समझे। अल ग़रज अपने आ'माल व अक़्वाल में जिस चीज़ से भी ख़ौफ़ करे उसे क़ब्र की डरावनी चीज़ों के लिये सामान बनाए।

मीक़ात से एह़राम बांधना और तल्बिय्या कहना :

जान लीजिये कि इस का मा'ना अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की पुकार को क़बूल करना है तो उस के मक़्बूल होने की उम्मीद रखे और उस से डरे कि कहीं "لَا لَبَّيْكَ وَلَا سَعْدَيْكَ या'नी तुम्हारी ह़ाज़िरी क़बूल नहीं" न कह दिया जाए। पस उम्मीद और ख़ौफ़ के दरमियान रहे, अपनी क़ुव्वत व त़ाक़त के बजाए अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के फ़ज़्लो करम पर भरोसा करे क्यूंकि तल्बिय्या का वक़्त इब्तिदाई मुआ़मला है और येह ख़त़रे का मक़ाम है।

कहीं "لَا لَبَّيْكَ وَلَا سَعْدَيْكَ" न कह दिया जाए :

ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान बिन उ़यैना رَحْمَةُاللهِ تعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली बिन हुसैन (या'नी सय्यिदुना इमाम ज़ैनुल आ़बिदीन رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ) जब ह़ज के इरादे से एह़राम बांध कर सुवारी पर बैठ गए तो रंग ज़र्द हो गया और कपकपी त़ारी हो गई ह़त्ता कि तल्बिय्या भी न कह सके। अ़र्ज की गई : "आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ तल्बिय्या क्यूं नहीं कहते ?" फ़रमाया : "मुझे डर है कि कहीं येह न कह दिया जाए : لَا لَبَّيْكَ وَلَا سَعْدَيْكَ या'नी तुम्हारी ह़ाज़िरी क़बूल नहीं।" जब तल्बिय्या कहा तो आप पर ग़शी त़ारी हो गई और सुवारी से नीचे तशरीफ़ ले आए, ह़ज मुकम्मल करने तक आप पर येही कैफ़िय्यत त़ारी रही।

ह़ज़रते सय्यिदुना अह़मद बिन अबी ह़वारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِی फ़रमाते हैं : मैं ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सुलैमान दारानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّورَانِی के साथ था जब आप ने एह़राम का इरादा किया तो तल्बिय्या न कह सके हम एक मील ही चले थे कि उन पर ग़शी त़ारी हो गई। जब इफ़ाक़ा हुवा तो फ़रमाया : ऐ अह़मद ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा عَلٰی نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की त़रफ़ वह़्य फ़रमाई कि "बनी इसराईल के ज़ालिमों को हुक्म दो कि मेरा ज़िक्र कम किया करें

क्यूंकि इन में से जो मुझे याद करता है मैं उसे ला'नत के साथ याद करता हूं।" ऐ अह्मद ! तेरा बुरा हो मुझे येह बात पहुंची है कि जो नाजाइज़ माल से ह़ज करे और तल्बिय्या कहे तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है : "तेरी ह़ाज़िरी क़बूल नहीं जब तक कि तू लोगों का ग़सब किया हुवा माल लौटा न दे।" तो हम इस से बे ख़ौफ़ नहीं कि हमें भी येह न कह दिया जाए।

मीक़ात में तल्बिय्या कहते वक़्त तल्बिय्या कहने वाले को याद रखना चाहिये कि उस ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की पुकार पर लब्बैक कहा जब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام से फ़रमाया :

وَاَذِّنْ فِی النَّاسِ بِالْحَجِّ (پ ۱۷، الحج: ۲۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और लोगों में ह़ज की आ़म निदा कर दे।*

नीज़ सूर फूंकने के ज़रीए मख़्लूक़ को निदा करने, उन के क़ब्रों से उठने और मैदाने मह़शर में जम्अ़ हो कर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की पुकार पर जवाब देने और मुक़र्रबीन व मग़ज़ूबीन और मक़्बूलीन व मर्दूदीन में उन की तक़्सीम को याद रखे और इब्तिदा में वोह ख़ौफ़ व उम्मीद के दरमियान मुतरद्दिद होंगे जैसे ह़ाजी मीक़ात में मुतरद्दिद होते हैं और नहीं जानते कि उन के लिये ह़ज की तक्मील और क़बूलिय्यत आसान होगी या नहीं ?

मक्कए मुकर्रमा में दाख़िला :

मक्कए मुकर्रमा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعْظِیْمًا में दाख़िल होते वक़्त येह याद रखे कि वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के अम्न वाले घर में पहुंच गया है, उस वक़्त येह उम्मीद रखे कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के अ़ज़ाब से भी अम्न में रहेगा और येह ख़ौफ़ भी हो कि हो सकता है वोह क़ुर्ब का अहल ही न हो और ह़रम में दाख़िल होने के बा वुजूद ना मुराद लौटा दिया जाए और नाराज़ी का मुस्तह़िक़ ठहरे लेकिन तमाम अवक़ात में उम्मीद ग़ालिब रहनी चाहिये कि करम आ़म और रब्ब عَزَّوَجَلَّ की सिफ़त रह़ीम है, बैतुल्लाह शरीफ़ का शरफ़ अ़ज़ीम है, उस की ज़ियारत करने वाले के ह़क़ की रिआ़यत की जाती है और पनाह त़लब करने वाले की हुरमत ज़ाएअ़ नहीं की जाती।

बैतुल्लाह शरीफ़ पर पहली नज़र :

जब बैतुल्लाह शरीफ़ पर नज़र पड़े तो दिल में उस की अ़ज़मत को ह़ाज़िर करे और इन्तिहाई ता'ज़ीम की बदौलत यूं समझे गोया बैतुल्लाह शरीफ़ के रब्ब की ज़ियारत कर रहा है और येह उम्मीद रखे कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अपने वजहे करीम की ज़ियारत नसीब फ़रमाएगा जैसा

कि उस ने अ़ज़ीम घर की ज़ियारत की सआ़दत अ़त़ा फ़रमाई। नीज़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का शुक्र अदा करे कि उस ने इस मर्तबे तक पहुंचने की सआ़दत अ़त़ा फ़रमाई और अपनी बारगाह में ह़ाज़िर होने वालों के गुरौह के साथ मिलाया। उस वक़्त क़ियामत में लोगों के दुख़ूले जन्नत की उम्मीद से उस की त़रफ़ जाने को याद करे कि इन में से बा'ज़ को दाख़िले की इजाज़त मिलेगी और बा'ज़ को लौटा दिया जाएगा यूं ही बा'ज़ का ह़ज क़बूल होगा और बा'ज़ का रद्द कर दिया जाएगा। अल ग़रज़ जो चीज़ देखे उस से उमूरे आख़िरत की याद से ग़ाफ़िल न हो क्यूंकि ह़ाजियों के तमाम अह़वाल अह़वाले आख़िरत पर दलील हैं।

त़वाफ़े ख़ानए का'बा :

जान लीजिये कि त़वाफ़ भी नमाज़ की त़रह़ है, लिहाज़ा ब वक़्ते त़वाफ़ दिल में ता'ज़ीम, ख़ौफ़, उम्मीद और मह़ब्बत को ह़ाज़िर करे जैसा कि "**किताबुस्सलात**" में हम तफ़्सीलन बयान कर चुके हैं और जान लो कि त़वाफ़ करते हुए तुम अ़र्श के गिर्द चक्कर लगाने वाले मुक़र्रब फ़िरिश्तों से मुशाबहत रखते हो और येह गुमान न करो कि सिर्फ़ जिस्म से त़वाफ़ करना मक़्सूद है बल्कि रब्बे का'बा के ज़िक्र के साथ दिल का त़वाफ़ मक़्सूद है ह़त्ता कि इसी से ज़िक्र की इब्तिदा की जाए और इख़्तिताम भी इसी पर किया जाए जैसा कि बैतुल्लाह शरीफ़ से त़वाफ़ शुरूअ़ किया जाता है और बैतुल्लाह पर ही ख़त्म किया जाता है। येह भी याद रखे कि ह़क़ीक़त में त़वाफ़ बारगाहे इलाही में दिल का त़वाफ़ है, बैतुल्लाह शरीफ़ तो ज़ाहिरी दुन्या में इस ह़ाज़िरी की एक मिषाल है जिसे आंखों से नहीं देखा जा सकता और वोह आ़लमे मलकूत है जैसा कि बदन आ़लमे शहादत में दिल के लिये ज़ाहिरी मिषाल है जिसे आंखों से नहीं देखा जा सकता और वोह आ़लमे ग़ैब में है। आ़लमे दुन्या व आ़लमे शहादत उस शख़्स के लिये आ़लमे ग़ैब और आ़लमे मलकूत की त़रफ़ ज़ीना (ज़रीआ़) हैं जिस के लिये अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आ़लमे ग़ैब का दरवाज़ा खोल दे। इसी मुनासबत से इशारा किया गया कि का'बा शरीफ़ के ऐ़'न ऊपर आस्मानों में बैतुल मा'मूर है जिस का फ़िरिश्ते इसी त़रह़ त़वाफ़ करते हैं जिस त़रह़ इन्सान बैतुल्लाह शरीफ़ का त़वाफ़ करते हैं तो जब अकषर लोग फ़िरिश्तों जैसे त़वाफ़ से कम रुत्बे में हैं तो उन्हें हुक्म दिया गया कि ह़त्तल इमकान उन की मुशाबहत इख़्तियार करें और उन से वा'दा किया गाया कि "مَنْ تَشَبَّهَ بِقَوْمٍ فَهُوَ مِنْهُمْ" या'नी जो किसी क़ौम की मुशाबहत इख़्तियार करे वोह उन्ही में से हैं।(1) और जो शख़्स उन जैसा त़वाफ़ कर सकता है इस के मुतअ़ल्लिक़ कहा जाता है कि का'बा उस की ज़ियारत और त़वाफ़ करता है जैसा कि बा'ज़ अहले कश्फ़ ने बा'ज़ औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام को मुलाह़ज़ा फ़रमाया।

---

1 ......سنن ابی داود، کتاب اللباس، باب فی لبس الشھرة، الحدیث: ۴۰۳۱، ج۴، ص ۶۲۔

हजरे अस्वद का इस्तिलाम :

हजरे अस्वद को बोसा देते हुए येह ए'तिकाद रखे कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इताअत पर इस की बैअत करने वाला है। लिहाज़ा अपनी बैअत को पूरा करने का अज़्मे मुसम्मम करे क्यूंकि जो बैअत में धोका देही से काम लेता है वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की नाराज़ी का मुस्तहिक हो जाता है।

दायां दस्ते कुदरत :

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन अब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है कि हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "हजरे अस्वद ज़मीन में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का दायां दस्ते कुदरत है इस के साथ वोह अपनी मख़्लूक से मुसाफ़हा करता है जैसे कोई शख़्स अपने भाई से मुसाफ़हा करता है।"(1)

गिलाफ़े का'बा से लिपटना और मुल्तज़म से चिमटना :

गिलाफ़े का'बा से लिपटते और मक़ामे मुल्तज़म से चिमटते वक्त येह निय्यत हो कि महब्बत व शौक के साथ का'बा और रब्बे का'बा का कुर्ब तलब कर रहा और इसे छू कर बरकत हासिल कर रहा हूं और येह उम्मीद हो कि बदन का जो भी जुज़ बैतुल्लाह शरीफ़ से लगा हुवा है वोह जहन्नम से आज़ाद होगा। नीज़ येह निय्यत हो कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से तलबे मुआफ़ी और अमान के सुवाल में इसरार कर रहा हूं जैसा कि मुजरिम उस शख़्स के कपड़ों से लिपट जाता है जिस का हक़ तलफ़ किया हो और उस से मुआफ़ी मांगने में गिर्या व ज़ारी करता और ज़ाहिर करता है कि उस के लिये इस के सिवा कोई पनाह गाह नहीं, उस के अफ़्वो करम के सिवा कोई ठिकाना नहीं, मुआफ़ी मिले बिग़ैर उस का दामन नहीं छोड़ेगा और मुस्तक़्बिल में भी अम्न की ज़मानत दे दे।

सफ़ा व मर्वा की सअ़्य :

का'बतुल्लाहि मुशर्रफ़ा के सहन में सफ़ा व मर्वा के दरमियान सअ़्य इसी तरह है जैसे बन्दा बादशाह के दरबार के सहन में बार बार आता जाता और मुतरद्दिद होता है, ख़िदमत में ख़ुलूस ज़ाहिर करता है और उम्मीद होती है कि उसे रहमत की निगाह से देखा जाएगा जैसे कोई शख़्स

---

(1)......الكامل فی ضعفاء الرجال، اسحاق بن بشير:١٧٢، ج١، ص٥٥٧، بتغير۔
كشف الخفاء، حرف الحاء المهملة، الحديث:١١٠٧، ج١، ص٣١١، باختصارٍ۔

बादशाह के दरबार में पेश होता है लेकिन वोह नहीं जानता कि बादशाह उस के ह़क़ में क्या फ़ैसला फ़रमाएगा, उसे क़बूल करेगा या रद्द कर देगा। चुनान्चे, वोह बार बार मह़ल के सह़न में आता जाता है इस उम्मीद पर कि अगर पहली बार रह़्म न किया गया तो दूसरी बार ज़रूर रह़्म किया जाएगा। नीज़ सफ़ा व मर्वा के दरमियान सञ्य करते हुए मैदाने क़ियामत में मीज़ान के दो पलड़ों के दरमियान चक्कर लगाने को याद करे, सफ़ा को नेकियों का पलड़ा और मर्वा को बुराइयों का पलड़ा तसव्वुर करे और याद रखे कि दोनों पलड़ों के दरमियान इसी त़रह़ दौड़ेगा और देखेगा कि कौन सा पलड़ा भारी होता है, कौन सा हलका ? और वोह अ़ज़ाब व बख़्शिश में मुतरद्दिद होगा।

वुक़ूफ़े अ़रफ़ा :

मैदाने अ़रफ़ात में क़ियाम के दौरान लोगों के हुजूम, आवाज़ों के बुलन्द होने, ज़बानों के इख़्तिलाफ़, मैदाने मह़शर में मुख़्तलिफ़ गुरौहों के अपने अइम्मा के साथ मक़ामाते मुक़द्दसा पर जाने, उम्मतों के अम्बियाए किराम व अइम्मए उ़ज़्ज़ाम عَلَيۡهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के साथ जम्अ़ होने, हर उम्मत के अपने नबी के पीछे चलने, उन की शफ़ाअ़त त़लब करने और मैदाने मह़शर में रद्दो क़बूल के दरमियान ह़ैरान व शशदर खड़े होने को याद करे, जब इस बात को याद कर ले तो अपने दिल में आ़जिज़ी को लाज़िम कर ले और बारगाहे इलाही में ख़ूब गिड़ गिड़ा कर दुआ़ मांग तुझे रह़्म किये गए कामयाब लोगों में उठाया जाएगा और क़बूलिय्यते दुआ़ की पुख़्ता उम्मीद रख। मौक़िफ़ (या'नी मैदाने अ़रफ़ात) मक़ामे शरफ़ है और रह़मते इलाही अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से ज़मीन के अवताद के अ़ज़ीज़ दिलों के वासित़े से तमाम मख़्लूक़ तक पहुंचती है और मौक़िफ़ किसी भी वक़्त अब्दाल व अवताद, सालिह़ीन और अहले दिल के त़बक़े से ख़ाली नहीं होता। जब उन की हिम्मतें जम्अ़ हो जाएं, दिल आ़जिज़ी और गिर्या व ज़ारी के लिये ख़ाली हो जाएं, हाथ बारगाहे इलाही में उठ जाएं, गर्दनें उस की त़रफ़ और उन की निगाहें आस्मान की जानिब बुलन्द हों और ह़ुसूले रह़मत के लिये सब की हिम्मतें इकठ्ठी हों तो येह गुमान न करना कि उन की उम्मीद ना काम होगी, कोशिश ज़ाएअ़ हो जाएगी और उन्हें ढांपने वाली रह़मत रूक कर जम्अ़ कर दी जाएगी। इसी लिये मन्क़ूल है कि बड़ा गुनाह येह है कि "बन्दा अ़रफ़ात में ह़ाज़िर हो और येह गुमान करे कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उस की बख़्शिश नहीं फ़रमाई।" चुनान्चे, सब हिम्मतों का इजतिमाअ़ और मुख़्तलिफ़ शहरों से आए हुए अब्दाल व अवताद का जम्अ़ हो कर उन का साथ

देना ही ह़ज का भेद और अस्ली मक़्सद है। लिहाज़ा जहां हिम्मतें जम्अ़ हों और एक वक़्त में एक ही मैदान में दिल एक दूसरे के मुआ़विन हो तो रह़मते इलाही के ह़ुसूल का कोई त़रीक़ा इस त़रीक़े जैसा नहीं।

जमरात को कंकरियां मारना :

कंकरियां मारते वक़्त ह़ुक्म की इत़ाअ़त, ग़ुलामी और बन्दगी का इज़्हार करे, मह़्ज़ ह़ुक्म की बजा आवरी के लिये तय्यार हो जिस में अ़क़्ल व नफ़्स का कोई ह़िस्सा न हो, फिर ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ख़लीलुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की मुशाबहत का इरादा करे कि इस जगह इब्लीस मलऊ़न ने उन के ह़ज में शुबा डालने या उन्हें नाफ़रमानी में मुब्तला करने की कोशिश की थी तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उन्हें ह़ुक्म फ़रमाया कि इसे कंकरियों के साथ भगा दें और इस की उम्मीद ख़त्म कर दें।

वस्वसा : अगर तेरे दिल में वस्वसा आए कि शैत़ान ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ख़लीलुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के सामने ज़ाहिर हुवा था, उन्हों ने इसे देखा था इसी लिये कंकरियां मारी थीं लेकिन मेरे सामने तो शैत़ान नहीं आता ? (लिहाज़ा, मैं कंकरियां क्यूं मारूं ?)

इलाजे वस्वसा : जान लो कि येह वस्वसा भी शैत़ान की त़रफ़ से है, उसी ने तेरे दिल में येह बात डाली ताकि तेरे कंकरियां मारने का इरादा कमज़ोर हो जाए और तेरे दिल में येह ख़याल डाले कि इस काम में कोई फ़ाइदा नहीं और येह कि येह खेल के मुशाबेह है फिर तू इस में क्यूं मश्ग़ूल है ? लिहाज़ा ख़ूब कंकरियां मार कर उसे भगाओ और ज़लीलो रुस्वा करो और यक़ीन रखो कि बज़ाहिर सुतूनों को कंकरियां मार रहे हो लेकिन ह़क़ीक़त में शैत़ान के मुंह पर कंकरियां मार रहे हो, उस की पीठ पर मार रहे हो क्यूंकि शैत़ान तभी ज़लीलो रुस्वा हो सकता है जब कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ता'ज़ीम करते हुए उस के ह़ुक्म पर अ़मल किया जाए जिस में नफ़्स व अ़क़्ल का कोई ह़िस्सा न हो।

क़ुरबानी करना :

जान लीजिये कि जानवर ज़ब्ह़ करने में भी ह़ुक्मे इलाही पर अ़मल करना और उस का क़ुर्ब मिलने का ज़रीआ़ है। लिहाज़ा कामिल क़ुरबानी करे और उम्मीद रखे कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ क़ुरबानी के जानवर के हर ह़िस्सए बदन के बदले उस के जिस्म का वोह ह़िस्सा जहन्नम से आज़ाद फ़रमाएगा,

इसी त़रह़ वा'दा मन्क़ूल है। चुनान्चे, कुरबानी का जानवर जितना बड़ा और इस के अजज़ा जितने ज़ियादा होंगे वोह उतना ही ज़ियादा तेरे लिये जहन्नम से बचाव का ज़रीआ़ होगा।

मदीनए त़य्यिबा की ह़ाज़िरी :

जब निगाहें मदीना शरीफ़ के दरो दीवार पर पड़ें तो इस शहर को याद करे जिसे अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ ने अपने प्यारे नबी صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के लिये मुन्तख़ब फ़रमाया और उन्हें इस की त़रफ़ हिजरत का हुक्म फ़रमाया और येही वोह जगह है जहां आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपने रब्ब عَزَّ وَجَلَّ के फ़राइज़ व सुनन को शुरूअ़ फ़रमाया, उस के दुश्मन से जिहाद किया, मरते दम तक उस के दीन को ग़ालिब किया यहां तक कि आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का विसाले ज़ाहिरी हो गया फिर इन की आख़िरी आराम गाह और इन के दो वज़ीरों की क़ब्रें वहीं बनाईं जिन्हों ने इन के बा'द ह़क़ को क़ाइम किया। जब इस शहर में चले तो सरकार صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के क़दमैने शरीफ़ैन लगने की जगहों का तसव्वुर करे कि जहां भी क़दम रख रहा हूं वहां प्यारे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के नूरानी क़दम लगे होंगे, लिहाज़ा अपने पाउं सुकून व वक़ार के साथ रख और याद कर कि इन गलियों में मुस्त़फ़ा जाने रह़मत صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم चले हैं और यहां आप के क़दम लगे हैं, चलने में आप के ख़ुशूअ़ व ख़ुज़ूअ़ का तसव्वुर क़ाइम करे और अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ ने इन के क़ल्बे मुबारक में जो अपनी मा'रिफ़त रखी, इन के ज़िक्र को अपने ज़िक्र से मिला कर बुलन्दी अ़त़ा फ़रमाई इसे भी ज़ेहन में ह़ाज़िर करे।

नीज़ येह तसव्वुर भी क़ाइम करे कि जो भी तौहीने रिसालत का मुर्तकिब हुवा उस के तमाम आ'माल ज़ाएअ़ कर दिये गए अगर्चे सिर्फ़ उन की आवाज़ से आवाज़ ऊंची हो। फिर लोगों पर अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ के उस एह़सान को याद करे जो उस ने उन पर किया कि उन्हें हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की बा बरकत सोह़बत नसीब फ़रमाई, इन के दीदार से मुशर्रफ़ फ़रमाया, इन का कलाम सुनने की सआ़दत अ़त़ा फ़रमाई और तुझे इस पर बहुत अफ़्सोस करना चाहिये कि तू मदीने के ताजदार صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की और सहा़बए किराम رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْهِمْ اَجْمَعِیْن की सोह़बत न पा सका। फिर सोच कि तू दुन्या में तो ज़ियारत से मह़रूम रहा और आख़िरत में भी ज़ियारत का यक़ीन नहीं। फिर मुमकिन है कि बरोज़े क़ियामत तू ह़सरत भरी निगाह से इन्हें देखे कि तेरे और इन के माबैन तेरे बुरे आ'माल ह़ाइल हो जाएं जैसा कि आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं कि क़ियामत के दिन अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ बा'ज़ लोगों को मेरे पास लाएगा वोह कहेंगे :

"ऐ मुह़म्मद ! ऐ मुह़म्मद !" मैं बारगाहे इलाही में अ़र्ज़ करूंगा : "ऐ रब्ब عَزَّوَجَلَّ येह मेरे अस्ह़ाब हैं।"[1] तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाएगा : "आप नहीं जानते कि इन्हों ने आप के बा'द क्या बातें पैदा कीं ?"[2] तो मैं कहूंगा उसे दूरी हो जो मेरे बा'द तब्दीली करे।[3]

अगर तू ने हुरमते शरीअ़त की पासदारी न की अगर्चे लम्ह़ा भर के लिये तू इस से बे ख़ौफ़ न रहना कि हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के बताए हुए रास्ते से रूगर्दानी तेरे और इन के दरमियान ह़िजाब बन जाए। लेकिन इस के बा वुजूद क़वी उम्मीद रख कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तेरे और इन के माबैन कोई चीज़ ह़ाइल न फ़रमाएगा कि उस ने तुझे ईमान की दौलत अ़ता फ़रमाई, तुझे वत़न से रौज़ए रसूल की ज़ियारत के लिये बुलाया कि न तो तेरी तिजारत की निय्यत थी और न ही दुन्या से कुछ लेना मक़्सूद था बल्कि मह़ज़ मुस्त़फ़ा करीम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की मह़ब्बत और शौक़ में ह़ाज़िर हुवा ताकि उन के मुबारक आषार और मज़ारे अक़्दस की ज़ियारत कर सके क्यूंकि जब तू ह़याते मुबारका में ज़ियारत के शरफ़ से मह़रूम रहा तो अब सिर्फ़ तूने इसी मक़्सद (या'नी मज़ारे अक़्दस की ज़ियारत) के लिये सफ़र किया, लिहाज़ा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की शान के लाइक़ है कि वोह तेरी त़रफ़ नज़रे रह़मत फ़रमाए।

1..... **मुफ़स्सिरे शहीर** ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْهِ رَحْمَةُ الْمَنَّان मिरआतुल मनाजीह़, जि. 7, स. 408 पर इस जुज़ के तह़त फ़रमाते हैं : मेरे दोस्त या मेरे साथ उठने बैठने वाले मेरा नाम लेने वाले हैं हुज़ूरे अन्वर (صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) का येह फ़रमान उन को ज़ियादा ज़लील करने के लिये होगा। जैसे रब्ब तआ़ला दोज़ख़ियों से फ़रमाएगा : ذُقْ ۚ اِنَّكَ اَنْتَ الْعَزِیْزُ الْكَرِیْمُ (پ۲۵،الدخان:۴۹) तो चख तू तो बड़ा इ़ज़्ज़त वाला करम वाला है, येह मत़लब नहीं कि हुज़ूरे अन्वर पहचानेंगे नहीं अभी फ़रमाने आ़ली गुज़रा "اَعْرِفُهُمْ" मैं इन्हें पहचानता हूं। नीज़ येह वाक़िआ़ हुज़ूर (صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) को आज तो मा'लूम है कल कैसे भूल जावेगा। नीज़ उन के मुंह काले, हाथ बंधे हुए, बाएं हाथ में नामए आ'माल लिये होंगे, रब्ब तआ़ला फ़रमाता है : "یُعْرَفُ الْمُجْرِمُوْنَ بِسِیْمٰهُمْ (پ۲۷،الرحمن:۴۱)"

2..... **मुफ़स्सिरे शहीर** ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْهِ رَحْمَةُ الْمَنَّان मिरआतुल मनाजीह़, जि. 7, स. 409 पर इस के तह़त फ़रमाते हैं : **फ़िरिश्तों** का या **रब्ब तआ़ला** का येह कहना कि तुम नहीं जानते, उन मुरतद्दीन पर इज़्हारे ग़ज़ब के लिये है जैसे बिला शुबा बाप बेटे को मारने लगे मां जो उस से सख़्त नालां थी मह़ब्बते मादरी में बचाना चाहे बाप कहे तू इस की हैषिय्यत को नहीं जानती इसे तो मैं ही जानता हूं इस का मक़्सद येह है कि इसे मत बचा मुझे सज़ा दे लेने दे। रब्ब तआ़ला मुनाफ़िक़ीन के मुतअ़ल्लिक़ फ़रमाता है : "لَا تَعْلَمُهُمْ ؕ نَحْنُ نَعْلَمُهُمْ (پ۱۱،التوبة:۱۰۱)" इन्हें तुम नहीं जानते हम जानते हैं। ह़ालांकि हुज़ूर (صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) मुनाफ़िक़ीन को ख़ूब जानते थे, फ़रमाता है : وَلَتَعْرِفَنَّهُمْ فِیْ لَحْنِ الْقَوْلِ ؕ (پ۲۶،محمد:۳۰) तुम इन्हें कलाम की रविश से ही पहचान लेते हो।

3......صحیح مسلم، کتاب الفضائل، باب اثبات حوض نبینا......الخ، الحدیث:۲۳۰۴، ص ۱۲۶۱، مختصراً۔

जब मस्जिदे नबवी में पहुंचे तो याद कर कि येह वोह जगह है जिसे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने अपने प्यारे नबी صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم, इब्तिदाई मुसलमानों और अफ़्ज़ल गुरौह के लिये पसन्द फ़रमाया, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के फ़राइज़ सब से पहले इसी जगह अदा किये गए, मख़्लूक़ में से ज़िन्दगी में और बा'दे विसाल भी सब से अफ़्ज़ल लोग इसी जगह जम्अ़ हैं। लिहाज़ा तुझे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से पुर उम्मीद होना चाहिये कि तुझे वहां दाख़िल कर के तुझ पर रह़्म फ़रमाएगा, लिहाज़ा खुशूअ़ व खुज़ूअ़ और ता'ज़ीम से दाख़िल हो और येह जगह इस के लाइक़ है कि हर मोमिन से दिली खुशूअ़ का मुत़ालबा किया जाए, जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सुलैमान दारानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّورانی से मन्क़ूल है कि ह़ज़रते सय्यिदुना उवैस क़रनी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَنِی ने ह़ज किया और मदीना शरीफ़ में दाख़िल हो गए। जब मस्जिदे नबवी के दरवाज़े पर पहुंचे तो उन्हें बताया गया कि येह दो आ़लम के ताजदार صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का रौज़ए मुबारका है तो आप पर ग़शी त़ारी हो गई जब इफ़ाक़ा हुवा तो फ़रमाया : "मुझे यहां से ले चलो कि मैं वहां नहीं रह पाऊंगा जहां रौज़ए रसूल है (क्यूंकि मैं यहां के आदाब का ख़याल न रख सकूंगा)।[1]

ज़ियारते रौज़ए रसूल :

ज़ियारत करने वाले को चाहिये कि बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िरी के वक़्त हमारे बयान कर्दा त़रीक़े के मुत़ाबिक़ खड़ा हो और विसाले ज़ाहिरी के बा'द भी इसी त़रह़ ज़ियारत की जाए जैसे ज़िन्दगी में की जाती थी, रौज़ए मुबारका के ज़ियादा क़रीब खड़ा न हो बल्कि इतना क़रीब खड़ा हो जितना कि ह़याते त़य्यिबा में खड़ा होता अगर ज़ाहिरी त़ौर पर दुन्या में तशरीफ़ फ़रमा होते। जिस त़रह़ ह़याते त़य्यिबा में जिस्मे अत़हर को छूना और बोसा वग़ैरा देना ख़िलाफ़े ता'ज़ीम और सूए अदब था बल्कि दूर ही से खड़े खड़े ज़ियारत कर ली जाती थी अब भी ऐसा ही करना चाहिये क्यूंकि मुक़द्दस हस्तियों के मज़ारात को छूना और बोसे देना यहूदो नसारा की आ़दत है। नीज़ रौज़ए अन्वर पर ह़ाज़िर होने वाला येह अ़क़ीदा रखे कि हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم तेरे ह़ाज़िर होने, खड़े होने और ज़ियारत करने को जानते हैं और तेरा दुरूदो सलाम उन तक पहुंचता है। हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ह़सीन सूरत को अपने सामने लह़द में मौजूद तसव्वुर करे और अपनी मा'रिफ़त के मुत़ाबिक़ दिल में आप के अ़ज़ीम मर्तबे का तसव्वुर बांधे।

1 ......تاریخ مدینہ دمشق، ذکر من اسمه اوس، الرقم: ۸۴۰، اویس بن عامر بن مالک، ج ۹، ص ۴۵۰۔

दुरूदो सलाम बारगाह तक पहुंचता है :

मरवी है कि "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के रौज़ए अन्वर पर एक फ़िरिश्ता मुक़र्रर फ़रमाया है कि उम्मत में से जब भी कोई आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم पर सलाम भेजता है तो वोह उस का सलाम बारगाहे रिसालत तक पहुंचाता है।"[1]

येह फ़ज़ीलत तो उस के ह़क़ में है जो क़ब्रे अन्वर पर ह़ाज़िर न हो सका तो वोह शख़्स जिस ने वत़न से जुदाई इख़्तियार की, मुलाक़ात के शौक़ में जंगलों का सफ़र त़ै किया और हु़ज़ूर की ह़याते मुबारका में ज़ियारत से मुशर्रफ़ न हो सका इस लिये रौज़ए मुक़द्दसा की ज़ियारत के लिये ह़ाज़िर हुवा, उसे कैसी फ़ज़ीलत ह़ासिल होगी।

एक के बदले दस :

हु़ज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जिस ने मुझ पर एक मरतबा दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस पर **10** रह़मतें नाज़िल फ़रमाता है।"[2] जब ज़बान से दुरूदे पाक भेजने की येह जज़ा है तो अपने बदन के साथ बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िरी का क्या मक़ाम होगा।

फिर मिम्बरे रसूल के पास ह़ाज़िर हो और तसव्वुर करे कि आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم मिम्बरे अक़्दस पर जल्वा अफ़रोज़ हैं और दिल में रोशन चेहरे का तसव्वुर लाए कि मिम्बर पर तशरीफ़ फ़रमा हैं, मुहाजिरीन व अन्सार आप के गिर्द ह़लक़ा बनाए बैठे हैं और आप उन्हें अपने ख़ुत़बे के साथ इत़ाअ़ते इलाही पर उभार रहे हैं। फिर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से सुवाल कर कि वोह क़ियामत में तेरे और आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के दरमियान जुदाई न डाले।

इख़्तितामी कलिमात :

येह आ'माले ह़ज के बात़िनी आदाब हैं। जब इन तमाम उमूर से फ़ारिग़ हो जाए तो उस का दिल लाज़िमी त़ौर पर ग़म व हु़ज़्न और ख़ौफ़ में मुब्तला रहे, क्यूंकि वोह नहीं जानता कि उस का ह़ज क़बूल कर के उसे पसन्दीदा बन्दों के गुरोह में रखा गया है या रद्द कर के धुतकारे हुवों में शामिल कर दिया गया। वोह अपने दिल और आ'माल की कैफ़िय्यत से इस चीज़ को समझे,

---

1 ......مجمع الزوائد، الحديث: ۱۷۲۹۱، ج۱۰، ص ۲۵۱۔

2 ......صحيح مسلم، كتاب الصلاة، باب الصلاة على النبی صلی اللّٰه عليه وسلم، الحديث:۴۰۸، ص ۲۱۶۔

अगर उस के दिल की, दुन्या से बे रग़बती बढ़ गई और वोह आख़िरत की त़रफ़ फिर गया और उस ने अपने आ'माल को शरीअ़त के तराज़ू के मुत़ाबिक़ पाया तो क़बूलिय्यते ह़ज का यक़ीन रखे क्यूंकि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसी से क़बूल फ़रमाता है जिस से मह़ब्बत करता है और जिस से मह़ब्बत करता है उसे अपना वली (दोस्त) बना लेता, उस पर अपनी मह़ब्बत के आषार ग़ालिब फ़रमा देता है और उस से अपने दुश्मन इब्लीसे मलऊ़न का ग़लबा हटा देता है, लिहाज़ा जब उस पर येह चीज़ ग़ालिब हो तो येह क़बूलिय्यत पर दलील है लेकिन अगर मुआ़मला इस के बर अ़क्स हो तो क़रीब है कि उसे अपने सफ़र से कुलफ़त व थकावट के सिवा कुछ ह़ासिल न हो । हम इस से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की पनाह त़लब करते हैं ।

....दो दिन और दो रातें....

__दा'वते इस्लामी__ के इशाअ़ती इदारे __मक्तबतुल मदीना__ की मत़्बूआ़ 84 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "__दुन्या से बे रग़बती और उम्मीदों की कमी__" सफ़ह़ा 76 पर है : ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ इरशाद फ़रमाते हैं : "क्या मैं तुम्हें उन दो दिनों और दो रातों के बारे में न बताऊं जिन की मिष्ल मख़्लूक़ ने नहीं सुनी : (1) एक दिन वोह है जब __अल्लाह__ عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से आने वाला तेरे पास रिज़ाए इलाही का मुज़्दा ले कर आएगा या उस की नाराज़ी का पैग़ाम और (2) दूसरा दिन वोह जब तू अपना नामए आ'माल लेने के लिये बारगाहे इलाही में ह़ाज़िर होगा और वोह नामए आ'माल तेरे दाएं हाथ में दिया जाएगा या बाएं में । (और दो रातों में से) (1) एक रात वोह है जो मय्यित अपनी क़ब्र में गुज़ारेगी और इस से पहले इस ने ऐसी रात कभी नहीं गुज़ारी होगी । और (2) दूसरी रात वोह है जिस की सुब्ह़ को क़ियामत का दिन होगा और फिर इस के बा'द कोई रात नहीं आएगी ।"

तिलावते कुरआन का बयान

सब ख़ूबियां अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं जिस ने अपने प्यारे मह़बूब صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم और कुरआने मजीद के ज़रीए़ बन्दों पर एह़सान फ़रमाया, कुरआने पाक की शान बयान करते हुए अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है : "لَا یَاْتِیْهِ الْبَاطِلُ مِنْۢ بَیْنِ یَدَیْهِ وَ لَا مِنْ خَلْفِهٖ ؕ تَنْزِیْلٌ مِّنْ حَكِیْمٍ حَمِیْدٍ۝۴۲"(1) यहां तक कि ग़ौरो फ़िक्र करने वालों पर उस के क़िस्सों और ख़बरों से इ़ब्रत पाने का रास्ता कुशादा और सीधा रास्ता वाज़ेह़ हो गया जिस में अह़काम की तफ़्सील और ह़लाल व ह़राम की तफ़रीक़ है, येह रोशनी और नूर है, इस के ज़रीए़ ग़ुरूर से नजात मिलती है, इस में सीने की बीमारियों से शिफ़ा है, ज़ालिमों में से जिस ने इस की मुख़ालफ़त की अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उस की कमर तोड़ दी, जिस ने इस के इ़लावा किसी और किताब में इ़ल्म तलाश किया उसे गुमराह कर दिया, येह मज़बूत़ रस्सी, वाज़ेह़ नूर और पुख़्ता गिरह और मुकम्मल त़ौर पर मह़फ़ूज़ पनाह गाह है, येह क़लील व कसीर और छोटे बड़े को घेरे हुए है, इस के अ़जाइब व ग़राइब ख़त्म नहीं होते, अहले इ़ल्म के नज़दीक कोई चीज़ इस के फ़वाइद का इह़ात़ा नहीं कर सकती, तिलावत करने वालों के नज़दीक बार बार तिलावत करने से भी येह पुरानी नहीं होती, येह वोह किताब है जिस ने अव्वलीन व आख़िरीन की रहनुमाई फ़रमाई, जब जिन्नों ने इसे सुना तो फ़ौरन अपनी क़ौम की त़रफ़ पलटे और उन्हें डराते हुए कहा :

"فَقَالُوْۤا اِنَّا سَمِعْنَا قُرْاٰنًا عَجَبًا۝۱ یَّهْدِیْۤ اِلَى الرُّشْدِ فَاٰمَنَّا بِهٖ ؕ وَ لَنْ نُّشْرِكَ بِرَبِّنَاۤ اَحَدًا۝۲"(2)

इस पर ईमान लाने वाला तौफ़ीक़ याफ़्ता हो गया, इस का क़ाइल ही इस की तस्दीक़ करने वाला है, इसे मज़बूती से थामने वाला हिदायत याफ़्ता हो गया, इस पर अ़मल करने वाला फ़लाह़ पा गया। इरशादे बारी तआ़ला है : "اِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا الذِّكْرَ وَ اِنَّا لَهٗ لَحٰفِظُوْنَ۝۹"(3) कुलूब व मसाहि़फ़ में कुरआन के मह़फ़ूज़ रहने का सबब इस की पाबन्दी से तिलावत करना और ज़ाहिरी आदाब का लिह़ाज़ रखना है। नीज़ कुरआने पाक के आदाब व शराइत़ को मलह़ूज़े ख़ात़िर रखना, इस

---

*1..... **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** बात़िल को उस की त़रफ़ राह नहीं न उस के आगे न उस के पीछे से, उतारा हुवा है ह़िक्मत वाले सब ख़ूबियों सराहे का। (پ ۲۴،حٰمٓ السجدۃ:۴۲)*

*2.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** तो बोले हम ने एक अ़जीब कुरआन सुना कि भलाई की राह बताता है तो हम इस पर ईमान लाए और हम हरगिज़ किसी को अपने रब्ब का शरीक न करेंगे। (پ ۲۹،الجن:۱،۲)*

*3....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** बेशक हम ने उतारा है येह कुरआन और बेशक हम ख़ुद इस के निगहबान हैं। (پ ۱۴،الحجر:۹)*

में बयान कर्दा बाति़नी आ'माल और ज़ाहिरी आदाब की पाबन्दी करना भी इस के मह़फ़ूज़ रहने का सबब है, इस लिये इन उमूर का बयान और इन की तफ़्सील ज़रूरी है और इस के मक़ासिद चार अब्वाब में बयान किये जाएंगे :

﴾1﴿......कुरआन और क़ारिये कुरआन की फ़ज़ीलत का बयान।

﴾2﴿.....तिलावत के ज़ाहिरी आदाब का बयान।

﴾3﴿.....तिलावत के बाति़नी आदाब का बयान।

﴾4﴿.....कुरआने पाक समझने और इस की तफ़्सीर बिर्राए वग़ैरा का बयान।

﴾...... "बिस्मिल्लाह" शरीफ़ की बरकात व फ़वाइद....﴿

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे ***मक्तबतुल मदीना*** की मत़बूआ़ **1548** सफ़्ह़ात पर मुश्तमिल किताब "***फ़ैज़ाने सुन्नत***" सफ़्ह़ा **134** ता **135** पर शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना ***अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी*** रज़वी دامت برکاتہم العالیہ नक़्ल फ़रमाते हैं :

*﴾1﴿ जो कोई सोते वक़्त بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ **21** बार (अव्वल आख़िर एक बार दुरूद शरीफ़) पढ़ ले اِنۡ شَآءَ اللّٰہ عزوجل उस रात शैत़ान, चोरी, अचानक मौत और हर त़रह़ की आफ़त व बला से मह़फ़ूज़ रहे। ﴾2﴿ जो किसी ज़ालिम के सामने بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ **50** बार (अव्वल आख़िर एक बार दुरूद शरीफ़) पढ़े उस ज़ालिम के दिल में पढ़ने वाले की हैबत पैदा हो और उस के शर से बचा रहे। ﴾3﴿ जो शख़्स तुलूए़ आफ़्ताब के वक़्त सूरज की त़रफ़ रुख़ कर के بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ **300** बार और (कोई भी) दुरूद शरीफ़ **300** बार पढ़े **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस को ऐसी जगह से रिज़्क़ अ़त़ा फ़रमाएगा जहां उस का गुमान भी न होगा और (रोज़ाना पढ़ने से) اِنۡ شَآءَ اللّٰہ عزوجل एक साल के अन्दर अन्दर अमीरो कबीर हो जाएगा। ﴾4﴿ कुन्द ज़ेह्न अगर بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ **786** बार (अव्वल आख़िर एक बार दुरूद शरीफ़) पढ़ कर पानी पर दम कर के पी ले तो اِنۡ شَآءَ اللّٰہ عزوجل उस का ह़ाफ़िज़ा मज़बूत़ हो जाए और जो बात सुने याद रहे।* (شمس المعارف مترجم، ص۷۳)

बाब नम्बर 1 : कु़रआन और कारिये कु़रआन की फ़ज़ीलत

फ़ज़ाइले तिलावत के मुतअ़ल्लिक़ 11 फ़रामीने मुस्त़फ़ा :

﴾1﴿.....“जिस ने कुरआन पढ़ा फिर येह ख़याल किया कि किसी को इस से अफ़्ज़ल अ़त़ा किया गया तो तह़क़ीक़ उस ने उस चीज़ को छोटा जाना जिसे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने अ़ज़मत दी।”(1)

﴾2﴿.....“बरोज़े क़ियामत कोई शफ़ाअ़त करने वाला कुरआने पाक से ज़ियादा मर्तबा वाला न होगा न कोई नबी, न कोई फ़िरिश्ता और न ही कोई और।”(2)

﴾3﴿.....“अगर कुरआने पाक चमड़े में हो तो इसे आग न छूएगी।”(3) (4)

﴾4﴿.....“اَفْضَلُ عِبَادَةِ اُمَّتِیْ تِلَاوَةُ الْقُرْاٰنِ या'नी मेरी उम्मत की अफ़्ज़ल इबादत तिलावते कुरआन है।”(5)

﴾5﴿.....“अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मख़्लूक़ पैदा करने से हज़ार साल पहले सूरए त़ाहा और यासीन की तिलावत फ़रमाई, जब फ़िरिश्तों ने कुरआन सुना तो बोले : ख़ैर व ख़ूबी है उस उम्मत को जिस पर येह उतरेगी और ख़ूबी है उन सीनों को जो इसे उठाएंगे और ख़ूबी है उन ज़बानों को जो इसे पढ़ेंगी।”(6)

1.....الزهد لابن المبارک، باب ماجاء فی ذنب التنعم فی الدنیا، الحدیث:۷۹۹، ص۲۷۵_۲۷۶، مفهومًا_

2.....بستان الواعظین، مجلس فی ذکر المیزان والصراط، ص۲۷_

3.....مُحْيِ السُّنَّـه हज़रते सय्यिदुना इमाम अबू मुह़म्मद हुसैन बिन मुह़म्मद बग़वी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی इस ह़दीषे पाक की शर्ह़ में फ़रमाते हैं : “اِهَابٍ (चमड़े)” से बन्दे का दिल मुराद है और ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अ़ब्दुल्लाह बूशन्जी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَلِی के ह़वाले से नक़्ल फ़रमाते हैं कि “इस का मा'ना येह है कि कुरआने पाक ह़िफ़्ज़ करने और इस की तिलावत करने वाले को बरोज़े क़ियामत जहन्नम की आग न छूएगी।” अगर इसे ज़ाहिरी मा'ना पर मह़मूल किया जाए तो फिर येह ज़मानए रिसालत के साथ ख़ास था।
(شرح السنة للبغوی، کتاب فضائل القرآن، باب فی فضل تلاوة القرآن، تحت الحدیث:۱۱۷۵، ج۳، ص۸)

4.....شعب الایمان للبیهقی، باب فی تعظیم القرآن، فصل فی تنویرموضع القرآن، الحدیث:۲۷۰۰، ج۲، ص۵۵۵، مفهومًا_

5.....شعب الایمان للبیهقی، باب فی تعظیم القرآن، فصل فی ارمان تلاوته، الحدیث:۲۰۲۲، ج۲، ص۳۵۴، دون اللفظ"تلاوة"_

6.....المجالسة وجواهرالعلم، الجزء الاول، الحدیث:۱۴، ج۱، ص۲۱_

﴾6﴿.....“خَيْرُكُمْ مَنْ تَعَلَّمَ الْقُرْاٰنَ وَعَلَّمَهٗ या'नी तुम में से बेहतर वोह है जो कुरआन सीखे और सिखाए ।”(1) (2)

﴾7﴿.....ह़दीषे कुदसी, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है : “जिसे तिलावते कुरआन मुझ से मांगने और सुवाल करने से मश्ग़ूल (रोक) रखे मैं उसे शुक्र गुज़ारों के षवाब से अफ़्ज़ल अ़ता फ़रमाऊंगा ।”(3)

﴾8﴿.....“तीन क़िस्म के लोग बरोज़े क़ियामत सियाह कस्तूरी के टीलों पर होंगे इन्हें किसी क़िस्म की घबराहट न होगी, न इन से ह़िसाब लिया जाएगा यहां तक कि लोग ह़िसाब से फ़ारिग़ हों । (इन में से एक :) वोह शख़्स है जिस ने रिज़ाए इलाही के लिये कुरआने पाक की तिलावत की और लोगों की इमामत की जब कि वोह उस से खुश हों ।”(4)

﴾9﴿.....“अहले कुरआन **अल्लाह** वाले और उस के ख़ास लोग हैं ।”(5) (6)

---

(1).....मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْمَنَّان मिरआतुल मनाजीह़, जि. 3 स. 217 पर इस के तह़्त फ़रमाते हैं : कुरआन सीखने सिखाने में बहुत वुस्अ़त है, बच्चों को कुरआन के हिज्जे रोज़ाना सिखाना, क़ारियों का तजवीद सीखना सिखाना, उ़-लमा का कुरआनी अह़काम ब ज़रीअ़ए ह़दीष व फ़िक़्ह सीखना सिखाना, सूफ़ियाए किराम का असरारे रुमूज़े कुरआन ब सिलसिलए त़रीक़त सीखना सिखाना सब कुरआन ही की ता'लीम है सिर्फ़ अल्फ़ाज़े कुरआन की ता'लीम मुराद नहीं, लिहाज़ा येह ह़दीष फ़ुक़हा के इस फ़रमान के ख़िलाफ़ नहीं, कि फ़िक़्ह सीखना तिलावते कुरआन से अफ़्ज़ल है क्यूंकि फ़िक़्ह अह़कामे कुरआन है और तिलावत में अल्फ़ाज़े कुरआन चूंकि कलामुल्लाह तमाम कलामों से अफ़्ज़ल है लिहाज़ा इस की ता'लीम तमाम कामों से बेहतर और असरारे कुरआन अल्फ़ाज़े कुरआन से अफ़्ज़ल हैं कि अल्फ़ाज़े कुरआन का नुज़ूल हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के कान मुबारक पर हुवा और असरार व अह़काम का नुज़ूल हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के दिल पर हुवा, तिलावत से इल्मे फ़िक़्ह अफ़्ज़ल, रब्ब तआ़ला फ़रमाता है : نَزَّلَهٗ عَلٰى قَلْبِكَ (پ۱،البقرۃ:۹۷) अ़मल बिल कुरआन इल्मे कुरआन के बा'द है, लिहाज़ा आ़लिम आ़मिल से अफ़्ज़ल है आदम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام आ़लिम थे फ़िरिश्ते आ़मिल मगर ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام अफ़्ज़ल (मस्जूद) रहे ।

(2).....صحیح البخاری، کتاب فضائل القرآن، باب خیرکم من تعلم القرآن وعلمه، الحدیث:۵۰۲۷، ج۳، ص۴۱۰۔

(3).....کنزالعمال، کتاب الاذکار، الباب السابع فی تلاوة القرآن وفضائله، الحدیث:۲۴۳۷، ج۱، ص۲۷۳۔

(4).....شعب الایمان للبیهقی، باب فی تعظیم القرآن، فصل فی ارمان تلاوته، الحدیث:۲۰۰۲، ج۲، ص۳۴۸، بتغیرٍ۔

(5).....**अहले कुरआन से मुराद :** इस की ह़िफ़ाज़त करने वाले, पाबन्दी से इस की तिलावत करने वाले और इस के अह़कामात पर अ़मल करने वाले हैं (اتحاف السادة المتقین،کتاب آداب تلاوت،ج۵،ص۱۳)

(6).....سنن ابن ماجة، المقدمة، باب فی فضل من تعلم القرآن وعلمه، الحدیث:۲۱۵، ج۱، ص۱۴۰۔

﴾10﴿.....दिलों को भी ज़ंग लग जाता है जिस त़रह़ लोहे को ज़ंग लग जाता है। अ़र्ज़ की गई : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم इस की जिला (सफ़ाई) किस चीज़ से होगी ?" इरशाद फ़रमाया : तिलावते कुरआन और मौत की याद से।"(1)

﴾11﴿....."गाने वाली लौंडी का मालिक जितनी तवज्जोह से इसे सुनता है अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इस से ज़ियादा तवज्जोह कुरआन पढ़ने वाले की त़रफ़ फ़रमाता है।"(2)

17 अक़्वाले बुज़ुर्गाने दीन :

﴾1﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उमामा बाहिली رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं : "कुरआन पढ़ा करो, येह लटके हुए कुरआन तुम्हें मुग़ालते़ में न डालें बेशक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस दिल को अ़ज़ाब न देगा जो कुरआने पाक के लिये बरतन है।"(3)

﴾2﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं : "जब तुम हुसूले इ़ल्म का इरादा करो तो कुरआने पाक में ग़ौरो फ़िक्र करो क्यूंकि इस में अव्वलीन व आख़िरीन का इ़ल्म है।"(4)

﴾3﴿.....इन्ही से मन्क़ूल है, फ़रमाते हैं : "कुरआन पढ़ो बेशक तुम्हें इस के हर ह़र्फ़ के बदले 10 नेकियां दी जाएंगी मैं येह नहीं कहता कि الٓمّٓ एक ह़र्फ़ है बल्कि "ا" एक ह़र्फ़, "ل" एक ह़र्फ़ और "م" एक ह़र्फ़ है।"

﴾4﴿.....मज़ीद फ़रमाते हैं : "तुम में से कोई शख़्स अपने आप से कुरआन के मुतअ़ल्लिक़ ही पूछे अगर वोह कुरआन से मह़ब्बत करता और उसे पसन्द करता है तो वोह अल्लाह और उस के रसूल से मह़ब्बत करता है और अगर कुरआन से मह़ब्बत नहीं करता तो वोह अल्लाह और उस के रसूल से मह़ब्बत नहीं करता।"

﴾5﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं : "कुरआने पाक की हर आयते मुबारका जन्नत का एक दर्जा और तुम्हारे घरों का चराग़ है।"

﴾6﴿.....मज़ीद फ़रमाते हैं : "जिस ने कुरआन पढ़ा उस ने नबुव्वत को अपने दोनों पहलूओं के दरमियान जम्अ़ कर लिया मगर येह कि उस की त़रफ़ वह़्य नहीं की जाती।"

---

1 ......شعب الایمان للبیہقی، باب فی تعظیم القرآن، فصل فی ارمان تلاوتہ، الحدیث:۲۰۱۴، ج۲، ص۳۵۳۔

2 ......سنن ابن ماجہ، کتاب اقامۃ الصلاۃ و السنۃ فیھا، باب فی حسن الصوت بالقرآن، الحدیث:۱۳۴۰، ج۲، ص۱۳۱، بتغیرٍ۔

3 ......المصنف لابن ابی شیبۃ، کتاب فضائل القرآن، فی الوصیۃ بالقرآن......الخ، الحدیث:۳، ج۷، ص۱۲۷۔

4 ......تذکرۃ الحفاظ للذہبی، الطبقۃ الاولی، ابن مسعود الامام الربانی رضی اللّٰہ عنہ......الخ، ج۱، ص۱۷۔

﴾7﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : "जिस घर में कु़रआन पढ़ा जाता है वोह अपने रहने वालों पर कुशादा होता है, उस की भलाई कषीर होती है, उस में फ़िरिश्ते ह़ाज़िर होते और शयात़ीन उस से निकल जाते हैं और जिस घर में कु़रआन नहीं पढ़ा जाता वोह अपने रहने वालों पर तंग हो जाता है, उस की भलाई कम हो जाती है, उस से फ़िरिश्ते निकल जाते और शयात़ीन आ जाते हैं ।"

﴾8﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अह़मद बिन ह़म्बल عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْاَوَّل फ़रमाते हैं : मैं ख़्वाब में दीदारे इलाही से मुशर्रफ़ हुवा, मैं ने अ़र्ज़ की : "ऐ रब्ब عَزَّوَجَلَّ तेरे नज़्दीक कौन सा अ़मल अफ़्ज़ल है जिस के ज़रीए़ मुक़र्रबीन तेरा कु़र्ब ह़ासिल करते हैं ?" इरशाद फ़रमाया : "ऐ अह़मद ! वोह मेरा पाक कलाम (कु़रआने पाक) है।" मैं ने अ़र्ज़ की : "ऐ रब्ब عَزَّوَجَلَّ इसे समझ कर पढ़े या बिग़ैर समझे पढ़े ?" इरशाद फ़रमाया : "समझ कर पढ़े या बिग़ैर समझे ।"

﴾9﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन का'ब कु़र्ज़ी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : "क़ियामत के दिन जब लोग **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से कु़रआन सुनेंगे तो उन्हें ऐसा लगेगा गोया कभी उन्हों ने कु़रआन सुना ही नहीं ।"

﴾10﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ुज़ैल बिन इयाज़ عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَھَّاب फ़रमाते हैं : "कु़रआन याद करने वाले और इस पर अ़मल करने वाले को चाहिये कि वोह किसी का मोह़ताज न हो, न उसे ख़ुलफ़ा से कोई सरोकार हो और न ही इन के इ़लावा किसी और से बल्कि लोगों को उस का मोह़ताज होना चाहिये ।"

﴾11﴿.....मजी़द फ़रमाते हैं : "ह़ाफ़िज़े कु़रआन इस्लाम का झन्डा उठाने वाला है, उसे चाहिये कि वोह ह़क़्क़े कु़रआन की ता'ज़ीम करते हुए लह्वो लअ़ब, भूलने वालों और लग्व काम करने वालों का साथ न दे ।"

﴾12﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान षौरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : "जब बन्दा कु़रआन पढ़ता है तो फ़िरिश्ता उस की दोनों आंखों के दरमियान बोसा देता है ।"

﴾13﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन मैमून رَحْمَۃُاللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : "जिस ने नमाज़े फ़ज्र के बा'द कु़रआने पाक खोला और उस की **100** आयात तिलावत कीं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे तमाम अहले दुन्या के अ़मल की मिष्ल बुलन्दी अ़त़ा फ़रमाएगा ।"

मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन उ़क़्बा رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर हुए और अ़र्ज़ की : "कु़रआने पाक में से कुछ तिलावत कीजिये ।" आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने येह आयते मुबारका तिलावत फ़रमाई :

إِنَّ اللّٰهَ يَأْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْإِحْسَانِ وَإِيتَآئِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ ۚ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ ﴿۹۰﴾

(پ۱۴، النحل:۹۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *बेशक* ***अल्लाह*** *हुक्म फ़रमाता है इन्साफ़ और नेकी और रिश्तेदारों के देने का और मन्अ़ फ़रमाता है बे ह़याई और बुरी बात और सरकशी से तुम्हें नसीह़त फ़रमाता है कि तुम ध्यान करो ।*

उस ने अ़र्ज़ की : "फिर पढ़िये ।" आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने दोबारा पढ़ी तो कहने लगा : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! इस में मिठास है, इस पर ख़ूब सूरती है, इस का निचला ह़िस्सा पत्तों वाला, ऊपरी फलदार है और येह किसी इन्सान का कलाम नहीं ।(1)

﴾14﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ह़सन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! क़ुरआन से बढ़ कर कोई दौलत नहीं और इस के बा'द कोई फ़ाक़ा नहीं ।"

﴾15﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ुज़ैल बिन इयाज़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَهَّاب फ़रमाते हैं : "जिस ने सुब्ह़ के वक़्त सूरए ह़श्र की आख़िरी आयात पढ़ीं फिर उसी दिन मर गया तो उस पर शुहदा की मोहर लगा दी जाएगी । जिस ने शाम के वक़्त पढ़ी फिर उसी रात मर गया तो उस के लिये भी शुहदा की मोहर लगा दी जाएगी ।"

﴾16﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना क़ासिम बिन अ़ब्दुर्रह़मान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : "मैं ने एक आ़बिद से पूछा : "क्या यहां कोई ऐसा नहीं जिस से तुम्हें उन्स हो ?" तो उन्हों ने क़ुरआने पाक की त़रफ़ हाथ बढ़ाया और उसे अपनी गोद में रख कर फ़रमाया : "मुझे इस से उन्स है ।"

﴾17﴿.....अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم फ़रमाते हैं : "तीन चीज़ें क़ुव्वते ह़ाफ़िज़ा में इज़ाफ़ा करती और बलग़म को ख़त्म करती हैं : (1) मिस्वाक करना (2) रोज़े रखना (3) क़ुरआने पाक की तिलावत करना ।"

ग़फ़्लत से तिलावत करने वालों की मज़म्मत :

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं : "कितने ही क़ुरआन पढ़ने वाले ऐसे हैं कि क़ुरआन उन पर ला'नत करता है ।"

ह़ज़रते सय्यिदुना मैसरा رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : "फ़ासिक़ व फ़ाजिर शख़्स के पेट में क़ुरआन अजनबी है ।"

---

(1)......دلائل النبوة للبیهقی، باب اعتراف مشرکی قریش، بما فی کتاب اللّٰه......الخ، ج۲، ص۱۹۹۔

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सुलैमान दारानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّورانی फ़रमाते हैं : "जब हुफ़्फ़ाज़, कुरआन पढ़ने के बा'द अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की नाफ़रमानी करें तो ऐसे हुफ़्फ़ाज़ को फ़िरिश्ते बुतों के पुजारियों से पहले पकड़ेंगे।"

बा'ज़ उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام फ़रमाते हैं : "जब इब्ने आदम दौराने तिलावत लग्व बातों में मश्ग़ूल हो कर फिर पढ़ने लगता है तो उसे कहा जाता है कि तुझे हमारे कलाम से क्या वासित़ा ?"

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने रमाह़ رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : "कुरआन ह़िफ़्ज़ कर के मुझे बड़ी नदामत हुई क्यूंकि मुझे येह बात पहुंची है कि बरोज़े क़ियामत ह़ामिलीने कुरआन से वोही सुवाल होगा जो अम्बिया से होगा।"

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : "ह़ाफ़िज़े कुरआन को इन सिफ़ात से पहचानना चाहिये : रात से जब लोग सो रहे हों, दिन से जब लोग कोताही कर रहे हों, ग़म से जब लोग खुश हों, रोने से जब लोग हंस रहे हों, ख़ामोशी से जब लोग बातें कर रहे हों, आ़जिज़ी व इन्किसारी से जब लोग तकब्बुर करते हों। नीज़ ह़ाफ़िज़े कुरआन को चाहिये कि वोह ख़ामोशी का पैकर और नर्म मिज़ाज हो, बद अख़्लाक़, झगड़ालू, चीख़ो पुकार, शोरो गुल करने वाला और गुसीला न हो।" ह़दीषे मुबारका में है कि "इस उम्मत के अकषर कुर्रा मुनाफ़िक़ होंगे।"(1)

एक रिवायत में है कि "कुरआन पढ़ो येह तुम्हें नाफ़रमानी से रोकेगा, अगर तिलावते कुरआन तुम्हें नाफ़रमानी से न रोके तो तुम ने कुरआन पढ़ा ही नहीं।"(2)

एक रिवायत में है कि "जिस ने कुरआन के ह़राम को ह़लाल जाना उस का कुरआन पर ईमान नहीं।"(3)

एक बुजु़र्ग رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ से मन्क़ूल है कि "बा'ज़ अवक़ात बन्दा एक सूरत शुरूअ़ करता है तो उसे पूरी पढ़ लेने तक फ़िरिश्ते उस के लिये दुआ़ए रह़मत करते हैं और कभी बन्दा एक सूरत शुरूअ़ करता है तो उसे पूरी पढ़ लेने तक फ़िरिश्ते उस पर ला'नत भेजते हैं।" अ़र्ज़ की गई : "येह कैसे ?" फ़रमाया : "जब वोह उस के ह़लाल को ह़लाल और ह़राम को ह़राम जानता है तो फ़िरिश्ते उस के लिये दुआ़ए रह़मत करते हैं वरना ला'नत भेजते हैं।"

---

(1) ......المسند للامام احمد بن حنبل، مسند عبداللّٰہ بن عمرو بن العاص، الحدیث:۶۶۳۴_۶۶۳۵، ج۲، ص۵۸۷۔

(2) ......مجمع الزوائد، کتاب العلم، باب فیمن لم ینتفع بعلمہ، الحدیث:۸۷۰، ج۱، ص۴۴۰۔

(3) ......سنن الترمذی، کتاب فضائل القرآن، الحدیث:۲۹۲۷، ج۴، ص۴۲۱۔

बा'ज़ उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام फ़रमाते हैं : "बन्दा कुरआन पढ़ता है और खुद पर ला'नत करता है और उसे मा'लूम भी नहीं होता। वोह पढ़ता है :"

اَلَا لَعۡنَةُ اللّٰهِ عَلَى الظّٰلِمِيۡنَ ﴿۱۸﴾ (پ۱۲، ھود:۱۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *अरे ज़ालिमों पर खुदा की ला'नत।*

ह़ालां कि वोह खुद पर (या किसी और पर) ज़ुल्म करने वाला होता है और पढ़ता है :

لَعۡنَتَ اللّٰهِ عَلَى الۡكٰذِبِيۡنَ ﴿۶۱﴾ (پ۳، اٰل عمران:۶۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *झूटों पर **अल्लाह** की ला'नत।*

ह़ालांकि वोह झूटों में से होता है।"

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ह़सन बसरी عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡقَوِی ने कुर्रा से मुख़ात़िब हो कर फ़रमाया : "तुम ने क़िराअते कुरआन को मन्ज़िलें और रात को ऊंट मुक़र्रर कर लिया है जिस पर सुवार हो कर अपनी मन्ज़िलें त़ै करते हो जब कि तुम से पहले के लोग रब्ब عَزَّوَجَلَّ के पैग़ाम ब सूरते रसाइल देखते तो रात को इन में ग़ौरो फ़िक्र करते और दिन में इन्हें खुद पर नाफ़िज़ करते।"

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنۡهُ फ़रमाते हैं : "कुरआन लोगों पर इस लिये नाज़िल किया गया है ताकि इस के मुत़ाबिक़ अ़मल करें लेकिन लोगों ने इस के पढ़ने पढ़ाने को अ़मल ठहरा लिया है बेशक तुम में से कोई शख़्स सूरए फ़ातिह़ा से आख़िर तक कुरआन पढ़ लेता है उस में से कोई ह़र्फ़ भी नहीं छोड़ता लेकिन इस पर अ़मल छोड़ देता है।"

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर और ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़र ग़िफ़ारी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنۡهُم से मरवी रिवायत में है कि "हम ने एक ज़माना गुज़ारा है कि हम में से हर एक को ईमान कुरआन से पहले दिया गया, हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم पर जब कोई सूरत नाज़िल होती तो वोह उस के ह़लाल व ह़राम, अवामिर व नवाही को सीख लेता और जहां तवक़्क़ुफ़ करना मुनासिब होता वहां तवक़्क़ुफ़ करता, फिर हम ने ऐसे लोगों को भी देखा कि जिन में से किसी को ईमान से पहले कुरआन दिया गया वोह सूरए फ़ातिह़ा से आख़िर तक पूरा कुरआने पाक पढ़ लेता लेकिन इस के अवामिर व नवाही को नहीं जानता और न येह जानता कि कहां तवक़्क़ुफ़ करना मुनासिब है। वोह इसे रद्दी खजूरों की त़रह़ बिखेरता चला जाता है।"(1)

---

1 ......السنن الكبرى للبيهقى، كتاب الصلاة، باب البيان انه انما قيل يومهم اقرؤهم، الحديث:٥٢٩٠، ج٣، ص ١٧١۔

क्या तेरे नज़्दीक मेरा कोई मर्तबा ही नहीं ?

तौरात शरीफ़ में है कि (अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :) ऐ बन्दे ! क्या तुझे मुझ से ह़या नहीं आती ? कि तू रास्ते में चल रहा होता है, तेरे पास तेरे किसी भाई का ख़त़ आता है तो तू रास्ते से हट जाता और बैठ कर उस के एक एक ह़र्फ़ को ग़ौर से पढ़ता है यहां तक कि उस का कोई लफ़्ज़ नहीं छोड़ता जब कि येह क़ुरआन मेरी किताब है, मैं ने तेरी त़रफ़ नाज़िल की, देख ! इस में तेरे लिये कितनी तफ़्सील है, मैं ने कितनी बार तुझे समझाया ताकि तू इस के त़ूल व अ़र्ज़ में ग़ौरो ख़ौज़ करे फिर भी तू इस से ए'राज़ करता है। क्या मेरा मर्तबा तेरे नज़्दीक तेरे भाइयों से भी कम है ? ऐ मेरे बन्दे ! तेरे पास तेरा कोई भाई बैठता है तो तू उस की त़रफ़ मुकम्मल त़ौर पर मुतवज्जेह होता है और अपने दिल को मुकम्मल त़ौर पर उस की बातों की त़रफ़ मुतवज्जेह करता है अगर इस दौरान कोई शख़्स बात करे या कोई उस की बातों में ख़लल डाले तो तू उसे इशारे से ख़ामोश कर देता है, अब जब कि मैं तेरी त़रफ़ मुतवज्जेह और तुझ से कलाम कर रहा हूं तो तेरी ह़ालत येह है कि तेरा दिल मुझ से ए'राज़ करने वाला है क्या तू ने मुझे अपने भाइयों से भी कम मर्तबा समझ लिया है ?

.....अच्छी आ़दतों की नसीह़त.....

दा'वते इस्लामी *के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 43 सफ़्ह़ात पर मुश्तमिल किताब "**इमामे आ'ज़म** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَكْرَم **की वसिय्यतें**" सफ़्ह़ा 27 पर ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म* عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَكْرَم *ने अपने एक शागिर्द को यूं नसीह़त फ़रमाई : "तुम हर शख़्स को उस के मर्तबे के लिह़ाज़ से इ़ज़्ज़त देना, शुरफ़ा की इ़ज़्ज़त और अहले इ़ल्म की ता'ज़ीम व तौक़ीर करना, बड़ों का अदब व एह़तिराम और छोटों से प्यार व मह़ब्बत करना, आ़म लोगों से तअ़ल्लुक़ क़ाइम करना, फ़ासिक़ व फ़ाजिर को ज़लील व रुस्वा न करना, अच्छे लोगों की सोह़बत इख़्तियार करना, सुल्त़ान की इहानत करने से बचना, किसी को भी ह़क़ीर न समझना, अपने अख़्लाक़ व आ़दात में कोताही न करना, किसी पर अपना राज़ ज़ाहिर न करना, बिग़ैर आज़्माए किसी की सोह़बत पर भरोसा न करना, किसी ज़लील व घटया शख़्स की ता'रीफ़ न करना।"*

बाब नम्बर 2 : तिलावत के ज़ाहिरी आदाब

﴾1﴿.....क़ारिये क़ुरआन की ह़ालत :

तिलावत करने वाले को चाहिये कि बा वुज़ू हो, अदब व सुकून की ह़ालत में क़िब्ला रू हो कर सर झुकाए खड़ा या बैठा हो, न चोकड़ी मार कर बैठे, न टेक लगा कर और न ही मुतकब्बिराना अन्दाज़ में बैठे बल्कि यूं बैठे जैसे उस्ताज़ के सामने बैठता है। सब से अफ़्ज़ल ह़ालत येह है कि मस्जिद में नमाज़ में खड़े हो कर क़िराअत करे और येह सब से अफ़्ज़ल अ़मल है। अगर बिग़ैर वुज़ू बिस्तर पर लैटे क़िराअत की तो इस में भी फ़ज़ीलत है मगर कम है। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ क़ुरआने मजीद फ़ुरक़ाने ह़मीद में इरशाद फ़रमाता है :

اَلَّذِیْنَ یَذْكُرُوْنَ اللّٰهَ قِیٰمًا وَّ قُعُوْدًا وَّ عَلٰى جُنُوْبِهِمْ وَ یَتَفَكَّرُوْنَ فِیْ خَلْقِ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِۚ (پ۴،اٰل عمران:۱۹۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : जो अल्लाह की याद करते हैं खड़े और बैठे और करवट पर लैटे और आस्मानों और ज़मीन की पैदाइश में ग़ौर करते हैं।

इस आयते मुबारका में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने तमाम की ता'रीफ़ फ़रमाई मगर खड़े हो कर ज़िक्र करने वालों को मुक़द्दम किया फिर बैठ कर और लैट कर ज़िक्र करने वालों का तज़किरा किया।

हर ह़र्फ़ के बदले 100 नेकियां :

अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم फ़रमाते हैं : "जो नमाज़ में खड़े हो कर क़ुरआन की तिलावत करे उस के लिये हर ह़र्फ़ के बदले 100 नेकियां हैं और जो बैठ कर तिलावत करे उस के लिये हर ह़र्फ़ के बदले 50 नेकियां हैं और जो नमाज़ के इ़लावा बा वुज़ू तिलावत करे उस के लिये 25 नेकियां हैं और जो बिग़ैर वुज़ू तिलावत करे उस के लिये 10 नेकियां हैं और रात का क़ियाम अफ़्ज़ल है क्यूंकि इस वक़्त दिल ज़ियादा फ़ारिग़ होता है।"

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़र ग़िफ़ारी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं : "दिन को कषरत से सजदे और रात को त़वील क़ियाम अफ़्ज़ल है।"

﴾2﴿.....क़िराअत की मिक़्दार :

तिलावत की कमी और ज़ियादती के सिलसिले में क़ुर्रा की आ़दात मुख़्तलिफ़ हैं। बा'ज़ दिन और रात में एक बार पूरा क़ुरआन पढ़ लेते हैं। बा'ज़ दो बार, बा'ज़ तीन बार और बा'ज़ महीने में एक बार ख़त्म करते हैं लेकिन मिक़्दार के सिलसिले में सब से बेहतर बात वोह है जो

हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाई। चुनान्चे, इरशाद फ़रमाया : "जिस ने तीन दिन से कम में कुरआन पढ़ा उस ने समझा नहीं।"(1) (2)

येह इस लिये फ़रमाया क्यूंकि ज़ियादा पढ़ना ठहर ठहर कर पढ़ने से मानेअ़ है।

उम्मुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا ने एक शख़्स को तेज़ी से कुरआन पढ़ते देखा तो फ़रमाया : "इस ने न तो कुरआन पढ़ा न ख़ामोश रहा।"

नीज़ हुज़ुरे अन्वर, शाफ़ेए़ मह़शर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا को हर सात दिन में कुरआन ख़त्म करने का हुक्म दिया।(3) इसी त़रह़ सहाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن का एक गुरौह हर जुमुआ़ को कुरआन ख़त्म करता था जैसे अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्मान, ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन साबित, ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द और ह़ज़रते सय्यिदुना उबय्य बिन का'ब (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم)

ख़त्मे कुरआन के सिलसिले में दर्जात :

ख़त्मे कुरआन के सिलसिले में चार दर्जात हैं : (1)....दिन और रात में पूरा कुरआन ख़त्म करना इसे एक गुरौह ने मकरूह क़रार दिया। (2).....महीने में एक ख़त्म करना यूं कि हर रोज़ एक सिपारा पढ़ा जाए, गोया येह कमी में मुबालग़ा है जैसा कि मा क़ब्ल दर्जा कसरत में मुबालग़ा है। इन दोनों के दरमियान दो मोअ़तदिल दर्जात हैं : (3)....हफ़्ते में एक बार ख़त्म करना (4).....हफ़्ते में दो बार ख़त्म करना या'नी तक़रीबन तीन दिन में ख़त्म हो और ज़ियादा

1....मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْمَنَّان मिरआतुल मनाजीह़, जि. 3 स. 270 पर इस के तह़त फ़रमाते हैं : जो शख़्स हमेशा तीन दिन से कम में ख़त्मे कुरआन किया करे, वोह जल्दी तिलावत की वजह से न तो अल्फ़ाज़े कुरआन सह़ीह़ तौर पर समझ सकेगा, और न इस के ज़ाहिरी मा'ने में ग़ौर कर सकेगा, ख़याल रहे कि येह हुक्म आ़म मुसलमानों के लिये है कि वोह अगर बहुत जल्दी तिलावत करें, तो ज़बान लिपट जाती है ह़र्फ़ सह़ीह़ अदा नहीं होते ख़वास का हुक्म और है खुद हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم तहज्जुद की एक एक रक्अ़त में पांच पांच छे छे पारे पढ़ लेते थे। ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी ने एक रात में ख़त्मे कुरआन किया है, दावूद عَلَيْهِ السَّلَام चन्द मिनट में ज़बूर ख़त्म कर लेते थे, ह़ज़रते अ़ली كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم घोड़ा कसने से पहले ख़त्मे कुरआन कर लेते थे।

2......سنن ابن ماجة، كتاب اقامة الصلاة والسنة فيها، باب فى كم يستحب يختم القرآن، الحديث:۱۳۴۷، ج۲، ص۱۳۵، بتقدمٍ وتاخرٍ۔

3......صحيح مسلم، كتاب الصيام، باب النهى عن صوم الدهر......الخ، الحديث:۱۱۵۹، ص۵۸۵۔

पसन्दीदा येह है कि एक ख़त्म रात में करे और एक ख़त्म दिन में, दिन का ख़त्म पीर शरीफ़ की नमाज़े फ़ज्र की दो रक्अ़तों में या इन के बा'द हो और रात का ख़त्म जुमुआ़ की रात मग़रिब की दो रक्अ़तों में या इन के बा'द हो ताकि दिन और रात के आग़ाज़ का ख़त्मे कुरआन से इस्तिक़बाल करे क्यूंकि अगर कोई शख़्स रात को ख़त्मे कुरआन करे तो सुब्ह़ तक फ़िरिश्ते उस के लिये दुआ़ए रह़मत करते हैं और अगर दिन को ख़त्म करे तो शाम तक फ़िरिश्ते दुआ़ए रह़मत करते हैं यूं इन की बरकत पूरे दिन रात को शामिल हो जाती है।

ख़ुलासए कलाम :

मिक़दारे क़िराअत में तफ़्सील येह है कि अगर तिलावत करने वाला आ़बिदीन और अ़मल की राह पर चलने वालों में से है तो हफ़्ते में दो से कम बार ख़त्म न करे और अगर क़ल्बी आ'माल और फ़िक्र के ज़रीए़ राहे सुलूक तै़ करता है या इल्म फैलाने में मश्ग़ूल है तो हफ़्ते में एक बार पर इक्तिफ़ा करने में ह़रज नहीं और अगर कुरआन के मआ़नी में ग़ौरो फ़िक्र करता है तो महीने में एक बार पर इक्तिफ़ा करे क्यूंकि उसे बार बार पढ़ने और सोचने की ज़ियादा ज़रूरत है।

﴾3﴿....मिक़्दारे क़िराअत की तक़्सीम :

जो शख़्स हफ़्ते में एक बार ख़त्म करे वोह कुरआने पाक को सात ह़िस्सों में तक़्सीम कर ले कि सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن ने भी कुरआने पाक को ह़िस्सो में तक़्सीम किया।[1] चुनान्चे, मरवी है कि "अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़षमाने ग़नी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ जुमुआ़ की रात सूरए बक़रह से सूरए माइदह तक पढ़ते, हफ़्ते की रात सूरए अन्आ़म से सूरए हूद तक तिलावत करते, इतवार की रात सूरए यूसुफ़ से सूरए मरयम तक तिलावत फ़रमाते, पीर की रात सूरए त़ाहा से सूरए طٰسٓمٓ तक पढ़ते, मंगल की रात सूरए अ़न्कबूत से सूरए صٓ तक तिलावत करते, बुध की रात सूरए तन्ज़ील से सूरए रह़मान तक तिलावत फ़रमाते और जुमा'रात की रात ख़त्म करते।"

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ तिलावत को कई अक़्साम में तक़्सीम कर लेते थे लेकिन उन की येह तरतीब न थी। मन्क़ूल है कि कुरआने करीम की मन्ज़िलें सात हैं। पहली मन्ज़िल में तीन सूरतें हैं, दूसरी में पांच, तीसरी में सात, चौथी में नव, पांचवीं में ग्यारह, छटी में तेरह जब कि सातवीं मन्ज़िल में सूरए قٓ से आख़िर तक (छियासठ सूरतें) हैं।

---

[1]......سنن ابی داود، کتاب شھر رمضان، باب تخریب القرآن، الحدیث:۱۳۹۳، ج۲، ص۷۹۔

सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْھُم ने इसे यूंही तक़्सीम किया हुवा था और इसी त़रह़ तिलावत करते थे, नीज़ इस सिलसिले में ह़दीषे पाक भी मरवी है।[1] येह तब की बात है जब इसे पांच, दस या तीस ह़िस्सों में तक़्सीम नहीं किया गया था येह तक़्सीम बा'द की है।

﴾4﴿......किताबते क़ुरआन के आदाब :

क़ुरआने पाक को वाज़ेह़ त़ौर पर और ख़ूब सूरती से लिखना मुस्तह़ब है, इस पर नुक़्ते और सुर्ख़ अ़लामात वग़ैरा लगाने में कोई ह़रज नहीं क्यूंकि येह ज़ीनत, वज़ाह़त और पढ़ने वालों को ग़लत़ी से बचाना है।

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ह़सन बसरी और ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम इब्ने सीरीन رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْھِمَا पांच या दस या तीस पारों की तक़्सीम को नापसन्द करते थे।

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शा'बी और ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम नख़ई (رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْھِمَا) से सुर्ख़ नुक़्ते लगाने और इस पर उजरत लेने की कराहत मरवी है, वोह फ़रमाया करते थे कि "क़ुरआन को साफ़ रखो।" इन के मुतअ़ल्लिक़ येही गुमान किया जा सकता है कि उन्हों ने इस दरवाज़े को खोलना इस ख़ौफ़ से नापसन्द किया कि कहीं येह चीज़ ज़ियादतियों की त़रफ़ न ले जाए, लिहाज़ा इन्हों ने इस दरवाज़े को बन्द करने और क़ुरआन को तब्दीली से बचाने के जज़्बे के तह़त ऐसा किया, लेकिन अगर इस से कोई ममनूअ़ बात लाज़िम न आए और उम्मत इत्तिफ़ाक़ करे कि इसे (नुक़्ते वग़ैरा लगाने) से क़ुरआन की मा'रिफ़त बढ़ती है तो इस में कोई ह़रज नहीं, इस का मह़ज़ नया होना मुमानअ़त की दलील नहीं कितने ही नए काम अच्छे हैं जैसा कि तरावीह़ में जमाअ़त क़ाइम करने के मुतअ़ल्लिक़ मन्क़ूल है कि येह अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ ने जारी की और येह बिदअ़ते ह़सना है और बिदअ़ते मज़्मूमा वोह होती है जो सुन्नते क़दीमा के मुख़ालिफ़ हो या उस की तब्दीली का सबब बने।

एक बुज़ुर्ग का क़ौल है कि "मैं नुक़्तों वाले क़ुरआन से पढ़ लेता हूं लेकिन ख़ुद अपने लिये नुक़्ते नहीं लगाता।"

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम औज़ाई सय्यिदुना इमाम यह़्या बिन अबी कषीर (رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْھِمَا) से नक़्ल करते हैं कि क़ुरआने पाक मुसाह़िफ़ में नुक़्तों वग़ैरा से ख़ाली था, सब से पहले इस में ب और ت पर नुक़्ते लगाए गए और उ़-लमाए किराम رَحِمَھُمُ اللّٰہُ السَّلَام ने फ़रमाया कि इस में कोई

[1]......مجمع الزوائد، کتاب الصلاۃ، باب ثان منہ، الحدیث:۳۶۱۸، ج۲، ص۵۴۹۔

ह़रज नहीं क्यूंकि येह उस का नूर है फिर इन्हों ने आयात के इख़्तिताम पर बड़े बड़े नुक़्ते लगाए और फ़रमाया इस में भी कोई ह़रज नहीं इस के ज़रीए़ आयत ख़त्म होने की पहचान होती है। फिर आग़ाज़ व इख़्तिताम की अ़लामात लगाई गईं ।

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र हुज़ली عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللهِ الۡوَلِى फ़रमाते हैं : मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ह़सन बसरी عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللهِ الۡقَوِى से मुसाह़िफ़ पर सुर्ख़ नुक़्ते लगाने के मुतअ़ल्लिक़ पूछा तो इन्हों ने फ़रमाया : "येह नुक़्ते क्या हैं ?" मैं ने अ़र्ज़ की : "कलिमे को अ़रबी में ए'राब लगाते हैं ।" तो फ़रमाया : "क़ुरआन पर ए'राब लगाने में कोई ह़रज नहीं ।"

ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन मेहरान ह़ज़ा رَحۡمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيۡه फ़रमाते हैं : "मैं ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम इब्ने सीरीन عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللهِ الۡمُبِيۡن की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवा तो इन्हें नुक़्तों वाले क़ुरआन से तिलावत करते देखा ह़ालांकि आप नुक़्ते लगाने को नापसन्द करते थे ।"

क़ुरआन पर ए'राब किस ने लगवाए ?

मन्क़ूल है कि येह (या'नी नुक़्ते व ए'राब वग़ैरा लगाने का) काम ह़ज्जाज बिन यूसुफ़ ने किया । इस ने क़ुर्राए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام को जम्अ़ किया यहां तक कि उन्हों ने क़ुरआन के कलिमात और ह़ुरूफ़ को शुमार किया और इस के अजज़ा को बराबर कर के तीस ह़िस्सों में तक़्सीम किया और कुछ और तक़ासीम भी कीं ।

﴾5﴿......तरतीले क़ुरआन के आदाब :

क़ुरआने पाक में तरतील (या'नी ठहर ठहर कर पढ़ना) मुस्तह़ब है, अ़न क़रीब हम बयान करेंगे कि तिलावत से मक़्सूद ग़ौरो फ़िक्र करना है और ठहर ठहर कर पढ़ना इस पर मददगार है इसी लिये उम्मुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे सलमा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنۡهَا ने प्यारे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की क़िराअत की ता'रीफ़ करते हुए फ़रमाया : "एक एक ह़र्फ़ अलग अलग पढ़ते थे ।"(1)

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنۡهُمَا फ़रमाते हैं : "मुझे सूरए बक़रह और आले इमरान तरतील और ग़ौरो फ़िक्र के साथ पढ़ना बिग़ैर तरतील के पूरा क़ुरआन पढ़ने से ज़ियादा पसन्द है ।" आप से येह भी मन्क़ूल है कि "मुझे सूरए ज़िलज़ाल और क़ारिअ़ह तरतील से ग़ौरो फ़िक्र के साथ पढ़ना सूरए बक़रह और आले इमरान बिग़ैर तरतील जल्दी जल्दी पढ़ने से ज़ियादा पसन्द है ।"

---

(1)......سنن ابی داود، کتاب الوتر، باب استحباب الترتیل فی القراة، الحدیث:۱۴۶۶، ج۲، ص۱۰۵، بتغیرِالفاظٍ۔

ह़ज़रते सय्यिदुना मुजाहिद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَاحِد से नमाज़ पढ़ने वाले दो आदमियों के मुतअ़ल्लिक़ पूछा गया, इन का क़ियाम एक जैसा था मगर एक ने फ़क़त् सूरए बक़रह पढ़ी जब कि दूसरे ने पूरा क़ुरआन पढ़ा तो आप ने फ़रमाया : "दोनों का अज्र एक जैसा है।"

जान लीजिये कि तरतील मुस्तह़ब है न कि सिर्फ़ ग़ौरो फ़िक्र करना इस लिये कि अ़जमी शख़्स जो क़ुरआन का मा'ना नहीं समझता उस के लिये भी क़िराअत में तरतील मुस्तह़ब है क्यूंकि इस में इ़ज़्ज़त व एह़तिराम ज़ियादा है नीज़ येह जल्दी पढ़ने की ब निस्बत दिल में ज़ियादा ताषीर का बाइ़ष बनती है।

﴾6﴿.....रोना :

क़ुरआने पाक पढ़ते हुए रोना मुस्तह़ब है कि मुस्त़फ़ा जाने रह़मत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "क़ुरआन पढ़ो और रोओ अगर तुम्हें रोना न आए तो रोने जैसी सूरत बना लो।"(1)

एक रिवायत में है कि "जो शख़्स क़ुरआने पाक को अच्छी आवाज़ से नहीं पढ़ता वोह हम में से नहीं।"(2)

ह़ज़रते सय्यिदुना सालेह़ मुर्री عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَلِي फ़रमाते हैं : मैं ने ख़्वाब में ह़ुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सामने क़ुरआने पाक की तिलावत की तो आप ने इस्तिफ़सार फ़रमाया : "ऐ सालेह़ ! येह तिलावते क़ुरआन है तो रोना कहां है ?"

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا फ़रमाते हैं : "जब तुम अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये आयते सजदा तिलावत करो तो सजदा करने में जल्दी न करो यहां तक कि रोने लगो, अगर तुम में से किसी की आंख न रोए तो उस के दिल को रोना चाहिये।"

ब तकल्लुफ़ रोने का त़रीक़ा : येह है कि दिल में ग़म को ह़ाज़िर करे कि इस से रोना पैदा होता है। ह़ुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "क़ुरआन ग़म के साथ नाज़िल हुवा, लिहाज़ा जब तुम इस की क़िराअत करो तो ग़म ज़ाहिर करो।"(3)

सब से बड़ी मुसीबत :

ग़म की कैफ़िय्यत पैदा करने का त़रीक़ा : येह है कि इस में वारिद तम्बीहात व वईदात और अ़हद व पैमान को याद करे, फिर इस के अवामिर व नवाही के मुआ़मले में अपनी

---

(1) ......سنن ابن ماجة، کتاب اقامة الصلاة و السنة فیها، باب فی حسن الصوت بالقرآن، الحدیث:۱۳۳۷، ج۲، ص۱۲۹، بتغیرٍ۔

(2) ......صحیح البخاری، کتاب التوحید، باب قول اللّٰه تعالی:واسروا قولکم......الخ، الحدیث:۷۵۲۷، ج۴، ص۵۸۶۔

(3) ......مجمع الزوائد، کتاب التفسیر، باب القراءة بالحزن، الحدیث:۱۱۶۹۴، ج۷، ص۳۵۱، مفهومًا۔

कोताहियों में ग़ौरो फ़िक्र करे तो बिल यक़ीन वोह ग़मगीन होगा और रोने लगेगा। अगर उस पर ग़म और रोने की कैफ़िय्यत त़ारी न हो जैसे साफ़ दिल वालों पर त़ारी होती है तो उसे न रोने और ग़मगीन न होने पर रोना चाहिये क्यूंकि येह सब से बड़ी मुसीबत है।

﴾7﴿......आयात के ह़क़ की रिआ़यत के आदाब :

जब आयते सजदा तिलावत करे तो सजदा करे, इसी त़रह़ जब किसी दूसरे से आयते सजदा सुने तो जब तिलावत करने वाला सजदा करे येह भी सजदा करे और बा वुज़ू सजदा करे। कु़रआने पाक में 14 सजदे हैं। सूरए ह़ज में दो सजदे हैं [1], सूरए ص में सजदा नहीं।[2]

सजदए तिलावत का त़रीक़ा :[3]

इस की कम अज़् कम ह़द येह है कि पेशानी ज़मीन पर रखे और कामिल सजदा येह है कि तक्बीर कह कर सजदा करे और तिलावत कर्दा आयत के मुनासिब दुआ़ मांगे। मिषाल के तौर पर येह आयते मुबारका पढ़े :

اِنَّمَا یُؤْمِنُ بِاٰیٰتِنَا الَّذِیْنَ اِذَا ذُكِّرُوْا بِهَا خَرُّوْا سُجَّدًا وَّ سَبَّحُوْا بِحَمْدِ رَبِّهِمْ وَ هُمْ لَا یَسْتَكْبِرُوْنَ ۩ (پ ۲۱، السجدة:۱۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *हमारी आयतों पर वोही ईमान लाते हैं कि जब वोह उन्हें याद दिलाई जाती हैं सजदे में गिर जाते हैं और अपने रब्ब की ता'रीफ़ करते हुए उस की पाकी बोलते हैं और तकब्बुर नहीं करते।* [4]

---

❶.....अह़नाफ़ के नज़्दीक : सूरए ह़ज में एक सजदा है। पहली जगह जहां सजदे का ज़िक्र है। सूरए ह़ज की आख़िरी आयत जिस में सजदे का ज़िक्र है इस के पढ़ने या सुनने से सजदा वाजिब नहीं कि इस में सजदे से मुराद नमाज़ का सजदा है। (बहारे शरीअ़त, जि.1 स.726-729)

❷.....अह़नाफ़ के नज़्दीक : सूरए ص में सजदा है। (बहारे शरीअ़त, जि. 1 स. 727)

❸....अह़नाफ़ के नज़्दीक : सजए तिलावत का मसनून त़रीक़ा येह है कि खड़ा हो कर अल्लाह अक्बर कहता हुवा सजदे में जाए और कम से कम तीन बार سُبْحٰنَ رَبِّیَ الْاَعْلٰی कहे, फिर अल्लाह अक्बर कहता हुवा खड़ा हो जाए, पहले पीछे दोनों बार अल्लाह अक्बर कहना सुन्नत है और खड़े हो कर सजदे में जाना और सजदे के बा'द खड़ा होना येह दोनों क़ियाम मुस्तह़ब है। (बहारे शरीअ़त, जि.1 स.731)

नोट :–सजदए तिलावत के तफ़्सीली अह़काम जानने के लिये दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़्बूआ़ 1250 सफ़्ह़ात पर मुश्तमिल किताब **बहारे शरीअ़त जिल्द अव्वल सफ़्ह़ा 726 ता 739 का या** 49 सफ़्ह़ात पर मुश्तमिल मत़्बूआ़ रिसाला **"तिलावत की फ़ज़ीलत"** का मुत़ालआ़ कीजिये।

❹...येह आयते सजदा है और आयते सजदा पढ़ने या सुनने से सजदा वाजिब हो जाता है। (बहारे शरीअ़त, जि.1 स.728)

तो यूं दुआ़ करे : اَللّٰهُمَّ اجْعَلْنِي مِنَ السّٰجِدِيْنَ لِوَجْهِكَ الْمُسَبِّحِيْنَ بِحَمْدِكَ وَاَعُوْذُ بِكَ اَنْ اَكُوْنَ مِنَ الْمُسْتَكْبِرِيْنَ عَنْ اَمْرِكَ اَوْعَلٰى اَوْلِيَائِكَ या'नी ऐ अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ मुझे अपनी रिज़ा के लिये सजदा करने वालों में से बना जो तेरी ह़म्द के साथ तेरी पाकी बयान करते हैं और मैं इस से पनाह मांगता हूं कि तेरे हुक्म और तेरे औलिया से तकब्बुर करने वालों में से हो जाऊं।

जब इस आयते मुबारका की तिलावत करे :

وَيَخِرُّوْنَ لِلْاَذْقَانِ يَبْكُوْنَ وَيَزِيْدُهُمْ خُشُوْعًا ۩ (پ۱۵، بنی اسرائیل:۱۰۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और ठोड़ी के बल गिरते हैं रोते हुए और येह कुरआन उन के दिल का झुकना बढ़ाता है। [1]

तो यूं दुआ़ मांगे : اَللّٰهُمَّ اجْعَلْنِيْ مِنَ الْبَاكِيْنَ اِلَيْكَ الْخَاشِعِيْنَ لَكَ या'नी : ऐ अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ मुझे उन लोगों में से कर दे जो तेरी बारगाह में रोने वाले और तेरे लिये ख़ुशूअ़ करने वाले हैं।

इसी त़रह़ हर सजदे में करे। सजदए तिलावत में नमाज़ की शराइत़ का पाया जाना ज़रूरी है जैसे सित्रे औ़रत, इस्तिक़्बाले क़िब्ला, त़हारत। जो शख़्स आयते सजदा सुनते वक़्त बा वुज़ू न हो तो जब बा वुज़ू हो तब सजदा कर ले।

सजदए तिलावत के कामिल होने के बारे में एक क़ौल येह भी है कि तक्बीरे तह़रीमा के लिये हाथों को उठाते हुए तक्बीर कहे, फिर सजदे के लिये झुकते हुए तक्बीर कहे, फिर सजदे से उठते हुए तक्बीर कहे, फिर सलाम फेरे। बा'ज़ ने तशह्हुद का भी इज़ाफ़ा किया है।[2]

इस की कोई अस्ल नहीं सिवाए इस के कि इसे सुजूदे नमाज़ पर क़ियास किया हो और येह क़ियास बईद अज़ अ़क़्ल है, क्यूंकि सिर्फ़ सजदे का हुक्म वारिद हुवा है इस लिये इसी की पैरवी की जाएगी और झुकने के लिये तक्बीर कहना इब्तिदा के ज़ियादा क़रीब है इस के इ़लावा दीगर क़ुयूदात लगाना दुरुस्त नहीं।

मुक़्तदी इमाम के सजदए तिलावत करते वक़्त सजदा करे, अगर मुक़्तदी खुद आयते सजदा पढ़े तो सजदा न करे।

﴾8﴿......क़िराअत शुरूअ़ करने के आदाब :

क़िराअत की इब्तिदा यूं करे :

اَعُوْذُ بِاللّٰهِ السَّمِيْعِ الْعَلِيْمِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ رَبِّ اَعُوْذُبِكَ مِنْ هَمَزَاتِ الشَّيَاطِيْنِ وَاَعُوْذُ بِكَ رَبِّ اَنْ يَّحْضُرُوْنَ

1.....येह आयते सजदा है और आयते सजदा पढ़ने या सुनने से सजदा वाजिब हो जाता है। (माख़ूज़ अज़ बहारे शरीअ़त, जि.1 स.728)

2....अह़नाफ़ के नज़दीक : सजदए तिलावत के लिये अल्लाहु अक्बर कहते वक़्त न हाथ उठाना है और न इस में तशह्हुद है न सलाम। (बहारे शरीअ़त, जि.1 स.728)

या'नी में शैत़ान मरदूद से ख़ुदाए समीअ़ व बसीर की पनाह मांगता हूं, ऐ मेरे रब्ब ! तेरी पनाह शयात़ीन के वस्वसों से और ऐ मेरे रब्ब ! तेरी पनाह कि वोह मेरे पास आएं।

नीज़ सूरए नास और सूरए फ़ातिह़ा पढ़े और जब क़िराअत से फ़राग़ हो तो यूं कहे :

صَدَقَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَبَلَّغَ رَسُوْلُ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّمَ اَللّٰھُمَّ انْفَعْنَا بِہٖ وَبَارِکْ لَنَا فِیْہِ اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَاَسْتَغْفِرُ اللّٰہَ الْحَیَّ الْقَیُّوْمَ

या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने सच फ़रमाया और रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने सच पहुंचाया। ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें इस से नफ़्अ़ अ़त़ा फ़रमा और हमें इस में बरकत अ़त़ा फ़रमा, सब ख़ूबिया अल्लाह عَزَّوَجَلَّ को जो मालिक सारे जहान वालों का और मैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की पनाह मांगता हूं जो ज़िन्दा और क़ाइम रखने वाला है।

क़िराअत के दौरान जब आयते तस्बीह़ पर पहुंचे तो तस्बीह़ और तक्बीर कहे, जब दुआ़ व इस्तिग़फ़ार वाली आयत पर पहुंचे तो दुआ़ व इस्तिग़फ़ार करे, जब उम्मीद (व रह़मत) वाली आयत पर पहुंचे तो सुवाल करे, जब ख़ौफ़ वाली आयत पर पहुंचे तो पनाह मांगे और उसे इख़्तियार है कि येह काम अपनी ज़बान से करे या दिल से। आयते तस्बीह़ पर पहुंचे तो यूं कहे : سُبْحٰنَ اللّٰہِ نَعُوْذُ بِاللّٰہِ اَللّٰھُمَّ ارْزُقْنَا اَللّٰھُمَّ ارْحَمْنَا या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये पाकी है, हम अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से पनाह मांगते हैं, ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें रिज़्क़ अ़त़ा फ़रमा। ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हम पर रह़्म फ़रमा।

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़ुज़ैफ़ा बिन यमान رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : मैं ने ह़ुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की इक़्तिदा में नमाज़ अदा की आप ने सूरए बक़रह की तिलावत शुरूअ़ फ़रमाई जब आयते रह़मत की तिलावत करते तो रह़मत का सुवाल करते, जब आयते अ़ज़ाब से गुज़रते तो पनाह त़लब करते, जब आयते तन्ज़िया (या'नी ऐसी आयत जिस में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की पाकी बयान की गई हो) की तिलावत करते तो سُبْحٰنَ اللّٰہ कहते।[1] जब फ़ारिग़ हुए तो वोही दुआ़ मांगी जो ख़त्मे कुरआन के वक़्त करते थे :

اَللّٰھُمَّ ارْحَمْنِیْ بِالْقُرْآنِ وَاجْعَلْہُ لِیْ اِمَامًا وَّنُوْرًا وَّھُدًی

وَّرَحْمَةً اَللّٰھُمَّ ذَکِّرْنِیْ مِنْہُ مَا نَسِیْتُ وَعَلِّمْنِیْ مِنْہُ مَا جَھِلْتُ وَارْزُقْنِیْ تِلَاوَتَہٗ آنَاءَ اللَّیْلِ وَاَطْرَافَ النَّھَارِ وَاجْعَلْہُ لِیْ حُجَّةً یَّا رَبَّ الْعٰلَمِیْنَ

या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ कुरआन के ज़रीए़ मुझ पर रह़्म फ़रमा, इसे मेरे लिये इमाम, नूर, हिदायत और रह़मत बना, ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इस में से जो मैं भूल चुका हूं वोह मुझे याद दिला दे और जिस से मैं ला इ़ल्म हूं वोह मुझे सिखा दे और मुझे रात की घड़ियों और दिन के अत़राफ़ में (या'नी सुब्ह़ शाम) इस की तिलावत की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमा।

---

1 ……صحیح مسلم، کتاب صلاۃ المسافرین وقصرھا، باب استحباب تطویل القراءۃ……الخ، الحدیث: ۷۷۲، ص ۳۹۱، مفھومًا۔

﴾9﴿......बुलन्द आवाज़ से क़िराअत करना :

इस में कोई शक नहीं कि इतनी आवाज़ से क़िराअत करे कि खुद सुन ले क्यूंकि क़िराअत इस चीज़ का नाम है कि हुरूफ़ को आवाज़ के साथ वाज़ेह त़ौर पर अदा करे, लिहाज़ा आवाज़ का होना ज़रूरी है, क़िराअत की कम अज़ कम मिक़्दार येह है कि क़िराअत करने वाला खुद सुन ले अगर खुद भी न सुने तो उस की नमाज़ सह़ीह़ नहीं। इतनी बुलन्द आवाज़ से क़िराअत करना कि दूसरा भी सुन ले येह एक ए'तिबार से पसन्दीदा है और एक ए'तिबार से मकरूह।

आहिस्ता आवाज़ से क़िराअत मुस्तह़ब :

हु़ज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "सिर्री (या'नी आहिस्ता) क़िराअत की बुलन्द आवाज़ से क़िराअत पर इतनी फ़ज़ीलत है जितनी पोशीदा सदक़े की अ़लानिया सदक़े पर।"(1)

एक रिवायत में है कि "अ़लानिया कुरआन पढ़ने वाला अ़लानिया सदक़ा देने वाले की त़रह़ है और आहिस्ता कुरआन पढ़ने वाला खुफ़्या सदक़ा देने वाले की त़रह़ है।"(2)

एक रिवायत में है कि "पोशीदा अ़मल अ़लानिया अ़मल पर 70 गुना ज़ियादा फ़ज़ीलत रखता है।"(3)

एक रिवायत में है कि "बेहतरीन रिज़्क़ वोह है जो काफ़ी हो और बेहतरीन ज़िक्र वोह है जो पोशीदा हो।"(4)

ह़दीषे पाक में है कि "मग़रिब और इ़शा के दरमियान की क़िराअत में तुम एक दूसरे से आवाज़ बुलन्द न करो।"(5)

हि़कायत :- हा़किमे मदीना की आ़जिज़ी :

ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन मुसय्यब رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने एक रात मस्जिदे नबवी में अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْعَزِیْز को नमाज़ में

1......قوت القلوب، الفصل التاسع عشر، کتاب الجھر بالقرآن......الخ، ج ۱، ص ۱۱۰۔

2......سنن ابی داود، کتاب التطوع، باب رفع الصوت بالقراءۃ......الخ، الحدیث:۱۳۳۳، ج ۲، ص ۵۶۔

3......قوت القلوب، الفصل التاسع عشر، کتاب الجھر بالقرآن......الخ، ج ۱، ص ۱۱۰۔

شعب الایمان للبیھقی، باب فی محبۃ اللّٰہ، فصل فی ادامۃ ذکراللّٰہ، الحدیث:۵۵۶، ج ۱، ص ۴۰۸، مفھومًا۔

4......المسندللامام احمد بن حنبل، مسند ابی اسحاق سعد بن ابی وقاص، الحدیث:۱۴۷۷، ج ۱، ص ۳۶۴، بتقدمٍ وتاخرٍ۔

5......سنن ابی داود، کتاب التطوع، باب رفع الصوت بالقراءۃ فی صلاۃ اللیل، الحدیث:۱۳۳۲، ج ۲، ص ۲۵، باختصارٍ۔

قوت القلوب، الفصل التاسع عشر، کتاب الجھر بالقرآن......الخ، ج ۱، ص ۱۱۰۔

बुलन्द आवाज़ से क़िराअत करते सुना, आप की आवाज़ भी अच्छी थी तो अपने ग़ुलाम से फ़रमाया :"इस नमाज़ी से कहो कि आवाज़ आहिस्ता करे।" ग़ुलाम ने अ़र्ज़ की : "मस्जिद हमारी नहीं इस में दूसरे लोगों का भी ह़क़ है।" तो ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन मुसय्यब رَحْمَۃُاللّٰہِ تعالٰی عَلَیْہ ने बुलन्द आवाज़ से फ़रमाया : "ऐ नमाज़ी ! अगर नमाज़ से रिज़ाए इलाही मक़्सूद है तो अपनी आवाज़ पस्त कर ले और अगर लोगों की रिज़ा चाहता है तो अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ के हां येह तेरे कुछ काम न आएगी।" अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْعَزِیْز ने अपनी आवाज़ आहिस्ता कर ली, नमाज़ मुख़्तसर की, सलाम फैरा और ख़ामोशी से तशरीफ़ ले गए ह़ालांकि उस वक़्त आप ह़ाकिमे मदीना थे।

बुलन्द आवाज़ से क़िराअत मुस्तह़ब :

बुलन्द आवाज़ से क़िराअत के मुस्तह़ब होने पर येह रिवायत दलालत करती है कि हु़ज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने रात की नमाज़ में सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن के एक मज्मअ़ को बुलन्द आवाज़ से क़िराअत करते सुना तो इसे (या'नी उन के बुलन्द आवाज़ से पढ़ने को) दुरुस्त क़रार दिया।[1]

एक रिवायत में है कि हु़ज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जब तुम रात को उठ कर नमाज़ पढ़ो तो बुलन्द आवाज़ से क़िराअत करो क्यूंकि फ़िरिश्ते और घर में रहने वाले जिन्नात इस क़िराअत को सुनते और इसी की मिष्ल नमाज़ पढ़ते हैं।"[2]

एक रात प्यारे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم अपने तीन सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن के पास से गुज़रे, उन के अह़वाल मुख़्तलिफ़ थे। अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عَنْہ के पास से गुज़रे जो आहिस्ता क़िराअत कर रहे थे, उन से आहिस्ता पढ़ने के मुतअ़ल्लिक़ इस्तिफ़सार फ़रमाया तो उन्हों ने अ़र्ज़ की : "मैं जिस की बारगाह में मुनाजात कर रहा हूं वोह सुन रहा है।" अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عَنْہ के पास से गुज़रे जो बुलन्द आवाज़ से क़िराअत कर रहे थे, उन से बुलन्द आवाज़ से क़िराअत के मुतअ़ल्लिक़ इस्तिफ़सार फ़रमाया तो उन्हों ने अ़र्ज़ की : "मैं सोतों को जगाता और शैत़ान को भगाता हूं।" ह़ज़रते सय्यिदुना बिलाले ह़बशी رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عَنْہ के पास से

1 ......قوت القلوب، الفصل التاسع عشر، کتاب الجهر بالقرآن......الخ، ج ۱، ص ۱۱۰۔

2 ......قوت القلوب، الفصل التاسع عشر، کتاب الجهر بالقرآن......الخ، ج ۱، ص ۱۱۰۔

गुज़रे, वोह कुछ आयात एक सूरत से और कुछ दूसरी से तिलावत कर रहे थे, उन से इस के मुतअ़ल्लिक़ इस्तिफ़सार फ़रमाया तो उन्हों ने अ़र्ज़ की : "मैं त़य्यिब के साथ त़य्यिब को मिलाता हूं।" तो हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "तुम सब ने अच्छा और दुरुस्त किया।"(1)

मज़्कूरा रिवायात में तत़बीक़ :

आहिस्ता पढ़ना रिया और बनावट से दूर करता है और येह उस के ह़क़ में अफ़्ज़ल है जिसे खुद पर इस का ख़ौफ़ हो और अगर रियाकारी वग़ैरा का ख़ौफ़ न हो और बुलन्द आवाज़ से पढ़ने में किसी की नमाज़ में ख़लल न होता हो तो बुलन्द आवाज़ से पढ़ना अफ़्ज़ल है क्यूंकि इस में अ़मल ज़ियादा है और इस का फ़ाइदा दूसरों को भी पहुंचता है और दूसरों तक पहुंचने वाली भलाई एक शख़्स तक मह़दूद भलाई से अफ़्ज़ल है।

बुलन्द आवाज़ से पढ़ने के फ़वाइद :

बुलन्द आवाज़ से क़िराअत, पढ़ने वाले के दिल को बेदार रखती, इस की फ़िक्र को क़ुरआन में ग़ोरो फ़िक्र करने की त़रफ़ इकठ्ठा करती, उसे इस त़रफ़ मुतवज्जेह रखती, नींद को दूर करती, चुस्ती बढ़ाती और सुस्ती कम करती है। बुलन्द आवाज़ से पढ़ने में सोए हुए शख़्स के बेदार होने की उम्मीद होती है तो येह उस के बेदार होने का सबब है, नीज़ बा'ज़ अवक़ात कोई ग़ाफ़िल व बेकार शख़्स उसे देख कर उस की चुस्ती के सबब चुस्त हो जाता है और इस में इ़बादत का ज़ौक़ व शौक़ पैदा हो जाता है। अगर क़ारिये क़ुरआन की इन में से कोई निय्यत हो तो बुलन्द आवाज़ से क़िराअत करना अफ़्ज़ल है और जब येह तमाम निय्यतें जम्अ़ हो जाएं तो अज्रो षवाब दुगना हो जाता है।

जितनी निय्यतें ज़ियादा उतना षवाब भी ज़ियादा :(2)

निय्यतों की कषरत से नेक लोगों के आ'माल का तज़्किया होता और उन के अज्र दुगने हो जाते हैं। क्यूंकि अगर एक अ़मल में 10 निय्यतें हों तो इस के 10 अज्र मिलेंगे। इसी लिये

---

1 ......سنن ابی داود، کتاب التطوع، باب رفع الصوت بالقراءۃ......الخ، الحدیث:۱۳۲۹۔۱۳۳۰، ج۲، ص۵۵۔

قوت القلوب، الفصل التاسع عشر، کتاب الجھر بالقران......الخ، ج۱، ص۱۱۰۔

2 ....अच्छी अच्छी निय्यतों के मुतअ़ल्लिक़ मा'लूमात ह़ासिल करने के लिये दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 616 सफ़्ह़ात पर मुश्तमिल शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ की मायानाज़ तस्नीफ़ "**नेकी की दा'वत**" (हिस्सा अव्वल) सफ़्ह़ा 109 ता 129 का मुत़ालआ़ कीजिये !

हम कहते हैं कि देख कर कुरआने पाक पढ़ना अफ़्ज़ल है क्यूंकि इस से अ़मल में देखना, कुरआन में ग़ौरो फ़िक्र करना और इसे उठाना बढ़ जाता है लिहाज़ा इस के सबब अज्र भी बढ़ जाता है। नीज़ मन्कूल है कि देख कर कुरआन पढ़ने का सात गुना अज्र है क्यूंकि कुरआने पाक को देखना भी इबादत है।

कषरते तिलावत के सबब.....?

अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उषमाने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ इस कषरत से तिलावत फ़रमाते थे कि इस के सबब आप के पास दो मुस्ह़फ़ शरीफ़ शहीद हो गए थे। कई सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہِمۡ اَجۡمَعِیۡن देख कर कुरआने पाक पढ़ते और कोई दिन कुरआने पाक को देखे बिग़ैर गुज़ारना ना पसन्द करते थे।

सुब्ह़ तक इसे बन्द नहीं करता :

मिस्र के एक फ़क़ीह एक रोज़ सुब्ह़ के वक़्त ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡکَافِی के पास ह़ाज़िर हुए, उस वक़्त आप कुरआने पाक से देख कर तिलावत कर रहे थे। आप رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ ने उस फ़क़ीह से फ़रमाया : "तुम्हें फ़िक़्ह ने कुरआने पाक से ग़ाफ़िल कर दिया, मैं इशा की नमाज़ पढ़ता हूं और कुरआने पाक मेरे सामने होता है, फिर सुब्ह़ तक इसे बन्द नहीं करता।"

﴾10﴿.....ख़ुश इल्ह़ानी व उ़म्दगी से क़िराअत करना :

कुरआने पाक को अच्छी आवाज़ से और ठहर ठहर कर पढ़ना सुन्नत है लेकिन हुरूफ़ को इतना ज़ियादा न खींचे कि आवाज़ बदल जाए या नज़्मे कुरआन तब्दील हो जाए। नीज़ हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "कुरआने पाक को अपनी आवाज़ों से मुज़य्यन करो।"[1]

एक रिवायत में है कि "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने जितना ख़ुश इल्ह़ानी से तिलावते कुरआन का हुक्म दिया इतना किसी और चीज़ का न दिया।"[2]

एक रिवायत में है कि "जो ख़ुश इल्ह़ानी से कुरआन न पढ़े वोह हम में से नहीं।"[3]

---

1 ......سنن ابی داود، کتاب الوتر، باب استحباب الترتیل فی القراءۃ، الحدیث:۱۴۶۸، ج۲، ص۱۰۵۔

2 ......صحیح مسلم، کتاب صلاۃ المسافرین وقصرھا، باب استحباب تحسین......الخ، الحدیث:۷۹۲، ص۳۹۷۔۳۹۸۔

3 ......صحیح البخاری، کتاب التوحید، باب قول اللّٰہ:واسروا قولکم......الخ، الحدیث:۷۵۲۷، ج۴، ص۵۸۶۔

सय्यिदुना सालिम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ की ख़ुश इल्हानी :

मरवी है कि मुस्त़फ़ा जाने रह़मत صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم एक रात उम्मुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا का इन्तिज़ार फ़रमा रहे थे। उन्हें आने में कुछ देर हो गई तो इस्तिफ़्सार फ़रमाया : "तुम्हें किस चीज़ ने रोका?" अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم मैं ने एक शख़्स को क़िराअत करते सुना, उस से अच्छी आवाज़ मैं ने नहीं सुनी।" तो हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم तशरीफ़ ले गए और काफ़ी देर तक उस की क़िराअत सुनते रहे, फिर वापस आ कर इरशाद फ़रमाया : "येह अबू हुज़ैफ़ा का ग़ुलाम सालिम है, तमाम ख़ूबियां अल्लाह عَزَّوَجَلَّ को जिस ने मेरी उम्मत में ऐसा शख़्स पैदा फ़रमाया।"(1)

इसी त़रह़ एक रात अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ और अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا) हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की मइय्यत में (साथ में) ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द की त़रफ़ गए और काफ़ी देर ठहरे उन की क़िराअत सुनते रहे, फिर आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जो शख़्स क़ुरआने पाक को इस त़रह़ तरो ताज़ा पढ़ना चाहे जिस त़रह़ नाज़िल हुवा तो वोह इब्ने उम्मे अ़ब्द की त़रह़ क़िराअत करे।"(2)

सय्यिदुना इब्ने मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ की ख़ुश इल्हानी :

एक रोज़ हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से इरशाद फ़रमाया : "मेरे सामने तिलावत करो।" अ़र्ज़ की : "मैं आप के सामने क्या पढ़ूं? आप पर ही तो क़ुरआन उतरा है।" इरशाद फ़रमाया : "मैं चाहता हूं कि दूसरे से सुनूं।" चुनान्चे, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ तिलावत करते रहे और रसूलुल्लाह صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की चश्माने मुबारक से आंसू बहते रहे।(3)

सय्यिदुना अबू मूसा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ की ख़ुश इल्हानी :

हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अशअ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ की क़िराअत सुन कर इरशाद फ़रमाया : "इसे दावूद عَلَیۡہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की सी ख़ुश आवाज़ी अ़त़ा

1 ......سنن ابن ماجه، كتاب اقامة الصلاة و السنة فيها، باب فى حسن الصوت بالقرآن، الحديث:١٣٣٨، ج٢، ص١٣٠، بتغيرٍ۔
2 ......السنن الكبرى للنسائى، كتاب المناقب، عبدالله بن مسعود، الحديث:٨٢٥٦_٨٢٥٧، ج٥، ص٧١۔
3 ......صحيح البخارى، كتاب فضائل القرآن، باب البكاء عند قراءة القرآن، الحديث:٥٠٥٥، ج٣، ص٤١٨، مفهومًا۔

हुई है।"(1) जब येह बात ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अशअ़री رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہُ को पहुंची तो इन्हों ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم अगर मुझे मा'लूम होता कि आप सुन रहे हैं तो मैं मज़ीद खुश इल्ह़ानी से पढ़ता।"(2)

हि़कायत : खुश नसीब क़ारिये कु़रआन :

ह़ज़रते सय्यिदुना क़ारी हैषम رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : मैं ख़्वाब में प्यारे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ियारत से मुशर्रफ़ हुवा तो आप ने मुझ से इरशाद फ़रमाया : "तू ही हैषम है जो खुश इलह़ानी से कुरआन की तिलावत करता है?" मैं ने अ़र्ज़ की : "जी हां!" तो दुआ़ से नवाज़ते हुए फ़रमाया : "**अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ तुझे जज़ाए ख़ैर अ़त़ा फ़रमाए।"

मरवी है कि सह़ाबए किराम عَلَیْهِمُ الرِّضْوَان जब इकट्ठे होते तो किसी एक से कहते कि "कुरआन की कोई सूरत सुनाओ।"

अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہُ ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अशअ़री رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہُ से फ़रमाते : "हमें हमारे रब्ब की याद दिलाओ?" वोह उन के सामने कुरआने पाक की तिलावत करते यहां तक कि जब नमाज़ का वक़्त हो जाता तो कहा जाता : "नमाज़ नमाज़।" आप رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते : "क्या हम नमाज़ में नहीं हैं?" आप رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہُ के इस क़ौल से इस फ़रमाने बारी तआ़ला की त़रफ़ इशारा है :

"وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُؕ (پ۲۱،العنکبوت:۴۵) ***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :*** *और बेशक* ***अल्लाह*** *का ज़िक्र सब से बड़ा।"*

ह़दीषे मुबारका में है कि "जो शख़्स कुरआने पाक की कोई आयत सुनता है, बरोज़े क़ियामत वोह उस के लिये नूर होगी।"(3)

एक रिवायत में है कि "उस के लिये 10 नेकियां लिखी जाएगी।"(4)

कुरआने मजीद की तिलावत सुनने का कितना अ़ज़ीमुश्शान अज्र है और तिलावत करने वाला जो इस का सबब है वोह भी अज्रो षवाब में इस का शरीक है बशर्तेकि रियाकारी व बनावट की निय्यत न हो।

---

1 ......صحیح البخاری، کتاب فضائل القرآن، باب حسن الصوت بالقراءۃ، الحدیث:۵۰۴۸، ج۳، ص۴۱۶۔

2 ......قوت القلوب، الفصل التاسع عشر، کتاب الجھربالقرآن......الخ، ج۱، ص۱۱۲۔

3 ......المسندللامام احمد بن حنبل، مسند ابی ھریرۃ، الحدیث:۸۵۰۲، ج۳، ص۲۴۵، "استمع" بدلہ "تلا"۔

4 ......قوت القلوب، الفصل التاسع عشر، کتاب الجھر بالقرآن......الخ، ج۱، ص۱۱۱۔

बाब नम्बर 3 :

तिलावत के बाति़नी आदाब

तिलावत के बाति़नी आदाब दस हैं : (1).....अस्ले कलाम का समझना (2).....उस की ता'ज़ीम करना (3)..... हुज़ूरे क़ल्बी के साथ तिलावत करना (4).....उस के मआ़नी में ग़ौरो फ़िक्र करना (5).....मआ़नी को समझना (6).....समझने में ह़ाइल होने वाली रुकावटों को दूर करना (7).....तख़सीस (8).....तअष्षुर (9).....तरक़्क़ी (10)..... बराअत का इज़्हार करना।

﴾1﴿......कलाम की अ़ज़मत व बुलन्दी को समझना :

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के फ़ज़्ल व एह़सान और लुत़्फ़ो करम को यूं समझना कि उस ने अ़र्शे बरीं से ऐसा आसान कलाम उतारा कि मख़्लूक़ की समझ में आ जाए, इस पर ग़ौर करना कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की अपनी मख़्लूक़ पर कितनी मेहरबानी है कि वोह कलाम जो उस की सिफ़ते क़दीमा और उस की ज़ात के साथ क़ाइम था उस के मआ़नी को मख़्लूक़ की समझ तक पहुंचा दिया, वोह सिफ़त हुरूफ़ व अस्वात (आवाज़ों) से किस त़रह़ ज़ाहिर हुई ह़ालांकि हुरूफ़ व अस्वात बशरी सिफ़ात हैं लेकिन चूंकि बशर को त़ाक़त नहीं कि वोह अपनी सिफ़ात के वसीले के बिग़ैर सिफ़ाते इलाहिय्या को समझ सके, लिहाज़ा इन हुरूफ़ व अस्वात के पैराए में इस सिफ़ते कलाम को ढाल दिया गया, अगर बिल्फ़र्ज़ कलामे इलाही के जलाल की ह़क़ीक़त हुरूफ़ के पैराए में छुपी न होती तो अ़र्श भी इसे सुन कर न ठहर सकता, न ख़ाक को इस के सुनने की ताब होती, इस की अ़ज़्मत और नूरे जलाल से फ़र्श ता अ़र्श सब ना पैद हो जाते। अगर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को षाबित क़दम न रखता तो इन में कलामे इलाही सुनने की ताब न होती जैसे पहाड़ अदना तजल्ली बर्दाश्त न कर सका और रेज़ा रेज़ा हो गया। कलामे इलाही की अ़ज़्मत को ऐसी मिषालों के बिग़ैर समझना मुमकिन नहीं जिन तक मख़्लूक़ की अ़क़्ल की रसाई हो। इसी लिये बा'ज़ आ़रिफ़ीन ने इसे यूं ता'बीर किया कि कलामे इलाही में से हर ह़र्फ़ लौह़े मह़फ़ूज़ में कोहे क़ाफ़ पहाड़ से बड़ा है, अगर तमाम फ़िरिश्ते एक ह़र्फ़ को उठाने के लिये जम्अ़ हो जाएं तो भी न उठा पाएं अलबत्ता लौह़े मह़फ़ूज़ पर मामूर फ़िरिश्ते ह़ज़रते सय्यिदुना इसराफ़ील عَلَیْہِ السَّلَام उसे उठा लेते हैं लेकिन अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के इज़्न और उस की रह़मत से न कि अपनी त़ाक़त व कुव्वत से, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उन्हें येह त़ाक़त अ़त़ा फ़रमाई है और येह काम उन्हीं के सिपुर्द है। कलामे इलाही के बुलन्द मर्तबा होने के बा वुजूद अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इन्सान की अ़क़्ल को उस के मआ़नी समझने तक रसाई अ़त़ा फ़रमाई और इसे षाबित रखा ह़ालांकि इन्सान का मर्तबा कम है।

कलामे इलाही के मआ़नी को इस मिषाल से समझो :

एक बुज़ुर्ग ने कलाम के मआ़नी तक पहुंचने की एक लत़ीफ़ सूरत बयान फ़रमाई बल्कि एक मिषाल भी पेश की है। चुनान्चे, फ़रमाते हैं : किसी दाना शख़्स ने एक बादशाह को अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की (लाई हुई) शरीअ़त की दा'वत दी तो बादशाह ने चन्द सुवाल किये तो दाना ने बादशाह की समझ के मुत़ाबिक़ जवाबात दिये। बादशाह ने कहा : "मैं ने देखा है कि अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام जो कलाम लाते हैं तुम इस के मुतअ़ल्लिक़ कहते हो कि येह लोगों का कलाम नहीं बल्कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का कलाम है, फिर लोग इसे कैसे समझते हैं ?" उस दाना शख़्स ने जवाब दिया : हम देखते हैं कि लोग जब किसी जानवर या परन्दे को कुछ सिखाना चाहते हैं मषलन आगे बढ़ना, पीछे हटना, सामने मुंह करना और पुश्त फेरना वग़ैरा और वोह जानवरों को देखते हैं कि वोह लोगों की अ़क़्ल से तह़सीन व तज़्ईन और अ़जीब तन्ज़ीम के साथ सादिर होने वाले कलाम को समझने से क़ासिर हैं तो वोह जानवरों के रंग में ढल कर कलाम करते हैं और अपने मक़्सूद को इन में ऐसी आवाज़ से पहुंचाते हैं जो इन कि समझ के मुनासिब हो मषलन टख़ टख़ करना, सीटी बजाना और ऐसी आवाज़ें जो इन की आवाज़ों के क़रीब क़रीब हों ताकि वोह उन्हें समझ सकें। इसी त़रह़ लोग भी कलामे इलाही को इस की माहिय्यत और कमाले सिफ़ात से समझने से आ़जिज़ हैं तो अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने भी इन के साथ वोही अन्दाज़ इख़्तियार किया जो लोग जानवरों के साथ बरतते हैं या'नी उस कलामे पाक को ऐसे अल्फ़ाज़ व हुरूफ़ में बयान किया जिस से लोग उस की ह़िक्मत को समझ जाएं जैसे जानवर सीटी वग़ैरा से इन के मत़ालिब को समझ लेते हैं और चूंकि ह़िक्मत के मआ़नी इन हुरूफ़ और अस्वात में पोशीदा रहते हैं लिहाज़ा इन मआ़नी की शराफ़त और अ़ज़मत के सबब कलाम की समझ आती है तो गोया आवाज़ ह़िक्मत के लिये जिस्म और मकान जब कि ह़िक्मत आवाज़ के लिये जान और रूह़ है। जिस त़रह़ आदमी का जिस्म रूह़ के सबब मुकर्रम व मुअ़ज़्ज़म होता है इसी त़रह़ कलाम के अस्वात व हुरूफ़ भी इन में मौजूद ह़िक्मतों की वजह से मुशर्रफ़ व मक़्सूद होते हैं और कलाम बुलन्द मर्तबा और आ'ला दर्जा रखता है, ग़लबे में ज़बरदस्त, ह़क़ व बात़िल में हुक्म नाफ़िज़ करने वाला, ह़ाकिमे आ़दिल और पसन्दीदा गवाह है, इसी से अम्र व नह्य का सुदूर होता है बात़िल को ताब नहीं कि पुर ह़िक्मत कलाम के सामने ठहर सके जैसे साया सूरज की शुआ़अ़ के सामने नहीं ठहर सकता, बन्दों में त़ाक़त नहीं कि ह़िक्मत की गहराई के पार जाएं जैसे वोह अपनी आंखों को सूरज की रोशनी के पार नहीं कर

सकते। अलबत्ता, सूरज की रोशनी से इन्हें इतना ह़ासिल होता है कि जिस से इन की आंखों में नूर आ जाए और वोह अपनी ज़रूरियात की त़रफ़ रहनुमाई ह़ासिल कर लें।

कलामे इलाही छुपे हुए बादशाह की मानिन्द है जिस का चेहरा मह़सूस नहीं होता लेकिन उस का हुक्म जारी है या गोया वोह सूरज है जिस की रोशनी ज़ाहिर है मगर वोह खुद पोशीदा है या चमकते सितारे की मिष्ल है कि जिसे उस की चाल से वाक़िफ़िय्यत नहीं होती वोह भी उस के ज़रीए़ राह पा लेता है।

खुलासए कलाम :

येह है कि कलामे इलाही निहायत उ़म्दा ख़ज़ानों की चाबी है। येह आबे ह़यात है कि जिस ने इस में से पिया वोह ह़याते अबदी से मुत्तसिफ़ हो गया और ऐसी दवा है कि जिस ने इस को नोश किया कभी बीमार न हुवा। येह दाना शख़्स ने जो बयान किया है कलाम के मा'नी को समझने के लिये एक मुख़्तसर सी बात है, इस से ज़ियादा बयान करना इल्मे मुआ़मला के मुनासिब नहीं लिहाज़ा इसी पर इक्तिफ़ा करना चाहिये।

﴾2﴿....मुतकल्लिम की ता'ज़ीम :

क़ारिये कुरआन को चाहिये कि तिलावते कुरआन शुरूअ़ करते वक़्त दिल में मुतकल्लिम की अ़ज़मत ज़ाहिर करे और येह जाने कि जो कुछ मैं पढ़ रहा हूं येह बन्दों का कलाम नहीं। कलामे मजीद की तिलावत में बहुत ज़ियादा ख़त़रा है क्यूंकि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

لَّا یَمَسُّهٗۤ اِلَّا الْمُطَهَّرُوْنَؕ(۷۹) (پ۲۷، الواقعۃ:۷۹) ***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :*** *इसे न छूएं मगर बा वुज़ू।*

जिस त़रह़ ज़ाहिरी जिल्दे कुरआन और इस के अवराक़ का येह अदब है कि आदमी का जिस्म बिग़ैर त़हारत इन्हें न लगे इसी त़रह़ इस के मआ़नी का बात़िन भी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हुक्म से पर्दे में है जो दिल के अन्दर हर त़रह़ की नापाकी से पाक हुए बिग़ैर और नूरे ता'ज़ीम व तौक़ीर से मुनव्वर हुए बिग़ैर नहीं आ सकते। जिस त़रह़ हर एक हाथ जिल्दे मुस्ह़फ़ को छूने के लाइक़ नहीं इसी त़रह़ हर ज़बान इस के हुरूफ़ की तिलावत की भी लियाक़त नहीं रखती, न हर एक दिल में इस के मआ़नी ह़ासिल करने की क़ाबिलिय्यत है। इसी ता'ज़ीम के सबब ह़ज़रते सय्यिदुना इ़करमा बिन अबी जह्ल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ जब कुरआने पाक खोलते तो उन पर ग़शी त़ारी हो जाती और फ़रमाते : "येह मेरे परवर दगार عَزَّوَجَلَّ का कलाम है, येह मेरे रब्ब عَزَّوَجَلَّ का कलाम है।"

कलाम की अ़ज़्मत से मुतकल्लिम की अ़ज़्मत होती है और मुतकल्लिम की अ़ज़्मत दिल में तब तक नहीं आ सकती जब तक कि उस की सिफ़ात और जलाल व अफ़्आ़ल में फ़िक्र न करें। पस जब क़ारी के दिल में अ़र्श, कुरसी, आस्मान, ज़मीन और इन के दरमियान की चीज़ें या'नी जिन्नो इन्स और दरख़्त व हैवानात आएं और वोह यक़ीन से जाने कि इन सब का पैदा करने वाला, इन पर कुदरत रखने वाला, इन्हें रोज़ी देने वाला वाहिद व यक्ता है और सब के सब उस के क़बज़ए कुदरत में और उस के फ़ज़्लो रह़मत और अ़ज़ाब व सुतूत में मुतरद्दिद हैं अगर वोह इन्आ़म करेगा तो अपने फ़ज़्ल से और अगर अ़ज़ाब देगा तो अपने अ़द्ल से। उसी का इरशाद है कि "येह लोग बहिश्त के लिये हैं और मुझे कोई परवाह नहीं और येह लोग दोज़ख़ के लिये हैं और मुझे कोई परवाह नहीं।" येह अ़ज़्मत व बुज़ुर्गी की इन्तिहा है। ऐसे उमूर में ग़ौरो फ़िक्र करने से मुतकल्लिम की अ़ज़्मत दिल में पैदा होती है फिर कलाम की अ़ज़्मत इस में जा गुज़ीं होती है।

﴾3﴿.....हुज़ूरे क़ल्ब के आदाब :

हुज़ूरे क़ल्ब के साथ तिलावत करना और दिल में पैदा होने वाले ख़यालात को तर्क करना। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन फ़रमाते हैं : इस फ़रमाने बारी तआ़ला : "يٰيَحۡيٰى خُذِ الۡكِتٰبَ بِقُوَّةٍ ؕ" (پ١٦،مریم:١٢) में "قوة" से मुराद कोशिश व इजतिहाद है और कोशिश के साथ पकड़ने का मत़लब येह है कि इस की क़िराअत के वक़्त सिर्फ़ इसी की त़रफ़ तवज्जोह हो किसी दूसरी जानिब न हो।"

क़ुरआन से ज़ियादा मह़बूब कुछ नहीं :

किसी नेक बन्दे से पूछा गया कि तिलावते क़ुरआन के दौरान आप अपने नफ़्स से भी कोई बात करते हैं? (या'नी दिल में किसी और चीज़ का ख़याल आता है?) उन्हों ने फ़रमाया : "क्या कोई चीज़ मुझे क़ुरआन से ज़ियादा मह़बूब होगी कि मैं नफ़्स से उस के बारे में गुफ़्त्गू करूं।"

बा'ज़ बुज़ुर्ग जब क़ुरआने करीम की कोई आयत पढ़ते और दिल इस की त़रफ़ मुतवज्जेह न होता तो उसे दोबारा पढ़ते। येह सिफ़त ता'ज़ीमे कलाम से पैदा होती है जिस का पहले ज़िक्र हुवा क्यूंकि जो शख़्स पढ़े जाने वाले कलाम की ता'ज़ीम करता है वोह उस पर ख़ुश होता और उस से मानूस होता है और उस से ग़ाफ़िल नहीं होता।

बाग़ात, हुजरे, दुल्हनें और रेशमी लिबास वग़ैरा :

क़ुरआने पाक में उन्स की बातें हैं अगर पढ़ने वाला इस का अहल हो तो वोह ग़ैर के ज़रीए कैसे उन्स ह़ासिल करेगा। क़ुरआने पाक में सैर व सियाहत और ख़ुशी के मक़ामात हैं और जो

शख़्स सैरो तफ़रीह़ के मक़ाम पर हो वोह दूसरी त़रफ़ मुतवज्जेह नहीं होता। मन्कूल है कि कु़रआने पाक में मैदान, बाग़ात, हुजरे, दुल्हनें, रेशमी लिबास, बाग़ीचे और सराएं हैं। लफ़्ज़े میـــم कु़रआने पाक के मैदान हैं, लफ़्ज़े را कु़रआने पाक के बाग़ात है लफ़्ज़े طا इस के हुजरे हैं, तस्बीह़ से शुरूअ़ होने वाली सूरतें कु़रआने पाक की दुल्हनें हैं, حٰمٓ कु़रआने पाक के रेशमी कपड़े हैं, मुफ़स्सल सूरतें इस के बाग़ीचे हैं और इस के इ़लावा सराएं हैं। जब कु़रआने पाक पढ़ने वाला मैदानों में दाख़िल होता, बाग़ात से फल चुनता, हुजरों में दाख़िल हो कर दुल्हनों के पास जाता, रेशमी लिबास पहनता, बाग़ीचों में सैर करता है और सराए में सुकूनत इख़्तियार करता है तो येह सब उसे घेर लेता और अपने मासिवा से फेर देता है, फिर न तो उस का दिल दूसरी त़रफ़ मुतवज्जेह होता है और न ही उस की सोच मुन्तशिर होती है।

﴾4﴿.....ग़ौरो फ़िक्र करना :

येह हुज़ूरे क़ल्ब के इ़लावा है क्यूंकि कभी तिलावत करने वाला कु़रआन के इ़लावा में ग़ौर तो नहीं करता मगर फ़क़त़ कु़रआन सुनने पर इक्तिफ़ा करता है, इस में तदब्बुर नहीं करता ह़ालांकि क़िराअत से मक़्सूद तदब्बुर करना है, इसी लिये तरतील से (या'नी ठहर ठहर कर) तिलावत करना मसनून है क्यूंकि अगर ज़ाहिरन ठहर ठहर कर पढ़ेगा तो ग़ौरो ख़ौज़ भी करेगा।

अनमोल मोती :

अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَهُ الْکَرِیْم फ़रमाते हैं : "उस इ़बादत में कोई भलाई नहीं जिस में समझ न हो और उस क़िराअत में कोई बेहतरी नहीं जिस में ग़ौरो फ़िक्र न हो।"

अगर बार बार पढ़े बिग़ैर ग़ौरो फ़िक्र पर क़ादिर न हो तो बार बार पढ़े। अलबत्ता, इमाम की इक़्तिदा में हो तो ऐसा न करे क्यूंकि अगर वोह एक आयत में ग़ौरो फ़िक्र करता रहा और इमाम दूसरी में मश्ग़ूल हो गया तो येह शख़्स गुनहगार होगा। इस की मिषाल उस शख़्स जैसी है कि कोई इस के कान में कोई कलिमा कहे और वोह इस के एक लफ़्ज़ से तअ़ज्जुब करने लगे और बाक़ी कलाम में ग़ौरो फ़िक्र न करे। इसी त़रह़ अगर वोह रुकूअ़ की तस्बीह़ में हो और उस आयत में ग़ौरो फ़िक्र करना शुरूअ़ कर दे जो इमाम साह़िब ने पढ़ी तो येह वस्वसा है।

ह़िकायत :- इस बारगाह से कैसे फिरूं :

मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना आ़मिर बिन अ़ब्दे क़ैस رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया : "मुझे नमाज़ में वस्वसे आते हैं।" अ़र्ज़ की गई : "क्या दुन्यावी मुआ़मलात के वस्वसे आते हैं ?"

फ़रमाया : "मुझे दुन्या के वस्वसों से ज़ियादा पसन्द येह है कि मुझ में नेज़े आर पार कर दिये जाएं। मेरा दिल रब्ब عَزَّوَجَلَّ के हुज़ूर खड़ा होने में लग जाता है और सोचता हूं कि इस बारगाह से कैसे फिरूं।"

आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने इसे वस्वसा शुमार किया और येह वस्वसा ही है कि नमाज़ी जो कुछ पढ़ रहा हो उसे समझने नहीं देता और शैतान कामिलुल ईमान लोगों पर इसी त़रह़ क़ाबू पाता है कि उन्हें किसी दीनी काम में मश्ग़ूल कर देता बल्कि इस के ज़रीए अफ़्ज़ल काम से रोकता है। जब ह़ज़रते इमाम ह़सन बसरी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی से येह बात की गई तो आप ने फ़रमाया : "अगर तुम उन के मुतअ़ल्लिक़ येह सच कहते हो तो हम पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने येह एह़सान नहीं फ़रमाया।"

तिलावत हो तो ऐसी :

मरवी है कि एक बार हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ पढ़ी और इसे 20 मरतबा दोहराया। 20 बार इस लिये दोहराया क्यूंकि आप صَلَّی اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم इस के मआ़नी में ग़ौरो फ़िक्र कर रहे थे।

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़र गिफ़ारी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है कि एक रात हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّی اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने हमारे पास क़ियाम फ़रमाया आप एक ही आयते मुक़द्दसा बार बार पढ़ते रहे। वोह आयत येह है :

اِنۡ تُعَذِّبۡهُمۡ فَاِنَّهُمۡ عِبَادُكَ ۚ وَ اِنۡ تَغۡفِرۡ لَهُمۡ فَاِنَّكَ اَنۡتَ الۡعَزِيۡزُ الۡحَكِيۡمُ ﴿۱۱۸﴾ (پ۷، المآئدۃ:۱۱۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *अगर तू उन्हें अ़ज़ाब करे तो वोह तेरे बन्दे हैं और अगर तू उन्हें बख़्श दे तो बेशक तू ही है ग़ालिब ह़िक्मत वाला।* (1)

एक रात ह़ज़रते सय्यिदुना तमीम बिन औस दारी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ खड़े हो कर येह आयते मुबारका बार बार पढ़ते रहे :

اَمۡ حَسِبَ الَّذِيۡنَ اجۡتَـرَحُوا السَّيِّاٰتِ اَنۡ نَّجۡعَلَهُمۡ كَالَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ۙ (پ۲۵، الجاثیۃ:۲۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *क्या जिन्हों ने बुराइयों का इर्तिकाब किया येह समझते हैं कि हम इन्हें उन जैसा कर देंगे जो ईमान लाए और अच्छे काम किये।*

ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन जुबैर رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه एक रात खड़े हो कर येह आयत तिलावत करते रहे :

وَامۡتَازُوا الۡيَوۡمَ اَيُّهَا الۡمُجۡرِمُوۡنَ ﴿۵۹﴾ (پ۲۳، یٰسٓ:۵۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और आज अलग फट जाओ ऐ मुजरिमो !*

---

(1) ......سنن ابن ماجه، كتاب اقامة الصلاة و السنة فيها، باب ما جاء في القراءة ......الخ، الحديث: ۱۳۵۰، ج ۲، ص ۱۳۷، بتغير۔

एक बुज़ुर्ग फ़रमाते हैं : "मैं एक सूरत शुरूअ़ करता हूं और उस में ऐसी बात का मुशाहदा करता हूं कि सुब्ह़ तक खड़ा रहता हूं और वोह सूरत मुकम्मल नहीं होती।"

एक और बुज़ुर्ग के बारे में मन्क़ूल है, फ़रमाते हैं : "जिस आयते मुबारका को मैं समझे बिग़ैर बे तवज्जोगी से पढ़ता हूं उसे बाइ़षे षवाब नहीं समझता।"

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सुलैमान दारानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّوْرَانِی फ़रमाते हैं : "मैं क़ुरआने पाक की कोई आयत पढ़ता हूं तो चार पांच रातें उसी में ग़ौरो फ़िक्र करते गुज़र जाती हैं अगर मैं ख़ुद उस में ग़ौरो फ़िक्र करना न छोड़ूं तो दूसरी आयत की नोबत ही न आए।"

एक बुज़ुर्ग फ़रमाते हैं : "मैं **6** माह सूरए हूद को बार बार पढ़ता रहा लेकिन उस में ग़ौरो फ़िक्र करने से फ़ुरसत न मिली।"

मा'रिफ़ते इलाही रखने वाले एक बुज़ुर्ग फ़रमाते हैं : "मैं हर जुमुआ़ एक ख़त्मे क़ुरआन करता हूं और हर महीने में एक ख़त्म करता हूं और हर साल एक ख़त्म करता हूं और तीस साल से एक ख़त्म कर रहा हूं जिस से अभी तक फ़ारिग़ नहीं हुवा और येह मुद्दत तदब्बुर व तफ़्तीश के दर्जात के ए'तिबार से है।"

इन्ही का क़ौल है, फ़रमाते हैं : "मैं ने अपने नफ़्स को मज़दूर के क़ाइम मक़ाम ठहरा लिया है इसी लिये मैं इस से रोज़ाना भी काम लेता हूं, हफ़्तावार भी, माहाना भी और सालाना भी।"

﴾5﴿.....समझना :

इस से मुराद येह है कि हर आयत की उस के मुत़ाबिक़ वज़ाह़त करना क्यूंकि क़ुरआने पाक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की सिफ़ात, उस के अफ़्आ़ल और अम्बियाए किराम عَلَیْهِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام और उन्हें झुटलाने वालों के अह़वाल के ज़िक्र पर मुश्तमिल है और येह कि वोह कैसे हलाक किये गए। नीज़ क़ुरआने पाक अह़कामे इलाही, तम्बीहात और जन्नत व दोज़ख़ के ज़िक्र पर मुश्तमिल है।

सिफ़ाते बारी तआ़ला :

सिफ़ात का बयान इन आयात में है। चुनान्चे, इरशाद होता है :

لَيْسَ كَمِثْلِهٖ شَیْءٌ ۚ وَهُوَ السَّمِیْعُ الْبَصِیْرُ ﴿۱۱﴾

(پ۲۵، الشوریٰ:۱۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *उस जैसा कोई नहीं और वोही सुनता देखता है।*

एक मक़ाम पर इरशाद फ़रमाया :

اَلْمَلِكُ الْقُدُّوْسُ السَّلٰمُ الْمُؤْمِنُ الْمُهَيْمِنُ الْعَزِيْزُ الْجَبَّارُ الْمُتَكَبِّرُ ؕ (پ۲۸،الحشر:۲۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बादशाह निहायत पाक सलामती देने वाला अमान बख़्शने वाला हिफ़ाज़त फ़रमाने वाला इ़ज़्ज़त वाला अ़ज़मत वाला तकब्बुर वाला ।

इन अस्मा व सिफ़ात के मआ़नी में ग़ौरो फ़िक्र कीजिये ताकि इन के असरार मुन्कशिफ़ हों । हर एक के तह़्त बहुत से मआ़नी पोशीदा हैं जो सिर्फ़ तौफ़ीक़ वालों पर ही मुन्कशिफ़ होते हैं ।

अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने अपने इस फ़रमान में इसी त़रफ़ इशारा फ़रमाया कि "मुझे हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने कोई ऐसी खुफ़्या बात न बताई जो लोगों से छुपा रखी हो मगर ह़क़ीक़त येह है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ किसी बन्दे को अपनी किताब की समझ अ़त़ा फ़रमा देता है ।"[1] पस हर एक को इस समझ की त़लब का ह़रीस होना चाहिये ।

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं : "जो अव्वलीन व आख़िरीन का इ़ल्म चाहता हो उसे चाहिये कि क़ुरआन में बह़्सो मुबाह़सा करे ।"

क़ुरआन के बड़े बड़े उ़लूम अस्मा व सिफ़ाते इलाहिय्या के तह़्त हैं क्यूंकि अकषर मख़्लूक़ इन का इदराक नहीं कर सकती सिवाए उन उमूर के जो उन की समझ में आ सकते हों और वोह उस के वाज़ेह़ ह़क़ाइक़ और पोशीदा बारीक बातों पर आगाह नहीं होते ।

अफ़्आ़ले इलाहिय्या :

इन्हें उन आयात से समझा जा सकता है जिन में ज़मीनो आस्मान की तख़्लीक़ का ज़िक्र है । तिलावत करने वाला उन से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की सिफ़ात और उस के जलाल को समझे क्यूंकि फ़े'ल फ़ाइल पर दलालत करता है कि काम की अ़ज़मत ख़ालिक़ की अ़ज़मत पर दलालत करती है । लिहाज़ा बन्दे को चाहिये कि फ़े'ल में फ़ाइल को देखे न कि फ़े'ल को । जिस ने ह़क़ को पहचान लिया वोह हर चीज़ में उसे देखता है क्यूंकि हर चीज़ उसी से है, उसी की त़रफ़ है, उसी के साथ है और उसी के लिये है । ह़क़ीक़तन हर एक का येही मज़हब है । जो हर देखी हुई चीज़ में उसे नहीं देखता गोया उस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को पहचाना ही नहीं और जिस ने उसे पहचान लिया उस ने जान लिया कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा हर चीज़ बात़िल और उस की ज़ात के सिवा हर चीज़ हलाक होने वाली है । येह मुराद नहीं कि वोह चीज़ दूसरी ह़ालत में

---

1 ......سنن النسائی، کتاب القسامة والقود:سقوط القود من المسلم للکافر، الحدیث:۴۷۵۳، ص ۷۶۴۔

बातिल है बल्कि अगर उस की ज़ात का ए'तिबार किया जाए तो वोह अभी बातिल है और अगर यूं ए'तिबार किया जाए कि वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस की कुदरत के साथ मौजूद है तो वोह बित्तबअ़ क़ाइम व षाबित है जब कि ज़ाती तौर पर महूज़ बातिल है। येह इल्मे मुकाशफ़ा की इब्तिदाई बातों में से है। इस लिये तिलावत करने वाला जब इन आयाते तय्यिबा की तिलावत करे :

《1》 اَفَرَءَيْتُمْ مَّا تَحْرُثُوْنَ ﴿٦٣﴾ (پ۲۷،الواقعۃ:۶۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *तो भला बताओ तो जो बोते हो।*

《2》 اَفَرَءَيْتُمْ مَّا تُمْنُوْنَ ﴿٥٨﴾ (پ۲۷،الواقعۃ:۵۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *तो भला देखो तो वोह मनी जो गिराते हो।*

《3》 اَفَرَءَيْتُمُ الْمَآءَ الَّذِيْ تَشْرَبُوْنَ ﴿٦٨﴾ (پ۲۷،الواقعۃ:۶۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *तो भला बताओ तो वोह पानी जो पीते हो।*

《4》 اَفَرَءَيْتُمُ النَّارَ الَّتِيْ تُوْرُوْنَ ﴿٧١﴾ (پ۲۷،الواقعۃ:۷۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *तो भला बताओ तो वोह आग जो तुम रोशन करते हो।*

तो उस की नज़र पानी, आग, खेती और मनी पर न ठहर जाए बल्कि माद्दए मनविय्या में ग़ौरो फ़िक्र करे जो अज्ज़ा की मिष्ल नुत़्फ़ा है फिर इस के गोश्त, हड्डियों, रगों और पठ्ठों में तक़्सीम होने को देखे और येह भी देखे कि उस के आ'ज़ा मुख़्तलिफ़ शक्लों मषलन सर, हाथ, पाउं, जिगर, और दिल वग़ैरा में कैसे मुतशक्किल होते हैं, फिर उन अच्छी सिफ़ात की त़रफ़ नज़र करे जो इस में पैदा होती हैं : जैसे वोह सुनता, देखता, समझता है वग़ैरा वग़ैरा और मज़्मूम आ़दात की त़रफ़ देखे : जैसे ग़ुस्सा, शहवत, तकब्बुर, जहालत, तक्ज़ीब और झगड़ा वग़ैरा जैसा कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

اَوَلَمْ يَرَ الْاِنْسَانُ اَنَّا خَلَقْنٰهُ مِنْ نُّطْفَةٍ فَاِذَا هُوَ خَصِيْمٌ مُّبِيْنٌ ﴿٧٧﴾ (پ۲۳،یٰسٓ:۷۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और क्या आदमी ने न देखा कि हम ने उसे पानी की बूंद से बनाया जभी वोह सरीह़ झगड़ालू है।*

इन अ़जाइबात में ग़ौर करे ताकि सब से ज़ियादा अ़जीब तक पहुंचे और येह वोह सिफ़त है जिस से येह अ़जीब उमूर सादिर हुए। लिहाज़ा मुसलसल सन्अ़त (कारीगरी) में ग़ौरो ख़ौज़ करता रहे ताकि सानेअ़ को देख ले।

अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के अह़वाल :

जहां तक अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के अह़वाल का तअ़ल्लुक़ है तो जब सुने कि इन ह़ज़रात को किस त़रह़ झुटलाया गया, कैसे मारा गया, कैसे बा'ज़ को शहीद किया गया तो इस से

समझे कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ रसूलों और जिन की त़रफ़ इन्हें मबऊ़ष किया गया उन से बे नियाज़ है और येह कि अगर वोह उन तमाम को हलाक कर दे तब भी उस की बादशाहत में कुछ फ़र्क़ न आएगा। जब अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की मदद के बारे में सुने तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की वाज़ेह क़ुदरत और उस चीज़ को समझे कि वोह ह़क़ की मदद का ही इरादा फ़रमाता है।

झुटलाने वालों का तज़्किरा :

झुटलाने वालों मषलन आ़द व षमूद वग़ैरा के ह़ालात और उन पर नाज़िल होने वाले अ़ज़ाब के मुतअ़ल्लिक़ पढ़े तो दिल में अल्लाह तआ़ला के अ़ज़ाब और ग़लबा व क़ुदरत का ख़ौफ़ पैदा करे और इन बातों से इ़ब्रत ह़ासिल करे कि अगर ग़ाफ़िल और बे अदब दी गई मोहलत से धोके में रहा तो मुमकिन है कि इस पर भी वोही अ़ज़ाब नाज़िल हो और इस के बारे में भी वोही फ़ैसला हो (जो इन के ह़क़ में हुवा)। इसी त़रह़ जब जन्नत व दोज़ख़ के औसाफ़ और जो कुछ क़ुरआन में इस के मुतअ़ल्लिक़ है सुने तो इन में अपनी इस्तित़ाअ़त के मुत़ाबिक़ ग़ौर करे क्यूंकि सब बातों को समझना मुमकिन नहीं इस लिये कि इस की कोई इन्तिहा नहीं और हर बन्दे को वोही मिलता है जो उस के लिये मुक़द्दर है। इरशादे बारी तआ़ला है :

وَلَا رَطْبٍ وَّلَا يَابِسٍ اِلَّا فِیْ كِتٰبٍ مُّبِیْنٍ ﴿۵۹﴾

(پ۷، الانعام: ۵۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और न कोई तर और न ख़ुश्क जो एक रोशन किताब में लिखा न हो।*

एक जगह इरशाद होता है :

قُلْ لَّوْ كَانَ الْبَحْرُ مِدَادًا لِّكَلِمٰتِ رَبِّیْ لَنَفِدَ الْبَحْرُ قَبْلَ اَنْ تَنْفَدَ كَلِمٰتُ رَبِّیْ وَلَوْ جِئْنَا بِمِثْلِهٖ مَدَدًا ﴿۱۰۹﴾ (پ۱۶، الکھف: ۱۰۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *तुम फ़रमा दो अगर समन्दर मेरे रब्ब की बातों के लिये सियाही हो तो ज़रूर समन्दर ख़त्म हो जाएगा और मेरे रब्ब की बातें ख़त्म न होंगी अगर्चे हम वैसा ही और उस की मदद को ले आएं।*

इसी लिये अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने फ़रमाया : "अगर मैं चाहूं तो सूरए फ़ातिह़ा की तफ़्सीर से 70 ऊंट भर दूं।"

जो कुछ हम ने ज़िक्र किया इस से समझने के त़रीक़े पर आगाह करना मक़्सूद है ताकि इस का दरवाज़ा खुले। जहां तक तफ़्सील बयान करने का तअ़ल्लुक़ है तो इस की तम्अ़ नहीं

की जा सकती और जो शख़्स कुरआन के मज़ामीन को अदना तौर पर भी न समझे तो वोह उन लोगों में दाखि़ल है जिन का तज़्किरा इस आयते त़य्यिबा में है। चुनान्चे, इरशादे बारी तआ़ला है :

وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّسْتَمِعُ اِلَيْكَ ۚ حَتّٰۤى اِذَا خَرَجُوْا مِنْ عِنْدِكَ قَالُوْا لِلَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ مَاذَا قَالَ اٰنِفًا ۫ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ طَبَعَ اللّٰهُ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ (پ۲۶، محمد:۱۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और इन में से बा'ज़ तुम्हारे इरशाद सुनते हैं यहां तक कि जब तुम्हारे पास से निकल कर जाएं इल्म वालों से कहते हैं "अभी इन्हों ने क्या फ़रमाया ?" येह हैं वोह जिन के दिलों पर अल्लाह ने मुहर कर दी।*

त़ाबेअ़ (या'नी मुहर) से मुराद वोह रुकावटें हैं जिन्हें हम मवानए फ़ह्म (समझ में रुकावट बनने वाले उमूर) के तह़्त बयान करेंगे। मन्क़ूल है कि आदमी उस वक़्त तक मुरीद (इरादा करने वाला) नहीं हो सकता जब तक कि अपने मत़्लूब को कुरआन से न पा ले और इस से मज़ीद नुक़्सान न जान ले और मौला عَزَّوَجَلَّ की ह़िमायत ह़ासिल कर के बन्दों से बे परवाह न हो जाए।

﴿6﴾....मआ़नी समझने में रुकावट बनने वाले अस्बाब का ख़ातिमा :

बहुत से लोग इन अस्बाब और पर्दों की वजह से कुरआने पाक के मआ़नी को समझने से रुक गए जो शैत़ान ने उन के दिलों पर डाल रखे हैं। लिहाज़ा वोह कुरआने पाक के अ़जाइब व असरार से अन्धे हो गए। चुनान्चे, हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहि़बे लौलाक, सय्याहे़ अफ़्लाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "अगर बनी आदम के दिलों पर शयात़ीन घेरा न डाले होते तो वोह आ़लमे मल्कूत को देख लेते।"(1)

कुरआन के मआ़नी भी "**मलकूत**" में दाखि़ल हैं और हर वोह चीज़ जो ह़वासे ज़ाहिरा से ग़ाइब हो और सिवाए नूरे बसीरत के किसी चीज़ के ज़रीए इस का इदराक न किया जा सके वोह भी "**मलकूत**" में दाखि़ल है।

कु़रआन के मा'ना समझने में ह़ाइल रुकावटें :

कुरआन के मआ़ना समझने की राह में चार रुकावटें ह़ाइल हैं :

पहली रुकावट : येह है कि क़ारिये कुरआन की तमाम तर तवज्जोह व फ़िक्र हुरूफ़ को मख़ारिज से अदा करने की त़रफ़ रहे। इस काम का ज़िम्मेदार एक शैत़ान है जो क़ारियों पर

1 ......التفسیر الکبیر، ج ۱، ص ۸۵۔

मुसल्लत़ है ताकि इन्हें कलामे इलाही का मआ़नी समझने से (दूसरी त़रफ़) फेर दे। लिहाज़ा वोह येह ख़याल पैदा कर के कि अभी ह़र्फ़ अपने मख़रज से अदा नहीं हुवा मुसलसल इस ह़र्फ़ के बार बार पढ़ने पर उभारता रहता है तो जब पूरी तवज्जोह व फ़िक्र मख़ारिजे ह़ुरूफ़ की त़रफ़ रहेगी तो उस के लिये मआ़नी कैसे रोशन होंगे और शैत़ान का सब से बड़ा मसख़रा वोह शख़्स है जो इस क़िस्म के मुग़ालते में आ जाता है।

दूसरी रुकावट : येह है कि वोह सुनी सुनाई बातों की पैरवी करे और इसी पर जम जाए, अपनी बसीरत व मुशाहदे के ज़रीए उस तक पहुंचे बिग़ैर सिर्फ़ इन्हीं बातों की पैरवी करे और उस के दिल में तअ़स्सुब पैदा हो जाए। येह वोह शख़्स है जिसे उस के ए'तिक़ाद ने आगे बढ़ने से क़ैद कर रखा है। उस के दिल में अपने अ़क़ीदे के सिवा कुछ भी दाख़िल नहीं हो सकता लिहाज़ा उस की नज़र अपने सुने सुनाए अ़क़ीदे पर ही मौक़ूफ़ रहती है, अगर दूर से उस के लिये रोशनी की कोई किरन चमके और मआ़निये क़ुरआन में से कोई मा'ना ज़ाहिर हो लेकिन वोह उस के अ़क़ीदे के ख़िलाफ़ हो तो तक़्लीद का भूत उस पर ह़म्ला करते हुए कहता है "तेरे दिल में येह ख़याल कैसे आ गया ह़ालांकि येह तेरे बाप दादा के अ़क़ीदे के ख़िलाफ़ है" तो वोह इस मा'ना को शैत़ान का फ़रेब ख़याल कर के इस से दूर रहता और इस त़रह़ दीगर मआ़नी से बचता है।

इसी क़िस्म के लोगों के लिये सूफ़ियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام फ़रमाते हैं : "اِنَّ الْعِلْمَ حِجَابٌ या'नी इ़ल्म एक ह़िजाब है।" इ़ल्म से इन की मुराद वोह अ़क़ाइद हैं जिन पर बहुत से लोग मह़्ज़ सुनी सुनाई बातों की पैरवी या उन मुनाज़राना कलिमात की वजह से क़ाइम हैं जो मज़्हब के मुतअ़स्सिब लोगों ने लिख कर इन्हें दे दिये हैं। इ़ल्मे ह़क़ीक़ी तो नूरे बसीरत के ज़रीए ह़ासिल होने वाले कश्फ़ व मुशाहदे का नाम है, येह कैसे ह़िजाब हो सकता है? ह़ालांकि येही तो मत़्लूब व मक़्सूद की इन्तिहा है।

येह तक़्लीद कभी बात़िल होती है, इस वक़्त मआ़निये क़ुरआन समझने की राह में रुकावट बनती है। जैसा कि वोह शख़्स जो "اِسْتَوٰی عَلَی الْعَرْشِ" से येह अ़क़ीदा रखे कि **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ अ़र्श पर ठहरे और क़रार पकड़े हुए हैं, अगर इस वक़्त **अल्लाह** क़ुद्दूस عَزَّ وَجَلَّ के बारे में उस के दिल में येह ख़याल आए भी कि वोह उन तमाम बातों से पाक है जो मख़्लूक़ के लिये जाइज़ हैं तो उस का येह अ़क़ीदा इस ख़याल को उस के दिल में जमने नहीं देगा, अगर बिल्फ़र्ज़ जम भी जाए तब भी येह इसे दूसरे कश्फ़ फिर तीसरे कश्फ़ की त़रफ़ ले जाएगा और वोह इस के ज़रीए सरीह़ ह़क़ तक पहुंच जाएगा लेकिन इस ख़याल को अपने दिल से निकालने में वोह जल्दी करेगा क्यूंकि येह उस के बात़िल अ़क़ीदे से टकराता है।

बा'ज़ अवक़ात तक़्लीद ह़क़ होती है लेकिन फिर भी मआ़निये क़ुरआन समझने और मुन्कशिफ़ होने की राह में रुकावट होती है क्यूंकि मख़्लूक़ को जिस ह़क़ के ए'तिक़ाद का मुकल्लफ़ बनाया गया है उस के बहुत से मरातिब व दर्जात हैं। उस का एक ज़ाहिरी मब्दा होता है और एक बातिनी गहराई होती है और त़बीअ़त का ज़ाहिर पर जम जाना बातिनी गहराई तक पहुंचने से रुकावट बनता है। इसे हम ने "क़वाइदे अ़क़ाइद के बयान में" इल्मे ज़ाहिर व बातिन में फ़र्क़ करते हुए बयान कर दिया है।

तीसरी रुकावट : येह है कि क़ारिये क़ुरआन गुनाह पर मुसिर्र या सिफ़ते तकब्बुर से मुत्तसिफ़ हो या दुन्यवी ख़्वाहिशात में मुब्तला हो और इन के पीछे चले, येह चीज़ें क़ल्ब के तारीक और ज़ंग आलूद होने का सबब हैं। येह उस शीशे की मानिन्द है जिस पर कोई मैल लगी हो जिस के सबब अ़क्स वाज़ेह़ न, इसी त़रह़ येह चीज़ें ह़क़ की तजल्ली में रुकावट होती हैं जिस के बाइ़ष ह़क़ दिल पर सह़ीह़ त़रह़ वाज़ेह़ व रोशन नहीं होता। येह दिल के लिये बहुत बड़ा ह़िजाब है और अकषर लोग इसी ह़िजाब का शिकार हैं। जैसे जैसे शहवात ज़ियादा होती रहती हैं, कलामे इलाही के मआ़नी समझने की राह में ह़िजाब भी बढ़ता रहता है और जैसे जैसे दिल से दुन्या का बोझ हल्का होता है, मआ़निये क़ुरआन की तजल्ली भी क़रीब होती रहती है। पस दिल, आईना की मानिन्द और शहवात, ज़ंग की मानिन्द हैं और मआ़निये क़ुरआन उन सूरतों की त़रह़ हैं जो शीशे में दिखाई देती हैं और शहवात को दूर करने के साथ रियाज़ते क़ल्ब करना शीशे से ज़ंग को साफ़ करने की त़रह़ है।

اَمْر بِالْمَعْرُوْف وَنَہْی عَنِ الْمُنْکَر न करने का नुक़्सान :

रसूले अकरम नूरे मुजस्सम صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जब मेरी उम्मत दिरहम व दीनार को बड़ा समझने लगेगी तो इस्लाम की हैबत उन से निकाल ली जाएगी और जब नेकी का हुक्म देना और बुराई से मन्अ़ करना तर्क कर देगी तो वह़्य की बरकत से मह़रूम हो जाएगी।"(1)

ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ुज़ैल बिन इयाज़ عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْوَھَّاب ने इस क़ौल "वह़्य की बरकत से मह़रूम हो जाएगी" की वज़ाह़त करते हुए फ़रमाया : "वोह क़ुरआने पाक की समझ से मह़रूम हो जाएगी।"

नीज़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने समझ और नसीह़त के लिये (अपनी त़रफ़) रुजूअ़ करने को शर्त़ क़रार दिया है। चुनान्चे, इरशाद होता है :

تَبْصِرَۃً وَّ ذِکْرٰی لِکُلِّ عَبْدٍ مُّنِیْبٍ ﴿۸﴾ (پ۲۶، ق: ۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *सूझ और समझ हर रुजूअ़ वाले बन्दे के लिये।*

(1) ......موسوعۃ لابن ابی الدنیا، کتاب الامر بالمعروف......الخ، الحدیث: ۶۸، ج۲، ص ۲۱۲۔

एक मक़ाम पर इरशाद फ़रमाया :

وَمَا يَتَذَكَّرُ اِلَّا مَنْ يُّنِيْبُ ﴿۱۳﴾ (پ۲۴، المؤمن:۱۳)

***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और नसीह़त नहीं मानता मगर जो रुजूअ़ लाए ।*

एक जगह इरशाद फ़रमाया :

اِنَّمَا يَتَذَكَّرُ اُولُوا الْاَلْبَابِ ﴿۹﴾ (پ۲۳، الزمر:۹)

***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** नसीह़त तो वोही मानते हैं जो अ़क़्ल वाले हैं ।*

पस वोह शख़्स जो दुन्या की फ़रेब कारियों को आख़िरत की ने'मतों पर तरजीह़ दे वोह अ़क़्ल मन्दों में से नहीं है इसी वजह से क़ुरआने पाक के असरार भी इस के लिये मुन्कशिफ़ नहीं होते ।

चौथी रुकावट : येह है कि वोह क़ुरआने पाक की ज़ाहिरी तफ़्सीर पढ़ कर येह अ़क़ीदा रखे कि क़ुरआने पाक के कलिमात के वोही मआ़नी हैं जो ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास, ह़ज़रते सय्यिदुना मुजाहिद (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم) वग़ैरा से मन्क़ूल हैं, इस के इ़लावा जो कुछ भी है तफ़्सीर बिर्राए है और जिस ने अपनी राए से क़ुरआने पाक की तफ़्सीर की उस ने अपना ठिकाना जहन्नम में बना लिया ।

मआ़नी समझने में येह भी बहुत बड़ा ह़िजाब है । अ़न क़रीब चौथे बाब में हम तफ़्सीर बिर्राए का मा'ना बयान करेंगे और येह भी बयान करेंगे कि येह बात अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم के इस क़ौल "मगर येह कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अपने किसी बन्दे को क़ुरआने पाक की समझ अ़ता फ़रमाए" से नहीं टकराती । अगर कलिमाते क़ुरआन के मा'नी सिर्फ़ और सिर्फ़ वोही होते जो ज़ाहिर और मन्क़ूल हैं तो इस में लोगों का इख़्तिलाफ़ न होता ।

﴾7﴿.....तख़्सीस :

इस से मुराद येह है कि क़ुरआने पाक के हर ख़िताब में येह तसव्वुर करे कि इस से मैं ही मक़्सूद हूं, मषलन अम्र व नह्य सुने तो येह ख़याल करे कि येह अम्र व नह्य इसी के लिये है, अगर वा'दा व वईद सुने फिर भी येही तसव्वुर करे और अगर गुज़रे हुए लोगों और अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के वाक़िआ़त सुने तो जान ले कि उन के ज़िक्र करने का मक़्सद मह़ज़ क़िस्से कहानियां बयान करना नहीं बल्कि इन का मक़्सद येह है कि इ़ब्रत ह़ासिल की जाए, लिहाज़ा इन के बयान से इ़ब्रत व नसीह़त ह़ासिल करे, क्यूंकि क़ुरआने पाक में कोई ऐसा वाक़िआ़ नहीं जिस के लाने से ह़ुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم या आप की उम्मत को कोई फ़ाइदा न हुवा हो । इसी वजह से अल्लाह तबारक व तआ़ला ने इरशाद फ़रमाया :

مَانُثَبِّتُ بِهٖ فُؤَادَكَ ۚ (پ۱۲،ھود:۱۲۰)

***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** जिस से तुम्हारा दिल ठहराएं ।*

लिहाज़ा बन्दे को येह ख़याल करना चाहिये कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने कुरआने करीम में अम्बियाए किराम عَلَيۡهِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام, उन के तकालीफ़ पर सब्र करने और उन के नुस्रते इलाही का इन्तिज़ार करते हुए दीन पर षाबित क़दम रहने के जो वाक़िआत बयान फ़रमाए हैं वोह इस लिये हैं ताकि उस का दिल क़ाइम व षाबित रहे और येह ख़याल क्यूं न किया जाए ? ह़ालांकि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने कुरआने पाक को हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर ख़ास तौर पर आप के लिये ही नाज़िल नहीं फ़रमाया बल्कि कुरआने पाक तो तमाम आलमीन के लिये शिफ़ा व रह़मत और हिदायत व नूर है । इसी लिये **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने तमाम लोगों को कुरआने पाक की ने'मत पर शुक्र अदा करने का हुक्म फ़रमाया है । चुनान्चे,

(चन्द आयाते मुबारका मुलाह़ज़ा हों :)

﴾1﴿

وَاذۡكُرُوۡا نِعۡمَتَ اللّٰهِ عَلَيۡكُمۡ وَمَاۤ اَنۡزَلَ عَلَيۡكُمۡ مِّنَ الۡكِتٰبِ وَالۡحِكۡمَةِ يَعِظُكُمۡ بِهٖ ؕ

(پ۲،البقرۃ:۲۳۱)

***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और याद करो **अल्लाह** का एह़सान जो तुम पर है और वोह जो तुम पर किताब और हिक्मत उतारी तुम्हें नसीह़त देने को ।*

﴾2﴿

لَقَدۡ اَنۡزَلۡنَاۤ اِلَيۡكُمۡ كِتٰبًا فِيۡهِ ذِكۡرُكُمۡ ؕ اَفَلَا تَعۡقِلُوۡنَ ۠﴿۱۰﴾ (پ۱۷،الانبیآء:۱۰)

***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** बेशक हम ने तुम्हारी त़रफ़ एक किताब उतारी जिस में तुम्हारी नामवरी है तो क्या तुम्हें अ़क़्ल नहीं ?*

﴾3﴿

وَاَنۡزَلۡنَاۤ اِلَيۡكَ الذِّكۡرَ لِتُبَيِّنَ لِلنَّاسِ مَا نُزِّلَ اِلَيۡهِمۡ (پ۱۴،النحل:۴۴)

***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और ऐ मह़बूब ! हम ने तुम्हारी त़रफ़ येह यादगार उतारी कि तुम लोगों से बयान कर दो जो उन की त़रफ़ उतरा ।*

﴾4﴿

كَذٰلِكَ يَضۡرِبُ اللّٰهُ لِلنَّاسِ اَمۡثَالَهُمۡ ﴿۳﴾

(پ۲۶،محمد:۳)

***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** **अल्लाह** लोगों से उन के अह़वाल यूंही बयान फ़रमाता है ।*

﴾5﴿

وَاتَّبِعُوْۤا اَحْسَنَ مَاۤ اُنْزِلَ اِلَيْكُمْ مِّنْ رَّبِّكُمْ
(پ۲۴،الزمر:۵۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और उस की पैरवी करो जो अच्छी से अच्छी तुम्हारे रब्ब से तुम्हारी त़रफ़ उतारी गई ।

﴾6﴿

هٰذَا بَصَآئِرُ لِلنَّاسِ وَهُدًى وَّرَحْمَةٌ لِّقَوْمٍ يُّوْقِنُوْنَ ۝۲۰ (پ۲۵،الجاثية:۲۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : येह लोगों की आंखें खोलना है और ईमान वालों के लिये हिदायत व रह़मत ।

﴾7﴿

هٰذَا بَيَانٌ لِّلنَّاسِ وَهُدًى وَّمَوْعِظَةٌ لِّلْمُتَّقِيْنَ ۝۱۳۸ (پ۴،اٰل عمرٰن:۱۳۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : येह लोगों को बताना और राह दिखाना और परहेज़गारों को नसीह़त है ।

लिहाज़ा जब ख़ित़ाब का मक़्सूद तमाम लोग हैं तो हर शख़्स फ़र्दन फ़र्दन भी इस ख़ित़ाब का मक़्सूद होगा और येह अकेला क़ुरआने पाक पढ़ने वाला भी इस ख़ित़ाब का मक़्सूद होगा तो अब इसे बाक़ी लोगों से क्या वासित़ा ? इसे येह तसव्वुर करना चाहिये कि वोही इस ख़ित़ाब का मक़्सूद है । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

وَاُوْحِيَ اِلَيَّ هٰذَا الْقُرْاٰنُ لِاُنْذِرَكُمْ بِهٖ وَمَنْۢ بَلَغَ ؕ (پ۷،الانعام:۱۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और मेरी त़रफ़ इस क़ुरआन की वह़्य हुई है कि मैं इस से तुम्हें डराऊं और जिन जिन को पहुंचे ।

गोया अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने कलाम फ़रमाया :

ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन का'ब क़ुरज़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : "مَنْ بَلَغَهُ الْقُرْاٰنُ فَكَاَنَّمَا كَلَّمَهُ اللّٰهُ या'नी जिस के पास क़ुरआने पाक पहुंचा गोया **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उस से कलाम फ़रमाया ।"

क़ुरआन किस निय्यत से पढ़ा जाए ?

जब इस पर क़ादिर (या'नी येह तसव्वुर कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ख़ित़ाब कर रहा है क़ाइम) हो जाए तो मह़ज़ क़ुरआने पाक पढ़ लेने को ही अपना अ़मल मुक़र्रर न कर ले बल्कि इसे इस त़रह़

पढ़े जिस त़रह़ ग़ुलाम अपने आक़ा के ख़त़ को पढ़ता है जो इस की त़रफ़ इस लिये लिखा है ताकि येह इस में ग़ौरो फ़िक्र करे और इस के तक़ाज़े के मुत़ाबिक़ अ़मल करे। इसी वजह से बा'ज़ उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام ने फ़रमाया : "येह क़ुरआन वोह ख़ुत़ूत़ हैं जो हमारे रब्ब عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से हमारे पास अ़हदो पैमान के साथ आए हैं ताकि हम नमाज़ों में इन में ग़ौरो फ़िक्र करें, तन्हाइयों में इन से आगाही ह़ासिल करें और त़ाआ़त व इ़बादात में इन पर अ़मल पैरा हों।"

क़ुरआन बहार है :

ह़ज़रते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَفَّار फ़रमाया करते थे : "ऐ अहले क़ुरआन ! क़ुरआन ने तुम्हारे दिलों में क्या बोया है ? बेशक जैसे बारिश ज़मीन के लिये बहार है ऐसे ही क़ुरआन मोमिन के लिये बहार है।"

ह़ज़रते सय्यिदुना क़तादा बिन दिआ़मा सुदूसी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْبَارِی ने फ़रमाया : "जो शख़्स भी क़ुरआने मजीद की मजलिस में बैठता है वोह नफ़्अ़ या नुक़्सान के साथ उठता है। चुनान्चे, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

هُوَ شِفَآءٌ وَّ رَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ۙ وَلَا يَزِيْدُ الظّٰلِمِيْنَ اِلَّا خَسَارًا ﴿۸۲﴾ (پ۱۵، بنی اسرآءیل:۸۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *वोह चीज़ जो ईमान वालों के लिये शिफ़ा और रह़मत है और उस से ज़ालिमों को नुक़्सान ही बढ़ता है।*

﴿8﴾.....तअष्षुर :

इस से मुराद येह है कि तिलावत करने वाले का दिल मुख़्तलिफ़ आयात से मुख़्तलिफ़ त़रह़ का अषर ले, हर आयत के मा'ना समझने के मुत़ाबिक़ दिल में ह़ाल व वज्द की मुख़्तलिफ़ कैफ़िय्यत पैदा हो यूं कि दिल ख़ौफ़ व ग़म और उम्मीद व रह़मत वग़ैरा सिफ़ात से मौसूफ़ हो, तो जब उस की मा'रिफ़त मुकम्मल हो जाएगी तो दिल में ख़शिय्यते इलाही तमाम अह़वाल पर ग़ालिब होगी क्यूंकि आयाते क़ुरआनिय्या पर तंगी ग़ालिब है इस लिये जहां भी मग़फ़िरत व रह़मत का ज़िक्र होता है, चन्द शराइत़ के साथ मिला होता है जिन्हें पाने से आ़रिफ़ क़ासिर होता है। जैसा कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया :

وَاِنِّیْ لَغَفَّارٌ (پ۱٦، طٰہٰ:۸۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और बेशक मैं बहुत बख़्शने वाला हूं।*

फिर इस के बा'द चार शर्तों का ज़िक्र फ़रमा दिया :

لِّمَنْ تَابَ وَاٰمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا ثُمَّ اهْتَدٰى ﴿۸۲﴾

(پ۱۶، طٰهٰ:۸۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : उसे जिस ने तौबा की और ईमान लाया और अच्छा काम किया फिर हिदायत पर रहा।

इरशादे बारी तआ़ला है :

وَالْعَصْرِ ﴿۱﴾ اِنَّ الْاِنْسَانَ لَفِیْ خُسْرٍ ﴿۲﴾ اِلَّا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَتَوَاصَوْا بِالْحَقِّ ۙ وَتَوَاصَوْا بِالصَّبْرِ ﴿۳﴾ (پ۳۰، العصر: ۱ تا ۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : उस ज़मानए मह़बूब की क़सम ! बेशक आदमी ज़रूर नुक़्सान में है मगर वोह जो ईमान लाए और अच्छे काम किये और एक दूसरे को ह़क़ की ताकीद की और एक दूसरे को सब्र की वसिय्यत की।

इस में भी **अल्लाह** तबारक व तआ़ला ने चार शराइत़ ज़िक्र फ़रमाई हैं। वोह मक़ाम कि जहां एक ऐसी शर्त़ पर इक्तिफ़ा किया जो सब को शामिल है वोह येह है। चुनान्चे, इरशादे बारी तआ़ला है :

اِنَّ رَحْمَتَ اللّٰهِ قَرِیْبٌ مِّنَ الْمُحْسِنِیْنَ ﴿۵۶﴾

(پ۸، الاعراف:۵۶)

*तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक **अल्लाह** की रह़मत नेकों से क़रीब है।*

(इस आयते मुबारका में हुसूले रह़मत के लिये एह़सान को शर्त़ क़रार दिया है और) एह़सान तमाम शराइत़ को शामिल है।

ऐसे ही जो शख़्स क़ुरआने पाक में शुरूअ़ से आख़िर तक तलाश व जुस्तजू करे (वोह इस त़रह़ के मज़ामीन पाएगा)। पस जिस ने येह बात समझ ली उस के लाइक़ येही है कि उस पर ख़ौफ़ व ग़म की कैफ़िय्यत त़ारी हो।

उस की ज़िन्दगी में इन्क़िलाब आ जाता है :

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ह़सन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! जो बन्दा इस ह़ाल में सुब्ह़ करता है कि क़ुरआने पाक पढ़ता और इस पर ईमान रखता है तो उस का ग़म ज़ियादा और ख़ुशी कम हो जाती है, उस का रोना ज़ियादा और हंसना कम हो जाता है, उस की थकावट व मश्ग़ूलिय्यत ज़ियादा और राह़त व फ़राग़त कम हो जाती है।

ह़ज़रते सय्यिदुना वुहैब बिन वर्द رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : "रिवायात और वा'ज़ों में ग़ौर किया तो हम ने क़ुरआने पाक की तिलावत करने, उसे समझने, उस में ग़ौरो फ़िक्र करने से ज़ियादा दिलों को नर्म करने वाली और ग़म व हुज़्न लाने वाली कोई चीज़ न पाई।"

यूं तिलावत करे :

बन्दा तिलावते कुरआन से इस त़रह़ अषर ले कि तिलावत की जाने वाली आयत की सिफ़त के साथ मौसूफ़ हो जाए यूं कि जब वई़द का ज़िक्र हो और मग़्फ़िरत को शराइत़ के साथ ख़ास किया जाए तब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ख़ौफ़ से इतना छोटा और ह़क़ीर बन जाए गोया मरने के क़रीब है। जब रह़मते इलाही की वुस्अ़त का ज़िक्र और मग़्फ़िरत का वा'दा हो तब इतना खुश हो गोया खुशी से उड़ रहा है। जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के अस्मा व सिफ़ात का ज़िक्र हो तब उस के जलाल के सामने आ़जिज़ी करते और उस की अ़ज़्मत को पुकारते हुए झुक जाए। जब कुफ़्फ़ार की उन बातों का ज़िक्र हो जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर मुहा़ल हैं मषलन इन का **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये बीवी व अवलाद षाबित करना, तब अपनी आवाज़ को पस्त करे और उन के इस क़बीह़ क़ौल से ह़या करते हुए दिल में बे बसी की कैफ़िय्यत पैदा करे। जब जन्नत की सिफ़ात का ज़िक्र हो तब दिल में जन्नत का शौक़ पैदा हो और जब जहन्नम की सिफ़ात का ज़िक्र हो तो उस के ख़ौफ़ की वजह से जिस्म कांपने लग जाए कि जब रसूलुल्लाह صَلَّی اللہ تَعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہ تَعالٰی عَنْہُ से इरशाद फ़रमाया : "मेरे सामने तिलावत करो।" आप رَضِیَ اللّٰہ تَعالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : "मैं ने सूरए निसा पढ़नी शुरूअ़ की जब इस आयत पर पहुंचा :"

فَکَیْفَ اِذَا جِئْنَا مِنْ کُلِّ اُمَّةٍۭ بِشَهِیْدٍ وَّ جِئْنَا بِكَ عَلٰی هٰۤؤُلَآءِ شَهِیْدًا (پ۵،النسآء: ۴۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *तो कैसी होगी जब हम हर उम्मत से एक गवाह लाएं और ऐ मह़बूब ! तुम्हें उन सब पर गवाह और निगहबान कर लाएं।*

तो मैं ने आप صَلَّی اللہ تَعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की आंखें अश्क बार देखीं। आप ने इरशाद फ़रमाया : "अब बस करो।" येह कैफ़िय्यत इस वजह से थी कि इस ह़ालत के मुशाहदे ने आप صَلَّی اللہ تَعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के दिल को मुकम्मल त़ौर पर अपनी त़रफ़ मुतवज्जेह कर लिया था।

ख़शिय्यते इलाही रखने वालों में ऐसे लोग भी थे कि वई़द वाली आयात की तिलावत के वक़्त उन पर ग़शी त़ारी हो जाती और बा'ज़ का तो विसाल भी हो जाता।

कलामे इलाही ह़िकायत की निय्यत से न पढ़ा जाए :

इस क़िस्म के अह़वाल तिलावत करने वाले को मह़्ज़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के कलाम की

हि़कायत करने वाला नहीं रहने देते। जब येह आयते मुबारका पढ़े :

اِنِّیۡۤ اَخَافُ اِنۡ عَصَیۡتُ رَبِّیۡ عَذَابَ یَوۡمٍ عَظِیۡمٍ ﴿۱۵﴾ (پ۷،الانعام:۱۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *अगर मैं अपने रब्ब की नाफ़रमानी करूं तो मुझे बड़े दिन के अ़ज़ाब का डर है।*

तो दिल में ख़ौफ़े ख़ुदा भी पैदा करे वगरना वोह मह्‌ज़ हि़कायत करने वाला होगा। जब इस आयते त़य्यिबा की तिलावत करे :

رَبَّنَا عَلَیۡكَ تَوَكَّلۡنَا وَ اِلَیۡكَ اَنَبۡنَا وَ اِلَیۡكَ الۡمَصِیۡرُ ﴿۴﴾ (پ۲۸،الممتحنة:۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *ऐ हमारे रब्ब हम ने तुझी पर भरोसा किया और तेरी ही त़रफ़ रुजूअ़ लाए और तेरी ही त़रफ़ फिरना है।*

तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ पर भरोसा और उस की त़रफ़ रुजूअ़ करे वगरना वोह मह्‌ज़ हि़कायत करने वाला होगा।

जब येह आयते मुक़द्दसा पढ़े :

وَ لَنَصۡبِرَنَّ عَلٰی مَاۤ اٰذَیۡتُمُوۡنَا ؕ (پ۱۳،ابراھیم:۱۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और तुम जो हमें सता रहे हो हम ज़रूर इस पर सब्र करेंगे।*

तो सब्र या इस का पुख़्ता इरादा करे ताकि तिलावत की ह़लावत को पा ले। अगर इन सिफ़ात के साथ मुत्तसिफ़ न हो और दिल इन अह़वाल के मुत़ाबिक़ तब्दील न हो तो इन आयात की तिलावत से इस का हि़स्सा ख़ुद पर सरीह़ ला'नत करते हुए ज़बान को ह़रकत देने के सिवा कुछ नहीं। चुनान्चे, इरशादे ख़ुदा वन्दी है :

اَلَا لَعۡنَةُ اللّٰهِ عَلَی الظّٰلِمِیۡنَ ﴿۱۸﴾ۙ (پ۱۲،ھود:۱۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *अरे ज़ालिमों पर ख़ुदा की ला'नत।*

इरशादे बारी तआ़ला है :

كَبُرَ مَقۡتًا عِنۡدَ اللّٰهِ اَنۡ تَقُوۡلُوۡا مَا لَا تَفۡعَلُوۡنَ ﴿۳﴾ (پ۲۸،الصف:۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *कितनी सख़्त नापसन्द है अल्लाह को वोह बात कि वोह कहो जो न करो।*

और फ़रमाता है :

وَ هُمۡ فِیۡ غَفۡلَةٍ مُّعۡرِضُوۡنَ ۚ﴿۱﴾ (پ۱۷،الانبیآء:۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और वोह ग़फ़्लत में मुंह फेरे हैं।*

एक मक़ाम पर इरशाद होता है :

فَاَعْرِضْ عَنْ مَّنْ تَوَلّٰى ۙ عَنْ ذِكْرِنَا وَلَمْ يُرِدْ اِلَّا الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا ﴿۲۹﴾ (پ۲۷، النجم:۲۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *तो तुम उस से मुंह फेर लो जो हमारी याद से फिरा और उस ने न चाही मगर दुन्या की ज़िन्दगी ।*

एक जगह इरशाद फ़रमाता है :

وَمَنْ لَّمْ يَتُبْ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿۱۱﴾ (پ۲۶، الحجرٰت:۱۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और जो तौबा न करें तो वोही ज़ालिम हैं ।*

इस मौज़ूअ़ पर इस के इलावा भी बहुत सी आयात हैं । नीज़ येह शख़्स इन फ़रामीने बारी तआ़ला में दाख़िल है । चुनान्चे, इरशाद होता है :

وَمِنْهُمْ اُمِّيُّوْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ الْكِتٰبَ اِلَّاۤ اَمَانِيَّ (پ۱، البقرۃ:۷۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और इन में कुछ अनपढ़ हैं कि जो किताब को नहीं जानते मगर ज़बानी पढ़ लेना ।*

और फ़रमाता है :

وَكَاَيِّنْ مِّنْ اٰيَةٍ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ يَمُرُّوْنَ عَلَيْهَا وَهُمْ عَنْهَا مُعْرِضُوْنَ ﴿۱۰۵﴾ (پ۱۳، یوسف:۱۰۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और कितनी निशानिया हैं आस्मानों और ज़मीन में कि लोग इन पर गुज़रते हैं और इन से बे ख़बर रहते हैं !*

कुरआने पाक ज़मीनो आस्मान की निशानियों को बयान करने वाला है और जब तिलावत करने वाला इन्हें पढ़ कर आगे गुज़र जाता है और इन से अषर नहीं लेता तो गोया वोह इन से बे ख़बर है ।

मेरे कलाम को भी छोड़ दे :

इसी वजह से मन्क़ूल है कि वोह शख़्स जो कुरआने पाक के अख़्लाक़ से मुत्तसिफ़ नहीं जब कुरआन पढ़ता है तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे निदा फ़रमाता है : "तुझे मुझ से और मेरे कलाम से क्या तअ़ल्लुक़ ? हालांकि तू मुझ से रू गर्दानी करता है । अगर तू मेरी बारगाह में तौबा नहीं करता तो मेरे कलाम को भी छोड़ दे ।"

तिलावत करने वाले नाफ़रमान की मिषाल :

कुरआने पाक को बार बार पढ़ने वाले नाफ़रमान की मिषाल उस शख़्स की त़रह है जो किसी बादशाह के ख़त़ को हर रोज़ कई बार पढ़े जिस में येह लिखा है कि मुल्क को आबाद कर

और येह इसे वीरान करने में मश्गूल है, फ़क़त़ ख़त़ पढ़ने पर ही इक्तिफ़ा किये हुए है हुक्म पर अ़मल नहीं करता, अगर वोह उसे न पढ़ता और हुक्म की मुख़ालफ़त करता तो उस के कलाम से कम मज़ाक़ करने वाला और नाराज़ी का कम मुस्तह़िक़ ठहरता।

ह़ज़रते सय्यिदुना यूसुफ़ बिन अस्बात़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تعالٰی علیہ फ़रमाते हैं : "मैं क़ुरआने पाक पढ़ने का इरादा करता हूं, जब मुझे इस के मज़ामीन याद आते हैं तो अ़ज़ाब से डर कर तस्बीह़ व इस्तिग़्फ़ार में मश्गूल हो जाता हूं।"

क़ुरआने पाक पर अ़मल से रू गर्दानी करने वाले का ज़िक्र इस आयते त़य्यिबा में है। चुनान्चे, इरशाद होता है :

فَنَبَذُوْهُ وَرَآءَ ظُهُوْرِهِمْ وَاشْتَرَوْا بِهٖ ثَمَنًا قَلِيْلًا ؕ فَبِئْسَ مَا يَشْتَرُوْنَ ﴿۱۸۷﴾ (پ۴، اٰل عمرٰن:۱۸۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तो उन्हों ने इसे अपनी पीठ के पीछे फेंक दिया और इस के बदले ज़लील दाम ह़ासिल किये तो कितनी बुरी ख़रीदारी है।

उक्ताहट मह़सूस हो तो तिलावत न करो :

मुस्त़फ़ा जाने रह़मत صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जब तक दिल लगे और जिस्म नर्म हो तब तक क़ुरआन पढ़ते रहो[(1)] जब इधर उधर होने लगो तो पढ़ना छोड़ दो।"[(2)]

एक रिवायत में है कि "जब इधर उधर होने लगो तो उस से उठ जाओ।"[(3)] [(4)]

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ (तिलावत का ह़क़ अदा करने वालों की ता'रीफ़ करते हुए) इरशाद फ़रमाता है :

1.....मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْمَنَّان मिरआतुल मनाजीह़, जि. 3 स. 265 पर इस के तह़त फ़रमाते हैं : येह क़ाइदा उन ख़ुश नसीब लोगों के लिये है जिन को क़ुरआन शरीफ़ की तिलावत में लज़्ज़त और ह़ुज़ूरे क़ल्ब मुयस्सर होता है, और कभी ज़ियादा तिलावत की वजह से दिल उक्ता जाता है वोह दिल लगने तक पढ़ते रहें मगर वोह शख़्स जिस का दिल तिलावत में लगता ही न हो वोह दिल को मजबूर कर के तिलावत करे, दिल न लगने के उ़ज़्र से तिलावत छोड़ न दे पहले कुछ दिन दिल पर जब्र करना पड़ेगा फिर اِنْ شَآءَ اللّٰه दिल लगने लगेगा जैसा कि तजरिबा है।

2.....صحیح البخاری، کتاب فضائل القرآن، باب اقرؤا القرآن......الخ، الحدیث: ۵۰۶۱، ج۳، ص۴۱۹، بدون: ولانت له جلودکم۔

قوت القلوب، الفصل الثامن عشر فیه کتاب ذکر الوصف المکروہ......الخ، ج۱، ص۱۰۸۔

3.....मिरआतुल मनाजीह़, जि. 3 स. 265 पर इस के तह़त है : कुछ देर के लिये तिलावत बन्द कर दो ह़त्ता कि वोह ह़ालत जाती रहे तमाम इ़बादात का येही ह़ाल है कि दिल लगा कर अदा करो।

4.....صحیح البخاری، کتاب فضائل القرآن، باب اقرؤا القرآن......الخ، الحدیث: ۵۰۶۱، ج۳، ص۴۱۹۔

اَلَّذِیْنَ اِذَا ذُكِرَ اللّٰهُ وَجِلَتْ قُلُوْبُهُمْ وَ اِذَا تُلِیَتْ عَلَیْهِمْ اٰیٰتُهٗ زَادَتْهُمْ اِیْمَانًا وَّ عَلٰى رَبِّهِمْ یَتَوَكَّلُوْنَ ﴿۲﴾ (پ۹، الانفال:۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : वोही हैं कि जब अल्लाह याद किया जाए उन के दिल डर जाएं और जब उन पर उस की आयतें पढ़ी जाएं उन का ईमान तरक़्क़ी पाए और अपने रब्ब ही पर भरोसा करें।

अच्छी आवाज़ से तिलावत करने वाला कौन ?

मरवी है कि प्यारे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया :

اِنَّ اَحْسَنَ النَّاسِ صَوْتًا بِالْقُرْاٰنِ الَّذِیْ اِذَا سَمِعْتَهٗ یَقْرَءُ رَاَیْتَ اَنَّهٗ یَخْشَى اللّٰهَ تَعَالٰی

या'नी लोगों में सब से अच्छी आवाज़ से क़ुरआन पढ़ने वाला वोह शख़्स है कि जिसे तुम जब क़ुरआन पढ़ते सुनो तो मह़सूस करो कि वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से डर रहा है।"(1)

एक रिवायत में है कि "لَا یُسْمَعُ الْقُرْاٰنُ مِنْ اَحَدٍ اَشْهٰى مِنْهُ مِمَّنْ یَّخْشَى اللّٰهَ عَزَّوَجَلَّ या'नी ख़ौफ़े ख़ुदा रखने वाले शख़्स से ज़ियादा अच्छी आवाज़ में तिलावते क़ुरआन किसी से नहीं सुनी जाती।"(2)

क़ुरआने पाक की तिलावत का मक़्सद येही है कि दिल पर येह अह़वाल पेश आएं और इस पर अ़मल किया जाए वरना ख़ाली ह़ुरूफ़ को पढ़ने के साथ ज़बान को ह़रकत देना बहुत आसान है।

एक क़ारिये क़ुरआन का बयान है कि मैं ने एक मरतबा अपने उस्ताज़ साह़िब को क़ुरआने पाक सुनाया, दूसरी बार पढ़ने लगा तो उन्हों ने रोक दिया और फ़रमाया : "तूने मेरे सामने क़ुरआने करीम पढ़ने को अ़मल बना लिया है ? जा ! जा कर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सामने पढ़ फिर देख कि वोह तुझे किस चीज़ का हुक्म देता और किस चीज़ से मन्अ़ करता है।"

सिर्फ़ छे ह़ाफ़िज़े क़ुरआन :

तमाम अह़वाल व आ'माल में सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْهِمْ اَجْمَعِیْن का येही मश्ग़ला था। चुनान्चे, जब रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने विसाले ज़ाहिरी फ़रमाया तो 20 हज़ार(3)

---

❶......سنن ابن ماجة، کتاب اقامة الصلاة......الخ، باب فی حسن الصوت بالقرآن، الحدیث:۱۳۳۹، ج۲، ص۱۳۰، مفهومًا۔

❷......کتاب الزهد لابن المبارک، باب ماجاء فی فضل العبادة، الحدیث:۱۱۳، ص۳۷۔

❸.....शायद इस से मदीनए तृय्यिबा के सह़ाबए किराम عَلَیْهِمُ الرِّضْوَان मुराद हैं वरना विसाले ज़ाहिरी के वक़्त सह़ाबए किराम की कुल ता'दाद एक लाख चौदह हज़ार थी जैसा कि दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 866 सफ़्ह़ात पर मुश्तमिल किताब "**इस्लाह़े आ'माल**" जिल्द अव्वल सफ़्ह़ा 115 पर सय्यिदी अ़ब्दुल ग़नी नाबुलुसी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی नक़्ल फ़रमाते हैं : हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के विसाले ज़ाहिरी के वक़्त सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْهِمْ اَجْمَعِیْن की ता'दाद तक़रीबन एक लाख 14 हज़ार थी जो सब अहले इ़ल्म थे।

(شرح العلامة الزرقانی علی المواهب، ج۹، ص۳۰۸۔ المواهب اللدنیة، المقصد السابع، الفصل الثالث، ج۲، ص۵۴۴۔ اتحاف السادة المتقین، ج۵، ص۱۱۹)

सहा़बए किराम عَلَيۡهِمُ الرِّضۡوَان को छोड़ा जिन में से छे के इ़लावा कोई ह़ाफ़िज़ न था इन में भी दो के बारे में इख़्तिलाफ़ है।[1] अकषर सहा़बए किराम عَلَيۡهِمُ الرِّضۡوَان एक या दो सूरतें ह़िफ़्ज़ करते थे। जो कोई सूरए बक़रह और सूरए अन्आ़म ह़िफ़्ज़ करता उसे उ़-लमा में शुमार किया जाता।[2]

मरवी है कि एक शख़्स बारगाहे रिसालत में क़ुरआने पाक की ता'लीम ह़ासिल करने के लिये ह़ाज़िर हुवा जब इस आयते मुक़द्दसा तक पहुंचा :

فَمَنۡ يَّعۡمَلۡ مِثۡقَالَ ذَرَّةٍ خَيۡرًا يَّرَهٗ ؕ﴿۷﴾ وَمَنۡ يَّعۡمَلۡ مِثۡقَالَ ذَرَّةٍ شَرًّا يَّرَهٗ ؑ﴿۸﴾ (پ۳۰،الزلزال:۷،۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *तो जो एक ज़र्रा भर भलाई करे उसे देखेगा और जो एक ज़र्रा भर बुराई करे उसे देखेगा।*

तो कहने लगा : "इतना ही काफ़ी है, फिर वापस चला गया।" तो हु़ज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "येह शख़्स इस ह़ाल में वापस गया कि येह फ़क़ीह है।"

ह़क़ीक़त में पसन्दीदा ह़ालत वोही है कि जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ बन्दए मोमिन को आयत समझ लेने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाता है। मह़ज़ ज़बान को ह़रकत देने का फ़ाइदा बहुत कम है बल्कि जो शख़्स ज़बान से तिलावते क़ुरआन करता और इस पर अ़मल करने से रू गर्दानी करता है वोह इन फ़रामीने बारी तआ़ला का मिस्दाक़ है। चुनान्चे, इरशाद होता है :

﴾1﴿ وَمَنۡ اَعۡرَضَ عَنۡ ذِكۡرِىۡ فَاِنَّ لَهٗ مَعِيۡشَةً ضَنۡكًا وَّنَحۡشُرُهٗ يَوۡمَ الۡقِيٰمَةِ اَعۡمٰى ﴿۱۲۴﴾ (پ۱۶،طٰهٰ:۱۲۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और जिस ने मेरी याद से मुंह फेरा तो बेशक उस के लिये तंग ज़िन्दगानी है और हम उसे क़ियामत के दिन अन्धा उठाएंगे।*

और इरशाद फ़रमाता है :

﴾2﴿ كَذٰلِكَ اَتَتۡكَ اٰيٰتُنَا فَنَسِيۡتَهَا ۚ وَكَذٰلِكَ الۡيَوۡمَ تُنۡسٰى ﴿۱۲۶﴾ (پ۱۶،طٰهٰ:۱۲۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *यूंही तेरे पास हमारी आयतें आई थीं तू ने उन्हें भुला दिया और ऐसे ही आज तेरी कोई ख़बर न लेगा।*

---

1 ......المعجم الكبير، الحديث:۲۰۹۲،ج۲،ص۲۶۱،مفهومًا۔
قوت القلوب، الفصل الثامن عشرفيه كتاب ذكرالوصف المكروه......الخ،ج۱،ص۱۰۸۔

2 ......سنن الترمذی، كتاب فضائل قرآن، باب ماجاء فی فضل سورة البقرة......الخ، الحديث:۲۸۸۵، ج۴، ص۴۰۱، مفهومًا۔

या'नी तू ने कुरआने पाक को तर्क कर दिया, न तो इस में ग़ौरो फ़िक्र किया और न ही इस की कुछ परवाह की क्यूंकि जो शख़्स किसी मुआ़मले में कोताही करता है तो कहा जाता है कि "उस ने इस मुआ़मले को भुला दिया।"

तिलावते कु़रआन का ह़क़ :

कुरआने पाक की तिलावत का ह़क़ येह है कि इस में ज़बान, अ़क़्ल और दिल तीनों शरीक हों। ज़बान का हि़स्सा येह है कि वोह हुरूफ़ को तरतील के साथ सह़ीह़ सह़ीह़ अदा करे, अ़क़्ल का हि़स्सा इस के मआ़नी को ज़ाहिर करना है और दिल का हि़स्सा इस के अवामिर व नवाही पर अ़मल पैरा हो कर नसीह़त ह़ासिल करना और अषर लेना है। लिहाज़ा ज़बान तरतील के साथ पढ़ती, अ़क़्ल तर्जुमानी करती और दिल नसीह़त क़बूल करता है।

﴾9﴿......तरक़्क़ी :

इस से मुराद येह है कि तिलावते कुरआन में इस ह़द तक तरक़्क़ी करे कि अपने आप से नहीं बल्कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से कुरआने पाक को सुने।

तिलावते कु़रआन के दर्जात :

तिलावते कुरआन के तीन दर्जे हैं :

﴾1﴿.....सब से अदना दर्जा येह है कि बन्दा येह तसव्वुर करे कि वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को सुना रहा और उस की बारगाह में खड़ा है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे देख रहा और उस की तिलावत सुन रहा है। (जब येह तसव्वुर करेगा तो) इस वक़्त उस की ह़ालत सुवाल, खु़शामद करने और आ़जिज़ी व इन्किसारी वाली होगी।

﴾2﴿.....दिल से येह यक़ीन करे कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इसे देख रहा, अपने लुत्फ़ो करम से इसे ख़ित़ाब फ़रमा रहा और अपने इन्आ़म व एह़सान से इसे राज़ बता रहा है। (जब येह तसव्वुर करेगा तो) उस वक़्त उस का मक़ाम, ह़या, ता'ज़ीम, सुनना और समझना होगा।

﴾3﴿.....कलाम में मुतकल्लिम और कलिमात में सिफ़ात पर नज़र रखे, खु़द पर और अपनी तिलावत पर नज़र न रखे और न ही इन्आ़म पर इस हैषिय्यत से नज़र करे कि येह इन्आ़म उस पर हुवा है बल्कि उस की पूरी की पूरी तवज्जोह व फ़िक्र मुतकल्लिम की त़रफ़ ही हो गोया कि वोह दूसरों से मुंह फेर कर सिर्फ़ और सिर्फ़ मुतकल्लिम के मुशाहदे में मुस्तग़रक़ है। (पहला दर्जा

मुता'रिफ़ीन व मुरीदीन का), दूसरा अस्ह़ाबे यमीन का और तीसरा मुक़र्रबीन का है और जो इन से ख़ारिज है वोह ग़ाफ़िलीन के दर्जात में है।

सब से बुलन्द दर्जे के बारे में ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम जा'फ़र बिन मुह़म्मद सादिक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने अपने कलाम में मख़्लूक़ के लिये तजल्ली फ़रमाई है लेकिन वोह देखते नहीं हैं।"

गोया अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से सुन रहा हूं :

एक बार ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम जा'फ़र बिन मुह़म्मद सादिक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ह़ालते नमाज़ में बे होश हो कर ज़मीन पर तशरीफ़ ले आए। इफ़ाक़ा होने पर लोगों ने इस के मुतअ़ल्लिक़ पूछा तो फ़रमाया : "मैं एक आयत को बार बार पढ़ता रहा ह़त्ता कि मैं ने उसे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से सुना तो उस की क़ुदरत के मुआ़इने के लिये मेरा जिस्म ठहर न सका।"

इस क़िस्म के दर्जे में मिठास और मुनाजात की लज़्ज़त बढ़ती रहती है। किसी दानिश्वर के बारे में मन्क़ूल है कि मैं क़ुरआन पढ़ता लेकिन इस की ह़लावत न पाता ह़त्ता कि मैं ने क़ुरआने पाक की इस त़रह़ तिलावत की गोया रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से सुन रहा हूं कि आप सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہِمۡ اَجۡمَعِیۡن के सामने तिलावत फ़रमा रहे हैं, फिर मेरा मर्तबा इस से बुलन्द किया गया और मैं इस त़रह़ तिलावत करता गोया ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्रईल عَلَیۡہِ السَّلَام से सुन रहा हूं और वोह हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को सुना रहे हैं, फिर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मुझे वोह मर्तबा अ़त़ा फ़रमाया कि अब मैं ख़ुद अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से सुनता हूं इस वक़्त मैं ऐसी लज़्ज़त और सुकून पाता हूं कि इस से रुक नहीं सकता।

अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़षमाने ग़नी और ह़ज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा बिन यमान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا ने फ़रमाया : "अगर दिल पाक हो जाएं तो क़ुरआने पाक की तिलावत से कभी सैर न हों।"

इन्हों ने येह सिर्फ़ इस वजह से फ़रमाया कि दिल की त़हारत से इन्सान तरक़्क़ी कर के कलाम में मुतकल्लिम का मुशाहदा करता है। इसी लिये ह़ज़रते सय्यिदुना षाबित बुनानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّوۡرَانِی ने फ़रमाया : "मैं ने 20 बरस क़ुरआने पाक से मशक़्क़त उठाई और फिर 20 बरस इस की ह़लावत पाई।"

अगर इन्सान मुतकल्लिम के मुशाहदे के साथ किसी दूसरे को न देखे तो इस फ़रमाने बारी तआ़ला पर अ़मल करने वाला होगा :

فَفِرُّوْۤا اِلَى اللّٰهِ ؕ (پ۲۷،الذّٰریٰت:۵۰) *तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की तरफ़ भागो ।*

और इस फ़रमान पर भी अ़मल करने वाला होगा :

وَلَا تَجْعَلُوْا مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ ؕ (پ۲۷،الذّٰریٰت:۵۱) *तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और **अल्लाह** के साथ और मा'बूद न ठहराओ ।*

तो जो शख़्स तमाम मुआ़मलात में सिर्फ़ उसी की तरफ़ नज़र न करे वोह उस के ग़ैर को देखने वाला है । **अल्लाह** तआ़ला के इलावा हर वोह शै कि जिस की तरफ़ कोई शख़्स इल्तिफ़ात करे, उस का इल्तिफ़ात शिर्के ख़फ़ी को शामिल होगा । तौह़ीदे ख़ालिस येह है कि बन्दा तमाम मुआ़मलात में **अल्लाह** तआ़ला के सिवा किसी और की तरफ़ मुतवज्जेह न हो ।[1]

﴾10﴿.....बराअत का इज़हार :

इस से मुराद येह है कि अपनी त़ाक़त व क़ुव्वत और अपने नफ़्स की तरफ़ रिज़ा व तज़किये की निगाह करने से बराअत ज़ाहिर करे । जब नेक लोगों की ता'रिफ़ और उन के लिये इन्आ़मात के वा'दे पर मुश्तमिल आयात की तिलावत करे तो ख़ुद को पेशे नज़र न रखे बल्कि अहले यक़ीन और सिद्दीक़ीन को पेशे नज़र रखे और इस बात का शौक़ रखे कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इसे भी उन के साथ मिला दे । जब नाफ़रमानी व कोताही करने वालों की मज़म्मत और नाराज़ी पर मुश्तमिल आयात की तिलावत करे तो ख़ुद को पेशे नज़र रखे और ख़ौफ़ व डर के सबब येह तसव्वुर करे कि येह ख़ुद इन आयात का मुख़ात़ब है । इसी लिये ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाया करते थे : "اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْتَغْفِرُكَ لِظُلْمِیْ وَكُفْرِیْ या'नी ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मैं अपने ज़ुल्म और कुफ़्र से तेरी बख़्शिश का सुवाल करता हूं ।" उन से अ़र्ज़ की गई : "ज़ुल्म तो मा'लूम है, कुफ़्र से क्या मुराद है ?" तो आप رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ ने येह आयते मुक़द्दसा तिलावत की :

اِنَّ الْاِنْسَانَ لَظَلُوْمٌ كَفَّارٌ ﴿۳۴﴾ (پ۱۳،ابراھیم:۳۴) *तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक आदमी बड़ा ज़ालिम बड़ा ना शुक्रा है ।*

1.....इस से कोई येह न समझे कि मह़बूबाने ख़ुदा से तवस्सुल करना उन से मदद मांगना वग़ैरा भी तौह़ीदे ख़ालिस के मनाफ़ी है क्यूंकि मह़बूबाने ख़ुदा की तरफ़ नज़र करना (उन से तवस्सुल करना और मदद मांगना वग़ैरा) ह़क़ीक़त में **अल्लाह** तबारक व तआ़ला की तरफ़ ही नज़र करना है न कि ग़ैर की तरफ़ । चुनान्चे, दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 318 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब **फ़ज़ाइले दुआ़** सफ़ह़ा 65 पर सय्यिदी आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : "मह़बूबाने ख़ुदा से तवस्सुल नज़र ब ख़ुदा है न कि नज़र बग़ैर (या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नेक बन्दों को अपनी ह़ाजत रवाई के लिये वसीला बनाना दर ह़क़ीक़त **अल्लाह** तआ़ला ही से मदद मांगना है न कि किसी और से) ।"

ह़ज़रते सय्यिदुना यूसुफ़ बिन अस्बात़ رَحْمَۃُاللّٰہِ تعالٰی عَلَیْہ से पूछा गया : “जब आप कु़रआने पाक की तिलावत करते हैं तो किस चीज़ की दुआ़ करते हैं ?” फ़रमाया : “मैं 70 बार अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से अपनी कोताहियों की मग़्फ़िरत त़लब करता हूं।”

जब इन्सान तिलावते कु़रआन के वक़्त खु़द को कोताही करने वाला तसव्वुर करेगा तो येह उस की कु़र्बत का सबब बनेगा क्यूंकि जो शख़्स कु़र्ब में दूरी को देखता है (या'नी क़रीब होते हुए भी दूरी मह़सूस करता है) उसे ख़ौफ़ अ़त़ा होता है ह़त्ता कि येह ख़ौफ़ उसे कु़र्ब में दूसरे दर्जे की त़रफ़ ले जाता है जो पहले से आ'ला होता है और जो दूरी में कु़र्ब को देखता है उस से ख़ौफ़ को रोक लिया जाता है, फिर वोह पहले से भी निचले दर्जे में चला जाता है।

जब इन्सान अपने नफ़्स की त़रफ़ रिज़ा की निगाह से देखता है तो उस का नफ़्स ही उस के लिये ह़िजाब बन जाता है और जब तिलावते कु़रआन में नफ़्स की त़रफ़ इल्तिफ़ात करने से तजावुज़ कर के सिर्फ़ और सिर्फ़ ज़ाते बारी तआ़ला को पेशे नज़र रखता है तो उस के लिये मलकूत के असरार खुल जाते हैं।

ह़िकायत :- जन्नती फूल :

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सुलैमान दारानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّورانی फ़रमाते हैं : “ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने षौबान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْمَنَّان ने अपने एक भाई से वा'दा किया कि रात को खाना उन के पास खाएंगे लेकिन किसी सबब से तशरीफ़ न ला सके ह़त्ता कि सुब्ह़ हो गई। अगले दिन जब उन से मुलाक़ात हुई तो उन्हों ने कहा : “आप ने मुझ से वा'दा फ़रमाया था कि रात को खाना मेरे पास खाएंगे फिर वा'दा ख़िलाफ़ी क्यूं की ?” आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تعالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया : “अगर मेरा तुम से वा'द न होता तो मैं तुम्हें कभी भी न बताता कि मुझे तुम्हारे पास आने से किस चीज़ ने रोका जब मैं ने इ़शा की नमाज़ पढ़ी तो सोचा कि तुम्हारे पास आने से पहले वित्र पढ़ लूं कहीं ऐसा न हो कि मौत आ जाए। चुनान्चे, जब मैं दुआ़ए कुनूत पढ़ने लगा तो मेरे सामने एक सब्ज़ बाग़ीचा लाया गया जिस में त़रह़ त़रह़ के जन्नती फूल थे, मैं उसे देखता रहा ह़त्ता कि सुब्ह़ हो गई।”

ख़ुलासए कलाम :

मुकाशफ़ात, नफ़्स और इस की ख़्वाहिशात की त़रफ़ इल्तिफ़ात करने से बराअत ज़ाहिर किये बिग़ैर ह़ासिल नहीं होते फिर येह मुकाशफ़ात उस शख़्स के अह़वाल के ए'तिबार से ख़ास होते हैं जिस पर कश्फ़ होता है। लिहाज़ा जब वोह उम्मीद वाली आयात तिलावत करता और

इस के ह़ाल पर बिशारत ग़ालिब होती है तो उस के लिये जन्नत की सूरत मुन्कशिफ़ हो जाती है और वोह उसे ऐसे देखता है गोया अपनी आंखों से देख रहा है और जब इस के ह़ाल पर ख़ौफ़ ग़ालिब होता है तो उस पर दोज़ख़ मुन्कशिफ़ हो जाती है ह़त्ता कि वोह उस के मुख़्तलिफ़ क़िस्म के अ़ज़ाबात देखता है। येह इस वजह से है कि कलामे इलाही आसान व ख़ुशगवार, सख़्त और उम्मीद व ख़ौफ़ वाली बातों पर मुश्तमिल है और येह इस के अवसाफ़ के ए'तिबार से है क्यूंकि **अल्लाह** तआ़ला के अवसाफ़ में रह़मत, मेहरबानी, इन्तिक़ाम और पकड़ भी है तो कलिमात और सिफ़ात का मुशाहदा करने के ए'तिबार से दिल मुख़्तलिफ़ ह़ालात में बदलता रहता और हर ह़ालत के ए'तिबार से इस के मुनासिब अम्र के मुशाहदे के लिये तय्यार हो जाता है, इस लिये कि येह मुह़ाल है कि सुनने वाले की एक ही ह़ालत रहे और जो सुना जा रहा है वोह बदलता रहे ह़ालांकि इस में रिज़ा व ग़ज़ब वाले का कलाम भी है और इन्आ़म करने वाले, इन्तिक़ाम लेने वाले और जब्बार व मुतकब्बिर का कलाम भी है जो बे परवाह है और मेहरबानी व एह़सान करने वाले का कलाम भी है जो बेकार नहीं छोड़ता।

....छे अफ़राद पर ला'नत....

फ़रमाने मुस्त़फ़ा : *छे त़रह़ के लोगों पर मैं ला'नत करता हूं और* ***अल्लाह*** *عَزَّوَجَلَّ भी उन पर ला'नत फ़रमाता है और हर नबी की दुआ़ क़बूल है, छे अश्ख़ास येह है : (1) किताबुल्लाह عَزَّوَجَلَّ में इज़ाफ़ा करने वाला (2) तक़दीर को झुटलाने वाला (3) मेरी उम्मत पर ज़ुल्म के साथ तसल्लुत़ करने वाला कि उस शख़्स को इ़ज़्ज़त देता है जिस को* ***अल्लाह*** *عَزَّوَجَلَّ ने ज़लील किया और उस को ज़लील करता है जिस को* ***अल्लाह*** *عَزَّوَجَلَّ ने इ़ज़्ज़त अ़त़ा फ़रमाई (4)* ***अल्लाह*** *عَزَّوَجَلَّ के ह़रम (या'नी ह़रमे मक्का) को ह़लाल ठहराने वाला (5) मेरे अहले बैत की ह़ुरमत जिस का* ***अल्लाह*** *عَزَّوَجَلَّ ने ह़ुक्म दिया है उस को पामाल करने वाला और (6) मेरी सुन्नत को छोड़ने वाला।"*

(الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان،الحدیث:۵۷۱۹،ج۷،ص۵۰۱)

बाब नम्बर 4 : फ़हमे कुरआन और तफ़्सीर बिर्राए का बयान

शायद तुम कहो कि गुज़श्ता बह़ष में असरारे कुरआन को समझने और पाकीज़ा दिल वालों के लिये मुन्कशिफ़ होने वाले मआ़नी की अ़ज़मत बयान की गई है, येह बात कैसे दुरुस्त हो सकती है ? ह़ालांकि रसूलुल्लाह صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "مَنْ فَسَّرَ الْقُرْاٰنَ بِرَأْيِهٖ فَلْيَتَبَوَّاْ مَقْعَدَهٗ مِنَ النَّارِ या'नी जो कुरआन की तफ़्सीर अपनी राए से करे वोह अपना ठिकाना जहन्नम में बनाए ।"(1) (2)

येही वजह है कि ज़ाहिरी तफ़्सीर करने वाले अहले इल्म ह़ज़रात ने मुफ़स्सिरीन में से उन अहले तसव्वुफ़ पर ए'तिराज़ किया है जो ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللہ تَعَالٰی عَنْهُمَا और तमाम मुफ़स्सिरीन के ख़िलाफ़, बत़रीक़ए तसव्वुफ़ कलिमाते कुरआन की तावील करते हैं, उन के नज़्दीक येह कुफ़्र है । अगर येह सह़ीह़ हो जो ज़ाहिरी तफ़्सीर करने वालों ने कहा है तो फिर सिवाए तफ़्सीर याद करने के कुरआने पाक को समझने का क्या मा'ना ? और अगर दुरुस्त न हो तो फिर हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के इस फ़रमान कि "जो कुरआन की तफ़्सीर अपनी राए से करे वोह अपना ठिकाना जहन्नम में बनाए" का क्या मा'ना ?

जान लीजिये ! जिस ने येह गुमान किया है कि कुरआने पाक के सिर्फ़ वोही मआ़नी हैं जो ज़ाहिरी तफ़्सीर बयान करे तो वोह अपनी ज़ात की ह़द के बारे में ख़बर देता है और वोह अपनी ज़ात के बारे में ख़बर देने में सच्चा है लेकिन तमाम मख़्लूक़ को अपने जैसा समझने में ख़त़ा पर है ।

मआ़निये कुरआन का दाइरा बहुत वसीअ़ है :

अख़्बार व आषार इस बात पर दलालत करते हैं कि अ़क़्ल वालों के लिये कुरआने पाक

1.....मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَةُ الْمَنَّان मिरआतुल मनाजीह़, जि. 1 स. 208 पर इस के तह़्त फ़रमाते हैं : कुरआन की तफ़्सीर बिर्राए करने वाला जहन्नमी है, ख़याल रहे कि कुरआन की बा'ज़ चीज़ें नक़्ल पर मौक़ूफ़ है जैसे शाने नुज़ूल, नासिख़ मन्सूख़, तजवीद के क़वाइद इन्हें राए से बयान करना ह़राम है वोही यहां मुराद है और बा'ज़ चीज़ें शरई अ़क़्ल से भी मा'लूम हो सकती हैं जैसे आयात के इल्मी निक़ात अच्छी और सह़ीह़ तावीलें, पैदा होने वाले ए'तिराज़ात के जवाबात वग़ैरा इन में नक़्ल लाज़िम नहीं गरज़ कि कुरआन की तफ़्सीर बिर्राए ह़राम है और तावील बिर्राए उ़-लमाए दीन के लिये बाइ़षे षवाब या इस की तह़क़ीक़ हमारी किताब जाअल ह़क़ और मिरक़ात में इसी मक़ाम पर देखो : रब्ब तआ़ला फ़रमाता है "اَفَلَا یَتَدَبَّرُوْنَ الْقُرْاٰنَ" मा'लूम हुवा कि कुरआन में तदब्बुर व तफ़क्कुर का हुक्म है । इस में इशारतन फ़रमाया कि उ़-लमा को कुरआनी तावीलात की इजाज़त है जोहला को येह भी ह़राम, इस से वोह लोग इब्रत पकड़ें जो फ़क़त़ तर्जमए कुरआन से ग़लत़ मस्अले मुस्तम्बत़ कर के लोगों को गुमराह करते हैं । ह़दीष व कुरआन के फ़क़त़ तर्जमे बिग़ैर फ़िक़्ह की रोशनी के अ़वाम के लिये ज़ह्रे क़ातिल हैं ।

2.....مشکاۃ المصابیح، کتاب العلم، الفصل الثانی، الحدیث:۲۳۴، ج۱، ص۶۵، معناً۔

के मआ़नी का दाइरा बहुत वसीअ़ है। चुनान्चे, अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने फ़रमाया : "मगर येह कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ किसी बन्दे को कुरआने पाक की समझ बूझ अ़ता फ़रमा दे।"(1) अगर मन्कूल शुदा तर्जमे के सिवा कुरआने पाक के और कोई मआ़नी नहीं हैं तो फिर इस "समझ" से क्या मुराद है ?

हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मा'रिफ़त निशान है : "اِنَّ لِلْقُرْاٰنِ ظَاهِرًا وَّبَاطِنًا وَّحَدًّا وَّمَطَّلَعًا या'नी बेशक कुरआन का ज़ाहिर भी है और बातिन भी, इस की एक ह़द है और एक मत़लअ़।"

पस ज़ाहिर व बातिन और ह़द्दो मत़्लअ़ (इब्तिदा व इन्तिहा) का क्या मा'ना है ?

सय्यिदुना अ़ली رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ का इ़ल्म :

अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने फ़रमाया : "لَوْ شِئْتُ لَاَوْقَرْتُ سَبْعِيْنَ بَعِيْرًا مِنْ تَفْسِيْرِ فَاتِحَةِ الْكِتَابِ" या'नी अगर मैं चाहूं तो सूरए फ़ातिह़ा की तफ़्सीर से 70 ऊंट भर दूं।" इस का क्या मा'ना है ? ह़ालांकि इस की ज़ाहिरी तफ़्सीर तो निहायत मुख़्तसर है।

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने फ़रमाया : "لَا يَفْقَهُ الرَّجُلُ حَتّٰى يَجْعَلَ لِلْقُرْاٰنِ وُجُوْهًا या'नी बन्दा उस वक़्त तक फ़क़ीह नहीं हो सकता जब तक कुरआने पाक को कई वुजूह से न जान ले।"

कुरआने पाक कितने उ़लूम पर मुश्तमिल है ?

बा'ज़ उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام ने फ़रमाया : "हर आयत के 60 हज़ार मफ़हूम हैं और जो समझने से रह गए वोह इस से ज़ियादा हैं।"

बा'ज़ उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام ने फ़रमाया : "कुरआने पाक 77 हज़ार 200 उ़लूम पर मुश्तमिल है क्यूंकि हर कलिमा एक इ़ल्म है फिर येह चार गुना हो जाता है क्यूंकि हर कलिमे का एक ज़ाहिर है, एक बातिन, एक ह़द है और एक मत़लअ़।"

नीज़ रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ को 70 मरतबा दोहराना भी इसी लिये था कि इस के बातिनी मआ़नी में ग़ौरो फ़िक्र करें वगर्ना इस का तर्जमा व तफ़्सीर तो ज़ाहिर है और इस क़िस्म की आयत को बार बार दोहराने की ह़ाजत नहीं होती।

(1) ......شرح السنة، کتاب القصاص، باب لا یقتل مؤمن بکافر، الحدیث: ۲۵۲۴، ج۵، ص ۳۸۸۔

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : "مَن اَرَادَ عِلْمَ الْاَوَّلِیْنَ وَالْاٰخِرِیْنَ فَلْیَتَدَبَّرِ الْقُرْاٰن" या'नी जो अव्वलीन व आख़िरीन के उ़लूम जानना चाहता है उसे चाहिये कि कुरआने पाक में ग़ौरो फ़िक्र करे।" येह चीजें सिर्फ़ तफ़्सीरे ज़ाहिरी से हासिल नहीं होतीं।

ख़ुलासए कलाम :

तमाम उ़लूम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के अफ़्आ़ल व सिफ़ात में दाख़िल हैं और कुरआने पाक में उस की ज़ात, अफ़्आ़ल और सिफ़ात की शर्ह़ है। इन उ़लूम की कोई इन्तिहा नहीं और कुरआने पाक में इन तमाम उ़लूम की त़रफ़ इजमाली त़ौर पर इशारा है, इन की तफ़्सील की गहराई कुरआने पाक को समझने पर मौक़ूफ़ है, सिर्फ़ ज़ाहिरी तफ़्सीर इस की त़रफ़ इशारा नहीं करती बल्कि हर वोह चीज़ जो ग़ौरो फ़िक्र करने वालों पर मुश्किल है और इस के बारे में मख़्लूक़ के नज़रियात व मा'कूलात में इख़्तिलाफ़ है तो कुरआने पाक में इन की त़रफ़ इशारे और दलालतें हैं जिन का इदराक अहले इल्म ही को होता है तो ज़ाहिरी तर्जमा व तफ़्सीर इसे कैसे पूरा कर सकती है ? इसी वजह से हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "اِقْرَءُوا الْقُرْاٰنَ وَالْتَمِسُوْا غَرَائِبَہٗ" या'नी कुरआने पाक पढ़ो और इस के अ़जाइबात तलाश करो।"(1)

मज़बूत़ रस्सी, नूरे मुबीन और नफ़्अ़ बख़्श शिफ़ा :

अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰہُ تعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم से मरवी है कि हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "क़सम है उस ज़ात की जिस ने मुझे ह़क़ के साथ नबी बना कर भेजा ! मेरी उम्मत अस्ल दीन और जमाअ़त से हट कर 72 फ़िर्क़ों में बट जाएगी जो तमाम के तमाम गुमराह और गुमराह गर होंगे वोह जहन्नम की त़रफ़ बुलाएंगे, जब ऐसा हो तो तुम पर कुरआने पाक की पैरवी लाज़िम है क्यूंकि इस में तुम से पहले और तुम्हारे बा'द आने वालों की ख़बरें हैं और तुम्हारे आपस के झगड़ों का फ़ैसला है, जो मुतकब्बिर इस की मुख़ालफ़त करेगा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे हलाक कर देगा और जो इस के इलावा किसी और चीज़ में इल्म तलाश करेगा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे गुमराह कर देगा, येह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की मज़बूत़ रस्सी, नूरे मुबीन और नफ़्अ़बख़्श शिफ़ा है, जो इसे मज़बूत़ थामे उस के लिये इ़स्मत है और जो इस की पैरवी करे उस के लिये नजात है, येह टेढ़ा नहीं होता कि सीधा करने

---

(1) ......شعب الایمان للبیہقی، باب فی تعظیم القرآن، فصل فی قراءۃ القرآن......الخ، الحدیث:۲۲۹۲، ج۲، ص۴۲۷۔

की ज़रूरत हो और न ही किसी त़रफ़ माइल होता है कि दुरुस्त किया जाए इस के अ़जाइबात ख़त्म नहीं होते और न ही बार बार पढ़ना इसे पुराना करता है।(1)

राहे नजात :

ह़ज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा बिन यमान رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : जब हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपने बा'द इख़्तिलाफ़ और फ़िर्क़ों की ख़बर दी तो मैं ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم अगर मैं वोह ज़माना पाऊं तो आप मुझे क्या नसीह़त फ़रमाते हैं ?" तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "कुरआने पाक की ता'लीम ह़ासिल करो और उस के मज़ामीन पर अ़मल करो कि इस से निकलने का येही रास्ता है।" ह़ज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : मैं ने तीन मर्तबा येही सुवाल किया तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने तीनों बार येही जवाब इरशाद फ़रमाया कि "कुरआने पाक की ता'लीम ह़ासिल करो और इस के मज़ामीन पर अ़मल करो कि इसी में नजात है।"(2)

अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने फ़रमाया : "مَنْ فَهِمَ الْقُرْآنَ فَسَّرَ بِهِ جُمَلَ الْعِلْمِ" या'नी जिस ने कुरआने पाक को समझ लिया वोह इस के ज़रीए तमाम उ़लूम बयान कर सकता है।" इस फ़रमान से आप رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ की मुराद येह है कि कुरआने पाक तमाम उ़लूम की त़रफ़ इजमाली तौर पर इशारा करता है।

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْهُمَا ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के इस फ़रमान :

وَمَنْ يُّؤْتَ الْحِكْمَةَ فَقَدْ اُوْتِيَ خَيْرًا كَثِيْرًا ؕ (پ۳،البقرۃ:۲۶۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और जिसे ह़िक्मत मिली उसे बहुत भलाई मिली।*

के बारे में फ़रमाया कि इस से मुराद कुरआने करीम की समझ है।

इरशादे बारी तआ़ला है :

فَفَهَّمْنٰهَا سُلَيْمٰنَ ۚ وَكُلًّا اٰتَيْنَا حُكْمًا وَّعِلْمًا ۫ (پ۱۷،الانبیآء:۷۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *हम ने वोह मुआ़मला सुलैमान को समझा दिया और दोनों को हुकूमत और इ़ल्म अ़ता किया।*

---

1 ......سنن الترمذی، کتاب فضائل القرآن، باب ماجاء فی فضل القرآن، الحدیث:۲۹۱۵، ج۴، ص۴۱۵، مفهومًا۔
قوت القلوب، الفصل السادس عشر، فی ذکر معاملة العبد فی تلاوته......الخ، ج۱، ص۹۰۔

2 ......سنن ابی داود، کتاب الفتن والملاحم، باب ذکر الفتن ودلائلها، الحدیث:۴۲۴۶، ج۴، ص۱۳۱، مفهومًا۔
قوت القلوب، الفصل السادس عشر، فی ذکر معاملة العبد فی تلاوته......الخ، ج۱، ص۹۰۔

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने जो कुछ ह़ज़रते सय्यिदुना दावूद और ह़ज़रते सय्यिदुना सुलैमान على نبينا وعليهما الصلوٰة والسلام को अ़ता फ़रमाया इस का नाम इल्मो ह़िक्मत रखा और इन की समझदारी को जिस में ह़ज़रते सय्यिदुना सुलैमान عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام मुन्फ़रिद थे ख़ास तौर पर "फ़हम" के लफ़्ज़ के साथ ज़िक्र फ़रमाया और इसे इल्मो ह़िक्मत पर मुक़द्दम फ़रमाया।

येह तमाम उमूर इस बात पर दलालत करते हैं कि क़ुरआने पाक के मआ़नी समझने में बहुत ज़ियादा कुशादगी व वुस्अ़त है और जो कुछ ज़ाहिरी तफ़्सीर से मन्क़ूल है वोह क़ुरआने पाक के मआ़नी समझने की इन्तिहा नहीं। रहा हु़ज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का येह इरशादे गिरामी कि "जो क़ुरआन की तफ़्सीर अपनी राए से करे"[1] नीज़ तफ़्सीर बिर्राए से मुमानअ़त[2] और अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ का येह फ़रमान कि "अगर मैं क़ुरआने पाक में अपनी राए से कुछ कहूं तो मुझे कौन सी ज़मीन उठाएगी और कौन सा आस्मान मुझ पर साया करेगा ?" और इन के इ़लावा अख़्बार व आसार में से दीगर अक़्वाल कि जिन में अपनी राए से क़ुरआने पाक की तफ़्सीर करने से मन्अ़ किया गया है, दो ह़ाल से ख़ाली नहीं या तो इस से मुराद होगा कि सिर्फ़ और सिर्फ़ मन्क़ूल शुदा और अपने सुने हुए पर इक्तिफ़ा किया जाए, इस्तिम्बात़ और ख़ुद समझने को छोड़ दिया जाए या फिर इन से मुराद कुछ और होगी।

मन्क़ूल तफ़्सीर पर इक्तिफ़ा करना कैसा ?

येह मुराद लेना कि "मन्क़ूल तफ़्सीर के इ़लावा कोई शख़्स क़ुरआन में कलाम न करे" चन्द वुजूह से बात़िल है :

﴾1﴿....सुनने में येह शर्त़ है कि मुस्त़फ़ा जाने रह़मत صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم से सुना गया हो और आप ही की त़रफ़ मन्सूब हो और येह बात क़ुरआने पाक के बा'ज़ ह़िस्से में ही हो सकती है। लिहाज़ा जो कुछ ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا और ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने अपनी त़रफ़ से कहा है इसे भी क़बूल नहीं करना चाहिये और इसे भी तफ़्सीर बिर्राए कहना चाहिये क्यूंकि उन्हों ने इसे रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم से नहीं सुना। इसी त़रह़ दीगर सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْهِمْ اَجْمَعِیْن का मुआ़मला है।

﴾2﴿....सह़ाबए किराम और मुफ़स्सिरीन ने बा'ज़ आयात की तफ़्सीर में इख़्तिलाफ़ किया है, इन की तफ़्सीर में मुख़्तलिफ़ अक़्वाल हैं जिन में तत़्बीक़ नहीं दी जा सकती और इन तमाम का

---

1 ......مشکاۃ المصابیح، کتاب العلم، الفصل الثانی، الحدیث:۲۳۴، ج۱، ص۶۵، مفهومًا۔

2 ......مشکاۃ المصابیح، کتاب العلم، الفصل الثانی، الحدیث:۲۳۴-۲۳۳، ج۱، ص۶۵۔

रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم से सुनना भी मुह़ाल है, अगर एक क़ौल सुना गया हो तो बाक़ी रद्द हो जाएंगे, इस से यक़ीनी तौर पर ज़ाहिर हो गया कि हर मुफ़स्सिर ने वोह मा'ना बयान किया है जो बह़ष व इस्तिन्बात़ के ज़रीए इस पर ज़ाहिर हुवा ह़त्ता कि इन्हों ने सात सूरतों के इब्तिदाई हुरूफ़ के बारे में मुख़्तलिफ़ क़िस्म के अक़्वाल कहे जिन के दरमियान तत़बीक़ देना मुमकिन नहीं। मषलन कहा गया है कि "الٓر" लफ़्ज़ "اَلرَّحْمٰن" के बा'ज़ हुरूफ़ हैं, येह भी कहा गया है कि "ا" से **अल्लाह** "ل" से **लत़ीफ़** और "ر" से मुराद **रह़ीम** है, इस के इ़लावा दीगर अक़्वाल भी हैं और इन तमाम में तत़्बीक़ देना नामुमकिन है लिहाज़ा कैसे हो सकता है कि येह तमाम अक़्वाल हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم से सुने हुए हों ?"

《3》....मरवी है कि हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰه تَعَالٰی عَنْهُمَا के लिये दुआ़ करते हुए इरशाद फ़रमाया : "اَللّٰھُمَّ فَقِّھْہُ فِی الدِّیْنِ وَعَلِّمْہُ التَّاوِیْل या'नी ऐ **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ इसे दीन की समझ बूझ और तफ़्सीर का इ़ल्म अ़त़ा फ़रमा।"[1] अगर अल्फ़ाज़ की त़रह़ कुरआने पाक की तफ़्सीर भी सुनी हुई और मह़फ़ूज़ हो तो फिर ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰه تَعَالٰی عَنْهُمَا को इस के साथ ख़ास करने का क्या मा'ना है ?

《4》....इरशादे बारी तआ़ला है :

لَعَلِمَهُ الَّذِيْنَ يَسْتَنْۢبِطُوْنَهٗ مِنْهُمْ ؕ
(پ۵،النسآء:۸۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *तो ज़रूर उन से उस की ह़क़ीक़त जान लेते येह जो बा'द में काविश करते हैं।*

इस आयते मुक़द्दसा में **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ने इ़ल्म वालों के लिय इस्तिम्बात़ को षाबित किया है और येह बात मा'लूम है कि इस्तिम्बात़ सुनी हुई बातों के इ़लावा में होता है और वोह तमाम आषार जो हम ने कुरआने पाक समझने के सिलसिले में ज़िक्र किये हैं वोह इस ख़याल के ख़िलाफ़ हैं, लिहाज़ा तफ़्सीर में सुने हुए होने की शर्त़ लगाना बात़िल हो गया और हर साह़िबे इ़ल्म कि जिसे **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ने उ़लूमे कुरआन पर कुदरत अ़त़ा फ़रमाई उस के लिये जाइज़ हो गया कि वोह कुरआने करीम से अपनी समझ और अ़क़्ल की ह़द के मुत़ाबिक़ मा'ना अख़ज़ करे।

तफ़्सीर बिर्राए से मुमानअ़त की वुजूह :

बहर ह़ाल जहां तक (तफ़्सीर बिर्राए) से मुमानअ़त का तअ़ल्लुक़ है तो वोह दो सूरतों में से किसी एक में होगी :

《1》....आदमी की किसी शै के बारे में कोई राए हो और उस की त़बीअ़त व ख़्वाहिश का मैलान भी उसी त़रफ़ हो फिर वोह अपनी राए व ख़्वाहिश के मुत़ाबिक़ कुरआने पाक की तफ़्सीर करे

1 ......المستدرک، کتاب معرفة الصحابة، دعاالنبی لابن عباس، الحدیث:۶۳۳۴، ج۴، ص۲۸۸۔

ताकि इस से अपनी ग़रज़् के सह़ीह़ होने पर दलील पकड़् सके, अगर इस बारे में उस की येह राए व ख़्वाहिश न होती तो उस के लिये क़ुरआने पाक से येह मा'ना ज़ाहिर न होता।

कभी तो इ़ल्म होने के बा वुजूद वोह ऐसा करता है जैसे कोई शख़्स क़ुरआने पाक की बा'ज़् आयात से अपनी बिदअ़त के सह़ीह़ होने पर दलील पकड़्ता है ह़ालांकि वोह जानता है कि इस आयत से येह मुराद नहीं लेकिन वोह इस के ज़रीए़ अपने मद्दे मुक़ाबिल को धोका देना चाहता है।

कभी जहालत की वजह से ऐसा मा'ना बयान करता है। लेकिन अगर आयत इस मा'ना का एह़तिमाल रखती हो और उस की फ़हम इस त़रफ़ माइल हो जाए जो उस की ग़रज़् के मुवाफ़िक़ है और वोह अपनी राए व ख़्वाहिश की वजह से इसे तरजीह़ दे दे तो इस वक़्त वोह राए से तफ़्सीर करने वाला होगा या'नी उस की राए ने उसे इस त़रह़ तफ़्सीर पर उभारा कि अगर उस की राए न होती तो उस के नज़्दीक येह मा'ना तरजीह़ न पाता।

कभी अपनी किसी सह़ीह़ ग़रज़् की वजह से क़ुरआने पाक से कोई दलील तलाश करता है और इस पर ऐसी आयत वग़ैरा से इस्तिदलाल करता है जिस के बारे में वोह जानता है कि इस से येह मुराद नहीं, जैसा कि कोई शख़्स सह़री के वक़्त इस्तिग़फ़ार की त़रफ़ बुलाए और इस फ़रमाने मुस्त़फ़ा से इस्तिदलाल करे कि "सह़री करो बेशक सह़री में बरकत है।"[1] और गुमान करे कि सह़री से मुराद ज़िक्र है ह़ालांकि वोह जानता है कि इस से मुराद खाना है। इसी त़रह़ कोई शख़्स किसी सख़्त दिल को मुजाहदे की त़रफ़ बुलाए और इस फ़रमाने बारी तआ़ला से दलील पकड़े : "اِذْهَبْ اِلٰى فِرْعَوْنَ اِنَّهٗ طَغٰى ﴿۲۴﴾ (پ۱۶، طٰهٰ: ۲۴) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** फ़िरऔ़न के पास जा उस ने सर उठाया।" और इस से दिल की त़रफ़ इशारा करते हुए कहे कि फ़िरऔ़न से मुराद येही है। येह त़रीक़ा बा'ज़् वाइज़् सह़ीह़ मक़ासिद के ह़ुसूल के लिये कलाम को ख़ूब सूरत बनाने और सामेई़न को रग़बत दिलाने के लिये इस्ति'माल करते हैं, जो कि ममनूअ़ है।

इस त़रीक़े को फ़िर्क़ए बात़िनिय्या वालों ने अपने फ़ासिद मक़ासिद के ह़ुसूल के लिये लोगों को धोके में मुब्तला कर के उन्हें अपने बात़िल मज़्हब की त़रफ़ बुलाने के लिये इख़्तियार किया। वोह अपनी राए व मज़्हब के मुत़ाबिक़ क़ुरआने पाक की तफ़्सीर करते ह़ालांकि क़त़ई त़ौर पर जानते थे कि इस से येह मुराद नहीं।

येह तफ़्सीर बिर्राए से मुमानअ़त की एक सूरत है और यहां पर राए से मुराद वोह फ़ासिद राए होगी जो ख़्वाहिश के मुत़ाबिक़ हो, न कि वोह जो इजतिहादे सह़ीह़ के मुत़ाबिक़ हो।

1 ......المعجم الاوسط، الحديث: ۴۹۹۰، ج۳، ص۱۵۔

राए सही़ह़ और फ़ासिद दोनों त़रह़ की होती है आ़म त़ौर पर जो ख़्वाहिश के मुत़ाबिक़ हो इस के साथ "राए" का नाम ख़ास कर दिया गया है।

﴾2﴿.....ज़ाहिरी अ़रबी अल्फ़ाज़ की त़रफ़ नज़र करते हुए क़ुरआने पाक की तफ़्सीर करने में जल्दी करे, क़ुरआने पाक के अ़जाइबात और इस में जो मुब्हम व मुबद्दल अल्फ़ाज़, इख़्तिसार, ह़ज़्फ़, इज़्मार, तक़्दीम व ताख़ीर हैं, इन में मसमूअ़ व मन्क़ूल रिवायात से मदद न ले।

जिसे क़ुरआने पाक की ज़ाहिरी तफ़्सीर में पुख़्तगी ह़ासिल न हो, वोह सिर्फ़ अ़रबी समझ लेने के साथ क़ुरआने पाक के मआ़नी के इस्तिम्बात़ करने में जल्दी करे तो बहुत ग़लति़यां करेगा और तफ़्सीर बिर्राए करने वालों में शामिल होगा, लिहाज़ा अव्वलन ज़ाहिरी तफ़्सीर में मसमूअ़ व मन्क़ूल रिवायात का होना ज़रूरी है ताकि इस के ज़रीए ग़लती़ की जगहों से बचा जा सके, इस के बा'द फ़हम व इस्तिम्बात़ में वुस्अ़त पैदा होती है।

क़ुरआने पाक के वोह अ़जाइबात जो बिग़ैर समाअ़ के समझ में नहीं आ सकते बहुत हैं, हम इन में से बा'ज़ की त़रफ़ इशारा कर देते हैं ताकि इन के ज़रीए इन की मिष्ल दीगर अ़जाइबात पर इस्तिदलाल किया जा सके और मा'लूम हो जाए कि अव्वलन ज़ाहिरी तफ़्सीर को याद करने में सुस्ती व ला परवाही करना जाइज़ नहीं और ज़ाहिरी इ़ल्म को मज़बूत़ किये बिग़ैर बाति़न तक पहुंचने का कोई ज़रीआ़ नहीं, लिहाज़ा जो शख़्स क़ुरआने पाक के असरार को समझने का दा'वा करे ह़ालांकि उसे ज़ाहिरी तफ़्सीर में पुख़्तगी ह़ासिल न हो तो उस की मिषाल ऐसी है जैसे कोई शख़्स घर के दरवाज़े से गुज़रने से पहले उस के अन्दर पहुंच जाने का दा'वा करे या कोई शख़्स तुर्कियों के कलाम से उन के मक़ासिद समझने का दा'वा करे ह़ालांकि उसे तुर्की ज़बान न आती हो। ज़ाहिरी तफ़्सीर लुग़त सीखने के क़ाइम मक़ाम है जो किसी भी बात को समझने के लिये ज़रूरी होती है।

﴾ यहां ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِي ने चन्द उमूर और इन की मिषालें बयान की हैं जिन में ज़ाहिरी तफ़्सीर के लिये मसमूअ़ या'नी सुना हुवा होना ज़रूरी है, इन्हें ह़ज़्फ़ कर दिया गया है, इ़ल्मी ज़ौक़ रखने वाले अस्ल किताब की त़रफ़ रुजूअ़ फ़रमाएं। इ़ल्मिय्या ﴿

रासिख़ फ़िल इ़ल्म ह़ज़रात का ह़िस्सा :

क़ुरआने पाक के मआ़नी के असरार सिर्फ़ रासिख़ फ़िल इ़ल्म ह़ज़रात के लिये इतनी ही मिक़्दार में मुन्कशिफ़ होते हैं जितना उन के उ़लूम की कषरत, दिलों की सफ़ाई, ग़ौरो फ़िक्र की त़रफ़ बुलाने वाले उमूर की कषरत और इन की त़लब में इख़्लास होता है। हर किसी के लिये

एक दर्जे से आ'ला दर्जे की त़रफ़ तरक़्क़ी की एक ह़द होती है लेकिन तमाम दर्जात को तै़ कर लेना मुमकिन नहीं क्यूंकि अगर तमाम समन्दर सियाही और तमाम दरख़्त क़लमें बन जाएं तब भी कलिमाते इलाही के असरार की कोई इन्तिहा न होगी और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के कलिमात के ख़त्म होने से पहले येह समन्दर ख़त्म हो जाएंगे। इसी वजह से कुरआने पाक की ज़ाहिरी तफ़्सीर को जानने में मुश्तरक होने के बा वुजूद इस के मआ़नी को समझने में मख़्लूक़ बाहम मुख़्तलिफ़ है क्यूंकि ज़ाहिरी तफ़्सीर असरारे कुरआन को समझने से बे नियाज़ नहीं करती।

एक मिषाल :

हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ालते सजदा में येह दुआ़ फ़रमाई :

''اَعُوْذُ بِرِضَاكَ مِنْ سَخَطِكَ وَاَعُوْذُ بِمُعَافَاتِكَ مِنْ عُقُوْبَتِكَ وَاَعُوْذُ بِكَ مِنْكَ لَا اُحْصِي ثَنَاءً عَلَيْكَ اَنْتَ كَمَا اَثْنَيْتَ عَلٰى نَفْسِكَ''

या'नी मैं तेरी नाराज़ी से तेरी रिज़ा की और तेरी सज़ा से तेरी आ़फ़िय्यत की पनाह मांगता हूं, तेरी तुझ से पनाह मांगता हूं, तेरी ह़म्द मैं नहीं कर सकता, तू ऐसा ही है जैसी तू ने खुद अपनी ह़म्द की।[1]

दुआ़ के असरारे रुमूज़ :

बा'ज़ अरबाबे कुलूब ने इस दुआ़ से येह समझा कि आप صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को सजदे के ज़रीए़ कुर्बे खुदावन्दी का हुक्म हुवा तो आप ने सजदे में कुर्ब को पाया, फिर सिफ़ाते बारी तआ़ला की त़रफ़ नज़र की तो बा'ज़ से बा'ज़ की पनाह त़लब की, कि रिज़ा व नाराज़ी दो वस्फ़ हैं (तो नाराज़ी से रिज़ा की पनाह त़लब की), फिर मज़ीद कुर्ब बढ़ा तो पहला कुर्ब इस में दाख़िल हो गया और सिफ़ात से ज़ात की त़रफ़ तरक़्क़ी हुई तो फ़रमाया : ''اَعُوْذُبِكَ مِنْكَ'' मैं तुझ से तेरी ही पनाह लेता हूं। फिर कुर्ब में ज़ियादती हुई तो आप صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने बिसाते़ कुर्ब में पनाह त़लब करने से ह़या करते हुए अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ता'रीफ़ व तौसीफ़ की त़रफ़ तवज्जोह फ़रमाई तो यूं षना बयान की : ''لَا اُحْصِي ثَنَاءً عَلَيْكَ या'नी मैं (जैसी चाहिये वैसी) तेरी षना नहीं कर सकता।'' फिर इस कोताही को (कि शायाने शान तेरी षना नहीं कर सकता) जान कर अ़र्ज़ की : ''اَنْتَ كَمَا اَثْنَيْتَ عَلٰى نَفْسِكَ या'नी तू ऐसा ही है जैसा कि तूने खुद अपनी ता'रीफ़ फ़रमाई।''

---

1 ......صحیح مسلم، کتاب الصلاۃ، باب ما یقال فی الرکوع والسجود، الحدیث:۴۸۶، ص ۲۵۲۔

इख़्तितामी कलिमात :

येह वोह तफ़क्कुरात व ख़यालात हैं जो अरबाबे कुलूब पर ही खुलते हैं। फिर इन असरार व रुमूज़ की गहराइयां होती हैं। मषलन कुर्ब के मा'ना समझना, कुर्बे ख़ास सजदे में होना, एक सिफ़त के साथ दूसरी से पनाह मांगना, फिर ज़ात की पनाह लेना वग़ैरा। इस के असरार बहुत हैं जिन पर लफ़्ज़ की ज़ाहिरी तफ़्सीर दलालत नहीं करती और येह ज़ाहिरी तफ़्सीर के ख़िलाफ़ भी नहीं बल्कि वोह तो इसे मुकम्मल करने वाले और इस के ज़ाहिर से मग़्ज़ तक पहुंचाने वाले होते हैं। **बातिनी मा'ना समझने से हमारी मुराद येही है, न कि वोह जो ज़ाहिरी तफ़्सीर के ख़िलाफ़ हो।** وَاللّٰہُ اَعْلَمُ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ وَالصَّلَاةُ عَلٰى مُحَمَّدٍ خَاتَمِ النَّبِيِّيْنَ
وَعَلٰى كُلِّ عَبْدٍ مُّصْطَفٰى مِنْ كُلِّ الْعَالَمِيْنَ وَعَلٰى اٰلِ مُحَمَّدٍ
وَّصَحْبِهٖ وَسَلَّم

﴾.....जन्नत में ले जाने वाले आ'माल.....﴿

हज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जो शख़्स हलाल खाए, सुन्नत पर अ़मल करे और लोग इस के शर से मह़फ़ूज़ रहें वोह जन्नत में दाख़िल होगा।" सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْھِمْ اَجْمَعِیْن ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ऐसे लोग तो इस वक़्त बहुत हैं !" इरशाद फ़रमाया : अ़न क़रीब मेरे बा'द भी ऐसे लोग होंगे।"

(المستدرک، الحدیث:۷۱۵۵، ج۵، ص۱۴۲)

ज़िक्रुल्लाह और दुआ़ओं का बयान

तमाम ख़ूबियां **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये जिस की मेहरबानी सब को शामिल, जिस की रह़मत आ़म और जिस का ज़िक्र करने वाले बन्दे का उस की बारगाह में चर्चा होता है। जैसा कि फ़रमाने आ़लीशान है فَاذْكُرُوْنِيْٓ اَذْكُرْكُمْ (پ۲، البقرۃ:۱۵۲) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** तो मेरी याद करो मैं तुम्हारा चर्चा करूंगा।" और उस ने बन्दों को अपनी बारगाह में सुवाली बनने और दस्ते दुआ़ दराज़ करने की तरग़ीब देते हुए इरशाद फ़रमाया : "اُدْعُوْنِيْٓ اَسْتَجِبْ لَكُمْ ؕ (پ۲۴، المؤمن:۶۰) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** मुझ से दुआ़ करो मैं क़बूल करूंगा।" और उस ने नेक व बद और बारगाहे आ़ली से क़रीब होने वाले और दूरी इख़्तियार करने वाले हर शख़्स को अपनी त़रफ़ मुतवज्जेह होने और झोलियां फैलाने की दा'वत दी कि वोह इन की ह़ाजतों और ख़्वाहिशों को पूरा फ़रमाएगा। चुनान्चे, इरशाद फ़रमाया : "وَ اِذَا سَاَلَكَ عِبَادِيْ عَنِّيْ فَاِنِّيْ قَرِيْبٌ ؕ اُجِيْبُ دَعْوَةَ الدَّاعِ اِذَا دَعَانِ ۙ (پ۲، البقرۃ:۱۸۶) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और ऐ मह़बूब जब तुम से मेरे बन्दे मुझे पूछें तो मैं नज़्दीक हूं दुआ़ क़बूल करता हूं, पुकारने वाले की जब मुझे पुकारे।" कषीर दुरूदो सलाम हों सरदारे अम्बिया मह़बूबे किब्रिया ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मदे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم पर और आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के आल व अस्ह़ाब पर जो मुन्तख़ब और बेहतरीन बन्दगाने ख़ुदा में से हैं।

तिलावते क़ुरआन के बा'द ज़िक्रुल्लाह और ह़ाजत बरआरी के लिये बारगाहे ख़ुदा में इख़्लास के साथ मांगी जाने वाली दुआ़ से बढ़ कर कोई ज़बानी इबादत नहीं। लिहाज़ा ज़रूरी है कि तफ़्सील के साथ ज़िक्र के फ़ज़ाइल व मुख़्तलिफ़ अज़्कार बयान किये जाएं और साथ ही दुआ़ के फ़ज़ाइल व आदाब और इस के शराइत़ और दीनी व दुन्यवी मक़ासिद की तक्मील के लिये आयात व रिवायात में मन्क़ूल त़लबे मग़्फ़िरत व त़लबे पनाह के लिये मख़्सूस जामेअ़ दुआ़ओं का भी ज़िक्र हो। इस की तफ़्सील पांच अबवाब पर मुश्तमिल है।

बाब नम्बर 1 : क़ुरआन व ह़दीष और अक़्वाले अस्लाफ़ से ज़िक्रुल्लाह के फ़ज़ाइल व फ़वाइद का बयान।

बाब नम्बर 2 : इस्तिग़्फ़ार, दुरूद और दुआ़ के फ़ज़ाइल व आदाब।

बाब नम्बर 3 : अम्बियाए किराम व बुज़ुर्गाने दीन से मन्क़ूल 16 दुआ़एं।

बाब नम्बर 4 : क़ुरआन व ह़दीष में वारिद नमाज़ के बा'द की दुआ़एं।

बाब नम्बर 5 : मुख़्तलिफ़ मवाक़ेअ़ की मस्नून दुआ़एं।

बाब नम्बर 1 : क़ुरआन व ह़दीष और अक़्वाले अस्लाफ़ से ज़िक्रुल्लाह के फ़ज़ाइल व फ़वाइद का बयान

(इस में पांच फ़स्लें हैं)

पहली फ़स्ल : ज़िक्रुल्लाह की फ़ज़ीलत

ज़िक्र की फ़ज़ीलत पर मुश्तमिल 9 फ़रामीने बारी तआ़ला :

﴾1﴿

فَاذْكُرُوْنِیْۤ اَذْكُرْكُمْ (پ۲،البقرة:۱۵۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *तो मेरी याद करो मैं तुम्हारा चर्चा करूंगा।*

हज़रते सय्यिदुना षाबित बुनानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّورانی फ़रमाते हैं : "मुझे उस साअ़त का इल्म है जिस में मेरा रब्ब عَزَّوَجَلَّ मेरा ज़िक्र फ़रमाता है।" ह़ाज़िरीन झुंजला कर कहने लगे : "येह आप को कैसे पता चलता है ?" फ़रमाया : जब मैं उस का ज़िक्र करता हूं तो वोह मेरा चर्चा करता है।

﴾2﴿

اُذْكُرُوا اللّٰهَ ذِكْرًا كَثِیْرًاۙ(۴۱) (پ۲۲، الاحزاب:۴۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *अल्लाह को बहुत याद करो।*

﴾3﴿

فَاِذَاۤ اَفَضْتُمْ مِّنْ عَرَفٰتٍ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ عِنْدَ الْمَشْعَرِ الْحَرَامِ۪ وَ اذْكُرُوْهُ كَمَا هَدٰىكُمْۚ

(پ۲، البقرة:۱۹۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *तो जब अ़रफ़ात से पलटो तो अल्लाह की याद करो मश्अ़रे ह़राम के पास और उस का ज़िक्र करो जैसे उस ने तुम्हें हिदायत फ़रमाई।*

﴾4﴿

فَاِذَا قَضَیْتُمْ مَّنَاسِكَكُمْ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ كَذِكْرِكُمْ اٰبَآءَكُمْ اَوْ اَشَدَّ ذِكْرًاؕ (پ۲، البقرة:۲۰۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *फिर जब अपने हज के काम पूरे कर चुको तो अल्लाह का ज़िक्र करो जैसे अपने बाप दादा का ज़िक्र करते थे बल्कि इस से ज़ियादा।*

﴾5﴿

اَلَّذِیۡنَ یَذۡکُرُوۡنَ اللّٰهَ قِیٰمًا وَّقُعُوۡدًا وَّعَلٰی جُنُوۡبِهِمۡ (پ۴، ال عمران:۱۹۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : जो **अल्लाह** की याद करते हैं खड़े और बैठे और करवट पर लैटे।

﴾6﴿

فَاِذَا قَضَیۡتُمُ الصَّلٰوۃَ فَاذۡکُرُوا اللّٰهَ قِیٰمًا وَّقُعُوۡدًا وَّعَلٰی جُنُوۡبِکُمۡ ۚ (پ۵، النسآء:۱۰۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : फिर जब तुम नमाज़ पढ़ चुको तो **अल्लाह** की याद करो खड़े और बैठे और करवटों पर लैटे।

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنۡھُمَا मज़्कूरा आयते मुबारका की तफ़्सीर में फ़रमाते हैं : इस का मा'ना येह है कि "दिन रात, ख़ुश्की व तरी, सफ़र व ह़ज़र, ग़ुर्बत व मालदारी, मरज़ व सिह़्ह़त और पोशीदा व अ़लानिया हर ह़ालत में उस का ज़िक्र करो।"

﴾7﴿

وَلَا یَذۡکُرُوۡنَ اللّٰهَ اِلَّا قَلِیۡلًا ﴿۱۴۲﴾ۙ (پ۵، النسآء:۱۴۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और **अल्लाह** को याद नहीं करते मगर थोड़ा।

﴾8﴿

وَاذۡکُرۡ رَّبَّکَ فِیۡ نَفۡسِکَ تَضَرُّعًا وَّخِیۡفَۃً وَّدُوۡنَ الۡجَهۡرِ مِنَ الۡقَوۡلِ بِالۡغُدُوِّ وَالۡاٰصَالِ وَلَا تَکُنۡ مِّنَ الۡغٰفِلِیۡنَ ﴿۲۰۵﴾ (پ۹، الاعراف:۲۰۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और अपने रब्ब को अपने दिल में याद करो ज़ारी (आ़जिज़ी) और डर से और बे आवाज़ निकले ज़बान से सुब्ह़ और शाम और ग़ाफ़िलों में न होना।

﴾9﴿

وَلَذِکۡرُ اللّٰهِ اَکۡبَرُ ؕ (پ۲۱، العنکبوت:۴۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और बेशक **अल्लाह** का ज़िक्र सब से बड़ा।

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنۡھُمَا फ़रमाते हैं मज़्कूरा आयते मुबारका की दो तफ़्सीरें हैं :

(1).....तुम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को याद करते हो इस से अ़ज़ीम तर बात येह है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम्हारा ज़िक्र फ़रमाता है।

(2).....तमाम इबादतों से अफ़्ज़ल इबादत **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र है।

इस के इ़लावा भी आयात ज़िक्र की फ़ज़ीलत का मफ़्हूम अदा करती हैं।

ज़िक्र की फ़ज़ीलत पर मुश्तमिल 11 फ़रामीने मुस्त़फ़ा :

﴾1﴿......ذَاکِرُاللّٰہِ فِی الْغَافِلِیْنَ کَالشَّجَرَۃِ الْخَضْرَاءِ فِیْ وَسْطِ الْھَشِیْمِ या'नी ग़ाफ़िलों में ज़िक्रुल्लाह करने वाला ऐसा है जैसे ख़ुश्क जंगल में सर सब्ज़ा दरख़्त।(1)

﴾2﴿......ذَاکِرُ اللّٰہِ فِی الْغَافِلِیْنَ کَالْمُقَاتِلِ بَیْنَ الْفَارِّیْنَ या'नी ग़ाफ़िलों में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र करने वाला (मैदाने जिहाद से) भागने वालों में मुजाहिद की मानिन्द है।(2)

﴾3﴿......**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है : "اَنَا مَعَ عَبْدِیْ مَاذَکَرَنِیْ وَتَحَرَّکَتْ شَفَتَاہُ بِیْ या'नी मैं बन्दे के साथ होता हूं जब तक वोह मेरा ज़िक्र करता है और उस के होंट मेरे ज़िक्र के लिये हिलते रहें।"(3)

﴾4﴿......किसी बन्दे ने ज़िक्रुल्लाह से बढ़ कर अ़ज़ाबे इलाही से नजात दिलाने वाला कोई अ़मल नहीं किया। सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم क्या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में जिहाद भी नहीं?" इरशाद फ़रमाया : "जिहाद भी नहीं, मगर येह कि तुम अपनी तल्वार से कुफ़्फ़ार को मारो यहां तक कि तल्वार टूट जाए फिर मारो फिर टूट जाए फिर मारो फिर टूट जाए।"(4)

﴾5﴿......مَنْ اَحَبَّ اَنْ یَرْتَعَ فِیْ رِیَاضِ الْجَنَّۃِ فَلْیُکْثِرْ ذِکْرَ اللّٰہِ عَزَّوَجَلَّ या'नी बाग़े जन्नत में आसूदगी का ख़्वाहिश मन्द ज़िक्रुल्लाह की कषरत करे।(5)

﴾6﴿......बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ की गई : "कौन सा अ़मल अफ़्ज़ल है?" इरशाद फ़रमाया : "मरते दम तक तेरी ज़बान ज़िक्रुल्लाह से तर रहे।"(6)

﴾7﴿......तू सुब्ह़ो शाम अपनी ज़बान ज़िक्रुल्लाह से तर रख (इस की बरकत से) तेरे सुब्ह़ो शाम गुनाहों से पाक गुज़रेंगे।

1......شعب الایمان للبیہقی، باب فی محبۃ اللّٰہ، فصل فی ادامۃ ذکراللّٰہ، الحدیث:۵۶۵، ج۱، ص۴۱۱۔

2......شعب الایمان للبیہقی، باب فی محبۃ اللّٰہ ، فصل فی ادامۃ ذکراللّٰہ، الحدیث:۵۶۵، ج۱، ص۴۱۱، بتغیر۔

3......سنن ابن ماجہ، کتاب الادب، باب فضل الذکر، الحدیث:۳۷۹۲، ج۴، ص۲۴۳۔

4......المعجم الکبیر، الحدیث:۳۵۲، ج۲۰، ص۱۶۷۔ 5......المعجم الکبیر، الحدیث:۳۲۶، ج۲۰، ص۱۵۷۔

6......شعب الایمان للبیہقی، باب فی محبۃ اللّٰہ، فصل فی ادامۃ، ذکر اللّٰہ، الحدیث:۵۱۶، ج۱، ص۳۹۳۔

एक रिवायत में है कि "सुब्हो शाम अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र जिहाद में तल्वारें तोड़ने और फ़य्याज़ी से माल ख़ैरात करने से बेहतर है।"(1)

﴾8﴿......अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है : "जब मेरा बन्दा मुझे दिल में याद करता है तो मैं भी उसे तन्हा याद करता हूं और अगर वोह मेरा ज़िक्र मजमअ़ में करता है तो मैं उस से बेहतर मजमअ़ में उस का ज़िक्र करता हूं अगर वोह एक बालिश्त मुझ से क़रीब होता है तो मैं एक हाथ उस के क़रीब हो जाता हूं और अगर वोह एक हाथ मेरे क़रीब आता है तो मैं उस से दो हाथ क़रीब हो जाता हूं और अगर वोह मेरे पास चल कर आता है तो मैं उस की त़रफ़ दौड़ कर आता हूं।"(2) (3)

मज़्कूरा ह़दीषे पाक में "दौड़ने" से मुराद बन्दे की फ़रयाद रसी और क़बूलिय्यते दुआ़ में जल्दी करना है।

﴾9﴿...... سَبْعَةٌ يُظِلُّهُمُ اللّٰهُ فِيْ ظِلِّهٖ يَوْمَ لَا ظِلَّ اِلَّا ظِلُّهٗ رَجُلٌ ذَكَرَ اللّٰهَ خَالِيًا فَفَاضَتْ عَيْنَاهُ مِنْ خَشْيَةِ اللّٰهِ या'नी सात शख़्स वोह हैं कि जिन्हें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस दिन अपने साए में रखेगा(4) जिस दिन उस के सिवा कोई साया न होगा (इन में से) एक वोह है जो तन्हाई में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ को याद करे तो उस की आंखों से आंसू बहें।(5)

﴾10﴿......क्या मैं तुम्हें ऐसा बेहतरीन अ़मल न बताऊं जो रब्ब عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक बहुत सुथरा, तुम्हारे दर्जे बुलन्द करने वाला और तुम्हारे लिये सोना, चांदी ख़ैरात करने से भी बेहतर हो और तुम्हारे लिये उस से भी बेहतर हो कि तुम दुश्मन से जिहाद कर के उन की गर्दनें मारो और वोह तुम्हें शहीद करें। सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ज़रूर।" इरशाद फ़रमाया : "हर वक़्त अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र करते रहना।"(6)

---

1 ......الزهد لابن المبارک، الجزء التاسع، الحديث: ۱۱۱۶، ص ۳۹۴۔

2 .....मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْمَنَّان मिरआतुल मनाजीह़, जि. 3 स. 307 पर फ़रमाते हैं : येह कलाम बत़ौरे मिषाल समझाने के लिये है मत़लब येह है कि तुम्हारी त़लब से हमारी रह़मत सबक़त ले गई है, अगर तुम ऐसे मा'मूली आ'माल करो जिन से बदेर हम तक पहुंच सको तो हम तुम को अपने करम से बहुत जल्द अपने दामने रह़मत में ले लेंगे।

3 ......صحيح البخاری، کتاب التوحيد، باب قول الله:ويحذرکم الله نفسه ، الحديث:۷۴۰۵، ج۴، ص ۵۴۱۔

4 .....मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْمَنَّان मिरआतुल मनाजीह़, जि. 2 स. 435 पर फ़रमाते हैं : या'नी अपनी रह़मत के साए में या अ़र्शे आ'ज़म के साए में ताकि क़ियामत की धूप से मह़फ़ूज़ रहे।" बरोज़े क़ियामत सायए अ़र्श पाने वाले ख़ुश नसीबों के मुतअ़ल्लिक़ जानने के लिये मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 88 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "सायए अ़र्श किस किस को मिलेगा ?" का मुत़ालआ़ फ़रमा लीजिये।

5 ......صحيح مسلم، کتاب الزکاة، باب فضل اخفاء الصدقة، الحديث:۱۰۳۱، ص ۵۱۴، دون "من خشية الله"۔

6 ......سنن الترمذی، کتاب الدعوات، الحديث:۳۳۸۸، ج۵، ص ۲۴۶۔

﴾11﴿.....अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है : "مَنْ شَغَلَهٗ ذِكْرِىْ عَنْ مَسْاَلَتِىْ اَعْطَيْتُهٗ اَفْضَلَ مَا اُعْطِى السَّائِلِيْن या'नी जिसे मेरा ज़िक्र मुझ से मांगने से रोक दे मैं उसे मांगने वालों से ज़ियादा दूंगा।"(1) (2)

घड़ी भर रब्ब तआ़ला को याद करना :

हज़रते सय्यिदुना फुज़ैल बिन इयाज़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَهَّاب फ़रमाते हैं : हमें येह रिवायत पहुंची है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है : "ऐ मेरे बन्दे तू मुझे फ़ज्र व अ़स्र के बा'द घड़ी भर याद कर लिया कर मैं तुझे इन दो साअ़तों के दरमियान (या'नी दिन रात के तमाम अवक़ात) में किफ़ायत करूंगा।"

बा'ज उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام फ़रमाते हैं : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है : "जब मैं किसी बन्दे के दिल को अपनी याद में मह्व पाता हूं तो उस के तमाम उमूर को संवार देता, उस की निशस्त व कलाम को अपनी रह़मत अ़ता करता और उसे अपना दोस्त बना लेता हूं।"

ज़िक्रुल्लाह से मुतअ़ल्लिक़ तीन अक़्वाले बुज़ुर्गान :

﴾1﴿.....हज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : "ज़िक्र दो क़िस्म के हैं : (1)....जो सिर्फ़ बन्दे और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के दरमियान हो (कोई और इस पर मुत्तलअ़ न हो)। येह याद भी क्या ही ख़ूब और अ़ज़ीम अज्र वाली है।
(2)....और इस से भी ज़ियादा फ़ज़ीलत वाला ज़िक्र येह है कि इन्सान अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ह़राम कर्दा चीज़ों के मुआ़मले में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ को याद रखे (या'नी ह़राम काम का ख़याल आते ही रब्ब तआ़ला को याद करे और ह़रामकारी से बाज़ रहे)।

﴾2﴿..... अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र करने वाले के इलावा हर शख़्स दुन्या से प्यासा रुख़्सत होगा।

﴾3﴿.....हज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ फ़रमाते हैं : "अहले जन्नत किसी चीज़ पर ह़सरत नहीं करेंगे सिवाए उस घड़ी के जो यादे इलाही से ग़फ़्लत में गुज़री।"

1.....तीन ख़ुश नसीबों को बिन मांगे अ़ता किया जाता है : (1)....ज़िक्रे इलाही करने वाला (2)....तिलावते कुरआन करने वाला और (3)....दुरूदे पाक की कसरत करने वाला।
नोट : तफ़्सील के लिये मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ "**फ़ज़ाइले दुआ़**" से सफ़्हा 228 ता 232 का मुत़ालआ़ कीजिये !

2.....شعب الايمان للبيهقى، باب فى محبة الله، فصل فى ادامة ذكر الله، الحديث:٥٧٢، ج١، ص٤١٣-

दूसरी फ़स्ल :

मजालिसे ज़िक्र की फ़ज़ीलत

मजालिसे ज़िक्र से मुतअ़ल्लिक़ 9 फ़रामीने मुस्त़फ़ा :

﴾1﴿.....जो लोग अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र करने के लिये जम्अ़ होते हैं फ़िरिश्ते उन्हें घेर लेते और रह़मत उन्हें ढांप लेती है और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़िरिश्तों के सामने उन का चर्चा करता है।(1)

﴾2﴿.....जो लोग मह़ज़ रिज़ाए इलाही के लिये अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र करने बैठते हैं तो आस्मान से एक मुनादी निदा करता है कि मग़फ़िरत याफ़्ता हो कर लौट जाओ तुम्हारे गुनाह नेकियों में बदल दिये गए हैं।(2)

﴾3﴿.....जब कोई क़ौम किसी मजलिस में बैठे और इस में न तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र करे और न ही मुझ पर दुरूदे पाक पढ़े तो बरोज़े क़ियामत येह मजलिस उन के लिये ह़सरत का बाइ़ष होगी।(3)

﴾4﴿.....मरवी है कि ह़ज़रते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام ने दुआ़ मांगी : "या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ जब तू मुझे देखे कि मैं ज़ाकिरीन की मह़फ़िल छोड़ कर ग़ाफ़िलीन की त़रफ़ बढ़ रहा हूं तो मेरे पाऊं ज़ाएअ़ फ़रमा देना कि येह भी तेरा मुझ पर एक इन्आ़म होगा।"

﴾5﴿.....सरकारे दो आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "اَلْمَجْلِسُ الصَّالِحُ يُكَفِّرُعَنِ الْمُؤْمِنِ اَلْفَيْ اَلْفِ مَجْلِسٍ مِنْ مَجَالِسِ السُّوْءِ या'नी अच्छी मह़फ़िल मोमिन के लिये 20 लाख बुरी मजलिसों का कफ़्फ़ारा है।"(4)

﴾6﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ फ़रमाते हैं : "जिन घरों में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र होता है अहले आस्मान उन घरों को ऐसे देखते हैं जैसे तुम सितारों को देखते हो।"

﴾7﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान बिन उ़यैना رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : "जब लोग ज़िक्रुल्लाह के लिये जम्अ़ होते हैं तो शैत़ान और दुन्या अ़लाह़िदा हो जाते हैं, शैत़ान दुन्या से कहता है : "तू देख रही है कि येह क्या कर रहे हैं ?" दुन्या कहती है : "इन्हें छोड़ दे, जूं ही येह ज़िक्र से फ़ारिग़ होंगे मैं इन्हें गर्दनों से पकड़ कर तेरे ह़वाले कर दूंगी।"

---

1 ......صحیح مسلم، کتاب الذکر والدعاء......الخ، باب فضل الاجتماع علی تلاوۃ......الخ، الحدیث: ۲۷۰۰، ص ۱۴۴۸۔

2 ......المسند للامام احمد بن حنبل، مسند انس بن مالک، الحدیث: ۱۲۴۵۶، ج ۴، ص ۲۸۶۔

3 ......سنن الترمذی، کتاب الدعوات، باب فی القوم یجلسون ولایذکرون اللّٰہ، الحدیث: ۳۳۹۱، ج ۵، ص ۲۴۷۔

4 ......فردوس الاخبار للدیلمی، باب الألف، الحدیث: ۵۸۷، ج ۱، ص ۹۷، بتغیرٍ۔

﴾8﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہُ एक मरतबा बाज़ार में तशरीफ़ लाए और फ़रमाया : "लोगो ! मैं तुम्हें यहां देख रहा हूं ह़ालांकि मस्जिद में सरवरे काइनात, शाहे मौजूदात صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की मीराष तक़्सीम हो रही है।" लोग बाज़ार छोड़ कर मस्जिद की त़रफ़ गए मगर उन्हें कोई मीराष बटती दिखाई न दी, उन्हों ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہُ से कहा : "हम ने तो मस्जिद में कोई मीराष तक़्सीम होते नहीं देखी।" आप رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہُ ने पूछा : "फिर तुम ने वहां क्या देखा ?" बोले : "हम ने देखा वहां कुछ लोग **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ का ज़िक्र करने और कुरआने मजीद की तिलावत में मश्ग़ूल हैं।" आप رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : "येही तो रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की मीराष है।"[1]

﴾9﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा और ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْھُمَا से मरवी है कि हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "**अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ने नामए आ'माल लिखने वाले फ़िरिश्तों के इ़लावा ऐसे फ़िरिश्तों को पैदा फ़रमाया जो ज़मीन में सियाह़त (सैर) करते रहते हैं, जब वोह किसी क़ौम को ज़िक्र में मश्ग़ूल पाते हैं तो एक दूसरे को पुकारते और कहते हैं : "अपने मत़लूब की त़रफ़ आओ।" फिर वोह सब जम्अ़ हो जाते हैं और अहले ज़िक्र को आस्मान तक घेर लेते हैं। (इख़्तितामे मह़फ़िल के बा'द जब वापस लौटते हैं तो) **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है : मेरे बन्दों को तुम ने किस ह़ाल में छोड़ा ? वोह क्या कर रहे थे ?" "फ़िरिश्ते अ़र्ज़ करते हैं : "या **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ वोह तेरी ह़म्द, तेरी बुज़ुर्गी और तस्बीह़ बयान कर रहे थे।" इरशाद फ़रमाता है : "क्या उन्हों ने मुझे देखा है ?" फ़िरिश्ते अ़र्ज़ करते हैं : "नहीं।" **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है : "अगर वोह मुझे देख लें तो ?" फ़िरिश्ते अ़र्ज़ करते हैं : "अगर वोह तुझे देख लें तो और भी ज़ियादा तेरी तस्बीह़ व तह़मीद बयान करें।" इरशाद फ़रमाता है : "वोह किस चीज़ से पनाह मांग रहे थे ?" अ़र्ज़ करते हैं : "जहन्नम से"। **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है : "क्या उन्हों ने जहन्नम को देखा है ?" फ़िरिश्ते अ़र्ज़ करते हैं : "नहीं।" इरशाद फ़रमाता है : "अगर वोह जहन्नम को देख लें तो उन की क्या ह़ालत हो ?" अ़र्ज़ करते हैं : "अगर वोह उसे देख लें तो और ज़ियादा उस से भागें और नफ़रत करें।" **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है : "वोह किस चीज़ का सुवाल कर रहे थे ?" फ़िरिश्ते अ़र्ज़ करते हैं : "वोह जन्नत त़लब कर रहे थे।" इरशाद फ़रमाता है : "क्या उन्हों ने जन्नत को देखा है ?" अ़र्ज़ करते हैं : "नहीं।" **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है : "अगर

---

1 ......المعجم الاوسط، من اسمہ احمد، الحدیث: ۱۴۲۹، ج ۱، ص ۳۹۰، مفہوماً۔

वोह जन्नत को देख लेते तो क्या करते ?'' फ़िरिश्ते अ़र्ज़ करते हैं : ''उस की त़लब में और ज़ियादा कोशिश करते।'' इरशाद फ़रमाता है : ''मैं तुम्हें गवाह बनाता हूं कि मैं ने उन सब को बख़्श दिया।'' फ़िरिश्ते अ़र्ज़ करते हैं : ''उन में फ़ुलां बिन फ़ुलां भी था जो (ज़िक्र के लिये नहीं बल्कि) अपनी किसी ज़रूरत के लिये आया था।'' **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है : ''येह ऐसे लोग हैं जिन का हम नशीन भी मह़रूम नहीं रहता।''(1)

तीसरी फ़स्ल : कलिमए तौह़ीद पढ़ने के फ़ज़ाइल

لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہ से मुतअ़ल्लिक़ 15 फ़रामीने मुस्त़फ़ा :

﴾1﴿....सब से अफ़्ज़ल कलिमा जो मैं ने और तमाम अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने अदा किया वोह येह है ''لَآاِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَاشَرِيْكَ لَهٗ''(2)

﴾2﴿.....जो शख़्स रोज़ाना **100** बार येह कलिमात ''لَآاِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَاشَرِيْكَ لَهٗ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ'' पढ़ता है तो उसे दस ग़ुलाम आज़ाद करने के बराबर षवाब मिलता है, उस के नामए आ'माल में **100** नेकियां लिखी जाती और **100** गुनाह मिटा दिये जाते हैं, वोह उस दिन शाम तक शैत़ान से मह़फ़ूज़ रहता है और इस से बढ़ कर किसी और का अ़मल नहीं होता मगर येह कि कोई शख़्स उस से ज़ियादा बार येह कलिमात पढ़े।(3)

﴾3﴿.....जो शख़्स कामिल वुज़ू कर के आस्मान की त़रफ़ निगाहें उठा कर कहे :

''اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ''

तो उस के लिये जन्नत के आठों दरवाज़े खोल दिये जाते हैं, जिस से चाहे दाख़िल हो जाए।(4)

﴾4﴿.....لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہ पढ़ने वाले को क़ब्रो ह़श्र में कोई वह़शत न होगी, और गोया मैं मुलाह़ज़ा कर रहा हूं कि सूर फूंका जा रहा है और येह लोग सर से मिट्टी झाड़ते हुए कह रहे हैं : ''اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِىْ اَذْهَبَ عَنَّا الْحُزْنَ اِنَّ رَبَّنَا لَغَفُوْرٌ شَكُوْرٌ'' या'नी सब ख़ूबियां **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को जिस ने हम से ग़म को दूर फ़रमाया, बिला शुबा हमारा रब्ब عَزَّوَجَلَّ बख़्शने वाला और क़द्र करने वाला है।(5)

---

1 ......سنن الترمذی، احادیث شتی، باب ماجاء ان للّٰہ ملائکة سیاحین......الخ، الحدیث:۳۶۱۱، ج۵، ص۳۴۴، بتقدمٍ وتاخرٍ۔

2 ......سنن الترمذی، احادیث شتی، باب فی دعاء یوم عرفة، الحدیث:۳۵۹۶، ج۵، ص۳۳۹۔

3 ......صحیح مسلم، کتاب الذکر والدعاء......الخ، باب فضل التھلیل والتسبیح، الحدیث:۲۶۹۱، ص۱۴۴۵۔

4 ......سنن ابی داود، کتاب الطھارة، باب مایقول الرجل اذا توضأ، الحدیث:۱۶۹، ج۱، ص۹۰، بتغیرٍ۔

5 ......شعب الایمان للبیھقی، باب فی الایمان باللّٰہ، الحدیث:۱۰۰، ج۱، ص۱۱۱، باختصارٍ۔

﴾5﴿.....ऐ अबू हुरैरा ! क़ियामत के दिन तुम्हारी हर नेकी तोली जाएगी सिवाए इस कलिमे "لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللہ" के। सिद्क़े दिल से पढ़ा हुवा कलिमा अगर मीज़ाने अ़मल के एक पलड़े में रखा जाए और दूसरे में सातों ज़मीनो आस्मान और जो कुछ इस में है सब रख दिया जाए तो भी لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللہ वाला पलड़ा ही भारी रहेगा।[1]

﴾6﴿.....सच्चे दिल से "لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللہ" पढ़ने वाला अगर ज़मीन भर गुनाह ले कर आए फिर भी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस की मग़्फ़िरत फ़रमा देगा।[2]

﴾7﴿.....ऐ अबू हुरैरा ! अपने मुर्दों को لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللہ की तल्क़ीन किया करो कि येह गुनाहों को बिल्कुल मिटा देता है। "ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم येह तो मुर्दों के लिये है, ज़िन्दों के लिये क्या है ?" इरशाद फ़रमाया : "هِيَ أَهْدَمُ هِيَ أَهْدَم" या'नी येह (गुनाहों को) ज़ियादा मिटाने वाला है, येह ज़ियादा मिटाने वाला है।[3]

﴾8﴿.....जिस ने इख़्लास के साथ لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللہ कहा वोह दाख़िले जन्नत हुवा।[4]

﴾9﴿.....तुम में से हर एक दाख़िले जन्नत होगा सिवाए उस के जो इन्कार करे और बारगाहे ख़ुदावन्दी से इस त़रह़ भागे जैसे ऊंट अपने मालिक से भागता है। अ़र्ज़ की गई : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم येह इन्कार करने और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से दूर होने वाला कौन है ?" इरशाद फ़रमाया : "जो لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللہ नहीं कहता। तुम येह कलिमा कषरत से पढ़ा करो इस से पहले कि तुम्हारे और उस के दरमियान फ़ासिला पैदा हो जाए (या'नी मौत आ जाए) येह कलिमए तौह़ीद है, येह कलिमए इख़्लास है, येह परहेज़गारी का कलिमा है, येह पाकीज़ा कलिमा है, येह दा'वते ह़क़ है, येह मुह़कम गुरोह है, येह जन्नत की क़ीमत है।"[5]

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ कुरआने पाक में इरशाद फ़रमाता है : هَلْ جَزَآءُ الْاِحْسَانِ اِلَّا الْاِحْسَانُ ﴿۶۰﴾ (پ۲۷،الرحمٰن:۶۰)
इस आयत की तफ़्सीर में कहा गया है कि दुन्या में एह़सान لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللہ कहना है, जिस का बदला आख़िरत में जन्नत है।

---

1 ......المستدرک، کتاب الدعاء والتکبیر......الخ، فضل لا الہ الا اللہ......الخ، الحدیث:۱۹۷۹، ج۲، ص۲۱۶، باختصارٍ۔

2 ......سنن الترمذی، کتاب الدعوات، باب فی فضل التوبۃ والاستغفار......الخ، الحدیث:۳۵۵۱، ج۵، ص۳۱۹، مفھومًا۔

3 ......کنزالعمال، کتاب الموت، الباب الثانی فی امور قبل الدفن، الحدیث:۴۲۱۹۵، ج۱۵، ص۲۴۱، مفھومًا۔

4 ......المعجم الکبیر، الحدیث:۵۰۷۴، ج۵، ص۱۹۷۔

5 ......المستدرک، کتاب التوبۃ والانابۃ، باب کلکم یدخل الجنۃ......الخ، الحدیث:۷۷۰۲، ج۵، ص۳۵۱، باختصارٍ۔

इसी त़रह़ एक और मक़ाम पर इरशाद होता है : لِلَّذِيْنَ اَحْسَنُوا الْحُسْنٰى وَزِيَادَةٌ (پ۱۱، یونس:۲۶)
"तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : भलाई वालों के लिये भलाई है और इस से भी ज़ाइद।"

﴾10﴿.....“لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ” येह कलिमात 10 मरतबा पढ़ने वाले को 10 गुलाम आज़ाद करने के बराबर षवाब मिलता है।(1)

﴾11﴿.....जो शख़्स दिन में 200 मरतबा येह कलिमात कह ले

“لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ”

तो उस के दर्जे को न कोई पहले वाला पा सकता है और न बा'द वाला मगर वोह जो उस से अफ़्ज़ल अ़मल करे।(2)

﴾12﴿.....जो शख़्स किसी बाज़ार में येह कलिमात पढ़े :

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ يُحْيِيْ وَيُمِيْتُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ

तो उस के नामए आ'माल में 10 लाख नेकियां लिखी जाएगी, 10 लाख गुनाह मिटाए जाएंगे और जन्नत में उस के लिये एक घर बनाया जाएगा।(3)

﴾13﴿.....जब बन्दा لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه कहता है तो येह कलिमा उस के नामए आ'माल की त़रफ़ बढ़ता है और इस में जो गुनाह पाता है उसे मिटा देता है ह़त्ता कि अपनी मिष्ल नेकी पा कर उस के पहलू में बैठ जाता है।(4)

﴾14﴿.....जिस शख़्स ने 10 मरतबा येह कलिमात पढ़े لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ गोया उस ने अवलादे इस्माईल में से चार गुलाम आज़ाद किये।(5)

﴾15﴿.....जो शख़्स रात भर जाग कर येह कलिमात पढ़े

“لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ، سُبْحٰنَ اللّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَلَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْمِ”

फिर अ़र्ज़ करे : "या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मेरी मग़्फ़िरत फ़रमा !" तो उस की मग़्फ़िरत कर दी जाएगी, या कोई दुआ़ करे तो क़बूल की जाएगी और अगर नमाज़ पढ़े तो क़बूल की जाएगी।(6)

---

1 ......المستدرک، کتاب الدعاء و التکبیر......الخ، باب من قال لا اله الا اللّٰه وحده......الخ، الحدیث:۱۸۸۸، ج۲، ص۱۶۷۔

2 ......المسند للامام احمد بن حنبل، مسند عبداللّٰه بن عمرو بن العاص، الحدیث:۷۰۲۴، ج۲، ص۶۷۱۔

3 ......سنن ابن ماجه، کتاب التجارات، باب الاسواق ودخولها، الحدیث:۲۲۳۵، ج۳، ص۵۳۔۵۴۔

4 ......مجمع الزوائد، کتاب الاذکار، باب ماجاء فی فضل لا اله الا اللّٰه، الحدیث:۱۶۸۰۳، ج۱۰، ص۸۸، مفهومًا۔

5 ......صحیح مسلم، کتاب الذکر والدعاء......الخ، باب فضل التهلیل و التسبیح و الدعاء، الحدیث:۲۶۹۳، ص۱۴۴۶۔

6 ......صحیح البخاری، کتاب التهجد، باب فضل من تعارّمن اللیل فصلی، الحدیث:۱۱۵۴، ج۱، ص۳۹۱، بتقدمٍ وتاخرٍ۔

चौथी फ़स्ल : سُبْحٰنَ اللہ, اَلْحَمْدُ لِلّٰہ और दीगर अज़्कार के फ़ज़ाइल

سُبْحٰنَ اللہ, اَلْحَمْدُ لِلّٰہ और दीगर अज़्कार के मुतअ़ल्लिक़ 22 फ़रामीने मुस्त़फ़ा :

﴾1﴿.....जिस ने हर नमाज़ के बा'द 33 मरतबा سُبْحٰنَ اللہ , 33 मरतबा اَلْحَمْدُ لِلّٰہ और 33 मरतबा اَللّٰہُ اَکْبَر कहा, फिर 100 का अ़दद पूरा करने के लिये

"لَآاِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ وَحْدَہٗ لَاشَرِیْكَ لَہٗ لَہُ الْمُلْكُ وَلَہُ الْحَمْدُ وَھُوَ عَلٰی کُلِّ شَیْءٍ قَدِیْر"

कहा तो उस के गुनाह मुआ़फ़ कर दिये जाएंगे अगर्चे समन्दर के झाग के बराबर हों।(1)

﴾2﴿.....जो एक दिन में 100 मरतबा سُبْحٰنَ اللّٰہِ وَبِحَمْدِہٖ पढ़ता है उस के गुनाह मिटा दिये जाते हैं अगर्चे समन्दर के झाग के बराबर हों।(2)

﴾3﴿.....एक शख़्स ने बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم दुन्या ने मुझ से मुंह मोड़ लिया और मेरा माल कम पड़ गया है।" हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "तुम फ़िरिश्तों की नमाज़ और मख़्लूक़ की तस्बीह़ क्यूं नहीं पढ़ते जिस के सबब उन्हें रिज़्क़ मिलता है।" अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم वोह क्या है?" इरशाद फ़रमाया : "سُبْحٰنَ اللّٰہِ وَبِحَمْدِہٖ سُبْحٰنَ اللّٰہِ الْعَظِیْمِ اَسْتَغْفِرُاللّٰہ तुलूए़ फ़ज्र और नमाज़े फ़ज्र के दरमियान 100 मरतबा येह कलिमात पढ़ा करो दुन्या तुम्हारे पास ज़लील व ह़क़ीर हो कर आएगी और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हर कलिमे से एक फ़िरिश्ता पैदा फ़रमाएगा जो क़ियामत तक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की तस्बीह़ बयान करता रहेगा जिस का षवाब तुम्हारे नामए आ'माल में लिखा जाता रहेगा।"(3)

﴾4﴿.....जब बन्दा "اَلْحَمْدُ لِلّٰہ" कहता है तो येह (कलिमा) ज़मीनो आस्मान के दरमियान को भर देता है, जब दूसरी मरतबा "اَلْحَمْدُ لِلّٰہ" कहता है तो सातवें आस्मान से ले कर तह़्तुष्षरा तक को भर देता है और जब तीसरी मरतबा "اَلْحَمْدُ لِلّٰہ" कहता है तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है : "सुवाल कर, तुझे अ़त़ा किया जाएगा।"

---

1 ......صحیح مسلم، کتاب المساجد و مواضع الصلاۃ، الحدیث:۵۹۷، ص ۳۰۱۔

2 ......صحیح البخاری، کتاب الدعوات، باب فضل التسبیح، الحدیث:۶۴۰۵، ج۴، ص ۲۱۹۔

3 ......اللآلیٔ المصنوعۃ، کتاب الذکر والدعاء، ج ۲، ص ۲۸۷، بتغیرٍ۔

《5》.....हज़रते सय्यिदुना रफ़ाआ बिन राफ़ेअ़ ज़ुरक़ी رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : एक दिन हम हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की इक़्तिदा में नमाज़ अदा कर रहे थे जब आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने रुकूअ़ से उठते हुए سَمِعَ اللّٰہُ لِمَنْ حَمِدَہ कहा तो पीछे से किसी शख़्स की आवाज़ आई : "رَبَّنَا لَکَ الْحَمْدُ حَمْدًا کَثِیْرًا طَیِّبًا مُّبَارَکًا فِیْہِ" आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने नमाज़ के बा'द इस्तिफ़सार फ़रमाया : "येह (कलिमात) किस ने अदा किये ?" उस ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم मैं ने ।" तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "मैं ने देखा कि **30** से ज़ाइद फ़िरिश्ते इन कलिमात की त़रफ़ बढ़ रहे थे कि इन में से कौन इन कलिमात को पहले लिखता है ।"[1]

《6》....."لَآاِلٰہَ اِلَّا اللّٰہ، سُبْحٰنَ اللّٰہ، وَالْحَمْدُ لِلّٰہ، وَاللّٰہُ اَکْبَر، وَلَاحَوْلَ وَلَاقُوَّۃَ اِلَّا بِاللّٰہِ الْعَلِیِّ الْعَظِیْم" बाक़ी रहने वाली नेकियां हैं ।[2]

《7》.....ज़मीन पर रहने वाला जो भी शख़्स येह कलिमात पढ़े :

"لَآاِلٰہَ اِلَّا اللّٰہ، سُبْحٰنَ اللّٰہ، وَالْحَمْدُ لِلّٰہ، وَاللّٰہُ اَکْبَر، وَلَاحَوْلَ وَلَاقُوَّۃَ اِلَّا بِاللّٰہِ الْعَلِیِّ الْعَظِیْم"

तो उस के गुनाह बख़्श दिये जाते हैं अगर्चे समन्दर के झाग के बराबर हों ।[3]

《8》.....जो लोग **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के जलाल, तस्बीह़, तक्बीर और तह़मीद का ज़िक्र करते हैं तो वोह कलिमात अ़र्श के गिर्द त़वाफ़ करते हैं, उन की आवाज़ शहद की मख्खियों की भिनभिनाहट की त़रह़ होती है, वोह अपने पढ़ने वालों का तज़किरा करते हैं । क्या तुम नहीं चाहते कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हां हमेशा तुम्हारा तज़किरा होता रहे ?[4]

《9》....."سُبْحٰنَ اللّٰہِ وَالْحَمْدُ لِلّٰہِ وَلَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ وَاللّٰہُ اَکْبَر" कहना मुझे हर उस चीज़ से ज़ियादा मह़बूब है जिस पर सूरज तुलूअ़ होता है ।[5]

---

1 ......صحیح البخاری، کتاب الآذان، الحدیث:۷۹۹، ج۱، ص۲۸۰۔

2 ......الدرالمنثور، الجزء الخامس عشر، سورۃ الکھف، ج۵، ص۳۹۶، بتقدمٍ وتاخرٍ۔

3 ......المستدرک، کتاب الدعاء والتکبیر......الخ، باب افضل الذکر لا الہ الا اللّٰہ......الخ، الحدیث:۱۸۹۶، ج۲، ص۱۷۹۔

4 ......سنن ابن ماجہ، کتاب الادب، باب فضل التسبیح، الحدیث:۳۸۰۹، ج۲، ص۲۵۳، مفہومًا۔

5 ......صحیح مسلم، کتاب الذکر والدعاء......الخ، باب فضل التھلیل والتسبیح والدعاء، الحدیث:۲۶۹۵، ص۱۴۴۲۔

एक रिवायत में ''لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰه'' का इज़ाफ़ा है और आख़िर में है कि ''येह दुन्या व माफ़ीहा (या'नी दुन्या और जो कुछ इस में है) से बेहतर है।''

﴾10﴿.....अल्लाह عَزَّوَجَلَّ को चार कलिमात बहुत ज़ियादा पसन्द हैं :

(1).....سُبْحٰنَ اللّٰه (2)..... اَلْحَمْدُ لِلّٰه (3).....لَآاِلٰهَ اِلَّا اللّٰه (4).....اَللّٰهُ اَكْبَر

इन में से जिस कलिमे को पहले कहो कोई ह़रज नहीं।[1]

﴾11﴿.....सफ़ाई ईमान का हिस्सा है, اَلْحَمْدُ لِلّٰه कहना मीज़ान को भर देता है और سُبْحٰنَ اللّٰهِ وَاللّٰهُ اَكْبَر ज़मीनो आस्मान के दरमियान को भर देते हैं। नमाज़ नूर है, सदक़ा दलील है, सब्र रोशनी है, क़ुरआन तेरे ह़क़ में या तेरे ख़िलाफ़ दलील है। हर शख़्स इस ह़ाल में सुब्ह़ करता है कि अपने आप को बेचने वाला होता है पस वोह ख़ुद को हलाकत में डाल देता है या अपने आप को ख़रीदने वाला होता है पस ख़ुद को (जहन्नम से) आज़ाद करा लेता है।[2]

﴾12﴿..... दो कलिमात ज़बान पर हल्के, मिज़ान में भारी और रह़मान عَزَّوَجَلَّ को मह़बूब हैं :

(1)..... سُبْحٰنَ اللّٰهِ وَبِحَمْدِهٖ (2).....سُبْحٰنَ اللّٰهِ الْعَظِيْم[3]

﴾13﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़र رَضِیَ اللّٰه تعَالٰی عَنْهُ ने अ़र्ज़ की : ''बारगाहे इलाही में सब से अफ़्ज़ल कलाम कौन सा है ?'' इरशाद फ़रमाया : ''वोह जिसे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने अपने मलाइका के लिये ख़ास कर लिया या'नी : سُبْحٰنَ اللّٰهِ وَبِحَمْدِهٖ سُبْحٰنَ اللّٰهِ الْعَظِيْم''[4]

﴾14﴿.....बेशक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने अपने कलाम में से (इन कलिमात) ''سُبْحٰنَ اللّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَلَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَر'' को चुन लिया है। चुनान्चे, जब बन्दा سُبْحٰنَ اللّٰه कहता है तो उस के लिये 20 नेकियां लिखी जाती और 20 गुनाह मिटा दिये जाते हैं और जब اَللّٰهُ اَكْبَر कहता है तो भी येही फ़ज़ीलत ह़ासिल होती है। (रावी कहते हैं :) आप صَلَّی اللّٰه تعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने बक़िय्या कलिमात की भी येही फ़ज़ीलत इरशाद फ़रमाई।[5]

---

1 ......صحیح مسلم، کتاب الادب، باب کراھة التسمیة بالاسماء القبیحة......الخ، الحدیث:۲۱۳۷، ص ۱۱۸۱۔

2 ......صحیح مسلم، کتاب الطھارة، باب فضل الوضوء، الحدیث:۲۲۳، ص ۱۴۰، دون"مشتر نفسه"۔

3 ......صحیح البخاری، کتاب التوحید، باب قول اللّٰه:ونضع الموازین......الخ، الحدیث:۷۵۶۳، ج۴، ص ۶۰۰، بتقدمٍ وتاخرٍ۔

4 ......صحیح مسلم، کتاب الذکر والدعاء، باب فضل سبحان اللّٰه وبحمده، الحدیث:۲۷۳۱، ص ۱۴۶۲، مفھومًا۔

5 ......المسندللامام احمد بن حنبل، مسند ابی ھریرة، الحدیث:۸۰۹۹، ج۳، ص ۱۸۲۔

﴾15﴿.....जो سُبْحٰنَ اللّٰہِ وَبِحَمْدِہٖ कहता है उस के लिये जन्नत में खजूर का एक दरख़्त लगा दिया जाता है।[1]

﴾16﴿.....फ़ुक़रा ने बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم आख़िरत का षवाब तो सब अमीरों ने ले लिया क्यूंकि हमारी त़रह़ वोह भी नमाज़ रोजे़ की पाबन्दी करते हैं और इस के साथ साथ अपने ज़ाइद अमवाल में से सदक़ा व ख़ैरात भी करते हैं।" आप صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "क्या अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ ने तुम्हारे लिये सदके़ का सबब नहीं बनाया ? سُبْحٰنَ اللّٰہ कहना सदक़ा है, اَلْحَمْدُ لِلّٰہ कहना सदक़ा है, لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہ कहना सदक़ा है, اَللّٰہُ اَکْبَر कहना सदक़ा है। नेकी की दा'वत देना सदक़ा है, बुराई से मन्अ़ करना सदक़ा है, तुम में से कोई अपनी अहलिय्या के मुंह में लुक़्मा रखता है तो येह भी उस के लिये सदक़ा है और अपनी बीवी से मुलाक़ात करना भी सदक़ा है।" उन्हों ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم अगर कोई शख़्स अपनी बीवी से शहवत के साथ मुलाक़ात करे तो क्या इस में भी उस के लिये अज्र है ?" फ़रमाया : "क्यूं नहीं अगर वोह ह़राम त़रीके़ से (शहवत पूरी) करता तो क्या गुनाहगार न होता ?" उन्हों ने अ़र्ज़ की : "जी हां !" इरशाद फ़रमाया : "इसी त़रह़ जब वोह ह़लाल त़रीके़ से (शहवत पूरी) करेगा तो अज्र पाएगा।"[2]

﴾17﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़र رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عَنْہُ ने बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم मालदार लोग अज्रो षवाब में बढ़ गए क्यूंकि वोह हमारी ही त़रह़ इबादत करते हैं और माल भी ख़र्च करते हैं और हम इस की इस्तित़ाअ़त नहीं रखते। तो हु़ज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : क्या मैं तुम्हें ऐसी चीज़ न सिखाऊं जिस के ज़रीए तुम अगलों और पिछलों के अज्र को पा लो और अज्र में तुम्हारे बराबर कोई न हो सके मगर जो तुम्हारी मिष्ल कहे। (वोह येह है कि) हर नमाज़ के बा'द سُبْحٰنَ اللّٰہ और اَلْحَمْدُ لِلّٰہ 33-33 बार और اَللّٰہُ اَکْبَر 34 बार पढ़ लिया करो।"[3]

﴾18﴿.....तस्बीह़, तहलील और तक़्दीस[4] को ख़ुद पर लाज़िम कर लो इस से कभी ग़फ़्लत न बरतना और उंगलियों पर शुमार किया करो क्यूंकि इन्हें बोलने की कु़व्वत अ़त़ा की जाएगी।[5] या'नी वोह बरोज़े क़ियामत गवाही देंगी।

---

1 ......سنن الترمذی، کتاب الدعوات، الحدیث:۳۴۷۵، ج۵، ص۲۸۶۔

2 ......صحیح مسلم، کتاب المساجد و مواضع الصلاۃ، باب استحباب الذکر بعد......الخ، الحدیث:۵۹۵، ص۳۰۰، باختصارٍ۔

3 ......سنن ابن ماجہ، کتاب اقامۃ الصلاۃ......الخ، باب مایقال بعد التسلیم، الحدیث:۹۲۷، ج۱، ص۴۹۸، مفھومًا۔

4 ...तस्बीह़ या'नी سُبْحٰنَ اللّٰہ तहलील या'नी لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہ और तक़्दीस या'नी سُبُّوْحٌ قُدُّوْسٌ رَبُّنَا وَرَبُّ الْمَلٰئِکَۃِ وَالرُّوْح या سُبْحٰنَ الْمَلِکِ الْقُدُّوْس

5 ......سنن ابی داود، کتاب الوتر، باب التسبیح بالحصی، الحدیث:۱۵۰۱، ج۲، ص۱۱۵۔۱۱۶، عن یسیرۃ

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عَنْہُما फ़रमाते हैं : "मैं ने हुज़ूर صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को शुमार करते हुए तस्बीह़ पढ़ते देखा।"(1)

﴾19﴿.....जब बन्दा "لَآاِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ وَاللّٰہُ اَکْبَر" कहता है तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है : मेरे बन्दे ने सच कहा لَآاِلٰہَ اِلَّا اَنَا وَاَنَا اَکْبَر या'नी मैं ही मा'बूद हूं और मैं सब से बड़ा हूं।" और जब बन्दा "لَآاِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ وَحْدَہٗ لَا شَرِیْکَ لَہ" कहता है तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है : मेरे बन्दे ने सच कहा لَآاِلٰہَ اِلَّا اَنَا وَحْدِیْ لَاشَرِیْکَ لِی या'नी अकेला मैं ही मा'बूद हूं, मेरा कोई शरीक नहीं।" और जब बन्दा "لَآاِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ وَلَاحَوْلَ وَلَاقُوَّۃَ اِلَّا بِاللّٰہ" कहता है तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है : لَآاِلٰہَ اِلَّا اَنَا وَلَاحَوْلَ وَلَاقُوَّۃَ اِلَّا بِی या'नी मैं ही मा'बूद हूं और नेकी की ताक़त और बुराई से बचने की कुव्वत मेरी ही त़रफ़ से है।" और जो शख़्स ब वक़्ते मौत इन कलिमात को पढ़ लेगा उसे आग न छूएगी।(2)

﴾20﴿....सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان से इरशाद फ़रमाया : "क्या तुम में से कोई रोज़ाना एक हज़ार नेकियां कमाने से आ़जिज़ है ?" ह़ाज़िरीन में से किसी ने अ़र्ज़ की : " येह कैसे हो सकता है ?" इरशाद फ़रमाया : "जो कोई 100 मरतबा سُبْحٰنَ اللّٰہ कहे तो उस के लिये एक हज़ार नेकियां लिखी जाती और एक हज़ार गुनाह मिटा दिये जाते हैं।"(3)

﴾21﴿....क्या मैं तुम्हें ऐसा अ़मल न बताऊं जो अ़र्श के नीचे जन्नत के ख़ज़ानों में से है ? तुम لَاحَوْلَ وَلَاقُوَّۃَ اِلَّا بِاللّٰہ पढ़ोगे तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाएगा : "मेरे बन्दे ने सरे तस्लीम ख़म किया और नजात पा गया।"(4)

﴾22﴿.....जो सुब्ह़ के वक़्त येह कलिमात पढ़े, رَضِیْتُ بِاللّٰہِ رَبًّا وَّبِالْاِسْلَامِ دِیْنًا وَّبِالْقُرْاٰنِ اِمَامًا وَّبِمُحَمَّدٍ نَّبِیًّا وَّرَسُوْلًا या'नी मैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के रब्ब होने, इस्लाम के दीन होने, कुरआन के इमाम होने और सय्यिदुना मुह़म्मद صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के नबी व रसूल होने पर राज़ी हूं।" तो अल्लाह तआ़ला के ज़िम्मए करम पर है कि वोह बरोज़े क़ियामत उसे खुश करे।"(5)

---

1 ......سنن ابی داود، کتاب الوتر، باب التسبیح بالحصی، الحدیث:۱۵۰۲، ج۲، ص۱۱۶۔

2 ......سنن ابن ماجہ، کتاب الادب، باب فضل لاالہ الااللّٰہ، الحدیث:۳۷۹۴، ج۴، ص۲۴۴۔

3 ......سنن الترمذی، کتاب الدعوات، الحدیث:۳۴۷۴، ج۵، ص۲۸۶، بتغیرِالفاظٍ۔

4 ......شعب الایمان للبیھقی، باب فی ان القدر خیرہ وشرہ من اللّٰہ عزوجل، الحدیث:۱۹۳، ج۱، ص۲۱۶، بتقدمٍ وتاخرٍ۔

5 ......کنزالعمال، کتاب الاذکار، الباب الثامن فی الدعاء، الحدیث:۳۵۶۴، ج۲، ص۷۰، بتقدمٍ وتاخرٍ۔

एक रिवायत में है कि जो येह कलिमात पढ़ेगा अल्लाह तआ़ला उस से राज़ी होगा।

घर से निकलते वक़्त शयातीन से हि़फ़ाज़त :

हज़रते सय्यिदुना मुजाहिद عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَاحِد फ़रमाते हैं : जब बन्दा घर से निकलते हुए بِسْمِ اللّٰهِ कहता है तो फ़िरिश्ता कहता है : "तू ने हिदायत पाई।" जब वोह تَوَكَّلْتُ عَلَى اللّٰهِ या'नी मैं ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ पर भरोसा किया कहता है तो फ़िरिश्ता कहता है : "तुझे किफ़ायत करेगा।" और जब لَاحَوْلَ وَلَاقُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ कहता है तो फ़िरिश्ता कहता है : "तू मह़फ़ूज़ हो गया।" फिर शयातीन येह कहते हुए उस से दूर हो जाते हैं कि "तुम्हारा उस शख़्स से क्या वासित़ा जो हिदायत, किफ़ायत और हि़फ़ाज़त से नवाज़ा गया, अब तुम्हारा उस पर कोई बस नहीं चल सकता।"

पांचवीं फ़स्ल : ह़क़ीक़ते ज़िक्र और इस के फ़वाइद

एक ए'तिराज़ और इस का जवाब :

अगर तू येह कहे कि ज़िक्रुल्लाह ज़बान पर आसान और मशक़्क़त में कम है तो फिर येह दीगर इबादात से अफ़्ज़ल व मुफ़ीद तर क्यूं ? हालांकि इन में मशक़्क़त ज़ियादा है। तो जान ले कि इस की ह़क़ीक़ते ह़ाल पर आगाही तो इल्मे मुकाशफ़ा से ही मुमकिन है। हां ! इल्मे मुआ़मला की रू से सिर्फ़ इतना कहा जा सकता है कि मुअष्षिर व मुफ़ीद ज़िक्र वोही है जो हुज़ूरे दिल के साथ हमेशा हो। अगर ज़बान ज़ाकिर और दिल ग़ाफ़िल हो तो नफ़्अ़ कम होता है। इस बात की ताईद अह़ादीषे मुबारका[1] से होती है। इसी त़रह़ किसी लम्हे दिल का ह़ाज़िर होना और फिर दुन्यावी मशाग़िल में मश्ग़ूल हो जाना भी नफ़्अ़ कम कर देता है। कुल वक़्त या अकषर अवक़ात हुज़ूरे क़ल्ब के साथ ज़िक्रे इलाही तमाम इबादात पर मुक़द्दम बल्कि सब से अफ़्ज़ल है और इल्मी इबादात का इन्तिहाई नतीजा है।

ज़िक्र की इब्तिदा भी है और इन्तिहा भी, इस की इब्तिदा भी उन्स व मह़ब्बत लाज़िम करती है और इन्तिहा भी और येही दो चीज़ें मत़लूब हैं। रिज़ाए इलाही का इरादा करने वाला

1.....हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है कि हुज़ूरे अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से क़बूलिय्यत के यक़ीन के साथ दुआ़ मांगो और याद रखो ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ खेलने वाले ग़ाफ़िल दिल के साथ मांगी हुई दुआ़ क़बूल नहीं फ़रमाता।

(سنن الترمذی، کتاب الدعوات، الحدیث: ۳۴۹۰، ج۵، ص ۲۹۲، مفهومًا)

इब्तिदा में अपनी ज़बान व दिल को बे तकल्लुफ़ वसाविस से बचा कर ज़िक्रुल्लाह में मश्ग़ूल रखता है और अगर उसे इस अ़मल पर इस्तिक़ामत नसीब हो जाती है तो वोह इस से मानूस हो जाता है और मज़्कूरा मह़ब्बत उस के दिल में घर कर जाती है और येह बात कोई ह़ैरान कुन नहीं, क्यूंकि आ़म तौ़र पर येही देखने में आता है कि जब एक शख़्स के सामने किसी अजनबी और ग़ैर मौजूद शख़्स का ज़िक्र और उस के अवसाफ़ का बार बार तज़्किरा किया जाए तो उस के दिल में जज़्बाते मह़ब्बत उभरना शुरूअ़ हो जाते हैं बल्कि उस के अवसाफ़ और कषरते ज़िक्र की बिना पर उस का आ़शिक़ हो जाता है। फिर वोही ज़िक्र जिस की कषरत इब्तिदाअन तक्लीफ़ का बाइ़ष थी अब जब उस का आ़शिक़ हो गया तो उसी ज़िक्र की कषरत पर येह ऐसा मजबूर होता है कि उस के बिग़ैर चैन नहीं आता। क्यूंकि مَنْ اَحَبَّ شَيْئًا اَكْثَرَ ذِكْرَه या'नी बन्दा जिस चीज़ को मह़बूब रखता है उस का तज़्किरा भी कषरत से करता है और जो किसी चीज़ का ज़िक्र ज़ियादा करता है ब तकल्लुफ़ ही सही (आख़िरे कार) उसे पसन्द करता है। इसी त़रह़ शुरूअ़ में तकल्लुफ़ के साथ ज़िक्र का नतीजा उन्स व मह़ब्बत होता है ह़त्ता कि एक वक़्त ऐसा आता है कि उस से बाज़ रहना मुश्किल हो जाता है। तो जो चीज़ नतीजा थी अब वोह सबब बन जाती है। और अकाबिरीन के इस क़ौल का येही मत़लब है कि "मैं ने **20** साल तक क़ुरआने पाक (पढ़ने में) रियाज़त की और **20** साल तक इस से नफ़्अ़ अन्दोज़ हुवा।"

इस लुत़्फ़ अन्दोज़ी का सुदूर उन्स व मह़ब्बत से ही होता है और उन्स व मह़ब्बत का ह़ुसूल तब होता है जब कोशिश दाइमी हो और त़वील मुद्दत तक तकल्लुफ़ से काम लिया जाए ह़त्ता की तकल्लुफ़ त़बीअ़त में शामिल हो जाए और येह अम्र बईद अज़ क़ियास नहीं कि इन्सान कोई नापसन्द खाना अव्वलन बित्तकल्लुफ़ खाता है तो मशक़्क़त बरदाश्त करता है लेकिन जब येही खाना मुसलसल खाने लग जाता है तो वोह उस को रास आ जाता है ह़त्ता कि अब उस से उस खाने के बिग़ैर नहीं रहा जाता। अ़ल ग़रज़ नफ़्स पर जो चीज़ तकल्लुफ़ के साथ लाज़िम की जाए वोह उस का मुतह़म्मिल और आ़दी बन जाता है। هِيَ النَّفْسُ مَا عَوَّدْتَهَا تَتَعَوَّدُ या'नी नफ़्स को तू जिस चीज़ की आ़दत डालेगा वोह उस का आ़दी बन जाएगा।" ख़ुलासा येह कि इब्तिदा में जो चीज़ उस के लिये तकलीफ़ का बाइ़ष बनती है वोह बा'द में उस की त़बीअ़त बन जाती है।

फिर जब बन्दा ज़िक्रुल्लाह से उन्स पा लेता है तो ग़ैरुल्लाह का ज़िक्र ख़त्म हो जाता है। और ग़ैरुल्लाह से मुराद वोह चीज़ है जो मौत के वक़्त जुदा हो जाए और क़ब्र में उस का साथ न दे। घर, माल, अवलाद और ओ़हदा कुछ भी बाक़ी नहीं रहता सिवाए ज़िक्रुल्लाह के पस अगर उसे ज़िक्रुल्लाह से उन्स था तो अब वोह इस से नफ़्अ़ उठाएगा और ज़िक्र से ग़ाफ़िल करने वाली

चीज़ों की जुदाई से लज़्ज़त पाएगा। क्यूंकि दुन्यवी ज़िन्दगी में ज़रूरियात पूरी करने वाली अश्या ज़िक्रुल्लाह से रुकावट बनती हैं लेकिन मौत के बा'द येह रुकावटें ख़त्म हो जाती हैं। गोया उस के और महबूब के दरमियान हाइल क़ैद ख़ाने से नजात मिल गई अब वोह है और उस का महबूब ! उस की ख़ुशी में इज़ाफ़ा होगा। इसी वजह से रसूले ख़ुदा, मुहम्मदे मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "बेशक जिब्राईल ने मेरे दिल में येह बात डाली कि जिस से महब्बत करनी है कर लो बिल आख़िर आप इसे छोड़ने वाले हैं।"(1)

मज़्कूरा हदीषे पाक में मुराद हर वोह चीज़ है जिस का तअ़ल्लुक़ दुन्या से हो क्यूंकि मरते ही येह चीज़ें उस के हक़ में फ़ना हो जाती हैं। ज़मीन पर जितने हैं सब को फ़ना है और बाक़ी है रब्ब عَزَّوَجَلَّ की ज़ात, अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाला।

पस मरने वाले के हक़ में दुन्या फ़ानी हो चुकी यहां तक कि मख़्सूस मुद्दत के बा'द बज़ाते ख़ुद दुन्या भी फ़ना हो जाएगी। अब येह (ज़िक्रुल्लाह से) उन्स व महब्बत ही है कि मरने के बा'द बन्दा जिस से लुत्फ़ अन्दोज़ होता रहता है ह़त्ता कि जवारे रह़मत में जगह पा लेता है और ज़िक्र से तरक़्क़ी करता हुवा मुलाक़ात की मन्ज़िल तक जा पहुंचता है और इस अज्र का ज़ुहूर क़ब्रों से उठने और निय्यतों के सामने आने के बा'द होगा।

एक सुवाल और इस का जवाब :

कोई येह कहता है कि मौत के बा'द बन्दे के साथ ज़िक्रे इलाही नहीं रह सकता क्यूंकि मौत तो अ़दम का नाम है, इस के साथ ज़िक्रुल्लाह का रहना मुमकिन नहीं। तो ऐसा हरगिज़ नहीं क्यूंकि मौत कोई ऐसा अ़दम नहीं जो ज़िक्रुल्लाह के लिये रुकावट बने, बल्कि मौत तो सिर्फ़ दुन्या और ज़ाहिरी आ़लम से मा'दूम करती है, आ़लमे ग़ैब से नहीं। हमारी इस बात का षुबूत दर्जे ज़ैल फ़रामीने मुस्तफ़ा से मिलता है :

﴾1﴿.....اَلْقَبْرُ اِمَّا حُفْرَةٌ مِّنْ حُفَرِ النَّارِ اَوْ رَوْضَةٌ مِّنْ رِيَاضِ الْجَنَّةِ या'नी क़ब्र दोज़ख़ के गढ़ों में से एक गढ़ा है या जन्नत के बाग़ों में से एक बाग़।"(2)

﴾2﴿.....اَرْوَاحُ الشُّهَدَاءِ فِيْ حَوَاصِلِ طُيُوْرٍ خُضْرٍ या'नी शुहदा की रूहें सब्ज़ परन्दों के क़ालिब में रहती हैं।"(3)

---

1 ......المعجم الاوسط، الحديث:٤٨٤٥، ج٣، ص٣٦٢، مفهومًا۔

2 ......سنن الترمذی، کتاب صفة القيامة، الحديث:٢٤٦٨، ج٤، ص٢٠٩، بتقدمٍ وتاخرٍ۔

3 ......صحيح مسلم، کتاب الامارة، باب بيان ان ارواح الشهداء......الخ، الحديث:١٨٨٧، ص١٠٤٧، "حواصل طيور" بدله "جوف طير"۔

﴾3﴿.....मह़बूबे परवर दगार, ग़ैबों पर ख़बरदार صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने ग़ज़्वए बद्र के मुशरिक मक़्तूलों के नाम ले ले कर फ़रमाया : ऐ फ़ुलां ! ऐ फ़ुलां ! तुम्हारे रब्ब عَزَّوَجَلَّ ने तुम से जो वा'दा किया था क्या तुम ने उसे सच्चा जान लिया ? मैं तो अपने रब्ब عَزَّوَجَلَّ के किये हुए वा'दे को सच पाता हूं। ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْہُ येह सुन कर अ़र्ज़ करने लगे : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم येह तो मुर्दे हैं, येह कैसे सुनेंगे और जवाब देंगे ? तो सरवरे काइनात صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : क़सम उस ज़ात की जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है ! येह लोग मेरी बात तुम से ज़ियादा सुनते हैं, लेकिन जवाब देने पर क़ादिर नहीं।(1)

येह सह़ीह़ की रिवायत है और येह ह़दीषे पाक मुशरिकीन के मुतअ़ल्लिक़ है।

जब कि मोअमिनीन व शुहदा के मुतअ़ल्लिक़ इरशाद फ़रमाया : "शुहदा की रुहें सब्ज़ परन्दों के क़ालिब में अ़र्श के नीचे मुअ़ल्लक़ रहती हैं।"(2)

मज़्कूरा रिवायात से मा'लूम होने वाली कैफ़िय्यत व ह़ालत भी ज़िक्रुल्लाह से मानेअ़ नहीं। नीज़ इरशादे बारी तआ़ला है :

وَلَا تَحْسَبَنَّ الَّذِیْنَ قُتِلُوْا فِیْ سَبِیْلِ اللّٰهِ اَمْوَاتًاؕ بَلْ اَحْیَآءٌ عِنْدَ رَبِّهِمْ یُرْزَقُوْنَۙ(۱۶۹)

(پ۴، اٰل عمران:۱۶۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और जो अल्लाह की राह में मारे गए हरगिज़ उन्हें मुर्दा न ख़याल करना बल्कि वोह अपने रब्ब के पास ज़िन्दा हैं रोज़ी पाते हैं।

ज़िक्रुल्लाह के आ'ला होने की वजह से मर्तबए शहादत भी अ़ज़ीम ठहरा, क्यूंकि मक़्सूद ख़ातिमा है और ख़ातिमे से हमारी मुराद दुन्या को छोड़ना और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में इस त़रह़ ह़ाज़िर होना है कि दिल यादे इलाही में डूबा हुवा और ग़ैरे ख़ुदा से टूटा हुवा हो। अगर कोई बन्दा अपने दिल को यादे इलाही में मुस्तग़रक़ करने पर क़ादिर हो तो इस ह़ालत पर मरने की क़ुदरत सिवाए मैदाने जिहाद में सफ़ आरा होने के किसी और त़रह़ ह़ासिल न हो सकेगी। क्यूंकि मैदाने जंग में जान व माल, घर और अवलाद बल्कि पूरी दुन्या की मह़ब्बत ख़त्म हो जाती है। कि

---

1 ......صحیح مسلم، کتاب الجنۃ......الخ، باب عرض مقعد المیت سن......الخ، الحدیث:۲۸۷۴، ص۱۵۳۷، بتغیر الفاظٍ۔

2 ......صحیح مسلم، کتاب الامارۃ، باب بیان ان ارواح الشھداء فی الجنۃ......الخ، الحدیث:۱۸۸۷، ص۱۰۴۷،

"حواصل طیور" بدلہ "جوف طیر"۔

سنن ابن ماجہ، کتاب الجنائز، باب ماجاء فیما یقال عندالمریض......الخ، الحدیث:۱۴۴۹، ج۲، ص۱۹۲، مفھومًا۔

येह चीजें़ तो वोह अपनी ज़िन्दगी के लिये चाहता था और अब हुब्बे इलाही और रिज़ाए इलाही की ख़ातिर ज़िन्दगी ही दाव पर लगा दी। ख़ुदा तआला के ही हो रहने की इस से बढ़ कर और कोई सूरत नहीं, इसी वजह से शहादत का मुआ़मला अ़ज़ीम ठहरा और इस के कषीर फ़ज़ाइल वारिद हुए। इन में से एक फ़ज़ीलत येह है।

शहीद को बे हिजाब रब्ब तआला का दीदार :

जब ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ के वालिद ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र अन्सारी رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ ग़ज़्वए उहुद में शहीद हुए, तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए गुयूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ से इरशाद फ़रमाया : "ऐ जाबिर ! क्या, मैं तुझे एक ख़ुश ख़बरी न सुनाऊं ?" अ़र्ज़ की : "हां, क्यूं नहीं ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को भलाई की बिशारतें अ़ता फ़रमाए।" आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने तेरे वालिद को ज़िन्दगी अ़ता फ़रमा कर अपनी बारगाह में इस तरह बिठाया कि उस के और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के दरमियान कोई पर्दा ह़ाइल न था और इरशाद फ़रमाया : "ऐ मेरे बन्दे ! अपनी चाहत मुझ से बयान कर मैं तुझे अ़ता करूंगा।" (तेरे वालिद ने) अ़र्ज़ की : "ऐ रब्ब عَزَّوَجَلَّ मुझे दुन्या में वापस भेज ताकि मैं तेरी और तेरे नबी عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की रिज़ा की ख़ातिर शहीद कर दिया जाऊं। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया : "येह मैं पहले मुक़र्रर कर चुका हूं कि यहां से कोई वापस नहीं जाएगा।"(1)

फिर क़त्ल इस जैसी पसन्दीदा ह़ालत पर मरने का बाइष है। क्यूंकि अगर वोह क़त्ल न हो और मज़ीद कुछ अ़र्सा ज़िन्दा रहे तो ऐन मुमकिन है कि दुन्यावी ख़्वाहिशात उस की त़रफ़ लौट आएं और ज़िक्रुल्लाह में मगन दिल पर ग़लबा पा लें। इसी वजह से आ़रिफ़ीन बुरे ख़ातिमे के ख़ौफ़ में मुब्तला रहते हैं। क्यूंकि दिल ख़्वाह कितना ही ज़िक्रे इलाही में मश्ग़ूल रहता हो पलटने, दुन्यावी ख़्वाहिशात की त़रफ़ माइल होने और कोताही में पड़ने से ख़ाली नहीं होता। अगर आख़िरी वक़्त में दिल इसी त़रह दुन्या के क़ब्ज़े में हो, और उसी ह़ालत पर मौत आ जाए और येह क़ब्ज़ा बर क़रार रहे तो वोह मरने के बा'द दोबारा दुन्या में आने की ख़्वाहिश करेगा इस लिये कि उस का आख़िरत में हिस्सा कम होगा। क्यूंकि इन्सान की मौत उस ह़ाल पर आती है जिस पर ज़िन्दगी गुज़ारता है और रोज़े मह़शर उसी ह़ाल में उठाया जाएगा जिस पर मौत आई होगी। इन तमाम ख़त़रात से ह़िफ़ाज़त शहादत की मौत में है। जब कि शहादत से मक़्सूद जाहो माल

(1) ......سنن الترمذی، کتاب التفسیر، باب ومن سورۃ آل عمران، الحدیث: ۳۰۲۱، ج۵، ص ۱۲، مفہومًا۔

वग़ैरा न हो। जैसा कि ह़दीषे मुबारक में बयान किया गया है।[1] बल्कि रिज़ाए इलाही और दीने ह़क़ की सर बुलन्दी मह़बूब हो और येही वोह ह़ालत है जिसे दर्जे ज़ैल आयते मुबारका में बयान किया गया। चुनान्चे, इरशाद होता है :

اِنَّ اللّٰهَ اشْتَرٰى مِنَ الْمُؤْمِنِیْنَ اَنْفُسَهُمْ وَ اَمْوَالَهُمْ بِاَنَّ لَهُمُ الْجَنَّةَؕ (پ ۱۱، التوبۃ:۱۱۱)

*तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक **अल्लाह** ने मुसलमानों से इन के माल और जान ख़रीद लिये हैं इस बदले पर कि उन के लिये जन्नत है।*

और इसी त़रह़ का शख़्स आख़िरत के बदले दुन्या बेच देता है और शहीद की ह़ालत لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه के इस मा'ना के मुवाफ़िक़ होती है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा इस का कोई मक़्सूद नहीं और उस के सिवा इस का कोई मा'बूद नहीं। येह शहीद अपनी ज़बाने ह़ाल से येह गवाही देता है कि **अल्लाह** के सिवा कोई मा'बूद नहीं क्यूंकि उस के सिवा इस का कोई मक़्सूद नहीं। जो लोग येह कलिमाते त़य्यिबा ज़बान से तो पढ़ें लेकिन उन की ह़ालत इस के मुत़ाबिक़ न हो तो ऐसे लोगों का मुआ़मला पुर ख़त़र और **अल्लाह** रब्बुल इ़ज़्ज़त की मशिय्यत पर मुनह़सिर है। इसी वजह से रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه के ज़िक्र को सब अज़्कार पर फ़ाइक़ बयान किया[2] और बत़ौरे तरग़ीब इस बात को मुत़लक़ ज़िक्र फ़रमाया, फिर बा'ज़ मक़ामात पर सिद्क़ व इख़्लास की भी शर्त़ लगाई। जैसा कि एक मौक़अ़ पर फ़रमाया : "مَنْ قَالَ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُخْلِصًا या'नी जिस ने इख़्लास के साथ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه पढ़ा।" और इख़्लास का मत़लब है कि ह़ालत क़ौल के मुत़ाबिक़ हो।

हम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में दुआ़ गो हैं कि वोह हमारा ख़ातिमा उन लोगों जैसा करे जो ह़ाल व क़ाल और ज़ाहिर व बात़िन से لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه वाले हैं। ताकि हम दुन्या से इस त़रह़ रुख़्सत हों कि दिल हुब्बे दुन्या से ख़ाली और तंग हो और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से मुलाक़ात का शाइक़ हो। क्यूंकि जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से मुलाक़ात पसन्द करता है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस से मुलाक़ात पसन्द फ़रमाता है। और जो उस से मुलाक़ात नापसन्द जानता है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ भी उस से मुलाक़ात नापसन्द फ़रमाता है। येह हैं मत़ालिबे ज़िक्र के असरार व रुमूज़, इ़ल्मे मुआ़मला में इस से ज़ियादा बयान करना मुश्किल है।

---

1 .....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ बयान करते हैं कि एक शख़्स ने हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم से अ़र्ज़ की : एक शख़्स ग़नीमत की ख़ात़िर जिहाद करता है और एक शोहरत की ख़ात़िर और एक इस लिये लड़ता है कि बहादुरी में उस का मर्तबा देखा जाए तो मुजाहिद फ़ी सबीलिल्लाह कौन है? फ़रमाया : जो सिर्फ़ दीने ह़क़ की सर बुन्दी के लिये जिहाद करे दर ह़क़ीक़त वोही मुजाहिदे फ़ी सबीलिल्लाह है।
(صحیح البخاری، کتاب الجهاد، باب من قاتل لتکون کلمة اللّٰه هی العلیا، الحدیث:۲۸۱۰، ج۲، ص۲۵۶)

2 .....سنن الترمذی، کتاب الدعوات، باب ماجاء ان دعوة المسلم مستجابة، الحدیث:۳۳۹۴، ج۵، ص۲۴۸، مفهومًا۔

बाब नम्बर 2 : इस्तिग़फ़ार, दुरूद और दुआ़ के फ़ज़ाइल व आदाब

(इस में चार फ़स्लें हैं)

पहली फ़स्ल : दुआ़ की फ़ज़ीलत

फ़ज़ीलते दुआ़ से मुतअ़ल्लिक़ चार फ़रामीने बारी तआ़ला :

﴾1﴿

وَ اِذَا سَاَلَكَ عِبَادِیْ عَنِّیْ فَاِنِّیْ قَرِیْبٌ ؕ اُجِیْبُ دَعْوَةَ الدَّاعِ اِذَا دَعَانِ ۙ فَلْیَسْتَجِیْبُوْا لِیْ

(پ۲، البقرة:۱۸۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और ऐ मह़बूब ! जब तुम से मेरे बन्दे मुझे पूछें तो मैं नज़्दीक हूं। दुआ़ क़बूल करता हूं पुकारने वाले की जब मुझे पुकारे। तो उन्हें चाहिये मेरा हुक्म मानें।

﴾2﴿

اُدْعُوْا رَبَّكُمْ تَضَرُّعًا وَّ خُفْیَةً ؕ اِنَّهٗ لَا یُحِبُّ الْمُعْتَدِیْنَ ۚ﴿۵۵﴾ (پ۸، الاعراف : ۵۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : अपने रब्ब से दुआ़ करो गिड़गिड़ाते और आहिस्ता बेशक ह़द से बढ़ने वाले उसे पसन्द नहीं।

﴾3﴿

وَ قَالَ رَبُّكُمُ ادْعُوْنِیْۤ اَسْتَجِبْ لَكُمْ ؕ اِنَّ الَّذِیْنَ یَسْتَكْبِرُوْنَ عَنْ عِبَادَتِیْ سَیَدْخُلُوْنَ جَهَنَّمَ دٰخِرِیْنَ ۠﴿۶۰﴾ (پ۲۴، المؤمن:۶۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और तुम्हारे रब्ब ने फ़रमाया मुझ से दुआ़ करो मैं क़बूल करूंगा बेशक वोह जो मेरी इ़बादत से ऊंचे खचते (तकब्बुर करते) हैं अ़न क़रीब जहन्नम में जाएंगे ज़लील हो कर।

﴾4﴿

قُلِ ادْعُوا اللّٰهَ اَوِ ادْعُوا الرَّحْمٰنَ ؕ اَیًّا مَّا تَدْعُوْا فَلَهُ الْاَسْمَآءُ الْحُسْنٰى ۚ (پ۱۵، بنی اسرآئیل:۱۱۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तुम फ़रमाओ **अल्लाह** कह कर पुकारो या **रह़मान** कह कर जो कह कर पुकारो सब उसी के अच्छे नाम हैं।

फ़ज़ीलते दुआ़ से मुतअ़ल्लिक़ पांच फ़रामीने मुस्त़फ़ा :

﴾1﴿..... اِنَّ الدُّعَاءَ هُوَ الْعِبَادَةُ या'नी दुआ़ भी इ़बादत है। फिर आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने येह आयते

मुबारका तिलावत फ़रमाई :

اُدْعُوْنِیْۤ اَسْتَجِبْ لَكُمْ (پ۲۴، المؤمن:۶۰) ***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :*** मुझ से दुआ़ करो मैं क़बूल करूंगा।[1]

﴾2﴿..... اَلدُّعَاءُ مُخُّ الْعِبَادَةِ या'नी दुआ़ इबादत का मग़्ज़ है।[2]

﴾3﴿....ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में दुआ़ से बढ़ कर कोई चीज़ नहीं।[3]

﴾4﴿.....बन्दे की दुआ़ तीन चीज़ों में से एक से ख़ाली नहीं होती या तो उस का कोई गुनाह मुआ़फ़ कर दिया जाता है या फ़ौरन उसे कोई भलाई अ़ता कर दी जाती है या उस के लिये भलाई जम्अ़ कर दी जाती है।[4]

हज़रते सय्यिदुना अबू ज़र رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं : "दुआ़ नेकी में इस त़रह़ किफ़ायत करती है जिस त़रह़ खाने में नमक।"

﴾5﴿....**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से उस के फ़ज़्ल का सुवाल करो क्यूंकि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पसन्द करता है कि उस से मांगा जाए और बेहतरीन इबादत (सब्र के साथ) फ़राख़ी का इन्तिज़ार है।[5]

दूसरी फ़स्ल :

दुआ़ के दस आदाब[6]

पहला अदब :

दुआ़ के लिये अच्छे अवक़ात का ख़याल रखा जाए जैसे **9 ज़ुल हिज्जा** का दिन, **माहे रमज़ान, रोज़े जुमुआ़** और **सह़र** का वक़्त।

वक़्ते सह़र के तीन फ़ज़ाइल :

﴾1﴿......**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

وَبِالْاَسْحَارِ هُمْ یَسْتَغْفِرُوْنَ ﴿۱۸﴾ (پ۲۶، الذّٰریٰت:۱۸) ***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :*** *और पिछली रात इस्तिग़फ़ार करते।*

---

❶......سنن الترمذی، کتاب التفسیر، باب ومن سورۃ المؤمن، الحدیث:۳۲۵۸، ج۵، ص۱۶۶۔

❷......سنن الترمذی، کتاب الدعوات، باب ماجاء فی فضل الدعاء، الحدیث:۳۳۸۲، ج۵، ص۲۴۳۔

❸......سنن الترمذی، کتاب الدعوات، باب ماجاء فی فضل الدعاء، الحدیث:۳۳۸۱، ج۵، ص۲۴۳۔

❹......المسندللامام احمد بن حنبل، مسند ابی سعید الخدری، الحدیث:۱۱۱۳۳، ج۴، ص۳۷، مفهومًا۔

❺......سنن الترمذی، احادیث شتی، باب انتظارالفرج وغیر ذلک، الحدیث:۳۵۸۲، ج۵، ص۳۳۳۔

❻...दुआ़ के फ़ज़ाइल से मुतअ़ल्लिक़ मज़ीद मा'लूमात के लिये दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 318 सफ़्ह़ात पर मुश्तमिल किताब "फ़ज़ाइले दुआ़" का मुत़ालआ़ कीजिये !

﴾2﴿.....हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : रात के आख़िरी तिहाई हिस्से में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आस्माने दुन्या पर ख़ास तजल्ली फ़रमाता है और इरशाद फ़रमाता है : "है कोई दुआ मांगने वाला कि उस की दुआ क़बूल करूं ? है कोई सुवाल करने वाला कि उसे अ़ता करूं ? है कोई बख़्शिश का त़ालिब कि उसे बख़्श दूं।"(1)

﴾3﴿....हज़रते सय्यिदुना या'क़ूब عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने (अपने बेटों से) जो कलाम फ़रमाया था रब्ब तआ़ला ने बिएनिही इसे अपने पाक कलाम में ज़िक्र फ़रमाया, चुनान्चे, इरशाद फ़रमाया :

سَوْفَ اَسْتَغْفِرُ لَكُمْ رَبِّیْؕ (پ۱۳، یوسف:۹۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *जल्द मैं तुम्हारी बख़्शिश अपने रब्ब से चाहूंगा।*

इस से आप عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام का मक़्सूद ब वक़्ते सहूर दुआ करना था। बयान किया जाता है कि आप عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام सहर के वक़्त खड़े हो कर दुआ में मश्ग़ूल हो गए और बेटे आप के पीछे आमीन कहते। तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने वह्य फ़रमाई कि मैं ने इन्हें बख़्श दिया और ओ़हदए नबुव्वत से सरफ़राज़ किया।(2)

दूसरा अदब :

दुआ मांगने वाला मुक़द्दस अह्वाल से भी फ़ाइदा उठाए। चुनान्चे,

क़बूलिय्यते दुआ के अवक़ात :

﴾1﴿.....हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : "**राहे ख़ुदा में सफ़बन्दी, बारिश और फ़र्ज़ नमाज़** अदा करते वक़्त आस्मानों के दरवाज़े खोल दिये जाते हैं, लिहाज़ा इन अवक़ात में तुम ख़ूब दुआ मांगा करो।"

﴾2﴿.....हज़रते सय्यिदुना मुजाहिद عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَاحِد फ़रमाते हैं : "नमाज़ें बेहतरीन अवक़ात में मुक़र्रर की गई हैं, लिहाज़ा नमाज़ों के बा'द दुआ मांगना ख़ुद पर लाज़िम कर लो।"

---

1 ......صحیح مسلم، کتاب صلاۃ المسافرین وقصرھا، باب الترغیب فی الدعاء......الخ، الحدیث:۷۵۸، ص ۳۸۱۔

2 ....मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْمَنَّان जाअल ह़क़, स. 352 पर एक ए'तिराज़ का जवाब देते हुए फ़रमाते हैं : जमहूर उ़-लमा ने इन्हें पैग़म्बर न माना। हां, एक जमाअ़त ने कुछ ज़ईफ़ दलाइल से इन की नबुव्वत का वहम किया है इसी लिये हम ने मुक़द्दमे में अ़र्ज़ किया कि अम्बियाए किराम का नबुव्वत से पहले बद अ़क़ीदगी से पाक होना इजमाई मस्अला है और गुनाहे कबीरा से पाक होना जमहूर का क़ौल है और बा'दे नबुव्वत गुनाहे कबीरा से पाक होने पर भी इजमाअ़ है। इन ह़ज़रात की नबुव्वत किसी सरीही़ आयत या ह़दीष या क़ौले सह़ाबा से षाबित नहीं।

《3》.....रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने क़बूलिय्यत निशान है : "اَلدُّعَاءُ بَیْنَ الْاَذَانِ وَالْاِقَامَۃِ لَا یُرَدُّ या'नी अज़ान व इक़ामत के दरमियानी वक़्त में दुआ़ रद्द नहीं होती।"(1)

एक रिवायत में है कि प्यारे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "اَلصَّائِمُ لَا تُرَدُّ دَعْوَتُہٗ या'नी रोज़ादार की दुआ़ रद्द नहीं होती।"(2)

दर ह़क़ीक़त बेहतरीन अवक़ात भी बेहतरीन अह़वाल का सबब बनते हैं। जैसे ब वक़्ते सह़र दिल साफ़, मुख़्लिस और फ़िक्रों से ख़ाली होता है। नव ज़ुल ह़िज्जा और जुमुआ़ का दिन अ़ज़ाइम में पुख़्तगी लाने और रह़मते इलाही के ह़ुसूल के लिये दिलों के मुत्तफ़िक़ होने के अवक़ात हैं। येह अवक़ात की फ़ज़ीलत का एक सबब है और बा बरकत अवक़ात में इस के इ़लावा असरार भी पाए जाते हैं लेकिन इन की ख़बर किसी बशर को नहीं होती।

सजदे में दुआ़ की कषरत करो :

ह़ालते सजदा में भी क़बूलिय्यते दुआ़ के इमकानात बढ़ जाते हैं। जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने रह़मत निशान है : اَقْرَبُ مَا یَکُوْنُ الْعَبْدُ مِنْ رَّبِّہٖ عَزَّوَجَلَّ وَھُوَ سَاجِدٌ فَاَکْثِرُوْا فِیْہِ مِنَ الدُّعَاءِ या'नी बन्दा सजदे की ह़ालत में अपने रब्ब عَزَّوَجَلَّ से बहुत ज़ियादा क़रीब होता है इस लिये तुम सजदे में ब कषरत दुआ़ किया करो।(3) (4)

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُمَا रिवायत करते हैं कि रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "मुझे रुकूअ़ व सुजूद में क़िराअत से मन्अ़ किया गया है, रुकूअ़ में तुम अपने परवर दगार की अ़ज़मत का ज़िक्र किया करो और सजदे में ख़ूब दुआ़ किया करो क्यूंकि येह क़बूलिय्यते दुआ़ के ज़ियादा लाइक़ है।"(5)

---

1 ......سنن الترمذی، کتاب الدعوات، باب فی العفو والعافیۃ، الحدیث:۳۶۰۵، ج۵، ص۳۴۲، بتقدمٍ وتاخرٍ۔

2 ......سنن الترمذی، کتاب الدعوات، الحدیث:۳۶۰۹، ج۵، ص۳۴۳، مفہومًا۔

3 ......صحیح مسلم، کتاب الصلاۃ، باب مایقال فی الرکوع والسجود، الحدیث:۴۸۲، ص۲۵۰۔

4 ....मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْمَنَّان मिरआतुल मनाजीह़, जि. 2 स. 82-83 पर फ़रमाते हैं : ख़याल रहे कि नवाफ़िल के सजदों में हमेशा दुआ़ मांगे फ़राइज़ के सजदों में कभी कभी। बा'ज़ लोग सजदे में गिर कर दुआ़एं मांगते हैं या'नी दुआ़ के लिये सजदा करते हैं इन का माख़ज़ येह ह़दीष है।

5 ......صحیح مسلم، کتاب الصلاۃ، باب النھی عن قراءۃ القرآن فی الرکوع والسجود، الحدیث:۴۷۹، ص۲۴۹۔

तीसरा अदब :

दुआ क़िब्ला रुख़ हो कर मांगी जाए और हाथ इस क़दर उठाए जाएं के बग़लों की सफ़ेदी नज़र आने लगे ।

दुआ क़िब्ला रुख़ हो कर मांगिये :

हज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عَنۡہُ का बयान है कि "हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم मैदाने अ़रफ़ात में तशरीफ़ लाए और क़िब्ला रुख़ हो कर ता ग़ुरूबे आफ़्ताब दुआ मांगते रहे ।"(1)

हज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عَنۡہُ रिवायत करते हैं कि रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "तुम्हारा रब्ब ह़या फ़रमाने वाला और बहुत अ़ता करने वाला है, ह़या फ़रमाता है कि बन्दा उस की बारगाह में हाथ उठाए और वोह उसे ख़ाली लौटा दे ।"(2)

दुआ में हाथ उठाने का त़रीक़ा :

हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عَنۡہُ से मरवी है कि "हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم दुआ में इस क़दर हाथ बुलन्द फ़रमाते कि बग़लों की सफ़ेदी ज़ाहिर होने लगती और उंगली से इशारा न फ़रमाते ।"(3)

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عَنۡہُ फ़रमाते हैं : सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का एक ऐसे शख़्स के पास से गुज़र हुवा जो दौराने दुआ हाथ की दोनों शहादत की उंगलियों से इशारे कर रहा था । आप صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "اَحِّدْ اَحِّدْ या'नी एक उंगली के इशारे पर ही इक्तिफ़ा करो ।"(4) (5)

हज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عَنۡہُ ने फ़रमाया : इन हाथों को (दुआ के लिये) उठाओ इस से पहले कि इन्हें ज़न्जीरों में जकड़ दिया जाए ।(6)

---

1 ......صحیح مسلم، کتاب الحج، باب حجۃ النبی، الحدیث:۱۲۱۸، ص۶۳۷، "واقفًا" مکان "یدعو"۔

2 ......سنن الترمذی، کتاب الدعوات، الحدیث:۳۵۶۷، ج۵، ص۳۲۶، بتغیر۔

3 ......صحیح مسلم، کتاب الاستسقاء، باب رفع الیدین بالدعاء فی الاستقاء، الحدیث:۸۹۵، ص۴۴۳، دون قولہ:ولایشیرباصبعہ۔

4 .....मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ الۡمَنَّان मिरआतुल मनाजीह़, जि. 2 स. 94 पर इस के तह़्त फ़रमाते हैं : या'नी दाहिने हाथ की कलिमे की उंगली से इशारा करो बाएं हाथ की कोई उंगली न उठाओ ।

5 ......سنن الترمذی، کتاب الدعوات، الحدیث:۳۵۶۸، ج۵، ص۳۲۶، مفهومًا۔

6 ......تفسیرقرطبی، سورۃ الانسان:۴، ج۱۰، جزء۱۹، ص۹۱۔

दुआ़ के बा'द हाथ चेहरे पर फेरना :

इख़्तितामे दुआ़ पर दोनों हाथ चेहरे पर फेर लेना चाहिये। अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : "रसूले करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم जब दुआ़ के लिये हाथ उठाते तो इन्हें चेहरे पर फेरने से पहले नीचे नहीं लाते थे।"(1)

दुआ़ में हाथ बुलन्द करने का त़रीक़ा :

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا फ़रमाते हैं : "अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ के प्यारे ह़बीब, ह़बीबे लबीब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم जब दुआ़ मांगते तो हथेलियां मिलाते और इन का पेट अपने रुख़े अन्वर की त़रफ़ रखते।"(2) येह दुआ़ में हाथ उठाने का त़रीक़ा है।

दौराने दुआ़ आस्मान की त़रफ़ निगाह नहीं उठानी चाहिये, सरकारे मदीना क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : "जो लोग दुआ़ में आस्मान की त़रफ़ निगाहें उठाते हैं वोह बाज़ आ जाएं वरना उन की बीनाई जाती रहेगी।"(3)

चौथा अदब :

दुआ़ मांगते वक़्त आवाज़ न तो इतनी आहिस्ता हो कि ख़ामोशी कहलाए और न ही ज़ियादा बुलन्द हो। जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ बयान करते हैं : हम हु़ज़ूर नबिय्ये अकरम, रसूले मोह़्तशम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की हमराही में मदीनए त़य्यिबा जा रहे थे, जब मदीना क़रीब आ गया तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने ना'रए तक्बीर बुलन्द किया, लोगों ने ख़िलाफ़े आ़दत बुलन्द आवाज़ से तक्बीर कही तो सरदारे मदीनए मुनव्वरा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "ऐ लोगो ! तुम किसी बहरे

---

1 ......سنن الترمذی، کتاب الدعوات، باب ماجاء فی رفع الایدی عندالدعاء، الحدیث:۳۳۹۷، ج۵، ص۲۵۰۔

2 ......المعجم الکبیر، الحدیث:۱۲۲۳۴، ج۱۱، ص۳۴۴، باختصارٍ۔

3 ......صحیح مسلم، کتاب الصلاۃ، باب النہی عن رفع البصر الی السماء فی الصلاۃ، الحدیث:۴۲۹، ص۲۲۹۔

या ग़ाइब का ज़िक्र नहीं कर रहे बल्कि उस का ज़िक्र कर रहे हो जो तुम्हारे और तुम्हारी सुवारियों की गर्दनों के दरमियान भी है।"(1) (2)

दुआ़ में आवाज़ पस्त रखने के मुतअ़ल्लिक़ तीन फ़रामीने बारी तआ़ला :

《1》

وَلَا تَجْهَرْ بِصَلَاتِكَ وَلَا تُخَافِتْ بِهَا
(پ۱۵، بنی اسرائیل:۱۱۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और अपनी नमाज़ न बहुत आवाज़ से पढ़ो न बिल्कुल आहिस्ता।*

उम्मुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं इस आयत में صَلٰوۃ से मुराद दुआ़ है।(3)

आहिस्ता आवाज़ में दुआ़ करने पर ही **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने ह़ज़रते सय्यिदुना ज़करिया عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की ता'रीफ़ फ़रमाई। चुनान्चे, फ़रमाया :

《2》

اِذْ نَادٰى رَبَّهٗ نِدَآءً خَفِیًّا ۝۳ (پ۱۶، مریم:۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *जब उस ने अपने रब्ब को आहिस्ता पुकारा।*

《3》

اُدْعُوْا رَبَّكُمْ تَضَرُّعًا وَّ خُفْیَةً ؕ (پ۸، الاعراف:۵۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *अपने रब्ब से दुआ़ करो गिड़गिड़ाते और आहिस्ता।*

पांचवां अदब :

दुआ़ में हम वज़्न व मुसज्जअ़ लफ़्ज़ों का तकल्लुफ़ करने की मुमानअ़त :

दुआ़ में हम वज़्न अल्फ़ाज़ लाने का तकल्लुफ़ न किया जाए क्यूंकि दुआ़ गो की ह़ालत आ़जिज़ी व इन्किसारी वाली होनी चाहिये यहां तकल्लुफ़ मुनासिब नहीं। रसूले ख़ुदा,

---

1.....मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْمَنَّان मिरआतुल मनाजीह़, जि. 3 स. 341 पर इसी मफ़्हूम की ह़दीष के तह़्त फ़रमाते हैं : इस लिये चीख़ कर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र करना, ख़ुदा तआ़ला आहिस्ता ज़िक्र सुन नहीं सकता मन्अ़ है बल्कि बद अ़क़ीदगी है ज़िक्र बिल जह्‌र तो अपने नफ़्स और दूसरे ग़ाफ़िलों को जगाने, शैत़ान को भगाने दरो दीवार को अपने ईमान का गवाह बनाने के लिये होता है, ख़याल रहे कि **अल्लाह** तआ़ला के हमारी शह रग से ज़ियादा क़रीब होने के मा'ना येह हैं कि उस का इल्म, क़ुदरत, रह़मत क़रीब वरना ह़क़ तआ़ला क़ुर्बे मकानी से पाक है। (मुलतक़त़न)

2.....سنن ابی داود، کتاب الوتر، باب فی الاستغفار، الحدیث:۱۵۲۶، ج۲، ص۱۲۴۔

3.....صحیح مسلم، کتاب الصلاۃ، باب التوسط فی القراءۃ فی الصلاۃ الجھریۃ، الحدیث:۴۴۷، ص۲۳۵۔

ह़बीबे किब्रिया صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : अ़न क़रीब ऐसे लोग होंगे जो दुआ़ में ह़द से तजावुज़ करेंगे,[1] ह़ालांकि इरशादे बारी तआ़ला है :

﴿4﴾

اُدْعُوْا رَبَّكُمْ تَضَرُّعًا وَّ خُفْيَةً ؕ اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِيْنَ ۚ﴿۵۵﴾ (پ۸، الاعراف: ۵۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *अपने रब्ब से दुआ़ करो गिड़गिड़ाते और आहिस्ता बेशक ह़द से बढ़ने वाले उसे पसन्द नहीं ।*

मज़्कूरा आयते मुबारका की तफ़्सीर में कहा गया है कि ह़द से बढ़ने से मुराद मुक़फ़्फ़ा व मुसज्जअ़ लफ़्ज़ों के तकल्लुफ़ में पड़ना है । बेहतर येह है कि रिवायात में मन्क़ूल दुआ़एं मांगने पर इक्तिफ़ा करे । क्यूंकि मुमकिन है आदमी दुआ़ में ह़द से तजावुज़ कर जाए और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से ऐसा सुवाल कर दे जो उस की मरज़ी के ख़िलाफ़ हो । क्यूंकि हर आदमी अच्छी त़रह़ दुआ़ मांगना नहीं जानता । इसी बिना पर ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : जन्नत में भी उ़-लमाए किराम की ज़रूरत होगी क्यूंकि जब अहले जन्नत से फ़रमाया जाएगा अपनी कोई तमन्ना पेश करो तो वोह उ़-लमा की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो कर पुछेंगे हम किस त़रह़ अपनी तमन्ना बयान करें ?

सरकारे दो जहां, मह़बूबे रह़मान صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने नसीह़त निशान है : दुआ़ में क़ाफ़िया बन्दी से बचो । तुम्हारे लिये बस येह दुआ़ काफ़ी है :

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْأَلُكَ الْجَنَّةَ وَمَاقَرَّبَ اِلَيْهَا مِنْ قَوْلٍ وَّعَمَلٍ وَّاَعُوْذُ بِكَ مِنَ النَّارِ وَمَاقَرَّبَ اِلَيْهَا مِنْ قَوْلٍ وَّعَمَلٍ

"या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मैं तुझ से जन्नत और इस में ले जाने वाले क़ौल व अ़मल का सुवाल करता हूं और जहन्नम और इस में ले जाने वाले क़ौल व अ़मल से तेरी पनाह मांगता हूं ।"[2]

ह़दीषे पाक में है : "سَيَأْتِيْ قَوْمٌ يَّعْتَدُوْنَ فِی الدُّعَاءِ وَالطُّهُوْرِ" या'नी अ़न क़रीब ऐसे लोग आएंगे जो दुआ़ मांगने और त़हारत ह़ासिल करने में ह़द से तजावुज़ करेंगे ।"[3]

क़ुरआन व ह़दीष और बुज़ुर्गाने दीन से मन्क़ूल दुआ़ के अल्फ़ाज़ :

एक बुज़ुर्ग رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का गुज़र एक क़िस्सा गो वाइ़ज़ के पास से हुवा जो दुआ़ मांगने

---

1 ......سنن ابی داود، کتاب الطھارۃ، باب الاسراف فی الماء، الحدیث:۹۶، ج ۱، ص۶۸۔

2 ......قوت القلوب، باب ذکر الفرق بین علماء الدنیاوعلماء الاخرۃ......الخ، ج ۱، ص ۲۸۱۔

المستطرف فی کل فن مستطرف، الباب السابع والسعبون فی الدعاء وآدابہ وشروطہ......الخ، ج۲، ص ۴۴۰۔

3 ......سنن ابی داود، کتاب الطھارۃ، باب الاسراف فی الماء، الحدیث:۹۶، ج ۱، ص۶۸، بتقدمٍ وتاخرٍ۔

में लफ़्फ़ाज़ी से काम ले रहा था। बुज़ुर्ग رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया : बारगाहे ख़ुदा में मुबालग़ा आराई करते हो ? गवाह रहो ! मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना ह़बीब अ़जमी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْغَنِی को देखा कि आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ की दुआ़ में इस से ज़ियादा अल्फ़ाज़ नहीं होते थे :

اَللّٰھُمَّ اجْعَلْنَا جَیِّدِیْنَ اَللّٰھُمَّ لَاتُفْضِحْنَا یَوْمَ الْقِیَامَۃِ اَللّٰھُمَّ وَفِّقْنَا لِلْخَیْر

या'नी ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें मुख़्लिस बन्दा बना, ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें रोज़े क़ियामत रुस्वा होने से बचाना। ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें भलाई की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमा।

आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ क़बूलिय्यते दुआ़ के ह़वाले से मश्हूर थे और अत़राफ़ के लोग आप की मइय्यत में दुआ़एं मांगते थे।

बा'ज़ बुज़ुर्गाने दीन फ़रमाते हैं : दुआ़ आ़जिज़ी और मोह़ताजी की ज़बान से मांगो, फ़साह़त व बलाग़त की ज़बान से नहीं। मन्क़ूल है : उ़-लमा व अब्दाल की दुआ़ सात कलिमात से ज़ियादा न होती। इस की दलील सूरए बक़रह की आख़िरी आयात हैं [(1)] क्यूंकि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने किसी भी मक़ाम पर बन्दों को इस से ज़ियादा दुआ़ ता'लीम नहीं फ़रमाई।

जान लीजिये ! सज्अ़ (या'नी क़ाफ़िया बन्दी) से मुराद पुर तकल्लुफ़ कलाम करना है जो कि इज्ज़ व इह़तियाज के ख़िलाफ़ है। हां ! मसनून दुआ़ओं में भी हम वज़्न कलिमात होते हैं लेकिन इन में तकल्लुफ़ नहीं होता जैसा कि सरवरे काइनात, शाहे मौजूदात صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ता'लीम कर्दा दर्जे ज़ैल दुआ़ और इस की मिष्ल और दुआ़एं :

اَسْاَلُكَ الْاَمْنَ مِنْ یَّوْمِ الْوَعِیْدِ وَالْجَنَّةَ یَوْمَ الْخُلُوْدِ مَعَ الْمُقَرَّبِیْنَ الشُّهُوْدِ وَالرُّكَّعِ السُّجُوْدِ الْمُوْفِیْنَ بِالْعُهُوْدِ اِنَّكَ رَحِیْمٌ وَّدُوْدٌ وَّاَنَّكَ تَفْعَلُ مَاتُرِیْدُ

या'नी (ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ) मैं रोज़े जज़ा अम्न का और हमेशगी के दिन मुक़र्रबीन व शाहिदीन और रुकूअ़ व सुजूद करने वालों और वा'दा पूरा करने वालों के साथ जन्नत का सुवाल करता हूं बेशक तू रह़्म फ़रमाने वाला और मह़ब्बत करने वाला है और तू जो चाहता है करता है।" [(2)]

---

❶....सूरए बक़रह में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपने मोमिन बन्दों को दुआ़ का त़रीक़ा बताते हुए इरशाद फ़रमाया कि यूं अ़र्ज़ की जाए : رَبَّنَا لَا تُؤَاخِذْنَاۤ اِنْ نَّسِیْنَاۤ اَوْ اَخْطَاْنَا ۚ رَبَّنَا وَ لَا تَحْمِلْ عَلَیْنَاۤ اِصْرًا كَمَا حَمَلْتَهٗ عَلَى الَّذِیْنَ مِنْ قَبْلِنَا ۚ رَبَّنَا وَ لَا تُحَمِّلْنَا مَا لَا طَاقَةَ لَنَا بِهٖ ۚ وَ اعْفُ عَنَّا ٝ وَ اغْفِرْ لَنَا ٝ وَ ارْحَمْنَا ٝ اَنْتَ مَوْلٰىنَا فَانْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكٰفِرِیْنَ۠ (پ۳، البقرۃ:۲۸۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ रब्ब हमारे हमारी पकड़ न कर अगर हम भूलें या चूके ऐ रब्ब हमारे और हम पर भारी बोझ न रख जैसा कि तू ने हम से अगलों पर रखा था ऐ रब्ब हमारे और हम पर वोह बोझ न डाल जिस की हमें सहार न हो और हमें मुआ़फ़ फ़रमा दे और बख़्श दे और हम पर रह़्म कर तू हमारा मौला है तू काफ़िरों पर हमें मदद दे।

❷....سنن الترمذی، کتاب الدعوات، الحدیث:۳۴۳۰، ج۵، ص۲۶۵۔

लिहाज़ा मसनून व मन्कूल दुआओं पर इक्तिफ़ा करना चाहिये या बिगै़र किसी सज्अ़ व तकल्लुफ़ के आ़जिज़ी और खुशूअ़ के साथ दुआ़ मांगनी चाहिये क्यूंकि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आ़जिज़ी पसन्द फ़रमाता है।

छटा अदब :

दुआ़ गो आ़जिज़ी व इन्किसारी करने वाला और उम्मीद व ख़ौफ़ रखने वाला हो।

ख़ौफ़ व उम्मीद से दुआ़ मांगने के मुतअ़ल्लिक़ दो फ़रामैने बारी तआ़ला :

《1》

إِنَّهُمْ كَانُوا يُسٰرِعُوْنَ فِي الْخَيْرٰتِ وَيَدْعُوْنَنَا رَغَبًا وَّرَهَبًا ط (پ۱۷، الانبیاء:۹۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *बेशक वोह भले कामों में जल्दी करते थे और हमें पुकारते थे उम्मीद और ख़ौफ़ से।*

《2》

اُدْعُوْا رَبَّكُمْ تَضَرُّعًا وَّ خُفْيَةً ط (پ۸، الاعراف:۵۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *अपने रब्ब से दुआ़ करो गिड़गिड़ाते और आहिस्ता।*

हदीषे पाक में है : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जब किसी बन्दे को मह़बूब बनाता है तो उसे मुब्तलाए आलाम कर देता है ताकि उस की गिर्या व ज़ारी सुने।"(1)

सातवां अदब : दुआ़ की क़बूलिय्यत का यक़ीन और उम्मीदे वाषिक़ हो।

कामिल यक़ीन के साथ दुआ़ मांगने से मुतअ़ल्लिक़ तीन फ़रामीने मुस्त़फ़ा :

《1》.....जब तुम में से कोई दुआ़ मांगे तो येह न कहे कि "ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अगर तू चाहे तो मेरी मग़्फ़िरत फ़रमा, तू चाहे तो मुझ पर रह़्म फ़रमा !" बल्कि उसे कामिल यक़ीन के साथ दुआ़ करनी चाहिये क्यूंकि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को कोई मजबूर करने वाला नहीं।(2)

《2》.....जब तुम में से कोई दुआ़ करे तो ख़ूब रग़बत ज़ाहिर करे क्यूंकि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये कुछ भी मुश्किल नहीं।(3)

---

1 ......فردوس الاخبار للدیلمی، باب الالف، الحدیث:۹۷۵، ج۱، ص۱۵۱۔

2 ......صحیح مسلم، کتاب الذکر والدعاء......الخ، باب العزم بالدعاء......الخ، الحدیث:۲۶۷۹، ص۱۴۴۰۔

3 ......الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان، کتاب الرقائق، باب الادعیۃ، الحدیث:۸۹۳، ج۲، ص۱۲۷۔

﴾3﴿.....अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से इस ह़ाल में दुआ़ मांगो कि तुम्हें इस की क़बूलिय्यत का यक़ीन हो और जान लो कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ग़ाफ़िल दिल की दुआ़ क़बूल नहीं फ़रमाता।[1]

ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान बिन उ़यैना رَحْمَةُاللهِ تعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : तुम अपनी ज़ात में कोई बुराई पा कर दुआ़ से बाज़ न रहो क्यूंकि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने सब से बुरी मख़्लूक़ शैत़ान की भी दुआ़ क़बूल फ़रमाई। इसे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने हिकायतन ज़िक्र किया, चुनान्चे, इरशाद फ़रमाया :

قَالَ اَنْظِرْنِیْۤ اِلٰی یَوْمِ یُبْعَثُوْنَ﴿۱۴﴾ قَالَ اِنَّكَ مِنَ الْمُنْظَرِیْنَ﴿۱۵﴾ (پ۸، الاعراف:۱۴، ۱۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बोला : मुझे फ़ुरसत दे उस दिन तक कि लोग उठाए जाएं। फ़रमाया : तुझे मोहलत है।

आठवां अदब :

सुवाल करने में इसरार करे और अपनी दुआ़ तीन मरतबा दोहराए। ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰهُ تعَالٰی عَنْهُمَا फ़रमाते हैं : "रसूले करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰه تعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم जब भी दुआ़ या सुवाल करते तीन मरतबा करते।"[2]

क़बूलिय्यते दुआ़ में ताख़ीर न समझे जैसा कि सरकारे दो आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰه تعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जब तक तुम जल्दबाज़ी करते हुए यूं न कहो कि मैं ने दुआ़ की लेकिन क़बूल न हुई उस वक़्त तक तुम्हारी दुआ़ क़बूल की जाती रहेगी, जब दुआ़ मांगो तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से बहुत ज़ियादा सुवाल करो क्यूंकि तुम करीम ज़ात को पुकार रहे हो !"[3]

एक बुज़ुर्ग फ़रमाते हैं : "मैं 20 साल से बारगाहे इलाही में एक दुआ़ कर रहा हूं अगर्चे अभी तक क़बूल नहीं हुई लेकिन मुझे इस के क़बूल होने का यक़ीन है। रब्ब عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में मेरा सुवाल येह है कि वोह मुझे बे मक़्सद कामों को छोड़ने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमा दे।"

दुआ़ की क़बूलिय्यत ज़ाहिर होने या न होने पर पढ़े जाने वाले कलिमात :

हुज़ूरे पुरनूर, शाफ़ेए़ यौमुन्नुशूर صَلَّی اللّٰه تعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने तक़र्रुब निशान है : तुम में से जब कोई अपने रब्ब عَزَّوَجَلَّ से दुआ़ मांगे और इस के क़बूल होने का इ़ल्म हो जाए तो यूं कहे

❶......سنن الترمذی، کتاب الدعوات، الحدیث:۳۳۹۰، ج۵، ص۲۹۲۔

❷......صحیح مسلم، کتاب الجهاد والسیر، باب مالقی النبی صلی اللّٰه علیه وسلم......الخ، الحدیث:۱۷۹۴، ص۹۹۱۔

❸......صحیح مسلم، کتاب الذکر والدعاء......الخ، باب بیان انه یستجاب الداعی......الخ، الحدیث:۲۷۳۵، ص۱۴۶۳، باختصارٍ۔

"اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ الَّذِیْ بِنِعْمَتِہٖ تَتِمُّ الصَّالِحَاتُ" या'नी तमाम ता'रीफ़ें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं जिस की ने'मत से नेकियां मुकम्मल होती हैं।" और जिसे ताख़ीर महसूस हो तो वोह कहे "اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ عَلٰی کُلِّ حَالٍ या'नी हर हाल में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का शुक्र है।"(1)

नववां अदब :

दुआ का आग़ाज़ ज़िक्रुल्लाह से किया जाए न कि सुवाल से कि ह़ज़रते सय्यिदुना सलमा बिन अकूअ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : मैं ने रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को दुआ का आग़ाज़ इन्ही कलिमात से करते सुना :

"سُبْحٰنَ رَبِّیَ الْعَلِیِّ الْاَعْلَی الْوَھَّابِ" या'नी मेरा रब्ब पाक बुलन्द और अ़ता फ़रमाने वाला है।"(2)

दुआ की क़बूलिय्यत का सबब :

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सुलैमान दारानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّوْرَانِی फ़रमाते हैं : "जो शख़्स बारगाहे रब्बुल इ़ज़्ज़त में अपनी कोई ह़ाजत पेश करना चाहे तो वोह अपनी दुआ के अव्वल व आख़िर दुरूदे पाक पढ़े, बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ दुरूद शरीफ़ क़बूल फ़रमाता है तो उस की येह शान नहीं कि वोह बीच की दुआ रद्द कर दे।"

एक रिवायत में है कि रसूले करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फरमाया : "जब तुम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से किसी ह़ाजत का सुवाल करो तो इब्तिदाअन मुझ पर दुरूद भेजो इस लिये कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की शाने करीमी ऐसी नहीं कि उस से दो ह़ाजतें त़लब की जाएं तो वोह एक को तो पूरा फ़रमादे और दूसरी को रद्द कर दे।"(3)

येह रिवायत ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अबू त़ालिब मक्की عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی ने अपनी किताब "**क़ूतुल कुलूब**" में नक़्ल की है।

दसवां अदब :

इस अदब का तअ़ल्लुक़ बात़िन से है और क़बूलिय्यते दुआ में येही अस्ल है या'नी तौबा करना, ज़ुल्मन लिया हुवा माल वापस करना और अपनी पूरी कोशिश से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ मुतवज्जेह होना। येह दुआओं की क़बूलिय्यत का क़रीबी सबब है।

---

(1) کنزالعمال، کتاب الاذکار، الباب الثامن فی الدعاء، الحدیث:۳۱۷۹، ج۲، ص۳۳۔

(2) المسندللامام احمد بن حنبل، مسند المدنیین، الحدیث:۱۶۵۴۸، ج۵، ص۵۶۱۔

(3) قوت القلوب، الفصل الثالث فی ذکر عمل المرید......الخ، ج۱، ص۱۵، "یقضی" بدلہ "یعطی"۔

क़ह्त़ साली के मुतअ़ल्लिक़ 12 ह़िकायात

चुग़ल ख़ोरी का वबाल :

﴾1﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना का'बुल अह़बार رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنۡہ रिवायत करते हैं कि एक दफ़्अ़ा ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیۡہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के ज़माने में सख़्त क़ह़्त़ पड़ गया। आप عَلَیۡہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام बनी इसराईल की हमराही में बारिश के लिये दुआ़ मांगने चले लेकिन बारिश न हुई आप عَلَیۡہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने तीन दिन तक येही मा'मूल रखा लेकिन बारिश फिर भी न हुई। फिर **अल्लाह** तबारक व तआ़ला की त़रफ़ से वह़्य नाज़िल हुई कि ऐ मूसा ! मैं तुम्हारी और तुम्हारे साथ वालों की दुआ़ क़बूल नहीं करूंगा क्यूंकि इन में एक चुग़ल ख़ोर है। ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیۡہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने अ़र्ज़ की : "ऐ परवर दगार عَزَّوَجَلَّ वोह कौन है ताकि हम उसे यहां से निकाल दें।" **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से जवाब मिला : "ऐ मूसा ! मैं तो बन्दों को इस से रोकता हूं।" चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیۡہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने बनी इसराईल को हुक्म फ़रमाया कि तुम सब बारगाहे रब्बुल इ़ज़्ज़त में चुग़ली से तौबा करो। जब सब ने तौबा की तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उन्हें बारिश अ़त़ा फ़रमा दी।

क़ह़्त़ साली दूर हो गई :

﴾2﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन जुबैर رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنۡہ का बयान है कि बनी इसराईल के एक बादशाह के ज़माने में ख़ुश्क साली हो गई उन्हों ने बारिश के लिये दुआ़ मांगी। फिर उस बादशाह ने कहा कि "या तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें बारिश अ़त़ा फ़रमाएगा या हम उसे अज़िय्यत देंगे।" लोगों ने कहा : "तुम्हारे लिये ऐसा क्यूंकर मुमकिन है ? उस की क़ुदरत तो आस्मानों को मुह़ीत़ है।" उस ने कहा : "मैं उस के वलियों और बरगुज़ीदा बन्दों को क़त्ल करूंगा जो उस के लिये बाइ़षे अज़िय्यत है।"(1) चुनान्चे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उन्हें बारिश अ़त़ा फ़रमा दी।

ज़ुल्म का अन्जाम :

﴾3﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान षौरी عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡقَوِی फ़रमाते हैं : "हमें येह रिवायत पहुंची है कि एक दफ़्अ़ा बनी इसराईल सात साल तक क़ह़्त़ साली में मुब्तला रहे ह़त्ता कि वोह

---

(1).....बादशाह का येह क़ौल लोगों को कामिल तवज्जोह के साथ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ मुतवज्जेह करने के लिये था। जब लोगों ने येह सुना तो अपनी तमाम तर तवज्जोह के साथ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ मुतवज्जेह हो गए और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उन की दुआ़ क़बूल फ़रमा ली। (اتحاف السادۃ المتقین، ج۵، ص۲۶۳)

कूड़ा कर–कट के ढेरों से मुर्दार और बच्चों तक को खा गए और पहाड़ों की त़रफ़ निकल कर गिर्यो ज़ारी करने लगे। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उस दौर के अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام की त़रफ़ वह्य फ़रमाई कि (अपनी क़ौम को बता दो) "अगर तुम मेरी बारगाह की त़रफ़ इतना चलो कि तुम्हारे घुटने घिस जाएं और हाथ आस्मान तक पहुंच जाएं और दुआ़ मांगते मांगते तुम्हारी ज़बानें थक जाएं तब भी मैं किसी की दुआ़ क़बूल करूंगा न किसी रोने वाले पर रह़्म करूंगा ह़त्ता कि तुम ज़ुल्मन लिया हुवा माल ह़क़दार को लौटा न दो।" उन लोगों ने जूंही इस बात पर अ़मल किया उसी वक़्त उन्हें बारिश अ़त़ा कर दी गई।

गुनाहों की नुहूसत :

﴾4﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَفَّار फ़रमाते हैं : एक दफ़्आ़ बनी इसराईल पर क़ह़्त़ पड़ गया। मुतअ़द्दद बार बारिश के लिये दुआ़ की (लेकिन बारिश न हुई) अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उस वक़्त के नबी عَلَيْهِ السَّلَام की त़रफ़ वह्य फ़रमाई कि "उन लोगों को बता दो कि मेरी बारगाह में पेश होने वाले तुम्हारे जिस्म गन्दे हैं, दुआ़ के लिये उठने वाले तुम्हारे हाथ नाह़क़ ख़ून से रंगीन हैं और तुम्हारे पेट ह़राम से भरे हुए हैं। ऐसे में तुम मेरी बारगाह से बहुत ज़ियादा दूरी और मेरे शदीद ग़ज़ब का शिकार हो चुके हो।"

च्यूंटी की फ़रयाद :

﴾5﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सिद्दीक़ नाजी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْكَافِى फ़रमाते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना सुलैमान عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام बारिश के लिये दुआ़ मांगने के इरादे से चले कि रास्ते में एक च्यूंटी नज़र आई जिस की पीठ ज़मीन से लगी हुई और टांगें आस्मान की त़रफ़ उठी हुई थीं, वोह अ़र्ज़ कर रही थी : "ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हम भी तेरी एक मख़्लूक़ हैं और हम तेरे रिज़्क़ से बे नियाज़ नहीं, पस तू हमें दूसरों के गुनाहों की वजह से हलाकत में न डाल।" ह़ज़रते सय्यिदुना सुलैमान عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने लोगों से फ़रमाया : "लौट चलो ! दूसरों की दुआ़ओं के सदक़े तुम पर बारिश बरसेगी।"

बारगाहे इलाही में मक़्बूलिय्यत :

﴾6﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान औज़ाई رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं कि एक बार लोग बारिश की दुआ़ के लिये निकले। इन में ह़ज़रते सय्यिदुना बिलाल बिन सा'द رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه भी थे, वोह खड़े हुए, ह़म्दो षनाए इलाही के बा'द ह़ाज़िरीन को मुख़ात़ब कर के पूछा : "क्या तुम ख़ुद को गुनाहगार तस्लीम करते हो ?" लोगों ने कहा : "हां।" चुनान्चे, आप ने बारगाहे

इलाही में दस्ते सुवाल दराज़ करते हुए अ़र्ज़ की : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हम ने तेरा येह फ़रमान सुना : "(پ۱۰،التوبة:۹۱) مَا عَلَى الْمُحْسِنِيْنَ مِنْ سَبِيْلٍ **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** नेकी वालों पर कोई राह नहीं।" हम गुनाहों का इक़रार करते हैं और तेरी मग़फ़िरत हम जैसों के लिये ही है। ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमारी मग़फ़िरत फ़रमा, हम पर रह़्म फ़रमा और हम पर बारिश बरसा। आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه और ह़ाज़िरीन ने दुआ़ के लिये हाथ उठाए ही थे कि बारिश बरसने लगी।

बारिश में ताख़ीर नहीं बल्कि....!

﴾7﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَفَّار से लोगों ने अ़र्ज़ की : "आप बारगाहे ख़ुदावन्दी में हमारे लिये दुआ़ फ़रमाएं।" तो आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया : "तुम समझ रहे हो कि बारिश में ताख़ीर हो रही है जब कि मैं तो (बुरे आ'माल के सबब) पथ्थर बरसने में ताख़ीर देख रहा हूं।"

एक आंख वाला आदमी :

﴾8﴿....मन्क़ूल है कि एक मरतबा ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह عَلٰی نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام बारिश की दुआ़ मांगने के लिये निकले। जब आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام सह़रा में पहुंचे तो ए'लान फ़रमाया : "मेरे साथ ऐसा शख़्स न आए जिस ने कोई गुनाह किया हो।" येह सुन कर सिवाए एक शख़्स के सब लौट गए। ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने उस से पूछा : "तुम ने कोई गुनाह नहीं किया?" उस ने जवाब दिया : "हुज़ूर! मुझे अपना कोई गुनाह याद नहीं सिवाए इस के कि एक दिन मैं नमाज़ पढ़ रहा था पास से एक औ़रत गुज़री तो मैं ने उसे इस आंख से देखा, उस के गुज़र जाने के बा'द (मुझ पर नदामत ग़ालिब आई और) मैं ने उंगली से वोह आंख निकाल कर उस औ़रत के पीछे फेंक दी।"

येह सुन कर ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने फ़रमाया : "तुम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से दुआ़ करो मैं तुम्हारी दुआ़ पर आमीन कहूंगा।" जब उन्हों ने दुआ़ मांगी तो आस्मान पर बादल छा गए, बारिश बरसने लगी और लोग सैराब हो गए।

उ़-लमाए किराम की अहम्मिय्यत :

﴾9﴿....ह़ज़रते सय्यिदुना यह़्या ग़स्सानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِی फ़रमाते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना दावूद عَلٰی نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के मुबारक दौर में क़ह़त़ पड़ गया, लोगों ने दुआ़ के लिये तीन उ़-लमा मुन्तख़ब किये। जब वोह बारिश की दुआ़ के लिये निकले तो एक आ़लिम साह़िब ने बारगाहे इलाही में अ़र्ज़ की : "ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तू ने तौरात शरीफ़ में फ़रमाया कि ज़ुल्म करने वाले

को मुआ़फ़ कर दो। ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हम ने अपनी जानों पर ज़ुल्म किया तू हमें मुआ़फ़ फ़रमा दे।" दूसरे आ़लिम साहि़ब ने यूं दुआ़ की : "ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तू ने तौरात में येह भी फ़रमाया कि अपने ग़ुलामों को आज़ाद करो। तो ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हम तेरे ग़ुलाम हैं हमें आज़ाद फ़रमा दे।" तीसरे आ़लिम साहि़ब ने दुआ़ मांगते हुए कहा : "ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तूने तौरात में हुक्म फ़रमाया कि जब दरवाज़े पर मिस्कीन आए तो उसे ख़ाली हाथ न लौटाओ। ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हम तेरे मिस्कीन बन्दे हैं, तेरे दर पर ह़ाज़िर हैं, हमें ख़ाली न लौटाना !" इस दुआ़ के फ़ौरन बा'द बारिश बरसने लगी।

सा'दून मजनून की दुआ़ :

﴿10﴾.....ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ता़ सुलमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं कि एक बार हम से बारिश रोक दी गई, हम दुआ़ के लिये बाहर निकले तो देखा कि सा'दून मजनून क़ब्रिस्तान में बैठे हैं। मुझे देख कर कहने लगे : "ऐ अ़ता़ ! आज क़ियामत का दिन है या लोग क़ब्रों से निकल आए हैं।" मैं ने कहा : "ऐसा नहीं है बल्कि बारिश नहीं हो रही, लिहाज़ा हम दुआ़ के लिये निकले हैं।" सा'दून ने कहा : "ऐ अ़ता़ ! किस दिल से दुआ़ मांगने चले हो, ज़मीनी या आस्मानी ?" मैं ने कहा : "आस्मानी।" सा'दून ने कहा : "ऐ अ़ता़ !अफ़्सोस ! खोटे सिक्के चलाने की कोशिश करने वालों को बता दो खोटे सिक्के न चलाओ कि परखने वाला बहुत बिसारत रखता है।" फिर इन्होंने कन अंखियों से आस्मान की त़रफ़ देख कर (बारगाहे ख़ुदावन्दी में) अ़र्ज़ की : "ऐ मेरे मा'बूद ! मेरे आक़ा ! अपने शहरों को अपने बन्दों के गुनाहों की वजह से बरबाद न कर बल्कि अपने नामों के पोशीदा राज़ों और पर्दों में छुपी ने'मतों के वसीले से हमें कषीर मीठा पानी अ़ता़ फ़रमा जिस से शहर सैराब हो जाएं और तेरे बन्दे ज़िन्दा रह सकें। ऐ हर चाहे पर क़ादिर !" ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ता़ सुलमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَلِى फ़रमाते हैं : सा'दून मजनून की दुआ़ अभी मुकम्मल भी न हुई थी कि आस्मान गरजने चमकने लगा और मुसलाधार बारिश शुरूअ़ हो गई। फिर सा'दून येह कहते चल दिये :

أَفْلَحَ الزَّاهِدُوْنَ وَالْعَابِدُوْنَا   اِذْلِمَوْلَاهُمْ اَجَاعُوا الْبُطُوْنَا

اَسْهَرُوْا الْاَعْيُنَ الْعَلِيْلَةَ حُبًّا   فَانْقَضٰى لَيْلُهُمْ وَهُمْ سَاهِرُوْنَا

شَغَلَتْهُمْ عِبَادَةُ اللّٰهِ حَتّٰى   حَسِبَ النَّاسُ اَنَّ فِيْهِمْ جُنُوْنًا

तर्जमा : ज़ाहिदीन व आ़बिदीन कामयाब हो गए क्यूंकि उन्हों ने अपने रब्ब عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये फ़ाक़े किये। उन्हों ने हुब्बे मौला में बीमार आंखों के साथ रातें जाग कर गुज़ारीं और इबादते इलाही में इस क़दर मश्ग़ूल हो गए कि लोग उन्हें मजनून गुमान करने लगे।

ह़बशी ग़ुलाम की दुआ़ :

﴾11﴿....ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : मैं सख़्त क़ह़त साली के अय्याम में मदीनए मुनव्वरा ह़ाज़िर हुवा, लोग बारिश की दुआ़ के लिये निकले तो मैं भी उन के साथ हो लिया। इस दौरान एक ह़बशी ग़ुलाम आया और मेरे पास ही बैठ गया, उस के पास दो चादरें थीं एक का तहबन्द बांध रखा था और दूसरी ओढ़ी हुई थी। मैं ने सुना कि वोह बारगाहे ख़ुदावन्दी में यूं दुआ़ गो है : "ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ बुरे आ'माल और कषरते गुनाह के सबब येह चेहरे तेरी बारगाह में रुस्वा हो गए। इस की पादाश में बारिश रोक कर तू अपने बन्दों को तम्बीह फ़रमा रहा है। ऐ बुर्दबारी फ़रमाने वाले ! तेरे बन्दों ने तुझ से अच्छाई और भलाई की ही उम्मीद लगा रखी है। मैं तेरी बारगाह में अ़र्ज़ करता हूं कि तू इन को इसी वक़्त बारिश अ़ता फ़रमा दे।" वोह येही कहता रहा : "اَلسَّاعَۃَ اَلسَّاعَۃَ या'नी इसी वक़्त इसी वक़्त।" ह़त्ता कि आस्मान बादलों से भर गया और हर त़रफ़ बारिश होने लगी।

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं इस वाक़िए के बा'द मैं ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ुज़ैल बिन अ़याज़ عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَھَّاب के पास गया, मुझे देख कर फ़रमाने लगे : "तुम अफ़्सुर्दा दिखाई देते हो !" मैं ने कहा : "एक शख़्स किसी मुआ़मले में हम से आगे निकल गया और उस मुआ़मले का वाली बन गया।" फिर मैंने गुज़श्ता सारा वाक़िआ़ बयान किया। सुन कर ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ुज़ैल बिन अ़याज़ عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَھَّاب ने एक चीख़ मारी और बेहोश हो गए।

वसीले की बरकत :

﴾12﴿.....मरवी है कि अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के चचा ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के वसीले से बारिश की दुआ़ मांगी। जब ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ दुआ़ मांग चुके तो ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बारगाहे रब्बुल इ़ज़्ज़त में यूं अ़र्ज़ गुज़ार हुए : "ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आस्मान से बलाएं गुनाहों के सबब नाज़िल होती हैं और तौबा के सबब इन से नजात मिलती है। तेरे नबी صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का रिश्तेदार होने के नाते लोगों ने तेरी बारगाह में मेरा वसीला पेश किया। गुनाहों से आलूदा हाथ तेरी बारगाह में दराज़ हैं। पेशानियां तौबा के लिये झुकी हैं। तू वाली है, तू भटके हुओं से बे ख़बर नहीं। शिकस्ता ह़ाल को ज़ाएअ़ होने के मक़ाम पर नहीं छोड़ता। अब छोटे फ़रयादी और बड़े गिर्या कनां हैं। फ़रयाद के लिये आवाज़ें बुलन्द हैं। तू राज़ों और छुपी बातों को जानता है। ऐ बारी तआ़ला ! इस से पहले कि लोग मायूस हो कर हलाकत में पड़ जाएं तू इन को इन की आहो ज़ारी के बदले बारिश अ़ता फ़रमा दे। तेरी रह़मत

से तो सिर्फ़ काफ़िर मायूस हो सकता है।" रावी फ़रमाते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ की दुआ़ अभी मुकम्मल न हुई थी कि आस्मान पहाड़ जैसे बादलों से भर गया।

तीसरी फ़स्ल : दुरूदे पाक की फ़ज़ीलत और अ़ज़मते मुस्त़फ़ा

इरशादे बारी तआ़ला है :

اِنَّ اللّٰہَ وَ مَلٰٓئِکَتَہٗ یُصَلُّوْنَ عَلَی النَّبِیِّ ؕ یٰۤاَیُّہَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا صَلُّوْا عَلَیْہِ وَ سَلِّمُوْا تَسْلِیْمًا ﴿۵۶﴾ (پ۲۲، الاحزاب:۵۶)

*तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक **अल्लाह** और उस के फ़िरिश्ते दुरूद भेजते हैं उस ग़ैब बताने वाले (नबी) पर ऐ ईमान वालो ! उन पर दुरूद और ख़ूब सलाम भेजो।*

फ़ज़ीलते दुरूद से मुतअ़ल्लिक़ 11 फ़रामीने मुस्त़फ़ा :

﴾1﴿.....मरवी है कि एक दिन रसूले मोह़्तशम, शाफ़ेए़ उमम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم तशरीफ़ लाए तो चेहरए अन्वर ख़ुशी से चमक रहा था, आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : मेरे पास जिब्राईल आए और कहा : "ऐ मुह़म्मद (صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) क्या आप इस बात पर राज़ी नहीं कि आप की उम्मत में से जो शख़्स एक मरतबा आप पर दुरूद भेजे मैं उस पर दस रह़मतें नाज़िल करूं और जो एक मरतबा सलाम भेजे मैं उस पर दस मरतबा सलाम नाज़िल करूं !"(1)

﴾2﴿.....जो मुझ पर दुरूद भेजता है तो जब तक वोह दुरूद पढ़ता रहता है फ़िरिश्ते उस के लिये दुआ़ए रह़मत करते रहते हैं अब बन्दे की मरज़ी है कम पढ़े या ज़ियादा।(2)

﴾3﴿..... اِنَّ اَوْلَی النَّاسِ بِیْ اَکْثَرُھُمْ عَلَیَّ صَلَاۃً या'नी मेरा ज़ियादा क़ुर्ब उसे नसीब होगा जो मुझ पर दुरूद की कषरत करता होगा।(3)

﴾4﴿.....किसी मोमिन के बख़ील होने के लिये इतना काफ़ी है कि उस के सामने मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूद न पढ़े।(4)

﴾5﴿.....اَکْثِرُوْا مِنَ الصَّلَاۃِ عَلَیَّ یَوْمَ الْجُمُعَۃِ या'नी रोज़े जुमुआ़ मुझ पर दुरूदे पाक की कषरत करो।(5)

﴾6﴿......मेरा जो उम्मती मुझ पर एक मरतबा दुरूदे पाक पढ़ता है उस के लिये 10 नेकियां लिखी जातीं और 10 गुनाह मिटा दिये जाते हैं।(6)

---

1 ......سنن النسائی، کتاب السھو، باب الفضل فی الصلاۃ علی النبی صلی اللّٰہ علیہ وسلم، الحدیث:۱۲۹۲، ص ۲۲۲۔

2 ......سنن ابن ماجہ، کتاب اقامۃ الصلاۃ والسنۃ فیھا، باب الصلاۃ علی النبی صلی اللّٰہ علیہ وسلم، الحدیث:۹۰۷، ج ۱، ص ۴۹۰۔

3 ......سنن الترمذی، کتاب الوتر، باب ماجاء فی فضل الصلاۃ......الخ، الحدیث:۴۸۴، ج ۲، ص ۲۷۔

4 ......سنن الترمذی، کتاب الدعوات، باب قول رسول اللّٰہ رغم انف رجل، الحدیث:۳۵۵۷، ج۵، ص ۳۲۱، مفھومًا

5 ......سنن ابی داود، کتاب الصلاۃ، باب فضل یوم الجمعۃ......الخ، الحدیث:۱۰۴۷، ج ۱، ص ۳۹۱، بتقدمٍ وتاخرٍ۔

6 ......سنن النسائی، کتاب السھو، باب الفضل فی الصلاۃ علی النبی صلی اللّٰہ علیہ وسلم، الحدیث:۱۲۹۴، ص ۲۲۲، مفھومًا۔

《7》.....जो शख़्स अज़ान व इक़ामत के बा'द येह दुआ़ पढ़े उस के लिये मेरी शफ़ाअ़त वाजिब होगी :[1]

اَللّٰھُمَّ رَبَّ ھٰذِهِ الدَّعْوَةِ التَّامَّةِ وَالصَّلَاةِ الْقَائِمَةِ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ عَبْدِكَ
وَرَسُوْلِكَ وَاَعْطِهِ الْوَسِيْلَةَ وَالْفَضِيْلَةَ وَالدَّرَجَةَ الرَّفِيْعَةَ وَالشَّفَاعَةَ يَوْمَ الْقِيَامَه

《8》.....जिस ने किताब में मुझ पर दुरूदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फ़िरिश्ते उस के लिये इस्तिग़्फ़ार करते रहेंगे ।[2]

《9》.....اِنَّ فِی الْاَرْضِ مَلَائِكَةً سَيَّاحِيْنَ يُبَلِّغُوْنِی عَنْ اُمَّتِی السَّلَام या'नी ज़मीन पर कुछ फ़िरिश्ते घूमते फिरते हैं जो मेरी उम्मत का सलाम मुझ तक पहुंचाते हैं ।[3]

《10》.....لَيْسَ اَحَدٌ يُّسَلِّمُ عَلَیَّ اِلَّا رَدَّ اللّٰهُ عَلَیَّ رُوْحِی حَتّٰی اَرُدَّ عَلَيْهِ السَّلَام या'नी जब भी कोई शख़्स मुझ पर सलाम भेजता है तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मेरी रूह़ लौटा देता है ह़त्ता कि मैं उस का जवाब देता हूं ।[4] [5]

《11》.....रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से पूछा गया कि "हम आप पर किस त़रह़ दुरूद भेजें ?" तो इरशाद फ़रमाया : "यूं पढ़ो :

---

1 .....صحیح البخاری، کتاب الأذان، باب الدعاء عندالنداء، الحدیث:۶۱۴، ج۱، ص۲۲۴، ملتقطًا۔

2 .....المعجم الاوسط، الحدیث:۱۸۳۵، ج۱، ص۴۹۷۔

3 .....الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان، کتاب الرقائق، باب الادعیة، الحدیث:۹۱۰، ج۲، ص۱۳۴، بتقدمٍ وتاخرٍ۔

4 .....سنن ابی داود، کتاب المناسک، باب زیارة القبور، الحدیث:۲۰۴۱، ج۲، ص۳۱۵۔

5 .....मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْمَنَّان मिरआतुल मनाजीह़, जि. 2 स. 101 पर फ़रमाते हैं : यहां रूह़ से मुराद तवज्जोह है न वोह जान जिस से ज़िन्दगी क़ाइम है । हुज़ूर तो ब ह़याते दाइमी ज़िन्दा हैं । इस ह़दीष का येह मत़लब नहीं कि मैं वैसे तो बे जान रहता हूं किसी के दुरूद पढ़ने पर ज़िन्दा हो कर जवाब देता रहता हूं वरना हर आन हुज़ूर पर लाखों दुरूद पढ़े जाते हैं तो लाज़िम आएगा कि हर आन लाखों बार आप की रूह़ निकलती और दाख़िल होती रहे । ख़याल रहे कि हुज़ूर एक आन में बे शुमार दुरूद ख़्वानों की त़रफ़ यक्सां तवज्जोह रखते हैं सब के सलाम का जवाब देते हैं । जैसे सूरज बयक वक़्त सारे आ़लम पर तवज्जोह कर लेता है ऐसे आस्माने नबुव्वत के सूरज (आफ़्ताबे नबुव्वत) एक वक़्त में सब का दुरूदो सलाम सुन भी लेते हैं और इस का जवाब भी देते हैं लेकिन इस में आप को कोई तक्लीफ़ भी मह़सूस नहीं होती । क्यूं न हो कि मज़हरे ज़ाते किब्रिया हैं रब्ब तआ़ला बयक वक़्त सब की दुआएं सुनता है ।

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ عَبْدِكَ وَعَلٰی اٰلِهٖ وَاَزْوَاجِهٖ وَذُرِّیَّتِهٖ كَمَا صَلَّیْتَ عَلٰی اِبْرَاهِیْمَ وَاٰلِ اِبْرَاهِیْمَ
وَبَارِكْ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّاَزْوَاجِهٖ وَذُرِّیَّتِهٖ كَمَا بَارَكْتَ عَلٰی اِبْرَاهِیْمَ وَاٰلِ اِبْرَاهِیْمَ اِنَّكَ حَمِیْدٌ مَّجِیْدٌ (1)

ख़साइसे मुस्त़फ़ा

मह़बूबे रब्बे ज़ुल जलाल صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के विसाले पुर मलाल के बा'द अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़िराक़े रसूल में रोते हुए कहने लगे : या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم मेरे मां बाप आप पर क़ुरबान ! आप खजूर के तने से टेक लगा कर ख़ुत़बा इरशाद फ़रमाया करते थे। जब ता'दाद में इज़ाफ़ा हुवा तो आप ने मिम्बर बनवाया ताकि लोग (ब आसानी) ख़ुत़बा सुन सकें। आप के फ़िराक़ में उस तने ने गिर्या व ज़ारी की तो आप ने दस्ते मुबारक फेर कर तसल्ली दी तो वोह चुप हो गया। या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم आप की जुदाई में आप की उम्मत पर इस तने से ज़ियादा रोने का ह़क़ बनता है।

या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم मेरे मां बाप आप पर क़ुरबान ! बारगाहे इलाही में आप का मक़ाम इस क़दर बुलन्द है कि **अल्लाह** रब्बुल इ़ज़्ज़त ने आप की इत़ाअ़त को अपनी इत़ाअ़त क़रार देते हुए फ़रमाया :

مَنْ یُّطِعِ الرَّسُوْلَ فَقَدْ اَطَاعَ اللّٰهَ ۚ
(پ۵، النسآء:۸۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *जिस ने रसूल का हुक्म माना बेशक उस ने **अल्लाह** का हुक्म माना।*

या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم आप पर मेरे मां बाप क़ुरबान **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हां आप की इस क़दर फ़ज़ीलत है कि आप की लग़्ज़िश की ख़बर देने से पहले आप के लिये अ़फ़्व की नवीद सुनाई और फ़रमाया :

عَفَا اللّٰهُ عَنْكَ ۚ لِمَ اَذِنْتَ لَهُمْ
(پ۱۰، التوبۃ:۴۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ***अल्लाह*** *तुम्हें मुआ़फ़ करे तुम ने उन्हें क्यूं इज़्न दे दिया ?*

---

1 ......صحیح البخاری، کتاب احادیث الانبیاء، الحدیث:۳۳۶۹، ج۲، ص۴۲۹، ملتقطًا۔

या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم मेरे मां बाप आप पर सदक़े ! रब्ब तआ़ला के हां आप को इस दर्जे की फ़ज़ीलत ह़ासिल है कि उस ने आप को सब से आख़िर में मबऊ़ष फ़रमाया लेकिन ज़िक्र सब से पहले किया :

وَ اِذْ اَخَذْنَا مِنَ النَّبِیّٖنَ مِیْثَاقَهُمْ وَ مِنْكَ وَ مِنْ نُّوْحٍ وَّ اِبْرٰهِیْمَ (پ ۲۱، الاحزاب:۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और ऐ मह़बूब ! याद करो जब हम ने नबियों से अ़हद लिया और तुम से और नूह़ और इब्राहीम से ।*

या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم मेरे मां बाप आप पर क़ुरबान ! आप ने बारगाहे इलाही में इतनी फ़ज़ीलत पाई कि जहन्नमी जहन्नम के मुख़्तलिफ़ त़बक़ात में जल रहे होंगे और आप की इत़ाअ़त न करने पर ग़म व ह़सरत का इज़्हार करते होंगे । रब्ब तआ़ला ने क़ुरआने पाक में इसे यूं बयान फ़रमाया :

یٰلَیْتَنَاۤ اَطَعْنَا اللّٰهَ وَ اَطَعْنَا الرَّسُوْلَا ﴿۶۶﴾ (پ ۲۱، الاحزاب:۶۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *हाए ! किसी त़रह़ हम ने* ***अल्लाह*** *का हुक्म माना होता और रसूल का हुक्म माना होता ।*

या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم मेरे मां बाप आप पर क़ुरबान ! ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा बिन इमरान عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ने पथ्थर अ़त़ा फ़रमाया जिस से नहरें फूट पड़ीं लेकिन इस से ज़ियादा तअ़ज्जुब ख़ेज़ अम्र येह है कि रब्ब तआ़ला ने आप की उंगलियों से पानी के चश्मे जारी फ़रमा दिये ।

या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم मेरे मां बाप आप पर क़ुरबान ! **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ने ह़ज़रते सय्यिदुना सुलैमान बिन दावूद عَلَيْهِمَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के बस में ऐसी हवा कर दी जिस के ज़रीए़ सुब्ह़ो शाम एक एक महीने का फ़ासिला त़ै किया जा सकता था और इस से भी अ़जीब तर आप का बुराक़ था जिस पर आप न सिर्फ़ सातवें आस्मान तक पहुंचे बल्कि नमाज़े फ़ज्र वादिये बत़ह़ में अदा फ़रमाई ।

या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم मेरे मां बाप आप पर फ़िदा ! अगर ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा बिन मरयम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ने मुर्दे ज़िन्दा करने का मो'जिज़ा अ़त़ा फ़रमाया तो इस से ज़ियादा तअ़ज्जुब ख़ेज़ मुआ़मला येह है कि ज़हर आलूद भुनी हुई बकरी के शाने ने आप से कलाम किया और अ़र्ज़ की : मुझे तनावुल न फ़रमाइये क्यूंकि मुझ में ज़हर मिलाया गया है ।

या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم मेरे मां बाप आप पर कुरबान ! ह़ज़रते सय्यिदुना नूह़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने अपनी क़ौम के ख़िलाफ़ दुआ़ की जिसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इस त़रह़ बयान फ़रमाया :

رَّبِّ لَا تَذَرْ عَلَى الْاَرْضِ مِنَ الْكٰفِرِيْنَ دَيَّارًا ﴿۲۶﴾ (پ۲۹،النوح:۲۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *ऐ मेरे रब्ब ! ज़मीन पर काफ़िरों में से कोई बसने वाला न छोड़ ।*

अगर आप भी इसी की मिस्ल बारगाहे इलाही में इल्तिजा करते तो सब हलाक हो जाते । आप की पीठ मुबारक को रौंदा गया, रुख़े अन्वर को ख़ून आलूद किया गया, दन्दाने मुबारक शहीद किये गए । लेकिन आप ने उन के लिये भलाई ही मांगी और बारगाहे इलाही में यूं इल्तिजा की : ''اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِقَوْمِىْ فَاِنَّهُمْ لَا يَعْلَمُوْن या'नी ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मेरी क़ौम को मुआ़फ़ फ़रमा येह मुझे नहीं जानते ।''

या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم मेरे मां बाप आप पर कुरबान ! आप की उ़म्र मुबारक और ज़मानए तब्लीग़ कम लेकिन आप पर ईमान लाने वालों की ता'दाद ज़ियादा है जब कि ह़ज़रते सय्यिदुना नूह़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की उ़म्र और ज़मानए तब्लीग़ ज़ियादा लेकिन उन पर ईमान लाने वालों की ता'दाद कम रही ।

रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की आ़जिज़ी :

या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم मेरे मां बाप आप पर फ़िदा ! अगर आप अपने साथ सिर्फ़ अपने बराबर के लोगों को बिठाते तो हमें न बिठाते । अगर आप अपने बराबर के लोगों में शादी करना चाहते तो हमारे ख़ानदान में आप का निकाह़ न होता । अगर आप अपने बराबर के लोगों के साथ खाना खाना चाहते तो हमारे साथ न खाते । लेकिन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! आप ने हमें अपनी हम नशीनी का शरफ़ बख़्शा, हमारे ख़ानदान में शादी की । हमें खाने में साथ बिठाया, ऊन का लिबास ज़ेबे तन फ़रमाया, दराज़ गोश को सुवारी बनाया, सुवारी पर अपने पीछे दूसरों को बिठाया, ज़मीन पर बैठ कर खाना खाया, बत़ौरे तवाज़ोअ़ अपनी उंगलियां चाटीं ।

दुरूद हमेशा मुकम्मल पढ़ें या लिखें :

एक बुज़ुर्ग رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं कि मैं ह़दीष शरीफ़ की किताबत करता था और जहां मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का नामे मुबारक आता तो मैं सिर्फ़ दुरूद लिखता सलाम न लिखता । एक बार मुझे ख़्वाब में सरकारे आ़ली वक़ार, शहनशाहे अबरार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का दीदार नसीब हुवा, आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ''तुम अपनी किताब में मुकम्मल दुरूद क्यूं

नहीं लिखते ?" वोह बुज़ुर्ग फ़रमाते हैं : "इस के बा'द मैं ने दुरूद के साथ सलाम लिखने का भी मा'मूल बना लिया ।"

हज़रते सय्यिदुना अबुल ह़सन رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं एक दफ़्आ़ मैं ख़्वाब में महबूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत से मुशर्रफ़ हुवा तो अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم हज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْكَافِی ने किताब "اَلرِّسَالَہ" में जो लिखा है : صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّدٍ كُلَّمَا ذَكَرَهُ الذَّاكِرُوْنَ وَغَفَلَ عَنْ ذِكْرِهِ الْغَافِلُوْنَ उन्हें इस का क्या इ़वज़ अ़ता होगा ?" तो आप صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "उन्हें इस के इन्आ़म में ह़िसाबो किताब के लिये खड़ा नहीं किया जाएगा ।"

चौथी फ़स्ल : इस्तिग़फ़ार की फ़ज़ीलत

हज़रते सय्यिदुना अ़लक़मा और हज़रते सय्यिदुना अस्वद رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْهُمَا का बयान है कि हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं : कुरआने पाक में येह आयतें ऐसी हैं कि अगर गुनाहगार इन की तिलावत कर के रब्ब عَزَّوَجَلَّ से मग़्फ़िरत त़लब करे तो उस की मग़्फ़िरत कर दी जाए ।

﴾1﴿

وَالَّذِيْنَ اِذَا فَعَلُوْا فَاحِشَةً اَوْ ظَلَمُوْۤا اَنْفُسَهُمْ ذَكَرُوا اللّٰهَ فَاسْتَغْفَرُوْا لِذُنُوْبِهِمْ ۪

(پ۴،اٰل عمرٰن:۱۳۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और वोह कि जब कोई बेहयाई या अपनी जानों पर ज़ुल्म करें अल्लाह को याद कर के अपने गुनाहों की मुआ़फ़ी चाहें ।

﴾2﴿

وَ مَنْ يَّعْمَلْ سُوْٓءًا اَوْ يَظْلِمْ نَفْسَهٗ ثُمَّ يَسْتَغْفِرِ اللّٰهَ يَجِدِ اللّٰهَ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ۝۱۱۰

(پ۵، النسآء:۱۱۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और जो कोई बुराई या अपनी जान पर ज़ुल्म करे फिर अल्लाह से बख़्शिश चाहे तो अल्लाह को बख़्शने वाला मेहरबान पाएगा ।

﴾3﴿

فَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ وَاسْتَغْفِرْهُ ؕ اِنَّهٗ كَانَ تَوَّابًا ۝۳

(پ۳۰،النصر:۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तो अपने रब्ब की षना करते हुए उस की पाकी बोलो और उस से बख़्शिश चाहो । बेशक वोह बहुत तौबा क़ुबूल करने वाला है ।

﴾4﴿

وَالْمُسْتَغْفِرِيْنَ بِالْاَسْحَارِ ﴿۱۷﴾ (پ۳،اٰل عمرٰن:۱۷) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** *और पिछले पहर से मुआ़फ़ी मांगने वाले।*

इस्तिग़फ़ार से मुतअ़ल्लिक़ 19 फ़रामीने मुस्त़फ़ा :

﴾1﴿.....रसूलुल्लाह صَلَّى الله تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم अकसर येह पढ़ा करते : سُبْحٰنَكَ اللّٰهُمَّ وَبِحَمْدِكَ اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِيْ اِنَّكَ اَنْتَ التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तेरी ज़ात पाक है और सब ता'रीफ़ें तेरे लिये हैं ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मेरी मग़फ़िरत फ़रमा बेशक तू तौबा क़बूल करने वाला और रह़्म फ़रमाने वाला है।''[1]

﴾2﴿.....जो इस्तिग़फ़ार की कषरत करेगा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस की हर परेशानी दूर फ़रमाएगा, हर तंगी से उस के लिये नजात की राह निकालेगा और ऐसी जगह से रिज़्क़ अ़त़ा फ़रमाएगा जहां से उसे गुमान भी न होगा।[2]

﴾3﴿.....बिला शुबा मैं रोज़ाना 70 मरतबा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से इस्तिग़फ़ार और तौबा करता हूं।[3] [4] ह़ालांकि आप صَلَّى الله تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के सदक़े अगले पिछले लोगों ने भी मग़फ़िरत की ने'मत पाई।

﴾4﴿.....मेरे दिल पर कभी (अन्वारे इलाही के ग़लबे से अब्र छा जाता है) और मैं रोज़ाना 100 बार इस्तिग़फ़ार करता हूं।[5] [6]

﴾5﴿.....सोते वक़्त जो येह कलिमात : '' اَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ الْعَظِيْمَ الَّذِيْ لَا اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّوْمُ وَاَتُوْبُ اِلَيْهِ या'नी मैं अ़ज़मत व बुज़ुर्गी वाले परवर दगार عَزَّوَجَلَّ से मग़फ़िरत त़लब करता हूं उस के सिवा कोई इ़बादत के लाइक़ नहीं, वोह आप ज़िन्दा और दूसरों को क़ाइम रखने वाला है और मैं उस की बारगाह

---

1 ......كتاب الدعاء للطبراني، القول في السجود، الحديث، ۵۹۷، ص۱۹۳، دون ''الرحيم''۔

2 ......سنن ابی داود، كتاب الوتر، باب فی الاستغفار، الحديث:۱۵۱۸، ج۲، ص۱۲۲، بتغير۔

3 .....मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْمَنَّان मिरआतुल मनाजीह़, जि. 3 स. 353 पर फ़रमाते हैं : तौबा व इस्तिग़फ़ार रोज़े नमाज़ की त़रह़ इ़बादत भी है इसी लिये हुज़ूरे अन्वर صَلَّى الله تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم इस पर आ़मिल थे या येह अ़मल हम गुनहगारों की ता'लीम के लिये है वरना हुज़ूरे अन्वर صَلَّى الله تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم मा'सूम हैं गुनाह आप के क़रीब भी नहीं आता।

4 ......كتاب الدعاء للطبراني، فصل الاستغفار في ادبار الصلواة، الحديث:۱۸۳۸، ص۵۱۲، بتقدمٍ و تاخر۔

5 .....मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْمَنَّان मिरआतुल मनाजीह़, जि. 3 स. 353 पर फ़रमाते हैं : इस पर्दे के मुतअ़ल्लिक़ शारेह़ीन ने बहुत ख़ामा फ़रसाई की है मगर ह़क़ येह है कि यहां ग़ैन (पर्दे) से मुराद अपनी उम्मत के गुनाहों को देख कर ग़म फ़रमाना है। और इस्तिग़फ़ार से मुराद उन गुनाहगारों के लिये इस्तिग़फ़ार करना है। (मुलतक़त़न)

6 ......صحيح مسلم، كتاب الذكر و الدعاء......الخ، باب استحباب الاستغفار......الخ، الحديث:۲۷۰۲، ص۱۴۴۹۔

में तौबा करता हूं।" तीन मरतबा पढ़ ले **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के गुनाह बख़्श देगा अगर्चे समन्दर की झाग या रैत के ज़र्रात या दरख़्त के पत्तों या दुन्या के दिनों के बराबर हों।[1]

एक और रिवायत में है कि जो शख़्स मज़्कूरा कलिमात पढ़ लेगा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के गुनाह बख़्श देगा अगर्चे वोह मैदाने जिहाद से ही क्यूं न भागा हो।[2]

﴾6﴿.....हज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा बिन यमान رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं, मैं अपने अहले ख़ाना के साथ सख़्त कलामी किया करता था। (एक रोज़) बारगाहे रिसालत में हाज़िर हो कर अर्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मुझे ख़ौफ़ आता है कि कहीं मेरी ज़बान मेरे लिये जहन्नम का बाइ़ष न बन जाए।" येह सुन कर महबूबे रब्बे जुल जलाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "तुम इस्तिग़फ़ार क्यूं नहीं करते ! मैं तो रोज़ाना **100** मरतबा इस्तिग़फ़ार करता हूं।"[3]

﴾7﴿.....उम्मुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہَا से इरशाद फ़रमाया : "अगर कोई गुनाह हो जाए तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से मग़्फ़िरत त़लब करो और उस की बारगाह में तौबा करो, बेशक नदामत और त़लबे मग़्फ़िरत का नाम तौबा है।"[4]

﴾8﴿.....ताजदारे रिसालत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم (ता'लीमे उम्मत के लिये) इस त़रह़ इस्तिग़फ़ार करते :

اَللّٰھُمَّ اغْفِرْ لِیْ خَطِیْئَتِیْ وَجَھْلِیْ وَاِسْرَافِیْ فِیْ اَمْرِیْ وَمَااَنْتَ اَعْلَمُ بِہٖ مِنِّیْ
اَللّٰھُمَّ اغْفِرْ لِیْ ھُزْلِیْ وَجِدِّیْ وَخَطَئِیْ وَعَمَدِیْ وَکُلَّ ذٰلِكَ عِنْدِیْ اَللّٰھُمَّ اغْفِرْ لِیْ مَاقَدَّمْتُ وَمَااَخَّرْتُ وَمَااَسْرَرْتُ وَمَااَعْلَنْتُ
وَمَااَنْتَ اَعْلَمُ بِہٖ مِنِّیْ اَنْتَ الْمُقَدِّمُ وَاَنْتَ الْمُؤَخِّرُ وَاَنْتَ عَلٰی کُلِّ شَیْءٍ قَدِیْر

या'नी ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मेरी ख़त़ा, नादानी, अपने मुआ़मलात में ह़द से तजावुज़ और मेरे मुतअ़ल्लिक़ जो भी तू जानता है उसे मुआ़फ़ फ़रमा। या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मज़ाक़ में, सन्जीदगी में, भूले में या जान बूझ कर मुझ से जो भी गुनाह सरज़द हुए हैं उन्हें मुआ़फ़ फ़रमा। या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मेरे अगले पिछले, जलवत व ख़लवत के गुनाह और जिन को तू मुझ से बेहतर जानता है मुआ़फ़ फ़रमा। तू ही आगे करने वाला और पीछे लाने वाला है और तू सब कुछ कर सकता है।"[5]

---

1 ......سنن الترمذی، کتاب الدعوات، الحدیث:۳۴۰۸، ج۵، ص۲۵۵، بتقدمٍ وتاخرٍ۔

2 ......سنن ابی داود، کتاب الوتر، باب فی الاستغفار، الحدیث:۱۵۱۷، ج۲، ص۱۲۱۔

3 ......سنن الدارمی، ومن کتاب الرقاق، باب فی الاستغفار، الحدیث:۲۷۲۳، ج۲، ص۳۹۱، بتغیرٍ۔

4 ......شعب الایمان للبیهقی، باب فی معالجة کل ذنب بالتوبة، الحدیث:۷۰۲۷، ج۵، ص۳۸۲۔

5 ......صحیح مسلم، کتاب الذکر والدعاء......الخ، باب التعوذمن شرماعمل، الحدیث:۲۷۱۹، ص۱۴۵۷۔

﴾9﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم फ़रमाते हैं : मैं वोह शख़्स हूं कि जब नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से ह़दीष सुनता हूं तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ जितना चाहता है मुझे इस से नफ़्अ़ अ़त़ा फ़रमाता है और जब कोई सह़ाबिये रसूल मुझे ह़दीषे रसूल सुनाता है तो मैं उस से क़सम लेता हूं और जब वोह क़सम खाता है तो मैं उस की तस्दीक़ करता हूं और मुझे अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ ने ह़दीष सुनाई और सच फ़रमाया कि मैं ने मदनी आक़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को इरशाद फ़रमाते सुना कि ''जो बन्दा गुनाह कर बैठे तो अच्छे त़रीक़े से वुज़ू करे फिर खड़े हो कर दो रक्अ़तें अदा करे फिर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से मग़्फ़िरत त़लब करे तो उस की मग़्फ़िरत कर दी जाती है।'' फिर आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने येह आयते मुबारका तिलावत फ़रमाई :

وَالَّذِيْنَ اِذَا فَعَلُوْا فَاحِشَةً اَوْ ظَلَمُوْۤا اَنْفُسَهُمْ

(پ۴،اٰل عمرٰن:۱۳۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और वोह कि जब कोई बे ह़याई या अपनी जानों पर ज़ुल्म करें।*[1]

﴾10﴿.....बन्दा जब कोई गुनाह करता है तो उस के दिल पर एक सियाह नुक़्त़ा लगा दिया जाता है फिर अगर वोह तौबा करे और उस गुनाह से बाज़ आ जाए और इस्तिग़्फ़ार करे तो उस का दिल चमका दिया जाता है और अगर वोह मज़ीद गुनाह करे तो उस सियाही में इज़ाफ़ा कर दिया जाता है यहां तक कि उस के दिल पर छा जाती है।[2]

येह वोही ज़ंग है जिसे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने कुरआने पाक में यूं ज़िक्र फ़रमाया है :

كَلَّا بَلْ ٚ رَانَ عَلٰی قُلُوْبِهِمْ مَّا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿۱۴﴾

(پ۳۰، المطففين:۱۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *कोई नहीं बल्कि उन के दिलों पर ज़ंग चढ़ा दिया है उन की कमाइयों ने।*

﴾11﴿.....अल्लाह عَزَّوَجَلَّ जन्नत में बन्दे को एक दर्जा अ़त़ा फ़रमाएगा, बन्दा अ़र्ज़ करेगा : ''ऐ मौला عَزَّوَجَلَّ येह दर्जा मुझे कैसे मिला ?'' अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाएगा : ''उस इस्तिग़्फ़ार के बदले जो तेरे बेटे ने तेरे लिये किया।''[3]

---

1 ......سنن ابی داود، کتاب الوتر، باب فی الاستغفار، الحدیث:۱۵۲۱، ج۲، ص۱۲۲۔۱۲۳۔

2 ......سنن الترمذی، کتاب التفسیر، باب ومن سورۃ ویل للمطففین، الحدیث:۳۳۴۵، ج۵، ص۲۲۰، مفهومًا۔

3 ......المسندللامام احمد بن حنبل، مسند ابی ہریرۃ، الحدیث:۱۰۶۱۵، ج۳، ص۵۸۴۔

《12》.....उम्मुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا रिवायत करती हैं कि सरकारे वाला तबार, शफ़ीए़ रोज़े शुमार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने बारगाहे रब्बुल इ़ज़्ज़त में यूं अ़र्ज़ की : ''اَللّٰھُمَّ اجْعَلْنِی مِنَ الَّذِیْنَ اِذَا اَحْسَنُوْا اِسْتَبْشَرُوْا وَاِذَا اَسَاؤُوْا اِسْتَغْفَرُوْا'' या'नी या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मुझे उन लोगों में शामिल फ़रमा जो नेकी कर के ख़ुश होते हैं और अगर ख़त़ा कर बैठें तो मग़्फ़िरत त़लब करते हैं।''(1)

《13》.....बन्दा जब कोई गुनाह कर बैठे फिर कहे : ''اَللّٰھُمَّ اغْفِرْلِی या'नी या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मुझे मुआ़फ़ फ़रमा।'' तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है : ''मेरे बन्दे से गुनाह हो गया, और वोह जानता है कि उस का रब्ब है जो गुनाह पर पकड़ भी फ़रमाता है और बख़्श भी देता है। ऐ मेरे बन्दे ! जो चाहे कर मैं ने तेरी बख़्शिश फ़रमा दी।''(2)

《14》.....मुआ़फ़ी मांग लेने वाला गुनाह पर अड़ा रहने वाला नहीं अगर्चे दिन में 70 बार गुनाह करे।(3)

《15》.....एक शख़्स जिस ने कभी कोई नेकी न की थी एक रोज़ आस्मान की त़रफ़ निगाह उठा कर कहने लगा : ''बेशक मेरा एक परवर दगार है, ऐ मेरे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मेरी मग़्फ़िरत फ़रमा।'' अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया : ''मैं ने तुझे बख़्श दिया।''(4)

《16》.....जिस से कोई गुनाह सरज़द हो जाए और वोह यक़ीन रखे कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मेरी इस ख़त़ा पर मुत्तलअ़ है तो उस की मग़्फ़िरत कर दी जाती है अगर्चे वोह इस्तिग़्फ़ार भी न करे।(5)

《17》.....फ़रमाया, रब्ब तआ़ला फ़रमाता है : ''ऐ मेरे बन्दो ! तुम सब गुनाहगार हो सिवाए उस के जिसे मैं मह़फ़ूज़ रखूं, लिहाज़ा मुझ से मग़्फ़िरत का सुवाल करो मैं तुम्हारी मग़्फ़िरत फ़रमा दूंगा और तुम में से जो येह जान ले कि मैं बख़्श देने पर क़ादिर हूं तो मैं उस की मग़्फ़िरत फ़रमा दूंगा और मुझे कुछ परवाह नहीं।''(6)

《18》.....जो शख़्स येह कलिमात कहे : ''سُبْحٰنَكَ ظَلَمْتُ نَفْسِی وَعَمِلْتُ سُوْٓءًا فَاغْفِرْلِی فَاِنَّهٗ لَایَغْفِرُ الذُّنُوْبَ اِلَّا اَنْتَ'' या'नी (या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ) तेरी ज़ात पाक है, मैं ने अपनी जान पर ज़ुल्म किया और बुरे अ़मल

1 ......سنن ابن ماجه، كتاب الأدب، باب الاستغفار، الحديث:٣٨٢٠، ج٤، ص٢٥٨۔

2 ......صحيح مسلم، كتاب التوبة، باب قبول التوبة من الذنوب......الخ، الحديث:٢٧٥٨، ص١٤٧٤ـ١٤٧٥، بتقدمٍ وتاخرٍ۔

3 ......سنن ابى داود، كتاب الوتر، باب الاستغفار، الحديث:١٥١٤، ج٢، ص١٢١۔

4 ......موسوعة الامام ابن ابى الدنيا، حسن الظن بالله، الحديث:١٠٦، ج١، ص١٠٤، مفهومًا۔

5 ......المعجم الاوسط، الحديث:٢٤٧٢، ج٣، ص٢٤٤۔

6 ......سنن الترمذى، كتاب صفة القيامة، الحديث:٢٥٠٣، ج٤، ص٢٢٢، مفهومًا۔

किये, पस तू मुझे बख़्श दे कि तेरे सिवा गुनाहों को बख़्शने वाला कोई नहीं।" तो उस के गुनाह बख़्श दिये जाते हैं अगर्चे च्यूंटियों की ता'दाद के बराबर हों।(1)

﴾19﴿.....रिवायत में है कि अफ़्ज़ल इस्तिग़्फ़ार येह है :

اَللّٰھُمَّ اَنْتَ رَبِّیْ وَاَنَا عَبْدُكَ خَلَقْتَنِیْ وَاَنَا عَلٰی عَھْدِكَ وَوَعْدِكَ مَااسْتَطَعْتُ اَعُوْذُ بِكَ مِنْ شَرِّ مَاصَنَعْتُ اَبُوْءُ لَكَ بِنِعْمَتِكَ عَلَیَّ وَاَبُوْءُ عَلٰی نَفْسِیْ بِذَنْبِیْ فَقَدْ ظَلَمْتُ نَفْسِیْ وَاعْتَرَفْتُ بِذَنْبِیْ فَاغْفِرْلِیْ ذُنُوْبِیْ مَاقَدَّمْتُ مِنْھَا وَمَااَخَّرْتُ فَاِنَّهٗ لَایَغْفِرُ الذُّنُوْبَ جَمِیْعَھَا اِلَّا اَنْتَ

या'नी ऐ अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ तू मेरा रब्ब है, मैं तेरा बन्दा हूं, तू ने मुझे पैदा किया और मैं ब क़द्रे त़ाक़त तेरे अ़हदो पैमान पर क़ाइम हूं, मैं अपने किये के शर से तेरी पनाह मांगता हूं, तेरी दी हुई ने'मत और अपनी जान के ख़िलाफ़ गुनाहों का भी इक़रार करता हूं, बेशक मैं ने अपनी जान पर ज़ुल्म किया, मुझे अपने गुनाहों का ए'तिराफ़ है, पस मेरे अगले पिछले गुनाहों को बख़्श दे कि तेरे सिवा बख़्शने वाला कोई नहीं।(2)

अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ के मह़बूब बन्दे :

ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन मा'दान عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْحَنَّان का बयान है कि अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है : "मेरे मह़बूब बन्दे वोह हैं जो मुझ से मह़ब्बत के सबब आपस में मह़ब्बत रखते हैं, उन के दिल मसाजिद में लगे रहते हैं और वक़्ते सह़र इस्तिग़्फ़ार करते हैं। जब मैं अहले ज़मीन को अ़ज़ाब देने का इरादा करता हूं तो इन्हीं लोगों की वजह से उन से फेर देता हूं।

इस्तिग़्फ़ार की फ़ज़ीलत पर मुश्तमिल 11 अक़्वाले बुज़ुर्गाने दीन :

﴾1﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना क़तादा رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : "क़ुरआने पाक तुम्हारी बीमारी की तशख़ीस करता और इस के लिये दवा तजवीज़ फ़रमाता है, गुनाह तुम्हारी बीमारी है और इस्तिग़्फ़ार इस का इलाज है।"

﴾2﴿.....अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰی وَجْھَهُ الْكَرِيْم ने इरशाद फ़रमाया : "तअ़ज्जुब है उस शख़्स पर जो सामाने नजात रखने के बा वुजूद हलाक हो जाता है।" पूछा गया : "सामाने नजात क्या है ?" फ़रमाया : "इस्तिग़्फ़ार।"

﴾3﴿.....इन्ही से मरवी है कि "अल्लाह जब्बार व क़ह्हार जिसे अ़ज़ाब देने का इरादा फ़रमा लेता है उसे तौबा की तौफ़ीक़ नहीं देता।"

﴾4﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ुज़ैल बिन इयाज़ عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الرَّزَّاق फ़रमाते हैं : बन्दा "اَسْتَغْفِرُ الله" कहता है उस का मत़लब है कि "(मौला !) मुझे बख़्श दे।"

---

1 ......كنزالعمال، كتاب الاذكار، باب فی الدعاء، الحديث:٥٠٤٩، ج٢، ص٢٨٧، مفهومًا۔

2 ......صحيح البخاری، كتاب الدعوات، باب افضل الاستغفار، الحديث:٦٣٠٦، ج٤، ص١٩٠، باختصارٍ۔

﴾5﴿.....उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰہُ السَّلَام फ़रमाते हैं : बन्दा गुनाह और ने'मत के दरमियान होता है। इन दोनों के लिये اَلْحَمْدُ لِلّٰه और اَسْتَغْفِرُ اللّٰه है (या'नी हुसूले ने'मत पर ह़म्दो षना और इर्तिकाबे गुनाह पर तौबा व इस्तिग़फ़ार करे)।

﴾6﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना रबीअ़ बिन ख़ुषैम رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : तुम में से कोई इस त़रह़ न कहे : اَسْتَغْفِرُ اللّٰه وَاَتُوْبُ اِلَيْهِ या'नी मैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से मग़्फ़िरत त़लब करता हूं और तौबा करता हूं। क्यूंकि अगर तुम ने ऐसा न किया (या'नी इस्तिग़फ़ार न किया) तो येह झूट और गुनाह होगा। हां ! यूं कहना चाहिये : "اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلِيْ وَتُبْ عَلَيَّ या'नी या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मेरी मग़्फ़िरत फ़रमा और तौबा क़बूल फ़रमा।"

﴾7﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ुज़ैल बिन इयाज़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَهَّاب फ़रमाते हैं : "तर्के गुनाह के बिग़ैर तौबा झूटों की तौबा है।"

﴾8﴿.....ह़ज़रते सय्यिदतुना राबिआ़ अ़दविय्या رحمۃاللہ تعالی علیھا फ़रमाती हैं : हमारी तौबा को भी बहुत सी तौबा की ज़रूरत है।"

﴾9﴿....हुकमा का कहना है : नादिम हुए बिग़ैर तौबा करने वाला गोया (ला इ़ल्मी) में अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त से मज़ाक़ करने वाला है।

﴾10﴿.....एक आ'राबी को ग़िलाफ़े का'बा से लिपट कर येह कहते सुना गया :

اَللّٰهُمَّ اِنَّ اسْتِغْفَارِيْ مَعَ اِصْرَارِيْ لَلُؤْمٌ وَاِنَّ تَرْكِيْ اِسْتِغْفَارَكَ مَعَ عِلْمِيْ بِسِعَةِ عَفْوِكَ لَعَجْزٌ فَكَمْ تَتَحَبَّبُ اِلَيَّ بِالنِّعَمِ مَعَ غِنَاكَ عَنِّي وَكَمْ اَتَبَغَّضُ اِلَيْكَ بِالْمَعَاصِيْ مَعَ فَقْرِيْ اِلَيْكَ يَا مَنْ اِذَاوَعَدَ وَفٰى وَاِذَا اَوْعَدَ عَفَا اَدْخِلْ عَظِيْمَ جُرْمِيْ فِيْ عَظِيْمِ عَفْوِكَ يَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ

या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अगर मैं गुनाह पर इसरार के बा वुजूद तुझ से मग़्फ़िरत त़लब करूं तो येह मलामत है और तेरे अ़फ़्वो दरगुज़र की वुस्अ़तों का यक़ीन रखते हुए इस्तिग़फ़ार न करूं तो येह मेरी कमज़ोरी है। तू मुझ पर कितने ही इन्आ़म व इकराम फ़रमा कर मुझे दोस्त रखता है ह़ालांकि तुझे मेरी कोई ज़रूरत नहीं जब कि मैं तेरा मोह़ताज होने के बा वुजूद तेरी नाफ़रमानियां कर के तेरे ग़ज़ब का शिकार होता हूं। ऐ वा'दा पूरा करने वाले ! वईद सुना कर मुआ़फ़ करने वाले ! ऐ रह़म करने वाले मौला ! मेरे बड़े जुर्मों को अपने अ़ज़ीम अ़फ़्व से मिटा दे।

﴾11﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अ़ब्दुल्लाह वर्राक़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الرَّزَّاق फ़रमाते हैं, अगर तेरे गुनाह पानी के क़त़रों और समन्दर की झाग के बराबर भी हो जाएं तो बारगाहे इलाही में ख़ुलूस दिल से येह दुआ़ कर तेरे गुनाह मिटा दिये जाएंगे :

اَللّٰھُمَّ اِنِّیْ اَسْتَغْفِرُکَ مِنْ کُلِّ ذَنْبٍ تُبْتُ اِلَیْکَ مِنْہُ ثُمَّ عُدْتُّ فِیْہِ وَاَسْتَغْفِرُکَ مِنْ کُلِّ مَاوَعَدْتُّکَ بِہٖ مِنْ نَّفْسِیْ وَلَمْ اُوْفِ لَکَ بِہٖ وَاَسْتَغْفِرُکَ مِنْ کُلِّ عَمَلٍ اَرَدْتُّ بِہٖ وَجْھَکَ فَخَالَطَہٗ غَیْرُکَ وَاَسْتَغْفِرُکَ مِنْ کُلِّ نِعْمَۃٍ اَنْعَمْتَ عَلَیَّ فَاسْتَعَنْتُ بِھَا عَلٰی مَعْصِیَتِکَ وَاَسْتَغْفِرُکَ یَاعَالِمَ الْغَیْبِ وَالشَّھَادَۃِ مِنْ کُلِّ ذَنْبٍ اَتَیْتُہٗ فِیْ ضِیَاءِ النَّھَارِ وَسَوَادِ اللَّیْلِ فِیْ مَلَاٍ اَوْ خَلَاءٍ وَّسِرٍّ وَّعَلَانِیَۃٍ یَّا حَلِیْمُ

या'नी : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मैं तुझ से अपने हर गुनाह की बख़्शिश त़लब करता हूं और तेरे हुज़ूर उन ख़त़ाओं से तौबा करता हूं जिन के तर्क का तुझ से वा'दा कर के फिर उन में मुब्तला हो जाता हूं। मैं तुझ से हर उस अ़मल से भी तौबा करता हूं जो करना तो तेरी रिज़ा के लिये चाहता हूं लेकिन उस में ग़ैर का ख़याल शामिल हो जाता है। मैं उस बात से भी तौबा करता हूं कि तू मुझे ने'मत अ़त़ा करता है और मैं इस से तेरी ही नाफ़रमानी पर मदद ह़ासिल करता हूं। ऐ ज़ाहिरो बात़िन को जानने वाले ! ऐ ह़िल्म वाले ! मैं तुझ से सब गुनाहों की मुआ़फ़ी का त़लबगार हूं चाहे वोह दिन की रोशनी में किये हों या रात की तारीकी में, जलवत में हों या ख़लवत में, अ़लानिया हों या पोशीदा।

मन्क़ूल है कि ह़ज़रते सय्यिदुना आदम व ह़ज़रते सय्यिदुना ख़िज़्र (عَلَیْھِمَاالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام) की दुआ़ए इस्तिग़फ़ार भी येही है।

﴾.....क़ब्र का रफ़ीक़.....﴿

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक्तबतुल मदीना** की मत़बूआ़ 54 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब **"नसीह़तों के मदनी फूल ब वसीलए अह़ादीषे रसूल"** सफ़ह़ा 51 पर है : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है : **ऐ इब्ने आदम !** नेकी कर क्यूंकि येह जन्नत की चाबी है और उसी की त़रफ़ रहनुमाई करेगी। बुराई से इजतिनाब कर क्यूंकि येह जहन्नम की चाबी है और उसी की त़रफ़ ले जाएगी।

ऐ इब्ने आदम ! येह बात अच्छी त़रह़ जान ले ! कि ख़राबी पर तुझे तम्बीह (की जाती) है। बेशक तेरी उ़म्र ख़राब होने के लिये, जिस्म मिट्टी के लिये और जो कुछ तू ने जम्अ़ किया है वोह वुरषा के लिये और ऐ़शो आराम दूसरों के लिये है जब कि ह़िसाबो किताब तुझ पर लाज़िम और सज़ा व नदामत तेरे लिये है। और **"क़ब्र में तेरा रफ़ीक़"** सिर्फ़ तेरा अ़मल ही है लिहाज़ा तू ख़ुद अपना मुह़ासबा कर क़ब्ल इस से कि तेरा मुह़ासबा किया जाए। मेरी इ़त़ाअ़त को लाज़िम कर ले, मेरी नाफ़रमानी से रुक जा और मेरी अ़त़ा पर राज़ी हो कर शुक्र गुज़ारों में से हो जा।

(مجموعۃ رسائل الامام الغزالی،المواعظ فی الاحادیث القدسیۃ،ص ۵۷۷)

बाब नम्बर 3 : अम्बियाए किराम व बुज़ुर्गाने दीन से मन्क़ूल 16 दुआएं

﴾1﴿.....दुआ़ए मुस्त़फ़ा बा'द अज़ सुन्नते फ़ज्र :

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं : एक मरतबा शाम के वक़्त मेरे वालिदे गिरामी ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने मुझे बारगाहे रिसालत में भेजा, आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم मेरी ख़ाला ह़ज़रते सय्यिदतुना मैमूना رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के घर तशरीफ़ फ़रमा थे। (मैं ने देखा कि) आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم रात भर नमाज़ पढ़ते रहे फिर फ़ज्र की सुन्नतों के बा'द और फ़र्ज़ों से पहले बारगाहे ख़ुदावन्दी में यूं इल्तिजा की :

اَللّٰھُمَّ اِنِّیْۤ اَسْئَلُكَ رَحْمَةً مِّنْ عِنْدِكَ تَهْدِیْ بِهَا قَلْبِیْ وَتَجْمَعُ بِهَا شَمْلِیْ وَتَلُمُّ بِهَا شَعْثِیْ وَتَرُدُّ بِهَا الْفِتَنَ عَنِّیْ وَتُصْلِحُ بِهَا دِیْنِیْ وَتَحْفَظُ بِهَا غَائِبِیْ وَتَرْفَعُ بِهَا شَاهِدِیْ وَتُزَكِّیْ بِهَا عَمَلِیْ وَتُبَیِّضُ بِهَا وَجْهِیْ وَتُلْهِمُنِیْ بِهَا رُشْدِیْ وَتَعْصِمُنِیْ بِهَا مِنْ كُلِّ سُوْٓءٍ اَللّٰهُمَّ اَعْطِنِیْ اِیْمَانًا صَادِقًا وَّیَقِیْنًا لَیْسَ بَعْدَهٗ كُفْرٌ وَّرَحْمَةً اَنَالُ بِهَا شَرَفَ كَرَامَتِكَ فِی الدُّنْیَا وَالْاٰخِرَةِ اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ الْفَوْزَ عِنْدَ الْقَضَاءِ وَمَنَازِلَ الشُّهَدَاءِ وَعَیْشَ السُّعَدَاءِ وَالنَّصْرَ عَلَی الْاَعْدَاءِ وَمُرَافَقَةَ الْاَنْبِیَاءِ اَللّٰهُمَّ اِنِّیْۤ اُنْزِلُ بِكَ حَاجَتِیْ وَاِنْ ضَعُفَ رَاْیِیْ وَقَلَّتْ حِیْلَتِیْ وَقَصُرَ عَمَلِیْ وَافْتَقَرْتُ اِلٰی رَحْمَتِكَ فَاَسْئَلُكَ یَا كَافِیَ الْاُمُوْرِ وَیَا شَافِیَ الصُّدُوْرِ كَمَا تُجِیْرُ بَیْنَ الْبُحُوْرِ اَنْ تُجِیْرَنِیْ مِنْ عَذَابِ السَّعِیْرِ وَمِنْ دَعْوَةِ الثُّبُوْرِ وَمِنْ فِتْنَةِ الْقُبُوْرِ اَللّٰهُمَّ مَا قَصُرَ عَنْهُ رَاْیِیْ وَضَعُفَ عَنْهُ عَمَلِیْ وَلَمْ تَبْلُغْهُ نِیَّتِیْ وَاُمْنِیَّتِیْ مِنْ خَیْرٍ وَّعَدْتَّهٗ اَحَدًا مِّنْ عِبَادِكَ اَوْ خَیْرٍ اَنْتَ مُعْطِیْهِ اَحَدًا مِّنْ خَلْقِكَ فَاِنِّیْۤ اَرْغَبُ اِلَیْكَ فِیْهِ وَاَسْئَلُكَهٗ یَا رَبَّ الْعٰلَمِیْنَ اَللّٰهُمَّ اجْعَلْنَا هَادِیْنَ مُهْتَدِیْنَ غَیْرَ ضَالِّیْنَ وَلَا مُضِلِّیْنَ حَرْبًا لِّاَعْدَائِكَ وَسَلْمًا لِّاَوْلِیَائِكَ نُحِبُّ بِحُبِّكَ مَنْ اَطَاعَكَ مِنْ خَلْقِكَ وَنُعَادِیْ بِعَدَاوَتِكَ مَنْ خَالَفَكَ مِنْ خَلْقِكَ اَللّٰهُمَّ هٰذَا الدُّعَاءُ وَعَلَیْكَ الْاِجَابَةُ وَهٰذَا الْجُهْدُ وَعَلَیْكَ التُّكْلَانُ وَاِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّاۤ اِلَیْهِ رَاجِعُوْنَ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِیِّ الْعَظِیْمِ ذِی الْحَبْلِ الشَّدِیْدِ وَالْاَمْرِ الرَّشِیْدِ اَسْئَلُكَ الْاَمْنَ یَوْمَ الْوَعِیْدِ وَالْجَنَّةَ یَوْمَ الْخُلُوْدِ مَعَ الْمُقَرَّبِیْنَ الشُّهُوْدِ وَالرُّكَّعِ السُّجُوْدِ الْمُوْفِیْنَ بِالْعُهُوْدِ اِنَّكَ رَحِیْمٌ وَّدُوْدٌ وَّاَنْتَ تَفْعَلُ مَا تُرِیْدُ سُبْحٰنَ الَّذِیْ لَبِسَ الْعِزَّ وَقَالَ بِهٖ سُبْحٰنَ الَّذِیْ تَعَطَّفَ بِالْمَجْدِ وَتَكَرَّمَ بِهٖ سُبْحٰنَ الَّذِیْ لَا یَنْبَغِی التَّسْبِیْحُ اِلَّا لَهٗ سُبْحٰنَ ذِی الْفَضْلِ وَالنِّعَمِ سُبْحٰنَ ذِی الْعِزَّةِ وَالْكَرَمِ سُبْحٰنَ الَّذِیْ اَحْصٰی كُلَّ شَیْءٍ بِعِلْمِهٖ اَللّٰهُمَّ اجْعَلْ لِّیْ نُوْرًا فِیْ قَلْبِیْ وَنُوْرًا فِیْ قَبْرِیْ وَنُوْرًا فِیْ سَمْعِیْ وَنُوْرًا فِیْ بَصَرِیْ وَنُوْرًا فِیْ شَعْرِیْ وَنُوْرًا فِیْ لَحْمِیْ وَنُوْرًا فِیْ دَمِیْ وَنُوْرًا فِیْ عِظَامِیْ وَنُوْرًا مِّنْ بَیْنِ یَدَیَّ وَنُوْرًا مِّنْ خَلْفِیْ وَنُوْرًا عَنْ یَّمِیْنِیْ وَنُوْرًا عَنْ شِمَالِیْ وَنُوْرًا مِّنْ فَوْقِیْ وَنُوْرًا مِّنْ تَحْتِیْ اَللّٰهُمَّ زِدْنِیْ نُوْرًا وَّاَعْطِنِیْ نُوْرًا وَّاجْعَلْ لِّیْ نُوْرًا۔

या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मैं तुझ से ऐसी रह़मत का सुवाल करता हूं जिस की बरकत से मेरा दिल हिदायत पर क़ाइम कर दे, मेरे मुतफ़र्रिक़ उमूर जम्अ़ फ़रमा और मेरे मुआ़मलात दुरुस्त फ़रमा। मुझ से फ़ितने दूर फरमा। मेरे दीन की इस्लाह़ फ़रमा। मेरे बात़िन की ह़िफ़ाज़त, ज़ाहिर को बुलन्द और आ'माल को सुथरा फ़रमा। मेरा चेहरा रोशन फ़रमा। नेकी की हिदायत अ़त़ा फ़रमा, हर बुराई से बचा। ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मुझे ईमाने सादिक़ और यक़ीने कामिल अ़त़ा फ़रमा कि जिस के बा'द कुफ़्र न हो और रह़मत अ़त़ा फ़रमा जिस के ज़रीए मैं दोनों जहां में तेरे फ़ज़्लो करम से मुशर्रफ़ हो सकूं। या इलाही عَزَّوَجَلَّ मैं तुझ से मौत के वक़्त कामयाबी, दर्जाते शुहदा, सआ़दत मन्दों जैसी ज़िन्दगी, दुश्मनों पर ग़लबा और अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की रफ़ाक़त का सुवाल करता हूं। ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मैं अपनी ज़रूरत तेरे सामने पेश करता हूं अगर्चे मेरी राए कमज़ोर, अ़मल नाक़िस और कोशिश कोताह है, मैं तेरी रह़मत का मोह़ताज हूं। ऐ मुआ़मलात को किफ़ायत करने और दिलों को शिफ़ा देने वाले ! मैं तुझ से सुवाल करता हूं कि जिस त़रह़ तू समन्दरों को मिलने से बचाता है इसी त़रह़ मुझे भड़कती आग के अ़ज़ाब, हलाकत की आवाज़ और क़ब्र की आज़माइश से बचा ले। ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ जिस अम्रे ख़ैर में मेरी राए नाक़िस और अ़मल कम हो या वोह मेरी निय्यत व ख़्वाहिश में शामिल न हो और वोह भलाई तूने अपने बन्दों में से किसी को देने का वा'दा फ़रमाया हो या वोह भलाई तू अपने किसी बन्दे को अ़त़ा करने वाला हो तो उस ख़ैर की त़लब मुझे भी है, ऐ कुल आ़लम के परवर दगार ! मैं तुझ से इस भलाई का सुवाली हूं, या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें रहनुमाई करने वाला और हिदायत वाला बना, गुमराह और गुमराह कुन न बना, तेरे दुश्मनों से लड़ने और तेरे दोस्तों से सुल्ह़ करने वाला बना। तुझ से मह़ब्बत के सबब तेरे फ़रमां बरदार बन्दों से मह़ब्बत और तेरा हुक्म न मानने वाले तेरे दुश्मनों से दुश्मनी रखने वाला बना। या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ येह दुआ़ क़बूल फ़रमाना तेरे ज़िम्मए करम पर है। येह कोशिश है और भरोसा तुझी पर है। हम अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के माल हैं और हम को उसी की त़रफ़ फिरना। गुनाह से बचने की क़ुव्वत और नेकी करने की त़ाक़त बुलन्दी व अ़ज़मत वाले अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ही की त़रफ़ से है। ऐ दीने मतीन और सीधी राह के मालिक ! मैं तुझ से रोज़े जज़ा अम्न का और हमेशगी के दिन मुक़र्रबीन व शाहिदीन और रुकूअ़ व सुजूद करने वालों और वा'दा पूरा करने वालों के साथ जन्नत का सुवाल करता हूं बेशक तू रह़्म और मह़ब्बत करने वाला है और तू जो चाहता है करता है। पाक है वोह ज़ात जो साह़िबे इ़ज़्ज़त है और इस के सबब हर एक पर ग़ालिब है। पाक है वोह जो बुज़ुर्ग हुवा और अपने बन्दों पर इन्आ़म व इकराम फ़रमाया। पाक है वोह ज़ात जिस के सिवा किसी की पाकी बयान करना जाइज़ नहीं। पाक है वोह जो फ़ज़्ल व इन्आ़म फ़रमाता है। पाक है वोह जो

इ़ज़्ज़त व करम वाला है। पाक है जिस के इ़ल्म में हर शै का शुमार है। ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मेरे दिल में नूर भर दे, मेरी क़ब्र को पुरनूर कर दे, मेरी समाअ़त व बसारत नूरानी बना दे, मेरे बाल, गोश्त, ख़ून और हड्डियों में नूर डाल दे। मेरे आगे पीछे, दाएं बाएं, ऊपर नीचे नूर कर दे। ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मेरे नूर में इज़ाफ़ा फ़रमा, मुझे नूर अ़ता फ़रमा और मुझे नूर बना दे।(1)

﴾2﴿......जामेअ़ और कामिल दुआ़ :

सरदारे अम्बिया, मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने उम्मुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا से इरशाद फ़रमाया : ''जामेअ़ और कामिल दुआ़एं मांगा करो और यूं अ़र्ज़ गुज़ार हुवा करो :

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ مِنَ الْخَيْرِ كُلِّهٖ عَاجِلِهٖ وَاٰجِلِهٖ مَا عَلِمْتُ مِنْهُ وَمَا لَمْ اَعْلَمْ وَاَعُوْذُ بِكَ مِنَ الشَّرِّ كُلِّهٖ عَاجِلِهٖ وَاٰجِلِهٖ مَا عَلِمْتُ مِنْهُ وَمَا لَمْ اَعْلَمْ وَاَسْئَلُكَ الْجَنَّةَ وَمَا قَرَّبَ اِلَيْهَا مِنْ قَوْلٍ وَّعَمَلٍ وَّاَعُوْذُ بِكَ مِنَ النَّارِ وَمَا قَرَّبَ اِلَيْهَا مِنْ قَوْلٍ وَّعَمَلٍ وَّاَسْئَلُكَ مِنَ الْخَيْرِ مَا سَئَلَكَ عَبْدُكَ وَرَسُوْلُكَ مُحَمَّدٌ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَاَسْتَعِيْذُكَ مِمَّا اسْتَعَاذَكَ مِنْهُ عَبْدُكَ وَرَسُوْلُكَ مُحَمَّدٌ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَاَسْئَلُكَ مَا قَضَيْتَ لِیْ مِنْ اَمْرٍ اَنْ تَجْعَلَ عَاقِبَتَهٗ رُشْدًا بِرَحْمَتِكَ يَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ.

या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मैं तुझ से हर भलाई का त़ालिब हूं वोह भलाई चाहे जल्दी हो या देर से मुझे मा'लूम हो या न हो। मैं तुझ से हर बुराई से पनाह चाहता हूं चाहे वोह जल्द आने वाली हो या ताख़ीर से मुझे उस का इ़ल्म हो या न हो। मैं तुझ से जन्नत और जन्नत से क़रीब करने वाले आ'माल का सुवाल करता हूं और जहन्नम और इस से क़रीब करने वाले आ'माल से तेरी पनाह मांगता हूं। मैं तुझ से उस भलाई का सुवाल करता हूं जिस का सुवाल तेरे ख़ास बन्दे और रसूल ह़ज़रत मुह़म्मद صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने किया और उस चीज़ से तेरी पनाह चाहता हूं जिस से तेरे ख़ास बन्दे और रसूल ह़ज़रत मुह़म्मद صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने पनाह चाही। ऐ सब से बढ़ कर रह़्म फ़रमाने वाले ! तेरी रह़मत के सदक़े मैं तुझ से इल्तिजा करता हूं कि मेरे बारे में तू ने जो फ़ैसला फ़रमाया है उस का अन्जाम बख़ैर हो।(2)

﴾3﴿.....दुआ़ए दाफ़ेए़ रन्जो अलम व ग़म :

पैकरे हुस्नो जमाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ऐ फ़ात़िमा ! मेरी नसीह़त सुनने से तुम्हें कुछ मानेअ़ तो नहीं ? पस, यूं कहा करो :

يَاحَیُّ يَا قَيُّوْمُ بِرَحْمَتِكَ اَسْتَغِيْثُ لَا تَكِلْنِیْ اِلٰى نَفْسِیْ طَرْفَةَ عَيْنٍ وَّاَصْلِحْ لِیْ شَاْنِیْ كُلَّهٗ

1 ......صحیح ابن خزیمة، کتاب الصلاة، باب الدعاء بعد رکعتی الفجر، الحدیث: ۱۱۱۹، ج۲، ص۱۶۶ـ۱۶۷، بتغیر۔

2 ......سنن ابن ماجه، کتاب الدعاء، باب الجوامع من الدعاء، الحدیث: ۳۸۴۶، ج۴، ص ۲۷۱، مفهومًا۔

या'नी ऐ ज़िन्दा और दूसरों को क़ाइम रखने वाले ! मैं तेरी रह़मत के भरोसे मदद मांग रही हूं पलक झपकने की देर भी मुझे मेरे नफ़्स के ह़वाले न कर और मेरे सब काम बना दे ।"(1)

﴾4﴿......दुआ़ए सिद्दीक़े अक्बर :

हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को येह दुआ़ सिखाई :

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ بِمُحَمَّدٍ نَّبِيِّكَ وَاِبْرَاهِيْمَ خَلِيْلِكَ وَمُوْسٰى نَجِيِّكَ وَعِيْسٰى كَلِمَتِكَ وَرُوْحِكَ وَبِتَوْرَاةِ مُوْسٰى وَاِنْجِيْلِ عِيْسٰى وَزَبُوْرِ دَاوٗدَ وَفُرْقَانِ مُحَمَّدٍ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَعَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْنَ وَبِكُلِّ وَحْيٍ اَوْحَيْتَهٗ اَوْ قَضَاءٍ قَضَيْتَهٗ اَوْ سَائِلٍ اَعْطَيْتَهٗ اَوْ غَنِيٍّ اَفْقَرْتَهٗ اَوْ فَقِيْرٍ اَغْنَيْتَهٗ اَوْضَالٍّ هَدَيْتَهٗ وَاَسْئَلُكَ بِاسْمِكَ الَّذِیْ اَنْزَلْتَهٗ عَلٰى مُوْسٰى عَلَيْهِ السَّلَام وَاَسْئَلُكَ بِاسْمِكَ الَّذِیْ بَثَثْتَ بِهٖ اَرْزَاقَ الْعِبَادِ وَاَسْئَلُكَ بِاسْمِكَ الَّذِیْ وَضَعْتَهٗ عَلَى الْاَرْضِ فَاسْتَقَرَّتْ وَاَسْئَلُكَ بِاسْمِكَ الَّذِیْ وَضَعْتَهٗ عَلَى السَّمٰوَاتِ فَاسْتَقَلَّتْ وَاَسْئَلُكَ بِاسْمِكَ الَّذِیْ وَضَعْتَهٗ عَلَى الْجِبَالِ فَرَسَتْ وَاَسْئَلُكَ بِاسْمِكَ الَّذِی اسْتَقَلَّ بِهٖ عَرْشُكَ وَاَسْئَلُكَ بِاسْمِكَ الطُّهْرِ الطَّاهِرِ الْاَحَدِ الصَّمَدِ الْوِتْرِ الْمُنَزَّلِ فِیْ كِتَابِكَ مِنْ لَّدُنْكَ مِنَ النُّوْرِ الْمُبِيْنِ وَاَسْئَلُكَ بِاسْمِكَ الَّذِیْ وَضَعْتَهٗ عَلَى النَّهَارِ فَاسْتَنَارَ وَعَلَى اللَّيْلِ فَاَظْلَمَ وَبِعَظَمَتِكَ وَكِبْرِيَائِكَ وَبِنُوْرِ وَجْهِكَ الْكَرِيْمِ اَنْ تَرْزُقَنِی الْقُرْاٰنَ وَالْعِلْمَ بِهٖ وَتَخْلِطَهٗ بِلَحْمِیْ وَدَمِیْ وَسَمْعِیْ وَبَصَرِیْ وَتَسْتَعْمَلَ بِهٖ جَسَدِیْ بِحَوْلِكَ وَقُوَّتِكَ فَاِنَّهٗ لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِكَ يَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ.

या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तेरे नबी ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद मुस्त़फ़ा, ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ख़लीलुल्लाह, ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह और ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह (عَلَيْهِمُ السَّلَام) के वसीले मैं तुझ से दुआ़ मांगता हूं । सय्यिदुना मूसा عَلَيْهِ السَّلَام की तौरात, सय्यिदुना ईसा عَلَيْهِ السَّلَام की इन्जील, सय्यिदुना दावूद عَلَيْهِ السَّلَام की ज़बूर, ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के क़ुरआन, तेरी हर नाज़िल कर्दा वह़्य, तेरे फ़रमाए हुए हर फ़ैसले जिसे तू ने अ़त़ा किया उस साइल, जिस ग़नी को तू ने फ़क़ीर किया, जिस मोह़ताज को तू ने अमीर किया और जिस गुमराह को तू ने हिदायत दी (उन तमाम) के वसीले मैं तुझ से सुवाल करता हूं । तेरे उस नाम के वसीले से जिसे तू ने ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा عَلَيْهِ السَّلَام पर नाज़िल किया, तेरे उस नाम के वसीले से जिस के सदक़े तू मख़्लूक़ को रिज़्क़ तक़्सीम फ़रमाता है । तेरे उस नाम के वासित़े से जिसे तू ने ज़मीन पर रखा तो वोह क़रार पकड़ गई । तेरे उस नाम के तुफ़ैल जिसे तू ने आस्मानों में रखा तो वोह बुलन्द हो गए, तेरे उस नाम के वसीले जिसे तू ने पहाड़ों पर रखा तो वोह जम गए और तेरे उस नाम के सदक़े सुवाल करता हूं

1 ......شعب الایمان للبیهقی، باب فی الخوف من اللہ تعالی، الحدیث: ۷۶۰، ج ۱، ص ۴۷۶۔

जिस से अ़र्श क़ाइम है। तेरे उस नाम के वासिते़ दुआ़ करता हूं जो पाक है और पाक करने वाला है, एक है, बे नियाज़ है, यक्ता है, तेरी नाज़िल शुदा किताब में तेरी त़रफ़ से जो रोशन नूर है उस के सदके़ तुझ से सुवाल करता हूं, तुझे तेरे उस नाम का वासित़ा पेश करता हूं, जिसे तू ने दीन पर रखा तो वोह रोशन हो गया, रात पर रखा तो वोह तारीक हो गई। तेरी अ़ज़्मत व किब्रियाई और तेरे वजहे करीम के नूर के वसीले दुआ़ गो हूं कि मुझे कु़रआन याद करने और इसे समझने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमा और इसे मेरे गोश्त, ख़ून और समाअ़त व बिसारत में मिला दे और अपनी कु़व्वत व तौफ़ीक़ से मेरे बदन को इस के मुत़ाबिक़ इस्ति'माल फ़रमा। ऐ सब से ज़ियादा रह़्म फ़रमाने वाले ! गुनाहों से बचने की त़ाक़त और नेकी करने की तौफ़ीक़ तेरी ही त़रफ़ से है।[1]

﴾5﴿.....अल्लाह عَزَّوَجَلَّ किस से भलाई का इरादा फ़रमाता है ?

मरवी है कि ताजदारे काइनात, फ़ख्ऱे मौजूदात صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना बुरैदा असलमी رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہُ को मुख़ात़ब कर के इरशाद फ़रमाया : "ऐ बुरैदा ! मैं तुम्हें वोह कलिमात न सिखा दूं जिन्हें सिर्फ़ वोह सीख पाता है जिस के साथ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ भलाई का इरादा फ़रमाता है। इन्हें कभी भूलना मत।" अ़र्ज़ की : "ज़रूर ! या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم" फ़रमाया, पढ़ो :

اَللّٰھُمَّ اِنِّیْ ضَعِیْفٌ فَقَوِّ فِیْ رِضَاکَ ضُعْفِیْ وَخُذْ اِلَی الْخَیْرِ بِنَاصِیَتِیْ وَاجْعَلِ الْاِسْلَامَ مُنْتَھٰی رِضَایَ

اَللّٰھُمَّ اِنِّیْ ضَعِیْفٌ فَقَوِّنِیْ وَاِنِّیْ ذَلِیْلٌ فَاَعِزَّنِیْ وَاِنِّیْ فَقِیْرٌ فَاَغْنِنِیْ یَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِیْن

या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मैं कमज़ोर हूं अपनी रिज़ा ह़ासिल करने पर मुझे कु़व्वत दे। मेरी पेशानी भलाई की तरफ़ फेर दे, मेरी रिज़ा सिर्फ़ दीने इस्लाम बना दे, ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मैं ना तुवां हूं तवाना कर दे। ज़लील हूं इ़ज़्ज़त अ़त़ा कर। मोह़ताज हूं ग़नी कर दे। ऐ सब से ज़ियादा रह़्म फ़रमाने वाले !"[2]

﴾6﴿.....कोढ़, बरस, फ़ालिज से नजात देने और दाख़िले जन्नत करने वाले कलिमात :

ह़ज़रते सय्यिदुना क़बीसा बिन मुख़ारक़ رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہُ ने बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم मुझे ऐसे कलिमात बताइयें जिन्हें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मेरे लिये नाफ़ेअ़ बना दे। अब मैं बुढ्ढा हो गया हूं और कई ऐसे आ'माल जो पहले मैं किया करता था अब उन से आ़जिज़ आ चुका हूं।" रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : तुम्हारी दुन्या (की बेहतरी) के लिये येह दुआ़ है, बा'द नमाज़े फ़ज्र इसे तीन मरतबा पढ़ लिया

---

1 ......جامع الاصول، الفصل التاسع فی دعاء الحفظ، الحدیث:۲۳۰۲، ج۴، ص ۲۴۹، مختصراً۔

2 ......المعجم الاوسط، الحدیث:۶۵۸۵، ج۵، ص ۲۲، دون قولہ:یاارحم الراحمین۔

करो ''سُبۡحٰنَ اللّٰهِ وَبِحَمۡدِهٖ سُبۡحٰنَ اللّٰهِ الۡعَظِيۡمِ لَا حَوۡلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الۡعَلِيِّ الۡعَظِيۡمِ'' या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ पाक है और ता'रीफ़ें उसी के लिये हैं, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ पाक है अज़मत वाला। गुनाह से बचने की कुव्वत और नेकी करने की ताक़त अज़मत व बुलन्दी के मालिक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ही की तरफ़ से है।''[1]

पस अगर तुम ने येह दुआ पढ़ ली तो तुम ग़म, कोढ़, बरस और फ़ालिज से महफ़ूज़ हो जाओगे। और तुम्हारी आख़िरत के लिये (मुफ़ीद) दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ اهۡدِنِيۡ مِنۡ عِنۡدِكَ وَاَفِضۡ عَلَيَّ مِنۡ فَضۡلِكَ وَانۡشُرۡ عَلَيَّ مِنۡ رَّحۡمَتِكَ وَاَنۡزِلۡ عَلَيَّ مِنۡ بَرَكَاتِكَ.

या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मुझे अपनी जनाब से हिदायत अता फ़रमा, अपने फ़ज़्ल से बहरा मन्द फ़रमा, मुझ पर अपनी रहमत बरसा और अपनी बरकतें नाज़िल फ़रमा।''

इस के बा'द रसूले करीम, महबूबे रब्बे अज़ीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ''जो इन कलिमात को हमेशा पढ़ता रहेगा बरोज़े क़ियामत उस के लिये जन्नत के चार दरवाज़े खोले जाएंगे जिस से चाहे दाख़िल हो जाए।''

﴾7﴿......हर नुक़्सान से हिफ़ाज़त की दुआ :

हज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنۡهُ के महल्ले में एक दफ़्आ आग लग गई। किसी ने आप رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنۡهُ को ख़बर दी कि आप का घर जल गया है। फ़रमाया : ''अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ऐसा नहीं होने देगा।'' उन्हें तीन बार येह ख़बर दी गई मगर आप رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنۡهُ इस के जवाब में येही कहते ''अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ऐसा नहीं होने देगा।'' फिर एक शख़्स ने आ कर बताया : ''ऐ अबू दरदा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنۡهُ महल्ले में लगने वाली आग जब आप के घर के क़रीब पहुंची तो बुझ गई !'' येह सुन कर फ़रमाया : ''मुझे मा'लूम था।'' पूछा गया : ''आप की बात हैरान कुन है अस्ल मुआमला क्या है ?'' फ़रमाया : मैं ने रहमते आलमिय्यान, सरवरे इन्सो जान صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का येह फ़रमान सुना कि जो शख़्स दिन या रात में येह कलिमात पढ़ लेगा उसे कोई नुक़्सान न पहुंचेगा और मैं ने पढ़ लिये थे। वोह कलिमात येह हैं :

اَللّٰهُمَّ اَنۡتَ رَبِّيۡ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اَنۡتَ عَلَيۡكَ تَوَكَّلۡتُ وَاَنۡتَ رَبُّ الۡعَرۡشِ الۡعَظِيۡمِ لَا حَوۡلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الۡعَلِيِّ الۡعَظِيۡمِ مَا شَآءَ اللّٰهُ كَانَ وَمَا لَمۡ يَشَاۡ لَمۡ يَكُنۡ اَعۡلَمُ اَنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَيۡءٍ قَدِيۡرٌ وَّاَنَّ اللّٰهَ قَدۡ اَحَاطَ بِكُلِّ شَيۡءٍ عِلۡمًا وَّاَحۡصٰى كُلَّ شَيۡءٍ عَدَدًا اَللّٰهُمَّ اِنِّيۡ اَعُوۡذُ بِكَ مِنۡ شَرِّ نَفۡسِيۡ وَمِنۡ شَرِّ كُلِّ دَآبَّةٍ اَنۡتَ اٰخِذٌۢ بِنَاصِيَتِهَا اِنَّ رَبِّيۡ عَلٰى صِرَاطٍ مُّسۡتَقِيۡمٍ

---

1 ......المعجم الکبیر، من اسمه قبیصة، الحدیث: ۹۴۰، ج۱۸، ص۳۶۸، باختصار۔
کنزالعمال، کتاب الاذکار، الباب الثامن فی الدعاء، الحدیث: ۳۷۰۲، ج۲، ص۸۴،مفهومًا۔

या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तू मेरा परवर दगार है तेरे सिवा कोई इबादत के लाइक़ नहीं। मैं ने तुझी पर भरोसा किया और तू बड़े अ़र्श का मालिक है। गुनाह से बचने की कुव्वत और नेकी करने की ताक़त अ़ज़मत व बुलन्दी के मालिक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से ही है। वोह जो चाहता है होता है जो वोह नहीं चाहता नहीं होता। मुझे यक़ीन है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हर चाहे पर क़ादिर है। बेशक उस का इ़ल्म हर चीज़ को मुह़ीत़ और हर चीज़ उस के शुमार में है। ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मैं अपने नफ़्स और ज़मीन पर चलने वाली हर चीज़ के शर से तेरी पनाह चाहता हूं जिस की चोटी तेरे क़ब्ज़े में है। बेशक मेरा रब्ब عَزَّوَجَلَّ सीधे रास्ते पर मिलता है।[1]

﴾8﴿....सारे दिन के शुक्राने की दुआ़ :

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ख़लीलुल्लाह عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام सुब्ह़ के वक़्त येह दुआ़ पढ़ा करते :

اَللّٰهُمَّ هٰذَا خَلْقٌ جَدِيْدٌ فَافْتَحْهُ عَلَيَّ بِطَاعَتِكَ وَاخْتِمْهُ لِيْ بِمَغْفِرَتِكَ وَرِضْوَانِكَ وَارْزُقْنِيْ فِيْهِ حَسَنَةً تَقَبَّلْهَا مِنِّيْ وَزَكِّهَا وَضَعِّفْهَا لِيْ وَمَا عَمِلْتُ فِيْهِ مِنْ سَيِّئَةٍ فَاغْفِرْهَا لِيْ اِنَّكَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ وَّدُوْدٌ كَرِيْم.

या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ येह (सुब्ह़) एक नया आग़ाज़ है इस में मुझ पर अपनी इत़ाअ़त के रास्ते खोल दे और इस का इख़्तिताम अपनी रिज़ा व बख़्शिश के साथ फ़रमा। आज के दिन मुझे नेकी की तौफ़ीक़ दे और फिर इसे क़बूल और पाक फ़रमा और मेरे नामए आ'माल में (इस का अज्र) दुगना फ़रमा और मुझ से होने वाली बुराई मुआ़फ़ फ़रमा। बेशक तू बख़्शने वाला, रह़्म करने वाला, मह़ब्बत करने वाला और करम फ़रमाने वाला है।"

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام फ़रमाते हैं : जिस शख़्स ने ब वक़्ते सुब्ह़ येह दुआ़ पढ़ ली उस ने उस दिन का शुक्र अदा कर लिया।

﴾9﴿.....दुआ़ए ईसा :

ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام यूं दुआ़ फ़रमाया करते :

اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَصْبَحْتُ لَا اَسْتَطِيْعُ دَفْعَ مَا اَكْرَهُ وَلَا اَمْلِكُ نَفْعَ مَا اَرْجُوْ وَاَصْبَحَ الْاَمْرُ بِيَدِ غَيْرِيْ وَاَصْبَحْتُ مُرْتَهَنًا بِعَمَلِيْ فَلَا فَقِيْرَ اَفْقَرُ مِنِّيْ اَللّٰهُمَّ لَا تُشْمِتْ بِيْ عَدُوِّيَ وَلَا تُسِیْءْ بِيْ صَدِيْقِيْ وَلَا تَجْعَلْ مُصِيْبَتِيْ فِيْ دِيْنِيْ وَلَا تَجْعَلِ الدُّنْيَا اَكْبَرَ هَمِّيْ وَلَا تُسَلِّطْ عَلَيَّ مَنْ لَّا يَرْحَمُنِيْ يَا حَيُّ يَا قَيُّوْم

---

1 ......الدعاء للطبرانی، القول عندالصباح والمساء، الحدیث: ۳۴۳، ص۱۲۸ ـ ۱۲۹، دون قوله: واحصی کل شئی عددا ـ

या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मैं ने इस ह़ाल में सुब्ह़ की, कि मैं नापसन्दीदा चीज़ को दूर नहीं कर सकता और जिस नफ़्अ़ का त़लबगार हूं उस का मालिक नहीं। मुआ़मला किसी और (या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ) के दस्ते कुदरत में है और मेरी जान (गोया) गिरवी है मेरे आ'माल के बदले। मुझ से ज़ियादा कोई भी मोहताज न होगा। ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मेरे दुश्मनों को मुझ पर न हंसा और मुझ से मेरे दोस्त परेशान न हों। मुझे दीनी मसाइब से मह़फ़ूज़ फ़रमा और (ह़ुसूले) दुन्या मेरा मक़्सद न बना। ऐ ज़िन्दा और दूसरों को क़ाइम रखने वाले ! मुझ पर कोई ऐसा (ह़ाकिम) न बनाना जो मुझ पर रह़्म न करे।

﴾10﴿......डूबने और चोरी से ह़िफ़ाज़त की दुआ़ :

मन्क़ूल है कि अय्यामे ह़ज में जब ह़ज़रते सय्यिदुना ख़िज़्र और ह़ज़रते सय्यिदुना इल्यास عَلَيْهِمَا السَّلَام की मुलाक़ात होती है तो येह कलिमात पढ़े बिग़ैर जुदा नहीं होते :

بِسْمِ اللّٰهِ مَاشَآءَاللّٰهُ لَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ مَاشَآءَاللّٰهُ كُلُّ نِعْمَةٍ مِّنَ اللّٰهِ مَاشَآءَاللّٰهُ الْخَيْرُ كُلُّهٗ بِيَدِ اللّٰهِ مَاشَآءَاللّٰهُ لَا يَصْرِفُ السُّوْٓءَ اِلَّا اللّٰه

या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नाम से शुरूअ़ जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ चाहे उस के बिग़ैर कोई कुव्वत नहीं, जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ चाहे हर ने'मत उसी की त़रफ़ से है, जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ चाहे हर भलाई अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ही दस्ते कुदरत में है, जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ चाहे बुराइयों को टालने वाला, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई नहीं।

जो येह दुआ़ सुब्ह़ तीन मरतबा पढ़ लेगा जलने, डूबने और चोरी से मह़फ़ूज़ रहेगा। (اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ)

﴾11﴿.....दीनो दुन्या की भलाई के ह़ुसूल की दुआ़ :

ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन ह़स्सान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْمَنَّان फ़रमाते हैं कि मुझ से ह़ज़रते सय्यिदुना मा'रूफ़ करख़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی ने फ़रमाया : " क्या मैं तुम्हें 10 कलिमात न सिखाऊं जिन में से पांच दुन्यवी (बेहतरी) के लिये और पांच उख़रवी (बेहतरी) के लिये हैं ? जो इन कलिमात के ज़रीए अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में दुआ़ करेगा इन (कलिमात) को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के हां पाएगा।" ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन ह़स्सान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْمَنَّان ने फ़रमाया : "मुझे येह लिख दीजिये।" फ़रमाया : नहीं ! मैं तुम्हारे सामने इन कलिमात की तकरार करता हूं जिस त़रह़ बक्र बिन ख़ुनय्यिस رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने मेरे सामने की थी :

حَسْبِيَ اللّٰهُ لِدِيْنِي حَسْبِيَ اللّٰهُ لِدُنْيَايَ حَسْبِيَ اللّٰهُ الْكَرِيْمُ لِمَا اَهَمَّنِي حَسْبِيَ اللّٰهُ الْحَلِيْمُ الْقَوِيُّ لِمَنْ بَغٰى عَلَيَّ حَسْبِيَ اللّٰهُ الشَّدِيْدُ لِمَنْ كَادَنِي بِسُوْءٍ حَسْبِيَ اللّٰهُ الرَّحِيْمُ عِنْدَ الْمَوْتِ حَسْبِيَ اللّٰهُ الرَّؤُوْفُ عِنْدَ الْمَسْئَلَةِ فِي الْقَبْرِ حَسْبِيَ اللّٰهُ الْكَرِيْمُ عِنْدَ الْحِسَابِ حَسْبِيَ اللّٰهُ اللَّطِيْفُ عِنْدَ الْمِيْزَانِ حَسْبِيَ اللّٰهُ الْقَدِيْرُ عِنْدَ الصِّرَاطِ حَسْبِيَ اللّٰهُ لَا اِلٰهَ اِلَّا هُوَ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَهُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْم

या'नी मेरे दीनो दुन्या के लिये मुझे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ काफ़ी है। ग़मों से छुटकारे के लिये मुझे ख़ुदाए करीम काफ़ी है। जिस ने मुझ पर ज़ुल्म किया उस के लिये हिल्मो कुव्वत वाला रब्बे करीम काफ़ी है। जो मेरी त़रफ़ बुराई बढ़ाए उस के लिये सख़्त पकड़ फ़रमाने वाला रब्ब عَزَّوَجَلَّ काफ़ी है। मौत के वक़्त मुझे रह़्म फ़रमाने वाला अल्लाह عَزَّوَجَلَّ काफ़ी है। क़ब्र में (मुन्कर नकीर के) सुवालात के वक़्त मुझे मेहरबान ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ काफ़ी है। हिसाबो किताब के वक़्त करम फ़रमाने वाला अल्लाह عَزَّوَجَلَّ काफ़ी है। लुत़्फ़ो करम फ़रमाने वाला परवर दगार عَزَّوَجَلَّ मुझे मीज़ाने अ़मल पर काफ़ी है। क़ुदरत वाला रब्ब عَزَّوَجَلَّ मुझे पुल सिरात़ पर चलते वक़्त काफ़ी है। मुझे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ काफ़ी है, उस के सिवा कोई लाइक़े इबादत नहीं और वोह बड़े अ़र्श का मालिक है।

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : जो शख़्स येह दुआ :

فَاِنۡ تَوَلَّوۡا فَقُلۡ حَسۡبِیَ اللّٰہُ ۫ۖ لَاۤ اِلٰہَ اِلَّا ہُوَ ؕ عَلَیۡہِ تَوَکَّلۡتُ وَ ہُوَ رَبُّ الۡعَرۡشِ الۡعَظِیۡمِ ﴿۱۲۹﴾ (پ ۱۱، التوبۃ:۱۲۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *फिर अगर वोह मुंह फेरें तो तुम फ़रमा दो कि मुझे अल्लाह काफ़ी है, उस के सिवा किसी की बन्दगी नहीं, मैं ने उसी पर भरोसा किया और वोह बड़े अ़र्श का मालिक है।"*

रोज़ाना 7 मरतबा पढ़ ले अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे तमाम उख़रवी उमूर में किफ़ायत करेगा अगर्चे वोह सच्चा हो या झूटा।[1]

﴾12﴿.....जन्नत में दाख़िले की दुआ :

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़तबा ग़ुलाम عَلَیْہِ رَحْمَۃُ رَبِّ الْاَنَام की वफ़ात के बा'द किसी ने ख़्वाब में आप की ज़ियारत की तो आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने उस से फ़रमाया : मैं इन कलिमात की बरकत से दाख़िले जन्नत हुवा हूं :

اَللّٰھُمَّ یَا ھَادِیَ الْمُضِلِّیْنَ وَیَا رَاحِمَ الْمُذْنِبِیْنَ وَیَا مُقِیْلَ عَثَرَاتِ الْعَاثِرِیْنَ اِرْحَمْ عَبْدَكَ ذَا الْخَطَرِ الْعَظِیْمِ وَالْمُسْلِمِیْنَ كُلِّھِمْ اَجْمَعِیْنَ وَاجْعَلْنَا مَعَ الْاَخْیَارِ وَالْمَرْزُوْقِیْنَ الَّذِیْنَ اَنْعَمْتَ عَلَیْھِمْ مِّنَ النَّبِیِّیْنَ وَالصِّدِّیْقِیْنَ وَالشُّھَدَاءِ وَالصّٰلِحِیْنَ آمِیْنَ یَا رَبَّ الْعٰلَمِیْنَ

या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ऐ गुमराहों को हिदायत देने वाले ! ऐ गुनाहगारों पर रह़्म फ़रमाने वाले ! ऐ ख़त़ाकारों की ख़त़ाएं मुआफ़ फ़रमाने वाले ! बड़े ख़त़रात में घिरे अपने बन्दे पर और तमाम मुसलमानों पर रह़्म फ़रमा और हमें पसन्दीदा ख़ुश नसीब और जिन पर तू ने फ़ज़्ल किया, या'नी अम्बिया, सिद्दीक़ीन, शुहदा और नेक लोगों का साथ नसीब फ़रमा। ऐ तमाम जहानों के परवर दगार ! मेरी दुआ क़बूल फ़रमा।[2]

---

1 ......قوت القلوب، الفصل الخامس فی ذکر الادعیۃ المختارۃ......الخ، ج ۱، ص ۲۱، مفھومًا۔

2 ......قوت القلوب، الفصل الخامس فی ذکر الادعیۃ المختارۃ......الخ، ج ۱، ص ۲۲۔

﴾13﴿.....रन्जो अलम और मोह़ताजी से नजात की दुआ़ :

उम्मुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से मरवी है कि जब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने ह़ज़रते आदम عَلَیْہِ السَّلَام की तौबा क़बूल करना चाही तो आप عَلَیْہِ السَّلَام ने सात मरतबा बैतुल्लाह शरीफ़ का त़वाफ़ किया उस वक़्त का'बे की इमारत न थी बल्कि वहां एक सुर्ख़ टीला था, फिर आप ने खड़े हो कर दो रक्अ़त नफ़्ल अदा किये और यूं दुआ़ की :

اَللّٰھُمَّ اِنَّكَ تَعْلَمُ سِرِّیْ وَعَلَانِیَتِیْ فَاقْبَلْ مَعْذِرَتِیْ وَتَعْلَمُ حَاجَتِیْ فَاَعْطِنِیْ سُؤَالِیْ وَتَعْلَمُ مَا فِیْ نَفْسِیْ فَاغْفِرْلِیْ ذُنُوْبِیْ

اَللّٰھُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ اِیْمَانًا یُّبَاشِرُ قَلْبِیْ وَیَقِیْنًا صَادِقًا حَتّٰی اَعْلَمَ اَنَّهٗ لَنْ یُّصِیْبَنِیْ اِلَّا مَا كَتَبْتَهٗ عَلَیَّ وَالرِّضَا بِمَا قَسَمْتَهٗ لِیْ یَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَامِ

या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तू मेरे ज़ाहिर व बात़िन से वाक़िफ़ है मेरा उ़ज़्र क़बूल फ़रमा। मेरी ह़ाजत जानता है मेरा सुवाल पूरा फ़रमा। मेरे दिल में क्या है तू इस से भी बा ख़बर है मेरी लग़ज़िशें मुआ़फ़ फ़रमा। ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मैं तुझ से पुख़्ता ईमान और यक़ीने सादिक़ का सुवाल करता हूं ह़त्ता कि मुझे यक़ीन हो जाए कि मुझे कोई मुसीबत नहीं पहुंच सकती सिवा उस के जो तू ने (अपने इ़ल्मे अज़ली से) मेरे मुक़द्दर में लिख दी। ऐ अ़ज़मत व बुज़ुर्गी वाले ! तू ने मेरी जो क़िस्मत बनाई है इस पर राज़ी रहने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमा।"

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने ह़ज़रते सय्यिदुना आदम عَلَیْہِ السَّلَام पर वह़्य फ़रमाई की तुम्हारी अवलाद में से जो कोई येह कलिमात पढ़ कर मुझ से दुआ़ मांगे मैं उस की मग़फ़िरत कर दूंगा, उस के ग़म व अलम दूर कर दूंगा और उस के सामने से फ़क़्र दूर कर दूंगा, हर ताजिर से ज़ियादा उसे नफ़्अ़ अ़त़ा फ़रमाउंगा और दुन्या उस के पास ज़लील हो कर आएगी अगर्चे वोह इसे न चाहता होगा।

﴾14﴿......तस्बीह़ाते बारी तआ़ला :

अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْكَرِیْم से रिवायत है कि रसूले ख़ुदा, अह़मदे मुजतबा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ रोज़ाना अपनी बुज़ुर्गी यूं बयान फ़रमाता है :

اِنِّیْ اَنَا اللّٰهُ رَبُّ الْعٰلَمِیْنَ اِنِّیْ اَنَا اللّٰهُ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنَا الْحَیُّ الْقَیُّوْمُ اِنِّیْ اَنَا اللّٰهُ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنَا الْعَلِیُّ الْعَظِیْمُ اِنِّیْ اَنَا اللّٰهُ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنَا لَمْ اَلِدْ وَلَمْ اُوْلَدْ اِنِّیْ اَنَا اللّٰهُ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنَا الْعَفُوُّ الْغَفُوْرُ اِنِّیْ اَنَا اللّٰهُ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنَا مُبْدِئُ كُلِّ شَیْءٍ وَّاِلَیَّ یَعُوْدُ، اَلْعَزِیْزُ الْحَكِیْمُ الرَّحْمٰنُ الرَّحِیْمُ مَالِكُ یَوْمِ الدِّیْنِ خَالِقُ الْخَیْرِ وَالشَّرِّ خَالِقُ الْجَنَّةِ وَالنَّارِ، اَلْوَاحِدُ الْاَحَدُ الْفَرْدُ الصَّمَدُ الَّذِیْ لَمْ یَتَّخِذْ صَاحِبَةً وَّلَا وَلَدًا، اَلْفَرْدُ الْوِتْرُ عَالِمُ الْغَیْبِ وَالشَّهَادَةِ اَلْمَلِكُ الْقُدُّوْسُ السَّلَامُ الْمُؤْمِنُ الْمُهَیْمِنُ الْعَزِیْزُ الْجَبَّارُ الْمُتَكَبِّرُ الْخَالِقُ الْبَارِئُ الْمُصَوِّرُ الْكَبِیْرُ الْمُتَعَالِی الْمُقْتَدِرُ الْقَهَّارُ الْحَلِیْمُ الْكَرِیْمُ اَهْلُ الثَّنَاءِ وَالْمَجْدِ اَعْلَمُ السِّرَّ وَاَخْفٰی، اَلْقَادِرُ الرَّزَّاقُ فَوْقَ الْخَلْقِ وَالْخَلِیْقَةِ.

या'नी बेशक मैं **अल्लाह** हूं तमाम जहानों का पालनहार। बिला शुबा मैं **अल्लाह** हूं मेरे सिवा कोई इबादत के लाइक़ नहीं, आप ज़िन्दा और दूसरों को क़ाइम रखने वाला हूं। मैं ही रब्ब हूं इबादत के लाइक़ कोई नहीं सिवाए मुझ अ़ज़मत व बुलन्दी वाले के। बेशक मैं **अल्लाह** हूं मेरे इलावा कोई लाइक़े इबादत नहीं मेरी कोई अवलाद है न मैं किसी से पैदा हुवा। मैं **अल्लाह** हूं मुआ़फ़ करने वाला, बख़्शने वाला मेरे सिवा कोई मा'बूद नहीं। तह़क़ीक़ मैं ही रब्ब हूं हर चीज़ को आग़ाज़ देने वाला और हर चीज़ मेरी ही त़रफ़ लौटेगी, सिवाए मेरे कोई मा'बूद नहीं। इ़ज़्ज़त व ह़िक्मत वाला हूं। बड़ा मेहरबान रह़मत वाला हूं। रोज़े जज़ा का मालिक हूं। ख़ैरो शर और जन्नत व दोज़ख़ का ख़ालिक़ हूं। एक हूं, अकेला हूं, तन्हा हूं, बे नियाज़ हूं, वोह ज़ात हूं जिस की कोई बीवी है न कोई अवलाद, तन्हा और त़ाक़ हूं। ज़ाहिर व छुपा सब जानता हूं। बादशाह, निहायत पाक सलामती देने वाला, अमान बख़्शने वाला, ह़िफ़ाज़त करने वाला, इ़ज़्ज़त व अ़ज़मत और तकब्बुर वाला हूं। बनाने वाला, पैदा करने वाला, हर एक को सूरत देने वाला हूं। बड़ा बुलन्द, क़ुदरत वाला, ग़लबे वाला, बुर्दबार और करम फ़रमाने वाला हूं। षना और बुज़ुर्गी के लाइक़ हूं। मैं पोशीदा और मख़्फ़ी उमूर को ख़ूब जानता हूं। क़ुदरत वाला और रिज़्क़ अ़त़ा करने वाला हूं। मख़्लूक़ व तख़्लीक़ से बाला हूं।[1]

यहां हर कलिमे से पहले "اِنِّیۡ اَنَا اللّٰہُ لَا اِلٰہَ اِلَّا اَنَا" मज़्कूर है जैसा कि हम पहले बयान कर चुके हैं। जो शख़्स इन अस्माए ह़ुस्ना के साथ दुआ़ मांगना चाहे वोह "اِنِّیۡ اَنَا اللّٰہُ لَا اِلٰہَ اِلَّا اَنَا" के बजाए "اِنَّکَ اَنۡتَ اللّٰہُ لَا اِلٰہَ اِلَّا اَنۡتَ" पढ़े बक़िय्या कलिमात इसी त़रह़ पढ़े। जो आदमी येह दुआ़ मांगे वोह उन सजदा करने वालों और आ़जिज़ी करने वालों में लिखा जाता है जो रोज़े क़ियामत ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद मुस्त़फ़ा, ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ख़लीलुल्लाह, ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह, ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा रूह़ुल्लाह और दीगर अम्बियाए किराम عَلَيۡهِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के पड़ोस में होंगे, उसे ज़मीनो आस्मान में इबादत करने वालों के बराबर षवाब मिलेगा।

﴾15﴿......बारगाहे रब्बुल इ़ज़्ज़त में बुलन्द मर्तबा तस्बीह़ात :

रूम के अ़लाक़े में शहीद होने वाले एक शख़्स को ह़ज़रते सय्यिदुना यूनुस बिन उ़बैद رَحۡمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيۡه ने ख़्वाब में देख कर पूछा : तुम ने इस जहां में किस अ़मल को अफ़्ज़ल पाया? शहीद ने जवाब दिया : ह़ज़रते सय्यिदुना सुलैमान बिन मो'तमर तीमी عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡغَنِی जो तस्बीह़ात पढ़ा करते थे उन्हें मैं ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में बुलन्द दर्जा पाया वोह तस्बीह़ात येह हैं :

1 ......قوت القلوب، الفصل الخامس فی ذکر الادعیة المختارة......الخ، ج ۱، ص۲۷۔۲۸، باختصارٍ۔

سُبْحٰنَ اللّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَلَآاِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ وَلَاحَوْلَ وَلَاقُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْمِ عَدَدَ مَاخَلَقَ وَعَدَدَ مَاهُوَ خَالِقٌ وَّزِنَةَ مَاخَلَقَ وَزِنَةَ مَاهُوَ خَالِقٌ وَّمِلْءَ مَاخَلَقَ وَمِلْءَ مَاهُوَ خَالِقٌ وَّمِلْءَ سَمٰوَاتِهٖ وَمِلْءَ اَرْضِهٖ وَمِثْلَ ذٰلِكَ وَاَضْعَافَ ذٰلِكَ وَعَدَدَ خَلْقِهٖ وَزِنَةَ عَرْشِهٖ وَمُنْتَهٰى رَحْمَتِهٖ وَمِدَادَ كَلِمَاتِهٖ وَمَبْلَغَ رِضَاهُ حَتّٰى يَرْضٰى وَاِذَارَضِىَ وَعَدَدَ مَاذَكَرَهٗ بِهٖ خَلْقُهٗ فِيْ جَمِيْعِ مَامَضٰى وَعَدَدَ مَاهُمْ ذَاكِرُوْهُ فِيْمَا بَقِىَ فِيْ كُلِّ سَنَةٍ وَّشَهْرٍ وَّجُمُعَةٍ وَّيَوْمٍ وَّلَيْلَةٍ وَّسَاعَةٍ مِّنَ السَّاعَاتِ وَشَمٍّ وَّنَفَسٍ مِّنَ الْاَنْفَاسِ وَاَبَدٍ مِّنَ الْاٰبَادِ مِنْ اَبَدٍ اِلٰى اَبَدٍ اَبَدِ الدُّنْيَا وَاَبَدِ الْاٰخِرَةِ وَاَكْثَرَ مِنْ ذٰلِكَ لَا يَنْقَطِعُ اَوَّلُهٗ وَلَا يَنْفَدُ اٰخِرُهٗ.

या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ पाक है, सब ख़ूबियां अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं, उस के सिवा कोई इबादत के लाइक़ नहीं, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ सब से बड़ा है, बुराई से बचने की कुव्वत और नेकी करने की त़ाक़त उसी अ़ज़मत व बुलन्दी वाले अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से है। वोह जो कुछ पैदा फ़रमा चुका और जो पैदा फ़रमाएगा उस की ता'दाद, वज़्न और उन की जगहों की मिक़दार भर, ज़मीनो आस्मान की मिक़दार भर, इस के बराबर और इस से दुगना, उस की मख़्लूक़ की ता'दाद, अ़र्श के वज़्न, उस की इन्तिहाए रह़मत, उस के कलिमात की रोशनाई, उस की रिज़ा ह़ासिल करने तक और जब वोह राज़ी हो, तमाम मख़्लूक़ ने जो ज़िक्र किया और जो करेगी उस की ता'दाद बराबर, हर साल, महीने, जुमुए़ और शबो रोज़ के अवक़ात और हर साअ़त, हर सांस और दुन्या आबाद रहने और आख़िरत बाक़ी रहने तक और इस से भी ज़ियादा, न इस का आग़ाज़ टूटे न आख़िर ख़त्म हो (इतनी ता'दाद व मिक़दार में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की तस्बीह़ करता हूं)

﴾16﴿.....दुआ़ए इब्राहीम बिन अदहम :

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَكْرَم के ख़ादिम ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन बश्शार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَفَّار फ़रमाते हैं कि आप رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَيْه हर जुमुआ़ की सुब्ह़ो शाम येह दुआ़ पढ़ा करते थे :

مَرْحَبًا بِيَوْمِ الْمَزِيْدِ وَالصُّبْحِ الْجَدِيْدِ وَالْكَاتِبِ وَالشَّهِيْدِ يَوْمُنَا هٰذَا يَوْمُ عِيْدٍ اُكْتُبْ لَنَا فِيْهِ مَانَقُوْلُ بِسْمِ اللّٰهِ الْحَمِيْدِ الْمَجِيْدِ الرَّفِيْعِ الْوَدُوْدِ الْفَعَّالِ فِىْ خَلْقِهٖ مَايُرِيْدُ، اَصْبَحْتُ بِاللّٰهِ مُؤْمِنًا وَّبِلِقَائِهٖ مُصَدِّقًا وَّبِحُجَّتِهٖ مُعْتَرِفًا وَّمِنْ ذَنْبِىْ مُسْتَغْفِرًا وَّلِرُبُوْبِيَّةِ اللّٰهِ خَاضِعًا وَّلِسِوَى اللّٰهِ فِى الْاٰلِهَةِ جَاحِدًا وَّاِلَى اللّٰهِ فَقِيْرًا وَّعَلَى اللّٰهِ مُتَوَكِّلًا وَّاِلَى اللّٰهِ مُنِيْبًا اُشْهِدُ اللّٰهَ وَاُشْهِدُ مَلَائِكَتَهٗ وَاَنْبِيَائَهٗ وَرُسُلَهٗ وَحَمَلَةَ عَرْشِهٖ وَمَنْ خَلَقَهٗ وَمَنْ هُوَ خَالِقُهٗ بِاَنَّهٗ هُوَ اللّٰهُ الَّذِىْ لَا اِلٰهَ اِلَّا هُوَ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ

وَاَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ تَسْلِيْمًا وَاَنَّ الْجَنَّةَ حَقٌّ وَّاَنَّ النَّارَ حَقٌّ وَّالْحَوْضَ حَقٌّ وَّالشَّفَاعَةَ حَقٌّ وَّمُنْكَرًا وَّنَكِيْرًا حَقٌّ وَّوَعْدَكَ حَقٌّ وَّوَعِيْدَكَ حَقٌّ وَّلِقَاءَكَ حَقٌّ وَّالسَّاعَةُ اٰتِيَةٌ لَّا رَيْبَ فِيْهَا وَاَنَّ اللّٰهَ يَبْعَثُ مَنْ فِي الْقُبُوْرِ عَلٰى ذٰلِكَ اَحْيَا وَعَلَيْهِ اَمُوْتُ وَعَلَيْهِ اُبْعَثُ اِنْ شَآءَ اللّٰهُ اَللّٰهُمَّ اَنْتَ رَبِّيْ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ خَلَقْتَنِيْ وَاَنَا عَبْدُكَ وَاَنَا عَلٰى عَهْدِكَ وَوَعْدِكَ مَا اسْتَطَعْتُ، اَعُوْذُ بِكَ اَللّٰهُمَّ مِنْ شَرِّ مَا صَنَعْتُ وَمِنْ شَرِّ كُلِّ ذِيْ شَرٍّ، اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ ظَلَمْتُ نَفْسِيْ فَاغْفِرْلِيْ ذُنُوْبِيْ فَاِنَّهٗ لَا يَغْفِرُ الذُّنُوْبَ اِلَّا اَنْتَ وَاهْدِنِيْ لِاَحْسَنِ الْاَخْلَاقِ فَاِنَّهٗ لَا يَهْدِيْ لِاَحْسَنِهَا اِلَّا اَنْتَ وَاصْرِفْ عَنِّيْ سَيِّئَهَا فَاِنَّهٗ لَا يَصْرِفُ سَيِّئَهَا اِلَّا اَنْتَ لَبَّيْكَ وَسَعْدَيْكَ وَالْخَيْرُ كُلُّهٗ بِيَدَيْكَ اَنَا لَكَ وَاِلَيْكَ اَسْتَغْفِرُكَ وَاَتُوْبُ اِلَيْكَ اٰمَنْتُ اَللّٰهُمَّ بِمَا اَرْسَلْتَهٗ مِنْ رَّسُوْلٍ وَّاٰمَنْتُ اَللّٰهُمَّ بِمَا اَنْزَلْتَ مِنْ كِتَابٍ وَّصَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّدٍ النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَسَلَّمَ تَسْلِيْمًا كَثِيْرًا خَاتِمِ كَلَامِيْ وَمِفْتَاحِهٖ وَعَلٰى اَنْبِيَائِهٖ وَرُسُلِهٖ اَجْمَعِيْنَ اٰمِيْنَ يَارَبَّ الْعٰلَمِيْنَ اَللّٰهُمَّ اَوْرِدْنَا حَوْضَ مُحَمَّدٍ وَّاسْقِنَا بِكَاْسِهٖ مَشْرَبًا رَوِيًّا سَائِغًا هَنِيْئًا لَا نَظْمَاُ بَعْدَهٗ اَبَدًا وَّاحْشُرْنَا فِيْ زُمْرَتِهٖ غَيْرَ خَزَايَا وَلَا نَاكِثِيْنَ لِلْعَهْدِ وَلَا مُرْتَابِيْنَ وَلَا مَفْتُوْنِيْنَ وَلَا مَغْضُوْبَ عَلَيْنَا وَلَا ضَالِّيْنَ، اَللّٰهُمَّ اعْصِمْنِيْ مِنْ فِتَنِ الدُّنْيَا وَوَفِّقْنِيْ لِمَا تُحِبُّ وَتَرْضٰى وَاَصْلِحْ لِيْ شَاْنِيْ كُلَّهٗ وَثَبِّتْنِيْ بِالْقَوْلِ الثَّابِتِ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَفِي الْاٰخِرَةِ وَلَا تُضِلَّنِيْ وَاِنْ كُنْتُ ظَالِمًا سُبْحٰنَكَ يَاعَلِيُّ يَاعَظِيْمُ يَابَارِئُ يَارَحِيْمُ يَاعَزِيْزُ يَاجَبَّارُ سُبْحٰنَ مَنْ سَبَّحَتْ لَهُ السَّمٰوٰتُ بِاَكْنَافِهَا وَسُبْحٰنَ مَنْ سَبَّحَتْ لَهُ الْبِحَارُ بِاَمْوَاجِهَا وَسُبْحٰنَ مَنْ سَبَّحَتْ لَهُ الْجِبَالُ بِاَصْدَائِهَا وَسُبْحٰنَ مَنْ سَبَّحَتْ لَهُ الْحِيْتَانُ بِلُغَاتِهَا وَسُبْحٰنَ مَنْ سَبَّحَتْ لَهُ النُّجُوْمُ فِي السَّمَاءِ بِاَبْرَاجِهَا وَسُبْحٰنَ مَنْ سَبَّحَتْ لَهُ الْاَشْجَارُ بِاُصُوْلِهَا وَثِمَارِهَا وَسُبْحٰنَ مَنْ سَبَّحَتْ لَهُ السَّمٰوٰتُ السَّبْعُ وَالْاَرَضُوْنَ السَّبْعُ وَمَنْ فِيْهِنَّ وَمَنْ عَلَيْهِنَّ سُبْحٰنَ مَنْ سَبَّحَ لَهٗ كُلُّ شَيْءٍ مِّنْ مَّخْلُوْقَاتِهٖ تَبَارَكْتَ وَتَعَالَيْتَ سُبْحٰنَكَ سُبْحٰنَكَ يَاحَيُّ يَاقَيُّوْمُ يَاعَلِيْمُ يَاحَلِيْمُ سُبْحٰنَكَ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ وَحْدَكَ لَا شَرِيْكَ لَكَ تُحْيِيْ وَتُمِيْتُ وَاَنْتَ حَيٌّ لَّا تَمُوْتُ بِيَدِكَ الْخَيْرُ وَاَنْتَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ.

या'नी फ़ज़ीलत वाले दिन, नई सुब्ह और कातिबीन व शाहिदीने आ'माल को खुश आमदीद। येह (जुमुआ का) दिन हमारा ईद का दिन है। इस दिन हम जो बोलें वोह लिख दे। अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो ता'रीफ़ वाला, बुज़ुर्गी वाला, बुलन्द शान वाला, मह़ब्बत करने वाला और अपनी मख़्लूक़ के लिये जो चाहता है करने वाला है। मैं ने ह़ालते ईमान में सुब्ह़ की और मैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से मुलाक़ात का यक़ीन रखने वाला, उस की हुज्जत को मानने वाला, अपने गुनाहों की बख़्शिश चाहने वाला, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रबूबिय्यत के सामने आ़जिज़ी करने वाला, उस के

इ़लावा किसी को मा'बूद न मानने वाला, उसी का मोह़ताज, उसी पर भरोसा करने वाला और उसी की त़रफ़ लौटने वाला हूं। मैं अल्लाह और उस के अम्बिया व रुसूल, मलाइका व ह़ामिलीने अ़र्श और जो कुछ वोह पैदा फ़रमा चुका और जो पैदा फ़रमाएगा उन तमाम को गवाह बनाता हूं कि वोही अल्लाह है उस के सिवा कोई लाइक़े इ़बादत नहीं, वोह अकेला है उस का कोई शरीक नहीं और मुह़म्मद صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ के ख़ास बन्दे और उस के रसूल हैं, बेशक जन्नत व दोज़ख़, ह़ौज़े कौषर, शफ़ाअ़त और मुन्कर नकीर के सुवालात ह़क़ हैं, (ऐ अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ) तेरा वा'दा सच्चा है, तेरी वई़द दुरुस्त है, तुझ से मुलाक़ात सच है। बेशक क़ियामत क़ाइम हो कर रहेगी। अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ क़ब्र वालों को (रोज़े क़ियामत) उठाएगा। मैं इसी अ़क़ीदे पर ज़िन्दा हूं, इसी पर मरूंगा और इसी पर (रोज़े मह़शर) उठाया जाऊंगा اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ। ऐ अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ तू मेरा रब्ब है, तेरे सिवा कोई मा'बूद नहीं, तू ने मुझे पैदा किया, मैं तेरा बन्दा हूं और ब क़द्रे त़ाक़त तेरे अ़हदो पैमां पर क़ाइम हूं, मैं अपने किये के शर से और हर शरीर के शर से तेरी पनाह मांगता हूं। ऐ अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ बेशक मैं ने अपनी जान पर ज़ुल्म किया, पस तू मेरे गुनाह बख़्श दे कि तेरे सिवा गुनाहों को बख़्शने वाला कोई नहीं। मुझे अख़्लाक़े ह़सना अपनाने की तौफ़ीक़ मर्ह़मत फ़रमा कि येह तौफ़ीक़ भी तेरी ही बारगाह से मिलती है। मुझ से बद अख़्लाक़ी को दूर फ़रमा कि येह दूरी पैदा करना भी सिर्फ़ तेरे इख़्तियार में है। ऐ अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ मैं तेरी बारगाह में ह़ाज़िर हूं। हर भलाई तेरे क़ब्ज़ए क़ुदरत में है। मैं तेरा बन्दा हूं, तुझ ही से लौ लगी हुई है, तुझ से मग़फ़िरत का त़ालिब हूं और तेरी बारगाह में तौबा करता हूं। ऐ अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ तू ने जो रसूल मबऊ़ष फ़रमाए और जो कलाम नाज़िल फ़रमाया मैं इन सब पर ईमान लाया और जो कुछ मैं ने कहा इस पर भी मेरा ईमान है। अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ की रह़मत और ख़ूब सलाम हो उम्मी नबी ह़ज़रते मुह़म्मद صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم पर, उन की आल पर और तमाम अम्बिया व रुसुल पर। ऐ कुल जहां के परवर दगार عَزَّ وَجَلَّ मेरी अ़र्ज़ क़बूल फ़रमा। ऐ अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ हमें ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के ह़ौज़ पर आने की सआ़दत नसीब फ़रमा, आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के प्याले से ऐसा मशरूब पिला जो ख़ूब उ़म्दा और सैराब करने वाला है, इस के बा'द हम पर कभी प्यास त़ारी न हो। बिग़ैर किसी ज़िल्लत के हमारा ह़श्र गुरौहे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم में फ़रमाना। हम न वा'दा ख़िलाफ़ बनें, न शकी, न फ़ित्ने में पड़ें, न तेरे ग़ज़ब का शिकार हों और न ही गुमराह हों। ऐ अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ मुझे दुन्या के फ़ित्नों से मह़फ़ूज़ फ़रमा और अपनी मशिय्यत व रिज़ा पर राज़ी रहने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमा। मेरे सब अह़वाल दुरुस्त फ़रमा दे। दुन्या व आख़िरत में कलिमए शहादत पर इस्तिक़ामत अ़त़ा फ़रमा। अगर्चे मैं ज़ियादती करने वाला हूं लेकिन मुझे गुमराही से मह़फ़ूज़ रखना। तू पाक है, ऐ अ़ज़ीम, ऐ बारी, ऐ रह़ीम, ऐ अ़ज़ीज़, ऐ जब्बार। पाक

है वोह ज़ात जिस की तस्बीह़ तमाम आस्मानों के हर कोने में बयान की जाती है। पाक है वोह ज़ात जिस की तस्बीह़ समन्दर अपनी मौजों समेत बयान करते हैं। पाक है वोह ज़ात जिस की तस्बीह़ पहाड़ अपनी गूंज से करते हैं। पाक है वोह ज़ात जिस की तस्बीह़ मछलियां अपनी ज़बानों से करती हैं। पाक है वोह ज़ात जिस की तस्बीह़ आस्मानों में सितारे अपने बुरजों से बयान करते हैं। पाक है वोह ज़ात जिस की तस्बीह़ दरख़्त अपने फलों और जड़ों से बयान करते हैं। पाक है वोह ज़ात जिस की तस्बीह़ सातों ज़मीन और सातों आस्मान अपने अन्दर मौजूद अश्या से बयान करते हैं। पाक है वोह ज़ात जिस की तस्बीह़ हर मख़्लूक़ करती है। तू बरकत वाला है, बुलन्दो बाला है। ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तू पाक है। ऐ ज़िन्दा ! ऐ दूसरों को क़ाइम रखने वाले ! ऐ इल्म वाले ! ऐ बुर्दबार ! तू पाक है तू ही मा'बूद है। तू अकेला है, तेरा कोई शरीक नहीं, तू ही ज़िन्दा करता और मारता है। तू ख़ुद ज़िन्दा है तुझे कभी मौत न आएगी। ख़ैर सिर्फ़ तेरे ही दस्ते क़ुदरत में है। बेशक तू हर चाहे पर क़ादिर है।

......आठ (8) रूहानी इलाज.....

★.....هُوَاللّٰهُ الرَّحِيْم जो हर नमाज़ के बा'द 7 बार पढ़ लिया करेगा اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ शैत़ान के शर से बचा रहेगा और उस का ईमान पर ख़ातिमा होगा।

★.....يَامَلِكُ 90 बार, जो ग़रीब व नादार रोज़ाना पढ़ा करे اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ ग़ुर्बत से नजात पा कर मालदार हो।

★.....يَاقُدُّوْسُ का जो कोई दौराने सफ़र विर्द करता रहे, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ थकन से मह़फ़ूज़ रहेगा।

★.....يَاعَزِيْزُ 41 बार, ह़ाकिम या अफ़्सर वग़ैरा के पास जाने से क़ब्ल पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ वोह ह़ाकिम या अफ़्सर मेहरबान हो जाएगा।

★.....يَابَارِئُ 10 बार, जो कोई हर जुमुआ़ को पढ़ लिया करे اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ उस को बेटा अ़त़ा होगा।

★.....يَافَتَّاحُ 70 बार, जो रोज़ाना पढ़ा करेगा اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ मुस्तजाबुद्दा'वात होगा (या'नी हर दुआ़ क़बूल हुवा करेगी)।

★.....يَاحَكِيْمُ 80 बार, जो रोज़ाना पांचों नमाज़ों के बा'द पढ़ लिया करे اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ किसी का मोह़ताज न होगा।

★.....يَاجَلِيْلُ 10 बार, पढ़ कर जो अपने माल व अस्बाब और रक़म वग़ैरा पर दम कर दे اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ चोरी से मह़फ़ूज़ रहे।

(हर विर्द के अव्वल व आख़िर एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये)

(फ़ैज़ाने सुन्नत, जि. 1 स. 168 ता 170 मुलतक़त़न)

बाब नम्बर 4 : क़ुरआनो ह़दीष़ में वारिद नमाज़ के बा'द की दुआएं

ता़लिबे आख़िरत के लिये मुस्तह़ब है कि सुब्ह़ के वक़्त उस का पसन्दीदा वज़ीफ़ा दुआ़ होनी चाहिये, इस का मज़ीद बयान "**किताबुल अवराद**" में आएगा। तो अगर तुम आख़िरत की खेती और दुआ़ में ह़बीबे ख़ुदा صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की पैरवी के ख़्वाहिशमन्द हो तो नमाज़ के बा'द मांगी जाने वाली दुआ़ओं का आग़ाज़ इन कलिमात से करो।

नमाज़ के बा'द मांगी जाने वाली 27 दुआ़एं :

﴾1﴿ ..... سُبْحٰنَ رَبِّیَ الْعَلِیِّ الْاَعْلَی الْوَهَّابِ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِیْكَ لَهٗ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلٰی كُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ या'नी मेरा परवर दगार عَزَّوَجَلَّ पाक, बुलन्द, आ'ला और बहुत अ़ता़ करने वाला है, उस के सिवा कोई मुस्तह़िक़े इ़बादत नहीं, वोह तन्हा है, उस का कोई शरीक नहीं, बादशाहत उसी की, ता'रीफ़ें उसी के लिये हैं और वोह हर चीज़ पर क़ादिर है।(1)

﴾2﴿ ..... येह कलिमात तीन मरतबा पढ़ो : رَضِیْتُ بِاللهِ رَبًّا وَّبِالْاِسْلَامِ دِیْنًا وَّبِمُحَمَّدٍ صَلَّی اللهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ نَبِیًّا या'नी मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के रब्ब होने, इस्लाम के दीन होने और मुह़म्मद صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के नबी होने पर राज़ी हूं।(2)

﴾3﴿ ..... اَللّٰهُمَّ فَاطِرَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ عَالِمَ الْغَیْبِ وَالشَّهَادَةِ رَبَّ كُلِّ شَیْءٍ وَّمَلِیْكَهٗ اَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ اَعُوْذُ بِكَ مِنْ شَرِّ نَفْسِیْ وَشَرِّ الشَّیْطَانِ وَشِرْكِهٖ या'नी ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ज़मीनो आस्मान को पैदा करने वाले ! ज़ाहिरो बाति़न का इ़ल्म रखने वाले ! हर शै के परवर दगार व मालिक ! मैं गवाही देता हूं कि तेरे सिवा कोई लाइक़े इ़बादत नहीं। मैं नफ़्सो शैता़न के शर और उस के शिर्क से तेरी पनाह मांगता हूं।(3)

﴾4﴿ ..... اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ الْعَفْوَ وَالْعَافِیَةَ فِیْ دِیْنِیْ وَدُنْیَایَ وَاَهْلِیْ وَمَالِیْ اَللّٰهُمَّ اسْتُرْ عَوْرَاتِیْ وَاٰمِنْ رَوْعَاتِیْ وَاَقِلْ عَثْرَاتِیْ وَاحْفَظْنِیْ مِنْ بَیْنِ یَدَیَّ وَمِنْ خَلْفِیْ وَعَنْ یَمِیْنِیْ وَعَنْ شِمَالِیْ وَمِنْ فَوْقِیْ وَاَعُوْذُ بِكَ اَنْ اُغْتَالَ مِنْ تَحْتِیْ

---

1 ......صحیح مسلم، کتاب المساجد ومواضع الصلاۃ، باب استحباب الذکر بعد الصلاۃ، الحدیث: ۵۹۳، ص ۲۹۸، باختصارٍ۔
قوت القلوب، الفصل الخامس فی ذکر الادعیۃ المختارۃ......الخ، ج ۱، ص ۱۹۔

2 ......المسند للامام احمد بن حنبل، مسند الکوفیین، الحدیث: ۱۸۹۹۰، ج۷، ص ۱۲۔

3 ......سنن الترمذی، کتاب الدعوات، الحدیث: ۳۴۰۳، ج۵، ص ۲۵۲۔

या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मैं तुझ से दीनो दुन्या, अहलो इयाल और अपने माल में आ़फ़िय्यत का सुवाल करता हूं, ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मेरे उ़यूब की पर्दा पोशी फ़रमा, मुझे ख़ौफ़ से अम्न अ़ता फ़रमा, मेरी ख़त़ाएं मुआ़फ़ फ़रमा, दाएं बाएं, आगे पीछे और ऊपर से मेरी हि़फ़ाज़त फ़रमा और मैं तेरी पनाह मांगता हूं इस से कि मुझे नीचे से हलाक किया जाए।(1)

﴾5﴿..... اَللّٰھُمَّ لَا تُؤْمِنِّیْ مَکْرَکَ وَلَا تُوَلِّنِیْ غَیْرَکَ وَلَا تَنْزِعْ عَنِّیْ سِتْرَکَ وَلَا تُنْسِنِیْ ذِکْرَکَ وَلَا تَجْعَلْنِیْ مِنَ الْغَافِلِیْن

या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मुझे अपनी ख़ुफ़्या तदबीर से ग़ाफ़िल न कर, मुझे ग़ैरों के ह़वाले न कर, मुझ से अपना पर्दा न छीन, मुझे अपना ज़िक्र न भूला और ग़ाफ़िल लोगों में शामिल न फ़रमा।(2)

﴾6﴿..... येह दुआ़ तीन मरतबा पढ़िये :

اَللّٰھُمَّ اَنْتَ رَبِّیْ لَا اِلٰہَ اِلَّا اَنْتَ خَلَقْتَنِیْ وَاَنَا عَبْدُکَ وَاَنَا عَلٰی عَھْدِکَ وَوَعْدِکَ مَا اسْتَطَعْتُ
اَعُوْذُ بِکَ مِنْ شَرِّ مَا صَنَعْتُ اَبُوْءُ لَکَ بِنِعْمَتِکَ عَلَیَّ وَاَبُوْءُ بِذَنْبِی فَاغْفِرْلِیْ ذُنُوْبِی فَاِنَّہٗ لَا یَغْفِرُ الذُّنُوْبَ اِلَّا اَنْت

या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तू मेरा रब्ब है तेरे सिवा कोई मा'बूद नहीं, तूने मुझे पैदा किया, मैं तेरा बन्दा हूं और बक़दरे त़ाक़त तेरे अ़हदो पैमान पर क़ाइम हूं, मैं अपने किये के शर से तेरी पनाह मांगता हूं, तेरी दी हुई ने'मत का इक़रार करता हूं और अपने गुनाहों का ए'तिराफ़ करता हूं पस मेरे गुनाह बख़्श दे कि तेरे सिवा गुनाहों को बख़्शने वाला कोई नहीं।(3)

﴾7﴿.....येह दुआ़ भी तीन मरतबा पढ़िये : اَللّٰھُمَّ عَافِنِیْ فِیْ بَدَنِیْ وَعَافِنِیْ فِیْ سَمْعِیْ وَعَافِنِیْ فِیْ بَصَرِیْ لَا اِلٰہَ اِلَّا اَنْت

या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मेरे जिस्म और मेरी समाअ़त व बसारत को आ़फ़िय्यत अ़ता फ़रमा, तेरे सिवा कोई मा'बूद नहीं।(4)

﴾8﴿..... اَللّٰھُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُکَ الرِّضَا بَعْدَ الْقَضَاءِ وَبَرْدَ الْعَیْشِ بَعْدَ الْمَوْتِ وَلَذَّۃَ النَّظْرِ اِلٰی وَجْھِکَ الْکَرِیْمِ وَشَوْقًا اِلٰی لِقَائِکَ مِنْ غَیْرِ ضَرَّاءَ مُضِرَّۃٍ وَّلَافِتْنَۃٍ مُّضِلَّۃٍ وَّاَعُوْذُبِکَ اَنْ اَظْلِمَ اَوْاُظْلَمَ اَوْاَعْتَدِیَ اَوْیُعْتَدٰی عَلَیَّ اَوْاَکْسِبَ خَطِیْئَۃً اَوْذَنْبًا لَّاتَغْفِرُہٗ.

या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मैं तुझ से तक़्दीर पर राज़ी रहने और मौत के बा'द राह़त भरी ज़िन्दगी पाने और तेरे करम वाले चेहरे के दीदार की लज़्ज़त का सुवाल करता हूं और बिग़ैर किसी तक्लीफ़ और गुमराह कुन फ़ित्ने के तुझ से शौक़े मुलाक़ात का सुवाल करता हूं। ज़ालिम व मज़लूम बनने, ज़ियादती

---

1 ......سنن ابن ماجه، كتاب الدعاء، باب مايدعوبه الرجل......الخ، الحديث: ٣٨٧١، ج٤، ص ٢٨٥، بتغيرٍ۔

2 ......المقاصد الحسنة، حرف الهمزة، الحديث: ١٧٣، ص ١٠٠، دون "ولاتولی غیرک"۔
قوت القلوب، الفصل الثالث عشر فيه كتاب جامع......الخ، ج ١، ص ٢٤۔

3 ......صحيح البخاری، كتاب الدعوات، باب افضل الاستغفار، الحديث: ٦٣٠٦، ج٤، ص ١٩٠، دون "ثلاث مرات"۔

4 ......سنن ابی داود، كتاب الادب، باب مايقول الرجل اذا......الخ، الحديث: ٥٠٩٠، ج٤، ص ٤١٩۔

करने और ज़ियादती किये जाने से मैं तेरी पनाह मांगता हूं और उस गुनाह या ख़ता से तेरी पनाह चाहता हूं जिस को तू न बख़्शे ।(1)

﴾9﴿.....اَللّٰھُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ الثَّبَاتَ فِی الْاَمْرِ وَالْعَزِیْمَۃَ فِی الرُّشْدِ وَاَسْئَلُكَ شُكْرَ نِعْمَتِكَ وَحُسْنَ عِبَادَتِكَ وَاَسْئَلُكَ قَلْبًا خَاشِعًا سَلِیْمًا وَّخُلُقًا مُّسْتَقِیْمًا وَّلِسَانًا صَادِقًا وَّعَمَلًا مُّتَقَبَّلًا وَّاَسْئَلُكَ مِنْ خَیْرِ مَا تَعْلَمُ وَاَعُوْذُبِكَ مِنْ شَرِّ مَا تَعْلَمُ وَاَسْتَغْفِرُكَ لِمَا تَعْلَمُ فَاِنَّكَ تَعْلَمُ وَلَااَعْلَمُ وَاَنْتَ عَلَّامُ الْغُیُوْبِ

या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मैं तुझ से उमूरे दीनिया पर षाबित क़दमी और हिदायत पर पुख़्ता मिज़ाजी का सुवाल करता हूं। तुझ से तेरी ने'मत का शुक्र अदा करने और अह़सन त़रीक़े से तेरी इबादत बजा लाने का सुवाल करता हूं। आ़जिज़ी व सलामती वाला दिल, अच्छे अख़्लाक़, सच्ची ज़बान और मक़बूल अ़मल का सुवाली हूं। मैं तुझ से भलाई का सुवाल करता और बुराई से तेरी पनाह मांगता हूं जिन्हें तू जानता है और ख़त़ाओं से मुआ़फ़ी का त़लबगार हूं जिन्हें तू जानता है, बेशक तू जानता है मैं नहीं जानता और तू सब ग़ैबों को ख़ूब जानता है।(2)

﴾10﴿.....اَللّٰھُمَّ اغْفِرْلِیْ مَاقَدَّمْتُ وَمَااَخَّرْتُ وَمَااَسْرَرْتُ وَمَااَعْلَنْتُ وَمَااَنْتَ اَعْلَمُ بِہٖ مِنِّیْ فَاِنَّكَ اَنْتَ الْمُقَدِّمُ وَاَنْتَ الْمُؤَخِّرُ وَاَنْتَ عَلٰی كُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ وَّعَلٰی كُلِّ غَیْبٍ شَھِیْدٌ

या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मेरे अगले पिछले, अ़लानिय्या पोशीदा गुनाहों को मुआ़फ़ फ़रमा और उन्हें भी बख़्श दे जिन्हें तू मुझ से ज़ियादा जानता है कि आगे लाने वाला और पीछे हटाने वाला तू ही है और तू हर चाहे पर क़ादिर और हर पोशीदा अम्र को जानता है।(3)

﴾11﴿.....اَللّٰھُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ اِیْمَانًا لَایَرْتَدُّ وَنَعِیْمًا لَّایَنْفَدُ وَقُرَّۃَ عَیْنِ الْاَبَدِ وَمُرَافَقَۃَ نَبِیِّكَ مُحَمَّدٍ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ فِیْ اَعْلٰی جَنَّۃِ الْخُلْدِ

या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मैं तुझ से उस ईमान का त़ालिब हूं जिस के बा'द कुफ़्र न हो और उस ने'मत का जो ख़त्म न हो और मैं तुझ से आंखों की दाइमी ठन्डक और हमेशा रहने वाली जन्नत के आ'ला दर्जे में तेरे रसूल صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की रफ़ाक़त का सुवाल करता हूं।(4)

---

1 ......المسندللامام احمد بن حنبل، مسند الانصار، حدیث زید بن ثابت، الحدیث:۲۱۶۲۴، ج۸، ص۱۵۶۔۱۵۷۔

2 ......سنن الترمذی، کتاب الدعوات، الحدیث:۳۴۱۸، ج۵، ص۲۵۹، بحذفِ قلیلٍ۔

3 ......صحیح مسلم، کتاب الذکر والدعاء......الخ، باب التعوذ من شرما......الخ، الحدیث:۲۷۱۹، ص۱۴۵۷، دون قولہ:وعلی کل غیب شہید۔

4 ......المسندللامام احمد بن حنبل، مسند عبداللّٰہ بن مسعود، الحدیث:۳۶۶۲، ج۲، ص۳۱، مفہومًا۔
المسندللامام احمد بن حنبل، مسند عبداللّٰہ بن مسعود، الحدیث:۳۷۹۷، ج۲، ص۶۰، دون قولہ:وقرۃ عین الابد۔

﴾12﴿ .... اَللّٰھُمَّ اِنِّیۡ اَسْئَلُکَ الطَّیِّبَاتِ وَفِعۡلَ الۡخَیۡرَاتِ وَتَرۡکَ الۡمُنۡکَرَاتِ وَحُبَّ الۡمَسَاکِیۡنَ اَسْئَلُکَ حُبَّکَ وَحُبَّ مَنۡ اَحَبَّکَ وَحُبَّ کُلِّ عَمَلٍ یُقَرِّبُ اِلٰی حُبِّکَ وَاَنۡ تَتُوۡبَ عَلَیَّ وَتَغۡفِرَ لِیۡ وَتَرۡحَمَنِیۡ وَاِذَا اَرَدۡتَّ بِقَوۡمٍ فِتۡنَةً فَاقۡبِضۡنِیۡ اِلَیۡکَ غَیۡرَ مَفۡتُوۡن.

या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मैं तुझ से पाकी, नेक अफ़्आल, तर्के गुनाह और महब्बते मसाकीन का सुवाली हूं। मैं तुझ से तेरी, तुझ से महब्बत करने वालों की और तेरी महब्बत की तरफ़ रागिब करने वाले आ'माल की महब्बत का सुवाल करता हूं। मेरी इल्तिजा है कि तू मेरी तौबा क़बूल फ़रमा, मुझे बख़्श दे, मुझ पर रहम फ़रमा और जब तू लोगों को फ़ितने में मुब्तला करना चाहे तो मुझे किसी फ़ित्ने में डाले बिग़ैर वहां से उठा ले।(1)

﴾13﴿ ..... اَللّٰھُمَّ بِعِلۡمِکَ الۡغَیۡبِ وَقُدۡرَتِکَ عَلَی الۡخَلۡقِ اَحۡیِنِیۡ مَا کَانَتِ الۡحَیَاةُ خَیۡرًا لِّیۡ وَتَوَفَّنِیۡ مَا کَانَتِ الۡوَفَاةُ خَیۡرًا لِّیۡ، اَسۡئَلُکَ خَشۡیَتَکَ فِی الۡغَیۡبِ وَالشَّھَادَةِ وَکَلِمَةَ الۡعَدۡلِ فِی الرِّضَا وَالۡغَضَبِ وَالۡقَصۡدَ فِی الۡغِنٰی وَالۡفَقۡرِ وَلَذَّةَ النَّظَرِ اِلٰی وَجۡھِکَ وَ الشَّوۡقَ اِلٰی لِقَائِکَ وَاَعُوۡذُ بِکَ مِنۡ ضَرَّاءَ مُضِرَّةٍ وَّفِتۡنَةٍ مُضِلَّةٍ وَّاللّٰھُمَّ زَیِّنَّا بِزِیۡنَةِ الۡاِیۡمَانِ وَاجۡعَلۡنَا ھُدَاةً مُّھۡتَدِیۡن

या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अपने इल्मे ग़ैब और मख़्लूक़ पर क़ुदरत के सदक़े मुझे ज़िन्दा रख जब तक मेरे लिये ज़िन्दगी बेहतर है और जब मेरे लिये मौत बेहतर हो तो मौत अ़ता फ़रमा, मैं तुझ से जलवत व ख़ल्वत में डरने, ख़ुशी व ग़मी में दामने अ़द्ल थामे रहने, अमीरी व ग़रीबी में मियाना रवी इख़्तियार करने, तेरी ज़ियारत का लुत्फ़ पाने और तेरी मुलाक़ात का शौक़ रखने का सुवाल करता हूं। मैं तेरी पनाह मांगता हूं तक्लीफ़ और गुमराह कुन फ़ित्ने से। ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें ज़ीनते ईमान से मुज़य्यन कर दे और हमें हिदायत की तरफ़ रहनुमाई करने वाला बना।(2)

﴾14﴿..... اَللّٰھُمَّ اقۡسِمۡ لَنَا مِنۡ خَشۡیَتِکَ مَا تَحُوۡلُ بِہٖ بَیۡنَنَا وَبَیۡنَ مَعَاصِیۡکَ وَمِنۡ طَاعَتِکَ مَا تُبَلِّغُنَا بِہٖ جَنَّتَکَ وَمِنَ الۡیَقِیۡنِ مَا تُھَوِّنُ بِہٖ عَلَیۡنَا مَصَائِبَ الدُّنۡیَا وَالۡاٰخِرَة

या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें अपना ख़ौफ़ अ़ता फ़रमा जो हमारे और गुनाहों के दरमियान रुकावट बन जाए, अपनी इताअ़त नसीब फ़रमा जो हमें तेरी जन्नत में पहुंचा दे और हमें यक़ीन की दौलत अ़ता कर कि फिर हमें दुन्या व आख़िरत के मसाइब की परवाह न रहे।(3)

﴾15﴿..... اَللّٰھُمَّ امۡلَا وُجُوۡھَنَا مِنۡکَ حَیَاءً وَّقُلُوۡبَنَا مِنۡکَ فَرَقًا وَّاَسۡکِنۡ فِیۡ نُفُوۡسِنَا مِنۡ عَظَمَتِکَ مَا تُذَلِّلُ بِہٖ جَوَارِحَنَا لِخِدۡمَتِکَ وَاجۡعَلۡکَ اَللّٰھُمَّ اَحَبَّ اِلَیۡنَا مِمَّنۡ سِوَاکَ وَاجۡعَلۡنَا اَخۡشٰی لَکَ مِمَّنۡ سِوَاکَ

(1) ......سنن الترمذی، کتاب التفسیر، باب ومن سورة ص، الحدیث:۳۲۴۴، ج۵، ص۱۵۹، باختصارٍ۔
کتاب الدعاللطبرانی، ماکان النبی صلی اللہ علیہ وسلم یدعوبہ فی......الخ، الحدیث:۱۴۱۴، ص۴۱۸، لم یذکر فیہ"الطیبات"۔

(2) ......سنن النسائی، کتاب السھو، نوع آخر، الحدیث:۱۳۰۲، ص۲۲۵۔

(3) ......سنن الترمذی، کتاب الدعوات، الحدیث:۳۵۱۳، ج۵، ص۳۰۱۔

या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमारे चेहरों को ह़या से और हमारे दिलों को अपने ख़ौफ़ से भर दे। हमारे अन्दर अपनी अ़ज़मत व जलालत इस क़दर डाल दे कि हमारे आ'ज़ा तेरे फ़रमां बरदार बन जाएं। ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें ग़ैरों के बजाए सब से ज़ियादा अपनी मह़ब्बत व ख़ौफ़ अ़त़ा फ़रमा।

﴾16﴿.....اَللّٰھُمَّ اجْعَلْ اَوَّلَ یَوْمِنَا ھٰذَا صَلَاحًا وَّاَوْسَطَهٗ فَلَاحًا وَّاٰخِرَهٗ نَجَاحًا، اَللّٰھُمَّ اجْعَلْ اَوَّلَهٗ رَحْمَةً وَّاَوْسَطَهٗ نِعْمَةً وَّاٰخِرَهٗ تَكْرِمَةً وَّمَغْفِرَةً

या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमारे आज के दिन का आग़ाज़ इस्लाह़, वस्त़ कामरानी और इख़्तिताम कामयाबी के साथ फ़रमा। ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आज के दिन की इब्तिदा रह़मत, दरमियान ने'मत और आख़िर इ़ज़्ज़त व मग़फ़िरत के साथ हो।[1]

﴾17﴿..... اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ تَوَاضَعَ كُلُّ شَیْءٍ لِّعَظَمَتِهٖ وَذَلَّ كُلُّ شَیْءٍ لِّعِزَّتِهٖ وَخَضَعَ كُلُّ شَیْءٍ لِّمُلْكِهٖ وَاسْتَسْلَمَ كُلُّ شَیْءٍ لِّقُدْرَتِهٖ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ سَكَنَ كُلُّ شَیْءٍ لِّهَیْبَتِهٖ وَاَظْهَرَ كُلَّ شَیْءٍ بِحِكْمَتِهٖ وَتَصَاغَرَ كُلُّ شَیْءٍ لِّكِبْرِیَائِهٖ

या'नी सब ख़ूबियां अल्लाह عَزَّوَجَلَّ को जिस की अ़ज़मत के सामने हर चीज़ सरनिगूं है, जिस की इ़ज़्ज़त के आगे हर शै सर झुकाए हुए है, जिस की सल्त़नत में हर चीज़ उस के ताबेअ़ है और जिस की क़ुदरत के सामने हर एक सरे तस्लीम ख़म किये हुए है। सब ख़ूबियां उस ख़ुदा को जिस के जलाल के बाइ़ष हर शै साकिन है, जिस ने हर शै को अपनी ह़िक्मत से ज़ाहिर फ़रमाया और जिस की बड़ाई के सामने हर शै छोटी है।[2]

﴾18﴿.....اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّعَلٰی اٰلِ مُحَمَّدٍ وَّاَزْوَاجِ مُحَمَّدٍ وَّذُرِّیَّتِهٖ وَبَارِكْ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّعَلٰی اٰلِهٖ وَاَزْوَاجِهٖ وَذُرِّیَّتِهٖ كَمَا بَارَكْتَ عَلٰی اِبْرَاهِیْمَ وَعَلٰی اٰلِ اِبْرَاهِیْمَ فِی الْعٰلَمِیْنَ اِنَّكَ حَمِیْدٌ مَّجِیْدٌ

या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ रह़मत भेज ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर और आप की आल, अवलाद और अज़्वाज पर और बरकत दे ह़ज़रते मुह़म्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को और उन की आल, अवलाद व अज़्वाज को जिस त़रह़ तू ने ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام और उन की आल को दोनों जहां में बरकत दी, बेशक तू ही सब ख़ूबियों वाला इ़ज़्ज़त वाला है।[3]

---

1 ......الزھد لابن المبارک، الجزء الثامن، الحدیث:۱۰۸۵، ص ۳۸۴، باختصار۔
قوت القلوب، الفصل الخامس فی ذکر الادعیة المختارة......الخ، ج ۱، ص ۲۵، مفھومًا۔

2 ......المعجم الکبیر، الحدیث:۱۳۵۶۲، ج ۱۲، ص ۳۲۴، باختصار۔

3 ......صحیح البخاری، کتاب احادیث الانبیاء، الحدیث:۳۳۶۹، ج ۲، ص ۴۲۹، ملخصًا۔

﴾19﴿..... اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ عَبْدِكَ وَنَبِیِّكَ وَرَسُوْلِكَ النَّبِیِّ الْاُمِّیِّ رَسُوْلِكَ الْاَمِیْنِ وَاَعْطِهِ الْمَقَامَ الْمَحْمُوْدَ الَّذِیْ وَعَدْتَّهٗ یَوْمَ الدِّیْنِ

या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ रह्मत भेज हज़रते मुहम्मद صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर जो तेरे ख़ास बन्दे, नबी और रसूल हैं वोह तेरे उम्मी नबी और अमानत दार रसूल हैं, तू इन्हें अपने वा'दे के मुताबिक़ रोज़े क़ियामत मक़ामे महमूद अ़ता फ़रमा।(1)

﴾20﴿..... اَللّٰھُمَّ اجْعَلْنَا مِنْ اَوْلِیَائِكَ الْمُتَّقِیْنَ وَحِزْبِكَ الْمُفْلِحِیْنَ وَعِبَادِكَ الصّٰلِحِیْنَ وَاسْتَعْمِلْنَا لِمَرْضَاتِكَ عَنَّا وَوَفِّقْنَا لِمُحَابِّكَ مِنَّا وَصَرِّفْنَا بِحُسْنِ اخْتِیَارِكَ لَنَا

या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमारा शुमार अपने परहेज़गार औलिया, कामयाब गुरौह और नेक बन्दों में फ़रमा, हमें अपनी रिज़ा के कामों में लगा दे, अपनी महब्बत अ़ता कर और अपनी पसन्द की राह पर चला कर अपनी बारगाह में लौटा।(2)

﴾21﴿..... نَسْئَلُكَ جَوَامِعَ الْخَیْرِ وَفَوَاتِحَهٗ وَخَوَاتِمَهٗ وَنَعُوْذُ بِكَ مِنْ جَوَامِعِ الشَّرِّ وَفَوَاتِحِهٖ وَخَوَاتِمِهٖ

या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हम तुझ से तमाम भलाइयों का बमअ़ आग़ाज़ व इख़्तिताम के सुवाल करते हैं और तमाम बुराइयों से बमअ़ आगाज़ व इख़्तिताम के पनाह चाहते हैं।(3)

﴾22﴿..... اَللّٰھُمَّ بِقُدْرَتِكَ عَلَیَّ تُبْ عَلَیَّ اِنَّكَ اَنْتَ التَّوَّابُ الرَّحِیْمُ وَبِحِلْمِكَ عَنِّیْ اُعْفُ عَنِّیْ اِنَّكَ اَنْتَ الْغَفَّارُ الْحَلِیْمُ وَبِعِلْمِكَ بِیْ اُرْفُقْ بِیْ اِنَّكَ اَنْتَ اَرْحَمُ الرّٰحِمِیْنَ وَبِمُلْكِكَ لِیْ مَلِّكْنِیْ نَفْسِیْ وَلَا تُسَلِّطْهَا عَلَیَّ اِنَّكَ اَنْتَ الْمَلِكُ الْجَبَّارُ

या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मुझ पर अपनी क़ुदरत के सदक़े मेरी तौबा क़बूल फ़रमा बेशक तू ही बहुत तौबा क़बूल करने वाला मेहरबान है। अपने हिल्म के तुफ़ैल मुझे मुआफ़ फ़रमा बेशक तू बहुत बख़्शने वाला हिल्म वाला है। तू मेरी हालत से बा ख़बर है मुझ पर नर्मी फ़रमा बेशक तू सब मेहरबानों से बढ़ कर मेहरबान है। तू मेरा मालिक है मुझे नफ़्स पर ग़ालिब कर, नफ़्स को मुझ पर ग़लबा न दे, बेशक तू ही अ़ज़मत वाला बादशाह है।(4)

﴾23﴿..... سُبْحٰنَكَ اللّٰھُمَّ وَبِحَمْدِكَ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ عَمِلْتُ سُوْءًا وَّظَلَمْتُ نَفْسِیْ فَاغْفِرْ لِیْ ذَنْبِیْ اِنَّكَ اَنْتَ رَبِّیْ وَلَا یَغْفِرُ الذُّنُوْبَ اِلَّا اَنْتَ

या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तू पाक है, सब ख़ूबियां तेरे लिये, सिवा तेरे कोई मा'बूद नहीं, मैं ने गुनाह किये और अपनी जान पर ज़ुल्म किया पस तू मेरे गुनाह मुआफ़ फ़रमा, बेशक तू ही मेरा परवर दगार है और गुनाहों को बख़्शने वाला तेरे सिवा कोई नहीं।(5)

﴾24﴿..... اَللّٰھُمَّ اَلْھِمْنِیْ رُشْدِیْ وَقِنِیْ شَرَّ نَفْسِیْ या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मेरे दिल में भलाई की बात डाल दे और मुझे नफ़्स के शर से महफ़ूज़ फ़रमा।(6)

---

1 ......قوت القلوب، الفصل الخامس فی ذکر الادعیة المختارة......الخ، ج ۱، ص ۲۶۔

2 ......المرجع السابق، مفهومًا۔ 3 ......المرجع السابق۔ 4 ......المرجع السابق۔ 5 ......المرجع السابق۔

6 ......سنن الترمذی، کتاب الدعوات، الحدیث: ۳۴۹۴، ج ۵، ص ۲۹۴، "وقنی" بدله "واعذنی"۔
قوت القلوب، الفصل الخامس فی ذکر الادعیة المختارة......الخ، ج ۱، ص ۲۶۔

﴿25﴾..... اَللّٰھُمَّ ارْزُقْنِی حَلَالًا لَّا تُعَاقِبْنِی عَلَیْہِ وَقَنِّعْنِی بِمَا رَزَقْتَنِی وَاسْتَعْمِلْنِی بِہٖ صَالِحًا تَقَبَّلْہُ مِنِّی

या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मुझे रिज़्के ह़लाल अ़त़ा फ़रमा और इस का ह़िसाब न ले और जो तू ने मुझे रिज़्क़ दिया इस पर क़नाअ़त की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमा और इस के ज़रीए़ मुझे नेक कामों में लगा और फिर इन्हें क़बूल फ़रमा।(1)

﴿26﴾..... اَسْئَلُكَ الْعَفْوَ وَالْعَافِيَةَ وَحُسْنَ الْيَقِيْنِ وَالْمُعَافَاةَ فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ या'नी (ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ) मैं तुझ से दरगुज़र, आ़फ़िय्यत, हुस्ने यक़ीन और दुन्या व आख़िरत में मुआ़फ़ी का सुवाली हूं।(2)

﴿27﴾..... يَا مَنْ لَّا تَضُرُّهُ الذُّنُوْبُ وَلَا تَنْقُصُهُ الْمَغْفِرَةُ هَبْ لِي مَا لَا يَضُرُّكَ وَاَعْطِنِي مَا لَا يَنْقُصُكَ या'नी ऐ वोह ज़ात जिसे गुनाह कोई तक्लीफ़ दे सके न मग़्फ़िरत कोई नुक़्सान ! मुझे वोह अ़त़ा फ़रमा जो तेरे लिये मुज़िर नहीं और वोह भी अ़त़ा फ़रमा जिस में तेरा कोई नुक़्सान नहीं।(3)

नमाज़ के बा'द मांगी जाने वाली 12 क़ुरआनी दुआएं :

﴿1﴾..... رَبَّنَآ اَفْرِغْ عَلَيْنَا صَبْرًا وَّتَوَفَّنَا مُسْلِمِيْنَ ﴿۱۲۶﴾ (پ۹، الاعراف:۱۲۶)

या'नी ऐ रब्ब हमारे ! हम पर सब्र उंडेल दे और हमें मुसलमान उठा।

﴿2﴾..... اَنْتَ وَلِيّٖ فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ۚ تَوَفَّنِيْ مُسْلِمًا وَّاَلْحِقْنِيْ بِالصّٰلِحِيْنَ ﴿۱۰۱﴾ (پ۱۳، یوسف:۱۰۱)

या'नी तू मेरा काम बनाने वाला है दुन्या और आख़िरत में, मुझे मुसलमान उठा और उन से मिला जो तेरे क़ुर्बे ख़ास के लाइक़ हैं।

﴿3﴾..... اَنْتَ وَلِيُّنَا فَاغْفِرْ لَنَا وَارْحَمْنَا وَاَنْتَ خَيْرُ الْغٰفِرِيْنَ ﴿۱۵۵﴾ وَاكْتُبْ لَنَا فِيْ هٰذِهِ الدُّنْيَا حَسَنَةً وَّفِي الْاٰخِرَةِ اِنَّا هُدْنَآ اِلَيْكَ (پ۹، الاعراف:۱۵۵)

या'नी (ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ) तू हमारा मौला है तो हमें बख़्श दे और हम पर महर (रह़्मो करम) कर और तू सब से बेहतर बख़्शने वाला है, और हमारे लिये इस दुन्या में भलाई लिख और आख़िरत में, बेशक हम तेरी त़रफ़ रुजूअ़ लाए।

﴿4﴾..... رَبَّنَا عَلَيْكَ تَوَكَّلْنَا وَاِلَيْكَ اَنَبْنَا وَاِلَيْكَ الْمَصِيْرُ ﴿۴﴾ (پ۲۸، الممتحنۃ:۴) या'नी ऐ हमारे रब्ब ! हम ने तुझी पर भरोसा किया और तेरी ही त़रफ़ रुजूअ़ लाए और तेरी ही त़रफ़ फिरना है।

﴿5﴾..... رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا فِتْنَةً لِّلْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ﴿۸۵﴾ (پ۱۱، یونس:۸۵)

या'नी इलाही ! हम को ज़ालिम लोगों के लिये आज़्माइश न बना।

---

1 ......قوت القلوب، الفصل الخامس فی ذکر الادعیة المختارة......الخ، ج ۱، ص ۲۶۔
2 ......قوت القلوب، الفصل الخامس فی ذکر الادعیة المختارة......الخ، ج ۱، ص ۲۶۔
3 ......قوت القلوب، الفصل الخامس فی ذکر الادعیة المختارة......الخ، ج ۱، ص ۲۷۔

﴾6﴿.....رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا فِتْنَةً لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَاغْفِرْ لَنَا رَبَّنَا ۚ اِنَّكَ اَنْتَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ (پ۲۸،الممتحنة:۵)
या'नी ऐ हमारे रब्ब ! हमें काफ़िरों की आज़्माइश में न डाल और हमें बख़्श दे । ऐ हमारे रब्ब ! बेशक तू ही इ़ज़्ज़त व ह़िक्मत वाला है ।

﴾7﴿ ..... رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَا وَاِسْرَافَنَا فِيْۤ اَمْرِنَا وَثَبِّتْ اَقْدَامَنَا وَانْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ (پ۴،ال عمرٰن:۱۴۷)
या'नी ऐ हमारे रब्ब ! बख़्श दे हमारे गुनाह और जो ज़ियादतियां हम ने अपने काम में कीं और हमारे क़दम जमा दे और हमें इन काफ़िर लोगों पर मदद दे ।

﴾8﴿.....رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا وَلِاِخْوَانِنَا الَّذِيْنَ سَبَقُوْنَا بِالْاِيْمَانِ وَلَا تَجْعَلْ فِيْ قُلُوْبِنَا غِلًّا لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا رَبَّنَاۤ اِنَّكَ رَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ (پ۲۸،الحشر:۱۰)
या'नी ऐ हमारे रब्ब ! हमें बख़्श दे और हमारे भाइयों को जो हम से पहले ईमान लाए और हमारे दिल में ईमान वालों की त़रफ़ से कीना न रख । ऐ रब्ब हमारे ! बेशक तू ही निहायत मेहरबान रह़्म वाला है ।

﴾9﴿.....رَبَّنَاۤ اٰتِنَا مِنْ لَّدُنْكَ رَحْمَةً وَّهَيِّئْ لَنَا مِنْ اَمْرِنَا رَشَدًا (پ۱۵،الكهف:۱۰) या'नी ऐ हमारे रब्ब ! हमें अपने पास से रह़्मत दे और हमारे काम में हमारे लिये राहयाबी (राह पाने) के सामान कर ।

﴾10﴿..... رَبَّنَاۤ اٰتِنَا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَّفِي الْاٰخِرَةِ حَسَنَةً وَّقِنَا عَذَابَ النَّارِ (پ۲،البقرة:۲۰۱) या'नी ऐ रब्ब हमारे ! हमें दुन्या में भलाई दे और हमें आख़िरत में भलाई दे और हमें अ़ज़ाबे दोज़ख़ से बचा ।

﴾11﴿..... رَبَّنَاۤ اِنَّنَا سَمِعْنَا مُنَادِيًا يُّنَادِيْ لِلْاِيْمَانِ اَنْ اٰمِنُوْا بِرَبِّكُمْ فَاٰمَنَّا ۖ رَبَّنَا فَاغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَا وَكَفِّرْ عَنَّا
سَيِّاٰتِنَا وَتَوَفَّنَا مَعَ الْاَبْرَارِ رَبَّنَا وَاٰتِنَا مَا وَعَدْتَّنَا عَلٰى رُسُلِكَ وَلَا تُخْزِنَا يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۗ اِنَّكَ لَا تُخْلِفُ الْمِيْعَادَ (پ۴،ال عمرٰن:۱۹۳،۱۹۴)
या'नी ऐ रब्ब हमारे ! हम ने एक मुनादी को सुना कि ईमान के लिये निदा फ़रमाता है कि अपने रब्ब पर ईमान लाओ तो हम ईमान लाए । ऐ रब्ब हमारे ! तू हमारे गुनाह बख़्श दे और हमारी बुराइयां मह़्व फ़रमा दे और हमारी मौत अच्छों के साथ कर । ऐ रब्ब हमारे ! और हमें दे वोह जिस का तू ने हम से वा'दा किया है अपने रसूलों की मा'रिफ़त और हमें क़ियामत के दिन रुस्वा न कर बेशक तू वा'दा ख़िलाफ़ नहीं करता ।

﴾12﴿...... رَبَّنَا لَا تُؤَاخِذْنَاۤ اِنْ نَّسِيْنَاۤ اَوْ اَخْطَاْنَا ۚ رَبَّنَا وَلَا تَحْمِلْ عَلَيْنَاۤ اِصْرًا كَمَا حَمَلْتَهٗ عَلَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِنَا ۚ
رَبَّنَا وَلَا تُحَمِّلْنَا مَا لَا طَاقَةَ لَنَا بِهٖ ۚ وَاعْفُ عَنَّا ۟ وَاغْفِرْ لَنَا ۟ وَارْحَمْنَا ۟ اَنْتَ مَوْلٰىنَا فَانْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ (پ۳،البقرة:۲۸۶)
या'नी ऐ हमारे रब्ब ! हमें न पकड़ अगर हम भूलें या चूकें, ऐ रब्ब हमारे ! और हम पर भारी बोझ न रख जैसा तू ने हम से अगलों पर रखा था, ऐ रब्ब हमारे ! और हम पर वोह बोझ न डाल जिस की हमें सहार (त़ाक़त) न हो और हमें मुआ़फ़ फ़रमा दे और बख़्श दे और हम पर महर (रह़्म) कर तू हमारा मौला है तू काफ़िरों पर हमें मदद दे ।

20 मस्नून दुआएं और मुख़्तलिफ़ इस्तिआज़े :

﴾1﴿...... رَبِّ اغْفِرْ لِیْ وَلِوَالِدَیَّ وَارْحَمْهُمَا كَمَا رَبَّيَانِیْ صَغِيْرًا وَّاغْفِرْ لِلْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنَاتِ وَالْمُسْلِمِيْنَ وَالْمُسْلِمَاتِ الْاَحْيَـاءِ مِنْهُمْ وَالْاَمْوَات

या'नी ऐ मेरे रब्ब ! मुझे और मेरे मां बाप को बख़्श दे और इन पर रह़म कर जैसा कि इन्हों ने मुझे बचपन में पाला और तमाम ज़िन्दा व फ़ौत शुदा मुसलमान मर्दों और औ़रतों और ईमान वाले और ईमान वालियों की मग़फ़िरत फ़रमा।(1)

﴾2﴿...... رَبِّ اغْفِرْ وَارْحَمْ وَتَجَاوَزْ عَمَّا تَعْلَمُ وَاَنْتَ الْاَعَزُّ الْاَكْرَمُ وَاَنْتَ خَيْرُ الرَّاحِمِيْنَ وَاَنْتَ خَيْرُ الْغَافِرِيْن या'नी ऐ मेरे रब्ब ! मग़फ़िरत फ़रमा और रह़म फ़रमा और जिन ख़त़ाओं को तू जानता है मुआ़फ़ फ़रमा और तू सब से ज़ियादा इ़ज़्ज़त वाला, करम वाला, सब से बढ़ कर रह़म वाला और सब से बेहतर बख़्शने वाला है।(2)

﴾3﴿...... اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّا اِلَيْهِ رَاجِعُوْنَ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِیِّ الْعَظِيْمِ وَحَسْبُنَا اللّٰهُ وَنِعْمَ الْوَكِيْلُ وَصَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّدٍ خَاتَمِ النَّبِيِّيْنَ وَاٰلِهٖ وَصَحْبِهٖ وَسَلَّمَ تَسْلِيْمًا كَثِيْرًا

या'नी हम अल्लाह का माल हैं और हमें उसी की त़रफ़ लौटना है, बदी से बचने की कुव्वत और नेकी करने की त़ाक़त सिर्फ़ बुलन्दी व अ़ज़मत वाले अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ही की त़रफ़ से है और हमें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ काफ़ी है और वोह बेहतरीन कारसाज़ है और ख़ूब कषरत के साथ अल्लाह रब्बुल अनाम की रह़मत व सलामती हों आख़िरी नबी ह़ज़रते मुह़म्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर, आप की आल व अस्ह़ाब पर।

﴾4﴿...... اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِكَ مِنَ الْبُخْلِ وَاَعُوْذُبِكَ مِنَ الْجُبْنِ وَاَعُوْذُبِكَ مِنْ اَنْ اُرَدَّ اِلٰى اَرْذَلِ الْعُمُرِ وَاَعُوْذُبِكَ مِنْ فِتْنَةِ الدُّنْيَا وَاَعُوْذُبِكَ مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ

या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मैं बुख़्ल, बुज़दिली, ऐसी लम्बी उ़म्र जिस में दानाई जाती रहे, दुन्या के फ़ित्ने और अ़ज़ाबे क़ब्र से तेरी पनाह मांगता हूं।(3)

﴾5﴿.. اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِكَ مِنْ طَمَعٍ يَّهْدِیْ اِلٰى طَبَعٍ وَّمِنْ طَمَعٍ فِیْ غَيْرِ مَطْمَعٍ وَمِنْ طَمَعٍ حَيْثُ لَامَطْمَعَ

---

(1) ......قوت القلوب، الفصل الخامس فی ذکر الادعیة المختارة......الخ، ج ۱، ص۲۷ مفهومًا۔

(2) ......قوت القلوب، الفصل الخامس فی ذکر الادعیة المختارة......الخ، ج ۱، ص۲۷۔

(3) ......صحیح البخاری، کتاب الدعوات، باب التعوذ من البخل، الحدیث: ۶۳۷۰، ج۴، ص ۲۰۹۔

या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मैं तेरी पनाह मांगता हूं ऐसी ख़्वाहिश से जो ऐबदार बना दे और बे मक़्सद ख़्वाहिश और बे फ़ाइदा चीज़ की ख़्वाहिश से तेरी पनाह चाहता हूं।[1]

﴿6﴾...... اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُ بِكَ مِنْ عِلْمٍ لَّا یَنْفَعُ وَقَلْبٍ لَّا یَخْشَعُ وَدُعَاءٍ لَّا یُسْمَعُ وَنَفْسٍ لَّا تَشْبَعُ وَاَعُوْذُ بِكَ مِنَ الْجُوْعِ فَاِنَّهٗ بِئْسَ الضَّجِیْعُ وَمِنَ الْخِیَانَةِ فَاِنَّهَا بِئْسَتِ الْبِطَانَةُ وَمِنَ الْكَسَلِ وَالْبُخْلِ وَالْجُبْنِ وَالْهَرَمِ وَمِنْ اَنْ اُرَدَّ اِلٰی اَرْذَلِ الْعُمُرِ وَمِنْ فِتْنَةِ الدَّجَّالِ وَعَذَابِ الْقَبْرِ وَمِنْ فِتْنَةِ الْمَحْیَا وَالْمَمَاتِ

या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मैं तेरी पनाह मांगता हूं ऐसे इ़ल्म से जो नफ़्अ़ न दे, ऐसे दिल से जो आ़जिज़ी न करे, ऐसी दुआ़ से जो सुनी न जाए, ऐसे नफ़्स से जो सैर न हो और मैं तेरी पनाह चाहता हूं भूक से (जो इ़बादत से रोके) क्यूंकि इस का साथ बहुत बुरा है और ख़ियानत से पनाह चाहता हूं क्यूंकि येह बहुत बुरा हम नशीन है और सुस्ती, बुख़्ल, बुज़दिली, बुढ़ापे और ऐसी लम्बी उ़म्र से तेरी पनाह चाहता हूं जिस में दानाई जाती रहे और दज्जाल, अ़ज़ाबे क़ब्र और मौत व ह़यात के फ़ित्नों से तेरी पनाह चाहता हूं।

﴿7﴾...... اَللّٰهُمَّ اِنَّا نَسْئَلُكَ قُلُوْبًا اَوَّاهَةً مُّخْبِتَةً مُّنِیْبَةً فِیْ سَبِیْلِكَ या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हम तुझ से ऐसे दिल का सुवाल करते हैं जो नर्म, आ़जिज़ी वाला और तेरी बारगाह में रुजूअ़ करने वाला हो।

﴿8﴾...... اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ عَزَائِمَ مَغْفِرَتِكَ وَمُوْجِبَاتِ رَحْمَتِكَ وَالسَّلَامَةَ مِنْ كُلِّ اِثْمٍ وَّالْغَنِیْمَةَ مِنْ كُلِّ بِرٍّ وَالْفَوْزَ بِالْجَنَّةِ وَالنَّجَاةَ مِنَ النَّارِ

या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मैं तुझ से तेरी बख़्शिश के आ'माल, तेरी रह़मत के अस्बाब, हर गुनाह से ह़िफ़ाज़त, हर नेकी में ग़नीमत, जन्नत के साथ कामयाबी और जहन्नम से नजात का सुवाल करता हूं।[2]

﴿9﴾...... اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُ بِكَ مِنَ التَّرَدِّیْ وَاَعُوْذُ بِكَ مِنَ الْغَمِّ وَالْغَرَقِ وَالْهَدَمِ وَاَعُوْذُ بِكَ مِنْ اَنْ اَمُوْتَ فِیْ سَبِیْلِكَ مُدْبِرًا وَّاَعُوْذُ بِكَ مِنْ اَنْ اَمُوْتَ فِیْ طَلَبِ الدُّنْیَا

या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मैं गिर कर मरने, ग़मगीन होने, डूबने और इ़मारत गिरने से तेरी पनाह मांगता हूं और मौत के वक़्त तेरे रास्ते से फिरने और दुन्या की त़लब से तेरी पनाह मांगता हूं।[3]

---

1 ......المسند للامام احمد بن حنبل، مسند الانصار، حدیث معاذ بن جبل، الحدیث:۲۲۰۸۲، ج۸، ص۲۳۷، بلفظ"استعیذوا باللّٰه"۔

2 ......المستدرک، کتاب العلم، التعوذ من علم لاینفع، الحدیث:۳۶۲، ج۱، ص۳۰۰، مختصرًا۔

3 ......سنن ابی داود، کتاب الوتر، باب فی الاستعاذۃ، الحدیث:۱۵۵۲، ج۲، ص۱۳۲، دون قوله:واعوذبک ان اموت فی تطلب الدنیا۔

﴾10﴿......اَللّٰھُمَّ اِنِّیۡ اَعُوۡذُ بِكَ مِنۡ شَرِّ مَا عَلِمۡتُ وَمِنۡ شَرِّ مَا لَمۡ اَعۡلَمۡ या'नी ऐ अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ जो बुराई मैं जानता हूं और जो नहीं जानता (सब से) तेरी पनाह चाहता हूं।(1)

﴾11﴿......اَللّٰھُمَّ جَنِّبۡنِیۡ مُنۡکَرَاتِ الۡاَخۡلَاقِ وَالۡاَعۡمَالِ وَالۡاَدۡوَاءِ وَالۡاَھۡوَاءِ या'नी ऐ अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ मुझे बुरे अख़्लाक़, बुरे आ'माल, अमराज़ और बुरी ख़्वाहिशात से महफ़ूज़ फ़रमा।(2)

﴾12﴿......اَللّٰھُمَّ اِنِّیۡ اَعُوۡذُ بِكَ مِنۡ جَھۡدِ الۡبَلَاءِ وَدَرۡكِ الشَّقَاءِ وَسُوۡءِ الۡقَضَاءِ وَشَمَاتَةِ الۡاِعۡدَاءِ या'नी ऐ अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ मैं सख़्त आज़्माइश, ना मुरादी, बुरे फ़ैसले और दुश्मनों के मुझ पर हंसने से तेरी पनाह मांगता हूं।(3)

﴾13﴿ ......اَللّٰھُمَّ اِنِّیۡ اَعُوۡذُ بِكَ مِنَ الۡکُفۡرِ وَالدَّیۡنِ وَالۡفَقۡرِ وَاَعُوۡذُ بِكَ مِنۡ عَذَابِ جَھَنَّمَ وَاَعُوۡذُ بِكَ مِنۡ فِتۡنَةِ الدَّجَّالِ या'नी ऐ अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ मैं तेरी पनाह मांगता हूं कुफ़्र, क़र्ज़ और मोह़ताजी से और अ़ज़ाबे नार और फ़ितनए दज्जाल से तेरी पनाह मांगता हूं।(4)

﴾14﴿......اَللّٰھُمَّ اِنِّیۡ اَعُوۡذُ بِكَ مِنۡ شَرِّ سَمۡعِیۡ وَبَصَرِیۡ وَشَرِّ لِسَانِیۡ وَقَلۡبِیۡ وَشَرِّ مَنِیِّیۡ या'नी ऐ अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ मैं तेरी पनाह लेता हूं कान, आंख और दिल व ज़बान के शर और शर्मगाह के शर से।(5)

﴾15﴿......اَللّٰھُمَّ اِنِّیۡ اَعُوۡذُ بِكَ مِنۡ جَارِ السُّوۡءِ فِیۡ دَارِ الۡمُقَامَةِ فَاِنَّ جَارَ الۡبَادِیَةِ یَتَحَوَّلُ या'नी इलाही ! मैं बस्ती के बुरे पड़ोसी से तेरी पनाह मांगता हूं क्यूंकि जंगल का पड़ोसी तो बदलता रहता है।(6)

﴾16﴿......اَللّٰھُمَّ اِنِّیۡ اَعُوۡذُ بِكَ مِنَ الۡقَسۡوَةِ وَالۡغَفۡلَةِ وَالۡعَیۡلَةِ وَالذِّلَّةِ وَالۡمَسۡکَنَةِ وَاَعُوۡذُ بِكَ مِنَ الۡکُفۡرِ وَالۡفَقۡرِ وَالۡفُسُوۡقِ وَالشِّقَاقِ وَالنِّفَاقِ وَسُوۡءِ الۡاَخۡلَاقِ وَضِیۡقِ الۡاَرۡزَاقِ وَالسُّمۡعَةِ وَالرِّیَاءِ وَاَعُوۡذُ بِكَ مِنَ الصَّمَمِ وَالۡبَکَمِ وَالۡعَمٰی وَالۡجُنُوۡنِ وَالۡجُذَامِ وَالۡبَرَصِ وَسَیِّءِ الۡاَسۡقَامِ या'नी ऐ अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ मैं तेरी पनाह चाहता हूं सख़्त दिली, ग़फ़्लत, हाथ की तंगी, रुस्वाई और मिस्कीनी से। इलाही ! मैं कुफ़्र, मोह़ताजी, नाफ़रमानी, अ़दावत, मुनाफ़क़त, बुरे अख़्लाक़,

---

1......صحیح مسلم، کتاب الذکر......الخ، باب التعوذ من شرماعمل......الخ، الحدیث:۲۷۱۶، ص۱۴۵۶، بتغیرٍ۔

2......المستدرک، کتاب الدعاء و التکبیر......الخ، باب التعوذ من الھدم و التردی، الحدیث:۱۹۹۲، ج۲، ص۲۲۱، بتقدمٍ و تاخرٍ۔

3......صحیح مسلم، کتاب الذکر و الدعاء......الخ، باب فی التعوذ من سوء......الخ، الحدیث:۲۷۰۷، ص۱۴۵۲، بتقدمٍ و تاخرٍ۔

4......سنن النسائی، کتاب الاستعاذۃ، الحدیث:۵۴۷۲-۵۴۷۳-۵۵۱۵، ص۸۶۷، ۸۷۳۔

5......سنن ابی داود، کتاب الوتر، باب فی الاستعاذۃ، الحدیث:۱۵۵۱، ج۲، ص۱۳۲۔

6......سنن النسائی، کتاب الاستعاذۃ، الاستعاذۃ من جارالسوء، الحدیث:۵۵۱۲، ص۸۷۳۔

रिज़्क़ की तंगी, शोहरत और रियाकारी से तेरी पनाह मांगता हूं और मैं तेरी पनाह मांगता हूं अन्धा, बहरा, गूंगा होने और पागल पन, कोढ़, बरस और बुरी बीमारियों में मुब्तला होने से।[1]

﴿17﴾......اَللّٰھُمَّ اِنِّیۡ اَعُوۡذُ بِکَ مِنۡ زَوَالِ نِعۡمَتِکَ وَمِنۡ تَحَوُّلِ عَافِیَتِکَ وَمِنۡ فُجَاءَۃِ نِقۡمَتِکَ وَمِنۡ جَمِیۡعِ سَخَطِکَ

या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तेरी ने'मतों के ज़वाल, तेरी आ़फ़िय्यत के फिर जाने, नागहानी आफ़ात और तेरी हर क़िस्म की नाराज़ी से मैं तेरी पनाह चाहता हूं।[2]

﴿18﴾......اَللّٰھُمَّ اِنِّیۡ اَعُوۡذُ بِکَ مِنۡ عَذَابِ النَّارِ وَفِتۡنَۃِ النَّارِ وَعَذَابِ الۡقَبۡرِ وَفِتۡنَۃِ الۡقَبۡرِ وَشَرِّ فِتۡنَۃِ الۡغِنٰی وَشَرِّ فِتۡنَۃِ الۡفَقۡرِ وَشَرِّ فِتۡنَۃِ الۡمَسِیۡحِ الدَّجَّالِ وَاَعُوۡذُ بِکَ مِنَ الۡمَغۡرَمِ وَالۡمَاۡثَمِ

या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मैं अ़ज़ाबे जहन्नम, फ़ितनए जहन्नम, अ़ज़ाबे क़ब्र, फ़ितनए क़ब्र से और अमीरी व ग़रीबी के फ़ितने के शर और फ़ितनए मसीह़े दज्जाल के शर से तेरी पनाह मागंता हूं और क़र्ज़ और गुनाह से मैं तेरी पनाह मांगता हूं।[3]

﴿19﴾......اَللّٰھُمَّ اِنِّیۡ اَعُوۡذُ بِکَ مِنۡ نَّفۡسٍ لَّا تَشۡبَعُ وَقَلۡبٍ لَّا یَخۡشَعُ وَصَلَاۃٍ لَّا تَنۡفَعُ وَدَعۡوَۃٍ لَّا تُسۡتَجَابُ وَاَعُوۡذُ بِکَ مِنۡ شَرِّ الۡغَمِّ وَفِتۡنَۃِ الصَّدۡرِ

या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मैं तेरी पनाह मांगता हूं ऐसे नफ़्स से जो सैर न हो, ऐसे दिल से जो आ़जिज़ी न करे, ऐसी नमाज़ से जो नफ़्अ़ न दे, ऐसी दुआ़ से जो क़बूल न की जाए और मैं तेरी पनाह मांगता हूं ग़म और सीने के फ़ितनों के शर से।[4]

﴿20﴾......اَللّٰھُمَّ اِنِّیۡ اَعُوۡذُ بِکَ مِنۡ غَلَبَۃِ الدَّیۡنِ وَغَلَبَۃِ الۡعَدُوِّ وَشَمَاتَۃِ الۡاَعۡدَاءِ या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मैं तेरी पनाह मांगता हूं क़र्ज़ से, दुश्मनों के ग़लबे और उन के मुझ पर हंसने से।[5]

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रह़मत हो ह़ज़रते मुह़म्मद صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर और तमाम जहानों के हर बरगुज़ीदा बन्दे पर। (आमीन)

---

1 ......المستدرک، کتاب الدعاء والتکبیر......الخ، التعوذ من الجبن وغیرہ، الحدیث:۱۹۸۷، ج۲، ص۲۱۹۔

2 ......صحیح مسلم، کتاب الذکر والدعاء......الخ، باب اکثراھل الجنۃ الفقراء......الخ، الحدیث:۲۷۳۹، ص۱۴۶۵۔

3 ......صحیح البخاری، کتاب الاذان، باب الدعاء قبل السلام، الحدیث:۸۳۲، ج۱، ص۲۹۱، ملخصًا۔

4 ......صحیح مسلم، کتاب الذکر والدعاء......الخ، باب التعوذ من شرما......الخ، الحدیث:۲۷۲۲، ص۱۴۵۷، مختصرًا۔

5 ......سنن النسائی، کتاب الاستعاذۃ، الاستعاذۃ من غلبۃ الدین، الحدیث:۵۴۸۵، ص۸۶۹۔

बाब नम्बर 5 : मुख़्तलिफ़ मस्नून दुआएं

येह हम पहले बता चुके हैं कि जब तुम सुब्ह़ की अज़ान सुनो तो तुम्हारे लिये अज़ान का जवाब देना मुस्तह़ब है और बैतुल ख़ला में दाख़िल होते और निकलते वक़्त और वुज़ू की दुआएं हम ने "**किताबुत्त़हारत**" में बयान कर दी हैं।

मस्जिद की त़रफ़ जाते वक़्त की दुआ :

﴾1﴿....اَللّٰهُمَّ اجْعَلْ فِيْ قَلْبِيْ نُوْرًا وَّفِيْ لِسَانِيْ نُوْرًا وَّاجْعَلْ فِيْ سَمْعِيْ نُوْرًا وَّاجْعَلْ فِيْ بَصَرِيْ نُوْرًا وَّاجْعَلْ خَلْفِيْ نُوْرًا وَّاَمَامِيْ نُوْرًا وَّاجْعَلْ مِنْ فَوْقِيْ نُوْرًا، اَللّٰهُمَّ اَعْطِنِيْ نُوْرًا

या'नी ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मेरे दिल व ज़बान को पुरनूर कर दे, और मेरी समाअ़त व बसारत नूरानी बना दे और मेरे आगे पीछे और ऊपर नूर कर दे। ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मुझे नूर अ़त़ा फ़रमा।(1)

﴾2﴿.....اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَسْئَلُكَ بِحَقِّ السَّائِلِيْنَ عَلَيْكَ وَبِحَقِّ مَمْشَايَ هٰذَا اِلَيْكَ فَاِنِّيْ لَمْ اَخْرُجْ اَشَرًا وَّلَا بَطَرًا وَلَا رِيَاءً وَّلَا سُمْعَةً خَرَجْتُ اِتِّقَاءَ سَخَطِكَ وَابْتِغَاءَ مَرْضَاتِكَ فَاَسْئَلُكَ اَنْ تُنْقِذَنِيْ مِنَ النَّارِ وَاَنْ تَغْفِرَلِيْ ذُنُوْبِيْ اِنَّهٗ لَا يَغْفِرُ الذُّنُوْبَ اِلَّا اَنْتَ

या'नी ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ सुवाल करने वालों और तेरी राह में चलने वालों के ह़क़ के वसीले से तेरी बारगाह में सुवाल करता हूं। मेरा यूं तेरे घर त़रफ़ निकलना ग़ुरूर, तकब्बुर, दिखावे और शोहरत पाने के लिये नहीं बल्कि तेरी नाराज़ी से बचने और तेरी रिज़ा ह़ासिल करने के लिये है। (ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ) तेरी बारगाह में इल्तिजा करता हूं कि मुझे नारे जहन्नम से बचा ले और मेरे गुनाह मुआ़फ़ फ़रमा, बेशक तू ही गुनाहों को मुआ़फ़ फ़रमाने वाला है।(2)

घर से निकलते वक़्त की दुआ :

بِسْمِ اللّٰهِ رَبِّ اَعُوْذُ بِكَ اَنْ اَظْلِمَ اَوْ اُظْلَمَ اَوْ اَجْهَلَ اَوْ يُجْهَلَ عَلَيَّ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ التُّكْلَانُ عَلَى اللّٰهِ

या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नाम से शुरूअ़, ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मैं तेरी पनाह चाहता हूं इस से कि मैं किसी पर ज़ुल्म करूं या कोई मुझ पर ज़ुल्म करे या मैं किसी दीनी मुआ़मले में कोताही करूं या मुझ से कराई जाए। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रह़ूम

---

1 ......صحیح البخاری، کتاب الدعوات، باب الدعاء اذانتبه باللیل، الحدیث:۶۳۱۶، ج۴، ص۱۹۳، مفهومًا۔

2 ......سنن ابن ماجه، کتاب المساجد والجماعات، باب المشی الی الصلاة، الحدیث:۷۷۸، ج۱، ص۴۲۹، "تنقذنی" بدله "تعیذنی"۔

वाला, बदी से बचने की कुव्वत और नेकी करने की तौफ़ीक़ बुलन्द व बुज़ुर्ग अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ही की त़रफ़ से है, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नाम से शुरूअ़ भरोसा करते हुए अल्लाह عَزَّوَجَلَّ पर।[1]

मस्जिद में दाख़िल होते वक़्त की दुआ़ :

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ مُحَمَّدٍ وَّسَلِّمْ، اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِيْ جَمِيْعَ ذُنُوْبِيْ وَافْتَحْ لِيْ اَبْوَابَ رَحْمَتِكَ या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ रह़मत व सलामती भेज ह़ज़रते मुह़म्मद صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم पर और आप की आल पर। ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मेरे तमाम गुनाह बख़्श दे और मेरे लिये अपनी रह़मत के दरवाज़े खोल दे।[2]

जब मस्जिद में दाख़िल होने का इरादा हो तो पहले येह दुआ़ पढ़ें फिर दायां पाउं अन्दर रखें।

अगर मस्जिद में किसी को ख़रीदो फ़रोख़्त करते देखो तो येह दुआ़ पढ़ो :

لَا اَرْبَحَ اللّٰهُ تِجَارَتَكَ या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुझे तिजारत में नफ़्अ़ न दे।[3]

जब मस्जिद में किसी को गुमशुदा चीज़ का ए'लान करते देखो तो येह दुआ़ पढ़ो, जिस का रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने हुक्म इरशाद फ़रमाया है :

لَا رَدَّهَا اللّٰهُ اِلَيْكَ या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुझे वोह चीज़ वापस न लौटाए।[4]

रुकूअ़ की दुआ़ :

(नवाफ़िल के) रुकूअ़ में येह दुआ़ पढ़िये :

اَللّٰهُمَّ لَكَ رَكَعْتُ وَلَكَ خَشَعْتُ وَبِكَ اٰمَنْتُ وَلَكَ اَسْلَمْتُ وَعَلَيْكَ تَوَكَّلْتُ اَنْتَ رَبِّيْ خَشَعَ سَمْعِيْ وَبَصَرِيْ وَمُخِّيْ وَعَظْمِيْ وَعَصَبِيْ وَمَا اسْتَقَلَّتْ بِهٖ قَدَمِيْ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ

या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मेरा रुकूअ़ और मेरी आ़जिज़ी तेरे लिये है, मैं तुझ ही पर ईमान लाया और ख़ुद को तेरे सिपुर्द किया, तुझ ही पर भरोसा किया, तू ही मेरा रब्ब है। मेरी समाअ़त बसारत और मेरी हड्डियां, मग़्ज़ और पठ्ठे और मेरे पाउं पर लदा बोझ तमाम जहानों के परवर दगार के सामने आ़जिज़ है।[5]

---

1 ......سنن ابی داود، کتاب الادب، باب مایقول اذاخرج من بیتہ، الحدیث:۵۰۹۴، ج۴، ص۴۲۰۔

سنن ابن ماجہ، کتاب الدعاء، باب مایدعوبہ الرجل اذاخرج من بیتہ، الحدیث:۳۸۸۵، ج۴، ص۲۹۲، مختصرًا۔

2 ......سنن الترمذی، ابواب الصلاۃ، باب ماجاء مایقول عنددخول المسجد، الحدیث:۳۱۴، ج۱، ص۳۳۹، مختصرًا۔

3 ......سنن الترمذی، کتاب البیوع، باب النھی عن البیع فی المسجد، الحدیث:۱۳۲۵، ج۳، ص۵۹۔

4 ......صحیح مسلم، کتاب المساجد و مواضع الصلاۃ، باب النھی عن نشد......الخ، الحدیث:۵۶۸، ص۲۸۴۔

5 ......صحیح مسلم، کتاب صلاۃ المسافرین وقصرھا......الخ، باب الدعاء فی صلاۃ......الخ، الحدیث:۷۷۱، ص۳۹۰، باختصارٍ۔

अगर चाहे तो तीन मरतबा سُبۡحٰنَ رَبِّیَ الۡعَظِیۡم या'नी पाक है मेरा रब्ब अ़ज़मत वाला कहे ।(1) या कहे سُبُّوۡحٌ قُدُّوۡسٌ رَبُّ الۡمَلَائِکَةِ وَالرُّوۡح या'नी फ़िरिश्तों और रूहुल अमीन का परवर दगार पाक और मुक़द्दस है ।(2)

रुकूअ़ से उठते वक़्त की दुआ़ :

سَمِعَ اللّٰہُ لِمَنۡ حَمِدَہٗ رَبَّنَا لَکَ الۡحَمۡدُ مِلۡءَ السَّمٰوٰتِ وَمِلۡءَ الۡاَرۡضِ وَمِلۡءَ مَا شِئۡتَ مِنۡ شَیۡءٍ بَعۡدَ اَھۡلِ الثَّنَاءِ وَالۡمَجۡدِ اَحَقُّ مَا قَالَ الۡعَبۡدُ وَکُلُّنَا لَکَ عَبۡدٌ لَّا مَانِعَ لِمَا اَعۡطَیۡتَ وَلَا مُعۡطِیَ لِمَا مَنَعۡتَ وَلَا یَنۡفَعُ ذَا الۡجِدِّ مِنۡکَ الۡجَدُّ

या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उस की सुन ली जिस ने उस की ह़म्द की, ऐ हमारे रब्ब ! तू उस ता'रीफ़ का मुस्तह़िक़ है जिस से तमाम आस्मानो ज़मीन भर जाएं और तेरी ह़म्द व बुज़ुर्गी बयान करने वालों के बा'द जो तू चाहे वोह भी भर जाए। तू ही इस का ह़क़दार है जो तेरे बन्दे ने कहा। हम सब तेरे बन्दे हैं, जो तू दे उसे कोई रोक नहीं सकता और जो तू रोके उसे कोई दे नहीं सकता, तेरे मुक़ाबिल ग़नी को ग़ना नफ़्अ़ नहीं पहुंचाती ।(3)

सजदे में जाते वक़्त की दुआ़ :

اَللّٰھُمَّ لَکَ سَجَدۡتُّ وَبِکَ اٰمَنۡتُ وَلَکَ اَسۡلَمۡتُ سَجَدَ وَجۡھِیۡ لِلَّذِیۡ خَلَقَہٗ وَصَوَّرَہٗ وَشَقَّ سَمۡعَہٗ وَبَصَرَہٗ فَتَبَارَکَ اللّٰہُ اَحۡسَنُ الۡخَالِقِیۡنَ اَللّٰھُمَّ سَجَدَ لَکَ سَوَادِیۡ وَخَیَالِیۡ وَاٰمَنَ بِکَ فُؤَادِیۡ اَبُوۡءُ بِنِعۡمَتِکَ عَلَیَّ وَاَبُوۡءُ بِذَنۡبِیۡ وَھٰذَا مَا جَنَیۡتُ عَلٰی نَفۡسِیۡ فَاغۡفِرۡلِیۡ فَاِنَّہٗ لَا یَغۡفِرُ الذُّنُوۡبَ اِلَّا اَنۡتَ

या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मैं ने तेरे ही लिये सजदा किया, तुझ ही पर ईमान लाया और खुद को तेरे सिपुर्द किया। मेरा चेहरा उस ज़ात के लिये झुका है जिस ने इसे पैदा किया और इस के कान और आंख बनाएं। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ बड़ी बरकत वाला सब से बेहतर बनाने वाला है। मेरा वुजूद व ख़याल तेरे हुज़ूर सर ब सुजूद है, मेरा दिल तुझ पर ईमान लाया, तू ने मुझे ने'मतें अ़ता कीं इन का इक़रार करता हूं और अपनी ख़ताओं का भी ए'तिराफ़ करता हूं, येह मैं ने अपनी जान पर ज़ुल्म किया पस मुझे बख़्श दे कि तेरे सिवा गुनाह बख़्शने वाला कोई नहीं ।(4)

---

1 ......سنن ابی داود، کتاب الصلاۃ، باب مقدار الرکوع والسجود، الحدیث:۸۸۶، ج ۱، ص ۳۳۶۔

2 ......صحیح مسلم، کتاب الصلاۃ، باب مایقال فی الرکوع والسجود، الحدیث:۴۸۷، ص ۲۵۲۔

3 ......صحیح مسلم، کتاب الصلاۃ، باب مایقول اذارفع راسہ من الرکوع، الحدیث:۴۷۶۔۴۷۷، ص ۲۴۷۔۲۴۸۔

4 ......صحیح مسلم، کتاب الصلاۃ، باب الدعاء فی صلاۃ اللیل وقیامہ، الحدیث:۷۷۱، ص ۳۹۰۔۳۹۱، مختصراً۔

المستدرک، کتاب الدعاء والتکبیر......الخ، الدعاء الجامع......الخ، الحدیث:۲۰۰۰، ج ۲، ص ۲۲۴، مختصراً۔

या तीन मरतबा येह कहे : “سُبْحٰنَ رَبِّیَ الْاَعْلٰی या’नी पाक है मेरा परवर दगार बुलन्दी वाला।”(1)

नमाज़ के बा’द की दुआ :

اَللّٰهُمَّ اَنْتَ السَّلَامُ وَمِنْكَ السَّلَامُ تَبَارَكْتَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام या’नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तू ही सलामती देने वाला है और तुझी से सलामती ह़ासिल होती है। तू बड़ी बरकत वाला है ऐ अ़ज़मत व बुज़ुर्गी वाले !(2)

नमाज़ के बा’द मांगी जाने वाली दुआ में येह दुआ भी मांग लिया करें।

मजलिस से उठते वक़्त की दुआ :

سُبْحٰنَكَ اللّٰهُمَّ وَبِحَمْدِكَ اَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ اَسْتَغْفِرُكَ وَاَتُوْبُ اِلَيْكَ عَمِلْتُ سُوْءً وَّظَلَمْتُ نَفْسِي فَاغْفِرْلِيْ فَاِنَّهٗ لَا يَغْفِرُ الذُّنُوْبَ اِلَّا اَنْتَ

या’नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तेरी ज़ात पाक और लाइक़े ह़म्द है, मैं गवाही देता हूं कि तेरे सिवा कोई मा’बूद नहीं, मैं तुझ से मग़फ़िरत त़लब करता हूं और तेरी बारगाह में तौबा करता हूं मैं ने गुनाह किये और अपनी जान पर ज़ुल्म किया, पस तू मेरी मग़फ़िरत फ़रमा कि तेरे सिवा गुनाह बख़्शने वाला कोई नहीं।(3)

जब तुम मजलिस बरख़ास्त करो और इस में होने वाली लग़्विय्यात का कफ़्फ़ारा चाहो तो येह दुआ पढ़ लिया करो।

बाज़ार में दाख़िल होते वक़्त की दुआ :

لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ يُحْيِيْ وَيُمِيْتُ وَهُوَ حَيٌّ لَّا يَمُوْتُ بِيَدِهِ الْخَيْرُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْر.

या’नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई मा’बूद नहीं, वोह अकेला है, उस का कोई शरीक नहीं, उसी के लिये है बादशाही और उसी के लिये ह़म्द है, वोही ज़िन्दा करता और मारता है, वोह ज़िन्दा है उस को हरगिज़ मौत न आएगी, तमाम भलाई उसी के दस्ते क़ुदरत में है और वोह हर चाहे पर क़ादिर है।(4)

بِسْمِ اللّٰهِ اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَسْئَلُكَ خَيْرَ هٰذِهِ السُّوْقِ وَخَيْرَمَافِيْهَا اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَعُوْذُبِكَ مِنْ شَرِّهَا وَشَرِّ مَا فِيْهَا اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَعُوْذُبِكَ اَنْ اُصِيْبَ فِيْهَا يَمِيْنًا فَاجِرَةً اَوْصَفْقَةً خَاسِرَة.

---

1 ......سنن ابی داود، کتاب الصلاۃ، باب مقدار الرکوع والسجود، الحدیث:۸۸۶، ج ۱، ص ۳۳۶۔
2 ......صحیح مسلم، کتاب المساجد ومواضع الصلاۃ، باب استحباب الذکر بعد الصلاۃ......الخ، الحدیث: ۵۹۱، ص۲۹۷۔
3 ......المستدرک، کتاب الدعاء والتکبیر......الخ، باب دعاء کفارۃ المجالس، الحدیث:۲۰۱۵، ج۲، ص ۲۲۹۔
4 ......سنن الترمذی، کتاب الدعوات، باب مایقول اذادخل السوق، الحدیث: ۳۴۳۹، ج۵، ص ۲۷۱۔

या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नाम से शुरूअ़, ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मैं तुझ से इस बाज़ार और जो कुछ इस में है उस की भलाई त़लब करता हूं, ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मैं तेरी पनाह मांगता हूं इस बाज़ार और जो कुछ इस में मौजूद है उस के शर से। इलाही ! मैं तेरी पनाह मांगता हूं इस से कि मैं झूटी क़सम खाऊं या घाटे का सौदा करूं।[1]

अदाएगिये क़र्ज़ की दुआ़ :

अगर मक़रूज़ हैं तो येह दुआ़ पढ़िये : اَللّٰھُمَّ اکْفِنِیْ بِحَلَالِكَ عَنْ حَرَامِكَ وَ اَغْنِنِیْ بِفَضْلِكَ عَمَّنْ سِوَاكَ या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मुझे ह़लाल रिज़्क़ अ़त़ा फ़रमा, ह़राम से बचा और अपने फ़ज़्लो करम से अपने सिवा किसी का मोह़ताज न कर।[2]

नया लिबास पहनते वक़्त की दुआ़ :

اَللّٰھُمَّ كَسَوْتَنِیْ ھٰذَا الثَّوْبَ فَلَكَ الْحَمْدُ اَسْئَلُكَ مِنْ خَیْرِہٖ وَخَیْرِ مَا صُنِعَ لَہٗ وَاَعُوْذُ بِكَ مِنْ شَرِّہٖ وَشَرِّ مَا صُنِعَ لَہٗ.

या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तेरा शुक्र है कि तू ने मुझे येह कपड़ा पहनाया। मैं तुझ से इस की भलाई और जिस ग़रज़ के लिये येह बनाया गया है इस की भलाई मांगता हूं और इस की बुराई और जिस ग़रज़ के लिये येह बनाया गया है इस की बुराई से तेरी पनाह त़लब करता हूं।[3]

जब कोई शगून[4] दिल में खटके तो येह दुआ़ पढ़े :

اَللّٰھُمَّ لَا یَاْتِیْ بِالْحَسَنَاتِ اِلَّا اَنْتَ وَلَا یُذْھِبُ السَّیِّئَاتِ اِلَّا اَنْتَ لَاحَوْلَ وَلَا قُوَّۃَ اِلَّا بِاللّٰہِ

या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तू ही भलाइयां अ़त़ा फ़रमाता और बुराइयां दूर करता है और गुनाह से बचने की त़ाक़त और नेकी करने की कुव्वत अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ही की मदद से है।"[5]

---

1 ......المستدرک، کتاب الدعاء والتکبیر......الخ، باب دعاء دخول السوق، الحدیث:۲۰۲۱، ج۲، ص۲۳۲۔

2 ......سنن الترمذی، احادیث شتی، الحدیث:۳۵۷۴، ج۵، ص۳۲۹۔

3 ......سنن ابی داود، کتاب اللباس، باب مایقول اذالبس ثوبا جدیدا، الحدیث:۴۰۲۰، ج۴، ص۵۹۔

4 .... एक ह़दीषे पाक जिस में शगून का ज़िक्र किया गया इस के तह़त मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْمَنَّان मिरआतुल मनाजीह़, जि. 6 स. 266 पर फ़रमाते हैं : फ़ाल से मुराद नेक फ़ाल है जो अच्छी बात है अच्छा नाम सुनने से ली जाए। या'नी येह जाइज़ है लेकिन कोई शख़्स किसी काम को जाते वक़्त नापसन्दीदा चीज़ देखे या सुने जिस से बद शगूनी ली जाए तो वोह मह़ज़ इस वजह से अपने काम से वापस न हो। अल्लाह पर तवक्कुल करे और काम को जाए। इस के बारे में मज़ीद सफ़ह़ा 255 पर फ़रमाते हैं : "नेक फ़ाल लेना सुन्नत है इस में अल्लाह तआ़ला से उम्मीद है और बद फ़ाली लेना ममनूअ़ कि इस में रब्ब से ना उम्मीदी है। उम्मीद अच्छी है ना उम्मीदी बुरी। हमेशा रब्ब से उम्मीद रखो।"

5 ......شعب الایمان للبیھقی، باب التوکل والتسلیم، الحدیث:۱۱۶۷، ج۲، ص۶۲۔

नया चांद देख कर पढ़ी जाने वाली दुआ :

﴿1﴾..... اَللّٰھُمَّ اَھِلَّہٗ عَلَیْنَا بِالْاَمْنِ وَالْاِیْمَانِ وَالْبِرِّ وَالسَّلَامَۃِ وَالْاِسْلَامِ وَالتَّوْفِیْقِ لِمَا تُحِبُّ وَتَرْضٰی وَالْحِفْظِ عَمَّنْ تَسْخَطُ رَبِّیْ وَرَبُّکَ اللّٰہُ

या'नी ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इसे हम पर अम्न, ईमान, नेकी, सलामती, इस्लाम और उस चीज़ की तौफ़ीक़ का चांद बना कर चमका जिसे तू पसन्द करता है और जिस से तू राज़ी है और उस चीज़ से हिफ़ाज़त का चांद बना कर चमका जिस से तू नाराज़ होता है। (ऐ चांद !) मेरा और तेरा परवरदगार **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ है।(1)

﴿2﴾.....चांद देख कर तीन दफ़्आ़ "اَللّٰہُ اَکْبَرُ" कहिये और फिर येह दुआ़ पढ़िये :

ھَلَالُ رُشْدٍ وَّخَیْرٍ اٰمَنْتُ بِخَالِقِکَ اَللّٰھُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُکَ خَیْرَ ھٰذَا الشَّھْرِ وَخَیْرَ الْقَدْرِ وَاَعُوْذُ بِکَ مِنْ شَرِّ یَوْمِ الْحَشْرِ

या'नी हिदायत और भलाई का चांद हो मैं उस पर ईमान लाया जो तेरा ख़ालिक़ है।(2) ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मैं तुझ से इस महीने की भलाई और अच्छी तक़्दीर का सुवाल करता हूं और रोज़े महशर के शर से तेरी पनाह मांगता हूं।(3)

आंधी के वक़्त की दुआ़ :

اَللّٰھُمَّ اِنِّیْ اَسْاَلُکَ خَیْرَ ھٰذِہِ الرِّیْحِ وَخَیْرَ مَا فِیْھَا وَخَیْرَ مَا اُرْسِلَتْ بِہٖ وَنَعُوْذُبِکَ مِنْ شَرِّھَا وَشَرِّ مَا فِیْھَا وَمِنْ شَرِّ مَا اُرْسِلَتْ بِہٖ

या'नी इलाही ! मैं तुझ से इस आंधी की और जो कुछ इस में है और जिस के साथ येह भेजी गई है उस की भलाई का सुवाल करता हूं और मैं तेरी पनाह मांगता हूं इस के शर से और उस चीज़ के शर से जो इस में है और उस के शर से जिस के साथ येह भेजी गई।(4)

किसी के इन्तिक़ाल की ख़बर सुन कर पढ़ी जाने वाली दुआ़ :

اِنَّا لِلّٰہِ وَاِنَّا اِلَیْہِ رَاجِعُوْنَ وَاِنَّا اِلٰی رَبِّنَا لَمُنْقَلِبُوْنَ اَللّٰھُمَّ اکْتُبْہُ فِی الْمُحْسِنِیْنَ وَاجْعَلْ کِتَابَہٗ فِیْ عِلِّیِّیْنَ وَاخْلُفْہُ عَلٰی عَقِبِہٖ فِی الْغَابِرِیْنَ اَللّٰھُمَّ لَا تَحْرِمْنَا اَجْرَہٗ وَلَا تَفْتِنَّا بَعْدَہٗ وَاغْفِرْلَنَا وَلَہٗ

---

1 ......سنن الترمذی، کتاب الدعوات، باب مایقول عندرؤیۃ الھلال، الحدیث: ۳۴۶۲، ج۵، ص ۲۸۱، مختصرًا۔
المعجم الکبیر، الحدیث: ۱۳۳۳۰، ج ۱۲، ص ۲۷۳، مختصرًا۔

2 ......سنن ابی داود، کتاب الادب، باب مایقول الرجل اذارای الھلال، الحدیث: ۵۰۹۲، ج ۴، ص ۴۲۰، بتغیرٍ۔

3 ......المسندللامام احمد بن حنبل، مسند الانصار، الحدیث: ۲۲۸۵۵، ج ۸، ص ۴۲۴، بتغیرٍ۔

4 ......سنن الترمذی، کتاب الفتن، باب ماجاء فی النھی عن سب الریاح، الحدیث: ۲۲۵۹، ج ۴، ص ۱۱۱، بتغیرٍ۔

या'नी बेशक हम अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का माल हैं और हम को उसी की त़रफ़ फिरना है और बेशक हम अपने रब्ब की त़रफ़ पलटने वाले हैं। ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इस का नाम नेकूकारों में लिख दे और इस का नामए आ'माल इ़ल्लिय्यीन में कर दे और इस के पीछे रह जाने वालों की ह़िफ़ाज़त व निगेहबानी फ़रमा। ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें इस के अज्र से मह़रूम न रख और इस के बा'द आज़माइश में मुब्तला न कर और हमारी और इस की मग़्फ़िरत फ़रमा।(1)

सदक़ा देते वक़्त की दुआ़ :

رَبَّنَا تَقَبَّلْ مِنَّا ؕ اِنَّكَ اَنْتَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿۱۲۷﴾ (پ ۱، البقرۃ:۱۲۷)

या'नी ऐ रब्ब हमारे ! हम से क़बूल फ़रमा बेशक तू ही है सुनता जानता।

कोई नुक़्सान हो जाए तो येह दुआ़ पढ़िये :

عَسٰى رَبُّنَاۤ اَنْ يُّبْدِلَنَا خَيْرًا مِّنْهَاۤ اِنَّاۤ اِلٰى رَبِّنَا رٰغِبُوْنَ ﴿۳۲﴾ (پ ۲۹، القلم:۳۲)

या'नी उम्मीद है कि हमें हमारा रब्ब इस से बेहतर बदल दे, हम अपने रब्ब की त़रफ़ रग़्बत लाते हैं।

जाइज़ काम शुरूअ़ करते वक़्त की दुआ़ :

﴾1﴿.....(پ ۱۵، الكهف:۱۰) رَبَّنَاۤ اٰتِنَا مِنْ لَّدُنْكَ رَحْمَةً وَّهَيِّئْ لَنَا مِنْ اَمْرِنَا رَشَدًا ﴿۱۰﴾ या'नी ऐ हमारे रब्ब ! हमें अपने पास से रह़मत दे और हमारे काम में हमारे लिये राहयाबी (राह पाने) के सामान कर।

﴾2﴿....(پ ۱۶، طٰهٰ:۲۵، ۲۶) رَبِّ اشْرَحْ لِيْ صَدْرِيْ ﴿۲۵﴾ وَيَسِّرْ لِيْۤ اَمْرِيْ ﴿۲۶﴾

या'नी ऐ मेरे रब्ब ! मेरे लिये मेरा सीना खोल दे और मेरे लिये मेरा काम आसान कर।

आस्मान की त़रफ़ देखते वक़्त की दुआ़ :

﴾1﴿......(پ ۴، اٰل عمرٰن:۱۹۱) رَبَّنَا مَا خَلَقْتَ هٰذَا بَاطِلًا ۚ سُبْحٰنَكَ فَقِنَا عَذَابَ النَّارِ ﴿۱۹۱﴾ या'नी ऐ हमारे रब्ब ! तू ने येह बेकार न बनाया पाकी है तुझे तू हमें दोज़ख़ के अ़ज़ाब से बचा ले।

﴾2﴿.... (پ ۱۹، الفرقان:۶۱) تَبٰرَكَ الَّذِيْ جَعَلَ فِي السَّمَآءِ بُرُوْجًا وَّجَعَلَ فِيْهَا سِرٰجًا وَّقَمَرًا مُّنِيْرًا ﴿۶۱﴾ या'नी बड़ी बरकत वाला है वोह जिस ने आस्मान में बुर्ज बनाए और इन में चराग़ रखा और चमकता चांद।

---

1 ......كنزالعمال، كتاب الموت، الحديث:۴۲۲۱۰، ج۱۵، ص۲۴۳۔

बादल के गरजने पर पढ़ी जाने वाली दुआ :

سُبْحٰنَ مَنْ یُّسَبِّحُ الرَّعْدُ بِحَمْدِهٖ وَالْمَلَائِكَةُ مِنْ خِيْفَتِهٖ या'नी पाक है वोह ज़ात गरज उसे सराहती हुई उस की पाकी बोलती है और फ़िरिश्ते उस के डर से ।(1)

जब आस्मानी बिजली चमके तो येह दुआ पढ़िये :

اَللّٰهُمَّ لَا تَقْتُلْنَا بِغَضَبِكَ وَلَا تُهْلِكْنَا بِعَذَابِكَ وَعَافِنَا قَبْلَ ذٰلِكَ या'नी इलाही عَزَّوَجَلَّ हमें अपने ग़ज़ब से ग़ारत न कर और अपने अ़ज़ाब से हलाक न कर और हमें इस से पहले मुआफ़ फ़रमा ।(2)

बारिश के वक़्त की दुआ :

﴿1﴾.....اَللّٰهُمَّ سُقْيًا هَنِيْئًا وَّصَيِّبًا نَّافِعًا या'नी ऐ हमारे रब्ब ! ऐसी बारिश हो जो सैराब करने वाली, बा बरकत और बहुत मुफ़ीद हो ।(3)

﴿2﴾..... اَللّٰهُمَّ اجْعَلْهُ صَيِّبَ رَحْمَةٍ وَّلَا تَجْعَلْهُ صَيِّبَ عَذَابٍ

या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इस बारिश को बाइ़से रह़मत बना, अ़ज़ाब का बाइ़स न बना ।(4)

जब किसी पर गुस्सा आ जाए तो येह दुआ पढ़िये :

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلِیْ ذَنْبِیْ وَاَذْهِبْ غَيْظَ قَلْبِیْ وَاَجِرْنِیْ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मेरे गुनाह मुआफ़ फ़रमा, मेरे दिल के गुस्से को दूर फ़रमा और मुझे शैत़ान मरदूद से मह़फ़ूज़ रख ।(5)

---

(1)......الموطا للامام مالک، کتاب الکلام، باب القول اذاسمعت الرعد، الحدیث:۱۹۲۰، ج۲، ص۴۷۰۔

(2)......سنن الترمذی، کتاب الدعوات، باب مایقول اذاسمع الرعد، الحدیث:۳۴۶۱، ج۵، ص۲۸۱۔

(3)......صحیح البخاری، کتاب الاستسقاء، باب مایقال اذاامطرت، الحدیث:۱۰۳۲، ج۱، ص۳۵۳، مختصرًا۔
مشکاۃ المصابیح، کتاب الصلاۃ، باب فی الریاح، الحدیث:۱۵۲۰، ج۱، ص۲۹۲، مختصرًا۔

(4)......السنن الکبری للنسائی، کتاب عمل الیوم واللیلۃ باب مایقول اذاکشفہ اللّٰہ، الحدیث:۱۰۷۵۲، ج۶، ص۲۲۷۔

(5)......المسندللامام احمد بن حنبل، حدیث ام سلمۃ زوج النبی، الحدیث:۲۶۶۳۸، ج۱۰، ص۹۳۔

किसी क़ौम से ख़त़रे के वक़्त की दुआ़ :

اَللّٰھُمَّ اِنَّا نَجْعَلُكَ فِیْ نُحُوْرِھِمْ وَنَعُوْذُبِكَ مِنْ شُرُوْرِھِمْ या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हम इन के मुक़ाबिल तुझे करते हैं और इन के शर से तेरी पनाह चाहते हैं।(1)

कुफ़्फ़ार से जिहाद करते वक़्त की दुआ़ :

اَللّٰھُمَّ اَنْتَ عَضُدِیْ وَنَصِیْرِیْ وَبِكَ اُقَاتِلُ या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तू मुझे कुव्वत देने वाला और मददगार है, तेरे ही भरोसे मैं जिहाद करता हूं।(2)

कान बजते हों तो.....!

जब कान बजते हों तो दुरूदे पाक पढ़ कर येह कलिमात पढ़िये : "ذَكَرَ اللّٰهُ مَنْ ذَكَرَنِیْ بِخَیْرٍ" या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस का चर्चा फ़रमाए जो मुझे भलाई के साथ याद करे।

दुआ़ की क़बूलिय्यत पर येह दुआ़ पढ़िये :

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ بِعِزَّتِهٖ وَجَلَالِهٖ تَتِمُّ الصَّالِحَات या'नी सब ख़ूबियां अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये जिस की इ़ज़्ज़त व बुज़ुर्गी के सदक़े नेकियां मुकम्मल होती हैं।(3)

और दुआ़ में ताख़ीर मह़सूस हो तो कहे :

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَلٰى كُلِّ حَالٍ या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का शुक्र है हर ह़ाल में।(4)

अज़ाने मग़रिब के वक़्त की दुआ़ :

اَللّٰھُمَّ ھٰذَا اِقْبَالُ لَیْلِكَ وَاِدْبَارُ نَھَارِكَ وَاَصْوَاتُ دُعَاتِكَ وَحُضُوْرُ صَلَوَاتِكَ اَسْئَلُكَ اَنْ تَغْفِرَلِیْ

या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ येह वक़्त तेरी रात के आने और तेरे दिन के जाने का है, येह तेरी त़रफ़ बुलाने वालों की सदाएं हैं और तेरी नमाज़ों के लिये ह़ाज़िर होने का वक़्त है, (ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ) मैं तुझ से अपनी मग़फ़िरत का सुवाली हूं।(5)

---

1 ......سنن ابی داود، کتاب الوتر، باب مایقول الرجل اذاخاف قوماً، الحدیث:۱۵۳۷، ج۲، ص۱۲۷۔

2 ......سنن ابی داود، کتاب الجهاد، باب مایدعی عندالقاء، الحدیث:۲۶۳۲، ج۳، ص۵۹۔

3 ......المعجم الکبیر، الحدیث:۹۵۸، ج۱، ص۳۲۲، بتقدمٍ وتاخرٍ۔

4 ......کنزالعمال، کتاب الاذکار، الباب الثامن فی الدعاء، الحدیث:۳۱۷۹، ج۲، ص۳۳، دون قوله:بعزته و جلاله۔

5 ......سنن ابی داود، کتاب الصلاة، باب مایقول عنداذان المغرب، الحدیث:۵۳۰، ج۱، ص۲۲۳،
دون قوله:وحضور صلواتک اسالک۔

कोई ग़म पहुंचे तो येह दुआ़ पढ़िये :

اَللّٰھُمَّ اِنِّیۡ عَبۡدُكَ وَابۡنُ عَبۡدِكَ وَابۡنُ اَمَتِكَ نَاصِیَتِیۡ بِیَدِكَ مَاضٍ فِیۡ حُکۡمِكَ عَدۡلٌ فِیۡ قَضَائِكَ اَسۡئَلُكَ بِکُلِّ اسۡمٍ هُوَ لَكَ سَمَّیۡتَ بِهٖ نَفۡسَكَ اَوۡ اَنۡزَلۡتَهٗ فِیۡ کِتَابِكَ اَوۡ عَلَّمۡتَهٗ اَحَدًا مِّنۡ خَلۡقِكَ اَوِ اسۡتَاۡثَرۡتَ بِهٖ فِیۡ عِلۡمِ الۡغَیۡبِ عِنۡدَكَ اَنۡ تَجۡعَلَ الۡقُرۡاٰنَ رَبِیۡعَ قَلۡبِیۡ وَنُوۡرَ صَدۡرِیۡ وَجَلَاءَ غَمِّیۡ وَذَهَابَ حُزۡنِیۡ وَهَمِّیۡ

या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मैं तेरा बन्दा हूं और तेरे बन्दे और तेरी बन्दी का बेटा हूं। मेरी पेशानी तेरे दस्ते कुदरत में है। तेरा हुक्म जारी रहने वाला, तेरा फ़ैसला ऐन इन्साफ़ है। मैं तुझ से तेरे हर उस नाम की बरकत से जो तू ने अपना रखा या जो नाम तू ने अपनी किताब में उतारा या जो नाम अपनी मख़्लूक़ में से किसी को सिखाया या जो नाम अपने पास पर्दए ग़ैब में पोशीदा रखा येह सुवाल करता हूं कि तू कुरआन को मेरे दिल की बहार, मेरे सीने का नूर, मेरे ग़म की दवा और मेरे रंजो अलम को दूर करने वाला बना दे।(1)

ग़मगुसारे उम्मत, शफ़ीए़ रोजे़ क़ियामत صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़फ़िय्यत निशान है : "जो ग़मगीन इस दुआ़ को पढ़ लेगा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के ग़म को फ़रह़त में बदल देगा।" अ़र्ज़ की गई : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم क्या हम येह दुआ़ सीख न लें ?" फ़रमाया : "क्यूं नहीं, जो येह दुआ़ सुने उसे चाहिये कि इसे याद भी कर ले।"(2)

जिस्म में दर्द हो तो येह दुआ़ पढ़िये :

अगर तुम्हें या किसी और को जिस्म में दर्द हो तो शफ़ीए़ उमम صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के दम से इस का इ़लाज करो कि जब किसी को फोड़ा या ज़ख़्म वग़ैरा होता तो रसूले ज़ीवक़ार, शहनशाहे अबरार صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم अपनी शहादत की उंगली ज़मीन पर रखते फिर उठा कर येह कलिमात पढ़ते : بِسۡمِ اللّٰهِ تُرۡبَةُ اَرۡضِنَا بِرُقۡيَةِ بَعۡضِنَا يُشۡفٰى سَقِيۡمُنَا بِاِذۡنِ رَبِّنَا या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नाम से, हमारी ज़मीन की मिट्टी हम में से किसी के दम के सबब हमारे बीमार को हमारे परवर दगार عَزَّوَجَلَّ के हुक्म से शिफ़ा देती है।(3)

---

1 ......المسند للامام احمد بن حنبل، مسند عبداللہ بن مسعود، الحدیث: ۳۷۱۲، ج ۲، ص ۴۱۔

2 ......المسند للامام احمد بن حنبل، مسند عبداللہ بن مسعود، الحدیث: ۳۷۱۲، ج ۲، ص ۴۲۔

3 ......صحیح مسلم، کتاب السلام، باب استحباب الرقیۃ من العین......الخ، الحدیث: ۲۱۹۴، ص ۱۲۰۶۔

जब जिस्म में दर्द हो तो दर्द वाली जगह पर उंगली रख कर तीन मरतबा بِسْمِ اللّٰهِ और सात मरतबा येह दुआ़ पढ़िये : ''اَعُوْذُ بِعِزَّةِ اللّٰهِ وَقُدْرَتِهٖ مِنْ شَرِّ مَا اَجِدُ وَاُحَاذِرُ'' या'नी मैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इ़ज़्ज़त व क़ुदरत से उस चीज़ के शर से पनाह मांगता हूं जिस को मैं पाता हूं और जिस से मैं डरता हूं।(1)

मुसीबत के वक़्त की दुआ़ :

لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ الْعَلِيُّ الْحَلِيْمُ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ رَبُّ السَّمٰوٰتِ السَّبْعِ وَرَبُّ الْعَرْشِ الْكَرِيْمِ

या'नी बुलन्द और बुर्दबार अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई मा'बूद नहीं। बड़े अ़र्श के परवरदगार عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई इ़बादत के लाइक़ नहीं। सातों आस्मानों और इ़ज़्ज़त वाले अ़र्श के परवरदगार عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई मुस्तह़िक़्क़े इ़बादत नहीं।(2)

सोते वक़्त के अवराद और दुआ़एं :

जब सोने का इरादा हो तो बा वुज़ू और क़िब्ला रू हो कर सीधी करवट लेटिये और फिर 34 मरतबा اَللّٰهُ اَكْبَر, 33 मरतबा سُبْحٰنَ اللّٰه, 33 मरतबा اَلْحَمْدُ لِلّٰه पढ़िये और यूं दुआ़ कीजिये :

﴿1﴾....اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَعُوْذُ بِرِضَاكَ مِنْ سَخَطِكَ وَبِمُعَافَاتِكَ مِنْ عُقُوْبَتِكَ وَاَعُوْذُ بِكَ مِنْكَ اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ لَا اَسْتَطِيْعُ اَنْ اَبْلُغَ ثَنَاءً عَلَيْكَ وَلَوْ حَرَصْتُ وَلٰكِنْ اَنْتَ كَمَا اَثْنَيْتَ عَلٰى نَفْسِكَ

या'नी इलाही ! मैं तेरी रिज़ा की तेरी नाराज़ी से, तेरे अ़फ़्वो दरगुज़र की तेरी सज़ा से और तुझ से तेरी पनाह मागंता हूं ऐ मौला عَزَّوَجَلَّ अगर मैं चाहूं तब भी तेरी षना का ह़क़ अदा नहीं कर सकता बस तेरी ज़ात के लाइक़ तो वोह ता'रीफ़ है जो तू ने ख़ुद अपनी फ़रमाई।(3)

﴿2﴾.....اَللّٰهُمَّ بِاسْمِكَ اَمُوْتُ وَ اَحْيَا

या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मैं तेरे नाम के साथ ही मरता और जीता (सोता और जागता) हूं।(4)

﴿3﴾.... اَللّٰهُمَّ رَبَّ السَّمٰوٰتِ وَرَبَّ الْاَرْضِ وَرَبَّ كُلِّ شَيْءٍ وَّمَلِيْكَهٗ فَالِقَ الْحَبِّ وَالنَّوٰى وَمُنْزِلَ التَّوْرٰةِ وَالْاِنْجِيْلِ وَالْقُرْاٰنِ اَعُوْذُ بِكَ مِنْ شَرِّ كُلِّ ذِيْ شَرٍّ وَّمِنْ شَرِّ كُلِّ دَابَّةٍ اَنْتَ اٰخِذٌ بِنَاصِيَتِهَا اَنْتَ الْاَوَّلُ فَلَيْسَ قَبْلَكَ شَيْءٌ وَّاَنْتَ الْاٰخِرُ فَلَيْسَ بَعْدَكَ شَيْءٌ وَّاَنْتَ الظَّاهِرُ فَلَيْسَ فَوْقَكَ شَيْءٌ وَّاَنْتَ الْبَاطِنُ فَلَيْسَ دُوْنَكَ شَيْءٌ اِقْضِ عَنِّي الدَّيْنَ وَاَغْنِنِيْ مِنَ الْفَقْرِ.

---

1 ......صحيح مسلم، كتاب السلام، باب استحباب وضع يده على موضع الالم مع الدعاء، الحديث: ٢٢٠٢، ص ١٢٠٩ ـ

2 ......صحيح مسلم، كتاب الذكر والدعاء......الخ، باب دعاء الكرب، الحديث: ٢٧٣٠، ص ١٤٦١ ـ

3 ......صحيح مسلم، كتاب الذكر والدعاء......الخ، باب التسبيح اول النهار......الخ، الحديث: ٢٧٢٧، ص ١٤٦٠، بتغيرٍ ـ
السنن الكبرى للنسائی، كتاب الوتر، مايقول فی آخروتره، الحديث: ١٤٤٣، ج ١، ص ٤٥٢، مختصرًا ـ

4 ......صحيح مسلم، كتاب الذكر والدعاء......الخ، باب مايقول عندالنوم......الخ، الحديث: ٢٧١١، ص ١٤٥٤ ـ

या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ऐ ज़मीनो आस्मान और हर चीज़ के परवर दगार व मालिक ! दाने और गुठली को चीरने वाले ! तौरात, इन्जील और कुरआने मजीद को नाज़िल करने वाले ! मैं तुझ से हर शरीर के शर और हर जानवर के शर से तेरी पनाह मांगता हूं जिस की चोटी तेरे क़ब्ज़ए कुदरत में है । तू अव्वल है तुझ से पहले कोई चीज़ नहीं । तू आख़िर है तेरे बा'द कोई चीज़ नहीं । तू ज़ाहिर है तुझ से ऊपर कोई चीज़ नहीं । तू बातिन है तुझ से दूर कोई चीज़ नहीं । मुझ से क़र्ज़ दूर कर और मोहताजी से नजात अ़ता फ़रमा ।[1]

﴾4﴿..... اَللّٰھُمَّ اِنَّكَ خَلَقْتَ نَفْسِی وَاَنْتَ تَتَوَفَّاھَا لَكَ مَمَاتُھَا وَمَحْیَاھَا، اَللّٰھُمَّ اِنْ اَمَتَّھَا فَاغْفِرْ لَھَا وَاِنْ اَحْیَیْتَھَا فَاحْفَظْھَا
اَللّٰھُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ الْعَافِیَةَ فِی الدُّنْیَا وَالْاٰخِرَة

या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तू ने ही मेरी जान पैदा की और तू ही इसे मौत देगा । मौत व ह़यात का तू ही मालिक है । ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ जब तू इसे मौत दे तो इसे बख़्श दे और अगर ज़िन्दगी अ़ता करे तो इस की हि़फ़ाज़त फ़रमा । ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मैं तुझ से दोनों जहां की आ़फ़िय्यत का त़लबगार हूं ।[2]

﴾5﴿...... بِاسْمِكَ رَبِّی وَضَعْتُ جَنْبِی فَاغْفِرْلِیْ ذَنْبِی

या'नी मेरे परवर दगार عَزَّوَجَلَّ तेरे नाम के साथ करवट लेता हूं पस मेरे गुनाह मुआ़फ़ फ़रमा ।[3]

﴾6﴿.... اَللّٰھُمَّ قِنِیْ عَذَابَكَ یَوْمَ تَجْمَعُ عِبَادَكَ

या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ रोज़े मह़शर मुझे अपने अ़ज़ाब से मह़फ़ूज़ रखना ।[4]

﴾7﴿..... اَللّٰھُمَّ اَسْلَمْتُ نَفْسِیْ اِلَیْكَ وَوَجَّھْتُ وَجْھِیْ اِلَیْكَ وَفَوَّضْتُ اَمْرِیْ اِلَیْكَ وَاَلْجَاْتُ ظَھْرِیْ اِلَیْكَ رَغْبَةً وَّرَھْبَةً اِلَیْكَ
لَا مَلْجَاَ وَلَا مَنْجٰی مِنْكَ اِلَّا اِلَیْكَ اٰمَنْتُ بِكِتَابِكَ الَّذِیْ اَنْزَلْتَ وَنَبِیِّكَ الَّذِیْ اَرْسَلْتَ

या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मैं ने अपना आप तेरे सिपुर्द किया, अपना रुख़ तेरी त़रफ़ किया और अपने मुआ़मलात तेरे सिपुर्द किये । मैं ने अपनी पुश्त तेरी पनाह में दी तेरी त़रफ़ रग़बत करते हुए और तुझ से डरते हुए, तेरी बारगाह के सिवा कोई जाए पनाह नहीं और कोई जाए नजात नहीं । मैं तेरी नाज़िल कर्दा किताब और तेरे भेजे हुए रसूल पर ईमान लाया ।[5]

---

1 ......صحیح مسلم، کتاب الذکر والدعاء......الخ، باب مایقول عندالنوم......الخ، الحدیث:۲۷۱۳، ص ۱۴۵۴ـ۱۴۵۵ـ

2 ......صحیح مسلم، کتاب الذکر والدعاء......الخ، باب مایقول عندالنوم......الخ، الحدیث:۲۷۱۲، ص ۱۴۵۴ـ

3 ......کنزالعمال، کتاب المعیشة والعادات، الحدیث:۴۱۹۶۳، ج ۱۵، ص ۲۱۱ـ

4 ......سنن ابی داود، کتاب الادب، باب مایقول عندالنوم، الحدیث:۵۰۴۵، ج ۴، ص ۴۰۴، "تجمع" بدله "تبعث"ـ
الشمائل المحمدیة للترمذی، باب ماجاء فی صفة نوم رسول اللّٰه، الحدیث:۲۴۲، ص ۱۵۷ـ

5 ......صحیح مسلم، کتاب الذکر والدعاء......الخ، باب مایقول عندالنوم......الخ، الحدیث: ۲۷۱۰، ص ۱۴۵۳ـ۱۴۵۴، بتقدمٍ وتاخرٍ ـ

सोते वक़्त के अवराद में से येह दुआ़ आख़िर में मांगनी चाहिये कि सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللّٰه تعالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इसी का हुक्म इरशाद फ़रमाया और इस से पहले येह दुआ़ मांगिये :

﴾8﴿......اَللّٰهُمَّ اَيْقِظْنِي فِيْ اَحَبِّ السَّاعَاتِ اِلَيْكَ وَاسْتَعْمِلْنِي بِاَحَبِّ الْاَعْمَالِ اِلَيْكَ تُقَرِّبُنِيْ اِلَيْكَ زُلْفٰى وَتُبْعِدُنِيْ مِنْ سَخَطِكَ بُعْدًا اَسْئَلُكَ فَتُعْطِيْنِيْ وَاَسْتَغْفِرُكَ فَتَغْفِرُ لِيْ وَاَدْعُوْكَ فَتَسْتَجِيْبُ لِيْ

या'नी ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मुझे उस घड़ी बेदार फ़रमा जो तुझे सब से ज़ियादा पसन्द हो और उन कामों में मश्ग़ूल फ़रमा जो तेरी बारगाह में पसन्दीदा, तेरा क़ुर्ब अ़ता करने वाले और तेरे ग़ज़ब को दूर करने वाले हों। मैं तुझ से सुवाल करता हूं मुझे अ़ता कर, तुझ से मग़फ़िरत त़लब करता हूं मेरी मग़फ़िरत फ़रमा, तेरी बारगाह में दुआ़ गो हूं मेरी दुआ़ क़बूल फ़रमा।(1)

नींद से बेदार होते वक़्त की दुआ़एं :

﴾1﴿......اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ اَحْيَانَا بَعْدَ مَا اَمَاتَنَا وَاِلَيْهِ النُّشُوْرُ या'नी सब ख़ूबियां **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को जिस ने हमें मौत (नींद) के बा'द ह़यात (बेदारी) अ़ता फ़रमाई और उसी की त़रफ़ उठना है।(2)

﴾2﴿.....اَصْبَحْنَا وَاَصْبَحَ الْمُلْكُ لِلّٰهِ وَالْعَظَمَةُ وَالسُّلْطَانُ لِلّٰهِ وَالْعِزَّةُ وَالْقُدْرَةُ لِلّٰهِ या'नी हम ने और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मुल्क ने सुब्ह़ की, अ़ज़मत व बादशाहत और इ़ज़्ज़त व क़ुदरत **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही के लिये है।(3)

﴾3﴿....اَصْبَحْنَا عَلٰى فِطْرَةِ الْاِسْلَامِ وَكَلِمَةِ الْاِخْلَاصِ وَعَلٰى دِيْنِ نَبِيِّنَا مُحَمَّدٍ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَمِلَّةِ اَبِيْنَا اِبْرَاهِيْمَ حَنِيْفًا وَّمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ

या'नी हम ने सुब्ह़ की इस ह़ाल में कि हम इस्लाम और कलिमए तौह़ीद पर ए'तिक़ाद रखते हैं और अपने नबी ह़ज़रते मुह़म्मद صَلَّى اللّٰه تعالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के दीन पर हैं और अपने जद्दे अमजद ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام के दीन पर हैं जो हर बात़िल से जुदा थे और मुशरिकों से न थे।(4)

---

1 ......قوت القلوب، الفصل الثالث عشر كتاب جامع......الخ، ج ۱، ص ۶۴۔

2 ......صحیح مسلم، کتاب الذکر والدعاء......الخ، باب مایقول عندالنوم......الخ، الحدیث: ۲۷۱۱، ص ۱۴۵۴۔

3 ......قوت القلوب، الفصل الثالث عشر كتاب جامع......الخ، ج ۱، ص ۶۳۔

4 ......المسندللامام احمد بن حنبل، مسند المكيين، الحديث: ۱۵۳۶۰، ج ۵، ص ۲۳۸۔

اَللّٰھُمَّ بِکَ اَصْبَحْنَا وَبِکَ اَمْسَیْنَا وَبِکَ نَحْیَا وَبِکَ نَمُوْتُ وَاِلَیْکَ الْمَصِیْر.....﴿4﴾
या'नी इलाही ! हम ने तेरी मेहरबानी से सुब्ह़ की, तेरी ही मेहरबानी से शाम करेंगे और तेरी ही मेहरबानी से जियेंगे और तेरे ही फ़ज़्ल से मौत से हम कनार होंगे और तेरी ही त़रफ़ फिरना है।[1]

اَللّٰھُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ اَنْ تَبْعَثَنَا فِیْ ھٰذَا الْیَوْمِ اِلٰی کُلِّ خَیْرٍ وَّنَعُوْذُ بِكَ اَنْ نَّجْتَرِحَ فِیْهِ سُوْءً اَوْ نَجُرَّهٗ اِلٰی مُسْلِم....﴿5﴾
या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मैं तुझ से दुआ़ करता हूं कि आज के दिन हमें हर ख़ैर की त़रफ़ उठा और हम किसी बुराई में पड़ने या किसी मुसलमान को बुराई में मुब्तला करने से तेरी पनाह मांगते हैं।

क्यूंकि तू खुद अपनी पाक किताब कुरआने मजीद में फ़रमाता है :

وَهُوَالَّذِیْ یَتَوَفّٰىكُمْ بِالَّیْلِ وَیَعْلَمُ مَاجَرَحْتُمْ بِالنَّهَارِ ثُمَّ یَبْعَثُكُمْ فِیْهِ لِیُقْضٰۤى اَجَلٌ مُّسَمًّى ۚ (پ۷، الانعام:۶۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और वोही है जो रात को तुम्हारी रूहें क़ब्ज़ करता है और जानता है जो कुछ दिन में कमाओ फिर तुम्हें दिन में उठाता है कि ठहराई हुई मीआ़द पूरी हो।*

اَللّٰھُمَّ فَالِقَ الْاِصْبَاحِ وَجَاعِلَ اللَّیْلِ سَکَنًا وَّالشَّمْسِ وَالْقَمَرِ حُسْبَانًا اَسْئَلُكَ خَیْرَ ھٰذَا الْیَوْمِ وَخَیْرَ مَا فِیْهِ وَاَعُوْذُ بِكَ مِنْ شَرِّهٖ وَشَرِّ مَا فِیْه.....﴿6﴾
या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तारीकी चाक कर के सुब्ह़ निकालने वाले ! रात को चैन का ज़रीआ़ बनाने वाले ! सूरज और चांद को ह़िसाब का ज़रीआ़ बनाने वाले। मैं तुझ से इस दिन और जो कुछ इस में है इस की भलाई का सुवाल करता हूं और मैं तुझ से इस दिन और जो कुछ इस में है इस के शर से पनाह मांगता हूं।[2]

بِسْمِ اللّٰهِ مَاشَآءَ اللّٰهُ لَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ مَاشَآءَ اللّٰهُ كُلُّ نِعْمَةٍ مِّنَ اللّٰهِ مَاشَآءَ اللّٰهُ اَلْخَیْرُ كُلُّهٗ بِیَدِ اللّٰهِ مَاشَآءَ اللّٰهُ لَا یَصْرِفُ السُّوْءَ اِلَّا اللّٰهُ [3].....﴿7﴾
رَضِیْتُ بِاللّٰهِ رَبًّا وَّبِالْاِسْلَامِ دِیْنًا وَّبِمُحَمَّدٍ نَّبِیًّا [4] رَبَّنَا عَلَیْكَ تَوَكَّلْنَا وَاِلَیْكَ اَنَبْنَا وَاِلَیْكَ الْمَصِیْر
या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नाम से शुरूअ़ जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ चाहे उस के बिग़ैर कोई कुव्वत नहीं, जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ चाहे हर ने'मत उसी की त़रफ़ से है, जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ चाहे हर भलाई अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ही दस्ते कुदरत में है, जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ चाहे बुराइयों को टालने वाला अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई नहीं। मैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के रब्ब होने, इस्लाम के दीन होने और मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के नबी होने पर राज़ी हूं। ऐ हमारे रब्ब ! हम ने तुझी पर भरोसा किया और तेरी ही त़रफ़ रुजूअ़ लाए और तेरी ही त़रफ़ फिरना है।

---

1 ......سنن ابی داود، کتاب الادب، باب مایقول اذااصبح، الحدیث:۵۰۶۸، ج۴، ص۴۱۲، "الیک النشور" مکان "الیک المصیر"۔
2 ......قوت القلوب، الفصل الثالث عشر کتاب جامع......الخ، ج۱، ص۲۳۔
3 ......قوت القلوب، الفصل الثالث عشر کتاب جامع......الخ، ج۱، ص۲۳۔
تاریخ دمشق لابن عساکر، الخضر، ج۱۶، ص۴۲۷، دون "الخیر کله بیدالله"۔
4 ......سنن ابی داود، کتاب الادب، باب مایقول اذااصبح، الحدیث:۵۰۷۲، ج۴، ص۴۱۳۔

शाम के वक़्त की दुआ :

शाम के वक़्त भी नींद से बेदारी की तमाम दुआएं पढ़िये अलबत्ता लफ़्ज़ (اَصْبَحْنَا या'नी हम ने सुब्ह़ की) की जगह (اَمْسَيْنَا या'नी हम ने शाम की) पढ़ें और येह दुआ भी पढ़ सकते हैं :

اَعُوْذُ بِكَلِمَاتِ اللّٰهِ التَّامَّاتِ وَاَسْمَائِهٖ كُلِّهَا مِنْ شَرِّ مَا ذَرَاَ وَبَرَاَ وَمِنْ شَرِّ كُلِّ ذِیْ شَرٍّ وَّمِنْ شَرِّ كُلِّ دَابَّةٍ اَنْتَ اٰخِذٌ بِنَاصِيَتِهَا اِنَّ رَبِّیْ عَلٰی صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ

या'नी मैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के तमाम कलिमात और उस के तमाम अस्माए हुस्ना के साथ पनाह मांगता हूं हर उस चीज़ के शर से जिसे उस ने वुजूद बख़्शा और जिसे उस ने पैदा किया और हर शरीर के शर से और ज़मीन पर रहने वाली हर उस चीज़ के शर से जिस की चोटी तेरे क़ब्ज़ए कुदरत में है । बेशक मेरा रब्ब सीधे रास्ते पर मिलता है ।(1)

आईना देखते वक़्त की दुआ :

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ سَوّٰی خَلْقِیْ فَعَدَّلَهٗ وَكَرَّمَ صُوْرَةَ وَجْهِیْ وَحَسَّنَهَا وَجَعَلَنِیْ مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ

या'नी सब ख़ूबियां अल्लाह عَزَّوَجَلَّ को जिस ने मेरी तख़्लीक़ बराबर और ए'तिदाल के साथ फ़रमाई और मेरे चेहरे को इ़ज़्ज़त और अच्छी सूरत बख़्शी और मुझे मुसलमान बनाया ।(2)

कोई चीज़ ख़रीदते वक़्त की दुआ :

जब कोई जानवर या कोई और चीज़ ख़रीदें तो उस की पेशानी पकड़ कर येह कलिमात पढ़िये اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ خَيْرَهٗ وَخَيْرَ مَا جُبِلَ عَلَيْهِ وَاَعُوْذُ بِكَ مِنْ شَرِّهٖ وَشَرِّ مَا جُبِلَ عَلَيْهِ या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मैं तुझ से इस की और जिस फ़ित़रत पर इसे रखा गया है इस की ख़ैर का सुवाल करता हूं और इस के शर और जिस फ़ित़रत पर इसे रखा गया है इस के शर से मैं तेरी पनाह मागंता हूं ।(3)

---

1 ......قوت القلوب، الفصل الثالث عشر کتاب جامع......الخ، ج ١، ص ٢٣۔
تاریخ دمشق لابن عساکر، ذکر من اسمه کعب، کعب بن مانع بن ھیسوع......الخ، ج ٥٠، ص ١٦٦۔

2 ......المعجم الاوسط، الحدیث:٧٨٧، ج ١، ص ٢٣٠۔

3 ......سنن ابی داود، کتاب النکاح، باب فی جامع النکاح، الحدیث:٢١٦٠، ج ٢، ص ٣٦٢۔

निकाह़ की मुबारक बाद देते वक़्त की दुआ़ :

بَارَكَ اللّٰهُ فِيْكَ وَبَارَكَ عَلَيْكَ وَجَمَعَ بَيْنَكُمَا فِيْ خَيْرٍ. या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुझे बरकत दे, तुझ पर बरकत नाज़िल फ़रमाए और तुम दोनों को भलाई के साथ जम्अ़ रखे।(1)

क़र्ज़ अदा करते वक़्त की दुआ़ :

क़र्ज़ अदा करते हुए क़र्ज़ ख़्वाह को येह दुआ़ भी दीजिये : بَارَكَ اللّٰهُ لَكَ فِيْ اَهْلِكَ وَمَالِكَ या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तेरे अहलो माल में बरकत अ़ता फ़रमाए। क्यूंकि रह़मते आ़लमियान, सरवरे ज़ीशान صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमान है कि "क़र्ज़ का इवज़ शुक्रिया और अदाएगी है।"(2)

मज़्कूरा बाला दुआ़एं वोह हैं कि राहे आख़िरत के मुसाफ़िर के लिये इन्हें याद करना ज़रूरी है। इस के इ़लावा मज़ीद जैसे सफ़र, वुज़ू और नमाज़ वग़ैरा की दुआ़एं **किताबुल ह़ज**, **किताबुस्सलात** और **किताबुत्त़हारत** में बयान की जा चुकी हैं।

एक सुवाल और इस का जवाब :

अगर आप के ज़ेह्न में येह वस्वसा आए कि दुआ़ मांगने का क्या फ़ाइदा है ह़ालांकि तक़्दीर को कोई चीज़ नहीं टाल सकती ? तो जान लीजिये कि दुआ़ के सदक़े बलाओं का दूर होना भी तक़्दीर से है। लिहाज़ा दुआ़ बलाएं दूर करने और रह़मत पाने का एक सबब है जैसे ढाल तीर से बचाने का और पानी ज़मीन से सब्ज़ियां उगाने का एक ज़रीआ़ है, तो जिस त़रह़ ढाल तीर से बचाती है और दोनों एक दूसरे के मुक़ाबिल आ जाती हैं इसी त़रह़ दुआ़ और बला भी एक दूसरे के मुक़ाबिल रहती हैं। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की तक़्दीर पर ईमान लाने से येह ज़रूरी नहीं हो जाता कि हथयार न उठाए जाएं, ऐसा नहीं बल्कि ख़ुद **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का हुक्म है :

خُذُوْا حِذْرَكُمْ (پ۵، النسآء:۱۰۲) ***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :*** *अपनी पनाह लिये रखो।"*

और अगर ऐसा हो तो फिर तो ज़मीन में बीज बो कर इसे पानी ही न दिया जाए और येह ज़ेह्न बना लिया जाए कि अगर मुक़द्दर में सब्ज़ी का उगना हुवा तो उग आएगी अगर तक़्दीर में नहीं तो नहीं उगेगी। मुसब्बब का सबब से मरबूत़ होना ही पहली तक़्दीर है जो पलक झपकने बल्कि इस से भी ज़ियादा तेज़ है। फिर बतदरीज सबब के साथ साथ मुसब्बब का तरत्तुब होता है और तक़्दीर येह है कि ख़ैर व शर का फ़ैसला हो चुका यूं कि ख़ैर को किसी सबब के साथ और शर को इसे दूर करने वाले किसी सबब के साथ मुक़द्दर फ़रमाया गया है।

---

1 ......سنن ابی داود، کتاب النکاح، باب مایقال للمتزوج، الحدیث:۲۱۳۰، ج۲، ص۳۵۱۔

2 ......سنن النسائی، کتاب البیوع، الاستقراض، الحدیث:۴۶۹۲، ص۷۵۳۔

फिर दुआ के दीगर फ़वाइद भी हैं जिन्हें फ़ज़ाइले ज़िक्र के तह्त बयान किया जा चुका है। इन में से एक येह है कि दुआ के सबब दिल में इख़्लास पैदा किया जाता है और इबादत से अस्ल मक़्सूद भी येही है। सय्यिदुल आबिदीन, महबूबे रब्बुल आलमीन صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने दिलनशीन है : "اَلدُّعَاءُ مُخُّ الْعِبَادَةِ दुआ इबादत का मग़्ज़ है।"[1]

आम मुशाहदा भी येही है कि मख़्लूक़ के दिल ज़िक्रुल्लाह की तरफ़ उस वक़्त मुतवज्जेह होते हैं जब वोह किसी हाजत बरआरी के तालिब या परेशानी का शिकार होते हैं। क्यूंकि इन्सान की फ़ित्रत है कि जब उसे कोई तक्लीफ़ पहुंचती है तब वोह लम्बी लम्बी दुआएं करता है, लिहाज़ा हाजत बरआरी के लिये दुआ की ज़रूरत मुसल्लम है और दुआ दिल को आजिज़ी व मिस्कीनी के साथ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की तरफ़ मुतवज्जेह कर देती है। नीज़ दुआ ज़िक्रे इलाही का ज़रीआ है जिस का शुमार अशरफ़ इबादात में होता है। इसी वजह से अम्बियाए किराम व औलियाए उज़्ज़ाम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام और दीगर मुक़र्रबीने बारगाह पर ह़स्बे मरातिब ज़ियादा मसाइब नाज़िल होते हैं। क्यूंकि मसाइब दिल को मोह़ताजी और आजिज़ी के साथ बारगाहे इलाही की तरफ़ मुतवज्जेह रखते हैं उस की याद से ग़ाफ़िल नहीं करते। जब कि मालदारी उ़मूमन तकब्बुर का सबब बनती है, कि बन्दा जब खुद को ग़नी समझता है तो सरकश हो जाता है।

जिन अज़्कार और दुआओं को बयान करने का हम ने इरादा किया था वोह पूरी हो चुकी हैं। भलाई की तौफ़ीक़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही देता है। खाने, सफ़र और इयादत वग़ैरा जैसी दीगर दुआएं اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ अपने अपने मक़ाम पर बयान की जाएंगी। ज़ाते इलाही पर ही भरोसा है। अज़्कार व दुआओं का बयान पायए तक्मील को पहुंचा इस के बा'द वज़ाइफ़ व अवराद का बयान आएगा। اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ

وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَصَلَّى اللّٰهُ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ
وَعَلٰى اٰلِهٖ وَصَحْبِهٖ وَسَلَّمَ

---

1 ......سنن الترمذی، کتاب الدعوات، باب ماجاء فی فضل الدعاء، الحدیث:۳۳۸۲، ج۵، ص۲۴۳۔

अवराद की तरतीब और शब बेदारी की तफ़्सील का बयान

हम अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ने'मतों पर उस की कषीर ह़म्द करते हैं, ऐसा ज़िक्र करते हैं जो दिल में तकब्बुर व ग़ुरूर को नहीं रहने देता, उस का शुक्र अदा करते हैं कि उस ने दिन ज़िक्र व शुक्र का इरादा करने वाले के लिये रात को एक दूसरे के बा'द आने जाने वाला बनाया और दुरूद भेजते हैं उस के प्यारे नबी ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم पर जिन्हें बशीर व नज़ीर बना कर ह़क़ के साथ मबऊ़ष फ़रमाया और दुरूद भेजते हैं इन की आल व अस्ह़ाब पर कि जिन्हों ने इ़बादत में सुब्ह़ो शाम कोशिशें कीं ह़त्ता कि इन में से हर एक दीन में हिदायत देने वाला सितारा और रोशन चराग़ बन गया।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने ज़मीन को अपने बन्दों के ताबेअ़ इस लिये नहीं किया कि वोह बुलन्दो बाला मकानों (को दाइमी ठिकाना समझ कर इस) में सुकूनत पज़ीर हो जाएं बल्कि इस लिये ताबेअ़ बनाया कि वोह इसे (मुसाफ़िर की त़रह़) क़ियाम गाह जानें और मह़ज़ इतना ज़ादे राह लें जो वत़ने अस्ली (या'नी आख़िरत) के सफ़र में उन के काम आए, इस के जालों व हलाकतों से बचते हुए अपने लिये अ़मल व फ़ज़्ल के तोह़्फ़े ज़ख़ीरा करें और यक़ीन कर लें कि उ़म्र उन्हें ऐसे लिये जाती है जैसे किश्ती अपने सुवारों को। लोग दुन्या में मुसाफ़िर हैं, इन की पहली मन्ज़िल झूला और आख़िरी क़ब्र है, इन का वत़न जन्नत या जहन्नम, उ़म्र सफ़र की मसाफ़त, साल सफ़र के मराह़िल, महीने सफ़र के फ़रसंग[1] दिन सफ़र के मील, सांस सफ़र के क़दम, इत़ाअ़त सफ़र के लिये ज़ादे राह, अवक़ात सफ़र का अस्ल सरमाया और शहवात व अग़राज़ रास्ते के डाकू हैं। इस का नफ़्अ़ जन्नत में बड़ी सलत़नत और ने'मत के साथ अल्लाह तआ़ला का दीदार करने में कामयाब होना और इस का नुक़्सान जहन्नम के त़बक़ात में बेड़ियों, त़ौक़ों और दर्दनाक अ़ज़ाब के साथ अल्लाह तआ़ला से दूरी है। तो जो एक सांस के मुआ़मले में भी ग़फ़्लत करता और उसे क़ुर्बे इलाही का सबब बनने वाली इत़ाअ़त के बिग़ैर गुज़ारता है। तो क़ियामत के दिन उसे बे इन्तिहा नुक़्सान व ह़सरत का सामना होगा। इसी बड़े ख़त़रे और हौलनाक अम्र की वजह से तौफ़ीक़ याफ़्ता लोग मेह़नत व कोशिश के लिये तय्यार हो गए और

---

1 ....एक फरसंग तीन मील का होता है। (मुलतक़त़न फ़तावा रज़विया, जि.8 स.255)

लज़्ज़ाते नफ़्सानी को यक्सर छोड़ दिया, अपनी बक़िय्या उ़म्र को ग़नीमत जान कर दिन रात ज़िक्रे इलाही में बसर करने के शौक़, क़ुर्बे इलाही के हुसूल और दारुल क़रार (या'नी आख़िरत) की त़रफ़ कोशिश करते हुए मुख़्तलिफ़ अवक़ात के ए'तिबार से जुदा जुदा अवरादो वज़ाइफ़ मुरत्तब किये। लिहाज़ा त़रीक़े आख़िरत के इ़ल्म में येह ज़रूरी है कि तक़्सीमे अवराद की तफ़्सील बयान की जाए, नीज़ इ़बादात कि जिन की तशरीह़ पीछे गुज़र चुकी इन्हें मुख़्तलिफ़ अवक़ात के मुत़ाबिक़ तक़्सीम कर दिया जाए। येह दो अबवाब से वाज़ेह़ होगा।

पहला बाब : अवराद की फ़ज़ीलत और रात दिन में इन की तरतीब के बयान पर मुश्तमिल है।

दूसरा बाब : शब बेदारी का त़रीक़ा, इस की फ़ज़ीलत और इस से तअ़ल्लुक़ रखने वाली बातों के बयान पर मुश्तमिल है।

.....नेकियों का ज़ख़ीरा....

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !

*अल्लाह व रसूल عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللہ تعالیٰ علیہ والہٖ وسلَّم की ख़ुश्नूदी के हुसूल और बा किरदार मुसलमान बनने के लिये "**दा'वते इस्लामी**" के इशाअ़ती इदारे **मक्तबतुल मदीना** से "**मदनी इन्आ़मात**" नामी रिसाला ह़ासिल कर के इस के मुत़ाबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारने की कोशिश कीजिये और अपने अपने शहरों में होने वाले **दा'वते इस्लामी** के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में पाबन्दिये वक़्त के साथ शिर्कत फ़रमा कर ख़ूब ख़ूब सुन्नतों की बहारें लूटिये। "**दा'वते इस्लामी**" के सुन्नतों की तरबिय्यत के लिये बे शुमार **मदनी क़ाफ़िले** शहर ब शहर, गाऊं ब गाऊं सफ़र करते रहते हैं, आप भी सुन्नतों भरा सफ़र इख़्तियार फ़रमा कर अपनी आख़िरत के लिये "**नेकियों का ज़ख़ीरा**" इकठ्ठा करें। اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ आप अपनी ज़िन्दगी में ह़ैरत अंगेज़ त़ौर पर "**मदनी इन्क़िलाब**" बर्पा होता देखेंगे।*

बाब नम्बर 1 : अवराद की फ़ज़ीलत और तरतीब व अह़काम का बयान

अवराद की फ़ज़ीलत और इन की पाबन्दी का बयान कि येही बारगाहे इलाही तक रसाई का ज़रीआ़ है

जान लीजिये कि नूरे बसीरत से मुशाहदा करने वाले लोग येह बात जानते हैं कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से मुलाक़ात के सिवा कहीं नजात नहीं और मुलाक़ात का रास्ता सिवाए इस के कुछ नहीं कि बन्दा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से मह़ब्बत करते हुए दुन्या से रुख़्सत हो, इसे मा'रिफ़ते इलाही भी ह़ासिल हो। मह़बूब के दाइमी ज़िक्र और इस पर मुवाज़बत् के बिग़ैर उस से मह़ब्बत व उन्स ह़ासिल नहीं होता और न ही उस की ज़ात व सिफ़ात और अफ़्आ़ल में दाइमी ग़ौरो फ़िक्र के बिग़ैर उस की मा'रिफ़त ह़ासिल होती है। ज़ाते बारी तआ़ला और उस के अफ़्आ़ल के सिवा किसी का वुजूद नहीं, दुन्या और इस की शहवात को छोड़े बिग़ैर और इस में से ब क़दरे ज़रूरत लेने पर इक्तिफ़ा किये बिग़ैर दाइमी ज़िक्रो फ़िक्र मुयस्सर नहीं होता और येह उसी वक़्त होगा जब बन्दा अपने दिन रात को ज़िक्रो फ़िक्र के वज़ाइफ़ में मसरूफ़ रखे। नफ़्स चूंकि फ़ित्री तौर पर थकावट व उकताहट का शिकार हो जाता है इस लिये वोह ज़िक्रो फ़िक्र के मुअ़य्यन अस्बाब में से किसी एक पर सब्र नहीं करता बल्कि अगर इसे एक ही त़रीक़े पर रखा जाए तो वोह बोझ व उक्ताहट मह़सूस करता है। (मरवी है कि) अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मलाल नहीं डालता ह़त्ता कि तुम खुद मलाल में पड़ो।(1)(2)

अवराद को मुख़्तलिफ़ अक़्साम में तक़्सीम करने की वजह :

ज़िक्रो फ़िक्र में लुत़्फ़ पाने के लिये ज़रूरी है कि हर वक़्त के ए'तिबार से एक त़रीक़े से दूसरे त़रीक़े और एक नोअ़ से दूसरी नोअ़ की त़रफ़ मुन्तक़िल हुवा जाए ताकि मुन्तक़िल होने से ज़िक्रो फ़िक्र की लज़्ज़त ज़ियादा हो और रग़बत में इज़ाफ़ा हो और जूं जूं रग़बत में इज़ाफ़ा होगा ज़िक्रो फ़िक्र पर हमेशगी ह़ासिल होगी इसी वजह से अवराद को मुख़्तलिफ़ क़िस्मों में तक़्सीम किया गया।

---

(1)....... मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْمَنَّان मिरआतुल मनाजीह़, जि. 2 स. 264 पर इस के तह़त फ़रमाते हैं : अगर तुम खुद मलाल व मशक़्क़त वाले कामों को अपने ऊपर लाज़िम कर लो कि रोज़ाना सो रक्अ़त पढ़ने या हमेशा रोज़ा रखने की नज़्र मान लो तो तुम पर येह चीज़ें वाजिब हो जाएंगी फिर तुम मशक़्क़त में पड़ जाओगे मगर येह मशक़्क़त रब्ब ने न डाली तुम ने खुद अपने पर डाली येह मा'ना नहीं कि अल्लाह मलाल में नहीं पड़ता ह़त्ता कि तुम मलाल में पड़ो, रब्ब तआ़ला मलाल करने से पाक है।

(2)......صحيح البخاری، کتاب التهجد، باب مایکره من التشدید فی العبادة، الحدیث: ۱۱۵۱، ج۱، ص ۳۹۰۔

नफ़्स की फ़ित़रत :

बेहतर येह है कि नफ़्स तमाम अवक़ात ज़िक्रो फ़िक्र में मसरूफ़ रहे क्यूंकि येह फ़ित़री त़ौर पर दुन्यावी लज़्ज़ात की त़रफ़ माइल होता है। मिषाल के त़ौर पर अगर बन्दा अपने अवक़ात का आधा ह़िस्सा दुन्यावी तदबीरों और इस की जाइज़ ख़्वाहिशात में मसरूफ़ रखे और आधा इ़बादात में तो नफ़्स का मैलान दुन्या की त़रफ़ तरजीह़ पा जाएगा क्यूंकि फ़ित़री त़ौर पर भी वोह इसी के मुवाफ़िक़ है अगर्चे दोनों का वक़्त बराबर है लेकिन नफ़्स फ़ित़री त़ौर पर दुन्या की त़रफ़ ज़ियादा माइल होगा इस लिये कि दुन्यावी मुआ़मलात पर ज़ाहिर व बात़िन मुवाफ़िक़ होते हैं और दिल दुन्या को त़लब करने के लिये ख़ूब साफ़ और फ़ारिग़ होता है जब कि दिल को इ़बादात की त़रफ़ फेरने में मशक़्क़त होती है इस लिये इ़बादात में दिल की ह़ुज़ूरी व इख़्लास कभी कभी ही मुयस्सर होती है।

नजात के ख़्वाहिश मन्द का जदवल :

जो शख़्स बिग़ैर ह़िसाब के जन्नत में दाख़िले का ख़्वाहिश मन्द हो उसे चाहिये कि अपने तमाम अवक़ात को इत़ाअ़त में बसर करे, जो नेकियों वाले पलड़े को भारी करने का इरादा रखता हो उसे चाहिये कि अपना ज़ियादा वक़्त इत़ाअ़त में गुज़ारे और जो अच्छे व बुरे दोनों क़िस्म के आ'माल इख़्तियार करे उस का मुआ़मला ख़त़रे में है लेकिन अल्लाह तआ़ला की रह़मत से ना उम्मीद न हो, उस के करम से मुआ़फ़ी का मुन्तज़िर रहे, क़रीब है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अपने फ़ज़्लो करम से उस की मग़फ़िरत फ़रमा दे। येह वोह है जो नूरे बसीरत से देखने वालों के लिये मुन्कशिफ़ हुवा और अगर तुम अहले बसीरत में से नहीं तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने जो अपने रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से ख़ित़ाब फ़रमाया उस से इस्तिफ़ादा कर लो।

चन्द फ़रामीने बारी तआ़ला :

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने बन्दों में से अपने सब से ज़ियादा मुक़र्रब और बुलन्द दर्जा हस्ती (या'नी ह़ुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) से इरशाद फ़रमाया :

﴿1﴾

اِنَّ لَكَ فِي النَّهَارِ سَبْحًا طَوِيْلًا ۝٧ وَاذْكُرِ اسْمَ رَبِّكَ وَتَبَتَّلْ اِلَيْهِ تَبْتِيْلًا ۝٨

(پ۲۹، مزمل:۷،۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *बेशक दिन में तो तुम को बहुत से काम हैं और अपने रब्ब का नाम याद करो और सब से टूट कर उसी के हो रहो।*

﴾2﴿

وَاذْكُرِ اسْمَ رَبِّكَ بُكْرَةً وَّاَصِيْلًا ﴿۲۵﴾ وَمِنَ
الَّيْلِ فَاسْجُدْ لَهٗ وَسَبِّحْهُ لَيْلًا طَوِيْلًا ﴿۲۶﴾

(پ۲۹، الدھر:۲۵،۲۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और अपने रब्ब का नाम सुब्ह़ो शाम याद करो और कुछ रात में उसे सजदा करो और बड़ी रात तक उस की पाकी बोलो ।

﴾3﴿

فَاصْبِرْ عَلٰى مَا يَقُوْلُوْنَ وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ
قَبْلَ طُلُوْعِ الشَّمْسِ وَقَبْلَ الْغُرُوْبِ ﴿۳۹﴾
وَمِنَ الَّيْلِ فَسَبِّحْهُ وَاَدْبَارَ السُّجُوْدِ ﴿۴۰﴾

(پ۲۶، ق:۳۹،۴۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तो उन की बातों पर सब्र करो और अपने रब्ब की ता'रीफ़ करते हुए उस की पाकी बोलो सूरज चमकने से पहले और डूबने से पहले और कुछ रात गए उस की तस्बीह़ करो और नमाज़ों के बा'द ।

﴾4﴿

وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ حِيْنَ تَقُوْمُ ﴿۴۸﴾ وَمِنَ
الَّيْلِ فَسَبِّحْهُ وَاِدْبَارَ النُّجُوْمِ ﴿۴۹﴾

(پ۲۷، الطور:۴۸،۴۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और अपने रब्ब की ता'रीफ़ करते हुए उस की पाकी बोलो जब तुम खड़े हो और कुछ रात में उस की पाकी बोलो और तारों के पीठ देते ।

﴾5﴿

اِنَّ نَاشِئَةَ الَّيْلِ هِیَ اَشَدُّ وَطْاً وَّاَقْوَمُ
قِيْلًا ﴿۶﴾ (پ۲۹، مزمل:۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक रात का उठना, वोह ज़ियादा दबाव डालता है और बात ख़ूब सीधी निकलती है ।

﴾6﴿

وَمِنْ اٰنَآئِ الَّيْلِ فَسَبِّحْ وَاَطْرَافَ النَّهَارِ
لَعَلَّكَ تَرْضٰى ﴿۱۳۰﴾ (پ۱۶، طٰهٰ:۱۳۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और रात की घड़ियों में उस की पाकी बोलो और दिन के कनारों पर इस उम्मीद पर कि तुम राज़ी हो ।

﴾7﴿

وَاَقِمِ الصَّلٰوةَ طَرَفَيِ النَّهَارِ وَزُلَفًا مِّنَ الَّيْلِ
اِنَّ الْحَسَنٰتِ يُذْهِبْنَ السَّيِّاٰتِ (پ۱۲، هود:۱۱۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और नमाज़ क़ाइम रखो दिन के दोनों कनारों और कुछ रात के ह़िस्सों में बेशक नेकियां बुराइयों को मिटा देती हैं ।

फ़लाह़ पाने वालों की ता'रीफ़ में वारिद आयात :

अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ ने अपने कामयाब बन्दों की किस त़रह़ और किस के साथ ता'रीफ़ फ़रमाई है। चुनान्चे इरशाद होता है :

﴾1﴿

أَمَّنْ هُوَ قَانِتٌ آنَاءَ اللَّيْلِ سَاجِدًا وَّقَآئِمًا
يَّحْذَرُ الْاٰخِرَةَ وَيَرْجُوْا رَحْمَةَ رَبِّهٖ ؕ قُلْ
هَلْ يَسْتَوِي الَّذِيْنَ يَعْلَمُوْنَ وَالَّذِيْنَ لَا
يَعْلَمُوْنَ ؕ (پ۲۳، الزمر:۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *क्या वोह जिसे फ़रमां बरदारी में रात की घड़ियां गुज़रें सुजूद में और क़ियाम में, आख़िरत से डरता और अपने रब्ब की रह़मत की आस लगाए। क्या वोह नाफ़रमानों जैसा हो जाएगा ? तुम फ़रमाओ क्या बराबर हैं जानने वाले और अन्जान ?*

﴾2﴿

تَتَجَافٰى جُنُوْبُهُمْ عَنِ الْمَضَاجِعِ يَدْعُوْنَ
رَبَّهُمْ خَوْفًا وَّطَمَعًا ۫ (پ۲۱، السجدۃ:۱۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *उन की करवटें जुदा होती हैं ख़्वाब गाहों से और अपने रब्ब को पुकारते हैं डरते और उम्मीद करते।*

﴾3﴿

وَالَّذِيْنَ يَبِيْتُوْنَ لِرَبِّهِمْ سُجَّدًا وَّقِيَامًا ﴿۶۴﴾
(پ۱۹، الفرقان:۶۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और वोह जो रात काटते हैं अपने रब्ब के लिये सजदे और क़ियाम में।*

﴾4﴿

كَانُوْا قَلِيْلًا مِّنَ اللَّيْلِ مَا يَهْجَعُوْنَ ﴿۱۷﴾
وَبِالْاَسْحَارِ هُمْ يَسْتَغْفِرُوْنَ ﴿۱۸﴾
(پ۲۶، الذّٰریٰت:۱۷، ۱۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *वोह रात में कम सोया करते और पिछली रात इस्तिग़फ़ार करते।*

﴾5﴿

فَسُبْحٰنَ اللّٰهِ حِيْنَ تُمْسُوْنَ وَحِيْنَ تُصْبِحُوْنَ ﴿۱۷﴾
(پ۲۱، الروم:۱۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *तो **अल्लाह** की पाकी बोलो जब शाम करो और जब सुब्ह़ हो।*

﴾6﴿

وَلَا تَطْرُدِ الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَدٰوةِ وَالْعَشِيِّ يُرِيْدُوْنَ وَجْهَهٗ ؕ (پ۷، الانعام:۵۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और दूर न करो उन्हें जो अपने रब्ब को पुकारते हैं सुब्ह़ और शाम उस की रिज़ा चाहते।*

सूरज और चांद का ख़याल रखने वाले :

इन तमाम आयात से वाज़ेह़ हुवा कि बारगाहे इलाही तक रसाई का रास्ता येह है कि बन्दा अपने अवक़ात की ह़िफ़ाज़त करे और पाबन्दी के साथ इन्हें अवरादो वज़ाइफ़ में सर्फ़ करे इसी वजह से रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ''बन्दों में से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक सब से ज़ियादा पसन्दीदा बन्दे वोह हैं जो ज़िक्रे इलाही के लिये सूरज, चांद और सायों का ख़याल रखते हैं।''(1) (2)

(सूरज व चांद का तज़्किरा करते हुए) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

﴾1﴿

اَلشَّمْسُ وَالْقَمَرُ بِحُسْبَانٍ ۙ﴿۵﴾ (پ۲۷، الرحمٰن:۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *सूरज और चांद ह़िसाब से हैं।*

﴾2﴿

اَلَمْ تَرَ اِلٰى رَبِّكَ كَيْفَ مَدَّ الظِّلَّ ۚ وَلَوْ شَآءَ لَجَعَلَهٗ سَاكِنًا ۚ ثُمَّ جَعَلْنَا الشَّمْسَ عَلَيْهِ دَلِيْلًا ۙ﴿۴۵﴾ ثُمَّ قَبَضْنٰهُ اِلَيْنَا قَبْضًا يَّسِيْرًا ﴿۴۶﴾

(پ۱۹، الفرقان:۴۵،۴۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *ऐ मह़बूब ! क्या तुम ने अपने रब्ब को न देखा कि कैसा फैलाया साया और अगर चाहता तो इसे ठहराया हुवा कर देता फिर हम ने सूरज को इस पर दलील किया। फिर हम ने आहिस्ता आहिस्ता इसे अपनी त़रफ़ समेटा।*

﴾3﴿

وَالْقَمَرَ قَدَّرْنٰهُ مَنَازِلَ (پ۲۳، یٰسٓ:۳۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और चांद के लिये हम ने मन्ज़िलें मुक़र्रर कीं।*

---

❶....... या'नी वोह इन के ज़रीए वक़्त दाख़िल होने की ताक में रहते हैं ताकि मख़्सूस अवक़ात में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र करें। (اتحاف السادۃ المتقین، ج۵، ص۴۰۵)

❷......السنن الکبری للبیهقی، کتاب الصلاۃ، باب مراعاۃ ادلۃ المواقیت، الحدیث: ۱۷۸۱، ج۱، ص۵۵۸، "احب" بدل "ان خیار"۔

4

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और वोही है जिस ने तुम्हारे लिये तारे बनाए कि इन से राह पाओ ख़ुश्की और तरी के अन्धेरों में ।

وَهُوَ الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمُ النُّجُوْمَ لِتَهْتَدُوْا بِهَا فِيْ ظُلُمٰتِ الْبَرِّ وَالْبَحْرِ ؕ (پ۷،الانعام:۹۷)

इस से हरगिज़ येह ख़याल न करना कि सूरज और चांद के एक मन्ज़ूम व मुरत्तब ह़िसाब के मुत़ाबिक़ चलने और साए, रोशनी और सितारों के पैदा करने की ग़रज़ येह है कि दुन्यावी मुआ़मलात में इन से मदद ली जाए बल्कि इन की ग़रज़ येह है कि इन के ज़रीए़ अवक़ात की मिक़्दार मा'लूम कर के इन्हें इत़ाअ़त और दारे आख़िरत की तिजारत में सर्फ़ किया जाए । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का येह मुबारक फ़रमान भी इसी की त़रफ़ राहनुमाई करता है । चुनान्चे, इरशाद होता है :

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और वोही है जिस ने रात और दिन की बदली रखी उस के लिये जो ध्यान करना चाहे या शुक्र का इरादा करे ।

وَهُوَ الَّذِيْ جَعَلَ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ خِلْفَةً لِّمَنْ اَرَادَ اَنْ يَّذَّكَّرَ اَوْ اَرَادَ شُكُوْرًا ﴿۶۲﴾ (پ۱۹،الفرقان:۶۲)

या'नी उस ने रात और दिन को एक दूसरे के पीछे आने वाला बनाया ताकि अगर इन में से किसी एक वक़्त में कोई अ़मल रह जाए तो दूसरे वक़्त में इस का तदारुक कर लिया जाए । नीज़ येह भी बयान फ़रमा दिया कि येह ज़िक्रो फ़िक्र और शुक्र के लिये है न कि किसी और चीज़ के लिये । एक जगह इरशाद होता है :

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और हम ने रात और दिन को दो निशानियां बनाया तो रात की निशानी मिटी हुई रखी और दिन की निशानी दिखाने वाली की, कि अपने रब्ब का फ़ज़्ल तलाश करो और बरसों की गिनती और ह़िसाब जानो ।

وَجَعَلْنَا الَّيْلَ وَالنَّهَارَ اٰيَتَيْنِ فَمَحَوْنَاۤ اٰيَةَ الَّيْلِ وَجَعَلْنَاۤ اٰيَةَ النَّهَارِ مُبْصِرَةً لِّتَبْتَغُوْا فَضْلًا مِّنْ رَّبِّكُمْ وَلِتَعْلَمُوْا عَدَدَ السِّنِيْنَ وَالْحِسَابَ ؕ (پ۱۵،بنی اسرآءیل:۱۲)

इस आयते मुबारका में जिस फ़ज़्ल की तलाश का हुक्म है वोह षवाब और मग़फ़िरत ही है । हम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से सुवाल करते हैं कि हमें अपनी रिज़ा वाले काम करने की तौफ़ीक़ इनायत फ़रमाए ।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ...... صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

अवराद की ता'दाद और तरतीब का बयान

जान लीजिये ! **दिन** के वज़ाइफ़ सात हैं : (1).....तुलूए़ फ़ज्र से तुलूए़ तुलूए़ आफ़्ताब तक एक वज़ीफ़ा है। (2-3).....तुलूए़ आफ़्ताब से ज़वाल तक दो वज़ीफ़े हैं। (4-5).....ज़वाल से ले कर अ़स्र के वक़्त तक भी दो वज़ीफ़े हैं। (6-7)....अ़स्र से मग़रिब तक भी दो वज़ीफ़े हैं।

रात को चार वज़ाइफ़ में तक़्सीम किया गया है : (1-2).....मग़रिब से ले कर लोगों के सोने तक दो वज़ीफ़े हैं। (3-4)......रात के दूसरे निस्फ़ से ले कर तुलूए़ फ़ज्र तक भी दो वज़ीफ़े हैं।

दिन के वज़ाइफ़ की तफ़्सील

पहला वज़ीफ़ा :

तुलूए़ फ़ज्र से तुलूए़ आफ़्ताब तक। येह वक़्त फ़ज़ीलत व शराफ़त वाला है और इस की फ़ज़ीलत व शराफ़त की दलील येह है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इस की क़सम खाई है।

चुनान्चे, इरशाद फ़रमाया :

وَالصُّبْحِ اِذَا تَنَفَّسَ ﴿۱۸﴾ (پ۳۰، التکویر:۱۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और (क़सम है) सुब्ह़ की जब दम ले।*

अपनी ता'रीफ़ बयान करते हुए इस का ज़िक्र फ़रमाया :

فَالِقُ الْاِصْبَاحِ (پ۷، الانعام:۹۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *तारीकी चाक कर के सुब्ह़ निकालने वाला।*

(एक जगह) इरशाद फ़रमाया :

قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ ﴿۱﴾ (پ۳۰، الفلق:۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *तुम फ़रमाओ मैं उस की पनाह लेता हूं जो सुब्ह़ का पैदा करने वाला है।*

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इस वक़्त में साए को समेटने से अपनी क़ुदरत का इज़्हार यूं फ़रमाया :

ثُمَّ قَبَضْنٰهُ اِلَیْنَا قَبْضًا یَّسِیْرًا ﴿۴۶﴾ (پ۱۹، الفرقان:۴۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *फिर हम ने आहिस्ता आहिस्ता इसे अपनी त़रफ़ समेटा।*

येह वोह वक़्त है जिस में रात का साया समेट कर सूरज की रोशनी को फैलाया जाता है और इस वक़्त में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने लोगों की तस्बीह़ की त़रफ़ राहनुमाई फ़रमाई।

चुनान्चे, इरशाद फ़रमाया :

فَسُبْحٰنَ اللّٰهِ حِیْنَ تُمْسُوْنَ وَ حِیْنَ تُصْبِحُوْنَ ﴿۱۷﴾ (پ ۲۱، الروم: ۱۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तो **अल्लाह** की पाकी बोलो जब शाम करो और जब सुब्ह़ हो।

एक मक़ाम पर इरशाद फ़रमाया :

وَ سَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ قَبْلَ طُلُوْعِ الشَّمْسِ وَ قَبْلَ غُرُوْبِهَا ۚ وَ مِنْ اٰنَآئِ الَّیْلِ فَسَبِّحْ وَ اَطْرَافَ النَّهَارِ لَعَلَّكَ تَرْضٰى ﴿۱۳۰﴾ (پ ۱۶، طٰهٰ: ۱۳۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और अपने रब्ब को सराहते (ता'रीफ़ करते) हुए उस की पाकी बोलो सूरज चमकने से पहले और उस के डूबने से पहले और रात की घड़ियों में उस की पाकी बोलो और दिन के कनारों पर इस उम्मीद पर कि तुम राज़ी हो।

एक जगह इरशाद फ़रमाया :

وَ اذْكُرِ اسْمَ رَبِّكَ بُكْرَةً وَّ اَصِیْلًا ۚ ﴿۲۵﴾ (پ ۲۹، الدھر: ۲۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और अपने रब्ब का नाम सुब्ह़ो शाम याद करो।

तरतीब : इस वज़ीफ़े को नींद से बेदार होने के वक़्त से शुरूअ़ कर दे।

बेदार होने के बा'द की दुआ़ :

जब सो कर उठे तो बेहतर येह है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ज़िक्र से इब्तिदा करते हुए येह दुआ़ पढ़े : اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِی اَحْیَانَا بَعْدَ مَا اَمَاتَنَا وَاِلَیْهِ النُّشُوْرُ या'नी तमाम ता'रीफ़ **अल्लाह** तआ़ला के लिये जिस ने हमें मौत (नींद) के बा'द ह़यात (बेदारी) अ़ता फ़रमाई और हमें उसी की त़रफ़ लौटना है।[1]

इस के इ़लावा वोह तमाम दुआ़एं व आयात पढ़े जिन्हें हम ने "**दुआ़ओं के बयान**" में बेदार होते वक़्त की दुआ़ओं में ज़िक्र किया है। इसी दौरान लिबास पहने और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हुक्म की बजा आवरी के लिये सित्रे औ़रत और इ़बादत पर मदद ह़ासिल करने की निय्यत करे, रियाकारी व तकब्बुर मक़्सूद न हो। अगर ज़रूरत हो तो बैतुल ख़ला की त़रफ़ मुतवज्जेह हो और पहले अपना बायां पाउं दाख़िल करे और वोह दुआ़एं पढ़े जो हम ने "त़हारत के बयान" में बैतुल ख़ला में जाने और निकलने के सिलसिले में ज़िक्र की हैं। फिर सुन्नत के मुत़ाबिक़ मिस्वाक करे और उन तमाम सुन्नतों व दुआ़ओं की रिआ़यत करते हुए वुज़ू करे जिन्हें हम "**त़हारत के बयान**" में ज़िक्र कर आए हैं। माक़ब्ल हम ने तमाम इ़बादात को फ़र्दन फ़र्दन इस लिये ज़िक्र कर दिया ताकि यहां सिर्फ़ तरकीब और तरतीब का ज़िक्र करें। जब वुज़ू से फ़ारिग़ हो तो फ़ज्र की सुन्नतें घर में ही पढ़े कि रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم इसी त़रह़ किया करते थे।

---

1 ......صحیح البخاری، کتاب الدعوات، باب وضع الیدالیمنی تحت الخد الایمن، الحدیث: ۶۳۱۴، ج ۴، ص ۱۹۲۔

फ़ज्र की सुन्नतों के बा'द की दुआ़ :

सुन्नतें ख़्वाह घर में अदा की हों या मस्जिद में, अदा करने के बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنۡھُمَا से मरवी येह दुआ़ पढ़े : اَللّٰھُمَّ اِنِّیۡ اَسۡئَلُکَ رَحۡمَۃً مِّنۡ عِنۡدِکَ تَھۡدِیۡ بِھَا قَلۡبِی या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मैं तुझ से तेरी रह़मत का सुवाल करता हूं कि तू इस के ज़रीए़ मेरे दिल को हिदायत अ़ता फ़रमा।[1] (पूरी दुआ़ किताबुल अज़्कार बाब नम्बर 3 सफ़्ह़ा 937 पर है) फिर घर से निकल कर मस्जिद का रुख़ करे और मस्जिद की त़रफ़ जाते वक़्त की दुआ़ को न भूले, नमाज़ के लिये दौड़ता न जाए बल्कि सुकून और वक़ार से चले जैसा कि मरवी है। उंगलियों को एक दूसरे में न डाले, मस्जिद में दाख़िल हो तो पहले सीधा पाउं दाख़िल करे, मस्जिद में दाख़िल होते वक़्त की दुआ़ पढ़े जो ह़दीष शरीफ़ में आई है, अगर वुस्अ़त पाए तो पहली सफ़ की कोशिश करे, न तो लोगों की गर्दनें फ़लांगे और न ही किसी से मुज़ाह़मत करे जैसा कि "**जुमुआ़ के बयान**" में गुज़रा, अगर घर में फ़ज्र की सुन्नतें नहीं पढ़ी थीं तो अब पढ़ ले और ज़िक्र कर्दा दुआ़ में मश्ग़ूल हो जाए, अगर सुन्नतें पढ़ चुका है तो दो रक्अ़त तहिय्यतुल मस्जिद पढ़ कर[2] जमाअ़त के इन्तिज़ार में बैठ जाए, फ़ज्र की जमाअ़त अन्धेरे में क़ाइम करना मुस्तह़ब है कि "ह़ुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّی اللّٰہُ تعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم सुब्ह़ की नमाज़ अन्धेरे में अदा फ़रमाया करते थे।"[3] [4]

मक़्बूल ह़ज व उ़मरे का षवाब :

नमाज़े बा जमाअ़त ख़ुसूसन फ़ज्र व इ़शा की जमाअ़त कभी तर्क न करे कि इन की बड़ी फ़ज़ीलत है। चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنۡہُ से मरवी है कि ह़ुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने नमाज़े फ़ज्र के मुतअ़ल्लिक़ इरशाद फ़रमाया :

---

1 ......صحیح ابنِ خزیمۃ، کتاب الصلاۃ، باب الدعاء بعدر کعتی الفجر، الحدیث:۱۱۱۹، ج۲، ص۱۶۲۔

2 .... **अह़नाफ़ के नज़्दीक :** तुलूए़ फ़ज्र से तुलूए़ आफ़्ताब तक सिवाए दो रक्अ़त सुन्नते फ़ज्र के कोई नफ़्ल नमाज़ जाइज़ नहीं। (बहारे शरीअ़त, जि.1 स.455)

3 .... **अह़नाफ़ के नज़्दीक :** फ़ज्र में ताख़ीर कर के उजाले में पढ़ना मुस्तह़ब है। (माख़ूज़ अज़ बहारे शरीअ़त, जि.1 स.451) नीज़ तिरमिज़ी शरीफ़ की रिवायत है कि रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "नमाज़े फ़ज्र ख़ूब उजाला कर के पढ़ो कि इस का षवाब ज़ियादा है।"
(جامع الترمذی،ابواب الصلاۃ،باب ماجاء فی الاسفاربالفجر،الحدیث:۱۵۴، ج۱،ص۲۰۴)

4 ......صحیح مسلم، کتاب المساجد و مواضع الصلاۃ، باب استحباب التبکیر بالصبح......الخ، الحدیث:۶۴۶، ص۳۲۳۔

"जिस ने वुज़ू किया फिर मस्जिद की त़रफ़ मुतवज्जेह हुवा ताकि नमाज़ अदा करे उसे हर क़दम के बदले एक नेकी मिलेगी और एक गुनाह मिटाया जाएगा और इस नेकी की मिष्ल मज़ीद 10 नेकियां मिलेंगी, जब नमाज़ पढ़ कर तुलूए़ आफ़्ताब के वक़्त वापस लौटे तो उस के जिस्म के हर बाल के बदले उस के लिये एक नेकी लिखी जाएगी और ह़ज्जे मक़्बूल के साथ वापस लौटेगा, अगर वहीं बैठा रहे ह़त्ता कि चाश्त की नमाज़ भी पढ़ ले तो उस के लिये हर रक्अ़त के बदले 20 लाख नेकियां लिखी जाएंगी और जिस ने इ़शा की नमाज़ अदा की तो उस के लिये भी इसी की मिष्ल षवाब है और वोह मक़्बूल उ़मरे के साथ लौटेगा।"(1)

राहे ख़ुदा में जिहाद के बराबर अ़मल :

तुलूए़ फ़ज्र से पहले ही मस्जिद में चले जाना बुज़ुर्गों की आ़दत थी। एक ताबेई़ बुज़ुर्ग फ़रमाते हैं : मैं तुलूए़ फ़ज्र से पहले मस्जिद में दाख़िल हुवा तो मेरी मुलाक़ात ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عَنْہُ से हुई, उन्हों ने मुझ पर सबक़त करते हुए मुझ से फ़रमाया : "ऐ भतीजे ! किस चीज़ के लिये इस वक़्त तू अपने घर से निकला ?" मैं ने अ़र्ज़ की : "सुब्ह़ की नमाज़ के लिये।" फ़रमाया : "तेरे लिये ख़ुशख़बरी है, इस वक़्त घर से निकल कर मस्जिद में बैठने को हम राहे ख़ुदा में जिहाद करने के बराबर समझते हैं।" या इस त़रह़ फ़रमाया : "इस वक़्त घर से निकल कर मस्जिद में बैठने को हम रसूलुल्लाह صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की मइय्यत में जिहाद के बराबर समझते हैं।"

अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْھَہُ الْکَرِیْم फ़रमाते हैं : एक रात ह़ुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे़ अफ़्लाक صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم हमारे पास तशरीफ़ लाए। मैं और ह़ज़रते फ़ाति़मा رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْھَا सोए हुए थे, आप ने इरशाद फ़रमाया : "तुम नमाज़ क्यूं नहीं पढ़ते ?" अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْھَہُ الْکَرِیْم फ़रमाते हैं : मैं ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم हमारी जानें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के क़ब्ज़ए क़ुदरत में हैं जब वोह हमें बेदार करना चाहेगा कर देगा।" आप صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم वापस तशरीफ़ ले गए। मैंने आप صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को वापस तशरीफ़ ले जाते (अपना हाथ) रान पर मार कर येह (आयते त़य्यिबा तिलावत) करते सुना :

---

1 ......تاریخ مدینہ دمشق لابن عساکر، سعید بن خالد بن ابی طویل، الحدیث:۴۷۱۳، ج ۲۱، ص۴۷۔۴۸۔

وَ كَانَ الْاِنْسَانُ اَكْثَرَ شَیْءٍ جَدَلًا (۵۴)

(پ۱۵، الکھف:۵۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और आदमी हर चीज़ से बढ़ कर झगड़ालू है।*[1]

बेहतर येह है कि सुन्नते फ़ज्र और दुआ़ के बा'द जमाअ़त क़ाइम होने तक इस्तिग़फ़ार व तस्बीह़ में मश्ग़ूल रहे। 70 मरतबा येह पढ़े : اَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ الَّذِیْ لَا اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْحَیُّ الْقَیُّوْمُ وَاَتُوْبُ اِلَیْهِ या'नी मैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से मग़फ़िरत त़लब करता हूं जिस के सिवा कोई मा'बूद नहीं, वोह ख़ुद ज़िन्दा दूसरों को क़ाइम रखने वाला है और मैं उसी की त़रफ़ रुजूअ़ करता हूं।

100 मरतबा येह पढ़े سُبْحٰنَ اللّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَلَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَر या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ पाक है तमाम ता'रीफ़ें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई मा'बूद नहीं और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ सब से बड़ा है।

फिर उन तमाम ज़ाहिरी व बात़िनी आदाब की रिआ़यत करते हुए फ़र्ज़ अदा करे जिन्हें हम "**किताबुस्सलात**" में "**नमाज़ व इक़्तिदा के बयान**" में ज़िक्र कर चुके हैं। जब फ़र्ज़ पढ़ चुके तो तुलूए़ आफ़्ताब तक मस्जिद में बैठ कर ज़िक्रुल्लाह में मसरूफ़ रहे, अ़न क़रीब हम इस की तरतीब बयान करेंगे।

चार ग़ुलाम आज़ाद करने से ज़ियादा मह़बूब अ़मल :

मरवी है कि रसूले अकरम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "मुझे चार ग़ुलाम आज़ाद करने से ज़ियादा येह पसन्द है कि मैं नमाज़े फ़ज्र से तुलूए़ आफ़्ताब तक अपनी जगह बैठ कर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र करूं।"[2]

नीज़ मरवी है कि "हुज़ूर नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم जब फ़ज्र की नमाज़ अदा फ़रमाते तो तुलूए़ आफ़्ताब तक नमाज़ पढ़ने की जगह पर ही तशरीफ़ फ़रमा रहते।"[3]

बा'ज़ रिवायात में है कि "फिर दो रक्अ़तें अदा फ़रमाते।" या'नी तुलूए़ आफ़्ताब के बा'द दो रक्अ़तें अदा फ़रमाते।[4] इस नमाज़ की फ़ज़ीलत में इतनी रिवायात मरवी हैं कि उन्हें शुमार नहीं किया जा सकता। ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ह़सन बसरी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : वोह चीज़ें कि जिन्हें हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم अपने रब्ब عَزَّوَجَلَّ की

---

1 ......صحیح مسلم، کتاب صلاۃ المسافرین وقصرھا، باب ماروی فیمن نام اللیل......الخ، الحدیث:۷۷۵، ص ۳۹۲۔

2 ......سنن ابی داود، کتاب العلم، باب فی القصص، الحدیث:۳۶۶۷، ج۳، ص ۴۵۲۔

3 ......صحیح مسلم، کتاب المساجد ومواضع الصلاۃ، باب فضل الجلوس فی مصلاہ......الخ، الحدیث:۶۸۰، ص۳۳۷۔

4 ......قوت القلوب، الفصل السابع فی ذکر اورادالنھار، ج ۱، ص ۳۲۔

रह़मत में से ज़िक्र फ़रमाया करते थे इन में से येह भी है कि अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया : ''ऐ इब्ने आदम ! तू नमाज़े फ़ज्र व अ़स्र के बा'द एक-एक साअ़त मेरा ज़िक्र कर मैं इन दोनों वक़्तों के दरमियान तुझे किफ़ायत करूंगा।''(1)

नमाज़े फ़ज्र के बा'द के वज़ाइफ़ :

जब इस की फ़ज़ीलत ज़ाहिर हो चुकी तो चाहिये कि नमाज़े फ़ज्र के बा'द तुलूए़ आफ़्ताब तक बैठा रहे और किसी से कलाम न करे बल्कि बेहतर येह है कि तुलूए़ आफ़्ताब तक इस का वज़ीफ़ा इन चार अक़्साम पर मुश्तमिल हो : (1).....दुआ़एं पढ़े। (2).....अज़्कार को बार बार दोहराता रहे। (3).....कु़रआने पाक की तिलावत और (4).....ग़ौरो फ़िक्र में मसरूफ़ रहे।

﴾1﴿....दुआ़एं :

जब भी नमाज़ से फ़ारिग़ हो तो येह पढ़े :

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّعَلٰی اٰلِ مُحَمَّدٍ وَّسَلِّمْ،اَللّٰھُمَّ اَنْتَ السَّلَامُ وَمِنْكَ
السَّلَامُ وَاِلَیْكَ یَعُوْدُ السَّلَامُ حَیِّنَا رَبَّنَا بِالسَّلَامِ وَاَدْخِلْنَا دَارَ السَّلَامِ تَبَارَكْتَ یَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

या'नी ऐ अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ हज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم और उन की आल पर दुरूदो सलाम नाज़िल फ़रमा। ऐ अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ तू सलामती देने वाला है और तेरी ही त़रफ़ से सलामती है और तेरी त़रफ़ ही सलामती लौटती है। ऐ हमारे रब्ब عَزَّ وَجَلَّ हमें सलामती के साथ ज़िन्दा रख और सलामती के घर (या'नी जन्नत) में दाख़िल फ़रमा। तू बरकत वाला है ऐ जलाल व बुज़ुर्गी वाले।

फिर वोह दुआ़ पढ़े जो रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم पढ़ा करते थे, जो येह है :

سُبْحٰنَ رَبِّیَ الْعَلِیِّ الْاَعْلَی الْوَھَّابِ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِیْكَ لَهٗ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ یُحْیِیْ وَیُمِیْتُ وَھُوَ حَیٌّ لَّا یَمُوْتُ بِیَدِهِ الْخَیْرُ وَھُوَ عَلٰی كُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ،لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ اَھْلُ النِّعْمَةِ وَالْفَضْلِ وَالثَّنَاءِ الْحَسَنِ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَلَا نَعْبُدُ اِلَّا اِیَّاهُ مُخْلِصِیْنَ لَهُ الدِّیْنَ وَلَوْ كَرِهَ الْكَافِرُوْنَ

या'नी मेरा रब्ब عَزَّ وَجَلَّ पाक है जो बुलन्दो बाला और बहुत ज़ियादा अ़त़ा फ़रमाने वाला है। अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ के सिवा कोई मा'बूद नहीं, वोह अकेला है उस का कोई शरीक नहीं, उसी के लिये है बादशाही और उसी के लिये ह़म्द है, वोही ज़िन्दा करता और मारता है और वोह ज़िन्दा है उस को हरगिज़ कभी मौत नहीं आएगी, तमाम भलाइयां उसी के दस्ते कु़दरत में हैं और वोह हर चीज़ पर क़ादिर है।

1 ......حلية الاولياء، محمد بن صبيح بن السماک، الحديث:١١٩٨٩، ج٨، ص٢٣٣۔

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई मा'बूद नहीं जो ने'मत व फ़ज़्ल और अच्छी षना वाला है । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई मा'बूद नहीं और हम उसी की बन्दगी करते हैं निरे उस के बन्दे हो कर पड़े बुरा मानें काफ़िर ।[1]

फिर वोह दुआ़एं पढ़े जिन्हें हम "दुआ़ओं के बयान" के तीसरे और चौथे बाब में ज़िक्र कर आए हैं। अगर क़ुदरत हो तो वोह तमाम दुआ़एं पढ़े या इन में से वोह दुआ़ याद कर ले जिसे अपने ह़ाल के ज़ियादा मुवाफ़िक़, दिल को ज़ियादा नर्म करने वाली और ज़बान पर ज़ियादा हलकी जाने ।

﴾2﴿.....बार बार किये जाने वाले अज़्कार :

येह वोह कलिमात हैं जिन्हें बार बार पढ़ने के फ़ज़ाइल आए हैं। इन्हें ज़िक्र कर के हम कलाम को त़वील नहीं करना चाहते। बेहतर येह है कि इन में से हर एक कम अज़ कम तीन या सात मरतबा या ज़ियादा से ज़ियादा 70 या 100 मरतबा पढ़े जब कि दरमियानी मिक़्दार 10 मरतबा है। लिहाज़ा अपनी फ़राग़त व वक़्त की वुस्अ़त के मुत़ाबिक़ इन अज़्कार को बार बार दोहराए, ज़ियादा की फ़ज़ीलत ज़ियादा है मगर दरमियानी मिक़्दार ही राहे ए'तिदाल है और वोह येह है कि 10 मरतबा पढ़े और हमेशा पढ़े, येही ज़ियादा लाइक़ है क्यूंकि बेहतरीन अ़मल वोह है जो हमेशा हो अगर्चे क़लील हो। हर वोह वज़ीफ़ा जिस की कषरत पर मुवाज़बत मुमकिन न हो इस की क़लील मिक़्दार ही अफ़्ज़ल होगी जब कि हमेशगी के साथ हो और दिल में उस कषरत से ज़ियादा अषर करने वाली होगी जो कभी कभी हो। हमेशा किये जाने वाले अ़मले क़लील की मिषाल पानी के उन क़त़रों की सी है जो मुसलसल ज़मीन पर गिरते रहते हैं आख़िरे कार ज़मीन में गढ़ा हो जाता है अगर्चे येह पथ्थर पर ही गिरें इस के बर अ़क्स वोह अ़मल जो कषरत के साथ हो लेकिन मुसलसल न हो इस की मिषाल उस पानी की त़रह़ है जो एक ही मरतबा गिर जाए या चन्द बार मुतफ़र्रिक़ जगहों पर मुख़्तलिफ़ अवक़ात में गिरे तो इस का कोई अषर ज़ाहिर नहीं होता।

बार-बार पढ़े जाने वाले दस कलिमात :

(1).... لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ يُحْيِيْ وَيُمِيْتُ، وَهُوَ حَيٌّ لَّا يَمُوْتُ، بِيَدِهِ الْخَيْرُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ

1......المسندللامام احمد بن حنبل، مسند المدنيين، الحديث:١٦٥٣٨، ج٥، ص ٥٦١۔
سنن ابی داود، کتاب الوتر، باب مايقول الرجل اذاسلّم، الحديث:١٥٠٦، ج٢، ص١١٨، مفهومًا۔

या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई मा'बूद नहीं, वोह अकेला है उस का कोई शरीक नहीं, उसी के लिये है बादशाही और उसी के लिये ह़म्द है, वोही ज़िन्दा करता और मारता है और वोह ज़िन्दा है उस को हरगिज़ कभी मौत नहीं आएगी, तमाम भलाइयां उसी के दस्ते क़ुदरत में हैं और वोह हर चीज़ पर क़ादिर है।[1]

(2).....سُبْحٰنَ اللّٰہِ وَالْحَمْدُ لِلّٰہِ وَلَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ وَاللّٰہُ اَکْبَرُ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّۃَ اِلَّا بِاللّٰہِ الْعَلِیِّ الْعَظِیْمِ या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ पाक है और सब ख़ूबियां अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई मा'बूद नहीं और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ सब से बड़ा है, गुनाहों से बचने की त़ाक़त और नेकी करने की तौफ़ीक़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ही की त़रफ़ से है जो सब से बुलन्द अ़ज़मत वाला है।[2]

(3).....سُبُّوْحٌ قُدُّوْسٌ رَبُّ الْمَلَائِکَۃِ وَالرُّوْحِ या'नी वोह पाक मुक़द्दस है फ़िरिश्तों और रूह़ का मालिक।[3]

(4)....سُبْحٰنَ اللّٰہِ الْعَظِیْمِ وَبِحَمْدِہٖ या'नी पाक है अ़ज़मत वाला रब्ब और उसी की ता'रीफ़।[4]

(5).....اَسْتَغْفِرُ اللّٰہَ الْعَظِیْمَ الَّذِیْ لَا اِلٰہَ اِلَّا ھُوَ الْحَیُّ الْقَیُّوْمُ وَاَسْئَلُہُ التَّوْبَۃَ या'नी मैं अ़ज़मत वाले अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से मग़्फ़िरत त़लब करता हूं जिस के सिवा कोई मा'बूद नहीं वोह ख़ुद ज़िन्दा और दूसरों को क़ाइम रखने वाला है और उसी की बारगाह में तौबा करता हूं।[5]

(6)..... اَللّٰھُمَّ لَا مَانِعَ لِمَا اَعْطَیْتَ، وَلَا مُعْطِیَ لِمَا مَنَعْتَ، وَلَا یَنْفَعُ ذَا الْجَدِّ مِنْكَ الْجَدُّ या'नी इलाही जो तू दे उसे कोई रोक नहीं सकता और जो तू रोके उसे कोई दे नहीं सकता तेरे मुक़ाबिल ग़नी को ग़ना नफ़्अ़ नहीं पहुंचाती।[6] [7]

(7)....لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ الْمَلِکُ الْحَقُّ الْمُبِیْنُ या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई मा'बूद नहीं वोह सच्चा और वाज़ेह़ बादशाह है।[8]

---

1 ......سنن ابی داود، کتاب الوتر، باب مایقول الرجل اذاسلّم، الحدیث:۱۵۰۶، ج۲، ص۱۱۸،
دون قولہ:یحیی ویمیت وھو حی لایموت بیدہ الخیر۔

2 ......المستدرک، کتاب الدعاء والتکبیر......الخ، بیان الباقیات الصالحات، الحدیث:۱۹۳۲، ج۲، ص۱۹۴۔

3 ......صحیح مسلم، کتاب الصلاۃ، باب مایقال فی الرکوع والسجود، الحدیث:۴۸۷، ص۲۵۲۔

4 ......صحیح مسلم، کتاب الذکر والدعاء......الخ، باب فضل التھلیل والتسبیح......الخ، الحدیث:۲۶۹۱، ص۱۴۴۵۔

5 ......سنن الترمذی، کتاب الدعوات، الحدیث:۳۴۰۸، ج۵، ص۲۵۵، "اسألہ التوبۃ" بدلہ "اتوب الیہ"۔

6 .... मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْمَنَّان मिरआतुल मनाजीह़, जि. 2 स. 72 पर इस के तह़त फ़रमाते हैं : या'नी कोई शख़्स अपने नसब या ग़ना की वजह से तेरी पकड़ से नहीं बच सकता।

ख़याल रहे कि मख़्लूक़ जो कुछ नफ़्अ़, नुक़्सान पहुंचाती है वोह अल्लाह के हुक्म और इरादे से है येह नामुमकिन है कि कोई ख़ुदा का मुक़ाबला कर के किसी को नफ़्अ़ नुक़्सान पहुंचाए। इसी का यहां ज़िक्र है लिहाज़ा येह अल्फ़ाज़ अम्बिया और औलिया के बिइज़्ने इलाही नफ़्अ़ पहुंचाने के ख़िलाफ़ नहीं।

7 ......صحیح البخاری، کتاب الاذان، باب الذکر بعدالصلاۃ، الحدیث:۸۴۴، ج۱، ص۲۹۴۔

8 ......حلیۃ الاولیاء، سالم الخواص، الحدیث:۱۲۳۱۲، ج۸، ص۳۰۹۔

(8)....بِسۡمِ اللّٰہِ الَّذِیۡ لَا یَضُرُّ مَعَ اسۡمِہٖ شَیۡءٌ فِی الۡاَرۡضِ وَلَا فِی السَّمَاءِ وَھُوَ السَّمِیۡعُ الۡعَلِیۡمُ या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नाम से शुरूअ़ करता हूं जिस के नाम की बरकत से ज़मीनो आस्मान की कोई चीज़ नुक़्सान नहीं पहुंचा सकती और वोही सुनता जानता है।[1]

(9)....اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ عَبۡدِكَ وَنَبِیِّكَ وَرَسُوۡلِكَ النَّبِیِّ الۡاُمِّیِّ وَعَلٰی اٰلِہٖ وَصَحۡبِہٖ وَسَلِّمۡ

या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अपने उम्मी रसूल, नबी और बन्दे ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم पर और उन की आल व अस्ह़ाब पर दुरूदो सलाम नाज़िल फ़रमा।[2]

(10)....اَعُوۡذُ بِاللّٰہِ السَّمِیۡعِ الۡعَلِیۡمِ مِنَ الشَّیۡطٰنِ الرَّجِیۡمِ، رَبِّ اَعُوۡذُ بِكَ مِنۡ ھَمَزٰتِ الشَّیٰطِیۡنِ وَاَعُوۡذُ بِكَ رَبِّ اَنۡ یَّحۡضُرُوۡنَ या'नी मैं, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ जो सुनता जानता है, की पनाह लेता हूं शैत़ान मर्दूद से। ऐ रब्ब عَزَّوَجَلَّ मैं शयात़ीन के वस्वसों से तेरी पनाह लेता हूं, ऐ मेरे रब्ब عَزَّوَجَلَّ मैं शयात़ीन के ह़ाज़िर होने से तेरी पनाह लेता हूं।[3]

इन दस कलिमात में से जब हर एक को दस मरतबा पढ़ा जाएगा तो 100 की ता'दाद ह़ासिल होगी, येह इस से अफ़्ज़ल है कि एक ही ज़िक्र को 100 मरतबा पढ़े क्यूंकि इन में से हर एक के लिये एक अलग फ़ज़ीलत है और दिल को हर एक नोअ़ के साथ तम्बीह और लज़्ज़त ह़ासिल होती है और नफ़्स को एक कलिमे से दूसरे कलिमे की त़रफ़ मुन्तक़िल होने में राह़त ह़ासिल होती और उक्ताहट से अम्न मिलता है।

﴾3﴿......क़ुरआने पाक की तिलावत :

अह़ादीष में जिन की फ़ज़ीलत आई है ऐसी तमाम आयात पढ़ना मुस्तह़ब हैं वोह येह हैं : (1)....सूरए फ़ातिह़ा।[4] (2).....आयतुल कुरसी।[5] (3)....सूरए बक़रह की आख़िरी आयात "اٰمَنَ الرَّسُوۡلُ" से आख़िर तक[6] (4)....."شَھِدَ اللّٰہُ" पूरी आयत (پ۳، اٰل عمرٰن:۱۸)[7]

---

1 ......سنن الترمذی، کتاب الدعوات، باب ماجاء فی الدعاء اذااصبح واذاامسی، الحدیث:۳۳۹۹، ج۵، ص ۲۵۱۔

2 ......تاریخ بغداد، الوضاح ابوعوانة:۷۳۲۶، ج۱۳، ص ۴۶۴، دون قولہ:وعلی آلہ وصحبہ وسلم۔

3 ......سنن الترمذی، کتاب فضائل القرآن، الحدیث:۲۹۳۱، ج۴، ص ۴۲۳، مختصرًا۔
سنن الترمذی، کتاب الدعوات، الحدیث:۳۵۳۹، ج۵، ص ۳۱۳، مختصرًا۔

4 ......صحیح مسلم، کتاب صلاة المسافرین وقصرھا، باب فضل الفاتحة......الخ، الحدیث:۸۰۶، ص ۴۰۴۔

5 ......صحیح مسلم، کتاب صلاة المسافرین وقصرھا، باب فضل سورة الکھف وآیة الکرسی، الحدیث:۸۱۰، ص ۴۰۵۔

6 ......صحیح مسلم، کتاب صلاة المسافرین وقصرھا، باب فضل الفاتحة وخواتیم سورة......الخ، الحدیث:۸۰۶، ص ۴۰۴۔

7 ......تفسیر البغوی، پ۳، آل عمران، تحت الآیة:۲۷، ج۱، ص ۲۲۴۔

(5).....قُلِ اللّٰھُمَّ مٰلِکَ الْمُلْکِ दो आयात (پ۳، ال عمران: ۲۶،۲۷)[1] (6).....لَقَدْ جَآءَکُمْ رَسُوْلٌ مِّنْ اَنْفُسِکُمْ आख़िर तक (پ۱۱، التوبۃ:۱۲۸) । (7).....''لَقَدْ صَدَقَ اللّٰہُ رَسُوْلَہُ الرُّءْیَا بِالْحَقِّ'' आख़िर तक (پ۲۶، الفتح:۲۷) । (8).....اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ الَّذِیْ لَمْ یَتَّخِذْ وَلَدًا एक आयत (پ۱۵، بنی اسرآءیل:۱۱۱) ।[2] (9)....सूरए ह़दीद की इब्तिदाई पांच आयात । (10).....सूरए ह़श्र की आख़िरी तीन आयात[3] (11)....अगर इन مسبعاتِ عشرہ को भी पढ़े जो ह़ज़रते सय्यिदुना ख़िज़्र عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम तीमी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی को तोह़फ़ा दे कर सुब्ह़ो शाम पढ़ने की वसिय्यत फ़रमाई, तो फ़ज़ीलत मुकम्मल हो जाएगी और तमाम दुआ़ओं की मज़्कूरा फ़ज़ीलत जम्अ़ हो जाएगी ।

हि़कायत :- सआ़दत मन्दों का अ़मल :

ह़ज़रते सय्यिदुना कुर्ज़ बिन वबरह ह़ारिषी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی अब्दाल में से थे, फ़रमाते हैं : अहले शाम में से मेरा एक भाई मेरे पास आया और मुझे एक तोह़्फ़ा दे कर कहा : ''ऐ करज़ ! इसे क़बूल कर लो येह बहुत ही अच्छा तोह़फ़ा है ।'' मैं ने कहा : ''ऐ भाई ! तुझे येह तोह़फ़ा किस ने दिया ?'' कहा : ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम तीमी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی ने ।'' मैं ने कहा : ''क्या तुम ने उन से पूछा था कि उन्हें येह तोह़फ़ा किस ने दिया ?'' कहा : क्यूं नहीं । उन्हों ने फ़रमाया : मैं एक दफ़्अ़ा का'बतुल्लाहिल मुशर्रफ़ा के सह़्न में बैठ कर ''لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہ، سُبْحٰنَ اللّٰہ، اَلْحَمْدُ لِلّٰہ'' पढ़ने और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बुज़ुर्गी बयान करने में मसरूफ़ था कि एक शख़्स मेरे पास आया और सलाम कर के मेरे दाईं जानिब बैठ गया, मैं ने उन से ज़ियादा ख़ूब सूरत चेहरा, उन के लिबास से ज़ियादा ख़ूब सूरत लिबास, उन से ज़ियादा नूरानी और ख़ुश्बूदार शख़्स पूरी ज़िन्दगी में कभी न देखा था, मैं ने उन से कहा : ऐ अल्लाह के बन्दे ! आप कौन हैं ? और कहां से तशरीफ़ लाए हैं ? उन्हों ने फ़रमाया : मैं ख़िज़्र हूं । मैं ने कहा : ''आप मेरे पास कैसे तशरीफ़ लाए ?'' फ़रमाया : ''तुम्हें सलाम करने के लिये आया हूं और तुम से मह़्ज़ रिज़ाए इलाही के लिये मह़ब्बत करता हूं । मेरे पास एक तोह़्फ़ा है मैं चाहता हूं कि मैं वोह तुम्हें दे दूं ।'' मैं ने पूछा : ''वोह क्या है ?'' फ़रमाया : सूरज के तुलूअ़ होने, उस के ज़मीन पर फैलने और ग़ुरूब होने से पहले सात सात मरतबा सूरए फ़ातिह़ा,

---

1 ......تفسیر البغوی، پ۳، آل عمران، تحت الآیۃ:۲۷، ج۱، ص۲۲۴۔

2 ......المسند للامام احمد بن حنبل، مسند المکیین، حدیث معاذ بن انس الجھنی، الحدیث:۱۵۶۳۴، ج۸، ص۳۱۲۔

3 ......سنن الترمذی، کتاب فضائل القرآن، الحدیث:۲۹۳۱، ج۴، ص۴۲۳۔

सूरए नास, सूरए फ़लक़, सूरए इख़्लास, सूरए काफ़िरून और आयतुल कुरसी पढ़ कर, सात बार येह पढ़ो : سُبْحٰنَ اللّٰہِ وَالْحَمْدُ لِلّٰہِ وَلَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ وَاللّٰہُ اَکْبَر या'नी अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ पाक है, सब ख़ूबियां अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ को, अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ के सिवा कोई मा'बूद नहीं और अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ सब से बड़ा है। फिर सात बार बारगाहे रिसालत में हदिय्यए दुरूद भेजो, फिर सात बार अपने लिये, अपने वालिदैन और तमाम मोमिन मर्दों और औ़रतों के लिये मग़्फ़िरत की दुआ़ करो फिर सात बार येह पढ़ो : اَللّٰھُمَّ افْعَلْ بِیْ وَبِھِمْ عَاجِلًا وَّاٰجِلًا فِی الدِّیْنِ وَالدُّنْیَا وَالْاٰخِرَۃِ مَا اَنْتَ لَہٗ اَھْلٌ وَلَا تَفْعَلْ بِنَا یَامَوْلَانَا مَا نَحْنُ لَہٗ اَھْلٌ اِنَّکَ غَفُوْرٌ حَلِیْمٌ جَوَادٌ کَرِیْمٌ رَءُوْفٌ رَّحِیْمٌ या'नी ऐ अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ मेरे और इन सब के साथ अभी और बा'द में, दीन, दुन्या और आख़िरत के बारे में वोह मुआ़मला फ़रमाना जो तेरी शायाने शान है वोह मुआ़मला न फ़रमाना जिस के हम मुस्तहि़क़ हैं बेशक तू बख़्शने वाला, बुर्दबार, जव्वाद, करम फ़रमाने वाला, मेहरबान और रह़्म फ़रमाने वाला है। इस वज़ीफ़े को सुब्ह़ो शाम पढ़ना मत छोड़ना।"

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम तीमी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : मैं ने पूछा : "आप को येह तोह़्फ़ा किस ने दिया ?" फ़रमाया : "मुझे येह तोह़्फ़ा ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद मुस्त़फ़ा, अह़मदे मुजतबा صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने दिया है।" मैं ने कहा : "इस की फ़ज़ीलत के बारे में बताइये।" फ़रमाया : जब तू सरकारे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से मिले तो उन से इस की फ़ज़ीलत के बारे में पूछ लेना वोह इस का षवाब बता देंगे।" ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम तीमी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : एक दिन मैं ने ख़्वाब में फ़िरिश्तों को देखा कि वोह मेरे पास आए और मुझे उठा कर ले गए ह़त्ता कि जन्नत में दाख़िल कर दिया। मैं ने जन्नती ने'मतें और बड़े बड़े उमूर देख कर फ़िरिश्तों से पूछा : येह किस के लिये है ?" जवाब दिया : "उस के लिये जो आप के अ़मल की मिष्ल अ़मल करे।" फ़रमाते हैं : मैं ने जन्नती फ़ल खाए और इस के मशरूबात पिये, फिर हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم 70 अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام और फ़िरिश्तों की 70 सफ़ों के झुरमुट में मेरे पास तशरीफ़ लाए हर सफ़ मशरिक़ व मग़रिब के दरमियानी फ़ासिले जितनी थी, आप صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझे सलाम से नवाज़ा और मेरा हाथ पकड़ लिया, मैं ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ह़ज़रते सय्यिदुना ख़िज़्र عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने मुझे ख़बर दी है कि उन्हों ने आप से येह ह़दीष सुनी है।" तो प्यारे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने दो बार इरशाद फ़रमाया : "ह़ज़रते ख़िज़्र ने सच कहा और जो कुछ उन्हों ने बताया ह़क़ है, वोह अहले ज़मीन के आ़लिम और अब्दाल के सरदार और ज़मीन पर

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लश्कर में से हैं।" मैं ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم जो कोई येह अ़मल करे और जो मैं ने ख़्वाब में देखा वोह न देखे क्या उसे भी इस में से कुछ दिया जाएगा ?" तो इरशाद फ़रमाया : "उस ज़ात की क़सम जिस ने मुझे ह़क़ के साथ मबऊ़ष फ़रमाया ! जो भी येह अ़मल करेगा उसे इसी की मिष्ल दिया जाएगा अगर्चे उस ने मुझे और जन्नत को न देखा हो, उस के तमाम कबीरा गुनाह बख़्श दिये जाएंगे जो उस ने किये हैं और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस से अपना ग़ज़ब और अ़ज़ाब दूर फ़रमा देगा और बाईं जानिब वाले फ़िरिश्ते को हुक्म फ़रमाएगा कि एक साल तक इस का कोई गुनाह न लिखे। उस ज़ात की क़सम जिस ने मुझे ह़क़ के साथ मबऊ़ष फ़रमाया ! इस अ़मल को वोही करेगा जिसे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने सआ़दत मन्दी से सरफ़राज़ फ़रमाया और वोही तर्क करेगा बद बख़्ती जिस का मुक़द्दर होगी।" ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम तीमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى ने जो चार माह तक कुछ खाया न पिया शायद येह इस ख़्वाब के बा'द का वाक़िआ़ है।

येह क़िराअत का वज़ीफ़ा है अगर इस पर कुछ इज़ाफ़ा कर ले या इसी क़दर पर इक्तिफ़ा करे दोनों त़रह़ बेहतर है, क्यूंकि क़ुरआने पाक ज़िक्रो फ़िक्र और तमाम दुआ़ओं की फ़ज़ीलत का जामेअ़ है जब कि ग़ौरो फ़िक्र के साथ पढ़ा जाए जैसा कि इस की फ़ज़ीलत और आदाब हम "तिलावत के बयान" में ज़िक्र कर चुके हैं।

﴾4﴿.....ग़ौरो फ़िक्र करना :

अपने वज़ाइफ़ में इसे भी एक वज़ीफ़ा बनाना चाहिये, अ़न क़रीब नजात देने वाले उमूर के ज़िम्न में "ग़ौरो फ़िक्र के बयान" में इस की तफ़्सील आएगी कि किस बारे में ग़ौरो फ़िक्र किया जाए और इस का त़रीक़ा क्या हो ? लेकिन इस का मजमूआ़ दो फ़न्नों की त़रफ़ लौटता है :

फ़न्ने अव्वल : नफ़्अ़ बख़्श मुआ़मलात के बारे में ग़ौरो फ़िक्र करे यूं कि अपनी कोताहियों पर नफ़्स का मुह़ासबा करे, आने वाले दिन के लिये वज़ाइफ़ को तरतीब दे, उन रुकावटों को दूर करने की तदबीर करे जो नेकी से रोकती हैं, अपनी कोताही और आ'माल में ख़लल डालने वाली चीज़ों को याद करे ताकि अपनी इस्लाह़ कर सके, अपने आ'माल और दीगर मुसलमानों के मुआ़मलात के बारे में अपने दिल में अच्छी अच्छी निय्यतें ह़ाज़िर करे।

फ़न्ने दुवुम : उस अम्र के बारे में है जो इल्मे मुकाशफ़ा में नफ़्अ़ का बाइ़ष बनता है यूं कि एक बार अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ने'मतों और ज़ाहिरी व बात़िनी निशानियों के मुसलसल आने के बारे में ग़ौरो फ़िक्र करे ताकि इस के ज़रीए मा'रिफ़ते इलाही में इज़ाफ़ा हो और इस पर जितना

हो सके अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का शुक्र अदा करे या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की सज़ाओं के बारे में ग़ौरो फ़िक्र करे ताकि मा'बूद की क़ुदरत व बेनियाज़ी की पहचान में इज़ाफ़ा हो और इन सज़ाओं से डरने में ज़ियादती हो। इन उमूर में से हर एक की बहुत सी शाख़ें हैं जिन में बा'ज़ लोगों को ग़ौरो फ़िक्र करने की इस्तिताअ़त होती है और बा'ज़ को नहीं, इसे हम "**ग़ौरो फ़िक्र के बयान**" में ज़िक्र करेंगे।

सब से बुलन्द रुत्बा इबादत :

जब ग़ौरो फ़िक्र करना आसान हो जाए तो इबादात में येह सब से बुलन्द रुत्बा इबादत है क्यूंकि इस में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ज़िक्र का मा'ना भी पाया जाता है और इस के साथ दो अम्र मज़ीद पाए जाते हैं : (1)....मा'रिफ़ते इलाही में इज़ाफ़ा होता है क्यूंकि ग़ौरो फ़िक्र करना मा'रिफ़त व कश्फ़ की चाबी है। (2).....मह़ब्बते इलाही में इज़ाफ़ा होता है क्यूंकि दिल उसी से मह़ब्बत करता है जिस की ता'ज़ीम का वोह ए'तिक़ाद रखता है। नीज़ अ़ज़मत व जलाले इलाही तभी मुन्कशिफ़ होते हैं जब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की सिफ़ात, क़ुदरत और अफ़्आ़ल के अ़जाइबात की मा'रिफ़त ह़ासिल होती है। लिहाज़ा ग़ौरो फ़िक्र से मा'रिफ़त, मा'रिफ़त से ता'ज़ीम और ता'ज़ीम से मह़ब्बत ह़ासिल होती है।

उन्स व मह़ब्बत में फ़र्क़ :

ज़िक्र भी उन्स का बाइ़ष है, उन्स मह़ब्बत ही की एक क़िस्म है लेकिन मा'रिफ़त के सबब ह़ासिल होने वाली मह़ब्बत ज़ियादा क़वी, ज़ियादा षाबित और ज़ियादा अ़ज़ीम होती है।

आ़रिफ़ की मह़ब्बत और ज़ाकिर के उन्स में निस्बत :

आ़रिफ़ की मह़ब्बत और मुकम्मल तौ़र पर देखे बिग़ैर नूरे इरफ़ान से उन्स ह़ासिल करने वाले ज़ाकिर के उन्स के दरमियान निस्बत ऐसे है जैसे वोह शख़्स जिस ने किसी के जमाल को आंखों से देखा, उस के हुस्ने अख़्लाक़, हुस्ने अफ़्आ़ल व ख़साइले ह़मीदा पर तजरिबे की रोशनी में मुत्तलअ़ हुवा, उस के इश्क़ की निस्बत उस शख़्स के उन्स से हो जिस के कानों पर किसी ऐसे शख़्स की अच्छी सीरत व सूरत के अवसाफ़ बिग़ैर तफ़्सील के बार बार बयान किये जाते रहे हों जो उस की आंखों से ग़ाइब है, उस की मह़ब्बत उस शख़्स की मह़ब्बत की त़रह़ नहीं जिस ने देख कर मह़ब्बत की है और न ही ख़बर मुशाहदे की त़रह़ होती है।

वोह बन्दे जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ज़िक्र पर दिलो ज़बान से हमेशगी इख़्तियार करते और रुसुले इज़ाम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام जो ले कर आए हैं सिर्फ़ ईमाने तक़्लीदी से इस की तस्दीक़ करते हैं, उन के पास सिफ़ाते बारी तआ़ला की ख़ूबियों में से चंद ऐसे मुजमल उमूर के सिवा कुछ नहीं जिन्हें येह उस शख़्स की तस्दीक़ से मानता है जिस ने इसे उन के सामने बयान किया जब कि आ़रिफ़ीन वोह हैं जिन्हों ने उस के जलाल व जमाल का बात़िनी बसीरत की आंख से मुशाहदा किया है जो ज़ाहिरी बसारत से ज़ियादा मज़बूत़ होती है क्यूंकि कोई शख़्स भी उस के जलाल व जमाल की ह़क़ीक़त का इह़ात़ा नहीं कर सकता इस लिये कि मख़्लूक़ में से कोई भी इस पर क़ादिर नहीं। अलबत्ता, हर शख़्स इसी क़दर मुशाहदा करता है जिस क़दर ह़िजाब उस से उठाया जाता है। जमाले इलाही की कोई इन्तिहा नहीं और न ही उस के ह़िजाबात की कोई ह़द है, सिर्फ़ उन ह़िजाबों की ता'दाद **70** है जो "**नूर**" कहलाने के ह़क़दार हैं और उन तक पहुंचने वाला येह गुमान करने लगता है कि वोह अस्ल तक पहुंच गया है।

नूर के 70 ह़िजाबात :

मुस्त़फ़ा जाने रह़मत صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया :

اِنَّ لِلّٰهِ سَبْعِيْنَ حِجَابًا مِّنْ نُّوْرٍ لَوْ كَشَفَهَا لَاَحْرَقَتْ سُبُحَاتُ وَجْهِهٖ كُلَّ مَا اَدْرَكَ بَصَرُهٗ

या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये नूर के **70** ह़िजाबात हैं अगर वोह इन्हें खोल दे तो उस की ज़ात के अन्वार हर उस चीज़ को जला दें जिस तक उस की नज़र पहुंचे।"(1)

इन ह़िजाबों में भी तरतीब है। इन अन्वार में आपस में मर्तबे के ए'तिबार से ऐसे तफ़ावुत पाया जाता है जैसे सूरज, चांद और सितारों के दरमियान तफ़ावुत है। पहले वोह नूर ज़ाहिर होता है जो सब से छोटा है, फिर वोह जो उस से मिला हुवा है, फिर वोह जो उस से मिला हुवा है। इसी बिना पर बा'ज़ सूफ़ियाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام ने इस के दर्जात बयान किये हैं जो ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ख़लीलुल्लाह عَلٰی نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के तरक़्क़ी करने में ज़ाहिर हुवा। फ़रमाने बारी तआ़ला है : فَلَمَّا جَنَّ عَلَيْهِ الَّيْلُ इस की तफ़्सीर में सूफ़ियाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام फ़रमाते हैं : या'नी जब इन पर मुआ़मला पोशीदा हो गया तो "رَاٰ كَوْكَبًا" (پ۷،الانعام:۷۶) या'नी नूर के ह़िजाबात में से एक ह़िजाब तक पहुंच गए और उसे तारे से ता'बीर किया।

इस से येह चमकते हुए जिस्म मुराद नहीं क्यूंकि येह बात किसी पर पोशीदा नहीं कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ जिस्म व जिस्मानिय्यत से पाक है, बल्कि येह बात तो पहली ही नज़र में जान

---

1 ......صحیح مسلم، کتاب الایمان، باب فی قوله علیه السلام ان اللّٰه لاینام......الخ، الحدیث:۱۷۹، ص ۱۰۹، مفهومًا۔

ली जाती है तो जिस चीज़ से अवाम गुमराह नहीं होते, उस चीज़ से ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ख़लीलुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام कैसे राह से हट सकते हैं। और वोह हिजाबात जिन्हें अन्वार का नाम दिया गया है उन से मुराद येह रोशनी नहीं जो आंख के साथ देखी जाती है बल्कि इन से मुराद वोह नूर है जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के इस फ़रमान में मुराद है :

اَللّٰہُ نُوۡرُ السَّمٰوٰتِ وَ الۡاَرۡضِ ؕ مَثَلُ نُوۡرِہٖ کَمِشۡکٰوۃٍ فِیۡہَا مِصۡبَاحٌ ؕ (پ۱۸، النور:۳۵)

*तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : **अल्लाह** नूर है आस्मानों और ज़मीनों का उस के नूर की मिषाल ऐसी जैसे एक ताक़ कि इस में चराग़ है।*

हमें इन मआ़नी से चश्म पोशी करते हुए गुज़र जाना चाहिये क्यूंकि येह इ़ल्मे मुआ़मला से ख़ारिज हैं और बिग़ैर कश्फ़ के इन की ह़क़ीक़त तक नहीं पहुंचा जा सकता और वोह कश्फ़, ख़ालिस ग़ौरो फ़िक्र के ताबेअ़ है और कम ही लोगों के लिये येह दरवाज़ा खुलता है। अ़वाम को वोही ग़ौरो फ़िक्र मुयस्सर होती है जो इ़ल्मे मुआ़मला में फ़ाइदा देती है, इस का भी बड़ा फ़ाइदा और बड़ा नफ़्अ़ है।

ख़ुलासए कलाम :

हर त़ालिबे आख़िरत को नमाज़े फ़ज्र के बा'द येह चार वज़ाइफ़ करने चाहिये या'नी दुआ़, ज़िक्र, तिलावते क़ुरआन और ग़ौरो फ़िक्र करना बल्कि हर फ़र्ज़ नमाज़ से फ़ारिग़ होने के बा'द इन्हें वज़ीफ़ा बनाए कि नमाज़ के बा'द इन चार वज़ाइफ़ के सिवा कोई वज़ीफ़ा नहीं। इस वज़ीफ़े पर उस वक़्त क़ादिर हुवा जा सकता है जब हथयार और ढाल पकड़े हुए हों और रोज़ा वोह ढाल है जो शैत़ान के रास्तों को तंग कर देता है और शैत़ान ऐसा दुश्मन है जो हिदायत के रास्ते से भटकाने वाला है।

तुलूए़ फ़ज्र के बा'द से तुलूए़ आफ़्ताब तक फ़ज्र की दो सुन्नतों और फ़र्ज़ों के इ़लावा कोई (नफ़्ल) नमाज़ जाइज़ नहीं। प्यारे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم और सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن येह वक़्त ज़िक्रो अज़्कार में सर्फ़ करते थे और येही बेहतर है। अलबत्ता, फ़ज्र के फ़राइज़ से पहले नींद का ग़लबा हो और वोह नमाज़ के सिवा किसी और चीज़ से दूर न होता हो, इस वजह से (नफ़्ल) नमाज़ पढ़े तो कोई ह़रज नहीं। (इन्दश्शवाफ़ेअ़)

दूसरा वज़ीफ़ा :

तुलूए़ आफ़्ताब से चाश्त के वक़्त तक। चाश्त के वक़्त से मुराद तुलूए़ आफ़्ताब से ज़वाल के दरमियान का निस्फ़ वक़्त है। मषलन दिन के **12** घंटे फ़र्ज़ किये जाएं तो तीन घंटे गुज़र ने तक येह वक़्त होगा और येह दिन का चौथाई ह़िस्सा है, इस ह़िस्से में दो वज़ीफ़े ज़ाइद हैं :

﴾1﴿......**नमाज़े चाश्त :** इसे हम "नमाज़ के बयान" में ज़िक्र कर चुके हैं। बेहतर येह है कि इशराक़ के वक़्त दो रक्अ़तें पढ़े और येह वोह वक़्त है जब धूप ज़मीन पर फैल जाए और सूरज निस्फ़ नेज़े की मिक़दार बुलन्द हो जाए और जब ज़मीन के गर्म होने की वजह से ऊंटनी के बच्चों के पाउं जलने लगें और क़दम सूरज की गर्मी से तपिश मह़सूस करने लगें तो उस वक़्त (चाश्त की) चार, छे या आठ रक्अ़तें पढ़े। (इशराक़ की) दो रक्अ़तों का वक़्त तो वोह है जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के इस फ़रमान में मुराद है :

يُسَبِّحْنَ بِالْعَشِيِّ وَالْاِشْرَاقِ ﴿۱۸﴾ (پ۲۳، ص: ۱۸)

***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** तस्बीह़ करते शाम को और सूरज चमकते।*

येह सूरज के चमकने का वक़्त है इस वक़्त ज़मीन की सत़्ह़ से उठने वाले बुख़ारात और गुबार से सूरज के बुलन्द होने के बाइ़ष इस की रोशनी मुकम्मल त़ौर पर ज़ाहिर हो जाती है क्यूंकि येह बुख़ारात वग़ैरा उस के मुकम्मल त़ौर पर चमकने में रुकावट होते हैं और चार रक्आ़त का वक़्त, चाश्त का वक़्त है। इस की क़सम बयान करते हुए अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया :

وَالضُّحٰى ﴿۱﴾ وَالَّيْلِ اِذَا سَجٰى ﴿۲﴾ (پ۳۰، الضحی: ۱، ۲)

***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** चाश्त की क़सम और रात की जब पर्दा डाले।*

रुजूअ़ करने वालों की नमाज़ का वक़्त :

एक मरतबा हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इशराक़ के वक़्त सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن के पास तशरीफ़ लाए तो वोह नमाज़ पढ़ रहे थे, उन्हें बुलन्द आवाज़ से पुकार कर इरशाद फ़रमाया : "जान लो ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ रुजूअ़ करने वालों की नमाज़ उस वक़्त है जब गर्म ज़मीन की वजह से ऊंटनी के बच्चों के पाउं जलने लगें।"(1)

इसी वजह से हम कहते हैं कि जब एक ही मरतबा नमाज़ पढ़ने पर इक्तिफ़ा करना चाहे तो चाश्त का वक़्त अफ़्ज़ल है अगर्चे अस्ल फ़ज़ीलत वक़्ते कराहत के दोनों कनारों के दरमियान नमाज़ पढ़ने से भी ह़ासिल हो जाएगी, वक़्ते कराहत के कनारे येह हैं :

(1).....सूरज के तुलूअ़ होने से ले कर इस के अन्दाज़न निस्फ़ नेज़े की मिक़दार बुलन्द होने तक

(2).....ज़वाल के वक़्त से पहले जब सूरज आस्मान के दरमियान ठहरता है। लफ़्ज़े "चाश्त" का इत़लाक़ इस तमाम वक़्त पर होता है गोया कि इशराक़ की दो रक्अ़तें उस वक़्त होती हैं जब वक़्ते मकरूह ख़त्म होने के बा'द वक़्ते ग़ैरे मकरूह की इब्तिदा होती है क्यूंकि

---

(1) ......صحیح مسلم، کتاب صلاة المسافرین وقصرها، باب صلاة الاوابین حین......الخ، الحدیث: ۷۴۸، ص ۳۷۶۔

सरकारे दो आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया :
"اِنَّ الشَّمْسَ تَطْلُعُ وَمَعَهَا قَرْنُ الشَّيْطَانِ فَاِذَا ارْتَفَعَتْ فَارَقَهَا या'नी सूरज तुलूअ़ होता है तो इस के साथ शैत़ान के सींग होते हैं, जब बुलन्द हो जाता है तो सींग इस से अलग हो जाते हैं।"[1]

सूरज के बुलन्द होने की कम से कम मिक़दार येह होगी कि वोह ज़मीन के बुख़ारात और ग़ुबार से बुलन्द हो जाए और इस में अन्दाज़े का ए'तिबार किया जाता है।[2]

﴿2﴾.....इस वक़्त का दूसरा वज़ीफ़ा वोह नेक काम हैं जिन का तअ़ल्लुक़ लोगों से है और इन का सुब्ह़ के वक़्त करना राइज है मषलन मरीज़ की इ़यादत करना, जनाज़े के साथ चलना, नेकी व तक़्वा पर मदद करना, इ़ल्म की मजलिस में ह़ाज़िर होना और इस के क़ाइम मक़ाम दीगर काम जैसे मुसलमानों की ह़ाजत को पूरा करना वग़ैरा।

अगर इन में से कोई काम न हो तो उन चार वज़ाइफ़ की त़रफ़ लौट आए जिन्हें हम ने पीछे ज़िक्र किया या'नी दुआ़एं, ज़िक्र, तिलावते क़ुरआन और ग़ौरो फ़िक्र करना। अगर चाहे तो इन के साथ साथ नफ़्ल नमाज़ें भी पढ़े कि वोह नमाज़े फ़ज्र के फ़ौरन बा'द मकरूह है अब मकरूह नहीं। लिहाज़ा जो इस वक़्त में नमाज़ भी पढ़ना चाहे तो उस के लिये इस वक़्त के वज़ाइफ़ में से नमाज़ पांचवां वज़ीफ़ा हो जाएगा। फ़ज्र के फ़र्ज़ों के बा'द हर वोह नमाज़ मकरूह है जिस का कोई सबब मौजूद न हो। तुलूए़ फ़ज्र के बा'द बेहतर येह है कि फ़ज्र की दो सुन्नतों और तह़िय्यतुल मस्जिद (इन्दश्शवाफ़ेअ़) पर ही इक्तिफ़ा करे इस के इ़लावा दीगर नवाफ़िल में मश्ग़ूल न हो बल्कि ज़िक्र, तिलावते क़ुरआन, दुआ़ और ग़ौरो फ़िक्र में मश्ग़ूल रहे।

तीसरा वज़ीफ़ा :

येह चाश्त के वक़्त से ले कर ज़वाल तक के लिये है, चाश्त के वक़्त से हमारी मुराद निस्फ़ दिन और इस से कुछ पहले का वक़्त है क्यूंकि हर तीन घन्टों के बा'द नमाज़ का हुक्म दिया गया है कि जब तुलूए़ फ़ज्र के बा'द तीन घंटे गुज़र जाएं तो उस वक़्त और उस के गुज़रने से पहले नमाज़े चाश्त का वक़्त है, जब तीन घन्टे और गुज़र जाएं तो नमाज़े ज़ोहर है, जब तीन घन्टे और गुज़र जाएं तो नमाज़े अ़स्र है, जब तीन घन्टे और गुज़र जाएं तो नमाज़े मग़रिब है। लिहाज़ा नमाज़े चाश्त का मर्तबा तुलूअ़ और ज़वाल के दरमियान ऐसे है जैसे ज़वाल और ग़ुरूब

---

❶......سنن النسائی، کتاب المواقیت، باب الساعات التی نھی عن الصلاۃ فیھا، الحدیث:۵۵۶، ص ۹۹۔

❷....... येह वक़्त आफ़्ताब का कनारा ज़ाहिर होने से ले कर उस वक़्त तक है कि इस पर निगाह ख़ीरा होने लगे जिस की मिक़दार कनारा चमकने से 20 मिनट तक है। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 454)

के दरमियान नमाज़े अ़स्र का मर्तबा मगर नमाज़े चाश्त फ़र्ज़ नहीं की गई क्यूंकि येह लोगों का अपने कामों में मसरूफ़ रहने का वक़्त है, इस लिये लोगों पर आसानी कर दी गई।

इस वक़्त का वज़ीफ़ा :

इस वक़्त में वोह चार अक़्साम (या'नी दुआ़, ज़िक्र, तिलावते क़ुरआन, ग़ौरो फ़िक्र) और मज़ीद दो अम्र हैं :

﴾1﴿.....काम-काज, तदबीर मईशत और बाज़ार की ह़ाज़िरी में मश्ग़ूल हो, अगर ताजिर है तो सच्चाई व अमानत दारी से तिजारत करे, अगर हुनर मन्द है तो ख़ैरख़्वाही व शफ़्क़त को पेशे नज़र रखे और अपनी तमाम मश्ग़ूलिय्यात में ज़िक्रे इलाही को न भूले। अगर रोज़ाना कमाने पर क़ुदरत रखता है तो हर रोज़ इतनी कमाई पर ही इक्तिफ़ा करे जितनी उसे उस दिन में ह़ाजत है, जब एक दिन का रिज़्क़ ह़ासिल कर ले तो मस्जिद की त़रफ़ लौट आए और आख़िरत के लिये ज़ादे राह तय्यार करे क्यूंकि ज़ादे आख़िरत की ह़ाजत ज़ियादा सख़्त और इस का नफ़्अ़ दाइमी है। लिहाज़ा इस की तय्यारी में मश्ग़ूल होना वक़्ती ह़ाजत से ज़ाइद कमाने से ज़ियादा अहम है।

मोमिन के मिलने की तीन जगहें :

मन्क़ूल है कि मोमिन तीन जगहों में ही पाया जाता है : (1)....मस्जिद में, जिस को नमाज़ के ज़रीए़ आबाद करता है। (2)....घर में, जो उसे छुपाता है। (3).....किसी ऐसी ह़ाजत में जिस के बिग़ैर कोई चारा नहीं।

बहुत कम लोग ऐसे हैं जिन्हें येह मा'लूम है कि ह़ाजत की मिक़्दार कितनी है जिस के बिग़ैर चारा नहीं, अकषर लोग ग़ैर ज़रूरी को भी ज़रूरी समझते हैं, इस की वजह येह है कि शैत़ान इन्हें मुफ़्लिसी का अन्देशा दिलाता और बेह़याई का हुक्म देता है। लिहाज़ा वोह मुफ़्लिसी के डर से शैत़ान की त़रफ़ माइल हो कर उसे भी जम्अ़ करते हैं जिसे वोह खाते नहीं और बख़्शिश व फ़ज़्ल का वा'दा करने वाले ख़ुदाए रह़मान عَزَّوَجَلَّ से ए'राज़ करते हैं और उस की त़रफ़ राग़िब नहीं होते।

﴾2﴿....“क़ैलूला” करे और येह सुन्नत भी है, इस के ज़रीए़ रात के क़ियाम पर मदद ली जाती है जैसा कि सह़री सुन्नत है और इस के ज़रीए़ दिन के रोज़े पर मदद ली जाती है। अगर कोई शख़्स रात को क़ियाम तो नहीं करता लेकिन अगर इस वक़्त न सोएगा तो नेकी में भी मश्ग़ूल नहीं होगा और बसा अवक़ात ग़ाफ़िल लोगों के साथ मेल जोल और इन से बात चीत करेगा तो जब वोह मज़्कूरा

अवरादो वज़ाइफ़ की त़रफ़ रुजूअ़ करने के लिये नहीं जागता तो उस के लिये सोना बेहतर है क्यूंकि नींद में ख़ामोशी व सलामती है (लिहाज़ा ऐसी ह़ालत में उस के ह़क़ में सोना बेहतर है)।

बा'ज़ बुज़ुर्ग फ़रमाते हैं : "लोगों पर एक ऐसा ज़माना आएगा कि उन के तमाम आ'माल में अफ़्ज़ल अ़मल ख़ामोशी और नींद होंगे।"

बहुत से आ़बिद ऐसे हैं कि उन की बेहतरीन ह़ालत नींद है। येह उस वक़्त है जब वोह रिया के लिये इ़बादत करे और इस में इख़्लास न हो, तो फिर ग़ाफ़िल फ़ासिक़ की क्या ह़ालत होगी ?

ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान सौरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : "अस्लाफ़े किराम رَحِمَهُمُ اللّٰه السَّلَام इस बात को पसन्द फ़रमाया करते थे कि फ़ारिग़ अवक़ात में सलामती त़लब करने के लिये सो जाएं।"

नींद भी इ़बादत है :

पस जब नींद सलामती को त़लब करने और रात के वक़्त क़ियाम करने की निय्यत से हो तो उस की येह नींद भी इ़बादत होगी, लेकिन ज़वाल से इतनी देर पहले बेदार हो जाना चाहिये जिस में वोह वक़्ते नमाज़ दाख़िल होने से पहले पहले वुज़ू और मस्जिद में ह़ाज़िर होने के ज़रीए नमाज़ की तय्यारी कर सके कि येह आ'माल के फ़ज़ाइल में से है।

दिन के आ'माल में सब से अफ़्ज़ल अ़मल :

अगर इस वक़्त न सोए और न ही कस्बे मुआ़श में मश्ग़ूल हो बल्कि नमाज़ और ज़िक्र में मश्ग़ूल रहे तो येह दिन के आ'माल में सब से अफ़्ज़ल अ़मल है क्यूंकि येह वोह वक़्त है जिस में लोग यादे इलाही से ग़ाफ़िल होते और अपने दुन्यवी रंजो अफ़्कार में मश्ग़ूल होते हैं तो वोह दिल जो उस वक़्त अपने रब्ब عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत के लिये फ़ारिग़ होता है जिस वक़्त लोग उस की बारगाह से ए'राज़ करते हैं, वोह इस लाइक़ है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे पाक व साफ़ फ़रमाए और उसे अपने क़ुर्ब व मा'रिफ़त के लिये चुन ले। इस की फ़ज़ीलत शब बेदारी की फ़ज़ीलत की त़रह़ है क्यूंकि रात नींद की वजह से ग़फ़्लत का वक़्त है और येह (या'नी चाश्त से ज़वाल तक का) वक़्त अपनी ख़्वाहिशात की इत्तिबाअ़ और दुन्यवी रंजो अफ़्कार में मश्ग़ूलिय्यत के सबब ग़फ़्लत का वक़्त है।

इरशादे बारी तआ़ला है :

وَهُوَ الَّذِیْ جَعَلَ الَّیْلَ وَالنَّهَارَ خِلْفَةً لِّمَنْ اَرَادَ اَنْ یَّذَّكَّرَ (پ ۱۹، الفرقان: ۶۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और वोही है जिस ने रात और दिन की बदली रखी उस के लिये जो ध्यान करना चाहे।*

इस का एक मा'ना येह है कि उस ने फ़ज़ीलत में एक को दूसरे के पीछे रखा,

दूसरा मा'ना येह है कि वोह एक दूसरे के पीछे आते हैं कि अगर एक में कोई अ़मल रह जाए तो दूसरे में इस का तदारुक कर लिया जाए।

चौथा वज़ीफ़ा :

ज़वाल से ले कर नमाज़े ज़ोहर और इस की सुन्नतों से फ़ारिग़ होने तक के लिये है, येह दिन के वज़ाइफ़ में से सब से छोटा और अफ़्ज़ल वज़ीफ़ा है। जब ज़वाल से पहले वुज़ू कर के मस्जिद में ह़ाज़िर हो और सूरज ढल जाए और मुअज़्ज़िन अज़ान कहना शुरूअ़ करे तो अज़ान के जवाब से फ़ारिग़ होने तक सब्र करे, फिर अज़ान व इक़ामत के दरमियान इबादत के लिये खड़ा हो जाए कि येह वोह दोपहर का वक़्त है जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के इस फ़रमान में मुराद है :

وَحِیْنَ تُظْهِرُوْنَ ﴿۱۸﴾ (پ ۲۱، الروم: ۱۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और जब तुम्हें दोपहर हो।*

इस वक़्त में चार रक्अ़तें एक सलाम से पढ़े। दिन की तमाम नमाज़ों में से येही एक नमाज़ है जिस के बारे में बा'ज़ उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام ने फ़रमाया : "इसे एक सलाम के साथ पढ़े।"

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْكَافِي का मौक़िफ़ येह है कि तमाम नवाफ़िल की त़रह इन्हें भी दो दो कर के पढ़ा जाएगा, सह़ीह़ रिवायात इसी के बारे में वारिद हैं।(1)

येह चार रक्अ़तें लम्बी कर के पढ़ी जाएं क्यूंकि इस वक़्त आस्मान के दरवाज़े खोले जाते हैं जैसा कि हम ने "**नफ़्ल नमाज़ों के बयान**" में इस के बारे में एक रिवायत ज़िक्र की है। इस में सूरए बक़रह या 100-100 आयात वाली दो सूरतें या 100 से कम आयात वाली चार सूरतें पढ़े कि येह वोह घड़ियां हैं जिन में दुआ़ क़बूल होती है, नीज़ प्यारे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने भी इस बात को पसन्द फ़रमाया कि आप का कोई अ़मल इन घड़ियों में बारगाहे ख़ुदावन्दी की त़रफ़ उठाया जाए।

---

(1) ......سنن ابی داود، کتاب التطوع، باب صلاة اللیل مثنی مثنی، الحدیث: ۱۳۲۶، ج ۲، ص ۵۴۔

हत्तल इम्कान इन चार **रक्अ़ात** को कभी तर्क न करे, जब मज़कूरा त़रीक़े के मुत़ाबिक़ लम्बी लम्बी या फिर छोटी छोटी चार रक्अ़तें पढ़ ले तो नमाज़े ज़ोहर जमाअ़त के साथ अदा करे, ज़ोहर के बा'द पहले दो रक्अ़तें पढ़े, फिर चार रक्अ़तें पढ़े क्यूंकि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़र्ज़ नमाज़ के बा'द बिग़ैर फ़ासिले के इसी क़िस्म की नमाज़ पढ़ने को नापसन्द फ़रमाया।

इन नवाफ़िल में आयतुल कुरसी, सूरए बक़रह का आख़िरी रुकूअ़ और वोह आयात पढ़ना मुस्तह़ब हैं जिन्हें हम "पहले वज़ीफ़े" में ज़िक्र कर चुके हैं ताकि येह दुआ़, ज़िक्र, तिलावते कुरआन, नमाज़ और तस्बीह़ व तह़मीद सब को जामेअ़ हो और इस के साथ साथ वक़्त की फ़ज़ीलत भी ह़ासिल हो।

पांचवा वज़ीफ़ा :

नमाज़े ज़ोहर के बा'द से नमाज़े अ़स्र तक के लिये है, इस दौरान मस्जिद में ज़िक्रो नमाज़ या दीगर नेक कामों में मश्ग़ूल रहते हुए ए'तिकाफ़ करना मुस्तह़ब है और येह ए'तिकाफ़ नमाज़ के इन्तिज़ार में हो कि एक नमाज़ के बा'द दूसरी नमाज़ का इन्तिज़ार करना भी फ़ज़ीलत वाले आ'माल में से है। और बुज़ुर्गों का त़रीक़ा था कि जब कोई शख़्स ज़ोहर व अ़स्र के दरमियान मस्जिद में दाख़िल होता तो वोह शहद की मख्खी की भिनभिनाहट की त़रह़ नमाज़ियों के कुरआने पाक की तिलावत करने की आवाज़ सुनता। अगर उसे घर में दीन की सलामती और दिल जमई ज़ियादा ह़ासिल होती हो तो उस के ह़क़ में घर ही अफ़्ज़ल है।

तीन चीज़ों पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ग़ज़ब फ़रमाता है :

इस वज़ीफ़े की फ़ज़ीलत भी तीसरे वज़ीफ़े की त़रह़ है क्यूंकि येह भी लोगों के ग़ाफ़िल होने का वक़्त है, जो शख़्स ज़वाल से पहले सो चुका हो उस के लिये इस वक़्त में सोना मकरूह है क्यूंकि दिन में दो बार सोना मकरूह है। बा'ज़ उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰہُ السَّلَام ने फ़रमाया : तीन चीज़ें ऐसी हैं जिन पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ग़ज़ब फ़रमाता है : (1)....तअ़ज्जुब ख़ेज़ बात के बिग़ैर हंसना। (2)....बिग़ैर भूक के खाना। (3).....बिग़ैर शब बेदारी के दिन में सोना।

नींद की मिक़्दार :

रात और दिन के 24 घंटे हैं। नींद में ए'तिदाल येह है कि रात और दिन में आठ घंटे सोए फिर अगर इतने घंटे रात में ही सो चुका हो तो दिन में सोने का कोई मत़लब नहीं और अगर

कुछ मिक़्दार कम है तो इसे दिन में पुरा कर ले। इब्ने आदम अगर 60 बरस तक ज़िन्दा रहे तो उस के लिये इतना ही काफ़ी है कि उस की उ़म्र में से 20 बरस कम हो जाएं जब कि वोह आठ घंटे सोता हो कि आठ घंटे, 24 घंटों का तिहाई (1/3) है लिहाज़ा उस की उ़म्र में से एक तिहाई हिस्सा कम हो जाएगा। चूंकि नींद रूह़ की गिज़ा है जैसे खाना अजसाम की और इल्मो ज़िक्र दिल की तो नींद को बिल्कुल ख़त्म कर देना मुमकिन नहीं और दरमियानी मिक़्दार येह है (जो कि बयान की गई या'नी 8 घंटे), इस से कमी करना बसा अवक़ात जिस्म के बिगाड़ की त़रफ़ ले जाता है मगर शब बेदारी कर के बतदरीज जिस की आ़दत बन गई हो तो वोह बिग़ैर इज़्तिराब व परेशानी के आसानी के साथ इस पर अ़मल कर सकता है।

येह वज़ीफ़ा लम्बे लम्बे वज़ाइफ़ में से है और बन्दों के लिये ज़ियादा नफ़्अ़ बख़्श है। एक तफ़्सीर के मुत़ाबिक़ "آصَال" से मुराद येही वक़्त है, जिस का ज़िक्र अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने कुरआने पाक में यूं फ़रमाया है :

وَلِلّٰهِ يَسْجُدُ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ طَوْعًا وَّكَرْهًا وَّظِلٰلُهُمْ بِالْغُدُوِّ وَالْاٰصَالِ ۩ ﴿١٥﴾ (پ۱۳، الرعد:۱۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और अल्लाह ही को सजदा करते हैं जितने आस्मानों और ज़मीन में हैं ख़ुशी से ख़्वाह मजबूरी से और उन की परछाइयां हर सुब्ह़ो शाम।*

जब जमादात भी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ को सजदा करते हैं तो फिर येह कैसे जाइज़ हो सकता है कि एक अ़क़्ल रखने वाला शख़्स इबादत की मुख़्तलिफ़ अक़्साम से ग़ाफ़िल रहे।

छटा वज़ीफ़ा :

जब अ़स्र का वक़्त शुरूअ़ हो जाए तो छटे वज़ीफ़े का वक़्त शुरूअ़ हो जाएगा। येह वोह वक़्त है जिस की अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने क़सम याद फ़रमाई है : "وَالْعَصْرِ ﴿١﴾ (پ۳۰، العصر:۱)" आयत का एक मा'ना येही है। एक तफ़्सीर के मुत़ाबिक़ "آصَال" से भी येही मुराद है और येही "عَشِيّ" है जिस का ज़िक्र अल्लाह तआ़ला के इस फ़रमान में है : وَعَشِيًّا ﴿٦٢﴾ (پ۱٦، مريم:٦٢) एक मक़ाम पर है : "بِالْعَشِيِّ وَالْاِشْرَاقِ ﴿١٨﴾ (پ۲۳، ص:۱۸)"

इस वज़ीफ़े में अज़ान व इक़ामत के दरमियान चार रक्अ़तों के इलावा और कोई नमाज़ नहीं जैसा कि ज़ोहर में गुज़र चुका है, फिर अ़स्र के फ़र्ज़ अदा कर के उन चार अक़्साम में मश्ग़ूल हो जाए जो पहले वज़ीफ़े में मज़्कूर हुईं ह़त्ता कि धूप दीवारों के ऊपर सरों तक पहुंच जाए और

सूरज ज़र्द हो जाए, उस वक़्त जब नमाज़ पढ़ना ममनूअ़ हो जाए तो ग़ौरो फ़िक्र और मआ़नी के समझते हुए कुरआने पाक की तिलावत करना अफ़्ज़ल है कि येह ज़िक्रो फ़िक्र और दुआ़ तीनों की जामेअ़ है लिहाज़ा इस क़िस्म में तीन अक़्साम के अकषर मक़ासिद दाख़िल हो जाएंगे।

सातवां वज़ीफ़ा :

जब सूरज ज़र्द हो जाए बईं तौर कि ज़मीन के क़रीब हो जाए या'नी उस की रोशनी को सत्ह़े ज़मीन से उठने वाले बुख़ारात और गुबार छुपा लें और उस की रोशनी में ज़र्दी देखी जाए तो इस वज़ीफ़े का वक़्त शुरूअ़ हो जाएगा, येह वज़ीफ़ा पहले वज़ीफ़े की त़रह़ है जो तुलूए़ फ़ज्र से तुलूए़ आफ़्ताब तक था, जैसे वोह तुलूए़ आफ़्ताब से पहले तक था ऐसे ही येह ग़ुरूबे आफ़्ताब से पहले तक है और **अल्लाह** तआ़ला के इस फ़रमान से भी येही वक़्त मुराद है :

فَسُبْحٰنَ اللّٰهِ حِیْنَ تُمْسُوْنَ وَ حِیْنَ تُصْبِحُوْنَ ﴿۱۷﴾

(پ ۲۱، الروم: ۱۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *तो* ***अल्लाह*** *की पाकी बोलो जब शाम करो और जब सुब्ह़ हो।*

और येही वोह दूसरी त़रफ़ है जो **अल्लाह** तआ़ला के इस फ़रमान में मुराद है :

فَسَبِّحْ وَ اَطْرَافَ النَّهَارِ (پ ۱۶، طٰہٰ: ۱۳۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और दिन के कनारों पर (उस की पाकी बोलो)।*

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ह़सन बसरी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : "अकाबिरीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِیْن दिन के पहले हि़स्से से ज़ियादा शाम की ता'ज़ीम किया करते थे।"

बा'ज़ बुज़ुर्ग फ़रमाते हैं : "अकाबिरीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِیْن दिन के पहले हि़स्से को दुन्या के लिये और आख़िरी हि़स्से को आख़िरत के लिये क़रार देते थे।"

लिहाज़ा इस वक़्त में वोह तमाम अवराद ख़ुसूसन तस्बीह़ व इस्तिग़फ़ार करना मुस्तह़ब है जिन्हें हम ने पहले वज़ीफ़े में ज़िक्र किया है मषलन येह कहे :

اَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ الَّذِیْ لَا اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْحَیُّ الْقَیُّوْمُ وَاَسْاَلُهُ التَّوْبَةَ وَسُبْحٰنَ اللّٰهِ الْعَظِیْمِ وَبِحَمْدِهٖ

या'नी मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से बख़्शिश त़लब करता हूं जिस के सिवा कोई मा'बूद नहीं वोह ख़ुद ज़िन्दा और दूसरों को क़ाइम रखने वाला है और मैं उस से तौबा का सुवाल करता हूं, पाकी है **अल्लाह** अ़ज़मत वाले को और उसी की ह़म्द है।" येह कलिमात इस फ़रमाने बारी तआ़ला से माख़ूज़ हैं :

وَاسْتَغْفِرْ لِذَنْۢبِكَ وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ بِالْعَشِيِّ وَالْاِبْكَارِ ﴿۵۵﴾ (پ۲۴،المؤمن:۵۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और अपनों के गुनाहों की मुआफ़ी चाहो और अपने रब्ब की ता'रीफ़ करते हुए सुब्ह़ो शाम उस की पाकी बोलो।*

कुरआने पाक में जितने अस्माए हुस्ना ज़िक्र किये गए हैं इन के साथ इस्तिग़्फ़ार करना ज़ियादा पसन्दीदा है।

तौबा व इस्तिग़्फ़ार से मुतअ़ल्लिक़ चन्द फ़रामीने बारी तआ़ला :

﴾1﴿

اِسْتَغْفِرُوْا رَبَّكُمْ ؕ اِنَّهٗ كَانَ غَفَّارًا ﴿۱۰﴾ (پ۲۹،نوح:۱۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *अपने रब्ब से मुआफ़ी मांगो बेशक वोह बड़ा मुआफ़ फ़रमाने वाला है।*

﴾2﴿

وَاسْتَغْفِرْهُ ؕ اِنَّهٗ كَانَ تَوَّابًا ﴿۳﴾ (پ۳۰،النصر:۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और उस से बख़्शिश चाहो बेशक वोह बहुत तौबा क़बूल करने वाला है।*

﴾3﴿

رَّبِّ اغْفِرْ وَارْحَمْ وَاَنْتَ خَيْرُ الرّٰحِمِيْنَ ﴿۱۱۸﴾ (پ۱۸،المؤمنون:۱۱۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *ऐ मेरे रब्ब ! बख़्श दे और रह़्म फ़रमा और तू सब से बरतर रह़्म करने वाला।*

﴾4﴿

فَاغْفِرْ لَنَا وَارْحَمْنَا وَاَنْتَ خَيْرُ الْغٰفِرِيْنَ ﴿۱۵۵﴾ (پ۹،الاعراف:۱۵۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *तू हमें बख़्श दे और हम पर मेहर (रह़्मो करम) कर और तू सब से बेहतर बख़्शने वाला है।*

गुरूबे आफ़्ताब से पहले "وَالشَّمْسِ وَضُحٰهَا ﴿۱﴾" "وَالَّيْلِ اِذَا يَغْشٰى ﴿۱﴾" पूरी सूरतें और मुअ़व्वज़तैन (या'नी सूरए फ़लक़ और सूरए नास) की तिलावत करना मुस्तह़ब है ताकि उस पर सूरज इस ह़ालत में गुरूब हो कि वोह तौबा व इस्तिग़्फ़ार में मश्गूल हो।

मग़्रिब की अज़ान के वक़्त की दुआ :

जब (मग़्रिब की) अज़ान सुने तो येह पढ़े :

اَللّٰهُمَّ هٰذَا اِقْبَالُ لَيْلِكَ وَاِدْبَارُ نَهَارِكَ وَاَصْوَاتُ دُعَاتِكَ या'नी ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ येह तेरी रात के आने, तेरे दिन के जाने और तेरी त़रफ़ बुलाने वालों की आवाज़ों का वक़्त है।

जैसा कि पीछे गुज़र चुका है। फिर अज़ान का जवाब दे और नमाज़े मग़रिब में मश्ग़ूल हो जाए। ग़ुरूबे आफ़्ताब के साथ ही दिन के वज़ाइफ़ भी ख़त्म हो चुके हैं।

मुहा़सबए नफ़्स :

बन्दे को चाहिये कि अपने अह़वाल की त़रफ़ नज़र करे और नफ़्स का मुहा़सबा करे कि उस के रास्ते की एक मन्ज़िल गुज़र चुकी है, अगर उस का येह दिन पिछले दिन के बराबर हो तो नुक़्सान में है और अगर पिछले दिन से बदतर हो तो बरकत से मह़रूम है। चुनान्चे, मरवी है कि हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : لَا بُوْرِكَ لِيْ فِيْ يَوْمٍ لَا اَزْدَادُ فِيْهِ خَيْرًا या'नी मुझे उस दिन में बरकत नहीं दी गई जिस में, मैं भलाई में इज़ाफ़ा न करूं।"[1]

अगर वोह अपने नफ़्स को पूरा दिन भलाई में कोशिश करने वाला और मशक़्क़त बरदाश्त करने वाला पाए तो उस के लिये ख़ुशख़बरी है। लिहाज़ा इस पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का शुक्र अदा करे कि उस ने अपने रास्ते पर चलने की तौफ़ीक़ दी और इसी पर क़ाइम रखा। अगर दूसरी ह़ालत में देखे तो फिर रात दिन का ख़लीफ़ा है। लिहाज़ा इस में साबिक़ा कोताहियों की तलाफ़ी करने की कोशिश करे क्यूंकि नेकियां बुराइयों को मिटा देती हैं। नीज़ कोताहियों के तदारुक में मश्ग़ूल होने के लिये पूरी रात जिस्मानी सिह़्ह़त और उ़म्र के बाक़ी रहने पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का शुक्र बजा लाए और दिल में तसव्वुर करे कि येह उस की उ़म्र का आख़िरी दिन है, जिस में ज़िन्दगी का सूरज ग़ुरूब हो जाएगा फिर तुलूअ़ नहीं होगा और उस वक़्त कोताहियों के तदारुक और उ़ज़्र ख़्वाही का दरवाज़ा बन्द हो जाएगा। ज़िन्दगी चन्द रोज़ की है यक़ीनन येह तमाम के तमाम एक एक कर के गुज़र जाएंगे।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ...... صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

---

1 ......مجمع الزوائد، كتاب العلم، باب فيمن مرعليه يوم......الخ، الحديث:٥٧٥، ج ١، ص ٣٥١، "خير" بدله "علم"۔

रात के वज़ाइफ़ का बयान

रात के वज़ाइफ़ पांच हैं :

पहला वज़ीफ़ा :

जब सूरज गुरूब हो जाए तो नमाज़े मग़रिब पढ़ने के बा'द मग़रिब और इशा के दरमियानी वक़्त को इबादत में सर्फ़ करे, इस वज़ीफ़े का आख़िरी वक़्त वोह है कि जब शफ़क़ ग़ाइब हो जाए, शफ़क़ से मुराद वोह सुर्ख़ी है जिस के ग़ाइब होने के साथ ही इशा का वक़्त शुरूअ़ हो जाता है (इन्दश्शवाफ़ेअ़) । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इस की क़सम याद फ़रमाई है :

فَلَآ اُقْسِمُ بِالشَّفَقِ ﴿۱۶﴾ (پ۳۰،الانشقاق:۱۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *तो मुझे क़सम है शाम के उजाले की ।*

इस वक़्त की नमाज़ को نَاشِئَةُ اللَّيْل कहते हैं क्यूंकि येह रात की साअ़तें आने का अव्वल वक़्त है और येह वक़्त उन अवक़ात में से है जो इस फ़रमाने बारी तआ़ला में मज़्कूर हैं :

وَمِنْ اٰنَآئِ الَّیْلِ فَسَبِّحْ (پ۱۶،طٰہٰ:۱۳۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और रात की घड़ियों में उस की पाकी बोलो ।*

येही "**सलातुल अव्वाबीन**" है । इस फ़रमाने बारी तआ़ला से भी येही मुराद है :

تَتَجَافٰی جُنُوْبُهُمْ عَنِ الْمَضَاجِعِ (پ۲۱،السجدۃ:۱۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *उन की करवटें जुदा होती हैं ख़्वाबगाहों से ।*

येह ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ह़सन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی से मरवी है । इब्ने अबी ज़ियाद ने इसे रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की त़रफ़ मन्सूब किया है कि आप से इस आयत के मुतअ़ल्लिक़ सुवाल किया गया तो इरशाद फ़रमाया : اَلصَّلٰوةُ بَيْنَ الْعِشَائَيْنِ या'नी येह नमाज़े मग़रिब व इशा के दरमियान है ।" फिर इरशाद फ़रमाया :"عَلَيْكُمْ بِالصَّلَاةِ بَيْنَ الْعِشَائَيْنِ فَاِنَّهَا تَذْهَبُ بِمُلَاغَاتِ النَّهَارِوَتُهَذِّبُ آخِرَهٗ या'नी तुम पर मग़रिब व इशा के दरमियान नमाज़ पढ़ना लाज़िम है क्यूंकि येह दिन के लग़्वियात को ले जाती है और उस के आख़िर को साफ़ कर देती है ।"(1)

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ से मग़रिब व इशा के दरमियान सोने वाले शख़्स के बारे में पूछा गया तो आप ने फ़रमाया : वोह ऐसा न करे क्यूंकि येह वोह घड़ी है जो इस फ़रमाने बारी तआ़ला से मुराद ली गई है :

---

1 ......فردوس الاخبار للدیلمی، باب العین، الحدیث:۳۸۴۴، ج۲، ص۵۹۔

تَتَجَافٰی جُنُوۡبُهُمۡ عَنِ الۡمَضَاجِعِ (پ ۲۱، السجدة:۱٦)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : उन की करवटें जुदा होती हैं ख़्वाबगाहों से ।

अ़न क़रीब दूसरे बाब में मग़रिब व इ़शा के दरमियान इ़बादत करने की फ़ज़ीलत का बयान आएगा ।

इस वज़ीफ़े की तरतीब :

मग़रिब के बा'द पहले दो रक्अ़तें पढ़े, इन में قُلۡ يٰۤاَيُّهَا الۡكٰفِرُوۡنَ और قُلۡ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ पढ़े, येह दो रक्अ़तें मग़रिब के फ़ौरन बा'द कोई कलाम या काम किये बिग़ैर पढ़े, फिर लम्बी लम्बी चार रक्अ़तें पढ़े, फिर शफ़क़ ग़ाइब होने तक जिस क़दर आसानी हो नमाज़ पढ़ता रहे । अगर मस्जिद घर के क़रीब है और उस का इरादा मस्जिद में ए'तिकाफ़ करने का नहीं तो फिर घर में नमाज़ पढ़ने में भी कोई ह़रज नहीं, अगर नमाज़े इ़शा के इन्तिज़ार में ए'तिकाफ़ करने का इरादा करे तो येही अफ़्ज़ल है जब कि बनावट और रियाकारी का अन्देशा न हो ।

दूसरा वज़ीफ़ा :

येह वज़ीफ़ा नमाज़े इ़शा का वक़्त शुरूअ़ होने से ले कर लोगों के सोने तक है और येह अन्धेरे के अच्छी त़रह़ छा जाने का पहला वक़्त है । अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इस की क़सम याद करते हुए इरशाद फ़रमाता है :

وَالَّيۡلِ وَمَا وَسَقَ (پ ۳۰، الانشقاق:۱۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और (मुझे क़सम है) रात की और जो चीज़ें इस में जम्अ़ होती हैं ।

मज़ीद फ़रमाता है :

اِلٰى غَسَقِ الَّيۡلِ (پ ۱۵، بنی اسرآءیل:۷۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : रात की अन्धेरी तक ।

इस वक़्त रात छा जाती और इस की तारीकी पुख़्ता हो जाती है ।

इस वज़ीफ़े की तरतीब :

इस वज़ीफ़े की तरतीब में तीन उमूर की रिआ़यत की जाएगी :

﴾1﴿.....इ़शा के फ़र्ज़ों के इ़लावा मज़ीद **10** रक्अ़तें पढ़े, चार रक्अ़तें फ़राइज़ से पहले ताकि अज़ान व इक़ामत का दरमियानी वक़्त भी इ़बादत में गुज़रे, छे रक्अ़तें फ़राइज़ के बा'द बईं तौर

कि पहले दो रक्अ़तें पढ़े फिर चार और इन में कुरआने करीम की मख़्सूस आयात की तिलावत करे मषलन सूरए बक़रह की आख़िरी आयात, आयतुल कुरसी, सूरए ह़दीद की इब्तिदाई आयात और सूरए ह़श्र की आख़िरी आयात।

﴾2﴿.....तेरह रक्अ़तें पढ़े जिन के आख़िर में वित्र हो क्यूंकि हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की रात की नमाज़ के बारे में अकषर रिवायात इसी त़रह़ हैं। अक़्ल मन्द लोग अपने वज़ीफ़े के अवक़ात रात के इब्तिदाई ह़िस्से में मुक़र्रर करते हैं जब कि मज़बूत़ व त़ाक़तवर लोग आख़िरी ह़िस्से में मुक़र्रर करते हैं और एह़तियात़ येह है कि शुरूअ़ में ही मुक़र्रर कर ले क्यूंकि कभी कभी बन्दा बेदार नहीं हो पाता या उस पर खड़ा होना मुश्किल होता है मगर जब इस की आ़दत हो जाए तो फिर उस के लिये रात का आख़िरी ह़िस्सा अफ़्ज़ल है। इस नमाज़ में उन मख़्सूस सूरतों में से 300 आयात की मिक़दार तिलावत करे जिन की हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم अकषर तिलावत फ़रमाया करते थे। मषलन सूरए यासीन, सजदह, लुक़मान, दुख़ान, मुल्क, ज़ुमर और सूरए वाक़िअ़ह।[1]

अगर येह नमाज़ न भी पढ़े तो भी सोने से पहले इन तमाम या इन में से बा'ज़ सूरतों की तिलावत को तर्क न करे। कि हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم हर रात जो कुछ तिलावत फ़रमाया करते थे तीन अह़ादीष में मरवी है, ज़ियादा मश्हूर सूरए सजदह, मुल्क, ज़ुमर और वाक़िआ़ है। एक रिवायत में सूरए ज़ुमर और बनी इसराईल है।

हज़ार आयात से अफ़्ज़ल :

एक रिवायत में है कि हर रात "मुसब्बिह़ात" (या'नी सूरए ह़दीद, ह़श्र, सफ़्, जुमुअ़ह और तग़ाबुन) तिलावत फ़रमाया करते थे। फिर फ़रमाते :

فِيهَا آيَةٌ أَفْضَلُ مِنْ أَلْفِ آيَةٍ या'नी इन में से एक ऐसी आयत है जो हज़ार आयात से अफ़्ज़ल है।"[2]

---

1 ......قوت القلوب، الفصل الثامن فی ذکر اورادالليل الخمسة، ج ۱، ص ۴۰۔

2 ......قوت القلوب، الفصل الثامن فی ذکر اورادالليل الخمسة، ج ۱، ص ۳۹۔

سنن الترمذی، کتاب الدعوات، الحدیث:۳۴۱۶، ج۵، ص ۲۵۹۔

سنن الترمذی، کتاب الدعوات، الحدیث:۳۴۱۷، ج۵، ص ۲۵۹، "خیر" بدله "افضل"۔

उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام "سَبِّحِ اسْمَ رَبِّكَ الْاَعْلَى" का इज़ाफ़ा करते हुए छे की ता'दाद मुक़र्रर करते हैं क्यूंकि एक ह़दीषे पाक में है कि हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم "سَبِّحِ اسْمَ رَبِّكَ الْاَعْلَى" को पसन्द फ़रमाते और वित्र की तीन रक्अ़तों में येह तीन सूरतें तिलावत फ़रमाते : "(1)...."سَبِّحِ اسْمَ رَبِّكَ الْاَعْلَى" (2).....قُلْ يٰۤاَيُّهَا الْكٰفِرُوْنَ और (3).... सूरए इख़्लास। वित्र से फ़ारिग़ होने के बा'द तीन मरतबा येह कहते : سُبْحٰنَ الْمَلِكِ الْقُدُّوْسِ [1]

﴾3﴿......वित्र, अगर रात को क़ियाम की आदत न हो तो सोने से पहले ही वित्र पढ़ ले। ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰه تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं : "اَوْصَانِیْ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اَنْ لَّا اَنَامَ اِلَّا عَلٰى وِتْرٍ" या'नी प्यारे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुझे वसिय्यत फ़रमाई है कि वित्र पढ़े बिग़ैर न सोऊं।"[2] अलबत्ता, अगर रात को उठ कर नमाज़ पढ़ने की आ़दत हो तो ताख़ीर करना ही अफ़्ज़ल है कि मुस्त़फ़ा जाने रह़मत صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "रात की नमाज़ दो दो रक्अ़तें हैं फिर जब तुम में से कोई सुब्ह़ का ख़ौफ़ करे तो एक रक्अ़त और पढ़ ले जो इस की पढ़ी हुई नमाज़ को वित्र बना दे।"[3]

उम्मुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰه تَعَالٰی عَنْهَا से मरवी है कि मेरे सरताज, साह़िबे मे'राज صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने रात के इब्तिदाई ह़िस्से में भी वित्र पढ़े हैं, दरमियानी में भी और आख़िर में भी और आप के वित्र सह़र पर मुन्तही हुए।[4] [5]

वित्रों से फ़ारिग़ होने के बा'द येह पढ़ना मुस्तह़ब है :

سُبْحٰنَ الْمَلِكِ الْقُدُّوْسِ رَبِّ الْمَلَائِكَةِ وَالرُّوْحِ جَلَّلْتَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِالْعَظَمَةِ وَالْجَبَرُوْتِ وَتَعَزَّزْتَ بِالْقُدْرَةِ وَقَهَرْتَ الْعِبَادَ بِالْمَوْتِ

या'नी मैं निहायत पाक बादशाह की पाकी बयान करता हूं जो मलाइका और जिब्राईले अमीन का

---

1 ......المسند للامام احمد بن حنبل، ومن مسند علی بن ابی طالب، الحدیث:۷۴۲، ج۱، ص۲۰۶۔

سنن ابن ماجه، کتاب اقامة الصلاة و السنة فیها، باب ماجاء فیما یقراء فی الوتر، الحدیث:۱۱۷۲، ج۲، ص۴۷، مفهومًا۔

2 ......صحیح مسلم، کتاب الصلاة، باب استحباب صلاة الضحی......الخ، الحدیث:۷۲۲، ص۳۶۴، عن ابی الدرداء۔

3 ......صحیح مسلم، کتاب صلاة المسافرین و قصرها، باب صلاة اللیل مثنی مثنی......الخ، الحدیث:۷۴۹، ص۳۷۷۔

4 .....मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْمَنَّان मिरआतुल मनाजीह़, जि. 2 स. 273 पर इस के तह़त फ़रमाते हैं : हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने कभी इशा के वक़्त वित्र पढ़ लिये और कभी इशा पढ़ कर सोए और दरमियान रात जाग कर तहज्जुद व वित्र पढ़े मगर आख़िरी अ़मल येह रहा कि सुब्हे सादिक़ के क़रीब तहज्जुद के बा'द वित्र पढ़े। मुसलमान जिस पर अ़मल करेगा सुन्नत का षवाब पाएगा अगर्चे आख़िर रात पढ़ना अफ़्ज़ल है।

5 ......صحیح مسلم، کتاب صلاة المسافرین وقصرها، باب صلاة اللیل وعدد رکعات......الخ، الحدیث:۷۴۵، ص۳۷۴۔

रब्ब है। ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तू ने आस्मानों और ज़मीन को अ़ज़मत व जबरूत के साथ ढांपा हुवा है और तू अपनी क़ुदरत के साथ इ़ज़्ज़त वाला है और तू ने अपने बन्दों को मौत के ज़रीए़ क़ाबू कर रखा है।"

मरवी है कि "आक़ाए दो आ़लम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم विसाले ज़ाहिरी तक फ़राइज़ के इलावा दीगर नमाज़ें अकषर अवक़ात बैठ कर अदा फ़रमाते।"(1)

मरवी है कि हु़ज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "या'नी बैठ कर नमाज़ पढ़ने वाले के लिये खड़े हो कर नमाज़ पढ़ने वाले की ब निस्बत निस्फ़ षवाब है और लैट कर पढ़ने वाले के लिये बैठ कर पढ़ने वाले की ब निस्बत निस्फ़ षवाब है।(2) (3) येह फ़रमाने आ़लीशान इस पर दलालत करता है कि लैट कर नवाफ़िल पढ़ना दुरुस्त है।

तीसरा वज़ीफ़ा :

सोना (आराम करना) : नींद को वज़ाइफ़ में शुमार करने में कोई ह़रज नहीं क्यूंकि जब इस के आदाब की रिआ़यत की जाएगी तो येह सोना भी इबादत में शुमार होगा।

मन्क़ूल है कि बन्दा जब त़हारत व पाकीज़गी और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ज़िक्र पर सोता है तो बेदार होने तक नमाज़ी लिखा जाता है, इस के लिबास में एक फ़िरिश्ता दाख़िल हो जाता है, अगर ह़ालते नींद में ह़रकत करता और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र करता है तो फ़िरिश्ता अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से उस के लिये दुआ़ मांगता और मग़फ़िरत त़लब करता है।(4)

ह़दीषे पाक में है : "اِذَا نَامَ عَلٰی طَھَارَۃٍ رَفَعَ رُوْحُہٗ اِلَی الْعَرْشِ या'नी जब बन्दा बा वुज़ू सोता है तो उस की रूह़ अ़र्श तक बुलन्द होती है।"(5)

---

1 ......سنن النسائی، کتاب قیام اللیل وتطوع النهار، باب صلاۃ القاعد......الخ، الحدیث: ۱۶۵۰، ص ۲۸۸، "مات" بدلہ "قبض"۔

2 ....मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْمَنَّان मिरआतुल मनाजीह़, जि. 2 स. 266 पर इस के तह़त फ़रमाते हैं : जो शख़्स नफ़्ली नमाज़ क़ियाम पर क़ादिर होते हुए बैठ कर पढ़े तो उसे आधा षवाब मिलेगा फ़र्ज़ नमाज़ बिला उ़ज़्र बैठ कर नहीं होगी।

3 ......صحیح البخاری، کتاب تقصیر الصلاۃ، باب صلاۃ القاعد، الحدیث: ۱۱۱۵، ج ۱، ص ۳۷۹۔

4 ......قوت القلوب، الفصل الثالث عشر کتاب جامع......الخ، ج ۱، ص ۶۷۔

الزھد لابن المبارک، الجزء العاشر، الحدیث: ۱۲۴۴، ص ۴۳۱، مفھومًا۔

5 ......قوت القلوب، الفصل الثالث عشر کتاب جامع......الخ، ج ۱، ص ۶۷، "رفع روحہ" بدلہ "عرج بروحہ"۔

आ़लिम का सोना इ़बादत है :

येह तो अ़वाम के बारे में है, ख़्वास, उ़-लमा और पाक व साफ़ दिल रखने वालों का क्या आ़लम होगा ? येह तो वोह लोग हैं कि जिन पर नींद के आ़लम में असरार मुन्कशिफ़ होते हैं इसी वजह से हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ''نَوْمُ الْعَالِمِ عِبَادَةٌ وَنَفَسُهٗ تَسْبِيْحٌ या'नी आ़लिम का सोना इ़बादत और उस का सांस लेना तस्बीह़ है।''(1)

ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से पूछा : ''आप शब बेदारी कैसे करते हैं ? फ़रमाया : ''पूरी रात क़ियाम करता हूं, थोड़ी देर भी नहीं सोता और वक़्फ़े वक़्फ़े से क़ुरआने पाक पढ़ता हूं।'' ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : ''लेकिन मैं सोता हूं फिर उठता हूं और अपनी नींद को क़ियाम की त़रह़ बाइ़षे षवाब शुमार करता हूं।'' फिर दोनों ने बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर हो कर इस के मुतअ़ल्लिक़ अ़र्ज़ की तो आप صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ''मुआ़ज़ तुम से ज़ियादा फ़क़ीह है।''(2)

सोने के 10 आदाब :

﴾1﴿.....वुज़ू और मिस्वाक कर के सोए कि मुस्त़फ़ा जाने रह़मत صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ''जब बन्दा बा वुज़ू सोता है उस की रूह़ अ़र्श की त़रफ़ ले जाई जाती है तो उस के ख़्वाब सच्चे होते हैं। अगर बा वुज़ू न सोए तो उस की रूह़ पहुंचने से क़ासिर रहती है और उसे परेशान कुन ख़्वाब आते हैं जो सच्चे नहीं होते।''(3) त़हारत से ज़ाहिरी व बात़िनी दोनों क़िस्म की त़हारत मुराद है, त़हारते बात़िनी ही ग़ैब के पर्दों के मुन्कशिफ़ होने में मुअष्षिर होती है।

﴾2﴿.....अपने सिरहाने मिस्वाक और वुज़ू का पानी रखे और बेदार होते वक़्त इ़बादत के लिये कमर बस्ता होने की निय्यत करे, जब भी बेदार हो तो मिस्वाक करे कि बा'ज़ बुज़ुर्ग इसी त़रह़ किया करते थे। नीज़ मरवी है कि ''हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم हर रात कई बार मिस्वाक करते थे, हर बार सोते वक़्त भी और बेदार होते वक़्त भी।''(4)

---

1 ......فردوس الاخبار للدیلمی، باب النون، الحدیث:٦٩٩٩، ج٢، ص٣٦٥۔

2 ......قوت القلوب، الفصل الرابع عشر فی ذکر تقسیم قیام اللیل......الخ، ج ١، ص ٧٤۔

3 ......قوت القلوب، الفصل الثالث عشر کتاب جامع......الخ، ج ١، ص٦٧۔

4 ......صحیح مسلم، کتاب الطهارة، باب السواک، الحدیث:٢٥٦، ص ١٥٣، مفهومًا۔

अगर वुज़ू करना दुश्वार हो तो पानी से आ'ज़ा पर मस्ह़ कर लेना मुस्तह़ब है। अगर वुज़ू के लिये पानी मुयस्सर न हो तो क़िब्ला रू बैठ कर ज़िक्रो दुआ और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़ुदरत और उस की ने'मतों में ग़ौरो फ़िक्र करने में मश्ग़ूल हो जाए तो येह रात के क़ियाम के क़ाइम मक़ाम हो जाएगा कि हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जो अपने बिस्तर पर आते वक़्त, रात को उठ कर नमाज़ पढ़ने की निय्यत करे फिर उस पर नींद ग़ालिब आ जाए ह़त्ता की सुब्ह़ हो जाए तो उस के लिये उस की निय्यत के मुत़ाबिक़ षवाब लिखा जाएगा और उस की नींद **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से उस पर सदक़ा है।"(1)

उसे कलाम की इजाज़त न दी जाएगी :

﴾3﴿.....जिस ने कोई वसिय्यत करनी हो वोह वसिय्यत लिख कर अपने सिरहाने रखे बिग़ैर न सोए क्यूंकि ह़ालते नींद में रूह़ के क़ब्ज़ होने से अम्न नहीं है तो अगर येह बिग़ैर वसिय्यत किये मर गया तो बरज़ख़ से ले कर रोज़े क़ियामत तक उस को कलाम करने की इजाज़त न दी जाएगी, दीगर फ़ौत शुदा लोग इस से मिलने के लिये आएंगे, इस से बातें करेंगे लेकिन येह उन से कलाम न कर सकेगा तो वोह एक दूसरे से कहेंगे : "येह मिस्कीन बन्दा बिग़ैर वसिय्यत के ही मर गया है !" लिहाज़ा अचानक मौत के ख़ौफ़ से वसिय्यत करना मुस्तह़ब है। अचानक मौत हल्की होती है मगर उस के लिये नहीं जो मौत के लिये तय्यार नहीं कि उस की पीठ पर लोगों के ह़ुक़ूक़ का बोझ है।

﴾4﴿....तमाम गुनाहों से तौबा कर के सोए, तमाम मुसलमानों के बारे में दिल साफ़ हो, दिल में किसी के ज़ुल्म को बयान न करे और न ही बेदार होने के बा'द कोई गुनाह करने का इरादा करे कि हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जो अपने बिस्तर में इस ह़ालत में आए कि न तो किसी पर ज़ुल्म की निय्यत हो और न ही किसी से बुग़्ज़ व कीना रखता हो तो उस के साबिक़ा जुर्मों को बख़्श दिया जाएगा।"(2)

﴾5﴿......नर्म व मुलायम बिस्तर बिछा कर ऐश परस्ती में न पड़े बल्कि उसे बिल्कुल तर्क कर दे या फिर दरमियानी क़िस्म का बिस्तर इख़्तियार करे कि बा'ज़ बुज़ुर्ग सोने के लिये बिस्तर बिछाने को मकरूह समझते और इसे तकल्लुफ़ ख़याल करते थे। नीज़ अस्ह़ाबे सुफ़्फ़ा رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن अपने और मिट्टी के दरमियान कोई चीज़ ह़ाइल न करते और फ़रमाते : "हम इसी से पैदा किये

---

1 ......سنن ابن ماجه، کتاب اقامة الصلاة والسنة فيها، باب ماجاء فيمن نام عن......الخ، الحديث:۱۳۴۴، ج۲، ص۱۳۳۔

2 ......تاريخ دمشق لابن عساكر، محمد بن صالح ابو نصر العسقلانی، الحديث:۱۱۲۴۶، ج۵۳، ص۲۷۳، باختصارٍ۔

गए हैं और इसी में लौटाए जाएंगे।" नीज़ इसे रिक़्क़ते क़ल्बी में इज़ाफ़े का बाइ़ष और तवाज़ोअ़ के ज़ियादा लाइक़ ख़याल करते थे। लिहाज़ा जिस के लिये येह मुमकिन न हो तो वोह दरमियाना रास्ता इख़्तियार करे।

﴾6﴿....उस वक़्त तक न सोए जब तक नींद का ग़लबा न हो, जब रात के आख़िरी ह़िस्से में इ़बादत की निय्यत न हो तो नींद को लाने में भी तकल्लुफ़ न करे।

अस्लाफ़े किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام की तीन ख़स्लतें :

हमारे अस्लाफ़े किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام नींद के ग़लबे के वक़्त सोते, भूक की शिद्दत के वक़्त खाते और ज़रूरत के मुत़ाबिक़ कलाम किया करते थे। इसी वजह से उन की येह सिफ़त बयान की गई है कि "वोह रात को बहुत कम सोया करते थे।" अगर नींद का इस क़दर ग़लबा हो जाए कि नमाज़ और ज़िक्र से रोक दे और येह ह़ालत हो जाए कि जो कुछ कहता है उसे समझता नहीं तो इतनी देर आराम कर ले कि जो कहता है समझने लगे।

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْهُمَا बैठ कर सोने को नापसन्द फ़रमाया करते थे। नीज़ ह़दीषे पाक में है कि "रात के वक़्त मशक़्क़त न झेलो।"(1)

एक रिवायत में है कि बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ की गई कि "फ़ुलां औ़रत रात को नमाज़ पढ़ती है, जब उस पर नींद का ग़लबा होता है तो एक रस्सी को थाम लेती है।" आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इस से मन्अ़ करते हुए इरशाद फ़रमाया : "तुम में से कोई शख़्स रात में नमाज़ पढ़े तो इतनी देर पढ़े जितनी देर आसानी से पढ़ सके, जब नींद का ग़लबा हो तो सो जाए।"(2)

एक रिवायत में है कि "अ़मल में बक़दरे त़ाक़त मशक़्क़त बर्दाश्त करो क्यूंकि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मलाल नहीं डालता ह़त्ता कि तुम ख़ुद मलाल में पड़ो।"(3) एक रिवायत में है कि "خَيْرُ هٰذَا الدِّيْنِ اَيْسَرُهٗ या'नी इस दीन में सब से बेहतर चीज़ वोह है जो सब से ज़ियादा आसान हो।"(4)

---

1 ......فردوس الاخبار للديلمى، باب اللام الف، الحديث:٧٢٢٢، ج٢، ص٤٢٠-

2 ......صحيح مسلم، كتاب صلاة المسافرين وقصرها، باب امر من نعس فى......الخ، الحديث:٧٨٦، ص٣٩٥، مفهومًا-

3 ......صحيح مسلم، كتاب صلاة المسافرين وقصرها، باب فضيلة العمل الدائم......الخ، الحديث:٧٨٥، ص٣٩٥، بتغيرٍ-

4 ......المسند للامام احمد بن حنبل، مسند الكوفيين، الحديث:١٨٩٩٨، ج٧، ص١٥-

बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ की गई कि "फुलां शख़्स नमाज़ पढ़ता है, सोता नहीं, रोज़ा रखता है, तर्क नहीं करता।" आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "लेकिन मैं नमाज़ भी पढ़ता हूं और सोता भी हूं, रोजे़ भी रखता हूं और इफ़्त़ार भी करता हूं, येह मेरी सुन्नत है तो जिस ने मेरी सुन्नत से मुंह मोड़ा वोह मुझ से नहीं।"[(1)]

एक रिवायत में है कि "इस दीन से मुक़ाबला मत करो, बेशक येह मज़बूत़ व पुख़्ता है जो शख़्स इस से मुक़ाबला करेगा, येह उस पर ग़ालिब आ जाएगा। लिहाज़ा अपने नफ़्स के नज़्दीक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इबादत को नापसन्दीदा न ठहराओ।"[(2)]

﴾7﴿......क़िब्ला रू हो कर सोए। क़िब्ला रुख़ होने की दो सूरतें हैं :

पहली सूरत : वोह है जो क़रीबुल मौत शख़्स की होती है कि वोह अपनी गर्दन के पिछले ह़िस्से (या'नी गुद्दी) पर चित लैटे हुए होता है इस सूरत में क़िब्ला रू होना इस त़रह़ होगा कि उस का चेहरा और पाउं के तल्वे क़िब्ले की त़रफ़ हो (अह़्नाफ़ के नज़्दीक क़िब्ले की जानिब पाउं फैलाना मकरूह है)

दूसरी सूरत : वोह है कि जिस त़रह़ क़ब्र में क़िब्ले की त़रफ़ रुख़ किया जाता है वोह येह है कि करवट के बल इस त़रह़ लैटे कि चेहरा और बदन का सामने वाला ह़िस्सा क़िब्ले की त़रफ़ हो येह उस वक़्त होगा जब सीधी करवट पर लैटे।

सोते वक़्त की दुआ :

﴾8﴿......सोते वक़्त येह दुआ पढ़े : "بِاسْمِكَ رَبِّی وَضَعْتُ جَنْبِی وَبِاسْمِكَ اَرْفَعُهٗ या'नी ऐ रब्ब عَزَّوَجَلَّ मैं तेरे ही नाम से अपना पहलू रखता हूं और तेरे ही नाम से उठाता हूं।" नीज़ "**दुआओं के बयान**" में ज़िक्र कर्दा दुआए माषूरा भी पढ़े।[(3)] मख़्सूस आयात मषलन आयतुल कुरसी और सूरए बक़रह का आख़िरी रुकूअ़ वग़ैरा पढ़ना मुस्तह़ब है।

वोह क़ुरआन न भूलेगा :

दर्जे ज़ैल आयात पढ़ना भी मुस्तह़ब है :

---

❶......صحیح مسلم، کتاب النکاح، باب استحباب النکاح لمن تاقت نفسه الیه......الخ، الحدیث: ۱۴۰۱، ص ۷۲۵،
دون الالفاظ"هذه سنتی"۔

❷......السنن الکبری للبیهقی، کتاب الصلاة، باب القصد فی العبادة......الخ، الحدیث: ۴۷۴۱_۴۷۴۳، ص ۲۷_۲۸۔

❸......سنن ابی داود، کتاب الادب، باب مایقول عندالنوم، الحدیث: ۵۰۵۰، ج ۴، ص ۴۰۶۔

وَ اِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ۚ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِيْمُ ﴿۱۶۳﴾ اِنَّ فِيْ خَلْقِ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ وَ اخْتِلَافِ الَّيْلِ وَ النَّهَارِ وَ الْفُلْكِ الَّتِيْ تَجْرِيْ فِي الْبَحْرِ بِمَا يَنْفَعُ النَّاسَ وَ مَاۤ اَنْزَلَ اللّٰهُ مِنَ السَّمَآءِ مِنْ مَّآءٍ فَاَحْيَا بِهِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا وَ بَثَّ فِيْهَا مِنْ كُلِّ دَآبَّةٍ ۪ وَّ تَصْرِيْفِ الرِّيٰحِ وَ السَّحَابِ الْمُسَخَّرِ بَيْنَ السَّمَآءِ وَ الْاَرْضِ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ﴿۱۶۴﴾

(پ ۲، البقرۃ: ۱۶۳، ۱۶۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और तुम्हारा मा'बूद एक मा'बूद है उस के सिवा कोई मा'बूद नहीं मगर वोही बड़ी रह़मत वाला मेहरबान। बेशक आस्मानों और ज़मीन की पैदाइश और रात व दिन का बदलते आना और कश्ती कि दरया में लोगों के फ़ाइदे ले कर चलती है और वोह जो **अल्लाह** ने आस्मान से पानी उतार कर मुर्दा ज़मीन को इस से जिला दिया और ज़मीन में हर क़िस्म के जानवर फैलाए और हवाओं की गर्दिश और वोह बादल कि आस्मान व ज़मीन के बीच में हुक्म का बांधा है इन सब में अ़क्ल मन्दों के लिये ज़रूर निशानियां हैं।*

मन्क़ूल है कि जो शख़्स सोते वक़्त मज़्कूरा आयात पढ़ेगा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर कुरआने पाक को मह़फ़ूज़ रखेगा (या'नी उसे कुरआने पाक याद रखने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाएगा) वोह कभी भी कुरआने पाक नहीं भूलेगा।

सूरए आ'राफ़ की येह आयात भी तिलावत करे :

اِنَّ رَبَّكُمُ اللّٰهُ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضَ فِيْ سِتَّةِ اَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ ۫ يُغْشِي الَّيْلَ النَّهَارَ يَطْلُبُهٗ حَثِيْثًا ۙ وَّ الشَّمْسَ وَ الْقَمَرَ وَ النُّجُوْمَ مُسَخَّرٰتٍۭ بِاَمْرِهٖ ؕ اَلَا لَهُ الْخَلْقُ وَ الْاَمْرُ ؕ تَبٰرَكَ اللّٰهُ رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿۵۴﴾ اُدْعُوْا رَبَّكُمْ تَضَرُّعًا وَّ خُفْيَةً ؕ اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِيْنَ ﴿۵۵﴾ وَ لَا تُفْسِدُوْا فِي الْاَرْضِ بَعْدَ اِصْلَاحِهَا وَ ادْعُوْهُ خَوْفًا

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *बेशक तुम्हारा रब्ब **अल्लाह** है जिस ने आस्मान और ज़मीन छे दिन में बनाए फिर अ़र्श पर इस्तिवा फ़रमाया जैसा उस की शान के लाइक़ है रात दिन को एक दूसरे से ढांकता है कि जल्द उस के पीछे लगा आता है और सूरज और चांद और तारों को बनाया सब उस के हुक्म के दबे हुए सुन लो उसी के हाथ है पैदा करना और हुक्म देना बड़ी बरकत वाला है **अल्लाह** रब्ब सारे जहान का। अपने रब्ब से दुआ़ करो गिड़गिड़ाते और आहिस्ता बेशक ह़द से बढ़ने वाले उसे पसन्द*

وَّ طَمَعًا ؕ اِنَّ رَحْمَتَ اللّٰهِ قَرِیْبٌ مِّنَ الْمُحْسِنِیْنَ ﴿۵۶﴾ (پ۸،الاعراف:۵۴تا۵۶)

नहीं और ज़मीन में फ़साद न फैलाओ इस के संवरने के बा'द और उस से दुआ करो डरते और तृम्अ करते बेशक अल्लाह की रह़मत नेकों से क़रीब है।

सूरए बनी इसराईल की आख़िरी दो आयतें भी पढ़े :

قُلِ ادْعُوا اللّٰهَ اَوِ ادْعُوا الرَّحْمٰنَ ؕ اَیًّامَّا تَدْعُوْا فَلَهُ الْاَسْمَآءُ الْحُسْنٰی ۚ وَ لَا تَجْهَرْ بِصَلَاتِكَ وَ لَا تُخَافِتْ بِهَا وَ ابْتَغِ بَیْنَ ذٰلِكَ سَبِیْلًا ﴿۱۱۰﴾ وَ قُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ لَمْ یَتَّخِذْ وَلَدًا وَّ لَمْ یَكُنْ لَّهٗ شَرِیْكٌ فِی الْمُلْكِ وَ لَمْ یَكُنْ لَّهٗ وَلِیٌّ مِّنَ الذُّلِّ وَ كَبِّرْهُ تَكْبِیْرًا ﴿۱۱۱﴾ (پ۱۵،بنیٓ اسرآءیل:۱۱۰، ۱۱۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *तुम फ़रमाओ अल्लाह कह कर पुकारो या रह़मान कह कर जो कह कर पुकारो सब उसी के अच्छे नाम हैं और अपनी नमाज़ न बहुत आवाज़ से पढ़ो न बिल्कुल आहिस्ता और इन दोनों के बीच में रास्ता चाहो। और यूं कहो सब ख़ूबियां अल्लाह को जिस ने अपने लिये बच्चा इख़्तियार न फ़रमाया और बादशाही में कोई उस का शरीक नहीं और कमज़ोरी से कोई उस का ह़िमायती नहीं और उस की बड़ाई बोलने को तक्बीर कहो।*

तो उस के लिबास में एक फ़िरिश्ता दाख़िल होगा जो उस की ह़िफ़ाज़त के लिये मुक़र्रर किया गया होगा, वोह फ़िरिश्ता उस के लिये दुआए मग़फ़िरत करेगा।

फिर मुअ़व्वज़तैन (या'नी सूरए फ़लक़ और सूरए नास) पढ़ कर हाथों पर दम करे और दोनों हाथों को चेहरे और पूरे जिस्म पर फेर ले कि अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से इसी त़रह़ मरवी है।(1)

नीज़ सूरए कह्फ़ के शुरूअ़ और आख़िर से दस दस आयात पढ़े। येह आयात रात को इबादत के वासिते़ जागने के लिये हैं। अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَهُ الْکَرِیْم फ़रमाया करते : "मैं उस शख़्स को कामिल अ़क़्ल वाला नहीं समझता जो सूरए बक़रह की आख़िरी दो आयात पढ़े बिग़ैर सो जाए।"

फिर पच्चीस पच्चीस मरतबा येह कलिमात कहे سُبْحٰنَ اللّٰہ،اَلْحَمْدُ لِلّٰہ،لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہ،اَللّٰہُ اَکْبَر ताकि सब का मजमूआ़ **100** हो जाए।

﴾9﴿.....सोते वक़्त येह बात याद करे कि नींद भी मौत की एक क़िस्म है और बेदार होना मरने के बा'द क़ियामत के दिन दोबारा उठाए जाने की क़िस्म है। इरशादे बारी तआ़ला है :

---

1 ......صحیح البخاری، کتاب فضائل القرآن، باب فضل المعوذات، الحدیث:۵۰۱۷، ج۳، ص۴۰۷۔

اَللّٰہُ یَتَوَفَّی الۡاَنۡفُسَ حِیۡنَ مَوۡتِہَا وَ الَّتِیۡ لَمۡ تَمُتۡ فِیۡ مَنَامِہَا (پ۲۴،الزمر:۴۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : अल्लाह जानों को वफ़ात देता है उन की मौत के वक़्त और जो न मरें उन्हें उन के सोते में।

एक जगह इरशाद फ़रमाया :

وَ ہُوَ الَّذِیۡ یَتَوَفّٰىکُمۡ بِالَّیۡلِ (پ۷،الانعام:۶۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और वोही है जो रात को तुम्हारी रूहें क़ब्ज़ करता है।

इन आयात में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने नींद को मौत का नाम दिया है। जैसे जो शख़्स नींद से बेदार होता है तो उस के लिये ऐसे मुशाहदात मुन्कशिफ़ होते हैं जो ह़ालते नींद में उस के अह़वाल के मुनासिब नहीं होते, ऐसे ही मरने के बा'द क़ियामत के दिन उठने वाला वोह कुछ देखेगा जिस का दिल में कभी ख़याल भी न आया होगा और न ही उसे कभी देखा होगा। ज़िन्दगी और मौत के दरमियान नींद की मिषाल ऐसे है जैसे दुन्या और आख़िरत के दरमियान बरज़ख़।

अनमोल मोती :

ह़ज़रते सय्यिदुना लुक़्मान رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہُ ने अपने बेटे से फ़रमाया : "ऐ बेटे ! अगर तुझे मौत के बारे में शक है तो मत सोना कि जैसे तू सोता है ऐसे ही तू मरेगा भी और अगर क़ियामत के दिन उठाए जाने में शक है तो सोने के बा'द बेदार मत होना कि जैसे तू सोने के बा'द बेदार होता है ऐसे ही मरने के बा'द क़ियामत के दिन उठाया जाएगा।"

ह़ज़रते सय्यिदुना का'बुल अह़बार رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : "सीधी करवट और चेहरा क़िब्ला रू कर के सोया करो कि येह भी मौत है।"

उम्मुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْھَا फ़रमाती हैं : सोते वक़्त प्यारे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का आख़िरी कलाम येह हुवा करता था : اَللّٰھُمَّ رَبَّ السَّمٰوٰتِ السَّبۡعِ وَرَبَّ الۡعَرۡشِ الۡعَظِیۡمِ رَبَّنَا وَرَبَّ کُلِّ شَیۡءٍ وَمَلِیۡکَہٗ या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ सातों ज़मीनों और अ़ज़मत वाले अ़र्श के रब्ब ! हमारे रब्ब और हर चीज़ के रब्ब और मालिक।

सोते वक़्त कैफ़िय्यत येह होती थी कि रुख़्सार मुबारक दाहिने हाथ पर होता था और येह ख़याल फ़रमाते कि इसी रात विसाल फ़रमा जाएंगे।[1] येह मुकम्मल दुआ़ "**दुआ़ओं के बयान**" में गुज़र चुकी है।

---

1 ......قوت القلوب، الفصل الثالث عشر کتاب جامع......الخ، ج ۱، ص ۲۵۔

बन्दा सोते वक़्त तीन बातों पर ग़ौर करे :

बन्दे पर ह़क़ है कि सोते वक़्त दिल से तीन बातों के बारे में पूछ गछ करे : (1)....वोह किस बात पर सो रहा है ? (2).....उस के दिल पर किस चीज़ की मह़ब्बत ग़ालिब है अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस से मुलाक़ात की या दुन्या की ? (3)....येह यक़ीन करे कि मौत उसी ह़ालत पर होगी जो दिल में ग़ालिब है और उसी ह़ालत पर उठाया जाएगा जिस पर मौत वाक़ेअ़ होगी क्यूंकि आदमी उसी के साथ होगा जिस से वोह मह़ब्बत करता है या जिस चीज़ से वोह मह़ब्बत करता है।

बेदार हो तो येह दुआ़ पढ़े :

﴿10﴾.......बेदार होते वक़्त भी दुआ़ पढ़े । चुनान्चे, जब बेदार हो तो इधर उधर करवटें बदलते हुए वोह पढ़े जो मुस्त़फ़ा जाने रह़मत صَلَّى اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पढ़ा करते थे :

لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا الْعَزِيْزُ الْغَفَّار

या'नी मा'बूद कोई नहीं एक अल्लाह सब पर ग़ालिब, मालिक आस्मानों और ज़मीन का और जो कुछ इन के दरमियान है, साहि़बे इ़ज़्ज़त बड़ा बख़्शने वाला।[1]

कोशिश करे कि सोते वक़्त दिल पर जो आख़िरी चीज़ जारी हो वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र हो और बेदार होते वक़्त जो चीज़ सब से पहले दिल पर वारिद हो वोह भी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र हो कि येह मह़ब्बत की अ़लामत है। इन दोनों ह़ालतों में दिल में वोही चीज़ होगी जो उस पर ग़ालिब है। लिहाज़ा दिल को इस के ज़रीए़ आज़माए कि येह मह़ब्बत की अ़लामत है और येह अ़लामत दिल के बात़िन से ज़ाहिर होती है। येह अज़्कार सिर्फ़ इस लिये मुस्तह़ब हैं ताकि दिल ज़िक्रे इलाही की त़रफ़ चल पड़े।

बेदार होने के बा'द की दुआ़ :

जब बेदार हो तो येह कहते हुए उठे : اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِىْ اَحْيَانَا بَعْدَ مَا اَمَاتَنَا وَاِلَيْهِ النُّشُوْر या'नी तमाम ता'रीफ़ें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये जिस ने हमें मौत (नींद) के बा'द ह़यात (बेदारी) अ़त़ा फ़रमाई और हमें उसी की त़रफ़ लौटना है।[2] पूरी दुआ़ हम ने "बेदार होने की दुआ़ओं के बयान" में ज़िक्र कर दी है।

---

1 ......السنن الكبرى للنسائى، كتاب النعوت، العزيز الغفار، الحديث:۷۶۸۸، ج۴، ص۴۰۰۔

2 ......سنن ابى داود، كتاب الادب، باب مايقول عندالنوم، الحديث:۵۰۴۹، ج۴، ص۴۰۵۔

चौथा वज़ीफ़ा :

येह वज़ीफ़ा रात के पहले निस्फ़ से ले कर उस वक़्त तक है कि रात का छटा हिस़्सा बाक़ी रह जाए, उस वक़्त बन्दा नमाज़े तहज्जुद के लिये उठ खड़ा होता है। लफ़्ज़े "तहज्जुद" उस नमाज़ के साथ ख़ास है जो नींद से बेदार होने के बा'द होती है। येह वक़्त रात का दरमियानी हिस़्सा होता है और येह वज़ीफ़ा उस वज़ीफ़े के मुशाबेह है जो ज़वाल के बा'द होता है क्यूंकि वोह दिन का दरमियानी हिस़्सा होता है। उस की क़सम याद करते हुए **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

وَالَّيۡلِ اِذَا سَجٰى ۙ﴿۲﴾ (پ۳۰،الضحٰی:۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और रात की (क़सम) जब पर्दा डाले।*

या'नी जब साकिन हो जाए और उस का साकिन होना उसी वक़्त में होता है कि कोई आंख जागती बाक़ी नहीं रहती सिवाए उस के जो **हय्युल क़य्युम** है, जिसे न ऊंघ आए न नींद। मन्क़ूल है कि "سَجٰی" का मा'ना फैलना और लम्बा होना है और येह भी कहा गया है कि इस का मा'ना है, "अन्धेरा होना है।"

इबादत के लिये कौन सा वक़्त अफ़्ज़ल है ?

मरवी है कि बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ की गई : "रात के किस हिस़्से में दुआ़ ज़ियादा क़बूल होती है ?" इरशाद फ़रमाया : "جَوْفُ اللَّيْل या'नी रात के दरमियानी हिस़्से में।"(1)

ह़ज़रते सय्यिदुना दावूद عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने बारगाहे रब्बुल इ़ज़्ज़त में अ़र्ज़ की : "इलाही ! मैं तेरी इबादत करना पसन्द करता हूं कौन सा वक़्त अफ़्ज़ल है ?" **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने वह्य फ़रमाई : "ऐ दावूद ! रात के पहले और आख़िरी हिस़्से में इबादत न कर कि जो पहले हिस़्से में इबादत करता है वोह दूसरे हिस़्से में सो जाता है और जो आख़िरी हिस़्से में इबादत करता है वोह पहले हिस़्से में नहीं करता बल्कि रात के दरमियानी हिस़्से में इबादत कर ताकि तू मेरे साथ और मैं तेरे साथ तन्हा होऊं और अपनी ह़ाजतें मुझ तक पहुंचा।"

मरवी है कि बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ की गई : "रात का कौन सा हिस़्सा अफ़्ज़ल है ?" तो आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया :

"نِصْفُ اللَّيْلِ الْغَابِر या'नी रात का दूसरा निस्फ़ हिस़्सा।"(2)

---

1 ......سنن ابی داود، کتاب التطوع، باب من رخص فیھما......الخ، الحدیث:۱۲۷۷، ج۲، ص۳۷۔

2 ......قوت القلوب، الفصل الثامن فی ذکر اوراد اللیل......الخ، ج۱، ص۴۱۔

रात के दूसरे निस्फ़ की फ़ज़ीलत के बारे में बहुत सी रिवायात मरवी हैं, मषलन : इस वक़्त अ़र्श झूमता है, जन्नाते अ़दन से हवाएं चलती हैं और अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ आस्माने दुन्या की त़रफ़ नुज़ूल फ़रमाता है वग़ैरा।

इस वज़ीफ़े की तरतीब :

इस वज़ीफ़े की तरतीब येह है कि बेदार होने की दुआ़ओं से फ़ारिग़ हो कर वुज़ू की सुन्नतों, आदाब और दुआ़ओं की रिआ़यत करते हुए वुज़ू करे फिर जाए नमाज़ की त़रफ़ मुतवज्जेह हो और क़िब्ला रू हो कर येह पढ़े :

"اَللّٰهُ اَكْبَرُ كَبِيْرًا وَّالْحَمْدُ لِلّٰهِ كَثِيْرًا وَّسُبْحٰنَ اللّٰهِ بُكْرَةً وَّاَصِيْلًا" या'नी अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ सब से बड़ा है, अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ के लिये बहुत ज़ियादा ता'रीफ़ें हैं और सुब्ह़ो शाम अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ के लिये पाकी है।"

फिर दस दस बार येह पढ़े : سُبْحٰنَ اللّٰهِ، اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ और اَللّٰهُ اَكْبَرُ फिर येह पढ़े :

اَللّٰهُ اَكْبَرُ ذُو الْمَلَكُوْتِ وَالْجَبَرُوْتِ وَالْكِبْرِيَاءِ وَالْعَظَمَةِ وَالْجَلَالِ وَالْقُدْرَةِ या'नी अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ सब से बड़ा है, वोह बादशाही व त़ाक़त, अ़ज़मत व किब्रियाई और जलाल व क़ुदरत वाला है।

तहज्जुद के लिये उठे तो येह पढ़े :

येह कलिमात भी कहे क्यूंकि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم से तहज्जुद के लिये क़ियाम के वक़्त इन कलिमात का पढ़ना मरवी है :

اَللّٰهُمَّ لَكَ الْحَمْدُ اَنْتَ نُوْرُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَلَكَ الْحَمْدُ اَنْتَ بَهَاءُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَلَكَ الْحَمْدُ اَنْتَ رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَلَكَ الْحَمْدُ اَنْتَ قَيُّوْمُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَنْ فِيْهِنَّ وَمَنْ عَلَيْهِنَّ اَنْتَ الْحَقُّ وَمِنْكَ الْحَقُّ وَلِقَاؤُكَ حَقٌّ وَالْجَنَّةُ حَقٌّ وَالنَّارُ حَقٌّ وَالنُّشُوْرُ حَقٌّ وَالنَّبِيُّوْنَ حَقٌّ وَمُحَمَّدٌ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حَقٌّ۔ اَللّٰهُمَّ لَكَ اَسْلَمْتُ وَبِكَ آمَنْتُ وَعَلَيْكَ تَوَكَّلْتُ وَاِلَيْكَ اَنَبْتُ وَبِكَ خَاصَمْتُ وَاِلَيْكَ حَاكَمْتُ فَاغْفِرْلِيْ مَا قَدَّمْتُ وَمَا اَخَّرْتُ وَمَا اَسْرَرْتُ وَمَا اَعْلَنْتُ وَمَا اَسْرَفْتُ اَنْتَ الْمُقَدِّمُ وَاَنْتَ الْمُؤَخِّرُ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ۔ اَللّٰهُمَّ آتِ نَفْسِيْ تَقْوٰهَا وَزَكِّهَا اَنْتَ خَيْرُ مَنْ زَكَّاهَا اَنْتَ وَلِيُّهَا وَمَوْلَاهَا۔ اَللّٰهُمَّ اهْدِنِيْ لِاَحْسَنِ الْاَعْمَالِ لَا يَهْدِيْ لِاَحْسَنِهَا اِلَّا اَنْتَ وَاصْرِفْ عَنِّيْ سَيِّئَهَا لَا يَصْرِفُ عَنِّيْ سَيِّئَهَا اِلَّا اَنْتَ۔ اَسْئَلُكَ مَسْئَلَةَ الْبَائِسِ الْمِسْكِيْنِ وَاَدْعُوْكَ دُعَاءَ الْمُفْتَقِرِ الذَّلِيْلِ فَلَا تَجْعَلْنِيْ بِدُعَائِكَ رَبِّ شَقِيًّا وَّكُنْ بِيْ رَءُوْفًا رَّحِيْمًا يَا خَيْرَ الْمَسْئُوْلِيْنَ وَاَكْرَمَ الْمُعْطِيْنَ۔

या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तेरे ही लिये ह़म्द है तू आस्मानों और ज़मीन का नूर है। तेरे ही लिये ह़म्द है तू आस्मानों और ज़मीन का जमाल है। तेरे ही लिये ह़म्द है तू आस्मानों और ज़मीन का रब्ब है। तेरे ही लिये ह़म्द है आस्मानों और ज़मीन और जो कुछ इन में है और जो कुछ इन पर है तू ही इन का क़ाइम रखने वाला है। तू ही ह़क़ है। तुझी से ह़क़ है। तुझ से मिलना ह़क़ है। जन्नत ह़क़ है। जहन्नम ह़क़ है। क़ियामत के दिन उठना ह़क़ है। अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ह़क़ हैं और ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ह़क़ हैं। ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तेरे लिये मैं इस्लाम लाया, तुझ पर ईमान लाया, तुझ पर भरोसा किया, तेरी त़रफ़ रुजूअ़ किया, तेरे भरोसे पर मैं कुफ़्फ़ार से लड़ता हूं, तुझ से फ़ैसला चाहता हूं, मेरे अगले पिछले, छुपे खुले गुनाह और मेरी ज़ियादतियां बख़्श दे, तू ही आगे बढ़ाने वाला है और तू ही पीछे हटाने वाला है, तू ही मा'बूद तेरे सिवा कोई मा'बूद नहीं।(1) ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मेरे नफ़्स को तक़्वा अ़त़ा फ़रमा और इसे पाक कर दे कि तू बेहतर पाक करने वाला है तू ही इस का वाली व मौला है।(2) ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मुझे अच्छे आ'माल की त़रफ़ हिदायत अ़त़ा फ़रमा कि तू ही अच्छे आ'माल की त़रफ़ हिदायत अ़त़ा फ़रमाता है, और बुराइयों को मुझ से फेर दे कि तेरे सिवा बुराइयों को मुझ से कोई नहीं फेरता।(3) मैं ख़स्ता ह़ाल मिस्कीन की त़रह़ तुझ से सुवाल करता और ज़लीलो ख़्वार ह़ाजतमन्द की त़रह़ तुझ से दुआ़ करता हूं तो ऐ मेरे रब्ब! मुझे ना मुराद न लौटाना और मुझ पर रऊफ़ुर्रह़ीम हो जा, ऐ उन सब से बेहतर ज़ात जिन से सुवाल किया जाता है और ऐ अ़त़ा करने वालों में सब से मुअ़ज़्ज़ज़ ज़ात!(4)

उम्मुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं : मेरे सरताज, साह़िबे मे'राज صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم जब रात में उठते और नमाज़ शुरूअ़ करते तो येह कहते :

اَللّٰھُمَّ رَبَّ جِبْرَائِیْلَ وَمِیْکَائِیْلَ وَاِسْرَافِیْلَ فَاطِرَ السَّمٰوَاتِ وَالْاَرْضِ عَالِمَ الْغَیْبِ وَالشَّھَادَۃِ اَنْتَ تَحْکُمُ بَیْنَ عِبَادِکَ فِیْمَا کَانُوْا فِیْہِ یَخْتَلِفُوْنَ اِھْدِنِیْ لِمَا اخْتُلِفَ فِیْہِ مِنَ الْحَقِّ بِاِذْنِکَ اِنَّکَ تَھْدِیْ مَنْ تَشَاءُ اِلٰی صِرَاطٍ مُّسْتَقِیْمٍ

---

1 ......صحیح مسلم، کتاب صلاۃ المسافرین وقصرھا، باب الدعاء فی صلاۃ......الخ، الحدیث:۷۶۹، ص ۳۸۹، بتغیرٍ۔
قوت القلوب، الفصل الثالث عشر کتاب جامع......الخ، ج ۱، ص ۲۸۔

2 ......المسند للامام احمد بن حنبل، مسند السیدۃ عائشۃ رضی اللہ عنھا، الحدیث:۲۵۸۱۵، ج ۱۰، ص ۲۷۔

3 ......صحیح مسلم، کتاب صلاۃ المسافرین وقصرھا، باب الدعاء فی صلاۃ اللیل......الخ، الحدیث:۷۷۱، ص ۳۹۰۔
قوت القلوب، الفصل الثالث عشر کتاب جامع......الخ، ج ۱، ص ۲۸، "لاحسن الاخلاق" بدلہ "لاحسن الاعمال"۔

4 ......المعجم الصغیر، من اسمہ عبدالملک، الحدیث:۶۹۷، ج ۱، ص ۲۴۷، بتغیرٍ۔
قوت القلوب، الفصل الثالث عشر کتاب جامع......الخ، ج ۱، ص ۲۸۔

या'नी ऐ अल्लाह ! ऐ जिब्राईल, मीकाईल और इसराफ़ील के रब्ब ! आस्मानों और ज़मीन के बनाने वाले, छुपे खुले के जानने वाले तू ही अपने बन्दों का उन चीज़ों में फ़ैसला करेगा जिस में वोह झगड़ते हैं, मुझे अपने करम से उस हक़ की हिदायत दे जिस में इख़्तिलाफ़ है तू जिसे चाहे सीधे रस्ते की हिदायत दे।(1)

फिर नमाज़ शुरूअ़ करे और हल्की हल्की (या'नी छोटी सूरतों के साथ) दो रक्अ़तें पढ़े फिर जिस क़दर आसानी हो दो दो रक्अ़तें पढ़ता रहे और अगर वित्र न पढ़े हों तो वित्र पर इख़्तिताम करे। दो नमाज़ों के दरमियान सलाम फेरने के बा'द 100 तस्बीह़ की मिक़्दार फ़ासिला करे ताकि राह़त ह़ासिल हो और मज़ीद नमाज़ के लिये चुस्ती पैदा हो।

हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की रात की नमाज़ के बारे में सह़ीह़ सनद के साथ मरवी है कि पहले दो हल्की फुल्की रक्अ़तें पढ़ते फिर दो त़वील रक्अ़तें अदा फ़रमाते फिर कमी फ़रमाते जाते ह़त्ता कि तेरह रक्अ़तें हो जातीं।(2)

उम्मुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا से इस्तिफ़सार किया गया कि "हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم रात की नमाज़ में बुलन्द आवाज़ से क़िराअत फ़रमाते थे या आहिस्ता आवाज़ में?" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا ने फ़रमाया : "कभी बुलन्द आवाज़ से कभी आहिस्ता आवाज़ से।"(3)

मरवी है कि हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "रात की नमाज़ दो दो रक्अ़तें हैं, फिर जब सुब्ह़ हो जाने का अन्देशा हो तो (दो रक्अ़तों के साथ) एक और रक्अ़त मिला कर वित्र बना लो।"(4)

एक रिवायत में है कि "नमाज़े मग़रिब दिन की नमाज़ों को त़ाक़ बना देती है तो तुम रात की नमाज़ को भी त़ाक़ बना लो।"(5) हुज़ूरे पुर नूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की रात की नमाज़ के बारे में मरवी सह़ीह़ रिवायात में से अकषर में तेरह रक्आ़त का ज़िक्र है।(6) इन रक्आ़त में अपना कुरआने पाक का वज़ीफ़ा पढ़े या वोह मख़्सूस सूरतें पढ़े जो इस पर आसान हों, येह उस वज़ीफ़े का हुक्म है जो रात के आख़िरी छटे ह़िस्से के क़रीब तक है।

---

1 ......صحیح مسلم، کتاب صلاۃ المسافرین وقصرھا، باب الدعاء فی صلاۃ اللیل......الخ، الحدیث:٧٧٠، ص ٣٩٠۔

2 ......صحیح مسلم، کتاب صلاۃ المسافرین وقصرھا، باب الدعاء فی صلاۃ......الخ، الحدیث:٧٦٥، ص٣٨٨، باختصارٍ۔

3 ......سنن ابی داود، کتاب الوتر، باب فی وقت الوتر، الحدیث:١٤٣٧، ج٢، ص٩٥۔

4 ......صحیح مسلم، کتاب صلاۃ المسافرین وقصرھا، باب صلاۃ اللیل مثنی مثنی......الخ، الحدیث:٧٤٩، ص٣٧٧۔

5 ......السنن الکبریٰ للنسائی، کتاب الوتر، الامر بالوتر، الحدیث:١٣٨٣، ج ١، ص٤٣٥۔

6 ......صحیح مسلم، کتاب صلاۃ المسافرین وقصرھا، باب صلاۃ اللیل......الخ، الحدیث:٧٣٨، ص ٣٧٢۔

पांचवां वज़ीफ़ा :

रात का आखिरी छटा हिस्सा है और येह सह़री का वक़्त है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

وَبِالْاَسْحَارِ هُمْ يَسْتَغْفِرُوْنَ ﴿۱۸﴾
(پ۲۶، الذّٰریٰت:۱۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और पिछली रात इस्तिग़्फ़ार करते।*

मन्क़ूल है कि यहां इस्तिग़्फ़ार करने से मुराद नमाज़ पढ़ना है (और नमाज़ को इस्तिग़्फ़ार का नाम इस लिये दिया गया है) क्यूंकि इस में इस्तिग़्फ़ार भी होता है। येह वक़्त फ़ज्र के क़रीब होता है क्यूंकि येह रात के फ़िरिश्तों के जाने और दिन के फ़िरिश्तों के आने का वक़्त है।

हर ह़क़ वाले को उस का ह़क़ दो :

ह़ज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अपने भाई ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से जिस रात मुलाक़ात की तो उन्हें इसी वज़ीफ़े का हुक्म दिया। एक त़वील रिवायत के आखि़र में है कि जब रात हुई तो ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ नमाज़ के लिये उठने लगे तो ह़ज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : "सो जा।" आप सो गए। कुछ देर बा'द फिर जाने लगे तो उन्हों ने फिर येही फ़रमाया कि "सो जा।" आप फिर सो गए। फिर सुब्ह़ के क़रीब ह़ज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने उन से फ़रमाया : "अब उठो।" फिर दोनों ने उठ कर नमाज़ पढ़ी। फिर ह़ज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने उन से फ़रमाया : "बेशक तुम्हारी जान का तुम पर ह़क़ है, तुम्हारे मेहमान का तुम पर ह़क़ है और तुम्हारी ज़ौजा का भी तुम पर ह़क़ है। लिहाज़ा हर ह़क़ वाले को उस का ह़क़ दो।" येह उन्हों ने इस वजह से फ़रमाया क्यूंकि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की ज़ौजए मोह़तरमा ने ह़ज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को ख़बर दी थी कि येह पूरी रात सोते नहीं। फिर दोनों ने बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर हो कर येह वाक़िआ़ अ़र्ज़ किया तो आक़ाए नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "सलमान ने सच कहा।"(1)

येही पांचवां वज़ीफ़ा है। इस वक़्त में सह़री करना मुस्तह़ब है। येह वोह वक़्त है जब तुलूए फ़ज्र का अन्देशा होता है। इन दोनों वज़ीफ़ों में येही नमाज़ का वज़ीफ़ा है।

---

1 ......صحیح البخاری، کتاب الصوم، باب من اقسم علی اخیه......الخ، الحدیث:۱۹۶۸، ج۱، ص ۶۴۷، ۶۴۸۔

जब तुलूए़ फ़ज्र हो जाए तो रात के वज़ाइफ़ ख़त्म हो जाएंगे और दिन के वज़ाइफ़ शुरूअ़ हो जाएंगे। इस वक़्त उठ कर फ़ज्र की दो सुन्नतें पढ़े। इस फ़रमाने बारी तआ़ला से येही मुराद है :

وَ مِنَ الَّیۡلِ فَسَبِّحۡهُ وَ اِدۡبَارَ النُّجُوۡمِ ﴿۴۹﴾

(پ ۲۷، الطور: ۴۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और कुछ रात में उस की पाकी बोलो और तारों के पीठ देते।

फिर येह आयते मुबारका पढ़े :

شَهِدَ اللّٰهُ اَنَّهٗ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۙ وَ الۡمَلٰٓئِكَةُ وَ اُولُوا الۡعِلۡمِ قَآئِمًۢا بِالۡقِسۡطِ ؕ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الۡعَزِیۡزُ الۡحَكِیۡمُ ﴿ؕ۱۸﴾ (پ ۳، اٰل عمران: ۱۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : अल्लाह ने गवाही दी कि उस के सिवा कोई मा'बूद नहीं और फ़िरिश्तों ने और आ़लिमों ने इन्साफ़ से क़ाइम हो कर उस के सिवा किसी की इ़बादत नहीं इ़ज़्ज़त वाला हि़क्मत वाला।

फिर येह पढ़े :

وَاَنَا اَشْهَدُ بِمَا شَهِدَ اللّٰهُ بِهٖ لِنَفْسِهٖ وَشَهِدَتْ بِهٖ مَلَائِكَتُهٗ وَاُوْلُوا الْعِلْمِ مِنْ خَلْقِهٖ وَاَسْتَوْدِعُ اللّٰهَ هٰذِهِ الشَّهَادَةَ وَهِيَ لِيْ عِنْدَ اللّٰهِ تَعَالٰى وَدِيْعَةٌ وَاَسْاَلُهٗ حِفْظَهَا حَتّٰى يَتَوَفَّانِيْ عَلَيْهَا اَللّٰهُمَّ احْطُطْ عَنِّيْ بِهَا وِزْرًا وَاجْعَلْهَا لِيْ عِنْدَكَ ذُخْرًا وَاحْفَظْهَا عَلَيَّ وَتَوَفَّنِيْ عَلَيْهَا حَتّٰى اَلْقَاكَ بِهَا غَيْرَ مُبَدَّلٍ تَبْدِيْلًا

या'नी और मैं उस की गवाही देता हूं जिस की अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने खुद अपने लिये गवाही दी है और जिस की उस के फ़िरिश्तों ने और उस की मख़्लूक़ में से इ़ल्म वालों ने गवाही दी, मैं इस गवाही को अल्लाह तआ़ला के पास अमानत रखता हूं, येह मेरे लिये अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के पास अमानत है, मैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से उस की हि़फ़ाज़त का सुवाल करता हूं ह़त्ता कि वोह मुझे इसी पर वफ़ात दे। ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मुझ से (गुनाहों का) बोझ उतार दे और मेरी इस गवाही को मेरे लिये अपने पास ज़ख़ीरा कर ले, इस की हि़फ़ाज़त फ़रमा और मुझे इसी पर वफ़ात दे ह़त्ता कि जब मैं तुझ से मिलूं तो इस में कोई तब्दीली न हुई हो।

एक दिन में चार जम्अ़ करने पर मग़्फ़िरत की बिशारत :

येह बन्दों के लिये वज़ाइफ़ की तरतीब है। इस के साथ साथ अस्लाफ़े किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام हर रोज़ चार उमूर जम्अ़ करने को भी मुस्तह़ब जानते थे : (1)....रोज़ा रखना। (2)....सदक़ा देना अगर्चे थोड़ा ही हो। (3)....मरीज़ की इ़यादत करना। (4)....जनाज़े में ह़ाज़िर होना। इन चार उमूर के मुतअ़ल्लिक़ मरवी है कि हु़ज़ूरे अन्वर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया :

مَنْ جَمَعَ بَیْنَ ھٰذِہِ الْاَرْبَعِ فِیْ یَوْمٍ غُفِرَ لَہٗ

या'नी जिस ने इन चार उमूर को एक दिन में जम्अ़ किया तो उस की मग़्फ़िरत कर दी जाएगी।[1]

एक रिवायत में है कि "वोह जन्नत में दाख़िल होगा।"[2] अगर इन में से बा'ज़ के करने का मौक़अ़ मिले और बा'ज़ से आ़जिज़ आ जाए (कि किसी वजह से न कर पाए) तो उसे उस की निय्यत के ए'तिबार से तमाम का षवाब मिलेगा।

अस्लाफ़े किराम رَحِمَھُمُ اللّٰہُ السَّلَام का नापसन्दीदा अ़मल :

अस्लाफ़े किराम رَحِمَھُمُ اللّٰہُ السَّلَام येह नापसन्द करते थे कि कोई दिन ऐसा गुज़रे जिस में उन्हों ने सदक़ा न किया हो अगर्चे एक खजूर या प्याज़ या रोटी का टुकड़ा ही क्यूं न हो क्यूंकि रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया :

اَلرَّجُلُ فِیْ ظِلِّ صَدَقَتِہٖ حَتّٰی یُقْضٰی بَیْنَ النَّاس

या'नी (बरोज़े क़ियामत) बन्दा अपने सदक़े के साए में होगा ह़त्ता कि लोगों के दरमियान फ़ैसला कर दिया जाए।"[3]

एक रिवायत में है कि ह़ुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "اِتَّقُوا النَّارَ وَلَوْ بِشِقِّ تَمْرَۃٍ या'नी (जहन्नम की) आग से बचो अगर्चे खजूर की क़ाश से।"[4] [5]

उम्मुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا ने साइल को अंगूर का एक दाना दिया तो ह़ाज़िरीन में से बा'ज़ एक दूसरे को देखने लगे तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا ने फ़रमाया : "तुम्हें क्या हुवा ? इस में बहुत से ज़र्रात हैं !"

अस्लाफ़, साइल को (ख़ाली हाथ) लौटाना पसन्द नहीं करते थे क्यूंकि अख़्लाक़े मुस्त़फ़ा में से येह भी है कि जब भी कोई शख़्स आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से कुछ मांगता तो

---

1 ......قوت القلوب، الفصل الخامس عشر فی ذکر ورد العبد، الخ، ج ۱، ص ۸۰۔

2 ......صحیح مسلم، کتاب الزکاۃ، باب من جمع الصدقۃ......الخ، الحدیث:۱۰۲۸، ص ۵۱۳۔

3 ......المستدرک، کتاب الزکاۃ، کل امریٔ فی ظل صدقۃ......الخ، الحدیث:۱۵۵۷، ج ۲، ص ۴۳، مفہومًا۔

4 .....मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْمَنَّان मिरआतुल मनाजीह़, जि. 7 स. 383 पर इस के तह़्त फ़रमाते हैं : दोज़ख़ से बचने का आ'ला ज़रीआ़ सदक़ा व ख़ैरात है सदक़ा अगर्चे मा'मूली हो इख़्लास से वोह भी आग से बचा लेगा वहां सदक़े की मिक़दार नहीं देखी जाती वहां सदक़े वाले की निय्यत पर नज़र होती है खजूर की क़ाश की ही ख़ैरात कर दो शायद वोही दोज़ख़ से बचा ले या येह मत़लब है कि किसी का मा'मूली ह़क़ भी न मारो कि वोह जहन्नम में भेज देगा किसी की खजूर की क़ाश उस की बिग़ैर इजाज़त न लो।

5 ......صحیح مسلم، کتاب الزکاۃ، باب الحث علی الصدقۃ......الخ، الحدیث:۱۰۱۶، ص ۵۰۷۔

आप "لا" (या'नी नहीं) न फ़रमाते अगर वोह चीज़ आप के पास न होती तो ख़ामोश रहते ।"(1)

दो रक्अ़तें तमाम के बराबर :

मरवी है कि सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : 'इब्ने आदम इस ह़ाल में सुब्ह़ करता है कि उस के जिस्म के हर हर जोड़ पर सदक़ा होता है ।"(2)

इस की तफ़्सील येह है कि जिस्म में 360 जोड़ हैं तो तेरा नेकी का हुक्म करना सदक़ा है, बुराई से मन्अ़ करना सदक़ा है । कमज़ोर का बोझ उठाना सदक़ा है, किसी को रास्ता बताना सदक़ा है और (रास्ते से) तक्लीफ़ देह चीज़ दूर कर देना सदक़ा है ।" ह़त्ता कि तस्बीह़ व तहलील का भी ज़िक्र फ़रमाया । फिर फ़रमाया : इन सब के साथ चाश्त की दो रक्अ़तें भी पढ़ लो । या फ़रमाया : येह दो रक्अ़तें सब को जामेअ़ होंगी ।

अह़वाल बदलने से वज़ाइफ़ का बदल जाना

जानना चाहिये कि आख़िरत की खेती का इरादा करने वाला और इस राह पर चलने वाला छे ह़ालतों से ख़ाली न होगा : (1)....या तो वोह आ़बिद होगा (2).....या आ़लिम (3)......या त़ालिबे इ़ल्म (4)......या हुक्मरान (5).....या पेशावर (6)....या फिर मुवह़्ह़िद होगा कि ग़ैरुल्लाह से ए'राज़ कर के यक्ता व बे नियाज़ ज़ात (की मा'रिफ़त) में मुस्तग़रक़ होगा ।

﴾1﴿......**आ़बिद :** वोह शख़्स है जो ख़ुद को इ़बादते इलाही के लिये बिल्कुल फ़ारिग़ कर दे, इस के इ़लावा और कोई काम न हो कि अगर इ़बादत को तर्क कर दे तो बिल्कुल बेकार हो कर बैठ जाए । इस के वज़ाइफ़ की तरतीब वोही है जो हम ने बयान की । इस के वज़ाइफ़ में तब्दीली होना कुछ बई़द नहीं क्यूंकि उस के अकषर अवक़ात या तो नमाज़ या तिलावते क़ुरआन या फिर तस्बीह़ात में गुज़रेंगे ।

सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان के मा'मूलात :

बा'ज़ सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن का वज़ीफ़ा एक दिन में 12 हज़ार तस्बीह़ात पढ़ना था, बा'ज़ का 30 हज़ार तस्बीह़ात का था । बा'ज़ 300 से ले कर 600 और हज़ार तक नवाफ़िल पढ़ते थे । इन से नमाज़ के वज़ीफ़े में से जो कम से कम मिक़दार मरवी है वोह दिन

1......صحيح مسلم، كتاب الفضائل، باب ماسئل رسول الله صلى الله عليه وسلم......الخ، الحديث: ٢٣١١، ص ١٢٦٥، باختصارٍ۔

المسند للامام احمد بن حنبل، مسند انس بن مالك بن النضر، الحديث: ١٢٩٧٦، ج ٤، ص ٣٨٠، مفهومًا۔

2......صحيح مسلم، كتاب صلاة المسافرين وقصرها، باب استحباب صلاة الضحى......الخ، الحديث: ٧٢٠، ص ٣٦٣، مفهومًا۔

रात में **100** रक्अ़तें हैं। बा'ज़ का अकषर वज़ीफ़ा क़ुरआने पाक की तिलावत होता था, कोई दिन में एक बार क़ुरआने पाक ख़त्म करता, बा'ज़ से दो मरतबा भी मरवी है, जब कि बा'ज़ दिन रात एक ही आयत को बार बार पढ़ते और उस में ग़ौरो फ़िक्र करते रहते।

हज़रते सय्यिदुना कुर्ज़ बिन वबरह رَحْمَۃُاللّٰہِ تعالٰی علَیہ मक्कए मुकर्रमा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيمًا में मुक़ीम थे, हर दिन और हर रात **70–70** मरतबा त़वाफ़ करते, इस के साथ साथ दिन रात में दो बार क़ुरआने पाक ख़त्म करते। जब इस का ह़िसाब किया गया तो रोज़ाना की मसाफ़त दस फ़रसंग हुई और हर चक्कर पर दो रक्अ़तें होती हैं तो रोज़ाना **280** रक्अ़तें, दो ख़त्मे क़ुरआन और दस फ़रसंग (या'नी **30** मील) मसाफ़त हुई।

एक सुवाल और इस का जवाब :

अगर तुम कहो कि अपने अकषर अवक़ात को इन वज़ाइफ़ में से किस में सर्फ़ करना बेहतर है ? तो जान लो कि नमाज़ में खड़े हो कर ग़ौरो फ़िक्र के साथ क़ुरआने पाक की तिलावत करना इन तमाम को जामेअ़ है लेकिन बसा अवक़ात इस पर मुवाज़बत (हमेशगी) इख़्तियार करना मुश्किल होता है। लिहाज़ा अफ़्ज़ल येही है कि येह वज़ाइफ़ आदमी की ह़ालत के तब्दील होने से तब्दील हो जाएं।

अवरादो वज़ाइफ़ से मक़्सूद :

अवरादो वज़ाइफ़ का मक़्सद दिल को पाक व साफ़ करना और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ज़िक्र से इसे मानूस व मुज़य्यन करना है। लिहाज़ा आख़िरत का इरादा रखने वाले को चाहिये कि अपने दिल की त़रफ़ नज़र करे, जिस वज़ीफ़े को ज़ियादा अषर करने वाला ख़याल करे उसी पर मुवाज़बत इख़्तियार करे और जब इस से उक्ताहट मह़सूस करे तो दूसरे वज़ीफ़े की त़रफ़ मुन्तक़िल हो जाए।

इसी लिये हम अकषर मख़्लूक़ के लिये येही बेहतर समझते हैं कि वोह इन वज़ाइफ़ को मुख़्तलिफ़ अवक़ात पर तक़्सीम कर दें जैसा कि पीछे गुज़र चुका है और एक क़िस्म से दूसरी क़िस्म की त़रफ़ मुन्तक़िल होते रहें क्यूंकि त़बीअ़त पर उक्ताहट ग़ालिब आ जाती है, नीज़ एक आदमी की ह़ालतें भी तब्दील होती रहती हैं। लेकिन जब वज़ाइफ़ का मक़्सद व राज़ समझ ले तो इस मा'ना की पैरवी करे मषलन : अगर तस्बीह़ सुने और दिल में उस के लिये कोई आवाज़ मह़सूस करे तो जब तक आवाज़ मह़सूस हो उस का तकरार करता रहे।

ह़िकायत :– मरने से पहले जन्नत का नज़ारा :

हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَكْرَم से एक अब्दाल के बारे में मरवी है कि वोह एक रात दरया के कनारे नमाज़ पढ़ने खड़े हुए तो बुलन्द आवाज़ से तस्बीह़ पढ़ने

की आवाज़ सुनी लेकिन कोई नज़र न आया। पूछा : "आप कौन हैं? मैं आप की आवाज़ तो सुनता हूं लेकिन शक्लो सूरत नहीं देखता?" कहा : "मैं एक फ़िरिश्ता हूं जो इस दरया पर मुक़र्रर हूं, जब से पैदा हुवा हूं इसी त़रह़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की तस्बीह़ कर रहा हूं।" पूछा : "तुम्हारा नाम क्या है?" कहा : "महलहयाईल।" पूछा : "जो इस तस्बीह़ को पढ़े उस का षवाब क्या है?" जवाब दिया : "जो **100** मरतबा इस तस्बीह़ को पढ़ेगा वोह उस वक़्त तक नहीं मरेगा जब तक कि जन्नत में अपनी जगह न देख ले या उसे दिखा न दी जाए।" वोह तस्बीह़ येह है :

سُبۡحٰنَ اللّٰهِ الۡعَلِيِّ الدَّيَّانِ سُبۡحٰنَ اللّٰهِ الشَّدِيۡدِ الۡاَرۡكَانِ سُبۡحٰنَ مَنۡ يَّذۡهَبُ بِاللَّيۡلِ وَيَاۡتِيۡ بِالنَّهَارِ سُبۡحٰنَ مَنۡ لَا يُشۡغِلُهٗ شَاۡنٌ عَنۡ شَاۡنٍ سُبۡحٰنَ اللّٰهِ الۡحَنَّانِ الۡمَنَّانِ سُبۡحٰنَ اللّٰهِ الۡمُسَبَّحِ فِيۡ كُلِّ مَكَانٍ

या'नी पाकी है अल्लाह عَزَّوَجَلَّ को जो बुलन्द, बदला देने वाला है, पाकी है अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मज़बूत़ अरकान वाले को, पाकी है उसे जो रात को ले जाता और दिन को लाता है, पाकी है उसे जिसे कोई काम दूसरे काम से नहीं फेर सकता, पाकी है अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ह़न्नान व मन्नान को, पाकी है अल्लाह عَزَّوَجَلَّ को जिस की हर जगह तस्बीह़ की जाती है।

चुनान्चे, जब आख़िरत का इरादा करने वाला येह और इस त़रह़ की दीगर तस्बीह़ात सुने और अपने दिल में कोई आहट पाए तो इसे लाज़िम पकड़ ले और जिस अ़मल के पास दिल को पाए और दिल के लिये इस में ख़ैरो बरकत का दरवाज़ा खुले तो इस पर मुवाज़बत इख़्तियार कर ले।

﴾2﴿ ......आ़लिम : वोह शख़्स है कि फ़तवा, तदरीस या तस्नीफ़ में उस के इ़ल्म से लोग नफ़्अ़ उठाएं।

इस के वज़ाइफ़ की तरतीब आ़बिद की तरतीब के मुख़ालिफ़ है क्यूंकि इसे किताबों का मुत़ालआ़ करने, तस्नीफ़ करने और फ़ाइदा पहुंचाने की ज़रूरत होती है और इन चीज़ों के लिये लाज़िमी त़ौर पर इसे वक़्त की ज़रूरत होती है। लिहाज़ा अगर इसे अपना तमाम वक़्त इसी में लगा देना मुमकिन हो तो इस के लिये फ़राइज़ और सुन्नते मुअक्कदा की अदाएगी के बा'द इसी में मश्ग़ूल रहना अफ़्ज़ल है। इस पर वोह तमाम रिवायात दलालत करती हैं जिन्हें हम किताबुल इ़ल्म के तह़्त सीखने, सिखाने के बयान में ज़िक्र कर आए हैं। नीज़ ऐसा क्यूं न हो ह़ालांकि इ़ल्म में ज़िक्रे इलाही पर मुवाज़बत, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस के प्यारे रसूल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के फ़रामीन में ग़ौरो फ़िक्र करना पाया जाता है, इस में मख़्लूक़ की मन्फ़अ़त और राहे आख़िरत की त़रफ़ हिदायत ह़ासिल होती है, कई बार ऐसा होता है कि एक त़ालिबे इ़ल्म कोई मस्अला सीखता है तो इस से उस की उ़म्र भर की इ़बादत दुरुस्त हो जाती है अगर वोह इसे न सीखता तो उस की येह तमाम कोशिश बेकार जाती।

इबादत पर मुक़द्दम इ़ल्म से कौन सा इ़ल्म मुराद है ?

इबादत पर मुक़द्दम इ़ल्म से हमारी मुराद वोह इ़ल्म है जिस से लोग आख़िरत की त़रफ़ राग़िब हों और दुन्या से बे रग़बती इख़्तियार करें या इस से मुराद वोह इ़ल्म है कि जब आख़िरत के रास्ते पर चलने में मदद लेने की निय्यत से उसे सीखा जाए तो वोह इस में उन की मदद करे। वोह उ़लूम मुराद नहीं जिन के ज़रीए़ माल व जाह और लोगों को अपनी त़रफ़ मुतवज्जेह करने की रग़बत में ज़ियादती होती है।

आ़लिम के वक़्त की तक़्सीम :

आ़लिम के लिये भी बेहतर येह है कि वोह अपने अवक़ात को तक़्सीम कर ले क्यूंकि तमाम अवक़ात को इ़ल्म की तरतीब में मश्ग़ूल रखने को त़बीअ़त बरदाश्त नहीं करती। लिहाज़ा मुनासिब है कि बा'दे सुब्ह़ से तुलूए़ आफ़्ताब तक के वक़्त को अवरादो वज़ाइफ़ के साथ ख़ास कर दे जैसा कि हम ने पहले वज़ीफ़े के बयान में ज़िक्र किया है। तुलूए़ आफ़्ताब के बा'द से चाश्त तक के वक़्त को फ़ाइदा पहुंचाने और ता'लीम देने के साथ ख़ास कर दे जब कि उस के पास कोई ऐसा शख़्स हो जो आख़िरत के लिये इ़ल्म सीखता हो और अगर ऐसा कोई न हो तो उस वक़्त को ग़ौरो फ़िक्र में सर्फ़ करे और उन मसाइले दीनिय्या में ग़ौरो फ़िक्र करे जो उस पर मुश्किल हैं क्यूंकि ज़िक्र से फ़ारिग़ होने के बा'द और दुन्यवी रन्जो अफ़्कार में मश्ग़ूल होने से पहले जो दिल की सफ़ाई है वोह उन मुश्किलात को समझने में मुआ़विन होगी। चाश्त के वक़्त से वक़्ते अ़स्र तक तस्नीफ़ और मुत़ालआ़ करने में मसरूफ़ रहे, खाने, त़हारत, फ़र्ज़ नमाज़ और अगर दिन बड़ा हो तो हल्के से क़ैलूला के इ़लावा किसी वक़्त इसे तर्क न करे। वक़्ते अ़स्र से सूरज के ज़र्द होने तक तफ़्सीर, ह़दीष और जो इ़ल्मे नाफ़ेअ़ इस के सामने पढ़ा जा रहा हो उसे सुने। सूरज ज़र्द होने से ग़ुरूब होने तक ज़िक्र, इस्तिग़फ़ार और तस्बीह़ वग़ैरा में मसरूफ़ रहे। यूं इस का पहला वज़ीफ़ा जो तुलूए़ आफ़्ताब से पहले है वोह ज़बान का अ़मल होगा, दूसरा वज़ीफ़ा जो चाश्त तक है वोह ग़ौरो फ़िक्र करने की वजह से क़ल्बी अ़मल होगा, तीसरा वज़ीफ़ा जो अ़स्र तक है वो मुत़ालआ़ करने और लिखने की वजह से आंखों और हाथों का अ़मल होगा, चौथा वज़ीफ़ा जो अ़स्र के बा'द है वोह समाअ़त का अ़मल होगा ताकि इस वक़्त आंखें और हाथ आराम पाएं क्यूंकि बा'ज़ अवक़ात अ़स्र के बा'द मुत़ालआ़ करना और लिखना आंखों के लिये मुज़िर होता है, सूरज के ज़र्द होने के वक़्त वोह फिर ज़बान के ज़िक्र की त़रफ़ लौट जाएगा। लिहाज़ा दिन का कोई ह़िस्सा आ'ज़ा के आ'माल से ख़ाली न होगा और उस के साथ साथ तमाम अवक़ात में ह़ुज़ूरे क़ल्ब भी ह़ासिल होगा।

रात के बारे में ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन इदरीस शाफ़ेई عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْکَافِی की तक़्सीम कितनी अच्छी है कि वोह रात को तीन ह़िस्सों में तक़्सीम फ़रमाया करते थे : पहला तिहाई मुत़ालए़ के लिये, दरमियानी तिहाई नमाज़ के लिये और आख़िरी तिहाई सोने के लिये। सर्दियों में येह तक़्सीम आसान है लेकिन गर्मियों में नफ़्स बा'ज़ अवक़ात इस तक़्सीम को क़बूल नहीं करता मगर जब कि दिन के वक़्त ज़ियादा सोए। येह वोह है जिसे हम आ़लिम के अवरादो वज़ाइफ़ की तरतीब में से मुस्तह़ब जानते हैं।

﴾3﴿.....**त़ालिबे इ़ल्म :** इ़ल्म सीखने में मश्ग़ूल होना ज़िक्र और नवाफ़िल में मश्ग़ूल होने से अफ़्ज़ल है, वज़ाइफ़ की तरतीब में त़ालिबे इ़ल्म का हुक्म भी आ़लिम के हुक्म की त़रह़ है लेकिन जहां आ़लिम फ़ाइदा देने में मसरूफ़ होता है येह फ़ाइदा लेने में मसरूफ़ होता है, जहां आ़लिम तस्नीफ़ व तालीफ़ में मसरूफ़ होता है येह लिखने और याद करने में मसरूफ़ होता है, इस के अवक़ात को इसी त़रह़ तरतीब दिया जाएगा जैसा कि हम ने ज़िक्र किया है। किताबुल इ़ल्म में सीखने और सिखाने के बयान में हमारा ज़िक्र कर्दा कलाम इस बात पर दलालत करता है कि येह अफ़्ज़ल है, अगर कोई शख़्स इन मा'नों में आ़लिम न भी हो कि वोह लिखता और याद करता हो ताकि आ़लिम बन जाए बल्कि अ़वाम में से हो तो भी उस का ज़िक्र, वा'ज़ और इ़ल्म की मजलिस में ह़ाज़िर होना उन अवराद में मश्ग़ूल होने से बेहतर है जिन्हें हम ने सुब्ह़ के बा'द तुलूए़ आफ़्ताब के बा'द और बक़िय्या अवक़ात में ज़िक्र किया है।

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़र ग़िफ़ारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी ह़दीषे पाक में है कि

اِنَّ حُضُوْرَ مَجْلِسِ ذِکْرٍ اَفْضَلُ مِنْ صَلَاۃِ اَلْفِ رَکْعَۃٍ وَّشُھُوْدِ اَلْفِ جَنَازَۃٍ وَّعِیَادَۃِ اَلْفِ مَرِیْضٍ

या'नी मजलिसे ज़िक्र में ह़ाज़िर होना हज़ार रक्अ़त नमाज़ पढ़ने, हज़ार जनाज़ों में शिर्कत करने और हज़ार मरीज़ों की इयादत करने से अफ़्ज़ल है।"(1)

एक रिवायत में है कि प्यारे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जब तुम जन्नत के बाग़ात देखो तो इन में से कुछ चुन लिया करो।" अ़र्ज़ की गई : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم जन्नत के बाग़ात क्या हैं ?" इरशाद फ़रमाया : "ज़िक्र के ह़ल्क़े।"(2)

ह़ज़रते सय्यिदुना का'बुल अह़बार رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : "अगर उ़-लमा की मजालिस का षवाब लोगों पर ज़ाहिर हो जाए तो वोह इस पर एक दूसरे से लड़ें ह़त्ता कि हर हुकूमत वाला अपनी हुकूमत और हर दुकानदार अपनी दुकान को तर्क कर दे।"

(1)......قوت القلوب، باب ذکر الفرق بین علماء الدنیا......الخ، ج ۱، ص ۲۵۷، بتقدم وتاخرٍ۔

(2)......سنن الترمذی، کتاب الدعوات، الحدیث: ۳۵۲۱، ج۵، ص ۳۰۴، "رایتم" بدلہ "مررتم"۔

मुअ़ज़्ज़ज़ मक़ाम :

अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : "एक शख़्स अपने घर से इस ह़ाल में निकलता है कि उस पर तहामा पहाड़ के बराबर गुनाह होते हैं, जब वोह किसी आ़लिम (के बयान) को सुनता है तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ख़ुफ़्या तदबीर से डरता और अपने गुनाहों से तौबा करता है और इस ह़ाल में घर लौटता है कि उस पर कोई गुनाह नहीं होता। लिहाज़ा तुम उ़-लमा की मजालिस से जुदाई इख़्तियार न करो क्यूंकि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने सत्ह़े ज़मीन पर मजालिसे उ़-लमा से ज़ियादा मुअ़ज़्ज़ज़ कोई जगह नहीं बनाई।"

एक शख़्स ने ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی की ख़िदमत में दिल की सख़्ती की शिकायत की तो आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِ ने फ़रमाया : "ज़िक्र की मजलिसों में ह़ाज़िर हुवा करो।"

ह़िकायत :- मह़फ़िले ज़िक्र में ह़ाज़िर होने की फ़ज़ीलत :

ह़ज़रते सय्यिदतुना मिस्कीना तुफ़ाविय्या उन औ़रतों में से थीं जो ज़िक्र के ह़ल्कों पर हमेशगी इख़्तियार करती थीं, अ़म्मार ज़ाहिद ने उन्हें ख़्वाब में देख कर कहा : "ऐ मिस्कीना ! ख़ुश आमदीद।" उन्हों ने कहा : "दूर हो ! मिस्कीनी चली गई, मालदारी आ गई।" अ़म्मार ज़ाहिद ने कहा : "वोह कैसे ?" जवाब दिया : "उस के बारे में क्या पूछते हो जिस के लिये तमाम की तमाम जन्नत मुबाह़ कर दी गई।" पूछा : "येह किस सबब से हुवा ?" जवाब दिया : "अहले ज़िक्र की मह़फ़िलों में बैठने की वजह से।"

ह़ासिले कलाम :

जिस अच्छे कलाम और पाक सीरत वाले वाइ़ज़ के वा'ज़ की बरकत से दिल से दुन्या की मह़ब्बत की गिरह खुल जाती है तो उस का वा'ज़ उन बहुत सी रक्अ़ात से ज़ियादा बुलन्द मर्तबा और नफ़्अ़ देने वाला है जिन के बा वुजूद दिल में दुन्या की मह़ब्बत बाक़ी रहे।

﴾4﴿.....**पेशावर :** जो अपने अहलो इ़याल के लिये कमाने का मोह़ताज हो उस के लिये अहलो इ़याल से बे परवाही बरत कर अपने तमाम अवक़ात को इ़बादत में सर्फ़ करना जाइज़ नहीं बल्कि काम-काज के वक़्त उस का वज़ीफ़ा बाज़ार की ह़ाज़िरी और काम-काज में मसरूफ़ होना है लेकिन अपने काम-काज के दौरान भी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ज़िक्र को न भूले बल्कि तस्बीह़ात, ज़िक्र और क़ुरआने पाक की तिलावत पर हमेशगी इख़्तियार करे कि काम के साथ इन आ'माल को जम्अ़ करना मुमकिन है लेकिन नमाज़ को काम के साथ इकठ्ठा करना आसान नहीं, अलबत्ता ! अगर वोह बाग़बान हो तो उस वक़्त बाग़बानी के साथ साथ नमाज़ के वज़ाइफ़ को भी क़ाइम कर सकता है।

सदके़ की निय्यत से ज़ाइद माल कमाना कैसा ?

जब बक़दरे किफ़ायत रोज़ी कमाने से फ़ारिग़ हो जाए तो अपने वज़ाइफ़ की तरतीब की त़रफ़ लौट आए लेकिन अगर मज़ीद कमाने पर हमेशगी इख़्तियार करे और ह़ाजत से ज़ाइद माल को सदक़ा कर दे तो येह उन तमाम वज़ाइफ़ से अफ़्ज़ल है जिन्हें हम ने ज़िक्र किया क्यूंकि वोह इ़बादात जिन का फ़ाइदा मुतअ़द्दी होता (या'नी दूसरों तक भी पहुंचता) है उन इ़बादात से ज़ियादा नफ़्अ़ मन्द होती हैं जिन का फ़ाइदा ग़ैर मुतअ़दी होता है (या'नी दूसरों तक नहीं पहुंचता)। सदके़ की निय्यत से कमाना ब ज़ाते खुद उस के लिये भी इ़बादत है जो इसे अल्लाह तआ़ला से क़रीब करती है फिर इस से दूसरों को भी फ़ाइदा ह़ासिल होता है और मुसलमानों की दुआ़ओं की बरकात इसे शामिल होती हैं जिन की वजह से इस का अज्र दुगना हो जाता है।

﴾5﴿......**हुक्मरान :** मषलन इमामुल मुस्लिमीन, क़ाज़ी और मुतवल्ली कि येह मुसलमानों के मुआ़मलात में ग़ौरो फ़िक्र करते हैं। लिहाज़ा इन का इख़्लास के साथ, शरीअ़त के मुत़ाबिक़ मुसलमानों की ह़ाजात और उन के उमूर सर अन्जाम देना मज़्कूरा अवराद में मश्ग़ूल होने से अफ़्ज़ल है।

अपने और मुसलमानों के हुक़ूक़ की पासदारी :

इन का ह़क़ येह है कि येह दिन के वक़्त लोगों के हुक़ूक़ में मश्ग़ूल हों और सिर्फ़ फ़र्ज़ नमाज़ों पर इक्तिफ़ा करें और अवरादे मज़्कूरा को रात में पूरा कर लें जैसा कि अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ किया करते थे और फ़रमाते : "मुझे नींद से क्या वासित़ा ? अगर मैं दिन के वक़्त सोऊं तो मुसलमानों के हुक़ूक़ ज़ाएअ़ कर दूंगा और अगर रात के वक़्त सोऊं तो अपना ह़क़ ज़ाएअ़ कर दूंगा।"

इ़बादते बदनिया पर दो चीज़ें मुक़द्दम होंगी :

हमारे गुज़श्ता बयान से येह बात मा'लूम हो गई कि इ़बादते बदनिया पर दो चीज़ों को मुक़द्दम किया जाएगा : (1)....इ़ल्म (2)....मुसलमानों के साथ नर्मी (और इन के मसालेह़ में ग़ौरो फ़िक्र) करना। क्यूंकि इन में से हर एक बज़ाते खुद अ़मले ख़ैर और ऐसी इ़बादत है जिसे तमाम इ़बादात पर इस लिये फ़ज़ीलत ह़ासिल है कि इन का फ़ाइदा दूसरों को भी पहुंचता और नफ़्अ़ फैलता है। लिहाज़ा येह दोनों बक़िय्या इ़बादात पर मुक़द्दम होंगे।

﴾6﴿......**मुवह्हिद :** जो यक्ता व बे नियाज़ ज़ात (या'नी ज़ाते बारी तआ़ला की मा'रिफ़त) में मुस्तग़रक़ रहे, जिस की सुब्ह़ इस ह़ाल में हो कि उस की एक ही फ़िक्र हो, जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिवा किसी से मह़ब्बत न करे और उस के सिवा किसी से न डरे, जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिवा किसी से रिज़्क़ की उम्मीद न रखे, जिस चीज़ की त़रफ़ भी देखे उस में ज़ाते बारी तआ़ला का मुशाहदा करे।[1]

तो जो शख़्स इस दर्जे तक पहुंच जाए उसे त़रह़ त़रह़ के वज़ाइफ़ की ह़ाजत नहीं होती बल्कि फ़र्ज़ नमाज़ों के बा'द उस का एक ही वज़ीफ़ा होता है और वोह येह है कि हर ह़ाल में उस का दिल ज़ाते बारी तआ़ला के हुज़ूर ह़ाज़िर रहे, उस के दिल में जो ख़याल भी आता, कानों में जो आवाज़ भी पड़ती और आंखों को जो शै भी दिखाई देती है उन के लिये इस में इब्रत, ग़ौरो फ़िक्र और मज़ीद अह़वाल होते हैं, उस वक़्त अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ही उन्हें ह़रकत देता और साकिन करता है।

येह तमाम अह़वाल इस बात की सलाह़िय्यत रखते हैं कि उन के लिये (बसीरत और मा'निये मक़्सूद के ज़ुहूर में) ज़ियादती का सबब हों। लिहाज़ा उन के नज़्दीक एक इबादत दूसरी इबादत से मुमताज़ नहीं होती और येही वोह लोग हैं जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ भाग गए। जैसा कि इरशादे बारी तआ़ला है :

لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ ﴿۴۹﴾ فَفِرُّوْۤا اِلَى اللّٰهِ ؕ

(پ۲۷، الذّٰریٰت:۴۹، ۵۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *कि तुम ध्यान करो तो अल्लाह की त़रफ़ भागो।*

इन ही पर येह फ़रमाने ख़ुदावन्दी भी सादिक़ आता है :

وَ اِذِ اعْتَزَلْتُمُوْهُمْ وَ مَا يَعْبُدُوْنَ اِلَّا اللّٰهَ فَاْوٗۤا اِلَى الْكَهْفِ يَنْشُرْ لَكُمْ رَبُّكُمْ مِّنْ رَّحْمَتِهٖ (پ۱۵، الکھف:۱۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और जब तुम उन से और जो कुछ वोह अल्लाह के सिवा पूजते हैं सब से अलग हो जाओ तो ग़ार में पनाह लो तुम्हारा रब्ब तुम्हारे लिये अपनी रह़मत फैला देगा।*

---

❶.....इस की मिषाल यूं समझिये कि कोई शख़्स आईना ख़ाना में दाख़िल हो तो वोह हर त़रफ़ अपने आप को ही देखेगा इस लिये कि येही अस्ल और बक़िय्या जितनी सूरतें हैं सभी उस के अ़क्स हैं बिला तमषील वुजूदे हस्ती बिज़्ज़ात वाजिब तआ़ला के लिये है, उस के सिवा जितनी मौजूदात हैं उस की ज़िल्ले परतौ(या'नी अ़क्स) हैं लिहाज़ा साह़िबे मर्तबा हर शै में ज़ाते बारी तआ़ला का मुशाहदा करता है। (मुलख़्ख़सन मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत, स. 109, 110)

इस फ़रमाने बारी तआला में भी इन्ही लोगों की त़रफ़ इशारा है :

اِنِّیۡ ذَاهِبٌ اِلٰی رَبِّیۡ سَیَهۡدِیۡنِ ﴿۹۹﴾ (پ۲۳،الصّٰفّٰت:۹۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *मैं अपने रब्ब की त़रफ़ जाने वाला हूं अब वोह मुझे राह देगा ।*

येह सिद्दीक़ीन के दर्जात की इन्तिहा है, वज़ाइफ़ की तरतीब और एक त़वील ज़माने तक इन की पाबन्दी के ज़रीए ही इस दर्जे तक पहुंचा जा सकता है ।

जो शख़्स आख़िरत का इरादा करे उसे येह बातें सुन कर धोका नहीं खाना चाहिये कि वोह अपने नफ़्स के लिये इस का दा'वा करने लग जाए और अपनी इबादत के वज़ाइफ़ से राहे फ़िरार इख़्तियार करे ।

सिद्दीक़ीन के मर्तबे पर फ़ाइज़ शख़्स की अ़लामात :

जो शख़्स इस दर्जे तक पहुंच जाता है उस की अ़लामत येह है कि न तो उस के दिल में वस्वसे आएं, न उस के दिल में गुनाह का ख़याल आए, न परेशानियों का हुजूम उसे अपनी जगह से हटा सके और न ही बड़े बड़े और अहम मुआ़मलात उसे उस की जगह से हिला सकें। लिहाज़ा येह मर्तबा हर एक को कैसे मिल सकता है ?

पस तमाम लोगों पर वज़ाइफ़ की तरतीब लाज़िम है जैसा कि हम ने ज़िक्र किया और वोह तमाम उमूर जो हम ने ज़िक्र किये **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तक पहुंचने के रास्ते हैं । चुनान्चे, इरशाद होता है :

قُلۡ کُلٌّ یَّعۡمَلُ عَلٰی شَاکِلَتِهٖ ؕ فَرَبُّکُمۡ اَعۡلَمُ بِمَنۡ هُوَ اَهۡدٰی سَبِیۡلًا ﴿۸۴﴾ (پ۱۵،بنیٓ اسرآءیل:۸۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *तुम फ़रमाओ सब अपने कींडे (अन्दाज़) पर काम करते हैं तो तुम्हारा रब्ब ख़ूब जानता है कौन ज़ियादा राह पर है ।*

येह तमाम हिदायत याफ़्ता हैं । अलबत्ता बा'ज़ बा'ज़ से ज़ियादा हिदायत याफ़्ता हैं ।

ह़दीषे पाक में है : ''اَلْاِیْمَانُ ثَلَاثٌ وَّثَلَاثُوْنَ وَثَلٰثُ مِائَةِ طَرِیْقَةٍ مَنْ لَقِیَ اللّٰهَ تَعَالٰی بِالشَّهَادَةِ عَلٰی طَرِیْقٍ مِّنْهَا دَخَلَ الْجَنَّةَ या'नी ईमान के 333 रास्ते हैं जो शख़्स इन में से किसी रास्ते पर भी गवाही देते हुए **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से मिलेगा दाख़िले जन्नत होगा ।''[1]

[1] شعب الایمان للبیهقی، باب فی حسن الخلق، الحدیث:۸۵۴۹، ج۲، ص۳۶۲، بتغیرٍ۔

बा'ज़ उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام ने फ़रमाया : "ईमान रसूलों की ता'दाद के मुत़ाबिक़ 313 औसाफ़ पर है तो जो कोई इन में से एक वस्फ़ पर भी ईमान रखता होगा वोह राहे खुदा पर चलने वाला है।" पस तमाम मोअमिनीन सीधी राह पर हैं अगर्चे इबादत में उन के त़रीके़ मुख़्तलिफ़ हैं। (इरशादे बारी तआ़ला है) :

اُولٰٓىِٕكَ الَّذِیْنَ یَدْعُوْنَ یَبْتَغُوْنَ اِلٰى رَبِّهِمُ الْوَسِیْلَةَ اَیُّهُمْ اَقْرَبُ

(پ۱۵، بنیٓ اسرآءیل:۵۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *वोह मक़्बूल बन्दे जिन्हें येह काफ़िर पूजते हैं वोह आप ही अपने रब्ब की त़रफ़ वसीला ढूंडते हैं कि उन में कौन ज़ियादा मुक़र्रब है।*

इन में फ़र्क़ सिर्फ़ कुर्ब के दर्जात में है, अस्ल कुर्ब में कोई फ़र्क़ नहीं। इन में से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ज़ियादा क़रीब वोह है जिसे मा'रिफ़ते इलाही ज़ियादा ह़ासिल है और जिसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ज़ियादा मा'रिफ़त ह़ासिल है उस के लिये ज़रूरी है कि वोह इबादत भी ज़ियादा करें क्यूंकि जिस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की मा'रिफ़त ह़ासिल कर ली वोह उस के इलावा किसी की इबादत नहीं करता।

वज़ाइफ़ में अस्ल इन पर हमेशगी इख़्तियार करना है :

इन्सानों की तमाम अक़्साम के ह़क़ में वज़ाइफ़ में अस्ल चीज़ इन पर हमेशगी इख़्तियार करना है क्यूंकि इन का मक़्सद येह है कि बात़िनी सिफ़ात तब्दील हो जाएं और आ'माल अ़लाहि़दा अ़लाहि़दा त़ौर पर बहुत कम अषर करते हैं बल्कि इन के अषर करने का एह़सास ही नहीं होता, अषर सिर्फ़ मजमूए़ पर मुरत्तब होता है लिहाज़ा एक अ़मल पर कोई अषर मह़सूस नहीं होता तो जब इस के पीछे दूसरा और तीसरा अ़मल नहीं लाएगा तो पहला अषर मिट जाएगा। येह उस फ़क़ीह की त़रह़ होगा जिस का इरादा येह है कि वोह फ़क़ीहुन्नफ़्स हो, वोह फ़क़ीहुन्नफ़्स उसी वक़्त होगा जब कषरत के साथ तकरार करे, अगर वोह एक रात तकरार करने में ख़ूब मुबालग़ा करे, फिर एक महीने या एक हफ़्ते तक तकरार न करे, फिर उस की त़रफ़ लौटे और एक रात तकरार में ख़ूब मुबालग़ा करे तो उस का कोई अषर नहीं होगा और अगर इतनी ही मिक़दार को पै दर पै रातों पर तक़्सीम कर दे तो इस का अषर ज़रूर होगा।

इसी राज़ की त़रफ़ इशारा करते हुए **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब, ह़बीबे लबीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "اَحَبُّ الْاَعْمَالِ اِلَى اللّٰهِ اَدْوَمُهَا وَاِنْ قَلَّ या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक सब से ज़ियादा पसन्दीदा अ़मल वोह है जो हमेशा हो अगर्चे क़लील हो।"(1)

---

1 ......صحیح مسلم، کتاب الصلاۃ، باب فضیلۃ العمل الدائم......الخ، الحدیث:۷۸۳، ص۳۹۴۔

उम्मुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के अ़मल के बारे में पूछा गया तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने फ़रमाया : "मेरे सरताज, साह़िबे मे'राज صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का अ़मल दाइमी होता था और जब कोई अ़मल करते उसे बर क़रार रखते (या'नी हमेशा करते) ।"(1)

इसी वजह से हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जिसे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने किसी इ़बादत का आ़दी बनाया फिर उस ने उक्ताहट की वजह से इसे तर्क कर दिया तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस से नाराज़ है ।"(2)

नमाज़े अ़स्र के बा'द दो रक्अ़तें पढ़ने का भी येही सबब है कि एक वफ़्द के मुआ़मलात में मश्ग़ूलिय्यत की वजह से आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم (की ज़ोहर के बा'द) की दो रक्अ़तें रह गईं तो बा'दे अ़स्र अदा पढ़ लीं, इस के बा'द हमेशा नमाज़े अ़स्र के बा'द येह दो रक्अ़तें पढ़ते रहे लेकिन घर में पढ़ा करते थे मस्जिद में नहीं ताकि कोई आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की पैरवी न करे । येह रिवायत उम्मुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा और उम्मुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे सलमा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) से मरवी है ।

एक सुवाल और इस का जवाब :

क्या कोई शख़्स इस अ़मल में हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की पैरवी कर सकता है ? ह़ालांकि इस वक़्त में नफ़्ल नमाज़ जाइज़ नहीं । इस का जवाब येह है कि उस वक़्त में नमाज़ के मकरूह होने के जो अस्बाब हम ने पीछे ज़िक्र किये हैं कि (1).....सूरज की इ़बादत करने वालों की मुशाबहत से बचना । (2).....शैत़ान का सींग ज़ाहिर होने के वक़्त सजदा करना । (3)....उक्ता जाने के ख़ौफ़ से इ़बादत से कुछ देर आराम करना । येह तीनों अस्बाब आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के ह़क़ में मुतह़क़्क़िक़ नहीं । लिहाज़ा आप पर दूसरों को क़ियास नहीं किया जा सकता । इस पर दलील आप का येह मुबारक फ़े'ल है कि आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم इन दो रक्अ़तों को अपने घर में अदा फ़रमाया करते थे कि कहीं कोई शख़्स पैरवी न करे ।

---

1 ......صحیح مسلم، کتاب الصلاۃ، باب فضیلۃ العمل الدائم......الخ، الحدیث: ۷۸۲۔۷۸۳، ص ۳۹۴۔

2 ......قوت القلوب، الفصل التاسع فیہ ذکر وقت الفجر......الخ، ج ۱، ص ۴۴، بتغیرقلیل۔

बयान नम्बर 2 :

क़ियामुल्लैल में आसानी पैदा करने वाले अस्बाब, शब बेदारी के लिये मुस्तह़ब रातें, मग़रिब व इ़शा के दरमियानी वक़्त और शब बेदारी की फ़ज़ीलत और रात के अवक़ात की तक़्सीम का बयान

मग़रिब व इ़शा के दरमियानी वक़्त की फ़ज़ीलत

बीस या चालीस साल के गुनाह मुआ़फ़ :

उम्मुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا से मरवी है कि मेरे सरताज, साहि़बे मे'राज صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक अफ़्ज़ल नमाज़, मग़रिब की नमाज़ है, इसे न तो मुसाफ़िर से कम किया और न ही मुक़ीम से, इस के ज़रीए़ रात की नमाज़ को शुरूअ़ फ़रमाया और दिन की नमाज़ को ख़त्म फ़रमाया तो जिस शख़्स ने नमाज़े मग़रिब पढ़ी और इस के बा'द दो रक्अ़तें पढ़ीं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के लिये जन्नत में दो मह़ल बनाएगा।" [(1)] रावी का बयान है कि मुझे मा'लूम नहीं कि वोह दो मह़ल सोने के होंगे या चांदी के। जिस ने चार रक्अ़तें पढ़ीं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के 20 साल के गुनाह मुआ़फ़ फ़रमाएगा। या फ़रमाया : "40 साल के गुनाह मुआ़फ़ फ़रमाएगा।"[(2)]

गोया शबे क़द्र में नमाज़ पढ़ी :

उम्मुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे सलमा और ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا) से मरवी है कि हु़ज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जिस ने नमाज़े मग़रिब के बा'द छे रक्अ़तें पढ़ीं तो येह उस के ह़क़ में पूरा साल इ़बादत करने के बराबर है। या फ़रमाया : गोया उस ने शबे क़द्र में नमाज़ पढ़ी :"[(3)]

---

1 ......تفسیر القرطبی، پ۲، البقرة، تحت الآیة:۲۳۸، ج۲، جزء ۳، ص ۱۵۹، بذکر"قصرا"۔
قوت القلوب، الفصل الحادی عشر فیه کتاب فضل الصلاة......الخ، ج۱، ص۵۸۔

2 ......قوت القلوب، الفصل الحادی عشر فیه کتاب فضل الصلاة......الخ، ج۱، ص۵۸۔
تفسیر القرطبی، پ۲، البقرة، تحت الایة:۲۳۸، ج۲، جزء ۳، ص ۱۵۹۔

3 ......قوت القلوب، الفصل الحادی عشر فیه کتاب فضل الصلاة......الخ، ج۱، ص۵۸

जन्नती मह़ल :

ह़ज़रते सय्यिदुना षौबान رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि प्यारे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जो मग़रिब व इ़शा के दरमियान मस्जिद में ठहरा रहे, नमाज़ और क़ुरआन के इ़लावा कोई बात न करे, तो अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ के ज़िम्मए करम पर ह़क़ है कि उस के लिये जन्नत में दो मह़ल बनाए जिन में से हर एक की मसाफ़त 100 साल होगी, दोनों के दरमियान उस के लिये दरख़्त लगाएगा कि अगर अहले दुन्या उस का चक्कर लगाएं तो वोह सब का इह़ात़ा कर ले।"(1)

एक रिवायत में है कि "जिस ने मग़रिब व इ़शा के दरमियान 10 रक्अ़तें पढ़ीं अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ उस के लिये जन्नत में एक मह़ल बनाएगा।" अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم तब तो हमारे मह़ल बहुत ज़ियादा हो जाएंगे !" इरशाद फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ सब से ज़ियादा कषरत व फ़ज़्ल फ़रमाने वाला है।" या फ़रमाया : "सब से ज़ियादा पाक है।"(2)

नमाज़े मग़रिब के बा'द दो रक्अ़त पढ़ने की फ़ज़ीलत :

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि मुस्त़फ़ा जाने रह़मत صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जो कोई नमाज़े मग़रिब बा जमाअ़त अदा करे और कोई दुन्यावी बात किये बिग़ैर दो रक्अ़तें पढ़े, पहली रक्अ़त में सूरए फ़ातिह़ा, सूरए बक़रह की पहली 10 आयात और दरमियान से येह दो आयात पढ़े :

وَ اِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌۚ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِیْمُ۠(۱۶۳) اِنَّ فِیْ خَلْقِ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ وَ اخْتِلَافِ الَّیْلِ وَ النَّهَارِ وَ الْفُلْكِ الَّتِیْ تَجْرِیْ فِی الْبَحْرِ بِمَا یَنْفَعُ النَّاسَ وَ مَاۤ اَنْزَلَ اللّٰهُ مِنَ

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और तुम्हारा मा'बूद एक मा'बूद है उस के सिवा कोई मा'बूद नहीं मगर वोही बड़ी रह़मत वाला। बेशक आस्मानों और ज़मीन की पैदाइश और रात व दिन का बदलते आना और कश्ती कि दरया में लोगों के फ़ाइदे ले कर चलती है और वोह जो अल्लाह ने आस्मान*

---

1 ......قوت القلوب، الفصل الحادی عشر فیه کتاب فضل الصلاة......الخ، ج ۱، ص ۵۸

2 ......الزھدلابن المبارک،الجزء العاشر،الحدیث:۱۲۶۴،ص ۴۴۲۔

السَّمَآءِ مِنۡ مَّآءٍ فَاَحۡيَا بِهِ الۡاَرۡضَ بَعۡدَ مَوۡتِهَا وَبَثَّ فِيۡهَا مِنۡ كُلِّ دَآبَّةٍ وَّتَصۡرِيۡفِ الرِّيٰحِ وَالسَّحَابِ الۡمُسَخَّرِ بَيۡنَ السَّمَآءِ وَالۡاَرۡضِ لَاٰيٰتٍ لِّقَوۡمٍ يَّعۡقِلُوۡنَ ﴿۱۶۴﴾ (پ۲، البقرۃ:۱۶۳، ۱۶۴)

से पानी उतार कर मुर्दा ज़मीन को इस से जिला दिया और ज़मीन में हर क़िस्म के जानवर फैलाए और हवाओं की गर्दिश और वोह बादल कि आस्मान व ज़मीन के बीच में हुक्म का बांधा है इन सब में अ़क़्लमन्दों के लिये ज़रूर निशानियां हैं।

फिर 15 मरतबा सूरए इख़्लास पढ़ कर रुकूअ़ और सजदा करे। दूसरी रक्अ़त में सूरए फ़ातिह़ा, आयतुल कुरसी और इस के बा'द की येह दो आयात पढ़े :

لَاۤ اِكۡرَاهَ فِى الدِّيۡنِ ۙ قَدْ تَّبَيَّنَ الرُّشۡدُ مِنَ الۡغَىِّ ۚ فَمَنۡ يَّكۡفُرۡ بِالطَّاغُوۡتِ وَيُؤۡمِنۡۢ بِاللّٰهِ فَقَدِ اسۡتَمۡسَكَ بِالۡعُرۡوَةِ الۡوُثۡقٰى ۚ لَا انْفِصَامَ لَهَا ؕ وَاللّٰهُ سَمِيۡعٌ عَلِيۡمٌ ﴿۲۵۶﴾ اَللّٰهُ وَلِىُّ الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا ۙ يُخۡرِجُهُمۡ مِّنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوۡرِ ؕ وَالَّذِيۡنَ كَفَرُوۡۤا اَوۡلِيٰٓـئُهُمُ الطَّاغُوۡتُ ۙ يُخۡرِجُوۡنَهُمۡ مِّنَ النُّوۡرِ اِلَى الظُّلُمٰتِ ؕ اُولٰٓـئِكَ اَصۡحٰبُ النَّارِ ۚ هُمۡ فِيۡهَا خٰلِدُوۡنَ ﴿۲۵۷﴾ (پ۳، البقرۃ:۲۵۶، ۲۵۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : कुछ ज़बरदस्ती नहीं दीन में बेशक ख़ूब जुदा हो गई है नेक राह गुमराही से तो जो शैत़ान को न माने और **अल्लाह** पर ईमान लाए उस ने बड़ी मोह़कम गिरह थामी जिसे कभी खुलना नहीं और **अल्लाह** सुनता जानता है। **अल्लाह** वाली है मुसलमानों का उन्हें अन्धेरियों से नूर की त़रफ़ निकालता है और काफ़िरों के ह़िमायती शैत़ान हैं वोह इन्हें नूर से अन्धेरियों की त़रफ़ निकालते हैं येही लोग दोज़ख़ वाले हैं इन्हें हमेशा इस में रहना।

फिर सूरए बक़रह की आख़िरी तीन आयात पढ़े :

لِلّٰهِ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الۡاَرۡضِ ؕ وَاِنۡ تُبۡدُوۡا مَا فِىۡۤ اَنۡفُسِكُمۡ اَوۡ تُخۡفُوۡهُ يُحَاسِبۡكُمۡ بِهِ اللّٰهُ ؕ فَيَـغۡفِرُ لِمَنۡ يَّشَآءُ وَيُعَذِّبُ مَنۡ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَىۡءٍ قَدِيۡرٌ ﴿۲۸۴﴾ اٰمَنَ الرَّسُوۡلُ بِمَاۤ اُنۡزِلَ اِلَيۡهِ مِنۡ رَّبِّهٖ وَالۡمُؤۡمِنُوۡنَ ؕ كُلٌّ اٰمَنَ

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : **अल्लाह** ही का है जो कुछ आस्मानों में है और जो कुछ ज़मीन में है और अगर तुम ज़ाहिर करो जो कुछ तुम्हारे जी में है या छुपाओ **अल्लाह** तुम से इस का ह़िसाब लेगा तो जिसे चाहेगा बख़्शेगा और जिसे चाहेगा सज़ा देगा और **अल्लाह** हर चीज़ पर क़ादिर है। रसूल ईमान लाया उस पर जो उस के रब्ब के पास से उस पर उतरा और

ईमान वाले सब ने माना **अल्लाह** और उस के फ़िरिश्तों और उस की किताबों और उस के रसूलों को येह कहते हुए कि हम उस के किसी रसूल पर ईमान लाने में फ़र्क़ नहीं करते और अ़र्ज़ की, कि हम ने सुना और माना तेरी मुआ़फ़ी हो ऐ रब्ब हमारे और तेरी ही त़रफ़ फिरना है। **अल्लाह** किसी जान पर बोझ नहीं डालता मगर उस की त़ाक़त भर उस का फ़ाइदा है जो अच्छा कमाया और उस का नुक़्सान है जो बुराई कमाई ऐ रब्ब हमारे हमें न पकड़ अगर हम भूलें या चूकें ऐ रब्ब हमारे और हम पर भारी बोझ न रख जैसा तू ने हम से अगलों पर रखा था ऐ रब्ब हमारे और हम पर वोह बोझ न डाल जिस की हमें सहार (त़ाक़त) न हो और हमें मुआ़फ़ फ़रमा दे और बख़्श दे और हम पर महर (रह़्म) कर तू हमारा मौला है तो काफ़िरों पर हमें मदद दे।

بِاللّٰهِ وَمَلٰٓئِكَتِهٖ وَكُتُبِهٖ وَرُسُلِهٖ ۟ لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ اَحَدٍ مِّنْ رُّسُلِهٖ ۟ وَقَالُوْا سَمِعْنَا وَاَطَعْنَا ۫ غُفْرَانَكَ رَبَّنَا وَاِلَيْكَ الْمَصِيْرُ ﴿۲۸۵﴾ لَا يُكَلِّفُ اللّٰهُ نَفْسًا اِلَّا وُسْعَهَا ؕ لَهَا مَا كَسَبَتْ وَعَلَيْهَا مَا اكْتَسَبَتْ ؕ رَبَّنَا لَا تُؤَاخِذْنَاۤ اِنْ نَّسِيْنَاۤ اَوْ اَخْطَاْنَا ۚ رَبَّنَا وَلَا تَحْمِلْ عَلَيْنَاۤ اِصْرًا كَمَا حَمَلْتَهٗ عَلَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِنَا ۚ رَبَّنَا وَلَا تُحَمِّلْنَا مَا لَا طَاقَةَ لَنَا بِهٖ ۚ وَاعْفُ عَنَّا ۥ وَاغْفِرْ لَنَا ۥ وَارْحَمْنَا ۥ اَنْتَ مَوْلٰىنَا فَانْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ ﴿۲۸۶﴾

(پ۳، البقرۃ: ۲۸۴ تا ۲۸۶)

फिर 15 बार सूरए इख़्लास पढ़े।[1] तो इस का इतना षवाब है कि शुमार से बाहर है।

ख़्वाब में ज़ियारते रसूल से मुशर्रफ़ हो :

ह़ज़रते सय्यिदुना कुर्ज़ बिन वबरह رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه जो अब्दाल में से हैं। फ़रमाते हैं कि मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना ख़िज़्र عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से अ़र्ज़ की : "मुझे ऐसी चीज़ सिखाइये जिस पर मैं हर रात अ़मल किया करूं।" उन्हों ने फ़रमाया : "जब तुम नमाज़े मग़रिब पढ़ लो तो इशा के वक़्त तक किसी से कलाम किये बिग़ैर नमाज़ पढ़ते रहो, जो नमाज़ पढ़ रहे हो उस की त़रफ़ मुतवज्जेह रहो और हर दो रक्अ़तों पर सलाम फेर दो। हर रक्अ़त में एक बार सूरए फ़ातिह़ा, तीन बार सूरए इख़्लास पढ़ो। जब नमाज़ से फ़ारिग़ हो जाओ तो अपने घर की त़रफ़ लौट जाओ और किसी से कलाम न करो फिर दो रक्अ़तें पढ़ो, हर रक्अ़त में एक मरतबा सूरए फ़ातिह़ा और सात मरतबा सूरए इख़्लास पढ़ो। फिर सलाम फेरने के बा'द सजदा करो और इस में सात मरतबा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से इस्तिग़फ़ार करो, फिर सात बार येह कहो :

---

1 ......قوت القلوب، الفصل الحادی عشر فیه کتاب فضل الصلاة......الخ، ج ۱، ص ۵۸۔

سُبۡحٰنَ اللّٰہِ وَالۡحَمۡدُ لِلّٰہِ وَلَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ وَاللّٰہُ اَکۡبَرُ وَلَا حَوۡلَ وَلَا قُوَّۃَ اِلَّا بِاللّٰہِ الۡعَلِیِّ الۡعَظِیۡمِ

(तर्जमा माक़ब्ल में गुज़र चुका है)

फिर सजदे से सर उठा कर सीधे हो कर बैठ जाओ और हाथों को उठा कर यूं दुआ़ करो :

یَا حَیُّ یَا قَیُّوۡمُ یَا ذَا الۡجَلَالِ وَالۡاِکۡرَامِ یَا اِلٰہَ الۡاَوَّلِیۡنَ وَالۡاٰخِرِیۡنَ یَا رَحۡمٰنَ الدُّنۡیَا وَالۡاٰخِرَۃِ وَرَحِیۡمَھُمَا یَا رَبِّ یَا رَبِّ یَا رَبِّ یَا اَللّٰہُ یَا اَللّٰہُ یَا اَللّٰہ

(तर्जमा माक़ब्ल में गुज़र चुका है)

फिर इसी ह़ालत में खड़े हो जाओ कि हाथ उठे हुए हों और इसी त़रह़ दुआ़ करो, फिर जहां चाहो क़िब्ला रुख़ हो कर अपनी सीधी करवट पर लैट जाओ और हु़ज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूदे पाक पढ़ते पढ़ते सो जाओ।

ह़ज़रते सय्यिदुना कुर्ज़ बिन वबरह رَحۡمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيۡه फ़रमाते हैं : मैं ने अ़र्ज़ की : "मुझे बताइये कि आप ने येह दुआ़ किन से सुनी है ?" फ़रमाया : "जब रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने येह दुआ़ सिखाई उस वक़्त मैं वहां ह़ाज़िर था और जब आप पर येह दुआ़ वह़्य की गई तब भी मैं ख़िदमत में ह़ाज़िर था, येह सब मेरी मौजूदगी में हुवा। लिहाज़ा मैं ने येह दुआ़ उसी वक़्त सीख ली थी।"

मन्क़ूल है कि "जो शख़्स मज़्कूरा दुआ़ व नमाज़ को हुस्ने यक़ीन और सिद्क़े निय्यत के साथ हमेशा पढ़ा करे वोह मरने से पहले पहले ख़्वाब में प्यारे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत से मुशर्रफ़ होगा।" बा'ज़ ह़ज़रात ने ऐसा किया तो उन्हों ने देखा कि वोह जन्नत में दाख़िल किये गए, वहां उन्हों ने आक़ाए दो आ़लम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ साथ अम्बियाए किराम عَلَيۡهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की ज़ियारत भी की। नीज़ आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन से कलाम भी फ़रमाया और ता'लीम भी फ़रमाई।

ख़ुलासए कलाम :

मग़रिब व इ़शा के दरमियान इ़बादत करने की फ़ज़ीलत में कसीर रिवायात मरवी हैं ह़त्ता कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के आज़ाद कर्दा ग़ुलाम ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنۡهُ से पूछा गया : "क्या हु़ज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم फ़र्ज़ नमाज़ के इ़लावा भी किसी नमाज़ का हुक्म फ़रमाया करते थे ?" फ़रमाया : "मग़रिब और इ़शा के दरमियान नमाज़ का हुक्म फ़रमाया करते थे।"(1)

1 ......المسند للامام احمد بن حنبل، حديث عبيد مولى النبى، الحديث: ٢٣٧١٣، ج ٩، ص ١٦٥ ـ

एक रिवायत में है कि हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "मग़रिब व इशा के दरमियान की नमाज़, अव्वाबीन (या'नी बहुत तौबा करने वालों) की नमाज़ है।"(1)

ह़ज़रते सय्यिदुना असवद बिन यज़ीद नख़ई عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَلِی फ़रमाते हैं : मैं मग़रिब व इशा के दरमियान जब भी ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवा तो उन्हें नमाज़ पढ़ते पाया। जब इस के बारे में उन से सुवाल किया तो उन्हों ने फ़रमाया : "येह ग़फ़्लत का वक़्त है (इस लिये नमाज़ पढ़ता हूं)।"

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ इस नमाज़ पर हमेशगी इख़्तियार फ़रमाते और फ़रमाया करते : येह शब बेदारी है और फ़रमाते : येह फ़रमाने बारी तआ़ला इसी के मुतअ़ल्लिक़ नाज़िल हुवा है :

تَتَجَافٰى جُنُوۡبُهُمۡ عَنِ الۡمَضَاجِعِ

(پ ۲۱، السجدۃ:۱٦)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *उन की करवटें जुदा होती हैं ख़्वाब गाहों से।*

ह़ज़रते सय्यिदुना अह़मद बिन अबू ह़वारी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْبَارِی फ़रमाते हैं : "मैं ने अबू सुलैमान दारानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّوْرَانِی से अ़र्ज़ की : "मैं दिन में रोज़ा रखूं और मग़रिब व इशा के दरमियान खाना खाऊं आप के नज़दीक येह ज़ियादा पसन्दीदा है या फिर येह कि मैं दिन में रोज़ा तर्क कर दूं और मग़रिब व इशा के दरमियान इ़बादत करूं ?" तो उन्हों ने फ़रमाया : "इन दोनों को जम्अ़ करो।" मैं ने कहा : "अगर इन्हें जम्अ़ करना आसान न हो तो।" फ़रमाया : "रोज़ा तर्क कर दो और इस दौरान इ़बादत करो।"

शब बेदारी की फ़ज़ीलत

शब बेदारी की फ़ज़ीलत से मुतअ़ल्लिक़ 6 फ़रामीने बारी तआ़ला :

﴾1﴿

اِنَّ رَبَّكَ يَعۡلَمُ اَنَّكَ تَقُوۡمُ اَدۡنٰى مِنۡ ثُلُثَىِ الَّيۡلِ (پ ۲۹، مزمل:۲۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *बेशक तुम्हारा रब्ब जानता है कि तुम क़ियाम करते हो कभी दो तिहाई रात के क़रीब।*

﴾2﴿

اِنَّ نَاشِئَةَ الَّيۡلِ هِىَ اَشَدُّ وَطۡاً وَّاَقۡوَمُ قِيۡلًا ؕ

(پ ۲۹، مزمل:٦)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *बेशक रात का उठना वोह ज़ियादा दबाव डालता है और बात ख़ूब सीधी निकलती है।*

---

(1) الزھد لابن المبارک، الجزء العاشر، الحدیث:۱۲۵۹، ص۴۴۵۔

《3》

تَتَجَافٰى جُنُوْبُهُمْ عَنِ الْمَضَاجِعِ

(پ ۲۱، السجدۃ:۱٦)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : उन की करवटें जुदा होती हैं ख़्वाबगाहों से।

《4》

اَمَّنْ هُوَ قَانِتٌ اٰنَآءَ الَّيْلِ (پ ۲۳، الزمر:۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : क्या वोह जिसे फ़रमा बरदारी में रात की घड़ियां गुज़रें।

《5》

وَ الَّذِيْنَ يَبِيْتُوْنَ لِرَبِّهِمْ سُجَّدًا وَّ قِيَامًا ﴿٦٤﴾

(پ ۱۹، الفرقان:٦۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और वोह जो रात काटते हैं अपने रब्ब के लिये सजदे और क़ियाम में।

《6》

وَ اسْتَعِيْنُوْا بِالصَّبْرِ وَ الصَّلٰوةِ ط (پ ۱، البقرۃ:۴۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और सब्र और नमाज़ से मदद चाहो।

मन्क़ूल है कि जिस पर सब्र कर के मुजाहदए नफ़्स पर मदद त़लब की जाती है वोह क़ियामुल्लैल है।

शब बेदारी की फ़ज़ीलत पर मुश्तमिल 18 फ़रामीने मुस्त़फ़ा :

《1》......जब तुम में से कोई सोता है तो शैत़ान उस की गुद्दी (या'नी गर्दन के पिछले ह़िस्से) पर तीन गिरहें लगाता है, हर गिरह पर येह डालता है कि अभी रात बहुत है सो जा, फिर अगर बन्दा बेदार हो जाए और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र करे तो एक गिरह खुल जाती है, फिर अगर वुज़ू करे तो दूसरी गिरह खुल जाती है, फिर अगर नमाज़ पढ़े तो तीसरी गिरह भी खुल जाती है और वोह ख़ुश दिल पाक नफ़्स सुब्ह़ करता है वगर्ना पलीद त़बीअ़त और सुस्त सुब्ह़ पाता है।[(1) (2)]

---

❶.....मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْمَنَّان मिरआतुल मनाजीह़, जि. 2 स. 253 पर ''तीन गिरहें लगा देता है'' के तह़त फ़रमाते हैं : यहां गिरह के ज़ाहिरी मा'ना ही मुराद हैं बिला वजह तावील की ज़रूरत नहीं जादूगर धागे या बालों में कुछ दम कर के गिरह लगा देते हैं जिस का अषर मह़सूर (जिस पर जादू किया गया) पर हो जाता है ऐसे ही शैत़ान इन्सान के बालों में या धागे में सुब्ह़ के वक़्त गफ़्लत की तीन गिरहें लगा देता है इसी लिये सुब्ह़ के वक़्त बड़े मज़े की नींद आती है। ह़ुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इन तीन गिरहों को खोलने के लिये तीन अ़मल इरशाद फ़रमाए।

❷......صحيح مسلم، كتاب صلاة المسافرين وقصرها، باب ماروى فيمن نام الليل......الخ، الحديث:٧٧٦، ص ٣٩٢، بتغيرالفاظٍ۔

﴾2﴿......बारगाहे रिसालत में एक शख़्स का तज़्किरा किया गया कि वोह सुब्ह तक सोता रहा नमाज़ के लिये न उठा। आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "उस शख़्स के कान में शैतान ने पेशाब कर दिया।"(1)

﴾3﴿......शैतान के पास सूंघने, चाटने और आंख में डाली जाने वाली चीज़ें होती हैं, जब वोह किसी बन्दे को कुछ सुंघाता है तो उस के अख़्लाक़ बुरे हो जाते हैं, जब वोह उस को कुछ चटाता है तो वोह फ़ोह्श गो हो जाता है और जब उस की आंखों में कुछ डालता है तो वोह सुब्ह तक सोता रहता है।(2)

﴾4﴿......वोह दो रक्अतें जिन्हें बन्दा रात के वस्त (दरमियान) में अदा करता है, उस के लिये दुन्या व माफ़ीहा (दुन्या और जो कुछ इस में है) से बेहतर हैं, अगर मैं अपनी उम्मत पर इसे मुश्किल ख़याल न करता तो उन पर इसे फ़र्ज़ कर देता।(3)

﴾5﴿......रात में एक घड़ी ऐसी है कि जिस में मुसलमान बन्दा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से जो भी भलाई का सुवाल करता है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे ज़रूर अता फ़रमाता है।(4)

एक रिवायत में है कि इस घड़ी में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से दुन्या व आख़िरत की भलाई का सुवाल करे, येह घड़ी हर रात में होती है।(5)

﴾6﴿......हज़रते सय्यिदुना मुग़ीरा बिन शा'बा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं : हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने क़ियाम फ़रमाया हत्ता कि क़दमैन शरीफ़ैन में वरम आ गया। अर्ज़ की गई : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم क्या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप के सबब उम्मत के अगले, पिछले गुनाहों को मुआफ़ नहीं फ़रमा दिया ?" इरशाद फ़रमाया : "क्या मैं अपने रब्ब عَزَّوَجَلَّ का शुक्र गुज़ार बन्दा न बनूं ?"(6)

---

1 ......صحیح مسلم، کتاب صلاۃ المسافرین وقصرھا، باب ماروی فیمن نام اللیل......الخ، الحدیث:۷۷۴، ص۳۹۲۔

2 ......قوت القلوب، الفصل الرابع عشر فی ذکر تقسیم قیام اللیل......الخ، ج۱، ص۷۶۔
المعجم الکبیر، الحدیث:۶۸۵۵، ج۷، ص۲۰۶، باختصارٍ۔

3 ......الزھد لابن المبارک، الجزء العاشر، الحدیث:۱۲۸۹، ص۴۵۶۔

4 ......صحیح مسلم، کتاب صلاۃ المسافرین وقصرھا، باب فی اللیل ساعۃ......الخ، الحدیث:۷۵۷، ص۳۸۰۔

5 ......صحیح مسلم، کتاب صلاۃ المسافرین وقصرھا، باب فی اللیل ساعۃ......الخ، الحدیث:۷۵۷، ص۳۸۰۔

6 ......صحیح البخاری، کتاب التھجد، باب قیام النبی......الخ، الحدیث:۱۱۳۰، ج۱، ص۳۸۴، بتغیرٍ۔

सरकारे मदीना صَلَّى اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के इस जवाब से येह बात ज़ाहिर होती है कि आप का येह इरशाद ज़ियादतिये रुत्बा से किनाया है क्यूंकि शुक्र मज़ीद इन्आ़म मिलने का सबब है। जैसा कि इरशादे बारी तआ़ला है :

لَىٕنْ شَكَرْتُمْ لَاَزِیْدَنَّكُمْ (پ۱۳، ابرٰھیم:۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *अगर एह़सान मानोगे तो मैं तुम्हें और दूंगा।*

《7》......हुज़ूरे पुरनूर, शाफ़ेए़ यौमुन्नुशूर صَلَّى اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللہ تَعَالٰی عَنْہ से इरशाद फ़रमाया : "अगर तुम चाहते हो कि ह़ालते ह़यात व वफ़ात और क़ब्रो ह़श्र में तुम पर अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ की रह़मत हो तो रात को उठ कर नमाज़ पढ़ो और रब्ब عَزَّ وَجَلَّ की रिज़ा तलाश करो। ऐ अबू हुरैरा ! अपने घर के कोनों में नमाज़ पढ़ो तो आस्मानों में तुम्हारे घर का नूर इस त़रह़ होगा जैसे अहले दुन्या के नज़्दीक सितारों की रोशनी होती है।"

《8》......तुम रात में उठना लाज़िम पकड़ लो क्यूंकि येह तुम से पहले नेकों का त़रीक़ा है और रब्ब عَزَّ وَجَلَّ की त़रफ़ क़ुर्बत का ज़रीआ़, गुनाहों को मिटाने वाला और आयन्दा गुनाहों से बचाने वाला है।(1)

《9》......जिस शख़्स का रात में नमाज़ पढ़ने का मा'मूल हो फिर (किसी दिन) उस पर नींद ग़ालिब आ जाए तो उस के लिये नमाज़ का षवाब लिखा जाएगा और नींद उस पर सदक़ा होगी।(2)

《10》......हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّى اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़र ग़िफ़ारी رَضِیَ اللہ تَعَالٰی عَنْہ से इरशाद फ़रमाया : "अगर तुम सफ़र का इरादा करो तो इस के लिये कोई तय्यारी करोगे ?" अ़र्ज़ की : "जी हां !" इरशाद फ़रमाया : "क़ियामत के सफ़र का क्या ह़ाल है ? ऐ अबू ज़र ! क्या मैं तुम्हें उन चीज़ों के बारे में न बताऊं जो तुम्हें उस दिन नफ़्अ़ पहुंचाएगी ?" अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم मेरे मां बाप आप पर क़ुरबान ! ज़रूर।" इरशाद फ़रमाया : "क़ियामत के दिन के लिये सख़्त गर्मी के दिन रोज़ा रखो, क़ब्र की वह़शत के लिये रात के अन्धेरे में दो रक्अ़तें पढ़ो, बड़े बड़े (पेश आने वाले) उमूर के लिये ह़ज करो और किसी मिस्कीन को कोई चीज़ दे कर या ह़क़ बात कह कर या किसी बुरे कलिमे से ख़ामोश रह कर सदक़ा करो।"(3)

---

1 ......سنن الترمذی، کتاب الدعوات، باب فی دعا النبی، الحدیث:۳۵۶۰، ج۵، ص۳۲۲، "للذنوب" بدلہ "للسیئات"۔

2 ......سنن ابی داود، کتاب التطوع، باب من نوی القیام فنام، الحدیث:۱۳۱۴، ج۲، ص۵۱۔

3 ......موسوعۃ الامام ابن ابی الدنیا، التھجد وقیام اللیل، الحدیث:۱۰، ج۱، ص۲۴۷۔

﴾11﴿......ज़मानए रिसालत में एक शख़्स का मा'मूल था कि जब लोग सो जाते तो वोह नमाज़ पढ़ता, कुरआने पाक की तिलावत करता और बारगाहे इलाही में अ़र्ज़ करता : "یَا رَبَّ النَّارِ اَجِرْنِیْ مِنْھَا या'नी ऐ आग के रब्ब عَزَّوَجَلَّ मुझे इस से नजात अ़ता फ़रमा।" बारगाहे रिसालत में उस शख़्स का तज़्किरा किया गया तो आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जब फिर ऐसा हो तो मुझे इत्तिलाअ़ देना।" (चुनान्चे, जब इत्तिलाअ़ दी गई तो) आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم उस के पास तशरीफ़ लाए और उस की बातों को सुना। जब सुब्ह़ हुई तो इरशाद फ़रमाया : "ऐ फुलां ! तू ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से जन्नत का सुवाल क्यूं न किया ?" उस ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم मेरा इतना मक़ाम कहां और न ही मेरे आ'माल इस क़ाबिल हैं।" कुछ ही देर गुज़री थी कि ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्राईल عَلَیْہِ السَّلَام ने बारगाहे अक़्दस में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم इसे ख़बर दीजिये कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इसे आग से नजात अ़ता फ़रमा कर जन्नत में दाख़िल फ़रमा दिया है।"

﴾12﴿......मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्राईल عَلَیْہِ السَّلَام ने बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ की : "इब्ने उ़मर अच्छे आदमी हैं अगर वोह रात को नमाज़ पढ़ें।" ह़ुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन्हें इस के बारे में बताया तो इस के बा'द वोह हमेशा रात को नमाज़ पढ़ा करते थे।(1)

ह़ज़रते सय्यिदुना नाफ़ेअ़ رَضِیَ اللہ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللہ تَعَالٰی عَنْھُمَا रात में नमाज़ पढ़ा करते और मुझ से फ़रमाते : "ऐ नाफ़ेअ़ ! क्या सह़री का वक़्त हो गया है ?" मैं अ़र्ज़ करता : "नहीं।" फिर नमाज़ के लिये खड़े हो जाते। फिर फ़रमाते : "ऐ नाफ़ेअ़ ! क्या सह़री का वक़्त हो गया है ?" मैं अ़र्ज़ करता : "जी हां।" तो आप बैठ जाते और तुलूए़ फ़ज्र तक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में इस्तिग़फ़ार करते रहते।

﴾13﴿......ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली बिन अबुल ख़ैर رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना यह़्या बिन ज़करिया (علیھما الصلوٰۃ و السلام) ने एक बार जव की रोटी सैर हो कर खाई तो सुब्ह़ तक सोए रहे और अवरादो वज़ाइफ़ रह गए। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उन की त़रफ़ वह़्य फ़रमाई : "ऐ यह़्या ! क्या तू ने मेरे घर से अच्छा घर पा लिया है ? या मुझ से अच्छा पड़ोस पा लिया है ? ऐ यह़्या ! मुझे अपनी इ़ज़्ज़तो जलाल की क़सम ! अगर तुम जन्नत को देख लो तो उस के (ह़ुसूल के) शौक़ में तुम्हारी चरबी पिघल जाए और तुम्हारी जान निकल जाए और अगर तुम जहन्नम को देख लो तो तुम्हारी चरबी पिघल जाए और इतना रो कि आंसूओं के बा'द पीप बहने लगे और तुम ऊन के बा'द चमड़े का लिबास पहनने लगो।"

---

1 ......صحیح البخاری، کتاب التھجد، باب فضل قیام اللیل، الحدیث:۱۱۲۲، ج۱، ص ۳۸۲۔

﴾14﴿......बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ की गई : "फ़ुलां शख़्स रात में तो नमाज़ पढ़ता है जब सुब्ह़ होती है चोरी करता है।" आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "अ़न क़रीब उस का येह अ़मल उसे चोरी से रोक देगा।"(1) (2)

﴾15﴿......अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस शख़्स पर रह़्म फ़रमाए जो रात में उठ कर नमाज़ पढ़े और अपनी बीवी को जगाए कि वोह भी नमाज़ पढ़ ले अगर वोह इन्कार करे तो उस के मुंह पर पानी छिड़क दे। फिर फ़रमाया : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस औ़रत पर रह़्म फ़रमाए जो रात में उठ कर नमाज़ पढ़े और अपने ख़ावन्द को भी जगाए कि वोह भी पढ़ ले अगर वोह न माने तो उस के मुंह पर पानी छिड़क दे।(3)

﴾16﴿......जब कोई शख़्स रात में अपनी ज़ौजा को जगाए फिर दोनों दो रक्अ़तें पढ़ लें तो वोह ज़िक्र करने वालों और वालियों में लिखे जाएंगे।(4)

﴾17﴿......फ़र्ज़ नमाज़ के बा'द रात की नमाज़ अफ़्ज़ल है।(5)

﴾18﴿......जो अपने रात के वज़ीफ़े या उस के कुछ ह़िस्से से सो जाए फिर फ़ज्र व ज़ोहर के दरमियान पढ़ ले तो ऐसा ही लिखा जाएगा गोया उस ने रात में पढ़ा।(6)

---

❶....मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْمَنَّان मिरआतुल मनाजीह़, जि. 2 स. 261 पर इस के तह़्त फ़रमाते हैं : नमाज़ की बरकत से वोह उन उ़यूब से तौबा करेगा येह ह़दीष इस बात की शर्ह़ है : (پ ۲۱،العنکبوت: ۴۵) اِنَّ الصَّلٰوۃَ تَنْھٰی عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْکَرِ (**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और नमाज़ क़ाइम फ़रमाओ बेशक नमाज़ मन्अ़ करती है बे ह़याई और बुरी बात से) ख़याल रहे कि सारे सह़ाबा आ़दिल हैं कोई फ़ासिक़ नहीं या'नी गुनाह पर क़ाइम कोई न रहा। बा'ज़ तो पहले ही से गुनाहों से मह़फ़ूज़ थे जैसे अबू बक्र सिद्दीक़ और बा'ज़ से गुनाह सरज़द हुए और बा'द में ताइब हो गए जैसे येह शख़्स जिस की शिकायत हुई येह भी ख़याल रहे कि ह़ुज़ूर صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने न तो उस चोर के हाथ उस वक़्त कटवाए, क्यूंकि चोरी का षुबूत शरई न हुवा, न शिकायत करने वाले को ग़ीबत पर कोई तम्बीह फ़रमाई क्यूंकि वोह ग़ीबत न कर रहे थे, बल्कि उन की इस्लाह़ के ख़्वाहां थे, जैसे शागिर्द की शिकायत उस्ताद से। बा'ज़ लोग कहते हैं कि जब तुम फ़ुलां गुनाह करते हो तो तुम्हें दाढ़ी रखने या नमाज़ पढ़ने से क्या फ़ाइदा, सख़्त ग़लत़ है اِنْ شَآءَ اللہ येह नेकियां गुनाह छुड़ा देंगी। **गुनाह की वजह से नेकियों को न छोड़ो, बल्कि नेकियों की वजह से गुनाह छोड़ दो।**

❷......صحیح ابن حبان، کتاب الصلاۃ، فصل فی قیام اللیل، ذکراستحباب الاکثار......الخ، الحدیث: ۲۵۵۱، ج۴، ص ۱۱۶۔

❸......سنن ابی داود، کتاب التطوع، باب قیام اللیل، الحدیث: ۱۳۰۸، ج ۲، ص ۴۹۔

❹......سنن ابی داود، کتاب الوتر، باب فاتحۃ الکتاب، الحدیث: ۱۴۵۱، ج ۲، ص ۱۰۰۔

❺......صحیح مسلم، کتاب الصیام، باب فضل صوم المحرم، الحدیث: ۱۱۶۳، ص ۵۹۱، "المکتوبۃ" بدلہ "الفرضیۃ"۔

❻......صحیح مسلم، کتاب صلاۃ المسافرین وقصرھا، باب جامع صلاۃ اللیل......الخ، الحدیث: ۷۴۷، ص ۳۷۶۔

शब बेदारी की फ़ज़ीलत पर मुश्तमिल 24 अक़्वाले बुज़ुर्गाने दीन :

﴾1﴿......मरवी है कि अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ रात में वज़ाइफ़ पढ़ते हुए एक आयत पर पहुंचे तो ज़मीन पर गिर पड़े ह़त्ता कि कई रोज़ तक इन की इयादत की जाती रही जैसे मरीज़ की (इयादत) की जाती है।

﴾2﴿......जब लोग सो जाते तो ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ खड़े हो जाते और सुब्ह़ तक शहद की मख्खी की भिनभिनाहट की त़रह़ उन की आवाज़ सुनाई देती।

﴾3﴿......मन्क़ूल है कि ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान षौरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی ने एक रात सैर हो कर खाना खा लिया फिर फ़रमाया : "जब गधे के चारे में ज़ियादती की जाती है तो उस से काम भी ज़ियादा लिया जाता है।" चुनान्चे, उस रात आप सुब्ह़ तक नमाज़ पढ़ते रहे।

﴾4﴿......ह़ज़रते सय्यिदुना त़ाऊस رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ जब अपने बिस्तर पर लैटते तो इस पर बेचैनी के साथ इस त़रह़ करवटें बदलते जैसे कड़ाही में दाना उलट पलट होता है फिर उछल कर खड़े हो जाते और सुब्ह़ तक नमाज़ पढ़ते रहते फिर फ़रमाते : "जहन्नम के ज़िक्र ने आ़बिदीन की नींदें उड़ा दी हैं।"

﴾5﴿......ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : "हमारे नज़्दीक रात की मशक़्क़त और कारे ख़ैर में माल ख़र्च करने से ज़ियादा दुश्वार कोई अ़मल नहीं।" अ़र्ज़ की गई : "क्या वजह है कि तहज्जुद पढ़ने वालों के चेहरे दीगर लोगों से ज़ियादा ख़ूब सूरत होते हैं ?" फ़रमाया : "चूंकि उन्हों ने रह़मान عَزَّوَجَلَّ के लिये तन्हाई इख़्तियार की तो उस ने भी उन्हें अपने नूर में से एक नूरानी लिबास पहना दिया।"

﴾6﴿......एक बुज़ुर्ग किसी सफ़र से वापस लौटे तो उन के लिये बिस्तर बिछाया गया, वोह उस पर सो गए ह़त्ता कि उन के रात के वज़ाइफ़ रह गए तो उन्हों ने क़सम खाई कि आज के बा'द कभी भी बिस्तर पर नहीं सोएंगे।

﴾7﴿......ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन अबू रवाद علیہ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْجَوَاد पर जब रात छा जाती तो बिस्तर के पास आते और इस पर हाथ फेर कर फ़रमाते : "तू नर्म ज़रूर है लेकिन अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! जन्नत में तुझ से भी ज़ियादा नर्म व मुलायम बिस्तर हैं।" फिर पूरी रात नमाज़ पढ़ते रहते।

﴾8﴿......ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ुज़ैल बिन इयाज़ عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡوَهَّاب ने फ़रमाया : "जब रात आती है तो शुरूअ़ में उस की त़वालत मुझे डराती है फिर मैं क़ुरआने पाक की तिलावत शुरूअ़ कर देता हूं ह़त्ता कि सुब्ह़ हो जाती है लेकिन मेरी ह़ाजत पूरी नहीं होती।"

﴾9﴿......ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ह़सन बसरी عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡقَوِى फ़रमाते हैं : "गुनाहों के सबब बन्दे को रात में उठ कर इ़बादत करने से मह़रूम कर दिया जाता है।"

﴾10﴿......ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ुज़ैल बिन इयाज़ عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡوَهَّاب फ़रमाते हैं : "अगर तुम रात में उठ कर इ़बादत करने और दिन के वक़्त रोज़ा रखने पर क़ुदरत नहीं रखते हो तो जान लो कि तुम मह़रूम हो और तुम्हारी ख़त़ाएं बहुत ज़ियादा हो गई हैं।"

﴾11﴿......ताबेई बुज़ुर्ग ह़ज़रते सय्यिदुना सलह बिन अशैम अ़दवी عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡقَوِى पूरी रात नमाज़ पढ़ते जब सह़री का वक़्त होता तो बारगाहे इलाही में अ़र्ज़ करते : "ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मेरे जैसे आदमी को येह लाइक़ नहीं कि वोह तुझ से जन्नत त़लब करे लेकिन तू अपनी रह़मत से मुझे जहन्नम से पनाह अ़त़ा फ़रमा।"

﴾12﴿......एक शख़्स ने किसी दाना (अ़क़्लमन्द) से कहा : "मैं रात में उठ कर नमाज़ पढ़ने से आ़जिज़ हूं।" दाना शख़्स ने फ़रमाया : "ऐ भाई ! दिन में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की नाफ़रमानी न कर फिर शब बेदारी न करने में कोई ह़रज नहीं।"

﴾13﴿......ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बिन सालेह़ رَحۡمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيۡه के पास एक बांदी थी जिसे उन्हों ने बेच दिया, जब रात का दरमियानी ह़िस्सा आया तो वोह लौंडी उठ खड़ी हुई और कहने लगी : "ऐ घर वालो नमाज़, नमाज़।" वोह कहने लगे : "क्या सुब्ह़ हो गई ? क्या फ़ज्र तुलूअ़ हो गई ?" बांदी ने कहा : "क्या तुम सिर्फ़ फ़र्ज़ नमाज़ ही पढ़ते हो ?" कहा : "हां !" तो बांदी ने ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बिन सालेह़ رَحۡمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيۡه की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ की : "ऐ मेरे आक़ा ! आप ने मुझे ऐसी क़ौम को बेचा है जो सिर्फ़ फ़र्ज़ नमाज़ ही पढ़ते हैं, लिहाज़ा मुझे वापस ले लीजिये।" चुनान्चे, आप ने उसे वापस ले लिया।

﴾14﴿......ह़ज़रते सय्यिदुना रबीअ़ बिन सुलैमान मुरादी عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡهَادِى फ़रमाते हैं : "मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡكَافِى के घर कई रातें गुज़ारीं हैं, (देखा है कि) आप रात में बहुत कम सोया करते थे।"

﴾15﴿......ह़ज़रते सय्यिदुना अबू जुवैरिय्या अ़ब्दुल ह़मीद बिन इमरान कूफ़ी عَلَیۡهِ رَحۡمَةُ اللهِ الۡوَلِی फ़रमाते हैं : "मैं छे माह ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा رَحۡمَةُاللهِ تعالٰی عَلَیۡه की सोह़बत में रहा, इन छे माह में एक रात भी इन्हें सोते न देखा।"

(मन्क़ूल है कि) ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म عَلَیۡهِ رَحۡمَةُ اللهِ الۡاَکۡرَم आधी रात इ़बादत किया करते थे। एक बार कुछ लोगों के पास से गुज़रे तो उन्हें येह कहते सुना कि "येह पूरी रात इ़बादत में गुज़ारते हैं।" आप رَحۡمَةُاللهِ تعالٰی عَلَیۡه ने फ़रमाया : "मैं इस से ह़या करता हूं कि मेरी त़रफ़ ऐसी बात मन्सूब की जाए जिस पर मैं अ़मल नहीं करता।" इस के बा'द से आप पूरी रात इ़बादत करने लगे। मन्क़ूल है कि ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म عَلَیۡهِ رَحۡمَةُ اللهِ الۡاَکۡرَم के पास रात गुज़ारने के लिये कोई बिस्तर नहीं था।

﴾16﴿......कहा जाता है कि ह़ज़रते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार عَلَیۡهِ رَحۡمَةُ اللهِ الۡغَفَّار ने एक रात इस त़रह़ गुज़ारी की सुब्ह़ तक येह आयत पढ़ते रहे :

اَمۡ حَسِبَ الَّذِیۡنَ اجۡتَرَحُوا السَّیِّاٰتِ اَنۡ نَّجۡعَلَهُمۡ كَالَّذِیۡنَ اٰمَنُوۡا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ۙ سَوَآءً مَّحۡیَاهُمۡ وَمَمَاتُهُمۡ ؕ سَآءَ مَا یَحۡكُمُوۡنَ ﴿۲۱﴾ (پ۲۵، الجاثیة:۲۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *क्या जिन्हों ने बुराइयों का इर्तिकाब किया येह समझते हैं कि हम इन्हें उन जैसा कर देंगे जो ईमान लाए और अच्छे काम किये कि इन की उन की ज़िन्दगी और मौत बराबर हो जाए क्या ही बुरा हुक्म लगाते हैं !*

﴾17﴿......ह़ज़रते सय्यिदुना मुग़ीरा बिन ह़बीब عَلَیۡهِ رَحۡمَةُ اللهِ الۡحَسِیۡب फ़रमाते हैं : मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार عَلَیۡهِ رَحۡمَةُ اللهِ الۡغَفَّار को देखा, उन्हों ने नमाज़े इ़शा के बा'द वुज़ू किया और नमाज़ पढ़ने की जगह तशरीफ़ ले गए और अपनी दाढ़ी पकड़ ली (और रोने लगे) ह़त्ता कि आंसूओं की वजह से उन का सांस रुक गया, फिर बारगाहे इलाही में अ़र्ज़ करने लगे : "ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मालिक के बुढ़ापे को आग पर ह़राम फ़रमा दे। इलाही ! तू जानता है कौन जन्नत में और कौन जहन्नम में रहेगा ? मालिक कहां रहेगा ? इस का घर कौन सा है (जन्नत या जहन्नम) ?" तुलूए़ फ़ज्र तक येही कहते रहे।

﴾18﴿......ह़ज़रते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार عَلَیۡهِ رَحۡمَةُ اللهِ الۡغَفَّار फ़रमाते हैं : एक रात मैं अपना रात का वज़ीफ़ा करना भूल गया और सो गया, मैं ने ख़्वाब में एक ह़सीनो जमील औ़रत को देखा। उस के हाथ में एक ख़त़ था उस ने कहा : "क्या आप इसे अच्छी त़रह़ पढ़ सकते हैं ?" मैं ने कहा : "जी हां !" उस ने वोह ख़त़ मुझे दे दिया उस में येह अश्आ़र लिखे थे :

اَاَلْهَتَكَ اللَّذَائِذُ وَالْاَمَانِی عَنِ الْبِیْضِ الْاَوَانِسِ فِی الْجِنَانِ

تَعِیْشُ مُخَلَّدًا لَا مَوْتَ فِیْهَا وَتَلْهُوْ فِی الْجِنَانِ مَعَ الْحِسَانِ

تَنَبَّهْ مِنْ مَنَامِكَ اَنَّ خَیْرًا مِنَ النَّوْمِ التَّهَجُّدُ بِالْقُرْاٰنِ

तर्जमा : (1).....क्या लज़्ज़ात और ख़्वाहिशात ने तुझे जन्नत में रहने वाली ख़ूब सूरत हूरों से ग़ाफ़िल कर दिया है ?

(2).....तू उस में हमेशा रहेगा, कभी मौत नहीं आएगी और जन्नतों में ह़सीनो जमील हूरों के साथ खेलेगा।

(3).....अपनी नींद से बेदार हो कि तहज्जुद में क़ुरआने पाक की तिलावत करना नींद से बेहतर है।

﴾19﴿......मन्क़ूल है कि ह़ज़रते सय्यिदुना मसरूक़ बिन अजदअ़ رَحْمَةُاللّٰہِ تعالٰی عَلَیْه ने ह़ज किया तो कोई रात बिग़ैर सजदा करते न गुज़ारी।

﴾20﴿......ह़ज़रते सय्यिदुना अज़्हर बिन मुग़ीष رَحْمَةُاللّٰہِ تعالٰی عَلَیْه जो आ़बिदों में से थे, फ़रमाते हैं : मैं ने ख़्वाब में एक औ़रत को देखा जो दुन्या की औ़रतों के मुशाबेह न थी, मैं ने उस से कहा : "तुम कौन हो ?" उस ने जवाब दिया : "हूर।" मैं ने कहा : "मुझ से शादी कर लो।" उस ने कहा : "मेरे आक़ा को निकाह़ का पैग़ाम दो और महर भी अदा कर दो।" मैं ने कहा : "तुम्हारा महर क्या है ?" कहा : "रात में देर तक नमाज़ पढ़ना।"

﴾21﴿......ह़ज़रते सय्यिदुना यूसुफ़ बिन मेहरान عَلَیْه رَحْمَةُالرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : "मुझे येह ख़बर पहुंची है कि अ़र्श के नीचे मुर्ग़ की शक्ल का एक फ़िरिश्ता है, उस के पंजे मोतियों के और कलग़ी सब्ज़ ज़बरजद की है, जब तिहाई रात गुज़रती है तो वोह परों को फड़ फड़ाता है और कहता है : आ़बिदों को उठ जाना चाहिये। जब आधी रात गुज़र जाती है तो फिर परों को फड़ फड़ाता है और कहता है : तहज्जुद पढ़ने वालों को उठ जाना चाहिये। जब दो तिहाई रात गुज़र जाती है तो फिर परों को फड़ फड़ा कर कहता है : नमाज़ियों को उठ जाना चाहिये। जब तुलूए़ फ़ज्र होती है तो फिर परों को फड़ फड़ा कर कहता है : ग़ाफ़िलों को उठ जाना चाहिये। इन पर (गुनाहों का) बोझ है।"

﴾22﴿......मन्क़ूल है कि ह़ज़रते सय्यिदुना वहब बिन मुनब्बेह यमानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّورانی ने 30 साल तक अपना पहलू ज़मीन पर नहीं रखा। फ़रमाया करते थे : "मुझे अपने घर में शैत़ान को देखना तकिया देखने से ज़ियादा पसन्द है क्यूंकि तकिया नींद की त़रफ़ बुलाता है।" आप رَحْمَةُاللّٰہِ تعالٰی عَلَیْه के पास चमड़े का एक तकिया था जब नींद का ग़लबा होता तो अपना सीना उस पर रख कर कुछ देर सो जाते फिर नमाज़ के लिये उठ खड़े होते।

﴾23﴿......एक बुज़ुर्ग رَحْمَةُاللهِ تعالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : मैं ख़्वाब में दीदारे इलाही से मुशर्रफ़ हुवा तो मैं ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को येह कहते सुना : "मुझे अपनी इ़ज़्ज़तो जलाल की क़सम ! मैं सुलैमान तीमी को अच्छा ठिकाना अ़ता फ़रमाऊंगा क्यूंकि उस ने 40 साल मेरी ख़ुशनूदी के हुसूल के लिये इ़शा के वुज़ू से सुब्ह़ की नमाज़ पढ़ी। मन्क़ूल है कि ह़ज़रते सय्यिदुना सुलैमान तीमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى का मौक़िफ़ येह था कि जब नींद दिल पर छा जाए तो वुज़ू टूट जाता है।

﴾24﴿......बा'ज़ आस्मानी किताबों में है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है : "मेरा सच्चा बन्दा वोह है जो रात को उठने में मुर्ग़ के बोलने का इन्तिज़ार नहीं करता।"

शब बेदारी में आसानी के ज़ाहिरी व बातिनी अस्बाब

जो शख़्स शब बेदारी को आसान करने वाले ज़ाहिरी व बातिनी अस्बाब का लिह़ाज़ नहीं करता उस के लिये रात में इ़बादत करना मुश्किल है।

चार ज़ाहिरी अस्बाब :

﴾1﴿......**ज़ियादा खाने से परहेज़ :** क्यूंकि शब बेदारी करने वाला अगर ज़ियादा खाना खाएगा तो पानी भी ज़ियादा पियेगा यूं उस पर नींद ग़ालिब आ जाएगी और शब बेदारी मुश्किल हो जाएगी। बा'ज़ शुयूख़ हर रात दस्तरख़्वान पर खड़े हो कर फ़रमाते : "ऐ राहे आख़िरत का इरादा करने वाले गुरौह ! ज़ियादा खाना न खाओ कि इस त़रह़ तुम पानी भी ज़ियादा पियोगे, फिर सोओगे भी ज़ियादा और फिर मौत के वक़्त ह़सरत भी ज़ियादा करोगे।"

येह (शब बेदारी व तन्दुरुस्ती का) बहुत बड़ा ज़ाबत़ा है कि मे'दे को खाने के बोझ से हल्का रखा जाए।

﴾2﴿......**दिन के वक़्त नफ़्स को न थकाना :** शब बेदारी के ख़्वाहिश मन्द को चाहिये कि दिन के अवक़ात में नफ़्स को ज़ियादा न थकाए क्यूंकि दिन के वक़्त नफ़्स को ऐसे आ'माल के ज़रीए थका देना भी नींद का सबब है कि जिन की वजह से आ'ज़ा आ़जिज़ आ जाते और आ'साब कमज़ोर पड़ जाते हैं।

﴾3﴿......**दिन के वक़्त क़ैलूला करना :** दिन में क़ैलूला भी तर्क न करे कि येह शब बेदारी में मदद लेने के लिये सुन्नत है।

﴾4﴿......**दिन में गुनाहों से इजतिनाब करना :** दिन में गुनाहों से इजतिनाब करे क्यूंकि येह दिल की सख़्ती का बाइ़ष बनते और अस्बाबे रह़मत के दरमियान ह़ाइल हो जाते हैं ।

गुनाहों का क़ैदी :

एक शख़्स ने ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ह़सन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى से अ़र्ज़ की : "ऐ अबू सई़द ! मैं रात आ़फ़िय्यत में (या'नी सो कर) गुज़ारता हूं ह़ालांकि मैं शब बेदारी को पसन्द करता हूं, इसी लिये वुज़ू का पानी भी तय्यार रखता हूं, फिर भी न जाने क्या वजह है कि मैं शब बेदारी नहीं कर पाता ?" आप رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया : "तुम्हारे गुनाहों ने तुम्हें क़ैद कर रखा है ।"

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ह़सन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى जब बाज़ार में दाख़िल होते तो लोगों का शोर और फ़ुज़ूल गुफ़्तगू सुन कर फ़रमाते : "मेरा ख़याल है कि इन लोगों की रात बहुत बुरी है क्यूंकि येह दिन के वक़्त क़ैलूला नहीं करते ।"

शब बेदारी से मह़रूमी का सबब :

ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान षौरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : "मैं एक ख़त़ा के सबब पांच माह तक शब बेदारी से मह़रूम कर दिया गया ।" अ़र्ज़ की गई : "वोह कौन सी ख़त़ा थी ?" फ़रमाया : "मैं ने एक शख़्स को रोते देख कर दिल में ख़याल किया कि येह रियाकारी कर रहा है ।"

एक गुनाह की सज़ा :

एक बुज़ुर्ग رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : मैं ह़ज़रते सय्यिदुना कुर्ज़ बिन वबरह رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَيْه के पास गया उन्हें रोते देख कर पूछा : "क्या अहलो इ़याल में से किसी की मौत की ख़बर आई है ?" फ़रमाया : "इस से भी सख़्त बात है ।" मैं ने पूछा : "क्या कहीं दर्द है जिस की वजह से तक्लीफ़ हो रही है ?" फ़रमाया : "इस से भी सख़्त मुआ़मला है ।" पूछा : "क्या मुआ़मला है ?" फ़रमाया : "मेरा दरवाज़ा बन्द है, पर्दा लटका हुवा है और मैं ने गुज़श्ता रात अपना वज़ीफ़ा नहीं पढ़ा, येह मह़रूमी मेरे एक गुनाह की सज़ा है ।" येह उन्हों ने इस वजह से फ़रमाया क्यूंकि नेकी, नेकी को लाती और बुराई, बुराई को लाती है और इन में से हर एक की थोड़ी भी मिक़्दार भी कषरत की त़रफ़ ले जाती है ।

जमाअ़त फ़ौत होने का सबब :

हज़रते सय्यिदुना अबू सुलैमान दारानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّورانی फ़रमाते हैं : "किसी की जमाअ़त का फ़ौत हो जाना उस के किसी गुनाह के सबब है।" मज़ीद फ़रमाते हैं : "रात में एह़तिलाम होना एक सज़ा और जनाबत (रह़मते इलाही से) दूरी का सबब है।"

बा'ज़ उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰہُ السَّلَام फ़रमाते हैं : "ऐ मिस्कीन ! जब तू रोज़ा रखे तो ग़ौर कर कि किस के पास और किस चीज़ पर इफ़्तार करता है क्यूंकि बन्दा जो लुक़्मा भी खाता है इस से उस का दिल पहली ह़ालत से बदल जाता है और फिर पहली ह़ालत की त़रफ़ नहीं लौटता।"

ख़ुलासए कलाम :

अल ग़रज़ तमाम गुनाह क़सावते क़ल्बी (या'नी दिल की सख़्ती) का बाइ़ष और शब बेदारी में रुकावट बनते हैं। जो गुनाह बिल ख़ुसूस दिल पर अषर करता है वोह लुक़्मए ह़राम है जब कि लुक़्मए ह़लाल दिल की सफ़ाई और इसे भलाई की त़रफ़ राग़िब करने में इतना अषर करता है कि कोई और शै इतना अषर नहीं करती। अहले मुराक़बा ने शरीअ़त की गवाही के बा'द तजरिबे के ज़रीए़ भी इस चीज़ को जाना है। इसी वजह से इन में से बा'ज़ ह़ज़रात ने फ़रमाया : "कितने ही लुक़्मे ऐसे हैं जो शब बेदारी से रोक देते हैं और कितनी ही निगाहें ऐसी हैं जो क़ुरआने पाक की तिलावत से रोक देती हैं। क्यूंकि बा'ज़ अवक़ात बन्दा कोई (ह़राम का) लुक़्मा खाता, या (ह़राम) काम करता है तो इस की वजह से उसे एक साल तक शब बेदारी से मह़रूम कर दिया जाता है।"

जिस त़रह़ नमाज़ बे ह़याई और बुरी बातों से रोकती है इसी त़रह़ बे ह़याई नमाज़ और तमाम नेक कमों में रुकावट का बाइ़ष बनती है। जेल के एक दारोग़ा का बयान है कि मैं 30 साल से ज़ियादा अ़र्सा (दैनूर में) जेलर रहा, रात के वक़्त जब भी कोई नया क़ैदी आता तो मैं उस से पूछता : "क्या तुम ने नमाज़े इशा बा जमाअ़त पढ़ी है ?" तो वोह येही कहता कि "नहीं।" येह इस बात पर तम्बीह है कि जमाअ़त की बरकत बे ह़याई और बुरे काम से रोक देती है।

चार बात़िनी अस्बाब :

﴾1﴿.....**दिल का सलामत होना :** इस से मुराद येह है कि दिल मुसलमानों के बुग़्ज़ व कीना, बिदअ़तों और फ़ुज़ूल क़िस्म के दुन्यवी ख़यालात से पाक व साफ़ हो क्यूंकि जो दुन्या की तदबीर

करने की फ़िक्र में मगन हो उस के लिये शब बेदारी करना आसान नहीं, अगर कर भी ले तो नमाज़ में ग़ौरो फ़िक्र नहीं कर पाता बल्कि दुन्यवी कामों के बारे में सोचता रहता और उसी के वस्वसों में घूमता रहता है। इसी क़िस्म की ह़ालत के बारे में कहा गया है :

يُخْبِرُنِى الْبَوَّابُ اَنَّكَ نَائِمٌ   وَاَنْتَ اِذَا اسْتَيْقَظْتَ اَيْضًا فَنَائِمٌ

तर्जमा : दरबान ने मुझे ख़बर दी कि तू सोया हुवा था और तू जागते हुए भी सोया होता है।

﴾2﴿.....**दिल पर ख़ौफ़ त़ारी हो :** दिल पर ख़ौफ़ का ग़लबा जब कि उम्मीद कम हो क्यूंकि जब येह आख़िरत की हौलनाकियों और जहन्नम के दर्जात के बारे में ग़ौरो फ़िक्र करेगा तो उस की नींद उड़ जाएगी और ख़ौफ़ में ज़ियादती होगी। जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना त़ाऊस बिन कैसान यमानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِى फ़रमाते हैं : "जहन्नम के ज़िक्र ने आ़बिदीन की नींदें उड़ा दी हैं।"

तो सुहैब को नींद नहीं आती :

इसी त़रह़ बसरा के सुहैब नामी एक ग़ुलाम का वाक़िआ़ है कि वोह पूरी रात नमाज़ पढ़ा करता था, उस की मालिका ने उस से कहा : "तेरा पूरी रात नमाज़ पढ़ना तेरे दिन के वक़्त काम में नुक़्सान देह है।" उस ने कहा : "सुहैब को जब जहन्नम याद आता है तो उसे नींद नहीं आती।"

एक और ग़ुलाम के बारे में मन्क़ूल है कि वोह भी पूरी रात नमाज़ पढ़ा करता था, उसे जब ऐसा कहा गया तो उस ने जवाब दिया : "जब मुझे जहन्नम का ख़याल आता है तो मेरा ख़ौफ़ बढ़ जाता है और जब जन्नत का ख़याल आता है तो मेरा शौक़ बढ़ जाता है, लिहाज़ा मुझे सोने पर क़ुदरत नहीं होती।"

ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुन्नून मिस्री عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى ने चन्द अश्आ़र कहे जिन का मफ़्हूम कुछ यूं है : क़ुरआने पाक ने (बन्दों को) अपने वा'दा व वई़द के ज़रीए़ रात में सोने से रोक दिया है। उन्हों ने अ़ज़मत व बुज़ुर्गी वाले बादशाह का कलाम समझ लिया तो उस की बारगाह में आ़जिज़ी की वजह से उन की गर्दनें झुक गईं।

इसी मफ़्हूम को एक शाइ़र ने यूं बयान किया है : ऐ लम्बी नींद और ग़फ़्लत में पड़ने वाले ! नींद की कषरत ह़सरत पैदा करती है। बेशक मरने के बा'द जब तू क़ब्र में मुन्तक़िल होगा तो क़ब्र में लम्बी नींद है। उस में तेरे लिये उसी का बिस्तर बिछाया जाएगा जो तू ने गुनाह या नेकियां की हैं। क्या तू रात के वक़्त अचानक मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام के आने से बे ख़ौफ़ है ? कितने ही लोग ऐसे हैं कि जो उन से बे ख़ौफ़ थे वोह उन के पास जा पहुंचे।

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया : जब रात की तारीकी छा जाती है तो नेक लोग मेह़नत (या'नी इ़बादत) में लग जाते हैं ह़त्ता कि जब सुब्ह़ की रोशनी फैलती है तो वोह रुकूअ़ में होते हैं। ख़ौफ़ ने उन की नींदें उड़ा दी तो वोह इ़बादत के लिये कमर बस्ता हो गए जब कि बे ख़ौफ़ लोग सोए हुए हैं।

﴾3﴿.....शब बेदारी की फ़ज़ीलत में वारिद आयात, अह़ादीष और आषारे सह़ाबा व ताबेईन पेशे नज़र हों : कि इस के सबब ह़ुसूले षवाब के लिये उम्मीद व शौक़ मज़बूत़ होगा और फिर शौक़ मज़ीद मक़ामात तक त़लब और जन्नत के दर्जात में रग़बत की त़रफ़ उभारेगा। चुनान्चे, मरवी है कि एक बुज़ुर्ग जिहाद से वापस आए तो ज़ौजा बिस्तर बिछा कर उन का इन्तिज़ार करने लगी, वोह बुज़ुर्ग मस्जिद में गए और सुब्ह़ तक नमाज़ पढ़ते रहे। ज़ौजा ने अ़र्ज़ की : "मैं आप की तशरीफ़ आवरी की कब से मुन्तज़िर थी, आप आए हैं तो सुब्ह़ तक नमाज़ में ही मश्ग़ूल रहे हैं !" फ़रमाया : "ख़ुदा की क़सम ! मैं इस त़वील रात में जन्नत की ह़ूरों में से एक ह़ूर के बारे में ग़ौरो फ़िक्र करता रहा, तुम्हारे और घर के मुतअ़ल्लिक़ कुछ ख़याल ही न आया और सारी रात इस के शौक़ में नमाज़ पढ़ता रहा।"

﴾4﴿.....ज़ाते बारी तआ़ला पर पुख़्ता ईमान और उस की कामिल मह़ब्बत दिल में हो : येह सबब सब से ज़ियादा बुलन्द मर्तबा है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की मह़ब्बत और इस बात पर पुख़्ता ईमान हो कि ह़ालते क़ियाम में येह जो कुछ भी कहता है हर हर ह़र्फ़ के ज़रीए़ बारगाहे इलाही में मुनाजात कर रहा है और वोह इस पर आगाह है। नीज़ (वस्वसों से ख़ाली) जो ख़यालात दिल में आएं उन का भी मुशाहदा करे और यक़ीन रखे येह ख़त़रात अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से उसे ख़ित़ाब हैं। क्यूंकि जब कोई अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से मह़ब्बत करेगा तो वोह लाज़िमी तौ़र पर उस के साथ ख़ल्वत को भी पसन्द करेगा और उस से मुनाजात करने की लज़्ज़त पाएगा और ह़बीब के साथ मुनाजात करने की लज़्ज़त ज़ियादा देर क़ियाम करने पर उभारेगी।

इस लज़्ज़त को कोई बईद न समझे क्यूंकि इस पर अ़क़्ल व नक़्ल दोनों गवाह हैं :

अ़क़्ली दलील : उस शख़्स के ह़ाल से सबक़ ह़ासिल कर जो किसी इन्सान से उस के ह़ुस्नो जमाल, या बादशाह से उस के इन्आ़म व इकराम की बदौलत मह़ब्बत करता है कि वोह उन के साथ तन्हाई और हम कलामी से कैसे लज़्ज़त पाता है ह़त्ता कि रात देर तक उसे नींद भी नहीं आती।

सुवाल जवाब :

(1)....अगर येह वस्वसा आए कि ख़ूब सूरत शख़्स की त़रफ़ देख कर लज़्ज़त ह़ासिल की जाती है लेकिन अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तो नज़र नहीं आता (फिर क्यूं कर लज़्ज़त ह़ासिल होगी) ? तो इस का **जवाब** येह है कि अगर ह़सीनो जमील मह़बूब पर्दे के पीछे हो या अन्धेरे कमरे में हो तो फिर भी मुह़िब्ब उसे देखे बिग़ैर सिर्फ़ उस की गुफ़्त्गू से लज़्ज़त पाता है और उस के इ़लावा किसी और चीज़ की ख़्वाहिश भी नहीं करता, उस पर अपनी मह़ब्बत का इज़्हार करने और अपनी ज़बान से उस का ज़िक्र कर के उसे सुना कर ख़ुश होता है अगर्चे येह बातें मह़बूब को पहले से ही मा'लूम हों ।

(2).....अगर येह वस्वसा आए कि ह़सीनो जमील शख़्स के जवाब का इन्तिज़ार होता है फिर उस का जवाब सुन कर लज़्ज़त ह़ासिल होती है लेकिन अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का कलाम नहीं सुना जाता (फिर क्यूं कर लज़्ज़त ह़ासिल होगी ?) तो इस का **जवाब** येह है कि अगर येह शख़्स जानता हो कि मह़बूब जवाब नहीं देगा बल्कि ख़ामोश रहेगा तब भी मह़बूब पर अपने अह़्वाल ज़ाहिर करने और राज़ उस तक पहुंचाने में इसे लज़्ज़त ही ह़ासिल होती है (तो फिर मुनाजात करने वाले को कैसे लज़्ज़त ह़ासिल न होगी ?) ह़ालांकि यक़ीने कामिल रखने वाला अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से हर वोह बात सुनता है जो मुनाजात के दौरान उस के दिल पर वारिद होती है तो वोह उस से लज़्ज़त ह़ासिल करता है । जैसे वोह कि जो किसी बादशाह के साथ ख़ल्वत में हो और रात के किसी ह़िस्से में बादशाह के सामने अपनी ह़ाजात पेश करे तो वोह इन्आ़म की उम्मीद में उस से लज़्ज़त पाएगा तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इस बात का ज़ियादा ह़क़दार है कि उस से उम्मीद रखी जाए और जो इस के पास है वोह बेहतर, बाक़ी रहने वाला और दूसरों से ज़ियादा नफ़्अ़ मन्द है तो फिर तन्हाई में बारगाहे इलाही में अपनी ह़ाजत पेश करने से क्यूं कर लज़्ज़त ह़ासिल न होगी ?

नक़्ली दलील : मुनाजात की लज़्ज़त ह़ासिल होने पर रातों को क़ियाम करने वालों के अह़्वाल शाहिद हैं कि वोह रात के क़ियाम के ज़रीए़ लज़्ज़त पाते हैं और रात को यूं छोटा ख़याल करते हैं जैसे मुह़िब्ब, मह़बूब से मुलाक़ात की रात को बहुत छोटी समझता है ।

शब बेदारों के वाक़िआ़त व अक़्वाल :

.....मन्क़ूल है कि एक शब बेदार से पूछा गया : "आप की रात कैसी गुज़रती है ?" तो जवाब मिला : "मैं ने रात का कभी लिह़ाज़ नहीं रखा वोह मुझे अपना चेहरा दिखा कर पलट जाती है और इस के बा'द मैं उस के बारे में ग़ौर नहीं करता ।

۞.....एक बुजु़र्ग फ़रमाते हैं : "मैं और रात, मुक़ाबला करने वाले दो घोड़ों की त़रह़ हैं कभी तो वोह मुझे फ़ज्र तक पहुंचा देती है और कभी मुझे ग़ौरो फ़िक्र से मह़रूम कर देती है।"

۞.....किसी शब बेदार से पूछा गया : "आप पर रात कैसे गुज़रती है ?" रात ऐसी घड़ी है जिस में मेरी दो ह़ालतें होती हैं : जब वोह आती है तो उस के अन्धेरे से ख़ुश होता हूं अभी ख़ुशी पूरी नहीं होती कि सुब्ह़ तुलूअ़ होने का ग़म लाह़िक़ हो जाता है।"

۞.....ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली बिन बक्कार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَفَّار फ़रमाते हैं : "40 साल से सुब्ह़ तुलूअ़ होने के इ़लावा किसी और चीज़ ने मुझे ग़मगीन नहीं किया।"

۞.....ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ुज़ैल बिन इ़याज़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَهَّاب फ़रमाते हैं : "जब सूरज ग़ुरूब होता है तो अन्धेरे की वजह से मैं ख़ुश हो जाता हूं क्यूंकि उस वक़्त मैं रब्ब عَزَّ وَجَلَّ के साथ ख़ल्वत में होता हूं। जब सूरज तुलूअ़ होता है तो लोगों के अपने पास आने की वजह से ग़मज़दा हो जाता हूं।"

۞.....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सुलैमान दारानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِی फ़रमाते हैं : "रातों में क़ियाम करने वाले रातों में खेल कूद करने वालों की ब निस्बत ज़ियादा लज़्ज़त पाते हैं और अगर रात न होती तो मैं दुन्या में ठहरना पसन्द न करता।" मज़ीद फ़रमाते हैं : "अगर रात में क़ियाम करने वालों को उन के आ'माल के षवाब के इ़वज़ वोह लज़्ज़त दे दी जाए जो वोह रात के क़ियाम में पाते हैं तो येह उन के आ'माल के षवाब से ज़ियादा होगी।"

۞.....बा'ज़ उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام फ़रमाते हैं : "आ़जिज़ी व इन्किसारी करने वाले अपने दिल में जो मुनाजात की लज़्ज़त पाते हैं इस के सिवा दुन्या में कोई वक़्त ऐसा नहीं जो जन्नती ने'मतों के मुशाबेह हो।"

۞.....मन्क़ूल है कि "मुनाजात की लज़्ज़त दुन्यवी नहीं बल्कि जन्नती ने'मतों में से है जिसे **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ सिर्फ़ अपने औलियाए उ़ज़्ज़ाम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام के लिये ज़ाहिर फ़रमाता है उन के सिवा किसी और को ह़ासिल नहीं होती।

۞.....ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन मुन्कदिर رَحْمَةُ اللّٰهِ تعالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : "दुन्यावी लज़्ज़ात में से सिर्फ़ तीन चीजें बाक़ी हैं :

(1).....रात का क़ियाम। (2).....मुसलमान भाइयों से मुलाक़ात। (3).....नमाज़े बा जमाअ़त।"

۞.....बा'ज़ आ़रिफ़ीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِيْن फ़रमाते हैं : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ सह़री के वक़्त जागने वालों के दिलों की त़रफ़ नज़र फ़रमाता है तो उन्हें अन्वार व तजल्लियात से भर देता है। फ़वाइद उन के दिलों की त़रफ़ लौटते हैं तो उन के दिल रोशन हो जाते हैं, जो अन्वार उन के दिलों से ज़ाइद होते हैं वोह ग़ाफ़िलीन के दिलों में फैल जाते हैं।

मुह़िब्बे इलाही व मह़बूबे इलाही की अ़लामात :

मुतक़द्दिमीन उ़-लमा में से किसी का क़ौल है कि "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने एक सिद्दीक़ की त़रफ़ इल्हाम फ़रमाया कि मेरे बन्दों में से कुछ बन्दे ऐसे हैं कि मैं उन से मह़ब्बत करता हूं, वोह मुझ से मह़ब्बत करते हैं। वोह मेरे मुश्ताक़ हैं, मैं उन का मुश्ताक़ हूं। वोह मेरा ज़िक्र करते हैं, मैं उन का चर्चा करता हूं। वोह मेरी त़रफ़ नज़र करते हैं, मैं उन की त़रफ़ नज़र फ़रमाता हूं। अगर तू उन के रास्ते पर चला तो मैं तुझे मह़बूब बना लूंगा और अगर उन से मुंह फेरा तो मैं तुझ पर शदीद ग़ज़ब करूंगा।" सिद्दीक़ ने अ़र्ज़ की : "ऐ रब्ब عَزَّوَجَلَّ उन की अ़लामत क्या है?" इरशाद फ़रमाया : "वोह दिन के वक़्त साए पर इस त़रह़ ध्यान देते हैं जिस त़रह़ चरवाहा बकरियों पर तवज्जोह देता है और ग़ुरूबे आफ़्ताब की त़रफ़ शौक़ के साथ इस त़रह़ माइल होते हैं जैसे उस वक़्त परन्दे अपने घोंसले की त़रफ़ माइल होते हैं। जब रात उन्हें छुपा लेती है, अन्धेरा छा जाता है और हर ह़बीब अपने ह़बीब के साथ तन्हाई इख़्तियार करता है तो वोह खड़े हो जाते हैं। अपने चेहरों को मेरे लिये बिछा देते और मेरे कलाम के ज़रीए़ मुझ से मुनाजात करते हैं। मेरे इन्आ़मात के सबब मेरी बारगाह में आ़जिज़ी व इन्किसारी करते हैं। कोई चीख़ता है तो कोई रोता है। कोई आहें भरता है तो कोई शिकायत करता है। वोह मेरी वजह से जो मशक़्क़त उठाते हैं मैं उसे देखता हूं और मेरी मह़ब्बत की वजह से जो शिकायत करते हैं उसे सुनता हूं। **सब से पहली चीज़** जो मैं उन्हें अ़त़ा करता हूं वोह मेरा नूर है कि जब वोह उन के दिलों में डालता हूं तो वोह मेरे बारे में बताने लगते हैं जैसे मैं उन के बारे में ख़बर देता हूं। **दूसरी चीज़** जो उन्हें अ़त़ा करता हूं येह है कि अगर सातों आस्मान और सातों ज़मीन और जो कुछ इन के दरमियान है सब उन के मीज़ान में हों तो भी उन के ह़क़ में इसे क़लील जानता हूं। **तीसरी चीज़** जो उन्हें अ़त़ा करता हूं येह है कि इन की त़रफ़ ख़ुसूसी तवज्जोह फ़रमाता हूं और जिस की त़रफ़ मैं ख़ुसूसी तवज्जोह करता हूं तो किसी को क्या ख़बर कि मैं ने उसे क्या देने का इरादा किया है?"

۞.....ह़ज़रते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَفَّار फ़रमाते हैं : "जो बन्दा तहज्जुद पढ़ने के लिये उठता है अल्लाह عَزَّوَجَلَّ (अपनी रह़मत के साथ) उस से क़रीब हो जाता है और ऐसे लोग अपने दिलों में जो नर्मी, ह़लावत और अन्वार पाते हैं इस की वजह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का क़ुर्ब जानते हैं।" येह एक राज़ और ह़क़ीक़त है अ़न क़रीब "**मह़ब्बत के बयान**" में इस की त़रफ़ इशारा आएगा।

۞.....मरवी है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है : "ऐ बन्दे ! मैं अल्लाह हूं जो तेरे दिल से क़रीब हुवा और तू ने ग़ैब में मेरे नूर को देखा।"

बख़्शिश के झोंके :

एक शागिर्द ने अपने उस्ताज़ से रात देर तक जागने की शिकायत की और नींद लाने की कोई तरकीब पूछी तो उस्ताज़ ने कहा : "ऐ बेटे ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के पास रात और दिन में बख़्शिश के कुछ झोंके हैं जो बेदार दिलों को पहुंचते हैं और सोए हुए दिलों से गुज़र जाते हैं, तुम उन झोंकों को ह़ासिल करने के दरपे रहो।" शागिर्द ने कहा : "या सय्यिदी ! आप ने मुझे इस ह़ाल में छोड़ दिया है कि मैं न रात को सो सकता हूं, न दिन को।"

जान लीजिये कि रात के वक़्त इन झोंकों की ज़ियादा उम्मीद होती है क्यूंकि क़ियामुल्लैल में दिल की सफ़ाई होती और दुन्यावी मशाग़िल दूर होते हैं।

क़बूलिय्यत की घड़ी :

ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह अन्सारी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब, ह़बीबे लबीब صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "रात में एक घड़ी है कि जिसे कोई बन्दए मोमिन पा कर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से भलाई का सुवाल करता है तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे वोह ज़रूर देता है।"(1)

एक रिवायत में है कि "इस साअ़त में बन्दए मोमिन दुन्या व आख़िरत में से जिस भलाई का भी सुवाल करता है अल्लाह तआ़ला वोह उसे ज़रूर देता है और येह साअ़त हर रात में होती है।"(2)

---

1 ......صحیح مسلم، کتاب صلاة المسافرین وقصرها، باب فی اللیل ساعة......الخ، الحدیث:۷۵۷، ص ۳۸۰۔
2 ......صحیح مسلم، کتاب صلاة المسافرین وقصرها، باب فی اللیل ساعة......الخ، الحدیث:۷۵۷، ص ۳۸۰۔

रात में क़ियाम करने वालों का मत़लूब इस साअ़त का ह़ुसूल होता है। येह साअ़त पूरी रात में इस त़रह़ पोशीदा होती है जिस त़रह़ लैलतुल क़द्र पूरे माहे रमज़ान में पोशीदा होती है या जिस त़रह़ जुमुआ़ के दिन की साअ़त है कि येह भी इन बख़्शिश के झोंकों में से है। واللہ تعالیٰ اعلم

शब के अवक़ात की तक़्सीम का त़रीक़ा :

जानना चाहिये कि मिक़्दार के ए'तिबार से शब बेदारी के सात मरातिब हैं :

(1)......**पूरी रात शब बेदारी :** येह उन मज़्बूत़ लोगों की शान है जिन्हों ने ख़ुद को फ़क़त़ इबादत के लिये फ़ारिग़ कर रखा है और बारगाहे इलाही में मुनाजात करने से लज़्ज़त पाते हैं। येही उन की ग़िज़ा और उन के दिलों की ज़िन्दगी है। लिहाज़ा येह देर तक क़ियाम करने से थकते नहीं, नींद को दिन के वक़्त की त़रफ़ लौटा देते हैं जब कि लोग काम काज में मसरूफ़ होते हैं। सलफ़े सालेह़ीन رَحِمَهُمُ اللهُ الْمُبِيْن के एक गुरौह का त़रीक़ा था कि वोह इशा के वुज़ू से फ़ज्र की नमाज़ पढ़ा करते थे।

इशा के वुज़ू से फ़ज्र अदा करने वाले :

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू त़ालिब मुह़म्मद बिन अ़ली मक्की عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَلِى फ़रमाते हैं : चालीस ताबेईन से तवातुर व शोहरत के त़ौर पर मन्क़ूल है कि वोह इशा के वुज़ू से फ़ज्र की नमाज़ अदा करते थे। उन में से बा'ज़ वोह हैं कि जिन्हों ने चालीस साल तक इस की पाबन्दी की। उन में से चन्द येह हैं : (1)......ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन मुसय्यब मदनी। (2)......ह़ज़रते सय्यिदुना सफ़वान बिन सुलैमान मदनी। (3)......ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ुज़ैल बिन इयाज़ मक्की।(4)......ह़ज़रते सय्यिदुना वुहैब बिन वर्द मक्की। (5)......ह़ज़रते सय्यिदुना त़ाऊस बिन कैसान यमनी। (6)......ह़ज़रते सय्यिदुना वहब बिन मुनब्बेह यमनी। (7)......ह़ज़रते सय्यिदुना अबू यज़ीद रबीअ़ बिन ख़ुसैम कूफ़ी। (8)......ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अ़ब्दुल्लाह ह़कम बिन उतैबा कूफ़ी। (9)......ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सुलैमान अह़मद बिन अ़ब्दुर्रह़मान दारानी शामी। (10)......ह़ज़रते सय्यिदुना अबुल ह़सन अ़ली बिन बक्कार शामी। (11)......ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अ़ब्दुल्लाह ख़वास अ़बादी। (12)......ह़ज़रते सय्यिदुना अबू आ़सिम अ़बादी। (13)......ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मुह़म्मद ह़बीब बिन मुह़म्मद अ़जमी फ़ारसी। (14)......ह़ज़रते सय्यिदुना अबू जाबिर सलमानी फ़ारसी। (15)......ह़ज़रते सय्यिदुना अबू यह़्या मालिक बिन दीनार बसरी। (16)......ह़ज़रते सय्यिदुना अबुल मो'तमिर सुलैमान बिन त़रख़ान तीमी बसरी।

(17)......ह़ज़रते सय्यिदुना यज़ीद बिन अब्बान रक़्क़ाशी बसरी । (18)......ह़ज़रते सय्यिदुना ह़बीब बिन अबू षाबित बसरी । (19)......ह़ज़रते सय्यिदुना यह़्या बिन मसलमा बक्काअ बसरी और (20)......ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़षमान कहमस बिन मिन्हाल बसरी (رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡھِمۡ) मुअख़्ख़िरुज़्ज़िक्र शख़्सिय्यत के बारे में मन्क़ूल है कि महीने में 90 कुरआने पाक ख़त्म फ़रमाते, दौराने तिलावत अगर किसी आयत को समझ न पाते तो दोबारा पढ़ते । अहले मदीना में से ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ह़ाज़िम सलमा बिन दीनार और ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन मुन्कदिर رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡھِمَا भी इन्हीं में से हैं । येह ऐसी जमाअ़त है जिस की ता'दाद बहुत ज़ियादा है ।

﴾2﴿.....**आधी रात शब बेदारी :** सलफ़े सालिह़ीन رَحِمَھُمُ اللّٰہُ الْمُبِیۡن में जो आधी रात शब बेदारी पर हमेशगी इख़्तियार करते थे उन की ता'दाद शुमार से बाहर है । इस का बेहतर त़रीक़ा येह है कि रात का पहला तिहाई और आख़िरी छटा ह़िस्सा सोया जाए और दरमियान वाले निस्फ़ ह़िस्से में क़ियाम किया जाए, येही अफ़्ज़ल है ।

﴾3﴿.....**एक तिहाई रात शब बेदारी :** इस का बेहतर त़रीक़ा येह है कि रात के पहले निस्फ़ और आख़िरी छटे ह़िस्से में सोया जाए ।

ख़ुलासए कलाम : येह है कि रात के आख़िरी ह़िस्से में सोना पसन्दीदा अ़मल है कि येह सुब्ह़ के वक़्त की ऊंघ को दूर करता है और अस्लाफ़ सुब्ह़ के वक़्त की ऊंघ को नापसन्द फ़रमाया करते थे । नीज़ येह चेहरे की ज़र्दी और इस के सबब शोहरत को भी कम करता है । लिहाज़ा अगर अकषर रात क़ियाम करे और सह़री के वक़्त सो जाए तो इस के चेहरे की ज़र्दी और सुब्ह़ के वक़्त ऊंघ कम होगी ।

उम्मुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھَا फ़रमाती हैं : "मेरे सरताज, साह़िबे मे'राज صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم रात के आख़िरी ह़िस्से में वित्र अदा फ़रमाते, फिर अगर ह़ाजत होती तो अज़्वाज में से किसी से कुर्बत फ़रमाते वगर्ना मुसल्ले पर लैट जाते ह़त्ता कि ह़ज़रते बिलाल आ कर नमाज़ के लिये अज़ान कहते ।"[1]

इन्ही से मरवी एक रिवायत में है, फ़रमाती हैं : "मैं ने सह़री के बा'द आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को हमेशा आराम करते ही पाया ।"[2]

---

1 ......سنن النسائی، کتاب قیام اللیل......الخ، باب وقت الوتر، الحدیث:۱۶۷۷، ص ۲۹۱، باختصار۔
سنن ابی داود، کتاب التطوع، باب الاضطجاع بعدھا، الحدیث:۱۲۶۲، ج ۲، ص ۳۲، باختصار۔

2 ......صحیح مسلم، کتاب صلاۃ المسافرین وقصرھا، باب صلاۃ اللیل......الخ، الحدیث:۷۴۲، ص ۳۷۳، مفھومًا۔

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ फ़रमाते हैं : “सुब्ह से पहले येह सोना सुन्नत है।

इस वक़्त की नींद ग़ैब के पर्दों के आगे कशफ़ और मुशाहदा करने का सबब है और येह अरबाबे क़ुलूब के लिये होता है। नीज़ इस वक़्त की नींद में आराम है जो दिन के वज़ाइफ़ में से पहले वज़ीफ़े में मददगार षाबित होता है।

रात के दूसरे निस्फ़ में कुल रात का एक तिहाई क़ियाम करना और आख़िरी छटे हिस्से में आराम करना हज़रते सय्यिदुना दावूद عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیۡہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की सुन्नत है।

﴾4﴿.....**रात का छटा या पांचवां हिस्सा क़ियाम करना :** इस का अफ़्ज़ल तरीक़ा येह है कि येह क़ियाम दूसरे निस्फ़ में और रात के आख़िरी छटे हिस्से से पहले हो।

﴾5﴿.....**किसी अन्दाज़े को मल्हूज़ न रखा जाए :** येह बात सिर्फ़ अम्बियाए किराम عَلَیۡہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के लिये आसान होती है इस लिये कि उन पर वह्‌य नाज़िल होती है। या उस के लिये आसान है जो चांद की मन्ज़िलों को जानता हो और फिर इस पर किसी को निगरान मुक़र्रर करे जो इस की निगरानी करता रहे और वक़्त पर उसे जगा दे फिर भी बसा अवक़ात बादल वाली रातों में येह मुआमला मुज़्तरिब हो जाता है। लिहाज़ा उसे चाहिये कि रात के पहले हिस्से में क़ियाम करे जब नींद का ग़लबा हो तो सो जाए, बेदार हो तो फिर क़ियाम करे, फिर नींद का ग़लबा हो तो सो जाए यूं उस के लिये रात में दो नींदें और दो क़ियाम होंगे। येह रात की मशक़्क़त में से है सब से सख़्त और सब से अफ़्ज़ल है। नीज़ येह प्यारे मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के अख़्लाक़ में से है। हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन उमर, उलुल अज़्म सहाबए किराम और ताबेईने इज़्ज़ाम رِضۡوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہِمۡ اَجۡمَعِیۡن में से एक जमाअत का भी येही तरीक़ा था।

एक बुज़ुर्ग फ़रमाते हैं : “नींद पहली ही मरतबा है, जब मैं बेदार हो जाऊं और दोबारा सोना चाहूं तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मुझे न सुलाए।”

मिक़्दार के ए'तिबार से आक़ाए दो आलम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का क़ियाम फ़रमाना एक तरतीब पर नहीं था बल्कि कभी निस्फ़ रात क़ियाम फ़रमाते, कभी दो तिहाई और कभी रात का छटा हिस्सा। आप का येह तरीक़ा रातों के ए'तिबार से बदलता रहता था। इस पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का येह फ़रमाने आलीशान दलालत करता है जो सूरए मुज़्ज़म्मिल के शुरूअ़ और आख़िर में है :

اِنَّ رَبَّكَ يَعْلَمُ اَنَّكَ تَقُوْمُ اَدْنٰى مِنْ ثُلُثَيِ الَّيْلِ وَ نِصْفَهٗ وَ ثُلُثَهٗ (پ۲۹، مزمل:۲۰)

***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** बेशक तुम्हारा रब्ब जानता है कि तुम क़ियाम करते हो, कभी दो तिहाई रात के क़रीब कभी आधी रात कभी तिहाई ।*

उम्मुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا फ़रमाती हैं : "मेरे सरताज, साहि़बे मे'राज صَلَّى اللہ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم रात में उस वक़्त उठते जब मुर्ग़ की अज़ान सुनते ।"(1) येह रात के छटे हि़स्से से थोड़ा सा कम वक़्त है ।

रात में बेदार हो तो इस सुन्नत पर अ़मल करे :

मरवी है कि एक सह़ाबी फ़रमाते हैं : मैं ने सफ़र में रसूलुल्लाह صَلَّى اللہ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को रात में नमाज़ पढ़ते देखा कि इ़शा के बा'द काफ़ी रात तक लैटे रहे, फिर जागे तो आस्मान के कनारे में नज़र की और इन आयाते मुबारका की तिलावत फ़रमाई :

رَبَّنَا مَا خَلَقْتَ هٰذَا بَاطِلًا ۚ سُبْحٰنَكَ فَقِنَا عَذَابَ النَّارِ ﴿۱۹۱﴾ رَبَّنَاۤ اِنَّكَ مَنْ تُدْخِلِ النَّارَ فَقَدْ اَخْزَیْتَهٗ ؕ وَ مَا لِلظّٰلِمِیْنَ مِنْ اَنْصَارٍ ﴿۱۹۲﴾ رَبَّنَاۤ اِنَّنَا سَمِعْنَا مُنَادِیًا یُّنَادِیْ لِلْاِیْمَانِ اَنْ اٰمِنُوْا بِرَبِّكُمْ فَاٰمَنَّا ۖۗ رَبَّنَا فَاغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَا وَ كَفِّرْ عَنَّا سَیِّاٰتِنَا وَ تَوَفَّنَا مَعَ الْاَبْرَارِ ﴿۱۹۳﴾ۚ رَبَّنَا وَ اٰتِنَا مَا وَعَدْتَّنَا عَلٰی رُسُلِكَ وَ لَا تُخْزِنَا یَوْمَ الْقِیٰمَةِ ؕ اِنَّكَ لَا تُخْلِفُ الْمِیْعَادَ ﴿۱۹۴﴾

(پ۴، اٰل عمرٰن:۱۹۱تا۱۹۴)

***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** ऐ रब्ब हमारे ! तूने येह बेकार न बनाया पाकी है तुझे तू हमें दोज़ख़ के अ़ज़ाब से बचा ले । ऐ रब्ब हमारे ! बेशक जिसे तू दोज़ख़ में ले जाए उसे ज़रूर तू ने रुस्वाई दी और ज़ालिमों का कोई मददगार नहीं । ऐ रब्ब हमारे ! हम ने एक मुनादी को सुना कि ईमान के लिये निदा फ़रमाता है कि अपने रब्ब पर ईमान लाओ तो हम ईमान लाए ऐ रब्ब हमारे ! तू हमारे गुनाह बख़्श दे और हमारी बुराइयां मह़्व फ़रमा (मिटा) दे और हमारी मौत अच्छों के साथ कर । ऐ रब्ब हमारे ! और हमें दे वोह जिस का तू ने हम से वा'दा किया है अपने रसूलों की मा'रिफ़त और हमें क़ियामत के दिन रुस्वा न कर बेशक तू वा'दा ख़िलाफ़ नहीं करता ।*

फिर बिस्तर के नीचे से मिस्वाक निकाल कर मिस्वाक की, फिर वुज़ू कर के नमाज़ अदा फ़रमाई ह़त्ता कि मैं ने कहा आप जितनी देर सोए थे उतनी ही देर नमाज़ पढ़ी है, फिर लैट गए

1 ......صحیح البخاری، کتاب التھجد، باب من نام عندالسحر، الحدیث:۱۱۳۲، ج۱، ص۳۸۵۔

और जितनी देर नमाज़ पढ़ी उतनी ही देर आराम फ़रमाया, फिर बेदार हो कर वोही पढ़ा जो पहली मरतबा पढ़ा था और वोही किया जो पहली मरतबा किया था।[1]

﴿6﴾.....**दो या चार रक्अ़तों की मिक़्दार क़ियाम करना :** येह सब से कम मिक़्दार है, फिर अगर उस के लिये त़हारत करना मुश्किल हो तो एक साअ़त के लिये ज़िक्रो दुआ़ में मश्ग़ूल हो और क़िब्ला रू हो कर बैठ जाए कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रह़मत और उस के फ़ज़्ल से उस के लिये तमाम रात क़ियाम करने का षवाब लिखा जाएगा।

मरवी है कि हु़ज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "रात के वक़्त नमाज़ पढ़ो अगर्चे बकरी का दूध दोहने की मिक़्दार ही सही।"[2]

﴿7﴾.....**रात के दोनों कनारों में क़ियाम करना :** अगर रात के वस्त़ (दरमियान) में क़ियाम करना मुश्किल हो तो मग़रिब व इ़शा के माबैन जो वक़्त है उसे और इ़शा के बा'द वाले वज़ीफ़े को न छोड़े, फिर सह़री के वक़्त बेदार हो जाए ताकि सुब्ह़े सादिक़ को सोते में न पाए और रात के दोनों कनारों में क़ियाम हो।

येह रात को तक़्सीम करने के त़रीक़े हैं। मुरीद को चाहिये कि जिस त़रीक़े को खुद पर आसान समझे उसे इख़्तियार कर ले।

जब इन मरातिब को मिक़्दार के ए'तिबार से देखा जाएगा तो इन की तरतीब वक़्त के त़वील और कम होने के ए'तिबार से होगी लेकिन पांचवें और सातवें मर्तबे में मिक़्दार को मल्ह़ूज़ नहीं रखा गया कि आगे और पीछे होने की वजह से इन में येह तरतीब जारी नहीं हो सकती, सातवां मर्तबा मिक़्दार में छटे मर्तबे से कम नहीं और न ही पांचवां चौथे से कम है।

फ़ज़ीलत वाली रातें :

जान लीजिये कि साल में 15 मख़्सूस रातें हैं जिन की फ़ज़ीलत के ज़ियादा होने के सबब इन में शब बेदारी का मुस्तह़ब होना ज़ियादा मुअक्कद है। त़ालिबे आख़िरत को इन से ग़ाफ़िल नहीं रहना चाहिये कि येह नेकियां करने के मौसिम और तिजारत की मन्डियां हैं और जब ताजिर मौसिमों से ग़ाफ़िल रहता है तो वोह नफ़्अ़ नहीं पाता इसी त़रह़ अगर त़ालिबे आख़िरत मुख़्तलिफ़ अवक़ात के फ़ज़ाइल से ग़ाफ़िल हो तो कामयाब नहीं हो सकता।

---

1 ......سنن النسائی، کتاب قیام اللیل......الخ، بای شیئ تستفتح صلاۃ اللیل؟، الحدیث:۱۶۲۳، ص ۲۸۴، بتغیرٍ۔

2 ......المصنف لابن ابی شیبة، کتاب صلاۃ التطوع والامامة، من کان یامر بقیام اللیل، الحدیث:۳، ج ۲، ص ۱۷۳۔

छे रातें तो माहे रमज़ान में ही हैं : (1 ता 5).....रमज़ानुल मुबारक के आखि़री अ़श्रे की पांच ताक़ रातें क्यूंकि इन में लैलतुल क़द्र को तलाश किया जाता है। (6).....माहे रमज़ान की सतरहवीं रात। येह वोह रात है जिस की सुब्ह़ को यौमुल फ़ुर्क़ान कहते हैं कि इस दिन वाक़िअ़ए बद्र पेश आया और दो गुरौह आपस में टकराए थे। ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : "येही रात लैलतुल क़द्र है।"

बक़िय्या 9 रातें ये हैं : (7)......मुह़र्रमुल ह़राम की पहली रात (8)......आ़शूरा (दस मुह़र्रमुल ह़राम) की रात (9-10-11).....रजबुल मुरज्जब की पहली, पन्दरहवीं और सत्ताईसवीं रात। मुअख़्ख़िरुज़्ज़िक्र मे'राज की रात है।

100 साल की नेकियों का षवाब :

मे'राज की रात नमाज़ पढ़ना अह़ादीष से षाबित है। चुनान्चे, हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "इस (या'नी सत्ताईसवीं रजब की) रात अ़मल करने वाले के लिये 100 साल की नेकियों का षवाब है। जो इस रात बारह रक्अ़तें दो दो कर के पढ़े, सलाम के बा'द 100 मरतबा येह कहे : سُبْحٰنَ اللّٰہِ وَالْحَمْدُ لِلّٰہِ وَلَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ وَاللّٰہُ اَکْبَر फिर 100 बार इस्तिग़्फ़ार करे, फिर 100 मरतबा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़े और दुन्या व आखि़रत के मुआ़मलात में से अपने लिये जो चाहे दुआ़ करे और सुब्ह़ को रोज़ा रखे तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस की पूरी की पूरी दुआ़ क़बूल फ़रमाएगा सिवाए गुनाह की दुआ़ के।"(1)

(12)......**शा'बान की पन्दरहवीं रात :** इस रात में 100 रक्अ़तें इस त़रह़ पढ़े कि हर रक्अ़त में सूरए फ़ातिह़ा के बा'द 10 बार सूरए इख़्लास पढ़े। अकाबिरीन رَحِمَہُمُ اللّٰہُ الْمُبِیْن इसे तर्क नहीं किया करते थे "**नफ़्ल नमाज़ के बयान**" में हम इसे ज़िक्र कर चुके हैं।

(13).....अ़रफ़ा (नव ज़िल ह़िज्जा) की रात (14-15).....ईदुल फ़ित्र और ईदुल अज़्ह़ा की रात।

दिल ज़िन्दा रहेगा :

मरवी है कि हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जिस ने ईदैन की रात (या'नी शबे ईदुल फ़ित्र और शबे ईदुल अज़्ह़ा) त़लबे षवाब के लिये क़ियाम किया, उस दिन उस का दिल नहीं मरेगा, जिस दिन (लोगों के) दिल मर जाएंगे।(2)

---

1 ......شعب الایمان للبیھقی، باب فی الصیام، تخصیص شھر رجب بالذکر، الحدیث: ۳۸۱۲، ج۳، ص ۳۷۴۔

2 ......سنن ابن ماجہ، کتاب الصیام، باب فیمن قام فی لیلتی العیدین، الحدیث: ۱۷۸۲، ج ۲، ص ۳۶۵، بتغیرٍ قلیلٍ۔

फ़ज़ीलत वाले अय्याम :

फ़ज़ीलत वाले दिन जिन में ख़ास तौर पर वज़ाइफ़ पढ़ना मुस्तहब है 19 हैं : (1).....यौमे अ़रफ़ा (2)....यौमे आ़शूरा (3)....रजबुल मुरज्जब का सत्ताईसवां दिन। इस दिन की फ़ज़ीलत बहुत ज़ियादा है।

60 माह के रोज़ों का षवाब :

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि हुज़ूरे अन्वर, शाफ़ेए महशर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जिस ने सत्ताईसवीं रजब को रोज़ा रखा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के लिये 60 माह के रोज़ों का षवाब लिखेगा।"[1] येह वोह दिन है जिस में हज़रते सय्यिदुना जिब्रईल عَلَیْہِ السَّلَام मुस्तफ़ा जाने रहमत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم पर रिसालत ले कर उतरे। (4)......रमज़ानुल मुबारक का सतरहवां दिन, जिस दिन वाक़िअ़ए बद्र पेश आया। (5)......शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म का पन्दरहवां दिन (6)...... जुमुआ़ का दिन (7-8)......ईदुल फ़ित्र और ईदुल अज़्हा का दिन (9 ता 17)...... अय्यामे मा'लूमा, येह ज़ुल हिज्जा के दस दिन हैं (चूंकि अ़रफ़ा का दिन पहले गुज़र गया है इस लिये यहां 9 दिन मुराद होंगे)। (18-19)......अय्यामे मा'दूदा येह अय्यामे तशरीक़ हैं।

पूरा हफ़्ता और पूरा साल गुनाहों से सलामती :

हज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि मक्की मदनी सुल्तान, रहमते आ़लमियान صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जुमुआ़ का दिन सलामती वाला हो तो तमाम दिन सलामती से गुज़रेंगे और माहे रमज़ान सलामती वाला हो तो पूरा साल सलामती से गुज़रेगा।[2] [3]

1......تاریخ مدینہ دمشق لابن عساکر، علی بن ابی طالب، الحدیث:۸۷۳۹، ج۴۲، ص۲۳۴۔

2.....इस हदीष का मा'ना येह है कि अगर बन्दा जुमुआ़ के दिन गुनाहों से बचा रहे तो पूरा हफ़्ता गुनाहों से बचा रहता है और अगर रमज़ानुल मुबारक में गुनाहों से बचा रहे तो पूरा साल गुनाहों से बचा रहता है।

(اتحاف السادۃ المتقین، کتاب ترتیب الاوراد فی الاوقات، الباب الثانی، ج۵، ص۵۶۷)

3......شعب الایمان للبیہقی، باب فی الصیام، فصل فی لیلۃالقدر، الحدیث:۳۷۰۸، ج۳، ص۳۴۰، بتقدمٍ و تاخرٍ۔

आख़िरत की लज़्ज़त से मह़रूमी का बाइ़ष :

बा'ज़ उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام फ़रमाते हैं : "जो दुन्या में पांच रोज़ लज़्ज़तों में रहेगा वोह आख़िरत की लज़्ज़त नहीं पाएगा। पांच दिनों से इन की मुराद येह हैं : (1-2)......ईदुल फ़ित्र, ईदुल अज़्ह़ा का दिन (3).....जुमुआ़ का दिन (4)......अ़रफ़े का दिन और (5).......आ़शूरे का दिन।

हफ़्ते के दिनों में फ़ज़ीलत वाले दिन जुमा'रात और पीर का दिन हैं कि इन में बारगाहे इलाही में आ'माल पेश किये जाते हैं। रोज़े के लिये जो दिन और महीने फ़ज़ीलत वाले हैं उन्हें हम "**रोज़ों के बयान**" में ज़िक्र कर चुके हैं। लिहाज़ा दोबारा उन्हें ज़िक्र करने की ह़ाजत नहीं।

وَصَلَّى اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ عَبْدٍ مُّصْطَفٰى مِنْ كُلِّ الْعٰلَمِيْن

....फ़ज़ाइले क़ुरआने करीम....

फ़रमाने मुस्तफ़ा : *"येह क़ुरआने मजीद **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से ज़ियाफ़त है तो तुम अपनी इस्तित़ाअ़त के मुत़ाबिक़ इस की ज़ियाफ़त क़बूल करो। बेशक येह क़ुरआने मजीद, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की मज़बूत़ रस्सी, नूरे मुबीन, नफ़अ़ बख़्श शिफ़ा, जो इसे इख़्तियार करता है उस के लिये ढाल और जो इस पर अ़मल करे उस के लिये नजात है। येह ह़क़ से नहीं फिरता कि इस के इज़ाले के लिये थकना पड़े और येह टेढ़ी राह नहीं कि इसे सीधा करना पड़े। इस के फ़वाइद ख़त्म नहीं होते और कषरते तिलावत से पुराना नहीं होता (या'नी अपनी ह़ालत पर क़ाइम रहता है)। तो तुम इस की तिलावत किया करो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम्हें हर ह़र्फ़ की तिलावत पर 10 नेकियां अ़त़ा फ़रमाएगा। मैं नहीं कहता कि "الٓمٓ" एक ह़र्फ़ है बल्कि "ا" एक ह़र्फ़ "ل" एक ह़र्फ़ और "م" एक ह़र्फ़ है।"*

(المستدرک، الحدیث ۲۰۸۷، ج۲، ص۲۵۶)

फ़ेहरिस्ते हि़कायात

मज़ामीन	सफ़ह़ा नम्बर	मज़ामीन	सफ़ह़ा नम्बर
मोटापे का नुक़्सान	124	पसन्दीदा ह़ाजी	798
धोके बाज़	447	ह़ाकिमे मदीना की आ़जिज़ी	840
सय्यिदुना ख़लफ़ बिन अय्यूब عَلَيْهِ الرَّحْمَة का ख़ौफ़े ख़ुदा	471	ख़ुश नसीब क़ारिये क़ुरआन	845
ख़ुशूअ़, ख़ुज़ूअ़ से नमाज़ पढ़ने वालों की हि़कायात	529	इस बारगाह से कैसे फिरूं	850
आंखों का क़ुफ़्ले मदीना	529	जन्नती फूल	873
सय्यिदुना रबीअ़ عَلَيْهِ الرَّحْمَة का ख़ौफ़े ख़ुदा	529	**क़ह़त साली के मुतअ़ल्लिक़ 12 हि़कायात**	919
सय्यिदुना आ़मिर बिन अ़ब्दुल्लाह عَلَيْهِ الرَّحْمَة का ख़ुशूअ़	530	﴾1﴿....चुग़ल ख़ोरी का वबाल	919
तक्लीफ़ का एह़सास तक न हुवा	530	﴾2﴿....क़ह़त साली दूर हो गई	919
वस्वसों के ख़ौफ़ से नमाज़ मुख़्तसर पढ़ी	531	﴾3﴿....ज़ुल्म का अन्जाम	919
एक भी नमाज़ नहीं पढ़ी	532	﴾4﴿....गुनाहों की नह़ूसत	920
बाइ़से नजात और क़ुर्ब का ज़रीआ़	533	﴾5﴿....च्यूंटी की फ़रयाद	920
दिल नमाज़ में ह़ाज़िर नहीं	533	﴾6﴿....बारगाहे इलाही में मक़्बूलिय्यत	920
बेटे की तर्बिय्यत	559	﴾7﴿....बारिश में ताख़ीर नहीं बल्कि....	921
किस हु़क्मरान से दूरी इख़्तियार की जाए	568	﴾8﴿....एक आंख वाला आदमी	921
गोया वोह मुर्दा है	593	﴾9﴿....उ़-लमाए किराम की अहम्मिय्यत	921
सदक़ा ज़ाहिर करने की फ़ज़ीलत	692	﴾10﴿....सा'दून मजनून की दुआ़	922
अल्लाह देख रहा है !	692	﴾11﴿....ह़ब्शी ग़ुलाम की दुआ़	923
इन्सानी गोश्त ख़ोर रोज़ादार	714	﴾12﴿....वसीले की बरकत	923
जन्नत में दाख़िले की बिशारत	731	सआ़दत मन्दों का अ़मल	998
ख़्वाब में दीदारे इलाही	732	मरने से पहले जन्नत का नज़ारा	1035
हि़फ़ाज़ते दीन की फ़िक्र	742	मह़फ़िले ज़िक्र में ह़ाज़िर होने की फ़ज़ीलत	1039

तफ़्सीली फ़ेहरिस्त

मज़ामीन	सफ़्हा नम्बर	मज़ामीन	सफ़्हा नम्बर
ज़िम्नी फ़ेहरिस्त	1	**दूसरी फ़स्ल : इल्म ह़ासिल करने की फ़ज़ीलत**	55
इस किताब को पढ़ने की 23 "निय्यतें"	5	हुसूले इल्म की फ़ज़ीलत पर मुश्तमिल दो फ़रामैने बारी तआ़ला	55
अल मदीनतुल इल्मिय्या का ता'रूफ़ (अज़ अमीरे अहले सुन्नत) دامت برکاتہم العالیہ	6	हुसूले इल्म की फ़ज़ीलत पर मुश्तमिल 10 फ़रामीने मुस्तफ़ा	55
पहले इसे पढ़ लीजिये !	8	हुसूले इल्म की फ़ज़ीलत पर मुश्तमिल 11 अक़्वाले बुज़ुर्गाने दीन	56
तआ़रुफ़े मुसन्निफ़	14	**तीसरी फ़स्ल : इल्म सिखाने की फ़ज़ीलत**	59
इब्तिदाइय्या	36	इल्म सिखाने की फ़ज़ीलत पर मुश्तमिल छे फ़रामीने बारी तआ़ला	59
वजहे तस्नीफ़	36	इल्म सिखाने की फ़ज़ीलत पर मुश्तमिल 17 फ़रामीने मुस्तफ़ा	60
किताब की तरतीब और अबवाब बन्दी	37	इल्म सिखाने की फ़ज़ीलत पर मुश्तमिल 12 अक़्वाले बुज़ुर्गाने दीन	63
किताब के मशमूलात पर एक नज़र	38	**चौथी फ़स्ल : इल्म की फ़ज़ीलत पर अ़क़्ली दलाइल**	66
किताब की चन्द खुसूसिय्यात	39	फ़ज़ीलत का लुग़वी और इस्तिलाही मा'ना	66
किताब चार हिस्सों में तक़्सीम करने की वजह	40	इल्म की अ़क़्ली फ़ज़ीलत	66
इल्मे मुकाशफ़ा व इल्मे मुआ़मला की ता'रीफ़	40	मरग़ूब अश्या की अक़्साम और इन की मिषालें	67
इल्मे मुआ़मला की अक़्साम	41	इल्म का उख़रवी फ़ाइदा	67
इल्म का बयान	42	बारगाहे इलाही तक रसाई का ज़रीआ़	68
बाब नम्बर 1 : इल्म, ता'लीम और तअ़ल्लुम की फ़ज़ीलत		इन्सानी आ'ज़ा की अक़्साम	69
और इस के अ़क़्ली व नक़्ली दलाइल का बयान	42	हिक्मते अ़मली के मरातिब	69
पहली फ़स्ल : इल्म की फ़ज़ीलत	42	नबुव्वत के बा'द सब से अफ़्ज़ल अ़मल	69
इल्म की फ़ज़ीलत पर मुश्तमिल 14 फ़रामीने बारी तआ़ला	42	इबादते इलाही और ख़िलाफ़ते इलाही	70
इल्म की फ़ज़ीलत पर मुश्तमिल 28 फ़रामीने मुस्तफ़ा	45	**बाब नम्बर 2 : महमूद व मज़मूम उ़लूम और इन की**	
इल्म की फ़ज़ीलत पर मुश्तमिल 20 अक़्वाले बुज़ुर्गाने दीन	50	**अक़्साम व अह़काम**	71

मज़ामीन	सफ़्हा नम्बर	मज़ामीन	सफ़्हा नम्बर
पहली फ़स्ल : फ़र्ज़े ऐन इल्म का बयान	71	फ़लसफ़ा और इस की अक़्साम	93
कौन सा इल्म हासिल करना हर मुसलमान पर फ़र्ज़ है ?	71	इल्मे कलाम की हैषिय्यत	94
अ़वारिज़ की अक़्साम और मिषालें	73	एक सुवाल और इस का जवाब	95
हलाकत में डालने वाले उमूर	76	सहाबए किराम عَلَيۡهِمُ الرِّضۡوَان की अफ़्ज़लिय्यत का एक सबब	96
दूसरी फ़स्ल : फ़र्ज़े किफ़ाया इल्म का बयान	78	इल्म के दस हिस्सों में से नव हिस्से उठ गए	97
ग़ैर शरई उ़लूम की अक़्साम	78	शैख़ैने करीमैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡهُمَا की शोहरत व फ़ज़ीलत	97
उ़लूमे शरइय्या की अक़्साम	79	शोहरत और फ़ज़ीलत में फ़र्क़	98
एक सुवाल और इस का जवाब	81	फ़ुक़हा और मुतकल्लिमीन की अक़्साम	98
इल्मे फ़िक़्ह का हासिल	81	अ़मल का दारोमदार निय्यत पर है	98
एक सुवाल और इस का जवाब	82	जिन आ'माल से क़ुर्बे इलाही हासिल होता है	98
तक़्वा के मरातिब	84	मुक़्तदा व पेशवा फ़ुक़हा	99
एक सुवाल और इस का जवाब	86	**सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَيۡهِ الرَّحۡمَة के फ़ज़ाइल व मनाक़िब**	100
फ़िक़्ह की तिब्ब पर फ़ज़ीलत	86	﴿1﴾ इबादत व रियाज़त	100
तीसरी फ़स्ल : इल्मे त़रीक़े आख़िरत की अक़्साम	87	तमाम मुसलमानों के लिये रह़मत व नजात की दुआ़	100
इल्मे मुकाशफ़ा का नूर जब दिल में ज़ाहिर होता है तो !	87	शिकम सैरी की आफ़ात	101
इल्मे मुकाशफ़ा से मक़्सूद	89	अ़ज़मते इलाही	101
आईनए दिल की पाकीज़गी और सफ़ाई का ज़रीआ़	89	ज़बान की हिफ़ाज़त	102
बुरे अफ़्आ़ल की बुन्यादें और नेक आ'माल का सर चश्मा	89	कानों और ज़बान का क़ुफ़्ले मदीना	102
मुत्तक़ीन उ़-लमाए ज़ाहिर की आ़जिज़ी	92	﴿2﴾ ज़ोहदो तक़्वा	103
इल्मे ह़दीष के बा'द इल्मे तसव्वुफ़ हासिल करो	92	आप رَحۡمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيۡه की सख़ावत	103
एक सुवाल और इस का जवाब	93	ज़ोहद की ह़क़ीक़त व बुन्याद	103

मज़ामीन	सफ़्हा नम्बर	मज़ामीन	सफ़्हा नम्बर
ज़माने का अफ़्ज़ल शख़्स	104	आख़िरत की सज़ा पर दुन्यावी सज़ा को तरजीह़	116
कामिलुल ईमान होने की अ़लामत	104	10 हज़ार दिरहम क़बूल न किये	116
﴿3﴾ अस्रारे क़ल्ब और उ़लूमे आख़िरत के आ़लिम	106	मन्सब व ओ़हदा क़बूल न किया	117
खुद पसन्दी में मुब्तला को नसीह़त	106	त़रीक़े आख़िरत के आ़लिम	117
इ़ल्म किसे नफ़्अ़ नहीं देता ?	106	हमेशा फ़िक्रे आख़िरत में मगन	118
आदमी आ़लिम कब बनता है ?	108	मनाक़िबे इमाम अह़मद बिन ह़म्बल और इमाम सौरी	118
﴿4﴾ इ़ल्मे फ़िक़्ह से मक़्सूद	108	**बाब नम्बर 3 : उन मज़्मूम उ़लूम का बयान जिन्हें लोग अच्छा समझते हैं**	119
दुन्या के लिये आफ़्ताब और लोगों के लिये आ़फ़िय्यत	110		
सय्यिदुना इमामे मालिक عَلَيْهِ الرَّحْمَة **के फ़ज़ाइल व मनाक़िब**	111	**पहली फ़स्ल : बा'ज़ उ़लूम के मज़्मूम होने का सबब**	119
ह़दीषे रसूल की ता'ज़ीम	111	जादू के बुरा होने का सबब	119
ह़ुसूले इ़ल्मे दीन से मक़्सूद	111	झूट बोलना कैसा ?	120
आ़लिम की शान	112	इ़ल्मे नुजूम से मुमानअ़त की वुजूहात	121
चमकते सितारे	112	बे फ़ाइदा इ़ल्म	123
कोड़े खा कर भी ह़दीष बयान की	112	**ह़िकायत :** मोटापे का नुक़्सान	124
ज़ोहदो तक़्वा	113	इत्तिबाए़ सुन्नत में सलामती है	124
मैं छोड़ कर मदीना नहीं जाता, नहीं जाता	113	उ़लूम दरख़्तों और फलों की मानिन्द हैं	126
मदीने की मिट्टी का अदबो एह़तिराम	114	**दूसरी फ़स्ल : अल्फ़ाज़े उ़लूम में तब्दीली का बयान**	126
प्यासा कुंवें के पास जाता है न कि कुंवां	114	तफ़्सील	126
सय्यिदुना इमामे आ'ज़म عَلَيْهِ الرَّحْمَة **के फ़ज़ाइलो मनाक़िब**	115	सब से बड़ा फ़क़ीह	128
सारी रात इ़बादत	115	गुलाम आज़ाद करने से ज़ियादा पसन्दीदा अ़मल	128
ज़ोहदो तक़्वा	116	कामिल फ़क़ीह की अ़लामत	129

मज़ामीन	सफ़्हा नम्बर	मज़ामीन	सफ़्हा नम्बर
ह़क़ीक़ी तौह़ीद	131	नाम निहाद उ़-लमा और उ़-लमाए आख़िरत	149
तौह़ीद के फ़वाइद व षमरात	131	बात़िनी के बजाए ज़ाहिरी आ'माल इख़्तियार करने की वजह	150
ह़क़ीक़ी तौह़ीद से ख़ारिज उमूर	132	सब से बड़ा अह़मक़	150
तौह़ीद का मर्कज़ व सर चश्मा	133	तफ़्सीर में ब क़दरे किफ़ायत, मुतवस्सित़ और आ'ला	151
महाफ़िले ज़िक्र की फ़ज़ीलत	134	ह़दीष में ब क़दरे किफ़ायत, मुतवस्सित़ और आ'ला	151
क़िस्सा गो वाइज़ीन की मज़म्मत	135	फ़िक़्ह में ब क़दरे किफ़ायत, मुतवस्सित़ और आ'ला	152
ज़िक्र की मह़फ़िल में ह़ाज़िर होने की फ़ज़ीलत	136	इल्मे कलाम का मक़्सूद	152
तकल्लुफ़ से कलाम करने की मुमानअ़त	137	उ़-लमा ने तअ़स्सुब को आ़दत व आलाकार बना लिया	153
मेरे रुफ़क़ा तो ख़्वास लोग हैं	139	सिर्फ़ दो रक्अ़त ने फ़ाइदा दिया	153
शत़ह़ से क्या मुराद है ?	139	**बाब नम्बर 4 : लोगों के इख़्तिलाफ़ में पड़ने की वजह, मुनाज़रे की आफ़ात की तफ़्सील और इस के जवाज़ की शराइत़**	155
लोगों के लिये फ़ितना	142		
जाहिल और ज़ालिम	142		
त़ामात क्या हैं ?	142	**मुक़द्दमा : लोग इख़्तिलाफ़ात की त़रफ़ क्यूं माइल हुए ?**	155
अहले त़ामात की तावीलात की मिषालें	143	त़ालिब मत़्लूब और मुअ़ज़्ज़ज़ ज़लील हो गए	156
मज़्कूरा तावीलों का बुत़्लान	144	इख़्तिलाफ़ी मसाइल व मुनाज़रों में मश्ग़ूल होने की वजह	156
बदतरीन मख़्लूक़	146	**पहली फ़स्ल : मुनाज़रों को सह़ाबा के मश्वरों और अस्लाफ़ के मुज़ाकरों से मुशाबहत देना धोका है**	157
ग़ुरबा कौन हैं ?	147		
ह़क़ीक़ी आ़लिम की एक अ़लामत	147		
तीसरी फ़स्ल : अच्छे उ़लूम की क़ाबिले ता'रीफ़ मिक़दार का बयान	148	त़लबे ह़क़ के लिये मुनाज़रे की शराइत़ व अ़लामात	157
		त़ालिबे ह़क़ ऐसा होता है	160
इल्म के दर्जात	149	शैत़ान का खिलौना	163

मज़ामीन	सफ़्हा नम्बर	मज़ामीन	सफ़्हा नम्बर
दूसरी फ़स्ल : मुनाज़रे की आफ़ात और उस से जनम		मन्ज़िल, सुवारी और मक़्सदे ह़क़ीक़ी	186
लेने वाली हलाकत ख़ेज़ आ़दात	164	मरातिबे इ़ल्म मिषाल के आईने में	186
मुनाज़रे के बाइ़ष पैदा होने वाली बुरी सिफ़ात	164	एक सुवाल और इस का जवाब	188
मरबूत़ रिश्ता	168	ह़ासिले कलाम	188
हमेशा की हलाकत व बरबादी या ह़याते जाविदानी	171	**दूसरी फ़स्ल : राहनुमा उस्ताज़ के फ़राइज़**	190
एक सुवाल और इस का जवाब	171	माल के ए'तिबार से इन्सान की ह़ालतें	190
आग और शम्अ़ की मिष्ल	172	इ़ल्म के ए'तिबार से इन्सान की ह़ालतें	190
उ़-लमा की अक़्साम	172	इ़ल्म पर अ़मल करने और न करने वाले की मिषाल	190
बाब नम्बर 5 : शागिर्द और उस्ताज़ के आदाब	173	**उस्ताज़ के आदाब**	191
पहली फ़स्ल : त़ालिबे इ़ल्म के आदाब	173	उस्ताज़ का मक़्सूद सिर्फ़ रिज़ाए इलाही हो	192
भौंकने वाले कुत्ते	174	मालो दौलत ख़ादिम जब कि इ़ल्म मख़्दूम है	193
एक शुबे का इज़ाला	174	हमें लोगों ने तिजारत गाह बना लिया	195
शिकारी कुत्ता, ज़ालिम भेड़िया, चीता और शेर	175	असातिज़ा की बुरी आ़दात	195
एक सुवाल और इस का जवाब	175	लोगों की अ़क़्लों के मुत़ाबिक़ कलाम करो	196
एक सुवाल और इस का जवाब	176	ख़िन्ज़ीर के गले में मोतियों का हार	197
उ़-लमा व अकाबिरीन और अहले बैत का मक़ाम व मर्तबा	177	उस्ताज़ और शागिर्दों की मिषाल	199
एक सुवाल और इस का जवाब	179	आ़लिम और जाहिल का धोका	200
आ़लिम के हुक़ूक़	179	**बाब नम्बर 6 : इ़ल्म की आफ़ात, उ़-लमाए आख़िरत**	
समन्दर में जो ख़ासिय्यत है वोह कूज़े में नहीं	180	**और उ़-लमाए सू की अ़लामात का बयान**	201
पुर ह़िक्मत तह़रीर	183	**पहली फ़स्ल : उ़-लमाए सू की निशानियां**	201
इ़ल्मे आख़िरत के मुक़ाबले में दीगर उ़लूम की ह़ैषिय्यत	184	आफ़ाते इ़ल्म के मुतअ़ल्लिक़ आठ फ़रामीने मुस्त़फ़ा	201

मज़ामीन	सफ़्हा नम्बर	मज़ामीन	सफ़्हा नम्बर
आफ़ाते इल्म के मुतअ़ल्लिक़ नव अक़्वाले बुज़ुर्गाने दीन	202	इल्म पर अ़मल न करने वाले की मिषाल	220
बे अ़मल आ़लिम का अन्जाम	204	आ़लिम की लग़्ज़िश बाइ़षे हलाकत है	221
बुरे उ़-लमा की मिषाल	206	आ़लिम और क़ाज़ी	222
दूसरी फ़स्ल : उ़-लमाए आख़िरत की 12 निशानियां	207	अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के दुश्मन	222
दुन्या व आख़िरत की मिषाल	207	इल्म की हि़फ़ाज़त का नुस्ख़ए कीमिया	223
दुन्यादार आ़लिम की कम से कम सज़ा	208	नुज़ूले क़ुरआन का मक़्सद	224
इल्म नूर और गुनाह तारीकी है	209	आठ अनमोल हीरे	225
ऐ अस्ह़ाबे इल्म ! शरीअ़ते मुह़म्मदिय्या कहां है ?	209	सय्यिदुना ह़ातिम رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه का अन्दाज़े नसीह़त	228
मा'रिफ़ते इलाही से मह़रूमी का सबब	210	नसीह़त का अनोखा अन्दाज़	230
इल्म दुन्या और अ़मल आख़िरत है	211	तीन ख़स्लतें	230
वोह आ़लिम नहीं	211	दुन्या से बचने का त़रीक़ा	231
उ़-लमाए दुन्या और उ़-लमाए आख़िरत के अवसाफ़	212	येह तो फ़िरऔ़न का शहर है	231
दुन्या की ख़ात़िर इल्मे दीन सीखने वालों का अन्जाम	213	सय्यिदुना यह़्या बिन यज़ीद رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه का ख़त़	232
आ़लिम दो त़रह़ के हैं	213	सय्यिदुना इमाम मालिक رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه का जवाब	233
दीन के बदले दुन्या त़लब करने का अन्जाम	214	फ़ितनों की जगहें	235
उ़-लमा और जहन्नम के त़बक़ात	214	उ़-लमा बन्दों पर रसूलों के अमीन हैं	235
किस आ़लिम की सोह़बत इख़्तियार की जाए ?	216	बद तरीन उ़-लमा और बेहतरीन उमरा	236
क़ब्रों की शिकायत	218	आग के समन्दर में ग़ौते़ लगाने वाला	236
सात बार हलाकत	218	उ़-लमाए बनी इस्राईल से ज़ियादा बुरे	237
तुम्हें क्या चीज़ जहन्नम में ले गई	218	हुक्मरानों की सोह़बत मुनाफ़क़त का बाइ़ष है	237
नसीह़त आमोज़ इबारत	219	आधा इल्म	240

मज़ामीन	सफ़ह़ा नम्बर
आ़लिम की ढाल	240
आ़लिम की ख़ामोशी शैत़ान की बेहोशी	240
ज़मीन का बेह तरीन और बद तरीन ह़िस्सा	241
ईसारे सह़ाबा	243
सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان के पसन्दीदा काम	243
आ़म व ख़ास आ़लिम में फ़र्क़	244
दरयाए दिजला और मीठे कुंवें की मानिन्द	244
सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ को नसीह़त	245
फ़ुलां से पूछो	245
इ़ल्म तो तुम्हारे दिलों में है	247
क़ुर्बे इलाही के जल्वे	247
उ़-लमा ज़िन्दा रहते हैं	250
यक़ीन की अहम्मिय्यत व फ़ज़ीलत	251
नूरे तौह़ीद और शिर्क की आग	252
एक सुवाल और इस का जवाब	253
यक़ीन के मुतअ़ल्लिक़ मुतकल्लिमीन की इस्तिलाह़	253
यक़ीन के मुतअ़ल्लिक़ फ़ुक़हा व सूफ़िया की इस्तिलाह़	255
यक़ीन की अक़्साम	256
एक सुवाल और इस का जवाब	256
उ़-लमा की अक़्साम	259
मुत्तक़ीन का इमाम	260
इ़ल्म का वज़ीर, बाप और लिबास	260
जिस अ़मल में रिज़ाए इलाही मक़्सूद न हो वोह मर्दूद है	260
सिपाही से ज़ियादा बुरे	261
सब से बुरे लोग	261
सब से बड़ा जाहिल	262
उस्ताज़ व शागिर्द की तीन उ़म्दा ख़स्लतें	263
क़ुरआन से पहले ईमान	263
पांच अच्छे अख़्लाक़	264
"يَشْرَحْ صَدْرَهٗ" से मुराद	265
वाज़ेह़ नुक़्सान	266
कलामे अम्बिया के मुशाबेह कलाम	266
राज़दार सह़ाबी	267
इ़ल्मे यक़ीन, अह़वाले क़ल्ब और बात़िनी सिफ़ात के आ़लिम	268
वोह इ़ल्म का बरतन है न कि आ़लिम	269
सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا के उस्ताज़	270
सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان को फ़ज़ीलत देने की वजह	270
तस्नीफ़ व तालीफ़ की इब्तिदा कब से हुई	270
क़ुरआने पाक किताबी सूरत में	271
इस्लाम में तस्नीफ़ की जाने वाली इब्तिदाई कुतुब	271
ह़क़ के ज़ियादा क़रीब कौन ?	273
बुरी राए वाला और दुन्या का पुजारी	274

मज़ामीन	सफ़ह़ा नम्बर	मज़ामीन	सफ़ह़ा नम्बर
कलाम और सीरत	274	﴾अ़क़्ल की फ़ज़ीलत व अ़ज़मत में वारिद 14 फ़रामीने मुस्त़फ़ा﴿	284
ख़ुश बख़्त कौन ?	274	एक सुवाल और इस का जवाब	285
अच्छे शख़्स की पहचान	275	**दूसरी फ़स्ल : अ़क़्ल की ह़क़ीक़त और इस की अक़्साम**	289
आज के दौर की नेकी गुज़श्ता ज़माने की बुराई	275	अ़क़्ल के चार मआ़नी	289
मसाजिद में चटाई बिछाना किस की ईजाद ?	276	अ़क़्ल मन्द की पहचान	291
लोगों से बिदअ़त के बारे में न पूछो !	277	दिल का अन्धापन ज़ियादा नुक़्सान देह है	295
मिम्बर रखना बिदअ़त नहीं	277	**तीसरी फ़स्ल : अ़क़्ल के ए'तिबार से इन्सानी**	
हर नया काम जो दीन से न हो वोह मर्दूद है	278	**नुफ़ूस में तफ़ावुत**	296
शफ़ाअ़त से मह़रूमी का सबब	278	अ़क़्ल का लश्कर और सामाने जिहाद	296
ख़िलाफ़े सुन्नत बिदअ़त जारी करने वाले की मिषाल	278	अ़र्श से बढ़ कर अ़ज़मत वाली चीज़	299
शैत़ान का लश्कर और गुरौहे सह़ाबा व ताबेई़न	279	एक सुवाल और इस का जवाब	299
एक सुवाल और इस का जवाब	280	**अ़क़ाइद का बयान**	301
सब से बड़ी मा'सिय्यत	281	**पहली फ़स्ल : इस्लामी रुक्न कलिमए शहादत के**	
लोगों से ज़ियादा मैल जोल बाइ़षे हलाकत है	281	**मुतअ़ल्लिक़ अ़क़ीदए अहले सुन्नत की वज़ाह़त**	301
इन्सान की बेहतरीन ह़ालत	282	**कलिमए शहादत के पहले जुज़ अ़क़ीदए तौह़ीद की वज़ाह़त**	302
दुआ़	282	हर ऐब व नुक़्स से पाक ज़ात	302
बाब नम्बर 7 : अ़क़्ल, इस की अ़ज़मत, ह़क़ीक़त		**सिफ़ाते बारी तआ़ला**	303
और अक़्साम का बयान	283	ह़यात व क़ुदरत	303
पहली फ़स्ल : अ़क़्ल की अ़ज़मत	283	इ़ल्मे इलाही	303
बुढ़े शख़्स को फ़ज़ीलत क्यूं ह़ासिल है ?	283	इरादए ख़ुदावन्दी	304
﴾अ़क़्ल की फ़ज़ीलत व अ़ज़मत में वारिद चार फ़रामीने बारी तआ़ला﴿	284	समीअ़ व बसीर	304

मज़ामीन	सफ़्हा नम्बर	मज़ामीन	सफ़्हा नम्बर
कलामे इलाही	305	सय्यिदुना इमामे मालिक عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْخَالِق का नज़रिय्या	315
अफ़्आ़ले इलाहिय्या	305	सय्यिदुना इमाम अबू यूसुफ़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का नज़रिय्या	315
कलिमए शहादत के दूसरे जुज़ की वज़ाह़त	306	सय्यिदुना इमाम ह़सन बसरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی का नज़रिय्या	315
मुन्कर नकीर के सुवालात	307	मुतअख़्ख़िरीन मुह़द्दिषीन رَحِمَہُمُ اللّٰہُ الْمُبِیْن का नज़रिय्या	316
मीज़ाने अ़मल	307	मुअव्वीदीन इल्मे कलाम के दलाइल	316
पुल सिरात़	308	मुदल्लल और मुनाज़राना अन्दाज़े गुफ़्तगू के मुतअ़ल्लिक़ कुरआनी दलाइल	317
ह़ौज़े कौषर	308	तौह़ीद, नबूव्वत और बिअ़षत के मुतअ़ल्लिक़ कुरआनी दलाइल	319
ह़िसाब व किताब	308	सह़ाबा व ताबेईन عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان के मुनाज़रों की चन्द मिषालें	320
मोमिन हमेशा जहन्नम में नहीं रहेगा	309	मुनाज़राना अन्दाज़ में अस्लाफ़ का तर्ज़े अ़मल	321
अ़क़ीदए शफ़ाअ़त	309	मुजादला व मुनाज़रा के त़रीक़े वज़्अ़ करने का मक़्सद	322
सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان और उन का मक़ाम व मर्तबा	309	एक सुवाल और इस का जवाब	322
अहले सुन्नत की पहचान	310	इल्मे कलाम के मुतअ़ल्लिक़ मुसन्निफ़ का नज़रिय्या	323
दूसरी फ़स्ल : मरह़ला वार रहनुमाई करने की वजह		इल्मे कलाम के नुक़्सानात	323
और ए'तिक़ाद के दर्जात का बयान	310	इल्मे कलाम के फ़वाइद	324
एक एह़तियात़	311	उ़-लमाए किराम की ज़िम्मेदारी	324
आ़म नेक लोगों के मुनाज़िरीन व मुतकल्लिमीन के अ़क़ीदे में फ़र्क़	311	इल्मे कलाम के इस्ति'माल के त़रीक़े	324
बुलन्द दर्जात के ह़ुसूल का सबब	312	बे फ़ाइदा इल्मे कलाम की अक़्साम	326
इल्मे कलाम सीखना कैसा ?	313	एक सुवाल और इस का जवाब	327
इल्मे कलाम और मुतकल्लिमीन के बारे में उ़-लमा की आराअ	313	इल्मे कलाम दवा और इल्मे फ़िक़्ह गिज़ा की मिष्ल है	327
सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْکَافِی का नज़रिय्या	313	इल्मे कलाम किसे सिखाया जाए ?	327
सय्यिदुना इमाम अह़मद बिन ह़म्बल عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْاَوَّل का नज़रिय्या	314	बा'ज़ अह़काम में तब्दीली का एक सबब	328

मज़ामीन	सफ़ह़ा नम्बर	मज़ामीन	सफ़ह़ा नम्बर
इ़ल्मी वुस्अ़तें पाने का नुस्ख़ा	329	**तीसरी फ़स्ल : اَلرِّسَالَةُ الْقُدْسِيَّةُ فِيْ قَوَاعِدِ الْعَقَائِدِ**	346
एक सुवाल और इस का जवाब	329	**ईमान के चार बुन्यादी अरकान**	346
उ़लूम की तक़्सीम पर दलाइले शरइय्या	329	**पहले रुक्न की तफ़्सील**	347
मोमिने कामिल	332	वुजूदे बारी तआ़ला पर क़ुरआनी दलाइल	347
एक सुवाल और इस का जवाब	332	वुजूदे बारी तआ़ला पर अ़क़्ली दलाइल	349
ख़वास के असरार की अक़्साम	333	एक सुवाल और इस का जवाब	351
अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और मख़्लूक़ के इ़ल्म व क़ुदरत में फ़र्क़	334	**दूसरे रुक्न की तफ़्सील**	353
बे दीनी का बाइ़ष	335	**तीसरे रुक्न की तफ़्सील**	355
दरज़ी और जुलाहा	336	मशिय्यते इलाही का षुबूत नक़्ली दलाइल से	356
"मस्जिद सुकड़ती है" से मुराद	336	बिअ़षते अम्बिया	358
गधे जैसा मुंह	336	ख़ातमुन्नबिय्यीन	359
मुरादी मा'ना की पहचान का त़रीक़ा	337	**चौथे रुक्न की तफ़्सील**	360
ज़बाने ह़ाल और ज़बाने क़ाल में फ़र्क़ और इन की मिषालें	340	एक सुवाल और इस के दो जवाब	361
ज़ाहिरबीन और अहले बसीरत के इ़ल्मी मक़ाम में फ़र्क़	341	एक सुवाल और इस का जवाब	361
ह़द से बढ़ने वाले	341	दुआ़	364
तावील करने से रोकने की वजह	343	**चौथी फ़स्ल : ईमान और इस्लाम के माबैन इत्तिसाल व इन्फ़िसाल, इन के घटने बढ़ने और अस्लाफ़ का इस में (اِنْ شَآءَ اللّٰه के साथ) इस्तिषना करने की वजह का बयान**	365
लफ़्ज़े "इस्तिवा" के मुतअ़ल्लिक़ अ़क़ीदा	343		
मियानारवी इख़्तियार करने वाला गुरौह	344		
तावीलात के मुतअ़ल्लिक़ मो'तज़िला और फ़लासिफ़ा का नज़रिय्या	344		
क़ौले फ़ैसल	344	**मस्अला 1 :** इमान व इस्लाम दो चीज़ें हैं या एक ?	365
मज़्कूरा तमाम बह़ष का मक़्सूद	345	मुसन्निफ़ का मौक़िफ़	365

मज़ामीन	सफ़हा नम्बर	मज़ामीन	सफ़हा नम्बर
पहली बह़ूष : लुग़वी मा'ना का बयान	365	क़ब्रिस्तान में सलाम करने का त़रीक़ा	386
दूसरी बह़ूष : मा'नए शरई का बयान	366	जिन दो का शक से तअ़ल्लुक़ है	386
दोनों के हम मा'ना होने की मिषालें	366	अ़मल के मुतअ़ल्लिक़ 5 फ़रामीने बारी तआ़ला	387
दोनों के जुदा जुदा मा'ना में इस्ति'माल होने की मिषालें	367	अ़मल के मुतअ़ल्लिक़ दो फ़रामैने मुस्त़फ़ा	388
दोनों के एक दूसरे के मा'ना को शामिल होने की मिषालें	368	**निफ़ाक़ की मज़म्मत में वारिद 19 रिवायात व अक़्वाल**	388
तीसरी बह़ूष : हुक्मे शरई का बयान	368	फ़ारूक़ी व दारानी तक़्वा	392
आ'माले सालेह़ा जुज़्वे ईमान नहीं	369	निफ़ाक़ की अक़साम	392
ग़ौर त़लब मसाइल	372	या रब्ब ! वक़्ते मौत सलामतिये ईमान नसीब फ़रमा !	393
फ़िर्क़ए मरजिआ का शुबा और इन के दलाइल	373	ईमान पर मिलने वाली मौत को शहादत पर तरजीह़	394
मज़्कूरा दलाइल के जवाबात	374	**त़हारत का बयान**	396
मो'तज़िला का शुबा और इन के दलाइल	376	त़हारत के मुतअ़ल्लिक़ तीन फ़रामीने मुस्त़फ़ा	396
मज़्कूरा दलाइल के जवाबात	377	त़हारत के दर्जात	397
एक सुवाल और इस का जवाब	378	बुलन्द मक़ाम पर फ़ाइज़ होने से मानेअ़ अ़मल	398
मस्अला 2 : ईमान घटता बढ़ता है या नहीं	379	सब से पहली बिदअ़तें	398
ईमान घटने बढ़ने की कैफ़िय्यत जानने वाला	380	जूते पहन कर नमाज़ पढ़ना कैसा ?	399
आ़लमे ज़ाहिर और आ़लमे ग़ैब	380	बुराई नेकी और नेकी बुराई बन गई	400
चमकता निशान और सियाह नुक़्त़ा	381	एक सुवाल और इस का जवाब	401
मस्अला 3 : ان شاء الله के साथ अपने मोमिन होने का इक़रार करना	383	अश्या का मुबाह़, मज़मूम और मह़मूद होना	401
ऐ ह़सन ! तू झूटा है	383	अहले इल्मो अ़मल के अवक़ात क़ीमती जोहर हैं	402
जिन दो का शक से तअ़ल्लुक़ नहीं	384	फ़ुज़ूल ख़र्ची पर मददगार	403
बुरा सच	385	दुन्या व माफ़ीहा से अफ़्ज़ल	403

मज़ामीन	सफ़्हा नम्बर	मज़ामीन	सफ़्हा नम्बर
ज़ाहिरी त़हारत की अक़्साम	404	वुज़ू से पहले की दुआ़	417
बाब नम्बर 1 : नजासत से त़हारत ह़ासिल करना	405	हाथ धोने से पहले की दुआ़	417
पहली फ़स्ल : ज़ाइल की जाने वाली नजासत का बयान	405	कुल्ली करते वक़्त की दुआ़	418
हैवानात के अज्ज़ा की अक़्साम और इन का हुक्म	405	नाक में पानी पहुंचाते वक़्त की दुआ़	418
दूसरी फ़स्ल : नजासत ज़ाइल करने वाली चीज़	408	नाक साफ़ करते वक़्त की दुआ़	419
तीसरी फ़स्ल : नजासत ज़ाइल करने के त़रीक़े	409	चेहरा धोते वक़्त की दुआ़	419
बाब नम्बर 2 : नजासते हुक्मी से पाकी		दायां बाज़ू धोते वक़्त की दुआ़	420
ह़ासिल करना	410	बायां बाज़ू धोते वक़्त की दुआ़	420
क़ज़ाए ह़ाजत के आदाब	410	सर का मस्ह़ करते वक़्त की दुआ़	421
खड़े हो कर पेशाब न करो	411	कानों का मस्ह़ करते वक़्त की दुआ़	421
वस्वसे पैदा होने का सबब	412	गर्दन का मस्ह़ करते वक़्त की दुआ़	422
बैतुल ख़ला में दाख़िल होने से पहले की दुआ़	412	दायां पाउं धोते वक़्त की दुआ़	422
बैतुल ख़ला से निकलने के बा'द की दुआ़	413	बाया पाउं धोते वक़्त की दुआ़	422
हड्डी और गोबर से इस्तिन्जा करने की मुमानअ़त	413	वुज़ू के बा'द की दुआ़	422
इस्तिन्जा का त़रीक़ा	414	वुज़ू के मकरूहात	423
पथ्थर इस्ति'माल करने का त़रीक़ा	414	वुज़ू में वस्वसे डालने वाला शैत़ान	424
इस्तिन्जा से फ़राग़त के बा'द की दुआ़	415	वुज़ू के फ़ज़ाइल पर मुश्तमिल 10 फ़रामीने मुस्त़फ़ा	425
अहले क़ुबा की फ़ज़ीलत	415	**गुस्ल का त़रीक़ा**	427
वुज़ू का त़रीक़ा	416	गुस्ल के फ़राइज़	428
मिस्वाक के मुतअ़ल्लिक़ सात फ़रामीने मुस्त़फ़ा	416	वुज़ू के फ़राइज़	428
मिस्वाक का त़रीक़ा	417	गुस्ल फ़र्ज़ होने के अस्बाब	428

मज़ामीन	सफ़हा नम्बर	मज़ामीन	सफ़हा नम्बर
इन मवाक़ेअ़ पर ग़ुस्ल करना सुन्नत है	429	सुर्मा लगाने का मसनून त़रीक़ा	443
जिन मवाक़ेअ़ पर ग़ुस्ल करना मुस्तह़ब है	429	एक सुवाल और इस का जवाब	444
तयम्मुम का बयान	429	दाढ़ी के मकरूहात	446
तयम्मुम के जवाज़ की सूरतें	429	सियाह ख़िज़ाब से मुमानअ़त की रिवायात	447
तयम्मुम का त़रीक़ा	429	**ह़िकायत :** धोके बाज़	447
बाब नम्बर 3 : ज़ाहिरी नजासतों से पाकी		ख़ुश्बूए जन्नत से मह़रूम लोग	447
ह़ासिल करना	431	सुर्ख़ या ज़र्द रंग का ख़िज़ाब लगाने का हुक्म	448
आक़ा صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की दाढ़ी मुबारक	432	फ़ज़ीलत का बाइ़ष इ़ल्म है न की बड़ी उ़म्र	448
अच्छी निय्यत से ज़ैबो ज़ीनत इख़्तियार करना	432	आक़ा صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के सफ़ेद बाल	449
बुरी निय्यत से ज़ैबो ज़ीनत इख़्तियार करना	433	कम उ़म्री में ओ़हदए क़ज़ा	449
सब से बेहतर और सब से बदतर घर	435	बकरे की भी दाढ़ी होती है	450
ह़म्माम में दाख़िल होने वाले पर वाजिब उमूर	435	बूढ़ा त़ालिबे इ़ल्म	450
ह़म्माम में दाख़िल होने की दस सुन्नतें	436	ह़ुसूले इ़ल्म की जुस्तजू	450
ह़म्माम में दाख़िल होने से पहले की दुआ़	437	मोमिन का नूर	451
राहे आख़िरत के मुसाफ़िर की पहचान	438	फ़िरिश्तों की क़सम का अन्दाज़	451
चन्द मुफ़ीद बातें	439	बा-रीश जन्नती	452
सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان की याद ताज़ा हो गई	441	दो शिर्के ख़फ़ी	453
यहूद की मुख़ालफ़त करो	441	अह़ादीष से माख़ूज़ बारह सुन्नतें	453
शैत़ान के बैठने की जगह	442	**नमाज़ का बयान**	454
नाख़ुन काटने का मसनून त़रीक़ा	442	**बाब नम्बर 1 : नमाज़, सुजूद, जमाअ़त और**	
पाउं के नाख़ुन तराशने का अह़सन त़रीक़ा	443	**अज़ान वग़ैरा के फ़ज़ाइल**	455

मज़ामीन	सफ़हा नम्बर	मज़ामीन	सफ़हा नम्बर
पहली फ़स्ल : अज़ान की फ़ज़ीलत	455	नमाज़ हो तो ऐसी	470
अज़ान की फ़ज़ीलत पर मुश्तमिल चार फ़रामीने मुस्त़फ़ा	455	ग़ाफ़िल ख़्वाहिश मन्द	470
अज़ान के बा'द की दुआ	456	**हि़कायत :** सय्यिदुना ख़लफ़ बिन अय्यूब عَلَيْهِ الرَّحْمَة का ख़ौफ़े ख़ुदा	471
फ़िरिश्ते मुक़्तदी	456	सय्यिदुना मुस्लिम बिन यसार عَلَيْهِ الرَّحْمَة और नमाज़	471
दूसरी फ़स्ल : फ़र्ज़ नमाज़ की फ़ज़ीलत	457	नमाज़ अमानत है	471
फ़र्ज़ नमाज़ की फ़ज़ीलत पर मुश्तमिल 14 फ़रामीने मुस्त़फ़ा	457	सय्यिदुना इमाम ज़ैनुल आ़बेदीन عَلَيْهِ الرَّحْمَة और नमाज़	472
तसरी फ़स्ल : अरकाने नमाज़ पूरा करने की फ़ज़ीलत	460	अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के घर में रहने वाला ख़ुश नसीब	472
छे फ़रामीने मुस्त़फ़ा	460	सय्यिदुना हा़तिमे असम عَلَيْهِ الرَّحْمَة और नमाज़	472
चौथी फ़स्ल : नमाज़े बा जमाअ़त के फ़ज़ाइल	462	पूरी रात इ़बादत से बेहतर अ़मल	473
फ़ज़ीलते जमाअ़त पर मुश्तमिल पांच फ़रामीने मुस्त़फ़ा	462	**सातवी फ़स्ल : मस्जिद और जाए नमाज़ की फ़ज़ीलत**	474
तीन चीज़ों का शौक़	463	मस्जिद की फ़ज़ीलत पर मुश्तमिल सात फ़रामीने मुस्त़फ़ा	474
इ़राक़ की बादशाहत से ज़ियादा महबूब	464	मस्जिद की फ़ज़ीलत पर मुश्तमिल आठ अक़्वाले बुज़ुर्गाने दीन	475
निफ़ाक़ और आग से आज़ादी का परवाना	464	**बाब नम्बर 2 : ज़ाहिरी आ'माल की कैफ़िय्यत व आदाब का बयान**	477
सूरज, चांद और सितारों की मानिन्द चमकते चेहरे	464		
पांचवी फ़स्ल : फ़ज़ाइले सजदा	465	**पहली फ़स्ल : नमाज़ में ज़ाहिरी आ'माल की कैफ़िय्यत और तकबीरे तह़रीमा से इब्तिदा करना**	477
सजदे की फ़ज़ीलत पर मुश्तमिल चार फ़रामीने मुस्त़फ़ा	465		
बहुत ज़ियादा सजदे करने वाले	466	नमाज़ का त़रीक़ा	477
छटी फ़स्ल : ख़ुशूब की फ़ज़ीलत	467	पहला रुक्न क़ियाम	477
ख़ुशूब के मुतअ़ल्लिक़ तीन फ़रामीने बारी तआ़ला	467	निय्यते नमाज़	478
किस की नमाज़ मक़्बूल है ?	468	हाथ उठाने के आदाब	478
बिग़ैर तर्जुमान के अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से हम कलामी	469	दूसरा रुक्न तकबीरे तह़रीमा	478

मज़ामीन	सफ़ह़ा नम्बर	मज़ामीन	सफ़ह़ा नम्बर
तक्बीर कब कही जाए	479	**पहली फ़स्ल : ख़ुशूअ़, ख़ुज़ूअ़ और हुज़ूरिये क़ल्ब**	
फ़ैसलए ग़ज़ाली	479	**की शराइत़**	495
तीसरा रुक्न क़िराअत	480	ख़ुशूओ ख़ुज़ूअ़ से नमाज़ पढ़ने से मुतअ़ल्लिक़ 3 फ़रामीने बारी तआ़ला	495
चौथा रुक्न रुकूअ़ और इस के मुतअ़ल्लिक़ात	481	ख़ुशूओ ख़ुज़ूअ़ से नमाज़ पढ़ने से मुतअ़ल्लिक़ 4 फ़रामीने मुस्त़फ़ा	495
पांचवां रुक्न सजदा	482	नमाज़ में क़िराअत व अज़्कार से मक़्सूद	497
छटा रुक्न क़ा'दा	484	रुकूअ़ व सुजूद से मक़्सूद	498
सातवां रुक्न सलाम	484	एक सुवाल और इस का जवाब	499
इमाम व मुक़्तदी के लिये मुस्तह़ब उमूर	485	ह़ासिले कलाम	501
दूसरी फ़स्ल : ममनूआ़ते नमाज़	487	**दूसरी फ़स्ल : नमाज़ मुकम्मल करने वाले बात़िनी उमूर**	501
मज़्कूरा उमूर की तफ़्सील	487	इन उमूर की तफ़्सील	501
नमाज़ में सात चीज़ें शैत़ान की त़रफ़ से हैं	490	मज़्कूरा उमूर के अस्बाब	502
नमाज़ में चार चीज़ें ज़ुल्म से हैं	490	ह़ासिले कलाम	504
तीसरी फ़स्ल : फ़राइज़ व सुनन में फ़र्क़	491	ज़िक्रे इलाही के वक़्त आ'ज़ा की कैफ़िय्यत	505
नमाज़ के फ़राइज़	491	नाफ़रमान मेरा ज़िक्र न करें	505
नमाज़ की सुन्नतें	492	दिल के मुतअ़ल्लिक़ ज़िक्र कर्दा मआ़नी का इख़्तिलाफ़ और लोगों की अक़्साम	505
अज़्कार की सुन्नतें	492	**तीसरी फ़स्ल : हुज़ूरे क़ल्ब में नफ़्अ़ बख़्श दवा**	507
एक सुवाल और इस का जवाब	492	दिली ख़यालात का सबब	507
आ'ज़ाए जिस्म के दर्जात	493	आक़ा صَلَّى اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की आजिज़ी व इन्किसारी	509
इबादत के ज़ाहिरी अरकान	493	कफ़्फ़ारे में बाग़ सदक़ा कर दिया	510
नमाज़ी का सब से पहला दुश्मन	494	**चौथी फ़स्ल : नमाज़ में हुज़ूरिये क़ल्ब की तफ़्सील**	512
बाब नम्बर 3 : आ'माले क़ल्ब की बात़िनी शराइत़	495	नमाज़ की शराइत़ व फ़राइज़	512

मज़ामीन	सफ़्हा नम्बर	मज़ामीन	सफ़्हा नम्बर
अज़ान	512	फ़िरिश्तों के तअ़ज्जुब करने की वजह	526
तहारत	512	बा ए'तिबार तरक़्क़िये दर्जात इन्सान फ़िरिश्तों से मुख़्तलिफ़ है	527
सित्रे औ़रत	513	दुआ़	528
इस्तिक़्बाले क़िब्ला	513	**पहली फ़स्ल : ख़ुशूअ़, ख़ुज़ूअ़ से नमाज़ पढ़ने वालों**	
हुज़ूरे क़ल्ब के साथ नमाज़ अदा करने की फ़ज़ीलत	513	**की हिकायात**	529
सीधा खड़ा होना	514	आंखों का क़ुफ़्ले मदीना	529
अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से कैसे हया करें	514	सय्यिदुना रबीअ़ رَحْمَةُاللّٰهِ تعالٰی علیه का ख़ौफ़े ख़ुदा	529
निय्यत	515	सय्यिदुना आ़मिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَحْمَةُاللّٰهِ تعالٰی علیه का ख़ुशूअ़	530
तक्बीरे तहरीमा	515	तक्लीफ़ का एह्सास तक न हुवा	530
दुआ़ए आग़ाज़	515	वस्वसों के ख़ौफ़ से नमाज़ मुख़्तसर पढ़ी	531
क़ल्अ़ए इलाही	517	एक भी नमाज़ नहीं पढ़ी	532
क़िराअत	517	आयते मुबारका की तफ़्सीर	532
तिलावत के मआ़नी की तफ़्सील	517	बाइ़षे नजात और क़ुर्ब का ज़रीआ़	533
नमाज़ में मुसलसल खड़े रहना	520	दिल नमाज़ में हाज़िर नहीं	533
दिल हाकिम और आ'ज़ा रिआ़या हैं	521	**बाब नम्बर 4 : इमामत का बयान**	535
रुकूअ़ व सुजूद	521	**पहली फ़स्ल : इमाम पर नमाज़ से पहले के , नीज़**	
तशह्हुद	522	**क़िराअत, अरकान और सलाम के बा'द के लाज़िम उमूर**	535
नमाज़ को आफ़ात से महफ़ूज़ रखने की फ़ज़ीलत	524	किन की नमाज़ मक़्बूल नहीं होती	535
अहले क़ुलूब के मुकाशफ़ा का इन्कार मुनासिब नहीं	525	एक सुवाल और इस का जवाब	535
अल्लाह عَزَّوَجَلَّ नमाज़ी बन्दे पर फ़ख़्र फ़रमाता है	526	इमामत अफ़्ज़ल है या मुअज़्ज़िनी	536
फ़िरिश्ते किस पर तअ़ज्जुब करते हैं ?	526	बिला हिसाब जन्नत में दाख़िला	537

मज़ामीन	सफ़्हा नम्बर	मज़ामीन	सफ़्हा नम्बर
70 साला इबादत से अफ़्ज़ल	537	यौमुल मज़ीद	551
अम्बिया व उ-लमा के बा'द अफ़्ज़ल	537	जुमुआ के दिन मरने की फ़ज़ीलत	553
ख़िलाफ़ते सिद्दीक़ी पर एक दलील	538	**दूसरी फ़स्ल : जुमुआ की शराइत**	554
मुक़्तदी ही बन जाओ	538	जुमुआ सहीह होने की शराइत	554
कषरते जमाअत के लिये नमाज़ियों का इन्तिज़ार करना कैसा ?	539	जुमुआ की सुन्नतें	555
इमामत पर उजरत लेने का हीला	540	जुमुआ वाजिब होने की शराइत	556
किन की इक़्तिदा में नमाज़ जाइज़ नहीं ?	541	तर्के जुमुआ के पांच आ'ज़ार	556
अज़ान व इक़ामत के दरमियान कितना वक़्फ़ा हो ?	541	**तीसरी फ़स्ल : आदत की तरतीब के मुताबिक़**	
दूसरी फ़स्ल : क़िराअत में इमाम की ज़िम्मेदारी	542	**आदाबे जुमुआ का बयान**	557
सरकार صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की आख़िरी नमाज़	544	(1) जुमा'रात से जुमुआ की तय्यारी करना	557
ख़ुलासए कलाम	545	(2) तुलूए फ़ज्र के बा'द ग़ुस्ल करना	558
तीसरी फ़स्ल : अरकाने नमाज़ में इमाम व मुक़्तदी की		ग़ुस्ले जुमुआ के मुतअल्लिक़ रिवायात	558
ज़िम्मेदारियां	545	रोज़े जुमुआ ग़ुस्ल न करने का जवाज़	559
बा ए'तिबारे षवाब लोगों की नमाज़	546	एक ही निय्यत काफ़ी है	559
इमाम का किसी आने वाले के लिये रुकूअ़ को तूल देना	546	**हिकायत :** बेटे की तर्बिय्यत	559
चौथी फ़स्ल : सलाम फेरने के बा'द इमाम की		दोबारा ग़ुस्ल का हुक्म देने की तौजीह	560
ज़िम्मेदारी	548	(3) ज़ीनत इख़्तियार करना	560
नमाज़े फ़ज्र में दुआए क़ुनूत	549	रोज़े जुमुआ नाख़ुन तराशने की फ़ज़ीलत	560
बाब नम्बर 5 : जुमुअ़तुल मुबारक का बयान	550	मर्दों और औरतों की पसन्दीदा ख़ुश्बू	560
पहली फ़स्ल : जुमुआ की फ़ज़ीलत	550	ग़म दूर और अक़्ल में इज़ाफ़ा हो	561
बिला उज़्रे शरई जुमुआ न पढ़ने का वबाल	550	जुमुआ के दिन इमामा बांधने की फ़ज़ीलत	561

मज़ामीन	सफ़्हा नम्बर	मज़ामीन	सफ़्हा नम्बर
﴾4﴿ जामेअ़ मस्जिद की त़रफ़ जल्दी जाना	561	नमाज़े जुमुआ़ के आदाब	571
जुमुआ़ के लिये जल्द आने की फ़ज़ीलत	562	बा'द नमाज़े जुमुआ़ सूरए फ़ातिह़ा, इख़्लास और मुअ़व्वज़तैन पढ़ने की फ़ज़ीलत	571
तीन बेहतरीन अ़मल	562	मख़्लूक़ से बे नियाज़ी और ह़ुसूले रिज़्क़ की दुआ़	572
फ़िरिश्ते ख़ुश नसीबों के नाम लिखते हैं	563	﴾10﴿ मस्जिद में ठहरे रहना	573
फ़िरिश्तों की दुआ़	563	**चौथी फ़स्ल : जुमुआ़ की सुन्नतें और आदाब**	573
पहली सदी में जुमुआ़ का जज़्बा	563	इ़ल्म की मजलिस में ह़ाज़िर होने की फ़ज़ीलत	574
﴾5﴿ मस्जिद में दाख़िल होने के आदाब	564	क़िस्सा गोई बिदअ़त है	575
जुमुआ़ के दिन लोगों की गर्दनें फलांगने पर वई़द	564	फ़ज़ीलत वाली घड़ी कौन सी है ?	575
﴾6﴿ ह़ाज़िरीन का अदब	565	80 साल के गुनाह मुआ़फ़	577
नमाज़ी के आगे से गुज़रना गुनाह है	565	शफ़ाअ़ते मुस्त़फ़ा	577
﴾7﴿ पहली सफ़ की कोशिश करना	567	ख़ुलासए कलाम	579
दूर बैठने में ही आ़फ़िय्यत है	567	शबे जुमुआ़ सूरए कह्फ़ पढ़ने की फ़ज़ीलत	579
दिलों का क़ुर्ब मत़्लूब है न कि अजसाम का	567	मरने से पहले जन्नत में अपना ठिकाना देख ले	580
ह़िकायत : किस ह़ुक्मरान से दूरी इख़्तियार की जाए	568	जुमुआ़ के दिन वक़्त की तक़्सीम	581
ईषार का अनोखा अन्दाज़	568	उस का सुवाल पूरा कर दिया जाता है	582
मस्जिदों में नमाज़ के लिये जगह मख़्सूस कर लेना कैसा ?	569	जो दुआ़ मांगे क़बूल होगी	582
﴾8﴿ ख़ुत़बे के आदाब	569	ह़ासिले कलाम	583
तवज्जोह से ख़ुत़बा सुनने की फ़ज़ीलत	570	**बाब नम्बर 6 : मुतफ़र्रिक़ मसाइल का बयान**	584
दौराने ख़ुत़बा कलाम करने पर वई़द	570	अ़मले क़लील से नमाज़ फ़ासिद नहीं होती	584
दौराने ख़ुत़बा इशारे से ख़ामोश कराने का ह़ुक्म	570	ह़ालते नमाज़ में जूं और पिस्सू मारने का ह़ुक्म	584
चार मकरूह अवक़ात	571	जूते पहने नमाज़ पढ़ने की दलील	585

मज़ामीन	सफ़हा नम्बर	मज़ामीन	सफ़हा नम्बर
जानिबे क़िब्ला थूकना कैसा ?	587	इब्तिदाए वक़्ते मग़रिब	599
इत्तिसाले सफ़ूफ़	587	(5) इशा की सुन्नतें	600
मस्बूक़ के अह़काम	588	(6) नमाज़े वित्र	601
क़ज़ा और बा जमाअ़त नमाज़ के अह़काम	589	वित्र कितनी रक्अ़त पढ़ना अफ़्ज़ल है ?	602
दौराने नमाज़ या बा'दे नमाज़ कपड़ों पर नजासत नज़र आना	589	वित्र के मआ़नी	603
सजदए सह्व के अह़काम	590	(7) नमाज़े चाश्त	603
नमाज़ की निय्यत करते वक़्त वस्वसे आना	590	चाश्त का वक़्त	604
इक़्तिदा के अह़काम	591	(8) सलातुल अव्वाबीन	604
सफ़ें दुरुस्त करना और दाईं जानिब की फ़ज़ीलत	592	सलातुल अव्वाबीन पढ़ने की फ़ज़ीलत	605
ह़िकायत : गोया वोह मुर्दा है	593	﴿2﴾ हफ़्तावार शबो रोज़ के नवाफ़िल	605
बाब नम्बर 7 : नवाफ़िल का बयान	594	**इतवार के नवाफ़िल**	605
इज़ाफ़त के ए'तिबार से नवाफ़िल की तक़्सीम	594	जन्नत में ख़ालिस कस्तूरी का शहर	605
﴿1﴾ वोह नमाज़ें जो हर दिन रात पढ़ी जाती हैं	595	चार रक्अ़त पढ़ने की फ़ज़ीलत	606
(1) फ़ज्र की सुन्नतें	595	**पीर के नवाफ़िल**	606
(2) ज़ोहर की सुन्नतें	596	तमाम गुनाह मुआ़फ़	606
ज़ोहर की चार सुन्नतों की फ़ज़ीलत	596	फ़िरिश्ते इस्तिक़्बाल करेंगे	606
हर रोज़ बारह रक्अ़त सुन्नत अदा करने की फ़ज़ीलत	597	**मंगल के नवाफ़िल**	607
ज़वाल के वक़्त की पहचान	597	शहादत की मौत	607
इब्तिदाए वक़्ते अ़स्र	598	**बुध के नवाफ़िल**	607
(3) अ़स्र की सुन्नतें	598	अ़ज़ाबे क़ब्र और क़ियामत की सख़्तियों से नजात	607
(4) मग़रिब की सुन्नतें	598	**जुमा'रात के नवाफ़िल**	608

मज़ामीन	सफ़्हा नम्बर	मज़ामीन	सफ़्हा नम्बर
मोअमिनीन व मुतवक्किलीन की ता'दाद के बराबर नेकियां	608	﴾3﴿ सालाना नवाफ़िल	613
जुमुआ़ के नवाफ़िल	608	क़ुरबानी का वक़्त	615
नेकियां ही नेकियां	608	नमाज़े ई़द का त़रीक़ा	615
हफ़्ते के नवाफ़िल	609	क़ुरबानी	616
अ़र्शे इलाही के साए में अम्बिया व शुहदा का साथ	609	तरावीह़ तन्हा पढ़ना अफ़्ज़ल है या बा जमाअ़त	616
शबे इतवार के नवाफ़िल	609	मस्जिदे नबवी और मस्जिदे ह़राम में नमाज़ पढ़ने से अफ़्ज़ल अ़मल	617
अम्बियाए किराम عَلَيۡهِمُ السَّلَام के साथ जन्नत में दाख़िला	609	वज़ाह़त	617
शबे पीर के नवाफ़िल	610	ख़ुलासए कलाम	618
सलातुल ह़ाजत पढ़ने की फ़ज़ीलत	610	**माहे रजबुल मुरज्जब के नवाफ़िल**	618
शबे मंगल के नवाफ़िल	610	अहले ख़ाना के 700 अफ़्राद की शफ़ाअ़त का ह़क़	618
जहन्नम से आज़ादी	611	**माहे शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म के नवाफ़िल**	619
शबे बुध के नवाफ़िल	611	70 बार नज़रे रह़मत	619
चार लाख 90 हज़ार मलाइका का नुज़ूल	611	﴾4﴿ अस्बाब से मुतअ़ल्लिक़ नवाफ़िल का बयान	920
अहले ख़ाना के 10 अफ़्राद की शफ़ाअ़त का ह़क़	611	(1) ग्रहन की नमाज़	620
70 साल के गुनाह मुआ़फ़	611	नमाज़े ग्रहन का त़रीक़ा व वक़्त	620
शबे जुमा'रात के नवाफ़िल	612	(2) नमाज़े इस्तिसक़ा	621
शुहदा व सिद्दीक़ीन का मर्तबा	612	दुआ़	622
शबे जुमुआ़ के नवाफ़िल	612	(3) नमाज़े जनाज़ा	622
12 साल शबो रोज़ इबादत की मिष्ल	612	जनाज़े में 40 लोगों के शरीक होने की बरकत	624
शबे क़द्र की इबादत का षवाब	613	क़ब्रिस्तान में सलाम करने का त़रीक़ा	624
शबे हफ़्ता के नवाफ़िल	613	दफ़्न करने के बा'द की दुआ़	624

मज़ामीन	सफ़हा नम्बर	मज़ामीन	सफ़हा नम्बर
(4) तह़िय्यतुल मस्जिद	625	बकरी की ज़कात	640
ह़दीष से ह़ासिल शुदा दो फ़वाइद	625	निसाब में शरीक मालिकों की ज़कात की सूरत	640
खुलासए कलाम	626	(2) ज़मीनी पैदावार की ज़कात	641
(5) **तह़िय्यतुल वुज़ू**	627	ज़मीनी पैदावार में शरीक मालिकों के उ़श्र की सूरत	641
(6) घर में दाखि़ल होते और निकलते वक़्त के नवाफ़िल	627	ज़मीनी पैदावार में उ़श्र कब वाजिब होगा ?	642
(7) नमाज़े इस्तिख़ारा	628	उ़श्र वाजिब होने का वक़्त	642
(8) नमाज़े ह़ाजत	629	(3) सोने चांदी की ज़कात	642
दुआ़ ज़रूर क़बूल हो	630	(4) माले तिजारत की ज़कात	643
जिसे चार ने'मतें मिलें वोह चार से मह़रूम न होगा	630	(5) दफ़ीनों और मा'दनिय्यात की ज़कात	644
(9) **सलातुत्तस्बीह़** और इस की फ़ज़ीलत	631	(6) सदक़ए फ़ित्र	645
सलातुत्तस्बीह़ का उ़म्दा त़रीक़ा	631	**दूसरी फ़स्ल : ज़कात की अदाएगी और उस की**	
अवक़ाते मकरूहा में मुमानअ़ते नमाज़ की वुजूहात	633	**ज़ाहिरी व बात़िनी शराइत़**	646
ज़कात के असरार का बयान	635	(1) निय्यत करना	646
ज़काद न देने वालों का अन्जाम	635	(2) साल पूरा होने पर अदाएगी में जल्दी करना	647
पहली फ़स्ल : ज़कात की अक़्साम और इस के		(3) माल की जगह क़ीमत न देना	647
वुजूब के अस्बाब	637	(4) ज़कात दूसरे शहर की त़रफ़ मुन्तक़िल न करना	648
(1) जानवरों की ज़कात	637	(5) मसारिफ़े ज़कात की ता'दाद के मुत़ाबिक़ माले ज़कात तक़्सीम करना	648
माल में ज़कात फ़र्ज़ होने की शराइत़	637	ज़कात के बात़िनी आदाब की बारीकियां	649
तफ़्सील	638	वुजूबे ज़कात की तीन वुजूहात	649
ऊंट की ज़कात	639	अल्लाह عزوجل व रसूल صلی اللہ علیہ وسلم काफ़ी हैं	650
गाए की ज़कात	640	माल में ज़कात के इलावा भी कुछ ह़ुक़ूक़ हैं	651

मज़ामीन	सफ़्हा नम्बर	मज़ामीन	सफ़्हा नम्बर
बुख़्ल से बचने का त़रीक़ा	653	ज़कात लेने वाले को कैसा होना चाहिये ?	667
माली ने'मतों का शुक्र	653	हर ह़ाल में नज़र मुसब्बिबुल अस्बाब पर हो	668
अदाएगिये ज़कात के अफ़्ज़ल अवक़ात	654	कुफ़्फ़ार का त़रीक़ा	669
रमज़ान नहीं बल्कि माहे रमज़ान कहो	654	सफ़ेद पोश मुस्तह़िक़ को सदक़ा देने का षवाब	670
छुपा कर सदक़ा करने की फ़ज़ीलत	654	एक गुलाम आज़ाद करने से ज़ियादा मह़बूब	671
छुपा कर सदक़ा देने का फ़ाइदा	655	**पहली फ़स्ल : ज़कात लेने वाला, मुस्तह़िक़ होने के**	
सदक़े में नुमूद व नुमाइश से बचने के त़रीक़े	656	**अस्बाब और क़ब्ज़े के वज़ाइफ़**	672
बुख़्ल और रियाकारी सांप और बिच्छू की सूरत में	656	मुस्तह़िक़े ज़कात होने के अस्बाब	672
सदक़ा ज़ाहिर कर के देने की सूरत	657	किताब की ज़रूरत के मक़ासिद	674
एह़सान जताने और ईज़ा देने की ह़क़ीक़त	658	एक सुवाल और इस का जवाब	677
एह़सान जताने की बुन्याद	658	ज़कात लेने वाले की ज़िम्मेदारी	677
अज़िय्यत पहुंचाने का ज़ाहिर	659	ह़ासिल शुदा माल में मोह़ताज की निय्यत	678
अज़िय्यत पहुंचाने का बात़िन और इस की बुन्याद	660	ज़कात लेने वाला देने वाले को यूं दुआ़ दे	679
मालदार शख़्स मोह़ताज ख़ादिम है	660	अ़त़िय्या देने और लेने वाले की निय्यत	679
सुवाल-जवाब	661	सदक़ात से ली जाने वाली मिक़्दार के हुक्म में मुख़्तलिफ़ मौक़िफ़	681
नेकी की तकमील	663	खजूरों का बाग़ सदक़ा कर दिया	683
बुख़्ल और खुद पसन्दी का इलाज	664	क़ौले फ़ैसल	683
खुश बख़्त शख़्स	664	**चौथी फ़स्ल : नफ़्ली सदक़ा के फ़ज़ाइल और**	
ज़कात मुत्तक़ी व परहेज़गार ह़ाजत मन्द को दो	666	**लेने देने के आदाब**	684
औलिया में से एक वली	666	फ़ज़ाइले सदक़ा के मुतअ़ल्लिक़ 18 फ़रामीने मुस्त़फ़ा	684
अपने माल से उ़-लमा की मदद करने का जज़्बा	667	फ़ज़ाइले सदक़ा के मुतअ़ल्लिक़ 17 अक़्वाले बुज़ुर्गाने दीन	687

मज़ामीन	सफ़्हा नम्बर	मज़ामीन	सफ़्हा नम्बर
सदक़े को छुपाना और ज़ाहिर करना	689	तफ़्सील	708
पोशीदा तौर पर देने में पांच हिक्मतें	689	रोज़े का कफ़्फ़ारा	709
अस्लाफ़ ज़ाहिरन दी गई चीज़ क़बूल न करते	690	रोज़े की सुन्नतें	710
ज़ाहिरी तौर पर देने में चार हिक्मतें	692	ए'तिकाफ़ के अह़काम	711
हिकायत : सदक़ा ज़ाहिर करने की फ़ज़ीलत	692	**दूसरी फ़स्ल : रोज़े के असरार और इस की**	
हिकायत : अल्लाह देख रहा है !	692	**बातिनी शराइत़**	712
फ़ैसलए ग़ज़ाली	694	तफ़्सील	712
किसी के सामने उस की ता'रीफ़ करना कैसा ?	696	**हिकायत :** इन्सानी गोश्त ख़ोर रोज़ादार	714
हर्फ़े आख़िर	697	हराम ज़हर जब कि ह़लाल दवा है	715
सदक़ा लेना अफ़्ज़ल है या ज़कात	697	शर्हे ह़दीष़	715
फ़ैसलए ग़ज़ाली	698	रोज़े की रूह़ और राज़	716
दुआ	699	मुक़ाबले का मैदान	717
रोज़ों का बयान	700	एक सुवाल और इस का जवाब	717
फ़ज़ाइले रोज़ा के मुतअ़ल्लिक़ 11 फ़रामीने मुस्त़फ़ा	700	रोज़े का मक़्सद	717
दीगर इबादात पर रोज़े की अफ़्ज़लिय्यत की वजह	703	पहाड़ों के बराबर इबादत से अफ़्ज़ल व राजेह़	718
पहली फ़स्ल : रोज़े के वाजिबात, ज़ाहिरी सुन्नतें और		गुनाहों में मुलव्विष रहने वाले रोज़ादार की मिषाल	719
रोज़ा तोड़ने वाले लाज़िम उमूर का बयान	705	आ'ज़ा भी अमानत हैं	719
ज़ाहिरी वाजिबात	705	**तीसरी फ़स्ल : नफ़्ली रोज़े और इन में वज़ाइफ़**	
निय्यत के मुतअ़ल्लिक़ अह़काम	705	**की तरतीब**	720
क़ै के अह़काम	708	एक रोज़ा 30 रोज़ों से अफ़्ज़ल	720
रोज़ा तोड़ने से लाज़िम होने वाले उमूर	708	900 साल की इबादत का षवाब	721

मज़ामीन	सफ़ह़ा नम्बर	मज़ामीन	सफ़ह़ा नम्बर
फ़ज़ीलत व हुरमत वाले महीने	721	माहे रमज़ान में उ़मरह करने की फ़ज़ीलत	734
राहे ख़ुदा में जिहाद से अफ़्ज़ल अ़मल	722	त़वाफ़ और नमाज़ अदा करने वालों की बख़्शिश	735
कुछ सौमे दहर के बारे में	722	का'बा और क़ुरआन उठाए जाने का वक़्त	735
सब से अफ़्ज़ल रोज़े	723	मक्कए मुकर्रमा में रिहाइश इख़्तियार करना कैसा ?	736
दुआ़	725	ह़रम में इरादए गुनाह पर भी मुवाख़ज़ा है	738
ह़ज का बयान	726	इज़ालए वहम	738
बाब नम्बर 1 : फ़ज़ाइले ह़ज का बयान	727	मदीनए मुनव्वरा की अफ़्ज़लिय्यत	739
पहली फ़स्ल : ह़ज, बैतुल्लाह, मक्का व मदीना के फ़ज़ाइल		एक नमाज़ हज़ार नमाज़ों से बेहतर	739
और मसाजिद की जानिब सफ़र करने का बयान	727	शफ़ाअ़त की बिशारत	739
ह़ज की फ़ज़ीलत	727	ज़ियारते क़ुबूर के लिये सफ़र करने का हुक्म	740
फ़ज़ाइले ह़ज पर मुश्तमिल 11 फ़रामीने मुस्त़फ़ा	728	मज़ाराते औलिया की ज़ियारत का हुक्म	741
एक बुज़ुर्ग और शैत़ान का मुकालमा	728	**ह़िकायत :** ह़िफ़ाज़ते दीन की फ़िक्र	742
दो ईदें	730	मैं कहां रिहाइश इख़्तियार करूं ?	743
ह़िकायत : जन्नत में दाख़िले की बिशारत	731	तीन वसिय्यतें	743
फ़ज़ाइले ह़ज पर मुश्तमिल अक़्वाले बुज़ुर्गाने दीन	731	**दूसरी फ़स्ल : वुजूबे ह़ज की शराइत़, अरकान की**	
छे के सदक़े छे लाख का ह़ज क़बूल	732	**दुरुस्ती और वाजिबात व ममनूआ़त का बयान**	744
ह़िकायत : ख़्वाब में दीदारे इलाही	732	ह़ज की शराइत़	744
बैतुल्लाह शरीफ़ और मक्कए मुकर्रमा के फ़ज़ाइल	733	ह़ज का वक़्त	744
ह़जरे अस्वद नफ़्अ़ भी देता है और नुक़्सान भी	733	फ़र्ज़ ह़ज अदा होने की शराइत़	744
ह़जरे अस्वद को बोसा देते वक़्त की दुआ़	734	ह़ज्जे नफ़्ल अदा होने की शराइत़	745
एक नेकी एक लाख नेकियों के बराबर	734	ह़ज वाजिब होने की शराइत़	745

मज़ामीन	सफ़्हा नम्बर	मज़ामीन	सफ़्हा नम्बर
इस्तिताअ़त की अक़्साम	746	﴿3﴾ दुख़ूले मक्का से त़वाफ़ तक के आदाब	761
इस्तिताअ़त के बा वुजूद ह़ज न करने वाले का हुक्म	747	हुदूदे ह़रम में दाख़िल होने से पहले की दुआ़	762
ह़ज के अरकान	748	मक्का शरीफ़ में दाख़िल होने और निकलने की सुन्नत	762
ह़ज के वाजिबात	748	बैतुल्लाह पर पहली नज़र पड़ते वक़्त की दुआ़	762
ह़ज व उ़मरा की अदाएगी के त़रीके़	750	बैतुल्लाह के क़रीब पहुंच कर येह दुआ़ पढ़े	763
तमत्तोअ़ की शराइत़	750	ह़जरे अस्वद को बोसा दे कर येह दुआ़ पढ़े	764
ह़ज व उ़मरा के ममनूआ़त	751	﴿4﴾ त़वाफ़ के आदाब	764
बाब नम्बर 2 : इब्तिदाए सफ़र से वापसी तक के		**त़वाफ़ का त़रीक़ा**	765
दस आदाब	753	मक़ामे इब्राहीम को देख कर येह दुआ़ पढ़े	765
﴿1﴾ घर से निकलने से ले कर एह़राम तक के आदाब	753	मीज़ाबे रह़मत के पास येह दुआ़ पढ़े	766
किसी को रुख़्सत करते वक़्त की दुआ़	754	त़वाफ़ के बा'द की दुआ़	767
सफ़रे ह़ज पर रवाना होने से पहले की दुआ़	754	दो रक्अ़त त़वाफ़ के बा'द की दुआ़	768
रवाना होते वक़्त की दुआ़	755	गुलाम आज़ाद करने का षवाब	769
सुवार होते वक़्त की दुआ़	756	﴿5﴾ सअ़्य के आदाब	769
किसी मन्ज़िल पर ठहरे तो येह दुआ़ पढ़े	756	सफ़ा पर चढ़े तो येह दुआ़ पढ़े	770
रात के वक़्त येह दुआ़ पढ़े	757	﴿6﴾ वुक़ूफ़े अ़रफ़ा और इस से पहले के आदाब	771
दुश्मन या किसी दरिन्दे का ख़ौफ़ हो तो येह दुआ़ पढ़े	758	मिना में पहुंच कर येह दुआ़ पढ़े	772
डर ख़ौफ़ मह़सूस हो तो येह दुआ़ पढ़े	759	अ़रफ़ात की जानिब जाए तो येह दुआ़ पढ़े	772
﴿2﴾ एह़राम बांधने से ले कर दुख़ूले मक्का तक के आदाब	759	वुक़ूफ़े अ़रफ़ा के दिन पढ़ी जाने वाली दुआ़एं	773
एह़राम बांधने के बा'द येह दुआ़ पढ़े	760	दुआ़ए ख़िज़्र	773
कोई चीज़ अच्छी लगे तो येह पढ़ो	761	﴿7﴾ ह़ज के बक़िय्या आ'माल व आदाब	774

मज़ामीन	सफ़्हा नम्बर	मज़ामीन	सफ़्हा नम्बर
मुज़्दलिफ़ा की दुआ़	774	मस्जिदे नबवी के आदाब	784
मश्अ़रे ह़राम में येह दुआ़ पढ़े	776	रौज़ए अक़्दस पर ह़ाज़िरी	784
कंकरियां मारने का त़रीक़ा	776	बारगाहे रिसालत में किसी का सलाम पहुंचाने का त़रीक़ा	786
तक्बीरे तशरीक़	777	बारगाहे सिद्दीक़ी व फ़ारूक़ी में हदिय्यए सलाम	786
ज़ब्ह़ करने के बा'द की दुआ़	778	हु़ज़ूर صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के वसीले से दुआ़	787
बेह़तरीन क़ुरबानी	778	रियाजुल जन्नह की फ़ज़ीलत	788
एक सफ़ेद दुम्बा दो सियाह दुम्बों से अफ़्ज़ल	778	जन्नतुल बक़ीअ़ में ह़ाज़िरी	788
वोह ऐ़ब कि जिन के सबब क़ुरबानी जाइज़ नहीं	778	एक उ़मरे का षवाब	789
ह़ल्क़ कराने के बा'द की दुआ़	779	मदीनए मुनव्वरा से वापसी के आदाब	790
त़वाफ़े ज़ियारत का वक़्त	779	सफ़र से वापसी के आदाब	791
एह़राम से निकलने के अस्बाब	779	ह़ज्जे मक़बूल की अ़लामत	792
ह़ज के ख़ुत़बात	780	**बाब नम्बर 3 : ह़ज की बारीकियां और बात़िनी आ'माल**	793
﴾8﴿ उ़मरा और त़वाफ़े वदाअ़ तक के दीगर आदाब	781	दस क़ाबिले तवज्जोह आदाब	793
मेरे क़दम तो इस क़ाबिल भी नहीं.....!	781	एक ह़ज के बदले तीन का जन्नत में दाख़िला	793
ज़मज़म पिये और येह दुआ़ मांगे	782	ह़ज पर उजरत लेने वाले की मिषाल	794
﴾9﴿ त़वाफ़े वदाअ़ के आदाब	782	इसराफ़ में भलाई नहीं और भलाई में इसराफ़ नहीं	795
मक्कए मुकर्रमा से रुख़्सती के आदाब	782	सख़ी होने की एक अ़लामत	795
﴾10﴿ ज़ियारते मदीना और इस के आदाब	783	सफ़र को सफ़र कहने की वजह	796
ज़ियारत के मुतअ़ल्लिक़ तीन फ़रामीने मुस्त़फ़ा	783	एक नेकी एक लाख नेकियों के बराबर	796
मदीनए मुनव्वरा के दरो दीवार पर नज़र पड़े तो येह पढ़ो !	783	ततबीक़	797
मदीनए मुनव्वरा के आदाब	784	जो नफ़्स पर गिरां गुज़रता हो वोह अ़मल अफ़्ज़ल है	797

मज़ामीन	सफ़्हा नम्बर	मज़ामीन	सफ़्हा नम्बर
सुवार होने से मुतअ़ल्लिक़ आदाब	797	रवानगी	809
ह़िकायत : पसन्दीदा ह़ाजी	798	जंगल व बयाबान का सफ़र	810
ह़ाजी को कैसा होना चाहिये ?	798	मीक़ात से एह़राम बांधना और तल्बिय्या कहना	810
सुवारी के मुतअ़ल्लिक़ आदाब	800	कहीं لَا لَبَّيْكَ وَلَا سَعْدَيْكَ न कह दिया जाए	810
ख़ुलासए कलाम	800	मक्कए मुकर्रमा में दाख़िला	811
तक़्वा हो तो ऐसा	800	बैतुल्लाह शरीफ़ पर पहली नज़र	811
सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म और 300 दीनार	801	तवाफ़े ख़ानए का'बा	812
बक़रह ईद के दिन सब से अफ़्ज़ल नेकी	802	ह़जरे अस्वद का इस्तिलाम	813
सफ़रे ह़ज में मुसीबत पर सब्र करने की फ़ज़ीलत	803	दायां दस्ते क़ुदरत	813
क़बूलिय्यते ह़ज की एक अ़लामत	803	ग़िलाफ़े का'बा से लिपटना और मुल्तज़म से चिमटना	813
बातिनी आ'माल और इख़्लास	803	सफ़ा व मर्वा की सअ़्य	813
ह़ज का मफ़्हूम	804	वुक़ूफ़े अ़रफ़ा	814
सरकार صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बिअ़्षत का मक़्सद	804	जमरात को कंकरियां मारना	815
आ'माले ह़ज और दीगर इबादात में फ़र्क़	805	क़ुरबानी करना	815
ह़िक्मते इलाही का तक़ाज़ा	806	मदीनए त़य्यिबा की ह़ाज़िरी	816
ह़ज का शौक़	806	ज़ियारते रौज़ए रसूल	818
ह़ज का अ़ज़्म	806	दुरूदो सलाम बारगाह तक पहुंचता है	819
तमाम तर ख़यालात से दिल को पाक करना	807	एक के बदले दस	819
ज़ादे राह	808	इख़्तितामी कलिमात	819
सुवारी	808	**तिलावते क़ुरआन का बयान**	821
एह़राम के कपड़े ख़रीदना	808	**बाब नम्बर 1 : क़ुरआन और क़ारिये क़ुरआन की फ़ज़ीलत**	823

मज़ामीन	सफ़्हा नम्बर	मज़ामीन	सफ़्हा नम्बर
फ़ज़ाइले तिलावत के मुतअ़ल्लिक़ 11 फ़रामीने मुस्त़फ़ा	823	**हिकायत :** हाकिमे मदीना की आजिज़ी	840
17 अक़्वाले बुज़ुर्गाने दीन	825	बुलन्द आवाज़ से क़िराअत मुस्तह़ब	841
ग़फ़्लत से तिलावत करने वालों की मज़म्मत	827	मज़्कूरा रिवायात में तत़्बीक़	842
क्या तेरे नज़्दीक मेरा कोई मर्तबा ही नहीं ?	830	बुलन्द आवाज़ से पढ़ने के फ़वाइद	842
बाब नम्बर 2 : तिलावत के ज़ाहिरी आदाब	831	जितनी निय्यतें ज़ियादा उतना षवाब भी ज़ियादा	842
﴾1﴿ क़ारिये क़ुरआन की ह़ालत	831	कषरते तिलावत के सबब.....?	843
हर ह़र्फ़ के बदले 100 नेकियां	831	सुब्ह़ तक इसे बन्द नहीं करता	843
﴾2﴿ क़िराअत की मिक़्दार	831	﴾10﴿ खुश इल्ह़ानी व उ़म्दगी से क़िराअत करना	843
ख़त्मे क़ुरआन के सिलसिले में दर्जात	832	सय्यिदुना सालिम رضی اللہ تعالی عنہ की खुश इल्ह़ानी	844
खुलासए कलाम	833	सय्यिदुना इब्ने मसऊ़द رضی اللہ تعالی عنہ की खुश इल्ह़ानी	844
﴾3﴿ मिक़्दारे क़िराअत की तक़्सीम	833	सय्यिदुना अबू मूसा رضی اللہ تعالی عنہ की खुश इल्ह़ानी	844
﴾4﴿ किताबते क़ुरआन के आदाब	834	**हिकायत :** खुश नसीब क़ारिये क़ुरआन	845
क़ुरआन पर ए'राब किस ने लगवाए ?	835	**बाब नम्बर 3 : तिलावत के बात़िनी आदाब**	846
﴾5﴿ तरतीले क़ुरआन के आदाब	835	﴾1﴿ कलाम की अ़ज़्मत व बुलन्दी को समझना	846
﴾6﴿ रोना	836	कलामे इलाही के मआ़नी को इस मिषाल से समझो	847
सब से बड़ी मुसीबत	836	खुलासए कलाम	848
﴾7﴿ आयात के ह़क़ की रिआ़यत के आदाब	837	﴾2﴿ मुतकल्लिम की ता'ज़ीम	848
सजदए तिलावत का त़रीक़ा	837	﴾3﴿ ह़ुज़ूरे क़ल्ब के आदाब	849
﴾8﴿ क़िराअत शुरूअ़ करने के आदाब	838	क़ुरआन से ज़ियादा मह़बूब कुछ नहीं	849
﴾9﴿ बुलन्द आवाज़ से क़िराअत करना	840	बाग़ात, ह़ुजरे, दुल्हनें और रेशमी लिबास वग़ैरा	849
आहिस्ता आवाज़ से क़िराअत मुस्तह़ब	840	﴾4﴿ ग़ौरो फ़िक्र करना	850

मज़ामीन	सफ़्हा नम्बर	मज़ामीन	सफ़्हा नम्बर
अनमोल मोती	850	अच्छी आवाज़ से तिलावत करने वाला कौन ?	868
हिकायत : इस बारगाह से कैसे फिरूं ?	850	सिर्फ़ छे हाफ़िज़े कुरआन	868
तिलावत हो तो ऐसी	851	तिलावते कुरआन का हक़	870
﴾5﴿ समझना	852	﴾9﴿ तरक़्क़ी	870
सिफ़ाते बारी तआला	852	तिलावते कुरआन के दर्जात	870
अफ़आले इलाहिय्या	853	गोया अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से सुन रहा हूं	871
अम्बियाए किराम عَلَیۡهِمُ السَّلَام के अहवाल	854	बराअत का इज़्हार	872
झुटलाने वालों का तज़्किरा	855	**हिकायत :** जन्नती फूल	873
﴾6﴿ मआनी समझने में रुकावट बनने वाले अस्बाब का ख़ातिमा	856	ख़ुलासए कलाम	873
कुरआन के मा'ना समझने में हाइल रुकावटें	856	**बाब नम्बर 4 : फ़हमे कुरआन और तफ़्सीर बिर्राए का बयान**	875
اَمۡرٌ بِالۡمَعۡرُوۡفِ وَنَهۡیٌ عَنِ الۡمُنۡكَر न करने का नुक़्सान	858		
﴾7﴿ तख़्सीस	859	मआनिये कुरआन का दाइरा बहुत वसीअ़ है	875
कुरआन किस निय्यत से पढ़ा जाए	861	सय्यिदुना अ़ली رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنۡهُ का इल्म	876
कुरआन बहार है	862	कुरआने पाक कितने उ़लूम पर मुश्तमिल है ?	876
﴾8﴿ तअष्षुर	862	ख़ुलासए कलाम	877
उस की ज़िन्दगी में इन्क़िलाब आ जाता है	863	मज़्बूत रस्सी, नूरे मुबीन और नफ़्अ़ बख़्श शिफ़ा	877
यूं तिलावत करे	864	राहे नजात	878
कलामे इलाही हिकायत की निय्यत से न पढ़ा जाए	864	मन्क़ूल तफ़्सीर पर इक्तिफ़ा करना कैसा ?	879
मेरे कलाम को भी छोड़ दे	866	तफ़्सीर बिर्राए से मुमानअ़त की वुजूह	880
तिलावत करने वाले नाफ़रमान की मिषाल	866	रासिख़ फ़िल इल्म हज़रात का हिस्सा	882
उक्ताहट महसूस हो तो तिलावत न करो	867	एक मिषाल	883

मज़ामीन	सफ़ह़ा नम्बर	मज़ामीन	सफ़ह़ा नम्बर
दुआ़ के असरारे रुमूज़	883	शहीद को बे ह़िजाब रब्ब तआ़ला का दीदार	905
इख़्तितामी कलिमात	884	**बाब नम्बर 2 : इस्तिग़्फ़ार, दुरूद और दुआ़ के**	
ज़िक्रुल्लाह और दुआ़ओं का बयान	885	**फ़ज़ाइल व आदाब**	907
बाब नम्बर 1 : क़ुरआन व ह़दीष और अक़्वाले अस्लाफ़		**पहली फ़स्ल : दुआ़ की फ़ज़ीलत**	907
से ज़िक्रुल्लाह के फ़ज़ाइल व फ़वाइद का बयान	886	फ़ज़ीलते दुआ़ से मुतअ़ल्लिक़ चार फ़रामीने बारी तआ़ला	907
पहली फ़स्ल : ज़िक्रुल्लाह की फ़ज़ीलत	886	फ़ज़ीलते दुआ़ से मुतअ़ल्लिक़ पांच फ़रामीने मुस्त़फ़ा	907
ज़िक्र की फ़ज़ीलत पर मुश्तमिल नव फ़रामीने बारी तआ़ला	886	**दूसरी फ़स्ल : दुआ़ के दस आदाब**	908
ज़िक्र की फ़ज़ीलत पर मुश्तमिल 11 फ़रामीने मुस्त़फ़ा	888	वक़्ते सह़र के तीन फ़ज़ाइल	908
घड़ी भर रब्ब तआ़ला को याद करना	890	क़बुलिय्यते दुआ़ के अवक़ात	909
ज़िक्रुल्लाह से मुतअ़ल्लिक़ तीन अक़्वाले बुज़ुर्गान	890	सजदे में दुआ़ की कषरत करो	910
दूसरी फ़स्ल : मजालिसे ज़िक्र की फ़ज़ीलत	891	दुआ़ क़िब्ला रुख़ हो कर मांगिये	911
मजालिसे ज़िक्र से मुतअ़ल्लिक़ नव फ़रामीने मुस्त़फ़ा	891	दुआ़ में हाथ उठाने का त़रीक़ा	911
तीसरी फ़स्ल : कलिमए तौह़ीद पढ़ने के फ़ज़ाइल	893	दुआ़ के बा'द हाथ चेहरे पर फेरना	912
لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه से मुतअ़ल्लिक़ 15 फ़रामीने मुस्त़फ़ा	893	दुआ़ में हाथ बुलन्द करने का त़रीक़ा	912
चौथी फ़स्ल : اَلْحَمْدُ لِلّٰه, سُبْحٰنَ اللّٰه और दीगर		दुआ़ में आवाज़ पस्त रखने के मुतअ़ल्लिक़ तीन फ़रामीने बारी तआ़ला	913
अज़्कार के फ़ज़ाइल	896	दुआ़ में हम वज़्न व मसजअ़ लफ़्ज़ों का तकल्लुफ़ करने की मुमानअ़त	913
اَلْحَمْدُ لِلّٰه, سُبْحٰنَ اللّٰه और दीगर अज़्कार के मुतअ़ल्लिक़ 22 फ़रामीने मुस्त़फ़ा	896	क़ुरआन व ह़दीष और बुज़ुर्गाने दीन से मन्क़ूल दुआ़ के अल्फ़ाज़	914
घर से निकलते वक़्त शयात़ीन से ह़िफ़ाज़त	901	ख़ौफ़ व उम्मीद से दुआ़ मांगने के मुतअ़ल्लिक़ दो फ़रामैने बारी तआ़ला	916
पांचवी फ़स्ल : ह़क़ीक़ते ज़िक्र और उस के फ़वाइद	901	कामिल यक़ीन के साथ दुआ़ मांगने के मुतअ़ल्लिक़ तीन फ़रामीने मुस्त़फ़ा	916
एक सुवाल और इस का जवाब	901	दुआ़ की क़बूलिय्यत ज़ाहिर होने या न होने पर पढ़े जाने वाले कलिमात	917
एक सुवाल और इस का जवाब	903	दुआ़ की क़बूलिय्यत का सबब	918

मज़ामीन	सफ़्हा नम्बर	मज़ामीन	सफ़्हा नम्बर
क़हूत़ साली के मुतअ़ल्लिक़ 12 ह़िकायात	919	**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब बन्दे	934
﴾1﴿ चुग़ल ख़ोरी का वबाल	919	इस्तिग़्फ़ार की फ़ज़ीलत पर मुश्तमिल 11 अक़्वाले बुज़ुर्गाने दीन	934
﴾2﴿ क़हूत़ साली दूर हो गई	919	**बाब नम्बर 3 : अम्बियाए किराम व बुज़ुर्गाने दीन से**	
﴾3﴿ ज़ुल्म का अन्जाम	919	**मन्क़ूल 16 दुआएं**	937
﴾4﴿ गुनाहों की नहूसत	920	﴾1﴿ दुआए मुस्त़फ़ा बा'द अज़ सुन्नते फ़ज्र	937
﴾5﴿ च्यूंटी की फ़रयाद	920	﴾2﴿ जामेअ़ और कामिल दुआ़	939
﴾6﴿ बारगाहे इलाही में मक़्बूलिय्यत	920	﴾3﴿ दुआए दाफ़ए रन्जो अलम व ग़म	939
﴾7﴿ बारिश में ताख़ीर नहीं बल्कि....	921	﴾4﴿ दुआए सिद्दीक़े अक्बर	940
﴾8﴿ एक आंख वाला आदमी	921	﴾5﴿ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ किस से भलाई का इरादा फ़रमाता है ?	941
﴾9﴿ उ़-लमाए किराम की अहम्मिय्यत	921	﴾6﴿ कोढ़, बरस, फ़ालिज से नजात देने और दाख़िले	
﴾10﴿ सा'दून मजनून की दुआ़	922	जन्नत करने वाले कलिमात	941
﴾11﴿ ह़ब्शी ग़ुलाम की दुआ़	923	﴾7﴿ हर नुक़्सान से ह़िफ़ाज़त की दुआ़	942
﴾12﴿ वसीले की बरकत	923	﴾8﴿ सारे दिन के शुक्राने की दुआ़	943
तीसरी फ़स्ल : दुरूदे पाक की फ़ज़ीलत और		﴾9﴿ दुआए ईसा	943
अ़ज़मते मुस्त़फ़ा	924	﴾10﴿ डूबने और चोरी से ह़िफ़ाज़त की दुआ़	944
फ़ज़ीलते दुरूद से मुतअ़ल्लिक़ 11 फ़रामीने मुस्त़फ़ा	924	﴾11﴿ दीनो दुन्या की भलाई के ह़ुसूल की दुआ़	944
ख़साइसे मुस्त़फ़ा	926	﴾12﴿ जन्नत में दाख़िले की दुआ़	945
रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की आ़जिज़ी	928	﴾13﴿ रन्जो अलम और मोह़ताजी से नजात की दुआ़	946
दुरूद हमेशा मुकम्मल पढ़ें या लिखें	928	﴾14﴿ तस्बीहाते बारी तआ़ला	946
चौथी फ़स्ल : इस्तिग़्फ़ार की फ़ज़ीलत	929	﴾15﴿ बारगाहे रब्बुल इ़ज़्ज़त में बुलन्द मर्तबा तस्बीहात	947
इस्तिग़्फ़ार से मुतअ़ल्लिक़ 19 फ़रामीने मुस्त़फ़ा	930	﴾16﴿ दुआए इब्राहीम बिन अदहम	948

मज़ामीन	सफ़्हा नम्बर	मज़ामीन	सफ़्हा नम्बर
बाब नम्बर 4 : कुरआनो ह़दीष में वारिद नमाज़ के बा'द की दुआएं	952	सदक़ा देते वक़्त की दुआ	970
		कोई नुक़्सान हो जाए तो येह दुआ पढ़िये	970
नमाज़ के बा'द मांगी जाने वाली 27 दुआएं	952	जाइज़ काम शुरूअ़ करते वक़्त की दुआ	970
नमाज़ के बा'द मांगी जाने वाली 12 कुरआनी दुआएं	958	आस्मान की त़रफ़ देखते वक़्त की दुआ	970
20 मस्नून दुआएं और मुख़्तलिफ़ इस्तिआज़े	960	बादल के गरजने पर पढ़ी जाने वाली दुआ	971
बाब नम्बर 5 : मुख़्तलिफ़ मस्नून दुआएं	964	जब आस्मानी बिजली चमके तो येह दुआ पढ़िये	971
मस्जिद की त़रफ़ जाते वक़्त की दुआ	964	बारिश के वक़्त की दुआ	971
घर से निकलते वक़्त की दुआ	964	जब किसी पर ग़ुस्सा आ जाए तो येह दुआ पढ़िये	971
मस्जिद में दाख़िल होते वक़्त की दुआ	965	किसी क़ौम से ख़त़रे के वक़्त की दुआ	972
रुकूअ़ की दुआ	965	कुफ़्फ़ार से जिहाद करते वक़्त की दुआ	972
रुकूअ़ से उठते वक़्त की दुआ	966	कान बजते हों तो.....!	972
सजदे में जाते वक़्त की दुआ	966	दुआ की क़बूलिय्यत पर येह दुआ पढ़िये	972
नमाज़ के बा'द की दुआ	967	अज़ाने मग़रिब के वक़्त की दुआ	972
मजलिस से उठते वक़्त की दुआ	967	कोई ग़म पहुंचे तो येह दुआ पढ़िये	973
बाज़ार में दाख़िल होते वक़्त की दुआ	967	जिस्म में दर्द हो तो येह दुआ पढ़िये	973
अदाएगिये क़र्ज़ की दुआ	968	मुसीबत के वक़्त की दुआ	974
नया लिबास पहनते वक़्त की दुआ	968	सोते वक़्त के अवराद व दुआएं	974
जब कोई शगून दिल में खटके तो येह दुआ पढ़े	968	नींद से बेदार होते वक़्त की दुआएं	976
नया चांद देख कर पढ़ी जाने वाली दुआ	969	शाम के वक़्त की दुआ	978
आंधी के वक़्त की दुआ	969	आईना देखते वक़्त की दुआ	978
किसी के इन्तिक़ाल की ख़बर सुन कर पढ़ी जाने वाली दुआ	969	कोई चीज़ ख़रीदते वक़्त की दुआ	978

मज़ामीन	सफ़्हा नम्बर	मज़ामीन	सफ़्हा नम्बर
निकाह़ की मुबारक बाद देते वक़्त की दुआ़	979	नमाज़े फ़ज्र के बा'द के वज़ाइफ़	994
क़र्ज़ अदा करते वक़्त की दुआ़	979	﴾1﴿ दुआ़एं	994
एक सुवाल और इस का जवाब	979	﴾2﴿ बार-बार किये जाने वाले अज़्कार	995
अवराद की तरतीब और शब बेदारी की		बार-बार पढ़े जाने वाले दस कलिमात	995
तफ़्सील का बयान	981	﴾3﴿ क़ुरआने पाक की तिलावत	997
बाब नम्बर 1 : अवराद की फ़ज़ीलत और तरतीब व		**ह़िकायत :** सआ़दत मन्दों का अ़मल	998
अह़काम का बयान	983	﴾4﴿ ग़ौरो फ़िक्र करना	1000
अवराद को मुख़्तलिफ़ अक़्साम में तक़्सीम करने की वजह	983	सब से बुलन्द रुत्बा इ़बादत	1001
नफ़्स की फ़ित्रत	984	उन्स व मह़ब्बत में फ़र्क़	1001
नजात के ख़्वाहिश मन्द का जदवल	984	आ़रिफ़ की मह़ब्बत और ज़ाकिर के उन्स में निस्बत	1001
चन्द फ़रामीने बारी तआ़ला	984	नूर के 70 ह़िजाबात	1002
फ़लाह़ पाने वालों की ता'रीफ़ में वारिद आयात	986	ख़ुलासए कलाम	1003
सूरज और चांद का ख़याल रखने वाले	987	दूसरा वज़ीफ़ा	1003
अवराद की ता'दाद और तरतीब का बयान	989	रुजूअ़ करने वालों की नमाज़ का वक़्त	1004
दिन के वज़ाइफ़ की तफ़्सील	989	तीसरा वज़ीफ़ा	1005
पहला वज़ीफ़ा	989	इस वक़्त का वज़ीफ़ा	1006
बेदार होने के बा'द की दुआ़	990	मोमिन के मिलने की तीन जगहें	1006
फ़ज्र की सुन्नतों के बा'द की दुआ़	991	नींद भी इ़बादत है	1007
मक़्बूल ह़ज व उ़मरे का षवाब	991	दिन के आ'माल में सब से अफ़्ज़ल अ़मल	1007
राहे ख़ुदा में जिहाद के बराबर अ़मल	992	चौथा वज़ीफ़ा	1008
चार ग़ुलाम आज़ाद करने से ज़ियादा मह़बूब अ़मल	993	पांचवा वज़ीफ़ा	1009

मज़ामीन	सफ़हा नम्बर	मज़ामीन	सफ़हा नम्बर
तीन चीज़ों पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ग़ज़ब फ़रमाता है	1009	बन्दा सोते वक़्त तीन बातों पर ग़ौर करे	1026
नींद की मिक़्दार	1009	बेदार हो तो येह दुआ पढ़े	1026
छटा वज़ीफ़ा	1010	बेदार होने के बा'द की दुआ	1026
सातवां वज़ीफ़ा	1011	**चौथा वज़ीफ़ा**	1027
तौबा व इस्तिग़्फ़ार से मुतअ़ल्लिक़ चन्द फ़रामीने बारी तआ़ला	1012	इबादत के लिये कौन सा वक़्त अफ़्ज़ल है ?	1027
मग़रिब की अज़ान के वक़्त की दुआ	1012	इस वज़ीफ़े की तरतीब	1028
मुहासबए नफ़्स	1013	तहज्जुद के लिये उठे तो येह पढ़े	1028
रात के वज़ाइफ़ का बयान	1014	**पांचवां वज़ीफ़ा**	1031
पहला वज़ीफ़ा	1014	हर हक़ वाले को उस का हक़ दो	1031
इस वज़ीफ़े की तरतीब	1015	एक दिन में चार जम्अ़ करने पर मग़फ़िरत की बिशारत	1032
दूसरा वज़ीफ़ा	1015	अस्लाफ़े किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام का नापसन्दीदा अ़मल	1033
इस वज़ीफ़े की तरतीब	1015	दो रक्अ़तें तमाम के बराबर	1034
हज़ार आयात से अफ़्ज़ल	1016	**अह़वाल बदलने से वज़ाइफ़ का बदल जाना**	1034
तीसरा वज़ीफ़ा	1018	सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان के मा'मूलात	1034
आ़लिम का सोना इबादत है	1019	एक सुवाल और इस का जवाब	1035
सोने के 10 आदाब	1019	अवरादो वज़ाइफ़ से मक़्सूद	1035
उसे कलाम की इजाज़त न दी जाएगी	1020	**ह़िकायत :** मरने से पहले जन्नत का नज़ारा	1035
अस्लाफ़े किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام की तीन ख़स्लतें	1021	इबादत पर मुक़द्दम इल्म से कौन सा इल्म मुराद है ?	1037
सोते वक़्त की दुआ	1022	आ़लिम के वक़्त की तक़्सीम	1037
वोह क़ुरआन न भूलेगा	1022	मुअ़ज़्ज़ज़ मक़ाम	1039
अनमोल मोती	1025	**ह़िकायत :** मह़फ़िले ज़िक्र में ह़ाज़िर होने की फ़ज़ीलत	1039

मज़ामीन	सफ़्हा नम्बर	मज़ामीन	सफ़्हा नम्बर
हासिले कलाम	1039	शब बेदारी की फ़ज़ीलत पर मुश्तमिल 18 फ़रामीने मुस्त़फ़ा	1051
सदके की निय्यत से ज़ाइद माल कमाना कैसा ?	1040	शब बेदारी की फ़ज़ीलत पर मुश्तमिल 24 अक्वाले बुज़ुर्गाने दीन	1056
अपने और मुसलमानों के हुक़ूक़ की पासदारी	1040	**शब बेदारी में आसानी के ज़ाहिरी व**	
इबादते बदनिय्या पर दो चीज़ें मुक़द्दम होंगी	1040	**बातिनी अस्बाब**	1060
सिद्दीक़ीन के मर्तबे पर फ़ाइज़ शख़्स की अ़लामात	1042	चार ज़ाहिरी अस्बाब	1060
वज़ाइफ़ में अस्ल इन पर हमेशगी इख़्तियार करना है	1043	गुनाहों का क़ैदी	1061
एक सुवाल और इस का जवाब	1044	शब बेदारी से महरूमी का सबब	1061
बाब नम्बर 2 : क़ियामुल्लैल में आसानी पैदा करने		एक गुनाह की सज़ा	1061
वाले अस्बाब, शब बेदारी के लिये मुस्तहब रातें,		जमाअ़त फ़ौत होने का सबब	1062
मग़रिब व इशा के दरमियानी वक़्त और		खुलासए कलाम	1062
शब बेदारी की फ़ज़ीलत और रात के अवक़ात		चार बातिनी अस्बाब	1062
की तक़्सीम का बयान	1045	तो सुहैब को नींद नहीं आती	1063
मग़रिब व इशा के दरमियानी वक़्त की फ़ज़ीलत	1045	सुवाल-जवाब	1065
बीस या चालीस साल के गुनाह मुआ़फ़	1045	शब बेदारों के वाक़िआत व अक़्वाल	1065
गोया शबे क़द्र में नमाज़ पढ़ी	1045	मुहिब्बे इलाही व महबूबे इलाही की अ़लामात	1067
जन्नती महल	1046	बख़्शिश के झोंके	1068
नमाज़े मग़रिब के बा'द दो रक्अ़त पढ़ने की फ़ज़ीलत	1046	क़बूलिय्यत की घड़ी	1068
ख़्वाब में ज़ियारते रसूल से मुशर्रफ़ हो	1048	शब के अवक़ात की तक़्सीम का त़रीक़ा	1069
खुलासए कलाम	1049	इशा के वुज़ू से फ़ज्र अदा करने वाले	1069
शब बेदारी की फ़ज़ीलत	1050	रात में बेदार हो तो इस सुन्नत पर अ़मल करे	1072
शब बेदारी की फ़ज़ीलत से मुतअ़ल्लिक़ छे फ़रामीने बारी तआ़ला	1050	फ़ज़ीलत वाली रातें	1073

मज़ामीन	सफ़्हा नम्बर	मज़ामीन	सफ़्हा नम्बर
100 साल की नेकियों का षवाब	1074	आख़िरत की लज़्ज़त से मह़रूमी का बाइ़ष	1076
दिल ज़िन्दा रहेगा	1074	ह़िकायात की फ़ेहरिस्त	1077
फ़ज़ीलत वाले अय्याम	1075	तफ़्सीली फ़ेहरिस्त	1078
60 माह के रोज़ों का षवाब	1075	माख़ज़ो मराजेअ़	1114
पूरा हफ़्ता और पूरा साल गुनाहों से सलामती	1075	**अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या** की कुतुब का तआ़रुफ़	1119

......सुन्नतों की बहारें......

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !

अल्लाह व रसूल عَزَّوَجَلَّ وصَلَّی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلَّم की ख़ुशनूदी के हुसूल और बा किरदार मुसलमान बनने के लिये **''दा'वते इस्लामी''** के इशाअ़ती इदारे **मक्तबतुल मदीना** से **''मदनी इन्आ़मात''** नामी रिसाला ह़ासिल कर के इस के मुत़ाबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारने की कोशिश कीजिये और अपने अपने शहरों में होने वाले **दा'वते इस्लामी के** हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में पाबन्दिये वक़्त के साथ शिर्कत फ़रमा कर ख़ूब ख़ूब **''सुन्नतों की बहारें''** लूटिये । **दा'वते इस्लामी** के सुन्नतों की तर्बिय्यत के लिये बे शुमार **मदनी क़ाफ़िले** शहर ब शहर, गाउं ब गाउं सफ़र करते रहते हैं, आप भी सुन्नतों भरा सफ़र इख़्तियार फ़रमा कर अपनी आख़िरत के लिये नेकियों का ज़ख़ीरा इकठ्ठा करें । اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ आप अपनी ज़िन्दगी में ह़ैरत अंगेज़ तौर पर **''मदनी इन्क़िलाब''** बरपा होता देखेंगे ।

अल्लाह करम ऐसा करे तुझ पे जहां में ऐ **दा'वते इस्लामी** तेरी धूम मची हो !

ماٰخذ و مراجع

نام کتاب	مصنف/مؤلف	مطبوعہ
قرآن پاک	کلام باری تعالٰی	مکتبۃ المدینہ ۱۴۳۲ھ
ترجمۂ کنزالایمان	اعلٰی حضرت امام احمد رضاخان رحمۃاللّٰہ علیہ متوفّٰی ۱۳۴۰ھ	مکتبۃ المدینہ ۱۴۳۲ھ
تفسیر النسفی	امام عبد اللّٰہ بن احمد بن محمود نسفی رحمۃاللّٰہ علیہ متوفّٰی ۷۱۰ھ	دارالمعرفہ بیروت ۱۴۲۱ھ
التفسیر الکبیر	فخر الدین محمد بن عمر رازی رحمۃاللّٰہ علیہ متوفّٰی ۶۰۶ھ	داراحیاء التراث العربی ۱۴۲۰ھ
تفسیرروح البیان	امام شیخ اسماعیل حقی البروسوی رحمۃاللّٰہ علیہ متوفّٰی ۱۱۳۷ھ	کوئٹہ پاکستان
تفسیرالبغوی	امام ابو محمد حسین بن مسعود بغوی رحمۃاللّٰہ علیہ متوفّٰی ۵۱۶ھ	دارالکتب العلمیۃ ۱۴۱۴ھ
تفسیرالخازن	امام علامہ علی بن محمد بن ابراھیم خازن رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۷۴۱ھ	صدیقیہ کتب خانہ
تفسیرغرائب القرآن	علامہ نظام الدین حسن بن محمد نیشاپوری رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۷۲۸ھ	دارالکتب العلمیۃ ۱۴۱۶ھ
روح المعانی	علامہ ابوفضل شھاب الدین آلوسی رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۱۲۷۰ھ	داراحیاء التراث العربی ۱۴۲۰ھ
تفسیرالدرالمنثور	امام جلال الدین عبدالرحمن سیوطی شافعی رحمۃاللّٰہ علیہ متوفّٰی ۹۱۱ھ	دارالفکربیروت ۱۴۰۳ھ
تفسیرالقرطبی	ابوعبداللّٰہ محمدبن احمدانصاری قرطبی رحمۃاللّٰہ علیہ متوفّٰی ۶۷۱ھ	دارالفکربیروت ۱۴۲۰ھ
صحیح البخاری	امام محمدبن اسماعیل بخاری رحمۃاللّٰہ علیہ متوفّٰی ۲۵۶ھ	دارالکتب العلمیۃ ۱۴۱۹ھ
صحیح مسلم	امام مسلم بن حجاج قشیری نیشاپوری رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۲۶۱ھ	دارابن حزم ۱۴۱۹ھ
سنن ابی داوٗد	امام ابوداوٗد سلیمان بن اشعث سجستانی رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۲۷۵ھ	داراحیاء التراث العربی ۱۴۲۱ھ
سنن الترمذی	امام محمد بن عیسٰی ترمذی رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۲۷۹ھ	دارالفکربیروت ۱۴۱۴ھ
سنن النسائی	امام احمد بن شعیب نسائی رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۳۰۳ھ	دارالکتب العلمیۃ ۱۴۲۶ھ
سنن ابن ماجہ	امام محمد بن یزید القزوینی الشھیربابن ماجہ رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۲۷۳ھ	دارالمعرفۃ بیروت ۱۴۲۰ھ
الموطا	امام مالک بن انس اصبحی حمیری رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۱۷۹ھ	دارالمعرفۃبیروت ۱۴۲۰ھ
الادب المفرد	امام محمدبن اسماعیل بخاری رحمۃاللّٰہ علیہ متوفّٰی ۲۵۶ھ	ملتان پاکستان
صحیح ابن خزیمہ	امام ابوبکرمحمد بن اسحاق نیشاپوری شافعی رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۳۱۱ھ	المکتب الاسلامی ۱۳۹۰ھ
السنن الکبرٰی	امام احمد بن شعیب نسائی رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۳۰۳ھ	دارا لکتب العلمیۃ ۱۴۱۱ھ
السنن الکبرٰی	امام ابوبکر احمد بن حسین بیھقی رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۴۵۸ھ	دارا لکتب العلمیۃ ۱۴۲۴ھ
دلائل النبوۃ	امام ابوبکر احمد بن حسین بیھقی رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۴۵۸ھ	دارالکتب العلمیۃ ۱۴۲۳ھ
شعب الایمان	امام ابوبکر احمد بن حسین بیھقی رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۴۵۸ھ	دارالکتب العلمیۃ ۱۴۲۱ھ

الزھدالکبیر	امام ابوبکر احمد بن حسین بیھقی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۴۵۸ھ	مؤسسۃالکتب الثقافیۃ ۱۴۱۷ھ
المعجم الکبیر	حافظ سلیمان بن احمد طبرانی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۳۶۰ھ	داراحیاء التراث العربی ۱۴۲۲ھ
المعجم الاوسط	حافظ سلیمان بن احمد طبرانی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۳۶۰ھ	دارا لکتب العلمیۃ ۱۴۲۰ھ
المعجم الصغیر	حافظ سلیمان بن احمد طبرانی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۳۶۰ھ	دارا لکتب العلمیۃ ۱۴۰۳ھ
کتاب الدعاء	حافظ سلیمان بن احمد طبرانی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۳۶۰ھ	دارالکتب العلمیۃ ۱۴۲۱ھ
المصنف	امام حافظ ابوبکرعبدالرزاق بن ہمام رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۲۱۱ھ	دارالکتب العلمیۃ ۱۴۲۱ھ
المصنف	حافظ عبداللّٰہ محمدبن ابی شیبۃ عبسی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۲۳۵ھ	دارالفکربیروت ۱۴۱۴ھ
المسند	امام ابو عبد اللّٰہ محمدبن ادریس شافعی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۲۰۴ھ	دارالکتب العلمیۃ بیروت
المسند	امام ابوعبداللّٰہ احمد بن محمد بن حنبل رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۲۴۱ھ	دارالفکربیروت ۱۴۱۴ھ
المسند	حافظ حارث بن ابی اسامہ متوفّٰی ۲۸۲ھ	المکتبۃ الشاملۃ
الموسوعۃ	ابوبکرعبداللّٰہ بن محمد بن عبید ابن ابی الدنیا رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۲۸۱ھ	المکتبۃ العصریۃ ۱۴۲۶ھ
مسندابی یعلی	امام ابویعلی احمدبن علی موصلی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۳۰۷ھ	دارالکتب العلمیۃ ۱۴۱۸ھ
سنن الدارمی	امام عبد اللّٰہ بن عبدالرحمن رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۲۵۵ھ	دارالکتب العربی ۱۴۰۷ھ
سنن الدارقطنی	امام علی بن عمردارقطنی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۳۸۵ھ	ملتان پاکستان
المستدرک	امام ابوعبداللّٰہ محمدبن عبداللّٰہ حاکم رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۴۰۵ھ	دارالمعرفۃبیروت ۱۴۱۸ھ
الاحسان بترتیب......	امام حافظ محمد بن حبان رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۳۵۴ھ	دار الکتب العلمیۃ ۱۴۱۷ھ
مشکاۃ المصابیح	علامہ ولی الدین تبریزی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۷۴۲ھ	دارالفکربیروت ۱۴۲۱ھ
الجامع	امام حافظ معمر بن راشد ازدی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۱۵۱ھ	دارالکتب العلمیۃ ۱۴۲۱ھ
شرح السنۃ	امام ابومحمدحسین بن مسعودبغوی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۵۱۶ھ	دارالکتب العلمیۃ ۱۴۲۴ھ
البحرالزخاربمسندالبزار	امام ابوبکراحمدبن عمرو بزار رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۲۹۲ھ	مکتبۃ العلوم والحکم ۱۴۲۴ھ
شرح معانی الآثار	ابوجعفراحمدبن محمد بن سلامہ طحاوی حنفی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۳۲۱ھ	دارالکتب العلمیۃ ۱۴۲۲ھ
الفردوس الاخبار	حافظ شیرویہ بن شہرداربن شیرویہ دیلمی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۵۰۹ھ	دارالکتب العلمیۃ ۱۴۰۶ھ
جامع الاصول	امام ابو السعادات مبارک بن محمد ابن اثیر رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۶۰۶ھ	دارالکتب العلمیۃ ۱۴۱۸ھ
معرفۃ السنن والآثار	امام ابوبکر احمد بن حسین بیھقی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۴۵۸ھ	دارالکتب العلمیۃ ۱۴۲۲ھ
إتحاف الخیرۃ المَھرۃ	امام احمدبن ابی بکربن اسماعیل بوصیری رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۸۴۰ھ	مکتبۃ الرشد ریاض ۱۴۱۹ھ
نوادرالاصول	ابوعبداللّٰہ محمد بن علی بن حسن حکیم ترمذی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۳۶۰ھ	مکتبۃ الامام البخاری
الاحادیث المختارۃ	ضیاء الدین ابوعبداللّٰہ محمدبن عبدالواحدحنبلی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۶۴۳ھ	دار خضر بیروت ۱۴۲۱ھ

مجمع الزوائد	حافظ نور الدین علی بن ابو بکر ھیثمی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۸۰۷ھ	دارالفکربیروت ۱۴۲۰ھ
الترغیب والترھیب	امام زکی الدین عبدالعظیم منذری رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۶۵۶ھ	دارالفکربیروت ۱۴۱۸ھ
الجامع الصغیر	امام جلال الدین عبدالرحمن سیوطی شافعی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۹۱۱ھ	دارالکتب العلمیۃ ۱۴۲۵ھ
الشمائل المحمدیۃ	امام محمد بن عیسیٰ ترمذی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۲۷۹ھ	داراحیاء التراث العربی بیروت
تاریخ بغداد	حافظ ابوبکر احمد بن علی بن ثابت خطیب بغدادی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۴۶۲ھ	دارالکتب العلمیۃ ۱۴۱۷ھ
تاریخ مدینۃ دمشق	حافظ ابوالقاسم علی بن حسن ابن عساکر شافعی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۵۷۱ھ	دار الفکربیروت ۱۴۱۶ھ
تذکرۃ الحفاظ	امام شمس الدین محمد بن احمد ذھبی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۷۴۸ھ	دارالکتب العلمیۃ ۱۴۱۹ھ
معرفۃ الصحابۃ	امام حافظ ابونعیم اصفھانی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۴۳۰ھ	دارالکتب العلمیۃ ۱۴۲۲ھ
تھذیب الاسماء واللغات	محیی الدین ابوذکریا یحیی بن شرف نووی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۶۷۶ھ	المکتبۃ الشاملۃ
الفقیہ والمتفقہ	حافظ ابوبکر احمد بن علی بن ثابت خطیب بغدادی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۴۶۲ھ	دار ابن جوزی ۱۴۲۸ھ
کنزالعمال	علامہ علی متقی بن حسام الدین برھان پوری رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۹۷۵ھ	دارالکتب العلمیۃ ۱۴۱۹ھ
تلخیص الحبیر	امام حافظ ابن حجر عسقلانی شافعی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۸۵۲ھ	دارالکتب العلمیۃ ۱۴۱۹ھ
الطھور	حافظ ابوعبید قاسم بن سلام رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۲۲۴ھ	المکتبۃ الشاملۃ
الجامع لاخلاق الراوی	حافظ ابوبکر احمد بن علی بن ثابت خطیب بغدادی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۴۶۲ھ	مکتبۃ المعارف ریاض ۱۴۰۳ھ
الامالی فی آثار الصحابۃ	امام حافظ ابوبکر عبدالرزاق بن ھمام رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۲۱۱ھ	مکتبۃ القرآن قاھرۃ
الکامل فی ضعفاء الرجال	امام ابو احمد عبد اللہ بن عدی جرجانی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۳۶۵ھ	دارالکتب العلمیۃ ۱۴۱۹ھ
طبقات المحدثین	حافظ ابوالشیخ عبد اللہ بن محمد اصبھانی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۳۶۹ھ	المکتبۃ الشاملۃ
فتح الباری	امام حافظ ابن حجر عسقلانی شافعی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۸۵۲ھ	دارالکتب العلمیۃ ۱۴۲۵ھ
عمدۃ القاری	امام بدرالدین ابومحمد محمود بن احمد عینی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۸۵۵ھ	دارالفکربیروت ۱۴۱۸ھ
شرح النووی علی صحیح مسلم	محیی الدین ابوذکریا یحیی بن شرف نووی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۶۷۶ھ	دار الکتب العلمیۃ
الکبائر	امام شمس الدین محمد بن احمد ذھبی رحمۃ اللہ علیہ متوفی ۷۴۸ھ	پشاور ۱۹۸۵ء
الزواجر عن اقتراف الکبائر	امام شھاب الدین احمد بن حجر مکی شافعی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۹۷۴ھ	دارالمعرفۃ بیروت ۱۴۱۹ھ
جمع الجوامع	امام جلال الدین عبدالرحمن سیوطی شافعی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۹۱۱ھ	دارالکتب العلمیۃ ۱۴۲۱ھ
المطالب العالیۃ	امام حافظ ابن حجر عسقلانی شافعی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۸۵۲ھ	دارالکتب العلمیۃ ۱۴۲۴ھ
المقاصد الحسنۃ	امام شمس الدین محمد بن عبدالرحمن سخاوی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۹۰۲ھ	دارالکتاب العربی ۱۴۲۵ھ
مرقاۃ المفاتیح	علامہ علی بن سلطان محمد قاری رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۱۰۱۴ھ	دار الفکربیروت ۱۴۲۲ھ
تحفۃ الحبیب علی	سلیمان بن محمد بن عمر متوفّٰی ۱۲۲۱ھ	دارالکتب العلمیۃ ۱۴۱۷ھ

حدیث ابی نعیم	امام حافظ ابو نعیم اصفہانی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۴۳۰ھ	المکتبۃ الشاملۃ
فیض القدیر	امام محمد عبد الرءُوف مناوی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۱۰۳۱ھ	دار الکتب العلمیۃ ۱۴۲۲ھ
تہذیب التہذیب	امام حافظ ابن حجر عسقلانی شافعی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۸۵۲ھ	دار الفکر بیروت ۱۴۱۵ھ
کتاب الضعفاء	ابو جعفر محمد بن عمرو بن موسی عقیلی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۳۲۲ھ	دار الصمیعی ریاض ۱۴۲۰ھ
المجروحین	امام حافظ محمد بن حبان رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۳۵۴ھ	دار الصمیعی ریاض ۱۴۲۰ھ
منحۃ الخالق......	علامہ سید محمد امین ابن عابدین شامی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۱۲۵۲ھ	مکتبہ رشیدیہ کوئٹہ
حاشیۃ اِعانۃ الطالبین	علامہ ابو بکر عثمان بن محمد دمیاطی بکری رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۱۳۰۲ھ	دار الکتب العلمیۃ ۱۴۲۲ھ
البحر المحیط......	امام بدر الدین محمد بن عبد اللہ زرکشی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۷۹۴ھ	دار الکتب العلمیۃ ۱۴۲۱ھ
حلیۃ الاولیاء	امام حافظ ابو نعیم اصفہانی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۴۳۰ھ	دار الکتب العلمیۃ ۱۴۱۸ھ
سبل الھدی والرشاد	امام محمد بن یوسف صالحی شامی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۹۴۲ھ	دار الکتب العلمیۃ ۱۴۲۸ھ
الزھد	امام ابو عبد اللہ احمد بن محمد بن حنبل رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۲۴۱ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت
الزھد	امام عبد اللہ بن المبارک مرزوی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۱۸۱ھ	دار الکتب العلمیۃ
الحث علی طلب العلم	حافظ ابو ہلال حسن بن عبد اللہ عسکری رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۳۹۰ھ	المکتب الاسلامی ۱۴۰۶ھ
اتحاف السادۃ المتقین	علامہ سید محمد بن محمد حسینی زبیدی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۱۲۰۵ھ	دار الکتب العلمیۃ
الشفا	امام ابو فضل عیاض بن موسی بن عیاض مالکی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۵۴۴ھ	مرکز اہلسنت برکات رضا ہند
قوت القلوب	شیخ ابو طالب محمد بن علی مکی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۳۸۶ھ	دار الکتب العلمیۃ ۱۴۲۶ھ
مختصر منہاج القاصدین	احمد بن محمد بن قدامہ رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۷۴۲ھ	المکتبۃ الشاملۃ
وفاء الوفاء	نور الدین علی بن احمد سمہودی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۹۱۱ھ	دار احیاء التراث العربی
المدخل	امام ابو عبد اللہ محمد بن محمد عبدری رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۷۳۷ھ	دار الکتب العلمیۃ ۱۴۱۵ھ
التذکرۃ الحمدونیۃ	محمد بن حسن بن محمد بن علی بن حمدون رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۵۶۲ھ	المکتبۃ الشاملۃ
المستطرف	شہاب الدین محمد بن ابی احمد ابی فتح رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۸۵۰ھ	دار الفکر بیروت ۱۴۱۹ھ
حیاۃ الحیوان الکبری	کمال الدین محمد بن موسی بن عیسی دمیری رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۸۰۸ھ	دار الکتب العلمیۃ ۱۴۱۵ھ
صِفۃ الصفوۃ	ابو الفرج عبد الرحمن بن علی بن محمد جوزی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۵۹۷ھ	دار الکتب العلمیۃ ۱۴۲۷ھ
صید الخاطر	ابو الفرج عبد الرحمن بن علی بن محمد جوزی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۵۹۷ھ	مکتبۃ نِزار مصطفی الباز ۱۴۲۵ھ
المجموع شرح المہذب	محیی الدین ابو زکریا یحیی بن شرف نووی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۶۷۶ھ	دار الفکر بیروت
بستان الواعظین	ابو الفرج عبد الرحمن بن علی بن محمد جوزی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۵۹۷ھ	دار الکتب العلمیۃ ۱۴۲۴ھ
ذمّ الھوی	ابو الفرج عبد الرحمن بن علی بن محمد جوزی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۵۹۷ھ	مکتبۃ الکتاب و السنۃ پشاور

عیون الاخبار	ابو محمد عبد اللّٰہ بن مسلم قتیبہ دینوری رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۲۷۶ھ	دارالکتب العلمیۃ ۱۴۱۸ھ
التذکرۃ فی الوعظ	ابو الفرج عبدالرحمن بن علی بن محمد جوزی رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۵۹۷ھ	دارالمعرفۃ بیروت ۱۴۰۶ھ
کشف الخفاء	امام اسمعیل بن محمد بن ہادی عجلونی رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۱۱۶۲ھ	دارالکتب العلمیۃ ۱۴۲۲ھ
تذکرۃ الموضوعات	علامہ محمد طاہر بن علی ہندی پٹنی رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۹۸۶ھ	کتب خانہ مجیدیہ ملتان
تنزیہ الشریعۃ	ابو الحسن علی بن محمد بن عراق کنانی رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۹۶۳ھ	دارالکتب العلمیۃ ۱۴۰۱ھ
اللآلئ المصنوعۃ	امام جلال الدین عبدالرحمن سیوطی شافعی رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۹۱۱ھ	دارالکتب العلمیۃ ۱۴۱۷ھ
العلل المتناھیۃ	ابو الفرج عبدالرحمن بن علی بن محمد جوزی رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۵۹۷ھ	دارالکتب العلمیۃ ۱۴۲۴ھ
کشف الظنون	مولی مصطفی بن عبداللّٰہ رومی حنفی رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۱۰۶۷ھ	دارالفکر بیروت ۱۴۱۹ھ
تعریف الاحیاء	علامہ شیخ عبدالقادر بن شیخ بن عبداللّٰہ عید روس رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفی ۱۰۳۸ھ	دارصادر بیروت ۲۰۰۰ء
تشیید الارکان	امام جلال الدین عبدالرحمن سیوطی شافعی رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۹۱۱ھ	دارصادر بیروت ۲۰۰۰ء
الطبقات الشافعۃ الکبری	تاج الدین عبدالوھاب بن علی سبکی رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۷۷۱ھ	دارالنشر ۱۴۱۳ھ
الثبات عند الممات	ابو الفرج عبدالرحمن بن علی بن محمد جوزی رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۵۹۷ھ	مؤسسۃ الکتب الثقافیۃ ۱۴۰۶ھ
العقد الفرید	احمد بن محمد عبد ربّہ اندلسی رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۳۲۸ھ	دارالکتب العلمیۃ ۱۴۱۷ھ
مفردات الفاظ القرآن	امام راغب ابو قاسم حسین بن محمد اصفہانی رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۵۰۲ھ	دارالقلم دمشق ۱۴۱۶ھ
روضۃ العقلاء	امام حافظ محمد بن حبان رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۳۵۴ھ	دارالکتب العلمیۃ ۱۳۹۷ھ
جامع العلوم والحکم	عبدالرحمن بن شہاب الدین بن رجب حنبلی رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۷۹۵ھ	المکتبۃ الفیصلیۃ مکۃ المکرمۃ
جامع بیان العلم و فضلہ	حافظ ابو عمر یوسف بن عبد اللّٰہ ابن عبد البر رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۴۶۳ھ	دارالکتب العلمیۃ ۱۴۲۸ھ
کتاب الفقہ......	عبد الرحمن بن محمد جزیری	دارالکتب العلمیۃ ۱۴۲۴ھ
الآداب الشرعیۃ	ابو عبد اللّٰہ محمد بن مفلح مقدسی رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۷۶۳ھ	المکتبۃ الشاملۃ
الانتقاء فی فضائل الثلاثۃ......	امام یوسف بن عبد اللّٰہ محمد بن عبد البر رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۴۶۳ھ	دارالکتب العلمیۃ بیروت
المجالسۃ وجواھر العلم	حافظ ابوبکر احمد بن مروان دینوری مالکی رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفی ۳۳۳ھ	دارالکتب العلمیۃ ۱۴۲۱ھ
سیر اعلام النبلاء	امام شمس الدین محمد بن احمد ذھبی رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفی ۷۴۸ھ	دارالفکر بیروت ۱۴۱۷ھ

मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या की त़रफ़ से पेश कर्दा क़ाबिले मुत़ालआ़ कुतुब

शो'बए कुतुबे आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه

(1) करन्सी नोट के शरई अह़कामात :
(अल किफ़्लुल फ़क़ीहिल फ़ाहिम फ़ी क़िरत़ासिद्दराहिम) (कुल सफ़ह़ात : 199)
(2) विलायत का आसान रास्ता (तसव्वुरे शैख़)
(अल याक़ूतितुल वासित़ह) (कुल सफ़ह़ात : 60)
(3) ईमान की पहचान (ह़ाशिया तम्हीदे ईमान) (कुल सफ़ह़ात : 74)
(4) मआ़शी तरक़्क़ी का राज़
(ह़ाशिया व तशरीह़ तदबीरे फ़लाह़ो नजात व इस्लाह़) (कुल सफ़ह़ात : 41)
(5) शरीअ़त व त़रीक़त
(मक़ालुल उ़-रफ़ाअ बि इ'ज़ाज़ि शर-इ व उ़-लमाअ) (कुल सफ़ह़ात : 57)
(6) षुबूते हिलाल के त़रीक़े (त़ुरुक़ि इस्बाति हिलाल) (कुल सफ़ह़ात : 63)
(7) आ'ला ह़ज़रत से सुवाल जवाब
(इज़्हारिल ह़क़्क़िल जली) (कुल सफ़ह़ात : 100)
(8) ईदैन में गले मिलना कैसा ?
(विशाहुल जीद फ़ी तह़लीलि मुआ़नि-क़तिल ईद) (कुल सफ़ह़ात : 55)
(9) राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में ख़र्च करने के फ़ज़ाइल
(रद्दिल कह़्ति वल वबाअ बि दा'वतिल जीरानि व मुवासातिल फ़ु-क़राअ) (कुल सफ़ह़ात : 40)
(10) वालिदैन, ज़ौजैन और असातिज़ा के ह़ुक़ूक़
(अल ह़ुक़ूक़ लि त़र्ह़िल उ़क़ूक़) (कुल सफ़ह़ात : 125)
(11) फ़ज़ाइले दुआ़ (अह़्सनुल विआ़अ लि आदाबिद्दुआ़अ मअ़ शर्ह़ ज़ैलुल मुद्दआ़ लि अह़्सनिल विआ़अ) (कुल सफ़ह़ात : 326)

शाएअ़ होने वाली अ़रबी कुतुब

अज़ : इमामे अहले सुन्नत मुजद्दिदे दीनो मिल्लत
मौलाना अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن

(12) किफ़्लुल फ़क़ीहिल फ़ाहिम (कुल सफ़ह़ात : 74)
(13) तम्हीदुल ईमान (कुल सफ़ह़ात : 77)

(14) अल इजाज़ातुल मतीनह (कुल सफ़्हात : 62)
(15) इक़ा-मतुल क़ियामह (कुल सफ़्हात : 60)
(16) अल फ़ज़्लुल मौहबी (कुल सफ़्हात : 46)
(17) अज्लल ए'लाम (कुल सफ़्हात : 70)
(18) अज़्ज़म-ज़-मतुल क़-मरिय्यह (कुल सफ़्हात : 93)
(19,20,21) जद्दिल मुम्तार अ़ला रद्दिल मुह़तार
(अल मुजल्लद अल अव्वल वष्षानी)(कुल सफ़्हात : 713,677,570)

﴾शो'बए इस्लाही़ कुतुब﴿

(22) ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ (कुल सफ़्हात : 160)
(23) इनफ़िरादी कोशिश (कुल सफ़्हात : 200)
(24) तंग दस्ती के अस्बाब (कुल सफ़्हात : 33)
(25) फ़िक्रे मदीना (कुल सफ़्हात : 164)
(26) इमतिह़ान की तय्यारी कैसे करें ? (कुल सफ़्हात : 32)
(27) नमाज़ में लुक़्मा के मसाइल (कुल सफ़्हात : 39)
(28) जन्नत की दो चाबियां (कुल सफ़्हात : 152)
(29) काम्याब उस्ताज़ कौन ? (कुल सफ़्हात : 43)
(30) निसाबे मदनी क़ाफ़िला (कुल सफ़्हात : 196)
(31) काम्याब त़ालिबे इल्म कौन ? (कुल सफ़्हात : तक़रीबन 63)
(32) फ़ैज़ाने एह़याउल उ़लूम (कुल सफ़्हात : 325)
(33) मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी (कुल सफ़्हात : 96)
(34) ह़क़ व बात़िल का फ़र्क़ (कुल सफ़्हात : 50)
(35) तह़क़ीक़ात (कुल सफ़्हात : 142)
(36) अर-बईने ह़-नफ़िय्यह (कुल सफ़्हात : 112)
(37) अ़त्त़ारी जिन्न का ग़ुस्ले मय्यित (कुल सफ़्हात : 24)
(38) त़लाक़ के आसान मसाइल (कुल सफ़्हात : 30)
(39) तौबा की रिवायात व ह़िकायात (कुल सफ़्हात : 124)
(40) क़ब्र खुल गई (कुल सफ़्हात : 48)
(41) आदाबे मुर्शिदे कामिल (मुकम्मल पांच ह़िस्से) (कुल सफ़्हात : 275)
(42) टी वी और मूवी (कुल सफ़्हात : 32)

(43 ता 49) फ़तावा अहले सुन्नत (सात ह़िस्से)
(50) क़ब्रिस्तान की चुड़ैल (कुल सफ़ह़ात : 24)
(51) ग़ौषे पाक رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہُ के ह़ालात (कुल सफ़ह़ात :106)
(52) तआ़रुफ़े अमीरे अहले सुन्नत (कुल सफ़ह़ात : 100)
(53) रहनुमाए जदवल बराए मदनी क़ाफ़िला (कुल सफ़ह़ात : 255)
(54) दा'वते इस्लामी की जेलख़ाना जात में ख़िदमात (कुल सफ़ह़ात : 24)
(55) मदनी कामों की तक़्सीम (कुल सफ़ह़ात : 68)
(56) दा'वते इस्लामी की मदनी बहारें (कुल सफ़ह़ात : 220)
(57) तर्बिय्यते अवलाद (कुल सफ़ह़ात : 187)
(58) आयाते क़ुरआनी के अन्वार (कुल सफ़ह़ात : 62)
(59) अह़ादीषे मुबारका के अन्वार (कुल सफ़ह़ात : 66)
(60) फ़ैज़ाने चह्ल अह़ादीष (कुल सफ़ह़ात : 120)
(61) बद गुमानी (कुल सफ़ह़ात : 57)

शो'बए तराजिमे कुतुब

(62) जन्नत में ले जाने वाले आ'माल
(अल मुत्जरुर्राबेह़ फ़ी षवाबिल अ़-मलिस्सालेह़) (कुल सफ़ह़ात : 743)
(63) शाहराहे औलिया (मिन्हाजुल आ़रिफ़ीन) (कुल सफ़ह़ात : 36)
(64) हुस्ने अख़्लाक़ (मकारिमुल अख़्लाक़)(कुल सफ़ह़ात : 74)
(65) राहे इल्म (ता'लीमुल मु-तअ़ल्लिम त़रीक़ुत्तअ़ल्लुम) (कुल सफ़ह़ात : 102)
(66) बेटे को नसीह़त (अय्युहल वलद)(कुल सफ़ह़ात : 64)
(67) अद्दा'वति इलल फ़िक्र (कुल सफ़ह़ात : 148)
(68) आंसूओं का दरिया (बह़्रुद्दुमूअ़) (कुल सफ़ह़ात : 300)
(69) नेकियों की जज़ाएं और गुनाहों की सज़ाएं (क़ुर्रतुल उ़यून) (कुल सफ़ह़ात : 136)
(70) उ़यूनुल ह़िकायात (मुतर्जम) (कुल सफ़ह़ात : 412)

शो'बए दर्सी कुतुब

(71) ता'रीफ़ाते नह़्विय्यह (कुल सफ़ह़ात : 45)
(72) किताबुल अ़क़ाइद (कुल सफ़ह़ात : 64)
(73) नुज़्हतुन्नज़र शर्हे नख़्बतुल फ़िक्र (कुल सफ़ह़ात : 175)
(74) अर-बईनिन न-वविय्यह (कुल सफ़ह़ात : 121)

(75) निसाबुत्तज्वीद (कुल सफ़ह़ात : 79)
(76) गुलदस्तए अ़क़ाइदो आ'माल (कुल सफ़ह़ात : 180)
(77) वक़ा-यतिन्नह़्व फ़ी शर्हे हिदा-यतुन्नह़्व
(78) सर्फ़ बहाई मुतर्जम मअ़ ह़ाशिया सर्फ़ बनाई

शो'बए तख़्रीज

(79) अ़जाइबुल क़ुरआन मअ़ ग़राइबुल क़ुरआन (कुल सफ़ह़ात : 422)
(80) जन्नती ज़ेवर (कुल सफ़ह़ात : 679)
(81) बहारे शरीअ़त, जिल्द अव्वल (ह़िस्सा : 1 से 6)
(82) बहारे शरीअ़त, जिल्द दुवुम (ह़िस्सा : 7 से 13)
(83) बहारे शरीअ़त, जिल्द सिवुम (ह़िस्सा : 14 से 20)
(84) इस्लामी ज़िन्दगी (कुल सफ़ह़ात : 170)
(85) आईनए क़ियामत (कुल सफ़ह़ात : 108)
(86) उम्महातुल मुअमिनीन (कुल सफ़ह़ात : 59)
(87) सह़ाबए किराम का इ़श्क़े रसूल (कुल सफ़ह़ात : 274)

शो'बए अमीरे अहले सुन्नत

(88) सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का पैग़ाम अ़त्तार के नाम (कुल सफ़ह़ात : 49)
(89) मुक़द्दस तह़रीरात के अदब के बारे में सुवाल जवाब (कुल सफ़ह़ात : 48)
(90) इस्लाह़ का राज़ (मदनी चैनल की बहारें हिस्सए दुवुम) (कुल सफ़ह़ात : 32)
(91) 25 क्रिस्चैन क़ैदियों और पादरी का क़बूले इस्लाम (कुल सफ़ह़ात : 33)
(92) दा'वते इस्लामी की जेलख़ाना जात में ख़िदमात (कुल सफ़ह़ात : 24)
(93) वुज़ू के बारे में वस्वसे और इन का इ़लाज (कुल सफ़ह़ात : 48)
(94) तज़्किरए अमीरे अहले सुन्नत क़िस्त़ सिवुम (सुन्नते निकाह़)(कुल सफ़ह़ात : 86)
(95) आदाबे मुर्शिदे कामिल (मुकम्मल पांच ह़िस्से) (कुल सफ़ह़ात : 275)
(96) बुलन्द आवाज़ से ज़िक्र करने में ह़िकमत (कुल सफ़ह़ात : 48)
(97) क़ब्र खुल गई (कुल सफ़ह़ात :48)
(98) पानी के बारे में अहम मा'लूमात (कुल सफ़ह़ात : 48)
(99) गूंगा मुबल्लिग़ (कुल सफ़ह़ात : 55)
(100) दा'वते इस्लामी की मदनी बहारें (कुल सफ़ह़ात : 220)

(101) गुम शुदा दुल्हा (कुल सफ़ह़ात : 33)
(102) मैं ने मदनी बुर्क़अ़ क्यूं पहना ? (कुल सफ़ह़ात : 33)
(103) जिन्नों की दुन्या (कुल सफ़ह़ात : 32)
(104) तज़्किरए अमीरे अहले सुन्नत क़िस्त़ दुवुम (कुल सफ़ह़ात : 48)
(105) ग़ाफ़िल दर्ज़ी (कुल सफ़ह़ात : 36)
(106) मुख़ालिफ़त मह़ब्बत में कैसे बदली ? (कुल सफ़ह़ात : 33)
(107) मुर्दा बोल उठा (कुल सफ़ह़ात : 32)
(108) तज़्किरए अमीरे अहले सुन्नत क़िस्त़ अव्वल (कुल सफ़ह़ात : 49)
(109) कफ़न की सलामती (कुल सफ़ह़ात : 33)
(110) तज़्किरए अमीरे अहले सुन्नत क़िस्त़ चहारुम (कुल सफ़ह़ात : 49)
(111) चल मदीना की सआ़दत मिल गई (कुल सफ़ह़ात : 32)
(112) बद नसीब दुल्हा (कुल सफ़ह़ात : 32)
(113) मा'ज़ूर बच्ची मुबल्लिग़ा कैसे बनी ? (कुल सफ़ह़ात : 32)
(114) बे क़ुसूर की मदद (कुल सफ़ह़ात : 32)
(115) अ़त्तारी जिन्न का ग़ुस्ले मय्यित (कुल सफ़ह़ात : 24)
(116) नूरानी चेहरे वाले बुज़ुर्ग (कुल सफ़ह़ात : 32)
(117) आंखों का तारा (कुल सफ़ह़ात : 32)
(118) वली से निस्बत की ब-रकत (कुल सफ़ह़ात : 32)
(119) बा बरकत रोटी (कुल सफ़ह़ात : 32)
(120) इग़वा शुदा बच्चों की वापसी (कुल सफ़ह़ात : 32)
(121) मैं नेक कैसे बना ? (कुल सफ़ह़ात : 32)
(122) शराबी, मुअज़्ज़िन कैसे बना ? (कुल सफ़ह़ात : 32)
(123) बद किरदार की तौबा (कुल सफ़ह़ात : 32)
(124) ख़ुश नसीबी की किरनें (कुल सफ़ह़ात : 32)
(125) नाकाम आ़शिक़ (कुल सफ़ह़ात : 32)
(126) नादान आ़शिक़ (कुल सफ़ह़ात : 32)
(127) हैरोइन्ची की तौबा (कुल सफ़ह़ात : 32)
(128) नौ मुस्लिम की दर्दभरी दास्तान (कुल सफ़ह़ात : 32)
(129) मदीने का मुसाफ़िर (कुल सफ़ह़ात : 32)

(130) ख़ौफ़नाक दांतो वाला बच्चा (कुल सफ़ह़ात : 32)
(131) फ़िल्मी अदा कार की तौबा (कुल सफ़ह़ात : 32)
(132) सास बहू में सुल्ह़ का राज़ (कुल सफ़ह़ात : 32)
(133) क़ब्रिस्तान की चुड़ेल (कुल सफ़ह़ात : 24)
(134) फ़ैज़ाने अमीरे अहले सुन्नत (कुल सफ़ह़ात : 101)
(135) ह़ैरत अंगेज़ ह़ादिषा (कुल सफ़ह़ात : 32)
(136) मॉडर्न नौ जवान की तौबा (कुल सफ़ह़ात : 32)
(137) क्रिस्चैन का क़बूले इस्लाम (कुल सफ़ह़ात : 32)
(138) सलातो सलाम की आ़शिक़ा (कुल सफ़ह़ात : 33)
(139) क्रिस्चैन मुसलमान हो गया (कुल सफ़ह़ात : 32)
(140) चमकती आंखों वाले बुज़ुर्ग (कुल सफ़ह़ात : 32)
(141) म्यूज़िकल शो का मतवाला (कुल सफ़ह़ात : 32)
(142) म्यूज़िकल नौ जवान की तौबा (कुल सफ़ह़ात : 32)

मजलिसे तराजुमे कुतुब की त़रफ़ से पेश कर्दा कुतुब

बानिये दा'वते इस्लामी मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी مَدَّظِلُّهُ الْعَالِی के इन रसाइल के अ़–रबी तराजुम शाएअ़ हो चुके हैं :
(1) बादशाहों की हड्डियां (इज़ामुल मलूक)
(2) मुर्दे के सदमे (हुमूमिल मय्यित)
(3) ज़ियाए दुरूदो सलाम (ज़ियाइस्सलाति वस्सलाम)
(4) शजरए आ़लिया क़ादिरिय्या रज़विय्या अ़त्तारिय्या

इन रसाइल के सिन्धी तराजुम भी शाएअ़ हो चुके है

(1) ज़ियाए दुरूदो सलाम (मुअल्लिफ़ : बानिये दा'वते इस्लामी मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी مَدَّظِلُّهُ الْعَالِی)
(2) ग़फ़्लत (मुअल्लिफ़ : बानिये दा'वते इस्लामी मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी مَدَّظِلُّهُ الْعَالِی)
(3) अबू जह्ल की मौत (मुअल्लिफ़ : बानिये दा'वते इस्लामी मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी مَدَّظِلُّهُ الْعَالِی)
(4) एह़तिरामे मुस्लिम (मुअल्लिफ़ : बानिये दा'वते इस्लामी मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी مَدَّظِلُّهُ الْعَالِی)
(5) दा'वते इस्लामी का तआ़रुफ़ ।

इस के इलावा अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के कई रसाइल के सिन्धी तराजुम भी शाएअ़ हो चुके हैं

(1) अह़कामे नमाज़
(2) फ़ैज़ाने रमज़ान
(3) फ़ैज़ाने बिस्मिल्लाह
(4) पेट जो कुफ़्ले मदीना
(5) आदाबे त़अ़ाम
(6) बयानाते अ़त्त़ारिय्या
(7) जिन्नात जो बादशाह
(8) सुब्ह़े बहारां
(9) ज़लज़लो इन इनजा अस्बाब
(10) आक़ा जो महीनो
(11) अब्लक़ घोड़े सुवार
(12) पुल सिरात़ जी दहशत
(13) ज़ख़्मी नांग
(14) कफ़न जी वापसी
(15) बरेली कान मदीना
(16) मुलाज़िमीन जा लाइ 21 मदनी गुल
(17) शजरए अ़त्त़ारिय्या
(18) 40 रूह़ानी इलाज

अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या के इन रसाइल के सिन्धी तराजुम भी शाएअ़ हो चुके हैं

(1) मूवी इन टीवी
(2) उ़श्र जा अह़काम (हारीन जा लाइ)
(3) मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी
(4) आदाबे मुर्शिदे कामिल
(5) इनफ़िरादी कोशिश
(6) ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ
(7) तंगदस्ती इन इनजा अस्बाब
(8) निसाबे मदनी क़ाफ़िला

गुनाहों से नफ़्रत करने का ज़ेह्न

*"**दा'वते इस्लामी**" के सुन्नतों की तर्बिय्यत के "मदनी क़ाफ़िलों" में सफ़र और रोज़ाना "फ़िक्रे मदीना" के ज़रीए "मदीनी इन्आ़मात" का रिसाला पुर कर के हर मदनी (इस्लामी) माह के इब्तिदाई 10 दिन के अन्दर अन्दर अपने यहां के (दा'वते इस्लामी के) ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस की बरकत से "पाबन्दे सुन्नत" बनने, "गुनाहों से नफ़्रत" करने और "ईमान की ह़िफ़ाज़त" के लिये कुढ़ने का ज़ेह्न बनेगा।*

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

सुन्नत की बहारें

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आलमगीर ग़ैर सियासी तहरीक दा'वते इस्लामी के महके महके मदनी माहोल में ब कषरत सुन्नतें सीखी और सिखाई जाती हैं, हर जुमा'रात इशा की नमाज़ के बा'द आप के शहर में होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात गुज़ारने की मदनी इल्तिजा है, आशिक़ाने रसूल के मदनी क़ाफ़िलों में ब निय्यते षवाब सुन्नतों की तर्बिय्यत के लिये सफ़र और रोज़ाना "फ़िक्रे मदीना" के ज़रीए मदनी इन्आमात का रिसाला पुर कर के हर मदनी माह के इबतिदाई दस दिन के अन्दर अन्दर अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ करवाने का मा'मूल बना लीजिये, اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस की बरकत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और ईमान की हिफ़ाज़त के लिये कुढ़ने का ज़ेहन बनेगा।

हर इस्लामी भाई अपना येह ज़ेहन बनाए कि "मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह की कोशिश करनी है।" اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ अपनी इस्लाह की कोशिश के लिये "मदनी इन्आमात" पर अमल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह की कोशिश के लिये "मदनी क़ाफ़िलों" में सफ़र करना है। اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ

मक्तबतुल मदीना की शाख़ें

अहमदाबाद : सिलेक्टेड हाऊस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा, अहमदाबाद-1, गुजरात, MO. 9374031409

मुम्बई : 19, 20, मुहम्मद अली रोड, मांडवी पोस्ट ऑफ़िस के सामने, मुम्बई फ़ोन : 022-23454429

नागपूर : ग़रीब नवाज़ मस्जिद के सामने, सैफ़ी नगर रोड, मोमिन पुरा, नागपूर : (M) 09373110621

अजमेर शरीफ़ : 19/216 फ़लाहे दारैन मस्जिद, नाला बाज़ार, स्टेशन रोड, दरगाह, अजमेर फ़ोन : 0145-2629385

हैदरआबाद : पानी की टंकी, मुग़ल पुरा, हैदरआबाद फ़ोन : 040-24572786

MAKTABATUL MADINA
421, URDU MARKET, MATYA MAHAL, JAMA MASJID
DELHI - 110006, PH : 011-23284560
email : maktabadelhi@gmail.com
web : www.dawateislami.net